FREE BIBLE COMMENTARY

आप बाइबल को समझ सकते हैं!

लूका इतिहासकार: प्रेरितों के काम

डॉ. बॉब **अटले द्वारा, हेमेंनेयुटिक्स से सेवा निवृत्त प्रोफेसर (बाइबल व्याख्या)**

विषय-सूची

लेखक का एक शब्द: यह टिप्पणी आपकी कैसे मदद कर सकती है?
एक बाइबल को अच्छी तरह पढ़ने का मार्गदर्शन: प्रमाणयोग्य सत्य के लिए एक व्यक्तिगत खोज
इस टिप्पणी में इस्तेमाल संकेताक्षर

टिप्पणी:

प्रेरितों के काम का परिचय

प्रेरितों 1	प्रेरितों 8	प्रेरितों 15	प्रेरितों 22
प्रेरितों 2	प्रेरितों 9	प्रेरितों 16	प्रेरितों 23
प्रेरितों 3	प्रेरितों 10	प्रेरितों 17	प्रेरितों 24
प्रेरितों 4	प्रेरितों 11	प्रेरितों 18	प्रेरितों 25
प्रेरितों 5	प्रेरितों 12	प्रेरितों 19	प्रेरितों 26
प्रेरितों 6	प्रेरितों 13	प्रेरितों 20	प्रेरितों 27
प्रेरितों 7	प्रेरितों 14	प्रेरितों 21	प्रेरितों 28

परिशिष्ट:

ग्रीक व्याकरणिक संरचना की संक्षिप्त परिभाषा
पाठात्मक आलोचना
ऐतिहासिक कथा
शब्दावली
सिद्धांत कथन

Copyright©2013Bible Lessons International.All rights reserved. Any copies or distribution of any part of this material must be made available at no cost. Such copies or distribution must give credit to Dr. Bob Utley and include a reference to http://www.freebiblecommentary.org/

The primary biblical text used in this commentary is : New American Standard Bible (Update,1995) Copyright©1960, 1962, 1963, 1968, 1971, 1972, 1973, 1975, 1977, 1995 by The Lockman Foundation, P.O. Box 2279, La Habra,CA90632-2279

लेखक के दो शब्द:
किस प्रकार यह टीका आपकी सहायता कर सकती है

बाइबल संबंधी व्याख्या एक बुद्धिमानी का और आध्यात्मिक कार्य होता है जिसके द्वारा प्रेरणा प्राप्त प्राचीन लेखक के परमेश्वर द्वारा दिए गए सन्देश को समझा जा सके और उसे अपने युग में लागू किया जा सके।

यह आध्यात्मिक कार्य अथवा प्रक्रिया बड़ी छानबीन करने वाली होती है जिसको परिभाषित करना कठिन होता है। इस कार्य में निश्चय ही परमेश्वर के प्रति समर्पण और खुलापन सम्मिलित होता है जिसमें तीन प्रकार की भूख होनी चाहिए (1) परमेश्वर के लिए भूख (2) परमेश्वर को जानने की भूख और (3) परमेश्वर की सेवा करने की भूख। फिर इस कार्य में प्रार्थना, पापों का अंगीकार करना और अपनी जीवन-शैली में परिवर्तन लाने की उत्सुकता भी शामिल होती है। व्याख्या-प्रक्रिया में पवित्र आत्मा छानबीन करता है, फिर क्यों सच्चे और भले मसीही बाइबल को भिन्न प्रकार से समझते हैं, यह एक रहस्य की बात है।

बौद्धिक प्रक्रिया का वर्णन करना अपेक्षाकृत सरल होता है। हमें पूछताछ पर स्थिर और निष्पक्ष होना चाहिए तथा अपने व्यक्तिगत अथवा सम्प्रदायिक पूर्वाग्रहों द्वारा प्रभावित नहीं होना चाहिए। हम सभी इतिहास की तरह स्थिर होते हैं। हम में से कोई भी निष्पक्ष व्याख्याकार नहीं होता। यह टीका हमारे समक्ष एक सतर्क बौद्धिक प्रक्रिया प्रस्तुत करती है जिसमें निम्नलिखित तीन व्याख्यात्मक नियम पाए जाते हैं जिनसे हमें अपने पूर्वाग्रहों को नियन्त्रित करने में सहायता मिलती है।

पहला नियम

उस ऐतिहासिक वातावरण पर विचार करना जिसमें बाइबल की पुस्तक लिखी गई और इस बात पर भी ध्यान देना कि किस विशेष ऐतिहासिक अवसर पर पुस्तक लिखी गई। मूल लेखक के मन में एक उद्देश्य व एक सन्देश होता है जिसे वह बाँटना चाहता है। प्राचीन मूल लेखक का यही प्रेरणा प्राप्त सन्देश मूलपाठ हम तक पहुँचता है। मूलपाठ कोई अन्य सन्देश नहीं पहुँचाता।

लेखक का अभिप्राय ही विशेष बात होती है, इसमें हमारी ऐतिहासिक, भावनात्मक, सांस्कृतिक, व्यक्तिगत अथवा सम्प्रदाय संबंधी आवश्यकताओं का कोई महत्व नहीं होता। लागू करना व्याख्या का अभिन्न अंग होता है, परन्तु उपयुक्त व्याख्या लागू करने से पहले होनी चाहिए। इस बात को अच्छी तरह समझ लेना चाहिए कि प्रत्येक बाइबल-पाठांश में केवल एक ही अर्थ होता है। इसी अर्थ को पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन में बाइबल-पाठ का मूल लेखक अपने समय के लोगों में बाँटना चाहता है। इस एक अर्थ को लागू करने की संभावनाएं विभिन्न संस्कृतियों और परिस्थितियों के लिये भिन्न-भिन्न हो सकती हैं। परन्तु लागू करना अवश्य ही मूल लेखक के मूल सत्य व अभिप्राय के अनुसार होना चाहिए। यही वजह है कि यह टीका बाइबल की प्रत्येक पुस्तक का परिचय प्रस्तुत करती है।

दूसरा नियम

साहित्यिक इकाईयों को पहचानना। बाइबल की प्रत्येक पुस्तक एकीकृत किये हुए दस्तावेज़ के समान है। व्याख्याकार को कोई अधिकार नहीं कि सत्य का एक पहलू अलग कर दे और दूसरे को स्थापित कर दे। इसी वजह से हमें किसी भी साहित्यिक इकाई की व्याख्या करने से पहले बाइबल की पूरी पुस्तक का मूल-उद्देश्य समझने का प्रयास करना चाहिये। पुस्तक के विभिन्न हिस्सों, जैसे अध्याय, पैराग्राफ या पद, का अर्थ वही होगा जो पूरी पुस्तक का होता है, भिन्न अर्थ कदापि नहीं होगा। व्याख्या करते समय पुस्तक के मूल अभिप्राय या लक्ष्य को ध्यान में रखना चाहिए और बाइबल-पाठ में से कोई भाग निकलना नहीं चाहिये। इसी कारण से अध्ययन की यह टीका छात्र को प्रत्येक साहित्यिक इकाई के पैराग्राफ का विश्लेषण करने में सहायता प्रदान करती है। पैराग्राफ और अध्याय के भाग-उपविभाग इत्यादि हालांकि प्रेरणा-युक्त नहीं होते, तो भी वे इकाई के मुख्य-विचार को समझने में हमारी सहायता करते हैं।

पैराग्राफ स्तर पर व्याख्या करने से बाइबल पुस्तक के लेखक के मूल अर्थ को समझने में सहायता मिलती है न कि शब्दों और वाक्यांशों के स्तर पर व्याख्या करने से सहायता मिलती है, क्योंकि पैराग्राफ एकीकृत विषय पर

आधरित होते हैं जिसे मूल-विषय कहा जाता है। पैराग्राफ में पाए जाने वाले हर शब्द, वाक्य और वाक्यांश किसी न किसी तरह इसी मूल-विषय से संबन्ध रखते हैं। ये उसे सीमित करते, बढ़ाते, समझाते और इस पर प्रश्न उठाते हैं। सही व्याख्या करने का सबसे अच्छा तरीका यह है कि हम बाइबल पुस्तक के पैराग्राफों में पाए जाने वाले मूल लेखक के विचारों को समझें। यह टीका छात्र को ऐसा ही करने में सहायता प्रदान करती है और बाइबल के विभिन्न आधुनिक अनुवादों की आपस में तुलना करने को कहती है। बाइबल के चुने हुए कुछ अनुवाद इस प्रकार हैं:

1. यूनाइटिड बाइबल सोसायटी का चैथा संशोधित यूनानी संस्करण (UBS4)। इसके पैराग्राफों का विभाजन आधुनिक मूलपाठ विद्वानों द्वारा किया गया।
2. न्यू किंग जेम्स वर्ज़न (NKJV): यह परम्परागत यूनानी पाण्डुलिपियों पर आधारित शाब्दिक अनुवाद है जो सर्वमान्य अनुवाद कहलाता है। अन्य अनुवादों की तुलना में इसके पैराग्राफों के भाग-उपविभाग लम्बे हैं जिनके द्वारा छात्रों को मूलविषय को जानने में बड़ी सहायता मिलती है।
3. न्यू रिवाइज़्ड स्टैण्डर्ड वर्ज़न (NRSV): यह शाब्दिक संशोधित अनुवाद है। यह नीचे दिए हुए दो आधुनिक अनुवादों में मध्य स्थान रखता है। इसमें पाये जाने वाले पैराग्राफों से विषय को समझने में बहुत सहायता मिलती है।
4. टूडेज़ इंगलिश वर्ज़न (TEV): यूनाइटेड बाइबल सोसायटी द्वारा प्रकाशित यह अनुवाद अन्य अनुवादों की तरह बड़ा अच्छा है। इसके द्वारा आधुनिक अंग्रेज़ी पाठक यूनानी शब्दों का अर्थ सरलता से समझ सकता है। इसमें विशेषकर सुसमाचारों में विषय के अनुसार नहीं बल्कि वक्ता के अनुसार पैराग्राफ बनाए गये हैं, जैसाकि छप्ट में किया गया है। व्याख्याकारों के लिये यह सहायक नहीं है। रोचक बात यह है कि UBS-4 तथा TEV एक ही संस्था द्वारा प्रकाशित किए गए हैं तो भी पैराग्राफ बनाने के तरीकों में अन्तर है।
5. जरुसलेम बाइबल (JB): यह फ्रैंच कैथोलिक अनुवाद पर आधारित श्रेष्ठ अनुवाद है। यूरोपियन दृष्टिकोण से पैराग्राफों की तुलना करने में यह बड़ा सहायक अनुवाद है।
6. न्यू अमेरिकन स्टैण्डर्ड बाइबल (NASB): यह नवीनतम बाइबल 1995 में छापी गई थी। यह शानदार शाब्दिक अनुवाद है। इसमें दिए गए पैराग्राफों का उपयोग वे टीकाकार करते हैं जो हर पद की बारी-बारी से व्याख्या करते हैं।

तीसरा नियम

तीसरा नियम है कि बाइबल पाठांश में पाए जाने वाले शब्दों, वाक्यांशों व मुहावरों के सटीक अर्थ को समझने के लिये बाइबल के विभिन्न अनुवादों को पढ़ना। अक्सर यूनानी भाषा के शब्दों अथवा वाक्यांशों को विभिन्न प्रकार से समझा जा सकता है। इन विभिन्न अनुवादों को पढ़ने से यह समस्या दूर हो जाती है और यूनानी हस्तलिपि का वास्तविक अर्थ समझने में सहायता मिलती है। इनसे धर्म-शिक्षा पर प्रभाव नहीं पड़ता बल्कि इनसे प्राचीन मूल लेख तक पहुँचने में, जो पवित्रात्मा की प्रेरणा से लेखक ने लिखा है, सहायता मिलती है।

प्रस्तुत टीका छात्रों को अपने द्वारा की गई व्याख्या को जाँचने के लिये सरल उपाय प्रदान करती है। ये उपाय पूर्ण- विकसित व अन्तिम तो नहीं हैं परन्तु ज्ञानवर्धक और विचारों को आन्दोलित करने वाले हैं। अन्य टीकाएँ भी सहायक हो सकती हैं जो हमें हठधर्मीपन, संकीर्णता और साम्प्रदायिक्ता से बचा सकती हैं। इसलिए व्याख्याकारों को चाहिए कि व्याख्या सम्बन्धी अन्य विकल्पों का भी उपयोग करें ताकि पता चल सके कि प्राचीन मूलपाठ कितने अस्पष्ट और अनेक अर्थ रखने वाले होते थे। यह बड़े आश्चर्य की बात है कि आज मसीही लोगों में बाइबल-सम्बन्धी छोटी-छोटी बातों में गहरा मतभेद पाया जाता है।

उपरोक्त नियमों ने मूलपाठों से सम्बन्धित मेरी समस्याओं को हल करने में बड़ी सहायता की है। मेरी आशा है कि आपके लिए भी ये आशीषों का माध्यम बनें।

बॉब अटले (Bob Utley)
जून 27, 1996

Copyright 2013 Bible Lesson International

श्रेष्ठ बाइबल अध्ययन हेतु मार्गदर्शन
सत्य की व्यक्तिगत खोज

जिन बातों का आगे उल्लेख किया जा रहा, वह डा. बॉब उटले द्वारा दिया गया संक्षिप्त स्पष्टीकरण है जो उनके व्याख्यात्मक दर्शन और उनकी टीकाओं में प्रयुक्त कार्य-प्रणालियों के सम्बन्ध में है।

क्या हम सत्य को जान सकते हैं? यह कहाँ मिल सकता है? क्या हम तर्कों द्वारा सत्य को प्रमाणित कर सकते हैं? क्या कोई अन्तिम अधिकार या सर्वोच्च सत्ता है? क्या कहीं सम्पूर्णता व सिद्धता पाई जाती है जो हमारे जीवनों का व हमारे संसार का मार्गदर्शन कर सके? क्या जीवन का कोई अर्थ है? हम संसार में क्यों जीवित हैं? हमारा गन्तव्य क्या है? ये कुछ ऐसे प्रश्न हैं जिन पर हर समझदार मनुष्य जगत के आरम्भ ही से मनन करता आया है (सभोपदेशक 1:13-18; 3:9-11)। मैं सत्य की व्यक्तिगत खोज के दिनों को स्मरण कर सकता हूँ। मैं छोटी उम्र में ही मसीह का विश्वासी बन गया था, परिवार के अन्य लोगों की गवाही का मुझ पर प्रभाव पड़ा था। जैसे-जैसे मैं बढ़ा और युवावस्था में पहुँचा, वैसे-वैसे स्वयं अपने विषय में और मेरे आसपास के संसार के विषय में मेरे प्रश्न भी बढ़ते गये। जिन अनुभवों का मैंने सामना किया अथवा जो कुछ मैंने अध्ययन किया उसमें मेरी सांस्कृतिक और धार्मिकता की छाप द्वारा कोई लाभ न मिला। जिस कठोर और दुष्ट संसार में मैं रहता था, उसमें मेरे दिन निराशा और व्याकुलता भरे और निरन्तर आशाओं के साथ खोजबीन में लगे रहने के दिन थे।

बहुत से लोगों ने दावा किया है कि उन्होंने इन गहन प्रश्नों के जवाब ढूँढ़ निकाले हैं, परन्तु बहुत खोजबीन करने और मनन करने के बाद मैंने पाया कि उनके जवाब निम्नलिखित बातों पर आधारित थे: (1) उनकी अपनी विचारधारा व दर्शन (2) प्राचीन मन-गढ़न्त बातें (3) उनके व्यक्तिगत अनुभव (4) मनोवैज्ञानिक प्रभाव पड़ना। तब मुझे जाँच करने की, कुछ प्रमाणों की तथा ऐसी तर्क-संगत बातों की ज़रूरत पड़ी जिन पर मैं अपना विश्व-दर्शन टिका सकूँ और जिन्हें अपने जीवन का आधार बना सकूँ और अपने ज़िन्दा रहने का मकसद पा सकूँ।

इनका हल मैंने अपने बाइबल अध्ययन में पाया। मैंने बाइबल की विश्वासयोग्यता के प्रमाण खोजना आरम्भ किया, जिन्हें मैंने इन बातों में पाया: (1) बाइबल की ऐतिहासिक विश्वासयोग्यता में, जो पुरातत्व विज्ञान द्वारा प्रमाणित है। (2) पुराने नियम की भविष्यद्वाणियों की अक्षरशः परिपूर्ति में। (3) बाइबल छपने के 1600 वर्षों बाद भी उसके सन्देश में एकता होने में। तथा (4) बाइबल के संपर्क में आए हुए लोगों की व्यक्तिगत साक्षी में जिनके जीवन स्थाई रूप से बदल गए थे। चूँकि मसीही धर्म का विश्वास-वचन एकीकृत किया हुआ है, इसलिये इसमें मानव जीवन से संबन्धित जटिल से जटिल प्रश्नों को भी हल करने की क्षमता पाई जाती है। बाइबल पर मेरे विश्वास ने और मेरे अनुभव ने मेरे सामने न केवल एक तर्कसंगत रूपरेखा ही रखी पर साथ ही मेरे जीवन में आनन्द और स्थिरता भी प्रदान की।

तब मैं सोचने लगा कि मुझे मेरे जीवन का स्रोत मसीह मिल गया है, क्योंकि पवित्रशास्त्र द्वारा मैंने यही जाना था। यह अचानक भावनात्मक शान्ति पहुँचाने वाला अनुभव था। किन्तु उस समय मुझे बड़ा धक्का सा लगा और मैं शोक से भर गया जब मैंने यह देखा कि इस बाइबल के सम्बन्ध में भिन्न-भिन्न व्याख्याओं का समर्थन किया जाता है और एक ही कलीसिया में बहुत से मतभेद पाये जाते हैं। मेरे लिये केवल यह स्वीकार करना ही पर्याप्त नहीं था कि बाइबल प्रेरणा प्राप्त और विश्वासयोग्य पवित्रशास्त्र है, यह तो केवल शुरुआत थी। मेरे सामने प्रश्न उठ खड़े हुए कि मैं कैसे उन विभिन्न परस्पर विरोधी व्याख्याओं को परखूँ और तिरस्कृत करूँ, जो ऐसे लोगों द्वारा बाइबल के कठिन पाठांशों पर की गईं थीं जो बाइबल के अधिकार और विश्वासयोग्यता का दावा करते थे। तब यही मेरे जीवन का उद्देश्य और मेरे विश्वास की तीर्थयात्रा बन गया। मैं जानता था कि मसीह पर विश्वास द्वारा मेरे जीवन में अद्भुत आनन्द व शान्ति आई है। तब अपनी संस्कृति और परस्पर विरोधी धार्मिक सिद्धान्तों और संप्रदायिक कट्टरता के मध्य कुछ श्रेष्ठ कार्य करने की मनोकामना मेरे मन में जागृत हुई। जब मैं प्राचीन साहित्य की सही व्याख्या करने के उपायों की खोजबीन में लगा हुआ था, तो मुझे स्वयं अपनी ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, संप्रदायिक और अनुभवात्मक पूर्व धारणाओं के बारे में जानकर बड़ा आश्चर्य हुआ। मैंने अक्सर केवल अपने ही विचारों को बढ़ावा देने के लिये बाइबल का अध्ययन किया था। मैंने बाइबल का उपयोग धर्म शिक्षा के स्रोत के रूप में केवल दूसरों पर प्रहार करने के लिये ही किया था, इस प्रकार मैंने स्वयं अपनी असुरक्षा और दुर्बलताओं को ही प्रकट किया। यह मेरे लिए बड़े अफसोस की बात थी।

हालांकि मैं कभी भी पूर्ण रूप से निष्पक्ष नहीं बन सकता हूँ तौभी मैं एक अच्छा बाइबल पाठक बन सकता हूँ। मैं अपनी पूर्वधारणाओं को पहचान कर और उन्हें अपने अन्दर पाकर उनसे छुटकारा पाने का प्रयत्न कर सकता हूँ। अभी तक मैंने इनसे छुटकारा नहीं पाया है, परन्तु मैंने अपनी दुर्बलताओं का सामना किया है। अक्सर व्याख्याकार अच्छे बाइबल पठन का घोर शत्रु होता है। आगे मैं अपनी कुछ पूर्वधारणाओं की सूची प्रस्तुत करना चाहता हूँ जिन्हें मैंने अपने बाइबल अध्ययन में शामिल किया है, ताकि आप जो पाठक हैं, उन्हें मेरे साथ जाँच सकें:

I. पूर्व धारणाएँ

1. मैं विश्वास करता हूँ कि बाइबल ही एकमात्र ऐसी प्रेरणाप्राप्त पुस्तक है जो एक सच्चे परमेश्वर का प्रकाशन करती है, इसलिये इसकी व्याख्या इसके दिव्य लेखकों के उद्देश्यों के अनुसार, मानवीय लेखकों द्वारा इसके विशिष्ट ऐतिहासिक संदर्भ में ही की जानी चाहिए।
2. मैं विश्वास करता हूँ कि बाइबल हर मनुष्य के लिये लिखी गई है। इसके द्वारा स्वयं परमेश्वर हम से हमारे ऐतिहासिक और सांस्कृतिक सन्दर्भ में स्पष्ट रूप से बातचीत करता है। परमेश्वर सत्य को छिपाता नहीं है बल्कि चाहता है कि हम सत्य को जानें और समझें, इसलिए बाइबल की व्याख्या हमारे युग के अनुसार नहीं बल्कि इसी के युग के सन्दर्भ में की जानी चाहिए। बाइबल का जो महत्व इसके प्रथम पाठकों और श्रोताओं के लिये था, वही महत्व हमारे लिए भी होना चाहिए। बाइबल को हर व्यक्ति समझ सकता है और इसमें सरल शब्दों और तरीकों को इस्तेमाल किया गया है।
3. मैं विश्वास करता हूँ कि बाइबल का सन्देश और उद्देश्य एकीकृत है। इसमें विरोधाभास नहीं पाया जाता है, हालांकि इसमें कुछ कठिन पाठांश अवश्य हैं, जो विरोधाभासी प्रतीत हो सकते हैं। अतः बाइबल स्वयं ही अपनी श्रेष्ठ व्याख्याकार है।
4. मैं विश्वास करता हूँ कि (भविष्यद्वाणियों को छोड़कर) बाइबल के प्रत्येक पाठांश का एक ही अर्थ है जो उसके प्रेरणाप्राप्त मूल लेखक के अभिप्राय पर आधारित है। हालांकि हम निश्चयपूर्वक नहीं कह सकते हैं कि हम लेखक का अभिप्राय जानते हैं, तो भी बहुत से ऐसे संकेत होते हैं जो हमें यह अभिप्राय बता देते हैं, जैसे:
    a. संदेश प्रस्तुत करने के लिए किस प्रकार की साहित्यिक शैली लेखक द्वारा अपनाई गई है।
    b. ऐतिहासिक पृष्ठभूमि या विशेष अवसर जब लेखक ने लेख लिखा।
    c. संपूर्ण पुस्तक का और प्रत्येक साहित्यिक इकाई का साहित्यिक संदर्भ।
    d. संपूर्ण संदेश से सम्बन्ध रखने वाले पाठांश की रूपरेखा।
    e. संदेश पहुँचाने में प्रयुक्त विशेष व्याकरण सम्बन्धी शैली।
    f. संदेश प्रस्तुत करने में चुने गए शब्द।

उपरोक्त प्रत्येक क्षेत्र का अध्ययन करना, हमारे बाइबल पाठ के अध्ययन का विषय बन जाता है। इससे पहले की मैं अच्छे बाइबल-पठन के अपने उपायों का उल्लेख करूँ, मैं कुछ गलत उपायों का उल्लेख करना चाहता हूँ जिन्हें आजकल इस्तेमाल किया जाता है, जिनके कारण व्याख्या में बहुत असमानताएँ आ जाती हैं, अतः ऐसे गलत उपायों का परित्याग करना चाहिए।

II. गलत उपाय

1. बाइबल की पुस्तकों के साहित्यिक सन्दर्भ की अवहेलना करना और प्रत्येक वाक्य, उपवाक्य अथवा किसी शब्द विशेष को सत्य कथन के रूप में प्रयोग करना जो मूल संदर्भ से बाहर और लेखक के उद्देश्य से मेल न रखता हो। इसे "पाठ-प्रमाण" कहा जाता है।
2. पुस्तकों के ऐतिहासिक वातावरण की अवहेलना करना और उसकी जगह काल्पनिक ऐतिहासिक वातावरण का प्रयोग करना जिसका पाठांश से तालमेल नहीं बैठता हो।
3. पुस्तकों के ऐतिहासिक वातावरण की अवहेलना करके उन्हें अखबार की तरह पढ़ना जो विशेषकर प्रत्येक आधुनिक मसीही जन के लिये लिखा गया हो।

4. पुस्तकों के ऐतिहासिक वातावरण की अवहेलना करके पाठांश के सन्देश को धर्मवैज्ञानिक अथवा दर्शनशास्त्रीय बना देना जिसका प्रथम श्रोताओं और मूल लेखक के अभिप्राय से कोई मतलब न हो।
5. पाठांशों के मूल सन्देश की अवहेलना करना और उसके स्थान पर स्वयं अपने धर्म-वैज्ञानिक सिद्धान्त, अपनी प्रिय धार्मिक-शिक्षा अथवा समकालीन मुद्दों की बातें ले आना जो मूल लेखक के अभिप्रायों और सिद्धान्तों से बिल्कुल भी मेल न खाते हों। अक्सर वक्ता अपना आधिपत्य जमाने के लिए बाइबल पठन को माध्यम बनाता है। इसे "पाठक का प्रत्युत्तर" कहा जाता है (अर्थात् "पाठांश का मेरे लिए क्या अर्थ है")

सभी लिखित मानवीय संपर्कों में कम से कम निम्नलिखित तीन बातें पाई जाती हैं:

बीते समय में, भिन्न-भिन्न पठन तकनीकों में उपरोक्त तीन में से केवल एक ही पर ध्यान केन्द्रित किया गया। सत्य कहें तो बाइबल की अलौकिक प्रेरणा के कारण निम्नलिखित संशोधित चित्र अधिक उपयुक्त प्रतीत होता है:

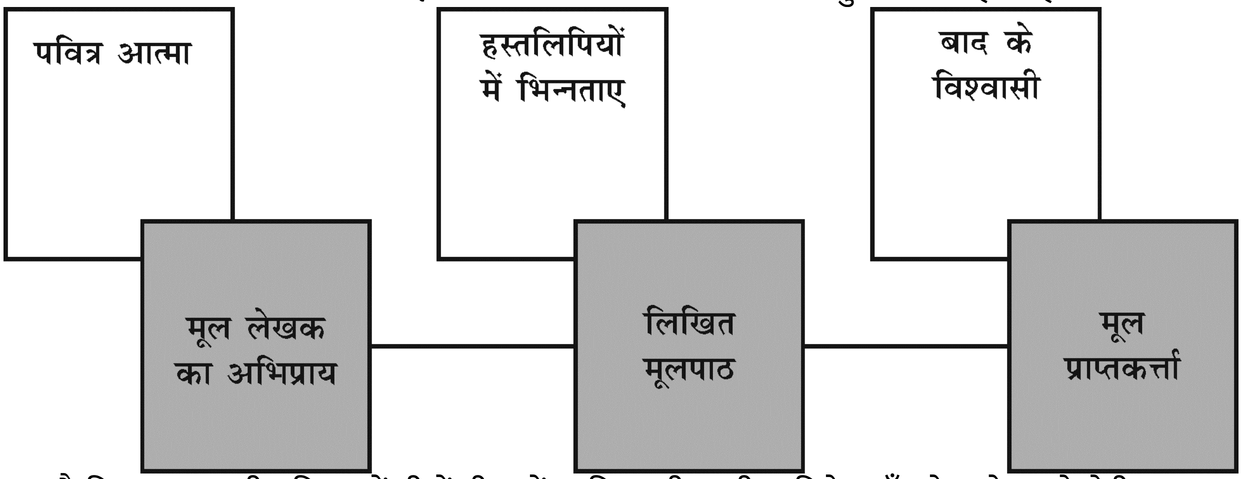

सच्चाई तो यह है कि व्याख्या की प्रक्रिया में तीनों ही बातें शामिल की जानी चाहिये। जाँच के उद्देश्य से मेरी व्याख्या पहली दो बातों पर आधारित होती हैं: मूल लेखक तथा मूल पाठ। जिन गलत बातों को करते हुए मैंने देखा है, उनका मैं विरोध करता हूँ (1) मूल पाठ को रूपक अथवा आध्यात्मिक बनाना तथा (2) "पाठक का प्रत्युत्तर" अर्थात् ("मेरे लिए क्या अर्थ है")। प्रत्येक स्तर पर दुरुपयोग किया जा सकता है। हमें हमेशा अपने उद्देश्यों, पूर्वधारणाओं, तकनीक और लागू करने की प्रक्रिया की जाँच करते रहने चाहिए। परन्तु हम जाँच कैसे करें, यदि व्याख्या की सीमा निर्धारित न हो अथवा मानदण्ड न हो? यहां हमें लेखक का उद्देश्य और मूलपाठ की संरचना सही व्याख्या करने का मानदण्ड प्रदान करते हैं।

बाइबल पठन के गलत उपायों को देखते हुए प्रश्न उठता है कि अच्छे बाइबल अध्ययन के व अच्छी व्याख्या करने के सही उपाय कौन-कौन से हैं ताकि सत्य का पता चल सके और लाभ प्राप्त किया जा सके?

III. अच्छे बाइबल पठन के संभावित उपाय

इस अवसर पर मैं किसी विशिष्ठ शैली की व्याख्या के लिए किसी निराली तकनीक का उल्लेख करने नहीं जा रहा हूँ बल्कि ऐसे सामान्य व्याख्यात्मक नियमों का उल्लेख करना चाहता हूँ जो सब प्रकार के बाइबल सम्बन्धित मूलपाठों की व्याख्यों करने के लिए मान्य हैं। इस सम्बन्ध में ज़ोन्डरसन द्वारा प्रकाशित पुस्तक लाभदायक हो सकती है, "How to Read the Bible For All Its Worth, by Gordon Fee & Douglas Stuart published by Zondervan"

मेरा तरीका विशेष रूप से पाठक पर केन्द्रित है जो पवित्र आत्मा को आगे दिए जाने वाले चार "व्यक्तिगत बाइबल पठन चक्रों" के माध्यम से बाइबल को समझाने की अनुमति देता है। इसमें पवित्र आत्मा, मूलपाठ तथा पढ़ने वाला

प्राथमिक स्थान रखते हैं, दूसरा स्थान नहीं। यह तरीका पाठक को बेवजह टीकाकारों से प्रभावित होने से बचाता है। मैंने किसी को यह कहते सुना है, ''परमेश्वर टीकाओं द्वारा अपने ज्ञान की ज्योति फैलाता है।'' यह कथन बाइबल सम्बन्धी सहायता सामग्रियों के उपयोग करने के विरुद्ध टिप्पणी नहीं है बल्कि उनके उपयोग के लिए उचित समय तक ठहरने का निवेदन है।

हमें अपनी व्याख्या को मूलपाठ पर आधारित रखने योग्य होना चाहिये। निम्नलिखित पाँच बातें हमें सीमित जाँच प्रदान करती हैं:

1. ऐतिहासिक वातावरण
2. साहित्यिक सन्दर्भ
3. व्याकरण सम्बन्धी बनावट
4. समकालीन शब्दावली
5. तालमेल रखने वाले समान्तर पाठांश
6. साहित्यिक शैली

हमें अपनी व्याख्या का कारण व तर्क प्रस्तुत करने योग्य होना चाहिए। हमारे लिये बाइबल ही एकमात्र विश्वास का और अभ्यास का स्रोत है। दुख की बात है कि अक्सर मसीही लोग आपस में इस बात पर मतभेद रखते हैं कि बाइबल क्या शिक्षा देती अथवा क्या मानती है। निम्नलिखित चार पठन चक्र हमें व्याख्यात्मक अन्तर्दृष्टि प्रदान करने के लिये प्रस्तुत किए जा रहे हैं:

1. पहला पठन चक्र
   a. पुस्तक को एक ही बैठक में पूरा पढ़ें। दुबारा निम्नलिखित अनुवादों में पढ़ें:
      (1) शाब्दिक अनुवाद (NKJV, NASB, NRSV)
      (2) समकक्ष श्रेष्ठ अनुवाद (TEV JB)
      (3) अपने शब्दों वाला अनुवाद (Living Bible, Amplified Bible)
   b. पूरे लेख का मूल अभिप्राय देखें व मूल विषय का पता लगाएँ।
   c. ऐसी साहित्यिक इकाई, अध्याय, पैराग्राफ अथवा वाक्य अलग करें जो मूल-विषय को स्पष्ट प्रकट करते हों।
   d. प्रबल साहित्यिक शैली पता लगाएँ
      (1) पुराना नियम
         a) इब्रानी वर्णन
         b) इब्रानी काव्य (बुद्धि साहित्य, भजन)
         c) इब्रानी भविष्यद्वाणी (गद्य, काव्य)
         d) व्यवस्था
      (2) नया नियम
         a)वर्णन (सुसमाचार, प्रेरितों के काम)
         b)दृष्टान्त (सुसमाचार)
         c)पत्रियाँ
         d)प्रकाशनात्मक साहित्य

2. दूसरा पठन चक्र:
   a. पूरी पुस्तक दुबारा पढ़ें और मुख्य विषयों व शीर्षकों को पहचानें
   b. मुख्य विषयों की रूपरेखा बनाएँ और साधारण शब्दों में उनकी विषयवस्तु बताएँ
   c. अपने कथन के उद्देश्य की जांच करें और सहायता सामग्री द्वारा रूपरेखा विस्तृत करें।

3. तीसरा पठन चक्र:
   a. पूरी पुस्तक दुबारा पढ़ें, पता लगाएँ कि बाइबल की वह पुस्तक किस ऐतिहासिक वातावरण में और किस ऐतिहासिक अवसर पर लिखी गई।
   b. बाइबल पुस्तक में लिखित ऐतिहासिक बातों की सूची बनाएँ

1) लेखक कौन है?
2) रचना तिथि क्या है?
3) प्राप्तकर्त्ता कौन है?
4) लिखने का कारण क्या है?
5) सांस्कृतिक वातावरण क्या है जो लिखने के उद्देश्य से सम्बन्ध रखता है?
6) ऐतिहासिक लोगों और घटनाओं के सन्दर्भ।

c. बाइबल की पुस्तक के जिस भाग की आप व्याख्या कर रहे हैं उसकी रूपरेखा को पैराग्राफ स्तर तक विस्तृत करें। सदैव साहित्यिक इकाई को पहचानें और उसकी रूपरेखा बनाएँ। ये कुछ अध्याय अथवा कुछ पैराग्राफ हो सकते हैं। इससे आपको मूल लेखक के तर्कों और मूलपाठ का आकार समझने में सहायता मिलेगी।

d. अध्ययन की सहायता-सामग्री का उपयोग करते हुए अपने ऐतिहासिक वातावरण की जाँच करें।

4. चैथा पठन चक्र:

a. अपनी विशिष्ट साहित्यिक इकाई को निम्न अनुवादों में दुबारा पढ़ें:
(1) शाब्दिक अनुवादों में (NKJV, NASB, NRSV)
(2) समकक्ष श्रेष्ठ अनुवादों में (TEV, JB)
(3) अपने शब्दों वाले अनुवादों में (Living Bible, Amplified Bible)

b. साहित्यिक तथा व्याकरणीय बनावट पता लगाएँ
(1) बार-बार प्रयुक्त हुए वाक्यांश, इफिसियों 1:6, 12, 14
(2) बार-बार प्रयुक्त व्याकरणीय बनावट, रोमियों 8:31
(3) विपरीत धारणाएँ व विचार

c. निम्नलिखित बातों की सूची बनाएँ
(1) महत्वपूर्ण शब्द
(2) असामान्य शब्द
(3) महत्वपूर्ण व्याकरणीय आकार
(4) विशेष कठिन शब्द, वाक्यांश और वाक्य

d. समानार्थी पाठांश देखें
(1) "व्यवस्थित धर्मविज्ञान पुस्तक, संदर्भ बाइबल तथा अनुक्रमाणिका का उपयोग करते हुए अपने विषय से सम्बन्धित सबसे स्पष्ट शिक्षात्मक पाठांश ढूँढ़ें।
(2) आपके विषय में पाए जाने वाले संभावित विरोधाभाषी शब्दों को ढूँढ़ें। बहुत सी सच्चाईयाँ प्रान्तीय बोलियों में प्रस्तुत की जाती हैं; बहुत से साम्प्रदायिक विवाद और आधे से ज़्यादा मतभेद मूलपाठ द्वारा उठ खड़े होते हैं। परन्तु सम्पूर्ण बाइबल प्रेरणा-प्राप्त है, इसलिए हमें इसके मूल सन्देश पर ध्यान लगाते हुए अपनी व्याख्या में सन्तुलन रखना चाहिए।
(3) जिस पुस्तक की आप व्याख्या कर रहे हों उसी पुस्तक में समान्तर पाठांशों और शैली को ढूँढ़ें। बाइबल अपनी व्याख्या स्वयं करती है क्योंकि इसका लेखक एक ही है, अर्थात् पवित्रात्मा।
(4) अपनी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि तथा वातावरण संबंधी विचारों की पुष्टि के लिए सहायक अध्ययन-सामग्री का उपयोग करें, जैसे:

e. स्टडी बाइबल का उपयोग
(1) बाइबल अनुक्रमाणिका, सहायक पुस्तिका, शब्दकोश इत्यादि
(2) बाइबल प्रवेशिका
(3) बाइबल टीकाएँ (अपने अध्ययन के इन अवसरों पर अपनी सहायता के लिये और अपने व्यक्तिगत अध्ययन की जाँच के लिए विश्वासियों को बुलाएँ)

IV. बाइबल व्याख्या को लागू करना:

अब हम बाइबल सन्देश को अपने जीवनों और अपनी संस्कृति में लागू करने पर विचार करेंगे जो एक अत्यन्त आवश्यक बात है। आपने अब तक बाइबल पाठ को उसके मूल स्वरूप में समझने में समय लगाया, अब आपको इसे अपने जीवन व अपनी संस्कृति में लागू करना चाहिए। मैं बाइबल के अधिकार की परिभाषा इस तरह करता हूँ, "बाइबल का मूल लेखक अपने युग के लोगों से जो बातें कहते थे, उन्हें अच्छी तरह समझना और उस सत्य को अपने समय की परिस्थितियों में लागू करना।"

मूल लेखक के अभिप्राय, समय और तर्क की व्याख्या करने के बाद ही लागू करने का कार्य किया जाना चाहिए। हम बाइबल पाठांश को अपनी परिस्थितियों पर तब तक लागू नहीं कर सकते हैं जब तक कि यह न जान लें कि यह अपनी परिस्थितियों में क्या कह रहा था। बाइबल पाठांश का वह अर्थ कभी भी नहीं लगाना चाहिए जो उसमें नहीं पाया जाता है।

पैराग्राफ स्तर पर बनाई गई आपकी विस्तृत रूपरेखा (पठन चक्र 3 देखें) ही आपका मार्गदर्शक होगी। लागू किया जाना शब्द स्तर पर नहीं परन्तु पैराग्राफ स्तर पर किया जाना चाहिए। शब्दों का अर्थ केवल सन्दर्भ में, उपवाक्यों का अर्थ केवल सन्दर्भ में, और वचनों का अर्थ केवल सन्दर्भ में ही पाया जाता है। व्याख्या की प्रक्रिया में केवल मूल लेखक ही प्रेरणा-प्राप्त व्यक्ति होता है। जो पवित्रात्मा की ओर से उसे प्रकाशन मिलता है, हम केवल उसी प्रकाशन का पालन करते हैं। परन्तु समझ प्राप्त करने को प्रेरणा प्राप्त करना नहीं कहा जाता है। यह कहने में कि "परमेश्वर कहता है" हमें इसमें मूल लेखक के उद्देश्य को स्वीकार करना चाहिए। लागू करने का सम्बन्ध विशेषकर सम्पूर्ण लेख के मूल उद्देश्य से होना चाहिए।

हमारी वर्तमान समस्याओं के अनुसार बाइबल की व्याख्या नहीं होनी चाहिए, परन्तु बाइबल की व्याख्या बाइबल ही के अनुसार की जानी चाहिए। इसके लिए हमें मूलपाठ से ही सिद्धान्त खोजने की आवश्यकता पड़ सकती है। यदि मूलपाठ हमारे सिद्धान्त का समर्थन करता है तो यह मान्य होगा। खेद की बात है कि अक्सर हमारे सिद्धान्त "हमारे-सिद्धान्त" बनकर रह जाते हैं, वे मूलपाठ के सिद्धान्त नहीं होते।

बाइबल को लागू करते समय यह बात याद रखना आवश्यक है कि (भविष्यद्वाणी को छोड़कर) किसी भी बाइबल मूलपाठ के लिए केवल एक ही अर्थ मान्य होता है। और यह अर्थ मूलपाठ के लेखक के अभिप्राय से सम्बन्धित होता है जैसा उसने अपने समय के लोगों की आवश्यकताओं अथवा संकट अवस्था के बारे में बताया है। इस एक अर्थ में से लागू करने वाली अनेक बातें निकाली जा सकती हैं। लागू करना प्राप्तकर्त्ताओं की आवश्यकता के अनुसार होता है, परन्तु यह मूल लेखक के अभिप्रायों से सम्बन्धित होना चाहिए।

V. व्याख्या का आध्यात्मिक पहलु:

अभी तक मैंने व्याख्या और लागू करने के दौरान होने वाली तार्किक प्रक्रिया का उल्लेख किया, अब मैं संक्षेप में व्याख्या के आध्यात्मिक पहलु पर विचार-विमर्श करना चाहता हूँ। निम्नलिखित जाँच सूची मेरे लिए बड़ी लाभदायक रही है:

1. पवित्र आत्मा की सहायता के लिए प्रार्थना करना (उदाहरणार्थ 1 कुरि. 1:26-2:16)
2. पापों से शुद्ध होने तथा व्यक्तिगत क्षमा प्राप्ति के लिये प्रार्थना करना (उदाहरणार्थ 1 यूह. 1:9)
3. परमेश्वर को गहराई के साथ जानने के लिए प्रार्थना करना (उदाहरणार्थ भजन 19:7-14; 42:1 क्रमशः; 119:1 क्रमशः)
4. नया प्रकाशन मिलते ही तुरन्त अपने जीवन में लागू करना।
5. विनम्र तथा सीखने का स्वभाव बनाए रखना।

पवित्र आत्मा की अगुवाई में चलने और तार्किक प्रक्रिया के अनुसार चलने के बीच सन्तुलन बनाए रखना बड़ा कठिन कार्य होता है। इन दोनों बातों के बीच सन्तुलन रखने के लिए निम्नलिखित तीन विद्वानों के कथनों से मुझे बड़ी सहायता मिली है:

1. जेम्स डब्ल्यू. सीयरे, स्क्रीपचर ट्वीस्टिंग, पेज 17-18: (James W. Sire, Scripture Twisting, pp. 17-18:)

"स्पष्टीकरण अथवा प्रकाशन परमेश्वर के लोगों को मिलता है, न कि केवल उन्हें जो आत्मिक रूप से श्रेष्ठ लोग होते हैं। बाइबल की मसीहियत में किसी गुरु की कक्षा नहीं होती है, न ही कोई ज्ञानी पुरुष होता है, और न ही ऐसे लोग होते हैं जो बिल्कुल सही व्याख्या करते हों। इसी कारण से जब पवित्र आत्मा अपने विशेष वरदान जैसे बुद्धि के वचन, ज्ञान की बातें और आत्माओं की परख इत्यादि प्रदान करता है, तो वह ऐसे वरदान प्राप्त मसीहियों को अपने वचन का एकमात्र अधिकारयुक्त व्याख्याकार नियुक्त नहीं करता। परमेश्वर के लोगों ही पर निर्भर होता है कि वे बाइबल से सीखें, जाँचें और परखें, जो कि एक अधिकारयुक्त पुस्तक है, यह पुस्तक उनके लिये भी अधिकारयुक्त पुस्तक है जिन्हें परमेश्वर ने विशेष योग्यताएँ व वरदान दिए हैं। सारांश में, बाइबल की सम्पूर्ण पुस्तकों के सम्बन्ध में मेरी पूर्वधारणा यह है कि सम्पूर्ण बाइबल मानव जाति के लिए परमेश्वर का सत्य प्रकाशन है, और जिन बातों की यह चर्चा करती है उनमें हमारी अन्तिम कसौटी है, इसकी बातें रहस्यपूर्ण नहीं हैं, समस्त संस्कृति के साधारण से साधारण लोग भी इसे अच्छी तरह समझ सकते हैं।"

2. किरकेगार्ड, प्रोटिस्टैन्ट बिबलीकल इन्टरप्रटेशन, पेज 75: (Bernard Ramm, Protestant Biblical Interpretation, p. 75 Kierkegaard)
   किरकेगार्ड के अनुसार बाइबल का व्याकरण सम्बन्धी, मूलपाठ संरचना सम्बन्धी और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में अध्ययन करना आवश्यक तो है, परन्तु इससे बढ़कर बाइबल का सच्चा अध्ययन है, "बाइबल को परमेश्वर के वचन के रूप में, सम्पूर्ण मन से, बड़ी आशाओं के साथ और परमेश्वर से बातचीत करते हुए पढ़ना चाहिए। बाइबल को बिना सोचे विचारे अथवा लापरवाही के साथ अथवा पाठ्य-पुस्तक के समान अथवा व्यवसायिक के रूप में पढ़ना, परमेश्वर के वचन के समान पढ़ना नहीं होता। जब कोई इसे प्रेम-पत्र के समान पढ़ता है, तब मानों वह परमेश्वर का वचन पढ़ता है।"
3. एच.एच. रौली - द रैवरेन्स आफ द बाइबल, पेज 19: (H. H. Rowley in The Relevance of the Bible, p. 19)
   "बाइबल का बौद्धिक ज्ञान प्राप्त कर लेना ही पर्याप्त नहीं होता। यह सम्पूर्ण ज्ञान नहीं है कि बाइबल का सारा ख़जाना प्राप्त कर सके। बाइबल ऐसे बौद्धिक ज्ञान को तुच्छ नहीं समझती है, क्योंकि सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त करने के लिये यह आवश्यक होता है। यदि इस ज्ञान को सम्पूर्ण ज्ञान कहलाना है तो इसे इस पुस्तक के आत्मिक खजाने की समझ प्रदान करने वाला आत्मिक ज्ञान होना चाहिए। और उस आत्मिक समझ के लिये बौद्धिक ज्ञान से बढ़कर किसी अन्य बात की आवश्यकता होती है। क्योंकि आत्मिक बातों की परख आत्मिक रीति से होती है। यदि बाइबल छात्र अपने वैज्ञानिक अध्ययन के परे जाकर महान पुस्तक बाइबल के असीम धन का उत्तराधिकारी बनना चाहता है तो उसे ऐसे स्वभाव की आवश्यकता है जो आत्मिक बातों को ग्रहण कर सके, अर्थात् उसके अन्दर परमेश्वर को पाने की अभिलाषा होनी चाहिये और परमेश्वर के प्रति समर्पण होना चाहिये।"

VI. इस टीका की विधि

इस टीका की रचना इस ढंग से की गई है कि आपकी व्याख्या प्रक्रिया को निम्न प्रकार से सहायता मिल सके:

1. संक्षिप्त ऐतिहासिक रूपरेखा प्रत्येक पुस्तक की जानकारी कराती है। जब आप "पठन चक्र 3" पूरा कर लें, तो यहां दी गई जानकारियाँ देखें।
2. प्रत्येक अध्याय के आरम्भ में मूलपाठ आधारित अन्तर्दृष्टियाँ दी गई हैं। इससे आपको यह जानने में सहायता मिलेगी कि साहित्यिक इकाई की संरचना किस प्रकार की है।
3. प्रत्येक अध्याय अथवा बड़ी साहित्यिक इकाई के आरम्भ में पैराग्राफ के विभाजन और उनके वर्णनात्मक शीर्षक दिये गये हैं, जो निम्नलिखित आधुनिक अनुवादों से लिए गये हैं:
   a. द यूनाइटिड बाइबल सोसायटी ग्रीक टैक्स्ट, चैथा संस्करण (UBS4)
   b. द न्यू अमेरियन स्टैन्डर्ड बाइबल, 1995 (NASB)
   c. द न्यू किंग जेम्स वर्ज़न (NKJV)

d. द रिवाइज़्ड स्टैन्डर्ड वर्ज़न (NRSV)
e. टूडेज़ इंगलिश वर्ज़न (TEV)
f. द न्यू जेरुसलेम बाइबल (NJB)

पैराग्राफ विभाजन प्रेरणा-प्राप्त नहीं है। इन्हें सन्दर्भ के आधार पर बनाया गया है। भिन्न-भिन्न अनुवादों की आपस में तुलना करने और धर्म-वैज्ञानिक सन्दर्भों के आधार पर हम मूल-लेखक के विचारों की संरचना का विश्लेषण कर पाए हैं। प्रत्येक पैराग्राफ में एक प्रमुख सच्चाई है। इसे "मूलपाठ का केन्द्रिय विचार" कहा जाता है। यही मूल विचार सही ऐतिहासिक व व्याकरणीय व्याख्या की कुंजी होता है। हमें कभी भी पैराग्राफ से कम पाठांश की व्याख्या नहीं करना चाहिये और न ही प्रचार करना अथवा सिखाना चाहिए। यह भी याद रखना चाहिये कि प्रत्येक पैराग्राफ अपने आसपास के पैराग्राफों से सम्बन्ध रखता है। इसी कारण से सम्पूर्ण पुस्तक की पैराग्राफ स्तर की रूपरेखा बहुत आवश्यक होती है। हमें प्रेरणा-प्राप्त मूल लेखक के किसी विषय पर दिए गये संदेश के तार्किक प्रवाह को समझने योग्य होना चाहिए।

4. बॉब के नोट्स में प्रत्येक पद की बारी-बारी से व्याख्या करने की विधि को अपनाया गया है। जो हमें मूल लेखक के विचारों का पालन करने के लिये बाध्य करते हैं। इनसे हमें निम्न क्षेत्रों की जानकारियाँ प्राप्त होती हैं:
   a. साहित्यिक सन्दर्भ की
   b. ऐतिहासिक और सांस्कृतिक अन्तर्दृष्टि की
   c. व्याकरणीय जानकारी
   d. शब्दों के अध्ययन की
   e. प्रासंगिक समान्तर पाठांशों की
5. टीका में कहीं-कहीं न्यू अमेरिकन स्टैण्डर्ड वर्ज़न (1995) के साथ अन्य अनुवाद भी दिए गये हैं जैसे:
   a. न्यू किंग जेम्स वर्ज़न (NKJV) जो प्रचलित अनुवाद है।
   b. द न्यू रिवाइज़्ड स्टैण्डर्ड वर्ज़न (NRSV) यह नेशनल काउन्सिल आफ चर्चेस का शाब्दिक अनुवाद है।
   c. द टूडेज़ इंगलिश वर्ज़न (TEV) यह अमेरिकन बाइबल सोसायटी का श्रेष्ठ अनुवाद है।
   d. द जरुसलेम बाइबल (JB)। यह फ्रेंच कैथोलिक अनुवाद पर आधारित एक इंगलिश अनुवाद है।
6. जो लोग यूनानी भाषा नहीं पढ़ सकते हैं, वे इंगलिश अनुवाद से तुलना करके पाठांश की समस्याएँ हल कर सकते हैं जैसे:
   a. हस्तलिपियों में अन्तर की समस्या
   b. शब्दों के अर्थ का विकल्प
   c. व्याकरण की दृष्टि से कठिन मूलपाठ और रूपरेखा
   d. अस्पष्ट मूलपाठ, हालांकि अंग्रेजी अनुवादों से यह समस्या दूर नहीं होती है, तौ भी वे गहन अध्ययन के लिये प्रेरित करते हैं।
   e. प्रत्येक अध्याय की समाप्ति पर विचार-विमर्श के लिये प्रासंगिक प्रश्न दिए गये हैं, जो उस अध्याय से सम्बन्धित व्याख्यात्मक समस्याओं को उजागर करते हैं।

Copyright 2013 Bible Lesson International

इस विषय में उपयोग किए जाने वाले अभ्युदय टीका

AB	एंकर बाइबल कमेन्ट्री, लेखक विलियम फॉक्सवेल तथा डेविड नोएल फ्रीमैन (Anchor Bible Commentaries, ed. William Foxwell Albrig)
ABD	एंकर बाइबल डिक्शनरी (6 खण्ड), लेखक डेविड नोएल फ्रीमैन (Anchor Bible Dictionary (6vols.), ed. David Noel Freedman)
AKOT	अनालिटिकल की टू द ओल्ड टैस्टामैन्ट, लेखक जॉन जोसफ ओवन्स (Analytical Key to the Old Testament by John Joseph Owens)
ANET	एन्शीएन्ट नियर ईस्टर्न टैक्सट, लेखक जेम्स बी. प्रीचर्ड (Ancient Near Eastern Texts, James B.Pritchard)
BDB	अ हीब्रू एण्ड इंगलिश लैक्सीकन ऑफ द ओल्ड टैस्टामैन्ट, लेखक एफ. ब्राऊन, एस.आर. ड्राईवर तथा सी.ए. ब्रिग्स (A Hebrew and English Lexicon of the Old Testament by F. Brown, S. R. Driver and C. A. Briggs)
IDB	द इन्टरप्रेटर्स डिक्शनरी ऑफ द बाइबल (4 खण्ड), लेखक जॉर्ज ए. बटरिक (The Interpreter's Dictionary of the Bible (4 vols.), ed. George A. Buttrick)
ISBE	इंटरनेशनल स्टैन्डर्ड बाइबल एन्सायक्लोपीडिया (5 खण्ड), लेखक जेम्स (International Standard Bible Encyclopedia (5 vols.), ed. James Orr)
JB	जरुसलेम बाइबल (Jerusalem Bible)
JPSOA	द होली स्क्रीपचर अर्कोर्डिंग टू द मसोरेटिक टैक्सट: ए न्यू ट्रान्सलेशन द ज्यूस पब्लिकेशन सोसायटी ऑफ अमेरिका (The Holy Scriptures According to the Masoretic Text: A New Translation (The Jewish PublicationSociety of America)
KB	द हीब्रू एण्ड अरामिक लैक्सीकन ऑफ द ओल्ड टैस्टामैन्ट, लेखक लुडविग कोहलर एण्ड वाल्टर बुमगार्टनर (The Hebrew and Aramaic Lexicon of the Old Testament by Ludwig Koehler and Walter Baumgartner)
LAM	द होली बाइबल फ्राम एन्शीएन्ट ईस्टर्न मैन्यूस्क्रीप्ट्स (द पेशिटा), लेखक जॉर्ज एम. लाम्सा (The Holy Bible From Ancient Eastern Manuscripts (the Peshitta) by George M. Lamsa)
LXX	सैप्टूअजैन्ट (ग्रीक-इंगलिश), लेखक ज़ोन्डरवैन, 1970 ए न्यू ट्रान्सलेशन ऑफ द बाइबल, लेखक जेम्स
MOF	माफेट (Septuagint (Greek-English) by Zondervan, 1970)
MOF	ए न्यू ट्रान्सलेशन ऑफ द बाइबल, लेखक जेम्स माफेट (A New Translation of the Bible by James Moffatt)
MT	मैसोरेटिक हीब्रू टैक्स्ट (Masoretic Hebrew Text)
NAB	न्यू अमेरिकन बाइबल टैक्स्ट (New American Bible Text)
NASB	न्यू अमेरिकन स्टैन्डर्ड बाइबल (New American Standard Bible)
NEB	न्यू इंगलिश बाइबल (New English Bible)
NET	न्यू इंगलिश ट्रान्सलेशन, सैकेन्ड बैटा एडीशन (New English Translation, Second Beta Edition)
NRSV	न्यू रिवाइज़्ड स्टैन्डर्ड वर्ज़न (New Revised Standard Bible)
NIDOTTE	न्यू इन्टरनेशनल डिक्शनरी ऑफ द ओल्ड टैस्टामैन्ट थियोलाजी एण्ड एग्ज़ेगेसिस (5 खण्ड), संपादक विलियम ए. वैनजेमरन (New International Dictionary of Old Testament Theology and Exegesis (5 vols.), ed. Willem A.VanGemeren)
NIV	न्यू इन्टरनेशनल वर्ज़न (New International Version)
NJB	न्यू जरूसलेम बाइबल (New Jerusalem Bible)
OTPG	ओल्ड टैस्टामैन्ट पासिंग गाईड, लेखक टाड एस. बिऑल, विलियम ए. बैंक्स तथा कॉलिन स्मिथ (Old Testament Passing Guide by Todd S. Beall, William A. Banks and Colin Smith)
REB	रिवाइज़्ड इंगलिश बाइबल (Revised English Bible)
RSV	रिवाइज़्ड स्टैण्डर्ड वर्ज़न (Revised Standard Version)
SEPT	द सैप्टूजैन्ट (ग्रीक-इंगलिश), लेखक जौन्डरवैन, 1970 (The Septuagint (Greek-English) by Zondervan, 1970)
TEV	टूडेज़ इंगलिश वर्ज़न द्वारा यूनाइटेड बाइबल सोसायटी (Today's English Version from United Bible Societies)
YLT	यंग्स लिटरल ट्रान्सलेशन आफ द होली बाइबल द्वारा रॉबर्ट यंगर् (Young's Literal Translation of the Holy Bible by Robert Young)
ZPBE	जौन्डरवैन पिक्टोरियल बाइबल एन्सायक्लोपीडिया (5 खण्ड), संपादक मैरिल सी. टैन्नी (Zondervan Pictorial Bible Encyclopedia (5 vols.), ed. Merrill C. Tenney)

Copyright 2013 Bible Lesson International

प्रेरितों के काम पुस्तक का परिचय

भूमिका

A. प्रेरितों के काम नामक पुस्तक प्रभु यीशु मसीह के जीवन चरित्र (सुसमाचारों) को, उसके चेलों द्वारा किये गये कार्यों, उपदेशों व प्रचार-सेवा तथा नए नियम की पत्रियों में उसकी शिक्षाओं को लागू करने के वृत्तान्तों से जोड़ती है। जो एक अद्‌भुत कार्य है।

B. प्रारम्भिक कलीसिया ने नए नियम के लेखों के दो संग्रहों को विकसित और वितरित किया (1) सुसमाचार (चारों सुसमाचार) और (2) पौलुस प्रेरित की पत्रियाँ। किन्तु प्रारम्भिक दो शताब्दियों में पाई जाने वाली भ्रान्त शिक्षाओं के कारण प्रेरितों के काम नामक इस पुस्तक का महत्व बढ़ गया। यह पुस्तक प्रेरितों की प्रचार सेवा *(केरिगमा)* की विषय-वस्तु और लक्ष्य को तथा सुसमाचार के अद्‌भुत प्रभाव को प्रकट करती है।

C. इसकी ऐतिहासिकता आधुनिक पुरातत्व विज्ञान द्वारा प्रमाणित और अनुमोदित है, विशेषकर रोमी सरकार के अधिकारियों के पदों और पदवियों के सम्बन्ध में, जैसे

1. *मुख्य न्यायाधीश स्ट्रेटगोई (stratēgoi),* प्रेरि. 16:20,22,35,36 (साथ ही मन्दिर के सिपाहियों का कप्तान, लूका 22:4, 52; प्रेरि. 4:1; 5:24-26)।
2. *नगर के अधिकारी (पौलीटरकास)* प्रेरि. 17:6,8; तथा द्वीप के प्रधान प्रोटो *(prōtō)* प्रेरि. 28:7, संदर्भ-(ए.एन. शेरविन वाईट, *रोमन सोसायटी एण्ड रोमन लाविन द न्यू टैस्टामैन्ट*) (cf.A.N Sherwin-White, *Roman Society and Roman Law in the New Testament).*

   फिर लूका द्वारा प्रारम्भिक कलीसिया की तनावपूर्ण स्थिति, यहाँ तक कि पौलुस और बरनबास के बीच झगड़े का उल्लेख करना (देखें प्रेरि. 15:39), इन सब बातों से प्रकट होता है कि यह पुस्तक प्रमाणिक, सन्तुलित और निष्पक्ष लेख है।

D. प्राचीन मूल यूनानी हस्तलिपियों में इस पुस्तक का शीर्षक ज़रा भिन्न पाया जाता है, जैसे:

1. हस्तलिपिא (सिनाएटिकस), तरतूलियन, डिडमुस तथा यूसेबियुस इसका शीर्षक “Acts” या ‘‘कार्य’’ देते हैं (ASV, NIV)
2. हस्तलिपि B (वैटिकानुस), D (बेज़ाए) में इरेनियस, तरतूलियन, सीरीयन और अथनासियुस द्वारा इसका शीर्षक ‘‘प्रेरितों के कार्य’’ दिया गया है (KJV, RSV, NEB)
3. हस्तलिपि A^2 (एलिकज़ैन्ड्रीयानुस का पहला संशोधन), E,G तथा ख्रासौस्टम द्वारा इसका शीर्षक ‘‘Acts of the Holy Apostles’’ (एक्ट्स ऑफ़ होली अपोसटल्स) दिया गया है।

   संभवतः यूनानी शब्द *praxies, praxis* (कार्य, तरीके, आचरण, अभ्यास) प्राचीन मैडीटेरियन साहित्यिक शैली को दर्शाते हैं जो प्रभावशाली और प्रसिद्ध व्यक्तियों के जीवन और कार्यों से सम्बन्ध रखते हैं (उदाहरणार्थ, यूहन्ना, पतरस, स्तीफानुस, फिलिप्पुस, पौलुस इत्यादि)। हो सकता है कि आरम्भ में लूका के सुसमाचार की तरह इस पुस्तक का भी कोई नाम न हो।

E. प्रेरितों के काम पुस्तक की दो भिन्न मूलपाठ संबंधी परम्पराएँ पाई जाती हैं। एलिकज़ैन्ड्रीयन हस्तलिपि छोटी है (MSSP^{45}, P^{74}, א , A, B, C)। ऐसा प्रतीत होता है कि पश्चिमी हस्तलिपियों (P^{29}, P^{38}, P^{48} व D) में कुछ और भी बातें जोड़ दी गई हैं। निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता है उन्हें लेखक ने लिखा अथवा बाद में प्रारम्भिक कलीसिया की परम्पराओं पर आधारित उन बातों को किसी लेखक द्वारा जोड़ दिया गया था। मूलपाठ विद्वानों में अधिकांश मानते हैं कि पश्चिमी (वेस्टर्न) हस्तलिपियों में उन्हें निम्न कारणों से जोड़ा गया:

1. वे सरल बनाना चाहती थीं अथवा असाधारण बात या कठिन पाठ जोड़ना चाहती थीं।
2. अतिरिक्त सामग्री जोड़ना चाहती थीं।
3. ऐसे वाक्यांश जोड़ना चाहती थीं जो यीशु के ‘‘मसीह’’ प्रमाणित करें
4. ऐसी बातें जोड़ना चाहती थीं जिन्हें पहली तीन शताब्दियों में प्रारम्भिक मसीही लेखकों में किसी ने नहीं लिखा।

सन्दर्भ एफ.एफ. ब्रूस, एक्ट्स: *ग्रीक टैक्स्ट,* पेज 69-80 (cf.*F.F. Bruce, Acts: Greek Text pp 69-80)*

अधिक जानकारी के लिए देखें(*ए टेक्सटुअल कमेंटरी ओन दी ग्रीक न्यू टेस्टामेंट बाय ब्रूस एम. मेट्जगरपेज* 259-272): (*A Textual Commentary on the Greek New Testament* by Bruce M. Metzger,pp 259-272) इसे यूनाइटिड बाइबल सोसायटी द्वारा छापा गया है।

इसके अलावा और भी बहुत से विकल्प हैं जिन्हें इस टीका में शामिल नहीं किया गया है। आवश्यकता पड़ने पर शामिल किया जा सकता है।

लेखक

A. पुस्तक का लेखक अज्ञात है, परन्तु निश्चयपूर्वक माना जाता है कि लेखक लूका है।
   1. पुस्तक में शब्द ‘‘हम’’ का प्रयोग दर्शाता है कि लूका ही इस पुस्तक का लेखक है। देखें प्रेरि.16:10-17 (फिलिप्पी की ओर पौलुस की दूसरी यात्रा);प्रेरि. 20:5-15; 21:1-18 (तीसरी मिशनरी यात्रा की समाप्ति) तथा प्रेरि. 27:1-28:16 (पौलुस को बन्दी बनाकर रोम भेजा जाना)।
   2. जब हम लूका 1:1-4 की तुलना प्रेरि. 1:1-2 से करते हैं तो दोनों पुस्तकों का सम्बन्ध स्पष्ट हो जाता है।
   3. लूका को, जो एक अन्यजाति वैद्य था, उसे कुलु. 4:10-14;फिलेमोन 24;तथा 2 तीमु. 4:11 में पौलुस का सहकर्मी कहा गया है। नए नियम में लूका ही एकमात्र अन्यजाति लेखक है।
   4. प्राचीन आरम्भिक कलीसिया की एकमत साक्षी है कि लूका ही इस पुस्तक का लेखक है
      a. रोम के मुराटोरियन अवशेष (a.d.180-200 बताते हैं, ‘‘वैद्य लूका ने इसे लिखा’’)(Muratorian Fragment)
      b. इरेनियस के लेख (a.d.130-200) (Irenaeus)
      c. सिकन्दरिया के क्लेमेन्ट के लेख (a.d.156-215) (Clement of Alexandria)
      d. तरतूलियन के लेख (a.d.160-200) (Tertullian)
      e. ओरीगेन के लेख (a.d.185-254) (Origen)
   5. आन्तरिक प्रमाण के तौर पर भाषा-शैली व शब्दावली (विशेषकर चिकित्सा संबंधी शब्द) प्रमाणित करते हैं कि लूका ही लेखक है (सर विलियम रैम्ज़े तथा अडाल्फ वान हारनेक)

B. लूका की जानकारी के तीन स्रोत हमारे पास हैं:
   1. नये नियम के तीन संदर्भ (कुलु. 4:10-14;फिलेमोन 24; 2 तीमु. 4:11) तथा स्वयं यह पुस्तक।
   2. दूसरी शताब्दी की, लूका की एन्टी-मारसियन (Anti-Marcion) प्रस्तावना (a.d.160-180)
   3. चौथीशताब्दी का इतिहासकार यूसेबियुस अपने *कलीसियाई इतिहास,* 3:4 Eusebius, *Ecclesiastical History,* 3:4, में कहता है, ‘‘लूका अन्ताकिया का निवासी और धन्धे से वैद्य था, विशेषकर पौलुस के साथ वह रहा, अन्य प्रेरितों के साथ उसका गहरा सम्बन्ध नहीं रहा, परन्तु उसने उनके द्वारा जो आत्मा की चंगाई पाई, उसके उदाहरण उसने हमारे लिये, अपनी दो प्रेरणा-प्राप्त पुस्तकों अर्थात् सुसमाचार और प्रेरितों के काम में लिख दिया।’’
   4. लूका के जीवन चरित्र की रूपरेखा:
      a. एक ग़ैरयहूदी (कुलु. 4:12-14 की सूची में इपफ्रस और देमास के साथ सूचीबद्ध, जो ग़ैरयहूदी सेवक थे, न कि यहूदी सेवकों के साथ)
      b. सीरिया के अन्ताकिया का निवासी (एन्टी-मारसियन प्रस्तावना) (Anti-Marcion prologue) अथवा मकदूनियाँ के फिलिप्पी का निवासी (सर विलियम रैमज़े प्रेरित 16:19) (Sir William Ramsay Acts 16:19)।
      c. एक वैद्य (कुलु. 4:14), अथवा एक पढ़ा-लिखा व्यक्ति
      d. युवावस्थामें उस वक्त मसीही बना जब अन्ताकिया में कलीसिया स्थापित हुई (एन्टी-मारसियन प्रस्तावना)
      e. पौलुस की यात्राओं में साथी (प्रेरितों के काम पुस्तक के ‘‘हम’’ परिच्छेद)
      f. अविवाहित
      g. तीसरे सुसमाचार और प्रेरितों के काम का लेखक (एक जैसी प्रस्तावना और एक जैसी शब्दावली तथा शैली)
      h. 84 वर्ष की आयु में बोईयोशिया में देहान्त

C. लूका लेखक है-इस विषय में चुनौतियाँ:
    1. एथेन्स के मार्स पर्वत पर पौलुस अपने प्रचार में "सामान्य आधार" स्थापित करने के लिए दार्शनिक शब्दों का प्रयोग करता है (देखें प्रेरि. 17), परन्तु रोमियों 1-2 में "सामान्य आधारों" को निरर्थक ठहराता हुआ प्रतीत होता है (स्वभाव, आन्तरिक नैतिक साक्षी)
    2. प्रेरितों के काम में पौलुस का प्रचार और उसकी टिप्पणियाँ उसे एक यहूदी मसीही के रूप में चित्रित करती हैं जो मूसा को गम्भीरता से लेता है, परन्तु पौलुस की पत्रियाँ व्यवस्था को समस्याएँ उत्पन्न करने वाली और मिटने वाली बताती हैं।
    3. प्रेरितों के काम में, पौलुस के प्रचार में हम प्रभु के दूसरे आगमन संबंधी वैसी बातें नहीं पाते हैं जैसी कि उसकी आरम्भिक पुस्तकों मेंपाते हैं (अर्थात् 1, 2 थिस्सलुनीकियों में)।
    4. इस प्रकार का शब्दों, शैलियों और बल दिए जाने का अन्तर रोचक तो है, परन्तु इससे हम कोई निर्णय नहीं निकाल सकते हैं। यदि इसी मानदण्ड को हम सुसमाचारों पर लागू करें तो पाएंगे कि यूहन्ना के सुसमाचार में यीशु का चरित्र चित्रण बिल्कुल भिन्न प्रकार से दिया हुआ है, तौ भी कोई विद्वान इस बात का इंकार नहीं करेगा कि सभी सुसमाचारों में यीशु का जीवन चरित्र पाया जाता है।

D. प्रेरितों के काम के लेखक के संबंध में विचार-विमर्श करते समय लूका के स्रोतों पर विचार करना बड़ा कठिन है क्योंकि बहुत से विद्वान जैसे सी.सी. टोरे (C.C.Torrey) मानते हैं कि लूका ने पहले पन्द्रह अध्यायों में अनेक बार अरामी दस्तावेज़ों का स्रोत के रूप में प्रयोग किया है अथवा मौखिक परम्पराओं का उपयोग किया है। यदि इसे सत्य मानें तो लूका इस सामग्री का लेखक नहीं, परन्तु संपादक ठहरता है। पौलुस के बाद के भाषणों में भी लूका ने पौलुस के शब्दों का सारांश दिया है न कि उसके शब्दशः विवरण का उल्लेख किया है। लूका के स्रोतों के इस्तेमाल पर बातचीत करना उतना ही कठिन है जितना यह प्रमाणित करना कि वही पुस्तक का लेखक है।

तिथि

A. इस विषय में बड़ा वाद-विवाद और असहमति पाई जाती है कि यह पुस्तक कब लिखी गई, परन्तु स्वयं घटनाएँ लगभग ई. 30-63 के मध्य घटीं, (पौलुस रोम के कारावास से सन् 60 के मध्य में स्वतन्त्र हुआ था, तथा नीरो सम्राट के राज्यकाल में दुबारा बन्दी बना लिया गया और सताया गया;यह सताव संभवतः सन् 65 में हुआ)।

B. यदि हम इस पुस्तक को रोमी सरकार से अपने धर्म की रक्षा करनेवालासाहित्य मानते हैं, तो इसकी रचना तिथि (1) 64 ई. से पहले की ठहरती है (जो रोम में मसीहियों पर नीरो के सताव का आरम्भ था) अथवा (2) रचना तिथि सन् 66-73 के यहूदी-विद्रोह से संबंधित होती है।

C. यदि हम प्रेरितों के काम की पुस्तक को लूका रचित सुसमाचार से क्रमबद्ध करने का प्रयत्न करते हैं तो सुसमाचार लिखने की तिथि-प्रेरितों के काम को लिखने की तिथि पर प्रभाव डालती है। चूँकि रोमी सम्राट टाईटसद्वारा ई. सन् 70 में यरूशलेम के पतन की भविष्यद्वाणी की जा चुकी थी (अर्थात् लूका 21), परन्तु उसका उल्लेख नहीं किया गया, तो इससे रचना तिथि सन् 70 से पहले की ठहरती है, यदि यह सही है तो प्रेरितों के काम की पुस्तक की तिथि सुसमाचार के बाद की तिथि हो सकती है।

D. यदि हम प्रेरितों के काम की पुस्तक के अचानक समाप्त होने से चिन्तित हैं जबकि पौलुस अभी तक रोम में बन्दी था एफ.एफ. ब्रूस (F. F. Bruce) तो रचना तिथि पौलुस के पहली बार रोम में बन्दी होने के अन्त में अर्थात् ई. सन् 58-63 के मध्य उचित ठहरती है।

E. प्रेरितों के काम में लिखित ऐतिहासिक घटनाओं से संबंधित कुछ ऐतिहासिक तिथियाँ:
  1. क्लौदीयुस के शासनकाल में अकाल आना (प्रेरि. 11:28, सन् 44-48)
  2. हेरोदस अग्रिप्पा की मृत्यु (प्रेरि. 12:20-23, सन् 44 (वसंत ऋतु))
  3. सरगियुस पौलुस का राज्यपाल बनाया जाना (प्रेरि. 13:7, सन् 53)
  4. क्लौदीयुस द्वारा यहूदियों का रोम से निष्कासन (प्रेरि. 18:2, सन् 49 [?])
  5. गल्लियों का राज्यपाल बनाया जाना (प्रेरि. 18:12, सन् 51 अथवा 52 [?])

6. फेलिक्स का राज्यपाल बनाया जाना (प्रेरि. 23:26; 24:27, सन् 52-56 [?])
7. फेलिक्स को बदलकर फेस्तुस की नियुक्ति (प्रेरि. 24:27, सन् 57-60 [?])
8. यहूदिया के रोमी अधिकारी:
   a) राज्यपाल
      (1) पिन्तेयुस पिलातुस, सन् 26-36
      (2) मारसिलस, सन् 36-37
      (3) मारूलुस, सन् 37-41
   b) सन् 41 में रोमी साम्राज्य द्वारा राज्यपाल के स्थान पर सम्राट नियुक्त किये जानेलगे। रोमी सम्राट क्लौदीयुस ने सन् 41 में हेरोदेस अग्रिप्पा 1 को नियुक्त किया।
   c) सन् 44 में हेरोदेस अग्रिप्पा 1 की मृत्यु के बाद फिर से सन् 66 तक राज्यपालनियुक्त होते रहे।
      (1) अन्टोनियुस फेलिक्स
      (2) पोरसियुस फेस्तुस

उद्देश्य तथा रूपरेखा

A. प्रेरितों के काम नामक इस पुस्तक को लिखने का पहला उद्देश्य यह था कि यीशु के जो चेले उपरौठी कोठरी में बन्द होकर और यहूदीवाद में बंधे बैठे थे, उनकी शीघ्रगति से होने वाली बढ़ोत्तरी को, उनकी सेवकाई को विश्वव्यापी बनने और रोमी सम्राट कैसर तक उनकी पहुँच को दर्शाया जा सके।
   1. यह भौगोलिक नमूना प्रेरि. 1:8 से बंधा हुआ है, जो इस पुस्तक की महान आज्ञा है(मत्ती 28:19-20)
   2. यह भौगोलिक विस्तार विभिन्न प्रकार से दर्शाया गया है।
      a. बड़े शहरों और राष्ट्रीय सीमाओं का उपयोग हुआ है। प्रेरितों के काम की पुस्तक में 32 देशों, 54 शहरों तथा 9 भूमध्य सागर के टापूओं का उल्लेख पाया जाता है। तीन प्रमुख शहर हैं, यरूशलेम, अंताकिया तथा रोम (उदाहरणार्थ प्रेरि. 9:15)
      b. विशेष चुने हुए व्यक्तियों का उपयोग। इस पुस्तक को दो भागों में बाँटा जा सकता है:पतरस की सेवकाई और पौलुस की सेवकाई। इसमें लगभग 95 से अधिक लोगों का उल्लेख पाया जाता है परन्तु उनमें मुख्य हैं: पतरस, स्तिफनुस, फिलिपस, बरनबास, याकूब और पौलुस।
      c. इसमें दो या तीन साहित्यिक शैलियाँ बार-बार अपनाई गई हैं जिनका लेखक पर प्रभाव दिखाई देता:

(1) सारांश की टिप्पणियाँ	(2) बढ़तरी टिप्पणियाँ	(3) गिनती का उपयोग
		2:41
प्रेरि प्रेरित 1:1-6:7 (यरूशलेम में)	2:47	4:4
प्रेरि प्रेरित 6:8-9:31 (पलीस्तीन में)	5:14	5:14
प्रेरि.प्रेरित 9:32-12:24 (अंताकिया को)	6:7	6:7
प्रेरि. प्रेरित 12:25-15:5 (एशिया माइनर को)	9:31	9:31
प्रेरि. प्रेरित 16:6-19:20 (यूनान को)	12:24	11:21, 24
प्रेरि. प्रेरित 19:21-28:31 (रोम को)	16:5	12:24
	19:20	14:1
		19:20

B. प्रेरितों के काम की पुस्तक स्पष्ट रूप से उन गलतफहमियों से संबंध रखती है जो एक देशद्रोही के रूप में यीशु की मृत्यु का कारण रही थीं। लूका गैर यहूदियों को पुस्तक लिख रहा है यह बात स्पष्ट दिखाई देती है (संभव है थियोफिलुस एक रोमी अधिकारी था)। वह (1) पतरस, स्तिफनुस और पौलुस के भाषणों को यहूदियों के षड्यन्त्र प्रकट करने के लिए प्रयुक्त करता है (2) औरमसीही धर्म के प्रति रोमी सरकारी अधिकारियों के सकारात्मक व्यवहार को भी दिखाता है। यीशु के अनुयायियों से रोमियों को भयभीत होने की कोई ज़रूरत नहीं थी।
   1. मसीही अगुवों के भाषण:
      a) a.पतरस, प्रेरि.2:14-40; 3:12-26; 4:8-12; 10:34-43
      b) b.स्तिफनुस, प्रेरि.7:1-53

c) c.पौलुस, प्रेरि. 13:10-42; 17:22-31; 20:17-25; 21:40-22;21; 23:1-6; 24:10-21; 26:1-29

2. सरकारी अधिकारियों से संपर्क:
   a) पिन्तेयुसपिलातुस, लूका 23:13-25
   b) सिरगियुस पौलुस, प्रेरि.13:7, 12
   c) फिलिप्पी के मुख्य न्यायाधीश, प्रेरि.16:35-40
   d) गल्लियो, प्रेरि.18:12-17
   e) इफिसुस के एशियाई अधिकारी, प्रेरि. 19:23-41 (विशेषकर पद 31)
   f) क्लौदियुस लूसियास, प्रेरि. 23:29
   g) फेलिक्स, प्रेरि.24
   h) पुरखियुस फेस्तुस, प्रेरि 24
   i) अग्रिप्पा-1, प्रेरि. 26 (विशेषकर पद 32)
   j) पुबलियुस, प्रेरि.28:7-10
3. जब हम पतरस और पौलुस के भाषणों की परस्पर तुलना करते हैं तो पता चलता है कि पौलुस परिवर्तन लाने वाला व्यक्ति नहीं, परन्तु एक विश्वासयोग्य सुसमाचार प्रचारक था। पतरस नकल करने वाला मनुष्य था (1 पतरस) उसने पौलुस की शब्दावली और वाक्यांशों का प्रयोग किया।*करिगमा Kerygma* एक हो गया!

C. लूका ने रोमी सरकार से केवल मसीही धर्म की ही रक्षा नहीं की है परन्तु साथ ही उसने पौलुस की भी ग़ैरयहूदी कलीसियाओं से रक्षा की है। पौलुस पर बार-बार (यहूदियों के हमले हुए, गलातिया के यहूदियों की ओर से, 2 कुरि. 10-13) के "श्रेष्ठ प्रेरितों" की ओर से तथा (हेलेनीवादी समूहों की ओर से जिन्हें कुलुस्सियों और इफिसियों) की पत्री में ज्ञानवादी लोग कहा गया है। लूका ने पौलुस की धर्म-वैज्ञानिक शिक्षा और उसके हृदय को उसकी यात्राओं और उपदेशों के माध्यम से स्पष्ट प्रकट किया है।

D. हालांकि इस पुस्तक का उद्देश्य सैद्धान्तिक शिक्षा देना नहीं है, तौ भी इसमें आरम्भिक प्रेरितों के प्रचार की मूल बातें पाई जाती हैं जिन्हें (सी.एच. डाड "द*करिगमा*" असेंशल ट्रुथ अबाउट जीसस) कहता है (C.H.Dodd "*the Kerygma*" essential truths about Jesus) अर्थात् यीशु के विषय में आवश्यक सच्चाईयाँ। इससे हमें यह जानने में सहायता मिलती है कि सुसमाचार की किन बातों को वे अति आवश्यक समझा करते थे, अर्थात् वे बातें जो यीशु की मृत्यु व पुनरुत्थान से संबंधित थीं।

विशेष विषय: आरम्भिक कलीसिया का *करिगमा*

मसिहत के बारे में बहुत सारे मत हैं। हमारा दिन पहली सदी की तरह ही धार्मिक बहुलवाद का दिन है। व्यक्तिगत रूप से, मैं उन सभी समूहों को पूरी तरह से शामिल करता हूं जो को कहते हैं की वे यीशु मसीह को जानते हैं। हम सभी इस या उस के बारे में असहमत हैं, लेकिन मूल रूप से मसीहत यीशु के बारे में है। हालांकि, ऐसे समूह भी हैं जिनका कहना है "जो एक जैसे दिखते हैं" या "जॉनी-आओ-लैटेलीज़ वो मसीह हैं ।" मैं अंतर कैसे बता सकता हूँ?
खैर, इसके दो तरीके हैं:

A. यह जानने के लिए एक सहायक पुस्तक है कि आधुनिक पंथ समूह क्या मानते हैं (अपने ग्रंथों से) वाल्टर मार्टिन द्वारा द किंगडम ऑफ द कल्ट्स *The Kingdom of the Cults* by Walter Martin.

B. प्रेरितों की पुस्तक में विशेष रूप से प्रेरित पतरस और पॉल के शुरुआती चर्च के उपदेश, हमें इस बात की एक बुनियादी रूपरेखा प्रदान करते हैं कि पहली सदी के प्रेरित लेखकों ने विभिन्न समूहों में मसीहत को कैसे प्रस्तुत किया। यह प्रारंभिक "उद्घोषणा" या "उपदेश" (जिसमें से प्रेरितों के काम एक सारांश है) ग्रीक शब्द केरगमा द्वारा जाता है। प्रेरितों के काम में यीशु के बारे में सुसमाचार के मूल सत्य निम्नलिखित हैं:
   1. कई पुराने नियम की भविष्यवाणियों को पूरा करता है - प्रेरितों के काम 2:17-21,30-31,34; 3:18-19,24; 10:43; 13:17-23, 27; 33: 33-37,40-41; 26: 6-7,22-23
   2. यहोवा (YHWH) द्वारा प्रतिज्ञा के रूप में भेजा गया - प्रेरितों के काम 2:23; 3:26
   3. अपने संदेश की पुष्टि करने और परमेश्वर की करुणा प्रकट करने के लिए चमत्कार किया - प्रेरितों 2:22; 3:16; 10:38
   4. वितरित, विख्यात - प्रेरितों 3: 13-14; 4:11
   5. क्रूस पर चढ़ाया - प्रेरितों 2:23; 3: 14-15; 4:10; 10:39; 13:28; 26:23
   6. जीवन के लिए उठाया - प्रेरितों 2: 24,31-32; 3:15,26; 4:10; 10:40; 13:30; 17:31, 26, 37

7. परमेश्वर के दाहिने हाथ की तरफ बैठा - प्रेरितों के काम 2:33-36; 3:13,21.
8. फिर आएँगे - प्रेरितों 3: 20-21
9. नियुक्त न्यायाधीश - प्रेरितों 10:42; 17:31
10. पवित्र आत्मा भेजी - प्रेरितों 2: 17-18,33,38-39; 10: 44-47
11. विश्वास करने वाले सभी लोगों के लिए उद्धारकर्ता - प्रेरितों 13: 38-39
12. कोई और उद्धारकर्ता नहीं है - प्रेरितों 4:12; 10: 34-36

इन सत्य अपोस्टोलिक स्तंभों का जवाब देने के कुछ तरीके यहां दिए गए हैं:

1. पश्चाताप - प्रेरितों 2:38; 3:19; 17:30; 26:20
2. विश्वास - प्रेरित 2:21; 10:43; 13: 38-39
3. बपतिस्मा लें - प्रेरितों 2:38; 10: 47-48
4. आत्मा को प्राप्त करें - प्रेरितों 2:38; 10:47
5. सभी आ सकते हैं - प्रेरित 2:39; 03:25; 26:23

इस ढांचे ने शुरुआती चर्च की आवश्यक उद्घोषणा के रूप में कार्य किया, हालांकि नए नियम के विभिन्न लेखक अपने लेखन में एक हिस्से को छोड़ सकते हैं या अन्य विवरणों पर जोर दे सकते हैं। मार्क का पूरा सुसमाचार करीगामा के पेट्रिन पहलू का बारीकी से अनुसरण करता है। मार्क को पारंपरिक रूप से पतरस के उपदेशों के रूप में देखा जाता है, रोम में उपदेशित, एक लिखित सुसमाचार में। मत्ती और लुका दोनों मार्क की मूल संरचना का पालन करते हैं।

Copyright © 2014 Bible Lessons International

E. अपने टीका ग्रन्थ, (*दी बुक आफ एक्ट्स, दी अर्ली स्ट्रगल ऑफ़ एन. अनहिन्डरड गोस्पल में फ्रैंक स्टैग*बताते हैं(Frank Stagg*The Book of Acts, the Early struggle for an unhindered Gospel),* कि पुस्तक का मूल उद्देश्य मुख्य रूप से यीशु के सुसमाचार का आन्दोलन है, जो पहले राष्ट्रवादी यहूदी धर्म का था पर बाद में एक सम्पूर्ण मानव जाति के लिएविश्वव्यापी सन्देश बन गया। स्टैग की टीका लूका के द्वारा प्रेरितों के काम लिखे जाने के उद्देश्य पर ध्यान केन्द्रित करती है। इसके पेज 1 से 18 में विभिन्न विचारधाराओं का श्रेष्ठ विश्लेषण किया गया है और सारांश दिया गया है। स्टैग विशेष रूप से प्रेरि. 28:31 में पाए जाने वाले शब्द “बिना किसी रूकावट” पर बल देता है, जो किसी पुस्तक को समाप्त करने का असामान्य तरीका है और इससे हम यह भी जान पाते हैं कि मसीही धर्म का विस्तार हर बाधा पर विजयी होता है।

F. हालांकि प्रेरितों के काम पुस्तक में पवित्र आत्मा का जिक्र 50 से अधिक बार तक किया गया है, तौ भी इस पुस्तक का नाम “पवित्र आत्मा के कार्य” नहीं है। इस पुस्तक में ग्यारह अध्याय ऐसे हैं जिनमें पवित्र आत्मा का उल्लेख बिल्कुल भी नहीं है। पवित्र आत्मा का विशेषकर उल्लेख पुस्तक के पहले आधे भाग में पाया जाता है जहाँ लूका अन्य स्रोतों का उपयोग करता है (संभवतः मूल में वे अरामी भाषा में लिख गये थे)। सुसमाचारों में जो महत्व यीशु का था, वैसा महत्व पवित्र आत्मा का प्रेरितों के काम पुस्तक में नहीं है। इस कथन का अर्थ यह नहीं कि पवित्र आत्मा का मूल्य कम किया जा रहा है, परन्तु यह हमारी चेतावनी के लिए है कि हम प्रेरितों के काम की पुस्तक से पवित्र आत्मा सम्बन्धी कोई धर्म-वैज्ञानिक सिद्धान्त निर्मित करने का प्रयत्न न करें।

G. प्रेरितों के काम पुस्तक सैद्धान्तिक शिक्षा की पुस्तक नहीं है जैसा कि फी तथा स्टूअर्ड, अपनी पुस्तक *हाव् टू रीड बाइबल फॉर आल इट्स वर्थ*पेज 94-112 में कहते हैं (cf.Fee and Stuart, *How to Read the Bible For All Its Worth,*pp.94-112). यदि हम प्रेरितों के काम पुस्तक पर आधारित मन-परिवर्तन विषय पर कोई धर्म-वैज्ञानिक शिक्षा निर्मित करना चाहें तो यह कार्य असफल होगा क्योंकि इस पुस्तक में मन-परिवर्तन का क्रम और तरीका बिल्कुल भिन्न है, तब कौन सा तरीका उपयुक्त होगा? इसके लिये हमें पत्रियों की सहायता लेनी पड़ेगी।
फिर भी, यह बड़ी रोचक बात है कि कुछ विद्वानजैसे हेन्स कौन्ज़लमैन (Hans Conzelmann) मानते हैं कि लूका ने प्रथम शताब्दी की युगान्त सम्बन्धी शिक्षाओं को बदलकर दूसरे आगमन की बाट जोहने वाली शिक्षा बनाया है। परमेश्वर का राज्य सामथ्र्य में हमारे मध्य में है और जीवन परिवर्तित हो रहे हैं। कलीसिया अभी कार्यों में व्यस्त है और सबका ध्यान कलीसिया पर है न कि युगान्त की आशा पर।

H. प्रेरितों के काम की पुस्तक का एक और उद्देश्य रोमियों 9-11 के समान है कि यहूदियों ने क्यों यहूदी-मसीहा को तुच्छ जाना और अधिकांश कलीसियाएँ ग़ैरयहूदी कलीसियाएँ क्यों बन गईं? प्रेरितों के काम पुस्तक के कई स्थलों में सुसमाचार के विश्वव्यापी स्वरूप को स्पष्ट रूप से पराजित होना पड़ा। यीशु चेलों को सारे संसार में भेजता है (देखें

प्रेरि. 1:8)। यहूदियों ने उसका तिरस्कार किया, परन्तु ग़ैरयहूदियों ने उसे सकारात्मक प्रत्युत्तर दिया। उसका सन्देश रोम तक पहुंचता है।

यह हो सकता है कि लूका का उद्देश्य यह दर्शाना हो कि यहूदी-मसीहियत (पतरस) तथा ग़ैरयहूदी मसीहियत (पौलुस) एक साथ रह सकते हैं और बढ़ सकते हैं। वे एक दूसरे के प्रतिद्वंद्वी नहीं, परन्तु विश्व भर में सुसमाचार पहुंचाने की सेवकाई में परस्पर जुड़े हुए हैं।

I. जहाँ तक इस पुस्तक के उद्देश्य का प्रश्न है तो मैं एफ.एफ. ब्रूस के मत से सहमत हूँ, जैसाकि वे(*न्यू इन्टरनेशनल कमेन्ट्री),* पेज 18 पर कहते हैं, *(*F.F. Bruce *New International commentary,p.18)* "चूंकि लूका और प्रेरितों के काम की पुस्तक मूलरूप से एक ही पुस्तक है, इसलिए लूका की भूमिका (1:1-4) प्रेरितों के काम की भूमिका पर भी लागू होती है। लूका हालांकि सारी घटनाओं का चश्मदीद गवाह नहीं था, पर उसने सावधानीपूर्वक सब बातों की खोजबीन की और उन्हें ठीक-ठीक लिख दिया और स्वयं अपनी ऐतिहासिक, साहित्यिक व धर्मवैज्ञानिक रूपरेखा का प्रयोग किया।

फिर लूका अपनी दोनों पुस्तकों द्वारा ऐतिहासिक सच्चाई और यीशु तथा कलीसिया की धर्म वैज्ञानिक शिक्षा की विश्वासयोग्यता (लूका 1:4) को दर्शाना चाहता है। हो सकता है कि प्रेरितों के काम की पुस्तक का मूल विषय उस शब्द पर ध्यान देना और उनको पूरा करना है जो पुस्तक के अन्तिम शब्द हैं-"बिना किसी रूकावट के" प्रेरि. 28:31। इन्हीं शब्दों का विभिन्न शब्दों व वाक्यांशों का प्रयोग करके पालन किया गया हो देखें(इंटरप्रेटिंग दी बुक्स आफ एक्ट्स बाय वाल्टर.एल.लफेल्डपेज 23-24)।*(*cf. Walter L. Liefeld, *Interpreting the Book of Acts, pp.*23-24)सुसमाचार कोई नई बात नहीं, न ही ऐसा विचार है जो बाद में आया हो परन्तु परमेश्वर द्वारा पहले ही से निर्धारित योजना है जैसा कि इन पदों से प्रमाणित होता है: (प्रेरि. 2:23; 3:18; 4:28; 13:29)।

शैली, ढंग

A. पुराने नियम के लिये यहोशू की पुस्तक से लेकर 2 राजाओं की पुस्तक तक जो महत्व है, वही महत्व नये नियम के लिए प्रेरितों के काम नामक पुस्तक रखती है (देखें परिशिष्ट 3)। बाइबल के ऐतिहासिक विवरण सत्य तो हैं, परन्तु घटनाक्रम की क्रमबद्धता परध्यान केन्द्रित नहीं किया जाता है। बाइबल कुछ घटनाओं को चुन लेती है और उनके माध्यम से बताती है कि परमेश्वर है कौन, और हम उसके साथ अपना सम्बन्ध कैसे सुधार सकते हैं, और परमेश्वर हम से किस प्रकार का जीवन चाहता है कि हम जीवन जीएँ।

B. बाइबल के वृत्तान्तों की व्याख्या करने में सबसे बड़ी परेशानी यह है कि: (1) लेखक नहीं बताता है कि उसका उद्देश्य क्या है? (2) मूल सच्चाई क्या है? (3) हमें उसके द्वारा लिखित बातों का अनुसरण कैसे करना चाहिये? इसलिए पढ़ने वाले व्यक्ति को निम्न प्रश्नों के आधार पर विचार करना चाहिए:
   1. घटना को क्यों लिखा गया?
   2. पहले लिखी हुई बातों से इसका क्या सम्बन्ध है?
   3. केन्द्रिय धर्म-वैज्ञानिक सच्चाई क्या है?
   4. क्या इसमें कोई प्रभावशाली बात है?(क्या कहीं और यही बात कही गई?)
   5. विवरण कितना लम्बा है? (कभी-कभी विस्तृत विवरण एक ही विषय पर होता है।)

C. ऐतिहासिक विवरण को धर्मशिक्षा का एकमात्र स्रोत नहीं बनाना चाहिए। अक्सर लिखित बातें लेखक के उद्देश्य में आकस्मिक होती हैं। ऐतिहासिक विवरण बाइबल में लिखित कहीं और की सच्चाई को स्पष्ट कर सकता है। किसी घटना के घटित होने का यह कदापि अर्थ नहीं है कि सभी विश्वासियों के लिये सभी युगों में वह परमेश्वर की इच्छा है (जैसे, आत्म-हत्या किया जाना, बहु-विवाह, धर्मयुद्ध, साँपों को पकड़ लेना इत्यादि)।

D. बाइबल के ऐतिहासिक विवरणों की किस प्रकार से अच्छी व्याख्या की जा सकती है, इस विषय में अच्छा संक्षिप्त विवरणजिसका नाम है: (गौरडन फी और डगलस स्टूअर्ट *हाओ टू रीड दी बाइबल फॉर इट्स वर्थ पेज 78-93;94-112)*की पुस्तक में पाया जाता है(Gordon Fee and Douglas Stuart'sH*ow to Read the Bible For All Its Worth*, pp 78-93;94-112)

ऐतिहासिक संदर्भ में बाइबल संबंधी पुस्तकें:

प्रेरितों के काम की पुस्तक को प्रथम शताब्दी के वातावरण में प्रस्तुत करने वाली अनेक नई पुस्तक श्रेष्ठ विद्वानों द्वारा लिखी गई हैं जिनसे नया नियम को समझने में बहुत सहायता मिलती है। पुस्तकों की श्रृंखला का संपादन कार्य ब्रूस एम. मिन्टर द्वारा किया गया है, पुस्तकों के नाम इस प्रकार हैं:

A. *दी बुक आफ एक्ट्स इन इट्स इंसेंट लिटररी सेटिंग (The Book of Acts in its Ancient Literary Setting)*
B. *दी बुक आफ एक्ट्स इन इट्स गरेको-रोमन सेटिंग (The Book of Acts in its Graeco-Roman Setting)*
C. *दी बुक आफ एक्ट्स एंड पॉल इन रोमन कस्टडी (The Book of Acts and Paul in Roman Custody)*
D. *दी बुक आफ एक्ट्स इन इट्स पैलेसटीनियन सेटिंग (The Book of the Acts in its Palestinian Setting)*
E. *दी बुक आफ एक्ट्स इन इट्स डायस्पोरा सेटिंग (The Book of Acts in its Diaspora Setting)*
F. *दी बुक आफ एक्ट्स इन इट्स थीओलोजीकल सेटिंग (The Book of Acts in its Theological Setting)*

निम्न पुस्तकें भी लाभदायक हैं:

1. ए.एन.शेरविन -वाइट, रोमन सोसायटी लाविन एंड रोमन लाविनदी न्यू टेस्टामेंट (A.N. Sherwin-White, Roman Society and Roman Lawin the New Testament)
2. *पॉलबर्नेट, जीसस एंड राइज ऑफ़ अर्लीक्रिसचैनीटी* (Paul Barnett, *Jesus and the Rise of Early Christianity)*
3. *जेम्स एस. जेफर्स, दी ग्रीको-रोमन वर्ल्ड* (James S. Jeffers, *The Greco-Roman World)*

बाइबल पठन चक्र पहला: (इसे "अच्छे बाइबल पठन मार्गदर्शन से लिया गया है") "A Guide to Good Bible Reading"

यह अध्ययन की मार्गदर्शक टीका है, जिसका अर्थ है कि आप बाइबल की व्याख्या करने के स्वयं ही उत्तरदायी हैं। हम में से हर एक को उसी आत्मिक ज्ञान के अनुसार चलना चाहिए जितना हमारे पास है। व्याख्या प्रक्रिया में आप, पवित्रशास्त्र बाइबल तथा पवित्र आत्मा का प्रमुख स्थान है। अपना यह कार्य टीकाकार पर मत छोड़िए।

संपूर्ण पुस्तक को एक ही बैठक में पूरा पढ़ें। संपूर्ण पुस्तक का मूल विषय अपने शब्दों में व्यक्त करें।

1. संपूर्ण पुस्तक का विषय
2. साहित्यिकप्रकार (शैली)

बाइबल पठन चक्र दो: (इसे "अच्छे बाइबल पठन मार्गदर्शन से लिया गया है") "A Guide to Good Bible Reading"

यह अध्ययन की मार्गदर्शक टीका है, जिसका अर्थ है कि आप बाइबल की व्याख्या करने के स्वयं ही उत्तरदायी हैं। हममें से हर एक को उसी आत्मिक ज्ञान के अनुसार चलना चाहिए जितना हमारे पास है। व्याख्या प्रक्रिया में आप, पवित्रशास्त्र बाइबल, तथा पवित्र आत्मा का प्रमुख स्थान है। अपना यह कार्य टीकाकार पर मत छोड़िए।

संपूर्णबाइबल पुस्तक को दुबारा एक ही बैठक में पढ़ें। मुख्य विषय की रूपरेखा बनाएँ और एक वाक्य में विषय को व्यक्त करें।

1. पहली साहित्यिक इकाई का विषय
2. दूसरी साहित्यिक इकाई का विषय
3. तीसरी साहित्यिक इकाई का विषय
4. चौथीसाहित्यिक इकाई का विषय
5. इत्यादि।

Copyright © 2013 Bible Lessons International

प्रेरितों के काम-1

बाइबल के विभिन्न आधुनिक अनुवादों में पैराग्राफ-विभाजन*

UBS[4]	NKJV	NRSV	TEV	NJB
पवित्र आत्मा की प्रतिज्ञा	भूमिका	भूमिका: पुनरुत्थित मसीह	भूमिका	भूमिका
1:1-5	1:1-3	1:1-5	1:1-5	1:1-5
	पवित्र आत्मा की प्रतिज्ञा			
यीशु का स्वर्गारोहण	1:4-8	स्वर्गारोहण	यीशु का स्वर्ग पर उठा लिया जाना	स्वर्गारोहण
1:6-11		1:6-11	1:6 1:7-9	1:6-8
	यीशु का स्वर्ग पर उठा लिया जाना			
	1:9-11			1:9-11
			1:10-11	
यहूदा का उत्तराधिकारी चुना जाना	ऊपरी कक्ष में प्रार्थना सभा	बारह चेलों का इकट्ठा होना	यहूदा का उत्तराधिकारी	प्रेरितों का समूह
1:12-14	1:12-14	1:12-14	1:12-14	1:12-14
	मत्तियाह का चुन लिया जाना			यहूदा की जगह दूसरे की नियुक्ति
1:15-26	1:15-26	1:15-26	1:15-17 1:18-19 1:20 1:21-22 1:23-26	1:15-20 1:21-22 1:23-26

* हालांकि ये विभाजन प्रेरणा प्राप्त नहीं हैं, पर मूल लेखक के अभिप्राय को समझने और उसका पालन करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। प्रत्येक आधुनिक अनुवाद मे पैराग्राफ बनाए गए हैं और सारांश दिया गया है। हर पैराग्राफ का एक मूल विषय एक सच्चाई और एक ही विचार है। प्रत्येक अनुवाद अपने ढंग से विषय को प्रकट करता है। आपको स्वयं निर्णय करना है कि विषय को और पदों को समझने के लिए कौन सा अनुवाद आपके लिए सही है।

हर अध्याय में हमें पहले बाइबल को पढ़ना अनिवार्य है और पहचानना है कि मूल विषय कौन से हैं, उसके बाद अपनी समझ की तुलना विभिन्न अनुवादों को लेकर कीजिए। जब हम मूल लेखक के उद्देश्य को तथा उसकी प्रस्तुति के तर्क को अच्छी तरह समझ लेंगे, केवल तभी बाइबल को अच्छी तरह समझ सकेंगे। केवल मूल लेखक ही पवित्र आत्मा द्वारा प्रेरणा प्राप्त जन है, इसलिये पाठक को कोई अधिकार नहीं कि संदेश में परिवर्तन करें या उसमें संशोधन करें। बाइबल पाठक का कत्र्तव्य है कि प्रेरणा प्राप्त सच्चाई को अपने जीवनों पर और अपनी परिस्थितियों पर लागू करें।

स्मरण रखें कि सब विशेष शब्दों और सांकेतिक शब्दों को निम्नलिखित पुस्तकों में समझाया गया है: ग्रीक की संक्षिप्त परिभाषा; व्याकरण की संरचना; पाठात्मक आलोचना और शब्दावली Brief Definitions of Greek; Grammatical Structure; Textual Criticism, and Glossary

पठन चक्र तीसरा ("अच्छे बाइबल अध्ययन का मार्गदर्शन" से)

पैराग्राफ स्तर पर मूल लेखक के अभिप्राय को समझना

यह अध्ययन की मार्गदर्शक टीका है जिसका मतलब है कि आप स्वयं बाइबल की अपनी व्याख्या के जिम्मेदार हैं। हमारे पास जितना ज्ञान है, हम में से प्रत्येक को उसी के अनुसार चलना चाहिए। आप, बाइबल तथा पवित्र आत्मा व्याख्या प्रक्रिया में मुख्य स्थान रखते हैं। यह कार्य टीकाकार पर नहीं छोड़ना चाहिए।

अध्याय को एक ही बैठक में पूरा पढ़ें। विषयों को पहचानें। अपने विषय विभाजन को पाँच आधुनिक अनुवादों से तुलना करें। पैराग्राफ प्रेरणा प्राप्त नहीं होते, पर ये मूल लेखक के अभिप्राय को समझने की कुंजी होते हैं जो व्याख्या की आवश्यक बात है। हर पैराग्राफ में केवल एक ही विषय होता है।

1. पहला पैराग्राफ
2. दूसरा पैराग्राफ
3. तीसरा पैराग्राफ
4. इत्यादि

शब्दों और वाक्यांशों का अध्ययन

प्रेरितों के काम 1:1-5 (**प्रचलित हिन्दी अनुवाद**) (BSI)
[1]**हे थियुफिलुस, मैंने पहली पुस्तिका उन सब बातों के विषय में लिखी जो यीशु आरम्भ से करता और
सिखाता रहा,** [2] **उस दिन तक जब तक वह उन प्रेरितों को जिन्हें उसने चुना था पवित्र आत्मा के द्वारा आज्ञा
देकर ऊपर उठाया न गया।** [3] **उसने दुःख उठाने के बाद बहुत से पक्के प्रमाणों से अपने आपको उन्हें
जीवित दिखाया, और चालीस दिन तक वह उन्हें दिखाई देता रहा, और परमेश्वर के राज्य की बातें करता
रहा।** [4] **और उनसे मिलकर उन्हें आज्ञा दी, "यरूशलेम को न छोड़ो, परन्तु पिता की उस प्रतिज्ञा के पूरे
होने की बाट जोहते रहो, जिसकी चर्चा तुम मुझ से सुन चुके हो।** [5] **क्योंकि यूहन्ना ने तो पानी में बपतिस्मा
दिया है परन्तु थोड़े दिनों के बाद तुम पवित्र आत्मा से बपतिस्मा पाओगे।"**

1:1 "मैंने पहली पुस्तिका. लिखी" यह वाक्यांश भूतकालीन क्रिया का सूचक है, जिसका शाब्दिक अर्थ है "मैंने रचना की।" स्पष्ट रूप से लूका दोनों ही पुस्तकों का लेखक है-लूका रचित सुसमाचार तथा प्रेरितों के काम (तुलना करें, लू. 1:1-4 व प्रेरि. 1:1-2)। यूनानी भाषा में शब्द "पुस्तिका" का प्रयोग ऐतिहासिक विवरण लिखने में प्रयुक्त किया जाता था। उच्च कोटि की यूनानी भाषा में इसका अर्थ, कम से कम तीन कामों में से एक काम। प्रेरितों के काम पुस्तक की अचानक समापित से कहा जा सकता है कि लूका की योजना थी कि एक और पुस्तक लिखे। कुछ विद्वानों का अनुमान भी है कि पास्तरीय पत्रियाँ (1 व 2 तीमुथियुस तथा तीतुस) संभवतः लूका द्वारा लिखी गईं।

- "**थिथुफिलुस**": यह नाम दो शब्दों से बना है (1) परमेश्वर (ज्मवे) तथा (2) भाईचारा (चीपसवे)। जिसका अनुवाद **"**परमेश्वर का प्रिय**"**, "परमेश्वर का मित्र" अथवा "परमेश्वर से प्रेम रखने वाला" किया जा सकता है। लूका 1:3 में पाई जाने वाली पदवी "हे श्रीमान" किसी सरकारी रोमी अधिकारी की प्रतिष्ठा में दी गई पदवी हो सकती है (जैसे प्रेरि. 23:26; 24:3; 26:25)। संभवतः रोमी समाज में इसका प्रयोग घुड़सवारों के लिये होता था। हो सकता है, लूका की दोनों पुस्तकों के लिखने, वितरण करने और नकल कराए जाने में उसने सहयोग किया हो। कलीसियाई परम्परा में उसका नाम टी. फ्लेवियुस क्लेमैन्स माना जाता है जो दोमित्यान का चचेरा भाई था (ई. 24-96)।
- "**जो यीशु आरम्भ से सिखाता रहा**": यह लूका रचित सुसमाचार की ओर संकेत है। रोचक बात है कि लूका कहता है कि उसने "सब" बातें लिखीं जिन्हें यीशु करता व सिखाता रहा, क्योंकि लूका के सुसमाचार में केवल चुनी हुई बातें ही लिखी हैं (जैसा कि अन्य सहदर्शी सुसमाचारों में है)

1:2 "उस दिन तक… जब तक वह *स्वर्ग* न उठाया गया" इसका वर्णन लूका 24:51 में है। (नीचे दिया गया विशेष शीर्षक पढ़ें)

विशेष शीर्षक: ऊपर उठाया जाना

यीशु स्वर्ग से धरती पर आया था (देखें फिलि. 2:6-7; 2 कुरि. 8:9) अपने स्वर्गारोहण के समय वह फिर से अपनी उस महिमा में लौट गया, जो उनकी जगत में आने से पहले थी (देखें, यूहन्ना 1:1-3; 17:5; इफि. 4:10;1 तीमु. 3:16; 1 यूहन्ना 1:2)। अब वह पिता परमेश्वर के दाहिने हाथ पर विराजमान है (देखें, भजन 110:1; लूका 22:69; प्रेरि. 2:33; रोमि. 8:34; इफि. 1:20; कुलु. 3:1; इब्रा. 1:3; 8:1; 10:12; 12:2;1 पत. 3:22)। स्वर्गारोहण, परमेश्वर पिता की ओर से यीशु के जीवन और मृत्यु को मान्यता दिया जाना और अनुमोदित करना है। यीशु के स्वर्गारोहण को समझाने के लिए यूनानी भाषा के बहुत से शब्द प्रयोग में लाए गए हैं :

1. प्रेरि. 1:2,11,22; अनालाबानो, (*analambanō*) अर्थात ऊपर उठाया जाना (देखें 1 तीमु. 3:16)
2. प्रेरि. 1:9, इपेरो (*epairō*) अर्थात ऊपर उठाना, उन्नत करना, ऊंचा करना।
3. लूका 9:51, अनालैप्सिस,(*analēpsis*) (#1 के समान उठाया जाना)
4. लूका 24:51, डिस्टेमी, *(diistēmi)* अर्थात अलग हो जाना।

   यूहन्ना रचित सुसमाचार में यीश के वापस स्वर्ग में लौट जाने के अनेक संकेत पाए जाते हैं (जैसेः यूहन्ना 7:33; 8:14,21; 12:33-34;13:3,33,36; 14:4,5,12,28; 16:5,10,17,28; 26:17)।
5. यूहन्ना 3:13; 20:17, आना बीबेकन, ऊपर नहीं गया।
6. यूहन्ना 6:62, अनाबायनो*(analambanō),* ऊपर जाना

   स्वर्गारोहण की घटना का उल्लेख मत्ती और मरकुस के सुसमाचारों में नहीं किया गया है। मरकुस रचित सुसमाचार 16:8 पर समाप्त हो जाता है, परन्तु बाद के तीन परिशिष्टों में से एक ने मार्क 16:19 में स्वर्गारोहण की घटना का उल्लेख किया है अर्थात अनालमबानो(*analambanō*) स्वर्ग में उठा लिया गया।

प्रेरितों के काम नामक पुस्तक में यीशु के स्वर्ग में होने के कुछ संकेत पाए जाते हैं :

1. पतरस - प्रेरि. 2:33;3:21
2. स्तिफनुस - प्रेरि. 7:55-56
3. पौलुस - प्रेरि. 9:3,5; 22:6-8; 26:13-15

Copyright © 2014 Bible Lessons International

- **"पवित्र आत्मा के द्वारा आज्ञा देकर"** नीचे दिया हुआ विशेष शीर्षक पढ़ें:

विशेष शीर्षक: पवित्र आत्मा का व्यक्तित्व

पुराने नियम में "परमेश्वर का आत्मा" (अर्थात रूआख [*Ruach*]) एक सामर्थ व बल था, जो यहोवा (YHWH) की इच्छा व उदेश्यों को पूरा करता था, परन्तु एक ज़रा सा इस बात का भी संकेत था कि यह एक व्यक्तित्व है (अर्थात पुराने नियम का एकेश्वरवाद, देखें विशेष विषय : "एकेश्वरवाद" (MONOTHEISM)।लेकिन नए नियम में पवित्र आत्मा का संपूर्ण व्यक्तित्व व मनुष्यत्व प्रकाशित किया गया है :

1. पवित्र आत्मा की निन्दा की जा सकती है (देखें, मत्ती 12:31; मर. 3:29)
2. पवित्रआत्मा सिखाता है (देखें, लूका 12:12; यूहन्ना 14:26)
3. वह गवाही देता है (देखें यूह. 15:26)

4. वह कायल करता और मार्गदर्शन करता है (यूहन्ना 16:7-15)
5. उसे "वह" कह गया है (इफि. 1:14) (अर्थात् *hos*)
6. वह शोकित हो सकता है (इफि. 4:30)
7. उसे बुझाया जा सकता है (1 थिस्स. 5:19)
8. उसका विरोध किया जा सकता है (प्रेरि. 7:51)
9. वह विश्वासियों की सहायता करता है (यूहन्ना 14:26; 15:26; 16:7)
10. वह पुत्र की महिमा करता है (यूहन्ना 16:14)

ट्रीनीटेरियन मूलपाठ (*Trinitarian Text*) भी तीन व्यक्तित्वों के बारे में बताता है (देखें विशेष विषय : त्रिएकत्व (The Trinity)।

1. मत्ती 28:19
2. 2 कुरि. 13:14
3. 1 पतरस 1:2

हालांकि यूनानी भाषा में जो पवित्रआत्मा के लिए शब्द (*Pneuma*) न्यूमा है वह नपुंसक लिंग (*Neuter*) में है, तौ भी नया नियम अक्सर पुरुषवाचक विशेषण का प्रयोग करता है (यूहन्ना 16:8, 13-14)।
पवित्र आत्मा मानवीय क्रिया से जुड़ा है :

1. प्रेरि. 15:28
2. रोमि. 8:26
3. 1 कुरि. 12:11
4. इफि. 4:30

प्रेरितों के काम नामक पुस्तक के आरम्भ ही से पवित्रआत्मा की भूमिका पर बल दिया गया है (जैसाकि यूहन्ना रचित सुसमाचार में है)। पिन्तेकुस्त पवित्रआत्मा के कार्यों का आरम्भ नहीं था बल्कि एक नए अध्याय का आरम्भ था। यीशु में सदैव पवित्रआत्मा रहता था। उसका बपतिस्मा पवित्र आत्मा के कार्य का आरम्भ नहीं परंतु एक नए अध्याय का आरम्भ था। पतित मानवजाति की पुनर्स्थापना के लिए, जो परमेश्वर के स्वरूप पर सृजी गई थी, पवित्रआत्मा परमेश्वर का प्रभावशाली माध्यम है, ताकि उसके द्वारा पिता परमेश्वर की अनन्त योजना पूरी हो सके। (देखें विशेष विषय : "यहोवा (YHWH) की उद्धार संबंधी अनन्त योजना।" (YHWH's Eternal Redemptive Plan)।

Copyright © 2014 Bible Lessons International

- **"आज्ञा देकर"** यह लूका 24:44-49, मत्ती 28:18-20 तथा प्रेरि. 1:8 में दी गई बातों की ओर संकेत करता है।

- **"आज्ञा"** यह भूतकालीन क्रिया है। कुछ विद्वान कहते हैं, यह प्रेरि. 1:8 की ओर संकेत है (देखें मत्ती 28:19-20; लू. 24:45-47 अथवा लू. 24:49)। कलीसिया के दो स्थाई कार्य हैं:
  1. सुसमाचार प्रचार तथा मसीह की तरह परिपक्व बनना; प्रत्येक विश्वासी को इन्हें प्राप्त करने के लिये बाट जोहना चाहिए।
  2. अन्य लोग मानते हैं कि इसका संकेत इस बात की ओर है कि जब तक पवित्र आत्मा की सामर्थ न आए, यरूशलेम में ही ठहरे रहें (जैसे प्रेरि. 1:4; लू. 24:49)

- **"प्रेरित"** प्रेरितों के नाम की सूची प्रेरि. 1:13 में देखें।

- "**उसे चुना गया**" यह (*eklegō*) भूतकालीन क्रिया है, इसके दो अर्थ हो सकते हैं। पुराने नियम में इसका संकेत सेवा करने के लिए चुना जाना है न कि उद्धार पाने के लिये, परन्तु नए नियम में इसका अर्थ आत्मिक उद्धार से है। यहाँ पर इसका प्रयोग दोनों अर्थों में है (जैसे लूका 6:13)।

- 1:3 "**अपने आप को जीवित दिखाया**" संभवतः इसका संकेत उपरौठी कोठरी में चेलों को लगातार तीन रविवार तक यीशु द्वारा दर्शन दिए जाने की ओर है, परन्तु साथ ही अन्य दर्शन की ओर भी संकेत हो सकता है (जैसे 1 कुरि. 15:5-8) यीशु का जी उठना सुसमाचार की सत्यता का प्रमाण है (देखें प्रेरि. 2:24, 32; 3:15, 26; 4:10; 5:35; 10:40; 13:30, 33, 34, 37; 17:31; तथा विशेषकर 1 कुरि. 15:12-19,20)। नीचे यीशु के पुनरुत्थान के बाद दिए गए दर्शनों की सूची दी जा रही है जिसे पौल बरनेट ने अपनी पुस्तक जिसस एंड दी राईस ऑफ़ दी अर्ली क्रिस्चानिटी पेज 185 (Paul Barnett, *Jesus and the Rise of EarlyChristianity*, p. 185) में दिया है:

यूहन्ना	**मत्ती**	**लूका**	**1 कुरिन्थियों**
	यरूशलेम में दर्शन देना		
मरियम को (यूह. 20:15)			
	महिलाओं को (मत्ती. 28:9)		
		शमौन को (लू. 24:34)	
			कैफा (1 कुरि. 15:5)
		इम्माऊस के मार्ग पर दो (लू. 24:15)	
		चेलों को (लू. 24:36)	12 प्रेरितों को (1 कुरि 15:5)
दस चेलों को (यूह. 20:19)			
ग्यारह चेलों को (यूह. 20:26)			
	गलील में दर्शन देना		
			500+विश्वासी (1 कुरि. 15:16 संभवत ; मत्ती 28:16-20 से संबंधित)
			याकूब (1 कुरि. 15:7)
सात चेलों को (यूह. 21:1)			
	सभी चेलों को (मत्ती. 28:16-20)		
	यरूशलेम में दर्शन		
		ऊपर उठाया जाना (लू. 24:50-51)	सब प्रेरितों को (1 कुरि. 15:7)

NASB, NRSV
NIV "बहुत से कायल करने वाले सबूतों द्वारा"

NKJV "अनेक ठोस प्रमाणों से"
TEV "अनेक संदेह रहित प्रमाणों के साथ"
NJB "बहुत से प्रमाणों द्वारा"

नए नियम में केवल यहीं पर शब्द टेकमेरिआन (*tekmērion*) प्रयोग किया गया है। मोल्टन और मिलीगन की पुस्तक, पेज 628 (Moulton and Milligan, *The Vocabulary of the Greek Testament*, p. 628) पर इस शब्द पर रोचक विवरण पाया जाता है, जहाँ इसका अर्थ है "बहुत से पक्के प्रमाणों द्वारा।" इस शब्द का प्रयोग Wisdom of Solomon 5:11 य 19:3 में तथा III Maccabees 3:24 में भी हुआ है।

▪ **"उसने दुःख उठाने के बाद"** सुसमाचार के इस वाक्यांश को यहूदी विश्वासी बड़ी मुश्किल से स्वीकार करते थे (उदाहरणार्थ देखें 1 कुरि. 1:23)। मसीह के दुःखों का वर्णन पुराने नियम में भी किया गया है (उदाहरणार्थ उत्पत्ति 3:15; भजन संहिता 22; यशायाह 53; जकर्याह 10:12 और लूका 24:45-47 पर भी ध्यान दें) प्रेरितों के प्रचार में यह सबसे बड़ी धर्म-वैज्ञानिक शिक्षा थी (प्रेरि. 2:14 पर केरिगमा के संबंध में विशेष टिप्पणी देखें)

लूका अक्सर यीशु के दुःखों (*paschō*)और क्रूस की मृत्यु का वर्णन करते हुए अनिश्चित काल की क्रिया का उपयोग करता है (उदाहरणार्थ देखें लूका 9:22; 17:25; 22:15; 24:26, 46; प्रेरि. `1:3; 3:18; 9:16; 17:3)। संभव है लूका ने यह विचार मरकुस के सुसमाचार से प्राप्त किया हो (जैसे, प्रेरि. 8:31)।

▪ **" उन्हें दिखाया"** नए नियम में करीब दस या ग्यारह बार यीशु के जी उठने के बाद अपने आप को उन्हें जीवित दिखाने का वर्णन पाया जाता है। परन्तु यह अन्तिम सूची नहीं परन्तु केवल नमूने हैं। स्पष्ट रूप से यीशु अनेक बार उस दौरान आया और गया पर किसी विशेष समूह के साथ नहीं रहा। देखें:

विशेष शीर्षक: यीशु के द्वारा पुनरुत्थान के बाद दर्शन दिया जाना

अपने पुनरुत्थान को प्रमाणित करने के लिए यीशु ने स्वयं को अनेक लोगों पर प्रकट किया :

1. कब्र पर स्त्रियों को दर्शन, मत्ती 28:9
2. गलील पर्वत पर ग्यारह चेलों को दर्शन, मत्ती 28:16
3. शमौन को दर्शन, लूका 24:34
4. इम्माऊस के मार्ग पर दो चेलों को दर्शन, लूका 24:15
5. कोठरी में चेलों को दर्शन, लूका 24:36
6. मरियम मगदलीनी को दर्शन, यूहन्ना 20:15
7. उपरौठी कोठरी में दस चेलों को दर्शन, यूहन्ना 20:20
8. उपरौठी कोठरी में ग्यारह चेलो को दर्शन, यूहन्ना 20:26
9. गलील सागर तट पर सात चेलों को दर्शन, यूहन्ना 21:1
10. कैफा (पतरस) को दर्शन, 1 कुरि. 15:5
11. ग्यारह प्रेरितों को दर्शन, 1 कुरि. 15:5
12. 500 भाइयों को दर्शन, 1 कुरि. 15:6; मत्ती 28:16-17
13. याकूब को दर्शन (यीशु के परिवार का), 1 कुरि. 15:7
14. सब प्रेरितों को दर्शन, 1 कुरि. 15:7
15. पौलुस, 1 कुरि. 15:8 (प्रेरि. 9)

इन दर्शनों द्वारा यीशु चाहता था कि वे निश्चित रूप से ज्ञान लें कि वह सचमुच में जी उठा है, व जीवित है।

Copyright © 2014 Bible Lessons International

▪ **"चालीस दिन"** यह लम्बे समय को बताने वाला पुराने नियम का एक मुहावरा जैसा है। यहाँ पर इसका सम्बन्ध उस समय की अवधि से है जो यहूदियों के वार्षिक फसह पर्व से पिन्तेकुस्त के बीच का है, (जो 50 दिन है)। केवल

लूका ही यह बात बताता है। जबकि यीशु के स्वर्गारोहण की तिथि के बारे में कुछ नहीं बताया गया है और न ही (चैथी शताब्दी तक किसी मसीही लेखक ने कुछ कहा है,) इसलिये इस गिनती के उपयोग का कोई अन्य मकसद हो सकता है, जैसे सीनै पर्वत पर मूसा रहा, इस्राएली जंगलों में भटके, यीशु की परीक्षा हुई; इत्यादि बातों से संबंध बताया जा सके। इसके अलावा हम कुछ नहीं जानते कि यह गिनती क्यों प्रयोग की गई परन्तु इतना स्पष्ट है कि तिथि का कोई महत्व नहीं है।

विशेष शीर्षक: पवित्रशास्त्र में सांकेतिक अंक

A. कुछ गिनतियाँ प्रतिकात्मक और संख्या दोनों रूपों में प्रयुक्त हुई हैं,
1. एक - एक परमेश्वर (उदाहरणार्थ, व्य. वि. 6:4; इफि. 4:4-6)
2. चार - सम्पूर्ण पृथ्वी (अर्थात चार दिशाएँ, चार पंख, जैसे यशा. 11:12; यिर्म. 49:36; दानि. 7:2; 11:4; जक. 2:6; मत्ती 24:31; मर. 13:27; प्रका 7:1)
3. छः - मानवीय असिद्धता (जो सात से कम हो, जैसे प्रका. 13:18)
4. सात - ईश्वरीय सिद्धता (सृष्टि निर्माण के सात दिन)। प्रकाशितवाक्य में इस संख्या के प्रतिकात्मक उपयोग पर ध्यान दीजिए :
   a. सात, सोने की दीवटें, प्रका. 1:12,20; 2:1
   b. सात तारे, प्रका. 1:16,20;2:1
   c. सात कलीसियाएँ, प्रका. 1:20
   d. परमेश्वर की सात आत्माएँ, प्रका. 3:1; 4:5; 5:6
   e. सात दीपक, प्रका. 4:5
   f. सात मुहरें, प्रका. 5:1,5
   g. सात सींग और सात आंखें, प्रका. 5:6
   h. सात स्वर्गदूत, प्रका. 8:2,6; 15:1,6,7,8; 16:1; 17:1
   i. सात तुरहियाँ, प्रका. 8:2,6
   j. गर्जन के सात शब्द, प्रका. 10:3,4
   k. सात हज़ार, प्रका. 11:13
   l. सात सिर, प्रका. 13:1; 17:3,7,9
   m.सात विपत्तियाँ, प्रका. 15:1,6,8; 21:9
   n. सात कटोरा, प्रका. 15:7; 21:9
   o. सात राजा, प्रका. 17:10
5. दस - सम्पूर्णता
   a) सुसमाचारों में प्रयुक्त
      (1) मत्ती, 20:24; 25:1,28
      (2) मरकुस, 10:41
      (3) लूका, 14:31; 15:8; 17:12,17; 19:13,16,17,24,25
   b) प्रकाशित वाक्य में प्रयुक्त
      (1) प्रका. 2:10, क्लेश के दस दिन
      (2) प्रका. 12:3; 17:3,7,12,16, दस सींग
      (3) प्रका. 13:1, दस राजमुकुट
   c) प्रकाशितवाक्य में दस का गुणन
      (1) 1,44,000 = 12×12×1000, प्रका. 7:4; 14:1,3
      (2) 1,000 = 10×10×10, प्रका. 20:2,3,6
6. बारह - मानवीय संगठन

a. याकूब के 12 पुत्र (अर्थात इस्राएल के बारह गोत्र, उत्प. 35:22; 49:28)
b. बारह खम्भे, निर्ग. 24:4
c. महायाजक के सीनाबन्द में 12 मणियाँ, निर्ग. 28:21; 39:14
d. पवित्र स्थान की मेज़ के लिए 12 रोटियाँ (बारह गोत्रों के लिए परमेश्वर की ओर से भोजन-प्रबंध का प्रतीक) लैव्य. 24:5; निर्ग. 25:30
e. बारह भेदिए, व्य. वि. 1:23
f. स्मृति के बारह पत्थर, यहो. 4:2,3,4,8,9,20
g. बारह प्रेरित, मत्ती 10:1
h. प्रकाशित वाक्य में प्रयुक्त :
(1) बारह हज़ार पर मुहर की गई, प्रका. 7:5-8
(2) बारह तारों का मुकुट, प्रका. 12:1
(3) बारह फाटक, बारह स्वर्गदूत, बारह गोत्र, प्रका. 21:12
(4) बारह नींवे, बारह प्रेरितों के नाम, प्रका. 21:14
(5) नया यरूशलेम नगर 12 हज़ार के वर्गाकार में बसा था, प्रका. 21:16
(6) बारह फाटक बारह मोतियों से बने थे, प्रका. 21:21
(7) जीवन के वृक्ष में बारह प्रकार के फल लगते थे, प्रका. 22:2

7. चालीस - समय अवधि की संख्या
a. कभी-कभी शब्दशः (निर्गमन और भ्रमणकाल, जैसे निर्ग.16:35); व्यवस्थाविवरण 2:7; 8:2
b. शब्दशः अथवा प्रतीकात्मक हो सकता है :
(1) जल प्रलय, उत्प. 7:4,17; 8:6
(2) सीनै पर्वत पर मूसा, निर्ग. 24:18; 34:28; व्यव. 9:9,11,18,25
(3) मूसा के जीवनकाल के भाग :
a. मिस्र में उसके चालीस वर्ष
b. जंगलों में उसके चालीस वर्ष
c. चालीस वर्ष इस्राएल की अगुवाई
(4) यीशु ने चालीस दिन उपवास किया, मत्ती 4:2; मर. 1:13; लू. 4:2
c. अनुक्रमाणिका द्वारा पता लगाएँ कि बाइबिल में कितनी बार चालीस की संख्या द्वारा काल अवधि दर्शाई गई है।

8. सत्तर - लोगों की अनुमानित संख्या
a. इस्राएल, निर्ग. 1:5
b. सत्तर प्राचीन, निर्ग. 24:1,9
c. युगान्त संबंधी, दानि. 9:2,24
d. सत्तर के प्रचार हेतु नियुक्ति, लूका 10:1,17
e. सत्तर गुणा तक क्षमा करना (70×7), मत्ती 18:22

B. अच्छी सहायक सामग्री :
1. जौन जे. डेविस, बिबलीकल न्यूमरोलॉजी (John J. Davis, *Biblical Numerology*)
2. डी. ब्रेन्ट सैन्डी, प्लौ शरस एण्ड प्रूनिंग हुक्स (D. Brent Sandy, *Plowshares and Pruning Hooks*)

Copyright © 2014 Bible Lessons International

▪ **" परमेश्वर के राज्य के विषय में बातें करना "** ज्ञानवादी लोगों का दावा था कि फसह और पिन्तेकुस्त के बीच के समय में यीशु ने अपने चेलों पर गुप्त रहस्य प्रकट किये थे। यह निश्चय ही असत्य बात है। किन्तु यीशु के जी उठने के बाद की उसकी शिक्षाओं का श्रेष्ठ उदाहरण उन दो चेलों का विवरण है जो इम्माऊस के मार्ग पर जा रहे

थे। मैं सोचता हूँ यीशु ने स्वयं उन कलीसियाई अगुवों को पुराने नियम पवित्रशास्त्र में से अपने विषय में लिखी बातों को जो उसके जीवन, मृत्यु, पुनरुत्थान व दूसरे आगमन से सम्बन्ध रखती थीं, उन्हें समझाया। देखें विशेष विषय परमेश्वर का राज्य

विशेष शीर्षक: परमेश्वर का राज्य

पुराने नियम में यहोवा (YHWH) को इस्राएल का राजा (देखें, 1 शमू. 8:7; भजन 10:16; 24:7-9; 29:10; 44:4 89:18; 95:3 यशा. 43:15; 44:6) । तथा मसीह को एक आदर्श राजा के रूप में समझा गया (देखें, भजन 2:6; यशा. 9:6-7; 11:1-5) ई. पू. 6-4 में जब यीशु का जन्म बैतलहम में हुआ तो परमेश्वर का राज्य एक नई वाचा के साथ (देखे, यिर्म. 31:31-34; यहेज. 36:27-36) उद्धार और नई सामर्थ लेकर मानवीय इतिहास में आरम्भ हुआ। यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने घोषणा की कि परमेश्वर का राज्य निकट आ चुका पहुँचा है। (देखें, मत्ती 3:2; मर. 1:15)। यीशु ने स्पष्ट रूप से सिखाया कि स्वयं उसमें और उसकी शिक्षाओं में परमेश्वर का राज्य पाया जाता है (देखें, मत्ती 4:17,23; 10:7; 12:28; लूका 10:9,11; 11:20; 17:21; 21:31-32)। तौ भी राज्य भविष्य संबंधी बात है (देखें, मत्ती 16:28; 24:14; 26:29; मरकुस 9:1; लूका 21:31; 22:16,18)।

मरकुस और लूका का सुसमाचार साथ-साथ पढ़ने पर हम वाक्यांश "परमेश्वर का राज्य" लिखा पाते हैं। यह यीशु की शिक्षाओं का सामान्य विषय था, जिसमें मानवीय हृदयों पर परमेश्वर द्वारा शासन किया जाना निहित था। परमेश्वर का यह शासन एक दिन समस्त पृथ्वी पर स्थापित होगा जैसा कि मत्ती 6:10 की यीशु की प्रार्थना द्वारा स्पष्ट है "तेरा राज्य आए" मत्ती जिसने यहूदियों को अपना सुसमाचार लिखा, वह परमेश्वर के नाम को उपयोग में नहीं लाता परंतु "स्वर्ग का राज्य" वाक्यांश का प्रयोग करता है, परंतु मरकुस और लूका जिन्होंने गैर यहूदियों के लिए अपने सुसमाचार लिखें, परमेश्वर के नाम का उपयोग करते हुए "परमेश्वर का राज्य" वाक्यांश का प्रयोग करते हैं।

परमेश्वर का राज्य से सहदर्शी सुसमाचारों का इतना महत्वपूर्ण विषय है कि यीशु का प्रथम और अंतिम उपदेश, तथा उसके अधिकांश दृष्टान्त इसी के सम्बन्ध में थे, और जो इसी समय मनुष्यों के हृदयों पर परमेश्वर के शासन की ओर इशारा करते हैं। यह बड़ी आश्चर्यजनक बात है कि यूहन्ना ने "परमेश्वर के राज्य" वाक्यांश का प्रयोग केवल दो बार ही किया (और कभी भी यीशु के दृष्टांतों में नहीं किया)। उसके सुसमाचार का मूल शब्द "अनन्त जीवन" है।

यीशु के दो आगमनों के कारण इस वाक्यांश के सम्बंध में व्याकुलता उत्पन्न हो जाती है। पुराना नियम केवल परमेश्वर के मसीह के एक आगमन पर बल देता है जो महिमापूर्ण न्याय संबंधी और सैन्य संबंधी आगमन है, परन्तु नया नियम दर्शाता है कि वह प्रथम आगमन पर यशायाह 53 के दुखी पुरुष तथा जकर्याह 9:9 के विनम्र व दीन राजा के रूप में आया। दो यहूदी पीढ़ियों को अर्थात दुष्ट पीढ़ी और नए युग की धार्मिक पीढ़ी को मिला दिया गया है। यीशु वर्तमान में विश्वासियों के हृदयों पर राज्य करता है परंतु एक दिन आएगा जब वह सारी सृष्टि पर राज्य करेगा। जैसा पुराने नियम में भविष्यवाणी की गई है उसके अनुसार यीशु आएगा (देखें, प्रकाशितवाक्य 19)। विश्वासी जन परमेश्वर के राज्य की "अभी राज्य नहीं आया" बनाम "राज्य आ चुका" की स्थिति में रहते हैं (देखें, गौरडन डी फी और डगलस स्टुअर्ड की पुस्तक "हाओ टू रीड द बाइबल फार ऑल इट्स वर्थ, पेज 131-134) (*How to Read the Bible For All Its Worth"* by Gordon D. Fee and Douglas stuart pp. 131-134)

Copyright © 2013 Bible Lessons International

1:4

NASB **"उन्हें इकट्ठा करके"**
NKJV **"उनके साथ इकट्ठा होकर"**
NRSV **"जब उनके साथ था"**
TEV **"जब वे आपस में जमा हुए"**

TEV[b] **"जब वह उनके साथ था"**
NIV **"जब वह उनके साथ भोजन कर रहा था**
NJB **"जब वह उनके साथ मेज़ पर था"**

पद 4-5 यीशु के अनेक दर्शनों और प्रमाणों में से एक दर्शन को उदाहरण के तौर पर प्रयोग करते हैं। शब्द *sunalizomenos* का उच्चारण कई प्रकार से हो सकता है। उच्चारण अर्थ बदल देता है।

1. देर तक उच्चारण का अर्थ-एकत्रित होना
2. थोड़ी देर तक उच्चारण का अर्थ-साथ भोजन करना (शाब्दिक अर्थ "नमक के साथ")
3. संयुक्त उच्चारण का अर्थ-साथ रहना।

इन तीनों में से कौन सा अर्थ लगाया गया, कहना कठिन है, परन्तु लूका 24:41-43 (यूहन्ना 21) में यीशु द्वारा चेलों के साथ भोजन करने का वर्णन करता है, जो उसके शारीरिक रूप से जी उठने का पक्का प्रमाण है (प्रेरि. 1:3 देखें)।

▪ **"यरूशलेम को न छोड़ो"** इसका विवरण लूका 24:49 में पाया जाता है। प्रेरितों के काम की पुस्तक का आरम्भिक भाग लूका रचित सुसमाचार के अन्तिम भाग का पुनरावलोकन है, संभवतः यह दो पुस्तकों को आपस में जोड़ने की साहित्यिक शैली है।

▪ **"पिता की प्रतिज्ञा के पूरे होने की बाट जोहते रहो"** प्रेरितों के काम 2:16-21 में पतरस इसे योएल नबी की अन्तिम समय की भविष्यद्वाणी से जोड़ता है (योएल 2:28-32)। वे पिन्तेकुस्त के दिन तक दस दिन बाट जोहते हैं। लूका "पिता की इस प्रतिज्ञा को" विशेष रूप से पवित्र आत्मा की प्रतिज्ञा कहता है (देखें लूका 24:49; प्रेरि. 2:33)। यीशु चेलों को पहले ही यूहन्ना 14-16 अध्यायों में पवित्र आत्मा के आगमन के बारे में बता चुका था। किन्तु हो सकता है कि लूका समझता हो कि पिता की इस प्रतिज्ञा का सम्बन्ध केवल पवित्र आत्मा ही से नहीं है पर साथ ही पुराने नियम की उद्धार संबंधी प्रतिज्ञा से भी है जो मसीह के द्वारा इस्राएल में आने वाली थी (देखें प्रेरि. 2:39; 13:23, 32; 26:6)।

▪ **"पिता"** पुराना नियम परमेश्वर को पिता के रूप में प्रकट करता है:

1. इस्राएल जाति को यहोवा (YHWH) का पुत्र कहा गया है (देखें होशे 11:1; मलाकी 3:17)
2. व्यवस्थाविवरण में परमेश्वर को पिता समान बताया गया है (व्यव. 1:31)
3. व्यव. 32:6 में इस्राएल को परमेश्वर की सन्तान और परमेश्वर को पिता कहा गया है
4. भजन 103:13 में परमेश्वर को पिता और 68:5 में अनाथों का पिता कहा गया है।
5. नबियों में यह सामान्य बात थी (जैसे यशा. 1:2; 63:8; इस्राएल पुत्र और परमेश्वर पिता के रूप में, 63:16; 64:8; यिर्मयाह 3:4, 19; 31:9)।

चूंकि यीशु आरामी भाषा बोलता था, इसका अर्थ है कि जब जब भी "पिता" शब्द का प्रयोग उसने किया, वह यूनानी भाषा के Pater शब्द की तरह आरामी के *अब्बा* शब्द को प्रकट कर सकता है प्रेरितों 14:36। पिता या अब्बा शब्द, यीशु की पिता के साथ गहरी संगति को प्रकट करता है। साथ ही "पिता" शब्द से परमेश्वर के साथ हमारी भी गहरी संगति प्रकट होती है। "पिता" शब्द का पुराने नियम में यहोवा (YHWH) के लिये बहुत कम प्रयोग किया गया है, परन्तु यीशु ने "पिता" शब्द का व्यापक रूप से और अक्सर प्रयोग किया है। इस शब्द से यीशु के द्वारा परमेश्वर के साथ विश्वासी का एक नया रिश्ता प्रकट होता है जो विश्वासी के लिये एक महत्वपूर्ण प्रकाशन है (देखें मत्ती 6:9)।

1:5 "यूहन्ना" चारों सुसमाचार यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की सेवकाई के बारे में बताते हैं (देखें मत्ती 3:1-12; मरकुस 1:2-8; लूका 3:15-17; यूहन्ना 1:6-8, 19-28)। "यूहन्ना" शब्द इब्रानी नाम योहनान का संक्षिप्त रूप है

जिसका अर्थ है “यहोवा (YHWH) अनुग्रहकारी है” अथवा “यहोवा (YHWH) का दान।” उसका नाम बड़ा अर्थपूर्ण नाम है क्योंकि यह नाम बाइबल के अन्य नामों की तरह परमेश्वर के उद्देश्यों को जीवन में पूरा करने वाला नाम है। यूहन्ना पुराने नियम के नबियों में अन्तिम नबी था। इस्राएल जाति में मलाकी नबी के बाद 430 ई.पू. तक कोई नबी नहीं आया था। यूहन्ना के आने से इस्राएली लोगों में बड़ा आत्मिक उत्साह छा गया था।

▪ **“पानी से बपतिस्मा”** बपतिस्मा यहूदियों में पहली और दूसरी शताब्दी के दौरान एक सामान्य धार्मिक विधि थी जिसका सम्बन्ध केवल उनसे था जो यहूदी धर्म में आना चाहते थे। यदि कोई गैरयहूदी पृष्ठभूमि से इस्राएल की सन्तान बनना चाहता था, तो उसे निम्नलिखित तीन कार्य करना ज़रूरी था:

1. ख़तना कराना, (यदि वह पुरुष हो)
2. तीन गवाहों के सामने पानी में डुबकी द्वारा अपने आप बपतिस्मा लेना।
3. यदि संभव हो तो मन्दिर में जाकर बलिदान चढ़ाना।

प्रथम शताब्दी के पलीस्तीनी साम्प्रदायिक समूहों में, जैसे कि असेनी लोगों में, बपतिस्मा स्पष्ट रूप से एक सामान्य बात थी और बार-बार लिया जाता था। यहूदी धर्म में स्वयं को शुद्ध करने से सम्बन्धित कुछ बातें इस प्रकार बताई गई हैं:

1. आत्मिक रूप से शुद्ध होने का प्रतीक (देखें यशायाह 1:16)
2. पुरोहितों द्वारा की जाने वाली नियमित धार्मिक विधि (जैसे निर्गमन 19:10; लैव्य. 15)
3. आराधना के लिए मन्दिर में जाने से पहले नियमित रूप से की जाने वाली धार्मिक क्रिया।

▪ **“तुम पवित्र आत्मा से बपतिस्मा पाओगे”** यह भविष्य सूचक कर्मप्रधान क्रिया है। कर्मवाच्य क्रिया मत्ती 3:11; लूका 3:16 के कारण यीशु की ओर संकेत कर सकती है। यह वाक्यांश दो कार्यों को बता सकता है (1) मसीही बन जाना (देखें 1 कुरि. 12:13) और (2) संदर्भ के अनुसार, प्रभावशाली सेवकाई के लिए प्रतिज्ञा किए हुए पवित्र आत्मा की सामथ्र्य से परिपूर्ण होना। यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने अक्सर यीशु की सेवकाई के विषय में बताते हुए इसी वाक्यांश का प्रयोग किया था (देखें मत्ती 3:11; मरकुस 1:8; लूका 3:16-17; यूहन्ना 1:33)।

यह बपतिस्मा यूहन्ना के बपतिस्मे से भिन्न है। मसीह पवित्र आत्मा के एक नए युग का शुभारम्भ करेगा। उसका बपतिस्मा पवित्र आत्मा से (अथवा “पवित्रात्मा में” या “पवित्रात्मा द्वारा”) होगा। इसके सम्बन्ध में विभिन्न मसीही साम्प्रदायों में अलग-अलग विचार पाए जाते हैं कि मसीही अनुभव की किस बात की ओर यह बपतिस्मा इशारा करता है। कुछ लोग मानते हैं कि यह उद्धार प्राप्त करने के बाद सामथ्र्य से परिपूर्ण हो जाने की ओर इशारा करता है और विश्वासी को अन्य विशेष आशीषें प्राप्त होती हैं। मेरा अपना विचार है कि यह पवित्र आत्मा का बपतिस्मा मसीही बन जाने की ओर संकेत करता है (देखें 1 कुरि. 12:13)। मैं इस बात का इंकार नहीं करता हूँ कि बाद में पवित्र आत्मा की भरपूरी प्राप्त होती है और विश्वासी सुदृढ़ किया जाता है, परन्तु मानता हूँ कि मसीह में एक ही बार बपतिस्मा लिया जाता है जिसमें विश्वासी मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान में सहभागी होता है (देखें, रोमियों 6:3-4; इफिसियों 4:5; कुलुस्सियों 2:12)। पवित्र आत्मा के इस प्रारम्भिक कार्य को यूहन्ना 16:8-11 में वर्णित किया गया है। मेरे विचार से पवित्र आत्मा विश्वासी में निम्नलिखित कार्य करता है:

1. विश्वासी को पापों के प्रति कायल करता है
2. मसीह के संबंध में सत्य प्रकट करता है
3. सुसमाचार को ग्रहण करने में सहायता करता है
4. मसीह में बपतिस्मा देता है
5. विश्वासी को निरुत्तर करके पाप से घृणा करने में मदद करता है
6. विश्वासी में मसीह का स्वभाव निर्मित करता है

▪ "**अब से ज़्यादा दिन नहीं** " यह यहूदियों के पिन्तेकुस्त नामक पर्व की ओर संकेत है जो फसह के पर्व के सात सप्ताह के बाद आता है। पिन्तेकुस्त का यह पर्व फसल की कटनी के दौरान मनाया जाता था। यह पर्व उन्हें याद दिलाता था कि परमेश्वर फसल का स्वामी है। यह फसह पर्व के बाद 50वें दिन मनाया जाता था (देखें, लैव्य. 23:15-31; निर्गमन 34:22; व्यवस्थाविवरण 16:10)।

प्रेरितों के काम 1:6-11
"अतः उन्होंने इकट्ठे होकर उससे पूछा, "हे प्रभु, क्या तू इसी समय इस्राएल को राज्य फेर देगा?" 7उसने उनसे कहा, "उन समयों या कालों को जानना, जिनको पिता ने अपने ही अधिकार में रखा है, तुम्हारा काम नहीं। 8परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ पाओगे; और यरूशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में, और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होगे।" 9यह कहकर वह उनके देखते-देखते ऊपर उठा लिया गया; और बादल ने उसे उनकी आंखों से छिपा लिया। 10उसके जाते समय जब वे आकाश की ओर ताक रहे थे, तो देखो, दो पुरुष श्वेत वस्त्र पहिने हुए उनके पास आ खड़े हुए, 11और उनसे कहा, "हे गलीली पुरुषो, तुम क्यों खड़े स्वर्ग की ओर देख रहे हो? यही यीशु, जो तुम्हारे पास से स्वर्ग पर उठा लिया गया है, जिस रीति से तुमने उसे स्वर्ग को जाते देखा है उसी रीति से वह फिर आएगा।"

1:6 "वेउससे पूछा" इस वाक्यांश के दो अर्थ हो सकते हैं, उन्होंने पहले भी उससे यह बात पूछी हो या फिर अब पूछ रहे हों। स्पष्ट रूप से चेले कई बार यीशु से यह प्रश्न पूछ चुके थे।

▪ **"हे प्रभु"** यह यूनानी शब्द *(kurios)* है जिसका अर्थ है "प्रभु"; यह सामान्य रूप से अथवा अपने पूर्ण विकसित धर्म-विज्ञान अर्थ के साथ भी प्रयोग किया जा सकता है। इस शब्द के कई अर्थ हो सकते हैं जैसे, "मिस्टर", "श्रीमान्" "स्वामी", "मालिक", "पति" अथवा "सिद्ध परमेश्वरीय जन" (देखें युहन्ना 9:36, 38)। इस शब्द के इब्रानी शब्द "अदोनाअ" का उपयोग पुराने नियम में करना उस समय आरम्भ हुआ जब यहूदियों ने परमेश्वर का वाचागत नाम "यहोवा" का उच्चारण करना बन्द कर दिया था; यहोवा (YHWH) शब्द इब्रानी क्रिया रूप "मैं जो हूँ सो हूँ" से निकला है (देखें निर्गमन 3:14)। वे इस आज्ञा के उल्लंघन से डरते थे, "तू अपने परमेश्वर का नाम व्यर्थ न लेना; क्योंकि जो यहोवा (YHWH) का नाम व्यर्थ ले, वह उसको निर्दोष न ठहराएगा" (देखें निर्ग. 20:7; व्यव. 5:11), इसी कारण वे यहोवा (YHWH) नाम का उच्चारण नहीं करते थे और सोचते थे, यदि वे उच्चारण नहीं करेंगे तो उसका नाम व्यर्थ में न ले पाएंगे। अतः उन्होंने यहोवा (YHWH) के स्थान पर इब्रानी शब्द "अदोनाअ" का उपयोग करना आरम्भ कर दिया जिसका वही अर्थ है जो यूनानी शब्द (प्रभु) का है। नए नियम के लेखकों ने यीशु मसीह के सिद्ध ईश्वरत्व को दर्शाने के लिए इस शब्द का उपयोग किया है। वाक्यांश "यीशु प्रभु है" विश्वास का सार्वजनिक अंगीकार और प्रारम्भिक कलीसिया का बपतिस्मा से जुड़ा एक सूत्र था (देखें, रोमियों 10:9-13; 1 कुरि. 12:3; फिलि. 2:11)।

विशेष शीर्षक: परमेश्वर के नाम

A. एल *(El)* (BDB 42, KB 48)
   1. परमेश्वर के प्राचीन जातिगत नाम का मूल अर्थ अनिश्चित है फिर भी अनेक विद्वान मानते हैं कि इस नाम की उत्पत्ति अक्कादी मूल शब्द "सर्वशक्तिमान" अथवा "सर्वसामर्थी" से हुई है, (देखें, उत्प. 17:1, गिनती 23:19; व्यव. 7:21; भज. 50:1)
   2. कनानी देवतागणों में सबसे ऊंचा देवता एल (El) माना जाता है (Ras Shamra Text), जिसे "देवताओं का पिता" और "स्वर्ग का प्रभु' कहा जाता है।
   3. बाइबिल में अक्सर एल (El) शब्द अन्य शब्दों के साथ संयुक्त किया गया है। यह संयोजन परमेश्वर की विशेषताएँ बताने का एक तरीका बन गया।
      a. एल-एलिओन (*El-Elyon*), ("परम प्रधान ईश्वर" BDB 42 & 751 II). देखें, उत्प. 14:18-22;

व्यव. 32:8; यशा. 14:14

b. एल-रोई (*El-Roi*) (" परमेश्वर जो देखता है अथवा परमेश्वर जो स्वयं का प्रकाशन देता है," BDB 42 & 909)। उत्प. 16:13

c. एल-शद्दाए (*El-Shaddai*) ("सर्वशक्तिमान ईश्वर" या "सारे अनुग्रह का दाता परमेश्वर" अथवा "पर्वतों पर रहने वाला ईश्वर"। (BDB 42 & 994)। उत्प. 17:1; 35:11; 43:14; 49:25; निर्ग. 6:3

d. एल-ओलम (*El-Olam*) ("अनन्तकाल का परमेश्वर", BDB 42 & 761)। उत्प. 21:33. यह शब्द दाऊद के साथ परमेश्वर की वाचा से जुड़ा है, 2 शमू. 7:13,16

e. एल-बेरीत ("वाचा का परमेश्वर", BDB 42 & 136, न्या. 9:46

4. इनके साथ एल (El) जोड़ा गया :
   a. यहोवा (YHWH)के साथ- गिनती 23:8; भज. 16:1-2; 85:8; यशा. 42:5
   b. उत्प. 46:3; अयूब 5:8, में इलोहीम (*Elohim*) के साथ, "मैं परमेश्वर हूं, तेरे पिता का परमेश्वर"
   c. उत्प. 49:25; गिनती 24:4,16 में एल-शद्दाए के साथ।
   d. निर्ग. 34:14; व्यव. 4:24; 5:9; 6:15 में "जलन" के साथ।
   e. व्यव 4:31; नहे. 9:31 में "दयालुता" के साथ। .
   f. व्यव. 7:21; 10:17; नहे. 1:5; 9:32; दानि. 9:4 में "महान और भययोग्य" के साथ।
   g. 1 शमू. 2:3 में "ज्ञान" के साथ।
   h. 2 शमू 22:33 में "अति दृढ़ किले" के साथ।.
   i. 2 शमू. 22:48 में "पलटा लेने वाले ईश्वर" के साथ।
   j. यशा. 5:16 में "पवित्र परमेश्वर" के साथ।
   k. यशा. 10:21 में "पराक्रमी परमेश्वर" के साथ।
   l. यशा. 12:2 में "मेरा उद्धार" के साथ।
   m.यिर्म. 32:18 में "महान और पराक्रमी परमेश्वर" के साथ।
   n. यिर्म. 51:56 में "बदला देने वाला परमेश्वर" के साथ।
5. यहोशू 22:22 में पुराने नियम में पाए जाने वाले सभी परमेश्वर के मुख्य नामों का मिश्रण पाया जाता है (जैसे एल, एलोहिम, यहोवा, इत्यादि)

B. एलिओन (Elyon) (BDB 751, KB 832)2334008042577

1. इसका मूल अर्थ है "सर्वोच्च" "उन्नत" या "उठाया हुआ" (देखें, उत्प. 40:17; 1 राजा 9:8; 2 राजा 18:17; नहे. 3:25; यिर्म. 20:2; 36:10; भजन 18:13)।
2. परमेश्वर के अन्य नामों के अर्थों में भी इस शब्द का उपयोग हुआ :
   a. इलोहीम - भजन 47:1-2; 73:11; 107:11
   b. यहोवा (YHWH) - उत्प. 14:22; 2 शमू. 22:14
   c. एल शद्दाए - भजन 91:1,9
   d. एल - गिनती 24:16
   e. अलाह - यह शब्द अक्सर दानिय्येल 2-6 तथा एज्रा 4-7 में प्रयुक्त हुआ है और अरामि शब्द इलायर "परम प्रधान" के समान है, दानि. 3:26; 4:2; 5:18,21
3. यह शब्द अक्सर गैर-इस्राएलियों द्वारा प्रयुक्त किया गया है :
   a. मलिकिसिदक, उत्प. 14:18-22
   b. बालाम, गिनती 24:15
   c. मूसा, व्य. वि. 32:8 में विभिन्न जातियों के विषय में बोलता है।
   d. नए नियम में अन्य जातियों को लिखते हुए लूका समानार्थी यूनानी शब्द हयूपसिसटॉस का प्रयोग करता है, (देखें, लूका 1:32,35,76; 6:35; 8:28; प्रेरि. 7:48; 16:17)।

C. इलोहीम (*Elohim*) (बहुवचन), इलोह (*Eloah*) (एकवचन), यह मुख्य रूप से काव्य में प्रयुक्त होता है

(BDB 43, KB 52)

1. यह शब्द पुराने नियम के बाहर नहीं पाया जाता है।
2. यह शब्द "इस्राएल का परमेश्वर" अथवा "जातियों के देवताओं" को भी दर्शा सकता है (देखें, निर्ग. 3:6; 20:3)।अब्राहम का परिवार बहू ईश्वर वादी परिवार था (देखें, यहोशू 24:2)
3. यह शब्द इस्राएली न्यायियों की ओर भी संकेत कर सकता है (देखें, निर्ग. 21:6; भज. 82:6)
4. इलोहिम शब्द अन्य आत्मिक प्राणियों के लिये भी प्रयुक्त हो सकता है (जैसे स्वर्गदूत व दुष्टात्माएँ आदि) जैसाकि व्य. वि. 32:8 (LXX); भज. 8:5; अयूब 1:6; 38:7 में पाया जाता है।
5. बाइबल में परमेश्वर को दिया गया यह सर्वप्रथम नाम है (देखें, उत्प. 1:1)। उत्प. 2:4 तक विशेषकर इसे प्रयोग किया गया जिसमें यहोवा (YHWH) नाम भी निहित था। मुख्य रूप से यह शब्द परमेश्वर को सृष्टिकर्ता, पालनकर्ता, और पृथ्वी का जीवनकर्ता के रूप में प्रकट करता है (देखें, भजन 104)। यह शब्द एल (El) का समानार्थी है (देखें, व्य. वि. 32:15-19)। यह भजन 14 के यहोवा (YHWH) के समान भी अर्थ रखता है (पद 1,2,5 इलोहीम; पद 2,6 यहोवा; पद 4 अदोन)
6. हालांकि यह बहुवचन शब्द है और अनेक देवताओं के लिए प्रयुक्त होता है, तो भी विशेषकर इस्राएल के परमेश्वर को प्रकट करता है और अक्सर इसमें एकवचन क्रिया शब्द प्रयुक्त होता है ताकि एकेश्वरवाद प्रकट हो। (देखें विशेष विषय : एकेश्वरवाद)
7. यह बड़े आश्चर्य की बात है कि इस्राएल के एकमात्र परमेश्वर का सामान्य नाम बहुवचन में है। उत्पत्ति 1:26; 3:22; 11:7 में वर्णित "हम" शब्द पर विचार कीजिए। इस विषय में कुछ विचारधाराएँ इस प्रकार हैं, हालांकि वे अनिश्चित हैं :
   a. इब्रानी में बहुत से बहुवचन शब्द होते हैं जो बल देने के लिए प्रयुक्त किए जाते हैं। बाद की इब्रानी भाषा में इससे निकट का संबंध रखने वाले शब्द को प्रभुत्व का बहुवचन कहा जाता है, जहाँ किसी धारणा को बढ़ा चढ़ाकर कहने के लिए बहुवचन का प्रयोग किया जाता है।
   b. यह स्वर्गदूतों की सभा की ओर संकेत हो सकता है, जिससे परमेश्वर स्वर्ग में भेंट करता है और जो उसके आदेशों का पालन करते हैं (देखें, 1 राजा 22:19-23; अयूब 1:6; भजन 82:1; 89:5,7)
   c. यह भी संभव हो सकता है कि यह नए नियम के त्रिएक परमेश्वर का प्रकाशन करता है। उत्प 1:1 में परमेश्वर सृष्टि निर्माण करता है; उत्प 1:2 में आत्मा मंडराता है, तथा नए नियम के अनुसार सृष्टि निर्माण में यीशु परमेश्वर पिता का माध्यम है (देखे, यूहन्ना 1:3,10; रोमि. 11:36; 1 कुरि. 8:6; कुलु. 1:16; इब्रा. 1:2; 2:10)।

D. यहोवा (YHWH) (BDB 217, KB 394) :

1. यह ऐसा नाम है जो परमेश्वर को वाचा बांधने वाला परमेश्वर प्रकट करता है कि वह उद्धार कर्त्ता तथा छुड़ाने वाला परमेश्वर है। मानवजाति तो प्रायः वाचा तोड़ती रहती है, परंतु परमेश्वर अपनी प्रतिज्ञाओं, वाचा, और वचनों का पालन करने में विश्वासयोग्य रहता है (देखें, भजन 103)।
   यह नाम पहली बार उत्पत्ति 2:4 में इलोहीम के साथ उल्लेखित किया गया। सृष्टि-निर्माण के दो वर्णन उत्पत्ति 1-2 में नहीं है, परंतु दो बल (Emphasis) हैं :
   a) परमेश्वर ब्रह्मांड का रचयिता है (भौतिक रूप से; भजन 104)
   b) परमेश्वर मानव जाति का विशेष सृष्टि कर्त्ता है (भजन 103)
      उत्पत्ति 2:4-3:24, मानव जाति की सर्वश्रेष्ठ रचना और उसके उद्देश्य के विषय में विशेष प्रकाशन देता है, और साथ ही पाप और मानव जाति द्वारा परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह करने पर प्रकाश डालता है।
2. उत्पत्ति 4:26 में कहा गया है कि, "उसी समय से लोग यहोवा (YHWH) से प्रार्थना करने लगे।" परंतु निर्ग. 6:3 बताता है कि आरम्भिक वाचा के लोग (पूर्वज और उनके परिवार) परमेश्वर को केवल एल-शद्दाए के रूप में ही जानते थे। यहोवा (YHWH) नाम उन्हें केवल एक ही बार निर्ग. 3:13-16 में, विशेषकर पद 14 में बताया गया। तो भी मूसा के लेखों में शब्दों की व्याख्या प्रचलित शब्दों में की गई है ना की गुढ़ शब्दों में (देखें, उत्प. 17:5; 27:36; 29:13-35)।

यहोवा (YHWH) नाम का अर्थ क्या है इस विषय में अनेक विचारधाराएं पाई जाती है (इन्हें IDB, Vol. 2, पेज 409-11 से लिया गया है) :

a. अरेबिक मूल से इसका अर्थ है "सरगर्मी से प्रेम दिखाना"
b. अरेबिक मूल से "फूँकना" (यहोवा (YHWH) प्रचंड तूफान के रूप में)
c. कनानी मूल से "बोलना"
d. फोनिशियन अभिलेखों के अनुसार "वह जो संभालता है" अथवा "वह जो स्थापित करता है।"
e. इब्रानी लेखों के अनुसार, "जो था, जो है और जो भविष्य में रहेगा।"
f. इब्रानी हिफिल रूप के अनुसार, "जो सर्वदा रहेगा"
g. इब्रानी मूल के अनुसार "जीवित रहना" (उदाहरणार्थ, उत्प. 3:21) "सदा जीवित रहने वाला", "एकमात्र जीवित रहने वाला"
h. निर्ग. 3:13-16 के संदर्भ में यहोवा (YHWH) नाम का अर्थ है, "मैं जो होऊंगा, सो होऊंगा, सदा तक मेरा नाम यही रहेगा और पीढ़ी पीढ़ी में मेरा स्मरण इसी से हुआ करेगा।" (देखें जे. वाश वाट्स की पुस्तक "अ सर्वे ऑफ सिन्टैक्स इन द ओल्ड टेस्टामेन्ट, पेज 67) (A Survey of Syntax in the old Testament)। यहोवा (YHWH) का नाम अक्सर छोटे रूप में लिखा गया है :
   (1) याह (जैसे हल्लेलूयाह, BDB 219, निर्ग. 15:2; 17:16; भजन 89:8; 104:35)
   (2) याहू (नामों के अंत में याह आया, जैसे यशायाह)
   (3) यो (नाम के आरम्भ में यो व जो आया, जैसे जोएल, यहोशू)

3. इस नाम के अर्थ के बारे में बहुत सी अटकलें लगाई गई हैं नि.ड.ओ .टी.टी.इ वोल .4 पेज 1295-1300 (cf. NIDOTTE, vol. 4, pp. 1295-1300) यहां अभी भी रहस्य है। यह निश्चित रूप से संभव है कि मूसा का प्रश्न परमेश्वर के चरित्र के बारे में है निर्गमन 34: 6, शीर्षक नहीं। परमेश्वर का जवाब है
   a. मैं तुम्हारी समझ के लिए बहुत रहस्यमय हूँ।
   b. मैं हमेशा मौजूद रहने वाला हूं।
   c. मैं संप्रभु हूं और मैं वही करूंगा जो मुझे करना है ("वह होने का कारण बनता है," अलब्राइट)।
   d. हिपहिल का अर्थ कार्य-कारण से है, इसलिए " मैं रचना करने वाला परमेश्वर हूँ ।"
   e. जॉन वाल्टन, (John Walton) एक रिश्ता बनाने वाले परमेश्वर (यानी, वाचा-देने वाले परमेश्वर)।
   f. द यहूदी स्टडी बाइबल (पेज 111) (The Jewish Study Bible p. 111) यह सुझाव देती है कि "मेरा स्वभाव मेरे कार्यों से स्पष्ट हो जाएगा।"
   g. सारांश, नि.ड. ओ.टी.टी.इ, वॉल्यूम 1, पेज 1024-1025 (NIDOTTE, vol. 1, pp. 1024-1025) और मेरा विशेष विषय: परमेश्वर के नाम, डी।
   क्या हमें व्युत्पत्ति या कल्पना की तलाश करनी चाहिए? ज.प.स.ओ.अ (JPSOA) इब्रानी के लिए तीन संभावित विकल्पों को सूचीबद्ध करता है।
      (1) जो मैं हूँ सो हूँ
      (2) मैं हूँ जो हूँ
      (3) मैं वही हूँ जो मैं हूँ

4. बाद के यहूदी धर्म में यह वाचागत नाम यहोवा (YHWH) अति पवित्र माना जाने लगा, यहां तक कि यहूदी इसका उच्चारण करने में डरते थे कि कहीं निर्ग. 20:7; व्य. वि. 5:11; और 6:13 की आज्ञा का उल्लंघन न कर बैठें। अतः उन्होंने यहोवा(YHWH) की जगह "प्रभु" कहना आरम्भ कर दिया; जो समान अर्थ रखने वाला शब्द है। जब भी पढ़ते समय यहोवा (YHWH) शब्द आता था तो वे "प्रभु" पढ़ते थे। इसी कारण से अंग्रेजी बाइबल में यहोवा (YHWH) की जगह "प्रभु" अनुवादित किया गया है।

5. इस्राएल के वाचागत परमेश्वर के गुणों पर बल देने के लिए जिस प्रकार एल शब्द को मिश्रित किया

जाता है, उसी प्रकार यहोवा (YHWH) को भी मिश्रित किया गया है, और ऐसे बहुत से शब्द पाए जाते हैं, परन्तु यहां पर कुछ का उल्लेख किया जा रहा है :

a. यहोवा(YHWH)-यीरे - (यहोवा उपाय करेगा, BDB 217 तथा 906), उत्प. 22:14
b. यहोवा(YHWH)-रोफी - (यहोवा चंगा करता है, BDB 217 तथा 950) निर्ग. 15:26
c. यहोवा(YHWH)-निस्सी - (यहोवा हमारा झंडा, BDB 217 तथा 651) निर्ग. 17:15
d. यहोवा(YHWH)-मेकद्दिसकेम - (यहोवा जो शुद्ध करता है, BDB 217 तथा 872) निर्ग. 31:13
e. यहोवा(YHWH)- शालोम - (यहोवा जो शांति देता है, BDB 217 व 1022), न्या. 6:24
f. यहोवा(YHWH) सबाओथ - (सेनाओं का यहोवा, BDB 217 व 878), 1शमू. 1:3,11; 4:4; 15:2
g. यहोवा(YHWH)-रोई - (यहोवा मेरा चरवाहा, BDB 217 व 944) भजन 23:1
h. यहोवा(YHWH)-ज़िदकेनु - (यहोवा हमारी धार्मिकता, BDB 217 व 841), यिर्म 23:6
i. यहोवा (YHWH) शम्मा - (यहोवा जो समीप है, BDB 217 व 1027), यहेज. 48:35

Copyright © 2014 Bible Lessons International

▪**"क्या तू इसी समय इस्राएल को राज्य फेर देगा?"** अभी तक उनमें पूर्णरूप से यहूदी राष्ट्रवादी विचारधारा थी (देखें भजन 14:7; यिर्म. 33:7; होशे 6:11; लूका 19:11; 24:21)। संभव है वे राज्य में अपनी पदवियों के बारे में भी पूछ रहे हों। यह धर्म-वैज्ञानिक प्रश्न अभी तक बहुत मतभेद उत्पन्न करता है। मैं इस संदर्भ में प्रकाशितवाक्य पुस्तक ((देखें http://www.freebiblecommentary.org)) पर लिखी अपनी टीका के कुछ अंश प्रस्तुत करना चाहता हूँ जो इसी विषय से सम्बन्धित हैं:

"पुराने नियम के नबियों ने यहूदी-राज्य की पलीस्तीन में पुनसर्◌्थापना की भविष्यद्वाणी की थी कि यरूशलेम में पृथ्वी की सारी जातियाँ दाऊद वंशज शासक की महिमा स्तुति व सेवा के लिए एकत्रित होंगी, परन्तु नए नियम के लेखकों ने इस पर ध्यान केन्द्रित नहीं किया। क्या पुराने नियम की बातें प्रेरणाप्राप्त नहीं थीं (देखें मत्ती 5:17-19)? क्या नए नियम के लेखकों ने युग के अन्त की जटिल बातों को छोड़ दिया था? युग के अन्त संबंधी बातों के बहुत से स्रोत हैं, जैसे:

1. पुराने नियम के नबियों के लेख
2. पुराने नियम के प्रकाशनात्मक साहित्य के लेखक (जैसे यहेजकेल 37-39; दानि. 7-12)
3. पुराने व नए नियम के मध्यकाल के प्रकाशनात्मक लेखक (जैसे 1 हनोक)
4. स्वयं यीशु मसीह (जैसे मत्ती 24; मरकुस 13; लूका 21)
5. संत पौलुस की पत्रियाँ (जैसे 1 कुरि. 15; 2 कुरि. 5; 1 थिस्स. 4; 2 थिस्स. 2)
6. यूहन्ना का प्रकाशितवाक्य।

क्या उपरोक्त सभी बातें युगान्त के विषय में स्पष्ट शिक्षा देती हैं (घटनाओं, कालक्रम, व्यक्तियों की)? यदि नहीं, तो क्यों नहीं, क्या ये सभी प्रेरणाप्राप्त बातें नहीं हैं (मध्यकाल के अप्रमाणित साहित्य को छोड़कर)?

पवित्र आत्मा ने पुराने नियम के लेखकों पर सत्य का प्रकाशन उन्हीं की समझ के अनुसार, उन्हीं के शब्दों में किया। फिर भी पवित्र आत्मा ने अपने प्रगतिशील प्रकाशन के द्वारा इन पुराने नियम की युगान्त संबंधी विचारधाराओं को विस्तरित करके उन्हें विश्व स्तर का बना दिया (जैसे, इफिसियों 2:11-3:13)। इसके कुछ उपयुक्त उदाहरण इस प्रकार हैं:

1. यरूशलेम नगर का उपयोग उपमा के रूप में परमेश्वर के लोगों के लिए हुआ (सिय्योन) और नए नियम में ऐसे दर्शाया गया जिसमें परमेश्वर सब पश्चाताप करने वाले विश्वासियों को ग्रहण करता है (प्रकाशितवाक्य 20-22 का नया यरूशलेम) परमेश्वर के लोगों के रूप में शाब्दिक, भौतिक नगर के धर्म वैज्ञानिक विस्तार का पूर्व-संकेत उत्पत्ति 3:15 की पतित मानवजाति का उद्धार करने की प्रतिज्ञा में पाया जाता है, जबकि उस समय न तो यहूदी थे और न ही कोई यहूदियों की राजधानी वाला नगर था। यहां तक कि इब्राहीम की बुलाहट (उत्पत्ति 12:3) में अन्यजातियों को भी सम्मिलित किया गया।

2. पुराने नियम में प्राचीन पूर्वीय देशों की आसपास की जातियों को शत्रु कहा गया है परन्तु नए नियम में इस विचार का विस्तार करके सारे अविश्वासी, परमेश्वर-विरोधी और शैतान के वश में पड़े हुए लोगों तक बढ़ा दिया गया। इनके विरुद्ध लड़ाई भौगोलिक लड़ाई नहीं परन्तु आत्मिक लड़ाई हो गई।
3. देश देने की प्रतिज्ञा जो पुराने नियम की महत्वपूर्ण बात है और पूर्वजों को दी गई प्रतिज्ञा कहलाती है, अब यह सम्पूर्ण पृथ्वी देने की प्रतिज्ञा बन गई है। नए यरूशलेम का विचार अब नई सृष्टि की रचना बन गया है (देखें प्रकाशितवाक्य 20-22)।
4. पुराने नियम के नबियों की विचारधाराओं के अन्य उदाहरण, जिनमें विस्तार हुआ: - (1) इब्राहिम के वंशज अब वे लोग जिनका आत्मिक खतना हुआ (जैसे रोमियों 2:28-29) (2) वाचा के लोगों में अब अन्यजाति लोग भी शामिल (जैसे, होशे 1:9; 2:23; रोमियों 9:24-26; लैव्य. 26:12; निर्गमन 29:45; 2 कुरि. 6:16-18 तथा निर्गमन 19:5; व्यव. 14:2; तीतुस 2:14) (3) मन्दिर अब स्थानीय कलीसिया (1 कुरि. 3:16) तथा व्यक्तिगत हर विश्वासी (जैसे 1 कुरि. 6:19) (4) इस्राएल से संबंधित बातें अब परमेश्वर की सम्पूर्ण प्रजा पर लागू (जैसे गलातियों 6:16; 1 पतरस 2:5, 9-10; प्रका. 1:6)

नबियों का स्वरूप अब पूरा, विस्तरित और पहले से अधिक बातों को सम्मिलित करने वाला हो गया है। यीशु तथा प्रेरितिक लेखक युगान्त की बातों को उस तरह प्रस्तुत नहीं करते जैसे पुराने नियम में प्रस्तुत होती थीं (जैसा कि मार्टिन विन्गार्डन ने अपनी पुस्तक, (cf. Martin Wyngaarden, *The Future of The Kingdom in Prophecy and Fulfillment*) में कहा है। आधुनिक टीकाकार जो पुराने नियम के आदर्श को शाब्दिक अथवा सामान्य बनाने का प्रयत्न करते हैं, प्रकाशन को विकृत करके एक सामान्य यहूदी पुस्तक बना देते हैं और यीशु तथा पौलुस के अस्पष्ट और छोटे शब्दों में ज़बरदस्ती अर्थ निकालने की कोशिश करते हैं। नए नियम के लेखक पुराने नियम के नबियों को अस्वीकार तो नहीं करते परन्तु उनके मूल विश्वव्यापी अर्थों को दर्शाते हैं।''

1:7

NASB	**''समयों अथवा कालों के विषय में जानना तुम्हारा काम नहीं, जिन्हें पिता ने अपने अधिकार द्वारा नियुक्त किया है।''**
NKJV	**''समयों और अवसरों के बारे में जानना तुम्हारे लिये नहीं है।''**
NRSV	**''समयों अथवा अवधियों के बारे में जानना तुम्हारा काम नहीं है।''**
TEV	**समयों और अवसरों को जानना तुम्हारा काम नहीं है।''**
NJB	**''तुम्हारा काम नहीं कि उन समयों अथवा तिथियों को जानो।''**

यहाँ पर ''समयों'' यूनानी शब्द (*chronos*) का अर्थ ''कालों'' अथवा ''युगों'' से है (अर्थात् समय का गुज़रना), तथा शब्द "epochs" यूनानी शब्द (*kairos*) का अर्थ है ''किसी विशेष ध्यान के होने का समय'' (जैसे तीतुस 1:2-3)। ग्रीक-इंगलिश लैक्सीकन, लोऊ और नीदा के अनुसार ये दोनों शब्द एक समान अर्थ रखते हैं जो समय की अवधि के बारे में बताते हैं (जैसे 1 थिस्स. 5:1)। यह बात स्पष्ट है कि विश्वासी लोगों को इस संबंध में कोई तिथि-निर्धारण करने का प्रयत्न नहीं करना चाहिये; क्योंकि यीशु स्वयं भी नहीं जानता था कि उसके दुबारा आगमन का समय क्या होगा (जैसे देखें, मत्ती 24:35; मरकुस 13:32)। विश्वासी लोग सामान्य मौसम की जानकारी रख सकते हैं, परन्तु उन्हें हर समय तैयार और जागते रहना है कि न जाने कब यह विशेष घटना घट जाए (देखें मत्ती 24:32-33)। यीशु के दूसरे आगमन के विषय में नए नियम का बल दो विशेष बातों पर है: **सतर्क रहें** और **तैयार रहें**। शेष परमेश्वर पर निर्भर है।

1:8: ''तब तुम सामर्थ्य पाओगे'' यहाँ पर ध्यान देने की बात यह है कि पवित्र आत्मा के आने का सम्बन्ध सामर्थ्य और गवाही देने से जुड़ा हुआ है। प्रेरितों के काम की पुस्तक ''गवाही'' के बारे में है, (अर्थात् *martus*) सम्पूर्ण पुस्तक में यही मूल विषय प्रबलता से पाया जाता है (देखें प्रेरि. 1:8,22; 2:32; 3:15; 5:32; 10:39,41; 13:31; 22:15,20; 26:16)। कलीसिया को जो कार्य करना है वह उसे बात दिया गया है-उसे मसीह के सुसमाचार की गवाही देनी है (देखें लूका 24:44-49)। प्रेरितगण यीशु के जीवन-चरित्र और उसकी शिक्षाओं के गवाह थे, अब वे

उसके जीवन और शिक्षाओं की गवाही देते फिरते हैं। प्रभावशाली गवाही केवल पवित्र आत्मा की सामर्थ द्वारा ही आती है।

यह बड़ी रोचक बात है कि जोरोम की बिबलीकल कमेन्ट्री (*The Jerome Biblical Commentary p.169*) (पेज 169) "द्वितीय आगमन में देरी" के संबंध में लूका की प्रवृत्ति को बताते हुए लिखती है

> "पवित्र आत्मा यीशु के दूसरे आगमन का स्थानापन्न है। यह परमेश्वर की सामर्थ है, "परन्तु" यह ऐसी जोड़ने वाली वस्तु है जो यीशु के उत्तर के दो भागों को जोड़ती है। पवित्र आत्मा धार्मिक इतिहास के नए युग में अर्थात् कलीसियाई युग और सेवाक्षेत्र में, मसीही अस्तित्व का मूलतत्त्व है। इन सच्चाईयों को मसीह के शीघ्र आगमन का स्थान लेना चाहिए और इन्हें मसीही विश्वास का केन्द्र बिन्दु समझना चाहिए। कलीसिया में पाया जाने वाला पवित्र आत्मा, मसीह के दूसरे आगमन में देरी होने और इतिहास की निरन्तरता की समस्या के सम्बन्ध में लूका द्वारा दिया गया जवाब है।"

▪ **"यरूशलेम...सारे यहूदिया... सामरिया और पृथ्वी की छोर तक"** प्रेरितों के काम की पुस्तक की भौगोलिक रूपरेखा इस प्रकार हैः-

1. यरूशलेम, प्रेरि. 1-7 अध्याय
2. यहूदिया और सामरिया, प्रेरि. 8-12 अध्याय
3. पृथ्वी की छोर तक (अर्थात् रोम तक), प्रेरि. 13-28 अध्याय

उपरोक्त रूपरेखा को लेखक की साहित्यिक संरचना और उसका उद्देश्य भी माना जा सकता है। मसीहियत अथवा मसीही धर्म यहूदीवाद से निकला हुआ एक पन्थ मात्र नहीं है, बल्कि एकमात्र सच्चे परमेश्वर का विश्वव्यापी आन्दोलन है जो पुराने नियम में लिखित अपनी प्रतिज्ञाओं को पूरा करता है कि विद्रोही मानवजाति का उद्धार करे और अपनी संगति में उसे ले ले (देखें उत्पत्ति 12:3; निर्ग. 19:5; यशायाह 2:2-4; 56:7; लूका 19:46)।

वाक्यांश "पृथ्वी की छोर तक" फिर से प्रेरि. 13:47 में प्रयोग किया गया है जो यशायाह 49:6 से लिया गया उद्धरण है और मसीह संबंधी कथन है और इस बात का भी उल्लेख करता है कि "मैं तुझे जाति-जाति के लिये ज्योति ठहराऊंगा।" परमेश्वर की अनन्त योजना में सब जातियों के लिए एक उद्धारकर्त्ता का विचार रहा है, (देखें, उत्प. 3:15; उत्प. 12:3; निर्ग. 19:5-6; यशायाह 2:2-4)।

प्रथम यहूदी अगुवे पवित्रशास्त्र और उसमें लिखी अनेक यहोवा (YHWH) की प्रतिज्ञाओं को जानते थे कि यहोवा (YHWH) यरूशलेम की पुनस्र्थापना करेगा, उसे उन्नतिशील बनाएगा, संसार को यरूशलेम में लाएगा और वे इन सब बातों की अक्षरशः पूर्ति होने की आशा करते थे, इसीलिए वे यरूशलेम में एकत्रित रहे (देखें प्रेरि. 8:1)। परन्तु सुसमाचार में क्रान्ति आई और पुराने नियम की इस धारणा का विस्तार हुआ। विश्वव्यापी महान आज्ञा (देखें, मत्ती 28:18-20; लूका 24:47; प्रेरि.1:8) द्वारा विश्वासियों को बताया गया कि वे प्रतीक्षा न करें कि संसार उनके पास आए, वे स्वयं सम्पूर्ण संसार में जाएँ। नए नियम का यरूशलेम पलिस्तीन देश का कोई नगर नहीं है बल्कि स्वर्ग का प्रतीक है (देखें, प्रकाशितवाक्य 21:2)।

विशेष विषयः यहोवा (YHWH) के उद्धार की अनन्त योजना

मैं आप पाठकों के समक्ष स्वीकार करता हूँ कि इन बातों के संबंध में मैं पक्षपाती हो गया हूँ। मेरे यर्म-वैज्ञानिक व्यवस्थित शिक्षाएँ काल्विनवाद अथवा काल विभाजन वाद नहीं है, बल्कि ये महान आज्ञा संबंधी सुसमाचार-प्रचार वाद है (देखें, मत्ती 28:18-20; लूका 24:46-47; प्रेरि. 1:8)। मैं विश्वास करता हूँ कि परमेश्वर के पास समस्त मानवजाति के उद्धार के लिए एक सनातन योजना है (उदा. उत्प. 3:15; 12:3; निर्ग. 19:5-6; यिर्म. 31:31-34; यहेज. 18; 36:22-39; प्रेरि. 2:23; 3:18; 4:28; 13:29; रोमि. 3:9-18,19-20,21-31)। यह योजना उन सब मनुष्यों के लिए है जो परमेश्वर के स्वरूप पर और उसकी समानता में सृजे गये हैं (देखें, उत्प. 1:26-27)। वाचाएँ मसीह में संयुक्त हैं (देखें, गला. 3:28-29; कुलु. 3:11)। यीशु परमेश्वर का गुप्त रहस्य है जो प्रकाशित हो गया है (देखें, इफि. 2:11-3:13)। पवित्रशास्त्र की कुंजी इस्राएल नहीं, परंतु नए नियम का सुसमाचार है।

पवित्रशास्त्र की मेरी सारी व्याख्याओं में इसी पूर्व-ज्ञान का रंग भरा हुआ है। मैंने सम्पूर्ण पवित्र अच्छी तरह

पढ़ा है, निश्चय ही यह पक्षपात है (सभी व्याख्याकारों के पास यही है) परन्तु यह पवित्रशास्त्र द्वारा प्राप्त मेरी पूर्णधारणाएं हैं।

उत्पत्ति 1-2 अध्याय की मुख्य बात यह है कि परमेश्वर यहोवा (YHWH) ऐसा स्थान निर्मित करता है जहाँ पर उसकी सर्वश्रेष्ठ रचना अर्थात मानवजाति उसके साथ सहभागिता रख सके (देखें, उत्पत्ति 1:26-27; 3:8)। भौतिक सृष्टि वह मंच है जहाँ पर परमेश्वर व मानव की परस्पर संगति हो सके।

1. संत अगस्तीन इसे ऐसा खाली स्थान कहता है जो हर मनुष्य के जीवन में पाया जाता है और यह रिक्तता केवल परमेश्वर की उपस्थिति से भर सकती है।
2. सी.एस. लुईस इस संसार को "छुआ हुआ ग्रह" कहता है अर्थात् जो परमेश्वर द्वारा मनुष्यों के लिए तैयार किया गया हो।

पुराने नियम में इस दिव्य कार्यक्रम के अनेक संकेत पाए जाते हैं;

1. 1.उत्पत्ति 3:15 पहली प्रतिज्ञा है कि यहोवा (YHWH) मानव जाति को भयानक पापपूर्ण स्थिति व विद्रोही हालत में छोड़ नहीं देगा। यह प्रतिज्ञा इस्राएल की ओर संकेत नहीं करती है क्योंकि उस समय इस्राएल नहीं था अथवा उत्पत्ति 12 तक इब्राहिम की बुलाहट तक वाचा के लोग भी नहीं थे।
2. उत्पत्ति 12:1-3 अब्राह्मम के लिए यहोवा (YHWH) की आरंम्भिक बुलाहट और प्रकाशन थी, जिससे वाचा के लोग इस्राएल का आरंभ हुआ, परन्तु इस आरम्भिक बुलाहट में भी परमेश्वर की दृष्टि समस्त संसार पर लगी रही। पद 3 पर ध्यान दें।
3. निर्गमन 20 (व्य. वि. 5) में यहोवा (YHWH) ने अपने विशेष लोगों के मार्गदर्शन के लिए उन्हें अपनी व्यवस्था प्रदान की। निर्गमन 19;5-6 में इसे देखें, जहां यहोवा(YHWH) मूसा पर प्रकट करता है कि इस्राएल की उसके साथ अलौकिक संगति होगी। साथ ही यह भी देखें कि अब्राहम के समान वे भी चुने गए कि संसार को आशीषित करें (निर्ग. 19:5, "समस्त पृथ्वी तो मेरी है"।) इस्राएल को जातियों का माध्यम बनना था ताकि वे यहोवा (YHWH) के जानकर उसकी ओर आकृषित हों। दुख की बात है कि वे असफल रहे (देखें, यहेज. 36:27-38)।
4. भजनों में - 20:27-28; 66:4; 86:9 (प्रका. 15:4)
5. नबियों के माध्यम से यहोवा (YHWH) अपने उद्धार की विश्वव्यापी योजना को निरंतर प्रकट करता रहा :
   a. यशायाह - 2:2-4; 12:4-5; 25:6-9; 42:6, 10-12; 45:22; 49:5-6; 51:4-5; 56:6-8: 60:1-3; 66:18,23
   b. यिर्मयाह 3:27; 4:2; 12:15-16; 16:19
   c. मीका - 4:1-3
   d. मलाकी - 1:11

"नई वाचा" के आने से इस विश्वव्यापी जोर को आगे बढ़ाया गया (देखें यिर्म 31:31-34: यहेज 36:22-36) (देखें विशेष विषय: वाचा), जिसके अंतर्गत यहोवा (YHWH))(देखें विशेष विषय: इस्राएल के परमेश्वर की विशेषताएँ)के अनुग्रह व दया पर ध्यान दिया गया, न कि पतित मानवजाति (देखें विशेष विषय: मानव जाती का पतन) के भले कार्यों पर इसमें "नया हृदय," "नया मन" और "नई आत्मा" थी आज्ञा का पालन अति आवश्यक था, परन्तु ये बातें आंतरिक थीं, न कि बाहरी नियमों का पालन था (देखें रोमि 3:21-31 देखें विशेष विषय: रखाव)

नया नियम स्पष्ट रूप से और बिभिन्न प्रकार से इस विश्वव्यापी उद्धार की योजना को लागू करता है

1. महान आज्ञा - मत्ती 28:18-20; लूका 24:46-47; प्रेरि. 1:8
2. परमेश्वर की अन्नंत योजना (पूर्व-निर्धारित) लूका 22:22; प्रेरि. 2:23; 3:18; 4:28; 13:39
3. परमेश्वर चाहता है कि सब मनुष्यों का उद्धार हो – यूहन्ना 3:16; 4:42; प्रेरि. 10:34-35; 1 तीमु. 2:4-6; तीतुस 2:11; 2 पत. 3:9; 1 यूह. 2:2; 4:14

4. मसीह, पुराने और नए नियम को परस्पर जोड़ता है- गला. 3:28-29; इफि. 2:11-3:13; कुलु. 3:11, मसीह में सारी मानवीय बाधाएँ और भेदभाव नष्ट हो जाता है। यीशु परमेश्वर का गुप्त रहस्य था पर अब प्रकाशित हो गया है। (इफि. 2:11-3:13)।

नया नियम इस्राएल पर नहीं परन्तु यीशु पर ध्यान केन्द्रित करता है। राष्ट्रीयता अथवा भौगोलिक क्षेत्र नहीं परन्तु सुसमाचार केन्द्रिय बात है। इस्राएल प्रथम प्रकाशन था परन्तु यीशु अन्तिम प्रकाशन है (देखें, मत्ती 5:17-48)।

मैं आशा करता हूँ कि आप कुछ पल निकाल कर यह विशेष विषय पढ़ेंगे: "क्यों पुराने नियम की वाचा की प्रतिज्ञाएं, नए नियम की वाचागत प्रतिज्ञाओं से बिल्कुल भिन्न है।" आप इसे ऑन लाइन प्राप्त कर सकते हैं

विशेष विषय: सुसमाचार

विशेष विषय: विश्वास, आस्था, और भरोसा

विशेष विषय: "प्राप्त करें", "विश्वास करें", "स्वीकार करें/भविष्यवाणी करें", "बुलाहट" का क्या अर्थ है?

Copyright © 2013 Bible Lessons International

1:9 "उसे ऊपर उठा लिया गया" इस घटना को "यीशु का स्वर्गारोहण" कहा जाता है। मृतकों में से जी उठा हुआ यीशु वापस अपनी महिमा में लौट जाता है (देखें, लूका 24:50-51; यूहन्ना 6:22; 20:17; इफि. 4:10; 1 तीमु. 3:16; इब्रा. 4:14; तथा 1 पतरस 3:22)। इन सब बातों की पृष्ठभूमि में पिता क्रियाशील है जिसका उल्लेख नहीं पाया जाता है, देखें विशेष विषयः स्वर्गारोहण-प्रेरि. 1:2

इस स्वर्गारोहण के वर्णन में क्रिया शब्दों की भिन्नता पर ध्यान दीजिए:-

1. "ऊपर उठाया न गया" प्रेरि. 1:2
2. "ऊपर उठा लिया गया" प्रेरि. 1:9
3. "तुम्हारे पास से स्वर्ग पर उठा लिया गया है" प्रेरि. 1:11 (वही क्रिया शब्द जो प्रेरि. 1:2 में है)
4. "स्वर्ग पर उठा लिया गया" लूका 24:51

देखें विशेष विषय: स्वर्गारोहण प्रेरि. 1:2

▪ **"बादल"** बादल महत्वपूर्ण युगान्त विषयक चिन्ह है। विशेष विषय देखें

विशेष विषय: बादलों पर आना (BDB777,KB857)

बादलों पर आना युगान्त का सबसे महत्वपूर्ण चिन्ह है। पुराने नियम में यह तीन भिन्न-भिन्न रूपों में प्रयुक्त हुआ है :

1. परमेश्वर के भौतिक उपस्थिति दर्शाने के लिए, जिसे शकीना या महिमा पूर्ण बादल कहा गया है (देखें, निर्ग. 13:21; 14:19,20,24; 16:10; 19:9; गिन. 11:25; नहे. 9:19) (देखें विशेष विषय: बादलों)
2. परमेश्वर की पवित्रता को ढाँकने के लिए, ताकि मनुष्य उसे देख न सके और मर ना जाए (देखें, निर्ग. 33:20; यशा. 6:5) (देखें विशेष विषय: क्या मनुष्य परमेश्वर को देख सकता है और जीवित रह सकता है)
3. ईश्वरत्व को लाने के लिये (देखें, भजन 18:9; 104:3; यशा. 19:1; नहे. 1:3; प्रेरि. 1:9; 1 थिस्स. 4:17)

दनिय्येल 7:13 में बादलों का प्रयोग दिव्य मानव पुत्र अर्थात मसीह की सवारी के रूप में हुआ (देखें विशेष विषय : मसीह) और(देखें विशेष विषय: नए नियम में मसीह के देवता) नए नियम में दानिय्येल की इस भविष्यवाणी के संकेत 30 से अधिक पाए जाते हैं।

1. बादलों के साथ मसीह के इस संबंध को इन पदों में देखा जा सकता है : (मत्ती 24:30; 26:64; मर. 13:26; 14:62; लूका 21:27; प्रेरि. 1:9,11; 1 थिस्स. 4:17; प्रका. 1:7)।

2. यीशु स्वर्ग वापस लौटता है, प्रेरितों के काम 1: 9
3. यीशु से हवा में मिला, 1 थिस्स। 9:17

Copyright © 2014 Bible Lessons International

1:10 " वे ताक रहे थे" यह संयुक्त कार्य है जो पूरा नहीं हुआ था, वे लगातार यीशु को देखते रहे, आँखों से छिप जाने के बाद भी देखते रहे।
यह लूका रचित लेखों की एक विशेषता है (देखें लूका 4:20; 22:56; प्रेरि. 1:10; 3:4,12; 6:15; 7:55; 10:4; 11:6; 13:9; 14:9; 23:1; लूका और प्रेरितों के काम को छोड़कर केवल दो बार नए नियम में ऐसी विशेषता दिखाई देती है जो 2 कुरि. 3 अध्याय में है)। इसका अर्थ है दृढ़ संकल्प के साथ देखना" "टकटकी लगाकर देखना" अथवा "अपनी आँखें गढ़ाकर देखना।"
▪ **"आकाश की ओर"** प्राचीन काल के लोग समझते थे कि स्वर्ग आकाश में ऊपर है, परन्तु आज के ज्ञानवान संसार में अनेक बातें इसमें आ जाती है। लूका 24:31 में हम पढ़ते हैं कि जब चेलों ने यीशु को पहचान लिया तो वह उनकी आँखों से छिप गया। हमारी संस्कृति में यह उचित प्रतीत होता है। स्वर्ग बाहर और ऊपर नहीं है बल्कि शायद समय और दूरी से की ही दिशा है। स्वर्ग कोई लक्ष्य नहीं है, परन्तु एक व्यक्ति है।

▪ **"दो पुरुष श्वेत वस्त्र पहिने हुए"** नया नियम अक्सर स्वर्गदूतों को श्वेत वस्त्र पहने हुए दर्शाता है (जैसे लूका 24:4; यूहन्ना 20:12)। स्वर्गदूत अनेक अवसरों पर प्रकट हुए जैसे यीशु के जन्म के समय, उसकी परीक्षा काल के समय, गतसमनी में, उसकी कब्र पर, और यहाँ उसके स्वर्गारोहण पर।

1:11 "गलीली पुरुषो" प्रेरितों के काम में लूका कई बार चेलों को गलील निवासी बताता है (जैसे प्ररि. 2:7; 13:31)। यहूदा इस्करियोती को छोड़कर सभी बारह चेले गलील निवासी थे। यहूदियों के निवासियों की दृष्टि में गलील को तुच्छ समझा जाता था क्योंकि यहाँ अधिकांश जनसंख्या गैर यहूदियों की थी और यहाँ के लोग, मौखिक परम्पराओं का तालमूद (Talmud) का सख्ती से पालन नहीं करते थे।
स्वर्गदूतों ने जो कुछ कहा, यदि उसके उत्तर में लूका यह भी बता देता कि यीशु के दुबारा आने में देर क्यों हो रही है तो आश्चर्य की बात होती। मसीही लोगों को यीशु के दूसरे आगमन पर ध्यान केन्द्रित नहीं करना है परन्तु सेवा, सुसमाचार प्रचार और मिशन कार्यों पर ध्यान देना है।

▪ **"यीशु...फिर आएगा"** कुछ धर्म वैज्ञानिक विद्वान "यीशु" तथा "मसीह" शब्दों के बीच अन्तर दर्शाने की कोशिश करते हैं। ये दो स्वर्गदूत दृढ़तापूर्वक कहते हैं कि जिस यीशु को वे जानते हैं, वही दुबारा लौट कर संसार में आएगा। महिमा प्राप्त, स्वर्ग पर उठा लिया गया मसीह अभी भी नासरत का महिमान्वित यीशु है। वह सदा परमेश्वर/मनुष्य रहेगा।
यीशु जिस तरह बादलों पर सवार होकर स्वर्ग को गया था उसी तरह स्वर्ग से बादलों पर दुबारा आएगा (देखें विशेष विषय प्रेरि. 1:9; मत्ती 10:23; 16:27; 24:3, 27, 37, 39; 26:64; मरकुस 8:38-39; 13:26; लूका 21:27; यूहन्ना 21:22; 1 कुरि. 15:23; 1 थिस्स. 1:10; 4:16; 2 थिस्स. 1:7,10; 2:1,8; याकूब 5:7-8; 2 पतरस 1:16; 3:4,12; 1 यूहन्ना 2:28; प्रका. 1:7)। यीशु का दूसरा आगमन नए नियम का मूल विषय है, जिसका वर्णन बार बार किया गया है। सुसमाचार को बहुत समय बाद लिखे जाने का एक मूल कारण यह है कि प्रारम्भिक कलीसिया की उमीद थी कि यीशु बहुत जल्दी ही लौटकर आने वाला है। जब उसके दुबारा आने में विलम्ब हुआ,सारे प्रेरितगण एक एक करके मरने लगे और हर तरफ झूठी शिक्षाएँ फैलने लगीं। तो इन सब बातों ने कलीसिया को प्रेरित किया कि यीशु के जीवन और शिक्षाओं को लिखित रूप दिया जाए।

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरि. 1:12-14
**12तब वे जैतून नामक पहाड़ से जो यरूशलेम के निकट एक सब्त के दिन की दूरी पर है,
यरूशलेम को लौटे। 13जब वे वहाँ पहुँचे तो उस अटारी पर गए, जहाँ पतरस और यूहन्ना और याकूब
और अन्द्रियास और फिलिप्पुस और थोमा और बरतुल्मै और मत्ती और हलफई का पुत्र याकूब और**

शमौन जेलोतेस और याकूब का पुत्र यहूदा रहते थे। [14]ये सब कई स्त्रियों और यीशु की माता मरियम और उसके भाइयों के साथ एक चित्त होकर प्रार्थना में लगे रहे।

1:12 ‘‘वापसी’’ लूका 24:52 यह शब्द जोड़ता है, ‘‘बड़े आनन्द से यरूशलेम को लौट गए।’’

▪ **‘‘ जैतून नामक पहाड़ ’’** यह लूका 24:50 से विपरीत प्रतीत होता है (अर्थात् बैतनिय्याह); परन्तु लूका 19:29 और 21:37 की तुलना मरकुस 11:11-12 और 14:3 से करें। जैतून पर्वत 2.5 मील लम्बी ढलान थी और यरूशलेम से 300-400 फुट ऊँचाई पर थी, जो किद्रोन घाटी के सामने बैतनिय्याह होते हुए मन्दिर के पास तक जाती थी। इसका उल्लेख पुराने नियम में युगान्त विषयक भविष्यद्वाणी के रूप में हुआ है (देखें जकर्याह 14:4)। यीशु ने बहुत बार अपने चेलों के साथ वहां भेंट की और प्रार्थना की और संभवतः वहाँ ठहरा भी था।

▪ **‘‘एक सब्त के दिन की दूरी पर’’** सब्त के दिन एक यहूदी मनुष्य कितना सफर कर सकता था, यह रब्बी लोग तय करते थे (जैसे निर्गमन 16:29; गिनती 35:5)। सफर की दूरी लगभग 2000 कदम थी जिसे रब्बियों द्वारा निर्धारित किया गया था ताकि मूसा की व्यवस्था का उल्लंघन न हो।

1:13 ‘‘ऊपर का कमरा’’ संभवतः यह वैसा ही स्थान था जहां पर अंतिम भोज खाया गया था (देखें, लूका 22:12; मरकुस 14:14-15)। परम्परा के अनुसार यह यूहन्ना मरकुस के घर का ऊपरी कमरा था (देखें प्रेरि.12:12), जिसने पतरस के उपदेशों के आधार पर मरकुस का सुसमाचार लिखा था। संभवतः यह बड़ा कमरा था जिसमें 120 लोग समा सकते थे।

▪ **‘‘वे ’’** प्रेरितों की चार सूचियों में से यह एक सूची है (देखें मत्ती 10:2-4; मरकुस 3:16-19 तथा लूका 6:14-16)। सूची एक जैसी नहीं है। नामों के क्रम में अन्तर है, परन्तु तीन लोगों के एक समूह के नाम एक जैसे हैं। पतरस का नाम सूची में सबसे पहले और यहूदा इस्करीयोति का नाम हमेशा अन्त में आता है। चार चार लोगों के ये तीन समूह शायद इस उद्देश्य से रखे गये हों ताकि वे समय समय पर जाकर अपने परिवारों की देखभाल कर सकें। नीचे दिए गए विशेष विषय को देखें:

विशेष विषय: प्रेरितों के नाम

	मत्ती 10:2-4	**मरकुस 3:16-19**	**लूका 6:14-16**	**प्रेरितों के काम 1:12-18**
पहला समूह	शमौन (पतरस)	शमौन (पतरस)	शमौन (पतरस)	पतरस
	अन्द्र अन्द्रियास (पतरस का भाई)	याक याकूब (ज़ब्दी का पुत्र)	अन्द्रियास (पतरस का भाई)	यूहन्ना
	याकूब (ज़ब्दी का पुत्र)	यूहन्न यूहन्ना (याकूब का भाई)	याकूब	याकूब
		अन्द्रि अन्द्रियास	यूहन्ना	अन्द्रि अन्द्रियास
दूसरा समूह	फिलिप्पुस	फिलिप्पुस	फिलिप्पुस	फिलिप्पुस
	बरतुल्मै	बरतुल्मै	बरतुल्मै	थोम
	थोमा	मत्ती	मत्ती	बरतुल्मै
	मत्ती (महसूल लेने वाला)	थोमा	थोमा	मत्ती

तीसरा समूह	याकूब (हलफई का पुत्र)	याकूब (हलफई का पुत्र)	याकूब (हलफई का पुत्र)	याकूब (हलफई का पुत्र)
	तद्दै	तद्दै	शमौन (जेलोतेस)	शमौन (जेलोतेस)
	शमौन (कनानी)	शमौन (कनानी)	यहूदा (याकूब का पुत्र)	यहूद (याकूब का पुत्र)
	यहूदा (इस्करियोती)	यहूदा (इस्करियोती)	यहूदा (इस्करियोती)	

लूका 6:14 की टिप्पणियों से :

- **"शमौन जिसका नाम उसने पतरस भी रखा"** बारह प्रेरितों की तीन और भी सूचियाँ हैं। सूची में पतरस सदैव प्रथम स्थान पर, और यहूदा इस्करियोती सदैव अंतिम स्थान पर है। चार चार चेलों के तीन समूह हैं, जो एक समान है, हालांकि नामों के क्रम में अक्सर उलट-फेर हो जाती है (देखें, मत्ती 10:2-4 ; मरकुस 3:16-19 ; प्रेरित 1:13)।
- **"अन्द्रियास"** यूनानी शब्द का अर्थ है "पुरुषोचित"। यूहन्ना 1:29-42 से ज्ञात होता है कि वह यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का शिष्य था और उसने अपने भाई पतरस का परिचय यीशु से कराया था।
- **"याकूब"** यह इब्रानी नाम "याकूब" है (BDB784) जिसका अर्थ है "अड़ंगा मारने वाला" (देखें उत्प 25:26) बारह प्रेरितों की इस सूची में दो याकूब हैं, जिसमें एक यूहन्ना का भाई याकूब है (देखें, मरकुस 3:17) और वह इनर सर्किल (Inner Circle) का हिस्सा था, (अर्थात् पतरस, याकूब, यूहन्ना)।
- **"यूहन्ना"** यह याकूब का भाई और चेलों के आंतरिक समूह (Inner Circle) का सदस्य था। उसने नए नियम की पाँच पुस्तकें लिखी और अन्य प्रेरितों की तुलना में लंबी आयु तक जीवित रहा।
- **"फिलिप्पुस"** यूनानी नाम का अर्थ है "घोड़ों का प्रेमी" यूहन्ना 1:43-51 में उसकी बुलाहट का उल्लेख पाया जाता है।
- **"बरतुल्मै"** इस नाम का अर्थ है "तोल्मी का पुत्र"। यह यूहन्ना रचित सुसमाचार का नतनएल हो सकता है (देखें यूहन्ना 1:45-49;21:20)।
- **"मत्ती"** इस इब्रानी नाम की उत्पत्ति शायद "मत्तित्याह" से हुई (देखें, 1 इति 9:31; 15:18,21; 16:5; 25:3, 21; नहे. 8:4) जिसका अर्थ है "यहोवा (YHWH) का उपहार"। यह लेवी भी कहलाता है (देखें मरकुस 2:13-17)।
- **"थोमा"** इब्रानी नाम का अर्थ "जुड़वाँ" अथवा दिदमुस है (देखें यूहन्ना। 11:16;20:24;21:2)।
- **"हलफई का पुत्र याकूब"** यह इब्रानी नाम "याकूब" (Jacob) है। बारह प्रेरितों की सूची में दो याकूब पाए जाते हैं। इनमें से एक यूहन्ना का भाई है (देखे, लूका 6:17) जो (पतरस, याकूब और योहन्ना) आंतरिक समूह (Inner Circle) का सदस्य था। यह " छोटा याकूब" भी कहलाता है (मर 3:17)
- **"शमौन जेलोतेस"** मरकुस के यूनानी मूलपाठ में "शमौन कनानी" लिखा है (मत्ती 10:4 में भी यही है)। मरकुस ने संभवतः जेलोतेस शब्द का उपयोग करना इसलिए नहीं चाहा क्योंकि उसका सुसमाचार रोमी लोगों के लिए रचा गया था और जेलोतेस शब्द रोमी सरकार के विरोधी और उपद्रवी समूह की ओर संकेत करता है जो रोमी शासन उखाड़ फेंकना चाहते थे। लूका शमौन को जेलोतेस कहता है (देखें प्रेरि 1:13)। कनानी शब्द के कई अर्थ हो सकते हैं
    1. गलील के काना क्षेत्र से संबंध रखने वाला।
    2. पुराने नियम में व्यापार करने वाले कनानी कहलाते थे।
    3. सामान्य रूप से जो कनान का रहने वाला हो।

यदि लूका द्वारा लिखा वर्णन सही है, तो जेलोतेस अरामी भाषा से निकला शब्द है जिसका अर्थ है "उत्साही" या "जोशीला" (देखें प्रेरि 1:17)। थीशु के द्वारा चुने गये बारहों चेले भिन्न-भिन्न विरोधी समूहों से थे। शमौन जेलोतेस राष्ट्रवादी समूह से था और हिंसा द्वारा रोमी सरकार को उखाड़ फेंकने के पक्ष में था। सामान्य रूप से इस प्रकार का शमौन जेलोतेस और लेवी (अर्थात चुंगी लेने वाला मत्ती) एक दूसरे के साथ एक ही कमरे में नहीं रह सकते थे।

- **" याकूब का पुत्र यहूदा"** यह "लेब्बेयुस" (मत्ती 10:3) अथवा "यहूदा" (यूह 14:22) भी कहलाता है। तद्दैयुस और लेब्बेयुस दोनों ही का अर्थ है "अतिप्रिय बालक"।
- **"यहूदा इस्करियोती"** प्रेरितों के नाम की सूची में दो शमौन, दो याकूब और दो यहूदा पाए जाते हैं। शब्द इस्करियोती के दो संभव अर्थ हो सकते हैं :
  1. यहूदा के करिओथ नगर का मनुष्य (देखें, यहोशू 15:23, इसका अर्थ है की यही एकमात्र यहूदी चेला था)
  2. उसके पिता का नाम (देखें, यूहन्ना 6:71;13:2,26)
  3. " कटार बंद आदमी" अथवा "हत्यारा" जिसका अर्थ यह हो सकता है कि वह शमौन जेलोतेस की तरह जोशीला व उत्साही हो।

Copyright © 2014 Bible Lessons International

▪ **"पतरस"** गलील के बहुत से यहूदियों का नाम यहूदी नाम होता था (जैसे शिमोन या शमौन, उत्पत्ति 29:33 जिसका अर्थ है "सुन लेना") [BDB1035] और यूनानी नाम (जो उसे नहीं दिया गया)। यीशु ने पतरस का उपनाम "चट्टान" रखा। यूनानी भाषा में यह चमतजतवे तथा अरामी भाषा में कैफा है (देखें यूहन्ना 1:42; मत्ती 16:16)।

▪ **"अन्द्रियास"** यूनानी शब्द का अर्थ है "भला पुरुष" यूहन्ना 1:29-42 से हमें पता चलता है कि यह यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का चेला था और इसने अपने भाई पतरस का परिचय यीशु से कराया था।

▪ **"फिलिप्पुस"** यूनानी शब्द का अर्थ है "घोड़ों का शौकीन।" इसकी बुलाहट का विस्तृत वर्णन यूहन्ना 1:43-51 में पाया जाता है।

▪ **"थोमा"** इब्रानी में इस नाम का अर्थ है "जुड़वाँ" अथवा दिदुमुस (देखें, यूहन्ना 11:16; 20:24; 21:2)।

▪ **"बरतुल्मै"** इस नाम का अर्थ है "तुल्मै का पुत्र।" यह नतनएल हो सकता है ("परमेश्वर का दान") (BDB 681) (देखें यूहन्ना 1:45-49; 21:20)

▪ **"मत्ती"** संभवतः यह नाम इब्रानी नाम मत्तैनाए से संबंध रखता है जिसका अर्थ है "यहोवा (YHWH)का दान"(BDB 683), इसको लेवी नाम से भी पुकारा जाता था (देखें मरकुस 2:14; लूका 5:27)।

▪ **"याकूब"** यह इब्रानी नाम "याकूब" है (देखें उत्पत्ति 25:26) (BDB 784)। सूची में दो याकूब पाए जाते हैं। एक यूहन्ना का भाई है (मरकुस 3:17), और (पतरस, याकूब और यूहन्ना) भीतरी विशेष समूह का सदस्य है। यह छोटा याकूब भी कहलाता है।

▪ **"शमोन जेलोतेस"** मरकुस के यूनानी सुसमाचार में और मत्ती 10:4 में इसे शमौन कनानी कहा गया है। मरकुस ने शब्द जेलोतेस का प्रयोग संभवतः इसलिए नहीं किया होगा क्योंकि जेलोतेस शब्द रोमी सरकार के विरोधी, क्रान्तिकारी दल का संकेत देता है, और मरकुस ने रोमी लोगों के लिए ही सुसमाचार लिखा था। लूका शमौन को जेलोतेस नाम से पुकारता है (देखें लूका 6:15 और प्रेरि. 1:13)। कनानी शब्द की उत्पत्ति के अनेक कारण हो सकते हैं जैसे:

1. गलील का इलाका काना कहलाता था
2. पुराने नियम में कनानी शब्द का प्रयोग व्यापारियों के लिए होना
3. कनान का रहने वाला कनानी

यदि लूका द्वारा दिया गया नाम सही है तो "जेलोतेस" आरामी भाषा का शब्द है जो "उत्साह" को प्रकट करता है। यीशु के चुने हुए बारह चेले विभिन्न समूहों से आए थे। शमौन जेलोसेस एक राष्ट्रवादी उत्साही समूह का सदस्य था जो रोमी सरकार से घृणा करता और साम्राज्य को उखाड़ फैंकने के सपने देखता था। सामान्यतः ऐसे शमौन और

लेवी को (अर्थात् चुंगी लेने वाले मत्ती को) एक साथ उस अटारी में नहीं होना चाहिए था, क्योंकि वे आपस में विरोधी समूहों के थे।

▪ **"तद्दै"**: यह चेला "लेब्बेयूस" ("मन के अनुसार मनुष्य" मत्ती 10:3) अथवा "यहूदा" (लूका 6:15; प्रेरि. 1:13; यूहन्ना 14:22) भी कहलाता था। तद्दै का अर्थ है "प्रिय बालक"।

▪ **"यहूदा इस्करियोती"**: यीशु के चेलों में दो शमौन, दो याकूब और दो यहूदा थे। "इस्करियोती" शब्द की उत्पत्ति के दो स्रोत हो सकते हैं: (1) यहूदा के नगर करिय्योथे का निवासी (यहोशू 15:25) अथवा (2) "खन्जर वाला मनुष्य" अथवा हत्यारा; इसका अर्थ हुआ कि वह भी शमौन जेलोतेस की तरह उत्साही था।

विशेष विषय: इस्करियोती

यहूदा इस्करियोती अनेक वर्षों तक यीशु के साथ घनिष्ठ संबंधों में रहा, उसके उपदेश सुने, संगति रखी और उसे ध्यान से देखा भी परंतु फिर भी विश्वास के द्वारा उसका यीशु के साथ व्यक्तिगत रिश्ता नहीं था (देखें, मत्ती 7:21-23)। यहूदा की तरह पतरस भी अनेक कठिन परीक्षाओं में होकर गुजरा था परंतु दोनों में गहरा अंतर था (देखें मत्ती 26:75) यहूदा के विश्वासघात के उद्देश्यों के संबंध में बड़ा विचार विमर्श किया जाता रहा है :

1. मुख्य रूप से आर्थिक लाभ के कारण विश्वास किया।(युहन्ना 12:6)
2. राजनैतिक उद्देश्यों से विश्वासघात किया (देखे, विलियम क्लासीन की पुस्तक, "यहूदा विश्वासघाती अथवा यीशु का मित्र?" (William Klassen *"Judas Betrayer or Friend of Jesus?")*
3. यह आत्मिक समस्या थी (देखें, लूका 22:3; यूहन्ना 6:70;13:2,27)

शैतानी प्रभाव अथवा दुष्टात्मा ग्रस्तता के विषय में देखें विशेष विषय : "नए नियम में शैतानी शक्तियाँ" (The Demonic in the NT)। इसके अलावा निम्नलिखित स्रोत हैं, जिन्हें मैं अच्छा समझता हूं :

1. मैरिल एफ. उंगर की पुस्तक "बिबलीकल डिमनोलॉजी, डीमन्स इन द वर्ल्ड टुडे" (Merrill F. Unger, *Biblical Demonology, Demons in the World Today*)
2. क्लीन्टन ई. आरनौल्ड की पुस्तक, थ्री क्रूशियल क्वशचन्स अबाउट स्पीरिचुअल वारफेयर" (Clinton E. Arnold, *Three Crucial Questions About Spiritual Warfare*)
3. कुर्ट कोच की पुस्तक, "क्रिश्चियन काउंसलिंग एण्ड अकल्टसिज्म" "डिमनोलॉजी पास्ट एण्ड प्रैजेन्ट" ("Kurt Koch, *Christian Counseling and Occultism, Demonology Past and Present*")
4. सी. फ्रैड डिकासन की पुस्तक, "डीमन पजैशन एण्ड द क्रिश्चियन" ("C. Fred Dickason, *Demon Possession and the Christian*")
5. जॉन पी. न्यूपोर्ट की पुस्तक, "डीमन्स, डीमन्स, डीमन्स" ("John P. Newport, *Demons, Demons, Demons*")
6. जॉन वारविक मोन्टगोमेरी की पुस्तक, "प्रिंसिपालिटीज एण्ड पावर्स" (John Warwick Montgomery, *Principalities and Powers*)

सांस्कृतिक दन्तकथाओं व अन्धविश्वासों से सावधान रहिये। मत्ती 16:23 में शैतान ने पतरस पर आक्रमण किया कि वह यीशु की मृत्यु के संबंध में उसकी परीक्षा करे। शैतान निरन्तर इस कार्य में लगा रहता है। वह हर संभव प्रयास करता है कि वह हमारे उद्धार के पक्ष में यीशु के हर कार्य को रोके।

1. यीशु की परीक्षाएँ, लूका 4
2. उसने पतरस को इस्तेमाल किया
3. उसने यहूदा और सन्हेद्रिन को इस्तेमाल किया।

यूहन्ना 6:70 में यीशु ने यहूदा को शैतान कहा। बाइबल नहीं बताती कि विश्वासियों पर दुष्टात्माओं का प्रभाव पड़ता है। लेकिन स्पष्टरूप से विश्वासी लोगअपनी व्यक्तिगत बुराइयों और दुर्बलताओं के कारण दुष्टात्माओं से प्रभावित होते हैं (देखें विशेष विषय : व्यक्तिगत बुराई (Personal Evil)।

"इस्करियोती" शब्द कहां से आया यह अज्ञात है तो भी कुछ संभावनायें इस प्रकार है :

1. करिय्योथ, यहूदा का एक नगर (देखें, यहोशू 15:25) (*Kerioth*, a city of Judah (cf. Jos. 15:25)
2. कर्तान, गलील का एक नगर (देखें, यहोशू 21:32) (*Kartan*, a city in Galilee (cf. Jos. 21:32)
3. करोईदेस, यरूशलेम व यरीहो में उगने वाला खजूर का वृक्ष। (*Karōides*, a date palm grove in Jerusalem or Jericho)
4. स्कोरटिया, जोगा अथवा चमड़े का थैला (देखें, यूहन्ना 13:29)(*scortea*,an apron or leather bag)
5. अस्कारा, मत्ती 27:5 से इब्रानी शब्द जिसका अर्थ है गला घोटना। (*ascara*, strangling)
6. हत्यारे का खंजर (यूनानी) जिसका अर्थ है शमौन की तरह वह जेलोती था (लूका 6:15) (Zealot)

Copyright © 2014 Bible Lessons International

1:14 "एक चित्त होकर" यह वाक्यांश दो शब्दों का मिश्रण है, "एक जैसे" *(homo)* और "मन की भावना" *(thumos)* अर्थात् मन की भावनाओं में वे सब एक समान थे। ऐसा होने के लिये उनसे आग्रह नहीं किया गया था, परन्तु वह वातावरण ऐसा था कि वे एक चित्त हो गए। इस पुस्तक में बार बार इस आचरण का उल्लेख पाया जाता है (देखें प्रेरि. 1:14; 2:46; 4:24; 5:12; 15:25; अन्य लोगों में, 7:57; 8:6; 12:20; 18:12; 19:29)।

NASB "निरंतर लगे रहना"
NKJV "लगे रहे"
NRSV "लगातार लगे रहे"
TEV "बार बार एकत्रित होते थे"
NJB "निरन्तर आपस में मिले रहते थे"

इस वाक्यांश (*pros* and *kaptereō*) का अर्थ है, वे उद्देश्य के साथ, निष्ठापूर्वक प्रार्थना में लगे रहे। लूका इन शब्दों का अक्सर उपयोग करता है (प्रेरि. 1:14; 2:42, 46; 6:4; 8:13; 10:7)

" स्त्रियों के साथ": स्त्रियों का एक समूह यात्राओं में शामिल था जो यीशु और चेलों की अपने व्यक्तिगत साधनों से सेवा करती थीं (देखें मत्ती 27:55-56; मरकुस 15:40-41; लूका 8:2-3; 23:49; तथा यूहन्ना 19:25)।

विशेष विषय: वे स्त्रियाँ जिन्होंने यीशु और उसके चेलों के साथ यात्रा की

मत्ती 27:55-56	मरकुस 15:40-41	लूका 8:2-3;23:49	यूहन्ना 19:25
मरियम मगदलीनी	मरियम मगदलीनी	मरियम मगदलीनी	यीशु की माता मरियम
याकूब और योसेस की माता मरियम	छोटे याकूब और यूसेस की माता मरियम	(हेरोदेस के भण्डारी) खुजा की पत्नी योअन्ना सूसन्नाह	उसकी माता की बहन क्लोपास की पत्नी मरियम
जबूदी के पुत्रों (याकूब और यूहन्ना) की माता	सलोमी	और बहुत सी स्त्रियाँ	
			मरियम मगदलीनी

उपरोक्त स्त्रियों के विषय में मरकुस 15:40-41 की टीका पर आधारित टिप्पणियाँ :

"कई स्त्रियाँ भी दूर से देख रही थी" प्रेरितों के समूह की आर्थिक और भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति कुछ स्त्रियों के द्वारा की जाती थी, जैसे उनके खाने का प्रबंध, कपड़ों की धुलाई इत्यादि, देखें मर 15:41; मत्ती 27:55; लूका 8:3।

"मरियम मगदलीनी" मगदला गलील सागर के तट पर बसा एक छोटा सा नगर था जो तिबिरियास से तीन

मील दूर उत्तरी दिशा में था, जहाँ कि यह निवासी थी। यीशु ने अनेक दृष्टात्माओं से उसे छुड़ाया था तभी से वह गलील में यीशु का अनुगमन करने लगी थी (देखें, लूका 8:2)। उस पर वैश्या होने का आरोप लगाया गया था परन्तु नए नियम में इस बात का कोई सबूत नहीं मिलता है।

"छोटे याकूब और यूसेस की माता मरियम" मत्ती 27:56 में इसे "याकूब और यूसेस की माता" कहा गया है। मत्ती 28:1 में उसे " दूसरी मरियम" कहा गया है। वास्तविक प्रश्न यह है कि उसका विवाह किसके साथ हुआ था? यूहन्ना 19:25 के अनुसार उसका विवाह संभवतः क्लोपास के साथ हुआ था तो भी उसका पुत्र याकूब "हलफई का पुत्र" कहलाता था (देखें, मत्ती 10:3; मर 3:18; लूका 6:15)

"सलोमी" यह याकूब और यूहन्ना की माता थी जो यीशु के चलों के आंतरिक समूह (Inner Circle) के सदस्य थे और वह जब्दी की पत्नी थी (देखें, मत्ती 27:56; मर 15:40; 16:1-2)

इन स्त्रियों के विषय में यूहन्ना 19:25 पर आधारित मेरी टीका से कुछ टिप्पणियाँ दी जा रही हैं :

"यीशु के क्रूस के पास उसकी माता और उसकी माता की बहन, क्लोपास की पत्नी मरियम, और मरियम मगदलीनी खड़ी थीं।" इस विषय में बड़ा वाद-विवाद पाया जाता है कि यहाँ पर चार नामों का उल्लेख है या तीन नामों का।

यह हो सकता है कि यहाँ पर चार नामों का उल्लेख किया गया है क्योंकि मरियम नाम की दो बहनें नहीं हो सकती हैं। मरियम की बहन सलोमी का नाम मरकुस 15:40 और मत्ती 27:56 में किया गया है। यदि यह सत्य है तो इसका अर्थ है कि याकूब और यूहन्ना और यीशु आपस में सौतेले भाई थे। दूसरी शताब्दी की परम्परा हेगेसिप्पुस (Hegesippus) बताती है कि क्लोपास यूसुफ़ का भाई था। मरियम मगदलीनी वह स्त्री थी जिसमें से यीशु ने सात दृष्टात्माएँ निकाली थीं, और जिसे जी उठने के बाद यीशु ने सबसे पहले अपना दर्शन दिया था (देखें, यूहन्ना 20:1-2; 11-18; मर. 16:1; लू. 24:1-10)।

Copyright © 2014 Bible Lessons International

■**"उसके भाइयों "** हम यीशु के कुछ सौतेले भाई बहनों के नाम जानते हैं: यहूदा, याकूब (देखें प्रेरि. 12:17 पर विशेष विषय) और शमौन (मत्ती 13:55; मरकुस 6:3 व लूका 2:7)। ये सौतेले भाई पहले अविश्वासी थे (देखें यूहन्ना 7:5), परन्तु अब चेलों के मुख्य समूह में शामिल थे। विस्तरित ऐतिहासिक रोचक जानकारी के लिए एफ. एफ. ब्रूस की पुस्तक देखें, F. F. Bruce, *New International Commentary, Acts*, p. 44, footnote 47.

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरी. 1:15-26

15उन्हीं दिनों में पतरस भाइयों के बीच में जो एक सौ बीस व्यक्ति के लगभग थे, खड़ा होकर कहने लगा, 16"हे भाइयो, अवश्य था कि पवित्रशास्त्र का वह लेख पूरा हो जो पवित्र आत्मा ने दाऊद के मुख से यहूदा के विषय में, जो यीशु के पकड़नेवालों का अगुवा था, पहले से कहा था। 17क्योंकि वह तो हम में गिना गया, और इस सेवकाई में सहभागी हुआ। 18(उसने अधर्म की कमाई से एक खेत मोल लिया, और सिर के बल गिरा और उसका पेट फट गया और उसकी सब अन्तड़ियाँ निकल पड़ीं। 19इस बात को यरूशलेम के सब रहनेवाले जान गए, यहाँ तक कि उस खेत का नाम उनकी भाषा में 'हकलदमा' अर्थात् 'लहू का खेत' पड़ गया।) 20भजन संहिता में लिखा है: "उसका घर उजड़ जाए, और उसमें कोई न बसे" और 'उसका पद कोई दूसरा ले ले।' 21इसलिये जितने दिन तक प्रभु यीशु हमारे साथ आता-जाता रहा-अर्थात् यूहन्ना के बपतिस्मा से लेकर उसके हमारे पास से उठाए जाने तक जो लोग बराबर हमारे साथ रहे, 22उचित है कि उनमें से एक व्यक्ति हमारे साथ उसके जी उठने का गवाह हो जाए।" 23तब उन्होंने दो को खड़ा किया, एक यूसुफ को जो बर-सब्बा कहलाता है, जिसका उपनाम यूसतुस है,दूसरा मत्तियाह को, 24और यह प्रार्थना की, "हे प्रभु, तू जो सब के मन जानता है, यह प्रकट कर कि इन दोनों में से तू ने किसको चुना है, 25कि वह इस सेवकाई और प्रेरिताई का पद ले, जिसे यहूदा छोड़कर अपने स्थान को चला गया।" 26तब उन्होंने उनके बारे में चिट्ठियाँ डालीं, और चिट्ठी मत्तियाह के नाम पर निकली। अतः वह उन ग्यारह प्रेरितों के साथ गिना गया।

1:15 "उन्हीं दिनों में" यह शाब्दिक अर्थ में "इन दिनों" है (*en tais hēmerais*), यह वाक्यांश इस पुस्तक के आरम्भिक अध्यायों में अक्सर प्रयुक्त हुआ है (देखें, प्रेरि. 1:15; 2:18; 5:37; 6:1;7:41 9:37; 11:27; 13:41)। यहाँ पर लूका जश्मदीद गवाहों के अन्य स्रोतों का प्रयोग कर रहा है। वह "प्रतिदिन" (*kath hēmeran*) के सामान्य व अस्पष्ट समय को प्रकट करने वाले शब्दों का भी आरम्भिक अध्यायों में प्रयोग करता है (जैसे प्रेरि. 2:46-47; 3:2; 16:5; 17:11,31; 19:9)। पन्द्रहवें अध्याय के बाद की अनेक घटनाओं से जिन्हें उसने लिखा, वह व्यक्तिगत रूप से परिचित था। वह "दिन" शब्द का प्रयोग आगे भी अक्सर करता है पर इस प्रकार के अस्पष्ट वाक्यों में नहीं करता।

- **"पतरस खड़ा होकर"** पतरस स्पष्ट रूप से प्रेरितों में मुख्यवक्ता है (देखें मत्ती 16)। पवित्र आत्मा उतरने के बाद उसने ही पहला उपदेश दिया था (देखें अध्याय 2) और दूसरा उपदेश उसने अध्याय 3 में दिया। यीशु जी उठने के बाद सबसे पहले उसे दिखाई दिया था (देखें यूहन्ना 21 और 1 कुरि. 15:5)। उसका इब्रानी में शमौन नाम है (देखें प्रेरि. 15:14; 2 पतरस 1:1)। यूनानी में इस शब्द का उच्चारण "साइमन" है। "पीटर" यूनानी शब्द है जिसका अर्थ है छोटी चट्टान। उसे कैफा भी कहा गया है जो इब्रानी का शब्द है जिसका अर्थ है चट्टान (मत्ती 16:18)।

- **" एक सौ बीस व्यक्ति के लगभग लोगों का इकट्ठा होना"** यह वाक्यांश UBS[4] में एक कोष्ठक है ग्रीक पाठ (लेकिन प्रेरितों के काम 1: 18-19 में नहीं)। इस समूह में ग्यारह प्रेरितों , वे महिलाएँ जो यीशु के साथ थीं, और यीशु के अन्य शिष्य जो उनके प्रचार और चंगाई की सेवा में थे शामिल किया गय है।

1:16 "पवित्रशास्त्र" 2 पतरस 3:15-16 को छोड़कर नए नियम में जहाँ भी "पवित्रशास्त्र" शब्द का प्रयोग हुआ है, वह पुराने नियम की ओर संकेत करता है (मत्ती 5:17-20; 2 तीमु. 3:15-17)। यह पाठांश भी बताता है कि दाऊद ने पवित्र आत्मा से (2 पतरस 1:21) प्रेरित होकर बोला था। इस शब्द पवित्रशास्त्र से पता चलता है कि इब्रानी बाइबल के लेखों का प्रमाणिकरण हो चुका था। देखें

विशेष विषय: प्रेरणा

यह विश्वास की निश्चित घोषणा है कि परमेश्वर अपने पवित्रआत्मा के द्वारा मानव जाति के लिए अपने कार्यों, प्रतिज्ञाओं और अपनी इच्छा को लेखबद्ध कराने के लिए सक्रिय रुप से संलग्न रहा। यह उसका स्वयं का "दिव्य प्रकाशन" था। इसे "प्रकाशन" कहा जाता है। भावी पीढ़ी के लिए इसे लेखबद्ध कराने को "प्रेरणा" कहा जाता है।

बाइबिल में केवल एक ही स्थान पर "प्रेरणा" शब्द का इस्तेमाल किया गया है और वह है 2 तीमु 3:16 और यह शब्दशः स्वयं परमेश्वर द्वारा लिखवाया जाना है। इस बात पर ध्यान दीजिए कि नया नियम सदैव पुराने नियम का उल्लेख करता है अर्थात 2 तीमु 3:15 में बताया जाता है कि तीमुथियुस का पालन-पोषण यहूदी धर्म के वातावरण में हुआ और पवित्रशास्त्र बचपन ही मे उसका जाना हुआ है। ध्यान दीजिए कि पवित्रशास्त्र दिए जाने के उद्देश्य दो हैं :

1. बुद्धि प्राप्त हो सके कि उद्धार हो, 2 तीमु. 3:15
2. धार्मिक बातों का प्रशिक्षण प्राप्त हो, 2 तीमु. 3:16

इस बात पर भी ध्यान दें की यूहन्ना 5:39; 1 कुरि 15:3-4; और 1 पत 1:10-12 में बताया जाता है कि पुराना नियम मसीह की ओर संकेत करता है। लूका 24:25-27 में स्वयं यीशु भी कहता है कि पुराना नियम उसकी ओर संकेत करता है। पुराने नियम के लेखक जो पवित्र आत्मा की प्रेरणा प्राप्त थे इसी बात को मानते थे (देखें, 2 पत 1:20-21)।

कलीसिया ने पुराने नियम के कानोन को स्वीकार किया (देखें, विशेष विषय : कानोन (Canon)। कलीसिया ने पवित्र शास्त्र को पूर्ण रूप से प्रेरणा-प्राप्त माना (देखें मत्ती 5:17-19)। कलीसिया ने यह भी माना कि नया नियम जिसमें यीशु के वचनों और कार्यों का उल्लेख है, अंतिम प्रकाशन है (देखें मत्ती 5:21-48; इब्रा 1:1-2)। यीशु,

यहोवा (YHWH)का पूर्ण, और अंतिम प्रकाशन है (देखें, यूहन्ना 1:1-5, 14; कुल 1:15-16)। वह मसीह संबंधी पुराने नियम की समस्त प्रतिज्ञाओं की पूरिपूर्ति करता है (जैसे, मत्ती 26:31,56;14:27,49; लूका 20:17; यूहन्ना 12:14-16; 13:18; 15:25; 17:12; 19:24-36; प्रेरि 1:16;3:18,21-26;4:25-28)।

इससे पहले कि कोई पवित्रशास्त्र को समझे, पवित्र आत्मा द्वारा उसके हृदय को खोल देना चाहिए (देखें, प्रेरि 8:34-35;13:27)। पवित्र आत्मा की प्रेरणा प्राप्त बाइबल लेखकों ने मानवीय शब्दों में परमेश्वर के आत्मा-प्रकाशन को जो यीशु में हुआ, व्यक्त किया है (देखें, यूह 14:26;15:26-27;1 कुरि 2:10-11,13-16)।

मिलर्ड जे. एरिकसन की पुस्तक "क्रिश्चियन थियोलॉजी" (Millard J. Erickson, *Christian Theology*, 2nd ed., pp. 224-245) में अच्छी जानकारी दी गई है।

साथ ही जॉन. एच. वाल्टन और ब्रेंट सैन्डी की पुस्तक "द लॉस्ट वर्ल्ड ऑफ स्क्रीप्चर" (John H. Walton and D. Brent Sandy, *The Lost World of Scripture* (2013) में भी अच्छी और विस्तृत जानकारी पाई जाती है।

Copyright © 2014 Bible Lessons International

▪ **"अवश्य था"** यहां यूनानी शब्द ष्कमपष् का प्रयोग हुआ है जिसका अर्थ है अवश्य ही। यह पद 20 की ओर संकेत करता है। जो पवित्रशास्त्र का पहला उद्धरण है।
यह शब्द यीशु के जीवन चरित्र और आरम्भिक कलीसिया के विषय में लूका की सूझबूझ की विशेषता है कि नया नियम पुराने नियम ही का विस्तृत भाग है (देखें, लूका 18:31-34; 22:37; 24:44)। लूका इस शब्द को अक्सर प्रयुक्त करता है, (देखें, लूका 2:49; 4:43; 9:22; 11:42; 12:12; 13:14,16,33; 15:32; 17:25; 18:1; 19:5; 21:9; 22:7; 24:7, 26, 44; प्रेरि. 1:16, 21; 3:21; 4:12; 5:29; 9:6, 16; 14:27; 15:5; 16:30; 17:3; 19:21, 36; 20:35; 23:11; 24:19; 25:10,24; 26:9; 27:21, 24, 26)। इस शब्द का अर्थ है "ऐसा होना निश्चित है, "यह होना अवश्य है", "इसे टाला नहीं जा सकता है।" सुसमाचार और सुसमाचार की उन्नति अक्समात् ही नहीं है बल्कि यह परमेश्वर की पहले से निर्धारित योजना है और पुराने नियम पवित्रशास्त्र की परिपूर्ति है।

▪ **"पूरा हो"** जब कोई इन पुराने नियम के हवालों को पढ़ता है (प्रेरि. 1:20), तो उसे जानना चाहिए कि यहूदा का विश्वासघात भजन संहिता के लेखक के उद्देश्य में नहीं था (अर्थात् भजन 69:25; 109:8)। प्रेरितों ने पुराने नियम की व्याख्या यीशु के साथ अपने अनुभवों के आधार पर की। यह प्रतीकात्मक व्याख्या कहलाती है (जैसे प्रेरि. 1:20)। संभवतः स्वयं यीशु ने ही यह विधि स्थापित की थी जबकि वह इम्माऊस के मार्ग पर दो चेलों से बातें करता हुआ जा रहा था (देखें, लूका 24:13-35, विशेषकर प्रेरि. 1:25-27)। आरम्भिक कलीसिया के मसीही व्याख्याकारों ने पुराने नियम की घटनाओं और यीशु के जीवन व शिक्षाओं में सामान्तरता देखी। उन्होंने देखा कि पुराने नियम की सारी भविष्यद्वाणियाँ यीशु में पूरी होती हैं। आधुनिक विश्वासियों को इस व्याख्या-विधि का पालन करने में सावधान होने की आवश्यकता है। नए नियम के वे लेखक पवित्र आत्मा की प्रेरणा के अधीन थे और व्यक्तिगत रीति से यीशु और उसकी शिक्षाओं से परिचित थे। हम दृढ़तापूर्वक उनकी सच्चाईयों, उनके अधिकार और उनकी साक्षी को मानते हैं, परन्तु उनके तरीकों की नकल नहीं कर सकते हैं। देखें-

विशेष विषय: प्रतीकात्मक व्याख्या

फिलो और प्रारम्भिक कलीसिया द्वारा कथा या दृष्टांतों के उपयोग में और उन्हीं की तरह दृष्टांतों के पौलुस के उपयोग में बहुत बड़ा अन्तर पाया जाता है। वे लोग पूर्ण रूप से ऐतिहासिकता की अवहेलना कर दिया करते थे और ऐसी शिक्षा निकालते थे जो मूल लेखक के उद्देश्यों से बिल्कुल भिन्न होती थी अर्थात् वे प्लेटों के विचारों की समान्तरता खोजते थे। पौलुस की विधि को यदि "प्रतिकात्मक व्याख्या" (Typology) कहा जाए तो अच्छा होगा। पौलुस उत्पत्ति की पुस्तक और पुराने व नए नियम की एकता की ऐतिहासिक क्रमबद्धता को स्वीकार करता था, इसी कारण से वह उनमें समानताएँ ढूँढ़ सका, क्योंकि उनका लेखक परमेश्वर था। इस विशेष सन्दर्भ (अर्थात गलतियों 3-4) में पौलुस अब्राहम की वाचा और मूसा की वाचा की परस्पर तुलना करता है और यिर्म 31:31-34

की नई वाचा और नए नियम पर उन्हें लागू करता है।

गलतियों 4:21-31 के आधार पर निम्नलिखित चार संबंध (Connection) निकाले जा सकते हैं :

1. दो माताएँ, दो परिवारों के प्रतीक हैं : एक का निर्माण सांसारिक माध्यम से हुआ, और दूसरे परिवार का निर्माण अलौकिक प्रतिज्ञा द्वारा हुआ।
2. इन दोनों माताओं व उनके बच्चों के बीच जिस प्रकार तनाव था, उसी प्रकार यहूदियों के संदेशों और पौलुस के सुसमाचार के बीच तनाव पाया जाता है।
3. दोनों ही ग्रुप अब्राहम की सन्तान होने का दावा करते हैं, परंतु एक समूह तो मूसा की व्यवस्था का गुलाम है, और दूसरा मसीह के द्वारा पूरा किए गए कार्य के द्वारा स्वतंत्र है।
4. दो पहाड़ इन दोनों वाचाओं से जुड़े थे। सीनै पर्वत मूसा के वाचा से तथा सिय्योन पर्वत अब्राहम की वाचा से जुड़ा था। सिय्योन पर्वत अथवा मोरिय्याह पर्वत वह पर्वत था जिस पर अब्राहम ने अपने पुत्र इसहाक को बलिदान के रूप में चढ़ाया था (देखें उत्पत्ति 22) जो आगे चलकर यरूशलेम कहलाया। अब्राहम एक स्वर्गीय नगर की खोज में था, (देखें, इब्रानी 11:10;12:22;13:14, नया यरूशलेम, यशा 40-66) न कि पृथ्वी के यरूशलेम की खोज में।

पौलुस इस प्रतिकात्मक व्याख्या को संभवतः इसलिए कर सका क्योंकि :

1. झूठे शिक्षक इसी तरीके को अपनाकर अब्राहम का सच्चा वंश होने का दावा करते थे।
2. झूठे शिक्षकों ने शायद मूसा के लेखों से अपने यहूदी वाचा की शिक्षा को गढ़ा था, इसलिये पौलुस ने यहूदी विश्वास के पिता-अब्राहम का उपयोग किया।
3. पौलुस ने शायद उत्प 21:9-10 के कारण अब्राहम का उपयोग किया होगा जिसे उसने गला 4:30 में लिखा है कि " दासी और उसके पुत्र को निकाल दे", पौलुस के विचारों में यह यहूदी शिक्षकों की ओर संकेत है।
4. पौलुस ने शायद यहूदी झूठे शिक्षकों के निषेधावाद के कारण उपरोक्त बात को कहा, विशेष रूप से इसलिए कि वह गैर यहूदियों का तिरस्कार करते थे; उसके अनुसार गैर यहूदी स्वीकृत लोग हैं, और जाति रूप से स्वीकृत लोग परमेश्वर द्वारा अस्वीकृत हैं (देखें मत्ती 8:11-12)।
5. पौलुस ने इस प्रतीकात्मक व्याख्या का उपयोग शायद इसलिए किया होगा क्योंकि वह गला 3 व 4 में "पुत्रत्व" और उत्तराधिकारी पन पर जोर देता रहा था। यह उसके तर्क की केंद्रीय बात थी, परमेश्वर के परिवार में हमारा प्रवेश मसीह पर विश्वास के कारण है ना कि स्वाभाविक सन्तान होने के कारण।

Copyright © 2014 Bible Lessons International

▪ **"यहूदा"**: दूसरे प्रेरित को चुने जाने का कारण यहूदा की मृत्यु नहीं, परन्तु उसका प्रेरितिक पद का परित्याग करके धर्मत्यागी बन जाना था। प्रेरि. 1:20ब में यहूदा के कार्य को भविष्यद्वाणी की पूर्ति होने के रूप में देखा गया। नया नियम याकूब की मृत्यु होने के बाद उसके स्थान पर दूसरा प्रेरित नियुक्त किए जाने का कोई वर्णन नहीं करता (देखें, प्रेरि. 12:2)। यहूदा के जीवन में बड़ा रहस्य और त्रासदी पाई जाती है। संभवतः वही एक ऐसा चेला था जो गलील का निवासी नहीं था। उसे प्रेरितिक समूह का खजान्ची बनाया गया था (देखें यूहन्ना 12:6)। वह जितने समय तक यीशु के साथ रहा, पैसे चुराता रहा। उसे नबी की भविष्यद्वाणी की पूर्ति और शैतानी आक्रमण का माध्यम कहा गया। उसके इरादों व अभिप्रायों के बारे में कुछ नहीं बताया गया, परन्तु अधर्म की कमाई वापस लौटाने के बाद उसके पश्चाताप का परिणाम आत्महत्या हुआ।

यहूदा के अभिप्रायों और स्वयं उसके बारे में बहुत से अनुमान लगाए जाते है । यूहन्ना के सुसमाचार में उसका कई बार उल्लेख हुआ और अक्सर उसकी निन्दा की गई (यूहन्ना 6:71; 12:4; 13:2,26,39; 18:2,3,5)। एक आधुनिक नाटक "Jesus Christ Superstar" में यहूदा को एक विश्वासयोग्य परन्तु भ्रम दूर करने वाला अनुयायी के रूप में चित्रित किया गया है जो यीशु पर दबाव डालने का प्रयत्न करता है कि वह यहूदी-मसीहा की भूमिका

अदा करे-ताकि रोमी-साम्राज्य को उखाड़ फेंके, दुष्टों को दण्ड दे और यरूशलेम को सारी दुनियां की राजधानी के रूप में स्थापित कर सके। परन्तु यूहन्ना उसके अभिप्रायों को लालची और शरारती बताता है।

यहाँ पर मुख्य समस्या परमेश्वर की प्रभुसत्ता और मनुष्य की स्वतन्त्र इच्छा के बीच एक धर्म-वैज्ञानिक बहस है। क्या परमेश्वर ने या यीशु मसीह ने यहूदा के साथ छल किया? यदि शैतान ने यहूदा को अपने वश में कर लिया तो क्या यहूदा अपने कार्यों का जिम्मेदार है? अथवा परमेश्वर ने चूंकि उसके बारे में भविष्यद्वाणी कर दी थी, इसलिए उसने यहूदा को यीशु के साथ विश्वासघात करने दिया? बाइबल प्रत्यक्ष रूप से इन सब प्रश्नों का कोई जवाब नहीं देती है। परन्तु परमेश्वर इतिहास पर नियन्त्रण रखता है; वह भविष्य की घटनाओं की जानकारी रखता है, मानवजाति अपनी स्वतन्त्र इच्छा का दुरुपयोग करने और अपने कार्यों की उत्तरदायी है। परमेश्वर निष्पक्ष है और छल नहीं करता।

हाल ही में एक पुस्तक विलियम क्लासेन द्वारा 1996 में फॉरट्रस प्रैस द्वारा छापी गई है जिसका नाम है - *Judas Betrayer or Friend of Jesus?* यह पुस्तक बड़ी रोचक है और इसमें यहूदा का पक्ष लेते हुए उसे बचाने का प्रयत्न किया गया है, परन्तु मैं लेखक के विचारों से सहमत नहीं हूँ।

▪ **"जो यीशु के पकड़नेवालों का अगुवा बन गया"** नीचे प्रस्तुत हैं मत्ती 26:47-50 पर मेरी टीका की कुछ टिप्पणियाँ (देखें www. freebiblecommentary.org)

> "यहूदा को किस बात ने उभारा कि यीशु को पकड़वाए इस संबंध में बहुत विचार-विमर्श किया जा चुका है। उसके द्वारा मत्ती 26:49 में यीशु को चूमना या तो (1) सिपाहियों के लिए एक संकेत था कि इसी को पकड़ना है (मत्ती 26:48) या फिर (2) वह कोशिश करता है कि यीशु कुछ प्रतिक्रिया करे और हाथ उठाए (मत्ती 27:4)। अन्य सभी सुसमाचारों में यहूदा को चोर और आरम्भ ही से अविश्वासी कहा गया है (देखें यूहन्ना 12:6)।
>
> लूका 22:52 से हमें पता चलता है कि जो भीड़ यीशु को पकड़ने आई उसमें कौन कौन शामिल थे। उस भीड़ में रोमी सिपाही थे क्योंकि कानूनी तौर पर वे ही तलवारें रख सकते थे। फिर मन्दिर के सिपाही भी थे क्योंकि अक्सर वे ही लाठियाँ रखते थे। भीड़ में, जो यीशु को पकड़ने आई थी, यहूदी महासभा (सन्हेद्रिन) के प्रतिनिधि भी थे (मत्ती 26:47,51)।"

1:17 यहूदा को यीशु ने चुना था; उसने यीशु के उपदेश सुने थे; आश्चर्यकर्म देखे थे, यीशु द्वारा प्रचारकार्य में भेजा गया था, ऊपरी कक्ष में उपस्थित होता था, सारी गतिविधियों में भाग लेता था, फिर भी उसने यीशु को पकड़वा दिया।

1:18
NASB, NKJV, NRSV, NJB, NIV **"सिर के बल गिरा और उसका पेट फट गया"**
TEV **"जहां वह अपनी मौत के लिए गिर गया और खुला फट गया"**

संभवतः "सिर के बल गिरना" "सूज जाने" के सम्बन्ध में चिकित्सा का शब्द हो (जैसा कि मोल्टन और मिलीगन अपने यूनानी नया नियम के शब्दकोश पेज 535-536 में बताते हैं) (cf. Moulton and Milligan,*The Vocabulary of the Greek Testament*, pp. 535-536), यह कुछ अंग्रेजी अनुवादों में भी पाया जाता है (जैसे फिलिप्स मौफेट और गुडस्पीड के अनुवाद) (e.g.,Phillips, Moffatt and Goodspeed). यहूदा की मृत्यु से संबंधित विस्तृत जानकारी के लिए (मत्ती 27:5; प्रेरि. 1:18) देखें हार्ड सयिंग ऑफ़ दी बाइबल *Hard Sayings of the Bible*, pp. 511-512.

▪ **"इस व्यक्ति ने एक खेत मोल लिया"** पद 18-19 को कोष्ठक में दिया गया है। (cf. NASB, NKJV, NRSV, NJB, NIV) । लेखक ने पाठकों को बताने के लिए ऐसा लिखा है। मत्ती 27:6-8 द्वारा हमें पता चलता है, मन्दिर के मुख्य याजकों ने आपस में सलाह करके खेत को खरीदा था ताकि पुराने नियम की भविष्यद्वाणी पूरी हो। पैसा यहूदा का था जिसे याजकों ने अशुद्ध ठहराया था और परदेसियों के दफनाने के लिये खेत खरीदने में उस पैसे का

उपयोग किया। पद 18-19 हमें बताते हैं कि यह वही खेत था जहाँ यहूदा मरा था। यहूदा की इस मृत्यु का ज़िक्र दुबारा कहीं भी नहीं किया गया है।

1:19 "उनकी अपनी भाषा में" यीशु के काल के बहुत से यहूदी इब्रानी भाषा बोल और लिख नहीं सकते थे, पर उसी के समान आरामी भाषा समझते थे जिसे उन्होने फारसी साम्राज्य की अधीनता में सीखा था। केवल पढ़े-लिखे लोग ही इब्रानी लिख और पढ़ सकते थे। यीशु ने जब सभाघरों में पवित्रशास्त्र पढ़ा तो इस भाषा का प्रयोग किया।

पलीस्तीन के बहुत से लोग संभवतः द्विभाषी या त्रैभाषी थे जो यूनानी, अरामी, और इब्रानी भाषा बोला करते थे।

यीशु अधिकतर अरामी भाषा बोला करते थे। सुसमाचारों में जिन वाक्यों, शब्दों और वाक्यांशों को अनुवादित किया गया वे सब अरामी भाषा से किए गये।

NASB, NRSV	**"हाकेलदामा, अर्थात् लहू का खेत"**
NKJV	**"अकेल दामा, अर्थात् लहू का खेत"**
TEV	**"अकेलदामा, जिसका अर्थ है लहू का खेल"**
NJB	**"ब्लडी अकरे...हाकेल-दामा"**

ये अरामी भाषा के शब्दों के यूनानी अनुवाद हैं। एक भाषा के शब्द को वैसा ही दूसरी भाषा में अनुवाद करना सदैव कठिन कार्य होता है। यूनानी उच्चारण में भिन्नता के उपरान्त भी आरामी में इसका अर्थ लहू का खेत है। इसके निम्न अर्थ भी हो सकते हैं:

1. लहू के पैसों से खरीदा गया खेत (देखें मत्ती 27:7ब)
2. वह खेत जहाँ लहू बहाया गया (देखें प्रेरि. 1:18)
3. वह खेत जहाँ हत्यारे अथवा परदेसी दफनाये जाते थे (देखें मत्ती 27:7ब)

1:20 ये भजन संहिता पुस्तक से लिये गए दो अलग अलग हवाले हैं। पहला भजन संहिता 69:25 से है जो मूलरुप से बहुवचन में है। यह यहूदा पर एक शाप का प्रतीक है। दूसरा हवाला भजन संहिता 109:8 से है (LXX)। इन हवालों से यहूदा के स्थान पर दूसरा व्यक्ति चुने जाने की पूर्व निर्धारित योजना प्रकट होती है जिसका वर्णन प्रेरि. 1:21-26 में पाया जाता है।

इस प्रकार की प्रतीकात्मक व्याख्या को आधुनिक युग के विश्वासी नहीं दोहरा सकते हैं क्योंकि इतिहास के इस दौर में हम में से कोई भी प्रेरणा-प्राप्त नहीं है। पवित्र आत्मा ने जिस स्तर पर बाइबल के लेखकों का मार्गदर्शन किया, उस स्तर पर वह बाद के विश्वासियों का मार्गदर्शन नहीं करता है। हम पवित्र आत्मा द्वारा प्रकाशमान किए गए हैं परन्तु कभी कभी हम सहमत नहीं होते हैं (देखें **विशेष विषय: प्रेरणा**, प्रेरि. 1:16)।

उसका पद कोई दूसरा ले ले: विभिन्न अनुवादों में इस प्रकार लिखा है:

NASB, NKJV, NJB	**"पद"**
NRSV	**"सेवा का पद"**
TEV	**"सेवा का स्थान"**

पुराने नियम के यूनानी अनुवाद अर्थात् सैप्तूजैन्त (LXX) में शब्द मचपोवचम किसी सेवक के सेवाकार्य अथवा पदभार को बताता है (देखें गिनती 4:16; भजन 109:8)। बाद में यह शब्द रोमन कैथलिक पुरोहित व्यवस्था में एक पद का सूचक हो गया, परन्तु यूनानी भाषा में एक साधारण अगुवे के लिये यह शब्द प्रयुक्त होता है (NIV में) जैसे "एल्डर" प्रेसबेटरस (*presbuteros*) शब्द एक यहूदी अगुवे के लिए प्रयुक्त होता है (उदा. उत्प. 50:7; निर्ग. 3:16,18; गिनती 11:16,24,25,39; व्यव. 21:2,3,4,6,19,20 इत्यादि)। अतः याकूब की पत्री को छोड़कर अधिकांश में प्रेरितों की मृत्यु के बाद "निरीक्षक" तथा "बड़ों" शब्दों का प्रयोग पास्टरों के लिए किया गया (देखें, प्रेरि. 20:17, 28; तीतुस 1:5,7 फिलि. 1:1)

1:21 "यह ज़रूरी है": यूनानी भाषा में यहाँ कमप शब्द आया है (देखें टिप्पणी 1:16)। स्पष्ट रूप से पतरस ने अनुभव किया कि बारह चेलों को इस्राएल के बारह गोत्रों का प्रतिनिधित्व करना ही चाहिये।

1:21-22 ये प्रेरिताई पद की योग्यताएँ है (देखें विशेष-विषयः भेजा जाना [*apostellō*] प्रेरित.14:4)। ध्यान दीजिए कि हम यहाँ पर 12 चेलों के अतिरिक्त जो यीशु के संपूर्ण जीवन भर उसके साथ रहे थे, अन्य विश्वासियों की भी उपस्थिति देखते हैं। बाद में इन्हीं मानदण्डों को कुछ लोगों ने पौलुस की प्रेरिताई खारिज करने के लिये इस्तेमाल किया था।

स्पष्ट रूप से लूका इन दो पदों के द्वारा, मत्तियाह के चुनाव को नहीं, जिसका बाद में कोई उल्लेख नहीं पाया जाता है, प्रेरितों की गवाही के महत्व को दिखाना चाहता है। प्रेरितों की गवाही पर ही भविष्य की कलीसिया नियम पवित्रशास्त्र की आधारशिला रखी जानी थी, जो चश्मदीद गवाह, अधिकारयुक्त गवाह और चुने हुए धर्म वैज्ञानिक गवाह थे। यह धर्म विज्ञान से सम्बन्ध रखने वाला विषय है न कि "बारह" का प्रतीकवाद। देखें:

विशेष विषय: बारह की संख्या

बारह की गिनती सदैव ही किसी बात का प्रतीक रही है (देखें विशेष विषय : "पवित्रशास्त्र में प्रतीकात्मक संख्याएँ") (Symbolic Numbers in Scripture)

A. बाइबल के बाहर
  a. राशि चक्र के 12 चिन्ह
  b. एक वर्ष के 12 महीने
B. पुराने नियम में (BDB1040 व 797)
  a. याकूब के 12 पुत्र। (इस्राएली गोत्र)
  b. निम्न बातों में प्रतिबिम्बितः
  c. निर्ग 24:4, वेदी के बारह खम्भे
  d. निर्ग 28:21, महायाजक के सीनाबन्द में 12 मणियाँ (12 गोत्रों का प्रतीक)
  e. लैव्य 24:5 में, तम्बू के पवित्र स्थान में 12 रोटियाँ
  f. गिनती 13 में, 12 मोदित कनान भेजे गए (प्रत्येक गोत्र में से एक मनुष्य)
  g. गिनती 17:2 में कोरह के बलवे के समय 12 छड़ियां ली गई ।
  h. यहोशू 4:3,9,20 में बारह पत्थर
  i. 1 राजा 4:7 में, सुलैमान के 12 भण्डारी
  j. 1 राजा 18:31 में एलिय्याह ने 12 पत्थरों से यहोवा (YHWH) की वेदी बनाई।
C. नए नियम में
  1. 12 प्रेरितों का चुना जाना
  2. मत्ती 14:20 में बारह टोकरियां उठाई गईं (प्रत्येक प्रेरित के लिए एक) ।
  3. मत्ती 19:28 में, बारह चेले बारह सिन्हासनो पर बैठेंगे (12 गोत्रों की ओर संकेत)
  4. मत्ती 26:53 में यीशु के बचाव में स्वर्गदूतों की 12 पलटन।
  5. प्रकाशित वाक्य में प्रतिकात्मकता
    a. 4:4 में, 24 प्राचीन, 24 सिन्हासनों पर
    b. 7:4;14:1,3 में एक लाख चवालीस हज़ार (12×12,000)
    c. 12:1 में स्त्री के सिर पर 12 तारों का मुकुट
    d. 21:12 में, 12 फाटकों पर 12 स्वर्गदूत, ये बारह गोत्रों को दर्शाते हैं।
    e. 21:14 में नए यरूशलेम नगर की बारह नीवें और उन पर 12 प्रेरितों के नाम लिखे थे।
    f. 21:16 में वर्गाकार नगर, बारह हज़ार गज का
    g. 21:17 में, 144 हाथ ऊंची शहरपनाह

h. 22:2 में, जीवन के वृक्ष में बारह प्रकार के फल
i. 21:21 में, बारह मोतियों के फाटक

Copyright © 2014 Bible Lessons International

1:23 "उन्होंने दो को खड़ा किया": इस वाक्यांश की यूनानी हस्तलिपि में असंगति पाई जाती है जिससे धर्म वैज्ञानिक समस्या उत्पन्न होती है:

1. मेजमेंद *estēsan* ("उन्होंने खड़ा किया") यह MSS,אA, B, C, D1, E
2. मेजमेमद *estesen* ("उसने खड़ा किया") यह इनमें है: MS D (पांचवीं शताब्दी), (दसवीं शताब्दी), दो प्राचीन लैटिन हस्तलीपियों में (पांचवीं और तेरहवीं शताब्दी), तथा अगस्तीन (354-430 ईस्वी)।

यदि नं. एक पर विचार करें तो पता चलता है कि यहूदा के स्थान पर दूसरा व्यक्ति चुने जाने की प्रक्रिया में चेलों का पूरा समूह शामिल था, जो एक प्रकार के कलीसियाई राजतन्त्र का उदाहरण है (देखें प्रेरि. 15:22)। परन्तु यदि न 2. पर विचार करें तो यह पतरस की सर्वोच्चता का प्रमाण दिखाई देता है (देखें प्रेरि. 15:7-11,14)। इस प्रकार यूनानी प्रमाण के अनुसार न. 1 उचित लगता है (UBS[4] इसका समर्थन करता है)।

"यूसुफ ...मत्तियाह ": नए नियम में हम इन दोनों के बारे में कुछ नहीं जानते हैं। तौभी हमें यह याद रखना चाहिए कि सुसमाचार और प्रेरितों के काम नामक पुस्तक पश्चिमी देशों के इतिहास की पुस्तकें नहीं हैं बल्कि चुनी हुई धर्मवैज्ञानिक रचनाएँ हैं जो यीशु के बारे में और उसकी शिक्षाओं के संसार पर प्रभाव के बारे में बताती हैं।

1:24

NASB	**"जो सब मनुष्यों के हृदयों को जानता है"**
NRSV	**"जो सबके हृदय जानता है"**
NRSV	**"तू सबके हृदय के विचार जानता है"**
TEV	**"तू सबके विचार जानता है"**
NJB	**"तू सबके हृदय के विचार पढ़ सकता है"**

"हृदय" और "जानना" आपस में जुड़े हुए शब्द हैं (देखें प्रेरि. 15:8)। ये पुराने नियम की सच्चाई को दर्शाते हैं। (देखें, 1 शमूएल 2:7; 16:7; 1 राजा 8:39; 1 इति. 28:9; 2 इति. 6:30; भजन 7:9; 44:21; नीति. 15:11; 21:2; यिर्म. 11:20; 17:9-10; 20:12; लूका 16:15; प्रेरि 1:24; 15:8; रोमि. 8:27)। परमेश्वर पूर्णरूप से हमें जानता है और हमसे प्रेम रखता है (देखें रोमि. 8:27)।

प्रेरितगण दृढ़तापूर्वक मानते थे कि यहोवा (YHWH) उनके उद्देश्यों को जानता है और साथ ही चुनाव में खड़े दोनों पुरुषों के जीवनों और अभिप्रायों को भी जानता है। वे इस चुनाव प्रक्रिया में परमेश्वर की इच्छा चाहते थे। यीशु ने बारह चेलों को चुना था, परन्तु अब वह पिता के साथ स्वर्ग में था। देखें:

विशेष विषय: हृदय

इब्रानी शब्द लैब (*lēb)* (BDB 523, KB 513)को प्रतिबिम्बित करने के लिये सप्तूजैन्त और नए नियम में यूनानी शब्द कार्डिया (*Kardia*) इस्तेमाल किया गया है और यह शब्द अनेक रूपों में प्रयोग किया जाता है देखें ब्यूअर, आरडिट, गिनयिरिक और डैंकर. ए. की पुस्तक "ग्रीक इंग्लिश लैक्सीकन, दूसरा संस्करण पेज 403-404" (Bauer, Arndt, Gingrich and Danker, *A Greek-English Lexicon*, 2nd ed. pp. 403-404)।

1. हृदयः शारीरिक जीवन का केंद्र, व्यक्ति के लिये रूपक है (देखें, प्रेरि 14:17;2 कुरि 3:2-3; याकूब 5:5)
2. यह आत्मिक जीवन का केंद्र है (अर्थात नैतिकता का)

a. परमेश्वर हृदय को जानता है (लूका 16:15; रोमी 8:27;1 कुरि 14:25;1 थिस्स 2:4; प्रका 2:23)
b. मनुष्य के आत्मिक जीवन के लिए प्रयोग में आता है (मत्ती 15:18-19;18:35; रोमि 6:17;1 तीम 1:5;2 तीमु 2:22; 1 पत 1:22)
3. विचारशील जीवन का केंद्र (अर्थात बुद्धि-समझ, देखें मत्ती 13:15;24:48; प्रेरि. 7:23;16:14;28:27; रोमि. 1:21;10:6;16:18;2 कुरि. 4:6; इफि. 1:18;4:18; याकूब 1:26;2 पत 1:19; प्रका. 18:7; 2 कुरि. 3:14-15 तथा फिलि. 4:7 में हृदय को मन कहा गया है। दोनों का अर्थ एक समान है।
4. इच्छा या संकल्प शक्ति का केंद्र (प्रेरि. 5:4;11:23;1 कुरि. 4:5;7:37;2 कुरि 9:7)
5. भावनाओं का केंद्र (मत्ती 5:28; प्रेरि. 2:26,37;7:54;21:13; रोमि. 1:24;2 कुरि. 2:4;7:3; इफि. 6:22; फिलि.1:7)
6. हृदय पवित्र आत्मा के कार्यों का अद्‌भुत स्थान (रोमि. 5:5;2 कुरि. 1:22; गला. 4:6 (अर्थात मसीह हमारे हृदयो में रहता है, इफि. 3:17)।
7. हृदय मनुष्य के सम्पूर्ण व्यक्तित्व की दशा को दर्शाने का एक तरीका है, (देखें, मत्ती 22:37, व्य. वि. 6:5)। हृदय के विचारों, उद्देश्यों और कार्यों द्वारा प्रकट होता है कि मनुष्य किस प्रकार का है। पुराने नियम में इस से संबंधित अनेक रोचक तथ्य पाए जाते हैं :
   a. उत्प. 6:6;8:21; "परमेश्वर मन में अति खेदित हुआ" होशे 11:8-9 भी देखें।
   b. व्य. वि. 4:29;6:5;10:12; "अपने पूरे मन व सारे प्राण से"
   c. व्य. वि. 10:16; यिर्म. 9:26; रोमि. 2:29; " ख़तना रहित हृदीय"
   d. यहेज. 18:31-32, "एक नया हृदय"
   e. यहेज. 36:26 " पत्थर का हृदय निकालकर नया मन व माँस का हृदय दूंगा" (देखें, यहेज. 11:19; यहेज. 7:12)।

Copyright © 2014 Bible Lessons International

1:25 ''अपने स्थान को'': यह वाक्यांश नरकदण्ड को बताता है। शैतान ने अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिये उसका उपयोग किया था (देखें लूका 22:3; यूहन्ना 13:2,27), परन्तु यहूदा स्वयं अपने कार्यों और अपने चुनाव के लिए दोषी था (गला. 6:7)।

1:26 ''उन्होंने उनके बारे में चिट्ठियाँ डालीं'': पुराने नियम में भी चिट्ठियाँ डाली जाती थीं; महायाजक ऊरीम और तुम्मीम का प्रयोग करते थे (लैव्य. 16:8); अथवा व्यक्तिगत रूप से भी यह विधि काम में लाई जाती थी (जैसे नीति. 16:33; 18:18)। रोमी सिपाहियों ने भी यीशु के वस्त्रों पर चिट्ठियाँ डाली थीं। (देखें लूका 23:34)। यह नए नियम में लिखित अन्तिम अवसर है जब परमेश्वर की इच्छा जानने के लिए चिट्ठियाँ डाली गईं। यदि हम भी कोई आत्मिक निर्णय लेने के लिए ऐसा करने लगें तो खेद की बात होगी, जैसे, यदि हम बाइबल खोलकर परमेश्वर की इच्छा जानने के लिए अपनी उंगली किसी भी पद पर रखें और कहें, यही मेरे लिए परमेश्वर की इच्छा है, तो यह ठीक बात नहीं होगी। विश्वासी लोग अपने विश्वास द्वारा चलते हैं न कि किसी उपाय द्वारा परमेश्वर की इच्छा जानकर (उदाहरणार्थ न्यायियों 6:17,36-40 में ऊन पर ओस गिरना)।

▪ **''मत्तियाह''** यूसेबियुस का कहना है कि मत्तियाह उन 70 लोगों में शामिल था जो यीशु द्वारा प्रचार-सेवा के लिए भेजे गये थे (देखें लूका 10)। बाद की कुछ परम्पराओं के अनुसार मत्तियाह इथोपिया में शहीद हुआ था।

विचार-विमर्श के लिये प्रश्न:

यह अध्ययन करने की मार्गदर्शक टीका है, जिसका अभिप्राय है कि आप अपनी बाइबल-व्याख्या के स्वयं उत्तरदायी हैं। हम में से प्रत्येक को अपने ज्ञान व समझ के अनुसार कार्य करना चाहिए। व्याख्या प्रक्रिया में आप, आपकी बाइबल तथा पवित्र आत्मा प्राथमिक स्थान रखते हैं। आपको यह कार्य टीकाकार पर नहीं छोड़ना चाहिए।

विचार-विमर्श के ये प्रश्न आपकी सहायता के लिए दिए जा रहे हैं ताकि आप इस पुस्तक के जटिल विषयों के इस भाग पर गहराई से विचार कर सकें। ये प्रश्न केवल विचारों को आन्दोलित करने के लिए हैं न कि स्थाई प्रश्न हैं।

1. यीशु 40 दिन तक क्यों चेलों को दिखाई देता रहा?
2. पवित्र आत्मा का बपतिस्मा क्या है?
3. पद 7 क्यों महत्वपूर्ण है?
4. स्वर्गारोहण क्यों महत्वपूर्ण है?
5. पतरस ने क्यों ऐसा महसूस किया कि यहूदा की जगह द्वारा व्यक्ति चुना जाए?
6. पौलुस किस आधार पर प्रेरित है जबकि वह शर्तों को पूरा नहीं करता? (1:21-22)

Copyright © 2013 Bible Lesson International

प्रेरितों के काम-2

बाइबल के विभिन्न आधुनिक अनुवादों में पैराग्राफ-विभाजन

UBS^4	NKJV	NRSV	TEV	NJB
पवित्र आत्मा का उतरना	पवित्र आत्मा का आना	पिन्तेकुस्त का आना	पवित्र आत्मा का आना	पिन्तेकुस्त
2:1-4	2:1-4	2:1-4	2:1-4	2:1-4
	भीड़ का प्रत्युत्तर			
2:5-13	2:5-13	2:5-13	2:5-13	2:5-13
पिन्तेकुस्त के दिन पतरस का भाषण	पतरस का उपदेश	पतरस का उपदेश	पतरस का उपदेश	भीड़ को पतरस द्वारा सम्बोधन
2:14-21	2:14-39	2:14-21	2:14-21	2:14-21
2:22-28		2:22-28	2:22-28	2:22-28
2:29-36		2:29-36	2:29-35	2:29-35
			2:36	2:36
		पश्चाताप का आह्वान		प्रथम मन-परिवर्तन
2:37-42		2:37-42	2:37	2:37-41
			2:38-39	
	कलीसिया की अद्भुत उन्नति			
	2:40-47		2:40-42	प्रारम्भिक मसीहियों का मन परिवर्तन
विश्वासियों का जीवन			विश्वासियों का जीवन	2:42
2:43-47		2:43-47	2:43-47	2:43
				2:44-45
				2:46-47

पठन चक्र तीसरा (“अच्छे बाइबल अध्ययन का मार्गदर्शन” से)

पैराग्राफ स्तर पर मूल लेखक के अभिप्राय को समझना

यह अध्ययन करने की मार्गदर्शक टीका है, जिसका अर्थ है कि आप अपनी बाइबल-व्याख्या के स्वयं उत्तरदायी हैं। हम में से प्रत्येक को अपने ज्ञान व समझ के अनुसार कार्य करना चाहिए। व्याख्या-प्रक्रिया में आप, आपकी बाइबल तथा पवित्र आत्मा प्राथमिक स्थान रखते हैं। आपको यह टीका कार्य टीकाकार पर नहीं छोड़ना चाहिए।

पूरा अध्याय एक बैठक में पढ़ें। विषयों को पहचानें। अपने विषय-विभाजन की तुलना उपरोक्त पाँच आधुनिक अनुवादों के विषय-विभाजन से करें। पैराग्राफों का विभाजन प्रेरणा प्राप्त नहीं होता है, परन्तु यह मूल लेखक के अभिप्राय को समझने की कुंजी है, जो कि व्याख्या करने का आधार है। प्रत्येक पैराग्राफ में केवल एक ही मूल विषय होता है:

1. पहला पैराग्राफ
2. दूसरा पैराग्राफ
3. तीसरा पैराग्राफ

4. अन्य

सन्दर्भ सम्बन्धी अन्तर्दृष्टि

A. यह नए युग का पहला उपदेश है। प्रेरित. 2 में पुराने नियम के उद्धरणों और संकेतों पर ध्यान दें। पतरस उन यहूदियों को सम्बोधित करते हुए प्रचार कर रहा है जो सारी मेडीटेरियन दुनियाँ से एकत्रित हुए थे। पवित्रशास्त्र की जिन बातों को वह प्रस्तुत करता है वे यीशु की उस शिक्षा को प्रतिबिम्बित करती हैं जो इम्माऊस के मार्ग पर यीशु ने दो चेलों को दी (देखें लूका 24:21-32) और अपने जी उठने के बाद के अपने दर्शनों में चेलों को दी थीं (देखें लूका 24:45)।
   1. प्रेरितों 2:16-21-योएल 2:28-32
   2. प्रेरितों 2:25-28 - भजन 16:8-11
   3. प्रेरितों 2:30 - एक संकेत 2 शमूएल 7:11-16 तथा भजन 89:34; 132:11
   4. प्रेरितों 2:34-35 - भजन 110:1

B. योएल की युगान्त सम्बन्धी भविष्यद्वाणी की पूर्ति बताती है कि परमेश्वर के दण्ड के कारण जो आत्मा इस्राएल पर से मलाकी (अर्थात् इतिहास लेखक) के बाद से उठा लि या गया था, वह अब समाप्त हो गया है। पवित्र आत्मा महान आज्ञा और उद्देश्य लेकर लौट आया है।

C. बाबेल के मीनार की भाषाओं की गड़बड़ी (देखें उत्पत्ति 11) अब फिर दोहराई गई (कुछ कुछ प्रतीकात्मक रूप में)। अब नया युग आरम्भ हो गया है।

D. जिस 'अन्य भाषा' का वर्णन प्रेरितों के काम में हैं, वह उस "अन्य भाषा" से भिन्न है जिसका वर्णन 1 कुरिन्थियों में किया गया है। इसे जानने के लिए टीकाकार की ज़रूरत नहीं है। सन्देश पूर्णरूप से सुसमाचार प्रचार संबंधी है।

   प्रेरितों के काम की अन्य-भाषाएँ विश्वासी यहूदियों के लिये हैं ताकि वे जान लें कि परमेश्वर ने अपने राज्य में नई जाति और भिन्न भौगोलिक परिस्थितियों के समूहों को स्वीकार किया है। (जैसे सामरी लोग व रोमी लोग इत्यादि)।

1 कुरिन्थियों की अन्य भाषा में बोलने वाला मनुष्य परमेश्वर से बातें करता है न कि मनुष्यों से बातें करता है (देखें 1 कुरि. 14:2)। इसके द्वारा बोलने वाले की उन्नति होती है (देखें 1 कुरि. 14:4)। कृपया इस टिप्पणी पर नकारात्मक रूप से विचार न करें (देखें 1 कुरि. 14:5,18)। मेरा विचार है कि अन्य भाषाएँ बोलना अभी भी एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है और आत्मिक वरदान है। तौभी 1 कुरिन्थियों 12:28-29 के प्रश्नों के कारण जिनका उत्तर "नहीं" में है, यह हा जा सकता है कि ये वरदान प्रत्येक विश्वासी के लिये नहीं हैं। 1 कुरि. 12 व 14 के सम्पूर्ण विषय की जानकारी के लिये वेबसाइट देखें www. freebible commentary.org

शब्द और वाक्यांश अध्ययन

NASB नवीन पाठ: प्रेरितों के काम 2:1-4
[1]जब पिन्तेकुस्त का दिन आया, तो वे सब एक जगह इकट्ठे थे। [2]एकाएक आकाश से बड़ी आँधी की सी सनसनाहट का शब्द हुआ, और उससे सारा घर जहाँ वे बैठे थे, गूँज गया। [3]और उन्हें आग की सी जीभें फटती हुई दिखाई दीं और उनमें से हर एक पर आ ठहरीं। [4]वे सब पवित्र आत्मा से भर गए, और जिस प्रकार आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ्य दी, वे अन्य अन्य भाषा बोलने लगे

2:1 **"पिन्तेकुस्त"**: यहूदियों का यह वार्षिक पर्व 'सप्ताहों का पर्व' भी कहलाता है ;देखें निर्गः 34:22; व्यव. 16:10)। शब्द पिन्तेकुस्त का अर्थ है "पचासवाँ"। यह पर्व फसह पर्व के 50वें दिन (सात सप्ताह बाद) आता था, (अर्थात् अखमीरी रोटी के पर्व के दूसरे दिन से गिनकर)। पिन्तेकुस्त पर्व के तीन उद्देश्य थे:

1. मूसा को व्यवस्था दिए जाने की यादगार मनाना (देखें जुबली 1:1) (cf. *Jubliees* 1:1)
2. फसल के लिए परमेश्वर को धन्यवाद देना
3. प्रथम फलों की भेंट चढ़ाना (यह बलिदान दिखाता था कि परमेश्वर यहोवा (YHWH) फसल के स्वामी हैं) इसकी पृष्ठभूमि जानने के लिए पढ़ें निर्ग. 23:16-17; 34:22; लैव्य. 23:15-21; गिनती 28:26-31; व्यव. 16:9-12)

NASB, NRSV	**"आया"**
NKJV	**"पूर्ण रूप से आया"**
TEV	**"आया"**
NJB	**"निकट आ पहुंचा"**

पिन्तेकुस्त का दिन अक्षरशः भर देने वाला दिन था। यह दिन ईश्वरीय योजना की पूर्ति का दिन और परमेश्वर द्वारा निर्धारित दिन था। जिस क्रिया शब्द का यहाँ प्रयोग हुआ है वह केवल लूका की रचनाओं में ही पाया जाता है (देखें लूका 8:23; 9:51; प्रेरि. 2:1; और इसी के समान लूका 2:6) माननीय इतिहास परमेश्वर यहोवा (YHWH) द्वारा निर्धारित किया गया है।

एम.आर. विन्सेन्ट अपनी पुस्तक वर्ल्ड स्टडीस , Vol. 1, p. 224, M. R. Vincent, *Word Studies*, vol. 1, p. 224, में हमें याद दिलाते हैं कि यहूदी लोगों ने इस दिन को एक खाली बर्तन के समान देखा जिसे भरा जाना था। तब पिन्तेकुस्त का दिन भरपूर करने के लिये आया, साथ ही यह दिन परमेश्वर द्वारा पवित्र आत्मा के युग का आरम्भ करने का अर्थात् कलीसिया के जन्म का, विशेष दिन था।

▪ **"वे सब एक जगह इकट्ठे थे"** इस वाक्यांश से पता चलता है कि वे एक ही स्थान पर और एकचित्त होकर एकत्रित थे (देखें 1:14)। संभवतः वे सब "ऊपरी कक्ष" में जमा थे जहाँ यह घटना घटी (देखें प्रेरि. 1:13; "घर" प्रेरी 2:2), परन्तु कुछ हद तक इस अनुभव में मन्दिर की भी भूमिका थी (देखें, लूका 24:53; समूह कितना बड़ा था देखें 2:47)।

2:2 "आकाश से बड़ी आँधी की सी सनसनाहट का शब्द हुआः इस पूरे भाग में आँधी और आग पर बल नहीं दिया गया है पर आवाज़ या शब्द पर बल दिया गया है। यह शब्द उत्पत्ति 3:8 के शब्द से मिलता जुलता है। पुराने नियम में, साँस, वायु और आत्मा के लिये शब्द 'रूआख' इस्तेमाल किया गया है। ;ठक्ठ 924द्ध (देखें यहेजकेल 37:9-14); और नए नियम में वायु और पवित्र आत्मा के लिए न्यूमा ;चदमदउंद्ध शब्द का प्रयोग हुआ है (देखें यूहन्ना 3:5-8)। इस आयत में आँधी के लिये शब्द 'नोई' ;चदवमद्ध प्रयुक्त हुआ है। यह शब्द केवल यहीं और प्रेरितों 17:25 में प्रयुक्त हुआ है। प्रेरि. 2:4 में आत्मा के लिये शब्द चदमनउं (न्यूमा) का प्रयोग किया गया है।

विशेष विषय: नए नियम में आत्मा

"आत्मा" के लिए प्रयुक्त होने वाला यूनानी शब्द, नए नियम में अनेक रूपों में इस्तेमाल किया गया है। प्रस्तुत हैं कुछ विशेष वर्गीकरण तथा उदाहरण :

A. त्रिएक परमेश्वर हेतु (देखें विशेष विषय : त्रिएकत्व)
   1. पिता के लिए (यूहन्ना 4:24)
   2. पुत्र के लिए (रोमि. 8:9-10;2 कुरि. 3:17; गला. 4:6;1 पत. 1:11)
   3. पवित्र आत्मा के लिए (मर. 1:11; मत्ती 3:16;10:20; यूह. 3:5,6,8;7:39;14:17; प्रेरि. 2:4; 5:9; 8:29, 35; रोमि. 1:4;8:11,16;1 कुरि. 2:4,10,11,13,14;12:7)

B. मानव जीवन की सामर्थ के लिए :

1. यीशु के संबंध में (मर. 8:12; यूह. 11:33,38;13:21)
2. मानव जाति के लिए (मत्ती 22:43; प्रेरि. 7:59;17:16;20:22; रोमि. 1:9;8:16;1 कुरि. 2:11;5:3-5;7:34;15:45;16:18;2 कुरि. 2:13;7:13; फिलि. 4:23; कुलु. 2:5
3. वे बातें जो आत्मा मानवीय आत्मा में और उसके माध्यम से उत्पन्न करता है :
   a. दासत्व की आत्मा नहीं, लेपालकपन की आत्मा - रोमि. 8:15
   b. नम्रता की आत्मा - 1 कुरि. 4:21
   c. विश्वास की आत्मा - 2 कुरि. 4:13
   d. ज्ञान और प्रकाशन की आत्मा - इफि 1:17
   e. भय की आत्मा नहीं परंतु सामर्थ्य की आत्मा (2 तीमु. 1:17)
   f. भ्रम की नहीं परंतु सत्य की आत्मा (1 यूह. 4:6)

C. आत्मिक संसार के लिए

1. आत्मिक प्राणी
   a. अच्छे (जैसे स्वर्गदूत, प्रेरि. 23:8-9; इब्रा. 1:14)
   b. बुरे (जैसे दृष्टात्माएं, मत्ती 8:16;10:1;12:43,45; प्रेरि. 5:16;8:7;16:16;19:12-21; इफि. 6:12)
   c. भूत (लूका 24:37)
2. आत्मिक दूरदृष्टि (देखें, मत्ती 5:3;26:41; यूहन्ना 3:6;4:23; प्रेरि. 18:25;19:21; रोमि. 2:29; 7:6; 8:4,10;12:11;1 कुरि. 14:37)
3. आत्मिक वस्तुएँ (देखें, यूहन्ना 6:63; रोमि. 2:29;8:2,5,9,15;15:27;1 कुरि. 9:11;14:12)
4. आत्मिक वरदान (देखें, 1 कुरि.12:1;14:1)
5. आत्मा की प्रेरणा (देखें, मत्ती 22:43; लूका 2:27; इफि. 1:17)
6. आत्मिक देह (देखें, 1 कुरि. 15:44-45)

D. गुण दोष बताना

1. संसार का व्यवहार (देखें रोमि. 8:15;11:8;1 कुरि. 2:12)
2. मनुष्य के सोच विचार (देखें, प्रेरि. 6:10; रोमि. 8:6;1 कुरि 4:2)

E. भौतिक संसार के लिए

1. हवा (देखें मत्ती 7:25,27; यूहन्ना 3:8; प्रेरि. 2:2)
2. साँस (देखें, प्रेरि. 17:25;2 थिस्स. 2:8)

यह बात स्पष्ट है कि इस शब्द की व्याख्या इसके संदर्भ के प्रकाश ही में की जानी चाहिए क्योंकि बहुत से अर्थ निकाले जा सकते हैं जो (1) भौतिक संसार (2) अनदेखे संसार (3) साथ ही इस भौतिक संसार या आत्मिक संसार के लोगों की ओर संकेत कर सकते हैं।

पवित्र आत्मा त्रिएक परमेश्वर का ऐसा भाग है जो इतिहास के इस मोड़ पर अत्यधिक सक्रिय रूप से क्रियाशील है। पवित्र आत्मा का नया युग आ गया है। वह सब कुछ जो अच्छा, पवित्र, ठीक, और सही है उससे संबंधित है। परमेश्वर के राज्य की सफलता और सुसमाचार की उन्नति के लिए उसकी उपस्थिति, उसके वरदान और उसकी सेवकाई अति आवश्यक है (देखें, यूहन्ना 14 व 16)। वह अपनी ओर नहीं परन्तु मसीह की ओर ध्यान आकर्षित करता है (देखें, यूहन्ना 16:13-14)। वह कायल करता, भरोसा दिलाता, प्रेम से निवेदन करता, बपतिस्मा देता और सब विश्वासियों को परिपक्व बनाता है (देखें, यूहन्ना 16:8-11)।

Copyright © 2014 Bible Lessons International

2:3 'आग की सी जीभें फटती हुई दिखाई दीं'' यहाँ ऐसा प्रतीत होता है कि यह पद ध्वनि-प्रकाश के किसी कार्यक्रम का वर्णन कर रहा हो। पहले प्रकाश आग की तरह चमक रहा था और एक साथ थे, परन्तु बाद में

फटकर अलग अलग प्रकट हुए व प्रत्येक विश्वासी जन पर आ ठहरे। उपरौठी कोठरी में प्रत्येक जन पर अर्थात् प्रेरितों, यीशु के परिवार के सदस्य तथा अन्य चेलों पर; और उन्हांेने इसे अनुभव किया। परन्तु कलीसिया एक थी।

पिन्तेकुस्त के पर्व को यहूदी लोग मूसा को सीनै के पर्वत पर व्यवस्था दिए जाने की यादगार के रूप में मनाते थे, यह परम्परा कब शुरु हुई, कोई नहीं जानता, निश्चित रूप से इसका आरम्भ दूसरी शताब्दी ईस्वी हो सकता है, परन्तु शायद इससे थोड़ा पहले। इसलिये प्रचण्ड आँधी और आग यहोवा (YHWH) परमेश्वर के होरेब पर्वत पर उतर आने के प्रताप की याद दिला सकते हैं ;देखें निर्गमन 19:16)।

पुराने नियम में अग्नि इन बातों का प्रतीक है: (1) परमेश्वर की उपस्थिति का (2) परमेश्वर के न्याय का (यशायाह 66:15-18); (3) पवित्रता का (निर्ग. 3:2; व्यव. 5:4, मत्ती 3:11)। लूका पवित्र आत्मा के उतरने को एक अद्भुत घटना दर्शाने के लिए ऐसे शब्दों का प्रयोग करता है।

विशेष विषय: अग्नि

पवित्र शास्त्र में, आग में सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रकार की संभावनाएँ दर्शाई गई है :

A. सकारात्मकता :
1. आग गर्म करती है (देखें, यशा. 44:15; यूह. 18:18)
2. प्रकाश देती है (देखें यशा. 50:11; मत्ती 25:1-13)
3. खाना बनाती है (देखें, निर्ग. 12:8; यशा. 44:15-16; यूह. 21:9)
4. शुद्ध करती है (देखें, गिनती 31:22-23; नीति. 17:3; यशा. 1:25;6:6-8; यिर्म. 6:29; मला. 3:2-3)
5. परमेश्वर को दर्शाती है (देखें, उत्प. 15:17; निर्ग. 3:2;19:18; यहेज 1:27; इब्रा. 12:29)
6. परमेश्वर की अगुवाई दर्शाती है, (निर्ग. 13:21; गिन. 14:14;1 राजा 18:24)
7. परमेश्वर की सामर्थ से भरे जाने को दर्शाती है (प्रेरि. 2:3)
8. परमेश्वर द्वारा रक्षा करने को दर्शाती है (जक. 2:5)

B. नकारात्मकता :
1. जलाती है (यहो. 6:24;8:8;11:11; मत्ती 22:7)
2. नष्ट करती है (उत्प. 19:24; लैव्य. 10:1-2)
3. क्रोध दर्शाती है (गिनती 21:28; यशा. 10:16; जक. 12:6)
4. दण्ड दर्शाती है (उत्प. 38:24; लैव्य. 20:14;21:9; यहोशू 7:15)
5. झूठा युगान्त चिन्ह (प्रका. 13:13)

C. आग प्रकट होने से अक्सर पाप पर परमेश्वर का क्रोध दर्शाया गया :
1. उसका क्रोध भस्म करता है (देखें, होने 8:5; सप. 3:8)
2. वह आग उंडेलता है (नहूम 1:6)
3. अनंत अग्नि (यिर्म 15:14;17:4; मत्ती 25:41; यहूदा 1:7)
4. युगांत न्यायदंड (मत्ती 3:10;5:22;13:40; यूह. 15:6;2 थिस्स.1:7;2 पत. 3:7-10; प्रका 8:7;16:8; 20:14-15)

D. परमेश्वर के दर्शनों में अक्सर आग प्रकट हुई . आग अक्सर इनोफेनीज़ में दिखाई देती है। निदोते, वॉल्यूम 1, पेज 534, (The NIDOTTE, vol. 1, p. 534,) इस बात की एक अच्छी सूची है कि परमेश्वर ने स्वयं को कैसे प्रकट किया और उनका "अग्नि" चित्रण के द्वारा।
1. एक ज्वलंत मशाल के रूप में परमेश्वर - उत्त.15:17
2. परमेश्वर जलती झाड़ी में दिखाई दिए - निर्गमन 3: 2
3. आग का खंभा - निर्गमन 13: 21,22; 14: 24 गिन. 9:15; 14:14; भजन . 78:14; 105: 39
4. आग के बीच से प्रकाशित किया - व्यवस्था. 4: 12,15,33,36; 5: 4,22,24,26; 9:10; 10: 4

5. सिनाई पर्वत- उनके वंश से जुड़ा निर्गमन 19:18; 24:17
6. बिजली में - यशा. 29: 6; 30: 27,30; भजन 50: 3
7. न्याय की शुद्ध करने वाली आग
8. व्यक्तिगत उपस्थिति आग में आती है - यशा 66: 15-16

E. बाइबिल में (leaven, lion) अनेक लाक्षणिक बातों जैसे खमीर सिंह आदि की तरह आग भी आशीष अथवा शाप का माध्यम बन सकती है, जो प्रकरण पर आधारित होता है।

Copyright © 2014 Bible Lessons International

▪ **"उनमे से हर एक "**: प्रेरितों और चेलों, स्त्री और पुरुषों, के बीच कोई अन्तर नहीं था (देखें योएल 2:28-32; प्रेरितों 2:16-21)।

2:4 "वे सब पवित्र आत्मा से भर गए": इस घटना का वर्णन लूका 24:49 में किया गया है जहाँ इसे "पिता की प्रतिज्ञा" कहा गया है। पवित्र आत्मा से "भरा जाना" बार बार हुआ (देखें प्रेरि. 2:4; 4:8, 31; 6:3,5; 7:55; 9:17; 11:24; 13:9)। इसका अर्थ है प्रतिदिन मसीह के स्वरूप में ढलते जाना (देखें, इफि. 5:18 तथा तुलना करें कुलु. 3:16 से)। यह पवित्र आत्मा के बपतिस्में से भिन्न है जो आरम्भिक मसीही अनुभव के बारे में अथवा मसीह से संयुक्त होने (1 कुरि. 12:13; इफि. 4:4-5) के बारे में बताता है। "भरा जाना" प्रभावशाली सेवकाई के लिए आत्मिक सामथ्र्य से परिपूर्ण होना है (इफि. 5:18-20), यहां पर इसका अर्थ सुसमाचार प्रचार है। प्रेरि. 3:10 की टिप्पणी देखें।

कुछ सुसमाचार प्रचारक आत्मिक अनुभव के विषय में भिन्न विचारधारा रखते हैं और नए नियम में पवित्र आत्मा पर विशेष बल दिए जाने का महत्व कम समझते हैं। इस विषय में गॉर्डोन फी Gordon Fee द्वारा लिखित निम्न दो पुस्तकों ने मेरी बहुत सहायता की है:

1. गोस्पल एंड स्पिरिट (*Gospel and Spirit)*
2. पॉल , दी स्पिरिट ,एंड दी पीपल ऑफ़ गॉड (*Paul, The Spirit, and The People of God)*

देखें प्रेरितों 5:17 पर दी गई टिप्पणी।

NASB, NKJV	**"अन्य भाषा में बोला आरम्भ कर दिया"**
NRSV	**"अन्य भाषाओं में बोलना आरम्भ कर दिया।"**
TEV	**"अन्य भाषाओं में बातें करने लगे।"**
NJB	**"भिन्न भिन्न भाषां में बोलना आरम्भ कर दिया।"**

शाब्दिक रूप से ये "अन्य भाषाएँ" हैं (*heterais glōssais)* इसका अर्थ प्रेरि. 2:6,11 के सन्दर्भ में समझा जा सकता है। अन्य भाषा का एक और संभव अनुवाद "उल्लसित होकर बोलना" भी किया जा सकता है। जो 1 कुरिन्थियों 12-14 तथा प्रेरि. 2:13 पर आधारित है। यहाँ पर यह निश्चित नहीं है कि कितनी भाषाएँ बोली गईं, परन्तु यह निश्चित है कि बहुत सी भाषाएँ होंगी। यदि आप प्रेरि. 2:9-11 में लिखित सारे देशों और क्षेत्रों को जोड़ें तो 20 के लगभग भाषाएँ होंगी। 120 विश्वासियों में से कुछ ने भी यही भाषाएँ बोली होंगी।

परमेश्वर ने उपरौठी कोठरी में बन्द इन भयभीत स्त्री-पुरुषों के छोटे झुण्ड को सुसमाचार के निर्भीक प्रचारक बनाने के लिये अद्भुत और सामर्थी कार्य किया ;स्त्री व पुरुष दोनों)। प्रतिज्ञा की हुई पवित्र आत्मा के उतरने के इस चिन्ह द्वारा परमेश्वर अन्य समूहों ;जैसे सामरी, रोमी अधिकारी और अन्य जाति लोगों) के ग्रहण किए जाने को भी सुदृढ़ करता है। "अन्य भाषा" प्रेरितों के काम की पुस्तक में सदैव विश्वासियों के लिये इस बात का एक चिन्ह रहा है कि सुसमाचार अन्य सारी बाधाओं पर विजयी होता है, चाहे वह बाधा भौगोलिक हो या अन्य जातियों में प्रचार करने से सम्बन्धित हो। प्रेरितों के काम में वर्णित अन्य भाषाओं तथा कुरिन्थियों नामक पुस्तक में वर्णित अन्य भाषाओं के बीच भारी अन्त पाया जाता है (देखें 1 कुरि. 12-14 अध्याय)।

धर्म वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखा जाए तो कहा जा सकता है कि पिन्तेकुस्त की घटना बाबेल की मीनार की घटना से बिल्कुल विपरीत घटना है (देखें उत्पत्ति 10-11 अध्याय)। क्योंकि वहाँ पर घमण्डी और विद्रोही मानव जाति ने अपनी स्वतन्त्रता प्रदर्शित की थी (अर्थात् पृथ्वी पर फैलने और भरने से इंकार), परन्तु पिन्तेकुस्त के दिन परमेश्वर ने अनेक भाषाएँ लाकर अपनी इच्छा लागू की। अब पवित्र आत्मा के नए युग में, राष्ट्रवाद जो मानवजाति को आपस में एक होने से (अर्थात् विश्व के एक अधिकार के अधीन होने से) रोकता है विश्वासियों के लिये पलट दिया गया है। प्रत्येक मानवीय सीमाओं (अर्थात् आयु, वर्ग, लिंग, भाषा, भूगोल आदि की सीमाएँ) से परे मसीही संगति उत्पत्ति 3 के परिणामों का खण्डन या निराकरण है।

''जिस प्रकार आत्मा ने उन्हें बोलने की सामथ्र्य दी'' क्रिया अपूर्ण सक्रिय संकेत है, जिसका अर्थ है आत्मा उन्हें देना शुरू किया। शब्द "उच्चारण" *(apophtheggomai)* एक वर्तमान निष्क्रिय (प्रतिपादक) है। ये वाक्यांश केवल लूका द्वारा ही प्रयुक्त हुआ (देखें प्रेरि. 2:4,14; 26:25)। सैप्तूजैन्ट में भविष्यद्वक्ताओं द्वारा बोले जाने के रूप में इस वाक्यांश का प्रयोग हुआ (अर्थात् आत्मा से प्रेरित होकर उपदेश देना, जैसे व्यव. 32:2; 1 इतिहास 25:1; यहेन. 13:9,19; मीका 5:11; जकर्याह 10:2)।

उच्च यूनानी का अनुवाद मुझे पसन्द है जिसका अर्थ है ''ऊँची आवाज़ में बोलना,'' ''जोश के साथ बोलना,'' अथवा ''प्रभावशाली ढंग से बोलना।'' लूका सैप्तूजैन्ट को जानता था और इसकी शब्दावाली से प्रभावित था। सैप्तूजैन्ट भूमध्यसागर के देशों की बाइबल का नाम है जो कलीसिया की बाइबल कहलाती है।

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों 2:5-13
5आकाश के नीचे की हर एक जाति में से भक्त यहूदी यरूशलेम में रह रहे थे। 6जब यह शब्द हुआ तो भीड़ लग गई ओर लोग घबरा गए, क्योंकि हर एक को यही सुनाई देता था कि ये मेरी ही भाषा में बोल रहे हैं। 7वे सब चकित और अचम्भित होकर कहने लगे, ''देखो, ये जो बोल रहे हैं क्या सब गलीली नहीं? 8तो फिर क्यों हम में से हर एक अपनी अपनी जन्मभूमि की भाषा सुनता है? 9हम जो पारथी और मेदी और एलामी और मेसोपोटामिया और यहूदिया और कप्पदूकिया और पुन्तुस और आसिया, 10और फ्रूगिया और पंफूलिया और मिस्र और लीबिया देश जो कुरेने के आसपास है, इन सब देशों के रहनेवाले और रोमी प्रवासी, 11अर्थात् यहूदी और यहूदी मत धारण करनेवाले, क्रेती और अरबी भी हैं, परन्तु अपनी-अपनी भाषा में उनसे परमेश्वर के बड़े-बड़े कामों की चर्चा सुनते हैं।'' 12और वे सब चकित हुए और घबराकर एक दूसरे से कहने लगे, ''यह क्या हो रहा है?'' 13परन्तु दूसरों ने ठठ्ठा करके कहा, ''वे तो नई मदिरा के नशे में चूर हैं।''

2:5 ''भक्त'' इस शब्द का अर्थ है ''जिन्हें अच्छी जानकारी हो'' (देखें LXX लैव्य. 15:31; मीका 7:2) । प्रथम शताब्दी के यहूदी धर्म में इसका अर्थ था परमेश्वर के प्रति आदर तथा प्राचीनों की परम्पराओं का पालन करने वाले ;अर्थात् मौखिक परम्पराएँ जिसे तालमूद कहा जाता था)। ये धार्मिक और धर्मपरायण लोग थे ;देखें प्रेरितों 8:2; 22:12; लूका 2:25)। इसका अर्थ निर्दोष एवं ''खरा'' भी है जो नूह और अय्यूब के लिये प्रयुक्त हुआ।

''आकाश के नीचे की हर एक राष्ट्र में से'': हर यहूदी पुरुष के लिये अति आवयक था कि तीन वार्षिक पर्वों में हिस्सा ले (लैव्यवस्था 23) मन्दिर में जाए (देखें व्यव. वि. 16:16)। उस समय वहाँ ये लोग उपस्थित थे:

1. समस्त भूमध्य सागर क्षेत्र के यहूदी तीर्थ-यात्री जो फसह पर्व मनाने यरूशलेम में जमा हुए थे और वहाँ पर पिन्तेकुस्त पर्व तक ठहरे।
2. यरूशलेम के बाहर रहने वाले स्थाई यहूदी निवासी (देखें प्रेरि. 4:16; 7:24; 9:22, 32)।
   इस शब्द में गहरे धर्म वैज्ञानिक अर्थ पाए जाते हैं (देखें मत्ती 28:19-20; लू. 24:47; प्रेरि. 1:8)

2:6 ''जब यह शब्द हुआ तो'': इसका संकेत दो बातों की ओर हो सकता है (1) बड़ी आँधी का सा शब्द (जैसे प्रेरि. 2:2) अथवा (2) विश्वासियों का अन्य भाषाओँ में बोला जाना (जैसे प्रेरि. 2:4)

NASB, NRSV, NJB **"हक्का-बक्का"**
NKJV **''भ्रम में पड़ गए''**
TEV **''उत्साहित हो गए''**

यही शब्द सैप्तूजेन्त में उत्पत्ति 11:7, 9 में प्रयुक्त हुआ है जब बाबेल की मीनार बनाते समय लोगों की भाषा में बड़बड़ी पड़ गई थी। मैं समझता हूं कि पिन्तेकुस्त की घटना प्रतीकात्मक रूप से राष्ट्रवाद और विश्वव्यापी एक शासन प्रबन्ध की विपरीत क्रिया है जो बाबेल की मीनार बनाते समय आरम्भ हुई थी, और जहाँ पर मानवजाति ने पृथ्वी पर फैलने की परमेश्वर की इच्छा का विरोध करके पाप किया था और दण्ड के रूप में उनकी भाषा में गड़बड़ी पड़ी थी और परमेश्वर ने उनको एक विश्वव्यापी सरकार बनाने से रोका था। इसी विचार की जेरोम बिबलीकल कमेन्ट्री वाल्यूम दो, पेज नम्बर 172 (*The Jerome Biblical Commentary,* Vol. 2, p. 172) पर पुष्टी करती है, और प्रेरि. 2:3 में शब्द ''डायमै ज़ीजो'' (*diamezizō*) का करती है जो बहुत कम प्रयोग किया जाता है परन्तु इसका प्रयोग सैप्तूजैन्त की व्यवस्थाविवरण 32:8 में बाबेल की मीनार की तितर बितर होने की घटना के संबंध में प्रयोग किया गया है। विश्वासी लोग राष्ट्रीयता के आधार पर विभाजित नहीं हो सकते हैं ;देखें प्रेरि. 9:22 की टिप्पणी)।

▪ **''भीड़ लग गई'':** ये शब्द बताते हैं कि यह घटना मन्दिर के क्षेत्र में हुई क्योंकि भीड़ उपरौठी कोठरी में अथवा यरूशलेम की तंग गलियों में समा नहीं सकती थी।

▪ **''*हर एक* को यही सुनाई देता था कि ये मेरी ही भाषा में बोल रहे हैं**'': यह सुनाई देने का आश्चर्यकर्म हो सकता है, ज़रूरी नहीं कि वे उनकी ही भाषा में बोल रहे थे (प्रेरि. 2:8,11), यदि ढेर सारे लोग, एक साथ भिन्न भिन्न भाषा बोलें तो गड़बड़ी उत्पन्न हो सकती है। यह बाबेल की मीनार की घटना का धर्म वैज्ञानिक रूप से विपरीत घटना थी (उत्पत्ति 11)।

यहाँ यूनानी शब्द डायलेक्टास (*dialektos)* प्रयुक्त हुआ है (प्रेरि. 2:8), जिससे इंगलिश शब्द ''डायलेक्ट'' (Dialect) बना है। लूका इस शब्द को अक्सर प्रेरितों के काम में प्रयुक्त करता है ;देखें प्रेरि. 1:19; 2:6,8; 21:40; 22:2; 26:14)। इसका प्रयोग ''भाषा'' या ''बोली'' के अर्थों में प्रयुक्त हुआ है, किन्तु इस सन्दर्भ में बोली सही अर्थ बैठता है। इन यहूदियों ने अपनी मातृभाषा में या बोली में प्रभु यीशु के बारे में सुना। यह उनके लिये एक प्रमाण के रूप में था कि नया सन्देश परमेश्वर की ओर से है और सच्चा है तथा सारे संसार के लिए है।

2:7,12 इन पदों में व्यक्त विभिन्न भावनाओं को दर्शाने वाले शब्दों पर ध्यान दें:

1. ''भौचक्के होना'' (प्रेरि. 2:6) (*sunechō)*
2. ''विस्मित होना'' (प्रेरि. 2:7) (*existēmi)*
3. ''आश्चर्य चकित होना'' (प्रेरि. 2:7) (*thaumazō)*
4. ''घबरा जाना'' (प्रेरि. 2:12) (*diaporeō)*

▪ **'' क्या, ये सब जो बोल रहे हैं गलीली नहीं?''** भाषण के बीच यह प्रश्न उनके उत्तरी भाषा के उच्चारण के कारण पूछा गया ;उनकी बोली के कारण, देखें मत्ती 26:73) वे हाँ में जवाब पाने की आशा करते हैं। यह कैसी बात है; यहाँ यूनानी शब्द पकवन आया है, जो प्रेरि. के काम और लूका में बीस बार प्रयुक्त हुआ है।

2:9 ''पारथी, मेदी, एलामी और मेसोपोटामिया के रहने वाले'' ये सारे समूह मैसोपोटामिया की उपजाऊ भूमि वाले क्षेत्र के हैं जहाँ से इब्राहिम ऊर नामक स्थान से बुलाया गया था ;देखें उत्पत्ति 11:28) और जहाँ पर यहूदा और इस्राएल अश्शूरियों और बेबीलोनीयों की गुलामी में गये थे।

▪ **"यहूदिया"** और क्यों यहूदिया के रहने वाले लोगों को आश्चर्य हुआ कि गलीली लोग अरामी भाषा में बोल रहे हैं? इन सब प्रश्नों के कारण बहुत विद्वानों का अनुमान है कि प्रारम्भिक लेखकों के द्वारा जो प्रतिलिपियाँ बनाते थे, यह गलती हुई है और यह यहूदिया शब्द किसी अन्य देश की ओर संकेत करता है।

1. तरतूलियन, अगस्तीन-आरमीनियां
2. जेरोम - सीरिया
3. ख्री सौस्टम, इरास्मुस-भारत
4. अन्य आधुनिक सुझावों के लिए देखें, ब्रूस. एम. मेट्ज़गर की टीका – (Bruce M. Metzger, *A Textual Commentary on the Greek New Testament,* page 293)

2:9-10 "कप्पदूकिया, पुन्तुस, आसिया, फ्रूगिया और पंफूलिया, ये सारे वर्तमान टर्की के क्षेत्र हैं।

2:10 "मिस्र, लीबिया जो कुरेन के आस पास है" ये उत्तरी अफ्रीका के क्षेत्र हैं।

▪ **"रोम से"** ये यहूदी-तीर्थ यात्री थे जो यहूदी धर्म मानने लगे थे और संभवतः रोम की कलीसिया के थे।
▪ **"धर्मांतरित"** ये गैर यहूदी लोग थे जिन्होंने यहूदी धर्म अपना लिया था और इन पर ये शर्ते लागू थीं:

1. मूसा की व्यवस्था का पालन करना।
2. हर पुरुष का खतना कराना।
3. गवाहों के सामने स्वयं को बपतिस्मा देना।
4. जब जब संभव हो मन्दिर में बलिदान चढ़ाना

ये लोग इसलिए यरूशलेम में थे क्योंकि प्रत्येक यहूदी पुरुष के लिए आवश्यक आज्ञा थी कि वह तीन वार्षिक त्यौहारों में अवश्य भाग लेवे (देखें निर्गमन 23 तथा लैव्यव्यवस्था 23)।

2:11 "क्रेती" यह टर्की के निकट भूमध्य सागर का एक बड़ा टापू था। संभव है बहुत सारे टापुओं का यह सामूहिक नाम हो।

▪ **"अरबी"** यह एसाव के वंशजों की ओर संकेत हो सकता है। दक्षिणी-पूर्वी दिशा में अनेक अरब जातियां फैली हुई थीं। यह सूची प्रथम शताब्दी के यहूदी लोगों का प्रतिनिधित्व करती है, जो उस समय के संसार में पाए जाते थे। यह यहूदियों के समान एक दृष्टान्त भी हो सकता है जो विश्व की 70 भाषाओं को विश्व की संपूर्ण मानवजाति का प्रतीक मानते थे (देखें लूका 10)। यही विचार सप्तूजेन्त (LXX) में व्यवस्थाविवरण 32:8 में भी व्यक्त किया गया है।

2:12 इस विशेष घटना को ये तीर्थ-यात्री एक महत्वपूर्ण चिन्ह के रूप में देखते हैं। पतरस उन्हें उत्तर देने के लिए इस अवसर का लाभ उठाता है।

2:13 "वे छक गए हैं" लोग सोचते थे कि चेलों ने मदिरा पी रखी है।

▪ **"मीठी मदिरा"** यीशु के चेलों ने मदिरा पी रखी थी इसका एक जवाब इफिसियों 5:18 में मिलता है। मदिरा पिए हुए व्यक्ति में कैसे भाषा समझने की योग्यता आ सकती है? मैं यकीन के साथ कह सकता हूँ कि वहां आनन्द और उत्साह का वातावरण था।

विशेष शीर्षक: नशीले पदार्थों के विषय में बाइबल की शिक्षा

I. बाइबल की शब्दावली :

A. पुराना नियम

1. याईन (Yayin) : यह दाखरस (Wine) का सामान्य शब्द है (BDB 406, KB 409), जो 114 बार प्रयुक्त हुआ है। यह शब्द इब्रानी मूल से नहीं है इसलिए इस शब्द की उत्पत्ति अज्ञात है। इसका

अर्थ आमतौर पर अंगूरों को सड़ाकर तैयार किया हुआ दारबरस है। कुछ मुख्य पद, उत्प. 9:21; निर्ग. 29:40; गिनती 15:5,10)।

2. तीरोश (Tirosh) : यह नया दाखरस (New Wine) कहलाता है (BDB 440, KB 1727)। निकटवर्ती पूर्वी क्षेत्रों की जलवायु के कारण ताज़ा अंगूरों का रस छः घण्टों के अंदर ही झाग देने लगता है। यह शब्द दाखरस (Wine) तैयार होने की प्रक्रिया को दर्शाता है। इसके संबंध में कुछ विशेष हवाले : (व्यव. वि. 12:17; 18:4; यशा. 62:8-9; होशे 4:11)।
3. असिस (Asis) : स्पष्ट रूप से यह मादक द्रव्य है ("Sweet Wine" BDB 779, KB 860) (देखें, योएल 1:5; यशा. 49:26)।
4. सेकर (Sekar) : इस शब्द का अर्थ है "Strong Drink" (BDB 1016, KB 1500)। इब्रानी मूल शब्द का उपयोग "पीने वाले" अथवा "पियक्कड़" के लिए किया जाता है। इसे और अधिक नशीला बनाने के लिये मसाले मिलाए जाते हैं। यह शब्द याइन के समान है। (देखें, नीति. 20:1; 31:6; यशा. 28:7)।

B. नया नियम

1. ओइनॉस (Oinos) : यह यूनानी शब्द है जो इब्रानी शब्द याइन (Yayin) के समान अर्थ रखता है।
2. नेऑस ओइनॉस (Neos Ions) (New Wine) : यह यूनानी शब्द इब्रानी शब्द तीरोश (Tirosh) **के** समान अर्थ रखता है **(**देखें मर**.** 2:22)**।**
3. गिल्यूकॉस विनॉस (Gleuchos Vinos) मीठा दाखरस (Sweet Wine) **:** यह शब्द असिस (Asis) के समान अर्थ रखता है **-** यह दाखरस में झाग बनने की आरम्भिक अवस्था होती है (देखें प्रेरि. 2:13)।

II. बाइबल का दृष्टिकोण **:**

A. पुराना नियम **:**

1. यह परमेश्वर का वरदान (Gift) है (उत्प. 27:28; भजन 104:14-15; सभो. 9:7; होशे 2:8-9; योएल 2:19,24; आमोस 9:13; जक. 10:7)।
2. दाखरस भेंट चढ़ाने का भाग है (निर्ग. 29:40; लैव्य. 23:13; गिनती 15:7,10; 28:14; व्य. वि. 14:26; न्या. 9:13)।
3. औषधि - के रूप में प्रयुक्त होता है (2 शमू. 16:2; नीति. 31:6-7)।
4. दाखरस वास्तविक समस्या हो सकती है (नूह - उत्प. 9:21; लूत - उत्प. 19:33,35; शिमशोन - न्या. 16; नाबाल - 1 शमू. 25:36; ऊरिय्याह - 2 शमू. 11:13; अमनोन - 2 शमू. 13:28; एला - 1 राजा 16:9; बेन्हदद - 1 राजा 20:12; हाकिम - आमोस 6:6; स्त्रियाँ - आमोस 4)
5. दाखरस का दुरुपयोग हो सकता है (नीति. 20:1; 23:29-35; 31:4-5; यशा. 5:11,22; 19:14; 28:7-8; होशे 4:11)।
6. कुछ समूहों के लिए दाखरस वर्जित था (जैसे याजक सेवारत हो) देखें, लैव्य. 10:9; यहेज. 44:21; नज़ीरों के लिए तथा हकीमो के लिए वर्जित, गिनती 6; नीति. 31:4-5; यशा. 56:11-12; होशे 7:5)।
7. युगांत संबंधी बातों में इसका प्रयोग (आमोस 9:13; योएल 3:18; जक. 9:17)

B. बाइबल के बाहर के विचार **:**

1. संयम के साथ थोड़ी सी लेना लाभप्रद (सभो. 31:27-33)
2. रब्बी कहा करते थे - " दाखरस सबसे अच्छी औषधि होती है, जहाँ पर इसकी कमी हो, तब ही औषधि की जरूरत होती है (BB 586)

C. नया नियम **:**

1. यीशु ने छः मटके पानी को दाखरस बनाया (यूह. 2:1-11)।
2. यीशु खाता-पीता आया (मत्ती 11:18-19; लूका. 7:33-34; 22:17 क्रमशः)
3. पिन्तेकुस्त के दिन पतरस पर "नई मदिरा" पीने का अभियोग लगाया गया (प्रेरि. 2:13)।

4. दाखरस को औषधि के रूप में प्रयोग किया जा सकता है (मर. 15:23; लूका 10:34; 1 तीम. 5:23)।
5. अगुवों को मदिरा नहीं पीनी चाहिए ; इसका अर्थ यह नहीं कि वे बिल्कुल भी न पिया करें (1 तीम. 3:3,8; तीतुस 1:7; 2:3; 1 पत. 4:3)।
6. युग के अन्त की शिक्षा में प्रयुक्त (मत्ती 22:1 क्रमशः ; प्रका. 19:9)।
7. शराब पीना दुःख की बात है (मत्ती 24:49; लूका 12:45; 21:34; 1 कुरि. 5:11-13; 6:10; गला. 5:21; 1 पत. 4:3; रोमि. 13:13-14)

III. धर्म वैज्ञानिक अंतर्दृष्टि (Theological Insight)

A. प्रान्तीय भाषा संबंधी तनाव
1. दाखरस परमेश्वर का वरदान है
2. शराब पीना गंभीर समस्या है
3. कुछ संस्कृतियों में विश्वासियों को सुसमाचार के कारण अपनी स्वतंत्रता को सीमावद्ध करना चाहिए (मत्ती 15:1-20; मर. 7:1-23; 1 कुरि. 8-10; रोमि. 14)

B. सीमा से आगे जाने की मनोवृति पर रोक
1. परमेश्वर सब अच्छे वस्तुओं का स्रोत
   a. भोजन - मर. 7:19; लू. 11:44; 1 कुरि. 10:25-26
   b. सब वस्तुएं शुद्ध - रोमि. 14:14,20; 1 तीमु. 4:4
   c. सब वस्तुएं उचित हैं - 1 कुरि. 6:12; 10:23
   d. सब वस्तुएं शुद्ध - तीतुस 1:15
2. पतित मानव जाति ने परमेश्वर की सब आज्ञाओंं को तोड़ा और उसके सब वरदानों का दुरुपयोग किया।

C. बुराई हम में हैं वस्तुओं में नहीं। भौतिक सृष्टि में कुछ भी बुरा नहीं है (देखें, ऊपर B. 1)

IV. प्रथम शताब्दी की यहूदी संस्कृति और झाग उत्पन्न होना :

A. जब अंगूरों का रस निकाला जाता है, उसके लगभग 6 घण्टों बाद उसमें झाग आना आरंभ हो जाता है।
B. यहूदी परम्परा के अनुसार जब रस की सतह पर झाग दिखाई देने लगें, तो वह दाखरस का दशमांस चढ़ाने योग्य हो जाता है। इसे "नया दाखमधु" (New Wine और Sweet Wine) कहा जाता था। (मा असरौथ) (Ma Aseroth 1:7)।
C. एक सप्ताह बाद हल्का दाखरस बनकर तैयार हो जाता है ।
D. 40 दिनों में तेज दाखरस बन जाता है, जिसे "पुराना दाखरस" कहा जाता था और उसे वेदी पर चढ़ाया जा सकता था (इदूयोथ 6:1)।
E. जो पुराना दाखरस तलछट में छोड़ दिया जाता था, वह श्रेष्ठ समझा जाता था पर उसे इस्तेमाल करने से पहले अच्छी तरह छानना पड़ता था।
F. अच्छी तरह बना हुआ दाखरस वह समझा जाता था जो रस में झाग उत्पन्न होने के बाद एक वर्ष तक रख दिया जाता था। दाखरस सुरक्षित रखने का समय तीन वर्ष था। यह पुराना दाखरस कहलाता था और इसके पीने से पहले पानी मिलाना आवश्यक था।
G. केवल पिछले 100 वर्षों में एक बंजर वातावरण और रासायनिक योजक के साथ किण्वन को स्थगित कर दिया गया है। प्राचीन विश्व किण्वन की प्राकृतिक प्रक्रिया को रोक नहीं सका।

V. अन्तिम बात (Closing Statements**)**

A. सावधान रहें की आपका अनुभव, आपकी धर्म-शिक्षा और आपकी बाइबल-व्याख्या यीशु तथा प्रथम शताब्दी के यहूदियों अथवा मसीही संस्कृति की आलोचना न करें । वे स्पष्टरूप से दाखरस से परहेज़ करने वाले लोग नहीं थे।

B. मैं मादक-द्रव्यों के उपयोग का समर्थन नहीं कर रहा हूँ। तौ भी अनेक लोग इस विषय में बाइबल की शिक्षा को बढ़ा-चढ़ाकर प्रस्तुत करते हैं और अपनी संस्कृति अथवा अपनी संस्था के विचारों के आधार पर धर्मी होने का दावा करते हैं।
C. रोमि. 14 और 1 कुरि. 8-10 में सह-विशवासियों से प्रेम रखने और उनका आदर करने, और अपनी संस्कृति में सुसमाचार फैलाने के विषय में अच्छा मार्गदर्शन और अंतर्दृष्टि प्रदान की जाती है, न कि उनकी आलोचना करने की। यदि हम बाइबल को अपने विश्वास और धार्मिक कार्यों का एकमात्र स्रोत मानते हैं, तो हमें दाखरस के संबंध में पुनर्विचार करने की आवश्यकता है।
D. यदि हम बलपूर्वक कहते हैं कि परमेश्वर चाहता है कि हम दाखरस अथवा शराब बिल्कुल ना पीया करें, तो यीशु के बारे में क्या कहें जिसने दाखरस का उपयोग किया और साथ ही उन देशों के बारे में क्या कहें जहाँ नियमित रूप से शराब पी जाती है जैसे यूरोप, इस्राएल और अर्जेन्टीना इत्यादि।

Copyright © 2014 Bible Lessons International

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम: 2:14-21

[14]तब पतरस उन ग्यारह के साथ खड़ा हुआ और ऊँचे शब्द से कहने लगा, "हे यहूदियो और हे यरूशलेम के सब रहनेवालो, यह जान लो, और कान लगाकर मेरी बातें सुनो। [15]जैसा तुम समझ रहे हो, ये लोग नशे में नहीं हैं, क्योंकि *अभी* तो पहर ही दिन चढ़ा है। [16]परन्तु यह वह बात है, जो योएल भविष्यद्वक्ता के द्वारा कही गईं थी: [17]'परमेश्वर कहता है, कि अन्त के दिनों में ऐसा होगा कि मैं अपना आत्मा सब मनुष्यों पर उण्डेलूँगा, और तुम्हारे बेटे और तुम्हारी बेटियाँ भविष्यद्वाणी करेंगी, और तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे, और तुम्हारे पुरनिए स्वप्न देखेंगे। [18]वरन् मैं अपने दासों और अपनी दासियों पर भी उन दिनों में अपने आत्मा में से उँडेलूँगा, और वे भविष्यद्वाणी करेंगे। [19]और मैं ऊपर आकाश में अद्‌भुत काम और नीचे धरती पर चिन्ह, अर्थात् लहू और आग और धूएँ का बादल दिखाऊँगा। [20]प्रभु के महान् और तेजस्वी दिन के आने से पहले सूर्य अंधेरा और चाँद लहू-सा हो जाएगा। [21]और जो कोई प्रभु का नाम लेगा, वह उद्धार पाएगा।

2:14 "पतरस" सब चेलों में से पतरस ही था, जिसने पहला मसीही उपदेश दिया। वह व्यक्ति जिसने तीन बार यीशु का इंकार किया था कि वह यीशु को नहीं जानता (लूका 23)। कायरता और इंकार पन से साहसी बन जाना और आत्मिक अन्तर्दृष्टि उसमें पाया जाना, इस बात का प्रमाण है कि अब पवित्र आत्मा की जीवनदायक सामर्थ का युग आरम्भ हो गया है। यह प्रेरितों के काम की पुस्तक का पहला लिखित उपदेश है। इसमें हम पेरेरितों द्वारा प्रचार में प्रयुक्त विषयवस्तु और उन तथ्यों को पाते हैं जिनपर उन्होंने विशेष बल दिया। वे उपदेश इस पुस्तक के महत्वपूर्ण भाग हैं जिन्हें प्रेरितों ने दिए।

विशेष शीर्षक : प्रारम्भिक केरिगमा कलीसिया की शिक्षाएँ

मसीही धर्म के बारे में बहुत से विचार पाए जाते हैं। आधुनिक समय में अनेक मसीही संप्रदाय पाए जाते हैं जैसे कि प्रथम शताब्दी में भी पाए जाते थे। मैं व्यक्तिगत रूप से इन सब समूहों का आदर करता हूं जो मसीह यीशु को जानने और उस पर विश्वास रखने का दावा करते हैं। हम सब आपस में एक या दूसरी बात पर असहमति रखते हैं, परंतु मूल रूप से मसीही धर्म यीशु मसीह के बारे में ही बताता है। परंतु फिर भी कुछ ऐसे ग्रुप पाए जाते हैं जो मसीही होने का दावा तो करते हैं और हमारे समान ही दिखाई देते हैं, पर वे वास्तव में सच्चे मसीही नहीं कहे जा सकते हैं। तो हम कैसे अन्तर प्रकट कर सकते हैं?

इसके दो तरीके हैं :

A. मसीही पुस्तकें : यह जानने के लिए कि अपनी पुस्तकों के आधार पर ये आधुनिक समूह (Cults) क्या विश्वास करते हैं पुस्तकें हमारी सहायता करती हैं जिन्हें पढ़ना चाहिए। एक सहायक पुस्तक वाल्टर मार्टिन की है, "द किंगडम ऑफ द कल्ट्स" (*The Kingdom of the Cults* by Walter

Martin)।

B. आरंभिक कलीसिया के उपदेश जो प्रेरितों के काम नामक पुस्तक में विशेषकर पतरस और पौलुस द्वारा प्रस्तुत किए गये। ये उपदेश हमें एक रूपरेखा प्रदान करते हैं कि किस प्रकार से प्रथम शताब्दी के प्रेरणा प्राप्त लेखकों ने विभिन्न समूहों के समक्ष मसीही धर्म को प्रस्तुत किया। आरम्भिक कलीसिया का यही "प्रचार" व "घोषणा" यूनानी भाषा में "करिगमा" कहलाती है। प्रेरितों के काम पुस्तक में प्रभु येशु के सुसमाचार की मूल सच्चाईयाँ निम्नलिखित हैं :
   1. यह सुसमाचार पुराने नियम की बहुत सी भविष्यवाणियाँ पूरी करता है - प्रेरि. 2:17-21,30-31,34; 3:18-19,24; 10:43; 13:17-23,27; 33:33-37,40-41; 26:6-7,22-23)
   2. यीशु यहोवा (YHWH) की प्रतिज्ञानुसार भेजा गया - प्रेरि. 2:23; 3:26
   3. अपने उपदेश को प्रमाणित करने के लिए उसने आश्चर्यकर्म किए और परमेश्वर की दया को प्रकट किया - प्रेरि. 2:22; 3:16; 10:38
   4. उसका इनकार किया गया और सौंप दिया गया - प्रेरि. 3:13-14; 4:11
   5. क्रूस पर चढ़ाया गया - प्रेरि. 2:23; 3:14-15; 4:10; 10:39; 13:28; 26:23
   6. जिलाया गया - प्रेरि. 2:24-31-32; 3:15,26; 4:10; 10:40; 13:30; 17:31; 26:23
   7. सर्वोच्च करके परमेश्वर दाहिने हाथ बैठा - प्रेरि. 2:33-36; 3:13,21
   8. दुबारा आएगा - प्रेरि. 3:20-21
   9. न्यायी ठहराया गया - प्रेरि. 10:42; 17:31
   10. पवित्र आत्मा भेजा - प्रेरि. 2:17-18,33,38-39; 10:44-47
   11. वह विश्वास करने वालों का उद्धारकर्त्ता है - प्रेरि. 13:38-39
   12. दूसरा कोई उद्धार कर्त्ता नहीं - प्रेरि. 4:12; 10:34-36

प्रेरितों की इस सच्चाई का सही प्रत्युत्तर देने के उपाय :
   1. पश्चाताप करना - प्रेरि. 2:38; 3:19; 17:30; 26:20
   2. विश्वास करना - प्रेरि. 2:21; 10:43; 13:38-39
   3. बपतिस्मा लेना - प्रेरि. 2:38; 10:47-48
   4. पवित्र आत्मा प्राप्त करना - प्रेरि. 2:38; 10:47
   5. सब आ सकते हैं - प्रेरि. 2:39; 3:25; 26:23

यही रूपरेखा आरम्भिक कलीसिया के प्रचार की मूल विषय-वस्तु थी, हालांकि नए नियम के विभिन्न लेखकों ने अपने लेखों में भिन्न-भिन्न बातों पर जोर दिया है, और कुछ बातें छोड़ दी। मरकुस के सुसमाचार में करिगमा का पालन किया गया है। परम्परागत रूप से माना जाता है कि रोम में दिए गए पतरस के उपदेशों का संग्रह मरकुस में पाया जाता है। मत्ती और लूका ने मरकुस की रूपरेखा का पालन किया है।

Copyright © 2014 Bible Lessons International

▪ **"ग्याराह के साथ "** इससे दो बातों का पता चलता है: (1) पतरस हालांकि मुख्य वक्ता है, तौ भी प्रेरितों के समूह का भाग है। वह स्वयं अपने अधिकार से अकेला नहीं बोलता। वह अद्‌भुत रीति से पवित्र आत्मा के माध्यम से सम्पूर्ण समूह की ओर से बोलता है जो आँखों देखे गवाह हैं तथा (2) मत्तियाह, जिसके विषय में सम्पूर्ण जानकारी हमारे पास नहीं है, अब औपचारिक रूप से प्रेरितों के समूह में शामिल हो चुका है।

▪ **"यहूदा के आदमियों और यरूशलेम के सब रहनेवालो"** जिन लोगों को यहाँ सम्बोधित किया गया है वे उन तीर्थ यात्रियों से भिन्न नज़र आते हैं, जिनका उल्लेख उनकी राष्ट्रीयता के साथ प्रेरित 2:7-11 में किया गया है।

▪ **"इसको तुम जानो और ध्यान दो"** यह वर्तमान और भविष्य कालिन आदेश सूचक वचन हैं। पतरस चाहता है कि वे पूरा ध्यान देकर उसकी बातें सुनें।

यह वाक्यांश स्पष्ट रूप से सामी भाषा का एक मुहावरा है। पतरस के उपदेशों में दो बार इसका प्रयोग हुआ (देखें प्रेरि. 2:14; 4:10) और अनेक बार पौलुस ने इसे प्रयोग किया (देखें प्रेरि. 13:38; 28:28)। लूका ने युवा के रूप में अन्यजातियों में से मसीही धर्म अपनाया था। इन सामी भाषा के मुहावरों का उपयोग बताता है कि लूका ने प्रेरितों के काम की पुस्तक के उपदेशों को अपने धर्म वैज्ञानिक उद्देश्यों के अनुसार नहीं रचा है बल्कि अपने स्रोतों को विश्वासयोग्यता के साथ सारांश रूप में प्रस्तुत किया है।

2:15 ''ये लोग नशे में नहीं हैं'' पतरस प्रेरि. 2:13 में लगाए गए इल्ज़ाम का उत्तर देते हुए कहता है, कि एक कट्टर यहूदी के लिए मदिरा पीने का यह समय बहुत जल्दी है। उसने रब्बियों के समान निर्गमन 16:8 की व्याख्या की (देखें ई.एम. ब्लाइकलाक की टिन्डेल नया नियम टीका, प्रेरितों, पेज 58। (cf. E. M. Blaiklock,Tyndale NT Commentary Series, *Acts*, p. 58)

- **''तीसरा पहर ''** यह करीब सुबह नौ बजे का समय है। यह मन्दिर में जाकर प्रतिदिन के बलिदान चढ़ाने का समय था। यहूदियों के लिए यह विशेष प्रार्थना करने का समय बन गया था। ''पहर दिन'' यहूदियों का समय-सूचक शब्द है। नए नियम के लेखक (विशेषकर यूहन्ना) यहूदी और रोमी दोनों प्रकार के समय-सूचक प्रयोग करते थे।

2:16 ''जो योएल नबी **के द्वारा कही गई थी''** यह सैप्तूजैन्त से योएल 2:28-32 का उद्धरण है। नबी का यह कथन पूरा हुआ, स्वयं यीशु ही यह बताने का स्रोत हो सकता है (देखें लूका 24:27,45)।

2:17 '' अन्त के दिनों में '' यह वाक्यांश सैप्तूजैन्त के पाठांश का लूका द्वारा बदला हुआ रूप है, इसे बड़े शब्दों (कैपीटल लैटर) में नहीं होना चाहिए। पुराने नियम में इस वाक्यांश का संकेत समय के अन्त और मसीही युग के आने की ओर है नए नियम में ''अन्त के दिन'' यहूदियों के युग की दो बातों की ओर संकेत करता है, नया युग व पुराना युग। नया युग यीशु के आगमन से आरम्भ होता है, जब वह बैतलहम में देहधारी होकर आया और उसके दूसरे आगमन पर समाप्त होगा। हम परमेश्वर के राज्य की दो बातों के बीच रहते हैं, ''परमेश्वर का राज्य आ चुका है'' तथा ''परमेश्वर का राज्य अभी नहीं आया है।'' इस विषय में विशेष शीर्षक देखें:

विशेष विषय: यह युग तथा आने वाला युग

पुराने नियम के नबी भविष्य को वर्तमान के विस्तार (Extension) के रूप में देखते थे। उनकी दृष्टि में भविष्य भौगोलिक इस्राएल की पुनर्स्थापना था। तो भी वे भविष्य को नए दिन के रूप में देखते थे (देखें, यशा. 65:17; 66:22)। अब्राहम के वंशजों द्वारा निरन्तर जानबूझकर यहोवा (YHWH) का तिरस्कार करने के कारण यहूदियों के प्रकाशनात्मक साहित्य में एक नई विचारधारा का विकास हुआ (अर्थात 1 हनोक, IV एज्रा, II बारूक)। इन लेखों ने इन दो युगों के बीच अंतर पैदा कर दिया वर्तमान बुरा युग जो शैतान द्वारा शासित तथा आने वाला धार्मिकता का युग जो पवित्र आत्मा के अधीन होगा और जिसका आरंभ मसीह द्वारा किया जाएगा, जिसे अक्सर शक्तिशाली योद्धा के रूप में माना गया।

इस युगान्त सम्बन्धी धर्म वैज्ञानिक शिक्षा (Eschatological Theology) में स्पष्ट रूप से विकास हुआ। धर्म वैज्ञानिक (Theologians) इसे प्रोग्रेसिव रेवलेशन के नाम से पुकारते हैं। नया नियम दो युगों की इस नई सांसारिक वास्तविकता को स्वीकार करता है जो सांसारिक द्वैतवाद कहा जाता है।

यीशु	पौलुस	इब्रानियों (पौलुस)
मत्ती 12:32; 3:22,39	रोमि. 12:2	इब्रा. 1:2; 6:5; 11:3
मरकुस 10:30	1 कुरि. 1:20; 2:6,8; 3:18;	
लूका 16:8;18:30; 20:34-35	2 कुरि. 4:4,	

गला. 1:4
इफि. 1:21; 2:2,7; 6:12
1 तीम. 6:17
2 तीम. 4:10
तीतुस 2:12

नए नियम की धर्म-शिक्षा (Theology) में ये दो यहूदी युग मसीह के दो आगमनों की भविष्यवाणियों को नजरअंदाज करने के कारण आपस में संयुक्त हो गए हैं। यीशु का आगमन इस नए युग के आरम्भ की अधिकांश भविष्यवाणियों की पूर्ति करता है जो पुराने नियम में पाई जाती हैं (दानि. 2:44-45)। तो भी पुराना नियम उसके आगमन को एक न्यायी और विजेता के रूप में देखता है, फिर भी वह पहली बार दुखी दास (देखें, यशा. 53; जक. 12:10), और विनम्र व दीन (जक. 9:9) बनकर आया वह फिर से सामर्थ्य के साथ आएगा जैसाकि पुराने नियम में भविष्यवाणी की गई है (देखें, प्रका. 19)। भविष्यवाणियों की इस दो प्रकार की परिपूर्तियों के कारण राज्य आ चुका है, परन्तु फिर भी भविष्य में आएगा। यह नए नियम की "आ चुका" परन्तु "अभी नहीं आया" की तनावपूर्ण स्थिति है।
मसीहा के दो आगमन के बीच की इस समयावधि को बाइबल में इस रूप में संदर्भित किया गया है

1. आखिरी दिनों के दौरान
2. बाद के दिन
3. उस दिन

Copyright © 2014 Bible Lessons International

▪ **"परमेश्वर कहता है"** एम एस डी कोडेक्स बेज़ाए (Codex Bezae) में क्यूरिआस (प्रभु) शब्द दिया गया है। क्या यह क्यूरिआस शब्द 'यहोवा' (YHWH) की ओर संकेत करता है अथवा यीशु अर्थात् मसीह की ओर संकेत करता है? यहाँ परमेश्वर *Theos* दिया गया है, जो शास्त्रियों की ओर से किया गया है ताकि स्पष्ट हो सके।

▪ **"मैं अपना आत्मा सब मनुष्यों पर उँडेलूँगा"** इसमें सारी दुनियां भी शामिल है ;देखें प्रेरि. 2:39)। मसीह में सारी पारम्परिक बाधाएँ दूर हो जाती हैं ;देखें 1 कुरि. 12:13; गला. 3:28; इफि. 3:6; कुलु. 3:11)। हालांकि योएल 2 में यहूदी-गैरयहूदी का कोई भेदभाव नहीं है, जैसाकि प्रेरि. 2:38 में है कि हर एक यीशु के नाम से बपतिस्मा ले सकता है। यहोवा (YHWH) परमेश्वर उन सबको अपना आत्मा देता है जो उसके स्वरूप में बनाए गए हैं, जैसा कि उत्पत्ति 1:26-27 में पाया जाता है। विशेष शीर्षक: बाइबल में महिलाएँ

▪ **"तुम्हारे बेटे और तुम्हारी बेटियाँ भविष्यद्वाणी करेंगी... मैं अपना आत्मा सब मनुष्यों पर उँडेलूँगा,"** यह गिनती 11:29 की भविष्यद्वाणी की विशिष्ठ परिपूर्ति हो सकती है। ध्यान दीजिए कि यहाँ पर लिंग-भेद नहीं है।

विशेष शीर्षक: बाइबल में महिलाएँ

I. **पुराना नियम** : (O.T.)

A. सांस्कृतिक रूप से स्त्रियों को संपत्ति माना जाता था :
1. वे धन-संपत्ति की सूची में शामिल थीं (निर्ग. 20:17)
2. दासी स्त्रियों के प्रति व्यवहार (निर्ग. 21:7-11)
3. स्त्रियों की मन्नतें सामाजिक रूप से सम्मानित पुरुष द्वारा भंग हो सकती हैं (गिनती 30)
4. स्त्रियां युद्ध में लूट के समान (व्य. वि. 20:10-14; 21:10-14)

B. व्यवहारिक रूप से अच्छा व्यवहार :
1. स्त्री-पुरुष परमेश्वर के स्वरूप पर सृजे गए (उत्पत्ति 1:26-27)
2. माता-पिता का आदर करना (निर्ग. 20:12; व्य. वि. 5:16)
3. माता-पिता का सम्मान (लैव्य. 19:3; 20:9)
4. स्त्री और पुरुष दोनों नजीर हो सकते हैं (गिनती 6:1-2)
5. बेटियों को उत्तराधिकारी होने का अधिकार (गिनती 27:1-11)
6. वाचा के लोगों का हिस्सा (व्य. वि. 29:10-12)
7. माता-पिता की शिक्षाओं का पालन करना (नीति.1:8; 6:20)
8. हेमान के पुत्र और पुत्रियाँ जो मंदिर में वीणा, झांझ व सारंगी बजाते थे (1 इति. 25:5-6)
9. नए युग में पुत्र और पुत्रियाँ नबूवत करेंगे (योएल 2:28-29)

C. स्त्रियाँ अगुवाई करती थीं :
1. मूसा की बहिन मरियम नबिया कहलाती थी (निर्ग. 15:20-21; मीका 6:4)
2. स्त्रियों को परमेश्वर ने बुनाई करने का वरदान दिया (निर्ग. 35:25-26)
3. एक विवाहित महिला, डेबोरा, एक भविष्यवक्ता (न्याय 4:4), सभी जनजातियों का नेतृत्व किया (न्याय 4: 4-5; 5:7)
4. हुल्दा नबिया थी, जिसे योशिय्याह ने व्यवस्था की पुस्तक पढ़ने को कहा (2 रा. 22:14; 2 इति. 34:22-27)
5. रानी ऐस्तर जिसने यहूदियों को बचाया (ऐस्तर की पुस्तक)

II. **नया नियम** : (New Testament)

A. सांस्कृतिक रूप से यहूदीवाद और रोमी-साम्राज्य दोनों में स्त्रियों को द्वितीय श्रेणी की नागरिकता प्राप्त थी, (मकिदुनियाँ को छोड़कर) और उन्हें कुछ अधिकार व सुविधाएँ भी प्राप्त थीं।

B. स्त्रियाँ अगुवेपन की भूमिका में :
1. इलीशीबा और मरियम, भक्त स्त्रियाँ परमेश्वर के लिए उपलब्ध (लूका 1-2)।
2. हन्नाह, एक नबिया जो मंदिर में सेवारत थी (लूका 2:36)
3. लदिया, घर की कलीसिया की अध्यक्ष और विश्वासी स्त्री (प्रेरि. 16:14,40)
4. फिलिप्पुस की चार कुंवारी पुत्रियाँ नबिया थीं (प्रेरि. 21:8-9)
5. फीबे, क्रिंखिया चर्च में सेविका (रोमि. 16:1)
6. प्रिस्का, पौलुस की सहकर्मी और अपुल्लौस की शिक्षिका (प्रेरि. 18:26; रोमि. 16:3)
7. मरियम, त्रुफेना, त्रुफोसा, परास, यूलिया, नेर्युस और उसकी बहन इत्यादि कुछ स्त्रियाँ पौलुस की सहकर्मी थीं (रोमि. 16:6-16)
8. यूनियास, संभवतः महिला प्रेरित थी (रोमि. 16:7)
9. यूओदिया और सुन्तुखे, पौलुस की सहकर्मी (फिलि. 4:2-3)

III. एक आधुनिक विश्वासी किस प्रकार विभिन्न बाइबल के उदाहरणों में सन्तुलन करता है?

A. ऐतिहासिक अथवा सांस्कृतिक सत्य का निर्धारण कैसे किया जाए, जो केवल मूल सन्दर्भ ही पर लागू होता है; अनन्त सत्य के द्वारा जो सब कलीसियाओं और सब विश्वासियों और प्रत्येक पीढ़ी के लिए मान्य होता है?
1. हमें गम्भीरता पूर्वक प्रेरणा प्राप्त मूल लेखक के अभिप्राय को लेना चाहिए। बाइबल परमेश्वर का

वचन है और विश्वास तथा अभ्यास का एकमात्र स्रोत है।

2. हमें स्पष्टरूप से प्रेरणा प्राप्त ऐतिहासिक पाठांशों को लेना चाहिए
    a. इस्राएल की उपासना विधियों को (देखें प्रेरि. 15; गला. 3)
    b. प्रथम शताब्दी का यहूदीवाद
    c. 1 कुरि. में पौलुस के ऐतिहासिक कथन
        (1) अन्यजाति रोमी लोगों के वैधानिक तौर तरीके (1 कुरि. 6)
        (2) दास की अवस्था में रहना (1 कुरि. 7:20-24)
        (3) अविवाहित रहना (1 कुरि. 7:1-35) देखें विशेष विषय: अविवाहित और विवाह
        (4) कुंवारी कन्या (1 कुरि. 7:36--38)
        (5) मूर्तियों को चढ़ाए गए चढ़ावे (1 कुरि. 8; 10:23-33)
        (6) अनुचित रीति से प्रभुभोज लेना (1 कुरि. 11)

3. परमेश्वर ने स्वयं को किसी विशेष संस्कृति पर किसी विशेष दिन, प्रकट किया है। हमें गंभीरतापूर्वक प्रकाशन को ग्रहण करना चाहिए, परंतु उसके प्रत्येक ऐतिहासिक पहलू को नहीं लेना चाहिए। परमेश्वर का वचन मानवीय शब्दावली में लिखा गया, और विशेष समय पर, विशेष संस्कृति को संबोधित किया गया।

B. बाइबल की व्याख्या मूल लेखक के अभिप्राय के अनुसार होनी चाहिए। वह इस युग के लिए क्या कर कह रहा है? यह सही व्याख्या करने के लिए आधारभूत और आवश्यक बात है। परन्तु उसके बाद उसे अपने समय पर लागू करना चाहिए। व्याख्या करने की खास समस्या शब्दों की परिभाषा करने की हो सकती है। 1.क्या वहाँ पास्टरों से अधिक सेवकाईयाँ थीं जिन्हें अगुवों के रूप में देखा जाता था?

2.क्या सेविकाओं या नबिया स्त्रियों को अगुवों के रूप में देखा जाता था?

यह स्पष्ट है कि पौलुस 1 कुरि. 14:34-35 और 1 तीम. 2:9-15 में कहता है कि स्त्रियों को सार्वजनिक आराधना में अगुवाई नहीं करनी चाहिए। परन्तु प्रश्न यह है कि हम आज इसे कैसे लागू करें? मैं नहीं चाहता कि पौलुस की संस्कृति अथवा मेरी संस्कृति परमेश्वर के वचन और उसकी इच्छा की अवहेलना करे। संभवतः पौलुस का समय बहुत संकीर्ण रहा हो और साथ ही मेरा समय बहुत उदार हो।

मैं ऐसा कहने में बेचैनी महसूस करता हूं कि पौलुस के वचन और उसकी शिक्षाएँ शर्त सहित हैं अर्थात प्रथम शताब्दी की स्थानीय सच्चाईयाँ। मैं कौन होता हूँ कि मेरा दिमाग और मेरी संस्कृति एक प्रेरणा-प्राप्त लेखक की बातों का खण्डन करे?

अतः मुझे क्या करना चाहिए जबकि बहुत से उदाहरण स्त्रियों के नेतृत्व के संबंध में धर्मशास्त्र में पाए जाते हैं , यहाँ तक कि पौलुस के लेखों में भी (देखें, रोमि. 16)? इसका एक अच्छा उदाहरण 1 कुरि. 11-14 अध्यायों में सार्वजनिक आराधना संबंधी पौलुस के विचार विमर्श में पाया जाता है। 1 कुरि. 11:5 में वह कहता है, "जो स्त्री सिर उधाड़े प्रार्थना या नबूवत करती है, अपने सिर का अपमान करती" जिसका अर्थ है सिर ढककर वह प्रार्थना या नबूवत कर सकती है, तो भी 14:34-35 में वह मांग करता है कि स्त्रीयाँ चुप रहें। वहाँ पर सेविकाएँ (रोमि. 16:1 देखें विशेष विषय देखें: सेवकाई में महिलाओं का पॉल का उपयोग) तथा नबिया (प्रेरि. 21:9) स्त्रियाँ पाई जाती थीं। यही विभिन्नताएँ हैं जो मुझे स्वतंत्रता प्रदान करती हैं कि पौलुस की टिप्पणियों को समझूँ व पहचानूं जो स्त्रियों के प्रतिबंधों से संबंधित हैं और कहूँ कि ये बातें प्रथम शताब्दी के कुरिन्थ और इफिसुस तक सीमित थीं। इन दोनों ही कलीसियाओं में समस्या थी कि स्त्रियाँ अपनी स्वतंत्रता का दुरुपयोग करती थीं (देखें, ब्रूस विन्टर की पुस्तक, "आफटर पौल लैफ्ट कोरिन्थ" (After Paul Left Corinth) संभवतः उनके व्यवहार से कलीसिया को सुसमाचार अपने आसपास के समाज में सुनाने में समस्या आती थी। उनकी स्वतंत्रता पर अंकुश लगाना

जरूरी था ताकि प्रभावशाली रूप से सुसमाचार फैलाया जा सके।

मेरे आस-पास की परिस्थितियाँ पौलुस की परिस्थितियों के बिल्कुल विपरीत हैं। मेरे युग में यदि प्रशिक्षित स्त्री पर सुसमाचार सुनाने से रोक लगाई जाए अथवा कलीसिया में नेतृत्व से वंचित किया जाए तो सुसमाचार की बड़ी हानि हो सकती है। सार्वजनिक उपासना का मूल उद्देश्य क्या है? क्या इसका उद्देश्य सुसमाचार प्रचार और चेला बनाना नहीं है? क्या महिलाओं के नेतृत्व से परमेश्वर प्रसन्न हो सकता है और उसकी महिमा प्रकट हो सकती है? ऐसा जान पड़ता है कि सम्पूर्ण बाइबल इस प्रश्न का उत्तर "हाँ" में देती है।

मैं पौलुस के आगे झुक जाना चाहता हूँ; मेरी धर्म-शिक्षा (Theology) मुख्य रूप से पौलुस संबंधी है। मै वर्तमान नारी आन्दोलन से प्रभावित होना नहीं चाहता। तौ भी महसूस करता हूँ कि मसीही कलीसिया कुछ स्पष्ट बाइबल शिक्षाओं का प्रत्युत्तर देने में सुस्त व असफल रही है, जैसे दास प्रथा, जातिवाद, कट्टरतावाद और यौन-उत्पीड़न इत्यादि। साथ ही कलीसिया नारी उत्पीड़न की समस्या के उन्मूलन में भी सुस्त रही है। परमेश्वर ने मसीह में दासों और नारियों दोनों को स्वतन्त्र किया है। मैं नहीं चाहता कि सांस्कृतिक बन्धनों के पाठांश उन्हें फिर से बेड़ियों में जकड़े।

एक और बातः बाइबल का व्याख्याकार होने के नाते मैं जानता हूँ कि कुरन्थ की कलीसिया अनेक समस्याओं से घिरी हुई थी। वरदान प्राप्त लोगों की प्रशंसा की जाती थी और वे बड़े इतराते थे। संभव है स्त्रियाँ भी इसी जाल में फँस गई हों। मैं यह भी विश्वास करता हूं कि इफिसुस की कलीसिया झूठे शिक्षकों से प्रभावित हो गई थी, जो स्त्रियों को इफिसुस के घरों की कलीसियाओं में मुख्य वक्ता के रूप में आमंत्रित करके अनुचित लाभ उठाया करते थे।

C. विस्तृत जानकारी के लिए सुझाव :

(1) गौरडन फी तथा डौंग स्टुअर्ड की पुस्तक "हाउ टू रीड द बाइबल फॉर ऑल इट्स वर्थ" (*"How to Read the Bible for All Its Worth"*) (पेज न. 61-77)

(2) गौरडन फी की पुस्तक "गॉस्पल एण्ड स्पीरिट : इश्यूज़ इन न्यू टैस्टामैन्ट हार्मेन्यूटिक्स" (*"Gospel and Spirit : Issues in New Testament Hermeneutics"*)

(3) "हार्ड सेईंग्स ऑफ द बाइबल" (*"Hard Sayings of the Bible"* by Walter e. Kaiser, Peter H. Davids; F.F. Bruce and Manfred T. Branch) (Page 623-616; 665-667)

Copyright © 2014 Bible Lessons International

▪ **"भविष्यद्वाणी"** इस शब्द को समझने के कम से कम दो तरीकें हैं: (1) कुरिन्थियों की पत्री में यह शब्द सुसमाचार प्रचार करने की ओर संकेत करता है (देखें प्रेरि. 14:1; 2:17)। (2) प्रेरितों के काम की पुस्तक नबियों का उल्लेख करती है (जैसे प्रेरि. 12:27; 13:1; 15:32; 22:10; नबिया 21:9) जो भविष्य की भी बातें बताते हैं (देखें विशेष विषय प्रेरितों 11:27 में)।

इस शब्द में एक समस्या यह है कि किस प्रकार से नए नियम का भविष्यद्वाणी का वरदान पुराने नियम के नबियों से सम्बन्ध रखता है? पुराने नियम में भविष्यद्वक्ता पवित्रशास्त्र की पुस्तकों के लेखक हैं। नए नियम में यह कार्य मूल बारह प्रेरितों और उनके सहायकों को दे दिया गया है, क्योंकि शब्द "प्रेरित" एक निरन्तर चलने वाला वरदान है परन्तु बारह प्रेरितों की मृत्यु के बाद इसमें परिवर्तन हो गया और इसी तरह नबियों के कार्यों में भी परिवर्तन हुआ (देखें इफिसियों 4:11)। प्रेरणा प्राप्त करना समाप्त हो गया, आगे कोई प्रेरणा प्राप्त पवित्रशास्त्र नहीं रहा (यहूदा 3,20)। नए नियम के नबियों का मुख्य कार्य सुसमाचार प्रचार कार्य है, साथ ही अन्य भिन्न कार्य भी, जैसे नए नियम की सच्चाई को वर्तमान परिस्थितियों पर कैसे लागू किया जाए।

▪ **" जवान आदमी...बूढ़े लोग..."** ध्यान दीजिए यहां पर आयु-भेद नहीं है।

2:18 "वरन् अपने दास-दासियों पर भी" ध्यान दें कि यहां सामाजिक-आर्थिक पक्षपात नहीं है। पतरस ने शब्द "भविष्यद्वाणी" को योएल की भविष्यद्वाणी से जोड़ा। यह इब्रानी मैसोरेटिक मूलपाठ अथवा यूनानी सैप्तूजेन्त में नहीं है, परन्तु प्रेरि. 2:17 से पता चलता है।

जैसे लूका 24 (प्रेरि. 2:3,6,12,17,32,36,40,51) में अनेक पक्षों में भिन्नता है उसी प्रकार प्रेरितों के काम (अर्थात् 2:11,18,37,44) में भी भिन्नता है। ये भिन्नताएँ अक्सर हम एम एस डी में पाए जाने वाले (5वीं सदी बिज़ाए) पाठों से संबंधित हैं, और कुछ पुराने लैटिन अनुवादों (5वीं सदी के) से मिलती जुलती हैं। आमतौर पर इस पश्चिम के यूनानी मूलपाठों में वाक्यांश जोड़े गये हैं परन्तु लूका/प्रेरितों में ये पाठ छोटे हैं। अधिकांश इंगलिश अनुवादों में सिकन्दरिया के सारी हस्तलिपियाँ सम्मिलित हैं।
"प्रेरितों की भूमिका" देखें

2:19-20 यह प्रकाशनात्मक भाषा है, जो स्पष्ट है क्योंकि पतरस मानता है कि यह पूरी हो गई है, फिर भी इनमें से एक भी बात प्रकृति में घटित नहीं हुई, सिवाए अंधेरे के, जो उस समय हुआ जब यीशु क्रूस पर था। वहाँ पर अंधेरा सांकेतिक भाषा में बताता है कि सृष्टिकर्त्ता न्याय करने को उपस्थित होता है। पुराने नियम में परमेश्वर या तो आशीष देने या फिर दण्ड देने आता है। उसके आगमन पर सारी सृष्टि पीड़ा में तड़पने लगती है (देखें यशा. 13:6-8; आमोस 5:18-20)। पुराने नियम की भविष्यद्वाणियों में यीशु के प्रथम आगमन और दूसरे आगमन के बीच किसी भी प्रकार का स्पष्ट अन्तर नहीं दिखाई देता। यहूदी लोग केवल एक ही न्यायी व उद्धारकर्त्ता के सामर्थी आगमन की प्रतीक्षा करते थे। प्रकाशनात्मक भाषा के विषय में एक लाभदायक पुस्तक डी. ब्रेन्ट सैन्डी द्वारा लिखी गई है जिसका नाम है: (D. Brent Sandy, *Plowshares and Pruning Hooks: Rethinking Prophetic and Apocalyptic Language*.)

विशेष शीर्षक : सर्वनाश संबंधी साहित्य

प्रकाशितवाक्य नामक पुस्तक एकमात्र ऐसी यहूदी पुस्तक है जो प्रकाशनात्मक शैली में है। यह अक्सर तनावपूर्ण स्थिति में अपने विश्वास को दर्शाने के लिये उपयोग में लाई जाती थी कि परमेश्वर इतिहास पर प्रभुता रखता है, और वह अपने लोगों को छुडा्एगा। इस साहित्य की विशेषताएँ :

1. परमेश्वर सार्वभौमिक सत्ता पर अटल विश्वास (एकेश्वर वाद तथा नियतिवाद)
2. अच्छाई व बुराई के तथा इस युग और आने वाले युग के बीच संघर्ष (द्वैतवाद)
3. सांकेतिक शब्दों का इस्तेमाल (आमतौर पर पुराने नियम में या नए नियम से पहले के युग में)
4. रंगों, गिनतियों, पशुओं कभी-कभी मानव-पशु का उपयोग।
5. दर्शनों और स्वप्नों के माध्यम से स्वर्गदूतों की मध्यस्थता का उपयोग, परन्तु आमतौर पर स्वर्गदूतों द्वारा मध्यस्थता का उपयोग।
6. मुख्य रूप से अंतिम समय पर बल (नए युग पर)
7. चुने हुए व निर्धारित प्रतीकों का उपयोग, जो वास्तविक नहीं होते, ताकि अंतिम दिनों का संदेश पहुंचाया जा सके।
8. इस प्रकार की शैली के कुछ उदाहरण :
   a. पुराना नियम :
      (1) यशायाह 24-27, 56-66 अध्याय
      (2) यहेजकेल 37-48 अध्याय
      (3) दानिय्येल 7-12 अध्याय
      (4) योएल 2:28 से 3:21
      (5) जकर्याह 1-6, 12-14 अध्याय
   b. नया नियम :
      (1) मत्ती 24; मरकुस 13; लूका 21, तथा 1 कुरिन्थियों 15 अध्याय
      (2) 2थिस्सलुनीकियों 2 अध्याय

(3) प्रकाशितवाक्य 4-22 अध्याय

c. कानोन से बाहर की पुस्तकें (Non-Canonical) : डी.एस. रसल की पुस्तक "द मैथड एण्ड मैसेज ऑफ ज्यूज़ अपोक्लिप्टिक", पेज 37-38 से लिया है। (D. S. Russell "The Method And Message of Jewish Apocalyptic")

(1) I हनोक, II हनोक (हनोक के रहस्य)
(2) जुबली की पुस्तक
(3) सिबलिन की भविष्यवाणियाँ III, IV, V
(4) बारह पूर्वजों के नियम
(5) सुलैमान के भजनसंहिता
(6) मूसा की पूर्वधारणा
(7) यशायाह का शहीद होना
(8) मूसा का प्रकाशन (आदम और हव्वा का जीवन)
(9) अब्राहम का प्रकाशन
(10) अब्राहम के वाचा
(11) II एस्द्रास IV एस्द्रास
(12) बारूक II, III

9. इस प्रकार की शैली में द्वैतवाद दिखाई देता है। इसमें वास्तविकता को द्वैतवाद की श्रंखला के रूप में निम्न बातों के मध्य अन्तर अथवा तनाव देखा जाता है (जो यूहन्ना के लेखों में सामान्य है)
   b. स्वर्ग-पृथ्वी
   c. बुरा युग (दुष्ट मनुष्य और दुष्ट स्वर्गदूत) - नया युग धार्मिकता का (भले मनुष्य और भले स्वर्गदूत)
   d. वर्तमान अस्तित्व - भविष्यकालीन अस्तित्व

यह सब उस सिद्धता की ओर बढ़ रहे हैं जो परमेश्वर द्वारा आएगी। यह संसार उस प्रकार का नहीं है जैसा परमेश्वर चाहता था, वह उस घनिष्ठ सहभागिता को जो अदन की वाटिका में आरम्भ हुई थी फिर से बहाल करने में अपनी इच्छा को प्रकट करता रहता है। मसीह उसकी योजना का माध्यम है, परन्तु उसके दो आगमनों द्वारा वर्तमान द्वैतवाद आया।

Copyright © 2014 Bible Lessons International

2:20 "प्रभु के महान् और तेजस्वी दिन के आने से पहले" शब्द महान् एपीफेनिया शब्द से निकला है जो अक्सर यीशु के दूसरे आगमन के संबंध में प्रयुक्त किया जाता है (देखें 1 तीमु. 6:14; 2 तीमु. 4:1; तीतुस 2:13)। देखें विशेष विषय:

विशेष विषय : दूसरा आगमन

ऐसे कुछ शब्द और वाक्यांश पाए जाते हैं जो यीशु मसीह के इस संसार में दुबारा आने की ओर इशारा करते हैं, जैसे :

1. "परौसिया" (Parousia) : (अर्थात याकूब 5:7), जिसका अर्थ है "उपस्थिति", यह शब्द प्रभु के प्रतापी व तेजस्वी रूप में आने के लिए प्रयुक्त किया जाता है (देखें मत्ती 24:3, 27,37,39; 1कुरि. 15:23; 1 थिस्स. 2:19; 3:13; 4:15; 5:23; 2 थिस्स. 2:1, 8; 2 पत. 1:16; 3:4,12; 1 यूह. 2:28)।
2. "एप्पिफेनियां" (Apipheneia), "आमने-सामने प्रकट होना" (1 तीमु. 6:14; 2 तीम. 1:10; 4:1,8; तीतुस 2:13)।
3. "अपोक्लप्सिस" (Apokalupis), "प्रकट होना" अथवा "परदा हटाना" (1 कुरि. 1:7; 2 थिस्स. 1:7; 1 पत. 1:5,13; 4:13; 5:1)
4. "प्रभु का दिन" (The Day of the Lord) और इस वाक्यांश की विभिन्नताएँ (देखें विशेष विषय : प्रभु

का दिन (The Day of the Lord)
संपूर्ण नया नियम, पुराने नियम के विश्वदर्शन की पृष्ठभूमि में लिखा गया था जिसमें कहा गया कि :

(1) वर्तमान युग बुरा और विद्रोही है।
(2) आने वाला युग धार्मिकता का नया युग होगा।
(3) वह युग मसीह के कार्य और पवित्र आत्मा के द्वारा आएगा (देखें : विशेष विषय : मसीह)

यहां पर धर्म वैज्ञानिक पूर्वधारण (Theological Assumption) "प्रगतिशील प्रकाशन" (Progressive Revelation) की आवश्यकता है, क्योंकि नए नियम के लेखकों ने मसीह के आगमन संबंधी इस्राएल की आशा में ज़रा सा सुधार कर दिया है। इस्राएल के राष्ट्रवादी मसीह के आगमन के स्थान पर, मसीह के दो आगमन हैं। पहला आगमन उस समय हुआ जब परमेश्वर ने यीशु के नासरत में जन्म लेने पर देहधारण किया। वह बिना सैन्य शक्ति के, यशायाह 53 के "दुखी दास" के रूप में ; और साथ की ही जकर्याह 9:9 के अनुसार नम्र और दीन मनुष्य के रूप में गधे के बच्चे पर सवार होकर आया, न कि राजा समान घोड़े पर बैठकर आया। इस पहले आगमन ने नए मसीह युग का अर्थात पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य का शुभारम्भ किया (देखें, विशेष विषय : परमेश्वर का राज्य)। एक प्रकार से राज्य उपस्थित है, परंतु निस्सन्देह दूसरे अर्थों में यह राज्य अभी दूर है। मसीह के आगमन संबंधी इसी तनाव ने, एक प्रकार से अदृश्य दो यहूदी युगों को आपस में मिला दिया है, अथवा पुराने नियम से यह अस्पष्ट है (देखें, विशेष विषय : यह युग तथा आने वाला युग)। सही मायनों में यह दो आगमन सम्पूर्ण मानव जाति का उद्धार करने की यहोवा (YHWH) की प्रतिज्ञा पर बल देते हैं (देखें, उत्प. 3:15; 12:3; निर्ग. 19:5 तथा नबियों का प्रचार विशेषकर यशायाह और योना का प्रचार ; देखें विशेष विषय : यहोवा (YHWH) की उद्धार संबंधी अनन्त योजना)।

कलीसिया पुराने नियम की भविष्यवाणियों की पूर्ति होने का इंतजार नहीं कर रही, क्योंकि अधिकांश भविष्यवाणियाँ प्रथम आगमन की ओर संकेत करती हैं (देखें, How to Read the Bible For All Its Worth, Page 165-166)। विश्वासी लोग जिस बात की प्रतीक्षा कर रहे हैं, वह है जीवित राजाओं के राजा और प्रभुओं के प्रभु के महिमा के साथ आगमन की, जो धार्मिकता के नये युग की इस पृथ्वी पर स्थापना की ऐतिहासिक परिपूर्ति है (देखें मत् 6:10)। पुराने नियम में जो कुछ प्रस्तुत किया गया वह गलत नहीं है, परंतु वह अस्पष्ट है। प्रभु दुबारा अवश्य आएगा जैसा की नबियों ने भविष्यवाणी की है ; वह यहोवा (YHWH) की सामर्थ और अधिकार सहित आएगा (देखें विशेष विषय : पुराने नियम की प्रतिज्ञाएँ, नए नियम के प्रतिज्ञाओं से क्यों भिन्न प्रतीत होती हैं?)
यीशु का द्वितीय आगमन बाइबल का शब्द नहीं है, बल्कि संपूर्ण नए नियम के विश्वव्यापी अवधारणा है तथा इसकी रूपरेखा है। परमेश्वर ही सब बातों को सीधा बनाएगा। परमेश्वर और मानवजाति की जो परमेश्वर के स्वरूप और समानता में रची गई है, परस्पर सहभागिता फिर बहाल होगी (देखें प्रका. 21-22)। दुष्ट शैतान का न्याय किया जाएगा और वह मिटा दिया जाएगा (देखें प्रका. 20:11-15)। परमेश्वर की योजनाएँ कभी व्यर्थ ना होंगी।

Copyright © 2014 Bible Lessons International

2:21 "हर कोई" यहां पर फिर से समस्त संसार की बात कही गई है (देखें प्रेरितों 2:17, 39)। यीशु समस्त संसार के लिए मरा (देखें यूहन्ना 1:12; 3:16; 4:42; 1 तीमु. 2:4; तीतुस 2:11, 2 पत. 3:9; 1 यूह. 2:1; 4:14)। ध्यान दीजिए कि पवित्र आत्मा संपूर्ण मानवजाति पर उंडेला जाता है (देखें प्रेरितों 2:17)।

▪ **"प्रभु का नाम लेगा"** यह अनन्त काल तक की बात है। परमेश्वर के उद्धार की योजना में मनुष्यों का प्रत्युत्तर आवश्यक भाग है (देखें योएल 2:32; यूहना 1:12; 3:16 तथा रोमियों 10:9-13)। मनुष्य व्यक्तिगत रूप से बुलाए जाते हैं (देखें प्रेरितों 2:39) कि वे पश्चात्ताप करें (देखें प्रेरितों 2:38) और सुसमाचार पर विश्वास करें और मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत संबंध स्थापित करें (देखें प्रेरितों 3:16,19; 20:21; मरकुस 1:15)। यीशु ने सारे संसार के लिए अपना प्राण दिया; यह रहस्य की बात है कि कुछ ही लोग क्यों पवित्र आत्मा के निवेदन का उत्तर देते हैं (देखें यूहन्ना 6:44, 65) और कुछ लोग कोई प्रत्युत्तर नहीं देते (देखें 2 कुरि. 4:4)।

▪ **"जो नाम लेगा"** यह वाक्य यीशु के व्यक्तित्व की ओर तथा उसके विषय में उसकी शिक्षाओं की ओर संकेत करता है। इसमें व्यक्तिगत और सैद्धान्तिक दोनों बातें शामिल हैं।

विशेष शीर्षक : प्रभु का नाम

यह कलीसिया में त्रिएक परमेश्वर की व्यक्तिगत उपस्थिति और उसकी सामर्थ्य पूर्ण क्रियाशीलता को दर्शाने वाला नए नियम का एक सामान्य शब्द है। यह कोई जादुई शब्द नहीं है बल्कि परमेश्वरत्व से जो यीशु में दिखाई देता है, एक निवेदन है।
अक्सर यह वाक्यांश यीशु की ओर संकेत करता है कि वह प्रभु है (फिलि. 2:11)

1. यीशु में अपने विश्वास को इसके द्वारा प्रकट किया जाता है (देखें, रोमि. 10:9-13; प्रेरि. 2:21,38; 8:12,16; 10:48; 19:5; 22:16; 1 कुरि. 1:13,15; याकूब 2:7)
2. दुष्टात्मा निकालते समय "प्रभु" शब्द का उपयोग (मत्ती 7:22; मर. 9:38; लूका. 9:49; 10:17; प्रेरि. 19:13)
3. चंगाई देते समय उपयोग (देखें, प्रेरि. 3:6,16; 4:10; 9:34; याकूब 5:14)।
4. सेवकाई के कार्य में (देखें, मत्ती 10:42; 18:5; लूका 9:48)
5. कलीसियाई अनुशासन में (देखें, मत्ती 18:15-20)
6. अन्यजातियों को प्रचार करते समय, (देखें, लूका 24:47; प्रेरि. 9:15; 15:17; रोमि. 1:5)
7. प्रार्थना में (यूह. 14:13-14; 15:7,16; 16:23; 1 कुरि. 1:2)
8. मसीह धर्म को दर्शाने का तरीका (प्रेरि. 26:9; 1 कुरि. 1:10; 2 तीम. 2:19; याकूब 2:7; 1 पत. 4:14)। जो कुछ भी हम करते हैं, प्रभु की सामर्थ्य, उसकी दया और सहायता और उसके नाम से करते हैं जैसे प्रचार करना, सेवा करना, चंगा करना, दुष्टात्मा निकालना इत्यादि (देखें, फिलि. 2:9-10)।

Copyright © 2014 Bible Lessons International

▪ **"उद्धार पाएगा"** यहाँ पर इस वाक्य का अर्थ आत्मिक उद्धार है, जबकि योएल की भविष्यद्वाणी में संभवतः इसका अर्थ परमेश्वर के क्रोध से भौतिक छुटकारा है (देखें प्रेरि. 2:40)। पुराने नियम में उद्धार या छुटकारे का अर्थ भौतिक रूप से छुटकारा है (देखें मत्ती 9:22; मरकुस 6:56; याकूब 5:14,20)। फिर भी नए नियम में लाक्षणिक रूप से इस शब्द का प्रयोग आत्मिक छुटकारा व उद्धार हुआ है अर्थात् परमेश्वर के प्रकोप से छुटकारा (उद्धारणार्थ याकूब 1:21; 2:21; 2:14; 4:12)। परमेश्वर चाहता है सब स्त्री-पुरुष उद्धार पाएं जो उसके स्वरूप पर बनाए गए हैं (देखें उत्पत्ति 1:26-27); ताकि परमेश्वर की संगति में रहें।
▪

NASB (नवीनतम) पाठ प्रेरितों: 2:22-28
**22"हे इस्राएलियो, ये बातें सुनोः यीशु नासरी एक मनुष्य था जिसका परमेश्वर की ओर से होने का प्रमाण उन सामथ्र्य के कामों और आश्चर्य के कामों और चिन्हों से प्रगट है, जो परमेश्वर ने तुम्हारे बीच उसके द्वारा कर दिखाए जिसे तुम आप ही जानते हो।
23उसी यीशु को, जो परमेश्वर की ठहराई हुई योजना और पूर्वज्ञान के अनुसार पकड़वाया गया, तुम ने अधर्मियों के हाथ से क्रूस पर चढ़वाकर मार डाला।
24परन्तु उसी को परमेश्वर ने मृत्यु के बन्धनों से छुड़ाकर जिलाया; क्योंकि यह अनहोना था कि वह उसके वश में रहता।
25क्योंकि दाऊद उसके विषय में कहता है, "मैं प्रभु को सर्वदा अपने सामने देखता रहा क्योंकि वह मेरी दाहिनी ओर है, ताकि मैं डिग न जाऊँ।
26इसी कारण मेरा मन आनन्दित हुआ, और मेरी जीभ मगन हुई; वरन् मेरा शरीर भी आशा में बना रहेगा।
27क्योंकि तू मेरे प्राणों को अधोलोक में न छोड़ेगा; और न अपने पवित्र जन को सड़ने ही देगा।
28तू ने मुझे जीवन का मार्ग बताया है; तू मुझे अपने दर्शन के द्वारा आनन्द से भर देगा।'**

2:22 "इस्राए के आदमियों " ये सुनने वाले लोग यीशु की पार्थिव सेवकाई के अन्तिम सप्ताह की घटनाओं के चश्मदीद गवाह थे। पतरस जो बातें उन्हें बता रहा था, उसकी प्रथम जानकारी उन्हें प्राप्त हुई। जिन लोगों में आत्मिक अन्तर्दृष्टि थी उन्होंने सुसमाचार का प्रत्युत्तर दिया; पहला उपदेश सुनने वाले ये लोग लगभग तीन हज़ार थे (देखें प्रेरितों 2:41)।

▪ **"सुनो"** यह भूतकालिन क्रिया सूचक शब्द हैं। पवित्र आत्मा के भौतिक प्रकटीकरण ने उनका ध्यान आकर्षित किया, फिर उन्हें सुसमाचार सन्देश सुनाया गया।

▪ **"यीशु नासरी"** अक्सर समझा जाता है कि यह वाक्यांश "नासरत के यीशु" के समान है। परन्तु ऐसा नहीं है, बल्कि व्यक्त करने का असाधारण तरीका है। यह संभव है कि यह कथन मसीह संबंधी पदवी अर्थात् "यहोवा (YHWH) की डाली" को दर्शाता है (बी डी बी 666, देखें यशा. 4:2; 6:13; 11:1,10; 14:19; 53:2; यिर्म. 23:5; 33:15-16; जक. 3:8; 6:12-13)। "डाली" का इब्रानी शब्द नेज़ेर है।

विशेष शीर्षक : यीशु नासरी

नया नियम यीशु के बारे में बहुत से यूनानी शब्दों का प्रयोग करता है :

A. नए नियम की शब्दावली :
1. नासरत निवासी - गलील का एक नगर (देखें, लूका 1:26; 2:4,39,51; 4:16; प्रेरि.10:38)।समकालीन स्रोतों में इस नगर का उल्लेख नहीं पाया जाता है परंतु बाद के लेखों में इसका वर्णन पाया गया है। यीशु का सम्बन्ध नासरत से हो, यह अच्छी बात नहीं समझी जाती थी (देखें, यूहन्ना 1:46)। यीशु के क्रूस पर यह नाम लिखा जाना, उनकी घृणा का प्रतीक है।
2. नज़रेनॉस (Nazarenos) - यह भौगोलिक स्थान प्रतीत होता है (देखें, लूका 4:34; 24:19)।
3. नाज़ेरेऑस (Nazaraios) - यह किसी नगर की ओर संकेत कर सकता है, परंतु इब्रानी का मसीह -संबंधी शब्द "शाखा" (Branch) भी हो सकता है (Netzer) (BDB 666, KB 718 II, देखें यशा. 11:1; इसके समानार्थी शब्द, BDB 855, यिर्म. 23:5; 33:15; जक. 3:8; 6:12; प्रका. 22:16)। लूका ने 18:37 और प्रेरि. 2:22; 3:6; 4:10; 6:14; 22:8; 24:5; 26:9 में यह शब्द यीशु के लिए प्रयुक्त किया है।
4. #3 से संबंधित शब्द नाज़िर (Nazir) (BDB 634, KB 684) जिसका अर्थ है "मन्नत मानने के द्वारा समर्पित।"

B. नए नियम के बाहर इस शब्द का ऐतिहासिक प्रयोग :
(1) यह शब्द यहूदी भ्रान्त शिक्षा के समूह नासोरया (Nasorayya) का प्रतीक था
(2) यहूदियों में यह शब्द नासरी, मसीही विश्वासीयों के लिए प्रयुक्त किया जाता था (देखें, प्रेरि. 24:5,14; 28:22 नोसरी (Nosri)।
(3) सीरियाई कलीसियाओं में मसीही विश्वासियों के लिए यह शब्द प्रयुक्त करना सामान्य बात हो गई। यूनानी कलीसियाओ में "मसीही" (Christian) शब्द विश्वासियों के लिए प्रयुक्त होता था।
(4) यरूशलेम के पतन के बाद फरीसियों ने मसीही कलीसिया और आराधनालय के बीच विभाजन कर दिया। विश्वासियों के विरुद्ध एक शाप देने वाला फार्मूला पाया गया है जिसमें विश्वासियो को "नासरी" कहा गया और 18वें आशीष वचन में कहा गया, "पल भर में विघर्मी नासरी लोप हो जाएँ; उनका नाम जीवन की पुस्तक से मिटा दिया जाए, विश्वासयोग्य लोगों के साथ उनका नाम न लिखा जाए।"
(5) नासरी शब्द का उपयोग जस्टिन मार्टर द्वारा डियाल 126:1 में किया गया, उसने यशायाह के शब्द नेटज़र (Netzer) (यशा. 11:1) का उपयोग यीशु के लिए किया।

C. लेखक का मत :

मुझे आश्चर्य है कि नासरी शब्द के बहुत से उच्चारण पाए जाते हैं जैसा कि पुराने नियम में यहोशू शब्द

की बहुत सी इब्रानी स्पैलिंग (Spelling) हैं। निम्नलिखित बातों के आधार मैं नहीं जानता कि इस शब्द का वास्तविक अर्थ क्या है :

1. इसका मसीह संबंधी शब्द "शाखा" (Branch) से नेटज़र (Netzer) करीब का रिश्ता है, अथवा नाज़ीर शब्द से करीब का रिश्ता है (जिसका अर्थ है मन्नत द्वारा समर्पित जन)
2. अन्यजातियों के क्षेत्र गलील के बारे में नकारात्मक अर्थ देने वाला शब्द है।
3. गलील में नासरत नगर होने का समकालीन प्रमाण नहीं मिलता।
4. यह शब्द दुष्टात्मा के मुंह से निकला ("क्या तू हमें नष्ट करने आया है")

इस शब्द की संपूर्ण जानकारी के लिए देखें, कॉलिन ब्राऊन की पुस्तक "न्यू इन्टरनैशनल डिक्शनरी ऑफ न्यू टैस्टामैंट थियोलॉजी (New International Dictionary of New Testament Theology, vol. 2, page 346) तथा रेमन्ड ई. ब्राऊन की पुस्तक "बर्थ ऑफ द मसायाह (Birth of the Messiah, pp. 209-213, 223-225)।

Copyright © 2014 Bible Lessons International

▪ **"एक आदमी तुम्हारे लिए परमेश्वर की ओर से प्रमाणित"** निस्सन्देह यीशु मनुष्य था (प्रेरितों 2:23; रोमियों 1:3) परन्तु साथ ही दिव्य भी था (देखें, 1 यूहन्ना 4:1-3)।
यीशु को परमेश्वर की ओर से होना प्रमाणित किया गया। परमेश्वर ने यीशु के वचनों, कार्यों और जीवन शैली में स्वयं को बार बार और स्पष्ट रूप से प्रकाशित किया। यरूशलेम के इन श्रोताओं ने उसे देखा था और उसे सुना था।

▪ **"सामथ्र्य के कामों और आश्चर्य के कामों के साथ"** ये श्रोतागण यरूशलेम में यीशु द्वारा किये गए उसके जीवन के अंतिम सप्ताह के कार्यों के चश्मदीद गवाह थे।

आश्चर्य के कामों और चिन्हों का ; (*teras*) अर्थ वे कार्य हैं जो सामान्यतः आकाश में प्रकट होते हैं जैसे कि प्रेरितों के काम 2:19-20 में दिया गया है। शब्द "चिन्ह" (*sēmeion*) किसी विशेष महत्व की बात को दर्शाते हैं। यह यूहन्ना रचित सुसमाचार का कुन्जी शब्द है (सात विशेष चिन्ह, देखें प्रेरिरितों 2:1-11; 4:46-54; 5:1-18; 6:1-15,16-21; 9:1-41; 11:1-57)। चिन्हों को सदैव सकारात्मक रूप से नहीं देखा गया (देखें, यूहन्ना 2:18; 4:48; 6:2)। यहाँ पर इसका प्रयोग सामर्थ की एक श्रृंखला प्रकट करने के लिए किया गया, जिससे प्रकट होता है कि अब पवित्र आत्मा का नया युग आरम्भ हो गया है।

यह बड़ी रोचक बात है कि पतरस यीशु के जीवन के विषय में और उसकी शिक्षाओं को बताने में समय खर्च नहीं करता। पुराने नियम की भविष्यद्वाणी की पूर्ति, यीशु की पूर्व निर्धारित क्रूस मृत्यु और महिमा के साथ उसके पुनरुत्थान में होती है।

2:23 "इस *मनुष्य*" यह उस समय का एक मुहावरा हो सकता है (देखें, प्रेरि. 5:28; 6:13; लूका 23:14; यूहन्ना 9:16; 18:29)। परन्तु प्रेरितों 23:9 और 20:31-32 में यह नकारात्मक मुहावरा नहीं है। यहाँ फिर से यीशु के मनुष्यत्व पर बल दिया गया है (देखें, प्रेरि. 2:22)।
▪ **"पकड़वाया गया"** नए नियम में यह शब्द ; (*ekdotos*) केवल यहीं पाया जाता है।

NASB	**"पूर्व निर्धारित योजना"**
NKJV	**"दृढ़ परामर्श"**
NRSV	**"पक्की योजना"**
TEV	**"स्वयं परमेश्वर की योजना"**
NJB	**"जाना बूझा इरादा"**

यहाँ यूनानी शब्द *horizō* प्रयुक्त हुआ है जिसका अर्थ है किसी कार्य को करने का संकल्प कर लेना अथवा तय कर लेना। पुराने नियम में सीमाएँ निर्धारित करने में इस शब्द का प्रयोग हुआ। लूका अक्सर इस शब्द का प्रयोग करता है (देखें लूका 22:22; प्रेरितों 2:23; 10:42; 11:29; 17:26,31)। क्रूस परमेश्वर के लिए अनोखी बात

नहीं है, परन्तु यह उसकी पसन्द की प्रक्रिया रही है (अर्थात् लैव्य. की बलिदान विधियाँ 1-7) ताकि विद्रोही मानवजाति उद्धार पा सके (उत्पत्ति 3:15; यशायाह 53:10; मरकुस 10:45; 2 कुरि. 5:21)।

यीशु की मृत्यु आकस्मिक मृत्यु नहीं थी। यह परमेश्वर की अनन्त उद्धार की योजना थी (देखें लूका 22:22; प्रेरि. 3:18; 4:28; 13:29; 26:22-23)। यीशु मरने के लिए ही आया था (देखें मरकुस 10:45)। अतः क्रूस आकस्मिक घटना नहीं थी।

▪ **"परमेश्वर की योजना का पूर्वज्ञान"** यहाँ यूनानी शब्द *prognosis* (पूर्वज्ञान) प्रयुक्त हुआ है, जो केवल यहाँ तथा 1 पतरस 1:2 में प्रयुक्त किया गया है। इस धारणा का कि परमेश्वर मानवीय इतिहास की सब बातें जानता है, मानव की स्वतन्त्र इच्छा से मिलाना हमारे लिए कठिन है। परमेश्वर एक अनन्त आत्मिक तत्व है जिसे अस्थाई क्रम में नहीं बांधा जा सकता है, हालांकि वह इतिहास पर नियन्त्रण रखता है और उसे आकार देता है, मनुष्य स्वयं अपने इरादों और कार्यों के लिए उत्तरदायी हैं। पूर्वज्ञान का प्रभाव परमेश्वर के प्रेम और उसकी चुनने की प्रक्रिया पर नहीं पड़ता। यदि ऐसा होता तो यह शर्तों के साथ होता और मनुष्यों की योग्यता और कार्यों पर आधारित होता। परमेश्वर सर्वोच्च है, उसे अच्छा लगा कि उसकी 90 वाचा का पालन करने वाले लोगों को उसके प्रति प्रत्युत्तर देने में चुनाव करने की स्वतन्त्रता मिले (देखें, रोमियों 8:29; 1 पतरस 1:20)

धर्म विज्ञान के इस क्षेत्र में दो चरम सीमाएँ पाई जाती हैं: (1) स्वतन्त्रता दूर करनाः कुछ लोग कहते हैं कि परमेश्वर मनुष्य के कार्यों और भविष्य के उसके चुनावों के बारे में नहीं जानता (यह खुला ईश्वरवाद कहलाता है और दर्शनशास्त्र से संबंध रखता है) तथा (2) प्रभुसत्ता दूर करना; इसमें परमेश्वर कुछ लोगों को स्वर्ग के लिए और कुछ को नरक के लिए चुन लेता है (दोधारी काल्विनवाद)। मैं भजन संहिता 139 पसन्द करता हूँ।

▪ **"तुम "** पतरस यरूशलेम के इन सब सुनने वाले लोगों को यीशु की मृत्यु का जिम्मेदार ठहराता है (देखें, प्रेरितों 3:13-15; 4:10; 5:30; 10:39; 13:27-28)। वे तो उस भीड़ का हिस्सा नहीं थे जिसने यीशु को क्रूस पर चढ़ाया था; वे तो सन्हेद्रिन के सदस्य नहीं थे जो यीशु को पिलातुस के पास लाए थे; वे रोमी अधिकारियों में से नहीं थे अथवा रोमी सिपाही भी नहीं थे जिन्होंने यीशु को क्रूस पर चढ़ाया था, परन्तु तो भी जैसे हम यीशु की मृत्यु के जिम्मेदार हैं वैसे ही वे भी थे। मानवीय पापों और विद्रोही स्वभाव ने उसे क्रूस पर चढ़ाकर मार डाला।

▪ **"क्रूस पर पर ठोकना"** यहाँ यूनानी शब्द (*prospēgnumi*) आया है, जिसका अर्थ है बाँधना या जकड़ देना है। यह शब्द नए नियम में केवल यहीं पर प्रयुक्त हुआ है। इसके दोनों अर्थ हो सकते हैं, क्रूस पर कीलों से जकड़ देना और क्रूस पर बाँध देना। प्रेरितों 5:30 में इसी प्रक्रिया का उल्लेख करते हुए बताया गया है जैसे "वृक्ष पर लटका दिया गया हो।" यहूदी अगुवे नहीं चाहते थे कि जिस तरह स्तिफनुस निन्दा करने आरोप में पत्थरवाह किया गया, यीशु भी पत्थरवाह किया जाए (देखें, प्रेरितों 7), परन्तु वे उसे क्रूस पर चढ़ाना चाहते थे। इसका सम्बन्ध संभवतः व्यवस्थाविवरण 21:23 के श्राप से था। मूल रूप से इस श्राप का सम्बन्ध सार्वजनिक रूप से क्रूस पर चढ़ाने और गलत प्रकार से दफन करने से है लू और निदा का कहना है कि यह हैपैक्स लेगमैन स्टॉरो के बराबर हो सकता है,सूली देना, [पृ। 237 फुटनोट 9]) (Louw and Nida say this hapax legomenon may be equivalent to stauroō,crucify, [p. 237 footnote 9]). परन्तु यीशु के समय के रब्बियों ने इसे क्रूस पर चढ़ाए जाने से जोड़ दिया। यीशु ने पुराने नियम की व्यवस्था का श्राप सब विश्वासियों के लिए सहा (देखें, गला. 3:13; कुलु. 2:14)।

▪ **"अधर्मियों"** शाब्दिक रूप से अधर्मी वह होता है जो नियमों को नहीं मानता, परन्तु यह शब्द यहाँ रोमी लोगों की ओर इशारा करता है।

2:24 "परमेश्वर ने उन्हें उठाया " नया नियम दृढ़तापूर्वक मानता है कि यीशु के पुनरुत्थान में त्रिएकत्व के तीनों व्यक्ति क्रियाशील थे:

1. पवित्र आत्मा (देखें, रोमियों 8:11)
2. पुत्र (देखें, यूहना 2:19-22; 10:17-18)

3. तथा निरन्तर परमेश्वर पिता (देखें, प्रेरि. 2:24, 32; 3:15,26; 4:10; 5:30; 10:40; 13:30,33,34,37;17:31; रोमियों 6:4,9)

परमेश्वर पिता के कार्यों में, यीशु के जीवन, मृत्यु और उसकी शिक्षाओं की पुष्टि और ग्रहण किया जाना शामिल था। प्रेरितों की प्रचार सेवा में यही बातें मुख्य स्थान रखती थीं। देखें विशेष शीर्षक: प्रेरितों 2:14 में, *The kerygama.*

▪ **"मौत की पीड़ा को खत्म करना"** इस वाक्य का यह अर्थ हो सकता है (1) जन्म के समय के दर्द (उच्चकोटि की यूनानी भाषा में, देखें रोमियों 8:22) तथा (2) दृष्टान्त रूप में दूसरे आगमन से पूर्व की समस्याएँ (देखें, मत्ती 24:8; मरकुस 13:8; 1 थिस्स.5:3)। संभवतः यह "जाल" या "फन्दों" को दर्शाता है जैसा कि हम भजन संहिता 18:4-5 तथा 116:3 में देखते हैं जो पुराने नियम में दण्ड के रूपक हैं (देखें यशायाह 13:6-8; यिर्मयाह 4:31)।

▪ **"चूँकि उसकी शक्ति में रहना उसके लिए असंभव था"** यूहन्ना 20:9 भी यीशु के पुनरुत्थान को पुराने नियम की भविष्यद्वाणी से जोड़ता है (देखें, प्रेरि. 2:25-28)। यीशु किसी उद्देश्य से ही अधोलोक में गया (देखें, 1 पतरस 3:19; 4:6)। जब उसने अधोलोक छोड़ा तो अपने साथ धर्मी विश्वासियों को भी ले गया (देखें, 2 कुरिन्थियों 5:6,8)।

2:25 "दाऊद उसके बारे में कहता है" यह वाक्यांश भजन संहिता 16:18-11 से लिया गया उद्धरण है। पतरस मानता है कि भजन 16 मसीह-संबंधी भजन है (जैसाकि पौलुस भी प्रेरितों 13:36 में स्वीकार करता है; नए नियम में भजन 16 से यही दो उद्धरण हैं) और ये सीधे यीशु की ओर इशारा करते हैं। यीशु का पुनरुत्थान भजनकार की आशा और नए नियम में विश्वासियों की आशा है।

2:26 "आशा" में बना रहेगा" यह वाक्यांश सुसमाचारों में प्रयोग नहीं किया गया, परन्तु इस पुस्तक में सुसमाचार की प्रतिज्ञाओं की भविष्य में परिपूर्ति होने के संबंध में विश्वासियों के विश्वास को व्यक्त करने के लिए किया गया (देखें, प्रेरि. 23:6; 24:15; 26:6-7; 28:20)। पौलुस के लेखों में अक्सर इसका प्रयोग हुआ, परन्तु कुछ हद तक परमेश्वर की अनन्त उद्धार योजना से जुड़ा है। देखें विशेष शीर्षक:

विशेष शीर्षक: आशा

पौलुस ने अक्सर इस शब्द का उपयोग भिन्न-भिन्न रूपों में किया है परन्तु सम्बन्ध दिखाने वाले अर्थों में किया है। यह विश्वासी के विश्वास का परिपूर्णता से जुड़ा शब्द है (उदाहरणार्थ 1 तीमु. 1:1)। इसे महिमा, अनन्त जीवन, अंतिम उद्धार, द्वितीय आगमन आदि के रूप में भी व्यक्त किया जा सकता है। परिपूर्णता तो निश्चित है, परन्तु यह भविष्य की बात है और अज्ञात है। आशा अक्सर "विश्वास" और "प्रेम" से जुड़ी बात है (देखें, 1 कुरि. 13:13; 1 थिस्स. 1:3; 2 थिस्स. 2:16)। पौलुस द्वारा प्रयुक्त संदर्भों की संक्षिप्त सूची इस प्रकार है :

1. दूसरा आगमन, गला. 5:5; इफि. 1:18; 4:4; तीतुस 2:13
2. यीशु हमारी आशा, 1 तीम. 1:1 (परमेश्वर हमारी आशा, 1 तीम. 5:5; 1 पत. 3:5)
3. विश्वासी परमेश्वर के समक्ष उपस्थित होंगे, कुलु.1:22-23; 1 थिस्स. 2:19
4. आशा स्वर्ग में रखी हुई है, कुलु. 1:5
5. सुसमाचार में भरोसा, कुलु. 1:23; 1 थिस्स. 2:19
6. अंतिम उद्धार, कुलु. 1:5; 1 थिस्स. 4:13; 5:8
7. परमेश्वर की महिमा की आशा, रोमि. 5:2, 2 कुरि. 3:12; कुलु. 1:27
8. मसीह द्वारा अन्य जातियों का उद्धार, कुलु. 1:27
9. उद्धार का निश्चय, 1 थिस्स. 5:8
10. अनन्त जीवन, तीतुस 1:2; 3:7
11. मसीही परिपक्वता के परिणाम, रोमि. 5:2-5
12. संपूर्ण सृष्टि का छुटकारा, रोमि. 8:20-22
13. लेपालक पुत्र होने की परिपूर्णता, रोमि. 8:23-25

14. परमेश्वर का नाम (आशा का परमेश्वर) रोमि. 15:13
15. देशवासियों के लिए पौलुस के आशा, 2 कुरि. 1:7
16. पुराना नियम नए नियम के विश्वासीयों के लिए मार्गदर्शक, रोमि. 15:4

Copyright © 2014 **Bible Lessons International**

2:27 "अधोलोक" इसका यूनानी शब्द 'हदेस' है, यह वह स्थान है जहाँ मृतक रहते हैं। इब्रानी का शब्द *'शिओल'* पुराने नियम में यही अर्थ रखता है। पुराने नियम में मृत्यु के बाद के जीवन को ऐसा चित्रित किया है जिसमें चैतन्यता होती है, मनुष्य परिवार के सदस्यों को पहचान सकता है, परन्तु वहाँ आनन्द और सहभागिता नहीं होती। केवल नए नियम का प्रगतिशील प्रकाशन ही मृत्यु के बाद के जीवन की स्पष्ट परिभाषा करता है अर्थात् स्वर्ग व नरक की सही व्याख्या करता है।

विशेष शीर्षक : मरे हुए कहाँ है

I. पुराना नियम

A. मरने के बाद सब मनुष्य शिओल (अधोलोक) में जाते हैं (यह शब्द कहाँ से आया व कैसे बना है, इसकी स्पस्ट जानकारी नहीं है, BDB 982, KB 1368), यह कब्र भी कहा जाता है; यह आन्द रहित और अन्धकार पूर्ण स्थान है (देखें, अयूब 10:21-22; 38:17)।

B. शिओल का चित्रण :
1. परमेश्वर के दंड से जुड़ा है (आग), (व्यव. वि. 32:22)
2. फाटकों को सहित कारावास, अयूब 38:17; भजन. 9:13; 107:18)
3. वह जगह जहाँ से कोई लौट नहीं सकता, (अयूब. 7:9)
4. अंधकार पूर्ण संसार (अयूब. 10:21-22; 17:13; 18:18)
5. चुपचाप रहने का स्थान, (भजन. 28:1; 31:17; 94:17; 115:17; यशा. 47:5)
6. न्याय से पहले दण्ड का प्रतीक, (भजन. 18:4-5)
7. अबाद्दोन (Abaddon) सर्वनाश से जुड़ा, (देखें विशेष विषय : अबाद्दोन...अपोलिऑन) जहाँ परमेश्वर भी उपस्थित होगा, (अयूब. 26:6; भजन. 139:8; आमोस 9:2)
8. गड़हे (कब्र) से जुड़ा; (भजन. 16:10; 88:3-4; यशा. 14:15; यहेज. 31:15-17)
9. दुष्ट जीवित ही शिओल में उतर जाते हैं; (गिनती 16:30,33; अयूब. 7:9; भजन. 55:15)
10. बड़े मुंह वाले पशु समान; (गिनती. 16:30; नीति. 1:12; यशा. 5:14; हब. 2:5)
11. वहां के निवासी रफाईम कहलाते हैं अर्थात मृतक आत्माएं; (अयूब. 26:5; नीति. 2:18; 21:16; 26:14; यशा. 14:9-11)
12. यहोवा (YHWH) भी वहां उपस्थित, (अयूब. 26:6; भजन. 139:8; नीति. 15:11)

II. नया नियम

A. इब्रानी शब्द शिओल का अनुवाद यूनानी में हदेस (Hades) अर्थात अदृश्य संसार किया गया है।

B. हदेस का चित्रण शिओल के समान किया गया है :
1. मृत्यु की ओर संकेत, मत्ती 16:18
2. मृत्यु से जुड़ा, प्रका. 1:18; 6:8; 20:13-14
3. दण्ड का स्थाई स्थान (गेहन्ना) मत्ती 11:23; लूका 10:15; 16:23-24
4. अक्सर कब्र का प्रतीक, लूका 16:23

C. रब्बियों द्वारा विभाजित

1. धर्मियों का स्थान स्वर्ग कहलाता है (स्वर्ग का दूसरा नाम) देखें, 2 कुरि. 12:4; प्रका. 2:7; लूका 23:43
2. दुष्टों का स्थान तारतरूस (Taratrus) कहलाता है, हदेस से नीचे का स्थान; 2 पतरस 2:4, दुष्ट स्वर्गदूतों को बन्दी बनाने का स्थान (देखें उत्पत्ति 6:1 हनोक)। यह एबिस (Abyss) से जुड़ा शब्द है, देखें लूका 8:31; रोमि. 10:7; प्रका. 9:1-2,11; 11:7; 17:18; 20:1,3

D. गेहन्ना (Gehenna)

1. यह शब्द पुराने नियम के वाक्यांश "हिन्नोम के पुत्रों की घाटी" को दर्शाता है (जो यरूशलेम के दक्षिण में थी)। यह वह स्थान था जहां फीनिकिया के अग्नि देवता मोलेक (BDB 574, KB 591) की पूजा बच्चों को बलिदान चढ़ाकर की जाती थी (देखें 2 राजा 16:3; 21:6; 2 इति. 28:3; 33:6 लैव्य. 18:21; 20:2-5 में यह कार्य वर्जित था।
2. यिर्मयाह ने अन्य जातियों के पूजा स्थल से इसका नाम बदलकर यहोवा (YHWH) के दण्ड का स्थान किया (देखें, यिर्म. 7:32; 19:6-7)। 1 हनोक 90:26-27 और सिब. 1:103 में यह स्थान न्याय की अनन्त अग्नि का स्थान कहलाता है।
3. यीशु के दिनों के यहूदी अपने पूर्वजों के इस व्यवहार से अति व्याकुल थे कि उनके पूर्वजों ने अपने बच्चों का बलिदान चढ़ाकर इस स्थान पर पूजा में हिस्सा लिया था, इसलिए उन्होंने यरूशलेम का कूड़ा यहां फैकने का स्थान इसे बना दिया। यीशु के बहुत से दृष्टांतों में अनन्त दण्ड का उल्लेख किया गया है, वे इसी स्थान से आए (जैसे अग्नि, धुआं कीड़े) (देखें, मर. 9:44,46)।याकूब 3:6 को छोड़कर केवल यीशु ने ही गेहन्ना शब्द का प्रयोग किया।
4. यीशु द्वारा गेहन्ना शब्द का उपयोग :
   a. आग, मत्ती 5:22; 18:9; मर. 9:43
   b. स्थाई मर. 9:48; (मत्ती 25:46)
   c. विनाश का स्थान (आत्मा और शरीर दोनों) मत्ती 10:28
   d. *शिओल* के समान (मत्ती 5:29-30; 18:9)
   e. दुष्ट को "नर्क की सन्तान" बताया गया (मत्ती 23:15)
   f. दण्ड की आज्ञा का परिणाम (मत्ती 23:33; लूका 12:5
   g. *गेहन्ना,* दूसरी मृत्यु के समान है (प्रका. 2:11; 20:6,14) अथवा आग की झील (मत्ती 13:42, 50; प्रका. 19:20; 20:10, 14-15; 21:8)। आग की झील मनुष्यों का स्थाई निवास बन सकता है, (*शिओल* से) साथ ही दुष्ट स्वर्गदूतों का निवास अथाह कुण्ड में (*तर्सुस* से 2 पत. 2:4; यहूदा 1:6 का निवास, लूका 8:31; प्रका. 9:1-11; 20:1-3)
   h. यह मनुष्यों के लिए नहीं परन्तु शैतान और उसको दूतों के लिए बनाया गया था (मत्ती 25:41)

E. चूंकि शिओल, हदेस और गेहन्ना सब आपस में जुड़े है, इसलिए ऐसा हो सकता है कि :

1. मूलतः सब मनुष्य पहले शिओल / हदेस में जाते हैं।
2. न्याय के दिन के बाद वहां उनके अनुभवों में तीव्रता आती है, परंतु दुष्टों का स्थान वही रहता है (इसी कारण KJV में हदेस का अनुवाद गेहन्ना के समान किया गया है।
3. नए नियम में एकमात्र पाठांश लूका 16:19-31 है जहां न्याय से पहले यातनाओं का उल्लेख है (लाज़र और धनी)। शिओल भी दण्ड का स्थान कहा गया है (देखें, व्य. वि. 32:22; भजन. 18:1-5)। दृष्टांत लेकर धर्म-सिद्धांत नहीं बनाया जा सकता है।

III. मृत्यु और पुनरुत्थान के बीच की स्थिति :

A. नया नियम "आत्मा की अमरता" की शिक्षा नहीं देता, जो कि कुछ प्राचीन विचार थे, जो मानते हैं कि :
   1. मनुष्य की आत्मा का उसके शारीरिक जीवन से पहले अस्तित्व होता है।
   2. शारीरिक मृत्यु के बाद और पहले मानवीय आत्मा अनन्त होती है।
   3. अक्सर शारीरिक देह को कैदी और मृत्यु को पूर्व अस्तित्व की स्थिति में आना माना जाता है।

B. नया नियम मृत्यु और पुनरुत्थान के बीच देह मुक्त स्थिति की ओर संकेत करता है :
   1. यीशु देह और आत्मा के बीच अन्तर के बारे में बोलता है, (देखें, मत्ती 10:28)।
   2. अब्राहम की पहले ही से देह हो सकती है, मर. 12:26-27; लू. 16:23
   3. रूपांतर के पर्वत पर मूसा और एलिय्याह का भौतिक शरीर था, मत्ती 17
   4. पौलुस बताता है कि द्वितीय आगमन के समय जो विश्वासी यीशु के साथ होंगे उन्हें पहले नई देह प्राप्त होगी (1 थिस्स. 4:13-18)
   5. पौलुस मानता था की पुनरुत्थान के दिन विश्वासी नई आत्मिक देह प्राप्त करेंगे (1 कुरि. 15:23,52)
   6. पौलुस कहता है कि विश्वासी हदेस में नहीं जाएंगे परन्तु मृत्यु के समय वे यीशु के साथ होंगे, 2 कुरि. 5:6,8; फिलि. 1:23; यीशु मृत्यु पर विजयी हुआ इसलिए वह धर्मियों को अपने साथ स्वर्ग में ले जाएगा, (1 पतरस 3:18-22)।

IV. स्वर्ग

A. बाइबल में यह शब्द तीन अर्थों में प्रयुक्त हुआ है :
   1.पृथ्वी से ऊपर वाला वातावरण, (उत्प. 1:1,8; यशा. 42:5; 45:18)
   2.सबसे ऊंचा प्रकाशमान स्वर्ग, (उत्प. 1:14; व्य. वि. 10:14; भजन. 148:4; इब्रा. 4:14; 7:26)
   3.परमेश्वर के सिंहासन का स्थान, (व्य. वि. 10:14; 1 राजा 8:27; भजन. 148:4; इफि. 4:10; इब्रा. 9:24 (तीसरा स्वर्ग, 2 कुरि. 12:2)

B. बाइबल मृत्यु के बाद के जीवन के बारे में अधिक प्रकाशन नहीं करती है शायद इसलिए कि पतित मानवजाति की क्षमता के बाहर है कि उन्हें समझ सके (देखें, 1 कुरि. 2:9)

C. स्वर्ग एक स्थान (यूह. 14:2-3) तथा एक व्यक्ति (2 कुरि. 5:6,8) दोनों ही है। स्वर्ग पुनः स्थापित अदन की वाटिका हो सकता है (उत्पत्ति 1-2; प्रका. 21-22)। पृथ्वी पूर्वावस्था व शुद्ध रूप में बनाई जाएगी (प्रेरि. 3:21; रोमि. 8:21; 2 पत. 3:10)। परमेश्वर का स्वरूप (उत्प. 1:26-27) मसीह के रूप में बनेगा। तब मानव व परमेश्वर के मध्य गहरी सहभागिता संभव हो सकेगी।

तो भी स्वर्ग एक दृष्टांत या रूपक के समान हो सकता है (प्रका. 21:9-27 की तरह विशाल नगर) न कि शब्दिक स्वर्ग। 1 कुरि. 15 अध्याय स्वाभाविक देह और आत्मिक देह के मध्य अन्तर के बारे में बताता है, जैसे कि एक बीज एक बड़ा पेड़ बन जाता है। फिर से 1 कुरि. 2:9 (यशा. 64:4 व 65:17 का उद्धरण) हमारे लिए एक महान प्रतिज्ञा और आशा है। मैं जानता हूँ कि जब हम उसे देखेंगे, तो हम उसके समान होंगे (1 यूह. 3:2)।

V. सहायक सामग्री :

A. विलियम हैन्डिकसन की पुस्तक "द बाइबल ऑन द लाइफ हियरआफ्टर" (The Bible On the Life Hereafter)
B. मौरिस रौलिंग की पुस्तक "बियौन्ड डैथस डोर" (Beyond Death's Door)

Copyright © 2014 Bible Lessons International

▪ **“और न अपने पवित्र जन को सड़ने ही देगा”** यह मृत्यु के संबंध में एक मसीह-संबंधी स्पष्ट संदर्भ है परन्तु यह कथन प्रतिज्ञात जन, अभिषिक्त जन, और पवित्र जन के सड़ने के विषय में नहीं बताता (देखें, भजन संहिता 49:15 और 86:13)।

2:28 “तू मुझे अपने दर्शन के द्वारा आनन्द से भर देगा” यह वाक्यांश पिता के साथ एक व्यक्तिगत और आनन्दपूर्ण अनुभव के विषय में बताता है (देखें, प्रेरितों 2:22-28) यह आनन्द मसीह के मृत्यु के द्वारा स्वर्ग में प्राप्त होगा (देखें, यशायाह 53:10-12)। अय्यूब 14:14-15; 19:25-27 में भी परमेश्वर के साथ मृत्यु के बाद के जीवन की व्यक्तिगत सहभागिता के इस आनन्द का चित्रण पाया जाता है।

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 2:29-36
[29]“हे भाइयो, मैं कुलपति दाऊद के विषय में तुम से साहस के साथ कह सकता हूँ कि वह तो मर गया और गाड़ा भी गया और उसकी कब्र आज तक हमारे यहाँ विद्यमान है। [30]वह भविष्यद्वक्ता था, वह जानता था कि परमेश्वर ने मुझ से शपथ खाई है कि मैं तेरे वंश में से एक व्यक्ति को तेरे सिंहासन पर बैठाऊँगा; [31]उसने होने वाली बात को पहले ही से देखकर मसीह के जी उठने के विषय में भविष्यद्वाणी की कि न तो उसका प्राण अधोलोक में छोड़ा गया और न उसकी देह सड़ने पाई। [32]इसी यीशु को परमेश्वर ने जिलाया, जिसके हम सब गवाह हैं। [33]इस प्रकार परमेश्वर के दाहिने हाथ से सर्वोच्च पद पाकर, और पिता से वह पवित्र आत्मा प्राप्त करके जिसकी प्रतिज्ञा की गई थी, उसने यह उंडेल दिया है जो तुम देखते और सुनते हो। [34]क्योंकि दाऊद तो स्वर्ग पर नहीं चढ़ा; परन्तु वह आप कहता है, ‘प्रभु ने मेरे प्रभु से कहा, मेरे दाहिने बैठ, [35]जब तक कि मैं तेरे बैरियों को तेरे पाँवों तले की चैकी न कर दूँ।’ [36]अतः अब इस्राएल का सारा घराना निश्चित रूप से जान ले कि परमेश्वर ने उसी यीशु को जिसे तुम ने क्रूस पर चढ़ाया, प्रभु भी ठहराया और मसीह भी।”

2:29-31 भजन संहिता की जो व्याख्या पतरस यहां प्रस्तुत करता है उसे एक पश्चिमी पाठक के लिए समझना कठिन हो सकता है क्योंकि यह भजन पूर्ण रूप से दाऊद की ओर ही संकेत नहीं करता, और फिर पतरस एक रब्बी की तरह बोलता है (यही बात इब्रानीयों की पुस्तक के विषय में भी है)। संभव है पतरस ने मसीह के आगमन के संबंध में किसी सभाघर या आराधनालय में तर्क-वितर्क सुना हो, और अब वह जानता है कि यह भजन यीशु नासरी की ओर संकेत करता है।

2:29 पतरस यहाँ दर्शाता है कि निस्सन्देह भजन 16 दाऊद की ओर संकेत तो करता है (पद 16:10ब), परन्तु केवल दाऊद की ओर ही संकेत नहीं करता।

2:30 “वह भविष्यद्वक्ता था” यहूदी लोग विश्वास करते थे कि परमेश्वर ने भविष्यद्वक्ताओं के माध्यम से बातें की हैं। मूसा भविष्यद्वक्ता कहलाता था (देखें, व्यववि. 18:18)। पुराने नियम की अनेक पुस्तकें जैसे यहोशू, न्यायियों, 1, 2 शमूएल, और 1, 2 राजाओं इत्यादि यहूदी-कानोन में “पहले के नबियों” की पुस्तकें कहलाती हैं। अन्तिम नबी मलाकी की मृत्यु के बाद रब्बी लोग मानने लगे थे कि प्रकाशन प्राप्त होना बन्द हो गया है यहूदियों की इसी विचारधारा के अन्तर्गत दाऊद नबी माना जाता था। इससे पहले पुराने नियम में परमेश्वर ने मूसा को प्रकाशन दिया था (देखें, उत्पत्ति 49) कि मसीह का आगमन यहूदा के गोत्र से होगा। 2 शमूएल 7 अध्याय में परमेश्वर ने प्रकाशन दिया कि मसीह दाऊद राजा के राजकीय वंश से आएगा। इसके बाद परमेश्वर ने भजन 110 में प्रकाशन दिया कि मसीह मेल्कीसेदेक की याजकीय परम्परा के अनुसार याजक भी होगा (देखें, प्रेरि. 2:34-35)।

▪ **“परमेश्वर ने उससे शपथ खाई है कि मैं तेरे वंश में से एक को तेरे सिंहासन पर बैठाऊँगा”** यह वाक्य 2 शमूएल 7:11-16; भजन 89:3-4; 132:11 का सारांश है। यह बताता है कि प्राचीनकाल से ही परमेश्वर चाहता था कि इसकी पूर्ति यीशु नासरी में हो। यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान भी परमेश्वर के उद्धार की पूर्व निर्धारित योजना का भाग थी (देखें, इफिसियों 2:11-3:13)।

2:31 "**मसीह**" अर्थात् "अभिषिक्त जन।" यीशु न केवल इस्राएल के राजा दाऊद का पुत्र ही था, परन्तु साथ ही वह परमेश्वर का भी पुत्र था और जो स्वर्ग के सिंहासन पर बैठा है (भजन 110)।

विशेष शीर्षक: अभिषिक्त जन

A. पुराने नियम का उपयोग

"मसीह" अथवा "अभिषिक्त जन" शब्द विभिन्न प्रकार से प्रयुक्त किया गया है, इसलिए इस शब्द की व्याख्या करने में समस्या उत्पन्न होती है (BDB 603, KB 645)। यह शब्द उस व्यक्ति के लिए प्रयुक्त किया गया है, जिसके सिर पर विशेष तेल लगाया गया हो और किसी विशेष कार्य को करने के लिए परमेश्वर द्वारा बुलाया गया हो।

1. "अभिषिक्त जन" शब्द इस्राएली राजाओं के लिए प्रयुक्त हुआ (उदा. 1 शमू 2:10; 12:3; 24:6,10; 2 शमू. 19:21; 23:1; भजन 89:51; 132:10,17; विलाप. 4:20; हब. 3:13; दानि. 9:25 में "अभिषिक्त प्रधान")।
2. इस्राएली याजकों के लिए प्रयुक्त (अर्थात् "अभिषिक्त याजक", निर्ग 29:7; देखें लैव्य. 4:3,5,16; 6:15; 7:36; 8:12; संभवतः भजन 84:9-10 तथा 133:2)
3. पूर्वजों और नबियों के लिए प्रयुक्त (देखें, उत्प. 20:7; 1 इति. 16:22; भजन. 105:15 यह सामूहिक रूप से वाचा के लोगों के लिए प्रयुक्त हुआ ; और हब. 3:13)
4. भविष्यद्वक्ताओं के लिए प्रयुक्त, (देखें 1 राजा 19:16; संभवतः 1 इति. 29:22 और यशा. 61:1)
5. कुस्रु राजा के लिए प्रयुक्त (देखें, यशा. 45:1)
6. #1 तथा #2 संयुक्त रुप से भजन 110 व जक. 4 में प्रयुक्त।
7. परमेश्वर के विशेष जन के आगमन के लिए प्रयुक्त, दाऊद वंशी राजा जो धार्मिकता का नया युग लाएगा : (यानी, यिर्म 31:31-34; यहेजके 36:22-36)
   a. यहूदा के गोत्र से (उत्प. 49:10)
   b. यिशै के घराने से (2 शमू. 7)
   c. विश्वव्यापी शासन (भजन 2; यशा. 9:6; 11:1-5; मीका. 5:1-4 क्रमशः
   d. आवश्यकता ग्रस्त लोगों के मध्य सेवकाई (यशा. 61:1-3)
8. भजन में उपयोग
   मसीहा के लिए अधिकांश संकेत शाही भजन संहिता में हैं (अर्थात, भजन संहिता 2; 18; 20; 21; 45; 72; 89; 101; 110; 132; 144)। संदर्भ में वे एक अभिषिक्त डेविडिक राजा का उल्लेख करते हैं, लेकिन चूंकि भविष्यवाणियां इस्राएल के इतिहास में कभी महसूस नहीं की गईं, इसलिए अधिकांश टिप्पणीकारों का कहना है कि उन्हें एक अंतिम समय अवधि का उल्लेख करना चाहिए।

B. नए नियम में उपयोग

मैं व्यक्तिगत रूप से बड़ा आनन्दित हूँ कि शब्द "अभिषिक्त जन" यीशु नासरी से संयुक्त है (देखें, यूहन्ना 1:41; 4:25) क्योंकि

1. दानिय्येल 2 के अनन्त साम्राज्य का आरम्भ चौथे साम्राज्य के दौरान होगा।
2. दानि. 7:13 में "मनुष्य के पुत्र" को अनन्त राज्य दिया गया।
3. दानि. 9:24 के छुटकारे संबंधी उपशब्द पतित विश्व इतिहास की चरम सीमा की ओर संकेत करते हैं।
4. नये नियम में यीशु ने दानिय्येल की पुस्तक का उपयोग किया (देखें, मत् 24:15; मर 13:14)। इस बात को स्वीकार करना चाहिए कि यह शीर्षक "अभिषिक्त जन" जो पुराने नियम में प्रयुक्त बहुत कम अन्य जगह प्रयुक्त है; यह केवल दानि. 9:25 में ही आया है इस बात को भी जानना चाहिए कि पुराने नियम का मसीह संबंधी सामान्य उल्लेख यीशु पर लागू नहीं होता है।

1. न ही इस्राएल के किसी अगुवे पर ।

2. न किसी याजक पर जो औपचारिक रूप से अभिषिक्त हो।
3. न इस्राएल के उद्धार करने वाले पर।
4. न "मनुष्य के पुत्र पर" और "न परमेश्वर के पुत्र पर"

Copyright © 2014 Bible Lessons International

▪ **"न तो उसका प्राण अधोलोक में छोड़ा गया और न उसकी देह सड़ने पाई"** 1995 NASB (नवीनतम) पाठ में इस पद को पुराने नियम के उद्धरण के रूप में नहीं लिखा गया है, जबकि यह स्पष्ट रूप से भजन 16 की ओर संकेत करता है। "देह" के लिए निम्नलिखित विशेष शीर्षक को देखें:

विशेष शीर्षक: देह

यह शब्द पौलुस द्वारा अधिकांशतः गलातियों की पत्री में किया गया है और धर्म वैज्ञानिक विकास (Theological Development) रोमियों की पत्री में हुआ है। इस शब्द के विभिन्न अर्थों की क्या परिभाषा दी जाए, इस संबंध में विद्वानों में मतभेद पाया जाता है। निश्चय ही अर्थों में दोहरापन पाया जाता है। नीचे, मात्र एक प्रयास है जिससे इस शब्द के व्यापक अर्थों को समझा जा सके :

A. मानवीय देह, यूहन्ना 1:14; रोमि. 2:28; 1 कुरि. 5:5; 7:28; 2 कुरि. 4:11; 7:5; 12:7; गला. 1:16; 2:16,20; 4:13; फिलि. 1:22; कुलु. 1:22,24; 2:5; 1 तीम. 3:16
B. मानवीय संतान, यूह. 3:6; रोमि. 1:3; 4:1; 9:3,5,8; 11:14; 1 कुरि. 10:18; गला. 4:23,29
C. शारीरिक मनुष्य, रोमि. 3:20; 7:5; 8:7-8; 1 कुरि. 1:29; 2 कुरि. 10:3; गला. 2:16; 5:24
D. मानव के अनुसार, यूह. 8:15; 1 कुरि. 1:26; 2 कुरि. 1:12; 5:16;10:2; गला. 6:12
E. मानवीय दुर्बलताएँ, रोमि. 6:19; 7:18; 8:5-6,9; 2 कुरि. 10:4; गला. 3:3; 5:13,16,19-21; कुलु. 2:18
F. परमेश्वर से शत्रुता, परिणाम स्वरूप पतन, रोमि. 7:14; 13:14; 1 कुरि. 3:1,3; इफि. 2:3; कुलु. 2:18; 1 पत. 2:11; 1 यूह. 2:16

इस बात पर ज़ोर देना चाहिए कि नए नियम में "शरीर" को बुरा नहीं समझा गया है जैसा कि यूनानी विचारों में बुरा समझा जाता है। यूनानी दार्शनिकों के अनुसार "शरीर" मानवीय समस्याओं का स्रोत है; मृत्यु ही इससे छुटकारा दिलाती है। परन्तु नए नियम में "शरीर" आत्मिक युद्ध का मैदान है (देखें, इफि. 6:10-18) तौ भी यह बलहीन है। मनुष्य इसे अच्छे और बुरे दोनों रूपों में प्रयुक्त कर सकता है।

Copyright © 2014 Bible Lessons International

▪ **2:32-33 "यीशु ....परमेश्वर ....पवित्र आत्मा"** हालांकि शब्द "त्रिएकत्व" बाइबल में कहीं भी प्रयुक्त नहीं किया गया है तौभी त्रिएक परमेश्वर की धारणा इसलिए आवश्यक है क्योंकि (1) यीशु दिव्य है तथा 2) पवित्र आत्मा एक व्यक्तित्व है। बाइबल एक ही सन्दर्भ में त्रिएकत्व के तीनों व्यक्तियों का उल्लेख करते हुए इस त्रिएक परमेश्वर की धारणा को व्यक्त करती है (देखें, प्रेरि. 2:32-33; मत्ती 28:19; 1 कुरि. 12:4-6; 2 कुरि. 1:21-22; 13:14; इफि. 4:4-6 तथा 1 पतरस 1:2)। देखें:
▪

विशेष शीर्षक: त्रिएकत्व

त्रिएकत्व के सभी तीन व्यक्तियों की एकीकृत संदर्भ में उनके कार्यों पर ध्यान दीजिए। त्रिएक शब्द की सर्वप्रथम रचना तरतूलियन द्वारा की गई जो बाइबिल का शब्द नहीं था, परन्तु एक व्यापक विचारधारा थी।

I. नए नियम में
   A. सुसमाचार
      1. मत्ती, 3:16-17; 28:19 (इसके समान्तर)

2. यूहन्ना 14:26

B. प्रेरितों के काम - प्रेरि. 2:32-33,38-39

C. पौलुस

1. रोमियों 1:4-5; 5:1,5; 8:1-4, 8-10
2. 1 कुरि. 2:8-10; 12:4-6
3. 2 कुरि. 1:21-22; 13:14
4. गला. 4:4-6
5. इफि. 1:3-14,17; 2:18; 3:14-17; 4:4-6
6. 1 थिस्स. 1:2-5
7. 2 थिस्स. 2:13
8. तीतुस 3:4-6

D. पतरस - 1 पत. 1:2

E. यहूदा - पद 20-21

II. A पुराने नियम में परमेश्वर का बहुवचन में संकेत

A. परमेश्वर के लिए बहुवचन का प्रयोग

1. इलोही नाम बहुवचन है (देखें, विशेष विषय "परमेश्वर के नाम"), परन्तु जब परमेश्वर के लिये इस्तेमाल होता है तो सदा एकवचन क्रिया प्रयुक्त की जाती है।
2. "हम" का प्रयोग उत्पत्ति 1:26-27; 3:22; 11:7
3. शीमा में "एक"(बीडीबी 1033) (BDB 1033) व्यवस्था 6: 4 में बहुवचन हो सकता है (जैसा कि यह उत्त्पत्ति 2:24; यहेज. 37:17 में है)।

B. "परमेश्वर का स्वर्गदूत" परमेश्वर का दृश्य प्रतिनिधि (देखें विशेष विषय : "परमेश्वर के स्वर्गदूत")

1. उत्प. 16:7-13; 22:11-15; 31:11,13; 48:15-16
2. निर्गमन, 3:2,4; 13:21; 14:19
3. न्यायियों, 2:1; 6:22-23; 13:3-22
4. जकर्याह, 3:1-2

C. परमेश्वर और उसका आत्मा अलग-अलग हैं, उत्प. 1:1-2; भजन. 104:30; यशा. 63:9-11; यहेज. 37:13-14

D. परमेश्वर (यहोवा) तथा मसीह (Adon) अलग-अलग हैं, भजन. 45:6-7; 110:1; जक. 2:8-11; 10:9-12

E. मसीह और पवित्र आत्मा अलग-अलग हैं, जक. 12:10

F. ये तीनों यशा. 48:16; 61:1 में पाए जाते हैं।

III. एकेश्वरवादी को यीशु का परमेश्वरत्व और पवित्र आत्मा का व्यक्तित्व समस्या में डालता है (देखें, विशेष विषय : एकेश्वरवाद) आरम्भिक विश्वासी।

A. तरतूलियन - पुत्र को पिता से छोटा व उसके अधीन मानता था।

B. ओरिगेन - पुत्र के ईश्वरत्व और पवित्र आत्मा के ईश्वरत्व को अधीनता में मानता था।

C. एरियुस - पुत्र और पवित्र आत्मा के ईश्वरत्व का इंकार करता था।

D. मोनारकीवाद - एक परमेश्वर के क्रमिक प्रकाशन को पिता पुत्र और पवित्र आत्मा के रूप में मानते हैं।

IV. त्रिएक्तव इतिहासिक रूप से विकसित सूत्र है जो बाइबल पर आधारित तथ्यों पर बनाया गया है:

A. ईस्वी सन् 325 में नीकिया कि परिषद द्वारा स्वीकार किया गया है कि यीशु परमेश्वर पिता के बराबर ईश्वरत्व रखता है (देखें, यूह. 1:1; फिलि. 2:6; तीतु. 2:13)

B. ईस्वी सन् 381 में कौन्सटैन्टीनोपल (Constantinople) परिषद द्वारा पवित्र आत्मा के ईश्वरत्व को पिता और पुत्र के बराबर स्वीकार किया गया।
C. त्रिएकत्व के सिद्धांत को अगस्तीन की पुस्तक "डी ट्रीनिटेट" (De Trinitate) में पूर्ण रूप से व्यक्त किया गया है।

वास्तव में त्रिएकत्व में रहस्य है, परन्तु नया नियम स्वीकार करता है कि एक परमेश्वर में तीन अनन्त व्यक्तिगत प्रकाशन (पिता, पुत्र व पवित्र आत्मा) पाए जाते हैं।

Copyright © 2014 Bible Lessons International

2:32 "इसी यीशु को परमेश्वर ने जिलाया" प्रेरितों 2:24 की टिप्पणी को देखें।

"जिसके हम सब गवाह हैं" यह उनकी ओर संकेत करता है जिन्होंने जी उठे हुए मसीह को देखा था। पौल बर्नेट द्वारा बनाए चार्ट को देखें जिसमें यीशु के पुनरुत्थान के बाद दर्शन देने का उल्लेख है, Paul Barnett, *Jesus and the Rise of Early Christianity*, p. 185, at Acts 1:3 (p. 9). तथा देखें यीशु और आरम्भिक मसीही धर्म का उदय पेज 185, और 1:3 (पेज 9) प्रेरितों के काम टिप्पणी।'

2:33 "परमेश्वर के दाहिने हाथ से " यह अधिकार युक्त स्थान का रूपक है जहां से वह मध्यस्तता करता है ;1 यूहन्ना 2:1) जो भजन 110:1 तथा 118:16 से लिया गया है। परमेश्वर अनन्त आत्मा है जो समस्त भौतिक और आत्मिक संसार में उपस्थित रहती है। मनुष्यों को उसके बारे में बताने के लिए अपनी पृथ्वी की भाषा और अपनी धारणाओं का उपयोग करना चाहिए, परन्तु वे सब (1) अपूर्ण (2) समानताएँ और (3) रूपक होते हैं। यहाँ तक कि परमेश्वर का वर्णन करने के "पिता" शब्द का तथा यीशु का वर्णन करने के लिए "पुत्र" शब्द का प्रयोग करना भी एक रूपक के समान है। एक बिन्दु पर आकर ये रूपक निरर्थक हो जाते हैं। ये हमें केवल ईश्वरत्व का केन्द्रिय सत्य बताते है। हमें इनके शाब्दिक अर्थों के सम्बन्ध में सावधान रहना चाहिए। जब आप स्वर्ग में जाएँगे तो वहां सिंहासन पर बैठा कोई बूढ़ा या जवान मनुष्य नहीं देखेंगे। जिसके सिर के चारों ओर श्वेत पक्षी उड़ रहे हों। देखें

विशेष शीर्षक : परमेश्वर एक मानव के रूप में वर्णन(नृविज्ञान भाषा)

I. इस प्रकार की भाषा अर्थात मानव शब्द द्वारा परमेश्वर का वर्णन करना, पुराने नियम में कुछ प्रयोग किया जाना सामान्य बात है।(कुछ उदाहरण)

A. शारीरिक अंग
   1. आंखे : उत्प. 1:4,31; 6:8; निर्ग. 33:17; गिनती 14:14; व्यव. वि. 11:12; जक. 4:10
   2. हाथ : निर्ग. 15:17; गिनती 11:23; व्यव. वि. 2:15
   3. भुजाएँ : निर्ग. 6:6; 15:16; व्यव. वि. 4:34; 5:15
   4. कान : गिनती 11:18; 1 शमू. 8:21; 2 राजा 19:16; भजन. 5:1; 10:17; 18:6
   5. आमने सामने : निर्ग. 33:11; लैव्य. 20:3,5-6; गिनती 6:25; 12:8; व्यव. वि. 31:17; 32:20; 34:10
   6. उंगलियाँ : निर्ग. 8:19; 31:18; व्यव. वि. 9:10; भजन. 8:3
   7. आवाज : उत्प. 3:9,11,13; निर्ग. 15:26; 19:19; व्यव. वि. 26:17; 27:10
   8. पाँव : निर्ग. 24:10; यहेज. 43:7
   9. मानवीय रूप : निर्ग. 24:9-11; भजन. 47; यशा. 6:1; यहेज. 1:26
   10. परमेश्वर का दूत: उत्प. 16:7-13; 22:11-15; 31:11,13; 48:15-16; निर्ग. 3:4,13-21; 14:19; न्या. 2:1; 6:22-23; 13:3-22

B. भौतिक कार्य (कुछ उदाहरण)
   1. रचनाकार के समान बोलना : उत्प. 1:3,6,9,11,14,20,24,26

2. चलना (अर्थात आवाज़) : उत्प. 3:8; लैव्य. 26:12; व्यव. वि. 23:14; हब. 23:14;
3. नूह के जहाज का द्वार बंद करना : उत्प. 7:16
4. बलिदानों की सुगन्ध लेना : उत्प. 8:21; लैव्य. 26:31; आमोस 5:21
5. नीचे उतरना : उत्प. 11:5; 18:21; निर्ग. 3:8; 19:11,18,20
6. मूसा को दफनाना : व्यव. वि. 34:6

C. मानवीय भावनाएँ (कुछ उदाहरण)
1. खेदित होना/पछताना : उत्प. 6:6,7; निर्ग. 32:14; न्या. 2:18; मू. 15:29,35; आमोस 7:3,6
2. क्रोधित होना: निर्ग. 4:14; 15:7; गिनती 11:10; 12:9; 22:22; 25:3,4; 32:10,13,14; व्यव. वि. 6:15; 7:4; 29:20
3. जलन: निर्ग. 20:5; 34:14; व्यव. वि. 4:24; 5:9; 6:15; 32:16,21; यहो. 24:19
4. घृणा: लैव्य. 20:23; 26:30; व्यव. वि. 32:19

D. पारिवारिक संबंध (कुछ उदाहरण)
1. पिता
   a. इस्राएल का : निर्ग. 4:22; व्यव. वि. 14:1; यशा. 1:2; 63:16; 64:8 यिर्म. 31:9; होशे 11:1
   b. राजा का पिता : 2 शमू. 7:11-16; भजन. 2:7
   c. पितृत्व कार्यों के रूपक : व्यव. वि. 1:31; 8:5; 32:6-14; भजन. 27:10; नीति. 3:12; यिर्म. 3:4,22; 31:20; होशे 11:1-4; मलाकी 3:17
2. माता-पिता : होशे 11:1-4
3. माता : यशा. 49:15; 66:9-13 (नर्सिंग मां के अनुरूप)
4. जवान विश्वासयोग्य प्रेमी : होशे 1-3

II.इस प्रकार की भाषा का प्रयोग करने के कारण :

A. यह परमेश्वर की आवश्यकता है कि स्वयं को मानवजाति पर प्रकाशित करे। पतित, सांसारिक शब्दों के अलावा और कोई शब्दावली है नहीं। सर्वत्र अवधारण है कि परमेश्वर पुरुष है, इस कारण मानवीय शब्दों का उपयोग किया जाता है परंतु परमेश्वर आत्मा है।

B. परमेश्वर मानवीय जीवन के अत्यधिक अर्थपूर्ण पहलुओं को लेता है और स्वयं को पतित मानवजाति पर प्रकाशित करने के लिये उन्हें इस्तेमाल करता है (जैसे : पिता, माता, प्रेमी माता-पिता)

C. हालांकि कभी-कभी जरूरी होता है (जैसे उत्प. 3:8), तौ भी परमेश्वर नहीं चाहता कि किसी भौतिक आकार में सीमाबद्ध होवे (देखें, निर्ग. 20; व्यव. वि. 5)।

D. ईश्वर को मनुष्य के आकार का मानने के सिद्धांत का अन्तिम सिद्धान्त यीशु का देहधारण है। परमेश्वर, यीशु में देहधारी होकर छूने योग्य बन गया (देखें 1 यूहन्ना 1:1-3)। परमेश्वर का सन्देश, परमेश्वर का वचन बन गया (देखें, यूहन्ना 1:1-18)

III. अच्छी संक्षिप्त जानकारी के लिए देखें, जी. बी. कायर्ड की पुस्तकें, "द लैंग्वेज एंड इमेजरी ऑफ द बाइबल, चैपटर 10 ; (The Language and Imagery of the Bible by G. B. Caird) तथा "द इंटरनेशनल स्टैण्डर्ड बाइबिल एनसाइक्लोपीडिया, पेज 152-154" में "एंथ्रोपोमोरफ़िज्म"। ("Anthropomorphism" in "The International Standard Bible Encyclopedia", Page 152-154)

Copyright © 2014 Bible Lessons International

▪ **"पवित्र आत्मा के वायदे "** पुराना नियम एक नये दिन की प्रतिज्ञा करता है जिसमें धार्मिकता वास करेगी और मसीह राज्य करेगा।

1. यूहन्ना 7:39, अब वह नया दिन आ गया है।

2. गलातियों 3:14, समस्त संसार को अब इब्राहिम की आशीषें उपलब्ध हैं (देखें, उत्पत्ति 12:3)।
3. इफिसियों 1:13, इस नए युग में विश्वासियों पर पवित्र आत्मा की छाप लगाई गई।

▪ **"जो तुम दोनों देखते और सुनते हो"** इस उपदेश में चश्मदीद गवाहों पर यह निरन्तर दिया गया बल है। (प्रेरि. 2:14, 22, 32, 33, 36) वे जानते थे कि जो कुछ पतरस कह रहा है, सत्य है, क्योंकि वे वहाँ मौजूद थे। वकील लोग इसे घटना के प्राथमिक गवाह कहते हैं।

2:34 "प्रभु ने मेरे प्रभु से कहा" यह भजन 110:1 का उद्धरण है (यहोवा...अदोनाए)। यीशु ने इस शब्द अदोनाए का उपयोग मत्ती 22:41-46 में किया। नए नियम में यह पद परमेश्वर के राज्य के दो पक्ष दिखाता है; यीशु पहले ही से परमेश्वर के दाहिने हाथ बैठा है, परन्तु उसके शत्रु अभी उसके चरणों की चैकी नहीं बने हैं। देखें विशेष शीर्षक: परमेश्वर का साम्राज् प्रेरित 1:3

2:36 "अतः अब इस्राएल का सारा घराना निश्चित रूप से जान ले" यह यहूदियों के अगुवों की ओर संकेत है जिनसे पतरस बोल रहा है। वह दृढ़तापूर्वक कहता है कि पुराने नियम की भविष्यद्वाणियाँ यीशु मसीह में पूरी हो गई हैं। देखें: **विशेष शीर्षक परमेश्वर का साम्राज्य** at Acts 1:3

NASB	**"अच्छी तरह जान लेना"**
NKJV	**"निश्चित रूप से जान लेना"**
NRSV	**"निश्चयपूर्वक जान लेना"**
TEV	**"भली भांति जान लेना"**
NJB	**"निश्चय होना"**

▪ यहाँ यूनानी भाषा के दो शब्द सामने आते हैं, पहला *aphalōs* शब्द है, जिसका अर्थ है "सुनिश्चित करना" (चैकसी के साथ सुनिश्चित करना, प्रेरितों 16:23) तथा दूसरा शब्द है *ginōskō* जिसका अर्थ है "जानना।" इस प्रकार हम कह सकते हैं कि यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान के इन चश्मदीद गवाहों को पतरस की बातों पर ज़रा भी सन्देह नहीं था।

▪ **"परमेश्वर और मसीह "** शब्द "प्रभु" (*kurios*) का उपयोग सामान्य रीति से भी किया जा सकता है, और एक विशेष धर्मवैज्ञानिक अर्थों में भी किया जा सकता है (जैसे देखें, प्रेरितों 2:21)। प्रभु शब्द का अर्थ "मिस्टर," "श्रीमान," "स्वामी," "मालिक," "पति" अथवा "सिद्ध दिव्य मानव" भी हो सकता है। पुराने नियम में प्रभु (अदोनाए) शब्द का प्रयोग करना, यहूदियों द्वारा परमेश्वर के वाचागत नाम यहोवा (YHWH) का उच्चारण न करने के फलस्वरूप आरम्भ हुआ। "यहोवा" शब्द की उत्पत्ति इब्रानी क्रिया शब्द "मैं जो हूँ सो हूँ" (निर्गमन 3:14) से हुई है। यहूदी लोग डरा करते थे कि कहीं उनके द्वारा निर्गमन 20:7 की इस आज्ञा का उल्लंघन न हो जाए, "तू अपने परमेश्वर का नाम व्यर्थ में न लेना।" उनका मानना था कि यदि वे यहोवा (YHWH) नाम का उच्चारण नहीं करें तो इस आज्ञा के उल्लंघन से बच जाएंगे (देखें, निर्गमन 20:7; व्य.वि. 5:11)।

अतः उन्होंने इब्रानी शब्द 'अदोनाए' के बदले में प्रभु शब्द का इस्तेमाल करना आरम्भ कर दिया जिसका अर्थ यूनानी शब्द *kurios* (प्रभु) के समान है। नए नियम के लेखक इस शब्द का प्रयोग मसीह के पूर्ण ईश्वरत्व को दर्शाने के लिए करते हैं। "यीशु ही प्रभु है" यह वाक्यांश प्रारम्भिक मण्डली में विश्वास का सार्वजनिक अंगीकार और बपतिस्मा-विधि का एक सूत्र था (देखें, रोमियों 10:9-13; 1 कुरिन्थियों 12:3; फिलिप्पियों 2:11)। देखें विशेष शीर्षक: Names for Deity at Acts 1:6

"मसीह" एक यूनानी शब्द है जो इब्रानी शब्द मसीह के समान है, इसका अर्थ है "अभिषिक्त जन" (देखें, प्रेरि. 2:31, 36; 3:18,20; 4:26; 5:42; 8:5; 9:22; 17:3; 18:5,28; 26:23)। इसका अर्थ यह हुआ कि "जिसे परमेश्वर ने बुलाया हो और उसी के द्वारा सामर्थी बनाया गया हो कि निर्धारित कार्य कर सके। पुराने नियम के अगुवों में तीन समूह पाए जाते थे: याजक, राजा तथा भविष्यद्वक्ता; ये सब अभिषिक्त जन हुआ करते थे। यीशु ने

इन सभी तीन समूहों के कार्यों को परिपूर्ण किया ;देखें, इब्रानियों 1:2-3) देखें विशेष शीर्षक: **अभिषिक्त जन** प्रेरित 2:31 **Acts 2:31**

यीशु नासरी के लिए पुराने नियम की इन पदवियों का इस्तेमाल करके लूका दावे के साथ यीशु के ईश्वरत्व ;देखें फिलिप्पियों 2:6-11; देखें विशेष शीर्षक प्रेरितों 2:32) और उसके मसीहा होने के बारे में बताना चाहता है (लूका 2:11)। उसकी इन बातों से प्रेरितों के काम में अन्य (*kerygma*) उपदेशों के लिये निश्चय ही मंच तैयार होता है। प्रेरित 2:14 **देखें विशेष शीर्षक:** आरंभिक चर्च का केरिगामा **at Acts 2:14**

▪ **"इसी यीशु को जिसे तुमने क्रूस पर चढ़ाया"** पतरस इन यरूशलेम निवासियों को यीशु की मृत्यु में धोखेबाज़ी करने के लिए दोषी ठहराता है। सभी पापों में पड़े हुए लोग इस दोष में बराबर के हिस्सेदार हैं, देखें प्रेरि. 2:23 की टिप्पणी।

▪ **"इसी यीशु"** यह पदवी "इसी यीशु" ;देखें, प्रेरि. 2:23,32,36) पतरस के ऐतिहासिक यीशु के प्रचार को एक जी उठे हुए मसीह और महिमा पाए हुए मसीह के साथ जोड़ती है। दोनों ही विचार सही हैं। आरम्भ के यीशु और विश्वास के यीशु में कोई अन्तर नहीं है।

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 2:37-42

37तब सुननेवालों के हृदय छिद गए, और वे पतरस और शेष प्रेरितों से पूछने लगे, "हे भाइयो, हम क्या करें?" 38पतरस ने उनसे कहा, "मन फिराओ, और तुम में से हरएक अपने अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे। 39क्योंकि यह प्रतिज्ञा तुम, और तुम्हारी सन्तानों, और उन सब दूर-दूर के लोगों के लिए भी है जिनको प्रभु हमारा परमेश्वर अपने पास बुलाएगा।" 40उस ने बहुत और बातों से भी गवाही दे देकर समझाया कि अपने आप को इस टेढ़ी जाति से बचाओ। 41अतः जिन्होंने उसका वचन ग्रहण किया उन्होंने बपतिस्मा लिया; और उसी दिन तीन हज़ार मनुष्यों के लगभग उनमें मिल गए। 42और वे प्रेरितों से शिक्षा पाने, और संगति रखने, और रोटी तोड़ने, और प्रार्थना करने में लौलीन रहे।

2:37 " वे हृदय छिद गए" यहाँ पर यूनानी शब्द *kata* plus *nussō* प्रयुक्त हुआ है। जिस शब्द से इस शब्द की उत्पत्ति हुई है उसका प्रयोग यूहन्ना 19:34 में हुआ है जबकि यीशु क्रूस पर था, यहाँ लिखा है, 'सैनिकों में से एक ने बरछे से उसका पंजर बेधा।' इसी प्रकार पतरस के उपदेश की सच्चाई से उनके हृदय छिद गये। यह स्पष्ट रूप से उस उद्धार की ओर संकेत करता है जो पवित्र आत्मा द्वारा कायल किए जाने के बाद प्राप्त होता है (देखें, यूहन्ना 16:8-11; रोमियों 3:21-31)।

2:38 "मन फिराओ" यह एक आदेशात्मक अनन्त कालीन कार्य है जिसका अर्थ है पक्का निर्णय लेना। इब्रानी में मन फिराने का अर्थ अपने कार्यों में परिवर्तन करना है। यूनानी शब्द का अर्थ है अपने हृदय को परिवर्तित करना। मन फिराना, अपने अन्दर परिवर्तन लाने को तैयार रहना है। मन फिराने का अर्थ पूरी तरह पाप की समाप्ति या अन्त नहीं, परन्तु परमेश्वर को प्रसन्न करने इच्छा है न कि स्वयं को। पतित मानव होने के नाते हम अपने लिए जीते हैं, परन्तु विश्वासी होने के नाते हम परमेश्वर के लिए जीते हैं। पश्चाताप करना और विश्वास करना, उद्धार पाने के लिए परमेश्वर की शर्तें हैं (देखें, मरकुस 1:15; प्रेरि. 3:16,19; 20:21)। यीशु ने कहा, "यदि तुम मन न फिराओगे तो तुम सब भी इसी रीति से नष्ट होंगे (देखें, लूका 13:3,5) मन फिराना एक पापी मनुष्य के लिए परमेश्वर की इच्छा है (देखें, 2 पतरस 3:9; यहेजकेल 18:23; 30:32)। परमेश्वर की प्रभु सत्ता व सर्वोच्चता तथा मनुष्यों की स्वतन्त्र इच्छा का रहस्य इस बात के द्वारा सरलता से समझा जा सकता है कि उद्धार पाने के लिए पश्चात्ताप करना आवश्यक है। परन्तु विरोधाभास यह है कि उद्धार परमेश्वर का निःशुल्क वरदान है (देखें, 5:31; 11:18 तथा 2 तीमु. 2:25)। परमेश्वर के आरम्भिक अनुग्रह और मानवजाति के आवश्यक वाचागत प्रत्युत्तर को बाइबल के अनुसार प्रस्तुत करने में हमेशा बेचैनी का अनुभव होता है। पुरानी वाचा की तरह नई वाचा भी "यदि" और "तब" पर आधारित है। नए नियम में ऐसे बहुत से शब्द प्रयोग किए गए हैं जो मन फिराने से संबंध रखते हैं।

विशेष शीर्षक:मन फिराओ पुराने नियम के अनुसार

यह अवधारणा महत्वपूर्ण तो है परंतु इसको परिभाषित करना बड़ा कठिन है। हममें से बहुतों के पास अपनी-2 डिनोमिनेशनों के आधार पर इस शब्द की परिभाषाएँ अवश्य होंगी। तो भी आमतौर पर कुछ इब्रानी और यूनानी शब्दों की धर्म वैज्ञानिक परिभाषाएँ लागू की गई हैं जो उचित परिभाषा कही जा सकें। हमें याद रखना चाहिए कि लूका को छोड़कर नए नियम के सभी लेखक यूनानी की आम बोलचाल की भाषा इस्तेमाल करते थे और वे सब इब्रानी भाषा बोलते थे। अतः इब्रानी शब्दों से आरम्भ करना अच्छा होगा, जिसमें दो शब्द मुख्य है :

1. नकेम *(Nacham)* (BDB 636, KB 688)
2. शूब *(Shub)* (BDB 996, KB 1427)

पहले शब्द नकेम (Nacham) का मूल अर्थ है "गहरी साँस लेना" (To Draw a Deep Breath) यह शब्द विभिन्न अर्थों में प्रयुक्त किया गया है :

a. "विश्राम' अथवा "शांति" (उदाहरणार्थ, उत्प. 5:29; 24:67; 27:42; 37:35; 38:12; 50:21; अक्सर नामों में प्रयुक्त, देखें, 2 राजा 15:14; 1 इति. 4:19; नहे. 1:1; 7:7; नहूम 1:1)
b. "खेदित होना" (जैसे, उत्प. 6:6, 7)
c. "विचार बदल देना" (जैसे, निर्ग. 13:17; 32:12,14; गिनती 23:19; अयूब 42:5-6)
d. "तरस" (जैसे, व्यव. वि. 32:36)

ध्यान दीजिए कि इन सब में गहरी भावनाएँ सम्मिलित हैं। इसका मूल कारण यह है कि गहरी भावनाएँ कार्य करने के लिए विवश करती हैं। कार्य का यह परिवर्तन अक्सर दूसरे लोगों की ओर संकेत करता है, पर साथ ही परमेश्वर के ओर भी। यही आचरण का और कार्यों का परिवर्तन जो परमेश्वर की ओर से किया जाता है, इस शब्द पश्चाताप को अर्थपूर्ण बनाता है ; परन्तु यहाँ सावधान रहने की आवश्यकता है। परमेश्वर के विषय में बताया जाता है कि वह "पछताया" (देखें, उत्प. 6:6,7; निर्ग. 32:14; न्या. 2:18; 1 शमू. 15:11,35; भजन. 106:45); परन्तु यह पछताना पाप या गलती के कारण दुख प्रकट करना नहीं था, परन्तु परमेश्वर की चिन्ता व तरस को दिखाने का एक तरीका था (देखें, गिन. 23:19; 1 शमू. 15:29; भजन. 110:4; यिर्म. 4:27-28; यहेज. 24:14)। विद्रोह और पाप का उपयुक्त दण्ड क्षमा पाना है, यदि पापी जन सचमुच में अपने पापों से तौबा करके परमेश्वर की ओर फिरता है। यह जीवन का नया आरम्भ है।

दूसरे शब्द शूब (Shub) का अर्थ है "फिर जाना" (से फिरना, घूम जाना, की ओर फिरना) क्रिया शब्द शूब का मूल अर्थ है, "विपरीत दिशा में घूम जाना" अथवा "लौट आना"। इस शब्द का उपयोग इन बातों के लिये हो सकता है :

1. परमेश्वर की ओर से फिर जाना, (गिनती 14:43; यहो. 22:16,18,23,29; न्या. 2:19; 8:33; 1 शमू. 15:11; 1 राजा 9:6; यिर्म. 3:19; 8:4
2. परमेश्वर की ओर फिरना, 1 राजा 8:33,48; 2 इति. 7:14; 15:4; 30:9; भजन. 51:13; 116:7; यशा. 6:10; 10:21-22; 31:6; यिर्म. 3:7,12,14,22; 4:1; 5:3; होशे 3:5; 5:4; 6:1; 7:10,16; 11:5; 14:1-2; आमोस 4:6,8-11 (विशेषकर देखें, 7 और आमोस 4)।
3. आरम्भ में यहोवा (YHWH) ने यशायाह से कहा था कि यहूदा कभी भी पश्चाताप नहीं कर सकता है (देखें, यशा. 6:10) परन्तु पुस्तक में पहली बार नहीं परन्तु वह उनसे बार-बार कहता है कि वे उसकी ओर फिरें और लौट आएँ।

पश्चात् केवल एक भावनात्मक बात ही नहीं है, पर यह परमेश्वर के प्रति एक आचरण है। यह अपने आप का त्याग करके जीवन का नया आरम्भ परमेश्वर के साथ है। इसमें परिवर्तन के लिए इच्छुक होना और परिवर्तित हो जाना शामिल है। यह पूर्णरूप से पापों की समाप्ति ही नहीं, परन्तु इसमें प्रतिदिन अपने विद्रोह की समाप्ति भी शामिल है। यह उत्पत्ति 3 के दूषित परिणाम और पतन का उलट जाना है। यह प्रकट करता है कि परमेश्वर का स्वरूप और उसकी समानता (उत्प. 1:26-27) हालांकि नष्ट हो चुकी थी, परंतु अब फिर से बहाल हो गई है। पतित मनुष्यों की परमेश्वर के साथ सहभागिता फिर से संभव हो जाती है।

पुराने नियम में मुख्य रूप से पश्चाताप का अर्थ है "कार्यों में परिवर्तन" जबकि नए नियम में इसका मुख्य अर्थ है "विचारों में परिवर्तन" (Change of Mind) (देखें विशेष विषय : पश्चाताप नए नियम में)। बाइबल आधारित सच्चे पश्चाताप के लिए दोनों ही जरूरी हैं। यह भी जानना जरूरी है कि पश्चाताप में दोनों बातें आती हैं, आरम्भिक कार्यों से पश्चाताप तथा पश्चाताप की निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया। आरम्भिक कार्यों को मर. 1:15; प्रेरि. 3:16,19; 20:21 में देखा जा सकता है। तथा निरन्तर प्रक्रिया को 1 यूहन्ना 1:9; प्रका. 2 व 3 मैं देखा जा सकता है। पश्चाताप विकल्प नहीं है (देखें लूका 13:3,5)।

यदि यह सत्य है कि दोनों वाचाओं की माँग "पश्चाताप करना" और "विश्वास करना" है (उदा. मत्ती 3:2; 4:17; मर. 1:4,15; 2:17; लूका 3:3,8; 5:32; 13:3,5; 15:7; 17:3), तो शब्द नकेम (Nacham) मनुष्य को उसके पापों को पहचानने और उनसे मन फिराने की गहन अभिलाषा की ओर अग्रसर करता है, जबकि शब्द शूब (Shub) पापों से मन फिराकर परमेश्वर की ओर फिरने की ओर संकेत करता है (इन दोनों आत्मिक कार्यों का श्रेष्ठ उदाहरण आमोस 4:6-11 है जहाँ लिखा है, तौ भी तुम मेरी और फिराकर न आए" (पाँच बार ऐसा लिखा है) और आमोस 5:4,6,14 में लिखा है "मेरी खोज में लगो, तब जीवित रहोगे।"

पश्चाताप के सामर्थ्य का पहला और महान उदाहरण दाऊद द्वारा बतशेबा के साथ पाप करने का है (देखें 2 शमू. 12; भजन 32; 51)। दाऊद और उसके परिवार तथा इस्राएल को परिणाम भुगतने पड़े, परन्तु केवल दाऊद ही परमेश्वर के साथ संगति में बहाल किया गया। दुष्ट राजा मनश्शे भी पश्चाताप करके क्षमादान पा सका (देखें, 2 इति. 33:12-13)।

भजन 90:13 में ये दोनों शब्द साथ साथ प्रयोग किये गये हैं। पश्चाताप करने में पाप की पहचान और इससे उद्देश्यपूर्ण मन फिराव होना चाहिए और साथ ही परमेश्वर को और उसकी धार्मिकता को खोजने की इच्छा होनी चाहिए (देखें यशा 1:16-20)। पश्चाताप एक अनुभव है जो व्यक्तिगत और नैतिकता से संबंध रखता है। परमेश्वर के साथ नया संबंध आरम्भ करने और संबंध को बनाए रखने के लिए इन तीनों बातों की जरूरत होती है। पश्चाताप के बाद हमारा खेदित मन परमेश्वर की भक्ति में लीन हो जाता है।

Copyright © 2014 Bible Lessons International

▪ **"बपतिस्मा ले"** यह एक और अनिश्चित काल सूचक आदेश है। निम्न विशेष शीर्षक देखें:

विशेष शीर्षक: बपतिस्मा

I. यहूदियों में बपतिस्मा

A. प्रथम व द्वितीय शताब्दी के यहूदियों में यह सामान्य अनुष्ठान था।

1. मंदिर की उपासना की तैयारी में, शुद्धता का अनुष्ठान
2. नए यहूदियों द्वारा स्वयं को बपतिस्मा देना। यदि कोई अन्यजाति में से यहूदी धर्म स्वीकार करता था तो उसे निम्न तीन बातें करनी पड़ती थीं :
   a. पुरुषों को खतना कराना जरूरी था।
   b. तीन गवाहों के सामने स्वयं को जल में डुबोकर बपतिस्मा लेना पड़ता था।
   c. मंदिर में जाकर बलिदान चढ़ाना पड़ता था।
3. शुद्धता प्राप्त करने का कार्य (लैव्य. 15)

प्रथम शताब्दी के अलगाववादी समूह जैसे असेनी लोगों में, बपतिस्मा बार-बार शुद्धता प्राप्त करने की एक विधि थी। परंतु यहूदीवाद में यूहन्ना के मनफिराव के बपतिस्मा द्वारा अब्राहम की संतानें अन्य जातियों की तरह ग्रहण की गईं।

B. पुराने नियम के कुछ कार्यों को शुद्धता का अनुष्ठान माना जा सकता है

1. आत्मिक शुद्धता के रूप में (देखें, यशा. 1:16)
2. नियमित धार्मिक विधि के रूप में जो याजक द्वारा की जाती है (निर्ग. 19:10; लैव्य. 16)।

इस बात को जान लेना चाहिए कि यहूदी संस्कृति में प्रथम शताब्दी के अन्य सब बपतिस्मो का संचालन (मत्ती 3:7-12) स्वयं होता था। केवल यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की पुकार ने उसे इस पश्चाताप के बपतिस्में का संचालक और मूल्यांकनकर्ता बनाया (देखें, मत्ती 3:6)।

II. कलीसिया में बपतिस्मा

A. धर्म वैज्ञानिक उद्देश्य (Theological Purposes)

1. पापों की क्षमा - प्रेरि. 2:38; 22:16
2. पवित्र आत्मा पाने के लिए - प्रेरि. 2:38 (प्रेरि. 10:44-48)
3. मसीह के साथ एकता के लिए - गला. 3:26-27
4. कलीसिया में शामिल होने के लिए - 1 कुरि. 12:13
5. परमेश्वर के अधीन होने का प्रतीक - 1 पत. 3:20-21
6. आत्मिक मृत्यु और जी उठने का प्रतीक - रोमि. 6:1-5

B. बपतिस्मा आरम्भिक कलीसिया में सार्वजनिक रूप से अपने विश्वास का अंगीकार करने का सुअवसर था, यह उद्धार पाने का माध्यम नहीं था, परन्तु यह बताना था कि यीशु ही प्रभु है। याद रखें कि आरम्भिक कलीसिया घरों या सताव के कारण गुप्त स्थानों में आराधना करती थी, उनके पास इमारतें नहीं थीं।

C. अनेक टीकाकार कहते हैं कि 1 पतरस की पत्री बपतिस्मा संबंधी उपदेश है। ऐसा हो सकता है, परन्तु केवल यही विकल्प नहीं है। यह सत्य है कि पतरस अक्सर बपतिस्मे को विश्वास का एक आवश्यक कार्य मानता था (देखें, प्रेरि. 2:38, 41; 10:47)। तो भी यह संस्कार नहीं, परन्तु विश्वास की क्रिया है जो मसीह की मृत्यु गाड़े जाने और उसके साथ जी उठने में संभागी होने का प्रतीक है (देखें, रोमि. 6:7-9; कुलु. 2:12)।यह कार्य एक प्रतीक है, न कि एक संस्कार ; यह कार्य अंगीकार करने का अवसर है, न कि उद्धार का माध्यम।

D. बपतिस्मा और पश्चाताप (प्रेरि. 2:38 में)

प्रेरि. 2:38 के सम्बन्ध में करटिस वौधन (Curtis Vaughan) अपनी एक पुस्तक एक्ट ("Acts") में पेज 28 पर एक फुटनोट में इस प्रकार लिखते हैं :

"बपतिस्मा” के लिए जो यूनानी शब्द है, वह तृतीय व्यक्तिवाचक आदेशात्मक वचन है (Third Person Imperative)। और "पश्चाताप" के लिए जो शब्द है वह द्वितीय व्यक्तिवाचक आदेशात्मक वचन (Second Person Imperative) है। इससे सिद्ध होता है कि पतरस की प्राथमिक माँग बपतिस्मा नहीं परंतु पश्चाताप करने की थी।"

ऐसा करके पतरस यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले (देखें मत्ती 3:2) और यीशु (मत्ती 4:17) का अनुसरण कर रहा था। इन दोनों की तरह उसने भी पश्चाताप पर जोर दिया। इस प्रकार पश्चाताप आत्मिक कुंजी प्रतीत होता है और बपतिस्मा आत्मिक परिवर्तन को दर्शाने वाला बाहरी चिन्ह प्रतीत होता है। नए नियम में उन विश्ववासियों का उल्लेख नहीं है जिन्होंने बपतिस्मा नहीं लिया। आरम्भिक कलीसिया में बपतिस्मा विश्वास का सार्वजनिक अंगीकार था । यह वह अवसर था जब मसीह पर विश्वास की सबके सामने साक्षी दी जाती थी, न कि यह उद्धार पाने का साधन था। हमें याद रखना चाहिए कि पतरस के दूसरे उपदेश में बपतिस्मे का जिक्र नहीं है बल्कि पश्चाताप का जिक्र है (देखें, प्रेरि. 3:19; लू. 24:17)। बपतिस्मा यीशु द्वारा स्थापित एक आदर्श था (देखें, मत्ती 3:13-18) यीशु ने बपतिस्मे की आज्ञा दी (मत्ती 28:19)। नए नियम में उद्धार पाने के लिए बपतिस्मे की आवश्यकता पर नहीं बताया गया है जो एक महत्वपूर्ण प्रश्न है सब विश्ववासियों से बपतिस्मा लेने की उम्मीद की जाती है। हमें इस

बात से भी सावधान रहना चाहिए कि बपतिस्मा संस्कार संबंधी माध्यम बने। उद्धार विश्वास का विषय है न कि अच्छे कार्यों व अच्छे वचनों का विषय।

E. मसीह लोगों में बपतिस्मा उतना महत्वपूर्ण नहीं है जितना कि बपतिस्मा लेने वाले व्यक्ति का हृदय पर पश्चाताप, विश्वास करना महत्वपूर्ण है। यह सच है कि ग्रीक किर्या की व्युत्पत्ति "डुबकी" या "डुबाना" है। लेकिन याद रखें, व्युत्पत्ति वर्तमान उपयोग को निरूपित करने के लिए हमेशा एक अच्छा तरीका है। नए नियम में बपतिस्मा के उदाहरण हो सकते है
   1. डुबकी
   2. उंडेलना
   3. छिड़काव
   मेरे लिए, समय तत्व विधा की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण धार्मिक मसला है।

अधिक ऐतिहासिक जानकारी के लिए, अबिडी वॉल्यूम देखें।1, पेज 583-593 और मिलार्ड एरिकसन, मसीही धर्मशास्त्र, 2 इडी संस्करण, पेज1098-1114 (ABD, vol. 1, pp. 583-593 and Millard Erickson, *Christian Theology*, 2ed edition, pp. 1098-1114.)

Copyright © 2014 Bible Lessons International

▪ **"यीशु मसीह के नाम से"** यह इब्रानी मुहावरा है (योएल 2:32 इसकी झलक है) जो यीशु के व्यक्तित्व अथवा चरित्र की ओर संकेत करता है। संभव है यह आरम्भिक कलीसिया की बपतिस्मा विधि का सूत्र हो, जो प्रार्थी द्वारा दोहराया जाता था कि "मैं विश्वास करता हूं कि यीशु ही प्रभु है" (देखें, रोमियों 10:9-13; 1 कुरिन्थियों 1:13-15) यह दोनों प्रकार का अंगीकार है, धर्म वैज्ञानिक अंगीकार तथा व्यक्तिगत विश्वास की अंगीकार। महान आज्ञा में, जो मत्ती 28:19-20 में पाई जाती है, त्रिएक नाम बपतिस्मा का फार्मूला है। हमें दिखावे के संस्कार से सावधान रहने की ज़रूरत है। फार्मूला इतना ज़रूरी नहीं, जितना हृदय का बपतिस्मा होना ज़रूरी होता है। "मसीह" की विस्तृत जानकारी के लिए देखें प्रेरितों के काम 2:31 की विशेष टिप्पणी।

NASB, NJB	**"अपने पापों की क्षमा के लिए"**
NIV	**"अपने पापों की क्षमा पाने के लिए"**
NKJV	**"ताकि हमारे पापों की क्षमा हो"**
NRSV	**"ताकि हमारे पापों को क्षमा किया जा सके"**

यहाँ एक धर्म-वैज्ञानिक प्रश्न है कि पापों की क्षमा का कार्य कैसे होता है? क्या पापों की क्षमा "मन-फिराने" से मिलती है या "बपतिस्मा लेने" से? क्या पापों की क्षमा पश्चात्ताप और बपतिस्मा लेने पर आधारित है?

इस विषय में बहुत सी बातें कही जा सकती हैं, सबसे सामान्य बात यह हो सकती है कि पापों की क्षमा पाने "के इरादे से" अथवा पापों की क्षमा पाने "के उद्देश्य से" बपतिस्मा लेना। अधिकांश बैपटिस्ट विद्वान धर्म वैज्ञानिक कारणों से "के कारण" शब्द प्रयोग करते हैं, परन्तु यह ज़रा सा विकल्प है। परन्तु अक्सर हमारी सात पूर्वधारणाएँ इस व्याकारण संबंधी विश्लेषण में काम करती हैं। अतः हमें अन्य सामान्तर बातों की जाँच करने और फिर अपनी व्यवस्थित धर्मवैज्ञानिक विचारधारा बनाने की अपेक्षा इस संबंध में स्वयं बाइबल को बोलने देना चाहिए। सभी व्याख्याकार ऐतिहासिक रूप से, संस्थागत रीति से और अपने अनुभवों के आधार पर विचार व्यक्त करते हैं और उनसे बंधे रहे हैं।

प्रेरितों के काम नामक पुस्तक में पाए जाने वाले उपदेशों में मसीह पर विश्वास द्वारा पापों की क्षमा होने का मूल विषय बार-बार दोहराया गया है (देखें पतरस के उपदेश 2:38; 3:19; 5:31; 10:43; तथा पौलुस के उपदेश 13:38)।

▪ **"पवित्र आत्मा का दान पाओगे"** यह निकट भविष्य की ओर संकेत करने वाला वाक्य है। पवित्र आत्मा के दान इस प्रकार हैं:

1. सुनिश्चित उद्धार पाना।
2. पवित्र आत्मा की आन्तरिक अनुभूति होना।
3. सेवा कार्य के लिए योग्य बनाया जाना।
4. मसीह के स्वरूप और समानता में बढ़ना।

हमें उद्धार से संबंधित घटनाओं के क्रम और अंशों को खिसकाना या हटाना नहीं चाहिए क्योंकि अक्सर प्रेरितों के काम में ये घटनाएं भिन्न-भिन्न हैं। इस पुस्तक को लिखने का उद्देश्य किसी उपयुक्त सूत्र की शिक्षा देना अथवा क्रमबद्ध धर्म वैज्ञानिक विवरण प्रस्तुत करना नहीं है बल्कि जो घटनाएँ घटीं उनको लेखबद्ध करना है ;देखें हाव् टू रीड बाइबल फॉर आल इट्स वर्थ पेज 94-112, (*How to Read the BIble for All its Worth,* page 94-112)।

क्या किसी व्याख्याकार को उद्धार के कार्य के क्रम का दावा करने के लिये इस विषय का इस्तेमाल करना चाहिए: पश्चात्ताप करना, बपतिस्मा लेना, पापों की क्षमा और फिर आत्मा के वरदान? मेरा धर्म विज्ञान अपेक्षा रखता है कि आत्मा आरम्भ से क्रियाशील रहता है (यूहन्ना 6:44, 65) तथा निश्चय होने की प्रक्रिया में गम्भीर रहता है (यूहन्ना 16:8-12), तथा पश्चाताप (प्रेति. 5:31; 11:18; 2 तीमु. 2:25) और विश्वास करने तक गम्भीर रहता है। आरम्भ से अन्त तक पवित्र आत्मा ही प्रधान और आवश्यक बात है (रोमियों 8:9)। वह निश्चित रूप से इस शृंखला में अंतिम नहीं हो सकता।

इन सब विषयों को समझने में एफ.एफ. ब्रूस द्वारा लिखित पुस्तक "F.F.Bruce, *Answers To Question*" ने मेरी बहुत सहायता की। इस पुस्तक में वे प्रेरितों 2:38 के विषय में कुछ लाभप्रद टिप्पणियाँ करते हैं, मुझे निम्नलिखित टिप्पणी ने बहुत आकर्षित किया:

"पवित्र आत्मा को पाने का यह अनुभव बपतिस्मा पाने से पहले (प्रेरि. 10:44), बपतिस्मा पाने के बाद (प्रेरि. 2:38) अथवा बपतिस्मा पाने के बाद चेलों द्वारा सिर पर हाथ रखने (प्रेरित. 8:16; 19:54) के द्वारा किया जा सकता है (पेज 167)।

आधुनिक लोग स्पष्ट सिद्धान्त-वक्तव्य चाहते हैं जिसे स्वीकार किया जा सके, परन्तु आमतौर पर वे व्याख्या के "मूलपाठ प्रमाण" के तरीके पर ऐतराज करते हैं और केवल उन्हीं पाठों को अलग करते हैं जो उनकी धारणाओं और समझ के अनुसार उपयुक्त होते हैं (देखें,seminar on Biblical Interpretation,www.Freebiblecommentary.org)

2:39 "प्रतिज्ञा तुम, और तुम्हारी सन्तानों के लिये" यह पुराने नियम की, सामूहिक, पीढ़ी से पीढ़ी तक की, पारिवारिक धारणा है (देखें निर्गमन 20:5-6 तथा व्य.वि. 5:9-10; 7:9)। बच्चों के विश्वास पर माता पिता का प्रभाव पड़ता है और उत्तरदायित्व माता-पिता का था (देखें, व्य.वि. 4:9; 6:6-7; 20-25; 11:19; 32:46)। मत्ती 27:25 के अनुसार इस सामूहिक प्रभाव के परिणाम बहुत भयंकर हैं ("इसका लहू हम पर और हमारी सन्तान पर हो')।

पीढ़ियों तक विश्वास के प्रभाव की इस प्रतिज्ञा ने मुझे परमेश्वर पर भरोसा रखने में मेरी बहुत सहायता की है कि परमेश्वर मेरे विश्वास द्वारा मेरी सन्तानों को आशीष देगा, और उनकी रक्षा करेगा (देखें व्य.वि. 7:9)। यह व्यक्तिगत जिम्मेदारी से इंकार करने वाली बात नहीं है बल्कि सामूहिक प्रभाव को बढ़ाने वाली बात है। मसीह के लिए मेरी विश्वासयोग्य सेवा और मेरा उस पर विश्वास अवश्य मेरे परिवार और उसके बाद उनके परिवार और इसी प्रकार आगे तक उन पर प्रभाव डालता रहेगा (व्य.वि. 7:9)। यह अत्यन्त सुखद आशा और प्रेरणा दायक प्रतिज्ञा है। विश्वास परिवारों के माध्यम से जीवित रहता है।

प्रेरितों के काम में परमेश्वर की इस प्रतिज्ञा (2:39) में पुराने नियम की कुछ निम्न बातें शामिल हैं:

1. पापों की क्षमा - प्रेरितों 2:38; 3:19; 5:31; 10:43; 13:38-39; 26:18
2. उद्धार - प्रेरितों 2:21; 4:12; 11:4; 13:26; 16:31
3. पवित्र आत्मा - प्रेरितों 2:38-39; 3:19; 5:32; 8:15-18; 10:44-48; 19:6

4. विश्राम के दिन - प्रेरितों 3:19

▪ **"और उन सब दूर-दूर के लोगों के लिए"** पतरस इस वक्त यहूदी लोगों को सम्बोधित कर है। मूल रूप से यह वाक्यांश उन लोगों की ओर संकेत करता है जो बन्धुआई के कारण तितर-बितर हो गए थे और जिन्हें परमेश्वर दुबारा उनके देश में अर्थात् प्रतिज्ञात देश में लाता है (देखें, यशायाह 57:19)। तौभी यह वाक्यांश कुछ हद तक उनकी ओर भी संकेत करता प्रतीत होता है जो गैर यहूदी हैं और यहोवा (YHWH) के ज्ञान से अपरिचित हैं (देखें, यशायाह 49:1; जकर्याह 6:15)। सुसमाचारों का शुभ सन्देश यह है कि एक सच्चा परमेश्वर (अर्थात् एकेश्वरवाद) जिसने सम्पूर्ण मानवजाति को अपने स्वरूप पर बनाया (1:26-27), उन सब से संगति रखने की इच्छा रखता है (देखें, 1 तीमु. 2:4; 2 पतरस 3:9)। मसीह में सम्पूर्ण मानवजाति की एकता की यही आशा है। अब न कोई यहूदी और न यूनानी, न दास और न स्वतन्त्र, न स्त्री और पुरुष, हम सब मसीह में एक हैं (देखें, इफि. 2:11-3:13)। पौलुस ये बातें गैर यहूदियों को सम्बोधित इफि. 2:13 और 17 करते हुए कहता है। पवित्र आत्मा के नए युग ने वह एकता स्थापित की जिसकी आशा भी नहीं थी।

विशेष शीर्षक: अद्वैतवाद

अपने नियन्त्रण से बाहर की कुछ बातों से प्रभावित होकर जैसे आँधी-तूफान, सूर्य व चंद्र ग्रहण, पुच्छलतारा, मौसम, प्राकृतिक आपदाएँ, मृत्यु इत्यादि, मानव जाति ने सदैव महसूस किया कि भौतिक जगत से भी सर्वोच्च कोई वास्तविकता अवश्य है। मानव वैज्ञानिक हमें बताते हैं कि उन्होंने कुछ प्राचीन उपदेशकों की कब्रों पर लिखा पाया है कि वे स्पष्ट रूप से आने वाले जीवन के लिये हैं, जिसे वे इस जीवन का विस्तृत रूप मानते थे।

सबसे पहली लिखित सभ्यता सुमेर (Sumer) की सभ्यता थी (दक्षिणी तिगरिस, इफ्रात नदी) जो ई.पू. 10,000 से 8,000 में आरम्भ हुई। उन्होंने अपने देवताओं के विषय में अपने विचारों और काव्यों की रचना की, जिनमें अन्य मानव जातियों की भाँति अनेक त्रुटियाँ थीं। उनकी परंपराएँ लिखे जाने से पहले मौखिक रूप में प्रचलित थीं।

फिर धीरे-धीरे ईश्वरीय ज्ञान में विकास हुआ :

1. पहले जड़ात्मकवाद या जीववाद
2. फिर बहुदेववाद
3. उसके बाद सर्वोच्च देवता (अथवा द्वैतवाद)

"एकेश्वरवाद" की परिकल्पना (एक व्यक्तिगत परमेश्वर), न कि "सर्वोच्च देवता" अथवा ईरान के पारसी धर्म की इस्राएल की अद्भुत और अलौकिक परिकल्पना है (अब्राहम और अयूब, 2000 ई. पू.)। इसके अलावा मिस्र में भी देवता पाए जाते थे, वहां का राज्य जो अखनाटेन कहलाता था, 1367-1350 या 1386-1361 ई. पू. , वह सूर्य की उपासना किया करता था और उसे एकमात्र देवता मानता था। (देखें, जे. अस्मान की पुस्तक "द माइंड ऑफ इजिप्ट", पेज 216-217) (*The Mind of Egypt*, pp 216-217 by J. Assmaan)।

एकेश्वरवाद की अवधारणा पुराने नियम में अनेक रूपों में व्यक्त की गई है :

1. "यहोवा (YHWH) के समान और कोई नहीं" देखें, निर्ग. 8:10; 9:14; व्यव. वि. 33:26; 1 राजा 8:23
2. "उसको छोड़ और कोई है ही नहीं ; देखें, व्यव. वि. 4:35,39,32:39; 1 शमू. 2:2; 2 शमू. 22:32; यशा. 45:21; 44:6,8; 45:6,21
3. "यहोवा (YHWH)एक ही है", ; देखें, व्यव. वि. 6:4; रोमि. 3:30; 1 कुरि. 8:4,6; 1 तीमु. 2:5; याकूब 2:19
4. "तेरे तुल्य कोई नहीं", देखें, 2 शमू. 7:22; यिर्म. 10:6
5. "केवल तू ही परमेश्वर है", भजन. 86:10; यशा. 37:16
6. "मुझसे पहले कोई परमेश्वर न हुआ और न मेरे बाद कोई होगा" यशा. 43:10
7. "मुझे छोड़ कोई परमेश्वर नहीं" यशा. 45:5,6,22
8. "यहोवा (YHWH) ही इन सभीं का कर्ता है", देखें यशा. 45:7 (आमोस 3:6)।
9. "और दूसरा कोई नहीं ; उसके सिवाय कोई और परमेश्वर नहीं", यशा. 45:14,18

10."उद्धारकर्ता परमेश्वर मुझे छोड़ और कोई नहीं है", यशा. 45:21
11."मैं ही परमेश्वर हूँ और मेरे तुल्य कोई भी नहीं है" यशा. 46:9

यह स्वीकार किया जाना चाहिए कि यह महत्वपूर्ण शिक्षा प्रगतिशील प्रकाशन द्वारा पहुँची। इन उपरोक्त कथनों को एकेश्वरवाद कथन समझा जा सकता है (अन्य देवता भी पाए जाते थे) जैसे : यहोशू 24:15; 1 राजा 18:21), परन्तु हमारे लिए तो एक ही परमेश्वर है (देखें, निर्ग. 15:11; 20:2-5; व्यव. वि. 5:7; 6:4,14; 10:17; 32:12; 1 राजा 8:23; भजन. 83:18; 86:8; 136:1-9)

आरम्भ के पाठांश जिनमें एकेश्वरवाद या एक परमेश्वर के बारे में बताया गया है वे इस प्रकार हैं : निर्ग. 8:10; 9:14; 20:2-3; व्यव. वि. 4:35,39; 33:26)। सम्पूर्ण दावे यशायाह 43-46 में पाए जाते हैं (देखें, 43:10-11; 44:6,8; 45:7,14,18,22; 46:5,9)।

पुराने नियम में अन्य देशों के देवताओं को तुच्छ कहा गया है :

1. वे मानवीय रचना हैं - व्यव. वि. 4:28; 2 राजा 19:18; भजन. 115:4-8; 135:15-18; यशा. 2:8; 17:8; 37:19; 40:19; 41:7,24,29; 44:10,12; 46:6-7; यिर्म. 10:3-5; प्रका. 9:10
2. पिशाच - व्यव. वि. 32:17; भजन. 106:37; यशा. 8:19; 19:3; 1 कुरि. 10:20; प्रका. 9:20
3. व्यर्थ, खाली - व्यव. वि. 32:21; 2 राजा. 17:15; भजन. 31:6; यशा. 2:18; 41:29; यिर्म. 2:5; 10:8; 14:22; 8:19
4. ईश्वर नहीं है - व्यव. वि. 32:21; 2 इति. 13:9; यशा. 37:19; यिर्म. 2:11; 5:7; 1 कुरि. 8:4-5; 10:20; प्रका. 9:20

नया नियम व्यव. वि. 6:4 को रोमि. 3:30; 1 कुरि. 8:4,6; इफि. 4:6; 1 तीम. 2:5; तथा याकूब 2:19 में उद्धरित करता है। यीशु ने इसे सबसे बड़ी आज्ञा के रूप में मत्ती 22:36-37; मर. 12:29-30; तथा लूका 10:27 में उद्धरित किया। पुराना नियम और नया नियम दोनों आत्मिक प्राणियों जैसे दुष्टात्माएँ, स्वर्गदूत इत्यादि की वास्तविकता को भी स्वीकार करता है, परन्तु केवल एक ही सृष्टिकर्ता तथा उद्धारकर्ता परमेश्वर को मानता है देखें विशेष विषय स्वर्गदूत और दुष्ट आत्माएँ (यहोवा, उत्पत्ति 1:1)।

बाइबल का एकेश्वरवाद (Monotheism) इन बातों द्वारा दर्शाया जाता है :

1. परमेश्वर अलौकिक और एक ही है (वस्तुरूप विज्ञानं को माना जाता है, निर्दिष्ट नहीं है, व्यवस्था 6: 4)
2. परमेश्वर व्यक्तिगत है (देखें, उत्प. 1:26-27; 3:8)
3. परमेश्वर नैतिक है (निर्गमन 20; 34: 6; नेह 9:17; भजन 103: 8-10)
4. परमेश्वर ने मनुष्यों को उनकी छवि में बनाया (उत्त्पति 1: 26-27) संगती के लिए (# 2)। वह ईर्ष्या करने वाला परमेश्वर है (निर्गमन 20: 5-6)

नये नियम के अनुसार :

1. परमेश्वर ने तीन अनंत व्यक्तित्वों द्वारा अपना प्रकाशन दिया (देखें विशेष विषय : त्रिएकत्व)
2. परमेश्वर पूर्ण रूप से यीशु में प्रकट हुआ (देखें, यूह. 1:1-14; कुलु. 1:15-19; इब्रा. 1:2-3)
3. परमेश्वर के एकमात्र पुत्र का बलिदान, पतित मानव जाति के लिए परमेश्वर की अनन्त योजना है (यशा. 53; मर. 10:45; 2 कुरि. 5:21; फिलि. 2:6-11; इब्रानियों) (विशेष विषय: यहोवा की YHWH'S अनन्त मुक्ति योजना)

Copyright © 2014 Bible Lessons International

"जितनो को प्रभु हमारा परमेश्वर अपने पास बुलाएगा" यह निकट भविष्य में होने वाली क्रिया है। मूल रूप से इसका संकेत उनकी ओर है जो यहूदी तितर-बितर हैं। परमेश्वर हमेशा पहल करता है (देखें यूहन्ना 6:44, 65)। हम यहेजकेल 18:32; यूहन्ना 3:16; 1 तीमु. 2:4; 2 पतरस 3:9 से जानते हैं कि परमेश्वर मानव जाति को अपने पास बुलाता है, और उन्हें प्रत्युत्तर देना चाहिए।

बाइबल के अनुसार शब्द ''सब'' और ''बहुत'' समानान्तर है और साथ-साथ चलते हैं परस्पर तुलना करें, यशा. 53:6 और यशा. 53:11-12 में पाए जाने वाले शब्द ''सब'' व ''बहुत'' की तथा रोमियों 5:18 और रोमियों 5:19 के ''सब'' व ''बहुत'' शब्दों की)। परमेश्वर का हृदय पवित्र मानवजाति के लिए धड़कता है जो उसके स्वरूप (उत्पत्ति 1:26-27) पर सृजी गई, तथा उसकी सहभागिता के लिये रची गई थी (उत्पत्ति 3:8)।

2:40 ''बहुत और बातों से'' यह पाठांश में पाया जाने वाला एक प्रमाण है कि जो उपदेश प्रेरितों के काम की पुस्तक में हैं, वे सारांश मात्र हैं। यही बात सुसमाचारों में पाई जाने वाली यीशु की शिक्षाओं और प्रचार के सम्बन्ध में भी सत्य है कि वे मात्र सारांश हैं। हम इन सारांशों को प्रेरणा प्राप्त और ठीक स्वीकार करते हैं। प्रथम शताब्दी के मसीही इन बातों को स्मरण रखने और मौखिक रूप से इनको प्रस्तुत करने के अभ्यस्त थे।

▪ **''गवाही दे देकर समझाया''** यहां पर जो यूनानी शब्द "*dia* plus *marturomai*" प्रयुक्त किया गया है वह लूका का एक प्रिय शब्द है (देखें, प्रेरितों 2:40; 8:25; 10:42; 18:5; 20:21, 23, 24; 23:11; 28:23; लूका 16:28)। सुसमाचार इतना महत्वपूर्ण और आवश्यक है कि इसका प्रचार करने अथवा इसे सुनाने में ढील नहीं दी जा सकती है।

▪ **''उन्हें समझाते रहे''** मसीह में परमेश्वर द्वारा दिए गए इस निमन्त्रण का मनुष्यों को अवश्य ही सकारात्मक प्रत्युत्तर देना चाहिए (देखें, यूहन्ना 1:12; 3:16; रोमियों 10:9-13)। यह परमेश्वर की सर्वोच्चता और मानवीय स्वतन्त्र इच्छा के बीच विरोधाभास समान है (देखें, फिलि. 2:12-13)।

NASB, NKJV ''अपने आप को बचाओ''
NRSV, TEV, NJB ''स्वयं को बचाओ''

यह उद्धार के सम्बन्ध में एक धर्म वैज्ञानिक व्याकुलता है (देखें, फिलि. 2:12-13)। क्या परमेश्वर के विषय में यही काफी है कि वह सर्वोच्च है, अथवा सुनने वालों को उनके जीवनों में परमेश्वर को कार्य करने की अनुमति देना चाहिए?

यहां ''बचाओ'' के लिए प्रयुक्त यूनानी शब्द (*sōsō*) इब्रानी शब्द यशहा ((*yasha*, BDB 446) की धारणा प्रस्तुत करता है (देखें, निर्गमन 14:30) जो सांसारिक छुटकारे को प्रकट करता है, (देखें याकूब 5:15, 20), जबकि नए नियम में इसका प्रयोग आत्मिक छुटकारे या आत्मिक उद्धार की ओर संकेत करता है (देखें, याकूब 1:21; 2:14; 4:12)।

विशेष शीर्षक उद्धार (ग्रीक किर्या काल)

उद्धार, मसीह में परमेश्वर के साथ प्रतिदिन की संगति है, न कि हमारे स्वयं के भले कार्यों द्वारा अर्जित कार्य। जब कोई मसीह पर विश्वास लाता है, तो यह कार्य रूक नहीं जाता, परन्तु केवल आरम्भ मात्र है (पहले एक फाटक है, फिर एक सड़क है, देखें, मत्ती 7:13-14)।यह जीवन-बीमा (Insurance Policy) नहीं है, न ही स्वर्ग जाने का टिकट है, परन्तु एक जीवन है जो मसीह की समानता में ढलता जाता है (देखें, रोमि. 8:28-29; 2 कुरि. 3:18; 7:1; गला. 4:19; इफि. 1:4; 4:13; 1 थिस्स. 3:13; 4:3,7; 5:23; 1 पत. 1:15)। अमेरिका की एक कहावत है, "जो पति-पत्नी जितने लम्बे समय तक साथ-साथ जीवन व्यतीत करते हैं, उतने ही वे आपस में एक समान दिखाई देते हैं। उद्धार का उद्देश्य भी यही होता है।

पूर्ण किए हुए कार्य के समान उद्धार (Aorist) (भूतकाल)

- प्रेरि. 15:11
- रोमियो 8:24
- 2 तीम. 1:9
- तीतुस 3:5

- रोमियो 13:11 (वर्तमान और भविष्य संबंधी)

उद्धार, वर्तमान की स्थिति के रूप में : (पूर्ण कलि**न**)

- इफिसियों 2:5,8

उद्धार निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया के रूप में : **(**वर्तमान काल)

- 1 कुरिन्थियों 1:18; 15:2
- 2 कुरिन्थियों 2:15
- 1 पतरस 3:21

उद्धार, भविष्य में परिपूर्णता के रूप में : (भविष्य कालिन क्रिया)

- रोमियो 5:9,10; 10:9,13
- 1 कुरिन्थियों 3:15; 5:5
- फिलिप्पियों 1:28
- 1 थिस्सलुनीकियों 5:8-9
- इब्रानियों 1:14; 9:28
- 1 पतरस 1:5

अतः उद्धार विश्वास लाने पर आरम्भ होता है (देखें, यूहन्ना 1:12; 3:16; रोमियों 10:9-13), पर यह जीवन शैली के विश्वास में प्रकाशित होना चाहिए (देखें, रोमि. 8:29; गला. 2:19-20; इफि. 1:4; 2:10), इसकी परिपूर्णता एक दिन उसे अर्थात प्रभु को देखने में होगी (देखें, 1 यूहन्ना 3:2)। यह अन्तिम अवस्था महिमान्वित किया जाना कहलाती है (देखें, रोमियों 8:28-30)। इसे इस प्रकार भी समझा जा सकता है :

1. आरंभिक उद्धार - धर्मी ठहराया जाना (पाप के दण्ड से उद्धार)
2. प्रगतिशील उद्धार - पवित्रीकरण (पाप की सामर्थ्य से उद्धार पाना)
3. अन्तिम उद्धार - महिमान्वित किया जाना (पाप की उपस्थिति से उद्धार)

Copyright © 2014 Bible Lessons International

▪ **"यह टेड़ी पीढ़ी "** यह संभवतः व्यवस्थाविवरण 32.5 और भजन संहिता 78:8 की ओर संकेत है। पुराने नियम में शब्द "सीधा" "धर्मी" "खरा" "न्याय" की उत्पत्ति नदी किनारे के सरकण्डों से हुई थी, (देखें विशेष शीर्षक प्रेरितों 3:14)। फिर यह नाप करने का अथवा निर्माण कार्य करने का रूपक बन गया अथवा सीधा मापदण्ड। परमेश्वर ने इसी रूपक को लेकर स्वयं अपना चरित्र प्रकट करने के लिए इसको चुना। परमेश्वर ही मापदण्ड है। इब्रानी और यूनानी भाषा में पाप की परिभाषा करने वाले शब्द इसी मापदण्ड से भटक जाने को कहा जाता है। (अर्थात् बिगड़ जाना, टेड़ा हो जाना) सम्पूर्ण मानव जाति को उद्धार पाने और सुधर जाने की ज़रूरत है।

2:41

NASB	**"ग्रहण किया"**
NKJV	**"प्रसन्नपूर्वक ग्रहण किया"**
NRSV	**"स्वागत किया"**
TEV	**"विश्वास किया"**
NJB	**"ग्रहण किया"**

यह एपोडेकोमाई का एक एओरिस्ट मध्य कणिका है। लूव और निदा, ग्रीक-इंग्लिश लेक्सिकन, इस शब्द के तीन उपयोगों की सूची (वोल.2, पृष्ठ 28)। Louw and Nida, *Greek-English Lexicon* (cf. vol.2, p. 28)

1. किसी का स्वागत करना
2. किसी बात को मानना अथवा किसी व्यक्ति को सत्य मानना तथा उपयुक्त प्रत्युत्तर देना।
3. सत्य को ग्रहण करना, अथवा किसी बात का या किसी व्यक्ति का मूल्य जानना।

लूका अक्सर इस शब्द का प्रयोग करता है (देखें, लूका 8:40; 9:11; प्रेरि. 2:41; 18:27; 24:3; 28:30)। सुसमाचार एक व्यक्ति है जिसका स्वागत करना चाहिए, उसकी सच्चाई है जिस पर विश्वास करना चाहिए, और जीवन उसी के समान है जिसे व्यतीत करना चाहिए। ये तीनों बातें आवश्यक हैं।

▪ **" बपतिस्मा लिया"** एक यहूदी को मंदिर में प्रवेश के लिये बपतिस्मा आवश्यक था। यहूदी धर्म स्वीकार करने वाले स्वयं ही बपतिस्मा लेते थे। इन सुनने वालों के लिए बपतिस्मा लेना एक धार्मिक क्रिया थी जिसकी उम्मीद की गई थी और इसमें नया अर्थ निहित था। यीशु को भी बपतिस्मा दिया गया था (देखें मत्ती 3:13-17); यीशु ने बपतिस्मा देने की हमें आज्ञा दी है (मत्ती 28:19) उसी ने इसकी स्थापना की। नए नियम में एक भी विश्वासी ऐसा नहीं था जिसने बपतिस्मा न लिया हो। मुझे लगता है कि बपतिस्मा लेना यहूदी धर्म से बिल्कुल नाता तोड़ लेना और परमेश्वर के लोगों के रूप में नया जीवन आरम्भ करना था अर्थात् कलीसिया के रूप में (गलातियों 6:16)।

▪ **" तीन हज़ार मनुष्यों "** यह लगभग की संख्या है परन्तु बहुत बड़ी संख्या है। इन चश्मदीद गवाहों के हृदयों पर पतरस के सन्देश का गहरा प्रभाव पड़ा। वे विश्वास करने की छलांग लगाने को तैयार थे।

1. यीशु ही मसीह था
2. मसीह को दुख उठाना आवश्यक था
3. उस पर विश्वास करना ही पापांे की क्षमा पाने का एकमात्र उपाय था
4. बपतिस्मा लेना उपयुक्त था

यह कार्य करने के लिए आवश्यकता थी, तुरन्त पक्का और जीवन परिवर्तन करने वाले निर्णय लेने की (जैसा कि आज भी आवश्यक है)। देखें विशेष शीर्षक: करियगमा प्रेरित 2 :14 *Kerygma* Acts 2:14.

2.42 " वे लगातार लौलीन रहे" लूका इस धारणा का अक्सर इस्तेमाल करता है (देखें, प्रेरि. 1:14; 2:42, 46; 6:4; 8:13; 10:7)। उन बातों पर ध्यान दें जिन्हें वे इकट्ठा होकर करते थे:

1. शिक्षा पाना (देखें, प्रेरि. 2:42; 4:2, 18; 5:21, 25, 28, 42)
2. संगति
3. रोटी तोड़ना (प्रभु भोज, 2:46 की टिप्पणी)
4. प्रार्थना (देखें, प्रेरि. 2:43-47)

हमें उपरोक्त बातें नए विश्वासियों को सिखाना चाहिए। ये नए विश्वासी संगति और सच्चाई के भूखे थे। देखें

विशेष शीर्षक: कोइनोनिया

शब्द "कोयनोनिया" (सहभागिता) का अर्थ है :

1. किसी मनुष्य के साथ गहरा संबंध (Close Association)
   a. पुत्र के साथ (देखें, 1 कुरि. 1:9; 1 यूह. 1:6)
   b. पवित्र आत्मा के साथ (देखें, 2 कुरि. 13:14; फिलि. 2:1)
   c. पिता और पुत्र के साथ (देखें, 1 यूह. 1:3)
   d. अन्य वाचागत भाई/बहनों के साथ (देखें, प्रेरि. 2:42; 2 कुरि. 8:23; गला. 2:9; फिलेमोन 1:17; 1 यूह. 1:3,7)।
   e. दुष्ट के साथ नहीं, (देखें, 2 कुरि. 6:14)।
2. वस्तुओं अथवा समूहों के साथ गहरा संबंध
   a. सुसमाचार के साथ (देखें, फिलि. 1:5; फिलेमोन पद 6)
   b. मसीह के लहू के साथ (देखें, 1 कुरि. 10:16)
   c. अंधकार के साथ नहीं (देखें, 2 कुरि. 6:14)
   d. दुखों के साथ (देखें, 2 कुरि. 1:7; फिलि. 3:10; 4:14; 1 पत. 4:13)

3. उदारता से दान या सहायता कार्य (देखें, रोमि. 12:13; 15:26; 2 कुरि. 8:4; 9:13; फिलि. 4:15; इब्रा. 13:16)
4. मसीह में परमेश्वर के अनुग्रह का वरदान जो मानवजाति की परमेश्वर के साथ और भाई बहनों के साथ संगति स्थापित करता है।

यह शब्द मनुष्यों के, मनुष्यो के साथ संबंधों (Horizontal Relationship) को दर्शाता है, जिसके द्वारा सृष्टिकर्ता के साथ मनुष्यों के संबंधों (Vertical Relationship) की उत्पत्ति होती है। यह शब्द "सहभागिता" मसीही समाज के एक जुट रहने और आनन्द मनाने पर भी बल देता है (देखें इब्रा. 10:25)।

Copyright © 2014 Bible Lessons International

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 2:43-47

43और सब लोगों पर भय छा गया, और बहुत से अद्भुत काम और चिन्ह प्रेरितों के द्वारा प्रगट होते थे। 44और सब विश्वास करनेवाले इकट्ठे रहते थे, और उनकी सब वस्तुएं साझे में थीं। 45वे अपनी अपनी सम्पत्ति और सामान बेच-बेचकर जैसी जिसकी आवश्यकता होती थी बाँट दिया करते थे। 46वे प्रतिदिन एक मन होकर मन्दिर में इकट्ठे होते थे, और घर-घर रोटी तोड़ते हुए आनन्द और मन की सीधाई से भोजन किया करते थे, 47और परमेश्वर की स्तुति करते थे, और सब लोग उनसे प्रसन्न थेः और जो उद्धार पाते थे, उनको प्रभु प्रतिदिन उनमें मिला देता था।

2:43-47, यह लूका की अनेक संपादकीय टिप्पणियों में से एक प्रतीत होती है (देखें, प्रेरि. 6:7; 9:31; 12:24; 16:5; 19:20)। देखें परिचय, ‘‘उद्देश्य तथा रूपरेखा, (Purpose and Structure) A.

2:43 ‘‘सब लोगों पर भय छा गया’’ परमेश्वर की उपस्थिति और उसके सामथ्र्य से पवित्र वातावरण हो गया था यहां तक कि पापी मनुष्य भी उसकी पवित्रता का अनुभव करने लगे थे।

2:44 ‘‘सब विश्वास करने वाले इकट्ठे’’ प्रेरि. 3:16 की टिप्पणी देखें।

▪ **‘‘और उनकी सब वस्तुएँ साझे में थीं’’** ‘‘समाज’’ में यह प्रारम्भिक, प्रयोग सफल नहीं रहा, (देखें, प्रेरि. 4:32-5:11)। यह विश्वव्यापी सिद्धान्त बनाए जाने के लिये नहीं था बल्कि एक प्रेमपूर्ण प्रयास, आपसी सहयोग की सामाजिक भावना अथवा विश्वास का कदम था। यह इस बात का श्रेष्ठ उदाहरण है कि बाइबल में लिखित हर बात इसलिए नहीं है कि उसे विश्व स्तर पर लागू किया जाए। इन आरम्भिक विश्वासियों में एक दूसरे के लिए महान प्रेम था। काश कि हम ऐसे प्रेम को पुनः अर्जित कर अपने मध्य परमेश्वर की सामर्थ और उसकी उपस्थिति को अनुभव कर सकते (देखें, यूहन्ना 17:11,21-23)।

2:46 ‘‘एक मन होकर’’ इस एकता के उद्देश्य के लिए आरम्भिक कलीसिया जानी जाती थी; यह उनकी विशेषता थी (देखें, प्रेरि. 1:14; 2:46; 4:24; 5:12)। यह नहीं कहा जा सकता है कि वे हर बात के लिए तैयार रहा करते थे, बल्कि उनके दिलो-दिमाग परमेश्वर के राज्य की प्राथमिकताओं में ताने बाने की तरह बुने हुए थे, बजाए इसके कि अपनी व्यक्तिगत रूचियों अथवा व्यक्तिगत कार्य सूची में उलझे रहते हों।

▪ **‘‘मन्दिर में’’** संभवतः वे सुलैमान के ओसारे में एकत्रित हुआ करते थे (देखें, प्रेरि. 3:11; 5:12)। यीशु ने वहाँ उपदेश दिए थे (देखें, यूहन्ना 10:23)। सुलैमान का ओसारा हेरोदेस के मन्दिर की पूर्वी दिशा में अन्यजातियों के बाहरी आंगन में एक बरामदा था (देखें, जोसेफस एन्टीक्वीटी 15.11.3)। रब्बी लोग वहां उपदेश दिया करते थे और उपदेश सुनने के लिए लोग प्रतिदिन वहां एकत्रित होते थे।

ध्यान दें कि प्रारम्भिक कलीसिया मंदिर में और शायद स्थानीय सभाघर में एकत्रित होती थी। लगभग सन् 70 में रब्बियों ने उनके विरुद्ध प्रतिबन्ध लगा दिया जिससे सभाघर के सदस्य यीशु की निन्दा करने लगे। परिणाम स्वरूप कलीसिया और यहूदीवाद के मध्य विभाजन हो गया। प्रारम्भिक कलीसिया के विश्वासियों ने अपनी

साप्ताहिक आराधना जारी रखी, परन्तु साथ ही, यीशु के पुनरुत्थान के स्मरण में प्रत्येक रविवार को भी एकत्रित होते थे। याद रखना चाहिए कि यीशु ने स्वयं भी तीन रविवार तक लगातार रात्री में चेलों से भेंट की थी।

▪ **''घर-घर रोटी तोड़ते हुए''** यदि ''रोटी तोड़ना'' प्रभुभोज विधि का ही एक विशेष शब्द है (जैसा लूका 22:19 में तथा 1 कुरि. 11:17-22; 2 पत. 2:13-14; यहूदा 12 के प्रीतिभोजों में है) तथा आरम्भिक कलीसिया में था, (प्रेरि. 20:7), तो इसका संकेत स्थानीय घरों के प्रतिदिन की भोजन संगति की ओर है (परन्तु हमें स्वीकार करना चाहिए कि इस शब्द का प्रयोग लूका 24:30, 35 में नियमित भोजन की संगति के लिये भी हुआ है) हमें अपनी संस्थागत प्रभु भोज विधियों के प्रति सावधान रहना चाहिए। सब कार्य मन की सीधाई से होना चाहिए।

NASB ''आनन्द और मन की सीधाई के भोजन किया करते थे''
NKJV ''आनन्द और मन की दीनता से''
NRSV ''आनन्द और उदार हृदय के साथ''
TEV ''आनन्द और विनम्र हृदय के साथ''
NJB ''आनन्द और उदारता के साथ''

उपरोक्त विभिन्न अनुवादों से प्रतीत होता है कि शब्द gasphelotes के अनुवाद करने में कठिनाई हुई है जिसका शाब्दिक अर्थ शान्त, या सीधा-सादा है, परन्तु इसके लाक्षणिक रूप से ''साधारण'' ''विश्वासयोग्य'' अथवा ''विनम्र'' के रूप में प्रयोग किया गया है। (लुआ एन्ड निडा) । देखें **विशेष शीर्षक: हृदय** at Acts 1:24

2 :47
NASB, NKJV "सभी लोगों के साथ समर्थन करना"
NRSV "सभी लोगों के साथ सद्भावना रखना"
TEV "सभी लोगों की सद्भावना का आनंद लेना"
NJB "सभी ने देखा"

''सब लोग उनसे प्रसन्न थे'' यह वाक्यांश बताता है, आरम्भिक कलीसिया के मसीही विश्वासियों को यरूशलेम के निवासी आदरपूर्वक दृष्टि से देखते थे। समाज के विभिन्न स्तरों के लोग इन प्रथम विश्वासियों के विषय में शुभ-शुभ सोचा करते थे। मसीही लोगों से रोमी अधिकारियों को कोई खतरा नहीं था और न ही रोमियों की शान्ति भंग होती थी (प्रेरितों के काम पुस्तक का एक उद्देश्य यही बात दर्शाना है) यहूदी धर्म के रब्बी लोगों से भी कलीसिया का आरम्भ में कोई झगड़ा नहीं था।

▪ **''प्रभु मिला रहे थे''** यह सकारात्मक क्रिया का सूचक है। बाइबल परमेश्वर की प्रभुसत्ता व सर्वोच्चता पर बल देती है। परमेश्वर की इच्छा के बिना कुछ नहीं हो सकता है। परमेश्वर सर्व सामर्थी है। फिर भी एकेश्वरवाद को मानने के इस पुराने नियम के तरीके को गलत समझा गया है (देखें प्रेरि. 2:39 की विशेष टीका)। इसमें मैं दो विशेष शीर्षक जोड़ना चाहूंगा, पहला सन्तुलन की आवश्यकता तथा दूसरा वाचा। मेरी आशा है इससे ज्ञान प्राप्त होगा।

विशेष शीर्षक: चुनाव/ पूर्वनिर्धारण और धर्मशास्त्रीय संतुलन की ज़रूरत

चुन लिया जाना एक अद्भुत धर्म-सिद्धांत है, तथापि यह पक्षपात या तरफ़दारी नहीं है, बल्कि दूसरों के लिए उद्धार पाने का माध्यम या साधन है। पुराने नियम में इस शब्द का उपयोग मुख्यतः सेवा के लिए किया जाता था ; नए नियम में मुख्य रूप से उद्धार के लिए इस शब्द का उपयोग किया गया है जो सेवा में प्राप्त होता है। बाइबल कभी भी परमेश्वर की सर्वोच्चता और मानव जाति की स्वतन्त्र इच्छा के बीच दिखाई देने वाले विरोधाभास में मेल-मिलाप नहीं दर्शाती है, परंतु दोनों को स्वीकार करती है। इस बाइबल संबंधी तनाव (Tension) के श्रेष्ठ उदाहरण हमें रोमि. 9 में परमेश्वर के चुनाव, तथा रोमि. 10 में मानवजाति के आवश्यक प्रत्युत्तर के विषय में मिलते हैं (देखें

रोमि. 10:11,13 और फिलिप 2:12-13)।

इस धर्म वैज्ञानिक तनाव (theological tension) की कुंजी संभवतः हमें इफिसियों 1:4 में प्राप्त हो सकती है। यीशु परमेश्वर का चुना हुआ जन है और हम सब उसमें चुने गए हैं (कालबार्थ)। पतित मानवजाति की आवश्यकता का समाधान परमेश्वर की ओर से यीशु मसीही ही है (कार्लबार्थ)। इफि. 1:4 यह बताकर भी इस विवाद को हल करने में हमारी सहायता करता है कि पहले से चुने जाने का उद्देश्य स्वर्ग नहीं है, परंतु पवित्रता (मसीह की समानता) है। हम अक्सर सुसमाचार से प्राप्त लाभों की ओर आकर्षित होते हैं और उत्तरदायित्वों की अनदेखी कर जाते हैं। परमेश्वर की बुलाहट इस समय के लिए है और साथ ही अनंत के लिए भी है।

धर्म सिद्धांतों की आवश्यकता अन्य सच्चाईयों के संबंध में पड़ती है, न कि एक असम्बन्धित सच्चाई के लिए। तारामण्डल बनाम एक तारा, इस प्रकार की तुलना करना अच्छा होगा। परमेश्वर पूर्वी तरीके से सच्चाई प्रस्तुत करता है, न कि पश्चिमी ढंग से। हमें उस तनाव को मिटाना नहीं चाहिए जो प्रान्तीय बोलियों के व विरोधाभासों के कारण सैद्धांतिक सच्चाई में उत्पन्न होते हैं :

1. पहले से ठहराया जाना बनाम मानवीय स्वतंत्र इच्छा।
2. विश्वासीयों की सुरक्षा बनाम दृढ़ रहना।
3. मूल पाप बनाम जानबूझकर पाप करना।
4. निष्पाप होना बनाम पाप कम मात्रा में करना।
5. आरम्भिक तुरन्त धर्मी ठहराया जाना और पवित्रीकरण बनाम प्रगतिशील पवित्रीकरण।
6. मसीही स्वतंत्रता बनाम मसीही उत्तरदायित्व।
7. परमेश्वर समझ से परे है बनाम वह अन्तर्निहित है।
8. परमेश्वर ज्ञान से परे है बनाम पवित्रशास्त्र द्वारा उसे जाना जा सकता है।
9. परमेश्वर का राज्य वर्तमान में है बनाम भविष्य में इसकी परिपूर्णता।
10. पश्चाताप परमेश्वर के वरदान के रूप में बनाम पश्चाताप वाचागत मानवीय आवश्यक प्रत्युत्तर।
11. यीशु दिव्य है बनाम यीशु मनुष्य है।
12. यीशु परमेश्वर के बराबर बनाम यीशु पिता के अधीन।

धर्म वैज्ञानिक अवधारणा "वाचा" (covenant) परमेश्वर की सर्वोच्चता को (जो हमेशा पहल करता और एजेंडा तैयार करता है) मनुष्यों द्वारा किए गए विश्वासपूर्ण पश्चाताप के साथ, जिसकी आज्ञा दी गई है, संयुक्त करती है (देखें, मर. 1:15; प्रेरि. 3:16,19; 20:21)। विरोधाभास की एक तरफ की व्याख्या करने और दूसरी तरफ को तुच्छ समझने से सावधान रहें। अपनी मनपसन्द धर्म शिक्षा अथवा प्रणाली को निश्चयपूर्वक बताने से भी सावधान रहिए।

Copyright © 2014 Bible Lessons International

विशेष शीर्षक: वाचा

"वाचा" के पुराने नियम के शब्द "बेरीथ" (berith) (BDB136, KB157) की परिभाषा देना सरल नहीं है। इब्रानी में मेल खाती हुई क्रिया (matching verb) नहीं है। परिभाषा देने के सारे प्रयास विफल और कायल न करने वाले प्रमाणित हुए। संभवतः सबसे अच्छा अनुमान यह है कि इसका अर्थ है "काटना" (to cut) (BDB144), जो पशु का बलिदान करना दर्शाता है और वाचा बान्धी जाती है (देखें उत्पत्ति 15:10,17)। बाइबल छात्र को इस शब्द "वाचा" का कार्य संबंधी अर्थ जानने का प्रयास करते रहना चाहिए।

वाचा वह माध्यम है जिसके द्वारा एक सच्चा परमेश्वर (देखें, विशेष विषय "एकेश्वरवाद" (Monotheism), अपनी रचना मानवजाति के साथ व्यवहार करता है। वाचा, सन्धि, समझौता इत्यादि शब्दों की अवधारणा इतनी जटिल है कि इससे संबंधित बाइबल के प्रकाशनों को समझने में कठिनाई होती है। इस अवधारणा में परमेश्वर की सर्वोच्चता और मानव की स्वतन्त्र इच्छा के बीच तनावपूर्ण स्थिति स्पष्ट दिखाई देती है। कुछ वाचाएँ पूर्ण रूप से परमेश्वर के स्वभाव और कार्यों पर आधारित होती हैं :

1. स्वयं सृष्टि रचना (उत्पत्ति 1-2)
2. नूह के साथ प्रतिज्ञा और सुरक्षा करना (उत्प. 6-9)
3. अब्राहम का बुलाया जाना (उत्प. 12)
4. अब्राहम के साथ वाचा बाँधना (उत्प. 15)
5. दाऊद के साथ वाचा (2 शमूएल 7; 1 इतिहास 17; भजन 89)

फिर भी, वाचा का स्वभाव प्रत्युत्तर की माँग करता है :

1. विश्वास द्वारा आदम को आज्ञापालन करना और वृक्ष का फल नहीं खाना था।
2. विश्वास द्वारा नूह को जहाज बनाना और पशु पक्षियों को एकत्रित करना था।
3. विश्वास द्वारा अब्राहम को घर छोड़ना, परमेश्वर के पीछे चलना और भविष्य के वंश पर विश्वास करना था।
4. विश्वास द्वारा मूसा इस्राएलियों को मिस्र से छुड़ाकर सीनै पर्वत तक लाया और व्यवस्था प्राप्त की (लैव्य. 26; व्यव. वि. 27-28; 30; इसप. विवि. 15,19)।

यही तनाव जिसमें मानवजाति के साथ परमेश्वर का संबंध निहित था, "नई वाचा" में भी वर्णित किया गया है (देखें, यिर्म. 31:31-34; इब्रा. 7:22; 8:6,8,13; 9:15; 12:24)।यहेज. 18:31 की यहेज. 36:27-38 से तुलना करने पर यही तनाव स्पष्ट देखा जा सकता है (यहोवा (YHWH) की प्रतिक्रिया)। क्या वाचा परमेश्वर के अनुग्रह पूर्ण कार्यों पर आधारित है अथवा मनुष्यों के द्वारा दिए गए आवश्यक प्रत्युत्तर पर? यह नई वाचा और पुरानी वाचा के मध्य पाया जाने वाला आवश्यक वाद-विवाद है। दोनों का लक्ष्य एक समान है :

1. यहोवा (YHWH) के साथ जो संगति उत्प. 3 में भंग हो गई थी, उसे फिर स्थापित करना
2. धर्मी लोगों की स्थापना करना जो परमेश्वर के गुण प्रकट कर सकें।

यिर्म. 31:31-34 की नई वाचा सारा तनाव दूर कर देती है, और ग्रहणयोग्य बनने के मानवीय प्रयासों का बहिष्कार कर देती है। परमेश्वर के नियम बाहरी नियम बनने के बदले में आंतरिक अभिलाषा बन जाते हैं। भक्त और धर्मी लोगों के लक्ष्य वही रहते हैं परंतु तरीका बदल जाता है। पतित मानव जाति ने स्वयं को परमेश्वर की समानता पर होने के अयोग्य प्रमाणित किया। इसका कारण परमेश्वर की वाचा नहीं, परंतु स्वयं मानवजाति की दुर्बलता और पापपूर्ण स्थिति थी (देखें, उत्प. 3; रोमि. 7; गलतियों 3)।
यही तनाव जो पुराने नियम की बिना शर्त की और शर्त सहित वाचाओं के बीच पाई जाती थी, नए नियम में भी पाई जाती है। यीशु मसीह द्वारा और उसके सम्पन्न कार्य द्वारा उद्धार बिल्कुल मुफ्त है, परन्तु पश्चाताप और विश्वास की मांग की जाती है (आरम्भ में और निरन्तर, देखें विशेष विषय : "नए नियम पर विश्वास" । यीशु एक विश्वासी के साथ अपने नए संबंध को "नई वाचा" कहता है (देखें, मत्ती 26:28; मर. 14:24; लूका 22:20; 1 कुरि. 11:25)। यह वैधानिक व अदालती घोषणा और मसीह के समान बनने की बुलाहट दोनों है (देखें, मत्ती 5:48; रोमि. 8:29-30; 2 कुरि. 3:18; 7:1; गला. 4:19; इफि. 1:4; 4:13; 1 थिस्स. 3:13; 4:3,7; 5:23; 1 पत. 1:15), तथा ग्रहण किए जाने का संकेत (रोमि. 4) तथा पवित्र बनने की बुलाहट है (मत्ती 5:48)। विश्वासी लोग अपनी योग्यता के आधार पर उद्धार नहीं पाते हैं, बल्कि आज्ञा पालन द्वारा (इफि. 2:8-10; 2 कुरि. 3:5-6)।भला जीवन उद्धार का प्रमाण बन जाता है, न कि उद्धार पाने का माध्यम (याकूब और 1 यूहन्ना देखें) परंतु अनंत जीवन की विशेषताएं दिखाई देने वाली होती है। यह तनाव नए नियम की चेतावनियों में स्पष्ट दिखाई देता है (देखें, विशेष विषय : "पथ-भ्रष्ट होना" ("APOSTASY")।

1. डी. ब्रेंट सैंडी की पुस्तक, प्लॉशर एंड प्रूनिंग हक्स: रीथिंकिंग द लैंग्वेज ऑफ बाइबल भविष्यवाणी और एपोकैलिक, पेज 44-47 (D. Brent Sandy's book, *Plowshares and Pruning Hooks: Rethinking the Language of Biblical Prophecy and Apocalyptic*, pp. 44-47)
2. एफ.एफ. ब्रूस, प्रश्नों के उत्तर, पेज 129-130 (F. F. Bruce, *Answers to Questions*, pp. 129-130)
3. एफ.एफ. ब्रूस, बाइबल की कठिन बातें, पीपी। 70-75 (F. F. Bruce, *Hard Sayings of the Bible*, pp. 70-75)

Copyright © 2014 Bible Lessons International

NASB, NRSV	**"उनकी संख्या में"**
NKJV	**"कलीसिया में"**
TEV	**"उनके समूह में"**
NJB	**"उनके समाज में"**

यहां पर वाक्यांश *epi to auto* श्रेष्ठ यूनानी और आम बोलचाल की यूनानी में प्रयुक्त हुआ है ;देखें सप्तुजैन्त तथा प्रेरि. 1:15; 2:1, 47; 1 कुरि. 11:20; 14:23), इसका अर्थ है "एकत्रित होना" (Mentzer, *Textual Commentary*, Page 305) यहां नए नियम में इसका संकेत कलीसियाई-सभा की ओर है। अतः प्रभु कलीसिया में प्रतिदिन लोगों को मिला देता था। यह इन प्रथम पीढ़ी के विश्वासियों की जीवन-शैली द्वारा सुसमाचार-प्रचार को प्रदर्शित करता है।

▪ **"जो उद्धार पाते थे"** जो वाक्यांश "प्रभु उनमें मिला देता था" इससे पहले प्रेरि. 2:46 में प्रयुक्त हुआ है वह सकारात्मक क्रिया का सूचक है, परन्तु यह वाक्यांश वर्तमान कालीन क्रिया का है। जिसके बारे में बात की जा रही है वह प्रभु है। जो उद्धार पा रहे हैं वे प्रक्रिया के अधीन हैं। उद्धार विश्वास /भरोसे/यकीन इत्यादि से आरम्भ होता है (यूहन्ना 1:12; 3:16; रोमियों 10:9-13)। उद्धार एक सम्बन्ध या रिश्ता होता है जिसका आरम्भ परमेश्वर/पवित्रात्मा करता है (देखें यूहन्ना 6:44, 65), परन्तु यह जारी रहने वाला अनुभव होना चाहिए। यह स्वर्ग जाने का टिकट नहीं है और न ही जीवन बीमा पालीसी है बल्कि एक प्रतिदिन बढ़ने वाला विश्वास का रिश्ता है। देखें विशेष शीर्षक: Greek Verb Tenses used for Salvation at Acts 2:40

विचार विमर्श के लिये प्रश्न

यह अध्ययन में मार्गदर्शन करने की टीका है, इसका अर्थ है कि आप बाइबल की अपनी व्याख्या करने के स्वयं ही जिम्मेदार हैं। हम में से प्रत्येक को उसी ज्ञान के अनुसार चलना चाहिए जो हमारे पास है। व्याख्या करने के कार्य में आप आपकी बाइबल और पवित्र आत्मा केन्द्रिय स्थान रखते हैं। यह कार्य व्याख्याकार पर न छोड़ दें।

निम्नलिखित प्रश्न अपनी सहायता के लिए दिए गए है ताकि आप पुस्तक के गम्भीर विषयों पर पुनर्विचार कर सकें। वे आपके विचारों को आन्दोलित करने के लिए हैं, इनके अलावा और भी प्रश्न हो सकते हैं:

1. पतरस के उपदेश की रूपरेखा बनाएँ?
2. पिन्तेकुस्त का उद्देश्य क्या था?
3. योएल की भविष्यद्वाणी का इस सन्दर्भ से क्या संबंध है?
4. पतरस द्वारा पुराने नियम के पाठांशों के उपयोग का वर्णन करें?

Copyright © 2013 Bible Lesson International

प्रेरितों के काम-3
बाइबल के विभिन्न आधुनिक अनुवादों में पैराग्राफ-विभाजन

UBS[4]	NKJV	NRSV	TEV	NJB
मंदिर के द्वार पर लंगड़े भिखारी की चंगाई।	लंगड़े भिखारी की चंगाई	सुन्दर नामक द्वार पर चंगाई	लंगड़े भिखारी की चंगाई	लंगड़े मनुष्य को चंगा किया जाना
3:1-10	3:1-10	3:1-10	3:1-10	3:1-10
पतरस का सुलैमान के ओसारे में उपदेश।	सुलैमान के ओसारे में प्रचार	पतरस का उपदेश	मंदिर में पतरस का उपदेश	पतरस द्वारा भीड़ को संबोधित किया जाना
3:11-26	3:11-26	3:11-16, 3:17-26	3:11-16 3:17-26	3:11-16 3:17-24 3:25-26

पठन चक्र तीसरा (<u>"अच्छे बाइबल अध्ययन का मार्गदर्शन"</u> से)

पैराग्राफ स्तर पर मूल लेखक के अभिप्राय को समझना

यह अध्ययन करने की <u>मार्गदर्शक</u> टीका है, जिसका अर्थ है कि आप अपनी बाइबल-व्याख्या के स्वयं उत्तरदायी हैं। हम में से प्रत्येक को अपने ज्ञान व समझ के अनुसार कार्य करना चाहिए। व्याख्या-प्रक्रिया में आप, आपकी बाइबल तथा पवित्र आत्मा प्राथमिक स्थान रखते हैं। आपको यह टीका कार्य टीकाकार पर नहीं छोड़ना चाहिए।

पूरा अध्याय एक बैठक में पढ़ें। विषयों को पहचानें। अपने विषय-विभाजन की तुलना उपरोक्त पाँच आधुनिक अनुवादों के विषय-विभाजन से करें। पैराग्राफों का विभाजन प्रेरणा प्राप्त नहीं होता है, परन्तु यह मूल लेखक के अभिप्राय को समझने की कुंजी है, जो कि व्याख्या करने का आधार है। प्रत्येक पैराग्राफ में केवल एक ही मूल विषय होता है:

1. पहला पैराग्राफ
2. दूसरा पैराग्राफ
3. तीसरा पैराग्राफ
4. अतिरिक्त

संदर्भ संबंधी जानकारी

प्रेरितों के काम पुस्तक के 3 से 5 अध्यायों में हम यरूशलेम में यीशु की शिक्षाओं और प्रेरितों के आश्चर्यजनक कार्यों के संबंध में तनावपूर्ण स्थिति देखते हैं। पहले पाँच अध्यायों की समय-सीमा लगभग एक वर्ष की है।

A. पतरस और यूहन्ना एक लंगड़े भिखारी को चंगा करते हैं, प्रेरि. 3:1-4:31 (प्रेरि. 2:43 का एक नमूना)
   1. तनाव का कारण स्वयं चंगाई है
   2. चंगाई के विषय में समझाते हुए पतरस का दूसरा उपदेश
   3. प्रतिक्रिया और जांच-पड़ताल (सन्हेद्रिन के सामने पतरस का तीसरा उपदेश)

4. सताव का आरम्भ होना।

B. विश्वासियों का सामूहिक जीवन, प्रेरि. 4:32-5:11
1. विश्वासियों की आरम्भि
2. क एकता (प्रेरि. 2:43-47 का एक नमूना)
3. हनन्याह और सफीरा के साथ दुर्घटना

C. यहूदीवाद के रब्बियों के साथ आरम्भिक कलीसिया के सम्बन्ध, प्रेरि. 5:12-42
1. कलीसिया का जीवन
2. सन्हेद्रिन द्वारा ईर्ष्या
3. स्वर्गदूत द्वारा मध्यस्थता
4. पतरस का चैथा उपदेश
5. प्रतिक्रिया और दण्ड

अध्याय 3-4 में यीशु के शीर्षक

A. यीशु मसीह नासरी, प्रेरि. 3:6; 4:10
B. अपने सेवक यीशु, प्रेरि. 3:13, 26; 4:27
C. पवित्र और धर्मी, प्रेरि. 3:14 (प्रेरि. 2:27)
D. जीवन का कर्त्ता, प्रेरि. 3:15
E. मसीह, प्रेरि. 3:18, 20; 4:10 (''प्रभु और मसीह'', प्रेरि. 2:36)
F. नबी, प्रेरि. 3:22
G. इब्राहीम का वंशज, प्रेरि. 3:25-26
H. कोने का पत्थर, प्रेरि. 4:11

शब्द और वाक्यांश अध्ययन

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों 3:1-10

[1]पतरस और यूहन्ना तीसरे पहर प्रार्थना के समय मन्दिर में जा रहे थे। [2]और लोग एक जन्म के लंगड़े को ला रहे थे, जिसको वे प्रतिदिन मन्दिर के उस द्वार पर जो 'सुन्दर' कहलाता है, बैठा देते थे कि वह मन्दिर में जानेवालों से भीख माँगे। [3]जब उसने पतरस और यूहन्ना को मन्दिर में जाते देखा, तो उनसे भीख माँगी। [4]पतरस ने यूहन्ना के साथ उसकी ओर ध्यान से देखकर कहा, ''हमारी ओर देख!'' [5]अतः वह उनसे कुछ पाने की आशा रखते हुए उनकी ओर ताकने लगा। [6]तब पतरस ने कहा, ''चाँदी और सोना तो मेरे पास है नहीं, परन्तु जो मेरे पास है वह तुझे देता हूँ; यीशु मसीह नासरी के नाम से चल फिर।'' [7]और उसने उसका दाहिना हाथ पकड़ कर उसे उठाया; और तुरन्त उसके पाँवों और टखनों में बल आ गया। [8]वह उछलकर खड़ा हो गया और चलने-फिरने लगा; और चलता, और कूदता, और परमेश्वर की स्तुति करता हुआ उनके साथ मन्दिर में गया। [9]सब लोगों ने उसे चलते फिरते और परमेश्वर की स्तुति करते देखकर, [10]उसको पहचान लिया कि यह वही है जो मन्दिर के 'सुन्दर' फाटक पर बैठकर भीख माँगा करता था; और उस घटना से जो उसके साथ हुई थी वे बहुत अचम्भित और चकित हुए।

3:1 ''पतरस और यूहन्ना तीसरे पहर प्रार्थना के समय मन्दिर में जा रहे थे'' यह अपूर्ण कालिन सकारात्मक क्रिया का सूचक वाक्यांश है। प्रारम्भिक चेलों की आदत थी कि वे प्रतिदिन मन्दिर में जाया करें (देखें, लूका 24:53; प्रेरि. 2:46)। पलीस्तीन के रहने वाले यीशु के मूल शिष्य आराधना किया करते थे:

1. मन्दिर में (यदि प्रतिदिन नहीं, तो कम से कम विशेष अवसरों पर)

2. स्थानीय सभाघरों में (हर सबत के दिन)
3. रविवार को विश्वासियों के साथ

बहुत लम्बे समय तक उनका यही आदर्श रहा। ये विश्वासी यहूदी धर्म और प्रतिज्ञात मसीह के रूप में यीशु पर अपने विश्वास के मध्य कोई अन्तर नहीं करते थे। वे अपने आप को इस्राएल की मण्डली अथवा इस्राएल की प्रजा समझते थे। इसलिए उन्होंने अपने झुण्ड का नाम (*ekklesia)* विश्वासियों का समूह रखा। इसी कारण से सप्तूजेन्त में इन्हें इस्राएल की मण्डली (*qahal*) कहा गया है।

फिर यहूदियों ने यरूशलेम के पतन के बाद इनके विरुद्ध औपचारिक कार्यवाही करते हुए स्थानीय सभाघरों से उनकी सदस्यता रद्द कर दी और यीशु का प्रतिज्ञात मसीह के रूप में तिरस्कार किया। परिणाम स्वरूप विश्वासियों ने रविवार को अपनी आराधना का दिन दृढ़ किया; रविवार ही को उपरौठी कोठरी में अपने जी उठने के बाद यीशु ने तीन बार चेलों को दर्शन दिया था।

प्रेरितों के काम की पुस्तक में यूहन्ना अक्सर पतरस के बताया गया है (देखें, प्रेरितों. 1:13; 3:1,4, 11; 4:13,19; 8:14)। बहुत संभव है कि यरूशलेम की प्रारम्भिक कलीसिया में विभिन्न विचार धाराओं के अगुवे और समूह पाए जाते हों जो सुसमाचार के किसी विशेष विषय पर बल देते हों। संभवतः पतरस और यूहन्ना अन्यजातियों के मध्य सुसमाचार प्रचार के अधिक समर्थक थे (देखें, प्रेरि. 3:8,10), जबकि याकूब (यीशु का सौतेला भाई) रूढ़िवादी यहूदी विचारधारा व्यक्ति प्रतीत होता है, परन्तु यरूशलेम की महासभा के बाद (प्रेरि. 15) कुछ हद तक उसमें परिवर्तन आया।

▪ **''नौवें *घंटे,* प्रार्थना के समय''** यह सूर्य उदय होने के बाद का नवाँ घण्टा गिना जाता था। यहूदी लोग अर्थात् फरीसी, परम्परागत रूप से प्रतिदिन सुबह नौ बजे, फिर दोपहर बाहर बजे, और शाम तीन बजे प्रार्थना किया करते थे (संभवतः यह भजन 55:17 पर आधारित परम्परा थी, ''सांझ को, भोर को, दोपहर को, तीनों पहर मैं दोहाई दूंगा'')। यह आयत शाम के बलिदान के समय की ओर संकेत करती है जो संध्या 3 बजे का था (सुबह का बलिदान 9 बजे चढ़ाया जाता था)। इस समय संभवतः बहुत से लोग मन्दिर में होंगे। (देखें प्रेरित. 10:30)।

3:2 ''एक आदमी जो अपनी माँ की कोख से ही लंगड़ा था'' मंदिर की देखभाल करने वाले सभी लोग इस मनुष्य की हालत के बारे में जानते थे कि उसे प्रतिदिन लाया जाता था। इस कारण उसकी चंगाई के कार्य में किसी प्रकार की चालाकी करने की गुंजाइश नहीं थी (देखें 3:10; 4:22)। यह पुराने नियम की मसीह संबंधी भविष्यवाणी की पूर्ति थी (देखें, यशायाह 35:6) यहूदी चिन्ह देखना चाहते थे; यीशु ने अनेक चिन्ह प्रकट किए, अब उनके सामने एक और चिन्ह प्रकट हुआ ताकि वे देखकर विश्वास करें।

यह मनुष्य जो प्रतिदिन परमेश्वर के भवन के द्वार पर बैठा रहता था, एक आश्चर्यजनक घटना उसके साथ घटी। सच्चाई तो यह थी कि इस प्रकार के लोगों को मन्दिर की आराधना में सक्रिय भाग लेने पर प्रतिबन्ध था (देखें, लैव्य. 21:16-24)। सुसमाचार उसे एक नया दिन देता है, यहाँ तक कि अन्य जाति इथोपिया का खोजा भी राज्य में आदर पाता है (देखें, प्रेरि. 8:26-40)।

▪ **''मंदिर के उस द्वार पर जो 'सुन्दर' कहलाता है''** यह द्वार कहां स्थित था, इसकी ठीक ठीक जानकारी नहीं है। संभवतः यह नीकानोर द्वार था जो कुरन्थ के पीतल का बना था जोसफस फ्लेवियुस, एटीक्वीटी, 15,11,3 (Flavius Josephus, *Antiq*. 15.11.3; *Wars)* यह द्वार अन्यजातियों के आँगन से स्त्रियों के आँगन तक ले जाता था। यह मन्दिर की पूर्वी दिशा में सुलैमान के ओसारे के निकट था और सामने जैतून पर्वत था।

▪ **''कि वह मन्दिर में जानेवालों से भीख माँगे''** गरीबों को दान देना यहूदी विश्वास की *अनिवार्य* परम्परा थी। (देखें मत्ती 6:1-4) लूका 11:41; 12:33; प्रेरि. 10:2, 4, 31; 24:17)। आमतौर पर स्थानीय सभाघरों में प्रति सप्ताह पैसा जमा किया जाता था और निर्धनों को भोजन कराया जाता था, परन्तु स्पष्ट रूप से मन्दिर में प्रतिदिन भीख माँगी जाती थी।

विशेष शीर्षक: गरीबों को दान देना

I. इस शब्द के विषय में :
   A. यह शब्द यहूदी धर्म ही में विकसित हुआ।
   B. इसका अर्थ है निर्धनों और आवश्यकता ग्रस्तों को देना।
   C. इंग्लिश शब्द ALMSGIVING, यूनानी शब्द एलिमोस्यून (*eleēmosunē*) के विलोम शब्द से बना है।

II. पुराने नियम की अवधारणा (O.T concept)
   A. गरीबों को देने की अवधारणा तोरह में व्यक्त की गई :
      1. विशेष संदर्भ, व्यव. वि. 15:7-11
      2. सिला बीनना, गरीबों के लिए फसल का कुछ भाग छोड़ना, लैव्य. 19:9; 23:22; व्यव. वि. 24:20
      3. "परम-विश्राम काल" इसमें सातवें वर्ष की उपज दरिद्रों के लिए थी; निर्ग. 23:10-11; लैव्य. 25:2-7
   B. यह अवधारणा बुद्धि-साहित्य में भी विकसित हुई (कुछ उदाहरण)
      1. अयूब 5:8-16; 29:12-17 (दुष्टों का उल्लेख 24:1-12 में)
      2. भजन संहिता 11:7
      3. नीति वचन 11:4; 14:21,31; 16:6; 21:3,13

III. यहूदी धर्म में विकास
   A. मिशनाह का पहला भाग दरिद्रों, स्थानीय लेवियों और आवश्यकताग्रस्तों से व्यवहार करने के संबंध में है।
   B. कुछ चुने हुए उद्धरण :
      1. सभोपदेशक (जो बेन सीराक के नीतिवचन भी कहलाते हैं) 3:30, "जिस प्रकार जल आग को बुझाता है, उसी प्रकार दान देना पापों को मिटाता है" (NRSV)
      2. सभोपदेशक 29 : 5, "अपने खजाने में भंडार जमा करें और यह तुमको हर आपदा से बचाएगा" (NRSV)
      3. तोबित 4:6-11, [6]"जो सत्य पर चलते हैं, अपने सब कार्यों में सफलता पाएंगे। जो धार्मिकता पर चलते हैं वे अपनी सम्पत्ति में से दान [7] दें, और दान देते समय असन्तोष प्रकट न करें। जो दरिद्र हैं, उन से मुँह न फेरें, तब परमेश्वर का मुँह भी तुम्हारी तरफ से न फिरेगा। [8] यदि तुम्हारे पास बहुत धन-संपत्ति है, तो उसी के अनुसार दान दो ; यदि थोड़ा है, तो उस थोड़े के अनुसार देने से न डरो। [9] इस प्रकार तुम आवश्यकता के दिन के लिए अपने निमित्त अच्छा धन जमा करोगे ; [10] क्योकि दान देना तुम्हें मृत्यु से और अंधकार में जाने से बचाता है। [11] सचमुच में, दान देना उन सबके लिए जो दान देते हैं, परमप्रधान के निकट सर्वश्रेष्ठ भेंट है ।" (NRSV)
      4. तोबित 12:8-9, " [8] प्रार्थना और उपवास अच्छे होते हैं, परंतु इससे श्रेष्ठ धार्मिकता के साथ दान देना होता है। धार्मिकता के साथ थोड़ा देना, गलत कार्य करके बहुत धन देने से उत्तम होता है। सोना इकट्ठा करने से दान देना उत्तम होता है। [9] क्योंकि दान देना मृत्यु से बचाता, और पापों से शुद्ध करता है। जो लोग दान देते हैं वे जीवन का भरपूर आनंद पाएँगे" (NRSV)

   C. तोबित 12:8-9 का अंतिम उद्धरण समस्या को बढ़ते हुए दर्शाता है। मानवी कार्यो/मानवीय योग्यताओं को क्षमा पाने और सम्पन्नता पाने दोनों के लिए साधन समझा जाता था यही अवधारणा सप्तूजेन्त में और अधिक विकसित हुई जहाँ "दान" का यूनानी शब्द एलिमोस्यून (*eleēmosunē*)"धार्मिकता" (*dikaiosunē*) का समानार्थी शब्द बन गया। इन शब्दों को एक दूसरे के स्थान पर अनुवाद करते समय इब्रानी "धार्मिकता" के बदले में प्रयुक्त किया जा सकता था (BDB 842, परमेश्वर की वाचा प्रेम और विश्वासयोग्यता, देखें, व्यव. वि. 6:25; 24:13; यशा. 1:27; 28:17; 59:16; दानि. 4:27)।
   D. मनुष्यों के धर्म के काम, इस जीवन में और मृत्यु के बाद के जीवन में, लक्ष्य बन गए थे कि व्यक्तिगत

प्रचुरता व सम्पन्नता तथा उद्धार पा सकें। भले व धर्म के काम स्वयं में धर्म वैज्ञानिक रूप से (Theologically) श्रेष्ठ समझे जाते थे न कि उनके पीछे छिपे उद्देश्य। रब्बी कहा करते थे कि परमेश्वर हृदयों को देखता है और तब हाथ के कार्यों को जाँचता है, परंतु व्यक्तिगत धार्मिकता के कारण यह बात लोप हो गई थी (देखें मीका 6:8)।

IV. नए नियम की प्रतिक्रिया :

A. निम्नलिखित स्थलों पर दान का उल्लेख है :

1. मत्ती 6:1-4
2. लूका 11:41; 12:33
3. प्रेरि. 3:2-3,10; 10:2,4,31; 24:17

B. यीशु परम्परावादी धार्मिकता के विषय में बताता है (देखें II क्लेमैन्ट 16:4)

1. दान देना
2. उपवास
3. प्रार्थना

C. अपने पहाड़ी उपदेश में (देखें, मत्ती 5-7) यीशु ने धार्मिकता के परम्परावादी विचारों के विपरीत (अर्थात कार्यों पर भरोसा करना) सच्ची धार्मिकता का उल्लेख किया। परमेश्वर के साथ सही संबंध बनाने का नया मानदण्ड "नई वाचा" हो गई (यिर्म. 31:31-34; रोमि. 3:19-31)। परमेश्वर नया मन और नई आत्मा प्रदान करता है। तब मूलबात मानवीय योग्यता नहीं परंतु परमेश्वर का कार्य होता है (यहेज. 36:26-27)

Copyright © 2014 Bible Lessons International

3:3 मूल रूप से वह लंगड़ा भिखारी पैसे चाहता था (देखें प्रेरि. 3:5)

3:4 "ध्यान से देखकर" देखें प्रेरि. 1:10 में दी गई टिप्पणी।

▪ **"हमारी ओर देख"** वे उसका पूरा ध्यान अपनी ओर लगाना चाहते थे।

3:5 प्रेरित आर्थिक रूप से धनी मनुष्य नहीं थे परन्तु उनकी पहुंच परमेश्वर के आत्मिक भंडार तक थी (देखें प्रेरि. 3:6)।

3:6 "यीशु मसीह नासरी के नाम से" इब्रानी भाषा में "नाम" एक मुहावरा है जो किसी मनुष्य के चरित्र का प्रतीक होता है (देखें लूका 9:48, 49; 10:17; 21:12, 17; 24:47, तथा देखें, प्रेरि. 2:21 की टिप्पणी) इस मनुष्य को इस बात से ज़रूर चोट पहुंची होगी। यीशु की हाल ही में निन्दा की गई थी और अपराधी के समान पीटा व मार डाला गया था, और जिसे वह अजनबी (अर्थात् पतरस) "मसीह" कह रहा था।

▪ **"नासरी"** देखें 2:22 में दी गई विशेष विषय।

▪ **"चल "** यह वर्तमान कठिन आदेशात्मक क्रिया है। यीशु की तरह, पतरस और यूहन्ना मौके का लाभ उठाकर परमेश्वर का प्रेम और सामर्थ्य दिखाते हैं और साथ ही सुसमाचार संदेश की पुष्टि करते हैं (देखें प्रेरि. 3:9)। इस चंगाई के कार्य ने यहूदी आराधकों का ध्यानाकर्षित किया (देखें प्रेरि. 3:12)।

3:7 यह चश्मदीद गवाहों का विवरण है। जो वहाँ उपस्थित रहा होगा और विस्तारपूर्वक व स्पष्टता से लूका को बताया होगा।

▪ **"तुरन्त"** यहां पर यूनानी शब्द चंतंबीतमउं इस्तेमाल हुआ है। लूका ने अपने सुसमाचार में इस शब्द का प्रयोग दस बार और प्रेरितों के काम में छः बार किया है (देखें, प्रेरि. 3:7; 5:10; 12:23; 13:11; 16:26, 33)। मत्ती में इसका प्रयोग दो बार हुआ तथा नए नियम में कहीं भी इस शब्द का प्रयोग नहीं किया गया। सप्तूजैन्त में अनेक बार इस शब्द का प्रयोग किया गया है। लूका सप्तूजैन्त के अनेक मुहावरों और शब्दों का उपयोग अक्सर करता है। लूका को अवश्य ही पुराने नियम की अच्छी जानकारी थी जिसे उसने प्रेरित पौलुस के संपर्क से और नए विश्वासियों में संगति रखने के द्वारा पाया था।

3:8 "वह उछलकर खड़ा हो गया" और चलने फिरने लगा" यह वर्तमान कालीन क्रिया है (प्रेरि. 3:9)। वह लंगड़ा चलने फिरने लगा और परमेश्वर की स्तुति करता हुआ उनके साथ मन्दिर में गया। उसको गवाही देने का अच्छा अवसर प्राप्त हुआ।

3:10 लोगों ने उसे पहचान लिया कि यह तो वही है जो फाटक पर बैठा भीख मांगा करता था। अब वह अजनबी नहीं रह गया। अन्य लोग तो उसे देखकर गुज़र जाते थे परन्तु यीशु के प्रतिनिधियों ने उसे देखकर पिन्तेकुस्त की सामर्थ में कार्य किया।

▪ **"वे भर गए"** लूका इन शब्दों का अक्सर प्रयोग करता है (प्रेरि. 5:17 पर दी गई टिप्पणियाँ देखें) मानव जाति अनेक बातों से भर सकती है जैसे:

1. पवित्र आत्मा से लूका 1:15, 41, 67; प्रेरि. 2:4; 4:8, 31; 9:17; 13:9
2. क्रोध से, लूका 4:28; 6:11
3. भय से, लूका 5:26
4. आश्चर्य और विस्मय से, प्रेरि. 3:10
5. ईष्र्या से, प्रेरि. 5:17; 13:45
6. भ्रम से, प्रेरि. 19:29

पतरस और यूहन्ना इन अचम्भित लोगों से सुसमाचार से भरा हुआ देखना चाहते थे इसीलिए उन्होंने उनका ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया।

▪ **"आश्चर्य और विस्मय"** लूका की रचनाओं में ये भी सामान्य बातें हैं:

1. आश्चर्य, यूनानी शब्द है जींउइवेए लूका 3:6; 5:9; प्रेरि. 3:10 तथा प्रेरि. 3:11 में यूनानी शब्द *ekthambos*
2. विस्मय
   a. लूका 5:26; प्रेरि. 3:10; 10:10; 11:5; 22:17 (*ekstasis*,)
   b. b.लूका 2:47; 8:56; 24:22; प्रेरि. 2:7, 12; 8:9, 11; 9:21; 10:45; 12:16(*existēmi*)

परमेश्वर का प्रेम और उसके कार्य सदैव विस्मय और आश्चर्य उत्पन्न करते हैं। यही यूनानी शब्द सप्तूजैन्त में परमेश्वर के प्रति आदर और भय रखने के लिए प्रयुक्त हुए हैं, जैसे उत्पत्ति 15:12; निर्ग. 23:27; व्यव.वि. 28:28

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 3:11-16

11जब वह पतरस और यूहन्ना को पकड़े हुए था, तो सब लोग बहुत आश्चर्य करते हुए उस ओसारे में जो सुलैमान का कहलाता है, उनके पास दौड़े आए। 12ये देखकर पतरस ने लोगों से कहा, "हे इस्राएलियो, तुम इस मनुष्य पर क्यों आश्चर्य करते हो, और हमारी ओर क्यों इस प्रकार देख रहे हो कि मानो हम ही ने अपनी सामथ्र्य या भक्ति से इसे चलने-फिरने योग्य बना दिया। 13अब्राहम और इसहाक और याकूब के परमेश्वर, हमारे बापदादों के परमेश्वर ने अपने सेवक यीशु की महिमा की, जिसे तुम ने पकड़वा दिया, और जब पिलातुस ने उसे छोड़ देने का विचार किया, तब तुमने उसके सामने उसका इन्कार किया। 14तुम ने उस पवित्र और धर्मी का इन्कार किया, और विनती की कि एक हत्यारे को तुम्हारे लिये छोड़ दिया जाए; 15और तुम ने जीवन के कर्ता को मार डाल, जिसे परमेश्वर ने मरे हुओं में से

जिलाया; और इस बात के हम गवाह हैं। [16]और उसी के नाम ने, उस विश्वास के द्वारा जो उसके नाम पर है, इस मनुष्य को जिसे तुम देखते हो और जानते भी हो सामर्थ्य दी है। उसी विश्वास ने जो उसके द्वारा है, इसको तुम सब के सामने बिल्कुल भला चंगा कर दिया है।

3:11 ''जब वह पतरस को पकड़े हुए था'' यह वर्तमान सकारात्मक क्रिया है। मैं कल्पना करता हूँ कि जिस प्रकार से मरियम बगीचे में यीशु को पकड़े थी, उसी प्रकार यह मनुष्य भी पतरस को पकड़े था (देखें, यूहन्ना 20:16-17)

- ''**सुलैमान का ओसरा**'' यह अन्य जातियों के आँगन की पूर्वी दिशा में एक ढका हुआ लम्बा क्षेत्र था। जोसेफस एंटी 20.9.7 (Josephus' *Antiq.* 20.9.7) इसकी छत बहुत से खम्भों पर टिकी हुई थी। इसका नाम सुलैमान का ओसारा इसलिए पड़ा क्योंकि सुलैमान के पुराने मन्दिर की नींव इसी लम्बे क्षेत्र में थी। यीशु ने अक्सर यहाँ उपदेश दिए थे (देखें, यूहन्ना 10:23)।

3:12 ''जब पतरस ने यह देखा'' पतरस और यूहन्ना ने भीड़ का आश्चर्य प्रकट करना और उनकी जिज्ञासा को देखा और उन्हें सुसमाचार सुनाने (अर्थात् नई कलीसिया के दूसरे उपदेश को देने) के अवसर का लाभ उठाया (देखें, कुलु. 4:3; 2 तीमु. 4:2)।

- ''**हे इस्राएलियो**'' पतरस प्रेरि. 2:22 में भी उन्हें इन शब्दों से सम्बोधित किया था। पतरस अभी भी यूहदियों को सम्बोधित कर रहा है।

- ''**क्यों...क्यों**" इस प्रकार देख रहे हो'' पतरस उनसे पूछता है कि इस आश्चर्यजनक चंगाई के कारण वे क्यों चकित हैं? क्या यीशु ने इस प्रकार के आश्चर्य कर्म अपने जीवन काल के अन्तिम सप्ताह में प्रकट नहीं किए थे?

फिर क्यों वे पतरस और यूहन्ना की ओर प्रशंसा की दृष्टि से देख रहे हैं, मानों उन्हीं ने यह कार्य किया है? यह सुसमाचार की विश्वासयोग्य और जी उठे हुए मसीह की सामर्थ्य का चिन्ह था।

पवित्र आत्मा ने यह आश्चर्यकर्म कुछ कारणों से किया:

1. पतरस और यूहन्ना के नेतृत्व की पुष्टि के लिये।
2. एक आवश्यकताग्रस्त मनुष्य की आवश्यकता को पूरा करने के लिये।
3. मन्दिर में उपस्थित यहूदियों के सामने एक गवाही के लिये।

3:13 ''अब्राहम और इसहाक और याकूब के परमेश्वर'' यह वाक्यांश दर्शाता है कि यीशु की सेवकाई और सुसमाचार सक्रिय रूप से पुराने नियम के वाचा के परमेश्वर और वाचा के लोगों से जुड़े हैं, (देखें, निर्गमन 3:6,15; लूका 20:37)।

मसीहियत को यहूदीवाद की वास्तविक परिपूर्ति कहा जाना चाहिए (देखें, मत्ती 5:17-19)। परन्तु बहुत से यहूदियों ने इसे ऐसा नहीं माना और विकृत समझा, परन्तु नए नियम के लेखकों ने इसे परिपूर्ति के रूप में देखा। यीशु के पीछे चलने वाले लोग ही ''नई वाचा'' के लोग हैं, जिसकी प्रतिज्ञा यिर्मयाह 31:31-34 में की गई थी (गलातियों 6:16)। इस्राएल, परमेश्वर की पवित्र जाति और याजकों का राज्य बनने के अपने कार्य में असफल रहा (देखें, निर्गमन 19:5-6; 1 पत. 2:5, 9; प्रका. 1:6)। कलीसिया को आदेश दिया गया (मत्ती 28:18-20; लूका 24:46-47; प्रेरि. 1:8)। परमेश्वर का लक्ष्य है कि मानव जाति में अपने स्वरूप को दुबारा सृजे. ताकि मनुष्यों के साथ संगति रखने का उसका प्रारम्भिक उद्देश्य पूरा हो सके। यदि परमेश्वर केवल एक ही है (अर्थात् एकेश्वरवाद, देखें प्रेरि. 2:39 की विशेष टिप्पणी) तो उसके लोग विशेष लोग नहीं हो सकते हैं, वे केवल उसके दास होंगे ताकि वे परमेश्वर के विश्वव्यापी उद्देश्यों को सारी मानवजाति में पूरा कर सकें (देखें, प्रेरि. 1:8 की विशेष टिप्पणी)।

- ''**महिमा की**'' इस वाक्यांश को अनेक प्रकार के सन्दर्भों में समझा जा सकता हैः-

1. यीशु के नाम में लंगड़े की चंगाई के संदर्भ में, जिसके द्वारा यीशु की महिमा प्रकट हुई।

2. विस्तृत संदर्भ में कि यीशु जी उठा, इस प्रकार उसकी महिमा हुई।
3. पुराने नियम के संदर्भ में कि यीशु ही अभिषिक्त जन मसीह है जो संसार में आना वाला था।
4. यूहन्ना के सुसमाचार में यीशु ने सदैव कहा कि वह क्रूस पर चढ़ाए जाने पर महिमा प्राप्त करेगा (देखें, प्रेरि. 7:39; 12:10, 23; 13:31-32; 16:14; 17:1)।

विशेष शीर्षक: महिमा डोक्सा

महिमा के संबंध में बिबलीकल अवधारणा की परिभाषा देना कठिन कार्य है। सप्तूजेंत (*LXX*) में 25 से अधिक इब्रानी शब्दों का अनुवाद (*Doxa*) डोक्सा किया गया है। यह शब्द पूरे नए नियम में अनेक बार विभिन्न रूपों में प्रयुक्त किया गया है। यह शब्द परमेश्वर, यीशु, मनुष्यों और मसीह के राज्य पर लागू किया जाता है।

पुराने नियम में "महिमा" (*Glory*) के लिए सबसे सामान्य इब्रानी शब्द है "काबोद" (*Kabod*, BDB458, KB 455-458) जो मूल रूप से एक व्यापारिक शब्द है और तराजू से संबंधित है "भारी होना"("to be heavey," KB455) अर्थात जो वस्तु भारी है वह मूल्यवान है और अन्तरिक रूप से कीमती तत्व है। परमेश्वर के प्रताप व ऐश्वर्य को व्यक्त करने के लिए अक्सर प्रकाश शब्द को प्रयुक्त किया गया है (देखें, निर्ग. 19:16-18; 24:17; 33:18; यशा. 60:1-2)। केवल परमेश्वर ही आदर के योग्य है (देखें, भजन. 24:7-10; 66:2; 79:9)। परमेश्वर इतना तेजोमय है कि पतित मानवजाति उसकी और दृष्टि नहीं कर सकती है, इसलिए वह स्वयं को बादलों और धूएँ से ढक लेता है (देखें, निर्ग. 16:7,10; 33:17-23; यशा. 6:5)।यहोवा (YHWH) परमेश्वर केवल मसीह के माध्यम से ही पूरी तरह जाना जा सकता है (देखें, यूहन्ना 1:18; 6:46; 12:45; 14:8-11; कुलु. 1:15; 1 तीमु. 6:16; इब्रा. 1:3; 1 यूह. 4:12)।

काबोद (Kabod) की संपूर्ण जानकारी के लिए देखें विशेष विषय "नए नियम में महिमा" [GLORY (NT)]विश्वासियों की महिमा इस बात में है कि वे सुसमाचार को जानते हैं और अपने में नहीं परंतु परमेश्वर में महिमा देखते हैं (देखें, 1 कुरि. 1:29-31; यिर्म. 9:23-24)।विस्तृत जानकारी हेतु देखें, NIDOTTE, Vol. 2 pp 577-587.

युहन्ना में इस शब्द के कई अर्थ हैं।

1. दिव्य महिमा (युहन्ना 1:14; 12: 16,41; 17: 5,24)
2. यीशु के चिन्हों, उपदेशों और दुख सप्ताह के द्वारा पिता के रहस्योद्घाटन का काम करता है (युहन्ना 1:14; 2:11; 7:18; 11: 4,40; 17: 4,10,22)
3. विशेष रूप से क्रूस (युहन्ना 7:39; 12:23; 13: 31-32; 17: 1,4)

इन उपयोगों के बीच स्पष्ट रूप से कुछ तरलता है। केंद्रीय सत्य यह है कि अदृश्य परमेश्वर का एक मानव (अर्थात, यीशु मसीह, कुलु 1:15) के रूप में उनके शब्दों और कामों के द्वारा प्रकट होना है।

Copyright © 2014 Bible Lessons International

▪**"अपने सेवक"** "सेवक" के लिए यूनानी भाषा का शब्द ष्च्प्रेष् सप्तूजैन्त ;स्ग्द्ध में नियमित रूप से प्रयुक्त किया गया है।

1. पुराने नियम में यह आदरयुक्त पद है जिसका उपयोग याकूब, मूसा, यहोशू तथा दाऊद के लिए किया गया (भजन 105; लू. 16:69)
2. यशायाह में दास शब्द का उपयोग हुआ (देखें, यशा. 42:1-5; 49:1-7; 50:4-11; 52:13-53:12)।
3. इस्राएल जाति को दास कहा गया (यशा. 41:8-9; 42:19; 43:10; 44:1, 21; स्ग् में लूका 1:54)
4. परमेश्वर के मसीह को दास कहा गया (यशा. 42:1; 52:13; 53:11)
5. पिएस (*pais*) यीशु को भी दास व सेवक कहा गया (प्रेरि. 3:13, 26; 4:27, 30)

दास के सामूहिक और व्यक्तिगत पहलू के मध्य स्पष्ट अन्तर नहीं दिखाई देता है, विशेषकर यशायाह 52:13-53:12 में। इस संदर्भ में दास का संकेत इस्राएल की ओर नहीं हो सकता है।

1. क्योंकि राष्ट्र धर्मी नहीं हो सकता जो छुटकारा या उद्धार ला सके, राष्ट्र दण्ड का अधिकारी है (देखें, यशा. 41:18-22; 53:8)

2. सप्तूजैन्त में यशायाह 52:14 में "तू" के स्थान पर "उसको" कर दिया गया है (प्रेरि. 3:15 में भी) यीशु के जन्म से पहले (संभवतः 250-150 ई.पू.) यहूदी अनुवादकों ने इस पाठांश को मसीह संबंधी और व्यक्ति स्वीकार किया।

▪**"यीशु"** जब यीशु का नाम का प्रयोग किया जाता है तो यह आमतौर उसकी मानवता पर बल देता है (देखें प्रेरि. 3:6)

▪**"जिसे तुम ने पकड़वा और अस्वीकार किया"** यहाँ शब्द "तुम ने" पर बल दिया गया है। केवल यहूदी धर्म के अगुवे ही यीशु की मृत्यु के उत्तरदाई नहीं थे (देखें प्रेरि. 3:17; 2:23)। पतरस विशेष बल देते हुए कहता है कि जब पिलातुस ने उसे छोड़ देना चाहा तो उन्होंने ही उसके सामने यीशु को अस्वीकार किया था और एक हत्यारे के लिए विनती की थी कि वह उनके लिए छोड़ दिया जाए। (देखें, लूका 23:18-25)। संभव है उनमें से कोई वहाँ उपस्थित रहा हो, परन्तु पतरस उस भीड़ को सम्बोधित करते हुए कहता है कि मानो एक समूह के रूप में वे ही उसकी मृत्यु के जिम्मेदार हैं (प्रेरि. 3:15)। परमेश्वर के चुने हुए लोगों ने (यहूदियों ने) परमेश्वर के मसीह का "इंकार किया" और उसे "पकड़वा" दिया (यूहन्ना 1:11)।

▪**"पिलातुस"** निम्नलिखित विशेष शीर्षक देखें:

विशेष शीर्षक: पोंतिउस पिलातुस

I. एक मनुष्य :
- A. कब और कहाँ पैदा हुआ, अज्ञात है।
- B. घुड़सवार (रोमी समाज का उच्च वर्गीय व्यक्ति)
- C. शादी-शुदा, कितनी सन्तानें थीं, अज्ञात।
- D. कहाँ नियुक्तियाँ हुई (संभवतः बहुत हुई) अज्ञात।

II. उसका व्यक्तित्व :
- A. दो भिन्न विचार :
  1. फिलो (*Legatio and Gaium, 299-305*) तथा योसेपस (*Antiq. 18.3.1 तथा Jewish Wars 2.9. 2-4*) उसका चित्रण एक क्रूर व निर्दयी शासक के रूप में करते हैं।
  2. नया नियम (सुसमाचार और प्रेरितों के काम) उसे एक दुर्बल और सरलता से बहक जाने वाले रोमी शासक के रूप में दर्शाता है।
- B. पौल बर्नेट, अपनी पुस्तक "*Jesus and the Rise of Early Christianity*" पेज 143-148 में उपरोक्त विचारों के विपरीत प्रशंसा के शब्द लिखता है।
  1. पिलातुस, ई. सन् 26 में, तिबिरियुस कैसर के अधीन उसके सलाहकार सेजानुस के कहने पर राज्यपाल नियुक्त किया गया था (देखें, फिलो, *Legatio and Gaium,* 160-161)।
  2. सेजानुस के कारण तिबिरियुस ने बहुत अधिक राजनैतिक हानियाँ उठाई ; सिंहासन की वास्तविक ताकत इसी के हाथ में थी और यह यहूदियों का शत्रु था (फिलो, *Legatio and Gaium,* 159-160)।
  3. फिलातुस, सजानुस के संरक्षण में रहता था और उसे निम्न बातों से प्रभावित करने की कोशिश की :
     - a. यरूशलेम में रोमी मानदण्ड (standards) लागू किए (26 ईस्वी) जिसे अन्य राज्यपाल नहीं कर सके थे। रोमी देवताओं ने यहूदियों को भड़का दिया (देखें, योसेयस की पुस्तक, *Antiq. 18.3.1; Jewish Wars 2.9. 2-3*)।
     - b. सिक्के बनाना (ई. 29-31) सिक्कों पर रोमी देवताओं के चित्र गढ़े थे। योसेपस बताता है कि वह जानबूझकर यहूदी रीतियों और नियमों को तोड़ता था (देखें, योसेपस की, *Antiq. 18.4.1-2*)

c. यरूशलेम में जल-व्यवस्था (नहर) बनाने के लिए मंदिर के खजाने से धन वसूल किया (देखें योसेपस की, (*Antiq. 18.3.2; Jewish Wars* 2.9.3)
d. फसह पर्व के दौरान, अनेक गलीली लोगों को बलिदान चढ़ाते समय धात करा डाला।
e. 31 ई. में वह रोमी ढालें यरूशलेम लाया। हेरोद महान के पुत्र ने उन्हें हटाने की अपील की, उसने नहीं माना। तो उन्होंने तिबिरियुस को लिखा। उसकी आज्ञा से उन्हें हटाकर समुद्र किनारे कैसरिया वापस भेज दिया गया देखे, फिलो, (*Legatio and Gaium, 299-305*)।
f. उसने बहुत से सामरी लोगों को गिरिज्जिम पर्वत पर घात करवा डाला (36/37 ईस्वी) जबकि वे अपने धर्म की खोई हुई पवित्र वस्तुओं को खोज रहे थे। इससे नाराज होकर उसके स्थानीय अधिकारी विटेलियुस ने जो सीरिया का हाकिम था, (Vitellius, Prefect of Syria) उसे पद से हटाकर वापस रोम जाने की आज्ञा दी देखें, योसेपास की, (cf. Josephus, *Antiq.* 18.4.1-2).

4. ईसवी सन् 31 में सेजानूस फांसी पर चढ़ा दिया गया और तिबिरियुस को सारा राजनैतिक अधिकार फिर प्राप्त हो गया ; अतः उपरोक्त # क, ख, ग, घ सारे कार्य पिलातुस ने सेजानुस को खुश करने के लिए किए ; संभवतः #च और छ कार्य उसने तिबिरियुस को खुश करने के लिए किए, परन्तु असफल रहा।
5. स्पष्ट रूप से यहूदियों के समर्थक सम्राटों की बहाली से और राज्यपालों को तिबिरियुस कैसर का पत्र प्राप्त होने से कि वे यहूदियों के प्रति दयालु रहें ; यरूशलेम के यहूदी अगुवों ने पिलातुस की राजनैतिक दुर्बलता का लाभ उठाया देखें, फिलो, (Philo*Legatio and Gaium, 160-161*) और चालाकी से यीशु को क्रूस पर चढ़ावाया। बर्नेट की यह विचारधारा पिलातुस के विषय में दो विचार प्रशंसीय शब्दों में व्यक्त करती है।

III. उसके नियति :

A. तिबिरियास कैसर की मृत्यु के तुरंत बाद वह ईस्वी सन् 37 में रोम बुलाया गया।
B. वह दोबारा नियुक्त नहीं किया गया।
C. इसके बाद उसके विषय में कुछ नहीं पता। बहुत सी विचारधाराएँ पाई जाती हैं पर वे अनिश्चित हैं।

Copyright © 2014 Bible Lessons International

▪**"जब पिलातुस ने उसे छोड़ देने का विचार किया"** यह वाक्यांश लूका 23:4,14,22 की ओर संकेत करता है, जहाँ पिलातुस तीन बार कहता है कि "मैं इस मनुष्य में कोई दोष नहीं पाता" और तीनों बार उसने यीशु को छोड़ने का प्रयत्न किया (लूका 23:15-16, 20, 22)। बहुत से विद्वान मानते हैं कि प्रेरितों के काम की पुस्तक का उद्देश्य यह दर्शाता है कि रोमी अधिकारियों ने यीशु को देशद्रोही नहीं पाया। पिलातुस पर यहूदी अगुवों द्वारा वह कार्य करने का दबाव डाला गया जिसे वह स्वयं करने में झिझकता था।

3:14 "उस पवित्र और धर्मी" यह पद स्पष्ट रूप से यीशु के निष्पाप होने और धर्मी होने के विषय में बताता है। उसकी जांच पड़ताल होना व न्याय किया जाना सब एक ढोंग और हास्य था। यह पुराने नियम की मसीह संबंधी पदवी है (यशा. 53:11; प्रेरि. 7:52; 22:14; यूहन्ना 6:69)। दुष्टात्माओं ने यीशु को परमेश्वर का पवित्र जन कहा (मर. 1:24; लूका 4:34)।

विशेष शीर्षक: पवित्र जन

I. "इस्राएल का पवित्र" यशायाह की पुस्तक का यह परमेश्वर के लिए एक मनपसन्द शीर्षक है (देखें, यशायाह 1:4; 5:19; 10:17,20; 12:6; 17:7; 29:19,23; 30:11-12,15; 31:1; 37:23; 40:25; 41:14,16,20; 43:3, 14-15; 45:11; 47:4; 48:17; 49:7; 54:5; 55:5; 60:9,14) इसलिए कि परमेश्वर "पवित्र" है,

उसके लोगों को भी पवित्र बनना चाहिए (देखें, लैव्य. 19:2; मत्ती 5:48; 1 पत. 1:16)।

एक प्रकार से यह शीर्षक पतित व पापपूर्ण लोगों के परमेश्वर द्वारा निर्धारित पवित्र मानदण्डों (Standard) तक पहुँचने में उनकी असमर्थता को दर्शाता है। मूसा की व्यवस्था का पालन करना असम्भव है (देखें यहोशू 24:19; प्रेरि. 15; गला. 3; इब्रानियों की पुस्तक)। पुरानी वाचा दर्शाती थी कि मनुष्य कभी भी परमेश्वर के मानदण्ड (Standard) के अनुसार जीवन व्यतीत नहीं कर सकता है (गलतियों 3), तौ भी परमेश्वर उनके साथ था उनके लिए था, और उन्हें उनकी पतित दशा से छुड़ाने के लिए क्रियाशील रहा, अर्थात उसने यीशु के द्वारा नई वाचा स्थापित की। उसने अपने मानदण्डों को नीचा अथवा ढीला नहीं किया बल्कि अपने मसीह के द्वारा उन्हें पूरा किया। नई वाचा (देखें, यिर्म. 31:31-34; यहेज. 36:22-38) विश्वास और पश्चाताप की वाचा है न कि मनुष्यों के कार्यों पर आधारित वाचा है, हालांकि इसके फल मसीह के समान बनने के द्वारा प्रकट होते हैं (देखें, याकूब 2:14-26)। परमेश्वर ऐसे लोग चाहता है जो उसके गुणों को लोगों पर प्रकट कर सकें (मत्ती 5:48)।

II. "वह जो पवित्र है" निम्नलिखित की ओर भी संकेत कर सकता है :

1. परमेश्वर पिता की ओर (इससे संबंधित अनगिनित उद्धरण पुराने नियम में पाए जाते हैं कि परमेश्वर ही "इस्राएल का पवित्र" है।
2. परमेश्वर पुत्र (देखें, मर. 1:24; लूका 4:34; यूहन्ना 6:69; प्रेरि. 3:14 1 यूहन्ना 2:20)
3. परमेश्वर पवित्र आत्मा (उसका शीर्षक "पवित्र आत्मा" देखें यूहन्ना 1:33; 14:26; 20:22)

प्रेरि. 10:38 एक ऐसा पद है जहाँ अभिषेक में त्रिएकत्व के तीनों व्यक्ति क्रियाशील दिखाई देते हैं। यीशु अभिषिक्त था (देखें, लूका 4:18; प्रेरि. 4:27; 10:38)। यह अवधारणा विस्तृत हुई और इसमें सब विश्वासी सम्मिलित किए गए (देखें 1 यूह. 2:27) जो अभिषिक्त था वह बहुतों का अभिषिक्त बन गया। यह मसीह के विरोधी और मसीह के विरोधियों के समानन्तर हो सकता है (देखें, 1 यूहन्ना 2:18)। तेल के द्वारा पुराने नियम का भौतिक अभिषेक (देखें, निर्ग. 29:7; 30:25; 37:29) उन लोगों का प्रतीक हो सकता है जो बुलाए जाते और परमेश्वर द्वारा सुसज्जित किए जाते हैं, ताकि विशेष सेवाएँ कर सकें (जैसे नबी के, याजकों के और राजाओं के रूप में) शब्द "मसीह" इब्रानी शब्द "अभिषिक्त जन" का अनुवाद है।

Copyright © 2014 Bible Lessons International

विशेष शीर्षक:धर्मी

"धार्मिकता" ऐसा जटिल विषय है जिसके बारे में बाइबल-छात्र को व्यक्तिगत गहन अध्ययन करना चाहिए।

पुराने नियम में परमेश्वर को सच्चा व "धर्मी" कहा गया है (क्रिया, BDB 842, KB 1003; पुरुषवाचक संज्ञा, BDB 841, KB 1004; स्त्रीवाचक संज्ञा, BDB 842, KB 1006)।मैसोपोटामियां का शब्द नदी किनारे पाए जाने वाले "सरकण्डे" से बना है जो दीवार की या चारदीवारी की सीधाई को नापने में प्रयुक्त होता था। परमेश्वर को भाया कि इसी शब्द से रूपक के रूप में स्वयं उसके स्वभाव को नापा जाए। परमेश्वर एक सीधे फुट्टे (ruler) के समान है जिसके द्वारा सब वस्तुओं की जाँच या मूल्यांकन किया जाना चाहिए। यह विचार परमेश्वर की धार्मिकता को और साथ ही उसके जाँच करने के अधिकार को बताता है।

मनुष्य परमेश्वर के स्वरूप और समानता में बनाया गया (उत्पत्ति 1:26-27; 5:2,3; 9:6)। मानवजाति परमेश्वर के साथ संगति रखने के लिए रची गई (उत्प. 3:8)। समस्त सृष्टिरचना एक मंच के समान है जहाँ मानव और परमेश्वर परस्पर बातचीत करते हैं। परमेश्वर चाहता है कि उसकी सर्वश्रेष्ठ रचना अर्थात् मानवजाति उसे जाने, उससे प्रेम करें और उसकी सेवा करें, और उसके समान हो। मानवजाति की विश्वासयोग्यता को जांचा गया (देखें उत्पत्ति अध्याय 3) और आदि स्त्री-पुरुष उस परीक्षा में फेल हुए। इसका परिणाम यह हुआ कि परमेश्वर और मानवजाति के आपसी रिश्ते में बाधा आ गई (देखें, रोमि. 5:12-21)।

फिर परमेश्वर ने टूटी हुई संगति को सुधारने और स्थापित करने की प्रतिज्ञा की (देखें, उत्प. 3:15; तथा विशेष

विषय : "YHWH'S Eternal Redemptive Plan") ("यहोवा (YHWH) की उद्धार संबंधी अनंत योजना")। उसने यह कार्य स्वयं अपनी इच्छा से और स्वयं अपने एकलौते पुत्र के माध्यम से किया। मनुष्य इस संगति को सुधारने में असमर्थ था (देखें, रोमि. 1:18-3:20; प्रकाशितवाक्य 5)।

मनुष्य के पतन के बाद, फिर से संबंध स्थापित करने की दिशा में परमेश्वर का पहला कदम था, वाचा की अवधारणा, जो परमेश्वर के निमंत्रण और मानव जाति के पश्चाताप करने और विश्वासयोग्यता के साथ आज्ञापालन करने के प्रत्युत्तर पर आधारित थी (देखें, यिर्म. 31:31-34; यहेज. 36:22-38)। पाप में गिरने के कारण मानव जाति उचित प्रतिक्रिया करने में असमर्थ थी (देखें रोमि. 3:21-31; गला. 3)। वाचा का उल्लंघन करने वाली मानव जाति के साथ अपनी संगति फिर स्थापित करने के लिए परमेश्वर को स्वयं पहल करनी पड़ी। यह कार्य उसने इस प्रकार किया :

1. मसीह के द्वारा सम्पन्न किए गए कार्य के द्वारा मानवजाति को धर्मी घोषित किया। (अर्थात् अदालती धार्मिकता)।
2. मसीह के कार्य द्वारा सेंतमेंत में मानवजाति को धार्मिकता प्रदान की। (अर्थात धर्मी ठहराया)
3. भीतर निवास करने वाला पवित्रात्मा दिया जो मनुष्यों में धार्मिकता उत्पन्न करता है (जैसे, मसीह के समान बनाना, मनुष्य में परमेश्वर का स्वभाव निर्मित करना)।
4. अदन की वाटिका की सहभागिता को बहाल करना (उत्प. 1-2 की तुलना प्रका. 21-22 से करें)।

तौभी परमेश्वर वाचा के अनुसार प्रत्युत्तर चाहता है। परमेश्वर सेंतमेंत में धार्मिकता प्रदान करता है, परंतु मानवजाति को निम्न प्रकार से प्रत्युत्तर देना चाहिए :

1. पश्चाताप करना
2. विश्वास करना
3. आज्ञा पालन का जीवन
4. दृढ़ बने रहना

इस प्रकार धार्मिकता वाचा के अन्तर्गत परमेश्वर और उसकी सर्वश्रेष्ठ रचना मानवजाति के मध्य एक आदान-प्रदान की क्रिया है जो परमेश्वर के स्वभाव अर्थात् मसीह द्वारा सम्पन्न कार्य पर और पवित्रात्मा द्वारा योग्य बनाने पर आधारित होता है, जिसके प्रति प्रत्येक को व्यक्तिगत रीति से निरंतर उचित प्रत्युत्तर दिया जाना चाहिए। यह अवधारणा "विश्वास द्वारा धर्मी ठहराया जाना" कहलाती है (देखें, इफि. 2:8-9)। सुसमाचारों में यह अवधारणा प्रकाशित की गई है परंतु इन शब्दों में नहीं। इसे मुख्यतः पौलुस द्वारा परिभाषित किया गया है, जो "धार्मिकता" के यूनानी शब्द का विभिन्न प्रकार से, सौ से अधिक बार तक करता है।

पौलुस, एक प्रशिक्षित रब्बी की हैसियत से, शब्द डिकायोस्यून (*dikaiosune*) को उसकी इब्रानी अर्थों में शब्द "सादिक" (tsaddiq) के रूप में प्रयुक्त करता है जो सप्तूजैन्त में प्रयुक्त हुआ है, परंतु वह यूनानी साहित्य का प्रयोग नहीं करता। यूनानी लेखों में यह शब्द ऐसे व्यक्ति से संबंध रखता है जो परमेश्वर और समाज की आशाओं के अनुकूल हो (जैसे नूह, अय्यूब)। इब्रानी अर्थों में यह शब्द हमेशा वाचा के संदर्भ में प्रयुक्त होता है (देखें, विशेष विषय "वाचा" (*covenant*)।यहोवा (YHWH) न्यायी और धर्मी परमेश्वर है। वह चाहता है कि उसके लोग उसका स्वभाव व गुण प्रकट करें। उद्धार पाए हुए लोग नई सृष्टि बन जाते हैं, (देखें, 2 कुरि. 5:17; गला. 6:15)।यह नयापन उन्हें आत्मिक जन बनाता है (देखें मत्ती 5-17; गला. 5:22-24; याकूब; 1 यूहन्ना)। चूंकि इस्राएल ईशतंत्र था इसलिए सामाजिक और ईश्वरीय मानदंड के मध्य स्पष्ट अंतर का वर्णन नहीं था। इब्रानी और यूनानी शब्दों में अंतर उस समय व्यक्त हुआ जब इसका अनुवाद अंग्रेजी में "Justice" (न्याय) समाज के संबंध में और "धार्मिकता" (righteousness) धर्म के संबंध में किया गया।

पतित मानव जाति की संगति फिर से परमेश्वर के स्थापित हो गई है, यही बात प्रभु यीशु का शुभसंदेश अथवा सुसमाचार कहलाता है। ऐसा परमेश्वर पिता के प्रेम, दया और अनुग्रह के कारण, उसके पुत्र के जीवन, मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा और पवित्र आत्मा द्वारा सुसमाचार की ओर आकर्षित करने और निवेदन करने के द्वारा संभव हुआ। धर्मी ठहराया जाना परमेश्वर की ओर से निशुल्क कार्य है, परंतु इसे भले जीवन के रूप में दिखाई देना चाहिए (अगस्तीन की स्थिति के समान, जो दोनों बातें प्रदर्शित करता है, अर्थात सुसमाचार की निशुल्कता पर धर्म

सुधार आंदोलन का बल तथा विश्वास योग्यता और परिवर्तित जीवन होने का रोमन कैथलिक बल)। धर्म सुधार आंदोलन वालों के लिए "परमेश्वर की धार्मिकता" शब्द कर्म कारक है (OBJECTIVE GENITIVE) (पापी मानव जाति को परमेश्वर का ग्रहण योग्य बनाना (स्थिति का पवित्रीकरण), तथा रोमन कैथलिकों के लिए यह कर्ता कारक (SUBJECTIVE GENITIVE) है, जो परमेश्वर के अधिकाधिक सामान बनने की प्रक्रिया है (अनुभवात्मक प्रगतिशील पवित्रीकरण (experiential progressive sanctification)। वास्तव में निश्चित रूप से ये दोनों है।

मेरे विचार से संपूर्ण बाइबल, उत्पत्ति 4 से प्रकाशितवाक्य 20 तक, परमेश्वर द्वारा अदन की वाटिक की संगति को फिर से बहाल करने का लेखा-जोखा है। बाइबिल का आरम्भ पृथ्वी पर परमेश्वर और मानवजाति की परस्पर संगति के द्वारा होता है (देखें उत्पत्ति 1-2) तथा बाइबल का अंत भी इसी प्रकार का होता है (देखें, प्रका. 21-22)। परमेश्वर का स्वरूप और उसका उद्देश्य फिर से बहाल होंगे।

उपरोक्त विचार विमर्श का लिखित प्रमाण देने के लिए निम्नलिखित चुने हुए नए नियम के पाठांशों पर ध्यान दीजिए जो यूनानी शब्द समूहो को समझाते हैं :

1. परमेश्वर धर्मी है (अक्सर परमेश्वर न्यायी है से संबंधित)
   a. रोमियों 3:26
   b. 2 थिस्स. 1:5-6
   c. 2 तीमु. 4:8
   d. प्रका. 16:5
2. यीशु धर्मी है :
   a. प्रेरि. 3:14; 7:52; 22:14 (शीर्षक मसीह)
   b. मत्ती 27:19
   c. 1 यूह. 2:1,29; 3:7
3. संपूर्ण मानवजाति के लिए परमेश्वर की इच्छा पवित्र बनो
   a.लैव्य. 19:2
   b.मत्ती 5:48 (5:17-20)
4. धर्मी बनाने के परमेश्वर के साधन
   a. रोमि. 3:21-31
   b. रोमि. 4
   c. रोमि. 5:6-11
   d. गला. 3:6-14
5. परमेश्वर द्वारा दी जाती है
   a. रोमि. 3:24; 6:23
   b. 1 कुरि. 1:30
   c. इफि. 2:8-9
6. विश्वास द्वारा प्राप्ति
   a. रोमि. 1:17; 3:22,26; 4:3,5,13; 9:30; 10:4,6,10
   b. 2 कुरि. 5:7,21
7. पुत्र के कार्यो के द्वारा
   a. रोमि. 5:21
   b. 2 कुरि. 5:21
   c. फिलि. 2:6-11
8. परमेश्वर की इच्छा है कि उसके जन धर्मी व पवित्र बनें
   a. मत्ती 5:3-48; 7:24-27
   b. रोमि. 2:13; 5:1-5; 6:1-23
   c. इफि. 1:4; 2:10

d. 1 तीमु. 6:11
e. 2 तीमु. 2:22; 3:16
f. 1 यूह. 3:7
g. 1 पत. 2:24

9. परमेश्वर धार्मिकता से जगत का न्याय करेगा
   a. प्रेरि. 17:31
   b. 2 तीमु. 4:8

धार्मिकता परमेश्वर का गुण है जो मसीह के द्वारा पापी मनुष्यों को निशुल्क दी जाती है :

1.यह परमेश्वर का आदेश है।
2.यह परमेश्वर का दान है
3.यह मसीह का कार्य है
4.जीने के लिए एक जीवन है।

परंतु साथ ही यह धर्मी बनने की एक प्रक्रिया भी है जिसका कर्मठता और दृढ़निश्चय के साथ पालन किया जाना चाहिए जिसका एक दिन दूसरे आगमन के समय पूर्ण होगी। परमेश्वर के साथ संगति उद्धार पाने के समय स्थापित होती है, परंतु संपूर्ण जीवन भर प्रगति करती है और परमेश्वर के साथ प्रत्यक्ष आमना-सामना कराती है, मृत्यु के समय या दूसरे आगमन के समय। (1 यूह. 3:2)।

इस विचार विमर्श की समाप्ति पर प्रस्तुत है एक उद्धरण। यह IVP की पुस्तक *"Dictionary of Paul and His Letters"* से लिया गया है :

"काल्विन, लूथर से अधिक बल परमेश्वर की धार्मिकता के संबंध" रखने वाले पहलू पर देता है। परमेश्वर की धार्मिकता के विषय में लूथर का विचार कर्जे से मुक्ति या पापों से छुटकारे को दर्शाता है। काल्विन बातचीत की अद्‌भुत शक्ति पर बल देता है अथवा परमेश्वर की धार्मिकता प्रदान किए जाने पर बल देता है।" (पेज 834)

मेरे विचार से परमेश्वर के साथ विश्वासी के संबंध में के निम्न तीन पहलू होते हैं :

1. समाचार एक व्यक्ति है (ईस्टर्न चर्च और काल्विन इस पर बल देते हैं)
2. सुसमाचार सच्चाई है (अगस्तीन और लूथर इस पर बल देते हैं)
3. सुसमाचार एक परिवर्तित जीवन है (कैथलिक इस पर बल देते हैं)

सब बातें सत्य हैं और बाइबल के अनुसार सच्ची मसीहीयत के लिए सबको साथ रखना चाहिए। यदि एक बात भी छोड़ दी जाए या अधिक बल दिया गया तो समस्याएं उत्पन्न होंगी।

हमें यीशु का स्वागत करना चाहिए।
हमें सुसमाचार पर विश्वास रखना चाहिए।
हमें मसीह के समान बनना चाहिए।

Copyright © 2014 Bible Lessons International

▪ **"और हत्यारे के लिए पूछा"** यह बड़ी हास्यास्पद बात है कि जिस बात का दोष यीशु पर लगाया अर्थात् देशद्रोही का, उसका असली हकदार बरअब्बा था (लूका 23:18-19,23-25)।

3:15 "पर मार डाला" यह बड़े आश्चर्य की बात है कि प्रेरितों के काम की पुस्तक में जहां जहां यीशु की मृत्यु का वर्णन पाया जाता है, वहां उत्पत्ति 3:15 और यशायाह 53 में लिखित बातों पर बहुत कम ध्यान दिया गया है (प्रेरि. 2:23, 36; 3:15; 4:10; 5:30; 7:52; 10:39; 13:28)।

यीशु की मृत्यु को व्यक्त करने में भी भिन्नताएँ पाई जाती हैं:

1. क्रूस पर कीलों से ठुकवा कर मार डाला (प्रेरि. 2:23)
2. क्रूस पर चढ़ाया (प्रेरि. 2:36; 4:10)
3. मार डाला (प्रेरि. 3:15; 13:28)
4. क्रूस पर लटका कर मार डाला (प्रेरि. 5:30; 10:39)

5. हत्या (प्रेरि. 7:52)

पुनरुत्थान पर बल दिया गया है परन्तु प्रायश्चित व कफ्फारे पर बल नहीं।

NASB, NKJV	**"जीवन का कर्त्ता"**
NRSV, NTV	**"जीवन का कर्त्ता"**
TEV	**"जीवन का देने वाला"**
NJB	**"जीवन का कर्त्ता"**
Moffatt	**"जीवन देने वाला"**

यह पदवी *archēgos* शब्द के निम्नलिखित तीन संभव अर्थों में से एक हो सकता है:

1. कर्त्ता अथवा आरम्भ करने वाला (देखें NRSV, इब्रानियों 2:10; 12:2)
2. सृष्टि का रचियेता (देखें यूहन्ना 1:3; 1 कुरि. 8:6; कुलु. 1:6; इब्रा. 1:2)
3. प्रथम (देखें TEV, NEB, Moffatt, प्रेरि. 5:31)

यह शब्द स्पष्ट रूप से 'हत्यारे" शब्द के विपरीत अर्थ रखता है (प्रेरि. 3:14)

विशेष शीर्षक: लेखक/ अगुआ (पदवी)

"स्रष्टा" अथवा "अगुआ" यूनानी शब्द आरकेगॉस (arehegos) से बने हैं जिसका मूल अर्थ है "आरम्भ" और "जाना" अथवा "अगुवाई करना"। यह मिश्रित शब्द शासकों, राजकुमारों अथवा अगुवों के लिए प्रयुक्त किया जाने लगा चाहे वे मानव हो या स्वर्गदूत। इस शब्द का प्रयोग नए नियम में यीशु के लिए चार बार किया गया :

1. जीवन का कर्ता, प्रेरि. 3:15
2. प्रभु और उद्धारकर्ता, प्रेरि. 5:31
3. उद्धार का कर्ता, इब्रा. 2:10
4. विश्वास का कर्ता और सिद्ध करने वाला, इब्रा. 12:2

यीशु ही उद्धार का आरम्भ करने वाला और उसे परिपूर्ण करने वाला है।

Copyright © 2014 Bible Lessons International

▪ **"परमेश्वर ने मरे हुओं में से जिंदा किया"** सामान्य रूप से नया नियम बताता है कि पिता ने अपने पुत्र को मरे हुओं में से जिलाया है ताकि यीशु के जीवन, शिक्षाओं और प्रायश्चित्त के रूप में उसकी मृत्यु की पुष्टि हो और यह एक चिन्ह के रूप में था। नया नियम यह भी दृढ़तापूर्वक बताता है कि त्रिएकता के तीनों व्यक्ति यीशु के पुनरुत्थान में सक्रिय थे:

1. पवित्र आत्मा (देखें, रोमियों 8:11)
2. पुत्र (देखें, यूहन्ना 2:19-22; 10:17-18)
3. पिता (देखें, प्रेरि. 2:24, 32; 3:15, 26; 4:10; 5:30, 10:40; 13:30, 33, 34, 37; 17:31; रोमियों 6:4, 9)

यह *kerygma* का एक बड़ा धर्म वैज्ञानिक पहलू है (देखें प्रेरि. 2:14 की विशेष शीर्षक टीका)। यदि यह बात सत्य नहीं है तो शेष बातें भी सत्य नहीं हैं (देखें 1 कुरि. 15:12-19)।

▪ **"और इस *सच्चाई* के हम गवाह हैं"** यहाँ दो बातों में से एक बात हो सकती है:

1. यह किसी मुख्य स्रोत पर बल दिया जाना है जिसके ये श्रोता चश्मदीद गवाह थे (प्रेरि. 2:22)।
2. यह प्रेरितों और उपरोठी कोठरी के चेलों की ओर संकेत है (प्रेरि. 1:22; 2:32)।

संदर्भ के अनुसार यहाँ नं. 2 उचित जान पड़ता है।

3:16 "विश्वास के आधार पर " बिल्कुल यही बात फिलि. 3:9 में भी पाई जाती है। यहां प्रयुक्त यूनानी शब्द चपेजपे (विश्वास) का अनुवाद अंग्रेजी में "विश्वास" "भरोसा" या "प्रतीति करना" किया जा सकता है। यह मनुष्य का शर्त-सहित, परमेश्वर के बिना-शर्त के अनुग्रह के प्रति प्रत्युत्तर है (देखें, इफि. 2:8-9)। मूलरूप से यह परमेश्वर की विश्वासयोग्यता पर विश्वासी द्वारा भरोसा किया जाना है (अर्थात् परमेश्वर के चरित्र, उसकी प्रतिज्ञाओं और उसके मसीह पर भरोसा रखना) अथवा परमेश्वर की धार्मिकता व विश्वासयोग्यता पर विश्वास करना। सुसमाचारों और प्रेरितों के काम में चंगाई के विवरणों में घटना की वाचागत बातों का प्रमाण देना कठिन होता है। जो लोग चंगाई पाते हैं वे सदैव ही "उद्धार" नहीं पाते हैं (यूहन्ना 5)। (देखें विशेष शीर्षक-आगे)।

इस वाक्यांश में जो यूनानी भाषा का विशेषण शब्द eis (फिलि. 3:9) प्रयुक्त हुआ है, उसका प्रयोग बहुत कम उस वक्त किया जाता है जब मसीह पर विश्वास करने की बात होती है (यही भाव प्रेरि. 2:38 में भी पाया जाता है)। आमतौर पर निम्न विशेषणों में से एक प्रयोग किया जाता है:

1. *dia* - रोमियों, 3:22, 25,30; गला. 2:16; 3:14, 26; इफि. 2:8; 3:12,17; कुलु. 2:12; 2 तीमु. 3:15; 1 पत. 1:5
2. *ek* - रोमियों 9:30; 14:23; गला. 3:8, 9, 22; 5:5; याकूब 2:24
3. en - 1 कुरि. 16:13; 2 कुरि. 13:5; गला. 2:20; 1 तीमु. 3:13
4. दोनों *eis* और *ek* प्रयुक्त - रोमियों 1:17

"उद्धार करने वाले विश्वास" को व्यक्त करने का कोई श्रेष्ठ वाक्यांश नहीं है।

विशेष शीर्षक : विश्वास, आस्था, या भरोसा (पिस्टिस [संज्ञा], पिस्तू, [क्रिया], पिस्तोस [विशेषण])

A. बाइबल का यह अति महत्वपूर्ण शब्द है (देखें, इब्रा. 11:1,6)। यीशु के आरम्भिक प्रचार का यह मूल-विषय था (देखें, मर. 1:15; प्रेरि. 3:16,19; 20:21)।

B. इस शब्द की उत्पत्ति :
   1. पुराने नियम में "विश्वास" शब्द ; विश्वासयोग्यता कर्तव्यपरायणता, भरोसेमन्द होने को दर्शाता था और यह परमेश्वर के स्वभाव को दर्शाता था, न कि हमारे।
   2. यह इब्रानी शब्द "ईमून" "ईमूनाह" (emun, emunah) से बना है, BDB53, (हब. 2:4), जिसका मूल अर्थ है "निश्चय ही" या "स्थिर"। उद्धार करने वाला विश्वास यह है :
      a. स्वागत करने वाला व्यक्ति (व्यक्तिगत भरोसा) नीचे च। देखें)
      b. व्यक्ति के विषय में सच्चाई पर विश्वास करना (अर्थात पवित्रशास्त्र, च 5 देखें)
      c. उस व्यक्ति के जीवन के अनुसार जीना (अर्थात् मसीह के समान जीवन)

C. इसका पुराने नियम में उपयोग :
   इस तथ्य पर बल दिया जाना चाहिए कि अब्राहम का विश्वास भविष्य के मसीहा में नहीं था बल्कि परमेश्वर की प्रतिज्ञा में था कि उसके पुत्र और संताने होंगी (उत्प. 12:2; 15:2-5; 17:4-8; 18:14; रोमि. 4:1-5)।अब्राहम ने परमेश्वर पर विश्वास व भरोसा करके इस प्रतिज्ञा का प्रत्युत्तर दिया (देखें विशेष विषय : "पुराने नियम में विश्वास प्रतीति और विश्वासयोग्यता" उसके अन्दर अभी भी संदेह और इस प्रतिज्ञा के विषय में चिंता पाई जाती थी, जिसे पूरा होने में तेरह वर्ष लगे। उसका अपूर्ण विश्वास फिर भी परमेश्वर द्वारा ग्रहण किया गया। परमेश्वर दोषी मानव के साथ जो विश्वास के साथ उसकी प्रतिज्ञाओं के प्रति और स्वयं उसके प्रति प्रत्युत्तर देता है, कार्य करने के लिए इच्छुक रहता है, चाहे उसका विश्वास राई के दाने के बराबर (मत्ती 17:20) अथवा मिश्रित विश्वास (मर. 9:22-24) ही क्यों न हो।

D. नए नियम में इसका उपयोग :
   शब्द "विश्वास" की उत्पत्ति यूनानी क्रिया शब्द "पिस्टेओ" (*pisteuō*) अथवा संज्ञा शब्द "पिस्टिस" (*pistis*) से हुई है, जिसका अंग्रेजी में अनुवाद "विश्वास" "भरोसा" अथवा "प्रतीति करना" (believe, faith ortrust) किया गया है। उदाहरणार्थ, यूहन्ना के सुसमाचार में संज्ञा शब्द का नहीं बल्कि क्रिया शब्द का प्रयोग किया गया है। यूहन्ना 2:23-25 में यीशु नासरी के "मसीह" होने के

संबंध में भीड़ के अंगीकार में अनिश्चय पाया जाता है। अन्य सामान्य उपयोग यूहन्ना 8:31-59 और प्रेरि. 8:13,18-24 में पाए जाते हैं। सच्चा विश्वास इससे भिन्न होता है ; जिसमें चेला बनने की प्रक्रिया पाई जाती है (जैसे, मत्ती 13:20-23, 31-32; 28:19-20)।

E. पूर्वसर्ग के साथ इस शब्द का उपयोग (Its use with Preposition) :

1. eis का अर्थ है "into", इस प्रकार के बने हुए शब्द यीशु मसीह में एक विश्वासी के भरोसे व विश्वास को दर्शाते हैं :
   a. यीशु के नाम में (यूह. 1:12; 2:23; 3:18; 1 यूह. 5:13)
   b. यीशु में (यूह. 2:11; 3:15,18; 4:39; 6:40; 7:5,31,39,48; 8:30; 9:36; 10:42 11:45, 48; 12:37, 42; मत्ती 18:6; प्रेरि. 10:43; फिलि. 1:29; 1 पत. 1:8) ।
   c. मुझ में (यूह. 6:35; 7:38; 11:25-26; 12:44,46; 14:1,12; 16:9; 17:20)।
   d. पुत्र में (यूह. 3:36; 9:35; 1 यूह. 5:10)
   e. यीशु में (यूह. 12:11; प्रेरि. 19:4; गला. 2:16)
   f. ज्योति में (यूहन्ना 12:36)
   g. परमेश्वर में (यूहन्ना 14:1)
2. ev का अर्थ है "in" (में) जैसाकि यूहन्ना 3:15; मर. 1:15; प्रेरि. 5:14 में पाया जाता है।
3. epi का अर्थ है "in" अथवा "upon" (में, पर), जैसाकि मत्ती 27:42; प्रेरि. 9:42; 11:17; 16:31; 22:19; रोमि. 4:5,24; 9:33; 10:11; 1 तीमु. 1:16; 1 पत. 2:6 में पाया जाता है।
4. बिना पूर्व सर्ग के साथ जैसाकि यूहन्ना 4:50; गला. 3:6; प्रेरि. 18:8; 27:25; 1 यूहन्ना 3:23; 5:10 में पाया जाता है।
5. "होती" (hoti) जिसका अर्थ है "वह विश्वास" इसमें बताया जाता है क्या विश्वास करें :
   a. यीशु, परमेश्वर का पवित्र जन (यूह. 6:69)
   b. यीशु "मैं हूँ" है (यूह. 8:24)
   c. यीशु पिता में, और पिता यीशु में (यूह. 10:38)
   d. यीशु "मसीह" है (यूह. 11:27; 20:31)
   e. यीशु परमेश्वर का पुत्र है (यूह. 11:27; 20:31)
   f. यीशु, पिता द्वारा भेजा गया (यूह. 11:42; 17:8,21)
   g. यीशु और पिता एक हैं (यूह. 14:10-11)
   h. यीशु पिता की ओर से आया (यूह. 16:27,30)
   i. यीशु पिता के वाचागत नाम के साथ स्वयं को मिलाता है "मैं हूँ" (यूह. 8:24; 13:19)
   j. हम उसके साथ जीएँगे भी (रोमि. 6:8)
   k. यीशु मसीह मर गया है और जी उठा (1 थिस्स. 4:14)

Copyright © 2014 Bible Lessons International

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 3:17-26

[17]"अब हे भाइयो, मैं जानता हूं कि यह काम तुम ने अज्ञानता में किया, और वैसा ही तुम्हारे सरदारों
ने भी किया। [18]परन्तु जिन बातों को परमेश्वर ने सब भविष्यद्वक्ताओं के मुख से पहले ही बता दिया था,
कि उसका मसीह दुःख उठाएगा, उन्हें उसने इस रीति से पूरी किया। [19]इसलिये, मन फिराओ और लौट
आओ कि तुम्हारे पाप मिटाएँ जाएँ, जिससे प्रभु के सम्मुख से विश्रान्ति के दिन आएँ, [20]और वह यीशु को
भेजे जो तुम्हारे लिये पहले ही से मसीह ठहराया गया है। [21]अवश्य है कि वह स्वर्ग में उस समय तक रहे
जब तक कि वह सब बातों का सुधार न कर ले जिसकी चर्चा प्राचीन काल से परमेश्वर ने अपने पवित्र
भविष्यद्वक्ताओं के मुख से की है। [22]जैसा कि मूसा ने कहा, 'प्रभु परमेश्वर तुम्हारे भाइयों में से तुम्हारे
लिये मुझ सा एक भविष्यद्वक्ता उठाएगा, जो कुछ वह तुम से कहे, उसकी सुनना। [23]परन्तु प्रत्येक

मनुष्य जो उस भविष्यद्वक्ता की न सुने, लोगों में से नष्ट किया जाएगा।'' [24]और शमूएल से लेकर उसके बाद वालों तक जितने भविष्यद्वक्ता बोले उन सबने इन दिनों का सन्देश दिया है। [25]तुम भविष्यद्वक्ताओं की सन्तान और उस वाचा के भागी हो, जो परमेश्वर ने तुम्हारे बापदादों से बाँधी, जब उसने अब्राहम से कहा, 'तेरे वंश के द्वारा पृथ्वी के सारे घराने आशीष पाएँगे।'' [26]परमेश्वर ने अपने सेवक को उठाकर पहले तुम्हारे पास भेजा, कि तुम में से हर एक को उसकी बुराइयों से फेरकर आशीष दे।''

3:17 ''मैं जानता हूँ कि तुमने अज्ञानता में किया'' यह पद हमें यीशु के उन शब्दों की याद दिलाता है जो उसने क्रूस पर से कहे थे, 'ये जानते नहीं कि क्या कर रहे हैं' (लूका 23:34)। चाहे उन्हांेने अज्ञानता ही में क्यों न यह काम किया हो; फिर भी वे इसके उत्तरदायी हैं। एक तरह से अपनी जिम्मेदारी समझने में इस अज्ञानता ने उनकी सहायता की (देखें प्रेरि. 13:27; 17:30; 26:9; 1 कुरि. 2:8)।
इस धारणा के सम्बन्ध में रोचक विचार विमर्श में देखें मलार्ड एरिकसन की पुस्तक (Millard Erickson, *Christian Theology,* 2nd edition page 583-585).

▪ **''और वैसा ही तुम शासकों ने भी किया''** लूका अक्सर साधारण लोगों और शासकों और सरदारों के बीच अन्तर को दिखाता है (देखें, लूका 7:29-30; 23:35; प्रेरेरि. 13:27; 14:5)। ऐसा करने की कोशिश करने में उसकी वास्तविक समस्या शायद दोनों ही समूहों की जिम्मेदारी थी। इसलिए उसने उन्हें और उनके सरदारों दोनों को जिम्मेदार ठहराया। अक्सर माना जाता है कि यीशु सभी यहूदियों की निन्दा नहीं करता है, परन्तु केवल उनके भ्रष्ट अगुवों की निन्दा करता था। सचमुच में यह पता लगाना बड़ा कठिन है कि अंजीर के वृक्ष को शाप देना (मर. 11:12-14, 20-24) तथा दाख की बारी के दुष्ट किसानों का दृष्टान्त (लूका 20:9-18) प्रथम शताब्दी के यहूदीवाद के विरुद्ध दण्डाज्ञा थी, अथवा केवल यहूदीवाद के अगुवों के विरुद्ध दण्डाज्ञा। लूका मानता है कि यह दोनों के विरुद्ध दण्ड की आज्ञा थी।

3:18 ''पहले ही बात दिया था'' सुसमाचार, परमेश्वर के हृदय में बाद में आया हुआ विचार नहीं था, बल्कि यह उसकी अनन्त और उद्देश्यपूर्ण योजना थी (देखें, उत्पत्ति 3:15; मरकुस 10:45; लूका 22:22; प्रेरि. 2:23; 3:18; 4:28; रोमियों 1:2, देखें प्रेरि. 1:8 की विशेष विषय)। प्रेरितों के काम में आरम्भ के सभी उपदेश यीशु के पुराने नियम की भविष्यद्वाणियों और प्रतिज्ञाओं की परिपूर्ति के रूप में प्रस्तुत करते हैं कि उसमें सब बातें पूरी होती हैं।

इन पदों में प्रेरितों के काम पुस्तक के उपदेशों (*Kerygma*)के कुछ मुख्य धर्मवैज्ञानिक पहलू व्यक्त किए गए हैं जैसे:

1. यीशु में विश्वास करना अनिवार्य है।
2. पुराने नियम के नबियों द्वारा यीशु के कार्यों और उसके व्यक्तित्व के विषय में भविष्यद्वाणी कर दी गई थीं।
3. मसीह दुख उठाएगा
4. उन्हें पश्चाताप करना चाहिए
5. यीशु दुबारा आने वाला है

▪ **''परमेश्वर ने सब भविष्यद्वक्ताओं के मुख से पहले ही बता दिया था''** यीशु ने पुराने नियम की भविष्यद्वाणियाँ पूरी कीं (देखें प्रेरि. 3:34; मत्ती 5:17-48)। मैं सोचता हूं स्वयं यीशु ने उन दो मनुष्यों को सारी बातें समझाई थी जो इम्माऊस के मार्ग पर चले जा रहे थे (देखें लूका. 24:13-35) अर्थात् वे सारी बातें जो उसके दुखों, मृत्यु और पुनरुत्थान से संबंध रखती थीं और जिनकी पुराने नियम में भविष्यद्वाणी हुई थी। उन्होंने उन सब बातों को प्रेरितों को बताया होगा और उन्होंने उन बातों को अपने प्रचार का हिस्सा बना लिया (देखें लूका 24:45)।

▪ **''मसीह''** शब्द मसीह का अर्थ है ''अभिषिक्त जन।'' (देखें विशेष विषय प्रेरित 2:31) यह ऐसे जन की ओर संकेत करता है जो परमेश्वर का विशेष प्रतिनिधि हो और जिसका जीवन और मृत्यु धार्मिकता के एक नए युग का आरम्भ करेगा अर्थात् पवित्र आत्मा के एक नए युग का आरम्भ।

यीशु ही यहोवा (YHWH) परमेश्वर का प्रतिज्ञात जन है, इस बात का अंगीकार उनके प्रचार का बार बार दोहराया जाने वाला विषय बन गया:

1. पतरस (2:31; 3:18; 5:42; 8:5)
2. पौलुस - (प्रेरि. 9:22; 17:3; 18:5, 28)

■ **"दुख उठाएगा"** दुख उठाने का संकेत पुराने नियम के पाठांशों में अनेक बार किया गया है (देखें, उत्पत्ति 3:15; भजन 22; यशायाह 53; जकर्याह 12:10)। मसीह द्वारा दुख उठाए जाने की बात यहूदियों को स्वीकार नहीं होती (देखें 1 कुरि. 1:23)। वे विजेता सेनानायक की आशा करते थे (प्रका. 20:11-16)। प्रेरितों के काम पुस्तक में प्रेरितों के उपदेशों में बार बार मसीह के दुखों की चर्चा की जाती थीः

1. पौलुस - (प्रेरि. 17:3; 26:23)
2. पतरस - (प्रेरि. 3:18) 1 पतरस 1:10-12; 2:21; 3:18)

3:19" मन फिराओ और लौट आओ" यहां प्रयुक्त यूनानी शब्द *metanoeō* का अर्थ है मन का परिवर्तन करना और इब्रानी शब्द *emistrephō* का अर्थ है अपने कार्यों में परिवर्तन करना और यह शब्द लौट आने को भी प्रकट करता है (व्य. वि. 30:2,10, गिनती 30:36)। मन फिराना वाचा का एक आवश्यक शब्द है जिसमें विश्वास के द्वारा उद्धार शामिल है (देखें, मर. 1:15, प्रेरि. 3:16, 19; 20:21) प्रेरितों के काम में अक्सर इसका उल्लेख किया गया है (देखें, पतरस-2:38; 3:19, 26 तथा पौलुस 14:15; 17:30; 20:21; 26:20)। मन फिराना या पश्चात्ताप करना अनिवार्य है (देखें, लूका 13:3; 2 पतरस 3:9)। मूल रूप से मन फिराना परिवर्तन लाने की अभिलाषा करना होता है। इसमें मानवीय संकल्पित कार्य तथा परमेश्वर का अनुग्रह दोनों बातें हैं (देखें, प्र्ररि. 5:31; 11:18; 2 तीमु. 2:25)। देखें प्रेरि. 2:38 का विशेष शीर्षक।

■ **"तुम्हारे पाप मिटाए जाएँ"** इस वाक्यांश का अर्थ पापों को मिटा देना है (देखें कुलु. 2:14; प्रका. 3:5; 7:17; 21:4)। हमारे लिए कैसी महान प्रतिज्ञा है। पुराने ज़माने में स्याही में तेज़ाब हुआ करता था, जिसे मिटाना असम्भव था। पाप मिटाना सचमुच में परमेश्वर के अनुग्रह का कार्य है (भजन 51:1; 103:11-13; यशा. 1:18; 38:17; 43:25; 44:22; यिर्मयाह 31:34; मीका 7:19)। जब परमेश्वर क्षमा करता है, तो पापों को मिटा देता और उन्हें भूल जाता है।

- **"विश्रान्ति के दिन आएँ"** यहाँ पर प्रयुक्त मूल यूनानी शब्दों (*anapsuchō, anapsuxis*) का शाब्दिक अर्थ है "रूक कर साँस लेना", बेकर, अरंड्ट, गिंगरिच, और डेंकर, ए ग्रीक-इंग्लिश लेक्सिकन, पृष्ठ 63 । (Baker, Arndt, Gingrich, and Danker, *A Greek-English Lexicon*, p. 63) "थोड़ा विश्राम लेना," "राहत महसूस करना" "ताज़ी वा लेना" अथवा "चोट या जख्म पर हवा देना किटेल, न्यू टेस्टामेंट का थियोलॉजिकल डिक्शनरी, खंड 9, पृष्ठ 663 । (Kittle, Theological Dictionary of the NewTestament, vol. 9, p. 663)."
  लाक्षिणक रूप से शारीरिक व आत्मिक ताज़गी अथवा राहत पाना।
  सप्तूजेन्त (LXX) में इस शब्द का उपयोग युद्ध के बाद फिर ताकत पाने के रूप में हुआ है (देखें, निर्गमन 23:12; न्यायियों 15:19; 2 शमू. 16:14) अथवा भावनात्मक ताज़गी जैसाकि 1 शमूएल 16:23 में है।

पतरस के कथन से ऐसा लगता है मानो यह पुराने नियम की प्रतिज्ञा हो, परन्तु पुराने नियम में यह वाक्यांश प्रयुक्त नहीं हुआ है, क्योंकि रेगिस्तानों के लोग जब समस्या और दुख के स्थानों के निकट होते हैं तो वे आनन्द और स्वतन्त्रता चाहते हैं। परमेश्वर विशाल आत्मिक ताज़गी का समय लाने जा रहा था। और यह मसीह-संबंधी कार्य सुसमाचार द्वारा आया। विश्रान्ति का वह दिन यीशु नासरी में प्रकट हुआ। इस विश्रान्ति की आने वाली परिपूर्णता पवित्र आत्मा के नए युग को लाएगी। इसी विशेष सन्दर्भ में पतरस यीशु के दूसरे आगमन की ओर इशारा करता है। यह वाक्यांश प्रेरि. 3:21 के "समस्त वस्तुओं के पूर्वावस्था" में आने के समान है। देखें विशेष शीर्षक: kerygma at Acts 2:14

3:20 "वह यीशु को भेजे" इस पद में आकस्मिक घटना का अंदेशा प्रतीत होता है। पतरस के श्रोता गणों के कार्य एक प्रकार से आत्मिक परिपूर्णता के समय का निर्धारण करेंगे देखें एफ.एफ. ब्रूस की पुस्तक, प्रश्नों के उत्तर", जहाँ लेखक प्रेरि. 3:19-21 की समीक्षा रोमियों 11:25-27 के साथ करता है, पेज न. 201। (cf. F. F. Bruce, *Answers to Questions*, where he links Acts 3:19-21 with Rom. 11:25-27, p.201).

इस पद में पतरस ने "मसीह" शब्द से पहले "यीशु" शब्द रखा है, जिसका संभवतः अर्थ यह हो सकता है कि वह नासरत के "यीशु" ही को "मसीह" स्वीकार करता है। आगे चलकर अक्सर नए नियम में "प्रभु" "यीशु" "मसीह" शब्दों को एक साथ रखा गया है (अर्थात् प्रभु यीशु मसीह) और मसीह पदवी पर ज्यादा बल नहीं दिया गया। गैर यहूदी कलीसियाओं में "प्रभु यीशु मसीह" प्रचलित था।

■ **"जो तुम्हारे लिये पहले ही से मसीह ठहराया गया है"** प्रेरि. 10:41; 22:14; 26:16 में यही शब्द परमेश्वर द्वारा पहले ही से चुन लिए जाने के सम्बन्ध कहे गए है। यीशु का संसार में आना और अपने प्राण देना परमेश्वर के उद्धार की अनन्त योजना में था (देखें, प्रेरि. 2:23; 3:18; 4:28; 13:29)।

सप्तूजैन्त (LXX) में यह शब्द चुनने के सम्बन्ध में बताता है, परन्तु बिना पूर्वज्ञान के (अर्थात् लूका के लिए इसका अर्थ है पहिले से, देखें निर्गमन 4:13 और यहोशू 3:12), जो प्रेरितों के काम पुस्तक में स्पष्ट है। इसमें बताया गया है कि यीशु का भेजा जाना परमेश्वर का चुनाव था कि उसके द्वारा आशीष और उद्धार दे।

3:21

NASB NKJ	**"जिसे स्वर्ग अवश्य ग्रहण करें"**
NRSV	**"उसे स्वर्ग में रहना अवश्य है"**
TEV, NIV	**"अवश्य है वह स्वर्ग में रहे"**
NJB	**"उसे स्वर्ग में रहना अवश्य है"**

इस पद का कर्त्ता शब्द "स्वर्ग" है तथा कर्म शब्द "वह" अर्थात् यीशु है। इसमें दो क्रिया शब्द हैं। पहला शब्द ष्कमपष् है जो "deo" से बना है और जिसका अर्थ है "यह अवश्य है" अथवा "यह उचित ही है।" देखें प्रेरि. 1:16 में दी गई टिप्पणी।

इस वाक्यांश का विषय "स्वर्ग" है; वस्तु है "जिसे" (अर्थात, यीशु)। इस वाक्यांश में दो क्रियाएं हैं। पहला डी dei है, डी deō से, जिसका अर्थ है "यह आवश्यक है" या "यह उचित है।" 1:16 प्रेरितों के काम पर पूरा ध्यान दें दूसरा शब्द भविष्य कालीन अनिश्चित क्रिया का *dechomai* है। हैरल्ड के मोल्टन AORIST MIDDLE (deponent) infinitive of *dechomai* Harold K Moulton, *The Analytical Greek Lexicon Revised* (p. 88) इस सन्दर्भ में बताती है कि इस पद का अर्थ है कि "अन्दर आने देना और रोके रखना" (पेज 88)। आप देख सकते हैं कि अंग्रेजी अनुवाद पाठांश को अच्छी तरह समझा देते हैं। लूका ने इस शब्द को नए नियम के अन्य लेखकों से अधिक बार इस्तेमाल किया है (13 बार लूका में और 8 बार प्रेरितों के काम में)। पाठांश के सन्दर्भ में और उसे लागू करने के उद्देश्य से किसी शब्द की परिभाषा करनी चाहिए; यहाँ पर ध्यान दीजिए कि किस प्रकार से परिभाषा की गई। लैक्सीकन शब्दकोश केवल शब्दों के प्रयोग के बारे में बताते हैं परन्तु उनकी परिभाषा नहीं देते हैं।

NASB	**"जब तक कि"**
NKJY, NRSV, TEV	**"जब तक कि"**
NJB	**"उस समय तक"**

यह शब्द ग्रीक UBS[4] में है। मैं नहीं जानता कि क्यों NASB 1995 में इस शब्द को इटैलिक्स में दिया गया है, जो दर्शाता है कि यह शब्द ग्रीक पाठ में नहीं है, परन्तु अंग्रेजी पाठकों के लिए दे दिया गया हैं कि वे स्वयं समझ लें।

NASB के 1970 के प्रकाशन में "The" इटैलिक्स में है परन्तु "unit" इटैलिक्स में नहीं है, जो सही है।

■**“सब बातों का सुधार करने का समय ”** यह पुनः सृष्टि-निर्माण की ओर संकेत करता है (मत्ती 17:11; विशेषकर देखें रोमियों 8:13-23)। उत्पत्ति 3 का मानव-विद्रोह व पतन व्यर्थ व निष्प्रभाव कर दिया गया है और सृष्टि में सुधार कर दिया गया है; परमेश्वर के साथ सहभागिता पुनः स्थापित कर दी गई है। सृष्टि निर्माण का परमेश्वर का मूल उद्देश्य अन्ततः पूरा कर दिया गया है।

■ **“जिसकी चर्चा प्राचीन काल से परमेश्वर ने अपने पवित्र भविष्यद्वक्ताओं के मुख से की है”** मरकुस के सुसमाचार का आरम्भ मलाकी 3:1 के उद्धरण से होता है। मत्ती 1:22-23 में यशायाह 7:14 की भविष्यद्वाणी की ओर संकेत करता है। लूका ने 1:70 में कहा “जैसाकि उसने प्राचीनकाल से अपने पवित्र नबियों के मुंह से कहलवाया था” और इस वाक्यांश का प्रयोग किया। प्रारम्भिक कलीसिया के प्रचार की मुख्य विषय-वस्तु थी कि यीशु के जीवन, मृत्यु और पुनरुत्थान द्वारा पुराने नियम की भविष्यद्वाणियाँ पूरी होती हैं (देखें, मत्ती 5:17-19)। अतः यीशु की सेवकाई परमेश्वर की पूर्वनिर्धारित योजना थी, न कि बाद में बनाई गई योजना, (देखें, प्रेरि. 2:23; 3:18; 4:28; 13:29; देखें प्रेरि. 1:8 की विशेष टिप्पणी)। सब बातों ने मिलकर सृष्टि के संपूर्ण सुधार के संबंध में परमेश्वर की इच्छा को पूरा किया।

3:22 “मूसा ने कहा” “परमेश्वर एक नबी खड़ा करेगा” ये शब्द आने वाले मसीह के सम्बन्ध में प्रयुक्त किए गये थे (देखें, व्य. वि. 18:14-22, विशेषकर 15,18 पद; यूहन्ना 1:21, 25)। मूसा की व्यवस्था से यीशु के विषय में यह प्रमाण यहूदी अगुवों और सदूकी व फरीसियों के लिये बड़ा महत्वपूर्ण रहा होगा। यीशु हमेशा ही से परमेश्वर के उद्धार की योजना का हिस्सा रहा है (देखें उत्पत्ति 3:15)। वह संसार में अपना बलिदान देने आया था (देखें, मर. 10:45; 2 कुरि. 5:21)।

3:23 “परन्तु प्रत्येक मनुष्य जो उस भविष्यद्वक्ता की न सुने, लोगों में से नष्ट किया जाएगा” यह गम्भीर चेतावनी के शब्द हैं। ये व्यवस्थाविवरण 18:19 की ओर इशारा करते हैं। यीशु का तिरस्कार करना एक गम्भीर अनन्त का विषय है, जो पहले भी था और अब भी है।
व्यवस्थाविवरण 18:14-22 के इस संकेत में कुछ महत्वपूर्ण धर्म वैज्ञानिक जानकारियाँ भी हैं:

1. इसमें व्यक्तिगत और सामूहिक पहलुओं पर ध्यान दीजिए। प्रत्येक मनुष्य को व्यक्तिगत रूप से मसीह को प्रत्युत्तर देना चाहिए। सामूहिक रूप से इस्राएली कहलाया जाना पर्याप्त नहीं है।
2. “जो उस भविष्यवक्ता की न सुने वह लोगों में से नष्ट किया जाएगा” यह वाक्यांश एक “पवित्र युद्ध” की ओर संकेत करता है। परमेश्वर अपनी दाखलता को छाँटेगा (अर्थात् इस्राएल को, देखें, यूहन्ना 15; रोमियों 9-11 अध्याय)। वे लोग जो “उस भविष्यद्वक्ता” का तिरस्कार करेंगे, परमेश्वर द्वारा तिरस्कृत किए जाएंगे। हमारा उद्धार, परमेश्वर के मसीह पर हमारे विश्वास पर निर्भर है। हमारी पारिवारिक पृष्ठभूमि, जाति, नैतिकता और धार्मिक रीति-रिवाज़ों को भली भाँति पूरा करना; नई वाचा में उद्धार पाने का तरीका नहीं हैं, परन्तु मसीह पर विश्वास द्वारा उद्धार प्राप्त होता है (1 यूहन्ना 5:12)।

3:24 “शमूएल ” हीब्रू कैनन के दूसरे खण्ड के अतिरिक्त यहूदी कैनन में शमूएल को “पहले का नबी” माना गया है 1 शमूएल 3:20 में उसे भविष्यद्वक्ता कहा गया है और वह दर्शी भी कहलाता है। भविष्यद्वक्ता को प्राचीनकाल में दर्शी भी कहा जाता था (1 शमू. 9:9; 1 इति. 29:29)।

■ **“ये दिन”** अर्थात् “विश्रान्ति के दिनों” का सन्देश (प्रेरि. 3:20) और “समस्त वस्तुओं के पूर्वावस्था में” आने का सन्देश (प्रेरि. 3:21) दिया है और यह मसीह के दुबारा आगमन पर परमेश्वर के राज्य की पूर्णता की ओर संकेत करता है, परन्तु यह पद मसीह संबंधी राज्य के आरम्भ के विषय में बताता है, जो यीशु के बैतलहम में देहधारण से आरम्भ हुआ और यह सम्पूर्ण अन्त के दिनों की ओर भी संकेत करता है जो यीशु के प्रथम आगमन और दूसरे आगमन के बीच का समय है। पुराने नियम में मुख्य रूप से मसीह के एक ही आगमन को माना गया है। उसका

पहला आगमन जो "दुख उठाने वाले दास" के रूप में था (प्रेरि. 3:18) वह आश्चर्यजनक था; एक विजेता और न्यायी के रूप में उसके महिमापूर्ण आगमन की प्रतीक्षा की जा रही है।

3:25 "तुम भविष्यद्वक्ताओं की सन्तान और उस वाचा के भागी हो" पतरस उन यहूदियों को अब्राहम की सन्तान अर्थात् वाचा के लोग कहता है, फिर भी इन वाचा के लोगों को यीशु पर और सुसमाचार पर विश्वास करना और मन फिराना होगा, नहीं तो वे पूर्णतः नाश कर दिए जाएंगे (प्रेरि. 3:23)।

नया नियम (नई वाचा) एक व्यक्ति में केन्द्रित है न कि एक विशेष जाति में। इब्राहिम की बुलाहट में सारे संसार को भी सम्मिलित किया गया है (देखें उत्पत्ति 12:3)। यही विश्वव्यापी निमन्त्रण मसीह द्वारा सबके लिए उपलब्ध है अर्थात् लूका ने विशेषकर अन्यजाति लोगों के लिए अपनी पुस्तकें लिखीं। उसका सुसमाचार और प्रेरितों के काम की पुस्तक बार बार इस निमन्त्रण की विशेषरूप से घोषणा करती हैं।

▪**"वाचा"** देखें विशेष शीर्षक: वाचा at Acts 2:47

▪**"पृथ्वी के सारे घराने आशीष पाएँगे"** यह उत्पत्ति 12:1-3 में इब्राहिम से बाँधी गई परमेश्वर की वाचा की ओर संकेत है। उत्पत्ति 22:18 में भी विश्वव्यापी भावना पर ध्यान दें। परमेश्वर ने संसार को चुनने के लिए, अब्राहम को चुना फिर लोगों को चुना (देखें निर्गमन 19:5-6; इफि. 2:11-3:13)। देखें विशेष शीर्षक: प्रेरि. 1:8 की टीका

3:26 "पहले तुम्हारे लिए" पहले यहूदियों के पास भेजा क्योंकि वे वाचा के उत्तराधिकारी थे, उन्हें पहले सौभाग्य मिला कि सुसमाचार को सुनें और समझें (देखें रोमियों 1:16; 9:5)। परन्तु उन्हें भी अन्य लोगों की भाँति कार्य करना है जैसे पश्चाताप करना, मसीह पर विश्वास करना, बपतिस्मा लेना, आज्ञापालन करना और धीरज धरना इत्यादि।

▪ **"परमेश्वर ने अपने सेवक उठाया और भेजा"** प्रेरि. 2:24 तथा 3:13 की टिप्पणीयाँ देखें।

▪ **"तुम को आशीष देने "** समस्त मानव जाति के लिए परमेश्वर की यही इच्छा है (देखें, उत्पत्ति 12:3)। फिर भी उसने इस्राएल की भटकी हुई भेड़ों के पास यीशु को भेजा।

▪ "**हर एक को उसकी बुराइयों से फेरकर"** उद्धार में पाप और बुराईयों और अपनी प्राथमिकताओं में परिवर्तन करना सम्मिलित होता है। ऐसा परिवर्तन सच्चे हृदय-परिवर्तन का प्रमाण होता है। अनन्त जीवन में दिखाई देने वाली विशेषताएँ होती हैं।

विचार विमर्श के लिये प्रश्न

यह अध्ययन में मार्गदर्शन करने की टीका है, इसका अर्थ है कि आप बाइबल की अपनी व्याख्या करने के स्वयं ही जिम्मेदार हैं। हम में से प्रत्येक को उसी ज्ञान के अनुसार चलना चाहिए जो हमारे पास है। व्याख्या करने के कार्य में आप आपकी बाइबल और पवित्र आत्मा केन्द्रिय स्थान रखते हैं। यह कार्य व्याख्याकार पर न छोड़ दें।

निम्नलिखित प्रश्न अपनी सहायता के लिए दिए गए है ताकि आप पुस्तक के गम्भीर विषयों पर पुनर्विचार कर सकें। वे आपके विचारों को आन्दोलित करने के लिए हैं, इनके अलावा और भी प्रश्न हो सकते हैं:

1. "निरन्तरता" क्या है?
2. यह चंगाई क्यों इतनी अधिक शक्तिशाली थी?
3. दुख उठाने वाला मसीह यहूदियों के लिए क्यों ठोकर का कारण है?
4. लूका ने उत्पत्ति 12:3 का हवाला क्यों दिया?
5. क्या यहूदी लोग गैर यहूदियों की तुलना में किसी भिन्न प्रकार से उद्धार पा सकते हैं?

Copyright © 2013 Bible Lesson International

प्रेरितों के काम-4
बाइबल के विभिन्न आधुनिक अनुवादों में पैराग्राफ-विभाजन

UBS[4]	NKJV	NRSV	TEV	NJB
सभा के सामने पतरस और यूहन्ना	पतरस और यूहन्ना की गिरफ्तारी	पतरस और यूहन्ना की गिरफ्तारी और छूटना	सभा के सामने पतरस और यूहन्ना	सन्हेद्रिन के सामने पतरस और यूहन्ना
4:1-4	4:1-4	4:1-4	4:1-4	4:1-4
	सन्हेद्रिन को संबोधित करना			
4:5-22	4:5-12	4:5-12	4:5-7 4:8-12	4:5-12
	यीशु का नाम लेने पर प्रतिबन्ध			
	4:13-22	4:13-17	4:13-17 4:18-22	4:13-17 4:18-22
हियाब के लिये विश्वासियों की प्रार्थना			हियाव के लिये विश्वासियों की प्रार्थना	सताव में प्रेरितों की प्रार्थना
4:23-31	4:23-31	4:23-31	4:23-30 4:31	4:23-26 4:27-31
सब वस्तुएँ साझे की	सब वस्तुओं में साझा	वस्तुओं की साझेदारी	विश्वासियों द्वारा अपनी संपत्ति का साझा करना	आरम्भिक मसीहियों का समाज
4:32-37	4:32-37	(4:32-5:6) 4:32-5:11	4:32-35	4:32 4:33 4:34-35
				बरनबास की उदारता
			4:36-37	4:36-37

पठन चक्र तीसरा (**"अच्छे बाइबल अध्ययन का मार्गदर्शन"** से)

पैराग्राफ स्तर पर मूल लेखक के अभिप्राय को समझना

यह अध्ययन करने की मार्गदर्शक टीका है, जिसका अर्थ है कि आप अपनी बाइबल-व्याख्या के स्वयं उत्तरदायी हैं। हम में से प्रत्येक को अपने ज्ञान व समझ के अनुसार कार्य करना चाहिए। व्याख्या-प्रक्रिया में आप, आपकी बाइबल तथा पवित्र आत्मा प्राथमिक स्थान रखते हैं। आपको यह टीका कार्य टीकाकार पर नहीं छोड़ना चाहिए।

पूरा अध्याय एक बैठक में पढ़ें। विषयों को पहचानें। अपने विषय-विभाजन की तुलना उपरोक्त पाँच आधुनिक अनुवादों के विषय-विभाजन से करें। पैराग्राफों का विभाजन प्रेरणा प्राप्त नहीं होता है, परन्तु यह मूल लेखक के अभिप्राय को समझने की कुंजी है, जो कि व्याख्या करने का आधार है। प्रत्येक पैराग्राफ में केवल एक ही मूल विषय होता है:

1. पहला पैराग्राफ
2. दूसरा पैराग्राफ
3. तीसरा पैराग्राफ
4. अन्य

संदर्भ संबंधी जानकारी

A. प्रेरितों के काम की पुस्तक में स्पष्ट रूप से अध्यायों का विभाजन असंगत है। मूल यूनानी हस्तलेखों में अध्यायों का विभाजन, पदों का विभाजन, पैराग्राफ, विराम-चिन्ह इत्यादि नहीं थे, इन्हें बाद में आधुनिक अनुवादकों द्वारा किया गया।

B. पद 1-31 में, अध्याय 3 में हुई लंगड़े मनुष्य की चंगाई के परिणामों का वर्णन किया गया है।

C. पद 32-37 को प्रेरि. 5:1-11 के साथ रखना चाहिए।

D. प्रारम्भिक कलीसिया की समस्याएँ निरन्तर बढ़ती रहीं, परन्तु पवित्र आत्मा की सामर्थ और अनुग्रह भी प्रबलता के साथ कलीसिया पर बना रहा।

E. लूका यरूशलेम की कलीसिया में पाए जाने वाले प्रेम, उदारता व एक दूसरे की चिन्ता करने पर विशेष बल देता है, जब इन बातों का अध्ययन किया जाता है तो पश्चिमी आधुनिक व्याख्याकारों को ''पूँजीवादी'' विचारधारा से सावधान रहना चाहिए। लूका बताता है कि विश्वासियों की मण्डली एक मन और एक चित्त की थी। प्रेरितों के काम पुस्तक में साम्यवाद और पूँजीवाद का समर्थन नहीं किया जाता है क्योंकि उन दिनों में इन बातों से कोई भी परिचित नहीं था। पाठांश की व्याख्या इसके लेखन, काल, लेखक के अभिप्राय और उस काल के श्रोताओं के सन्दर्भ में की जानी चाहिए।

शब्द और वाक्यांश अध्ययन

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम: 4:1-4
[1]जब वे लोगों से यह कह रहे थे, तो याजक और मन्दिर के सरदार और सदूकी उन पर चढ़ आए।
[2]क्योंकि वे बहुत क्रोधित हुए कि वे लोगों को सिखाते थे और यीशु का उदाहरण दे देकर मरे हुओं के जी उठने का प्रचार करते थे। [3]उन्होंने उन्हें पकड़कर दूसरे दिन तक हवालात में रखा क्योंकि सन्ध्या हो गई थी। [4]परन्तु वचन के सुननेवालों में से बहुतों ने विश्वास किया, और उनकी गिनती पाँच हज़ार पुरुषों के लगभग हो गई।

4:1''याजक'' यह शब्द बड़े अक्षर वाली प्राचीन ए,ड, A, D, और א पाण्डुलिपियों में प्रयोग किया गया है परन्तु MS C में ''महायाजक'' (*archiereis*) शब्द दिया गया है। UBS[4] में ''प्रीस्ट'' शब्द दिया गया है। प्रेरित 4 अध्याय के सन्दर्भ से ज्ञात होता है कि सताव महायाजकों की ओर से नहीं आया था (प्रेरि. 4:6)।

पुराने नियम में लेवी का गोत्र (अर्थात् मूसा और हारून का गोत्र) और सारे पहिलौठे यहोवा (YHWH) परमेश्वर की सेवा के लिए चुने गए (देखें निर्ग. 13)। इसी गोत्र के परिवार निम्न सेवाएँ करते थे:

1. व्यवस्था सिखाने वाले स्थानीय शिक्षक
2. मन्दिर में सेवा करने वाले
3. मन्दिर के अधिकारी, जो विशेषकर बलिदान की विधियों में सलंग्न थे (लैव्य. 1-7)

जिस विशेष परिवार से महायाजक को चुना जाता था वह मूसा और हारून का परिवार था। इस्राएल के अन्य गोत्रों के समान इस लेवी गोत्र को भूमि का बंटवारा करते समय कोई भूखण्ड नहीं दिया गया था। उन्हें रहने के लिए

छोटे-छोटे नगर दिए गये थे (अर्थात् 48 लेवियों के नगर, देखें यहोशू 20)। यह गोत्र अपने भरण-पोषण के लिए अन्य गोत्रों पर निर्भर था; उन्हें मन्दिर के दशमांश और तीसरे वर्ष के दशमांश मिला करते थे।

जब रोमी लोगों ने पलिस्तीन पर कब्ज़ा कर लिया तो ये सब बातें बदल गईं। महायाजक का पद रोमी सरकार से खरीदा जाने लगा। अब यह पुराने नियम का आध्यात्मिक पद नहीं रह गया था, परन्तु एक राजनैतिक शक्ति और धन कमाने का माध्यम बन गया।

तत्कालिक महायाजक कैफा था (देखें, मत्ती 26:3; लूका 3:2; यूहन्ना 18), परन्तु उसके पीछे असली ताकत पहले के महायाजक हन्ना की थी (देखें, लूका 3:2; यूहन्ना 18:13, 24; प्रेरि. 4:6)। यह परिवार यहूदियों के सदूकी संप्रदाय से था।

- **"मन्दिर के सुरक्षा *कर्मियों* का सरदार"** यह लेवियों का एक विशेष दल था जो महायाजक के समान अधिकार रखते थे योसिपस 6.5.3 (cf. Josephus, *Wars* 6.5.3) मंदिर के सिपाहियों पर इनका नियन्त्रण होता था (देखें, 1 इति. 9:11; नहे. 11:11; लूका 22:4, 52; प्रेरि. 5:24, 26)। इब्रानी भाषा में उन्हें घर के सबसे ऊँचे लोग कहा जाता था।

- **"सदूकी"** ये सन्हेद्रिन के सबसे धनी राजनैतिक नेता होते थे।

विशेष शीर्षक: "सदूकी"

1. इस समूह का आरम्भ :
   A. अधिकांश विद्वानों का मत है कि नाम "सदूकी" सादोक से बना, जो दाऊद के राज्यकाल में प्रधान याजक था (देखें, 2 शमू. 8:17; 15:24)। बाद में सुलैमान ने एब्यातार याजक को अदोनिय्याह के विद्रोह का समर्थन करने के कारण देश-निकाला दे दिया (1 राजा 2:26-27) और उसके स्थान पर सादोक को प्रधान याजक नियुक्त किया (1 राजा 2:35)। बाबेल की बंधुआई के बाद यही याजकीय वंश परम्परा यहोशू महायाजक के द्वारा पुनर्स्थापित की गई (देखें हाग्गै 1:1)। यही लेवीय घराना मंदिर की सेवा के लिए चुना गया। बाद में जितने लोग भी इस याजकीय परम्परा में उत्पन्न हुए, वे सब तथा उनके सभी समर्थक सादोकी अथवा सदूकी कहलाए।
   B. नवीं शताब्दी इस्वी की रब्बी नातान की एक परम्परा के अनुसार सादोक, सोखो के एन्टीगोनुस का शिष्य (दूसरी शताब्दी ई.पू.) था। सादोक ने अपने इस गुरु की एक प्रसिद्ध कहावत "मृत्यु के बाद प्रतिफल" को गलत रुप से समझा और अपनी स्वयं की एक धर्म-शिक्षा आरंभ कर दी जो मृत्युबाद के जीवन का इंकार करती थी और इस प्रकार देह के जी उठने का भी इंकार करती थी।
   C. बाद में यहूदियों में ही सदूकी लोग बोथूसियों से मिल गए। बोथूस भी सोखो के एंटीगोनुस का शिष्य था। उसने सादोक के समान एक धर्म-शिक्षा का विकास किया। यह शिक्षा भी मृत्यु के बाद जीवन का इंकार करती थी।
   D. जौन हिरकानुस (135-104 ई. पू.) के समय तक सदूकी नाम प्रचलित नहीं था, योसेपस इस बात का उल्लेख करता है (देखें, एंटीक्विटीज़ [*Antiquities*] 13.10.5-6)। योसेपस एंटीक्विटी 13.5.9 में बताता है कि उस समय तीन विचारधाराएँ पाई जाती थीं, फरीसी, सदूकी और असेनी।
   E. इसी के समान एक और विचारधारा पाई जाती है जिसके अनुसार सदूकियों का उदय सैल्यूकस वंशी शासक एन्टीयाखुस एपीफिनेस IV (175-163 ई.पू.) के शासनकाल में उस समय हुआ जबकि याजको पर यूनानी सभ्यता थोपने का प्रयत्न किया जा रहा था। मकाबी विद्रोह के दौरान शमौन मकाबी के नेतृत्व में एक नए याजकीय दल का (142-135 ई.पू.) और उसके वंशजों का उदय हुआ (देखें मकाबी 14:41)। संभवतः यही नए हशमोनी महायाजक लोग ही वैभवशाली सदूकियों का आरम्भ थे। इसी काल में हशीदीम से फरीसीयों का (अर्थात् "अलग किए हुए लोगों") उदय हुआ (देखें, मकाबी 2:42; 7:5-23)।

F. एक और विचारधारा पाई जाती है जिसे आधुनिक (moderntheology) विचारधारा कहते हैं (अर्थात् टी. डब्ल्यू मैन्सन की विचारधारा) जिसके अनुसार "सादूकी" शब्द यूनानी शब्द सन्डीकोई (*sundikoi*) का अनुवाद है। यह शब्द उन स्थानीय अधिकारियों की ओर संकेत करता है जो रोमी अधिकारियों की नजरों में रहा करते थे, यही कारण है कि सदूकी लोग अधिकतर सन्हेद्रिन के सदस्य होते थे और रईस याजक नहीं होते थे।

II. विशेष विश्वास :

A. सदूकी लोग हशमोनी और रोमी काल में कट्टर याजक दल था जो केवल तोरह (Torah) को प्रेरणा-प्राप्त मानता था।

B. उनकी रुचि विशेषरूप से मंदिर संबंधी कार्यों, उपासना-विधि, धार्मिक रीति-विधियों और प्राचीन लेखों में रहती थी।

C. वे लिखित तोरह के ज्ञान में निपुण माने जाते थे परन्तु मौखिक परम्पराओं (तालमूद) का तिरस्कार करते थे।

D. इसी कारण उन्होंने फरीसियों के अनेक प्रचलित सिद्धान्तों को रद्द कर दिया था, जैसे :

1. देह का मृतकों में से जी उठना (देखें, मत्ती 22:23; मर. 12:18; लूका 20:27; प्रेरि. 4:1-2; 23:8)
2. आत्मा की अमरता (देखें एंटीक्विटी 18.1.3-4; वार्स 2.8.14 (cf. *Antiquities* 18.1.3-4; *Wars* 2.8.14)
3. स्वर्गदूतों का अस्तित्व (प्रेरि. 23:8)
4. वे "आँख के बदले में आँख" ("eye-for-an-eye" i.e., *lex talionis)*शाब्दिक रूप से मानते थे और शारीरिक दण्ड तथा मृत्युदण्ड का समर्थन करते थे (न कि धन देकर समझौता करना)

E. योसेपस के अनुसार निम्न तीन समूहों में आपसी विवाद का एक और मुद्दा "पहले से ठहराया जाना बनाम स्वतंत्र इच्छा" था :

1. असेनी एक प्रकार का नियतिवाद मानते थे।
2. सदूकी मनुष्य की स्वतंत्र इच्छा पर बल देते थे। (एन्टी, 13.5.9; वार्स 2.8.14)
3. फरीसी इन दोनों के बीच संतुलन की स्थिति मानते थे।

F. एक प्रकार से देखा जाए तो सदूकी और फरीसी दलों के बीच पाया जाने वाला मतभेद पुराने नियम के याजकों और नबियों के बीच पाए जाने वाले तनाव को दिखाता है।

एक और बात के कारण सदूकी व फरीसियों में तनाव रहता था, कि सदूकी लोग सामाजिक और कुलीन वर्ग का प्रतिनिधित्व करते थे। वे उच्च वर्ग के लोग हुआ करते थे, (देखें एंटीक्विटी, 13.10.6; 18:1.4-5; 20.9.1) जबकि फरीसी लोग तथा शास्त्री लोग विद्वान और देश के लोगों में भक्त समझे जाते थे। इस तनावपूर्ण स्थिति को "यरूशलेम का मंदिर बनाम स्थानीय आराधनालय" कहा जा सकता है।

तनाव का एक और कारण यह भी हो सकता है कि सदूकी लोग फरीसी शिक्षा पर पारसी धर्म की शिक्षा के प्रभाव को तिरस्कृत करते थे। उनकी शिक्षा के उदाहरण ये हैं : (1) स्वर्गदूतों पर विश्वास करना बहुत अधिक प्रचलित था (2) यहोवा (YHWH) और शैतान के बीच द्वैतवाद तथा (3) मरने के बाद जीवन पर विश्वास करना। इन तीनों बातों पर फरीसियों और असेनी दल द्वारा विश्वास किया जाना सदूकियों में प्रतिक्रिया उत्पन्न कर देता था और वे मूसा की भाँति कट्टर हो जाते थे और अन्य यहूदी दलों की शिक्षा को विफल करते थे।

III. उपरोक्त जानकारी के स्रोत :

A. सदूकियों की जानकारी का मुख्य स्रोत योसेपस है। वह फरीसियों से सहानुभूति रखता था और रोमी लोगों के समक्ष यहूदियों की सकारात्मक छवि प्रस्तुत करने में तरफदारी करता था।

B. दूसरा स्रोतों रब्बियों का साहित्य है। यहाँ पर भी कड़ा पक्षपात स्पष्ट दिखाई देता है। सदूकी लोग प्राचीनों की मौखिक परम्परा (अर्थात् तालमूद) के अधिकार व मान्यता का इंकार करते थे। ये फरीसी लेख स्पष्टरूप से अपने विरोधियों का बढ़ाचढ़ाकर नकारात्मक वर्णन करते हैं।

C. सदूकियों के अपने लेख नहीं पाए जाते हैं। ईस्वी सन् 70 में यरूशलेम और मंदिर के विनाश के कारण उनके सारे प्रमाण और उनका याजकीय प्रभाव समाप्त हो गया था।

वे क्षेत्रीय शांति बनाए रखना चाहते थे और प्रथम शताब्दी में ऐसा करने का केवल एक ही उपाय था कि रोमी सरकार के साथ सहयोग करें (देखें, यूहन्ना 11:48-50)

Copyright © 2014 Bible Lessons International

4:2

NASB, NKJV	**"बहुत क्रोधित हो गए"**
NRSV	**"बहुत चिढ़कर"**
TEV	**"चिढ़ गए"**
NJB	**"अत्यन्त चिढ़ गए"**

यहां पर इस्तेमाल किया गया यूनानी शब्द बहुत कम प्रयुक्त होता है जिसका अर्थ है "किसी कार्य में कड़ा परिश्रम करना।" प्रेरितों के काम में यह शब्द केवल एक बार अन्य स्थान पर प्रयुक्त हुआ है (देखें प्रेरि. 16:18)। यह शब्द सप्तूजैन्त में नहीं पाया जाता है।

सदूकी नेता इसलिए क्रोधित थे क्योंकि मसीही अगुवे पतरस व यूहन्ना यीशु के नाम से मन्दिर के आंगन में प्रचार कर रहे थे और उसके जी उठने की शिक्षा दे रहे थे (वे पुनरुत्थान पर विश्वास नहीं रखते थे)। उनके क्रोधित होने का कारण 4:2 की शब्दावली से स्पष्ट है कि चेले यीशु का उदाहरण दे देकर मरे हुओं के जी उठने का प्रचार कर रहे थे कि हर विश्वासी भी जी उठेगा (देखें 1 कुरिन्थियों 15)।

4:3 "उन्होंने" प्रेरि. 4:2 में पतरस, यूहन्ना और लंगड़े मनुष्य का वर्णन है, तब 4:3 में याजकों और मन्दिर के सिपाहियों का वर्णन है।

■ **"उनपर हाथ रखे"** यहां प्रयुक्त यूनानी शब्द अनेक रूपों में प्रयुक्त किया जाता है परन्तु लूका अक्सर इसी रूप में इसका प्रयोग करता है (देखें लूका 20:19; 21:12; प्रेरि. 5:18; 12:1; 21:27)।

■ **"दूसरे दिन तक हवालात में रखा"** यहूदी व्यवस्था के अनुसार अन्धेरा होने पर जांच पड़ताल करना वर्जित था। ये यहूदी अगुवे शीघ्र प्रचार कार्य बन्द कराना चाहते थे, इसलिए उन्होंने उन्हें रात भर के लिए बन्दीगृह में डलवा दिया जो शायद मन्दिर में ही हो (देखें प्रेरि. 5:18)।

4:4 "सुनने... वालों ने विश्वास किया" यह भूतकालीन क्रिया है। विश्वास सुनने से आता है (देखें रोमियों 10:17)। सुसमाचार सुनने से (आत्मा की सहायता से, यूहन्ना 6: 44,65; 16: 8-11)सुसमाचार में विश्वास करना उत्पन्न होता है। देखें प्रेरित 2:40 विशेष शीर्षक: उद्धार (यूनानी किर्या काल) at Act 2:40

■ **"आने वालों की गिनती पांच हज़ार पुरुषों के लगभग हो गई"** ध्यान दें कि इस गिनती में बच्चों और महिलाओं को शामिल नहीं किया गया है। अक्सर नए नियम में समझा जाता था कि पिता का विश्वास ही सम्पूर्ण परिवार का विश्वास है (देखें, प्रेरि. 11:14; 16:15 31, 33)। उपरौठी कोठरी में चेलों की संख्या 120 के लगभग थी। पिन्तेकुस्त के दिन 3000 विश्वासी और बढ़ गए (प्रेरि. 2:41); अब विश्वासियों की संख्या 5000 और बढ़ जाती है! यरूशलेम की कलीसिया बड़ी तेज़ी से बढ़ती रही थी।

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 4:5-12
**[5]दूसरे दिन ऐसा हुआ कि उनके सरदार और पुरनिये और शास्त्री [6]और महायाजक हन्ना और कैफा
और यूहन्ना और सिकन्दर और जितने महायाजक के घराने के थे, सब यरूशलेम में इकट्ठे हुए। [7]वे उन्हें
बीच में खड़ा करके पूछने लगे कि तुम ने यह काम किस सामथ्र्य से और किस नाम से किया है। [8]तब
पतरस ने पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होकर उनसे कहा, [9]"हे लोगों के सरदारों और पुरनियों, इस दुर्बल
मनुष्य के साथ जो भलाई की गई है, यदि आज हम से उसके विषय में पूछताछ की जाती है, कि वह**

कैसे अच्छा हुआ। [10]तो तुम सब और सारे इस्राएली लोग जान लें कि यीशु मसीह नासरी के नाम से, जिसे तुमने क्रूस पर चढ़ाया, और परमेश्वर ने मरे हुओं में से जिलाया, यह मनुष्य तुम्हारे सामने भला चंगा खड़ा है। [11]यह वही पत्थर है जिसे तुम राजमिस्त्रियों ने तुच्छ जाना और वह कोने के सिरे का पत्थर हो गया। [12]किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं; क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिसके द्वारा हम उद्धार पा सकें।''

4:5 ''उनके सरदार और पुरनिये और शास्त्री'' ये लोग सन्हेद्रिन (परिषद, 5:21, यरूशलेम सेक्षेत्र; बड़ों की परिषद, 22: 5) इसमें 70 सदस्य हुआ करते थे। यीशु के समय में यह सबसे बड़ी धार्मिक और राजनैतिक परिषद थी जिसे रोमी सरकार द्वारा मान्यत प्राप्त थी। यहूदी परम्परा के अनुसार इसका आरम्भ एज्रा तथा आराधनालय के प्रधानों द्वारा किया गया था। नए नियम में अक्सर इसे लोगों के ''सरदार, पुरनिये और शास्त्री'' कहा जाता था (देखें, लूका 23:13; प्रेरि. 3:17; 4:5, 8; 13:27)। नीचे विशेष शीर्षक देखें-

विशेष शीर्षक: सन्हेद्रिन

I.जानकारी के स्रोत :

A. स्वयं नया नियम

B. फ्लेवियुस योसेपस की एंटीक्विटीज ऑफ द ज्यूस

C. तालमूद के मिशनाह खण्ड (अर्थात् पुस्तिका सन्हेद्रिन)

दुर्भाग्यवश नया नियम और योसपस आपस में रब्बीयों के लेखों से सहमत नहीं हैं, जिससे जान पड़ता है कि यरूशलेम में दो सन्हेद्रिन थीं, पहली याजकीय (अर्थात् सदूकियों की), जिसकी अध्यक्षता महायाजक द्वारा की जाती थी और जो नागरिक और अपराध संबंधी न्याय किया करती थी, और दूसरी सन्हेद्रिन का नियंत्रण फरीसियों और शास्त्रियों के हाथों में था जिसकी रूचि धार्मिक बातों और परम्पराओं में होती थी। तौ भी रब्बियों के 200 ईस्वी के लेखों में रोमी सेनापति टाइटस द्वारा सन् 70 में हुए यरूशलेम के विनाश के बाद की सांस्कृति परिस्थितियों का उल्लेख पाया जाता है। फरीसियों के नेतृत्व में यहूदियों ने फिर से अपने धार्मिक जीवन के संचा लन के लिए स्वयं को जामनियाँ नामक नगर में पुनर्स्थापित किया और मुख्यालय बनाया और बाद में सन 118 ईस्वी में गलील आ गए।

II. परिभाषिक शब्दावली :

अदालती कार्यवाही कौन करते थे, इसे पहचानने में समस्या आती है क्योंकि बहुत से नाम इसमें शामिल हैं। यरूशलेम के यहूदी समाज में न्याय करने वाली पालिका को वर्णित करने के लिए अनेक नाम प्रयुक्त किए जाते थे, जैसे :

A. जेरोसिया (*Gerousia*) - "सिनेट" (*senate*) या "काउन्सिल" (*council*)। यह सबसे पुराना शब्द है जो फारसियों के काल की समाप्ती तक इस्तेमाल होता रहा (देखें, योसेपस की एंटीक्विटीज 12.3.3 तथा II. मकाबी 11:27)। यह शब्द लूका द्वारा प्रेरि. 5:27 में "सन्हेद्रिन" अर्थों में प्रयुक्त किया गया। संभवतः यह यूनानी भाषी पाठकों को इस शब्द को समझाने का तरीका था (देखें, I मकाबी 12:35)।

B. सन्हेद्रिओन (*Synedrion*) "सन्हेद्रिन"। यह दो शब्दों का मिश्रित शब्द है, syn (एक साथ) तथा *hera* (बैठना)। आश्चर्य की बात है कि यह शब्द अरामी में भी प्रयुक्त हुआ, परंतु यूनानी अर्थ प्रकट करता है। मकाबियों के काल की समाप्ती तक यह शब्द यरूशलेम के सर्वोच्च यहूदी न्यायालय के लिए स्वीकृत शब्द बन गया (देखें, मत्ती 26:59; मर. 15:1; लूका 22:66; यूहन्ना 11:47; प्रेरि. 5:27)। समस्या उस समय आती है जब यही शब्द यरूशलेम के बाहर के स्थानीय न्यायिक परिषद के लिए इसका प्रयोग हो (देखें, मत्ती 5:22; 10:17)।

C. प्रेसबिटरीऑन (*Presbyterion*) "पुरनियों की सभा" (देखें, लूका 22:66)। यह पुराने नियम के गोत्रों के अगुवों की पदवी है। फिर भी यह शब्द यरूशलेम के सर्वोच्च न्यायालय का सूचक बन गया (देखें, प्रेरि.

22:5)।

D. बुले (*Boule*), यह काउन्सिल शब्द योसेपस द्वारा प्रयुक्त किया गया कि निम्न न्यायिक संस्थाओं को प्रकट किया जा सके (देखें, वार्स 2.16.2; 5.4.2, पर नए नियम द्वारा नहीं)
   1. रोम की सिनेट
   2. स्थानीय रोमी अदालत
   3. यरूशलेम का सर्वोच्च न्यायालय
   4. स्थानीय यहूदी अदालत

   अरिमतिया का रहने वाला यूसुफ इसी प्रकार की महासभा (सन्हेद्रिन) का सदस्य था (देखें, मर. 15:43; लूका 23:50)।

III. **ऐतिहासिक विकास** :

मूल रूप से, बंधुआई के बाद के काल में एज्रा को महासभा का संस्थापक कहा जाता है, और ऐसा प्रतीत होता है कि बाद में यही यीशु के दिनों में सन्हेद्रिन कहलाई (देखें तरगुम, श्रेष्ठगीत 6:1)

A. मिशनाह (अर्थात तालमूद) में लिखा है कि यरूशलेम में दो बड़े न्यायालय थे (देखें, सनेह. 7:1)।
   1. यह 70 या 71 सदस्यों से मिलकर बनी थी (सन्हे. 1:6 तो यह भी बताता है कि मूसा ने गिनती 11:16-25 में पहली सन्हेद्रिन स्थापित की थी)
   2. एक अन्य सभा 23 सदस्यों से मिलकर बनी थी (इसका संकेत स्थानीय आराधनालय की अदालत हो सकता है)
   3. कुछ यहूदी विद्वान मानते हैं कि यरूशलेम में 23 सदस्यों वाली तीन सन्हेद्रिन थीं। जब यह तीनों दो अगुवों के साथ इकट्ठी होती थीं तो 71 सदस्यों की "महा सन्हेद्रिन" बनाती थी अर्थात् (Nasi, Av BetDin)
      a. एक सदूकी याजक
      b. एक वैधानिक फरीसी
      c. एक कुलीन पुरनिया

B. बंधुआई से लौट आने के बाद के काल में, लौटने वाला दाऊद का वंशज जरूब्बाबेल और हारून वंश से यहोशू याजक था। जरूब्बाबेल की मृत्यु के बाद दाऊद का वंश आगे नहीं चला, इसलिए न्यायिक कार्यभार पूर्णरूप से याजकों और स्थानीय अगुवों के हाथों में आ गया (देखें, 1 मकाबी 12:6; नहे. 2:16; 5:7)।

C. इस याजकीय न्यायिक निर्णयों की भूमिका का वर्णन हेलेनीवादी काल में डिओडोरस द्वारा 40:3:4-5 में किया गया है।

D. यह याजकीय भूमिका सरकार में सैल्यूकस के काल तक जारी रही। योसेपस एंटीक्विटी 12.138-142 में अंतियाकुस महान III. (223-187 ई.पू.) का उल्लेख करता है।

E. योसेपस की एंटिक्विटी 13.10.5-6; 13.15.5 के अनुसार यह याजकीय सामर्थ मकाबियों के काल तक जारी रही।

F. रोमी काल में सीरिया के गवर्नर (गाबिनियुस 57-55 ई.पू.) ने पाँच क्षेत्रीय "सन्हेद्रिनें" स्थापित कीं (देखें, एंटीक्विटी, 14.5.4; तथा वार्स 1.8.5), परन्तु बाद में रोम द्वारा उन्हें रद्द कर दिया गया (47 ई.पू.)

G. सन्हेद्रिन की हेरोदेस के साथ अक्सर राजनैतिक बातों में तकरार होती रहती थी (देखें, एंटीक्विटी 14.9.3-5), उसने 37 ई.पू. में बदला लिया और बहुत से हाई कोर्ट बंद करा दिए (एंटीक्विटी, 14.9.4; 15.1.2)

H. रोमी राज्यपालों के अधीन ईस्वी 6-66, में सन्हेद्रिन ने काफी प्रभाव और शक्ति प्राप्त की (एंटी. 20.200,251 तथा मर. 14:55)। नए नियम में निम्नलिखित तीन अदालतों का वर्णन पाया जाता है जिसमें महायाजक के परिवारों की अध्यक्षता में सन्हेद्रिन ने भूमिका निभाई :
   1. यीशु का मुकदमा (मर. 14:53 से 15:1; यूहन्ना 18:12-23, 28-32)
   2. पतरस और यूहन्ना (प्रेरि. 4:3-6)
   3. पौलुस (प्रेरि. 22:25-30)

III. सन 66 ईस्वी में यहूदियों ने जब विद्रोह किया, तो रोमियों ने सन् 70 ईस्वी में यहूदी समाज और उनके मंदिर को नष्ट कर दिया। इस प्रकार सन्हेद्रिन पूर्ण रूप से भंग हो गई, हालांकि बाद में फरीसियों ने जामनियाँ नगर में फिर, से धार्मिक मामलों के लिए सर्वोच्च न्यायिक संस्था स्थापित करने का प्रयत्न किया, न कि राजनैतिक और नागरिक मामलों के लिए।

IV. सदस्यता :

A. बाइबल में पहली बार यरूशलेम में हाई-कोर्ट का वर्णन 2 इति. 19:8-11 में पाया जाता है। उसमें निम्नलिखित सदस्य थे :

1. लेवी
2. याजक
3. परिवारों के मुखिये (जैसे पुरनिए, देखें, I. मकाबी 14:20; II. मकाबी 4:44)

B. मकाबियों के काल में सन्हेद्रिन पर इनका प्रभुत्व था
(1) सदूकी लोगों का तथा (2) स्थानीय धनी वर्ग का (देखें, 1 मकाबी 7:33; 11:23; 14:28)। बाद में "शास्त्री लोग" जो मूसा की व्यवस्था में निपुण तथा अक्सर फरीसी होते थे, इसमें शामिल हुए स्पष्टरूप से सिकंदर जेनायुस की पत्नी सलोमी द्वारा (76-67 ई.पू.)।उसने यहां तक कहा कि फरीसियों को प्रमुख दल होना चाहिए (देखें, योसेपस की, वार्स 1.5.2)।

C. यीशु के समय में सभा इन लोगों द्वारा गठित थी :

1. महायाजक का परिवार
2. स्थानीय धनी लोग
3. शास्त्री (देखें, लूका 19:47)

V. स्रोत जिनकी सहायता ली गई :

A. डिक्शनरी ऑफ जीसस एण्ड गॉस्पल्स, आई वी पी, पेज 728-732
(*Dictionary of Jesus and the Gospels*, IVP, pp. 728-732)

B. द ज़ोन्डरवैन पिक्टोरियल एन्साइक्लोपीडिया ऑफ द बाइबल खण्ड 5, पेज 268-273
(*The Zondervan Pictorial Encyclopedia of the Bible*, vol. 5, pp. 268-273)

C. द न्यू स्काफ-हैरज़ोग एन्साइक्लोपीडिया आफ रिलीजियस नॉलेज, खण्ड 10, पेज 203-204
(*The New Schaff-Herzog Encyclopedia of Religious Knowledge*, vol. 10, pp. 203-204)

D. द इन्टर प्रेटर्स डिक्शनरी आफ द बाइबल, खण्ड 4, पेज 214-218
(*The Interpreter's Dictionary of the Bible*, vol. 4, pp. 214-218)

E. एन्साइक्लोपीडिया जूडायकि, खण्ड 14, पेज 836-839
(*Encyclopedia Judaica*, vol. 14, pp. 836-839)

Copyright © 2014 Bible Lessons International

4:6 "हन्ना" ग्रीक भाषा में इसका नाम हन्ना है; योसेपस इसे हनन्नौस (जौनाथन) कहकर पुकारता है। ऐसा प्रतीत होता है कि यह नाम हीब्रू के "दयालु" अथवा "अनुग्रहकारी" शब्द से बना है (हन्नान) (*hānān*, BDB 336) ।

पुराने नियम में महायाजक का पद हारून के वंशज को दिया जाता था और यह पद जीवन भर का होता था। परन्तु रोमी सरकार ने इस पद को बदलकर लेवी वंश से खरीदा हुआ, राजनैतिक पद बना दिया। मन्दिर में स्त्रियों के आँगन में होने वाला व्यापार इसी महायाजक के नियन्त्रण में था। यीशु द्वारा मन्दिर की सफाई ने इसके परिवार को क्रोधित किया।

फ्रलेवियस योसेफस के अनुसार ई. 6 से 14 तक हन्ना महायाजक के पद पर रहा। उसकी इस पद पर नियुक्ति सीरिया के हाकिम क्विरिनियुस द्वारा हुई और वलेरियुस ग्रेटस द्वारा हटा दिया गया। फिर उसके रिश्तेदार (5 बेटे और एक पोता) उसके उत्तराधिकारी बने। उत्तराधिकारियों में कैफा प्रबल दावेदार था जो ई. 18 से 36 तक महायाजक रहा (यूह. 18:13)। इस महायाजक पद के पीछे हन्ना की शक्ति काम करती रही। यूहन्ना बताता है कि यीशु को पकड़कर सबसे पहले हन्ना के पास लाया गया था (यूह. 18:13, 19-22)।

▪**"कैफा"** कैफा को यहूदिया के राज्यपाल वलेरियुस ग्रेटस द्वारा महायाजक पद पर नियुक्त किया गया था और वह ई. 18-36 तक महायाजक बना रहा (देखें (cf. MS D, *'Iōnathas*,cf. NEB, NJB) ।

▪**"यूहन्ना"** संभवतः यह "जौनाथन" है जिसके बारे में योसेपस बताता है कि वह हन्ना के पुत्रों में से एक था और कैफा के बाद सन् 36 ई. में महायाजक बना था। UBS[4] में A रेटिंग (निश्चित) के रूप में 'Iōannēs (यानी, योहन्ना) है, यहां तक कि REB "योहन्ना" पर वापस जाता है।

▪**"सिकन्दर"** इसके विषय में अधिक जानकारी प्राप्त नहीं है, यूहन्ना की तरह वह भी हन्ना के रिश्तेदारों में से था और सदूकी संप्रदाय का सदस्य था।

4:7 "जब उन्हें बीच में खड़ा किया" सन्हेद्रिन के सदस्य ऊँचे मन्च पर अर्ध-गोलाकार बनाकर बैठ गए।

▪**"वे पूछताछ *करने लगे*"** इसके दो अर्थ हो सकते हैं (1) जो कार्य वे कर रहे हैं पिछले समय से करते आ रहे हैं या (2) अभी यह कार्य आरम्भ ही किया है।

▪**"तुम किस सामथ्र्य और किस नाम से"** वे सोच रहे थे कि चंगाई का कार्य जादुई ताकत से किया गया है (प्रेरि. 19:13)। उन्होंने इसी प्रकार का व्यवहार यीशु के साथ भी किया था (देखें, लूका 11:14-26; मरकुस 3:20-30)। वे प्रत्यक्ष चंगाई का इंकार नहीं कर पाए, इसलिए जिस सामथ्र्य से चंगाई दी गई उसका विरोध करने लगे।

4:8 "पवित्र आत्मा से परिपूर्ण" प्रेरितों के लिए बुद्धि और साहस का स्रोत पवित्र आत्मा थी (देखें, लूका 12:11-12; 21:12-15)। याद रखें कि यही पतरस वह व्यक्ति था जिसने डर के मारे कुछ दिन पहले ही प्रभु का इंकार किया था (देखें प्रेरि. 4:13)। ध्यान दें अब पतरस आत्मा से भरा था (देखें, प्रेरि. 2:4; 4:8,31)। इससे प्रकट होता है कि यह अनुभव दोहराया जा सकता है (देखें इफि. 5:18)। देखें प्रेरि. 5:17 की टिप्पणी।

4:9 "यदि" यह बड़ा अच्छा वाक्य है जिसमें शर्त है। लेखक के उद्देश्य के विषय में हम इसे सत्य मान सकते हैं।

▪**"आज अगर हम से पूछताछ की जाती है"** यहाँ प्रयुक्त यूनानी शब्द का शाब्दिक अर्थ है, "न्यायालय द्वारा जाँच किया जाना" (देखें प्रेरि. 12:19; 24:8; 28:18; लूका 23:14)। यह शब्द बिरीया नगर के यहूदियों के सन्दर्भ में इस्तेमाल किया गया था, जो पवित्रशास्त्र की खोजबीन करने लगे थे कि पौलुस सही व्याख्या कर रहा है या नहीं (देखें, प्रेरि. 17:11)।

▪ **"इस बीमार मनुष्य के साथ जो भलाई की गई"** पतरस इस अद्भुत चंगाई और दया के कार्य के संबंध में उनकी औपचारिक पूछताछ और शत्रुतापूर्ण वातावरण बनाने को अनुचित ठहराता है। उन्हें तो इस कार्य के लिए परमेश्वर की स्तुति करनी चाहिए।

▪ **"अच्छा किया गया"** अर्थात् उसके पैर पूरी तरह से स्वस्थ कैसे हो गए।

4:10 "तो तुम सब और सारे इस्राएली लोग जाने लें" यह सकारात्मक आदेश सूचक क्रिया है। पवित्र आत्मा ने पतरस को साहस से परिपूर्ण कर दिया था, इस कारण वह उनकी पूछताछ से नहीं डरा। ये सारे अगुवे मसीह को कब्र में बन्द न रख सके, और न ही अपने सामने खड़े लंगड़े मनुष्य की चंगाई का इंकार कर सके।

▪ **"यीशु मसीह नासरी के नाम से"** पतरस उनके प्रश्न के अनुसार विशेष बल देकर उत्तर देते हुए बताता है कि चंगाई का आश्चर्यजनक कार्य किस प्रकार से हुआ। देखें **विशेष शीर्षकः यीशु नासरी** at Acts 2:22

▪ **"जिसे तुमने क्रूस पर चढ़ाया"** यह सुस्पष्ट सत्य था। उन्होंने ही उसे मरवाया था। प्रेरि. 4:11 में इन शब्दों पर ध्यान दें "जिसे तुम राजमिस्त्रियों ने तुच्छ जाना।" ये शब्द उन्हें दोषी ठहराते हैं।

▪ **"परमेश्वर ने जिसे मरे हुओं में से जिलाया"** नया नियम दृढ़तापूर्वक स्वीकार करता है कि यीशु के पुनरुत्थान में त्रिएकत्व के तीनों व्यक्ति क्रियाशील थे:

1. पवित्र आत्मा (रोमियों 8:11)
2. यीशु (यूहन्ना 2:19-22; 10:17-18)
3. पिता (प्रेरि. 2:24, 32; 3:15, 26; 4:10; 5:30; 10:40; 13:30, 33, 34, 37; 17:31; रोमि. 6:4, 9)।

यह परमेश्वर की यीशु के जीवन और शिक्षाओं के सत्य होने के सम्बन्ध में पुष्टि थी और साथ ही उसकी प्रायश्चित्त की मृत्यु को ग्रहण करने की भी पुष्टि थी। (प्रेरितों के काम पुस्तक के उपदेशों का यह महत्वपूर्ण भाग रहा है देखें विशेष टिप्पणी प्रेरि. 2:14)।

▪ **"यह मनुष्य यहाँ खड़ा है"** लंगड़ा मनुष्य खड़ा हो जाता है और जाकर उनके सामने खड़ा हो जाता है। यह वाक्य शब्दों का मज़ाक जैसा है।

▪ **4:11** यह भजन संहिता 118:22 से लिया गया हवाला है, परन्तु मैसोरेटिक मूलपाठ या सप्तूजैन्त का नहीं है (देखें इफि. 2:20; 1 पत. 2:4 क्रमशः)। मरकुस 12:10 और लूका 20:17 में यीशु ने इन शब्दों को अपने ऊपर लागू किया, जो सप्तूजैन्त से लिए गये हैं। यह मसीह के तुच्छ समझे जाने की भविष्यद्वाणी की पूर्ति को दर्शाते हैं जो परमेश्वर की अनन्त उद्धार की योजना का मूल आधार बना (देखें प्रेरि. 1:8 की टिप्पणी)। इन यहूदी अगुवों के लिये यह ठोकर पहुंचाने वाला कथन था (देखें 1 तीमु. 2:5)।

NASB	**"कोने का मुख्य पत्थर"**
NKJV	**"कोने का मुख्य पत्थर"**
NRSV, NJB	**"कोने का पत्थर"**
TEV	**"सबसे महत्वपूर्ण कोने का पत्थर"**

विशेष शीर्षक: कोने का पत्थर

I. पुराने नियम में प्रयोग :

A. यहोवा (YHWH) का वर्णन करने के लिए ऐसे पत्थर की संकल्पना की गई जो सख्त और मज़बूत हो ताकि उस पर अच्छी नींव रखी जा सके (अयूब 38:6; भजन 18:2 "चट्टान" के लिए दो शब्द इस्तेमाल करते हैं। BDB700, 849)।

B. बाद में यह विकसित होकर "मसीहा" संबंधी शीर्षक बन गया (उत्प. 49:24; भजन 118:22; यशा. 28:16)।

C. मसीह के द्वारा "पत्थर" या "चट्टान" यहोवा (YHWH) की ओर से दण्ड का प्रतीक बना (यशा. 8:14 [BDB6, 103]; दानि. 2:34-35,44-45 [BDB 1078])

D. यह इमारत बनाने के रूपक में विकसित हुआ (विशेषकर यशा. 28:16)

1. नीव का पत्थर पहले रखा जाता है, जो कोनों को और शेष इमारत को सही बैठा देता है, यह "कौने का पत्थर" कहलाता है।
2. यह पत्थर अंतिम पत्थर भी हो सकता है जो सही जगह पर बैठाया जाता है और दीवारों को आपस में जोड़े रखता है (जक. 4:7; इफि. 2:20-21), और "चोटी का पत्थर" कहलाता है, जो इब्रानी शब्द (rosh) रौश (अर्थात सिर) से बना है।
3. इसका अर्थ "मुख्य पत्थर" (key stone) भी हो सकता है, जो दरवाजों के ऊपर बीच में लगाया जाता है और पूरी दीवार का वजन उठाता है।

II. **नए नियम में प्रयोग** :

A. यीशु ने भजन 118 का उद्धरण अपने संबंध में दिया (देखें, मत्ती 21:41-46; मर. 12:10-11; लू. 20:17)।

B. पौलुस भजन 118 का प्रयोग आविश्वासी विद्रोही इस्राएल द्वारा यहोवा (YHWH) का तिरस्कार करने के संबंध में किया गया (देखें रोमि. 9:33)।

C. पौलुस कोने के पत्थर का उपयोग इफि. 2:20-22 में मसीह के संबंध में करता है।

D. पतरस इस अवधारणा का उपयोग यीशु के लिए करता है (1 पत. 2:1-10)। यीशु कोने का पत्थर और विश्वासी जीवित पत्थर है (अर्थात् वे मंदिर हैं, 1 कुरि. 6:19) जो उसमें बने ; यीशु नया मंदिर है (देखें, मर. 14:58; मत्ती 12:6; यूह. 2:19-20)। यीशु को मसीह न मानकर यहूदियों ने अपनी आशा को नींव का तिरस्कार किया।

III. धर्म वैज्ञानिक वक्तव्य (Theological Statements)

A. यहोवा (YHWH) ने दाऊद/सुलैमान को एक मंदिर बनाने की अनुमति दी (2 शमूएल 7; 1 इतिहास 17)। उसने उनसे कहा कि यदि वे वाचा का पालन करते हैं तो वह उन्हें आशीष देगा और उनके साथ रहेगा (लैव्यव्यवस्था 26; व्यवस्थाविवरण 28), लेकिन यदि वे ऐसा नहीं करते तो मंदिर खंडहर में तब्दील हो जाएगा (1 राजा 9:1-9)!

B. रब्बियों का यहूदीवाद धर्म की बाहरी रीति-विधियों पर ध्यान देता था परंतु व्यक्तिगत विश्वास के पहलू का तिरस्कार करता था (देखें, यिर्म. 31:31-34; यहेज. 36:22-36)।परमेश्वर मानव जाति से जो उसके स्वरूप पर सृजी गई थी (उत्प. 1:26-27) प्रतिदिन की उसके साथ सहभागिता और भक्ति का जीवन चाहता है। लूका 20:17-18 तथा मत्ती 5:20 भयभीत कर देने वाले दण्ड के शब्द हैं, जो सीधे यहूदीवाद के लिए हैं।

C. यीशु ने मंदिर को अपनी देह कहा (यूहन्ना 2:19-22)। यही विचार यीशु में व्यक्तिगत विश्वास रखने और उसे मसीह स्वीकार करने में बदल गया और यही यहोवा (YHWH) के साथ संगति की कुंजी है (यूह. 14:6; 1 यूह. 5:10-12)।

D. मानव जाति की टूटी हुई सहभागिता (देखें, उत्प. 1:26-27 तथा उत्प. 3) को फिर सुधारने के लिए उद्धार दिया जाता है, ताकि परमेश्वर के साथ सहभागिता संभव हो सके। अब मसीही धर्म का लक्ष्य मसीह के समान बनना है। विश्वासियों को जीवित पत्थर बनना है (अर्थात् छोटे-छोटे मंदिर जो मसीह के नमूने पर बने हों)।

E. यीशु हमारे विश्वास की आधारशिला और हमारे विश्वास का चोटी का पत्थर है (अर्थात् अल्फा और ओमेगा)। और साथ ही ठेस लगने की चट्टान व पत्थर है (यशा. 28:16)। उसे खो देना, सब कुछ खोने के समान है। यहाँ बीच की भूमि नहीं हो सकती है।

Copyright © 2014 Bible Lessons International

4:12 "किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं" यह दोहरा सख्त नकारात्मक कथन है। अब्राहम अथवा मूसा के द्वारा उद्धार नहीं है (देखें, यूहन्ना 14:6; 1 तीमु 2:5; 1 यूहन्ना 5:10-12)। यह बड़ा धक्का देने वाला दावा है जिससे चोट पहुंचती है। यीशु ने स्वयं कहा था कि उसके बिना कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता। उसके साथ व्यक्तिगत संबंध आवश्यक है। पतरस ने विद्वान यहूदी अगुवों के सामने साहस के साथ इस बात घोषणा की। इसे अक्सर मसीही धर्म की विशिष्टता की लोकनिन्दा कहा जाता है। यहां पर बीच में रहने की कोई बात नहीं है। यह कथन या तो सच्चा है और या मसीही धर्म झूठा है।

■ **"स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया"** परमेश्वर ने दूसरा नाम नहीं दिया; यह उसने ठहरा दिया है, मानव जाति की आध्यात्मिक आवश्यकताओं का परमेश्वर का यही उत्तर है। इसके अलावा अन्य योजना नहीं है। इस विषय में अधिक जानकारी के लिए एच.ए. नेटलैन्ड की पुस्तक देखें, H. A. Netland *Dissonant voice: Religious Pluralism and the Question of Truth.*

■ **“मनुष्यों में”** यहाँ विश्वव्यापी विचार पर ध्यान दें (देखें, यूहन्ना 3:16; 1 तीमु. 2:4; 2 पत. 3:9)।

■ **“जिसके द्वारा हम उद्धार पा सकें”** इस वाक्यांश में दो क्रियात्मक बातें हैं

1. कमपए वर्तमान क्रिया सूचक, “पा सकें” (देखें प्रेेरि. 1:16 में कमप के विषय में टिप्पणी देखें)
2. *sōthēnai* यह *sōzō* की भविष्यकालीन क्रिया है, जिसका अर्थ है, “उद्धार पाने के लिये” क्या करें।

नया नियम में “उद्धार” दो रूपों में प्रयुक्त हुआ है:

1. सांसारिक छुटकारा (पुराने नियम के अनुसार, देखें, मत्ती 9:22; मरकुस 6:56; लूका 1:71; 6:9; 7:50; प्रेरि. 27:20, 31; याकूब 1:21; 2:14; 4:12; 5:20)
2. आध्यात्मिक उद्धार (नए नियम उपयोग, देखें, लूका 19:10; प्रेरि. 2:21, 40, 47; 11:14; 15:11; 16:30-31)

लंगड़े मनुष्य ने दोनों प्रकार का उद्धार अनुभव किया। यहूदियों के धार्मिक अगुवों के लिए आवश्यक था कि वे क्षमा पाने और परमेश्वर द्वारा ग्रहण किए जाने के लिए यीशु पर विश्वास करें कि वही उनकी एकमात्र आशा है। मानवजाति को उद्धार की आवश्यकता है (देखें रोमियों 1:18-3:20) और केवल यीशु ही है जो उद्धार दे सकता है (रोमियों 3:21-31)। प्रेरि. 4:12 में पुराने नियम का उद्धरण दर्शाता है कि यीशु सदा परमेश्वर के उद्धार की योजना में था (देखें, यशायाह 8:14-15; 28:14-19; 52:13-53:12)।

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 4:13-22

[13]जब उन्होंने पतरस और यूहन्ना का साहस देखा, और यह जाना कि ये अनपढ़ और साधारण मनुष्य हैं, तो आश्चर्य किया; फिर उनको पहचाना, कि ये यीशु के साथ रहे हैं। [14]उस मनुष्य को जो अच्छा हुआ था, उनके साथ खड़े देखकर, वे विरोध में कुछ न कह सके। [15]परन्तु उन्हें सभा के बाहर जाने की आज्ञा देकर, वे आपस में विचार करने लगे, [16]“हम इन मनुष्यों के साथ क्या करें? क्योंकि यरूशलेम के सब रहनेवालों पर प्रगट है, कि इनके द्वारा एक प्रसिद्ध चिन्ह दिखाया गया है; और हम उसका इन्कार नहीं कर सकते। [17]परन्तु इसलिये कि यह बात लोगों में और अधिक फैल न जाए, हम उन्हें धमकाएँ, कि वे इस नाम से फिर किसी मनुष्य से बातें न करें।” [18]तब उन्हें बुलाया और चेतावनी देकर यह कहा, “यीशु के नाम से कुछ भी न बोलना और न सिखाना।” [19]परन्तु पतरस और यूहन्ना ने उनको उत्तर दिया, “तुम ही न्याय करो; क्या यह परमेश्वर के निकट भला है कि हम परमेश्वर की बात से बढ़कर तुम्हारी बात मानें। [20]क्योंकि यह तो हम से हो नहीं सकता कि जो हम ने देखा और सुना है, वह न कहें।” [21]तब उन्होंने उनको और धमकाकर छोड़ दिया, क्योंकि लोगों के कारण उन्हें दण्ड देने का कोई दाँव नहीं मिला, इसलिये कि जो घटना हुई थी उसके कारण सब लोग परमेश्वर की बड़ाई करते थे। [22]वह मनुष्य, जिस पर यह चंगा करने का चिन्ह दिखाया गया था, चालीस वर्ष से अधिक आयु का था।

4:13 “साहस” देखें प्रेरित 4:29 विशेष शीर्षक: Boldness (*parrhēsia*) at Acts 4:29

■**“अनपढ़”** यहाँ प्रयुक्त यूनानी शब्द *agrammatos* है, जो कठिनाई से अक्षर लिख पाता है। इसके दो अर्थ हो सकते हैं:

1. वे अशिक्षित थे देखें मोल्टन , मिलिगन, पारिभाषिक शब्द, पेज 6 (Moulton, Milligan, *Vocabulary*, page 6)
2. उन्होंने रब्बियों की पाठशाला से प्रशिक्षण नहीं लिया था देखें ए.टी. रॉबर्टसन, ग्रीक न्यू टेस्टामेंट में वर्ड पिक्चर्स, वॉल्यूम। 3. पृष्ठ 52 और लोव और निदा, लेक्सिकन, वॉल्यूम। 1. पृष्ठ संख्या 8), (A.T. Robertson, *Word Pictures in the Greek New Testament,* vol. 3. page 52 and Louw and Nida, *Lexicon,* Vol. 1. Page 328)

▪ **"अप्रकशिक्षित"** यहाँ यूनानी शब्द प्कपवजमे है, जिसका आमतौर पर अनुवाद "अनाड़ी" किया जाता है या जिसने किसी क्षेत्र में प्रशिक्षण नहीं लिया हो। मूलरूप से यह शब्द साधारण मनुष्य की ओर संकेत करता है जो किसी अधिवक्ता या नेता के विपरीत हो अथवा उसकी तरह विशेषताएं न रखता हो। बाद में इस शब्द का उपयोग बाहर वाले बनाम समूह के सदस्य के रूप में होने लगा (देखें, 1 कुरि. 14:16, 23-24; 2 कुरि. 11:6)।

इस शब्द को भिन्न भिन्न अंग्रेजी अनुवादों में कैसे प्रयुक्त किया गया है, ध्यान दें:

NASB, NKJV	"अनपढ़ और साधारण मनुष्य"
NRSV	"अनपढ़ और साधारण मनुष्य"
TEV	"साधारण और अनपढ़ मनुष्य"
NJB	"अनपढ़ और अप्रशिक्षित"

▪ **"वे हैरान हो गए"** यह अपूर्ण कालीन सकारात्मक क्रिया का सूचक है (जैसाकि आगे की दो क्रियाएँ हैं)। यह कार्य के आरम्भ होने या पिछले कार्य को दोहराने की ओर संकेत करता है। लूका ने अक्सर इस शब्द का प्रयोग किया है (18 बार लूका और प्रेरितों के काम में); आमतौर पर सकारात्मक अर्थों में इसका प्रयोग होता है, परन्तु हमेशा नहीं। (देखें, लूका 11:38; 20:26; प्रेरि. 4:13; 13:41)।

▪ **"येशु के साथ होने के नाते उन्हें पहचानना *शुरू* किया"** कि ये यीशु के साथ रहे हैं" यह वास्तव में एक बधाई देना था। यीशु ने भी प्रशिक्षण नहीं पाया था और रब्बियों की पाठशाला में नहीं गया था, तो भी पुराने नियम को अच्छी तरह से जानता था। वह अन्य यहूदी बच्चों के समान आराधनालय में धार्मिक शिक्षा पाने अवश्य गया था (जैसा कि पतरस व यूहन्ना भी गए थे), बच्चों के लिए यह आवश्यक कार्य था।
इन यहूदी अगुवों ने पतरस और यूहन्ना के साहस और सामथ्र्य देखकर उन्हें पहचाना। उन्होंने यीशु में भी यही बात देखी थी।

4:14 इस लंगड़े मनुष्य को सब लोग अच्छी तरह से जानते थे क्योंकि वह प्रतिदिन मंदिर के द्वार पर बैठा रहा करता था; परन्तु अब वह नहीं बैठता था। मन्दिर में उपस्थित भीड़ इन्कार नहीं कर सकती थी कि वह अब स्वस्थ हो गया है (पे्ररि. 4:16,22)।

4:15 उन्होंने उन तीनों को सभा से बाहर जाने का आदेश दिया, ताकि योजना बना सकें कि उनके विरुद्ध क्या कार्यवाही करें (देखें प्रेरि. 4:17-18)

4:17-18 यही उनकी योजना थी, कि वे यीशु के नाम कुछ भी न बोलें और न सिखाएँ। उन लोगों के बारे में क्या कहें जो परमेश्वर की चंगाई के लिए उसकी स्तुति कर रहे थे (देखें, प्रेरि. 3:8-9; 4:16)?

4:19 "क्या यह" कि तुम्हारी बात मानें" यह अवव्ल दर्जे का तर्क है, जो वास्तव में अमल में नहीं लाया गया, पर केवल कहा गया। पतरस और यूहन्ना नहीं सोचते कि उनकी आज्ञा मान्य है (देखें प्रेरि. 5:28)।

▪**"सही"** देखें विशेष शीर्षक: धार्मिकता । प्रेरित 3:14

▪**"तुम ही न्याय करो"** यह भविष्यकालीन आदेशात्मक क्रिया है। वे अगुवे स्वयं अपने कार्यों, कथनों और इरादों से अपने आप को दोषी ठहराते थे।

4:20 पतरस और यूहन्ना दृढ़तापूर्वक कहते हैं कि उनसे यह नहीं हो सकता कि जो उन्होंने देखा और अनुभव किया है उसे न बताएँ।

4:21 "उन्होंने उनको और धमकाया " मुझे आश्चर्य होता है कि धमकी देकर वे क्या करना चाहते थे। यीशु तो मुर्दों में से जी उठा था, वह अपने बिस्तर से उठा लिया गया था; अब पतरस और यूहन्ना के साथ वे अगुवे क्या करना चाहते हैं?

▪**"(क्योंकि उन्हें दण्ड देने का कोई आधार नहीं मिला)"** यह लूका की रचना का एक उद्देश्य हो सकता है। मसीही धर्म रोमी सरकार के लिए और यरूशलेम की शान्ति के लिए खतरा नहीं था, यहाँ तक कि सन्हेद्रिन के सदस्य भी मसीही अगुवों को दोषी ठहराने का आधार नहीं ढूँढ़ पाए।

"लोगों के कारण" घटनाओं के चश्मदीद गवाह जो यरूशलेम में थे, आदि कलीसिया का बड़ा मान-सम्मान करते थे (प्रेरि. 2:47)। कलीसिया की इस प्रसिद्धि से यहूदी अगुवे भयभीत थे (प्रेरि. 5:13,26)।

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 4:23-31

[23]वे छूटकर अपने साथियों के पास आए, और जो कुछ प्रधान याजकों और पुरनियों ने उनसे कहा था, उनको सुना दिया। [24]यह सुनकर उन्होंने एक-चित्त होकर ऊँचे शब्द से परमेश्वर से कहा, "हे स्वामी, तू वही है जिसने स्वर्ग और पृथ्वी और समुद्र और जो कुछ उनमें है बनाया। [25]तू ने पवित्र आत्मा के द्वारा अपने सेवक हमारे पिता दाऊद के मुख से कहा, 'अन्य जातियों ने हुल्लड़ क्यों मचाया? और देश देश के लोगों ने क्यों व्यर्थ बातें सोचीं? [26]प्रभु और उसके मसीह के विरोध में पृथ्वी के राजा खड़े हुए, और हाकिम एक साथ इकट्ठे हो गये।' [27]क्योंकि सचमुच तेरे सेवक यीशु के विरोध में, जिसका तू ने अभिषेक किया, हेरोदेस और पुन्तियुस पिलातुस भी अन्य जातियों और इस्राएलियों के साथ इस नगर में इकट्ठे हुए, [28]कि जो कुछ पहले से तेरी सामर्थ्य और मति से ठहरा था वही करें। [29]अब हे प्रभु, उनकी धमकियों को देख; और अपने दासों को यह वरदान दे कि तेरा वचन बड़े हियाव से सुनाएँ। [30]चंगा करने के लिये तू अपना हाथ बढ़ा कि चिन्ह और अद्भुत काम तेरे पवित्र सेवक यीशु के नाम से किए जाएँ।" [31]जब वे प्रार्थना कर चुके, तो वह स्थान जहाँ वे इकट्ठे थे हिल गया, और वे सब पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो गए, और परमेश्वर का वचन हियाव से सुनाते रहे।

4:23 वे छूटने के बाद सीधे उपरौठी कोठरी में अन्य चेलों के पास पहुंचे।

4:24 "एक चित्त होकर" यह मन और आत्मा की एकता आरम्भिक कलीसिया की विशेषता को दर्शाता है (देखें, प्रेरि. 1:14; 2:46; 4:24; 5:12; 15:25)। इस एकता में आत्मिक सामर्थ भी और एक ही उद्देश्य था।
▪**"प्रभु"** यहाँ यूनानी में *despota* आया है, जिससे अंग्रेजी शब्द कमेचवज बना है। यह शब्द उस मनुष्य के बारे में बताता है जिसके पास सारा अधिकार हो! पर यहाँ पर यह परमेश्वर पिता की ओर संकेत करता है (देखें, लूका 2:29 तथा प्रका. 6:10)। यह शब्द यीशु के लिए भी प्रयुक्त हुआ है (देखें, 2 पत. 2:1 तथा यहूदा; प्रेरि. 4:4)

▪**"जिसने स्वर्ग और पृथ्वी और समुद्र और जो कुछ उनमें है बनाया"** यह निर्गमन 20:11 की ओर संकेत हो सकता है। प्रेरि. 14:15 और 17:24 में भी इसी सच्चाई को बताया गया है। यहोवा (YHWH) सृष्टिकर्त्ता है।

4:25 इस पद के प्रथम भाग को पढ़ने में बहुत असंगतियाँ पाई जाती हैं। सबसे पुराने हस्तलेख P^{74},<u>א</u> A तथा B में पहले ही से अस्पष्टता पाई जाती है। हालांकि सही शब्दावली अनिश्चित है तौ भी पद का ज़ोर जिस बात पर है वह स्पष्ट है (पूरी जानकारी व समस्या के समाधान के लिए ब्रूस एम. मेटशर की यह पुस्तक देखें: पेज 321-323। (Bruce M. Metzger *A Textual Commentary on the Greek New Testament*, Page. 321-323)।

▪**"जिसने पवित्र आत्मा के द्वारा अपने सेवक हमारे पिता दाऊद के मुख से कहा"** इस वाक्य से पता चलता है कि पुराना नियम प्रेरणा प्राप्त है (देखें, मत्ती 5:17-19)। यह सप्तूजैन्त की भजन संहिता 2:1-2 का हवाला है, जो

मसीह संबंधी भजन कहलाता है। मसीही धर्म आधुनिक युग का नया धर्म नहीं है बल्कि पुराने नियम की पूर्ति है (देखें, मत्ती 5:17-48)। संसार की ओर से विरोध आ सकता है, तो भी विजय यहोवा (YHWH) की है।

4:25-26 "अन्य जाति... लोग ...राजा ...शासक " ऐसा प्रतीत होता है जैसे चेले हाकिमों पर रब्बियों के समान शब्दों की शृंखला प्रस्तुत कर रहे हों। एक प्रकार से वे सन्हेद्रिन को अन्यजाति कह कर पुकार रहे हैं अथवा कम से कम पुराने नियम के ये नाम समकालीन समूहों के साथ जोड़ रहे हैं (जैसे पिलातुस, हेरोदेस, सन्हेद्रिन तथा यहूदी भीड़ इत्यादि) जिन्होंने यीशु की जांच-पड़ताल और क्रूस-मृत्यु में हिस्सा लिया था।

▪**"क्रोध"** इसका शाब्दिक अर्थ है "अपनी नाक से छींक की आवाज़ करना।" यहां पर यह घमण्ड को दिखाता है।

4:26 "प्रभु....उसके मसीह " ध्यान दीजिए कि यहोवा (YHWH) और मसीह को एक साथ रखा गया। परन्तु मुझे आश्चर्य है कि उन्होंने भजन 110:1 का हवाला नहीं दिया।

एकेश्वरवादी कहलाना (देखें विशेष शीर्षक: प्रेरि. 2:39 की टीका) और साथ ही यीशु मसीह के पूर्ण परमेश्वर और पवित्र आत्मा के व्यक्तित्व को स्वीकार करना बड़ा ही कठिन है (देखें प्रेरि. 4:25 तथा प्रेरि. 2:32 में विशेष टीका)। फिर भी ये तीनों अनन्त व्यक्तित्व नए नियम में अनेक बार एक साथ सम्मिलित व एकीकृत दिखाई देते हैं। याद रखिए कि लूका को छोड़कर नए नियम के सभी लेखक एकेश्वरवादी यहूदी मसीही थे। किसी मूल बात ही ने उन्हें त्रिएकत्व को दृढ़तापूर्वक मानना सिखाया है अर्थात् सुसमाचार पर विश्वास करने को प्रेरित किया। देखें विशेष शीर्षक: त्रिएकत्व ACTS 2:32

4:27 "तेरे पवित्र सेवक यीशु के विरोध में, जिसका तू ने अभिषेक किया" मसीह संबंधी निम्न पदवियों पर ध्यान दें:

1. पवित्र (देखें प्रेरि. 3:14; 4:30)
2. सेवक ; *pais* (देखें प्रेरि. 3:13,26; 4:25, 27, 30, तथा प्रेरि. 3:13 की टिप्पणी)
3. अभिषिक्त जन (*chriō*) इसी से क्राईस्ट शब्द बना है (देखें, प्रेरि. 4:27; 10:38; लूका 4:18)।

यीशु यहोवा (YHWH) परमेश्वर द्वारा भेजा गया और अधिकार प्राप्त जन था, यह पदवी इसे भिन्न प्रकार से स्वीकार करती है। इसके अनुसार यीशु परमेश्वर की अनन्त योजना और उद्धार तथा सब बातों को सुधारने का माध्यम है (देखें, प्रेरि. 4:28; तथा प्रेरि. 1:8 की टिप्पणी)।

विशेष विषय : बाइबल में विलेपन (BDB 603)

A. तेल लगाना सुन्दरता बढ़ाने में प्रयुक्त होता था (BDB691.I. देखें, व्यव. वि. 28:40; रूत 3:3; 2 शमूएल 12:20; 14:2; 2 इति. 28:15; दानि. 10:3; मीका 6:15)।
B. अतिथियों के लिए प्रयुक्त (BDB602, भजन 23:5; लूका 7:38,46; यूहन्ना 11:2)
C. चंगाई में प्रयुक्त (BDB602, यशा. 61:1; मर. 6:13; लूका 10:34; याकूब 5:14) [यहेज. 16:9 सफाई के अर्थों में प्रयुक्त]
D. गाड़ने की तैयारी में प्रयुक्त (मर. 16:1; यूहन्ना 12:3,7; 19:39-40; 2 इति. 16:14 बिना क्रिया शब्द "अभिषेक")
E. धार्मिक अर्थो में प्रयुक्त (BDB602, उत्प. 28:18,31:13 [खम्भे पर]; निर्ग. 29:36 [वेदी]; निर्ग. 30:26; 40:9-16; लैव्य. 8:10-13; गिनती 7:1 [तम्बू]
F. अगुवे नियुक्त करने में प्रयुक्त
    1. याजक
        a. हारून (निर्ग. 28:41; 29:7; 30:30)
        b. हारून के पुत्र (निर्ग. 40:15; लैव्य. 7:36)
        c. पदवी (गिनती 3:3; लैव्य. 16:32)

2. राजा
    a. परमेश्वर द्वारा (1 शमू. 2:10; 2 शमू. 12:7; 2 राजा 9:3,6,12; भजन 45:7; 89:20)
    b. नबियों द्वारा (1 शमू. 9:16; 10:1; 15:1,17; 16:3,12-13; 1 राजा 1:45; 19:15-16)
    c. याजकों द्वारा (1 राजा 1:34,39; 2 राजा 11:12)
    d. एल्डरों द्वारा अभिषेक (न्या. 9:8,15; 2 शमू. 2:7; 5:3; 2 राजा 23:30)
    e. यीशु का अभिषेक मसीह राजा रूप में (भजन 2:2; लूका 4:18 [यशा. 61:1] प्रेरि. 4:27; 10:38; इब्रा. 1:9 [भजन 45:7])
    f. यीशु के चेलों का (2 कुरि. 1:21; 1 यूह. 2:20, 27 [करिस्मा]
3. नबियों का अभिषेक (1 राजा 19:16; यशा. 61:1)
4. परमेश्वरीय छुटकारे के अविश्वासी माध्यम :
    a. कुस्रू (यशा. 45:1)
    b. सोर का राजा (यहेज. 28:14, जहाँ अदन की वाटिका का रूपक प्रयुक्त किया जाता है)
5. शब्द "मसीह" का अर्थ है "अभिषेक्त जन" (BDB 603), भजन 2:2; 89:38; 132:10)

प्रेरि. 10:38 ऐसा एकमात्र पद है जहाँ त्रिएकत्व के तीनों व्यक्ति अभिषेक में एक साथ संलग्न होते हैं। यीशु अभिषिक्त था (लूका 4:18; प्रेरि. 4:27; 10:38)। यह विचार विस्तृत हुआ और इसमें सभी विश्वासी आ गए (देखें 1 यूह. 2:27)। जो अभिषिक्त था उसके द्वारा बहुत से अभिषिक्त उठ खड़े हुए। यह (1 यूहन्ना 2:18) के समान्तर प्रतीत होता है कि एक मसीही विरोधी के द्वारा बहुत से मसीह-विरोधी उठ खड़े हुए हैं। पुराने नियम के तेल (निर्गमन. 29:7; 30:25; 37:29) के द्वारा शारीरिक अभिषेक को हम प्रतीकात्मक रूप से उन पर लागू कर सकते हैं जो परमेश्वर द्वारा बुलाए जाते हैं और जिनको परमेश्वर विशेष कार्य के लिए तैयार करता है (अर्थात् नबी, याजक और राजा)। क्राइस्ट (Christ) शब्द इब्रानी शब्द मसीह का अनुवाद है अर्थात् "अभिषिक्त जन"।

Copyright © 2014 Bible Lessons International

▪**"इस नगर में इकट्ठे हुए"** जो लोग यीशु के विरुद्ध यरूशलेम में इकट्ठा हुए उनकी सूची इस प्रकार है:
1. हेरोदेस, रोमी सरकार ने इसे पलीस्तीन के इदूमियां क्षेत्र का शासक नियुक्त किया था (नीचे का विशेष शीर्षक देखें)
2. पिन्तेयुस पिलातुस, पलीस्तीन का राज्यपाल था (प्रेरि. 3:13 पर विशेष टिप्पणी देखें)
3. अन्यजाति, संभवतः रोमी सेना अथवा यहूदी धर्म ग्रहण करने वाले नए यहूदी
4. इस्राएली लोग, संभवतः यहूदी अधिकारी और यहूदी भीड़ जिन्होंने यीशु को क्रूस पर चढ़ाने और बरअब्बा को छोड़ने की मांग की थी।

विशेष शीर्षक: हेरोदिस महान का परिवार

A. हेरोद महान :
1. वह यहूदिया का राजा (37-4 ई.पू.) था और एदोम देश का था, और राजनैतिक दक्षता और मार्क एन्थोनी के सहयोग से रोमी सिनेट द्वारा 40 ई.पू. में पलीस्तीन (कनान) के विस्तृत क्षेत्र का शासक बना था।
2. मत्ती 2:1-19 तथा लूका 1:5 में उसका उल्लेख पाया जाता है।
3. उसके पुत्र :
    a. हेरोद फिलिप (मरियाम्ने का पुत्र)
        1. हेरोदियास का पति (4 ई.पू.-34 ईस्वी)
        2. इसका उल्लेख मत्ती 14:3; मरकुस 6:17 में

b. हेरोद फिलिप I (क्लोपैट्रा का पुत्र)
    1. उत्तरी-पश्चिम क्षेत्र गलील में चौथाई का राजा (4 ई.पू. से 34 ईस्वी)
    2. लूका 3:1 में इसका उल्लेख पाया जाता है।

c. हेरोद अन्तीपास :
    1. गलील और पेरैया के चौथाई देश का राजा (4 ई.पू. से 39 ईस्वी)
    2. मत्ती 14:1-2; मर. 6:14,29; लूका 3:1,19; 9:7-9; 13:31; 23:6-12,15; प्रेरि. 4:27; 13:1 में इसका उल्लेख पाया जाता है।

d. अरखिलाउस
    1. यहूदिया सामरिया और इदूमियाँ का शासक (4 ई.पू. से 6 ईस्वी)
    2. इसका उल्लेख मत्ती 2:22 में है

e. अरितोबुलुस (मरियाम्ने का पुत्र)
    (1) हेरोद अग्रिप्पा I के पिता के रूप में उल्लेख जो
        a) यहूदिया का राजा था (ई.सन 37-44)
        b) इसका उल्लेख प्रेरि. 12:1-24; 23:35 में है।
            i. उसका पुत्र अग्रिप्पा II था,
               -जो उत्तरी चौथाई देश का राजा था (ई. 50-70)
            ii. उसकी पुत्री का नाम बिरनीके था।
               -इसने अपने भाई के साथ विवाह किया
               -इसका उल्लेख प्रेरि. 25:13-26:32 में है।
            iii. उसकी पुत्री का नाम द्रसिल्ला था
               -जो फेलिक्स की पत्नी थी
               -इसका उल्लेख प्रेरि. 24:24 में है।

B. हेरोदस के विषय में बाइबल के उद्धरण :
1. चौथाई देश के राजा हेरोदेस का उल्लेख मत्ती 14:1 क्रमशः ; लूका 3:1; 9:7; 13:31 तथा 23:7 में है। यह हेरोद महान का पुत्र था। हेरोद महान की मृत्यु होते ही उसका साम्राज्य उसके चार पुत्रों में बँट गया। "टेटरॉक" (Tetrarch) का अर्थ है, चौथे भाग का अधिकारी। यह हेरोद अन्तिपास के नाम से प्रसिद्ध हुआ, यह नाम अन्तिपत्र का छोटा रूप है। वह पिरैया और गलील का शासक था। इसका अर्थ यह हुआ कि इदूमिआई शासकों की दूसरी पीढ़ी में यीशु की सेवकाई का अधिकांश समय व्यतीत हुआ।
2. हेरोदियास हेरोदेस अन्तिपास के भाई अरितोबोलुस की बेटी थी। वह पहले फिलिप से, जो हेरोद अन्तिपास का सौतेला भाई था, विवाह भी कर चुकी थी। यह फिलिप चौथाई देश का राजा नहीं था जो उत्तरी गलील का शासक था, बल्कि दूसरा फिलिप था जो रोम में रहता था। हेरोदियास की एक पुत्री फिलिप द्वारा उत्पन्न हुई थी। जब हेरोद अन्तिपास रोम आया था तो हेरोदियास से मिला और बहक गया जो राजनैतिक उन्नति की खोज में थी। अतः हेरोदस अन्तिपास ने अपनी पत्नी को तलाक दे दिया, जो नबातियन राजकुमारी थी और हेरोदियास ने अपने पति फिलिप को तलाक दे दिया ताकि हेरोद अन्तिपास से विवाह कर सके। वह हेरोद अग्रिप्पा I की बहन भी थी (प्रेरि. 12)।
3. हमें हेरोदियास की पुत्री सलोमी की जानकारी योसेपस की पुस्तक एंटीक्विटीज ऑफ द ज्यूस 8.5:4 (The *Antiquities of the Jews*) से मिलती है। उस समय उसकी उम्र 12 से 17 वर्ष की रही होगी। वह स्पष्टरूप से अपनी माँ के पूर्ण नियंत्रण में रहती थी। बाद में उसने चौथाई देश के राजा फिलिप से विवाह कर लिया, परंतु शीघ्र ही वह विधवा हो गई।
4. यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का सिर कटवाए जाने के दस वर्ष बाद हेरोदेस अन्तिपास अपनी पत्नी हेरोदियास के आग्रह पर रोम को गया कि राजा का पद पाए क्योंकि अग्रिप्पा I जो उसका भाई था, वह पद ले चुका था। परंतु अग्रिप्पा I ने रोम को लिखा और उस पर दोष लगाया कि उसके रोम के

शत्रु पारथियन्स के साथ संबंध हैं। सम्राट ने अग्रिप्पा I का विश्वास किया और हेरोदेस अन्तिपास और उसकी पत्नी हेरोदियास स्पेन भेज दिए गए।

5. नए नियम में बहुत से हेरोदेसों का उल्लेख पाया जाता है। इनके बीच अंतर करने और याद रखने के लिए हम यह तरीका अपना सकते हैं : हेरोदेस महान ने बैतलहम के बच्चों को घात कराया, हेरोदेस अन्तिपास ने यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का सिर कटवाया, हेरोदेस अग्रिप्पा I ने प्रेरित याकूब को तलवार से मरवाया; हेरोदेस अग्रिप्पा II ने पौलुस के मुकदमे की सुनवाई की जो प्रेरितों के काम पुस्तक में लेखबद्ध है।

C. हो सकता है कि इन विभिन्न हेरोदेस को याद रखना आसान हो जाए क्योंकि उन्हें नए नियम में याद करके प्रस्तुत किया गया है
   1. हेरोद महान ने बेथलहम में बच्चों को मार डाला
   2. हेरोद एंटिपस ने युहन्ना बप्तिस्मा को मार डाला
   3. हेरोद अग्रिप्पा प्रथम ने प्रेरित याकूब को मार डाला
   4. हेरोदअग्रिप्पा द्वितय ने प्रेरितों की पुस्तक में दर्ज पोलुस की अपील को सुना

D. हेरोदेस महान के परिवार की पृष्ठभूमि की जानकारी के लिए योसेपस की पुस्तक "एंटीक्विटीज ऑफ द ज्यूस" (*The Antiquities of the Jews*) देखें।

Copyright © 2014 Bible Lessons International

4:28 "आपका हाथ और आपका उद्देश्य घटित होने के लिए पूर्व निर्धारित है"सृष्टि के आरम्भ ही से परमेश्वर के पास उद्धार की एक योजना थी (देखें, मत्ती 25:34; यूहन्ना 17:24; इफि. 1:4; 1 पत. 1:20; प्रका. 13:8; प्रेरि. 2:13; 3:18; 13:29)। ये जो मसीह के शत्रु थे, वही कार्य कर रहे थे जो परमेश्वर चाहता था। यीशु जगत में अपने प्राण देने के लिए आया था (मरकुस 10:45)। यह परमेश्वर द्वारा पूर्व-निर्धारित था (देखें, रोमियों 8:29-30; 1 कुरि. 2:7; इफि. 1:5,11)।

नए नियम में पहले से ठहराए जाने के सम्बन्ध में कुछ निश्चित पाठांश ये हैं: रोमियों 8:28-30; रोमियों 9; तथा इफिसियों 1:3-14; ये पाठांश स्पष्ट रूप से बताते हैं कि परमेश्वर सर्वोच्च प्रधान है। मानव इतिहास सहित उसका सब वस्तुओं पर नियन्त्रण है। उद्धार की उसकी एक पूर्व निर्धारित योजना है जो समय आने पर पूरी होती है, तो भी यह योजना स्वेच्छाचारी व निरंकुश नहीं है परन्तु परमेश्वर के पूर्वज्ञान और उसकी प्रभुसत्ता पर और साथ ही उसके अटल प्रेम, दया और असीम अनुग्रह पर आधारित है।

हमें इस अद्‌भुत सत्य में अपने पश्चिमी अमेरिकन व्यक्तिवाद अथवा अपने सुसमाचारीय जोश का रंग भरने से सावधान रहना चाहिए। साथ ही हमें इस बात से भी सावधान रहने की आवश्यकता है कि हम अगस्तीन और काल्विनवाद और आरमीनियनवाद के मध्य ऐतिहासिक और धर्मवैज्ञानिक विवाद में न पड़ें।

पहले ठहराया जाना धर्म-शिक्षा अथवा सिद्धान्त नहीं है जो परमेश्वर के प्रेम, अनुग्रह और दया पर प्रतिबन्ध लगाए न ही इसका उद्देश्य सुसमाचार में से कुछ बातें निकालना है। इसका उद्देश्य है विश्वासियों के सांसारिक दृष्टिकोण को बदलकर उन्हें सुदृढ़ और बलवन्त बनाना। परमेश्वर का प्रेम संपूर्ण मानवजाति के लिये है (देखें, 1 तीमु. 2:4; 2 पत. 3:9)। परमेश्वर सब बातों पर नियन्त्रण रखता है। कौन हमको उसके प्रेम से अलग कर सकता है? (रोमियों 8:31-39)। पहले से ठहराया जाना, दो में से एक तरीका हमारे सामने प्रस्तुत करता है कि हम जीवन पर विचार कर सकें। परमेश्वर सम्पूर्ण इतिहास को वर्तमान के रूप में देखता है। मानवजाति समय से बन्धी हुई है। हमारी मानसिक योग्यताएँ और हमारे सोच विचार सीमाबद्ध हैं। परमेश्वर की सर्वोच्चता और मानवीय स्वतन्त्र-इच्छा के बीच कोई प्रतिकूलता या विरोध नहीं है यह एक वाचागत बात है। यह बाइबल की सच्चाईयों को विरोधाभाषी शब्दों में कहने का एक तरीका है जिनमें तनाव भरा होता है। बाइबल के सिद्धान्त भिन्न-भिन्न दृष्टिकोणों से प्रस्तुत किए जाते हैं। ये अक्सर विरोधाभाषी अथवा विपरीत से नज़र आते हैं। विपरीत दिखाई देने वाले शब्दों के बीच में सन्तुलन सच्चाई होती है। हमें एक सच्चाई को लेकर तनाव को नहीं हटाना चाहिए। हमें किसी भी बाइबल के सत्य को छोटे छोटे अंशों में नहीं बाँटना चाहिए।

यहां पर यह भी जोड़ना आवश्यक है कि चुनाव का उद्देश्य केवल यही नहीं है कि मरने के बाद हमें स्वर्ग प्राप्त हो, परन्तु अभी मसीह के समान बनें (इफि. 1:4; 2:10)। हम इसलिए चुने गए हैं कि ''पवित्र और निर्दोष'' हों। परमेश्वर ने हमें इसलिए चुना व ठहराया है कि वह हमें बदल दे, ताकि अन्य लोग हमारे बदले हुए जीवन को देखें और मसीह में विश्वास लाकर परमेश्वर को प्रत्युत्तर दे सकें। पहले से ठहराया जाना, व्यक्तिगत धन्यता नहीं है, परन्तु वाचागत एक उत्तरदायित्व है। हम इसलिए बचाए गए हैं कि दूसरों की सेवा करें! देखें विशेष शीर्षक: प्रेरि. 2:47 की टिप्पणी।

4:29 ''अपने शब्द बोलो'' यह वर्तमानकालीन अपूर्व क्रिया है। निरन्तर साहस प्राप्त करने के लिए प्रार्थना है (देखें इफि. 6:19; कुलु. 4:3) साथ ही यह प्रेरणा का दृढ़ वचन है (2 तीमु. 3:15-17)।

NASB	**''सम्पूर्ण निश्चय के साथ''**
NKJV, NRSV	**''पूरे हियाव के साथ''**
TEV	**''पूरे हियाव के साथ''**
NJB	**''पूर्ण निर्भयता के साथ''**

विशेष शीर्षक: हियाव के साथ

यूनानी शब्द "परेसिया" एक मिलाजुला शब्द है जो "all" (*pan*) तथा "speech" (*rhēsis*) शब्दों से मिलकर बना है। स्वतंत्रतापूर्वक बोलने के इस साहस में अक्सर विरोध और अपमानित होने के समय साहस रखने भाव पाया जाता है (देखें यूहन्ना 7:13; 1 थिस्स. 2:2)।

यूहन्ना के लेखों में यह शब्द 13 बार प्रयुक्त हुआ और अक्सर भीड़ में निर्भीकतापूर्वक प्रचार करना दर्शाता है (देखें, यूह. 18:20, साथ ही पौलुस की पत्रियाँ देखें, कुलु. 2:15)। फिर भी कभी-कभी इसका अर्थ "स्पष्ट बता देना" भी होता है। (देखें, यूह. 10:24; 11:14; 16:25,29)।

प्रेरितों के काम पुस्तक में प्रेरितगण साहस के साथ यीशु का प्रचार करते थे, जैसाकि स्वयं यीशु भी पिता, उसकी योजनाओं और प्रतिज्ञाओं के विषय में साहस के साथ बोलता था (देखे, प्रेरि. 2:29; 4:13,29,31; 9:27-28; 13:46; 14:3; 18:26; 19:8; 26:26; 28:31)। पौलुस ने साहस के साथ सुसमाचार प्रचार करने का निवेदन भी किया (देखें, इफि. 6:19; 1 थिस्स. 2:2) और कहा कि उसके द्वारा मसीह की बड़ाई होती रहे (फिलि. 1:20)।

मसीह में पौलुस की आशा उसे साहस के साथ इस वर्तमान बुरे संसार में सुसमाचार प्रचार करने की प्रेरणा व बल प्रदान करती थी (2 कुरि. 3:11-12)। उसे भरोसा था कि यीशु के पीछे चलने वाले भली-भांति आचरण करते रहेंगे (2 कुरि. 7:4)

इस शब्द "साहस" का एक और भी पहलू है। इब्रानियों का लेखक इस के शब्द साहस अथवा हियाव को मसीह में एक विश्वासी को प्राप्त हियाव के अर्थों में प्रयुक्त करता है, कि अब एक विश्वासी परमेश्वर के समीप जाकर उससे बातचीत कर सकता है (देखें, इब्रा. 3:6; 4:16; 10:19,35)। पुत्र के द्वारा विश्वासी जन परमेश्वर की सहभागिता में पूर्ण रुप से ग्रहण किया जाता और स्वागत पाता है (2 कुरि. 5:21)।

यह शब्द नए नियम में विभिन्न रूपों में प्रयुक्त किया गया है जैसे :

1. भरोसे, हियाव और निश्चय के रूप में :
   a. मनुष्य (देखें, प्रेरि. 2:29; 4:13,31; 2 कुरि. 3:12; इफि. 6:19)
   b. परमेश्वर (देखें 1 यूह. 2:28; 3:21; 4:12; 5:14; इब्रा. 3:6; 4:16; 10:19)
2. खुलकर, स्पष्ट, बिना छिपाए बोलना (देखें, मर. 8:32; यूह. 7:4,13; 10:24; 11:14; 16:25; प्रेरि. 28:31)
3. सार्वजनिक रूप से बोलना (देखें, यूह. 7:26; 11:54; 18:20)
4. इससे संबंधित अन्य शब्द (*parrhēsiazomai*) कठिन परिस्थिति में हियाव के साथ प्रचार करना प्रयुक्त हुआ (प्रेरि. 18:26; 19:8; इफि. 6:20; 1 थिस्स. 2:2)।

Copyright © 2014 Bible Lessons International

4:30 ''चंगा करने के लिए तू अपना हाथ बढ़ा'' यह परमेश्वर पर मानवीय गुण लगाने वाला वाक्यांश है और (देखें प्रेरि. 2:33 पर की गई विशेष टिप्पणी) विनती की गई है कि वह अपनी दया और सामथ्र्य प्रकट करे कि चिन्ह भी प्रकट हों ताकि उनके सुसमाचार की पुष्टि हो। सुसमाचार का यह सन्देश उससे बिल्कुल भिन्न था जिसे उन्होंने जीवन भर आराधनालयों में सुना था।

4:31 ''जिस स्थान पर वे इकट्ठे थे हिल गया'' परमेश्वर ने अपनी सामथ्र्य और उपस्थिति का एक और भौतिक प्रदर्शन करके इन गवाहों को प्रोत्साहित किया, जैसाकि उसने पिन्तेकुस्त के दिन किया था।

▪**''सब पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो गए''** ध्यान दीजिए कि फिर से सब पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो जाते हैं, (देखें, प्रेरित. 2:4; 4:8,31; 9:17; 13:9, 52, देखें प्रेरि. 5:17 में टिप्पणी)। यह भरा जाना सुसमाचार को हियाव के साथ सुनाने के संबंध में था। इस बात पर भी ध्यान दें कि यहाँ अन्य भाषाएँ बोलने का ज़िक्र नहीं है। प्रेरितों के काम में जब भी अन्य भाषा बोलने का उल्लेख हुआ, वह आमतौर पर सुसमाचार प्रचार के सम्बन्ध में सांस्कृतिक और जातिवाद के मतभेदों पर विजय पाने के सन्दर्भ में है।

▪**''परमेश्वर का वचन''** जेरोम बिबलीकल कमेन्ट्री, (पेज 180) पर इस वाक्यांश के विषय में बहुत अच्छी टिप्पणी की गई है, यह लूका का मसीही-सन्देश को व्यक्त करने का अपना मनपसन्द तरीका है, (देखें, प्रेरि. 6:2,7; 8:14; 11:1; 13:5, 7, 44, 46, 48; 16:32; 17:13; 18:11)। एक और वाक्यांश है, ''प्रभु का वचन'' (देखें, प्रेरि. 8:25; 13:49; 15:35, 36; 19:10, 20; 20:35) अथवा ''वचन'' (देखें 4:29; 6:4; 8:4; 10:44; 11:19; 14:25; 16:6)। विश्वास का यह केन्द्रिय प्रश्न है, ''क्या नए नियम में प्रस्तुत सुसमाचार परमेश्वर का वचन है?'' जो पवित्र आत्मा से परिपूर्ण विश्वास है वह कहेगा, ''हाँ सुसमाचार परमेश्वर का वचन है।''

▪**''हियाव के साथ''** देखें प्रेरि. 4:29 पर विशेष विषय।

NASB (नवीनतम) पाठ : प्रेरितों के काम 4:32-35

32विश्वास करनेवालों की मण्डली एक चित्त और एक मन की थी, यहाँ तक कि कोई भी अपनी सम्पत्ति अपनी नहीं कहता था, परन्तु सब कुछ साझे में था। 33प्रेरित बड़ी सामथ्र्य से प्रभु यीशु के जी उठने की गवाही देते रहे और उन सब पर बड़ा अनुग्रह था। 34उनमें कोई भी दरिद्र न था; क्योंकि जिनके पास भूमि या घर थे, वे उनको बेच-बेचकर, बिकी हुई वस्तुओं का दाम लाते, और उसे प्रेरितों के पाँवों पर रखते थे; 35और जैसी जिसे आवश्यकता होती थी, उसके अनुसार हर एक को बाँट दिया करते थे।

4:32 ''विश्वास करने वाले एक चित्त और एक मन थे'' विश्वासियों के बीच आत्मा की एकता (प्रेरि. 1:14) त्रिएक परमेश्वर की एकता को दर्शाता है (देखें, यूहन्ना 17:11, 21, 23; इफि. 4:4-6)। यही शब्द मरकुस 12:30 में प्रथम आज्ञा को बताने के संबंध में व्यवस्थाविवरण 6:4-5 से लिए गये हैं।

▪**''सब कुछ साझे में था''** वे एक परिवार की तरह रहते और परिवार की तरह कार्य करते थे। वित्तीय सेवा करने का, कलीसिया का यह पहला प्रयास था। यह कार्य स्वेच्छा से होता था, आदेश नहीं था। यह एक दूसरे की चिन्ता करने और प्रेम पर आधारित कार्य था, न कि सरकारी अथवा सामाजिक स्तर पर किया जाने वाला कार्य।

4:33 ''जी उठने की गवाही देते रहे'' यह उनके उपदेश की केन्द्रिय बात थी (देखें 1 कुरि. 15)। यीशु शिन्दा है, यही प्रचार का विषय था।

■**“उन सब पर बड़ा अनुग्रह था”** पौलुस की पत्रियों से ज्ञात होता है कि बाद में चलकर यही कलीसिया बहुत निर्धन हो गई (रोमियों 15:3; गला. 2:10) थी, तथा भौतिक से बहुतायत के जीवन (यूहन्ना 10:10) और बहुतायत के अनुग्रह के संबंध बहुत कम रह गया था। ध्यान दीजिए कि यह बड़ा अनुग्रह सब पर था, केवल अगुवों और वरदान प्राप्त और सामाजिक-आर्थिक रूप से अच्छे कुछ लोगों के साथ था।

4:34 कलीसिया ने एक दूसरे के प्रति अपनी जिम्मेदारी को अनुभव किया। जिनके पास धन था, वे प्रसन्नतापूर्वक उन्हें दे देते थे जिन्हें आवश्यकता होती थी (प्रेरि. 4:35)। यह साम्यवाद नहीं था, परन्तु कार्यरूप में प्रेम का प्रदर्शन था।

4:35 “ उसे प्रेरितों के पाँवों पर रखते थे” यह दूसरों के लिए कुछ देने का एक सांस्कृतिक तरीका है। वे अपनी वस्तुएँ और धन प्रेरितों के पाँवों पर रख देते थे क्योंकि उन्होंने अपना जीवन प्रभु यीशु के पाँवों में रखा हुआ था।

■**“उसे बाँट दिया करते थे”** यह उनकी निरन्तर क्रिया को दर्शाता है। यह निर्धनों की सेवा करने के आराधनालयों के नमूने का पालन करना था।

■**“जैसी जिसे आवश्यकता होती थी”** इसके विषय में क्लेन ब्लोमबर्ग, और हबर्ड की पेज 451-453 (Klein, Blomberg, and Hubbard's *Introduction to Biblical Interpretation*, pp 451-453)
पर बड़ी टिप्पणी पाई जाती है कि मार एक्स घोषणा-पत्र में प्रेरितों के काम पुस्तक से दो हवले लिये गए हैं:

1. “प्रत्येक अपनी अपनी योग्यता के अनुसार “-प्रेरित 11:29
2. “जैसी जिसे आवश्यकता हो”

यहां पर व्याख्या संबंधी एक समस्या यह उत्पन्न होती है कि हर आधुनिक मनुष्य अपने विचारों की पुष्टि बाइबल के ऐसे विचारों से करता है जिन्हें बाइबल नहीं बताती। बाइबल जो आज्ञा सबको देती है, वहीं हमें मानना चाहिए। हम अपनी परिस्थितियों और संस्कृति के अनुसार बाइबल को विभिन्न प्रकार से लागू कर सकते हैं, परन्तु हमारा लागू किया जाना मूल लेखक के अर्थों और उद्देश्यों के अनुसार होना चाहिए। प्रत्येक पाठांश में केवल एक ही अर्थ होता है, पर उसका महत्व और लागू किया जाना भिन्न भिन्न होता है। (देखें मेरी बाइबल व्याख्या सेमिनार इस वेबसाईट परः www. freebiblecommentary.org

NASB (नवीनतम) पाठ : प्रेरितों के काम 4:36-37
[36]यूसुफ नाम साइप्रस का एक लेवी था जिसका नाम प्रेरितों ने बरनाबास (अर्थात् शान्ति का पुत्र) रखा था। [37]उसकी कुछ भूमि थी, जिसे उसने बेचा, और दाम के रुपये लाकर प्रेरितों के पाँवों पर रख दिए।

4:36 “यूसुफ, एक लेवी” पुराने नियम के अनुसार लेवियों को भूमि रखना मना था, परन्तु रोमी सरकार ने पलीस्तीन में बहुत सी बातें बदल दी थीं।

“जिसको प्रेरित बरनाबास कहते थे (जिसका अनुवाद प्रोत्साहन का पुत्र) ” यह “बरनाबास” शब्द का एक प्रचलित व प्रसिद्ध अर्थ था। अरामी में इसका अर्थ “नबूवत का पुत्र” "son of prophecy" हो सकता है तथा इब्रानी में “नबो का पुत्र” "son of Nebo" (AB, vol. 1) यरूशलेम की आदि कलीसिया में वह संभवतः एक अगुवा था और आगे चलकर पौलुस का मित्र और उसका सहपाठी बना। यूसेबियुस, जो आदि कलीसिया का एक इतिहासकार था, बताता है कि यीशु ने लूका 10 में जिन 70 लोगों को भेजा था, उनमें बरनाबास भी शामिल था।

विशेष शीर्षक: बरनाबास

I. व्यक्ति :
A. मूलतः उसका नाम युसूफ था (प्रेरि. 4:36)

B. साइप्रस में जन्म हुआ (प्रेरि. 4:36)
C. वह लेवी गोत्र का था (प्रेरि. 4:36)
D. उसका उपनाम था "शांति का पुत्र" (प्रेरि. 4:36; 11:23)
E. भला मनुष्य कहलाता था (प्रेरि. 11:24)
F. यरूशलेम की कलीसिया का सदस्य (प्रेरि. 11:22) था और अंतकिया में प्रतिनिधि बनाकर भेजा गया ताकि जाकर जांच पड़ताल करे (11:19-28)।
G. पवित्र आत्मा से परिपूर्ण था (प्रेरि. 11:24)
H. विश्वास से परिपूर्ण था (प्रेरि. 11:24)
I. भविष्यद्वक्ता और उपदेशक का वरदान प्राप्त था (प्रेरि. 13:1)
J. वह प्रेरित कहलाता था (प्रेरि. 14:14)

II. उसकी सेवकाई :

I. यरूशलेम में
1. अपनी भूमि बेची और गरीबों की सहायता के लिए प्रेरितों को दे दी (प्रेरि. 4:37)
2. यरूशलेम की कलीसिया का अगुआ (प्रेरि. 11:22)

II. पौलुस के साथ
1. पौलुस के हृदय-परिवर्तन के बाद वह सबसे पहला व्यक्ति था जिसने पौलुस पर भरोसा किया। (प्रेरि. 9:27)
2. वह पौलुस को खोजने तरसुस गया और उसे अन्ताकिया की कलीसिया में सेवा के लिए ले गया (प्रेरि. 11:24-26)।
3. अन्ताकिया की कलीसिया ने बरनबास और पौलुस को यरूशलेम भेजा कि गरीबों की सहायता के लिए दान पहुँचाएं (प्रेरि. 11:29-30)
4. बरनबास और पौलुस पहली मिश्नरी यात्रा पर गए (प्रेरि. 13:1-3)
5. साइप्रस में बरनबास टीम लीडर था (जो उसका जन्म स्थान था) परन्तु बाद में पौलुस टीम लीडर बन गया (प्रेरि. 13:13)
6. उन्होंने यरूशलेम की कलीसिया में जाकर भेंट की और अन्यजातियों में चल रही अपनी सेवकाई का लेखाजोखा प्रस्तुत किया (प्रेरि. 15:1-21) जिसे यरूशलेम की परिषद कहा जाता है।
7. बरनबास और पौलुस के बीच यहूदी भोज व्यवस्था और गैर यहूदियों के साथ संगीत पर वाद विवाद हुआ जिसका वर्णन गला. 2:11-14 में है।
8. बरनबास और पौलुस ने दूसरी मिश्नरी यात्रा पर जाने की योजना बनाई, परन्तु मरकुस के संबंध में झगड़ा हो गया जो बरनबास का भाई था (कुलु. 4:10), और जो पहली मिश्नरी यात्रा में वापस घर लौट गया था (प्रेरि. 13:13)। बरनबास उसे यात्रा पर ले जाना चाहता था, पर पौलुस नहीं ले जाना चाहता था और झगड़ा खड़ा हो गया (प्रेरि. 15:36-41) परिणामस्वरुप दो टीम बन गई ; एक टीम मरकुस और बरनबास की तथा दूसरी टीम पौलुस और सीलास की।

III. कलीसिया की परम्परा (यूसेबियुस)

A. बरनबास उन 70 मनुष्यों में एक था जिन्हें यीशु ने भेजा था (देखें, लूका 10:1-20)
B. बरनबास अपनी जन्मभूमि साइप्रस में शहीद हुआ (बरनबास के कार्य नामक पुस्तक से)
C. तरतुलियन का कथन है कि बरनबास ने इब्रानियों की पत्री लिखी।
D. सिकन्दरिया के क्लेमेंट का कथन है कि बरनबास ने अप्रमाणित साहित्य की पुस्तक "बरनबास की पत्री" लिखी थी।

Copyright © 2014 Bible Lessons International

4:37 ''जो कुछ भूमि का मालिक था'' वह धनवान मनुष्य था (जैसे नीबुदेमुस और अरिमतिया का यूसुफ थे)। प्रेरितों के काम अध्याय 5 वित्तिय सेवकाई के इस कार्य में दुष्कर्म की संभावना (जैसे ईष्र्या, झूठ व मृत्यु) को दर्शाता है।

विचार विमर्श के लिये प्रश्न

यह अध्ययन में मार्गदर्शन करने की टीका है, इसका अर्थ है कि आप बाइबल की अपनी व्याख्या करने के स्वयं ही जिम्मेदार हैं। हम में से प्रत्येक को उसी ज्ञान के अनुसार चलना चाहिए जो हमारे पास है। व्याख्या करने के कार्य में आप आपकी बाइबल और पवित्र आत्मा केन्द्रिय स्थान रखते हैं। यह कार्य व्याख्याकार पर न छोड़ दें।

निम्नलिखित प्रश्न अपनी सहायता के लिए दिए गए है ताकि आप पुस्तक के गम्भीर विषयों पर पुनर्विचार कर सकें। वे आपके विचारों को आन्दोलित करने के लिए हैं, इनके अलावा और भी प्रश्न हो सकते हैं:

1. सदूकी लोग कौन हैं? वे क्रोध से क्यों भर गए?
2. सन्हेद्रिन क्या है?
3. भजन 118 का क्या महत्व है?
4. प्रेरि. 4:12 क्यों अति महत्वपूर्ण पद है?
5. प्रेरि. 4:28 में पहले से ठहराया जाना क्या व्यक्तिगत लोगों की ओर संकेत करता है या परमेश्वर के उद्धार की योजना को दर्शाता है?
6. क्या लूका प्रेरि. 4:32-5:11 में कलीसिया के नियमों को स्थापित करने का प्रयास करता है?

Copyright © 2013 Bible Lesson International

प्रेरितों के काम-5
बाइबल के विभिन्न आधुनिक अनुवादों में पैराग्राफ-विभाजन

UBS4	NKJV	NRSV	TEV	NJB
हनन्याह और सफीरा	पवित्र आत्मा से झूठ करना	अपनी वस्तुएँ साझा	हनन्याह और सफीरा	हनन्याह और सफीरा की धोखेबाज़ी
		(4:32-5:11)		
		4:32-5:6		
5:1-11	5:1-11		5:1-6	5:1-6
		5:7-11	5:7-8	5:7-11
5:9-11			5:9-11	
बहुत से चिन्ह और चमत्कार	लगातार कलीसिया में सामथ्र्य	प्रेरितों की दूसरी बार गिरफ्तारी	आश्चर्यकर्म और चमत्कार	सामान्य परिस्थिति
5:12-16	5:12-16	5:12-21a	5:12-16	5:12-16
प्रेरितों का सताया जाना	बन्दी प्रेरितों का छूट जाना		प्रेरितों को सताना	प्रेरितों की गिरफ्तारी और छूट जाना
5:17-26	5:17-21		5:17-21a	5:17-18
				5:19-21a
				सन्हेद्रिन के सामने लाया जाना
	प्रेरितों की फिर जांच पड़ताल	5:21b-26	5:21b-26	5:21b-26
	5:22-32			
5:27-32		5:27-32	5:27-28	5:27-33
	गमलिएल का परामर्श	गमलिएल	5:29-32	
5:33-42	5:33-42	5:33-39a	5:33-39a	गमलिएल का हस्ताक्षेप
				5:34-39a
		5:39b-42	5:39b-42	5:39b-41
				5:42

पठन चक्र तीसरा (“अच्छे बाइबल अध्ययन का मार्गदर्शन” से)

पैराग्राफ स्तर पर मूल लेखक के अभिप्राय को समझना

यह अध्ययन करने की मार्गदर्शक टीका है, जिसका अर्थ है कि आप अपनी बाइबल-व्याख्या के स्वयं उत्तरदायी हैं। हम में से प्रत्येक को अपने ज्ञान व समझ के अनुसार कार्य करना चाहिए। व्याख्या-प्रक्रिया में आप, आपकी बाइबल तथा पवित्र आत्मा प्राथमिक स्थान रखते हैं। आपको यह टीका कार्य टीकाकार पर नहीं छोड़ना चाहिए।

पूरा अध्याय एक बैठक में पढ़ें। विषयों को पहचानें। अपने विषय-विभाजन की तुलना उपरोक्त पाँच आधुनिक अनुवादों के विषय-विभाजन से करें। पैराग्राफों का विभाजन प्रेरणा प्राप्त नहीं होता है, परन्तु यह मूल लेखक के

अभिप्राय को समझने की कुंजी है, जो कि व्याख्या करने का आधार है। प्रत्येक पैराग्राफ में केवल एक ही मूल विषय होता है:

1. पहला पैराग्राफ
2. दूसरा पैराग्राफ
3. तीसरा पैराग्राफ
4. अन्य

शब्दों और वाक्यांशों का अध्ययन

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 5:1-6

[1]हनन्याह नामक एक मनुष्य और उसकी पत्नी सफीरा ने कुछ भूमि बेची [2]और उसके दाम में से कुछ रख छोड़ा; और यह बात उसकी पत्नी भी जानती थी, और उसका एक भाग लाकर प्रेरितों के पाँवों के आगे रख दिया। [3]पतरस ने कहा, "हे हनन्याह! शैतान ने तेरे मन में यह बात क्यों डाली कि तू पवित्र आत्मा से झूठ बोले, और भूमि के दाम में से कुछ रख छोड़े? [4]जब तक वह तेरे पास रही, क्या तेरी न थी? और जब बिक गई तो क्या तेरे वश में न थी? तू ने यह बात अपने मन में क्यों विचारी? तू मनुष्यों से नहीं, परन्तु परमेश्वर से झूठ बोला है।" [5]ये बातें सुनते ही हनन्याह गिर पड़ा और प्राण छोड़ दिए, और सब सुननेवालों पर बड़ा भय छा गया। 6फिर जवानों ने उठकर उसकी अर्थी बनाई और बाहर ले जाकर गाड़ दिया।

5:1 "हनन्याह" संभवतः इब्रानी में पूरा नाम हननिय्याह हो, जिसका अर्थ है "यहोवा (YHWH) ने अनुग्रह करके प्रदान किया" अथवा "यहोवा (YHWH) अनुग्रहकारी परमेश्वर है" (BDB 337)।'

▪ **"सफीरा"** यह हनन्याह की पत्नी थी। अरामी भाषा में इसका अर्थ है "खूबसूरत।" ये दोनों विश्वासी थे।

5:2 "कुछ रख छोड़ा" बिल्कुल यही असाधारण क्रिया शब्द (*nosphizomai*) अकान के पाप का वर्णन करने के लिये सप्तूजैन्त (LXX) के यहोशू 7:1 में इस्तेमाल किया गया है। एफ.एफ. ब्रूस ने F. F. Bruce (NIC) अपनी टीका में बताया है कि हनन्याह का प्रारम्भिक कलीसिया में वही स्थान था, जो अकान का इस्राएल की विजय में था। इस पाप में सम्पूर्ण कलीसिया को दुख पहुंचाने की क्षमता थी, तीतुस 2:10 में भी यही शब्द उन दासों के संबंध में प्रयोग किया गया है जो अपने स्वामियों के यहां चोरियाँ करते हैं।

▪**" उसका एक भाग लाकर , प्रेरितों के पाँवों के आगे रख दिया"** जो कार्य बरनाबास ने प्रेरि. 4:37 में किया, यह उसकी नकल करना प्रतीत होता है। इस दम्पत्ति को पूरी आज़ादी थी कि अपनी व्यक्तिगत सम्पत्ति को बेचें या न बेचें (प्रेरि. 5:4)। उन्हें पूरी आज़ादी थी कि प्रभु की सेवा के लिए कुछ दें या सब कुछ दे दें। पर उन्हें इसका कोई अधिकार नहीं था कि थोड़ा सा दे दें और दावा करें कि उन्होंने सब कुछ दिया है। उनके इरादों और कपट ने उनके मन का भेद प्रकट कर दिया (देखें प्रेरि. 5:4; लूका 21:4)। परमेश्वर हृदय को देखता है (देखें, 1 शमू. 16:7; 1रा. 8:39; 1 इति. 28:9; नीति. 21:2, यिर्म. 17:10; लू. 16:15; प्रेरि. 1:24; रोमि. 8:27)।

5:3 " शैतान...पवित्र आत्मा" यह हमारे जीवनों में और इस संसार में क्रियाशील दो महान् आत्मिक शक्तियों को बताता है। इफिसियों 2:2-3 (याकूब 4) में उत्पत्ति के बाद की मानवजाति के तीन शत्रुओं के बारे में बताया गया है:

1. पतित संसार
2. व्यक्तिगत स्वभाव
3. हमारा पतित स्वभाव

विशेष शीर्षक: व्यक्तिगत दुष्ट , विशेष शीर्षक: शैतान

I. शैतान बड़ा कठिन विषय है

A. पुराना नियम परमेश्वर के प्रधान शत्रु का प्रकाशन नहीं करता है, परंतु यहोवा (YHWH) के एक दास के रूप में उसका चित्रण करता है, जो मानव जाति के सामने विकल्प प्रस्तुत करता और मानव जाति पर अधार्मिकता के विषय में दोष लगाता है (ए.बी. डेविडसन, "अ थियोलॉजी ऑफ दी ओ.टी., पेज 300-306 ; "*A Theology of the O.T*")।
B. परमेश्वर के व्यक्तिगत शत्रु की अवधारणा बाइबल के बाहर अप्रमाणित साहित्य में फारसी धर्म की द्वैतवादी शिक्षा द्वारा विकसित हुई। आगे चलकर इसी विचारधारा ने रब्बियों की यहूदी शिक्षा को प्रभावित किया (बेबिलोन और फारस की गुलामी में)।
C. नया नियम, पुराने नियम के मूल-विषयों को आश्चर्यजनक रीति से कठोरता के साथ परंतु सारांश रूप में श्रेणियों में विकसित करता है।

यदि कोई बाइबल के धर्म विज्ञान के अनुसार बुराई का अध्ययन करता है (जिसमें प्रत्येक पुस्तक व लेखक अध्ययन के बाद अपनी अलग रूपरेखा देता है) तो बुराई के विषय में बहुत भिन्न विचार प्रकाशित होंगे।

परंतु यदि कोई बुराई का अध्ययन गैर बिबलीकल माध्यम से या अन्य कोई विश्वव्यापी धर्म या पश्चिमी धर्मों के माध्यम से करता है तो प्रतीत होगा कि नए नियम पर फ़ारसी द्वैतवाद और रोमी आत्मावाद का प्रभाव पड़ा है।

यदि कोई मेरी तरह पवित्रशास्त्र के दिव्य अधिकार के प्रति समर्पित है तो उसे नए नियम का विकास अवश्य ही प्रगतिशील प्रकाशन नज़र आएगा। मसीही लोगों को सावधान रहना चाहिए कि उनकी इस अवधारणा पर यहूदी साहित्य अथवा पाश्चात्य अंग्रेजी साहित्य (जैसे दंते, मिल्टन) का और प्रभाव न पड़े। प्रकाशन के इस क्षेत्र में निश्चय ही रहस्य और अस्पष्टता पाई जाती है। परमेश्वर को भाया है कि पाप व बुराई और शैतान के सभी पहलुओं व उसके उद्गम का (देखें विशेष विषय : लुसीफर (LUCIFER) और विकास और उद्देश्यों का प्रकाशन न करे, परंतु इसकी पराजय का प्रकाशन दे।

II. **पुराने नियम में शैतान** :

पुराने नियम में शब्द "शैतान" अथवा "दोष लगाने वाले" (BDB 966, KB 1317) का वर्णन तीन अलग-अलग दलों के रूप में प्रतीत होता है :

A. मानवीय दोष लगाने वाले (1 शमू. 29:4; 2 शमू. 19:22; 1 राजा 11:14,23,25; भजन 109:6, 20, 29)
B. स्वर्गदूत दोष लगाने वाले (गिनती 22:22-23; अयूब 1-2; जक. 3:1)।
   1. परमेश्वर का स्वर्गदूत - गिनती 22:22-23
   2. शैतान - (1 इति. 21:1; अयूब 1-2; जक. 3:1)
C. दुष्टात्मा (या शैतान) (1 राजा 22:21; जक. 13:2)।

III. केवल बाद में ही नए नियम से पूर्व मध्यकाल में उत्पत्ति 3 के साँप को शैतान के रूप में पहचाना गया (देखें, ज्ञान की पुस्तक 2.23-24; II हनोक 31:3) तथा उसके बहुत बाद में रब्बियों ने इस बात को स्वीकार किया (देखें, स्रोत. 9b तथा सन्हे. 29a) I हनोक 54:6 में उत्पत्ति 6 के विशेष विषय उत्पत्ति 6 में परमेश्वर के पुत्रों "परमेश्वर के पुत्रों" को स्वर्गदूत कहा गया। मैं इन बातों का वर्णन इसलिए नहीं कर रहा हूँ कि ये शिक्षाएँ सही है, बल्कि मैं शिक्षा के विकास को दर्शाने के लिए कर रहा हूँ। पुराने नियम के ये कार्य, नए नियम में स्वर्गदूतों द्वारा किए गए बताया गया है जिसका मानवीयकरण दुष्ट के रूप में किया गया है (2 कुरि. 11:3; प्रका. 12:9) (देखें विशेष विषय स्वर्गदूत और दुष्ट आत्माएँ) ।

IV. व्यक्तिकृत शैतान की उत्पत्ति

A. पुराने नियम से मानवीक्रत शैतान का आरम्भ तय करना बड़ा कठिन और असंभव कार्य है (यह

आपके दृष्टिकोण पर आधारित है)। इसका एक कारण इस्राएल जाति का सुद्रढ़ एकेश्वरवाद है देखें विशेष विषय एकेश्वरवाद (देखें व्यव. वि. 6:4-6; 1 राजा 22:20-22; सभो. 7:14; यशा. 45:7; आमोस 3:6)। सारी दुर्घटनाओं का कर्त्ता यहोवा (YHWH) को बताया गया है उसकी अलौकिकता और श्रेष्ठता को दर्शाने के लिए (यशा. 43:11; 44:6, 8, 24; 45:5-6, 14, 18, 21-22) देखें विशेष विषय कारणता ।

B. जानकारी प्राप्त करने के संभव स्रोत ये है :

(1) अय्यूब 1-2, जहाँ शैतान को एक "परमेश्वर का पुत्र" कहा गया है (अर्थात् एक स्वर्गदूत)

(2) यशा. 14 तथा यहेज. 28, जहाँ घमण्डी निकटवर्ती पूर्वी राजाओं (बेबीलोन और सोर) को शैतान का घमण्ड दर्शानें के लिए प्रयुक्त किया गया है (देखें 1 तीमु. 3:6)।

(3) मैं इस विषय में मिश्रित भावनाएँ रखता हूँ। यहेजकेल न केवल सोर के राजा को शैतान बताने के लिए अदन वाटिका की उपमा का प्रयोग करता है (यहेज. 28:12-16), पर साथ ही मिस्र के राजा को भले और बुरे के ज्ञान का वृक्ष बताता है (यहेज. 31) परंतु यशा. 14:12-14 घमण्ड के कारण स्वर्गदूतों के विद्रोह को बताता है। यदि परमेश्वर की इच्छा है कि हम शैतान की उत्पत्ति और उसके स्वभाव को जानें, तो इन्हीं उद्धरणों द्वारा जान सकते हैं, परंतु हमें व्यवस्थित धर्म विज्ञान (systematic theology) से सावधान होना होगा जहाँ अनेक अस्पष्ट बातों को लेकर जो विभिन्न पुस्तकों के लेखकों और साहित्य की होती हैं, एक साथ रखकर समाधान खोजा जाता है।

V. नए नियम में शैतान (SATAN IN THE N.T)

A. एल्फ्रेड ऐडरशेम अपनी पुस्तक, "द लाइफ एण्ड टाईम्स ऑफ जीसस द मसायाह" (*The Life and Times of Jesus the Messiah* Vol. 2 Appendices XIII pp 748-463 and XVI, pp 770-776) में बताते हैं कि रब्बियों का यहूदीवाद पारसी धर्म के द्वैतवाद और दुष्टात्माओं की कल्पनाओं से बहुत अधिक प्रभावित है। (देखें विशेष विषय स्वर्गदूत और दुष्टात्माएं) इस क्षेत्र से संबंधित जानकारी का उपयोग स्रोत रब्बी नहीं हैं । इस विषय में यीशु की शिक्षा आराधनालयों की शिक्षा से मूलतः भिन्न है। मैं सोचता हूं कि स्वर्गदूतों की रब्बियों की अवधारणा (प्रेरि. 7:53) और मूसा को सीनै पर्वत पर व्यवस्था दिए जाने के विरोध ने यहोवा (YHWH) के और मानव के सबसे बड़े शत्रु की अवधारणा का द्वार खोला। उस समय ईरानी द्वैतवाद के दो बड़े देवता पाए जाते थे :

1. अहुरा माजदा (Ahura Mazda), जो बाद में ओहर माजदा कहलाया, यह सृष्टिकर्ता और भला देवता था।
2. अंगरा मेन्यू (Angra Mainyu), बाद में अहरीमान (Ahriman) कहलाया, यह बुरा और नष्ट करने वाला देवता था।

ये पृथ्वी पर अपनी श्रेष्ठता पाने के लिए लड़ाई करते थे। यही द्वैतवाद यहूदी धर्म के यहोवा (YHWH) और शैतान के सीमित द्वैतवाद में विकसित हुआ।

VI. नए नियम में शैतान/ दुष्ट

निश्चय ही नए नियम में शैतान के विकास के बारे में प्रगतिशील प्रकाशन पाया जाता है, परंतु इतना विस्तृत प्रकाशन नहीं जितना रब्बी दावा करते थे। इस अंतर का एक अच्छा उदाहरण "स्वर्ग की लड़ाई" है। शैतान का पतन एक तर्क संगत आवश्यकता है, परंतु विशेष बातें नहीं दी गई (देखें, विशेष विशेष : शैतान और उसके दूतों का पतन (*The Fall of Satan and His Angels*)। जो कुछ दिया गया है, प्रकाशनात्मक साहित्य द्वारा उस पर पर्दा पड़ गया है (देखें, प्रका. 12:4,7,12-13)(देखें विशेष विषय: प्रकाशनात्मक साहित्य APOCALYPTIC LITRATURE) । हालांकि यीशु में शैतान (देखें विशेष विषय: शैतान DEVIL) हराया जाकर पृथ्वी पर गिरा दिया गया है, तो भी वह एक यहोवा (YHWH) के दास के समान कार्य करता है (देखें, मत्ती 4:1; लूका 22:31-32; 1 कुरि. 5:5; 1 तीमु. 1:20)।

हमें इस क्षेत्र में अपनी जिज्ञासा को नियंत्रण में रखना चाहिए। शैतान और परीक्षाओं की व्यक्तिगत शक्ति पाई जाती है, परंतु फिर भी केवल एक परमेश्वर है जिसके प्रति मानवजाति अपने चुनावों के लिए उत्तरदाई है। उद्धार पाने से पहले और बाद में एक आत्मिक युद्ध पाया जाता है। विजय केवल त्रिएक परमेश्वर द्वारा आती और स्थिर रहती है। शैतान हरा दिया गया है और उसे नाश कर दिया जाएगा (प्रका. 20:10)।

हमें इस क्षेत्र में अपनी जिज्ञासा पर अंकुश लगाना चाहिए। प्रलोभन और शैतान की एक व्यक्तिगत शक्ति है, लेकिन अभी भी केवल एक ही परमेश्वर है और मानव जाति अभी भी उसकी पसंद के लिए जिम्मेदार है। उद्धार से पहले और बाद में दोनों में एक आत्मिक लड़ाई है (अर्थात, रोमियों 7; इफिसियों 6)। विजय केवल त्रिगुणात्मक परमेश्वर में और उसके द्वारा ही आ और रह सकती है। बुराई को हरा दिया गया है और हटा दिया जाएगा (प्रका. 20:10)!

Copyright © 2014 Bible Lessons International

▪ **"भरा हुआ"** यही शब्द आत्मा के लिए प्रयुक्त किया गया है (देखें इफि. 5:18)। जहाँ लिखा है "आत्मा से परिपूर्ण होते जाओ।" परिपूर्ण होने में सहयोग की आवश्यकता होती है। हम किसी न किसी बात से परिपूर्ण होते हैं (देखें प्रेरित 5:17 की टिप्पणी)। इसमें शैतान भी संलग्न होता है, परन्तु उत्तरदायी हम हैं (देखें, लूका 22:3-6)। मैं क्लीन्टन-ई-आरनाल्ड की पुस्तक *(Three Crucial Questions About Spiritual Warfare,*Clinton E. Arnold*)* पढ़ने की सलाह देता हूं। आश्चर्य की बात है कि विश्वासियों के जीवनों में शैतान के कार्य निरन्तर जारी रहते हैं (देखें इफिसियों 6:10-19; 1 यूहन्ना 5:18-19)। देखें प्रेरि. 2:4 तथा 3:10 पर दी गई टिप्पणियाँ।
संभव है यह वाक्यांश "परिपूर्ण होते जाओ" एक इब्रानी भाषा का मुहावरा हो (जैसे एस्तेर 7:5; सभोपदेशक 8:11; 9:3)। प्रेरितों के काम के आरम्भिक अध्यायों के सम्बन्ध में कुछ विद्वान अनुमान लगाते हैं कि उनका स्रोत आरामी भाषा है।

▪ **"पवित्र आत्मा से झूठ बोले"** हनन्याह सफीरा ने पतरस और कलीसिया से झूठ बोला था, परन्तु वास्तव में उन्होंने पवित्र आत्मा से झूठ बोला था। धर्मवैज्ञानिक रूप से यह दमिश्क के मार्ग पर यीशु द्वारा पौलुस से यह कहने के समान है, "तू मुझे क्यों सताता है।" (प्रेरि. 9:4)। जबकि पौलुस तो विश्वासियों को सताता था; परन्तु यीशु ने इसे व्यक्तिगत रूप से लिया जैसाकि यहां पर पवित्र आत्मा से झूठ बोलना कहा गया है। आधुनिक विश्वासियों के लिए यह चेतावनी के शब्द होना चाहिए।

5:4 इस पद में दो प्रश्न हैं और दोनों का उत्तर "हाँ" है।

▪ **"तू मनुष्यों से नहीं, परन्तु परमेश्वर से झूठ बोला है"** उन्होंने न केवल अपने लिए धन का कुछ हिस्सा बचाकर रख लिया पर स्वयं को आत्मिक जन दिखाने के लिये झूठ भी बोला। ध्यान दें कि यदि भलाई को कोई कार्य बुरे इरादे से किया जाए तो वह पाप कहलाता है, क्योंकि "जो कुछ विश्वास से नहीं, वह पाप है (देखें रोमियों 14:23) इस पर भी ध्यान दें कि प्रेरि. 5:3 में जिस पवित्र आत्मा का उल्लेख किया गया वह यहाँ पर परमेश्वर कहलाता है।

5:5 "गिर पड़ा और प्राण छोड़ दिए" प्राचीन काल में अन्तिम सांस लेने का अर्थ था कि व्यक्ति में से आत्मा निकल गई है (सप्तूजैन्त में न्यायियों 4:2; यहेजकेल 21:7 LXX)। नये नियम में यह असाधारण शब्द केवल प्रेरि. 5:4,10; 12:23 में ही पाया जाता है। यह सांसारिक दण्ड का एक उदाहरण है। यह परमेश्वर के उस दण्ड के समान है जो हारून के दो पुत्रों पर लैव्यव्यवस्था 10 में पड़ा। परमेश्वर की दृष्टि में पाप बड़ी गम्भीर बात होती है। इसका परिणाम मृत्यु होता है (देखें 2 राजा 14:6; यहेज. 18:4,20)।

▪ **"सब पर बड़ा भय छा गया"** जो दण्ड हनन्याह और सफीरा पर पड़ा, उसका संभवतः यही उद्देश्य था कि लोगों पर भय छा जाए। उन दोनों की मृत्यु, पुराने नियम में नादाब और अबीहू (लैव्य.10) तथा उज्जा (2 शमूएल 6) की मृत्यु के सदृश्य थी। हम 1 कुरि. 11:30; याकूब 5:20 तथा 1 यूहन्ना 5:16-17 के आधार पर मान सकते हैं कि

कुछ विश्वासियों के पापों का परिणाम उनकी जल्दी मृत्यु हो जाना हो सकता है। परमेश्वर की पवित्रता और परमेश्वर के पितृत्व के बीच सन्तुलन बनाए बनाए रखना बड़ा कठिन होता है।

5:6 "उसे गाड़ दिया" प्रथम शताब्दी के यहूदी मृतक शरीर पर सुगन्धित द्रव्य नहीं लगाते थे और अभी भी नहीं लगाते हैं क्योंकि मनुष्य मिट्टी है और मिट्टी में ही मिल जाता है (देखें, उत्पत्ति 3:19; भजन 103:14; 104:29)। मनुष्य को एक दिन में दफना दिया जाता था किसी कारणवश कोई स्मारक सभा अथवा मसीही दफनाने की विधि नहीं की गई।

विशेष शीर्षक: गाड़ने की विधि

I. मैसोपोटामियाँ :
- A. मृत्यु के बाद सुखी जीवन के लिए शव को भली प्रकार से दफन करना अति आवश्यक बात होती थी। जिसे अक्सर इस जीवन के विस्तार के रूप में देखा जाता था (देखें, विशेष विषय : "मृतक कहाँ हैं"।
- B. मैसोपोटामियाँ के एक शाप का उदाहरण : "भूमि तेरे मृतक शरीर को ग्रहण न करे।"

II. पुराना नियम :
- A. मृतक शरीर को आदर के साथ गाड़ा जाना बहुत जरूरी था (देखें, सभो. 6:3)
- B. यह कार्य बहुत शीघ्रता से किया जाता था (उत्प. 23 में सारा और उत्प. 35:19 में राहेल ; व्यव. वि. 21:23 भी देखें।
- C. सही तरीके से न गाड़ा जाना तृस्कार और पाप का प्रतीक होता था :
  1. व्यवस्थाविवरण 28:26
  2. यशायाह 14:20
  3. यिर्मयाह 8:2; 22:19
- D. संभव हो तो गाड़ा जाना घर के आसपास पारिवारिक कब्रिस्तान में होता था (जिसे पूर्वजों के संग सोना कहा जाता था)।
- E. शरीर पर मसाले नहीं लगाए जाते थे जैसा कि मिस्र में होता था। मानवजाति मिट्टी से बनाई गई और मिट्टी में ही मिल जानी चाहिए (जैसे, उत्प. 3:19; भजन. 103:14; 104:29) देखें विशेष विषय : दाह-संस्कार
- F. यहूदी रब्बियों में मृतक शरीर का आदर और दफनाने की सही विधि के मध्य सन्तुलन बनाए रखना कठिन कार्य होता था।

III. नया नियम
- A. मृत्यु के तुरंत बाद 24 घंटों के अंदर शव गाड़ दिया जाता था। अक्सर यहूदी तीन दिन तक कब्र का पहरा देते थे, यह समझकर कि इस अवधि में आत्मा शरीर में लौट सकती है (यूह. 11:39)
- B. गाड़ते समय शरीर को स्नान करा कर मसाले लगाए जाते थे (यूह. 11:44; 19:39-40)।
- C. प्रथम शताब्दी के पलीस्तीन में यहूदी और मसीही लोगों की दफनाने की विधि में कोई अंतर नहीं था।

Copyright © 2014 Bible Lessons International

NASB (नवीनतम) पाठ : प्रेरितों के काम 5:7-11

[7]लगभग तीन घंटे के बाद उसकी पत्नी, जो कुछ हुआ था न जानकर, भीतर आई। [8]तब पतरस ने
उससे कहा, "मुझे बता क्या तुमने वह भूमि इतने ही में बेची थी?" उसने कहा, "हां, इतने ही में।"
[9]पतरस ने उससे कहा, "यह क्या बात है, कि तुम दोनों ने प्रभु के आत्मा की परीक्षा के लिये एका
किया? देख, तेरे पति के गाड़नेवाले द्वार ही पर खड़े हैं और तुझे भी बाहर ले जाएंगे।" [10]तब वह तुरन्त

उसके पांवों पर गिर पड़ी, और प्राण छोड़ दिए: और जवानों ने भीतर आकर उसे मरा पाया, और बाहर ले जाकर उसके पति के पास गाड़ दिया। [11]और सारी कलीसिया पर और इन बातों के सब सुननेवालों पर बड़ा भय छा गया।

5:7 ''लगभग तीन घण्टे'' यह चश्मदीद गवाहों द्वारा घटना के सजीव चित्रण को दर्शाता है। लूका के लेखों की यह विशेषता है कि इस प्रकार ध्यान आकर्षित करता है। इससे उसकी लेखन शैली और उसके खोजबीन के तरीकों की जानकारी भी मिलती है।

5:8 यहाँ झूठ बोलना और अपने आप को भला बनाना जारी रहता है।

5:9 ''परीक्षा'' यह एक प्रकार से पवित्र आत्मा की सामर्थ और उसकी उपस्थिति की परीक्षा थी, अर्थात पिता की व्यक्तिगत रीति से पृथ्वी पर उपस्थिति की परीक्षा (प्रेरि. 1:2 पर दी गई टिप्पणी देखें)। पवित्र आत्मा को चुनौती देने के सांसारिक परिणामों के साथ साथ अनन्त परिणाम भी हुए। ये दोनों पति-पत्नी नहीं जानते थे कि उन्होंने पवित्र आत्मा से झूठ बोला है, परन्तु पतरस यह जानता था।

परीक्षा शब्द को व्यक्त करने के लिए दो यूनानी शब्द प्रयोग किए जाते हैं। जो शब्द यहाँ प्रयुक्त हुआ उसका अर्थ है, ''सर्वनाश कराने के लिए परीक्षा करना।'' यह संभवतः निर्गमन 17:2 और व्य.वि. 6:16 की ओर संकेत करता है जहां यहोवा (YHWH) की परीक्षा करने के लिये मना किया गया है (देखें भजन. 78:18,41,56)।

विशेष शीर्षक: परीक्षण और उनकी धारणाओं के लिए यूनानी नियम

किसी को किसी उद्देश्य के लिए परखने से संबंधित यूनानी भाषा में दो शब्द पाए जाते हैं :

1. डोकीमाजो, डोकीमिओन, डोकीमासिया (*Dokimazō, Dokimion, Dokimasia*) यह धातु से संबंध रखने वाला शब्द है जो किसी धातु के खरेपन को जांचने के लिए उपयोग में लाया जाता है (रूपक के रूप में किसी मनुष्य को परखने के लिए)। धातू की यह परख आग द्वारा होती है। (देखें, विशेष विषय : आग आग धातु को जलाकर उसका मैल दूर कर देती है और शुद्ध धातु रह जाती है। यही प्रक्रिया परमेश्वर, शैतान या मनुष्यों द्वारा दूसरों की जाँच या परख में प्रयुक्त की जाती है और एक अच्छा तरीका है। यह शब्द केवल सकारात्मक अर्थों में किसी को परखने में इस्तेमाल होता है ताकि उसे स्वीकार या ग्रहण किया जा सके (देखें विशेष विषय : परमेश्वर अपने लोगों को परखता है (पुराना नियम)
   इसे नए नियम में परखने के संबंध में प्रयोग किया गया :
   a. बैल - लूका 14:19
   b. स्वयं को - 1 कुरि. 11:28
   c. अपना विश्वास - याकूब 1:3
   d. परमेश्वर को - इब्रा. 3:9
2. इन परखने की क्रियाओं का फल सकारात्मक होने की आशा की गई (देखें, रोमि. 2:18; 14:22; 16:10; 2 कुरि. 10:18; 13:3,7; फिलि. 2:27; 1 पत. 1:7), इस कारण यह शब्द बताता है कि कोई जन परखा गया और सही पाया गया :
   a. काम के योग्य पाया गया
   b. भला पाया गया
   c. खरा पाया गया
   d. मूल्यवान पाया गया
   e. आदर के योग्य पाया गया
3. पेराजो, पेरास्मुस (*Peirazō, Peirasmus*)

इस शब्द में किसी की इस उद्देश्य से परीक्षा करने का भाव पाया जाता है कि उसमें दोष ढूँढें और उसे तृस्कृत करें। इसका प्रयोग यीशु की जंगलों में परीक्षा होने में किया गया।

a. यह यीशु को फंदे में फंसाने की कोशिश करने का अर्थ दर्शाता है (मत्ती 4:1; 16:1; 19:3; 22:18,35; मर. 1:13; लूका 4:2; इब्रा. 2:18)।
b. यह शब्द (*peirazon*) शैतान की पदवी के रूप में प्रयुक्त हुआ है (मत्ती 4:3; 1 थिस्स. 3:5 (अर्थात् परखने वाला)
c. उपयोग :
   1. यह शब्द यीशु द्वारा मनुष्यों को चेतावनी देने में किया गया कि वे परमेश्वर की परीक्षा न करें (मत्ती 4:7; लूका 4:12 [या मसीह को, 1 कुरि. 10:9])
   2. यह शब्द, यह भी दर्शाता है कि कोई काम करने का प्रयत्न किया पर सफल न हुए (इब्रा. 11:29)
   3. इस शब्द का प्रयोग विश्वासियों की परीक्षा में भी हुआ (1 कुरि. 7:5; 10:9,13; गला. 6:1; 1 थिस्स. 3:5; इब्रा. 2:18; याकूब 1:2,13,14; 1 पत. 4:12; 2 पत. 2:9)

Copyright © 2014 Bible Lessons International

5:10 "जवान" शब्द को व्यक्त करने के प्रेरि. 5:6 में जो यूनानी शब्द (*neōteroi*) इस्तेमाल किया गया है वह प्रेरि. 5:10 के यूनानी शब्द दमंदपावप से भिन्न है। निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता है कि यह लेखक ने भिन्नता लाने के लिए किया है अथवा चर्च में जवानों का कोई विशेष समूह था। ये दोनों ही यूनानी शब्द एक मूल शब्द छमवे से निकले हैं।

5:11 "सब सुननेवालों पर बड़ा भय... छा गया" लूका ने सामान्य यूनानी शब्द चीवइवे अनेक बार भय के लिये प्रयुक्त किया है ;देखें लूका 1:69; 3:37; प्रेरि. 19:17)। विश्वासी के लिए भय का अर्थ, आदर, श्रद्धा है, परन्तु अविश्वासी के लिए यह अपशकुन, भयभीत होने, डरने की बात है ;लूका 12:4-5; इब्रा. 10:31)।

▪ **"कलीसिया"** यह पहली बार है जहां प्रेरितों के काम में यह प्रयुक्त हुआ, हालांकि यह प्रचलित शब्द प्रेरि. 2:47 में प्रयुक्त हुआ है।

विशेष शीर्षक: कलीसिया

यह शब्द "एक्लीसिया" (Ekklesia) दो शब्दों से मिलकर बना है "में से" (Out of) तथा "बुलाया जाना" (Called) I इस शब्द का सांसारिक प्रयोग है, नागरिकों को सभा के लिए बुलाना, देखें प्रेरि. 19:32,39,41; और इसलिए कि सप्तूजेन्त में इस शब्द का प्रयोग इस्राएलीयों की मंडली के लिए किया गया है (कहल (*Qahal*), BDB874, KB1078, गिनती. 16:3; 20:4; व्यवस्था. 31:30) इसलिए यह इस शब्द का धार्मिक उपयोग है।

आरम्भिक कलीसिया ने स्वयं को पुराने नियम की परमेश्वरीय प्रजा के रूप में माना और इसलिए वे नया इस्राएल कहलाया (रोमि. 2:28-29; गला. 3:29; 6:16; 1 पत. 2:5,9; प्रका. 1:6) जो परमेश्वर की विश्वव्यापी मिशन की परिपूर्ति थी (देखें, उत्प. 3:15; 12:3; निर्ग. 19:5-6; मत्ती 28:18-20; लूका 24:47; प्रेरि. 1:8; देखें विशेष विषय: "यहोवा (YHWH) के उद्धार की अनन्त योजना" और मिलार्ड एरिकसन, ईसाई धर्मशास्त्र, 2 पेज 1052-1053, "द चर्च एंड इज़राइल")। (Millard Erickson, *Christian Theology*, 2[ed], pp. 1052-1053, "The Church and Israel").

सुसमाचारों और प्रेरितों के काम में इस शब्द का प्रयोग विभिन्न रूपों में हुआ है :

1. सांसारिक नगर की सभा, प्रेरि. 19:32,39,41

2. मसीह में परमेश्वर के विश्वव्यापी लोग, मत्ती 16:18 तथा इफिसियों। (इफि 1:22-23; 3:10,21; 4:4; 5:23; 1 कोरिन्थ. 10:32; 11:22; 12:28; कुलु. 1:18,24; इब्रा. 12:23)

3. मसीह में स्थानीय मंडली के विश्वासी, मत्ती 18:17; प्रेरि. 5:11 (यरूशलेम की कलीसिया : प्रेरि. 13:1; रोमि. 16:5; 1 कुरि. 16:19; कुलु. 4:15; फिलेमोन पद 2
4. सामूहिक रुप से इस्राएली लोग, प्रेरि. 7:38, स्तिफनुस के उपदेश में।
5. प्रान्तीय क्षेत्रों में परमेश्वर के लोग, प्रेरि. 8:3; गला. 1:2 (यहूदिया अथवा फिलस्तीन)।

कलीसिया किसी चर्च की इमारत नहीं है बल्कि उपस्थित लोगों का समूह है। सैकड़ों वर्षो तक चर्च बिल्डिंग नहीं थी। याकूब की पत्री में जो प्राचीन पुस्तक है, कलीसिया को आराधनालय या सभाघर (Synagoge) कहा गया है, यह केवल इसी पत्री में है (याकूब 2:2; 5:14)।

Copyright © 2014 Bible Lessons International

NASB (नवीनतम) पाठ:प्रेरितों के काम 5:12-16

[12]और प्रेरितों के हाथों से बहुत चिन्ह और अद्‌भुत काम लोगों के बीच में दिखाए जाते थे, और वे सब एक चित्त होकर सुलैमान के ओसारे में इकट्ठे हुआ करते थे। [13]परन्तु औरों में से किसी को यह हियाव न होता था कि उनमें जा मिले; तौभी लोग उनकी बड़ाई करते थे। [14]और विश्वास करनेवाले बहुतेरे पुरुष और स्त्रियां प्रभु की कलीसिया में बड़ी संख्या में मिलते रहे। [15]यहां तक कि लोग बीमारों को सड़कों पर ला लाकर खाटों और खटोलों पर लिटा देते थे, कि जब पतरस आए, तो उसकी छाया ही उनमें से किसी पर पड़ जाए। [16]और यरूशलेम के आस-पास के नगरों में भी बहुत लोग बीमारों और अशुद्ध आत्माओं के सताए हुओं को ला-लाकर, इकट्ठे होते थे और सब अच्छे कर दिए जाते थे।

5:12-16: यह इस पुस्तक का संक्षिप्त सारांश है, जो इसकी विशेषता प्रकट करता है (देखें, प्रेरि. 2:43 - 47 तथा 4:32-35)।

5:12 "बहुत चिन्ह और चमत्कार " यह अपूर्ण कालिक क्रिया सूचक वाक्यांश है। चिन्ह और अद्‌भुत काम शब्द पतरस द्वारा उद्धरित योएल 2 प्रेरित 2:19 में भी पाए जाते हैं। अद्‌भुत काम प्रेरितों द्वारा बार होते थे (देखें, प्रेरि. 2:43; 4:30; 5:12; 6:8; 7:36; 14:3; 15:20)। याद रखना चाहिए कि स्वतः ही आश्चर्यकर्म ईश्वरत्व का चिन्ह नहीं होते (देखें, मत्ती 24:24; 2 थिस्स. 2:9), ये मसीही सन्देश की पुष्टि के लिए थे और पुष्टि के लिए हैं; इन पर ध्यान देना और बल देना, यहूदी धर्म से मूलतः भिन्न है।

▪ **"वे सब एक चित्त थे"** प्रेरि. 1:14 की टिप्पणी देखें। लूका के लिये बार बार इस बात पर बल देना आवश्यक था। ये एक आदर्श था कि वे एक चित्त होकर जमा होते थे, पर यह ज्यादा समय तक नहीं चला।

▪ **"सुलैमान के ओसारे में"** यह मन्दिर परिसर में अन्यजातियों के आँगन की दीवार की पूर्वी दिशा में एक खुला बरामदा था। यीशु ने यहाँ पर अक्सर उपदेश दिए थे (यूहन्ना 10:23)। इसी स्थान पर पतरस और यूहन्ना सबसे पहले गिरफ्तार हुए थे।

5:13

NASB	**"अन्यों में से किसी को उनमें सम्मिलित होने का साहस नहीं हुआ"**
NKJV, NRSV	**"औरों में से किसी को साहस न होता था कि उनमें जा मिले"**
TEV	**"समूह के बाहर के लोगों में से किसी को साहस नहीं होता था कि उनमें जा मिले"**
NJB	**"कोई और साहस नहीं करता था कि उनमें जा मिले"**

यह एक असामान्य वाक्यांश है। ऐसा प्रतीत होता है कि यह वाक्यांश ''भय'' के नकारात्मक पक्ष का उल्लेख करता है। यहां पर लोगों के अनेक समूहों का वर्णन किया गया है (देखें प्रेरि. 5:12-16)। जो विचित्र घटनाएँ यहाँ हुईं उनके कारण ये लोग मसीह पर विश्वास करने के लिए बाध्य हुए (देखें पद 5-7) अथवा उनके मसीह पर दृढ़ विश्वास को देखकर मसीह की ओर आकर्षित हुए (पद 3)।

1. प्रेरित, प्रेरि. 5:12
2. लोग, प्रेरि. 5:12,13
3. विश्वासीगण (एकत्रित होकर सुलैमान के ओसारे में इकट्ठा होते थे), प्रेरि. 5:12
4. बाकी लोग (यहूदी अगुवे) प्रेरि. 5:13
5. नए विश्वासी, प्रेरि. 5:14
6. यरूशलेम के बीमार, प्रेरि. 5:15
7. आसपास के गांवों के बीमार व दुष्टात्माओं से पीड़ित, प्रेरि. 5:16

''जा मिले'' का शब्दशः अर्थ है ''चिपकाना''। लूका यह शब्द अक्सर प्रयुक्त करता है परन्तु विस्तारित और भिन्न अर्थों में। जाकर मिल जाने का साहस न करना, नए समूह का सदस्य न बनने की ओर इशारा करता है अर्थात् यीशु पर विश्वास लाना जो प्रतिज्ञात मसीह है।

5:14 ''विश्वासी'' यह निरन्तर जारी रहने वाले कार्य की ओर संकेत करता है। देखें प्रेरि. 2:40 तथा 3:16 में दी गई टिप्पणियाँ।

NASV, TEV, NJB, NIV ''प्रभु में''
NKJY, NRSY ''प्रभु पर''

विश्वास करने वाले बड़ी संख्या में प्रभु पर विश्वास करने या प्रभु में, आते रहे, इसे दोनों प्रकार समझा जा सकता है। यह इस बात को दर्शाने का एक तरीका है कि अब विश्वासी प्रभु का जन है, दसकी सम्पत्ति है और अब प्रभु उसकी सम्पत्ति है।

▪ **''स्त्रियाँ''** लूका अपने सुसमाचार मे और प्ररितों के काम में स्त्रियों का उल्लेख अवश्य करता है (देखें प्रेरि. 1:14; 8:12; 16:1,13; 17:4,12,34; 18:2; 21:5) यीशु स्त्रियों और बच्चों के प्रति एक नए दृष्टिकोण और आदर भाव को लाता है।

▪ **''उनकी संख्या लगातार बढ़ती गई''** लूका अक्सर कलीसिया की उत्तरोत्तर उन्नति होने की सूचना देता रहता है (देखें, प्रेरि. 2:47; 5:14; 6:7; 9:31; 12:24; 12:24; 16:5; 19:20)।

5:15 ''जब पतरस आए तो उसकी छाया ही'' सुसमाचार के सन्देश की पुष्टि के रूप में इस समय आश्चर्यकर्म होना सामान्य बात थी। प्रेरितों में स्पष्ट रूप से पतरस मुख्य वक्ता था। इसी प्रकार के चंगाई के काम पौलुस द्वारा भी किए गए जो सुसमाचार को प्रभावित कर रहे थे कि सुसमाचार सच्चा है (देखें प्रेति. 19:12)।

व्याख्या करने वाले होने के नाते हमें याद रखना चाहिए कि ये चिन्ह व आश्चर्यकर्म इन कारणों से प्रदान किए गएः-

1. परमेश्वर की दया को दर्शाने के लिए।
2. सुसमाचार की सच्चाई को दर्शाने के लिए।
3. यह दर्शाने के लिए कि परमेश्वर द्वारा बुलाए गए अगुवे कौन हैं।

चिन्ह व चमत्कार एक विशेष संस्कृति में, और किसी खास उद्देश्य से प्रकट होते थे। चूंकि इन्हें करने वाला स्वयं परमेश्वर था, इसलिये ज़रूरी नहीं वह किसी भी संस्कृति में व इतिहास में किसी भी समय वही कार्य हर बार करे। इसका यह अर्थ नहीं कि परमेश्वर हर युग में क्रियाशील नहीं रहता और कम दयालु हो गया है, परन्तु इसका अर्थ है कि परमेश्वर के लोगों को अपने विश्वास के अनुसार चलना चाहिए न कि देखी हुई बातों के अनुसार! आश्चर्यकर्म तो

होते रहेंगे, परन्तु इससे बड़ी बात है पापियों का उद्धार होना; शारीरिक चंगाई पाकर तो मनुष्य फिर मर सकता है परन्तु उद्धार पाकर अनन्तकाल तक जीवित रहता है।

मैं सोचता हूं कि परमेश्वर बदल नहीं गया है। उसका स्वभाव, उसकी सामर्थ, उसका प्रेम और सब मनुष्यों का उद्धार होने की उसकी इच्छा सदा एक समान है, परन्तु धर्म वैज्ञानिक दृष्टिकोण से इतिहास पर विचार करने पर अद्‌भुत चिन्हों के दो बड़े काल नजर आते हैं और ये परमेश्वर और शैतान दोनों की ओर से हैं।

1. देहधारण और आदि कलीसिया के विकास के बीच का समय
2. अन्तिम युग की घटनाओं से पूर्व का समय जब विश्वासी भयंकर सताव का सामना करेंगे।

मैं यहाँ ए.टी. रौबिन्सन का एक कथन प्रस्तुत करना चाहूंगा जो उनकी पुस्तक पेज 62 (A. T. Robertson *World Pictures in the N.T* vol. III, p. 62.) से है

"निस्सन्देह पतरस की छाया में तथा पौलुस की देह से स्पर्श किए हुए रूमालों ओर अंगोछों में (प्रेरि. 19:12), कोई शक्ति व गुण नहीं था, जिससे लोग चंगे होते थे, परन्तु यह उनका अन्धविश्वास के साथ हुआ विश्वास था, जो सुसमाचार की घटनाओं में भी हम देखते हैं, (मत्ती 9:20; मरकुस 6:56; यूहन्ना 9:5) जो उन्हें चंगाई दिलाता था। हम कह सकते हैं कि परमेश्वर इतना दयालु है कि वह अन्ध-विश्वास पूर्ण, हमारे विश्वास को भी स्वीकार करके हमें चंगाई दे देता है। कुछ लोगों में अन्ध-विश्वास नहीं पाया जाता है।

5:16 "सब स्वस्थ कर दिए जाते थे" यह अपूर्ण कालिक क्रिया है। यहां कहा गया है कि हर एक को चंगा कर दिया जाता था, जब कि कि अंतिम मनुष्य भी चंगा होकर न चला जाए, परन्तु चंगाई देने वाले के बारे में नहीं बताया गया, परन्तु वह पवित्र आत्मा ही है।

यह सारांश के समान कथन है। क्या हम इसे शाब्दिक अर्थों अर्थात् कि बारी बारी से प्रत्येक को चंगा किया गया। यीशु तो चंगाई से पहले विश्वास की माँग करता था अथवा दो उद्देश्यों से चंगाई देता था (1) चेले उससे सीखें (2) भीड़ उसका उपदेश सुने।

जब मैं नए नियम में पढ़ता हूँ कि चंगाई पाने वाले सभी लोग चंगाई के साथ साथ उद्धार नहीं पाते थे अर्थात् यीशु पर भरोसा व विश्वास लाकर अनन्त जीवन के अधिकारी नहीं बनते थे, तो मुझे बड़ा खेद होता है। शारीरिक चंगाई से बढ़कर आत्मा का उद्धार होता है। आश्चर्यकर्म वास्तव में तभी सफल व लाभदायक होता है जब उसके द्वारा कोई जन परमेश्वर के निकट आ जाए। सम्पूर्ण मानवजाति पतित संसार में पड़ी हुई है और पतित दशा में रहती है। जहाँ बुराईयाँ रहती हैं। परमेश्वर अक्सर संसार में हस्ताक्षेप करना पसन्द नहीं करता, परन्तु यह पद परमेश्वर के प्रेम और उसकी चिन्ता के बारे में कुछ नहीं बताता। इस वर्तमान बुरे संसार में परमेश्वर के महान और अद्‌भुत कार्य होने के सम्बन्ध में प्रार्थना करते समय सावधान रहिये कि वह प्रार्थना सुनकर तुरन्त कार्य करे। वह सर्वोच्च परमेश्वर है, और हम किसी भी परिस्थिति की पूरी पूरी जानकारी नहीं रखते हैं।

इस अवसर पर मैं अपनी 2 तीमु. 4:20 पर की गई निम्नलिखित टीका की टिप्पणी को प्रस्तुत करना चाहूंगा जो संत पौलुस और शारीरिक चंगाई के संबंध में है (देखें http://www.freebiblecommentary.org/).

> "हमारे मन में बहुत से प्रश्न हो सकते हैं जिन्हें हम नए नियम के लेखकों से करना चाहेंगे। एक प्रश्न है जो प्रत्येक विश्वासी सोच सकता है वह शारीरिक चंगाई के बारे में है। प्रेरितों के काम पुस्तक में (प्रेरि. 19:12; 28:7-9) पौलुस चंगाई कर सकता है, परन्तु 2 कुरि. 12:7-10 में और फिलि. 2:25-30 में वह चंगाई देने में असमर्थ रहता है। ऐसा क्यों होता है कि कुछ चंगाई पा लेते हैं परन्तु सब चंगाई नहीं पाते हैं, क्या चंगाई समय की खिड़की से जुड़ी है जो अब बन्द हो गई है?
>
> मैं निश्चय ही अद्‌भुत कामों पर विश्वास रखता हूं और मानता हूँ कि एक दयालु पिता है जो शारीरिक चंगाई के साथ साथ आत्मिक चंगाई भी देता है, परन्तु फिर भी क्यों कभी तो चंगाई हो जाती है और कभी नहीं होती है? मैं नहीं सोचता कि इसका संबंध मनुष्य के विश्वास से है, क्योंकि निश्चय ही पौलुस में विश्वास था (2 कुरि. 12)। मैं समझता हूँ कि चंगाई और आश्चर्यकर्मों पर विश्वास करना दृढ़तापूर्वक यह स्वीकार करना है कि सुसमाचार विश्वासयोग्य और सत्य है, जो कि अभी भी संसार के उन क्षेत्रों में स्वीकार किया जाता है जहाँ पहली बार सुसमाचार सुनाया गया। फिर भी मैं महसूस करता हूँ कि परमेश्वर हम से चाहता है कि हम देखी हुई वस्तुओं के आधार पर नहीं परन्तु विश्वास के अनुसार चाल चलें। मैं यह भी महसूस

करता हूँ कि शारीरिक दुर्बलता व बीमारी अक्सर एक विश्वासी के जीवन में आने दी जाती है (1) एक अस्थाई पाप के दण्ड के रूप में (2) पतित संसार में जीवन के परिणामों के रूप में तथा (3) विश्वासी की सहायता के लिए ताकि वह आत्मिक रूप से परिपक्व बने। मेरी समस्या दरअसल यह है कि मैं कभी भी यह जान नहीं पाता हूँ कि इन तीनों में से किस कारण से बीमारी आई है। इस संबंध में की गई मेरी, प्रार्थनाएँ कि हर स्थिति में परमेश्वर की इच्छा पूरी हो, विश्वास की कमी के कारण नहीं है बल्कि सच्चे हृदय से किया गया एक प्रयास है कि परमेश्वर जो दयालू व अनुग्रहकारी है, प्रत्येक के जीवनो में अपनी इच्छा पूरी कर सके।''

- ''अशुद्ध आत्माओं देखें विशेष विषय: अशुद्ध आत्माएँ तथा उन्हें निकालना।

विशेष विषय: अशुद्ध आत्माएँ

A. प्राचीन काल के लोग जड़वादी या जीववादी होते थे। वे प्राकृतिक शक्तियों, पशुओं और प्रकृति की पूजा किया करते थे।मानव जाति के साथ इन आध्यात्मिक संस्थाओं की बातचीत के माध्यम से जीवन की व्याख्या की गई थी।

B. समय बीतने पर यही बात बहुईश्वरवाद बन गई और लोग अनेक देवी-देवताओं पर विश्वास करने लगे। कुछ अच्छे और कुछ बुरे देवता पाए जाने लगे, जो मानवीय जीवन पर प्रभाव डालते थे।
   1. मेसोपोटामिया, अव्यवस्था और संघर्ष
   2. मिस्र, व्यवस्था और कार्य
   3. कनान, देखें डब्लयू. एफ. एलब्राईट की पुस्तक "आरकेलॉजी एण्ड द रिलिजियन ऑफ इज़राइल" (*"Archaeology and the Religion of Israel", Fifth Edition, PP. 67-92*)

C. पुराने नियम में देवताओं, स्वर्गदूतों, दुष्टात्माओं इत्यादि की शिक्षा नहीं पाई जाती है क्योंकि वहां निष्ठापूर्वक एकेश्वरवाद माना जाता था (देखें, विशेष विषय : एकेश्वरवाद , निर्ग. 8:10; 9:14; 15:11; व्य. वि. 4:35,39; 6:4; 33:26; भजन 35:10; 71:19; 86:8; यशा. 46:9; यिर्म. 10:6-7; मीका 7:18)।पुराने नियम में गैर जातियों के देवी-देवताओं का उल्लेख अवश्य किया गया है (शेडीम (shedim, BDB993; व्य . वि. 32:17; भजन 106:37) और उन देवताओं के नाम भी पाए जाते हैं, जैसे :
   1. सेईम (*Seim*) (वन देवता अथवा बालों वाला देवता, BDB972 III, KB 1341 III, लैव्य. 17:7; 2 इति 11:15; यशा. 13:21; 34:14)
   2. लीलीत (*Lilith*) (रात्री की भयंकर दुष्टात्मा या डायन, BDB 539, KB 528; यशा. 34:14)
   3. मावेत (*Mavet*) : इब्रानी में मृत्यु, अंधकार के कनानी देवता के लिए प्रयुक्त शब्द, Mot, BDB 560, KB 560; यशा. 28:15,18; यिर्म. 9:21; व्य. वि. 28:22)
   4. रेशेफ (*Resheph*) : (महामारी, अग्नि, ओले, BDB 958, KB 958; व्य. वि. 32:34; भजन 78:48; हब. 3:5)।
   5. देवेर (*Dever*) : (महामारी, BDB 184, भजन 91:5-6; हब. 3:5)
   6. अजाजेल (*Azazel*) : यह स्थान का नाम अथवा रेगिस्तान की दुष्टात्मा हो सकती है (BDB 736, KB 736; लैव्य. 16:8,10,26)।

   (उपरोक्त सारे उदाहरण एनसाइक्लोपीडिया जुड़ाएका Vol. 5, PP. 1523 से लिए गए हैं) (*Encyclopedia Judaica*)

   परंतु पुराने नियम में द्वैतवाद नहीं है अथवा स्वर्गदूतों को यहोवा (YHWH) से स्वतंत्रता प्राप्त है। शैतान यहोवा (YHWH) का एक दास के रूप में है (अय्यूब 1-2; जक. 3) वह स्वतंत्र प्राणी और स्वेच्छाचारी शत्रु नहीं है (देखें, ए.बी. डेविडसन की पुस्तक "अ थियोलॉजी ऑफ़ द ओल्ड टैस्टामैंट" (cf. A. B. Davidson,*A Theology of the Old Testament, PP. 300-306*)।

D. यहूदी धर्म ने बेबीलोन की गुलामी के दौरान उन्नति की (586-538 ई.पू.) इस धर्म पर फारसी धर्म के भले

देवता माज़दा (*Mazda*) और (*Ormazd*) उसके विरोधी देवता अहरिमान (*Ahriman*) के द्वैतवाद का अति प्रभाव पड़ा। आगे चलकर बन्धुआई के बाद के काल में यहूदीधर्म में यहोवा (YHWH) और उसके दूतों तथा शैतान और उसके दूतों के बीच द्वैतवाद की विचारधारा इसी प्रभाव के कारण विकसित हुई।

एल्फ्रेड ऐडरशेम की पुस्तक "द लाइफ एण्ड टाईम्स ऑफ जीसस द मसायाह" (Alfred Edersheim's *The Life and Times of Jesus the Messiah,* Vol. 2, appendix XIII (pp. 749-863) and XVI pp 770-776) में यहूदी धर्म की शिक्षाओं का अच्छी तरह चित्रण किया गया है ; वे प्रकार से शैतान और उसकी परिभाषा करते हैं :

1. शैतान या शम्माएल (*Sammael*)
2. शैतान के उद्देश्य मानवजाति में
3. मृत्यु का दूत

एडरशेम (Edersheim) इसकी आलोचना इस प्रकार करते हैं :

1. दोष लगाने वाला
2. परीक्षा करने वाला
3. कष्ट देने वाला (Vol. 2, page 756)

शैतान के विषय में बंधुआई के बाद के यहूदीधर्म की शिक्षा और नए नियम की शैतान के संबंध में शिक्षा के बीच बहुत अंतर पाया जाता है।

E. नया नियम, विशेषकर सुसमाचार, दुष्टात्माओं के अस्तित्व के विषय में बताते हैं कि वे मानवजाति और यहोवा (YHWH) का विरोध करते हैं (यहूदी धर्म में शैतान मानवजाति का शत्रु है परंतु परमेश्वर का शत्रु नहीं) वह परमेश्वर की इच्छा, शासन और उसके राज्य का विरोध करते हैं।

यीशु ने इन दुष्टात्माओं को निकाला और उन्हें (1) अशुद्ध आत्माएँ कहा (देखें, लूका 4:36; 6:18) (2) उन्हें दुष्टात्माएँ कहा (देखें, लूका 7:21; 8:2)। यीशु ने बीमारी (शारीरिक और मानसिक) तथा दुष्टात्माओं के बीच स्पष्ट अंतर किया। इन दुष्टात्माओं को निकालकर यीशु ने अपनी सामर्थ्य को प्रकट किया। इन दुष्टात्माओं ने उसे पहचाना और उसके विषय में गवाही देने का प्रयत्न किया परंतु यीशु ने उन्हें डाँट दिया और उनकी गवाही स्वीकार नहीं की और उन्हें चुप रहने की आज्ञा दी। इनका यीशु द्वारा निकाला जाना शैतान के राज्य की पराजय का प्रतीक है।

प्रेरितों की पत्रियों में इस संबंध में बहुत कम जानकारी है। दुष्टात्माएँ निकालना आत्मिक वरदानों की सूची में नहीं है और न ही भविष्य की पीढ़ियों के विश्वासियों और सेवकों के लिए कोई तरीका या उपाय बताया गया है जिसका उपयोग वे दुष्टात्माएँ निकालने में कर सकें।

F. शैतान एक वास्तविक प्राणी है, एक व्यक्तित्व है जो अस्तित्व रखता है। उसके उद्गम और उसके उद्देश्यों का प्रकाशन नहीं किया गया है। बाइबल उसकी वास्तविकता स्वीकार करती है और उसके प्रभाव का कड़ा विरोध करती है। वास्तव में कोई परम द्वैतवाद नहीं है। परमेश्वर ही सब पर नियंत्रण रखता है। शैतान को हरा दिया गया है, उसका न्याय किया जाएगा और वह सृष्टि से मिटा दिया जाएगा।

G. परमेश्वर के लोगों को शैतान का सामना करना चाहिए (याकूब 4:7)।शैतान उन पर नियंत्रण नहीं कर सकता है (1 यूह. 5:18) परंतु विश्वासी अपनी साक्षी के विषय में परखे जा सकते और हानि उठा सकते हैं (इफि. 6:10-18)। मसीही विचारधारा में शैतान वह हिस्सा है जिसका प्रकाशन दे दिया गया है। आधुनिक मसीही जनों को कोई अधिकार प्राप्त नहीं है कि उसको दुबारा परिभाषित करें। शैतान का प्रभाव व्यापक है, परंतु वह एक हारा हुआ है। विश्वासियों को मसीह की विजय में चलने की आवश्यकता है।

Copyright © 2014 Bible Lessons International

विशेष विषय: जादू टोना

यीशु के दिनों में दुष्टात्माएँ निकालना आम बात थी परन्तु यीशु का तरीका मूलतः भिन्न था (देखें मत्ती 8:16; मर. 1:27)। उसके द्वारा दुष्टात्माओं का निकाला जाना नए युग के आरम्भ का चिन्ह था। (लूका 9:1)। रब्बी लोग झाड़ा-फूँकी किया (मत्ती 12:27; प्रेरि. 19:13) करते थे (देखें एल्फ्रेड ऐडरशेम की पुस्तक "द लाईफ एण्ड टाईम्स ऑफ जीज़स, द मसायाह" (*The Life and Times of Jesus, The Messiah, Vol. 2 Appendix VIII, pp. 748-763; XVI, pp 770-776*)। परंतु यीशु स्वयं अपने अधिकार का प्रयोग करते थे। दुष्टात्माओं और अशुद्ध आत्माओं को निकालने के संबंध में आज बहुत सी गलत बातें और भ्रम पाया जाता है। इस समस्या का थोड़ा सा कारण यह भी है कि नए नियम में इस विषय पर कोई चर्चा नहीं पाई जाती है। एक पास्टर होने के नाते मेरी अभिलाषा है कि काश मेरे पास इस विषय पर ढेर सारी जानकारी होती। कुछ पुस्तकों के नाम इस प्रकार हैं, जिन पर मैं भरोसा करता हूँ :

1. क्रिश्चियन काउन्सिलिंग एण्ड द अकल्ट, कुर्ट ई. कौक।
   (*Christian Counseling and the Occult, by Kurt E. Koch*)
2. डीमन्स इन द वर्ल्ड टुडे, मैरिल एफ उंगर
   (*Demons in the World Today,* Merrill F. Unger)
3. बिबलीकल डीमनोलॉजी, मैरिल एफ उंगर
   (*Biblical Demonology,*Merrill F. Unger)
4. प्रिन्सीपैलीटीज एण्ड पावर्स, जौन वारविक मोन्टगोमैरी
   (*Principalities and Powers,* John Warwick Montgomery)
5. क्राइस्ट एण्ड द पावर्स, जौन वारविक मोन्टगोमैरी
   (*Christ And the Powers,*Hendrik Berkhof)
6. थ्री क्रूसियल क्शचन्स अबाउट स्प्रिचुअल वारफेयर, क्लिंटन एन्टोन
   (*Three Crucial Questions About Spiritual Warfare,* by Clinton Anton)

मुझे बहुत आश्चर्य होता है कि दुष्टात्माएं निकालना आत्मिक वरदानों की सूची में एक वरदान कहा गया हो (रोमी 12; 1 कुरंथियों 12; इफिसियों 4; 1 पतरस 4) और इससे भी आश्चर्य होता है कि प्रेरित के पत्रों में इस विषय के संबंध में कुछ नहीं कहा गया है। मैं बाइबल के विश्व दर्शन पर विश्वास करता हूँ जिसमें आत्मिक संसार मौजूद है और भौतिक जगत में क्रियाशील है (देखें, अयूब 1-2; दानि. 10; इफि. 6:10-18)। तो भी परमेश्वर को यह अच्छा लगा कि इस विषय में प्रकाशन नहीं दे। विश्वासी होने के नाते हम सब जानते हैं कि हमें कैसा भक्तिपूर्ण जीवन बिताना चाहिए ताकि हमारे जीवन से फल प्रकट हों। कुछ विषय पूरी तरह से प्रकाशित नहीं किए गए हैं या विकसित नहीं हुए हैं। विश्वासियों को याद रखना चाहिए कि दुष्टात्माएँ निकालना एक दिखाई देने वाला प्रमाण है कि यीशु बुराई पर जयवन्त हुआ है (लूका 10:17-20)। नया नियम चंगाई और दुष्टात्माएँ निकालने के बीच स्पष्ट अंतर करता है (मत्ती 8:16; मर. 1:32; लूका 4:40-41)।

मेरे लिए, मुझे कभी यकीन नहीं होता कि क्या शैतानी है और क्या नहीं। इसलिए, मुक्ति के लिए प्रार्थना हमेशा उपयुक्त होती है। बाइबिल का एकमात्र मॉडल यीशु है। इसलिए, उनका नाम हमारी आत्मिक शक्ति है! मैं शैतान को कभी संबोधित नहीं करता, लेकिन केवल यह मांग करता हूं कि यह यीशु के नाम पर चले।

निम्न विशेष विषयों को देखें :

1. विशेष विषय : शैतान
2. विशेष विषय : व्यक्तिगत बुराई
3. विशेष विषय : पुराने नियम में दुष्टात्माएँ
4. विशेष विषय : नए नियम में दुष्टात्माएँ
5. विशेष विषय: चंगाई
6. विशेष विषय: आत्मिक युद्ध

Copyright © 2014 Bible Lessons International

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम: 5:17-26
[17]तब महायाजक और उसके सब साथी जो सदूकियों के पंथ के थे, डाह से भर कर उठे। [18]और प्रेरितों को पकड़कर बन्दीगृह में बन्द कर दिया। [19]परन्तु रात को प्रभु के एक स्वर्गदूत ने बन्दीगृह के द्वार खोलकर उन्हें बाहर लाकर कहा। [20]कि जाओ, मन्दिर में खड़े होकर इस जीवन की सब बातें लोगों को सुनाओ। [21]वे यह सुनकर भोर होते ही मन्दिर में जाकर उपदेश देने लगे। तब महायाजक और उसके साथियों ने आकर महासभा को और इस्राएलियों के सब पुरनियों को इकट्ठा किया, और बन्दीगृह में कहला भेजा कि उन्हें लाएं। [22]परन्तु प्यादों ने वहां पहुंचकर उन्हें बन्दीगृह में न पाया, और लौटकर संदेश दिया, [23]"हमने बन्दीगृह को बड़ी चैकसी से बन्द किया हुआ, और पहरेवालों को बाहर द्वारों पर खड़े हुए पाया; परन्तु जब खोला, तो भीतर कोई न मिला।" [24]जब मन्दिर के सरदार और महायाजकों ने ये बातें सुनीं, तो उनके विषय में भारी चिन्ता में पड़ गए कि यह क्या हुआ चाहता है? [25]इतने में किसी ने आकर उन्हें बताया, "देखो, जिन्हें तुमने बन्दीगृह में बन्द रखा था, वे मनुष्य मन्दिर में खड़े हुए लोगों को उपदेश दे रहे हैं।" [26]तब सरदार प्यादों के साथ जाकर उन्हें ले आया, परन्तु बलपूर्वक नहीं, क्योंकि वे लोगों से डरते थे, कि हम पर पथराव न करें

5:17 "वे इर्षा से भर उठे" यहां प्रयुक्त यूनानी शब्द का अर्थ है "उबल जाना।" सन्दर्भ के अनुसार इसका अर्थ स्पष्ट है, डाह या जलन से भर जाना। यह धार्मिक अगुवों के वास्तविक उद्देश्य को दर्शाता है अर्थात् डाह करना। लूका रचित सुसमाचार में यीशु के सबसे बड़े शत्रु फरीसी लोग थे, परन्तु प्रेरितों के काम में यीशु के चेलों के सबसे बड़े शत्रु सदूकी लोग हैं।

यहाँ पर प्रयुक्त क्रिया शब्द "भर उठे" का प्रयोग लूका द्वारा भिन्न भिन्न प्रकार से किया गया है और यह "भर जाना" व्यक्ति की विशेषताओं को दर्शाता है:

1. यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला अपनी माता के गर्भ से ही पवित्र आत्मा से परिपूर्ण अथवा भरा हुआ था (लूका 1:15)।
2. इलीशिबा पवित्र आत्मा से परिणूर्ण थी (लूका 1:41)।
3. जकरयाह पवित्र आत्मा से परिपूर्ण था (लूका 1:61)।
4. आराधनालय के लोग क्रोध से भर गए (लूका 4:28)।
5. लकवे के रोगी की चंगाई को देखकर लोग भय से भर गए (लूका 5:26)।
6. सब्त के दिन सूखे हाथ वाले मनुष्य की चंगाई के बाद शास्त्री और फरीसी क्रोध से भर गए (लूका 6:11)।
7. पिन्तेकुस्त के दिन जितने चेले उपरौठी कोठरी में थे पवित्र आत्मा से भर गए (प्रेरि. 2:4)।
8. लंगड़े की चंगाई पतरस व यूहन्ना द्वारा होने पर लोग आश्चर्य और विस्मय से भर गए (प्रेरि. 3:10)।
9. सन्हेद्रिन के सामने पतरस पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होकर बोला (प्रेरि. 4:8)।
10. उपरौठी कोठरी में सब पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो गए (प्रेरि. 4:31)।
11. शैतान ने हनन्याह और सफीरा का मन अपनी बातों से भर दिया (प्रेरि. 5:3)।
12. पतरस और यूहन्ना ने फिर सन्हेद्रिन से बातें की तो वह डाह से भर गए (प्रेरि. 5:17)।
13. चेलों ने सारे यरूशलेम को अपने उपदेशों से भर दिया (प्रेरि. 5:28)।
14. सात पुरुषों को चुनो जो पवित्र आत्मा और बुद्धि से परिपूर्ण हों (प्रेरि. 6:3)।
15. स्तिफनुस, विश्वास और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण था (प्रेरि. 6:5,8; 7:55)।
16. हनन्याह ने शाऊल के ऊपर हाथ रखे, और वह पवित्र आत्मा से भर गया (प्रेरि. 9:17)।
17. पौलुस ने पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो उसकी ओर देखकर कहा (प्ररि. 13:9)।
18. पौलुस ने जिन यहूदियों को उपदेश दिया, वे ईर्ष्या से भर गए (प्रेरि. 13:45)।
19. चेले आनन्द तथा पवित्र आत्मा से निरन्तर परिपूर्ण होते गए (प्रेरि. 13:52)।
20. इफिसुस नगर में उपद्रव और हुल्लड़ भर गया (प्रेरि. 19:29)।

सुसमाचार सुनते समय आप किन बातों से "भर" जाएँगे?

5:18 "प्रेरितों को पकड़कर बन्दीगृह में बन्द कर दिया" प्रेरितों के काम पुस्तक के आरम्भिक अध्यायों में उन समस्याओं को दर्शाया गया है जनका सामना प्रारम्भिक कलीसिया ने किया। ये समस्याएँ हर काल और हर संस्कृति में भिन्न भिन्न रहीं, परन्तु हम देखते हैं परमेश्वर हमारे पक्ष में कार्य करता है, और हमारे साथ रहता है और हमें सामर्थ प्रदान करता है कि हम उन समस्याओं पर विजय पा सकें। विश्वासियों के साथ मसीह की शान्ति और उसकी उपस्थिति बनी रहती है, तथा कोई भी बात, चाहे बन्दीगृह हो, सताव हो, धमकियाँ हों, उनकी यह शान्ति छीन नहीं पाती है (रोमियों 8:31-39)।

5:19 "प्रभु का एक स्वर्गदूत" पुराने नियम में यह वाक्यांश दो तरीकों से प्रयुक्त हुआ हैः

1. एक स्वर्गदूत के रूप में (जैसे, उत्प. 24:7, 40; निर्ग. 23:20-23; 32:34; गिनती 22:22; न्यायियों 5:23; 1 शमूएल 24:16; 1 इतिहास 21:15 क्रमशः; जकर्याह 1:28)।
2. यहोवा (YHWH) की ओर संकेत करते हुए (उत्प. 16:7-13; 22:11-15; 31:11,13; 48:15-16; निर्ग. 3:2,4; 13:21; 14:19; न्यायियों 2:1; 6:22-24; 13:3-23; जकर्याह 3:1-2)।

लूका अक्सर इस शब्द का प्रयोग करता है (देखें, लूका 1:11,13; 2:9; प्रेरिरि. 5:19; 7:30; 8:26; 12:7,11, 23; 10:3: 27:23), परन्तु उस रूप में प्रयोग करता है जैसा ऊपर बिन्दु 1 में है। नया नियम उपरोक्त बिन्दु 2 के समान इसका प्रयोग नहीं करता है; प्रेरि. 8:26 और 29 मे "प्रभु के स्वर्गदूत" को पवित्र आत्मा की समान्तरता में प्रयुक्त किया गया है।

▪ **"बन्दीगृह के द्वार खोल दिए"** यह पौलुस और सीलास के अनुभव के समान फिलिप्पी के बन्दीगृह के समान है (प्रेरि. 16:26)। अनेक बातों में पतरस का जीवन, पौलुस के जीवन के समान है। संभवतः यह लूका की साहित्यिक शैली हो।

5:20 "जाओ, खड़े हो और सुनाओ " इस वाक्यांश में तीन आदेश पाए जाते हैं:

1. जाओ, वर्तमान कालीन आदेश
2. खड़े होकर, भविष्य कालीन आदेश पेज 37 (Friberg's, *Analytical Greek NewTestament*, p.379)
3. सुनाओ, वर्तमान सकारात्मक आदेश

प्रारम्भिक कलीसिया के लिए स्वर्गदूत के पास एक सुसमाचारिक सेवा थी (वर्तमान कलीसिया के लिए भी यही सेवा निर्धारित है)।

▪ **"लोगों को सुनाओ"** प्रेरितों की सेवकाई का सारा जोर इसी मूल बात पर था। पवित्र आत्मा से परिपूर्ण उनका नया जीवन साहस (देखें प्रेरि. 4:29 की टीका), निर्भीकता जैसी विशेषताओं को प्रकट करता था। वे इस जीवन की सब बातें लोगों को सुनाते थे। विभिन्न अनुवादों में इस प्रकार लिखा है:

NASB	**"जीवन का सम्पूर्ण सन्देश"**
NKJV	**"इस जीवन के सब वचन"**
NRSV	**"इस जीवन के विषय में सम्पूर्ण सन्देश"**
TEV	**"इस नए जीवन के बारे में सब बातें"**
NJB	**"इस नए जीवन के विषय में सब बातें"**

यह वाक्यांश यूनानी शब्द (*zōe*, eternal life) अर्थात् अनन्त जीवन के विषय में बताता है जो केवल प्रभु यीशु मसीह के सुसमाचार पर विश्वास लाने से मिलता है। अब चेले आजाद कर दिए गये थे, आत्मिक रूप से और शारीरिक रूप से अर्थात् जेल से शारीरिक रूप से छुटकारा पाया और आत्मिक रूप से उद्धार का अनुभव किया। अब उन्हें यह सबको बताना था (देखें, मत्ती 28:18:20; लू. 24:47; प्रेरि. 1:8)।

5:21 ध्यान दीजिए कि अलौकिक रूप से बन्दीगृह से छुटकारा पाने का अर्थ यह नहीं था कि दुबारा बन्दीगृह में नहीं डाले जाएंगे। परमेश्वर का उनक लिए प्रबन्ध और देखभाल करना भी यह अर्थ नहीं रखता कि उनकी सेवकाई की सारी समस्याएँ हल हो गई हैं या मिट चुकी हैं (देखें, मत्ती 5:10-12; रोमि. 8:17; 1 पतरस 4:12-16)।

▪ **''परिषद...इस्राएल के बेटों की महासभा''** के सब पुरनियों को इकट्ठे किया'' देखें विशेष शीर्षक: प्रेरि. 4:5 की टीका में ''सन्हेद्रिन।'' ''यह महासभा'' किन की ओर संकत करती है? कर्टिस वौगन कहते हैं, ये यरूशलेम के पुरनिये थे जो उस समय सन्हेद्रिन के सदस्य नहीं थे (देखें, एम.आर. विन्सेंट की पुस्तक, वचन का अध्ययन, भाग पेज 234), (cf. M. R. Vincent, *Word Studies,* Vol. 1, p. 234) परन्तु न्यू स्टैन्डर्ड बाइबल तथा न्यू इन्टर नैशनल वर्जन दोनों स्वीकार करती हैं कि महासभा और पुरनिए समान अर्थ रखते हैं।

5:23 ''बन्द '' यह पूर्ण कालिक क्रिया है। यहां बताया जाता है कि बन्दीगृह के द्वार सुरक्षात्मक रूप से बन्द थे, और द्वार पर परमेश्वर भलीभांति पहरा दे रहे थे, परन्तु अन्दर जाकर देखा तो बन्दी गायब थे।

5:**24 ''वे भारी चिन्ता में पड़ गये''** लूका ने यह शब्द अनेक बार प्रयुक्त किया है (देखें, लूका 24:4; प्रेरि. 25:20; लूका 9:7; प्रेरि. 2:12; 5:24; 10:17)। इस शब्द का मूल अर्थ है सन्देह करना, चिन्ता करना, अनिश्चय होना।

▪ **''कि उनका क्या हुआ''** यह अपूर्ण कालिक क्रिया है, वे सोचते हैं कि चेले कहां गये, परन्तु यह स्पष्ट है कि वे भारी चिन्ता में पड़ गये थे (जैसे लू. 1:61-62; 3:15; 8:9; 15:26; 22:23; प्रेरि. 5:24; 8:31; 10:17; 21:33 साथ ही देखें जेम्स ऐलन हीवेट की पुस्तक, न्यू टैस्टामैन्ट ग्रीक, पेज 195)।

5:26 ''वे लोगों से डरते थे कि हम पर पथराव न करें'' यह प्रारम्भिक कलीसिया की प्रसिद्धि को दर्शाता है (प्रेरि. 5:13; 2:47; 4:21) साथ ही यह वाक्यांश यहूदी अगुवों की ईश्र्या की निरन्तरता को भी दर्शाता है।

NASB (नवीनतम) पाठ : प्रेरितों के काम 5:27-32

27उन्होंने उन्हें लाकर महासभा के सामने खड़ा कर दिया: तब महायाजक ने उनसे पूछा, 28''क्या हमने तुम्हें चिताकर आज्ञा न दी थी, कि तुम इस नाम से उपदेश न करना? तौभी देखो, तुमने सारे यरूशलेम को अपने उपदेश से भर दिया है और उस व्यक्ति का लहू हमारी गर्दन पर लाना चाहते हो।'' 29तब पतरस और अन्य प्रेरितों ने उत्तर दिया, ''मनुष्यों की आज्ञा से बढ़कर परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना ही हमारा कर्तव्य है। 30हमारे बापदादों के परमेश्वर ने यीशु को जिलाया, जिसे तुमने क्रूस पर लटकाकर मार डाला था। 31उसी को परमेश्वर ने प्रभु और उद्धारकर्त्ता ठहराकर अपने दाहिने हाथ पर उच्च कर दिया कि वह इस्राएलियों को मन फिराव की शक्ति और पापों की क्षमा प्रदान करे। 32हम इन बातों के गवाह हैं, और पवित्र आत्मा भी, जिसे परमेश्वर ने उन्हें दिया है, जो उसकी आज्ञा मानते हैं।''

5:28

NASB, NRSV, TEV	**''सख्त आज्ञा न दी थी''**
NKJV	**''क्या हमने कड़े शब्दों में तुम्हें आज्ञा न दी थी''**
NJB	**''क्या हमने कड़ी चेतावनी न दी थी''**

न्यू किंग जेम्स वर्जन बताता है, ''क्या हमने तुम्हें कड़ी चेतावनी नहीं दी थी कि तुम इस नाम से उपदेश न करना? तौभी तुमने सारे यरूशलेम को अपने उपदेश से भर दिया...'' यह यूनानी हस्तलेखों से थोड़ा भिन्न है जो $\aleph^2$, डी, और ई मूलपाठों में पाया जाता है, परन्तु यह MSS P^{74} एन, $\aleph$*ए और बी मूलपाठों में नहीं पाया जाता है।

यूबीएस[4] न्यू किंग जेम्स वर्ज़न UBS[4] के इस विकल्प को कोष्ठकों में नहीं देता, परन्तु पाठांश में रखता है। चेलों द्वारा इस प्रश्न का स्वाभाविक उत्तर है ''हां हमें चेतावनी दी गई थी।'' चेलों की चेतावनी दी गई थी।

इस वाक्य की रचना सैमिटिक भाषा के एक मुहावरे के समान है (लूका 22:15) जिसका अर्थ आम बोलचाल की यूनानी भाषा के ''पैरान्गेलियों'' (*parangelia*) और ''पैरान्गेलिया'' (*parangellō*) शब्दों के अर्थ समान होता है जिनकी उत्पत्ति समान शब्द से हुई है ताकि शब्द का सही अर्थ समझा जा सके। रोचक बात यह है कि यही शब्द मिस्र के पटेर-पत्रों में भी पाया गया है जिसका अर्थ है, कोर्ट या न्यायालय की ओर से भेजा गया औपचारिक सम्मन, अथवा न्यायालय से दिया गया आदेश (देखें, मोल्टन तथा मिलिगन का, नया नियम ग्रीक का शब्दकोश-पेज नं. 481)। (cf. Moulton and Milligan, *Vocabulary of the Greek NewTestament*, p. 481).

■ **''यह लहू''** यह यहूदी अगुवों की घृणा को दर्शाता है, वे कभी भी घृणा के कारण यीशु के नाम का उच्चारण नहीं करते थे। यहां तक कि उनकी पवित्र पुस्तक तालमूद में भी यीशु को ''अमुक, अमुक'' पुकारा गया है (देखें एम.आर.विन्सेंट, शब्द-अध्ययन, भाग-प् पेज 234) (cf. M. R. Vincent, *Word Studies*, vol. 1, p. 234)

■ **''खून हम पर''** पतरस और यूहन्ना निरन्तर बलपूर्वक कह रहे थे कि इन्हीं यहूदी अगुवों ने यीशु को क्रूस पर चढ़ाया है (देखें, प्रेरि. 5:30; 2:33; 3:14-15; 4:10)। प्रेरि. 7:52 में स्तीफनुस ने भी यही दोष उन पर लगाया था।

5:29 ''ज़रूर'' परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना ही हमारा कत्र्तव्य है'' यहाँ प्रयुक्त यूनानी शब्द कमप का अर्थ है नैतिक कत्र्तव्य। यह प्रेरितों के सच्चाई का प्रचार करने के कत्र्तव्य को दर्शाता है, चाहे इसका परिणाम कितना ही भयंकर क्यों न हो (प्रेरि. 4:19)। देखें प्रेरि. 1:16 पर ही गई टिप्पणी।

5:30 ''हमारे बापदादों के परमेश्वर'' ये प्रारम्भिक कलीसिया के विश्वासीगण विश्वास करते थे कि वे पुराने नियम की परमेश्वर की प्रजा के सच्चे आत्मिक उत्तराधिकारी और उनकी सन्तान हैं (देखें, प्रेरि. 3:13; रोमि. 2:28-29; गल. 6:16; 1 पतरस 3:5, 9; प्रका. 1:6)।

■ **''यीशु को जिलाया''** नया नियम द्ृढ़तापूर्वक बताता है कि पिता परमेश्वर ने यीशु को मृतकों में से जिलाया (देखें, प्रेरि. 2:24, 32; 3:15, 26; 4:10; 5:30; 10:40; 13:30, 33, 34, 37; 17:31; रोमि. 6:4, 9) ताकि यीशु के जीवन और उसकी शिक्षाओं की पुष्टि हो। प्रेरितों के प्रचार की यह मुख्य विषय-वस्तु थी *kerygma* (देखें 1 कुरि. 15 अध्याय)।

हमें यह बात भी ध्यान में रखना चाहिए कि नया नियम द्ृढ़तापूर्वक बताता है पुनरुत्थान की इस महान घटना में पुत्र और पवित्र आत्मा भी सम्मिलित हैं।

1. पुत्र - यूहन्ना 2:19-22; 10:17-18
2. पवित्र आत्मा - रोमियों 8:11

■ **''जिसे तुम ने क्रूस पर लटकाकर मार डाला था''** इसका सम्बन्ध व्यवस्थाविवरण 21:23 के शाप से है। ये धार्मिक अगुवे चाहते थे कि यीशु जो मसीह होने का दावा करता है, यहोवा (YHWH) के दण्ड को सहे। यीशु ने पुराने नियम की व्यवस्था का दण्ड सहा अर्थात् जो प्राणी पाप करे वही मर जाएगा (यहेज. 18:4, 20) तथा सबने पाप किया (रोमि. 3:9-18, 23), उसने हमारे बदले में दण्ड सहा (मला. 3:13; कुलु. 1:14)। यीशु परमेश्वर का निष्कलंक मेम्ना था जिसने अपने आप को पापी संसार के लिए दे दिया (यूहन्ना 1:29; 2 कुरि. 5:21)।

5:31 ''उसी को ने प्रभु और उद्धार कर्त्ता ठहराकर, अपने दाहिने हाथ पर उच्च कर दिया'' वाक्यांश ''उच्च कर दिया'' को यूहन्ना 3:14 में ''ऊँचा उठाया जाए'' तथा फिलिप्पियों 2:9 में ''अति महान भी किया'' अनुवादित किया गया है। अतः मसीह के लिये क्रूस का अर्थ या अति महान किया जाना और विजयी होना (देखें कुलु. 1:15; 2 कुरि. 2:14)।

"अपने दाहिने हाथ पर उच्च कर दिया" वाक्यांश का अर्थ है, अधिकार और सामथ्र्य का स्थान (देखें, मत्ती 26:64)! परमेश्वर अनन्त आत्मा है, उसके पास शरीर नहीं है। (देखें विशेष टिप्पणी प्रेरि. 2:33)

▪ **"राजकुमार"** यह वाक्यांश यीशु को स्पष्ट रूप से मसीह ठहराता है। प्रेरि. 3:15 में भी यीशु के बारे में यही कहा गया है कि वह जीवन का कर्त्ता है। इसका अर्थ "पथ प्रदर्शक" "प्रधान" और "राजकुमार" भी हो सकता है। ये शब्द "विश्वास का कर्त्ता" और "उद्धार का कर्त्ता" के लिए भी प्रयुक्त हुए है (इब्रानियों 2:10; 12:2)। (देखें प्रेरि. 3:15 की विशेष टिप्पणी)।

▪ **"उद्धारकर्त्ता"** यह शब्द कैसर के प्रथम शताब्दी के ग्रीको-रोमन साम्राज्य में प्रयुक्त किया जाता था। वह संस्कृति और शान्ति का उद्धारकर्त्ता होने का दावा करता था। कैसर को उद्धार कर्त्ता कहा जाता था परन्तु मसीही लोग इस शब्द का प्रयोग यीशु के लिये करते थे जो सबका प्रभु था क्यूरियोस (*kurios*) ।

पुराने नियम में शब्द "उद्धारकर्त्ता" यहोवा (YHWH) परमेश्वर के लिए प्रयुक्त किया जाता था। (देखें, 2 शमू. 22:3; भजन 106:21; यशा. 43:4,11; 45:15, 21; 49:26; 60:16; 63:8)। नए नियम के लेखक यीशु के ईश्वरत्व को प्रकट करने के लिए, अक्सर पुराने नियम के यहोवा (YHWH) संबंधी गुणों को यीशु पर लागू करते थे। ध्यान दें कि किस प्रकार से पौलुस अपनी पत्री में जिसे उसने तीतुस को लिखा.

1. तीतुस 1:3, "उद्धारकर्त्ता परमेश्वर"
2. तीतुस 1:4 "हमारे उद्धारकर्त्ता मसीह यीशु"
3. तीतुस 2:10"हमारे उद्धारकर्त्ता परमेश्वर
4. तीतुस 2:13"अपने महान परमेश्वर और उद्धारकर्त्ता यीशु मसीह"
5. तीतुस 3:4, "जब हमारे उद्धारकर्त्ता परमेश्वर"
6. तीतुस 3:6, "उसने हमारे उद्धारकर्त्ता यीशु मसीह के द्वारा"

▪ **"कि इस्रालियों को मन फिराव की शक्ति और पापों की क्षमा प्रदान करे"** यह प्रभु यीशु मसीह की मृत्यु के उद्देश्यकदर्शाता है (देखें, लूका 24:47 और प्रेरि. 2:38)। नए नियम के लेखको के लिये यह उनके चलन के विरुद्ध बात थी कि मन फिराव को परमेश्वर का वरदान कहकर प्रचार न करें (प्रेरित. 11:18 में इसे गैर यहूदियों के लिए परमेश्वर का वरदान कहा गया है, देखें 2 तीमु. 2:25 और रोमियों 2:4)। अक्सर नए नियम में मन फिराना उनके लिए आवश्यक या जो सुसमाचार पर विश्वास करना चाहते हैं (मरकुस 1:15 तथा प्रेरि. 3:16, 19:20:21)। मैं सोचता हूं कि मन-फिराने के लिये कहना, यह दर्शाता है कि परमेश्वर सब मनुष्यों का उद्धार चाहता है जो उसके स्वरूप पर सृजे गए हैं। यह परमेश्वर की प्रभु-सत्ता से जुड़ा विवाद नहीं है।

अक्सर वे लोग जो नई वाचा में केवल परमेश्वर के हस्तक्षेप पर ध्यान देते हैं वे इस आयत को यह साबित करने के लिए इस्तेमाल करते हैं कि उद्धार का कार्य केवल परमेश्वर का है और इस कार्य में मनुष्य का कोई दखल नहीं है। परन्तु यह एक अच्छा बाइबल का पाठांश है जो बताता है कि परमेश्वर मन फिराव की शक्ति और पापों की क्षमा प्रदान करता है। बाइबल स्पष्ट बताती है कि परमेश्वर पहल करता है और वाचा बाँधता है और आवश्यकता में पड़ी मानवजाति का ध्यान रखता है। उसने स्वतन्त्र इच्छा मनुष्यों की दी है ताकि मनुष्य पश्चाताप करे और उद्धार पाए (देखें, रोमि. 2:4; 2 कुरि. 7:10)। परमेश्वर हमें अपनी ओर खींचता है, हम से आग्रह करता है, हमारे साथ कार्य करता है, ताकि हम उद्धार पाएँ (यूहन्ना 6:44, 65)। अतः पतित मानव जाति को पश्चाताप करना, आज्ञापालन करना और विश्वास करना चाहिए।

> इस सन्दर्भ में फ्रैंक स्टैग (Frank Stagg, *NewTestament Theology*, p. 119) अपनी पुस्तक न्यू टैस्टामैन्ट थियो लॉजी पेज 119 पर बड़ी रोचक टिप्पणी देते हैं, "मनुष्य उद्धार अर्जित नहीं कर सकता है, वह केवल पश्चातापी मन प्राप्त करता है, जिसे ग्रहण करके उसे पश्चाताप करना चाहिये। मसीह पर विश्वास लाकर मनुष्य मसीह को अपनी अन्तरात्मा में ग्रहण करता है; तब मसीह अपनी उपस्थिति से उसका सम्पूर्ण जीवन बदल देता है; मनुष्य स्वयं पर नहीं परन्तु परमेश्वर पर भरोसा करने लगता है और अपने आप का इंकार करता है। इसी परिवर्तित जीवन में मनुष्य के जीवन का सच्चा अर्थ पाया जाता है।"

5:32 "हम इन बातों के गवाह हैं और वैसे ही पवित्र आत्मा भी" प्रेरितों के काम पुस्तक में पतरस ने इस सच्चाई को अनेक बार बताया है कि प्रेरितगण और समस्त चेले प्रभु यीशु मसीह के जीवन, मृत्यु और उसके पुनरुत्थान के गवाह हैं। इस पद में पतरस ने गवाह के रूप में "पवित्रआत्मा" को भी जोड़ दिया है। यह संभवतः इसलिए हुआ है ताकि दो गवाहों की गवाही मिलकर सच्ची ठहरे (देखें गिनती 35:30; व्यवस्थाविवरण 17:6)।

लूका/प्रेरितों के काम में पवित्र आत्मा के वरदानों का उल्लेख है

1. बपतिस्मा के समय - प्रेरि. 2:38
2. जो सुसमाचार का पालन करे - प्रेरि. 5:32
3. पवित्र आत्मा के दान को खरीदा नहीं जा सकता - प्रेरि. 8:19-20
4. गैरयहूदियों पर भी पवित्र आत्मा का दान उंडेला जाता है- प्रेरि. 10:45;11:17
5. पिता की ओर से दिया जाता है - लूका 11:13 (याकूब 1:17)।

■ **"जो उसकी आज्ञा मानते हैं"** आज्ञा पालन वह जीवन-शैली है जिसे मनुष्य को चुनना पड़ता है। हमें सुसमाचार पर विश्वास लाकर आज्ञा पालन करना चाहिए। इसके फलों का आनन्द पाने के लिए हमें निरन्तर आज्ञा पालन करना चाहिए (देखें, मत्ती 7:24-27; लू. 6:46-48) "आज्ञा पालन" जैसे दुर्लभ शब्द का उपयोग प्रेरि. 5:29-32 में किया गया है, साथ ही (*peithomai* plus *archē*) प्रेरि. 27:21 और तीतुस 3:1 में भी आज्ञा (*archē*) मानने का उल्लेख है।

NASB (नवीनतम) पाठ : प्रेरि. 5:33-39

[33]यह सुनकर वे जल गए, और उन्हें मार डालना चाहा। [34]परन्तु गमलीएल नामक एक फरीसी ने जो व्यवस्थापक और सब लोगों में माननीय था, न्यायालय में खड़े होकर प्रेरितों को थोड़ी देर के लिये बाहर कर देने की आज्ञा दी। [35]तब उसने कहा, "हे इस्राएलियो, जो कुछ इन मनुष्यों से करना चाहते हो, सोच-समझ के करना। [36]क्योंकि इन दिनों से पहले थियूदास यह कहता हुआ उठा कि मैं भी कुछ हूं; और कोई चार सौ मनुष्य उसके साथ हो लिए, परन्तु वह मारा गया; और जितने लोग उसे मानते थे, सब तितर-बितर हुए और मिट गए। [37]उसके बाद नाम लिखाई के दिनों में यहूदा गलीली उठा, और कुछ लोग अपनी ओर कर लिएः वह भी नष्ट हो गया, और जितने लोग उसे मानते थे, सब तितर-बितर हो गए। [38]इसलिये अब मैं तुमसे कहता हूं, इन मनुष्यों से दूर ही रहो और इनसे कुछ काम न रखो; क्योंकि यदि यह धर्म या काम मनुष्यों की ओर से हो तब तो मिट जाएगा। [39]परन्तु यदि परमेश्वर की ओर से है, तो तुम उन्हें कदापि मिटा न सकोगे; कहीं ऐसा न हो, कि तुम परमेश्वर से भी लड़नेवाले ठहरो।"

5:33

NASB	**"वे प्रचण्ड क्रोध से भर गये"**
NKJV	**"वे क्रोधित हो गये"**
NRSV	**"वे क्रोध से भर गये"**
TEV	**"वे बहुत क्रोधित हो गये"**
NJB	**"इस बात ने उन्हें क्रोधित कर दिया"**

इस शब्द का शाब्दिक अर्थ है "आरी से कट जाना" अथवा "दाँत पीसना।" प्रेरि. 7:54 में भी यह शब्द इसी भाव में प्रयुक्त हुआ है, यह लाक्षणिक भाषा है (देखें लूका 2:35)। इस कठोर अर्थात् (*diaprō)* का अर्थ प्रेरित 2:37 के समान है जहां लिखा है "सुनने वालों के हृदय छिद गए।"

■ **"उन्हें मार डालना चाहा"** इसका अर्थ है कि (1) अब उन्होंने चेलों को मारने की कोशिश की अथवा (2) चेलो को मार डालने की कोशिश करना उनकी बार बार उठने वाली इच्छा थी और वे निरन्तर इसकी योजना बनाते रहते थे। क्योंकि प्रारम्भिक कलीसिया निरन्तर बढ़ती जा रही थी। चेलों की हत्या करने की कोशिश करने वाले सदूकी

लोग थे। हो सकता है कि फरीसी लोग (गमलीएल) प्रारम्भिक कलीसिया को एक ऐसा काँटा मानते हों जिसे पुनरुत्थान संबंधी विवाद में सदूकी लोगों को चुभाया जा सके क्योंकि वे पुनरुत्थान का इंकार करते थे। फरीसी लोग यीशु के पुनरुत्थान पर विश्वास नहीं करते थे परन्तु यह अवश्य विश्वास करते थे कि हम जी उठेंगे और भविष्य में परमेश्वर के साथ स्वर्ग में जीवन बिताएंगे।

आधुनिक बाइबल पाठक को यह आश्चर्यजनक प्रतीत हो सकता है कि क्या कोई धार्मिक अगुवा भी हत्या की कोशिश कर सकता है? सदूकी लोग मूसा की व्यवस्था का कड़ाई से पालन करते थे जिसमें कहा गया था कि परमेश्वर की निन्दा करने वाले को मार डाला जाए (लैव्य. 24:10-16)। व्यवस्था के इसी वचन के आधार पर वे चेलों को मार डालना चाहते थे।

5:34 देखें विशेष विषयः ‘‘फरीसी’’।

विशेष विषयः फरीसी

I. इस शब्द पर "फरीसी" की उत्पत्ति निम्नलिखित में से एक हो सकती है :
   A. "अलग किए हुए।" यह दल मकाबियों के काल में विकसित हुआ (यह सर्वमान्य विचारधारा है), इन्होंने स्वयं को "पृथक" कर रखा था ताकि मूसा की मौखिक परम्पराओं व व्यवस्था का भली-भाँति पालन कर सकें (अर्थात हसीदीम का) (Hasidim)।
   B. "अलग हो जाना या करना" एक अन्य अर्थ है जो इस इब्रानी शब्द का है। (BDB827, BDB831 I, KB976); दोनों का अर्थ "अलग करना" है। कुछ विद्वानों का कथन है कि इस शब्द का अर्थ है व्याख्या करने वाला (देखें नहे. 8:8; 2 तीमु. 2:15)।
   C. "फारसी" (Persian) इस आरामी शब्द का यह एक और अर्थ है (BDB828, KB970) फरीरियों की कुछ शिक्षाएँ फारसी धर्म के द्वैतवाद से मिलती जुलती है (देखें, विशेष विषय : व्यक्तिगत बुराई (Personal Evil)।

II. यह दल में कैसे लोग थे, इस संबंध में अनेक विचारधाराएँ हैं :
   A. यह आरम्भिक यहूदी धर्म का एक धर्म-शिक्षाएँ देने वाला पन्थ है (योसेपस के अनुसार)
   B. हशमोनियों और हेरोदियों के काल से यह एक राजनैतिक दल।
   C. एक ऐसा दल जो मूसा की व्यवस्था की व्याख्या करने में निपुण और लोगों को मूसा की वाचा और मौखिक परम्पराएं सिखाने वाला दल।
   D. मंदिर के याजकीय नेतृत्व को पाने की प्रतिस्पर्धा करने वाला शास्त्रियों के दल का एज्रा के समान एक आंदोलन करने वाले।

   इनका मतभेद इनसे रहता था :
      1. गैर यहूदी अधिपतियों से (विशेषकर अंतिखुस IV से)।
      2. धनी वर्ग बनाम साधारण जनता।
      3. व्यवस्था का पालन करने वाले बनाम पलिस्तीन के सामान्य यहूदी।

III. इनके विषय में हमें जानकारी देने के स्रोत :
   A. योसेपस, जो एक फरीसी था, उसकी पुस्तकें :
      1. एंटीक्विटी ऑफ द ज्यूस (*Antiquities of the Jews*)
      2. वार्स ऑफ दी ज्यूस (*Wars of the Jews*)
   B. नया नियम
   C. बाद में यहूदी स्रोत

IV. उनकी मुख्य शिक्षाएँ (Their Major Doctrines)
   A. मसीह के आगमन पर विश्वास करना ; परंतु उनका यह विश्वास बाइबल के बाहर के प्रकाशनात्मक साहित्य के अनुसार था जैसे 1 हनोक की पुस्तक।
   B. वे विश्वास करते थे कि परमेश्वर हमारे दैनिक जीवन में क्रियाशील रहता है। परंतु यह विश्वास

सदूकियों से बिल्कुल विपरीत था (देखें प्रेरि. 23:8)। इनके अधिकांश सिद्धांत सदूकियों के सिद्धांतों के विरोधी थे।

C. मृत्यु के बाद के जीवन में उनका विश्वास पार्थिव जीवन पर आधारित अथवा शारीरिक विश्वास था, जिसमें दण्ड और प्रतिफल की भावना शामिल थी (देखें दानि. 12:2)

D. वे मौखिक परम्पराओं (तालमूद) तथा पुराने नियम के अधिकार पर विश्वास करते थे। पुराने नियम में पाई जाने वाली परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने में सतर्क रहते थे और विद्वान रूढ़िवादी रब्बी शम्मै तथा उदारवादी रब्बी हिल्लेल की विचारधाराओं का बड़ा सम्मान करते थे। रब्बियों की व्याख्याएँ दो भिन्न विचारधाराओं पर आधारित और वार्तालाप होती थीं, एक रूढ़िवादी तथा दूसरी उदारवादी। यह मौखिक वार्तालाप जो पवित्रशास्त्र का अर्थ समझाते समझाते थे, दो रूपों में लेखबद्ध की जाती थी बेबीलोन की तालमूद तथा पलीस्तीन की अपूर्ण तालमूद। उनका विश्वास था कि परमेश्वर ने सीनै पर्वत पर इन मौखिक परम्पराओं को मूसा को दिया था। इन वार्तालापों का ऐतिहासिक आरम्भ एज्रा और सन्हेद्रिन से अर्थात "महान आराधनालय" से माना जाता है।

E. यह लोग स्वर्गदूतों पर विश्वास करते थे, भले और बुरे दोनों प्रकार के आत्मिक प्राणियों को मानते थे। यह शिक्षा उनमें पारसी धर्म के द्वैतवाद तथा बाइबल के बाहर के यहूदी साहित्य द्वारा आई।

F. वे परमेश्वर की सर्वोच्च सत्ता पर विश्वास करते थे पर साथ ही माननीय स्वतंत्र इच्छा का भी पालन करते थे (*yetzers*)

V. फरीसियों का चरित्रबल :

A. वे परमेश्वर के प्रकाशन पर भरोसा करते थे (व्यवस्था, नबी, लेख, मौखिक परम्पराएँ, सब मानते थे)

B. परमेश्वर के प्रकाशन के पालन में समर्पित थे। वे "धार्मिक इस्राएल" चाहते थे कि नबियों की प्रतिज्ञाओं के अनुसार उन्हें नया व आशीषपूर्ण दिन प्राप्त होता रहे।

C. वे समाज के लोगों से यहूदी समाज के साथ समानता व शांतिपूर्वक व्यवहार का समर्थन करते थे। उन्होंने एक प्रकार से याजकीय नेतृत्व को त्याग दिया था (प्रेरि. 23:8)।

D. वे मूसा की व्यवस्था पालन में दक्ष हुआ करते थे, और पूर्णरूप से परमेश्वर की सर्वोच्च सत्ता को मानते थे, परंतु साथ ही मानवीय स्वतंत्र इच्छा के पालन की आवश्यकता भी अनुभव करते थे (2 *yetzers*)।

E. नए नियम में अनेक सम्माननीय फरीसियों का उल्लेख पाया जाता है (जैसे नीकुदेमुस, धनवान जवान युवक अधिकारी, अरीमतिया का युसूफ इत्यादि)

VI. यही एकमात्र प्रथम शताब्दी का ऐसा पन्थ था जो सन् 70 ईस्वी के रोमियों द्वारा यरूशलेम और मंदिर के विनाश में बच गया था, और वर्तमान समय का यहूदी समाज है।

Copyright © 2014 Bible Lessons International

विशेष विषयः गम्लिएल

I. उसका नाम :

A. उसके नाम का अर्थ है "परमेश्वर प्रतिफल देता है"

B. उसे "प्राचीन" अथवा गमलीएल प्रथम कहा जाता था क्योंकि उसका एक रिश्तेदार भी इसी नाम से बाद में एक सक्रिय यहूदी अगुआ रहा था।

II. व्यक्ति :

A. परम्परा के अनुसार वह हिल्लेल का पोता था।
B. एक अन्य परम्परा के अनुसार वह हेरोद अग्रिप्पा प्रथम (Agrippa I) के राजकीय घराने की बराबरी पर था।
C. परम्परा बताती है कि वह सन्हेद्रिन का सभापति था, परन्तु संभवतः गमलीएल II सभापति था।
D. वह सात अत्यन्त सम्मानित रब्बियों में से एक था जिन्हें रब्बान पदवी मिली थी।
E. वह सन् 70 ई. से पहले मर गया था।

III. उसके धर्म शिक्षा (Theology)

A. वह यीशु के समय का सबसे सम्मानित रब्बी था (देखें, प्रेरि. 5:34)
B. वह यरूशलेम के बाहर रहने वाले तितर बितर यहूदियों की चिन्ता करने और उन्हें नियंत्रण में रखने के कार्य के लिए प्रसिद्ध था।
C. वह उन लोगों की चिन्ता करने के लिए भी प्रसिद्ध था जिनके सामाजिक अधिकार छीन लिए गए थे ; उसकी बात अक्सर इस नारे से शुरू होती थी "मानवजाति की भलाई" के लिए :
   1. अनाथ
   2. विधवाएँ
   3. महिलाएँ
D. वह सन्त पौलुस का यरूशलेम में गुरु रहा था (देखें, प्रेरि. 22:3)
E. प्रेरि. 5:34-39 में उसने आरम्भिक कलीसिया के प्रति व्यवहार के संबंध में श्रेष्ठ परामर्श दिया।
F. उसका आदर सम्मान इतना अधिक किया जाता था कि उसकी मृत्यु पर यह कहा गया, "जब रब्बान गमलीएल का देहांत हुआ तो तोरह की महिमा, पवित्रता और सिद्धता समाप्त हो गई।" (एन्सायक्लोपीडिया जूडायका से उद्धरित, Vol. 7. P296)
G. इस बात को समझ लेना चाहिए कि प्रेरि. 5:34-39 में उसका कथन सन्देहयुक्त था। संभव है वह सदूकियों के विरुद्ध फरीसियों की बुद्धिमानी के विषय में कह रहा हो। ये दोनों प्रभावशाली समूह (फरीसी,सदूकी) प्रत्येक अवसर पर एक दूसरे का विनाश करने को तैयार रहा करते थे।

Copyright © 2014 Bible Lessons International

5:36-37 ''थियुदास.. गलीली का यहूदा'' इतिहासकार योसेफस ने इन दोनों व्यक्तियों का उल्लेख अपनी पुस्तक में विपरीत क्रम में किया है देखें, एन्टीक्वीटी 20:5.1 (cf. *Antiq.*20:5.1) । अन्य ऐतिहासिक जानकारियों के अनुसार इन नामों के दो व्यक्ति थे जो रोमी साम्राज्य के विद्रोही और जेलोतेस यहूदी समूह के थे। इस प्रकार नए नियम का वर्णन और योसेफस का कथन सही हो सकता है। जिसका उल्लेख गमलीएल ने किया उसने ईस्वी 6 में तथा जिसका वर्णन योसेफस ने किया उसने ईस्वी सन् 44 में विद्रोह किया था।

5:37 ''जनगणना के दिनों में'' योसेफस हमें बताता है कि जैसे ही अरखिलाऊस को सिंहासन से उतारकर क्वीरिनियुस को सीरिया का हाकिम बनाया गया, उसी समय अगस्तुस ने यहूदियों पर टैक्स लगाने की आज्ञा सन् 6-7 मे दी थी देखें एन्टीक्वीटी 18.1.1; वार्स 2:8.1 (cf. *Antiq.*18.1.1; *Wars* 2.8.1) । टैक्स के उद्देश्य से यह जनगणना हर चैदह वर्ष बाद कराई जाती थी, और इसमें वर्षों लग जाते थे।

■ **''गलीली का यहूदा''** इसका उल्लेख योसेफस इतिहासकार द्वारा अनेक बार किया गया है (देखें, एंडीक्वीटी 18.1.1-6; 20.5.2 तथा वार्स में भी उल्लेख है 2.8.1; 2.17, 8-9)। (cf. *Antiq.* 18.1.1-6; 20.5.2 and also in *Wars* 2.8.1; 2.17.8-9). उसने ईस्वी 6 अथवा 7 में विद्रोह किया था। वह व्यक्ति जेलोतेस क्रान्तिदल का संस्थापक था। जेलोती दल (योसेफस इन्हें ''चैथी फिलोसफी'' कहता था) और सिकारी दल (अर्थात् छिपकर घात करने वाले) संभवतः एक ही राजनैतिक आन्दोलन था।

5:38 ‘‘इन मनुष्यों से दूर ही रहो’’ कितना आश्चर्यजनक यह परामर्श है! इस वाक्यांश में दो बातें हैं:

1. यूनानी शब्द जिसका अर्थ है, अलग या दूर रखना।(*aphistēmi*)
2. जिसका अर्थ है, दूर हटाओ, या खारिज करना। (*aphiēmi*)

■ **‘‘यदि’’** यह शर्त के साथ घटिया किस्म का कथन है, यह कार्य-क्षमता को बताता है।

5:39 ‘‘यदि’’ परन्तु यदि परमेश्वर की ओर से है तो तुम उन्हें कदापि मिटा न सकोगे’’ यह उच्च कोटि का शर्त के साथ कथन है, जो समान्य रूप से सच्चाई के अंगीकार को दर्शाता है, परन्तु यहां पर यह सत्य नहीं भी हो सकता है। यह वाक्य के शब्दशः उपयोग को दर्शाता है।

■ **‘‘और तुम परमेश्वर से भी लड़नेवाले ठहरो’’** यह याद रखना चाहिए कि ये धार्मिक अगुवे सोचते थे कि वे परमेश्वर के प्रतिनिधि के रूप में कार्य कर रहे हैं। गमलीएल द्वारा यह कहा जाना कि वे गलत हो सकते हैं, उनके लिए चोट पहुंचाने वाली बात थी (प्रेरि. 11:17)।

NASB (नवीनतम) पाठ : प्रेरितों के काम 5:40-42

[40]तब उन्होंने उसकी बात मान ली; और प्रेरितों को बुलाकर पिटवाया; और यह आज्ञा देकर छोड़ दिया कि यीशु के नाम से फिर कोई बात न करना। [41]वे इस बात से आनन्दित होकर महासभा के सामने से चले गए कि हम उसके नाम के लिये निरादर होने के योग्य तो ठहरे। [42]और वे प्रतिदिन मन्दिर में और घर-घर में उपदेश करने, और इस बात का सुसमाचार सुनाने से, कि यीशु ही मसीह है, न रुके।

5:40 ‘‘उन्होंने उसकी बात मान ली’’ कुछ अनुवादों में (जैसे एन.आर.एस.वी.) यह पद प्रेरि. 5:39 में तथा कुछ में (जैसे एन.ए.एस.बी.एन.के.जे.वी.) (cf. NASB, NKJV) में प्रेरि. 5:40 में सम्मिलित किया गया है। टी.ई.वी. और एन.जे.बी. (TEV,NJB) में इस पद को प्रेरि. 5:39 में शामिल किया गया है, परन्तु नया पैराग्राफ शुरू किया गया है।

■ **‘‘पिटवाया’’** यह पिटाई रोमी लोगों की पिटाई (प्रेरि. 22:24-25) के समान नहीं थी, जिसे यीशु ने सहा था। यह यहूदी पिटाई की ओर संकेत करता है (देखें, व्यवस्थाविवरण 25:3 अर्थात् ‘‘डेरो’’ (*derō*) लूका 12:47-48; 20:10-11; 22:63)। यह पिटाई बड़ी पीड़ादायक होती थी परन्तु जानलेवा नहीं।

यहाँ पर पिटाई के लिए जो दो यूनानी शब्द प्रयुक्त हुए हैं वे अक्सर आपस में एक दूसरे के बदले में प्रयोग किए जाते हैं जिससे उनका अर्थ लगाने में समस्या आती है। सप्तूजैन्त की व्यवस्थाविवरण 25:3 में शब्द ‘‘मास्टिक्स’’ (*mastix)* आया है, परन्तु यह यहूदी दण्ड की ओर संकेत करता है। लूका अक्सर इस यहूदी पिटाई के लिए यूनानी शब्द ‘‘डेरो’’ (*derō*) का प्रयोग करता है, जिसका शाब्दिक अर्थ है ‘‘जानवर की खाल उतारना।’’

■ **‘‘उन्हें दिया की येशु के नाम लेकर न बोले’’** इसी महासभा ने पहले भी यही किया था (देखें, प्रेरि. 4:17,21) इस बार उन्होंने चेलों को पीटा और चेतावनी को दोहराया।

5:41 यीशु ने इस प्रकार के व्यवहार की भविष्यद्वाणी की थी (देखें, मत्ती 10:16-23; मरकुस 13:9-13; 12:1-12; 21:10-19; यूहन्ना 15:18-27;16:2-4)।

■ **‘‘इस बात से आनन्दित थे उसके नाम के लिए अपमानित होने के योग्य तो ठहरे’’** यह बात हमें आश्चर्यजनक प्रतीत होती है क्योंकि आज हम ऐसे माहौल में रहते हैं, जहाँ शारीरिक सताव बहुत कम होता है; परन्तु सदियों से विश्वासियों के साथ ऐसा नहीं रहा।

यीशु ने स्पष्ट कहा था कि उसके पीछे चलने वालों को दुख उठाना पड़ेगा। कृपया पढ़ें मत्ती 5:10-12; यूहन्ना 15:18-21; 16:1-2; 17:14; प्रेरि. 14:22; रोमियों 5:3-4; 8:17; 2 कुरि. 4:16-18; फिलि. 1:29; 1 थिस्स.

3:3; 2 तीमु. 3:12; याकूब 1:2-4; साथ ही 1 पतरस की पत्री में ध्यान दें कि किस प्रकार से हमें यीशु के दुखों (देखें प्रेति. 1:11; 2:21,23; 3:18; 4:1, 13; 5:1) में सहभागी होकर उसका हमें अनुकरण करना है (प्रेरि. 1:6-7; 2:19; 3:13-17; 4:1,12-19; 5:9-10)।

5:42 "वे प्रतिदिन मन्दिर में" यीशु के इन प्रारम्भिक गवाहों ने चुपचाप शान्त बैठने से इंकार कर दिया, यहाँ तक कि यहूदियों के केन्द्रिय स्थल यरूशलेम के मन्दिर में भी वे शान्त न बैठे परन्तु वहां सुसमाचार सुनाते रहे।

■ **"घर घर में,** और इस बात का सुसमाचार सुनाने से कि यीशु ही मसीह है, न रुके" प्रारम्भिक कलीसिया की आराधना-सभाएँ निजी घरों में होती थीं और फिर सारे नगर में वे सुसमाचार सुनाते थे (प्रेरि. 2:46)। सैकड़ों वर्षों तक कोई चर्च-बिल्डिंग न थी।

NASB, NKJV **"ख्रीस्त"**
NRSV, TEV, REB **"मसीह"**

इस यहूदी वातावरण में "मसीह" पदवी (देखें प्रेरि. 2:31 पर टीका) का प्रयोग करना ज्यादा सही लगता है (देखें प्रेरि. 2:31; 3:18; 5:42; 8:5; 9:22) जैसा कि पतरस ने मत्ती 16:16 में किया। जब पौलुस ने यहूदियों में प्रचार किया तो उसने भी मसीह शब्द का प्रयोग किया और प्रतिज्ञात व अभिषिक्त जन की ओर संकेत किया (देखें प्रेरि. 17:3; 18:5,28)।

अध्याय प्रेरित 3-5 के लिए विचार-विमर्श के प्रश्न

यह अध्ययन में <u>मार्गदर्शन</u> करने की टीका है, इसका अर्थ है कि आप बाइबल की अपनी व्याख्या करने के स्वयं ही जिम्मेदार हैं। हम में से प्रत्येक को उसी ज्ञान के अनुसार चलना चाहिए जो हमारे पास है। व्याख्या करने के कार्य में आप आपकी बाइबल और पवित्र आत्मा केन्द्रिय स्थान रखते हैं। यह कार्य व्याख्याकार पर न छोड़ दें।

निम्नलिखित प्रश्न अपनी सहायता के लिए दिए गए है ताकि आप पुस्तक के गम्भीर विषयों पर पुनर्विचार कर सकें। वे आपके विचारों को आन्दोलित करने के लिए हैं, इनके अलावा और भी प्रश्न हो सकते हैं:

1. प्रेरितगण इतने लम्बे समय तक क्यों यहूदीवाद के मध्य बने रहे?
2. प्रेरि. 3 अध्याय में यीशु के लिए प्रयोग किए गए शीर्षकों और उनके अर्थों की सूची बनाएं?
3. उद्धार की दो शर्तें कौन सी हैं?
4. नए नियम में मूसा का अक्सर क्यों उल्लेख किया जाता है?
5. नए नियम की कलीसिया में अब्राहम की वाचा का क्या महत्त्व है?
6. पतरस और यूहन्ना को क्यों गिरफ्तार किया गया?
7. पतरस के तीसरे उपदेश की रूपरेखा बनाएँ?
8. प्रेरि. 4:24-31 की प्रार्थना की महत्वपूर्ण बात क्या है?
9. सच्चा नए नियम का जन होने के लिए क्या साम्यवादी बनना चाहिए? (देखें प्रेरि. 4:32)
10. लूका ने हनन्याह और सफीरा का वर्णन क्यों शामिल किया? कारणों की सूची बनाएं।
11. क्या हनन्याह ने स्वीकार किया कि वह शैतान से भरा हुआ है? क्या उसने मान लिया कि उसने परमेश्वर से झूठ बोला है?
12. परमेश्वर ने कठोरता का व्यवहार क्यों किया?
13. आश्चर्यकर्मों और चंगाईयों के बारे में हम आज की परिस्थिति में यह कह सकते हैं?
14. सदूकी लोग क्रोध से क्यों जल उठे?
15. स्वर्गदूत ने चेलों को बन्दीगृह से क्यों छुड़ाया?
16. पतरस के चैथे उपदेश की रूपरेखा बनाएँ। इन सब उपदेशों में कौन सी बातें मिलती जुलती हैं, उनकी सूची बनाएँ।

17. गमलीएल के बारे में आप क्या जानते हैं?
18. मसीहियों को दुखों में भी क्यों आनन्दित रहना चाहिए?

Copyright © 2013 Bible Lesson International

प्रेरितों के काम-6
बाइबल के विभिन्न आधुनिक अनुवादों में पैराग्राफ-विभाजन

UBS[4]	NKJV	NRSV	TEV	NJB
सात सेवकों का चुना जाना	सेवा के लिये सात का चुना जाना	सात का चुनाव	सात सहायक	सात की संस्था
6:1-6	6:1-7	6:1-7	6:1-4 6:5-6	6:1-6
6:7			6:7	6:7
स्तिफनुस की गिरफ्तारी	स्तिफनुस पर परमेश्वर की निन्दा का आरोप	स्तिफनुस का प्रचार और शहीद होना (6:8-7:2a)	स्तिफनुस की गिरफ्तारी	स्तिफनुस की गिरफ्तारी
6:8-15	6:8-15	6:8-7:2a	6:8-15	6:8-15

पठन चक्र तीसरा ("अच्छे बाइबल अध्ययन का मार्गदर्शन" से)

पैराग्राफ स्तर पर मूल लेखक के अभिप्राय को समझना

यह अध्ययन करने की मार्गदर्शक टीका है, जिसका अर्थ है कि आप अपनी बाइबल-व्याख्या के स्वयं उत्तरदायी हैं। हम में से प्रत्येक को अपने ज्ञान व समझ के अनुसार कार्य करना चाहिए। व्याख्या-प्रक्रिया में आप, आपकी बाइबल तथा पवित्र आत्मा प्राथमिक स्थान रखते हैं। आपको यह टीका कार्य टीकाकार पर नहीं छोड़ना चाहिए।

पूरा अध्याय एक बैठक में पढ़ें। विषयों को पहचानें। अपने विषय-विभाजन की तुलना उपरोक्त पाँच आधुनिक अनुवादों के विषय-विभाजन से करें। पैराग्राफों का विभाजन प्रेरणा प्राप्त नहीं होता है, परन्तु यह मूल लेखक के अभिप्राय को समझने की कुंजी है, जो कि व्याख्या करने का आधार है। प्रत्येक पैराग्राफ में केवल एक ही मूल विषय होता है:

1. पहला पैराग्राफ
2. दूसरा पैराग्राफ
3. तीसरा पैराग्राफ
4. अन्य

सन्दर्भ की जानकारी

A. प्रेरितों के काम 6 और 7 अध्याय गैर यहूदियों के मध्य सेवा आरम्भ होने का वर्णन करने की अपनी स्वयं की ऐतिहासिक और साहित्यिक शैली है।

B. इस समय तक यरूशलेम की कलीसिया तेजी से बढ़ चुकी थी (देखें प्रेरि. 6:1)

C. इस कलीसिया में पलीस्तीन के आरामी-भाषी और तितर-बितर यहूदियों में से यूनानी-भाषी लोग पाए जाते थे।

शब्दों और वाक्यांशों का अध्ययन

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 6:1-6

[1]उन दिनों में जब चेलों की संख्या बहुत बढ़ने लगी तब यूनानी भाषा बोलने वाले इब्रानी भाषा बोलनेवालों पर कुड़कुड़ाने लगे कि प्रतिदिन की सेवकाई में हमारी विधवाओं की सुधि नहीं ली जाती। [2]तब उन बारहों ने चेलों की मण्डली को अपने पास बुलाकर कहा, ''यह ठीक नहीं कि हम परमेश्वर का वचन छोड़कर खिलाने-पिलाने की सेवा में रहें। [3]इसलिये, हे भाइयो, अपने में से सात सुनाम पुरुषों को जो पवित्र आत्मा और बुद्धि से परिपूर्ण हों, चुन लो, कि हम उन्हें इस काम पर ठहरा दें। [4]परन्तु हम तो प्रार्थना में और वचन की सेवा में लगे रहेंगे।'' [5]यह बात सारी मण्डली को अच्छी लगी, और उन्होंने स्तिफनुस नामक एक पुरुष को जो विश्वास और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण था, और फिलिप्पुस और प्रुखुरुस और नीकानोर और तीमोन और परमिनास और अन्ताकियावासी नीकुलाउस को जो यहूदी मत में आ गया था, चुन लिया। [6]और इन्हें प्रेरितों के सामने खड़ा किया और उन्होंने प्रार्थना करके उन पर हाथ रखे।

6:1 ''चेले'' शाब्दिक रूप से ये लोग नए चेले थे जो सीखने की प्रकृति में थे। यह क्रिया शब्द मेनथानों (*manthanō)* से निकला शब्द है। हमें यह जानना आवश्यक है कि नया नियम ''चेले बनने'' पर विशेष बल देता है (देखें, मत्ती 28:19; प्रेरि. 14:21) न कि केवल निर्णय लेने पर। सुसमाचारों में और प्रेरितों के काम की पुस्तक में एक विश्वासी की यह परिभाषा बड़ी अद्‌भुत है। पत्रियों में यीशु के पीछे चलने वालों को ''भाई लोग'' और ''पवित्र लोग'' या ''सन्त गण'' कहा गया है। चेलों की संख्या निरन्तर बढ़ती जाती थी। यह वर्तमान कालिन सक्रिय क्रिया है।

- **"*संख्या* में बढ़ना"** जब बढ़ोत्तरी होती है तो सदा तनाव बढ़ने का अन्देशा रहता है।

- **''कुड़कुड़ाने''** कुड़कुड़ाने का अर्थ है ''व्यक्तिगत रूप से धीमी आवाज़ में बोलना'' (अर्थात् दो लोगों के बीच मे निजी बातें करना, मोल्टन, अनालिटिकल लैक्सिकन, पेज 81 (Moulton, *Analytical Lexicon*, p. 81) । सप्तूजैन्त में निर्गमन (LXX) की पुस्तक में यह शब्द अनेक बार प्रयुक्त किया गया है जबकि इस्राएल जाति जंगलों में यात्रा कर रही थी (देखें, निर्गमन 16:7-8; 17:3; गिनती 11:1; 14:27)। यही शब्द लूका 5:30 में और अनेक बार यूहन्ना में आया है (देखें, यूह. 6:41,43,61; 7:12,32)।

- **''*यूनानी* भाषा बोलने वाले इब्रानी भाषा बोलनेवालों के विरुद्ध''** यह उन विश्वासी यहूदियों की ओर संकेत करता है जो पलीस्तीन के थे और मुख्य रूप से आरामी भाषा बोलते थे, और वे विश्वासी जिन्होंने प्रवासी होकर जीवन बिताया था और साधारण यूनानी भाषा बोलते थे। सांस्कृतिक और जातिवाद स्थिति के कारण संभवतः उनके बीच तनावपूर्ण वातावरण था।

- **''प्रतिदिन *भोजन बाँटना*''** प्रारम्भिक कलीसिया ने आराधनालयों का नमूना अपनाया था, जहां हर सप्ताह गरीबों को खाना खिलाने के लिए दान जमा किया जाता था। एकत्रित दान भोजन खरीदने में खर्च होता था और आराधनालय द्वारा भोजन हर सप्ताह बांटा गया था, और आरम्भिक कलीसिया प्रतिदिन भोजन बांटती थी। देखें विशेष टिप्पणी प्रेरि. 3:2 ''दान देना।''

इतिहास बताता है कि बहुत से यहूदी परिवार जो अन्य देश में रहते और काम करते थे, अपने पिता के बुढ़ापे में पलीस्तीन लौट गाए थे ताकि प्रतिज्ञात देश में उन्हें दफनाया जा सके। यही कारण है कि पलीस्तीन में और विशेषकर यरूशलेम के आसपास भारी संख्या में विधवाएँ पाई जाती थीं।

यहूदीवाद में मूसा की वाचा के अनुसार निर्धनों और विधवाओं तथा परदेसियों के लिए विशेष चिन्ता पाई जाती थी (देखें निर्गमन 22:21-24; व्य.वि. 10:18; 24:17)। लूका की रचनाएँ बताती है कि यीशु विधवाओं की चिन्ता करता था (लूका 7:11-15; 18:7-8; 21:1-4)। अतः विधवाओं के प्रति गहरी चिन्ता होना आरम्भिक कलीसिया के लिए स्वाभाविक था जो आराधनालयों की सामाजिक सेवा का और यीशु की शिक्षाओं का पालन करती थी।

6:2 ''बारहों '' यह प्रेरितों के काम पुस्तक में प्रेरितों का शीर्षक था। ये लोग यीशु द्वारा चुने गए विशेष चेले थे, जो गलील की सेवकाई के दौरान चुने गए और सदा उसके साथ रहे।

■ **''शिष्यों की मण्डली को बुलाना''** यहां पर यह कहने का अर्थ क्या है, ठीक से नहीं कहा जा सकता है क्योंकि कलीसिया में इस समय हज़ारों की संख्या में सदस्य थे और इतने लोगों को एक स्थान पर एकत्रित करना कठिन है। यह घटना संभवतः मन्दिर में सुलैमान के ओसारे में हुई होगी (देखें प्रेरि. 3:11; 5:12)।

यह मण्डली राज्यतन्त्र की स्थापना का पहला उदाहरण है (देखें, प्रेरि. 6:3,5; 15:22)। आधुनिक कलीसिया ने जिन तीन बाइबल विधियों द्वारा स्वयं को व्यवस्थित किया है, उनमें से एक यही है:

1. एपिसकोपल (अर्थात् एक प्रधान अगुवा)
2. प्रैसबिटिरियन (अर्थात् अगुवों के समूह द्वारा संचालन)
3. मण्डली के रूप में (अर्थात् विश्वासियों की सम्पूर्ण मंडली द्वारा संचालन)

ये सारे शासन प्रबन्ध के तरीके प्रेरितों 15 अध्याय में पाए जाते हैं।

■ **''यह ठीक नहीं कि हम परमेश्वर का वचन छोड़कर खिलाने-पिलाने की सेवा में रहें''** ये सेवा के प्रति अपमानजनक शब्द नहीं हैं, परन्तु परमेश्वर के लोगों के बीच पास्तरीय सेवा के उत्तरदायित्व बाँटने की आवश्यकता को समझने का आरम्भ है। उनके बीच पद व पदवियाँ नहीं थीं, परन्तु सौंपे गए कार्य थे। सुसमाचार प्रचार को अन्य आवश्यक सेवकाईयों से अधिक प्राथमिकता दी जानी चाहिए। प्रचार सेवा के लिए प्रेरितगण अद्‌भुत रीति से बुलाए गये थे और वे इस प्रचार कार्य के लिए योग्य थे। उनसे यह प्रचार कार्य अलग नहीं किया जा सकता था। इसमें अगर-मगर की गुंजाईश नहीं थी।

खिलाने-पिलाने की ''सेवा'' के लिये यूनानी शब्द डायकोनिया (*diakonia)* प्रयुक्त हुआ है जिसका अर्थ सामान्य सेवा करना है। खेद की बात है कि बहुत से आधुनिक टीकाकार इस आयत में डीकन पदवी का समर्थन देखते हैं (देखें, फिलि. 1:1; 1 तीमु. 3:8-10, 12-13), और इस को डीकन के कार्य की परिभाषा देने में प्रयोग करते हैं। परन्तु ये लोग ''डीकन'' नहीं हैं, वे आम लोगों की तरह सेवक व प्रचारक हैं।

मुझे बड़ा आश्चर्य होता है कि बिना बिल्डिंग के यह आरम्भिक कलीसिया किस प्रकार अपनी सेवा भलीभाँति करती रही थी।

1. वे संभवतः मंदिर में एकत्रित हुआ करते थे
2. सब्त के दिन व शायद स्थानीय सभाघरों में तथा रविवार को घरेलू कलीसियाओं में जमा होते थे।
3. सप्ताह के दौरान या प्रतिदिन वे घर घर जाते थे (देखें प्रेरि. 2:46)।

6:3

NASB, NRSV	**''चुन लो''**
NKJV	**''खोज लो''**
TEV	**''चुन लो''**
NJB	**''चुनना चाहिए''**

यह एक आदेशात्मक वाक्यांश है कि मण्डली में एकता और एक मन की आत्मा लाने के लिये कुछ करना चाहिए। इस पास्तरीय मुद्दे में सुसमाचार को फैलाने की क्षमता थी। कलीसिया को सेवकाई के लिए व्यवस्थित करना आवश्यक था। कलीसिया का हर विश्वासी परमेश्वर द्वारा बुलाया हुआ, वरदान प्राप्त और पूर्ण-कालिक सेवक होता है (इफि. 4:11-16)।

■ **''सात पुरुष''** यहाँ नम्बर सात को कोई विशेष महत्व नहीं है सिवाय इसके कि पुराने नियम में सात नम्बर सिद्धता का प्रतीक माना जाता था और सात दिन में सृष्टि-निर्माण हुआ था (देखें, उत्पत्ति, भजन 104)। गिनती 18 अध्याय में हम इसी प्रकार के सेवकों को चुनने और नियुक्त किए जान का उदाहरण पाते हैं। देखें विशेष विषय: प्रेरि. 2:46

NASB, NJB **"चरित्रवान पुरुष"**
NKJV **"सुनाम पुरुष"**
NRSV **"चरित्रवान पुरुष"**
TEV **"जो भले हों"**

उपरोक्त अनुवादों में जो फर्क दिखाई देता है वह इस शब्द के दो विभिन्न उपयोग दर्शाता है:

1. "गवाही देना" अथवा किसी विषय में जानकारी देना (जैसा टी ई वी, एन. आई. वी. में) (cf. TEV, NIV)
2. किसी के बारे में शुभ बातें बोलना" (जैसे लूका 4:22 में)

■ **"आत्मा से परिपूर्ण"** पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होने का उल्लेख प्रेरितों के काम की पुस्तक में 12 चेलों की प्रचार/ शिक्षा/ घरों में सेवकाई करने के संदर्भ में अनेक बार किया गया है। पवित्र आत्मा से परिपूर्ण रहना उनकी सेवकाई की सामर्थ को दर्शाता है। किसी के जीवन में पवित्र आत्मा की उपस्थिति को पहचाना जा सकता है। उसके व्यवहार, कार्यों और उसके प्रभावशाली जीवन में प्रमाण दिखाई देते हैं। विधवाओं की देखरेख करना आवश्यक तो है परन्तु सुसमाचार प्रचार की सेवा उच्च स्थान रखती है (प्रेरि. 6:4)। प्रेरि. 5:17 में "परिपूर्णता" पर टिप्पणी देखें।

■ **"और बुद्धि से परिपूर्ण "** पुराने नियम में दो प्रकार की बुद्धि पाई जाती है:

1. ज्ञान प्राप्त करना (शैक्षिक)
2. बुद्धिमानी से जीवन बिताना (व्यावहारिक)

इन सातों पुरुषों में जो चुने गए दोनों प्रकार की बुद्धि थी।

■ **"जिन्हें हम इस काम पर ठहरा दें"** जिस काम पर उन्हें ठहराया गया उसमें कार्य करना था। इस वाक्यांश को यह बताने में प्रयोग नहीं किया जा सकता है कि डीकनों को कलीसिया के काम करना चाहिए। यहाँ पर काम के लिए प्रयुक्त यूनानी शब्द "कराओमाय" (*chraomai*) का अर्थ है-आवश्यकता, न कि काम।" अल्फेड मार्शल, आर एस वी इंटरलीनियर, पेज 468 (Alfred Marshall, *RSV Interlinear*, p. 468) ।

6:4 "परन्तु हम तो...लगे रहेंगे" यहाँ प्रयुक्त यूनानी शब्द अनेक भावार्थों में प्रयोग हो सकता है:

1. किसी के साथ घनिष्ट संबंध रखना, प्रेरि. 8:13
2. व्यक्तिगत रूप से किसी की सेवा करना, प्रेरि. 10:7
3. किसी बात के लिए पूर्णतः समर्पित रहना
   a. प्रारम्भिक चेले प्रार्थना और संगति के लिए समर्पित थे, प्रेरि. 1:14
   b. प्रेरितों से शिक्षा पाने के लिए प्रारम्भिक चेले समर्पित थे, प्रेरि. 2:42
   c. वे एक दूसरे के लिए समर्पित थे, प्रेरि. 2:46
   d. प्रेरितगण प्रार्थना और वचन की सेवा के लिए समर्पित थे, प्रेरि. 6:4 (पौलुस यही शब्द इस्तेमाल करते हुए विश्वासियों से नित्य प्रार्थना करने का आग्रह करता है, रोमि. 12:12; कुलु. 4:2)।

■ "**प्रार्थना में और वचन की सेवा में**" बल देने के लिए इस वाक्यांश को यूनानी भाषा के वाक्य में पहले स्थान पर रखा गया है। क्या यह विपरीत सी बात नहीं लगती, कि इन्हीं "सात" लोगों ने, न कि प्रेरिरितों ने, सबसे पहले संपूर्ण संसार में सुसमाचार फैलाने का दर्शन पाया। इन्हीं सात लोगों के प्रचार ने, न कि प्रेरितों के, यहूदीवाद से नाता तोड़ने के लिये दबाव डाला था।

यह बड़े दुख की बात है कि प्रेरितगण महान आज्ञा में पहल करने वाले लोग नहीं थे बल्कि ये यूनानी भाषा बोलने वाले यहूदी थे। प्रेरितों के काम की पुस्तक में कहीं पर भी यह नहीं लिखा है कि जो कार्य प्रेरितगणों द्वारा इन

सात लोगों को दिया गया था, उसे उन्होंने पूरा किया, परन्तु पुस्तक उनको सुसमाचार प्रचारक कहती है। इन सात लोगों की योग्यताएँ, शासन प्रबन्ध और अन्य कलीसियाई सेवाओं से अधिक, प्रचार सेवा के कार्य से मेल खाती हैं।
इनके द्वारा की गई सेवकाईयां, शान्ति लाने के बजाए, सताव और संघर्ष लाईं।

6:5 "स्तिफनुस" इस नाम का अर्थ है "विजय का मुकुट।" सभी सात लोगों के नाम यूनानी भाषा के नाम थे, परन्तु अधिकांश प्रवासी यहूदी चेलों के नाम दोनों ही भाषाओं में अर्थात् यूनानी और इब्रानी में थे, परन्तु इसका अर्थ यह नहीं कि वे सभी यूनानी भाषा बोला करते थे, संभवतः दोनों प्रकार के समूह वहां थे।

▪ **"विश्वास से परिपूर्ण"** शब्द "विश्वास" पुराने नियम के शब्द (*emeth*) से निकला है जिसका मूल अर्थ है वह व्यक्ति जिसके पांव स्थिर हैं। जो व्यक्ति विश्वासयोग्य, भरोसे के काबिल और खरा होता है उसके लिए भी शब्द रूपक के रूप काम में आने लगा। नए नियम में जब मसीह पर विश्वास लाकर कोई व्यक्ति परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं पर भरोसा करता है तो वह विश्वासी कहलाता है। हम परमेश्वर की विश्वासयोग्यता पर भरोसा करते हैं, हम परमेश्वर की धार्मिकता पर विश्वास करते हैं। स्तिफनुस परमेश्वर की विश्वासयोग्ता पर भरोसा करता था, इसीलिए वह विश्वास से परिपूर्ण कहलाया।

विशेष विषय: पुराने नियम में विश्वास, भरोसा, तथा विश्वासयोग्यता

I. प्रारम्भिक कथन :

यह बताना आवश्यक है कि इस धर्म वैज्ञानिक धारणा का इस्तेमाल नए नियम में बड़ा गम्भीर है परंतु पुराने नियम में स्पष्ट रूप से परिभाषित नहीं किया गया है। निश्चय ही यह पुराने नियम में पाया जाता है परंतु मुख्य और चुने हुए पाठांशों में तथा व्यक्तियों में ही दर्शाया गया है।

पुराने नियम में मिश्रण :

A. व्यक्ति विशेष तथा समाज
B. व्यक्तिगत आमना-सामना तथा वाचा का पालन

व्यक्तिगत आमना-सामना और प्रतिदिन की जीवनशैली दोनों ही विश्वास होते हैं। किसी विश्वासी अथवा विश्वासयोग्य अनुगामी के जीवन के विश्वास का वर्णन करना, शाब्दिक रूप से वर्णन करने की अपेक्षा सरल होता है। विश्वास के इस व्यक्तिगत पहलु को इन लोगों के जीवनों में अच्छी तरह समझाया गया है

A. अब्राहम और उसकी सन्तानों के जीवन में
B. दाऊद और इस्राएल में

इन लोगों की परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत भेंट या आमना-सामना हुआ और उनके जीवन स्थाई रूप से बदल गए (उनके जीवन सिद्ध तो नहीं थे, परंतु विश्वास में थे)। उनका जो परमेश्वर के साथ आमना-सामना हुआ उस विश्वास की दुर्बलताएँ और सफलताएँ परीक्षा द्वारा प्रकाशित हुईं, परंतु उनका घनिष्ठ संबंध और भरोसा जीवन भर बना रहा। विश्वास परखा गया और फिर शुद्ध किया गया, और उनकी भक्तिपूर्ण जीवन शैली द्वारा वह विश्वास जारी रहा।

II. प्रयुक्त किया गया मूल शब्द :

A. אמן (BDB52, KB63)

1. क्रिया : (VERB)

a. *Qal* stem - संभालना, पोषण करना, (2 राजा 10:1,5; एस्तेर 2:7 यह धर्म

वैज्ञानिक उपयोग नहीं है)

b. *Niphal* stem - सुनिश्चित करना, सुदृढ़, स्थापित करना, पुष्टि करना, विश्वासयोग्य होना, विश्वास योग्य :
   (1) मनुष्यों का विश्वासयोग्य होना, यशा. 8:2; 53:1; यिर्म. 40:14
   (2) वस्तुओं का - यशा. 22:23
   (3) परमेश्वर का - व्य. वि. 7:9; यशा. 49:7; यिर्म. 42:5

c. *Hiphil* stem - सुदृढ़ रहना, विश्वास करना, भरोसा करना
   (1) अब्राहम ने परमेश्वर पर विश्वास किया, उत्प. 15:6
   (2) मिस्र में इस्राएल ने विश्वास किया, निर्ग. 4:31; 14:31 (व्य. वि. 1:32)
   (3) इस्राएल ने विश्वास किया कि यहोवा (YHWH) मूसा के माध्यम से बोला, निर्ग. 19:9; भजन 106:12,24
   (4) आहाज ने परमेश्वर पर भरोसा नहीं रखा, यशा. 7:9
   (5) जो कोई उस पर विश्वास करे, यशा. 28:16
   (6) परमेश्वर के बारे में सत्य पर विश्वास करना, यशा. 43:10-12

2. संज्ञा (पुल्लिंग) - विश्वासयोग्यता (अर्थात्, व्यवस्था 32:20; यशा। 25: 1; 26 :2)
3. क्रियाविशेषण - वास्तव में, सचमुच, मैं सहमत हूँ, ऐसा हो सकता है (व्यवस्था 27: 15-26; 1 कुरिंथ 1:36; 1 इति 16:36; यशा 65:16; यिर्म 11: 5; 28: 6)। यह पुराने नियम और नया नियम में "आमीन" का उपयोग है।

B. אמת (BDB54, KB68) स्त्रीलिंग संज्ञा, दृढ़ता, विश्वासयोग्यता, सत्य
   1. मनुष्य द्वारा, यशा. 10:20; 42:3; 48:1
   2. परमेश्वर द्वारा, निर्ग. 34:6; भजन 117:2; यशा. 38:18,19; 61:8
   3. सच्चाई, व्य. वि. 32:4; 1 राजा 22:16; भजन 33:4; 98:3; 100:5; 119:30; यिर्म. 9:5; जक. 8:16

C. אמונה (BDB53, KB62), स्थिरता, सुदृढ़ता, इमानदारी
   1. हाथों की, निर्ग. 17:12
   2. दिनों की, यशा. 33:6
   3. मनुष्यों की, यिर्म. 5:3; 7:28; 9:2
   4. परमेश्वर की, भजन 40:11; 88:11; 89:1-2,5,8; 119:138

III. पुराने नियम की अवधारणा का पौलुस द्वारा प्रयोग उपयोग :

A. पौलुस यहोवा (YHWH) और पुराने नियम की नई समझ को उस मुठभेड़ पर आधारित करता है जो दमिश्क के मार्ग पर उसकी यीशु के साथ हुई थी (प्रेरि. 9:1-19; 22:3-16; 26:9-18)।

B. उसने अपनी नई समझ के लिए पुराने नियम का सहारा दो मुख्य पुराने नियम के पाठांशों में पाया **(אמן)**
   1. उत्प. 15:6 - परमेश्वर की पहल द्वारा अब्राहम के व्यक्तिगत आमने-सामने में (उत्पत्ति 12) जिसका परिणाम उसका विश्वास पूर्ण आज्ञाकारिता का जीवन था (उत्प. 12-22)। पौलुस रोमि. 4 और गला. 3 में इसका संकेत देता है।
   2. यशा. 28:16 - जो इसमें विश्वास करते हैं (अर्थात परमेश्वर उन्हें परखा और कोने का पत्थर बनाया) वे कभी भी :
      a. रोमि. 9:33 "लज्जित न होंगे" अथवा "निराश न होंगे"
      b. रोमि. 10:11 "लज्जित न होंगे"

3. हब्ब. 2:4 - जो विश्वासयोग्य परमेश्वर को जानेंगे, विश्वासपूर्ण जीवन बिताएंगे (यिर्म. 7:28)।पौलुस रोमि. 1:17 और गला. 3:11 में इस पद का प्रयोग करता है (इब्रा. 10:38 में भी)।

IV. पतरस ने पुराने नियम की अवधारणा का उपयोग किया :

A. पतरस मिला देता है

1. यशा. 8:14 - 1 पत. 2:8 (ठेस लगने का पत्थर)
2. यशा. 28:16 - 1 पत. 2:6 (कोने का पत्थर)
3. भजन 118:22 - 1 पत. 2:7 (निकम्मा ठहराया हुआ पत्थर)

B. वह अलौकिक भाषा में इस्राएल का वर्णन करता है, "चुना हुआ वंश, राज-पदधारी याजकों का समाज, पवित्र लोग, और परमेश्वर के निज प्रजा हो" ये निम्न स्थानों से लिया गया :

1. व्य. वि. 10:15; यशा. 43:21
2. यशा. 61:6; 66:21
3. निर्ग. 19:6; व्य. वि. 7:6

और अब मसीह में कलीसिया के विश्वास के लिए प्रयोग करता है (1 पत. 2:5,9)

V. **यूहन्ना द्वारा इस अवधारणा का उपयोग** :

A. इसका नए नियम का उपयोग :

शब्द "विश्वास" यूनानी शब्द "पिस्तेऊ" (*pisteuō*) से बना है, जिसका अनुवाद "विश्वास" "भरोसा" आदि भी किया जा सकता है। उदाहरणार्थ, यूहन्ना के सुसमाचार में इसका संज्ञा रूप प्रयुक्त नहीं किया गया है, बल्कि क्रिया रूप अक्सर प्रयोग में लाया गया है। यूहन्ना 2:23-25 में यीशु नासरी को मसीह स्वीकार करने के विषय में अनिश्चय पाया जाता है। "विश्वास" शब्द के इस प्रकार के अजीब उपयोग के अन्य उदाहरण यूहन्ना 8:31-59 और प्रेरि. 8:13, 18-24 हैं। सच्चा विश्वास जो बाइबल के अनुसार है, आरंभिक प्रत्युत्तर से अधिक गहरे अर्थ रखता है। सच्चा विश्वास चेला बनाने की प्रक्रिया होती है (मत्ती 13:20-22,31-32)

B. पूर्व सर्ग के साथ इस शब्द का उपयोग :

1. *eis* का अर्थ है "में" (into) है : इस प्रकार का बना हुआ शब्द बल देता है कि विश्वासी जन यीशु में अपना भरोसा रखते हैं :
   a. उसके नाम में (यूह. 1:12; 2:23; 3:18; 1 यूह. 5:13)
   b. स्वयं उसमें (यूह. 2:11; 3:15,18; 4:39; 6:40; 7:5,31,39,48; 8:30; 9:36;10:42;11:45- 48; 12:37,42; मत्ती 18:6; प्रेरि. 10:43; फिलि. 1:29; 1 पत. 1:8)
   c. मुझ में (यूह. 6:35; 7:38; 11:25-26; 12:44,46; 14:1,12; 16:9; 17:20)
   d. पुत्र में (यूह. 3:36; 9:35; 1 यूह. 5:10)
   e. यीशु में (यूह. 12:11; प्रेरि. 19:4; गला. 2:16)
   f. ज्योति में (यूह. 12:36)
   g. परमेश्वर में (यूह. 14:1)
2. ev का अर्थ है "में" (in) जैसाकि यूहन्ना 3:15; मर. 1:16; प्रेरि. 5:14 में है।
3. epi का अर्थ है "में" या पर (in, upon) जैसाकि इन पदों में पाया जाता है, मत्ती 27:42; प्रेरि. 9:42; 11:17; 16:31; 22:19; रोमि. 4:5,24; 9:33; 10:11; 1 तीमु. 1:16; 1 पत. 2:6
4. बिना प्रीपोजिशन, जैसे इन पदों में है : गला. 3:6; प्रेरि. 18:8; 27:25; 1 यूह. 3:23; 5:10

5. होती (*Hoti*) इसका अर्थ है "विश्वास करना" अर्थात क्या विश्वास करना :

b. यीशु परमेश्वर का पवित्र जन है (यूह. 6:69)
c. यीशु "मैं हूं" है (यूह. 8:24)
d. यीशु पिता में है और पिता यीशु में है (यूह. 10:38)
e. यीशु "मसीहा" है (यूह. 11:27; 20:31)
f. यीशु परमेश्वर का पुत्र है (यूह. 11:27; 20:31)
g. यीशु परमेश्वर द्वारा भेजा गया है (यूह. 11:42; 17:8,21)
h. यीशु परमेश्वर पिता के साथ एक है (यूह. 14:10-11)
i. यीशु पिता की ओर से आया (यूह. 16:27,30)
j. यीशु पिता के वाचागत नाम "मैं हूं" में स्वयं को संयुक्त करता है (यूह. 8:24; 13:19)
k. हम उसके साथ रहेंगे (रोमि. 6:8)
l. यीशु मरा और जी उठा (1 थिस्स. 4:14)

VI. उपसंहार

A. बाइबल के अनुसार विश्वास किया जाना ईश्वरीय वचन/प्रतिज्ञा के प्रति मनुष्यों द्वारा प्रत्युत्तर दिया जाना है। परमेश्वर हमेशा पहल करता है (यूह. 6:44,65), परंतु इस ईश्वरीय बातचीत का एक हिस्सा यह है कि मनुष्य प्रत्युत्तर दे। देखें, विशेष विषय : वाचा

1. पश्चाताप देखे विशेष विषय पश्चाताप
2. विश्वास/भरोसा देखें विशेष विषय "विश्वास, भरोसा, यकीन"
3. आज्ञाकारिता
4. धीरजवन्त होना देखें विशेष विषय : धीरज रखना

B. बाइबल के अनुसार विश्वास यह है : (Biblical Faith)

1. एक व्यक्तिगत रिश्ता (आरम्भिक विश्वास)
2. बाइबल की सच्चाईयों का अंगीकार (प्रकाशन, पवित्र शास्त्र, पर विश्वास)
3. पूर्ण रूप से आज्ञापालन करना (प्रतिदिन की विश्वास योग्यता)

बाइबल के अनुसार विश्वास (Biblical Faith) स्वर्ग जाने का टिकट अथवा जीवन बीमा नहीं है। यह एक व्यक्तिगत रिश्ता है। संसार की रचना का यह उद्देश्य है, मानव जाति परमेश्वर की समानता और उसके स्वरूप पर बनाई गई (उत्प. 1:26-27)। मूल विषय है "परमेश्वर के साथ घनिष्ठता"। परमेश्वर धर्म वैज्ञानिक उपलब्धि नहीं बल्कि संगति व घनिष्ठता चाहता है। पवित्र परमेश्वर के साथ संगति की माँग है कि बच्चे "परिवार" जैसे गुण दर्शाएँ अर्थात वे भी सिद्ध व पवित्र बनें (देखें लैव्य. 19:2; मत्ती 5:48; 1 पतरस 1:15-16)। पाप में गिरने के कारण (उत्पत्ति 3) हम सही प्रकार से प्रत्युत्तर देने के अयोग्य हो गए थे। इसलिए परमेश्वर ने हमारे पक्ष में कार्य किया (यहेज. 36:27-38), उसने हमें "नया हृदय" और "नया आत्मा" दिया, जिसके द्वारा विश्वास और पश्चाताप करने से हम उसके साथ संगति करने योग्य और उसकी आज्ञा का पालन करने योग्य बने।

तीनों बातें अति महत्वपूर्ण हैं। तीनों ही को बनाए रखना चाहिए। इसका लक्ष्य है परमेश्वर को जानना (इब्रानी और यूनानी दोनों ही भाषाओं में) और अपने जीवन में उसके गुण प्रकट करना। विश्वास का उद्देश्य यह नहीं है कि हम किसी दिन स्वर्ग को प्राप्त करें परंतु उद्देश्य यह है कि हम प्रतिदिन मसीह की तरह बनते जाएँ।

C. नए नियम में मानवीय विश्वासयोग्यता फल या परिणाम है, न कि परमेश्वर के साथ संबंधों का आधार (OT); इसमें परमेश्वर की विश्वासयोग्यता में मनुष्य विश्वास, उसकी विश्वासयोग्यता में मनुष्यों का भरोसा है। उद्धार के विषय में हृदय का अर्थ है कि मनुष्य मसीह में प्रदर्शित

परमेश्वर के प्रेम अनुग्रह और दया को पहचाने और निरंतर समर्पित रहे। परमेश्वर ने प्रेम किया, उसने पुत्र को भेजा, उसने प्रबंध किया, हमें विश्वास और सच्चाई के साथ इन सब बातों के लिए प्रत्युत्तर देना चाहिए (इफि. 2:8-9,10)

विश्वासयोग्य परमेश्वर विश्वासयोग्य लोग चाहता है जो अविश्वास संसार में उसका प्रकाशन कर सकें और उन्हें लाएँ कि वे उसमें व्यक्तिगत रुप से विश्वास कर सकें।

Copyright © 2014 Bible Lessons International

■ **"पवित्र आत्मा से...परिपूर्ण"** विश्वासी जन के लिए पवित्र आत्मा की सेवकाई को दर्शाने वाले अनेक वाक्यांश पवित्रशास्त्र में पाए जाते हैं जैसे:

1. परमेश्वर की ओर खींचकर लाने वाला आत्मा (यूहन्ना 6:44, 65)
2. पवित्र आत्मा का बपतिस्मा (1 कुरि. 12:13)
3. पवित्र आत्मा के फल (गलातियों 5:22-23)
4. पवित्र आत्मा के वरदान (1 कुरि. 12)
5. पवित्र आत्मा की भरपूरी (1 कुरि. 5:18)

पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होने के दो अर्थ हो सकते हैं: (1) कि मनुष्य ने उद्धार या लिया है (देखें, रोमि. 8:9) तथा (2) कि मनुष्य पवित्र आत्मा के चलाए चलता है (देखें रोमि. 8:14)। ऐसा प्रतीत होता है कि किसी भी जन की "परिपूर्णता" इस बात पर निर्भर है कि वह निरन्तर पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होता रहे (देखें इफि. 5:18)। प्रेरि. 5:17 की टिप्पणी देखें "परिपूर्णता" के लिए।

■ **"फिलिप्पुस"** नए नियम में बहुत से फिलिप्पुस पाए जाते हैं। परन्तु यह फिलिप्पुस सात चुने गए व्यक्तियों में से एक था। उसके नाम का अर्थ है "घोड़ों से प्रेम रखने वाला" व्यक्ति। उसकी सेवकाई के विषय में प्रेरित 8 अध्याय देखें। उसके द्वारा सामरिया में जागृति लाई गई तथा उसने इथियोपिथा के सरकारी अधिकारी को सुसमाचार सुनाया और व्यक्तिगत साक्षी उसे दी। प्रेरि. 21:8 में उसे "सुसमाचार प्रचारक" कहा गया और उसकी बेटियाँ भी सक्रिय सेवकाई करती थीं अर्थात् वे भविष्यद्वाणी करती थीं, प्रेरि. 21:9 (देखें विशेष विषय "बाइबल में महिलाएँ" तथा प्रेरि 2:17)।

■ **"प्रखुरूप"** इसक बारे में अधिक जानकारी उपलब्ध नहीं है। जेम्स और इंटरनेशनल स्टैन्डर्ड बाइबल एन्साएक्लोपीडिया, खण्ड 4, पेज 2457 पर बताते हैं (*The International Standard Bible Encyclopedia*, vol. 4, James Orr (ed.) Nicomedia and was martyred at Antioch (p. 2457)
कि यह व्यक्ति नीकोमीदिया का बिशप बना और अंताकिया में वह शहीद हुआ।

■ **"नीकानोर"** कलीसियाई इतिहास में इस व्यक्ति के विषय में कोई जानकारी नहीं मिलती। उसके नाम का अर्थ है "विजेता" और यह यूनानी नाम है।

■ **"तीमोन"** कलीसियाई इतिहास में इसके विषय में कोई जानकारी नहीं है, यह यूनानी नाम है, अर्थ है "आदर के योग्य"।

■ **"परमिनास"** यह परमेनिडेस का छोटा रूप है। परम्परा के अनुसार इसे फिलिप्पी में रोमी सम्राट ट्राजन के शासनकाल में शहीद होना पड़ा था देखें, इंटरनेशनल एन्साएक्लोपीडिया खण्ड 4, पेज 2248 (cf. *The International Standard Bible Encyclopedia*, vol. 4, p. 2248)

■ **"निकुलाऊस परधर्म अनुयायी"** इस व्यक्ति के बारे में अधिक जानकारी संभवतः दी गई होगी क्योंकि इसका नगर, लूका का घर था। जब इसने यहूदी धर्म अपनाया होगा तो तीन धार्मिक विधियाँ पूरी की गई होंगी:-

1. स्वयं को गवाहों के सामने बपतिस्मा लिया होगा

2. खतना कराया होगा
3. मंदिर में जाकर बलिदान चढ़ाया होगा।

कलीसिया के इतिहास में इस व्यक्ति के बारे में कुछ भ्रम पाया जाता रहा है, क्योंकि प्रकाशितवाक्य 2:14-15 में इस व्यक्ति के नाम से मिलते-जुलते एक समूह का उल्लेख किया गया है। कुछ प्रारम्भिक कलीसिया के प्राचीनों (जैसे इरेनियुस और हिप्पोलिटस) (i.e., Irenaeus and Hippolytus) ने सोचा कि यही निकुलाऊस था जिसने इस नीकुलइयों के समूह की स्थापना की थी। परन्तु अधिकांश प्राचीनों का कहना है कि इस समूह ने उसके नाम का उपयोग यह बताने के लिए किया है कि उनका संस्थापना प्रारम्भिक कलीसिया का जो यरूशलेम में थी, एक अगुवा रहा है।

6:6 ''उन्होंने उन पर हाथ रखे'' यह पद पढ़ने से ऐसा जान पड़ता है कि संपूर्ण कलीसिया ने उन पर अपने हाथ रखे, हालांकि यह बात स्पष्ट नहीं है (देखें, प्रेरि. 13:1-3)।

रोमन कैथलिक चर्च इस पद को प्रेरितों द्वारा प्राप्त उत्तराधिकार के रूप में प्रयोग करता है। बैपटिस्ट चर्च में इस पद को अभिषिक्त होने (आर्डीनेशन) के रूप में प्रयोग किया जाता है, अर्थात् किसी विशेष सेवकाई के लिए किसी को समर्पित करना। यदि यह बात सत्य है कि कलीसिया के सभी विश्वासी बुलाए हुए और वरदान प्राप्त सेवक है (जैसा कि इफिसियों 4:11-12 में है) तो नए नियम के अनुसार पादरियों और गैर-पादरियों के बीच कोई अन्तर नहीं, तब कलीसियाई परम्पराओं द्वारा निर्धारित उच्च पदों की नियुक्तियों को नए नियम पवित्र शास्त्र की शिक्षाओं के अनुसार परखे जाने की आवश्यकता है। हाथ का रखा जाना किसी अधिकार या हैसियत को प्राप्त करने का प्रतीक नहीं है बल्कि कार्य का प्रतीक है। हमारी परम्पराएँ ऐतिहासिक और संस्थागत बातों पर आधारित होती हैं न कि स्पष्ट बाइबल की आज्ञाओं और शिक्षाओं पर। हमारी परम्पराएँ तब तक समस्या नहीं होती हैं जब तक कि उन्हें पवित्रशास्त्र के अधिकार के स्तर पर नहीं रखा जाता है। जब परम्पराओं को आज्ञा के स्तर पर रखा जाता है तो समस्याएँ उत्पन्न होती हैं।

विशेष विषय: बाइबल में, हाथों को सिर पर रखा जाना

बाइबल में इस संकेत या कार्य का उपयोग भिन्न भिन्न प्रकार से किया गया है :

1. कसम खाना (अर्थात् जांघ के नीचे हाथ रखना) (देखें, उत्प. 24:2,9; 47:29)
2. पारिवारिक नेतृत्व सौंपना (देखें, उत्प. 48:14,17,18)
3. बलि किए हुए पशु की मृत्यु में सहभागी होना कि यह प्रायश्चित है :
   a. याजक (निर्ग. 29:10,15,19; लैव्य. 16:21; गिनती 8:12)
   b. आम आदमी (लैव्य. 1:4; 3:2,8; 4:4,15,24; 2 इति. 29:23)
4. परमेश्वर की विशिष्ट सेवा के लिए किसी को पृथक करना (देखें, गिनती 8:10; 27:18,23; व्यव. वि. 34:9; प्रेरि. 6:6; 13:3; 1 तीमु. 4:14; 5:22; 2 तीमु. 1:6)
5. किसी पापी को पत्थरवाह करने के न्यायिक दण्ड में हिस्सा लेना (लैव्य. 24:14)
6. अपने हाथ मुंह पर रखना मौन को दर्शाता है (न्यायी. 18:19; अयूब 21:5; 29:9; 40:4; मीका 7:16)
7. अपने सिर पर हाथ रखना विलाप/शोक को बताता है (2 शमू. 13:19)
8. स्वास्थ्य की आशीष, प्रसन्नता और भलाई पाना (मत्ती 19:13,15; मर. 10:16)
9. शारीरिक चंगाई से संबंधित (मत्ती 8:3; 9:18,20; मर. 5:23; 6:5; 7:32; 8:23; 16:18; लूका 4:40; 13:13; प्रेरि. 9:17; 28:8)।
10. पवित्र आत्मा पाना (प्रेरि. 8:17-19; 9:17; 19:6; व्यव. 34:9)

जिन पाठांशों को ऐतिहासिक रूप से कलीसियाई अगुवों की नियुक्ति के समर्थन में प्रयुक्त किया जाता रहा है, उनमें आश्चर्यजनक रीति से परस्पर समानता पाई नहीं पाई जाती है (जैसे ऑर्डिनेशन करना, देखें, विशेष विषय : "अभिषेक करना" (ORDINATION)।

1. प्रेरि. 6:6 में प्रेरितगण स्थानीय सेवकाई के लिए सात लोगों पर हाथ रखते हैं।
2. प्रेरि. 13:3 में नबी और शिक्षक बरनवास और पौलुस के सिरों पर हाथ रखते हैं कि यात्रा पर जाएँ।

3. 1 तीमु. 4:14 में स्थानीय प्राचीन तीमुथियुस को आरंभिक बुलाहट नियुक्ति में संलग्न थे।
4. 2 तीमु. 1:6 में पौलुस तीमुथियुस पर हाथ रखता है।

यह भिन्नता और अस्पष्टता दर्शाती है कि प्रथम शताब्दी की कलीसियाओं में संस्थाओं की कमी थी। प्रारम्भिक कलीसिया ही सामर्थी थी और नियमित रूप से उसी ने विश्वासियों के आत्मिक वरदानों का उपयोग किया (देखें, 1 कुरि. 12:14)। नए नियम में अभिषेक करने के तरीकों और प्रशासनिक आदर्शों को नहीं लिखा गया है (प्रेरि. 15 में भिन्नताएँ देखें) जिनका समर्थन किया जा सके। कलीसिया की संस्थागत परंपराएँ आवश्यक होती हैं परंतु बाइबल के अनुसार नहीं होती। नेतृत्व की धर्मनिष्ठा नेतृत्व से अधिक महत्वपूर्ण होती है।

Copyright © 2014 Bible Lessons International

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 6:7

[7]और परमेश्वर का वचन फैलता गया और यरूशलेम में चेलों की संख्या बहुत बढ़ती गई; और याजकों का एक बड़ा समाज इस मत के अधीन हो गया।

6:7 "परमेश्वर का वचन" यह प्रभु यीशु मसीह के सुसमाचार की ओर संकेत है। यीशु का जीवन, मृत्यु, पुनरुत्थान और परमेश्वर के विषय में उसकी शिक्षाएँ पुराने नियम की वाचा को एक नए दृष्टिकोण से देखने का माध्यम बना (देखें, मत्ती 5:17-48)। यीशु परमेश्वर का वचन है (यूहन्ना 1:1; 14:6)। मसीहीयत कोई धर्म नहीं परन्तु एक व्यक्ति है! देखें प्रेरि. 4:31 पर टिप्पणी।

▪ **"फैलता गया"** प्रेरि. 6:7 में सभी तीनों क्रियाएँ अपूर्ण कालिक हैं। प्रेरितों के काम में यह केन्द्रिय विषय है। मसीह पर विश्वास लाने और परमेश्वर की नई वाचा के लोग बनने के रूप में परमेश्वर का वचन फैलता गया (देखें, प्रेरि. 6:7; 12:24; 19:20)।

यह इब्राहिम के साथ बांधी गई परमेश्वर की वाचा की ओर संकेत हो सकता है कि उसका वंश गिनती में बढ़ेगा और एक जाति बनेगा जो पुरानी वाचा के लोग कहलाए (देखें, प्रेरि. 7:17; उत्पत्ति 17:4-8; 18:18; 28:3; 35:11)।

▪ **"बहुत से याजक विश्वास के आज्ञाकारी बन रहे थे"** मसीहियों पर यहूदी अगुवों के क्रोध का एक मुख्य कारण यह भी रहा था। जो लोग पुराने नियम से भली भाँति परिचित थे वह अन्त में आश्वस्त हो गए कि यीशु की प्रतिज्ञात मसीह है। इस प्रकार यहूदीवाद का आंतरिक समूह टूटने लगा था। प्रेरितों के काम की एक मुख्य बात यह है कि इसमें कलीसिया की निरन्तर उन्नति का उल्लेख किया गया है (देखें, प्रेरि. 9:31; 12:24; 16:5; 19:20; 28:31)।

▪ **"विश्वास"** इसके कई अलग अलग अर्थ हो सकते हैं:
1. पुराने नियम की पृष्ठभूमि के अनुसार इसका अर्थ है "विश्वासयोग्य होना" या "विश्वासपात्र बनना" इसलिए यह वाक्य परमेश्वर की विश्वासयोग्यता पर हमारे विश्वास करने के रूप में प्रयोग होता है (देखें विशेष विषय प्रेरि. 6:5 की टीका में)
2. मसीह में, परमेश्वर के मुफ्त वरदान अर्थात् पापों की क्षमा को ग्रहण करना।
3. विश्वास योग्यता के साथ भला जीवन व्यतीत करना।
4. सामूहिक मसीही विश्वास में स्थिर रहना अथवा यीशु के विषय सच्चाई में स्थिर रहना (रोमि. 1:5; गला. 1:23; यहूदा 1:3,20) (साथ ही देखें 2 थिस्स. 3:2)

देखें विशेष शीर्षक: पुराने नियम में विश्वास भरोसा, तथा विश्वासयोग्यता

प्रेरि. 3:16 में विश्वास, भरोसा (संज्ञा, क्रिया, विशेषण) पर विशेष टिप्पणी देखें।

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 6:8-15

[8]स्तिफनुस अनुग्रह और सामर्थ्य से परिपूर्ण होकर लोगों में बड़े-बड़े अद्‌भुत काम और चिन्ह दिखाया करता था। [9]तब उस आराधनालय में से जो लिबिरतीनों की कहलाती थी, और कुरेनी और सिकन्दरिया और किलिकिया और एशिया के लोगों में से कई एक उठकर स्तिफनुस से वाद-विवाद करने लगे। [10]परन्तु उस ज्ञान और उस आत्मा का जिस से वह बातें करता था, वे सामना न कर सके। [11]इस पर उन्होंने कई लोगों को उभारा जो कहने लगे, ''हमने इसको मूसा और परमेश्वर के विरोध में निन्दा की बातें कहते सुना है।'' [12]और लोगों और प्राचीनों और शास्त्रियों को भड़काकर चढ़ आए और उसे पकड़कर महासभा में ले आए। [13]और झूठे गवाह खड़े किए जिन्होंने कहा, ''यह मनुष्य इस पवित्र स्थान और व्यवस्था के विरोध में बोलना नहीं छोड़ता। [14]क्योंकि हमने उसे यह कहते सुना है, कि यही यीशु नासरी इस जगह को ढा देगा, और उन रीतियों को बदल डालेगा जो मूसा ने हमें सौंपी हैं।'' [15]तब सब लोगों ने जो सभा में बैठे थे, उस पर दृष्टि गड़ाई तो उसका मुख स्वर्गदूत का सा देखा।

6:8 ''अनुग्रह और सामथ्र्य से परिपूर्ण'' यह उसकी सेवकाई पर परमेश्वर की अपरम्पार आशीषों की ओर संकेत करता है। देखें प्रेरि. 5:17 पर विशेष टिप्पणी। यह कथन अगले वाक्य से संबंध रखता है, ''अद्‌भुत कार्य और चिन्ह दिखाया करता था।

▪ ''लोगों में बड़े-बड़े अद्‌भुत काम और चिन्ह दिखाया करता था'' प्रेरि. 6:7 की तरह यह अपूर्ण काल सूचक क्रिया है। संभवतः यह सात लोगों में उसे चुने जाने से पूर्व की घटना है। उसका सुसमाचार सन्देश निरन्तर आश्चर्यकर्मों द्वारा प्रमाणित होता था; वह अनुग्रह और सामथ्र्य से परिपूर्ण था।

6:9 ''कुछ लोग वहाँ...कुछ वहाँ'' यहां प्रश्न उठता है कि स्तिफनुस के विरुद्ध कितने लोगों के समूह चढ़ आए, और एक ही मनुष्य ने उन से वाद-विवाद किया होगाः

1. एक सभाघर (विभिन्न देशों से लोग आए थे)
2. दो सभाघर
    a. कुरेनी और सिकन्दरिया से आए लोग
    b. वे यहूदी जो किलिकिया और एशिया से आए थे (पौलुस किलिकिया का निवासी था)
3. एक सभाघर परन्तु दो समूह
4. पाँच अलग अलग सभाघर

यहाँ यूनानी पुरुष वाचक बहुवचन शब्द (*tōn*) टन दो बार प्रयोग किया गया है।

▪ **''जिसे कहा जाता है''** इस वाक्यांश का कारण यह है कि ''स्वतन्त्र किए हुए दास'' एक लैटिन भाषा का शब्द है, जिसकी स्पष्ट व्याख्या करना आवश्यक था। स्पष्ट रूप से वहां ऐसे यहूदी थे जो आर्थिक लाभ के लिए विदेशी में बेचे गए थे और अब वे स्वतन्त्र बनकर वापस पलीस्तीन लौट आए थे, और वे सामान्य यूनानी भाषा बोला करते थे।

6:10 स्तीफनुस का सुसामचार सन्देश न केवल आश्चर्यकर्मों द्वारा प्रमाणित ही था पर साथ ही तर्कपूर्ण और प्रभावशाली भी था। इसका उदाहरण हम प्रेरि. 7 में उसके भाषण में देखते हैं।

▪ **''आत्मा''** यह अनुवादक द्वारा किया गया अनुवाद है; यूनानी भाषा में कैपिटल लैटर और स्मॉल लैटर के बीच अन्तर करना कठिन होता है। (spirit) (आत्मा) का संकेत पवित्र आत्मा की ओर तथा (spirit) (आत्मा) का संकेत मनुष्य की आत्मा की ओर होता है (देखें प्रेरि. 7:59; 17:16; 18:25; रोमि. 1:9; 18:16; 1 कुरि. 2:11; 5:4; 16:18; 2 कुरि. 2:13; 7:13; 12:18; गला. 6:18; फिलि. 4:23; किंग जेम्स वर्ज़न और न्यू किंग जेम्स वर्ज़न के फुट-नोट भी देखें) यह नीति. 20:27 की ओर संकेत हो सकता है।

देखें विशेष विषय: पवित्र आत्मा (न्यूमा) *(PNEUMA)* प्रेरित 2:2

6:11 "उन्होंने चुपके से पुरुषों को कहने के लिए प्रेरित किया" यहाँ शब्द "उभारा" के दो अर्थ हो सकते हैं (1) घूंस देना देखें लूआन्ड निडा, लैक्सिकन, खण्ड 1, पेज नं. 577-578 (2) (cf. Louw and Nida, *Lexicon*, vol. 1, pp. 577-578) गुप्त में षड्यन्त्र रचना देखें बायर आरनट, गिंगरिच, तथा डैन्कर, ग्रीक-इंगलिश लैक्सिकन, पेज नं. 843 (cf. Bauer, Arndt, Gingrich, and Danker, *A Greek-English Lexicon*, p. 843) । इसी प्रकार की युक्ति यीशु और पौलुस के विरुद्ध भी अपनाई गई थी (देखें मत्ती 26:61 तथा प्रेरि. 21:28) उनका आरोप था कि स्तीफुस ने निर्गमन 20:7 का उल्लंघन किया है जिसका परिणाम मृत्युदण्ड था।

■**"हमने इसको मूसा के विरुद्ध परमेश्वर के विरोध में निन्दा करते सुना है"** प्रेरि. 7 में स्तिफनुस का भाषण इस आरोप का प्रत्युत्तर देता है। परन्तु यह अनिश्चित है कि प्रेरि. 7 में स्तिफनुस अपने भाषण द्वारा आरोपों का जवाब दे रहा था अथवा नहीं परन्तु एक बात निश्चित है कि उसने यीशु को मसीह प्रमाणित करने के लिए पुराने नियम का भरपूर उपयोग किया।

■**" और परमेश्वर के *विरुद्ध*"** ये यहूदी मूसा के बाद परमेश्वर का स्थान रखते हैं जिससे प्रकट होता है कि मूसा उनके लिए महत्वपूर्ण है। मूसा की व्यवस्था का उनके लिए सर्वोच्च स्थान है।

6:12 "प्राचीनों और शास्त्रियों ...परिषद" "प्राचीनों और शास्त्रियों" यह वाक्यांश अक्सर सन्हेद्रिन के सदस्यों की ओर संकेत करता है जिसे महासभा भी कहा जाता था। सन् 70 से पहले रोमी साम्राज्य में यह महासभा सर्वोच्च धार्मिक संगठन था। इसमें निम्न लोग होते थेः-

1. महायाजक और उसका परिवार
2. स्थानीय धनवान भू-पति और नागरिक नेतागण
3. स्थानीय शास्त्री लोग

इसमें यरूशलेम क्षेत्र के 70 अगुवे सदस्य के रूप में थे। देखें प्रेरि. 4:5 पर टिप्पणी-सन्हेद्रिन।

6:13 "यह मनुष्य" यह सामी भाषा में अपमान करने के लिये प्रयोग में आने वाला शब्द था। अक्सर इस शब्द का प्रयोग यीशु के लिये किया गया।

■ **"पवित्र स्थान और व्यवस्था के विरोध में बोलना"** यह वाक्यांश प्रेरि. 6:11 में लगाए गए आरोप का ही विस्तृत भाग है। इसका संकेत यीशु के वचनों की ओर है जो उसने मन्दिर के विनाश के सम्बन्ध मे कह थे और जिन्हें स्तिफनुस दृढ़तापूर्वक बताता होगा और जिनका उल्लेख लूका 19:44-48; मरकुस 13:2 तक यीशु की धमकियों, मत्ती 26:61; 27:40; मर. 14:58; 15:29; यूहन्ना 2:19; प्रेरि. 6:14 में पाया जाता है। यीशु ने स्वयं को "नए मन्दिर", "नए आराधना स्थल", मनुष्य और परमेश्वर के मिलने का नया स्थान, के रूप में देखा (देखें, मरकुस 8:31; 9:31; 10:34)। परमेश्वर का दण्ड हेरोदेस द्वारा बनवाए गए मन्दिर पर आने वाला था।

स्तिफनुस यीशु के द्वारा उपलब्ध निशुल्क पापों की क्षमा का प्रचार किया करता था, इसीलिए शायद उन्होंने समझा कि वह "व्यवस्था के विरोध में बोलता" है। सुसमाचार का सन्देश, मूसा की व्यवस्था को उद्धार पाने का माध्यम होने के बजाए उसके महत्व को कम करके उसे मात्र एक ऐतिहासिक गवाह बना देता है (देखें गलतियों 3 तथा इब्रानियों की पत्री)।

प्रथम शताब्दी के यहूदियों के लिए यह मूलभूत शिक्षा, परमेश्वर की निन्दा करना समझी गई। यह वास्तव में पुराने नियम के एकेश्वरवाद, उद्धार और इस्राएल के अलौकिक स्थान की शिक्षा से अलग शिक्षा थी। नए नियम में मूल ध्यान का केन्द्र इस्राएल नहीं पर यीशु है; मनुष्य की अपनी योग्यता नहीं परन्तु अनुग्रह है।

6:14 "हमने उसे यह कहते सुना है कि यही यीशु नासरी इस जगह को ढा देगा, और उन रीतियों को बदल डालेगा जो मूसा ने हमें सौंपी हैं" एक प्रकार से उनके आरोप सही थे। ये आरोप इस रीति से तैयार किए गए थे जिससे सदूकी और फरीसी दोनों भड़क उठे। स्थान को ढा देने ने सदूकियों को तथा रीतियों को बदल देने की बात ने फरीसियों को उत्तेजित किया।

▪ **"यही यीशु नासरी"** प्रेरि. 2:22 पर दी गई विशेष विषय देखें।

6:15 "उस पर दृष्टि गड़ाई" इस बात को लूका ने अक्सर इस्तेमाल किया है। यह बिना रूकावट के ध्यानपूर्वक देखने को बताता है (देखें लूका 4:20; 22:56; प्रेरि. 1:10; 3:4, 12; 6:15; 7:55; 10:4; 11:6; 13:9; 14:9; 23:1)।

▪ **"अपनी आँखें उसपर टिका दीं"** यह इनके समान हो सकता है:

1. यहोवा (YHWH) का दर्शन करने के बाद मूसा का चेहरा चमक रहा था(देखें, निर्ग. 34:29-35; 2 कुरि. 3:7)
2. यीशु के रूपान्तर के समय उसका मुंह सूर्य के समान चमका (मत्ती 17:2; लूका 9:29)
3. दानिय्येल के पास भेजा गया स्वर्गदूत (देखें दानिय्येल 10:5-6)

जो व्यक्ति परमेश्वर की उपस्थिति में रहा हो उसके बारे में बताने का यह एक तरीका है।

विचार विमर्श के लिये प्रश्न

यह अध्ययन में मार्गदर्शन करने की टीका है, इसका अर्थ है कि आप बाइबल की अपनी व्याख्या करने के स्वयं ही जिम्मेदार हैं। हम में से प्रत्येक को उसी ज्ञान के अनुसार चलना चाहिए जो हमारे पास है। व्याख्या करने के कार्य में आप आपकी बाइबल और पवित्र आत्मा केन्द्रिय स्थान रखते हैं। यह कार्य व्याख्याकार पर न छोड़ दें।

निम्नलिखित प्रश्न अपनी सहायता के लिए दिए गए है ताकि आप पुस्तक के गम्भीर विषयों पर पुनर्विचार कर सकें। वे आपके विचारों को आन्दोलित करने के लिए हैं, इनके अलावा और भी प्रश्न हो सकते हैं:

1. प्रारम्भिक कलीसियों ने क्यों खिलाने-पिलाने की सेवा के लिए श्रेष्ठ आत्मिक जन चुने?
2. तीव्र बढ़ोत्तरी में तनाव क्यों आते हैं?
3. हाथ रखने का उद्देश्य क्या है?
4. स्तिफनुस पर हमला क्यों किया गया?

Copyright © 2013 Bible Lesson International

प्रेरितों के काम-7
बाइबल के विभिन्न आधुनिक अनुवादों में पैराग्राफ-विभाजन

UBS[4]	NKJV	NRSV	TEV	NJB
स्तिफनुस का भाषण	स्तिफनुस का संदेशः अब्राहम की बुलाहट	स्तिफनुस का प्रचार और शहीद होना (6:8-8:1a)	स्तिफनुस का प्रचार	स्तिफनुस का भाषण
7:1-8	7:1-8		7:1	7:1-8
			7:2-8	
	मिस्र में पूर्वज	7:2b-8		
7:9-16	7:9-16	7:9-16	7:9-16	7:9-16
7:17-22	7:17-36	7:17-22	7:17-22	7:17-22
7:23-29		7:23-29	7:23-29	7:23-29
7:30-43		7:30-34	7:30-34	7:30-34
	परमेश्वर के प्रति इस्राएल का विद्रोह	7:35-43	7:35-38	7:35-43
	7:37-43			
	परमेश्वर का सच्चा तम्बू		7:39-43	
7:44-50	7:44-50	7:44-50	7:44-47	7:44-50
	इस्राएल द्वारा पवित्र आत्मा का सामना		7:48-50	
		7:48-50		
7:51-53	7:51-53	7:51-53	7:51-53	7:51-53
स्तिफनुस पर पथराव	स्तिफनुस का शहीद होना		स्तिफनुस पर पथराव	स्तिफनुस पर पथराव, शाऊल सताने वाला
7:54-8:1a	7:54-60	7:54-8:1a	7:54-8:1a	7:54-8:1

तीसरा (**“अच्छे बाइबल अध्ययन का मार्गदर्शन” से**)

पैराग्राफ स्तर पर मूल लेखक के अभिप्राय को समझना

यह अध्ययन करने की मार्गदर्शक टीका है, जिसका अर्थ है कि आप अपनी बाइबल-व्याख्या के स्वयं उत्तरदायी हैं। हम में से प्रत्येक को अपने ज्ञान व समझ के अनुसार कार्य करना चाहिए। व्याख्या-प्रक्रिया में आप, आपकी बाइबल तथा पवित्र आत्मा प्राथमिक स्थान रखते हैं। आपको यह टीका कार्य टीकाकार पर नहीं छोड़ना चाहिए।

पूरा अध्याय एक बैठक में पढ़ें। विषयों को पहचानें। अपने विषय-विभाजन की तुलना उपरोक्त पाँच आधुनिक अनुवादों के विषय-विभाजन से करें। पैराग्राफों का विभाजन प्रेरणा प्राप्त नहीं होता है, परन्तु यह मूल लेखक के अभिप्राय को समझने की कुंजी है, जो कि व्याख्या करने का आधार है। प्रत्येक पैराग्राफ में केवल एक ही मूल विषय होता है:

1. पहला पैराग्राफ
2. दूसरा पैराग्राफ

3. तीसरा पैराग्राफ
4. अन्य

सन्दर्भ की जानकारी:

A. प्रेरितों के काम 7 अध्याय में स्तिफनुस का भाषण सबसे लम्बा लिखित विवरण है। धर्म वैज्ञानिक के क्षेत्र में इस भाषण द्वारा पौलुस को और साथ ही कलीसिया को सुसमाचार और पुराने नियम के बीच गहरे सम्बन्ध को समझने में बड़ी सहायता मिली। स्तिफनुस का भाषण उन सब आरोपों का प्रत्युत्तर देता है जो इस पर लगाए गए; भाषण निम्न बातें दर्शाता हैः-
   1. परमेश्वर मन्दिर से बाहर रहकर कार्य करता है।
   2. परमेश्वर अन्य जातियों में कार्य करता है।
   3. यहूदियों ने सदा परमेश्वर के सन्देश का तिरस्कार किया है और अब मसीह का इंकार किया है।

B. स्तिफनुस के प्रत्युत्तर ने शाऊल तारसी के हृदय और पौलुस की धर्म वैज्ञानिक शिक्षा को प्रभावित किया।

C. स्तिफनुस प्राचीन काल से चली आ रही वाचा को यहूदी लोगों के प्रति विश्वासयोग्यता में और परमेश्वर के प्रकाशन को प्रतिज्ञात देश और यरूशलेम के मन्दिर से बाहर प्रकट होते हुए बताता है, जो प्रथम शताब्दी की यहूदी आराधना का केन्द्रिय विषय बन गया।

D. यहूदी लोगों ने निरन्तर परमेश्वर के सन्देशवाहकों का तिरस्कार किया और अब वे फिर से वही करते थे। उन्होंने बलपूर्वक यीशु नासरी का तिरस्कार किया था और अब वे स्तिफनुस का भी बलपूर्वक तिरस्कार कर रहे थे जो यीशु का गवाह था।

E. स्तिफनुस पर उसी यहूदी समूह ने अभियोग लगाया और वही निन्दा करने की बात कही जो उन्होंने यीशु के बारे में कही थी। अब स्तिफनुस को पत्थरवाह किया जा रहा था तो उसने वही शब्द बोले जो यीशु ने क्रूस पर से बोले थे। क्या लूका ने जानबूझकर इस साहित्यिक शैली को अपनाया? ऐसा हो सकता है।

F. स्तिफनुस की बातों ने यहूदियों और मसीहियों के बीच दरार पैदा कर दी जिसके फलस्वरूप मसीहियों पर सताव आया (देखें प्रेरि. 8:1-3) और अन्त में उन्हें तितर-बितर होना पड़ा अर्थात् सन् 70 में उन्हें घोर सताव सहना पड़ा। निश्चय ही परमेश्वर ने स्तिफनुस को इस्तेमाल किया जैसा उसने पुराने नियम में शिमशोन को प्रयुक्त किया था, कि लड़ाई का आरम्भ करे, और उसके माध्यम से दबाव डाले कि सुसमाचार पलीस्तीन से बाहर फैले।

G. स्तिफनुस के भाषण अथवा बचाव-व्याख्यान में कुछ ऐसे उद्धरण व विवरण हैं जो इब्रानी के पुराने नियम से अर्थात् सैप्तूजैन्त से मेल नहीं खाते हैं (उसने इससे ही उद्धरण दिए थे)। क्या विद्वानों को स्तिफनुस के वचनों का बचाव करने का प्रयत्न करना चाहिए अथवा उन्हें यहूदी परम्परा मान लेना चाहिए अथवा ऐतिहासिक त्रुटि कह देना चाहिए? ऐसे प्रश्न व्याख्याकारों की भावनात्मक और बौद्धिक पक्षपातों को प्रकट करते हैं। मैं विश्वास करता हूं कि बाइबल का इतिहास सच्चा है और मसीहीयत बाइबल की घटनाओं पर आधारित है। फिर भी, बाइबल आरम्भ से (अर्थात् उत्पत्ति 1-11) अन्त तक (अर्थात् प्रकाशितवाक्य तक) "प्रतीकात्मक इतिहास" ही नहीं है। जहाँ तक बाइबल के मध्य पाए जाने वाले विवरणों व घटनाओं का प्रश्न है, मैं समझता हूँ कि वे बिल्कुल सही और सत्य हैं। इन बातों पर विचार किया जाना चाहिए जो कभी-कभी हमारे सामने आती हैं:
   1. गिनतियों में भिन्नता हो सकती है।
   2. साहित्यिक शैली में भिन्नता हो सकती है।
   3. विवरणों में भिन्नताएँ हो सकती हैं।

रब्बियों से संबंधित व्याख्या-शैली व तरीकों में अन्तर हो सकता है (जैसे एक या दो पदों को परस्पर जोड़ देना)।

इन सब बातों से मेरे इस दृढ़ निश्चय पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता कि बाइबल के विवरण ऐतिहासिक रूप से विश्वासयोग्य और सही हैं। संभव है स्तिफनुस भाषण में उन बातों को दोहरा रहा हो जो उसने सभाघरों की पाठशाला में सीखी हों अथवा वह अपने उद्देश्य के अनुसार पाठांशों में संशोधन करते हुए भाषण दे रहा हो। यदि हम उसकी एक दो त्रुटियों पर ध्यान देते हुए उसके सन्देश को न समझें, तो यह इतिहास लेखन की हमारी आधुनिक विचारधारा का सूचक होगा न कि प्रथम शताब्दी की इतिहास लेखन शैली का सूचक।

H. प्रेरितों 7 में इस्राएल जाति के साथ परमेश्वर के व्यवहार के ऐतिहासिक पुनरावलोकन की मूलभूत रूपरेखाः

1. पूर्वज, (प्रेरि. 7:2-16)
2. मिस्र से निकलना तथा जंगलों में भ्रमण (प्रेरि. 7:17-43)
3. निवास स्थान और मन्दिर (प्रेरि. 7:44-50)
4. पुराने नियम के इस इतिहास की उनके लिये शिक्षा, (प्रेरि. 7:51-53)

I. स्तिफनुस द्वारा प्रयुक्त पुराने नियम के सन्दर्भ (उद्धरण व संकेत)

1. प्रेरि. 7:3 - उत्पत्ति 12:1
2. प्रेरि. 7:5 - उत्पत्ति 12:7 तथा 17:8
3. प्रेरि. 7:6-7a - उत्पत्ति 15:13-14
4. प्रेरि. 7:7b - निर्ग. 3:12
5. प्रेरि. 7:8a - उत्प. 17:9-14
6. प्रेरि. 7:8b - उत्प. 21:2-4
7. प्रेरि. 7:8c - उत्प. 25:26
8. प्रेरि. 7:8d - उत्प. 35:22-26
9. प्रेरि. 7:9 - उत्प. 37:10, 28; 45:4
10. प्रेरि. 7:10 - उत्प. 39:21; 41:40-46
11. प्रेरि. 7:11 - उत्प. 41:54-55; 42:5
12. प्रेरि. 7:12 - उत्प. 42:2
13. प्रेरि. 7:13 - उत्प. 45:1-4
14. प्रेरि. 7:14 - उत्प. 45:9-10
15. प्रेरि. 7:15 - उत्प. 46:5; 49:33; निर्ग. 1:6
16. प्रेरि. 7:16 - उत्प. 23:16; 50:13
17. प्रेरि. 7:17 - निर्ग. 1:7-8
18. प्रेरि. 7:18 - निर्ग. 1:8
19. प्रेरि. 7:19 - निर्ग. 1:10-11
20. प्रेरि. 7:20 - निर्ग. 2:2
21. प्रेरि. 7:21 - निर्ग. 2:5, 6, 10
22. प्रेरि. 7:22 - निर्ग. 2:10
23. प्रेरि. 7:23 - निर्ग. 2:11-12
24. प्रेरि. 7:26 - निर्ग. 2:13
25. प्रेरि. 7:27-28 - निर्ग. 2:14
26. प्रेरि. 7:30 - निर्ग. 3:1-2
27. प्रेरि. 7:29a - निर्ग. 2:15
28. प्रेरि. 7:29b - निर्ग. 2:22; 4:20; 18:3-4

29. प्रेरि. 7:32 - निर्ग. 3:6
30. प्रेरि. 7:33-34 - निर्ग. 3:5,7-10
31. प्रेरि. 7:36 - निर्ग. 12:41; 33:1
32. प्रेरि. 7:37 - व्यवस्थाविवरण 18:15
33. प्रेरि. 7:38 - निर्ग. 19:17
34. प्रेरि. 7:39 - गिनती 14:3-4
35. प्रेरि. 7:40 - निर्ग. 32:1, 23
36. प्रेरि. 7:41 - निर्ग. 32:4, 6
37. प्रेरि. 7:42-43 - ओमास 5:25-27
38. प्रेरि. 7:44 - निर्ग. 25:31, 36-40
39. प्रेरि. 7:45 - यहोशू 3:14 क्रमशः ; 18:1; 23:9
40. प्रेरि. 7:46 - 2 शमूएल 7:8 क्रमशः
41. प्रेरि. 7:47 - 1 राजा 6:8; 2 इतिहास 1-6
42. प्रेरि. 7:49-50- यशायाह 66:1-2

नहेम्याह अध्याय-9, इस्राएल के इतिहास की एक और अच्छी समीक्षाः-

1. नहे. 9:6 - उत्प. 1-11
2. नहे. 9:7-8 - उत्प. 12-50
3. नहे. 9:9-14 - निर्ग. (मिस्र से निकलना)
4. नहे. 9:15-21 - गिनती (जंगलों में भ्रमण काल)
5. नहे. 9:22-25 - यहोशू (लड़ाईयाँ जीतना)
6. नहे. 9:26-31 - न्यायियों
7. नहे. 9:32-38 - शमूएल, राजाओं, इतिहास (राजतन्त्र)

शब्दों और वाक्यांशों का अध्ययन

NASB (नवीनतम) पाठ : प्रेरितों के काम 7:1-8

1तब महायाजक ने कहा, "क्या ये बातें सच हैं?" 2उसने कहा, "हे भाईयो, और पितरो सुनो, हमारा पिता अब्राहम हारान में बसने से पहले जब मेसोपोटामिया में था; तो तेजोमय परमेश्वर ने उसे दर्शन दिया। 3और उससे कहा, 'तू अपने देश और अपने कुटुम्ब से निकलकर उस देश में चला जा, जिसे मैं तुझे दिखाऊंगा।' 4तब वह कसदियों के देश से निकलकर हारान में जा बसा; उसके पिता की मृत्यु के बाद परमेश्वर ने उसको वहां से इस देश में लाकर बसाया जिसमें अब तुम बसते हो। 5और उसको कुछ मीरास वरन् पैर रखने भर की भी उसमें जगह न दी, परन्तु प्रतिज्ञा की कि मैं यह देश, तेरे और तेरे बाद तेरे वंश के हाथ कर दूंगा; यद्यपि उस समय उसके कोई पुत्र भी न था। 6और परमेश्वर ने यों कहा; कि तेरी सन्तान के लोग पराये देश में परदेशी होंगे; और वे उन्हें दास बनाएंगे, और चार सौ वर्ष तक दुःख देंगे। 7फिर परमेश्वर ने कहा, 'जिस जाति के वे दास होंगे, उसको मैं दण्ड दूंगा; और इसके बाद वे निकलकर इसी जगह मेरी सेवा करेंगे।' 8और उसने उससे खतने की वाचा बान्धी; और इसी दशा में इसहाक उससे उत्पन्न हुआ; और आठवें दिन उसका खतना किया गया; और इसहाक से याकूब और याकूब से बारह कुलपति उत्पन्न हुए।

7:1 "महायाजक" यह कैफा महायाजक था। प्रेरि. 4:6 की टिप्पणी देखें।

7:2 "और उसने कहा" स्तिफनुस द्वारा अपना बचाव करना इब्रानियों की पुस्तक से मिलता जुलता है। उसने अपने ऊपर लगाए गए आरोपों का उत्तर दो तरीकों से दिया: (1) उसने कहा प्राचीन काल में यहूदी लोगों ने

निरन्तर मूसा का तिरस्कार किया तथा (2) परमेश्वर इस्राएल से जिन तरीकों द्वार बातचीत करता था, इन तरीकों में से एक तरीका मन्दिर है। प्रेरि. 6:13 में जो आरोप उन्होंने स्तिफनुस पर लगाए थे, उनका यह प्रत्यक्ष उत्तर था।

▪**''सुनो''** ये यूनानी शब्द ''अकोऊ'' (*akouō)* के आदेशात्मक शब्द हैं। ये शब्द यहूदी लोगों की प्रसिद्ध प्रार्थना ''शेमा'' का अनुवाद करने के लिए सप्तूजैन्त में प्रयोग किए गए हैं (देखें, व्य.वि. 6:4-5)। यही शब्द नबियों ने भी इस्तेमाल किए हैं ताकि लोग ''सुनें' और उचित प्रत्युत्तर दें'' (देखें, मीका 1:2; 6:1)। निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता है यही विशेष अर्थ उस समय भी प्रचलित था अथवा नहीं जबकि ये यहूदी अपने इब्रानी विचारों को आम-बोलचाल की यूनानी भाषा में व्यक्त कर रहे थे, परन्तु कुछ सन्दर्भों मे जैसा कि यह है, हम कह सकते हैं कि यह विशेष अर्थ प्रचलित था।

▪**''तेजोमय परमेश्वर''** इस तेजोमय और प्रतापी ईश्वर ने (देखें, भजन 29:3) पूर्वज अब्राहम को दर्शन दिया (देखें, उत्पत्ति 12:1; 15:1, 4; 17:1; 18:1; 22:1), और इस प्रकार इस्राएली प्रजा का आरम्भ हुआ। देखें प्रेरि. 3:13 में विशेष शीर्षक।

▪**''अब्राहम''** अब्राहम को इस्राएल जाति का पिता माना जाता है। वह सबसे पहला पूर्वज था। उत्पत्ति 12:1-25:11 में उसकी बुलाहट और उसके आज्ञाकारी जीवन का विवरण मिलता है। गलातियों 3 तथा रोमियों 4 अध्यायों में पौलुस उसे विश्वास द्वारा अनुग्रह से धर्मी ठहराए जाने के उदाहरण के रूप में प्रयुक्त करता है।

▪**''हारान में बसने से पहले जब मेसोपोटामिया में था''** उत्पत्ति 11:31 से ज्ञात होता है कि जब अब्राहम हारान नगर में रहता था तो यहोवा (YHWH) ने उसे दर्शन दिया। तौभी यहां स्पष्ट नहीं है कि परमेश्वर ने किस समय उससे बातचीत की। अब्राहम कसदियों के ऊर का रहने वाला था (उत्प. 11:28, 31), परन्तु बाद में वह परमेश्वर की आज्ञा से हारान में जाकर रहने लगा (देखें, उत्प. 11:31, 32; 29:4)। विशेष बात यह है कि परमेश्वर ने कनान देश के बाहर अब्राहम से बातचीत की। अब्राहम के पास पवित्र भूमि में धन, संपत्ति और भूमि नहीं थी (देखें प्रेरि. 7:5)। वह जीवन भर भूमिहीन रहा, उसके पास केवल गुफा थी कि अपने मृतकों को दफना सके (देखें उत्पत्ति 23:9)।

मेसोपोटामिया विभिन्न जातियों की ओर संकेत कर सकता हैः-

1. वे जातियाँ जो टिगरिस और फरात नदी के उत्तरी क्षेत्र में बसी हुई थीं (अर्थात् सीरिया, जो इन नदियों के बीच में था)
2. वे जातियाँ जो टिगरिस और फरात के मुहाने पर रहती थीं।

7:3 ''तू अपने देश और अपने कुटुम्ब से निकलकर उस देश में जा, जिसे मैं तुझे दिखाऊँगा'' यह उत्पत्ति 12:1 से लिया गया उद्धरण है। इसमें एक धर्म वैज्ञानिक मतभेद यह पाया जाता है कि परमेश्वर ने यह बात अब्राहम से कब कहीः-

1. क्या उस समय कही जबकि वह ऊर में रहता था, इससे पहले कि वह अपने पिता तेरह और भतीजे लूत को लेकर हारान जाए?
2. क्या उस समय कही, जब वह हारान में था और अपने पिता की मृत्यु का इन्तज़ार कर रहा था, और फिर कनान के दक्षिण में चला गया?

7:4 ''तब वह कसदियों के देश से निकलकर'' संभवतः कसदी (बी डी बी 505) (BDB 505) तिगरिस और फरात नदियों के मुहाने के निकट किसी जिले का नाम था। (देखें, प्रेरि. 7:2 की टिप्पणी)। बाद में इसे देश कहा जाने लगा, इसे बेबीलोन भी कहा जाता है (बी डी बी 93) (BDB 93) इस देश में अनेक विद्वानों ने जन्म लिया, जो गणितज्ञ और खगोल शास्त्री हुए हैं। ये लोग ज्योतिषी भी थे जो कसदी कहलाते थे (देखें दानिय्येल 2:2, 4:7; 5:7-11)।

▪ **"हारान"** हारान (बी डी बी 357) (BDB 357) एक नगर था जहां पर अब्राहम, तेरह और लूत जाकर बस गये थे (देखें, उत्पत्ति 11:31-32)। अब्राहम का दूसरा भाई नाहोर वहीं बसा रहा और उस स्थान का नाम उसी के नाम पर नाहोर का नगर कहलाया (देखें उत्प. 24:10; 27:43)। यह नगर जो फरात नदी के ऊपरी भाग में था, तीसरी शताब्दी ई.पू. में आरम्भ हुआ और आज तक उसका यही नाम है। अब्राहम के भाई हारान के ा नाम का उच्चारण इब्रानी भाषा में उस प्रकार का नहीं होता है, जिस प्रकार का उच्चारण हारान नगर के लिए होता है (बी डी बी 248)।

▪ **"उसके पिता की मृत्यु के बाद"** अनेक लोग उत्प. 11:26, 32 और 12:4 के बीच विरोधाभास देखते हैं। इसके दो समाधान हो सकते हैं:

1. अब्राहम बड़ा पुत्र नहीं बल्कि सबसे प्रसिद्ध पुत्र रहा होगा, इसलिए पहले उसका नाम लिखा गया।
2. सामरी पंचग्रन्थ में तेरह की मृत्यु के समय आयु 145 दी गई है, न कि 205 वर्ष जैसाकि इब्रानी मूलपाठ में दी गई है। देखें ग्लीसन एल. आर्चर, एन्सायक्लोपीडिया ऑफ बाइबल डिफिकल्टीज पेज 378 (L. Archer, *Encyclopedia of Bible Difficulties*, p. 378)'

7:5 "परन्तु प्रतिज्ञा की कि मैं यह देश तेरे और उसके बाद तेरे वंश के हाथ कर दूंगा" यह उत्पत्ति 12:7 और 17:8 की ओर संकेत है। धर्म वैज्ञानिक मूल बात यहां यह है कि परमेश्वर पर इब्राहिम का विश्वास उसे न केवल प्रतिज्ञाएं ही प्रदान करता पर साथ ही वंश और देश भी प्रदान करता है। उसके इसी विश्वास को उत्पत्ति 15:6 में रेखांकित किया गया है (देखें, गला. 3:6; रोमियों 4:3)।

7:6 इस भविष्य कथन का उल्लेख उत्पत्ति 15:13-14 में पाया जाता है और निर्गमन 3:12 में इसे पुनः दोहराया गया है। परन्तु निर्ग. 12:40 में "400 वर्ष" की जगह "430 वर्ष" दिया गया है। निर्गमन 12:40 का अनुवाद सप्तूजैन्त (LXX) इस प्रकार व्यक्त करता है, "और इस्राएल की सन्तानें मिस्र और कनान देश में 430 वर्ष तक रहीं।"

रब्बियों के अनुसार 400 वर्षों की गिनती उत्पत्ति 22 में इसहाक के बलिदान किए जाने के समय से आरम्भ होती है। जौन काल्विन 400 वर्षों को पूर्ण संख्या बताता है। इसे सौ सौ वर्ष की चार पीढ़ियों के साथ जोड़ा जा सकता है (देखें, उत्पत्ति 15:16)।

7:7 "जो कोई भी राष्ट्र" यह उत्पत्ति 15:14 की सप्तूजैन्त का हवाला है, और यह एक सामान्य कथन है। स्पष्ट रूप से यह जाति मिस्र थी जिसके वे दास हुए। अन्य देशों द्वारा भी इस्राएली सताए गए जैसे पलिश्ती, सीरिया, अश्शूर, बेबीलोन। परमेश्वर उनका भी न्याय करेगा।

▪**"और इसके बाद"** यह निर्गमन 3:12 से लिया गया हवाला है। स्तिफनुस इस्राएल का इतिहास शीघ्रता में दोहराता है। यह पद बलपूर्वक बताता है कि कनान और यरूशलेम यहोवा (YHWH) के विशेष स्थान होंगे। यह व्यवस्थाविवरण के अनुसार सही है।

▪**"इसी जगह पर("** निर्गमन 3:12 के सन्दर्भ में यह वाक्यांश सीनै पर्वत की ओर संकेत करता है, (देखें प्रेरि. 7:30 में विशेष शीर्षक) और जो प्रतिज्ञात देश से बाहर, तथा इस्राएल के इतिहास की महत्वूपर्ण घटना का स्थान था, अर्थात् जहाँ मूसा की व्यवस्था दी गई थी।

7:8 "वाचा" देखें प्रेरि. 2:47 में विशेष विषय।

▪**"खतना"** इस विधि का पालन पलिस्तियों को छोड़कर संपूर्ण (Robert Girdlestone *Synonyms of the Old Testament, p. 214)* इस्राएल के पड़ौसियों द्वारा भी किया जाता था। अधिकांश संस्कृतियों में आमतौर पर यह पुरुषवर्ग को धारण करने की धार्मिक विधि थी, परन्तु इस्राएल के लिए नहीं; जहाँ पर यह वाचा के लोगों में शामिल

होने की धार्मिक विधि थी। यह यहोवा (YHWH) परमेश्वर पर विश्वास करने का चिन्ह था (देखें, उत्प. 17:9-14)। प्रत्येक परिवार का मुखिया अपने पुत्रों का एक पुरोहित की तरह खतना किया करता था। रौबर्ट गिरडल स्टोन अपनी पुस्तक, सिनोनिम्स ऑफ द ओल्ड टैस्टामैन्ट, पेज 214 पर बताते हैं कि खतना की विधि, लहू बहाने की विधि से जुड़ी है, और लहू वाचा की स्थापना (उत्प. 15:17) वाचा तोड़ने (उत्प. 2:17) और वाचा गत उद्धार से जुड़ा हुआ था (यशायाह 53)।

▪**''बारह कुल''** आमतौर पर अब्राहम इसहाक और याकूब को कुलपति कहा जाता है, पर यहाँ इसका संकेत याकूब और उसके बारह पुत्रों की ओर है, जो आगे चलकर इस्राएल के बारह गौत्र कहलाए।

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 7:9-10
[9]और कुलपतियों ने यूसुफ से डाह करके उसे मिस्र देश जानेवालों के हाथ बेचा; परन्तु परमेश्वर उसके साथ था। 10और उसे उसके सब क्लेशों से छुड़ाकर मिस्र के राजा फिरौन के आगे अनुग्रह और बुद्धि प्रदान की, और उसने उसे मिस्र पर और अपने सारे घर पर हाकिम ठहराया।

7:9 ''यूसुफ'' यह विवरण उत्पत्ति 37:11,28; 45:4 में पाया जाता है। स्तिफनुस यह दर्शाने का प्रयत्न कर रहा है कि यहूदियों और उनके अगुवों ने सदैव परमेश्वर के चुने हुए अगुवों का तिरस्कार किया है (देखें प्रेरि. 7:35 में मूसा)।

7:10 यह विवरण उत्पत्ति 39:21; 41:40-46 में पाया जाता है।

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 7:11-16
[11]तब मिस्र और कनान के सारे देश में अकाल पड़ा; जिससे भारी क्लेश हुआ, और हमारे बापदादों को अन्न नहीं मिलता था। [12]परन्तु याकूब ने यह सुनकर, कि मिस्र में अनाज है, हमारे बापदादों को पहली बार भेजा। [13]और दूसरी बार यूसुफ ने स्वयं को अपने भाइयों पर प्रगट किया, और यूसुफ की जाति फिरौन को मालूम हो गई। [14]तब यूसुफ ने अपने पिता याकूब और अपने सारे कुटुम्ब को, जो पचहत्तर व्यक्ति थे, बुला भेजा। [15]तब याकूब मिस्र में गया; और वहां वह और हमारे बापदादे मर गए [16]और उनके शव शकेम में पहुंचाए जाकर उस कब्र में रखे गए, जिसे अब्राहम ने चांदी देकर शकेम में हमोर की सन्तान से मोल लिया था।

7:11 यह वृत्तान्त उत्पत्ति 41:54-55; 42:5 में पाया जाता है।

7:12 यह वृत्तान्त उत्पत्ति 42:4 में पाया जाता है।

7:13 यह वृत्तान्त उत्पत्ति 45:1-4 में पाया जाता है।

7:14 ''पचहत्तर व्यक्ति थे'' यही गिनती सप्तूजैन्त और मृतक-सागर हस्तलेख बताते हैं, परन्तु मैसोरेटिक मूलपाठ यह संख्या ''सत्तर'' बताते हैं (देखें उत्पत्ति 46:27; निर्गमन 1:5; व्यवस्थाविवरण 10:22)। पहली बार देखने से यह सप्तूजैन्त (LXX), जिसका उपयोग स्तिफनुस करता है, और इब्रानी मूलपाठ निर्गमन 1:5 के बीच हस्तलेख सम्बन्धी समस्या प्रतीत होती है, परन्तु गहराई से सोच विचार करने पर हम कह सकते हैं कि यह याकूब की समस्त सन्तानों को गिनने के दो भिन्न भिन्न तरीके हो सकते हैं। समस्या उत्पत्ति 46:26 और 27 के बीच उठती है:

1. मैसोरेटिक मूलपाठ का पद 27 बताता है कि मिस्र में यूसुफ के दो पुत्र उत्पन्न हुए, जबकि सप्तूजैन्त बताता है कि उसके नौ पुत्र उत्पन्न हुए, जिसका यह अर्थ हुआ कि एप्रैम और मनश्शे के बाद में और भी पुत्र उत्पन्न हुए।

2. इब्रानी मूलपाठ में याकूब और उसकी पत्नी को गिना गया, परन्तु एप्रैम और मनश्शे की अतिरिक्त सन्तानों को गिना नहीं गया।

यूनानी मूलपाठ (LXX) में याकूब और उसकी पत्नी को नहीं गिना गया, परन्तु एप्रैम और मनश्शे की अतिरिक्त सन्तानों को गिना गया। दोनों ही सही हैं, परन्तु याकूब के जीवनकाल में विभिन्न अवसरों पर और विभिन्न तरीके से सन्तानों को जोड़ा गया। इब्रानी मूलपाठ में जिसे, मृतक-सागर पाण्डुलिपियाँ भी कहा जाता है, इसमें उत्पत्ति 46:27 और निर्गमन 1:5 में ''पचहत्तर'' व्यक्ति पाया जाता है। सिकन्दरिया का फिलो इन दोनों गिनतियों से परिचित था।

जब भी हम बाइबल पाठांशों को समझने में कठिनाई अनुभव करते हैं अथवा गिनतियों की समस्याओं का सामना करते हैं तो हमारी सहायता के आधुनिक विद्वान ऐसी कठिन बातों को समझने में हमारी सहायता करते हैं, हमें उनका आभारी होना चाहिए। आजकल एक नए प्रकार का बाइबल-स्रोत उपलब्ध है जिसमें ऐसे कठिन पाठांशों पर विचार किया गया है; उनमें से निम्नलिखित स्रोतों की मैं सिफारिश करता हूँ:

1. बाइबल के कठिन वचन, आई वी पी . (*Hard Sayings of the Bible*, IVP)
2. बाइबल के अति कठिन वचन, आई वी पी. (*More Hard Sayings of the Bible*, IVP)
3. बाइबल की समस्याओं का एन्सायक्लोपीडिया, लेखक ग्लीसन आर्चर।(*Encyclopedia of Bible Difficulties* by Gleason Archer #1 pp. 521-522)

प्रेरित. 7:14-15 संबंधी अधिक जानकारी के लिये देखें रु1 पेज 521-522

7:15 यह विवरण उत्पत्ति 45:5; 49:33; निर्गमन 1:6 में पाया जाता है।'

7:16 ''शकेम'' उत्पत्ति के विवरणों के अनुसार (1) यहोशू 24:32 में लिखित यूसुफ को दफनाने के विवरण और (2) उत्पत्ति 50:13 में लिखित याकूब को दफनाने के विवरण में, स्तिफनुस द्वारा दिए गए भाषण में भिन्नता दिखाई देती है। इसका कारण यह है कि इस नगर का नाम शेकेम नहीं परन्तु हेब्रोन होना चाहिए अथवा (2) दूसरी समस्या पूर्वज है; पूर्वज याकूब नहीं, अब्राहम होना चाहिए। तो भी अब्राहम और याकूब दोनों ने भूमि खरीदी थी (देखें उत्पत्ति 23:16; 33:19)। हेब्रोन में सारा और अब्राहम दफन किए गये (देखें उत्पत्ति 49:29-31) और याकूब भी ;उत्पत्ति 50:13)। हालांकि शकेम के कब्रिस्तान के बारे में निश्चित जानकारी नहीं है, तो भी संभव है कि अब्राहम उस समय यह जमीन खरीदी होगी जब वह उत्पत्ति 12:6-7 के अनुसार शकेम में ठहरा था। बाद में याकूब ने दाम देकर उसी जगह को छुड़ाया हो (देखें उत्पत्ति 33:19; यहोशू 24:32)। यह स्पष्ट रूप से अनुमान की बात है, परन्तु इससे पता चलता है कि स्तिफनुस को पुराने नियम के इतिहास की अच्छी जानकारी थी, और विभिन्न विवरणों मे तालमेल रखने का एकमात्र उपाय यही होगा।

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 7:17-29

17''परन्तु जब उस प्रतिज्ञा के पूरे होने का समय निकट आया, जो परमेश्वर ने अब्राहम से की थी, तो मिस्र में वे लोग बढ़ गए; और बहुत हो गए। 18तब मिस्र में दूसरा राजा हुआ जो यूसुफ को नहीं जानता था। 19उसने हमारी जाति से चतुराई करके हमारे बापदादों के साथ यहां तक बुरा व्यवहार किया, कि उन्हें अपने बालकों को फेंक देना पड़ा कि वे जीवित न रहें। 20उस समय मूसा उत्पन्न हुआ। वह परमेश्वर की दृष्टि में बहुत ही सुन्दर था; वह तीन महीने तक अपने पिता के घर में पाला गया। 21परन्तु जब फेंक दिया गया तो फिरौन की बेटी ने उसे उठा लिया, और अपना पुत्र करके पाला। 22और मूसा को मिस्रियों की सारी विद्या पढ़ाई गई, और वह बातों और कामों में सामर्थी था। 23''जब वह चालीस वर्ष का हुआ, तो उसके मन में आया कि मैं अपने इस्राएली भाइयों से भेंट करूं। 24और उसने एक व्यक्ति पर अन्याय होते देखकर उसे बचाया, और मिस्री को मारकर सताए हुए का पलटा लिया। 25उसने सोचा, कि मेरे भाई समझेंगे कि परमेश्वर उसके हाथों से उनका उद्धार करेगा, परन्तु उन्होंने न समझा। 26दूसरे दिन जब वे आपस में लड़ रहे थे, तो वह वहां आ निकला; और यह कहके उन्हें मेल करने के लिये समझाया, कि 'हे पुरुषो, तुम तो भाई-भाई हो, एक दूसरे पर क्यों अन्याय करते हो?' 27परन्तु जो अपने पड़ोसी पर अन्याय कर रहा था, उसने उसे यह कहकर हटा दिया, 'तुझे किसने हम पर हाकिम और न्यायी ठहराया

है? [28]क्या जिस रीति से तूने कल मिस्री को मार डाला मुझे भी मार डालना चाहता है?' [29]यह बात सुनकर, मूसा भागा; और मिद्यान देश में परदेशी होकर रहने लगाः और वहां उसके दो पुत्र उत्पन्न हुए।

7:17 यह पद उत्पत्ति 15:12-16 की प्रतिज्ञा और निर्गमन 1:7 की उनकी भारी संख्या की ओर संकेत करता है।

7:18 "जब तक दूसरा राजा हुआ" यह निर्गमन 1:8 से लिया गया उद्धरण है। इस्राएली मिस्र से कब निकले इस विषय मे विद्वानों के बीच मतभेद रहा है और आगे भी मतभेद जारी रहेगा। मिस्र के इस नए राजा के बारे में भी मतभेद पाए जाते हैं। कुछ लोग इस नए मिस्र के राजा को सोलहवें राजकीय वंश का राजा मानते हैं जो 1445 ई.पू. हुआ। अन्य विद्वान इस राजा को 19वें राज वंश (1290 ई.पू.) का राजा मानते हैं। एक मत के अनुसार यह नया राजा मिस्र के मूल राजवंश का पहला राजा था जिसने अन्य सब शासकों को मिस्र से बाहर कर दिया था, वह बड़ा अत्याचारी था जैसाकि प्रेरि. 7:18 से स्पष्ट है। जन्म से ही मिस्री राजा कभी भी अन्य किसी जाति को सामर्थी होते नहीं देख सकता है जैसे कि इस्राएली लोग सामर्थी हो गए थे, वह हमेशा डरेगा कि कहीं उस पर आक्रमण न हो जाए।

विशेष शीर्षक: निर्गमन की तिथि

निर्गमन की तिथि के विषय में विद्वानों के अनेक विचारधाराएँ पाई जाती हैं :

A. 1 रा. 6:1 में लिखा है, "इस्राएलियों के मिस्र देश से निकलने के 480 वें वर्ष के बाद, जो सुलैमान के इस्राएल पर राज्य करने का चौथा वर्ष था, उसके जीव नामक दूसरे महीने में वह यहोवा (YHWH) का भवन बनाने लगा।"
   1. सुलैमान ने 970 ई.पू. में राज्य करना आरम्भ किया था। यह तिथि कारकर (Qarqar) के 853 ई.पू. के युद्ध के आधार पर निश्चित की गई है।
   2. मंदिर चौथे वर्ष (965 ई.पू.) में बनाया गया, और निर्गमन लगभग 1445/6 ई.पू. में हुआ।
   3. यह निर्गमन मिस्र के 18 वें वंश में होना तय करता है।
      a. अत्याचार करने वाला फिरौन थूतमौस III (Thutmose III) हो सकता है (1490-1436 ई.पू.)
      b. जिसके राज्यकाल में निर्गमन हुआ वह अमेनहोतेप II (Amenhotep II) हो सकता है (1436-1407 ई.पू.)।
         1. कुछ विद्वान मानते हैं कि अमेनहोतेप II (1413-1377 ई.पू.) के शासन के दौरान यरीहो और मिस्र के बीच राजनयिक सम्बन्ध नहीं थे
         2. अमारना मूलपाठ (Amarna Texts) अमेनहोतेप III के शासनकाल में कनान को हबीरू (Habiru) द्वारा उजाड़ देने का उल्लेख करता है । अतः इस्राएली लोग अमेनहोतेप II के शासनकाल में निकले।
         3. यदि निर्गमन का समय 13 वीं शताब्दी है तो न्यायियों का काल ज्यादा लम्बा नहीं ठहरता।
   4. इन तिथियों के बारे में संभावित समस्याएँ :
      a. सप्तूजेन्त (LXX) निर्गमन का समय 480 नहीं, परंतु 440 वर्ष बताता है।
      b. संभव है कि 480 वर्ष चालीस वर्ष की 12 पीढ़ियों का प्रतिनिधित्व करती है, इस कारण यह प्रतीकात्मक संख्या है।
      c. हारून से सुलैमान तक याजकों कि 12 पीढ़ियाँ हुईं (देखें 1 इति. 6) उसके बाद सुलैमान से दूसरे मन्दिर तक 12 पीढ़ियाँ हुईं। यूनानियों की तरह यहूदियों ने पीढियों को 40 वर्ष गिना। इस प्रकार 480 वर्ष का काल प्रतीकात्मक गिनती के रूप में प्रयुक्त होता रहा (देखें, बिमसन की पुस्तक "रीडेटिंग द एक्सोडस एण्ड कॉन्कवेस्ट" (cf. Bimson's *Redating the Exodus and Conquest*)।
   5. तीन और मूलपाठ (Texts) हैं जो तिथियों का उल्लेख करते हैं :

a. उत्पत्ति 15:13,16 (देखें प्रेरि. 7:6), 400 वर्ष की गुलामी
b. निर्गमन 12:40-41 (देखें, गला. 3:17)
    1. एम. टी. (MT) - 430 वर्ष मिस्र में निवासकाल
    2. सप्तूजैन्त (LXX) - 215 वर्ष मिस्र में निवासकाल
c. न्यायियों 11:26 - यिप्तह के दिनों में 300 वर्ष से इस्राएल बसा था (यह 1445 तिथि का समर्थन करता है)
d. प्रेरि. 13:19 - इस्राएल को कनान की सातों जातियों का नाश करने में 450 बर्ष लगे।

6. राजाओं के पुस्तक का लेखक विशेष ऐतिहासिक संदर्भों का प्रयोग करता है तथा गिनतीयों का उल्लेख नहीं करता (देखें, एडमिन थीले की पुस्तक, "अ करोनॉजी आफ द हिब्रू किंग्स", पेज 83-85 ("A Chronology of the Hebrew Kings")

B. पुरातत्व विज्ञान 1290 ई.पू. की ओर संकेत करता है अथवा 19 वां मिस्री राजवंश।
1. युसूफ इसी समय अपने पिता और फिरौन से भेंट कर सका होगा। पहला राजा फिरौन सेती I (1309-1290 ई.पू.) था, जिसने राजधानी को थेबेस (Thebes) से हटाकर नील नदी के तटवर्ती क्षेत्र अवारिस/सोअन/ तनीस में राजधानी बनाई जो पहले पुरानी हिकसोस (Hyksos) राजधानी थी। संभवतः यही वह फिरौन था जिसने अत्याचार किया।
    a. मिस्र के हिकसोस शासन के विषय यह दो सूचनाएँ सही प्रतीत होती हैं।
        1. रामसेस II के समय का एक शिलालेख पाया गया है जिस पर हिकसोस से 400 वर्ष पूर्व (1700 ई.पू.) (1700's B.C. by the Hyksos) में अवारिस (Avaris) की स्थापना पर प्रशंसा के शब्द अंकित पाए गये हैं।
        2. उत्पत्ति 15:13 की भविष्यवाणी 400 वर्ष तक के दुख के विषय में बताती है।
    b. इसका यह अर्थ निकलता है कि यूसुफ ने हिकसोस (सैमिटिक) फिरौन के शासन में सर्वोच्च पद पाया। निर्ग. 1:8 में नए मिस्री राजवंश के उदय का संकेत पाया जाता है, जो यूसुफ को नहीं जानता था।
2. मिस्री शब्द हिकसोस (Hyksos) का अर्थ है "विदेशी भूमि के शासक" और ये गैर मिस्री सैमीटिक शासक थे जिन्होंने 15 वें और 16 वें राजवंशों के दौरान मिस्र पर (1720-1570 ई.पू.) नियंत्रण रखा। कुछ विद्वान इन्हें यूसुफ के सामर्थ्यवान् होने से जोड़ते हैं। यदि हम 1720 ई.पू. में से निर्ग. 12:40 के 430 वर्ष घटाते हैं तो हम 1290 ई.पू. की तिथि पाते हैं।
3. सेती I का पुत्र रामसेस II (1290-1224 ई.पू.) था। निर्ग.1:11 में इसी रामसेस नाम का उल्लेख किया गया है जो भंडार नगर था और जिसे इब्रानी दासों द्वारा बनाया गया था। यही रामसेस जिला मिस्र में गोशेन के निकट पाया जाता था, जहां इस्राएली बस गए थे (उत्प. 47:11) अवारिस/सोअन/तनिस 1300-1100 ई.पू. में "रामसेस के भवन" कहलाते थे।
4. रामसेस II की तरह थुटमोसिस (Thutmoses III) एक महान निर्माण-कर्ता माना जाता था।
5. रामसेस II की 47 बेटियाँ थी जो अलग-अलग महलों में रहा करती थीं।
6. पुरातत्व विज्ञान के अनुसार कनान की ऊंची शहरपनाह वाले नगर (हासोर, दबीर, लाकीश आदि) नाश कर दिए गए थे परंतु 1250 ई.पू. के लगभग दुबारा बना लिए गये। यदि मान लिया जाए कि इस्राएल ने 38 वर्ष तक जंगलों में यात्राएं की तो निर्गमन की तिथि 1290 ई.पू. सही बैठती है। रामसेस के उत्तराधिकारी मरनेप्ताह (1224-1214 ई.पू.) की एक शिलालेख पर पुरातत्व विज्ञान ने यह लिखा पाया है कि इस्राएली लोग दक्षिणी कनान में रहते थे। 1220 (cf. *The Stele of Merneptah*, dated 1220 B.C.).
7. एदोम और मोआब बहुत बाद में 1300 ई.पू. के लगभग शक्तिशाली राष्ट्र बने। ये देश 15 वीं शताब्दी में संगठित राष्ट्र नहीं थे (गलूक)
8. जॉन जे. बिमसन की पुस्तक "रीडेटिंग द एक्सोडस एण्ड कान्क्वेस्ट" (*Redating the Exodus and Conquest* by John J. Bimson, published by the University of Sheffield, 1978) जिसे

यूनिवर्सिटी ऑफ शिफील्ड ने 1978 में प्रकाशित किया, पुरातत्व विज्ञान के तिथि संबंधी प्रमाणों के विरुद्ध तर्क करती है।

C. एक और नई विचारधारा पाई जाती है जिसे हिस्टरी चैनल पर देखा जा सकता है और जो "एक्सोडस डिकोडड" (Exodus Decoded) कहलाती है, जो सीधे उत्तरी मार्ग अर्थात "फिलिस्तीन के मार्ग" को मानती है, बल्कि और पहले 1445 ई.पू. में हिकसोस के काल में मानती है, (अर्थात् "द शेपर्ड किंग्स," 1630-1523 ई.पू.)।

Copyright © 2014 Bible Lessons International

7:19 वह विवरण निर्गमन 1:10 क्रमशः पदों में पाया जाता है।

7:20 ''मूसा पैदा हुआ'' यह विवरण निर्गमन 2 में पाया जाता है।

■ ''**परमेश्वर की दृष्टि में बहुत ही सुन्दर था**'' यह सुन्दरता का इब्रानी मुहावरा है (देखें निर्ग. 2:2)। योसेपस भी मूसा की सुंदरता पर अपनी टिप्पणी देता है देखें एंटीक्वीटी 2.9.6 (cf. *Antiq*. 2.9.6).

7:21 यह विवरण निर्गमन 2:5-6,10 में पाया जाता है।

■ **''उसे बाहर फेंक दिया गया''** यहां पर यूनानी शब्द एक्टीथेमी; *ektithēmi* प्रयुक्त हुआ है (प्रेरित 7 :19) जिसका अर्थ है ''फेंक देना''। मिस्त्रियों ने इस्राएली प्रजा पर दबाव डाला कि वे अपने लड़कों को त्यागें कि वे मार डाले जाएं, ताकि उनकी बढ़ती हुई जनसंख्या पर नियन्त्रण पाया जा सके।

NASB, NKJV **''फिरौन की बेटी उसे उठा ले गई''**
NRSV, NJB **''फिरौन की बेटी ने उसे गोद ले लिया''**
TEV **''राजा की बेटी ने उसे अपना लिया''**

यहां प्रयुक्त यूनानी शब्द 'अनायरिओ'(*anaireō*) का शाब्दिक अर्थ ''उठा लेना'' है। मूसा सचमुच में बहते हुए नदी के पानी में से उठा लिया गया और इस कार्य द्वारा वह फिरौन की बेटी का गोद लिया हुआ बेटा कहलाया।

7:22 फिरौन के महल में मूसा को उस जमाने की सर्वोत्तम शिक्षा प्राप्त हुई और उसने सैनिक प्रशिक्षण भी प्राप्त किया।

■ **''वह पुरुष वचन और कर्म दोनों में सामर्थी था''** यह मूसा के बाद के जीवन का सारांश हो सकता है क्योंकि जलती-झाड़ी के समय यहोवा (YHWH) परमेश्वर के साथ अपनी बातचीत के दौरान वह दावा करता है कि वह अच्छी तरह से बोल नहीं सकता है (देखें निर्गमन 4:10-17)।

7:23-24 यह वृत्तान्त निर्गमन 2:11-12 में पाया जाता है।

7:23 ''वह चालीस वर्ष का हुआ'' मैं सोचता हूं। शायद डी.एल. मूडी (D. L. Moody) ने कहा है कि मूसा के जीवन को हम 40 वर्ष के तीन भागों में बांट सकते हैं:

1. पहले चालीस वर्षों में वह सोचा करता था कि वह कुछ है (अर्थात् फिरौन के महल का पढ़ा-लिखा व्यक्ति)
2. अगले चालीस वर्षों में वह सोचने लगा कि वह कुछ भी नहीं है (अर्थात् मिद्यान देश में परदेशी होकर रहा और सीनै के मरूस्थल के भूभाग और तौर तरीकों को सीखा)

3. 40 वर्षों के तीसरे दौर में उसने जाना कि परमेश्वर एक तुच्छ व्यक्ति द्वारा क्या कुछ कर सकता है (अर्थात् उसने परमेश्वर के लोगों की प्रतिज्ञात देश में पहुंचने में अगुवाई की)

7:25 यह आयत स्तिफनुस का अनुमान है (संभवतः यहूदी परम्परा है); निर्गमन में इसका उल्लेख नहीं है।

7:26-29 यह वृत्तान्त निर्गमन 2:13-14 में पाया जाता है।

7:28 इस प्रश्न का उत्तर ‘‘नहीं’’ है।'

7:29 ‘‘यह बात सुनकर मूसा भागा’’ यह विवरण निर्गमन 2:15, 22 में पाया जाता है। मिस्री जन को मारकर जो भय मूसा से उत्पन्न हुआ वह बताता है कि फिरौन उसके इस कार्य को यह सोचकर माफ नहीं कर देगा कि वह उसकी एक पुत्री का गोद हुआ बेटा है। इस प्रकार इब्रानियों 11:27 स्पष्ट हो जाता है।

■ **‘‘मिद्यान देश में परदेशी हो गया’’** मिद्यान देश में जलती-झाड़ी के माध्यम से परमेश्वर मूसा पर प्रकट हुआ (देखें निर्ग. 3-4) तथा मिद्यान ही में सीनै पर्वत पर उसने अपनी व्यवस्था मूसा पर प्रकट की (देखें निर्ग. 19-20 अध्याय), इससे प्रता चलता है कि परमेश्वर सीमा में बंधा हुआ नहीं है कि कहाँ पर स्वयं को प्रकट करें। प्रेरि. 7:36, 44, 48, 53 में इसी बात पर बल दिया गया है कि परमेश्वर यरूशलेम के मन्दिर ही में बल्कि कहीं भी स्वयं को प्रकट कर सकता है।

■ **‘‘और वहाँ उसके दो पुत्र उत्पन्न हुए’’** यह विवरण निर्ग. 2:22; 4:20; 18:3-4 में है।

NASB (नवीनतम) पाठः प्रेरितों के काम 7:30-34
[30]‘‘जब पूरे चालीस वर्ष बीत गए तो एक स्वर्गदूत ने सीनै पहाड़ के जंगल में उसे जलती हुई झाड़ी की ज्वाला में दर्शन दिया। [31]मूसा को यह दर्शन देखकर आश्चर्य हुआ, और जब देखने के लिये वह पास गया, तो प्रभु का यह शब्द हुआ। [32]‘‘मैं तेरे बापदादों, अब्राहम, इसहाक और याकूब का परमेश्वर हूं’ तब तो मूसा कांप उठा, यहां तक कि उसे देखने का हियाव न रहा। [33]तब प्रभु ने उससे कहा, ‘अपने पांवों से जूती उतार ले, क्योंकि जिस जगह तू खड़ा है, वह पवित्र भूमि है। [34]मैंने सचमुच अपने लोगों की जो मिस्र में है, दुर्दशा को देखा है; और उनकी आह और उनका रोना सुना है; इसलिये उन्हें छुड़ाने के लिये उतरा हूं। अब आ, मैं तुझे मिस्र में भेजूंगा।’

7:30 यह विवरण निर्गमन अध्याय 3-4 में पाया जाता है।

■ **‘‘एक स्वर्गदूत**’’ पुराना नियम पाठांश में यह स्वर्गदूत वास्तव में स्वयं यहोवा (YHWH) परमेश्वर है। प्रेरि. 5:19 की टिप्पणी देखें। ध्यान दीजिए कि इस स्वर्गदूत का चित्रण किस प्रकार का हुआ हैः-

1. निर्ग. 3:2, ‘‘परमेश्वर के स्वर्गदूत ने एक कटीली झाड़ी के बीच आग की लौ में उसको दर्शन दिया’’
2. निर्ग. 3:4, ‘‘जब यहोवा (YHWH) ने देखा कि मूसा देखने को मुड़ा चला आता है,’’
3. निर्ग. 3:4, ‘‘तब परमेश्वर ने झाड़ी के बीच से उसको पुकारा’’ (i.e., *Elohim*)

देखें विशेष शीर्षकः प्रेरि. 1:6 में ईश्वरत्व के नाम Acts 1:6

■ ‘‘सीनै पहाड़’’ निम्नलिखित विशेष शीर्षक देखें

विशेष शीर्षक: सीनै पहाड़ कहाँ स्थित है

A. फिरौन से विनती करते समय कि "हमें तीन दिन के मार्ग पर जंगल में जाने दे कि अपने परमेश्वर यहोवा

(YHWH) के लिए बलिदान चढ़ाएँ" (निर्ग. 3:18; 5:3; 8:27) यदि वह सत्य बोल रहा था और उसकी भाषा लाक्षणिक नहीं थी तो उन सबको दक्षिणी सीनै प्रायद्वीप पहुँचने में अधिक समय नहीं लगता। इसलिए कुछ विद्वान पर्वत को कादेशबर्ने के मरुस्थल के निकट बताते हैं (देखें हिस्टरी चैनल पर वीडियो (द एक्सोडस डिकोडेड), "The Exodus Decoded" ।

B. परम्परागत स्थान "येबेल मूसा" कहलाता है जो सीन के जंगलों में पाया जाता है ; अनेक बातें इसका समर्थन करती हैं :
   1. पर्वत के सामने बहुत बड़ा मैदान है।
   2. व्यव. वि. 1:2 बताता है, "होरेब से कादेशबर्ने तक सेईर पहाड़ का मार्ग ग्यारह दिन का है।"
   3. शब्द "सीनै (BDB 696, KB 751) गैर-इब्रानी शब्द है। यह सीन के जंगलों से जुड़ा शब्द हो सकता है जो मरूभूमि की ओर संकेत करता है। इब्रानी में इस पर्वत को होरेब कहा जाता है (अर्थात जंगल, BDB 352, देखें, निर्ग. 3:1; 17:6; 33:6)।
   4. चौथी शताब्दी इस्वी से सीनै पर्वत एक परम्परागत स्थान रहा है। यह मिद्दान के देश में पाया जाता है जिसमें विस्तृत सीनै प्रायद्वीप और अरब सम्मिलित है।
   5. निर्गमन पुस्तक में लिखे कुछ नगरों के नाम (जैसे एलिम, दोफका, रफीदीम) (*Elim, Dophkah, Rephidim*) पुरातत्व विज्ञान द्वारा प्रमाणित हैं, जो सीनै प्रायद्वीप के पश्चिम में पाए जाते थे।

C. यहूदी लोगों ने सीनै पर्वत के भौगोलिक स्थान में कभी रुचि नहीं ली। वे विश्वास करते थे कि परमेश्वर ने उन्हें व्यवस्था दी और उत्पत्ति 15:12-21 की प्रतिज्ञा की पूर्ति की। यह स्थान कहाँ है उनके लिए इसका कोई महत्व न था और न ही उन्होंने यहाँ आकर वार्षिक तीर्थ यात्राएँ की।

D. जब तक ई. 350-388 में "पिलग्रीमेज ऑफ सिल्वीया" ("Pilgrimage of Silvia") पुस्तक न लिख ली गई, तब तक परम्परागत सीनै पर्वत का स्थान निश्चित नहीं था (देखें एफ. एफ. ब्रूस की पुस्तक "कमेन्ट्री ऑन द बुक आफ द एक्ट्स, पेज 151" (cf. F. F. Bruce, *Commentary on the Book of the Acts,* p. 151)

जिस स्थान पर यहोवा (YHWH) परमेश्वर ने अपने "दस आज्ञाएँ" दीं, उस स्थान का दूसरा नाम "होरेब" है (BDB 352, KB 350, देखें, निर्ग. 3:1; 17:6; 33:6; व्यव. वि. 1:2,6,19; 4:10,15; 5:2; 9:8; 18:16; 29:1; 1 राजा 8:9; 19:8; 2 इति. 5:10; भजन. 106:19; मत्ती 4:4)।यही मूल शब्द उन तीन शब्दों से भी संबंध रखते हैं जिनका अर्थ है "व्यर्थ" "उजाड़" या "तबाह" (BDB 352, KB 349)। ऐसा प्रतीत होता है कि "होरेब" पर्वत श्रंखला की ओर संकेत करता है तथा "सीनै" उसकी एक चोटी को दर्शाता है।

Copyright © 2014 Bible Lessons International

7:32 यह विवरण निर्गमन 3:6 में पाया जाता है।

▪ **"पिताओं"** इब्रानी मूलपाठों और यूनानी अनुवाद (सप्तूजैन्त) दानों में यहां पर एकवचन शब्द का प्रयोग है। अन्य प्रत्येक जगह यह वाक्यांश बहुवचन में है। परमेश्वर मूसा के बापदादों को जो गुलाम थे जानता था।

7:33 यह विवरण निर्गमन 3:5 में पाया जाता है। मूसा उपासना के लिए झाड़ी के निकट नहीं जाता बल्कि जिज्ञासा के साथ जाता है।

जूते उतार देने का उचित कारण निश्चित नहीं हैः
   1. संभव है जूते प्रदूषित हों (अर्थात् उसमें गोबर आदि लगा हो)
   2. जूते उतारना परस्पर घनिष्टता का प्रतीत हो सकता है।
   3. पूर्वजों का अथवा मिस्री रीति रिवाज हो सकता है।

7:34 यह विवरण निर्गमन 3:7 में पाया जाता है। धर्मवैज्ञानिक दृष्टिकोण से यह पद मेरे लिए इस कारण से महत्वपूर्ण हैः यहोवा (YHWH) परमेश्वर ने उनकी प्रार्थनाओं को सुना, उनकी दुख तकलीफों को देखा और प्रत्युत्तर

दिया। वह उन्हें बचाने के लिए नीचे उतर आया, परन्तु ध्यान दें कि उसका बचाव कार्य मनुष्य के माध्यम से हुआ। परमेश्वर ने एक अनिच्छुक मनुष्य मूसा को भेजा। परमेश्वर ने चुना कि मनुष्यों से व्यवहार करने में मनुष्य ही का उपयोग करे।

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 7:35-43

35जिस मूसा को उन्होंने यह कहकर नकारा था, 'तुझे किसने हम पर हाकिम और न्यायी ठहराया है?' उसी को परमेश्वर ने हाकिम और छुड़ानेवाला ठहराकर, उस स्वर्गदूत के द्वारा जिसने उसे झाड़ी में दर्शन दिया था, भेजा।
36यही व्यक्ति मिस्र और लाल समुद्र और जंगल में चालीस वर्ष तब अद्भुत काम और चिन्ह दिखा-दिखाकर उन्हें निकाल लाया।
37यह वही मूसा है, जिसने इस्राएलियों से कहा, 'परमेश्वर तुम्हारे भाइयों में से तुम्हारे लिये मुझ सा एक भविष्यद्वक्ता उठाएगा।'
38यह वही है, जिसने जंगल में कलीसिया के बीच उस स्वर्गदूत के साथ सीनै पहाड़ पर उससे बातें कीं, और हमारे बापदादों के साथ थाः उसी को जीवित वचन मिले, कि हम तक पहुंचाए।
39परन्तु हमारे बापदादों ने उसकी मानना न चाहा; वरन् उसे हटाकर अपने मन मिस्र की ओर फेरे।
40और हारून से कहा, 'हमारे लिये ऐसे देवता बना, जो हमारे आगे आगे चलें, क्योंकि यह मूसा जो हमें मिस्र देश से निकाल लाया, हम नहीं जानते उसे क्या हुआ?'
41उन दिनों में उन्होंने एक बछड़ा बनाकर, उसकी मूरत के आगे बलि चढ़ाई; और अपने हाथों के कामों में मगन होने लगे।
42अतः परमेश्वर ने मुंह मोड़कर उन्हें छोड़ दिया, कि आकाशगण को पूजें; जैसा भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तक में लिखा है, 'हे इस्राएल के घराने, क्या तुम जंगल में चालीस वर्ष तक पशुबलि और अन्नबलि मुझ ही को चढ़ाते रहे?
43और तुम मोलेक के तम्बू और रिफान देवता के तारे को लिए फिरते थे; अर्थात् उन मूर्तियों को जिन्हें तुमने दण्डवत् करने के लिये बनाया थाः अतः मैं तुम्हें बेबीलोन के परे ले जाकर बसाऊंगा।'

7:35 ''जिस मूसा को उन्होंने नकारा था'' परमेश्वर के लोगों ने निरन्तर परमेश्वर के अधिवक्ताओं का तिरस्कार किया (देखें प्रेरि. 7:51-52)। प्रेरि. 7:27 का भी संभवतः यही अर्थ है।

▪ **''उस स्वर्गदूत के द्वारा जिसने उसे झाड़ी में दर्शन दिया था''** परमेश्वर फिर से प्रतिज्ञात देश के बाहर एक इस्राएली के पास आया। परमेश्वर की क्रियाशील किसी स्थान तक सीमित नहीं। इस्राएल का अधिकांश इतिहास कनान के बाहर और मन्दिर के सामने जो यरूशलेम में था, घटित हुआ। इस्राएल के सम्पूर्ण इतिहास में परमेश्वर के अगुवे उन्हीं के जाति-भाइयों द्वारा नकारे गये (देखें प्रेरि. 7:9, 27-28, 35, 39) ऐसा बार बार दोहराया जाता रहा।

इस स्वर्गदूत का चित्रण एक दिव्य प्राणी के रूप में किया गया है (देखें निर्ग. 3:2,4)। ऐसा ही दिव्य शारीरिक प्रकटीकरण हम इन स्थलों पर भी देख सकते हैं: उत्पत्ति 16:7-13; 22:11-15; 31:11,13; 48:15-16; निर्ग. 13:21; 14:19; न्यायियों 2:1; 6:22-23; 13:3-22; जकर्याह 3:1-2)। तौभी हमें जानना चाहिए कि ''परमेश्वर का स्वर्गदूत'' सदैव ही दिव्य शारीरिक प्रकटीकरण नहीं होता है; कभी कभी यह स्वर्गदूत मात्र एक सन्देशवाहक ही होता है (देखें, उत्पत्ति 24:7,40; निर्ग. 23:20-23; 32:34; गिनती 22:22; न्यायियों 5:23; 2 शमू. 24:16; 1 इति. 21:15 क्रमशः; जकर्याह 1:11-13)।

7:36 यह परमेश्वर के अद्भुत व महान् कार्यों का सारांश है जो उनसे मूसा व हारुन द्वारा किये।

7:37-38 यह व्यवस्थाविवरण 18:15 से लिया गया मसीह संबंधी उद्धरण है। स्तिफनुस इस्राएलियों के मध्य परमेश्वर की उपस्थिति को स्वीकार करता है और बताता है कि परमश्ेवर जंगलों में एक स्वर्गदूत के रूप में और मूसा के उत्तराधिकारी भविष्यद्वक्ता मसीह के रूप में, उनके मध्य उपस्थित था। ऐसा कहकर वह मूसा का महत्व कम नहीं करता बल्कि मूसा को विशेष आदर देता है।

7:38 ''कलीसिया'' यहाँ यूनानी शब्द एक्लीसिया *ekklesia* चर्च के रूप में नहीं बल्कि एक समूह के रूप में प्रयुक्त हुआ है। देखें प्रेरि. 5:11 में विशेष शीर्षकः कलीसिया।

■ **"स्वर्गदूत के साथ सीनै पहाड़ पर उससे बातें कीं"** रब्बी लोग दृढ़तापूर्वक कहा करते थे कि स्वर्गदूत यहोवा (YHWH) परमेश्वर और व्यवस्था दिए जाने में मध्यस्थ थे (देखें प्रेरि. 7:53 की टिप्पणी) यह भी संभव है कि स्वर्गदूत स्वयं यहोवा (YHWH) परमेश्वर की ओर संकेत करता है (देखें निर्ग. 3:21 तथा इन पदों से तुलना करें, निर्ग. 14:19; 32:34; गिनती 20:16; न्यायियों 2:1)।

7:39 "परन्तु हमारे पिताओं ने उसकी मानना न चाहा" पुराने नियम के विद्रोही स्वभाव को स्तिफनुस यहूदियों के स्वभाव से जोड़ते हुए कहता है कि उन्होंने सदैव परमेश्वर के अगुवों का तिरस्कार किया है और अब उन्होंने मसीह का तिरस्कार किया है।

■ **"उसे ओतप्रोत किया "** यह विवरण गिनती 14:3-4 में पाया जाता है।

7:40-41 यह विवरण निर्ग. 32 में पाया जाता है। यह मूर्तिपूजा नहीं थी बल्कि परमेश्वर की शारीरिक प्रतिमा की रचना करना था। बाद में यह प्रकृति-पूजा में परिवर्तित हो गया।

7:41 स्तिफनुस सोने के बछड़े को एक मूर्ति बताता है और इस ऐतिहासिक घटना को आमोस 5 से जोड़ता है, जिसका अर्थ है कि इस्राएल जाति का सम्पूर्ण जीवन मूर्तिपूजक और परमेश्वर के प्रति विद्रोह से परिपूर्ण रहा।

7:42 "परमेश्वर ने मुहँ मोड़कर उन्हें छोड़ दिया, और उन्हें सेवा करने के लिए दिया" पद 42 और 43 आमोस 5:25-27 से लिया गया उद्धरण है। इसमें आमोस दृढ़तापूर्वक कहता है कि इस्राएल जाति सदैव पराए देवताओं को बलिदान चढ़ाती रही है। उसका यही इतिहास रहा है (देखें यहोशू 24:20)। ये हमें रोमियों 1:24, 25, 28 में लिखित परित्याग के सशक्त वचनों का स्मरण कराते हैं।

■ "**स्वर्ग के मेज़बान**" यह अश्शूरियों और बेबीलोनियों की नक्षत्र-उपासना की ओर संकेत है (देखें, व्यवस्थाविवरण 17:3; 2 राजा 17:16; 27:3; 2 इतिहास 33:3,5; यिर्मयाह 8:2; 19:13)। यहां इब्रानी मूलपाठ आमोस 5:25-27, यूनानी मूलपाठ (सप्तूजैन्त) तथ स्तिफनुस के उद्धरणों के मध्य अन्तर पाया जाता है जैसेः-

1. चन्द्रमा देवता के नाम का अन्तर। इब्रानी मूलपाठ में इसका नाम है, कीवनोर कायवान (*kywn* or *kaiwann*,), इस नक्षत्र का अश्शूरी नाम है सतूने और सप्तूजैन्त (LXX) में रायपनौर रायफान (*rypn* or *raiphan*)। यह रेपा भी हो सकता है जो मिस्रियों में नक्षत्र देवता है।
2. यहां स्तिफनुस कहता है "मैं तुम्हें "बेबीलोन" के परे ले जाकर बसाऊंगा" जबकि इब्रानी मूलपाठ और यूनानी मूलपाठ (LXX) सप्तूजैन्त बताते हैं, "मैं तुम्हें "दमिश्क" के परे ले जाकर बसाऊँगा।"

आमोस का ऐसा कोई हस्तलेख उपलब्ध नहीं है जिसमें अश्शूरियों के दासत्व का वर्णन उस प्रकार का हो जैसा स्तिफनुस बताता है। संभवतः स्तिफनुस अश्शूरियों के दासत्व और बेबीलोन के दासत्व में जाने की घटनाओं को मिला देता है, परन्तु दासत्व के स्थान के नाम बदल देता है।

नक्षत्रों की उपासना मैसोपोटामिया में आरम्भ हुई, और समस्त सीरिया और कनान में फैल गई (देखें, अय्यूब 31:26-27)। ई.पू. चैदहवीं शताब्दी की पुरातत्व खोजों में इन नक्षत्रों के देवी-देवताओं के नामों के स्थान पाए गये हैं।

■ **"भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तक में"** यह उन लेखों (स्क्रोल) की ओर संकेत करता है जिनमें छोटे भविष्यद्वक्ताओं का भी उल्लेख पाया जाता है (देखें प्रेरि. 13:40)। प्रेरि. 7:42-43 में जो उद्धरण आया है, वह सप्तूजैन्त की आमोस 5:25-27 का है। प्रेरि. 7:42 में जो प्रश्न है, "क्या जंगल में चालीस वर्ष तक पशुबलि और अन्नबलि मुझ ही को चढ़ाते रहे? इसका जवाब है, "नहीं"।

7:43 "मोलेक" राजा के लिये इब्रानी में जिन अक्षरों का प्रयोग किया जाता है वे हैं म ल क (बी डी बी 574)।

(BDB 574) कनानियों के अनेक देवी-देवताओं के नाम इन्हीं तीन अक्षरों म ल क से मिलकर बने हैं जैसे मिलकोम, मोलेक अथवा मोलोक इत्यादि (*Milcom*, *Molech*, or *Moloch*. *Moloch)* I मोलेक देवता अमोरियों का सबसे मुख्य देवता है जिसे बाल-बच्चों की बलि चढ़ाई जाती थी ताकि समाज को और देश को उन्नति मिले और स्वास्थ्य अच्छा रहे (देखें, लैव्य. 20:2-5; व्यवस्थाविवरण 12:31; 1 राजा 11::5,7,33; 2 राजा 23:10,13,14; यिर्मयाह 7:31; 32:35)। ए.टी. रौबर्टसन अपनी पुस्तक 'वल्र्ड पिक्चर इन द न्यूटैस्टामैन्ट, वाल्यूम 3, पेज 93 (A. T. Robertson *World Picture In The New Testament,* Vol. 3, p. 93) पर बताते हैं कि "मोलेक बैल के सिर की आकृति वाली एक मूर्ति होती थी जिसमें दो हाथ आगे की ओर फैले रहते थे, उन हाथों पर बच्चों को रख दिया जाता था, और नीचे से आग जला दी जाती थी। परन्तु लैव्य. 18:21 के आधार पर जहाँ लिखा है, "अपनी सन्तान में से किसी को मोलेक के लिये होम करके न चढ़ाना" अनेेक विद्वान मानते हैं कि लोग बच्चों को जलाते नहीं थे परन्तु उन्हें समर्पित करते थे ताकि वे मोलेक में मन्दिर के वेश्यावृत्ति करने वाले सेवक बनकर रहें। यही व्यभिचार उनकी उपासना थी।

- **"मूर्तियों"** नीचे विशेष शीर्षक में देखें

विशेष शीर्षक: आकृति (ट्यूपॉस)

शब्द टयूपॉस (Tupos) के अनेक अर्थ हो सकते हैं :

1. मोल्टन और मिलीगेन की पुस्तक द वेकाबलरी ऑफ द ग्रीक न्यू टैस्टामेन्ट पेज 645 ("*The Vocabulary of the Greek New Testament*" p.645)
    a. नमूना (Pattern)
    b. योजना (Plan)
    c. लिखने का तरीका (Manner of Writing)
    d. आदेश अथवा राजाज्ञा (Decree or Rescript)
    e. निर्णय अथवा दंड की आज्ञा (Decision or Sentence)
    f. शरीर का बलिदान (Model of Human Body as Votive Offering to the Healing God)
    g. आदेशात्मक क्रिया (Verb used in the sense of Enforcing the Precepts of the Law)
2. लुआ और निदा की पुस्तक ग्रीक-इंग्लिश लैक्सिकन (Louw and Nida, *Greek-English Lexicon*, vol. 2, P. 249)
    a. दाग (Scar) (यूहन्ना 20:25)
    b. मूर्ति (Image) (प्रेरि. 7:43)
    c. नमूना (Model) (इब्रा. 8:5)
    d. उदाहरण (Example) (1 कुरि. 10:6; फिलि. 3:17)
    e. प्रतीक (Archetype) (रोमि. 5:14)
    f. प्रकार का (Kind) (प्रेरि. 23:25)
    g. विषय-वस्तु (प्रेरि. 23:25)
3. हैरल्ड के. मोल्टन, "द अनलिटिकल ग्रीक लैक्सीकन रिवाईज़्ड", (Harold K. Moulton, *"The Analytical Greek Lexicon Revised"* page no 411)
    a. चिन्ह, निशान (Impression, Mark) यूह. 20:25
    b. रूपरेखा (Delineation)
    c. मूर्ति (Image) (प्रेरि. 7:43)
    d. सूत्र, योजना (Formula, Scheme) (रोमि. 6:17)
    e. अभिप्राय (Purport) (प्रेरि. 23:25)
    f. प्रतिरूप (Counter Part) (1 कुरि. 10:6)
    g. उदाहरण स्वरूप (An Anticipative Figure) (रोमि. 5:14; 1 कुरि. 10:11)
    h. नमूना (A Model Pattern) (प्रेरि. 7:44; इब्रा. 8:5)

i. आदर्श नमूना (A Model Pattern) (फिलि. 3:17; 1 थिस्स. 1:7; 2 थिस्स. 3:9; 1 तीम. 4:12; 1 पत. 5:3)।

याद रखना चाहिए कि शब्दकोश अर्थ निर्धारित नहीं करता है ; जब शब्द वाक्य/पैराग्राफ/संदर्भ में इस्तेमाल किया जाता है, तब उसका अर्थ निर्धारित होता है। किसी शब्द की परिभाषा लेकर, उसे उसी प्रकार के अन्य शब्दों पर लागू करने से सावधान रहिए, शब्द का सही अर्थ केवल सन्दर्भ से ही पता चल सकता है ; संदर्भ के अनुसार ही शब्द का अर्थ लगाएँ।

Copyright © 2014 Bible Lessons International

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम: 7:44-50

[44]साक्षी का तम्बू जंगल में हमारे बापदादों के बीच में था; जैसा उसने ठहराया, जिसने मूसा से कहा, 'जो आकार तूने देखा है, उसके अनुसार इसे बना।' [45]उसी तम्बू को हमारे बापदादे पूर्वकाल से पाकर यहोशू के साथ यहां ले आए; जिस समय कि उन्होंने उन अन्यजातियों का अधिकार पाया, जिन्हें परमेश्वर ने हमारे बापदादों के सामने से निकाल दिया; और वह दाऊद के समय तक रहा। [46]उस पर परमेश्वर ने अनुग्रह किया, अतः उसने विनती की, कि वह याकूब के परमेश्वर के लिये निवास स्थान बनाए। [47]परन्तु सुलैमान ने उसके लिये घर बनाया। 48परन्तु परम प्रधान हाथ के बनाए घरों में नहीं रहता, जैसा कि भविष्यद्वक्ता ने कहा। [49]कि प्रभु कहता है, स्वर्ग मेरा सिंहासन और पृथ्वी मेरे पांवों तले की पीढ़ी है, मेरे लिये तुम किस प्रकार का घर बनाओगे? और मेरे विश्राम का कौन सा स्थान होगा? [50]क्या ये सब वस्तुएं मेरे हाथ की बनाई नहीं?

7:44 यह विवरण निर्गमन अध्याय 25-31; 36-40 में पाया जाता है। साक्षी का तम्बू बनाने से संबंधित संपूर्ण योजना का प्रकाशन मूसा को सीनै पहाड़ पर दिया गया। नए नियम की इब्रानियों की पुस्तक में स्वर्गीय तम्बू अथवा पवित्र स्थान का वर्णन किया गया है (प्रेरि. 8:5-6; 9:11, 23) जिसका प्रतिरूप पृथ्वी पर पाया जाने का तम्बू था। पिछले अध्याय 6 में स्तिफनुस ने अपने ऊपर लगाए गए इस आरोप का जवाब दिया था कि वह मूसा के विरोध में बातें करता है (प्रेरि. 6:11), परन्तु अब वह अपने ऊपर लगाए गये दूसरे आरोप का जवाब देता है कि वह मन्दिर के विरोध में बोलता है (प्रेरि. 6:13)।

- **"आकार"** देखें प्रेरि. 7:43 पर विशेष टिप्पणी।

7:45 यह कनान पर विजय (1400 अथवा 1250 ई.पू.) से लेकर दाऊद के काल (1011 ई.पू. से 97:/70 ई.पू.) की काल-अवधि है, हैरिसन 973 ई. पू.; यंग 961 ई.पू.; ब्राइट)।

7:46 यह 2 शमूएल 17 की ओर संकेत करता है जो अति महत्वपूर्ण पाठांश है। यह दाऊद के साम्राज्य की परमेश्वर की ओर से स्थापना थी।

7:47 "सुलैमान जिसने उसके लिये घर बनाया" यह विवरण 1 राजा 6-8 अध्यायों तथा 2 इतिहास 1-6 अध्यायों में पाया जाता है।

7:48 यह 1 राजा 8:27 तथा 2 इतिहास 6:18 में पाए जाने वाले सुलैमान के कथनों के समान है।

7:49-50 यह उद्धरण सप्तूजैन्त के यशायाह 66:1-2 से लिया गया है। ध्यान देने की बात यह है कि सुलैमान भी जानता था कि सृष्टिकर्त्ता परमेश्वर एक भवन में नहीं समा सकता है।

क्या ये पद गैरयहूदी लोगों के, यहूदी लोगों में शामिल होने के संबंध में मात्र तर्क-वितर्क है या इसमें कुछ सच्चाई पाई जाती है। यदि कुछ सच्चाई है तो वह छिपी हुई है। परन्तु सुलैमान ने स्वयं अनुभव किया कि मन्दिर वह

स्थान है जहाँ पर आकर संसार यहोवा (YHWH) परमेश्वर से भेंट करता है (देखें, 1 राजा 8:41-43)। इससे पहले कि यीशु की शिक्षाओं के इस विश्वव्यापी पहलू को उसके प्रेरित जानें, कलीसिया में सम्मिलित होने वाले अन्यजाति यूनानी-भाषी यहूदियों ने अर्थात् सात चुने हुए लोगों ने (प्रेरि. 6) इस विश्वव्यापी पहलू को पहचाना और संपूर्ण विश्व में सुसमाचार प्रचार पर निकल पड़े (देखें, मत्ती 28:18-20; प्रेरि. 1:8)। संभवतः स्तिफनुस प्रेरि. 7:50 में इसी बात को स्वीकार करता है।

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 7:51-53

[51]हे हठीले, और मन और कान के खतनारहित लोगो, तुम सदा पवित्र आत्मा का विरोध करते हो। जैसा तुम्हारे बापदादे करते थे, वैसे ही तुम भी करते हो। [52]भविष्यद्वक्ताओं में से किसको तुम्हारे बापदादों ने नहीं सताया? उन्होंने उस धर्मी के आगमन का पूर्वकाल से सन्देश देनेवालों को मार डाला, और अब तुम भी उसके पकड़वानेवाले और मार डालनेवाले हुए। [53]तुमने स्वर्गदूतों के द्वारा ठहराई हुई व्यवस्था तो पाई, परन्तु उसका पालन नहीं किया।

7:51 ''तुम पुरषों'' स्तिफनुस यहूदी लोगों और अगुवों के भूतकालीन विद्रोही स्वभाव की चर्चा करना बन्द करके अब वर्तमान समय के यहूदी लोगों और अगुवों की बातचीत करता है जो मन्दिर में उसका उपदेश सुन रहे थे। वे सब यहोवा (YHWH) के बैरी थे, और बैरी हैं।

■**''हठीले''** मूसा ने इस्राएल की सन्तानां को बार बार हठीले लोग कहा था। स्तिफनुस भी वही बात दोहराता है ;देखें निर्ग. 32:9; 33:3,5; 34:9; व्यव. 9:6)।

■**''मन के खतनारहित''** इस इब्रानी मुहावरे का अर्थ है अविश्वास योग्य, बेईमान और विश्वासघाती लोग (देखें लैव्य. 26:41; यिर्म. 9:25-26; यहेज. 44:7) यह व्यवस्थाविवरण 10:16 यिर्म. 4:4 का विपरीत है।

■**''और कानो के''** यह मुहावरा उनकी परमेश्वर के सन्देश को न सुनने और उनका पालन न करने की भावना को दर्शाता है (देखें यिर्मयाह 6:10)।

■**''सदा पवित्र आत्मा का विरोध करते हो''** यह यशायाह 63:10 से मिलता-जुलता पद है। यशायाह 63:9,11-14 में परमेश्वर के प्रेम की प्रशसा की गई है, परन्तु फिर भी लोग अविश्वास योग्य रहे।

7:51b-52 ये वर्तमान यहूदी नेताओं के विरुद्ध कड़े शब्द हैं, प्राचीन इस्राएली नेता भी दुष्ट थे, जिन्होंने परमेश्वर के सन्देशवाहकों का घात किया था, और अब यहूदियों ने मसीह का घात किया है (प्रेरि. 3:14; 5:28)।

7:52 ''धर्मी'' प्रेरि. 3:14 और 22:14 में ये शब्द यीशु के लिए प्रयुक्त किए गए हैं। प्रेरि. 3:14 की टिप्पणी में ''धार्मिकता'' शीर्षक में विस्तृत जानकारी देखें।

7:53 ''स्वर्गदूतों द्वारा अभिषिक्त '' यह व्यवस्थाविवरण 33:2 सप्तूजैन्त से लिया गया रब्बियों का कथन है जो मानते थे कि परमेश्वर ने स्वर्गदूतों के माध्यम से मूसा को व्यवस्था दी है और इसकी पुष्टि गलातियों 3:19 तथा इब्रानियों 2:2 से भी होती है।

■ **''परन्तु उसका पालन नहीं किया''** स्तिफनुस अपना बचाव ''सुनो'' कह कर आरम्भ करता है (बी. डी. बी. 1033) जो हमारा ध्यान इब्रानी शेमा ''हे इस्राएल सुन, और पालन कर'' (व्यवस्थाविवरण 6:4) की ओर ले जाता है। स्तिफनुस और बाद में यीशु का भाई याकूब दोनों दृढ़तापूर्वक कहते हैं कि ''वचन पर चलन वाले बनो, और केवल सुनने वाले ही नहीं'' (देखें याकूब 1:22-23; यीशु ने और पौलुस ने भी यही कहा (देखें, मत्ती 7:24-27; लूका 11:48; यूहन्ना 13:17: रोमियों 2:13)।

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 7:54-60
[54]ये बातें सुनकर वे जल गए और उस पर दांत पीसने लगे। [55]परन्तु उसने पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होकर स्वर्ग की ओर देखा और परमेश्वर की महिमा को और यीशु को परमेश्वर की दाहिनी ओर खड़ा देखकर [56]कहा, "देखो, मैं स्वर्ग को खुला हुआ, और मनुष्य के पुत्र को परमेश्वर की दाहिनी ओर खड़ा हुआ देखता हूं।" [57]तब उन्होंने बड़े शब्द से चिल्लाकर कान बन्द कर लिए, और एक साथ उस पर झपटे। [58]और उसे नगर के बाहर निकालकर उस पर पथराव करने लगे, और गवाहों ने अपने कपड़े शाऊल नामक एक जवान के पांवों के पास उतार कर रख दिए। [59]वे स्तिफनुस को पत्थरवाह करते रहे, और वह यह कहकर प्रार्थना करता रहा, "हे प्रभु यीशु, मेरी आत्मा को ग्रहण कर।" [60]फिर घुटने टेककर ऊंचे शब्द से पुकारा, "हे प्रभु, यह पाप उन पर मत लगा", और यह कहकर वह सो गया।

7:54 "ये" यह वाक्यांश सन्हेद्रिन ;महासभा) के सदस्यों की ओर इशारा करता है (देखें प्रेरि. 6:15)। विभिन्न अनुवादों में इस प्रकार है:

NASB	**"जल गए"**
NKJV	**"हृदय छिद गए"**
NRSV	**"वे क्रोधित हो गए"**
TEV	**"वे क्रोध से भर गए"**
NJB	**"क्रोध से भर गए"**

यह अपूर्ण कालिन क्रिया का सूचक वाक्यांश है। इसका शाब्दिक अर्थ अत्यन्त क्रोध से भर जाना (देखें प्रेरि. 5:33)। इन यहूदी अगुवों पर स्तिफनुस के भाषण द्वारा भारी प्रहार हुआ, बजाए इसके कि वे पश्चाताप् करते, वे हमेशा की तरह अत्यन्त क्रोध से भर गए और घात करने पर उतर आए (देखें प्रेरि. 5:33)।

▪ **" दाँत पीसने लगे"** यह अत्यन्त क्रोधित होने का चिन्ह है (देखें, अय्यूब 16:9; भजन 35:16; 37:12; सभो. 2:16)।

7:**55 "पवित्र आत्मा...परमेश्वर...यीशु"** इस पद में त्रिएक परमेश्वर के उल्लेख पर ध्यान दें। प्रेरि. 2:32-33 की टीका देखें।

▪ **"पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होकर"** प्रेरितों के काम की पुस्तक में सुसमाचार प्रचार के लिये पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होने की धारणा बड़ी अद्‌भुत धारणा है (देखें प्रेरि. 2:4; 4:8,31 यहां यूनानी शब्द प्रयुक्त हुआ है; प्रेरि. 6:3,5,8; 7:55; 11:24, यहां पर यूनानी शब्द प्लेरेस हुआ है। देखें प्रेरि. 5:17 की व्याख्या। (i.e., *plēroō*, cf. Acts 2:4; 4:8,31; *plērēs*, cf. Acts 6:3,5,8; 7:55; 11:24)

पवित्रात्मा से संबंधित बाइबल की सच्चाईयाँ:

1. पवित्र आत्मा का व्यक्तित्व (देखें यूहन्ना 14-16 अध्याय)
2. पवित्र आत्मा का बपतिस्मा (देखें, 1 कुरि. 12:13)
3. पवित्र आत्मा के फल (देखें, गलातियों 5:22-23)
4. पवित्र आत्मा के वरदान (देखें, 1 कुरि. 12 अध्याय)
5. पवित्र आत्मा की परिपूर्णता (देखें, इफिसियों 5:18)

उपरोक्त पाँचों बातों में से प्रेरितों के काम की पुस्तक रु पाँचवीं बात पर अधिक बल देती है। प्रारम्भिक कलीसिया के अगुवे प्रभु यीशु मसीह के सुसमाचार को सामर्थ के साथ प्रचार करने के लिए बार बार पवित्र आत्मा की अद्‌भुत सामर्थ से परिपूर्ण किये जाते थे। स्तिफनुस का भाषण जो पवित्र आत्मा की सामर्थ से परिपूर्ण था, उसके लिए उसे अपना जीवन बलिदान करना पड़ा।

■**"गौर से देखा"** लूका को ये शब्द बड़े प्रिय लगते हैं (देखें, लूका 4:20; 22:56; प्रेरि. 1:10; 3:4,12; 6:15; 7:55; 10:4; 11:6; 13:9; 14:9; 23:1)। यहूदियों की प्रार्थना विधि के अनुसार स्तिफनुस ने स्वर्ग की ओर देखा। सभी यहूदी इसी प्रकार प्रार्थना किया करते थे, परन्तु प्रार्थना करने के बजाए परमेश्वर ने उसे सौभाग्य प्रदान किया कि वह सीधा स्वर्ग में देख सके।

■ **"परमेश्वर की महिमा"** यहाँ ध्यान दीजिए कि स्तिफनुस यह नहीं कहता कि उसने परमेश्वर को देखा, बल्कि वह कहता है कि उसने परमेश्वर की महिमा को देखा। परमेश्वर का दर्शन करके कोई भी जीवित नहीं रह सकता है (देखें, निर्गमन 33:20-23)। अय्यूब विश्वास करता था कि वह परमेश्वर का दर्शन प्राप्त करेगा (देखें, अय्यूब 19:25-27; प्रेरि. 7:55)। यीशु ने प्रतिज्ञा की है कि जिनके मन शुद्ध हैं वे परमेश्वर को देखेंगे (देखे, मत्ती 5:8)। देखें विशेष शीर्षक: प्रेरि. 3:13 में "महिमा" (डोक्सा) (*DOXA*)

■ **"यीशु परमेश्वर के दाहिनी ओर खड़ा हुआ"** यीशु का परमेश्वर के दाहिनी ओर खड़ा होना, (देखें विशेष विषय प्रेरित 2:33)परमेश्वर की दिव्य सामथ्र्य और अधिकार का प्रतीक है। वह अपने सामथ्र्य में खड़ा होकर प्रथम शहीद का स्वागत करता है।

परमेश्वर स्वयं को इस तौर से स्तिफनुस पर प्रकट करता है कि वह सरलता से उसके प्रकाशन को ग्रहण कर सके। इसका अर्थ यह नहीं कि:

1. स्वर्ग "ऊपर" है। और
2. परमेश्वर सिंहासन पर बैठा है।

यह पद हमें यीशु की चिन्ता के बारे में बताता है, जो वह हमारी करता है, परन्तु हमें ऐसी भाषा के प्रयोग से सावधान रहना चाहिए जिसमें परमेश्वर पर मानव गुण लगाए जाते हैं। न ही हमें बाइबल के पाठांशों को शब्दशः लेना चाहिए। परमेश्वर अपना प्रकाशन हमें हमारे ज्ञान के अनुसार देता है ताकि हम उसे समझ सकें। पवित्र और नश्वर मानवजाति कभी भी पूर्णरूप से आत्मिक संसार की बातें नहीं समझ सकती है। परमेश्वर हमारी समझ और सांस्कृतिक परिस्थितियों के अनुसार हम से वार्तालाप करता है और उसी शब्दावली का और रूपकों का इस्तेमाल करता जिन्हें हम समझ सकते हैं।

7:56 "मनुष्य का पुत्र" स्पष्ट रूप से स्तिफनुस प्रेरि 5:52 के पवित्र और धर्मी जन को यीशु के रूप में जानता था, और जो लोग उसकी बातें सुन रहे थे, वे भी उसके इस अंगीकार को समझ रहे थे कि यीशु ही मसीह है अर्थात् अभिषिक्त जन है। पुराने नियम में "मनुष्य के पुत्र" शब्दों का दो प्रकार का उपयोग था:

1. यह शब्द सामान्य व्यक्ति के संबंध में उपयोग किए जाते थे जैसे (यहेज. 2:1; भजन 8:4)
2. इस शब्द का उपयोग दिव्य-व्यक्ति के लिए हुआ है (अर्थात् मसीह के लिए) देखें दानि. 7:13-14; भजन 110:1

इस प्रकार इस शब्द "मनुष्य के पुत्र" में मानवता और दिव्यता दोनों भाव छिपे हैं। यही कारण है कि यीशु ने अपने लिए इन शब्दों का प्रयोग किया। अन्य किसी रब्बी अथवा किसी जन ने इस शब्द का प्रयोग अपने लिए नहीं किया है। यीशु को छोड़कर, स्तिफनुस ने यहाँ पर इन शब्दों "मनुष्य का पुत्र" का उपयोग किया है (यूहन्ना 12:34)।

7:57-58 जो यहूदी स्तिफनुस का भाषण सुन रहे थे उन्होंने समझा कि यीशु को मनुष्य का पुत्र घोषित करके वह परमेश्वर की निन्दा कर रहा है (देखे, दानि. 7:13)। इन एकेश्वरवादी (देखें विशेष विषय प्रेरित 2:39)यहूदियों के लिए ये शब्द परमेश्वर की निन्दा करने वाले कठोर वचन थे और मूसा की व्यवस्था का उल्लंघन करना था (देखें, लैव्य. 24:14-16; व्यव.वि. 13:9; 17:7)। उनकी दृष्टि में या तो स्तिफनुस का कथन सत्य पर, या फिर वह मृत्यु के योग्य एक निन्दा करने वाला था। यीशु के दावों में बीच की कोई बात नहीं हो सकती थी। वे दावे या तो सत्य थे, या फिर झूठे थे (देखें, यूहन्ना 14:6-9)।

7:57 "एक साथ उस पर झपटे" ये वही शब्द हैं जिन्हें लूका द्वारा अक्सर प्रारम्भिक कलीसिया की एकता को दर्शाने के लिए प्रयुक्त किया गया है (देखें, प्रेरि. 1:14; 2:46; 5:12; 15:25)। महासभा (सन्हेद्रिन) स्तिफनुस का तिरस्कार करने और उस पर क्रोधित होने में एकमत थी (देखें, प्रेरि. 18:12 तथा 19:29 जहां आखाया और इफिसुस के गैर यहूदी लोग एकमत होकर पौलुस का और मसीहीयों का विरोध करते हैं)

7:58 "उसे नगर के बाहर निकालकर", यरूशलेम पवित्र नगर होने के कारण उसके अन्दर कोई भी जन मार डाला नहीं जा सकता था।

▪**"उस पर पथराव करने लगे"** अक्सर कहा जाता है कि रोमी साम्राज्य के अधीन यहूदियों को राजधानी में दण्ड देने का अधिकार नहीं था। परन्तु यह कार्य बताता है कि यह सच बात नहीं है। भीड़ का उपद्रव सरलता से रोकना कठिन कार्य था।

▪**"शाऊल नामक एक जवान"** यहूदियों में 40 वर्ष तक की आयु के व्यक्ति को जवान कहा जाता था। यह पहला सन्दर्भ है जहाँ हम तरसुस निवासी शाऊल के बारे में पढ़ते हैं जो बाद में पौलुस प्रेरित के नाम से प्रचलित हुआ। पौलुस ने स्तिफनुस का भाषण सुना था और संभव है कि उसने किलिकिया के आराधनालय में भी उसे से भेंट की हो (देखें प्रेरि. 6:9)। इसके बाद से उसने मसीही लोगों को सताना आरम्भ कर दिया।

7:59 "प्रभु यीशु, मेरी आत्मा को ग्रहण कर" यह आदेशात्मक मध्य-भूतकालिन क्रिया है। यहां ध्यान दीजिए कि स्तिफनुस विश्वास करता था कि वह स्वर्ग में प्रभु के साथ रहेगा (देखें 2 कुरि. 5:6,8) न कि उस स्थान पर रहेगा जहाँ मृतक रहते हैं, जो इब्रानी में शिओल कहलाता है (देखें विशेष शीर्षक प्रेरि. 2:27 की टीका)। संभवतः स्तिफनुस ने यीशु को क्रूस पर चढ़ाए जाने की घटना को स्वयं देखा था, अथवा इस घटना के विषय में विस्तृत जानकारी प्राप्त की थी, क्योंकि वह उन्हीं शब्दों का उच्चारण करता है जो यीशु ने क्रूस पर से कहे थे (अर्थात् प्रेरि. 7:59 और 60; देखें लूका 23:34, 46)।

यह रोचक बात है कि स्तिफनुस यीशु से प्रार्थना करता है जैसा कि चेलों ने प्रेरि. 1:24 में की थी, परन्तु शेष नए नियम में प्रार्थनाएँ, पुत्र के नाम में, पिता से की गईं हैं।

7:60 "अपने घुटने टेककर" प्रायः पत्थरवाह किए जाने का अनुभव शीघ्र नहीं होता है। यह पद पढ़ने से पता चलता है कि इसका अहसास करने में काफी समय लगा।

▪ **"ऊँचे शब्द से पुकारा"** ये शब्द भी यीशु के अनुभव का अनुकरण हैं। ये शब्द यहोवा (YHWH) के लिए जितने महत्वपूर्ण हैं, उतने ही भीड़ के लिए हैं। ये शब्द शाऊल के कानों में अवश्य गूंजते रहे होंगे।

▪"**वह सो गया"** ये बाइबल की भाषा में मृत्यु का प्रतीक है (उदाहरणार्थ, अय्यूब 3:13; 14:12; भजन 76:5; 2 शमू. 7:12; 1 राजा 2:10; यिर्म. 51:39,57; दानि. 12:2; मत्ती 27:52; यूहन्ना 11:11; प्रेरि. 7:60; 13:36; 1 कुरि. 15:6, 18,20; 1 थिस्स. 4:13; 2 पत. 3:4)। यह "आत्मा के सो जाने" के सिद्धान्त का समर्थन नहीं करता।

विचार विमर्श के लिये प्रश्न

यह अध्ययन में मार्गदर्शन करने की टीका है, इसका अर्थ है कि आप बाइबल की अपनी व्याख्या करने के स्वयं ही जिम्मेदार हैं। हम में से प्रत्येक को उसी ज्ञान के अनुसार चलना चाहिए जो हमारे पास है। व्याख्या करने के कार्य में आप आपकी बाइबल और पवित्र आत्मा केन्द्रिय स्थान रखते हैं। यह कार्य व्याख्याकार पर न छोड़ दें।

निम्नलिखित प्रश्न अपनी सहायता के लिए दिए गए है ताकि आप पुस्तक के गम्भीर विषयों पर पुनर्विचार कर सकें। वे आपके विचारों को आन्दोलित करने के लिए हैं, इनके अलावा और भी प्रश्न हो सकते हैं:

1. स्तिफनुस के कथनों का उद्देश्य क्या था?

2. यहूदियों के विषय में ये क्या दर्शाते हैं?
3. यहूदी क्यों अत्यधिक क्रोधित थे?
4. यीशु किस प्रकार मूसा के समान भविष्यद्वक्ता था? (पद 7:37)
5. प्रेरि. 7:49-50 में यशायाह 66:1-2 का उद्धरण क्यों अत्यन्त महत्वपूर्ण है?
6. स्तिफनुस द्वारा देखे गए यीशु के दर्शन में कौन सी बात महत्वपूर्ण है?

Copyright © 2013 Bible Lesson International

प्रेरितों के काम-8
बाइबल के विभिन्न आधुनिक अनुवादों में पैराग्राफ-विभाजन

UBS[4]	NKJV	NRSV	TEV	NJB
शाऊल द्वारा कलीसिया का सताया जाना	शाऊल द्वारा कलीसिया का सताया जाना	सामरिया और समुद्री तटों पर सुसमाचार का विस्तार	शाऊल कलीसिया को सताता है	स्तिफनुस पर पथराव शाऊल एक सताने वाला
8:1b-3	8:1-3	8:1b-3	8:1b-2	(7:55-8:3)
				8:2
			8:3	8:3
सामरिया में सुसमाचार प्रचार	सामरिया में मसीह का प्रचार		सामरिया में सुसमाचार प्रचार	फिलिप्पुस सामरिया में
8:4-8	8:4-8	8:4-8	8:4-8	8:4-8
	जादूगर ने विश्वास किया			शिमोन जादूगर
8:9-13	8:9-13	8:9-13	8:9-13	8:9-13
	जादूगर का पाप			
8:14-24	8:14-24	8:14-24	8:14-17	8:14-17
			8:18-19	8:18-24
			8:20-24	
8:25	8:25	8:25	8:25	8:25
फिलिप्पुस और इथिपोपिया का खोजा	इथियोपियाई खोजे को सुसमाचार सुनाया जाना		फिलिप्पुस और इथियोपियाई अधिकारी	फिलिप्पुस द्वारा खोजे को बपतिस्मा दिया जाना
8:26-33	8:26-40	8:26-40	8:26-30	8:26-33
			8:31-33	
8:34-40			8:34-37	8:34-40
			8:38-40	

पठन चक्र तीसरा (“अच्छे बाइबल अध्ययन का मार्गदर्शन” से)

पैराग्राफ स्तर पर मूल लेखक के अभिप्राय को समझना

यह अध्ययन करने की मार्गदर्शक टीका है, जिसका अर्थ है कि आप अपनी बाइबल-व्याख्या के स्वयं उत्तरदायी हैं। हम में से प्रत्येक को अपने ज्ञान व समझ के अनुसार कार्य करना चाहिए। व्याख्या-प्रक्रिया में आप, आपकी बाइबल तथा पवित्र आत्मा प्राथमिक स्थान रखते हैं। आपको यह टीका कार्य टीकाकार पर नहीं छोड़ना चाहिए।

पूरा अध्याय एक बैठक में पढ़ें। विषयों को पहचानें। अपने विषय-विभाजन की तुलना उपरोक्त पाँच आधुनिक अनुवादों के विषय-विभाजन से करें। पैराग्राफों का विभाजन प्रेरणा प्राप्त नहीं होता है, परन्तु यह मूल लेखक के अभिप्राय को समझने की कुंजी है, जो कि व्याख्या करने का आधार है। प्रत्येक पैराग्राफ में केवल एक ही मूल विषय होता है:

1. पहला पैराग्राफ
2. दूसरा पैराग्राफ
3. तीसरा पैराग्राफ
4. अन्य

शब्दों तथा वाक्यांशों का अध्ययन

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 8:1a
[1]शाऊल उसके वध में दिल से सहमत था

8:1 ''शाऊल उसके वध में दिल सहमत था'' इस वाक्यांश के साथ अध्याय 7 की समप्ति होती है। पौलुस लज्जापूर्वक इस बात को सदा याद करता रहा था कि उसने यह घिनौना कार्य किया (देखें, प्रेरि. 22:20; 1 कुरि. 15:9; गला. 1:13,23; फिलि. 3:6; 1 तीमु. 1:13) कुछ विद्वान इस पाठांश को प्रेरि. 26:10 से जोड़ते हैं और मानते हैं कि पौलुस महासभा में मसीही लोगों को घात करने के पक्ष में वोट देता था।

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 8:1b-3
[1] "उसी दिन यरूशलेम की कलीसिया पर बड़ा उपद्रव आरम्भ हुआ और प्रेरितों को छोड़ सब के सब यहूदिया और सामरिया देशों में तितर-बितर हो गए। [2]और भक्तों ने स्तिफनुस को क़ब्र में रखा; और उसके लिये बड़ा विलाप किया। [3]शाऊल कलीसिया को उजाड़ रहा था; और घर-घर घुसकर पुरुषों और स्त्रियों को घसीट-घसीटकर बन्दीगृह में डालता था।

■**''उसी दिन यरूशलेम की कलीसिया पर बड़ा सताव आरम्भ हुआ''** यह उपद्रव संभवतः यहूदी अगुवों, विशेषकर सदूकियों की ओर से किया गया लगता है क्योंकि यरूशलेम में आरम्भिक कलीसिया निरन्तर बढ़ती जा रही थी और प्रसिद्ध थी। परन्तु यह परमेश्वर की योजना भी हो सकती है कि कलीसिया पर प्रेरि. 1:8 लागू करने का दबाव डाले, नहीं तो कलीसिया को 8:1 का सामना करना होगा।

लूका यहाँ पर विश्वासियों के नए समाज के लिये शब्द एक्लेसिया(का प्रयोग भूल से नहीं करता (देखें प्रेरि. 5:11 पर विशेष विषय)। यह नया समाज स्वयं को परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं की पूर्ति के अधीन समझता था। सप्तूजैन्त में इस्राएली लोगों को ''कलीसिया'' कहा गया है (देखें प्रेरि. 7:38) परन्तु अब यरूशलेम में विश्वासियों की सहभागिता कलीसिया है।

लूका शब्द ''बड़ा'' बहुत पसन्द करता है (मेगा)। सुसमाचार में उसने इस शब्द का प्रयोग 25 बार तथा प्रेरितों के काम में 25 बार किया है। प्रेरि. 8 में उसने इसका प्रयोग इन बातों को दर्शाने के लिए किया:

1. बड़ा उपद्रव (प्रेरि. 8:1)
2. बड़ा विलाप (प्रेरि. 8:2)
3. बड़ा शब्द (प्रेरि. 8:7)
4. बड़ा पुरुष बताना (प्रेरि. 8:9)
5. छोटे से बड़े तक (प्रेरि. 8:10)
6. बड़े-बड़े सामथ्र्य के काम (प्रेरि. 8:13)

■ **''और प्रेरितों को छोड़...वे सभी तित्तर –बित्तर हो गए''** यह बड़ी रोचक बात है कि इस उपद्रव ने प्रेरितों को छोड़ दिया औार यह उन चेलों पर पड़ा जो हेलेनी वादी यहूदी मसीही थे। यहाँ स्पष्ट है कि प्रेिरित इस पड़ाव तक, यहूदीवाद में बने हुए हैं और सन्तुष्ट हैं। यह घटना गलील में यीशु के साथ उनकी मुलाकात (देखें, मत्ती 28:18-20) और पिन्तेकुस्त के बाद घटी; प्रेरित गण अभी तक यरूशलेम में थे और यहूदियों के बीच ही प्रचार करते व शिक्षा देते थे।

■ **''यहूदिया और सामरिया क्षेत्रों में तितर-बितर हो गए''** यह प्रेरि. 1:8 में लूका द्वारा लिखित महान आज्ञा की पूर्ति है। यह आज्ञा कुछ समय पहले ही यीशु ने दी थी और स्पष्ट रूप से उपद्रव ही वह माध्यम था जो कलीसिया को सारे संसार में भेज सकता था। परन्तु कलीसिया अभी भी झिझक रही थी कि सारे संसार में जाए।

8:2 "कुछ भक्तों ने स्तिफनुस को कब्र में रखा" आत्मिक रूप से संवेदनशील यहूदियों को आमतौर पर "भक्त जन" कहा जाता था (देखें लूका 2:25)। इस शब्द का संकेत उनकी ओर भी हो सकता है जो मसीही स्तिफनुस की हत्या की निंदा करते और उपद्रव को बुरा कहते थे। मिशनाह में निन्दक व्यक्ति को दफनाने की अनुमति दी गई है, परन्तु विलाप करना मना किया गया है। परन्तु यहाँ भक्त लोग खुले आम विलाप करते हैं:

1. वे निर्भीक हैं कि परिणाम चाहे कुछ भी हो।
2. उन्हें परवाह नहीं कि विलाप करने को मना किया गया है।

8:3 "शाऊल कलीसिया को उजाड़ *शुरू* कर दिया" यह अपूर्ण कालिक क्रिया है। यह उजाड़ने का कार्य या तो बार बार होता रहा है या फिर हाल ही में आरम्भ हुआ। (यह पद विभिन्न अनुवादों में देखें) (cf. NASB, NJB) (cf. NKJV, NRSV, TEV) ।

शब्द "उजाड़ना" किसी जंगली जानवर द्वारा नवजात शिशु को फाड़ डालना दर्शाता है। सप्तूजैन्त में निर्गमन 22:13; तथा भजन 74:13 में इस शब्द का प्रयोग जानवर के लिए किया गया है। और यिर्मयाह 28:2 व 31:18 में सेना द्वारा हटाने के लिए प्रयुक्त हुआ है। पौलुस स्पष्ट रूप से स्तिफनुस के कथनों द्वारा बेचैन था और संभव है अपनी बेचैनी दूर करने के लिए वह कलीसिया को सताता था (देखें, प्रेरि. 9:1,13,21; 22:4,19; 26:10-11; 1 कुरि. 15:9; गला. 1:13; फिलि. 3:6; 1 तीमु. 1:13)।

देखें विशेष विषय : प्रेरित 5:11

▪ **"घर-घर में घुसकर"** इस वाक्यांश को दो तरह से समझा जा सकता है:

1. जहाँ पर प्रेरितों ने भेंट की, उन घरों का उसने पता लगाया (देखें, प्रेरि. 5:42)
2. यरूशलेम में उस समय बहुत से घरेलू चर्च थे जहां वे आराधना करते थे।

प्रारम्भिक कलीसिया के मसीही इन स्थानों पर भेंट करते थे:

1. हर सबत के दिन स्थानीय सभाघरों में।
2. विशेष अवसरों पर अथवा अधिकतर मन्दिर में मिला करते थे।
3. रविवार के दिन किसी विशेष स्थान पर या घर पर।

▪ **"पुरुषों और स्त्रियों को घसीट-घसीटकर"** यहाँ पर जो क्रिया शब्द प्रयुक्त हुआ है वह शैतान के लिए प्रयुक्त हुआ है जिसने प्रकाशितवाक्य 12:4 में आकाश के तारों की एक तिहाई को खींचकर पृथ्वी पर डाल दिया था। प्रेेरितों के काम में अनेक बार यह शब्द प्रयुक्त हुआ है (देखें, प्रेरि. 8:3; 14:19; 17:6)। वह सताने का कार्य दुष्टता के साथ करता था (देखें प्रेरि. 26:10)। उसकी दुष्टता का प्रमाण इस बात में मिलता है कि वह विश्वासियों को घसीट कर बन्दीगृह में डलवाता था और उन्हें मरवा भी डालता था (देखें, प्रेरि. 9:1,13,21; 22:4,19; 26:10-11; गला. 1:13,23; 1 तीमुः 1:13)। यही कारण है कि बाद में वह स्वयं के विषय में कहता है "मैं प्रेरितों में सबसे छोटा हूँ, वरन् प्रेरित कहलाने के योग्य भी नहीं" (देखें 1 कुरि. 15:9; इफि. 3:8)।

NASB (नवीनतम) पाठ : प्रेरितों के काम 8:4-8

[4]जो तितर-बितर हुए थे, वे सुसमाचार सुनाते हुए फिरे। [5]और फिलिप्पुस सामरिया नगर में जाकर लोगों में मसीह का प्रचार करने लगा। [6]और जो बातें फिलिप्पुस ने कहीं उन्हें लोगों ने सुनकर और जो चिन्ह वह दिखाता था उन्हें देख देखकर, एक चित्त होकर मन लगाया। [7]क्योंकि बहुतों में से अशुद्ध आत्माएं बड़े शब्द से चिल्लाती हुई निकल गईं, और बहुत से लकवे के मारे हुए और लंगड़े भी अच्छे किए गए। [8]और उस नगर में बड़ा आनन्द छा गया।

8:4 "जो तितर-बितर हुए थे, वे सुसमाचार सुनाते हुए फिरे" ध्यान दीजिए कि ये लोग प्रेरित <u>नहीं</u> थे, क्योंकि प्रेरितगण तो यरूशलेम ही में रह गए थे, ये लोग हेलेनीवादी मसीही थे, जो तितर बितर हो गए थे, और यही

आरम्भिक सुसमाचार प्रचारक कहलाए। यह आश्चर्य की बात है कि कलीसिया की विश्वव्यापी सेवा की प्रेरणा प्रेरितों द्वारा नहीं परन्तु स्तिफनुस और फिलिप्पुस द्वारा दी गई।

यहाँ पर सुसमाचार सुनाते हुए फिरने का अर्थ है, संपूर्ण जगत में जाना और इस पर स्तिफनुस ने ध्यान दिया जैसाकि यीशु की महान आज्ञा में है (देखें, मत्ती 28:18-20; लू. 24:47; प्रेरि.1:8)।

8:5 ''फिलिप्पुस'' जिन सात चुने हुए लोगों का उल्लेख प्रेरि. 6:5 में किया गया है, उनमें से एक फिलिप्पुस भी था (देखें प्रेरि. 21:8-9)। उसका वर्णन तीन बातों के विषय में किया गया है (1) सामरिया, (2) इथियोपिया का खोजा (3) पलीस्तीन के समुद्रीतट की सेवकाई। इन सात चुने हुए लोगों का मन सुसमाचार प्रचार में लगा हुआ था।

■ **''सामरिया नगर में जाकर''** एक प्राचीन लेख में सवाल उठाया गया है कि क्या यह एक बड़ा नगर सामरिया था अथवा सामरिया नगर में एक छोटा सा नगर था। इस लेख का मानना है कि यह एक बड़ा नगर था देखें, एम.एस.एस., पी[74]; बए , ठ (cf. MSS, P74, ,א,A, B) I परन्तु उस समय इस नगर को सामरिया नहीं कहा जाता था बल्कि सेबस्त कहा जाता था। रोमी साम्राज्य के काल में इसे सामरिया जिला कहा जाता था। सामरिया का सबसे बड़ा नगर संभवतः शेकेम था जो उस समय निआपुलिस कहलाता था, जिसे आजकल नबलुस कहा जाता है। इस नगर के बारे में यह भी अनुमान लगाया गया है कि इसका नाम गिट्टा नगर हो सकता है क्योंकि यहाँ सायमन मागुस रहा करता था। इस स्थान का निवासी जस्टिन मार्टर यही मानता था

■ **''लोगों में मसीह का प्रचार करने *लगा*''** यहूदी लोग सामरी लोगों से घृणा किया करते थे क्योंकि वे सामरियों को दोगली-जाति मानते थे (देखें, एज्रा 4:1-3)। यह 722 ई.पू. की अश्शूरियों की गुलामी में जाने की घटना से संबंधित बात हैं, जबकि अश्शूर के राजा ने अन्यजातियों को शोमरोन में बसा दिया था, जो इस्राएल के दस गोत्रों वाला क्षेत्र था। इन अन्यजातियों ने इस्राएल के बचे हुए लोगों के साथ विवाह संबंध बनाए और उनके साथ रहने लगे थे (देखें, 2 राजा 17:24-41)।

यीशु ने भी सामरी लोगों के मध्य सेवकाई की थी और सामरी स्त्री तथा अन्य उसके पड़ौसियों पर स्वयं को ''मसीह'' प्रकट किया था (देखें, यूहन्ना 4)। अब फिलिप्पुस वहां जाकर मसीह का प्रचार करता है। शब्द ''मसीह'' यूनानी भाषा में ''क्राईस्ट'' कहलाता है (देखें टिप्पणी प्रेरि. 2:31)। पुराने नियम में प्रतिज्ञा की गई थी कि संसार में अभिषिक्त जन भेजा जाएगा जो नया राज्य स्थापित करेगा तथा पवित्र आत्मा के नए युग का आरम्भ करेगा। इस नए युग की पूर्व-छाया यीशु की सेवकाई और उसके अंतिम कथन प्रेरि. 1:8 में दिखाई देती है।

8:6 ''भीड़ एक चित्त '' लूका ने अनेक बार ''एक चित्त होने'' का उल्लेख किया है। देखें, प्रेरि. 1:14 की टिप्पणी।

■ **''उन्हें लोगों ने सुनकर, और जो चिन्ह वह दिखाता था, उन्हें देखकर''** यह उन आश्चर्यकर्मों की ओर संकेत करता है जो फिलिप्पुस के सन्देश की पुष्टि करते थे (देखें प्रेरि. 8:7)। पवित्र आत्मा की यही सामथ्र्य यीशु, 12 चेलों, 70 चेलों तथा पतरस व यूहन्ना की प्रचार सेवा में भी प्रकट हुई।

8:7 हमारे संसार में अशुद्ध आत्मा से ग्रसित होना एक वास्तविकता है (देखें, मैरिल एफ उंगर की दो पुस्तकें: (1) बिबलीकल, डीमोलाजी तथा (2) डीमन्स इन द वल्र्ड टुडे। (Merrill F. Unger's two books : [1] *Biblical Demonology and [2] Demons in the World Today)* साथ ही प्रेरि. 5:16 मे विशेष टिप्पणियाँ देखें।

NASB (नवीनतम) पाठ : प्रेरितों के काम 8:9-13

9इससे पहले उस नगर में शमौन नाम का मनुष्य था, जो टोना करके सामरिया के लोगों को चकित करता और अपने आप को कोई बड़ा पुरुष बताता था। 10और सब छोटे से बड़े तक सब उसका सम्मान कर कहते थे कि यह मनुष्य परमेश्वर की वह शक्ति है, जो महान् कहलाती है। 11उसने बहुत दिनों से उन्हें अपने टोने के कामों से चकित कर रखा था, इसीलिये वे उसको बहुत मानते थे। 12परन्तु जब उन्होंने फिलिप्पुस का विश्वास किया जो परमेश्वर के राज्य और यीशु के नाम का सुसमाचार सुनाता था

तो लोग, क्या पुरुष, क्या स्त्री बपतिस्मा लेने लगे। [13]तब शमौन ने स्वयं भी विश्वास किया और बपतिस्मा लेकर फिलिप्पुस के साथ रहने लगा। वह चिन्ह और बड़े-बड़े सामथ्र्य के काम होते देखकर चकित होता था।

8:9 ''शमौन नामक एक मनुष्य'' क्या इस मनुष्य ने वासतव में विश्वास किया था (देखें, प्रेरि. 8:13,18) अथवा एक कपटी था जो ताकत पाने की खोज में हो, यह बात अनिश्चित है। मैं प्रेरि. 8:24 के आधार पर उसे सन्देह का लाभ देना चाहूंगा। यह आश्चर्य की बात है, इस मनुष्य के सम्बन्ध में अनेक परम्पराएँ प्रारम्भिक कलीसिया में पाई जाती थीं, परन्तु सब काल्पनिक बातें थी (देखें, द जोन्डरवैन पिक्टोरियल एन्सायक्लोपीडिया ऑफ द बाइबल (*The Zondervan Pictorial Encyclopedia of the Bible* vol. 5, pp. 442-444*),* भाग 5, पेज नं. 442-444)।

NASB, NRSV	**''जादू''**
NKJV, TEV	**''जादू टोना''**
NJB	**''जादूगरी''**

विशेष विषय: जादू

प्राचीन काल में अनेक लोग और समूह ऐसे पाए जाते थे जो विभिन्न प्रकार के जादू व टोना आदि किया करते थे। जादू टोना एक प्रकार की धार्मिक रीति-विधि होती थी ।

1. सबसे पहले जादू टोना प्रथम लिखित संस्कृति "सुमेर" में उनके सृष्टि रचना संबंधी विवरणों में पाया जाता है
   a. सबसे बड़ा देवता ईआ-एंकी (Ea-Enki) था जो "झाड़ा फूँकी का देवता" कहलाता था, क्योंकि उसने अपसू (Apsu) को अपने मंत्र की सहायता से मार डाला था।
   b. उसके बेटे मारदूक (Marduk) ने अपने पिता के तन्त्र-मन्त्र व जादू से तियामत (Tiamat) को पराजित किया।
   c. देखें "अ कलैक्शन ऑफ सुमेरियन एण्ड अक्कादियन इनकैन्टेशन्स" लेखक : एरिका रेनर। ("A Collection of Sumerian and Akkadian Incantations")
2. जादूगरी मिस्र में बहुत अधिक प्रचलित थी जिसमें थोथ (Thoth) तथा आईसिस (Isis) शामिल थे। #1 और #2 की तरह जादू में अच्छे व बुरे का कोई भेद नहीं किया जाता था। आमतौर पर जादू का संबंध इन बातों से था :
   a. चंगाई पाने से
   b. स्वपनों का अर्थ बताने से
   c. राजनैतिक गतिविधियों से
   d. मृत्यु के मार्ग से
3. अनातोलिया (Anatolia) का जादू (हित्ती संस्कृति) #1 के समान था। वहाँ अच्छा जादू और बुरा जादू पाए जाते थे। अच्छे जादू की सब लोग प्रशंसा करते थे, पर बुरे जादू का तिरस्कार किया जाता था। अक्सर बूढ़ी स्त्रियां पुरोहितों के साथ मिलकर जादूगरी करती थीं। जादू को सेना अभियान का आवश्यक भाग माना जाता था।
4. मादी साम्राज्य के पुरोहित जो कसदी कहलाते थे, ज्योतिष विद्या के संलग्न रहते थे (देखें, दानि. 1:20; 2:2,10,27; 4:7,9; 5:11; मत्ती 2:1,7,16)। हैरोदोतुस इन्हें मादी पुरोहित कहता था। ये लोग भविष्य की बातें भी बताते थे और जादू टोना भी करते थे कि देवी-देवता प्रसन्न हो सकें।
5. कनान के जादू टोने के विषय में बहुत कम जानकारी उपलब्ध है। स्पष्ट रूप से एल (El) बहुत सामर्थी था, जिसने जादू से उगरित राजा को स्वस्थ किया था (देखें "द लीजेन्ड ऑफ किंग केरेत" ANET. 1486) ("The Legend of King Keret")

6. अनेक जादूगरों के समूह ऐसे लोगों के पाए जाते थे, जो दावा करते थे कि वे अलौकिक शक्तियों को वश में रखते हैं (देखें उत्प. 41:8,24; निर्ग. 7:11,22; 8:7,19; 9:11)। ये शक्तियाँ अक्सर मनुष्यों के विरुद्ध होती हैं परन्तु जादूगर या तान्त्रिक इन्हें अपने वश में करके व्यक्तिगत लाभ कमाया करते थे (देखे, तीसरी और चौथी शताब्दी ईस्वी के जादू-टोने के पटेल पत्र) ये जादूगर लोग ये काम करते थे :
    a. भविष्य की घटनाओं को बताते थे।
    b. भविष्य की घटनाओं पर नियंत्रण करते थे।
    c. भविष्य की घटनाओं व स्वप्नों का अर्थ बताते थे।
    d. लोगों को, नगरो व देशों को, सेना को, शाप से बचाते थे।
7. जादूगर जैसाकि प्रेरि. 8:9,11 में है, दावा करते थे कि वे प्रकृति की शक्तियों व दुष्टात्माओं को वश में करके अपनी इच्छा पूरी करवा सकते हैं। वे जादू टोना व झाड़ा-फूँकी किया करते थे। "सच्चा" जादूगर अक्सर दूसरे जादूगर पर हमला कर दिया करता था जो सही प्रकार से क्रिया-कलाप नहीं कर पाता था। ऐसे लोग झूठे नबी कहलाते थे जो धोखा देते थे (देखें प्रेरि. 13:6,8; 19:13)।
8. सुसमाचार की सामर्थ इफिसुस में पौलुस की सेवकाई के दौरान हमें दिखाई देती है जहाँ पर जादूगरों ने मसीह पर विश्वास किया और अपनी पुस्तकें सबके सामने जला डालीं जो जादूगरी संबंधी कीमती पुस्तकें थीं (देखें, प्रेरि. 19:19)।
9. विस्तृत जानकारी के लिए निम्न पुस्तकें पढ़े :
    a. सोसन गैरिट की पुस्तक "द डिमाईस ऑफ द डैविल" *(The Demise of the Devil, Fortress Press, 1989)*
    b. मैरिल उंगर "बिबलीकल डीमनोलॉजी" *(Biblical Demonology, Scripture Press, 1967)*
    c. हेन्ड्री बरखौफ, "क्राईस्ट एण्ड द पावरस" *(Christ and the Powers, Herald Press, 1977)*
    d. वाल्टर विंक, "नेमिंग द पावर्स" *(Naming the Powers, Fortress Press, 1984)*
    e. क्लीन्टन आर्नोल्ड, "थ्री क्रूशल क्शचन्स अबाउट स्प्रिचुअल वारफेयर" *(Three Crucial Questions About Spiritual Warfare, Baker, 1997)*
10. सब प्रकार की जादूगरी और झाड़ा फूंकी यहोवा (YHWH) की दृष्टि में घिनौना पाप है और मसीही लोगों के लिए वर्जित है। (देखें ऑनलाइन टिप्पणियाँ व्यव. वि. 18:10-14)

Copyright © 2014 Bible Lessons International

8:10 "यह मनुष्य परमेश्वर की वह शक्ति है, जो महान् कहलाती है" रोमी लोगों के सबसे बड़े देवता ज्यूस (i.e., Zeus) को महान् कहा जाता था। इसे आरामी भाषा में इस प्रकार कहा जाएगा, "यह परमेश्वर की शक्ति है जो महान कहलाती है।" इस मनुष्य ने निरन्तर स्थानीय लोगों को अपने जादू के कार्यों से चकित कर रखा था। संभवतः उसने अपने आप को भी धोखा दिया (देखें प्रेरि. 8:9,13)।

8:12 "विश्वास किया" देखें विशेष विषय: प्रेरि. 3:16 में, विश्वास, यकीन, और भरोसा; तथा प्रेरि. 6:5 में पुराने नियम का विश्वास।

NASB **"सुसमाचार सुनाता था"**
NKJV **"परमेश्वर के राज्य की बातें"**
NRSV **"सुसमाचार सुनाता था"**
TEV **"सुसमाचार का सन्देश"**

शब्द "सुसमाचार" दो यूनानी क्रिया शब्दों अर्थात् इयूंगैलिजो (*euangelizō*)तथा एंजेलीजो दहमसप्रवद्ध मिलकर बना है। इसी यूनानी शब्द से हमें अंग्रेजी के बहुत से शब्द प्राप्त हुए हैं जैसे: इवैन्जल, इवैन्जलाईज, इवैन्जलीज्म इत्यादि। फिलिप्पुस ने लोगों को यीशु की कथा सुनाई और उन्होंने विश्वास करके उद्धार पाया।

- **"परमेश्वर के राज्य"** प्रेरि. 1:3 में दो विशेष विषय देखें।
- **"यीशु के नाम का सुसमाचार"** प्रेरित. 2:21 में विशेष विषय देखें।
- **"बपतिस्मा लेने लगे"** प्रेरि. 2:38 में विशेष विषय देखें।
- **"क्या पुरुष, क्या स्त्री"** संदर्भ के अनुसार इस वाक्यांश में दो महत्वपूर्ण बातें हो सकती हैं:
    1. पौलुस ने पुरुष व स्त्री दोनों को सताया था (प्रेरि. 8:3) परन्तु सुसमाचार दोनों को बचाता है।
    2. यहूदीवाद में, खतना विधि में केवल पुरुष ही भाग लेते थे, परन्तु सुसमाचार में, बपतिस्मा विधि में स्त्री-पुरुष दोनों हिस्सा ले सकते हैं।

8:13 "शमौन ने स्विश्वास किया" बहुत से सुसमाचार प्रचारक दृढ़तापूर्वक इस शब्द बपतिस्में का प्रयोग करते हैं (प्रेरि. 3:16 में विशेष शीर्षक देखें) परन्तु नए नियम में कुछ स्थल ऐसे हैं (जैसे यूहन्ना 8:31) जहां सच्चा हृदय परिवर्तन दिखाई नहीं देता (देखें यूह. 8:59)।

आरम्भिक विश्वास ही पर्याप्त नहीं होता (मत्ती 13:1-9,10-23; 24:13)। मसीह के साथ सच्ची संगति व रिश्ता निरन्तर उसकी आज्ञा पालन और विश्वास द्वारा प्रकट होता है।

विशेष शीर्षक: धीरज धरना

मसीही जीवन से संबंधित बिबलिकल सिद्धांतों को समझाना कठिन होता है क्योंकि उनकी प्रस्तुति पूर्वीय प्रान्तीय भाषा के लाक्षणिक शब्दों के जोड़ों में की जाती है, जो परस्पर विरोधाभाषी प्रतीत होते हैं, (देखें, विशेष विषय : ईस्टर्न लिटरेचर [बिबलीकल पैराडोक्सस]) तो भी दोनों किनारे पूर्व-पश्चिम बाइबल संबंधी हैं। पश्चिमी देशों के मसीही लोग सत्य का एक पक्ष स्वीकार कर लेते हैं, दूसरे को छोड़ देते अथवा उसे तुच्छ समझते हैं। कुछ उदाहरण :

A. क्या उद्धार मसीह पर विश्वास लाने का आरम्भिक निर्णय है अथवा शिष्यता का, जीवन भर का समर्पण है?
B. क्या उद्धार सर्वशक्तिमान परमेश्वर के अनुग्रह द्वारा चुने जाने पर प्राप्त होता है, या परमेश्वर के वरदान को मनुष्यों द्वारा पश्चाताप करने और विश्वास लाने पर प्राप्त होता है?
C. क्या एक बार उद्धार पाने का आनन्द खो नहीं सकता, या इसे बनाए रखने के लिए निरन्तर प्रयास करने की आवश्यकता होती है?

संपूर्ण कलीसियाई इतिहास में "धीरजवन्त" रहने का मुद्दा वाद-विवाद का विषय रहा है। समस्या उन पाठांशों को लेकर खड़ी होती है जो नए नियम में विरोधाभाषी नजर आते हैं, जैसे :

A. निश्चय संबंधी पाठांश
    1. यूहन्ना रचित सुसमाचार में यीशु के कथन (यूह. 6:37; 10:28-29)
    2. पौलुस के कथन (रोमि. 8:35-39; इफि. 1:13; 2:5, 8-9; फिलि. 1:6; 2:13; 2 थिस्स. 3:3; 2 तीमु. 1:12; 4:18)
    3. पतरस के कथन (1 पत. 1:4-5)
B. धीरजवन्त होने की आवश्यकता संबंधित पाठांश :
    1. सहदर्शी सुसमाचारों में यीशु के कथन (मत्ती 10:22; 13:1-9, 24-30; 24:13; मरकुस 13:13; युहन्ना 8:31; 15:4-10; प्रका. 2:7,17,26; 3:5,12,21) ।
    2. पौलुस के कथन (रोमि. 11:22; 1 कुरि. 15:2; 2 कुरि. 13:5; गला. 1:6; 3:4; 5:4; 6:9; फिलि. 2:12; 3:18-20; कुलु. 1:23; 2 तीम. 3:2)

3. इब्रानियों के लेखक के कथन (इब्रा 2:1; 3:6,14; 4:14; 6:4-12; 10:26-27))
4. यूहन्ना के कथन (1 यूह. 2:6; 2 यूह. 9;
5. पिता का कथन (प्रका. 2:17)

बाइबिल संबंधी उद्धार, प्रेम, दया और सर्वोच्च त्रिएक परमेश्वर के अनुग्रह से प्रवाहित होता है। पवित्रात्मा द्वारा पहल करने के बिना कोई भी मनुष्य उद्धार नहीं पा सकता है (यूह. 6:44,65)। पहले परमेश्वर आता है और योजना व कार्यक्रम तैयार करता है, परन्तु चाहता है कि मानवजाति पश्चाताप और विश्वास द्वारा प्रत्युत्तर दे, यह प्रक्रिया निरन्तर चलती रहे। परमेश्वर मानव जाति के साथ वाचागत सम्बन्धों के अन्तर्गत ही कार्य करता है। इसमें कुछ कर्तव्य होते हैं और कुछ अधिकार या सौभाग्य भी होते हैं। देखें विशेष विषय: वाचा और विशेष विषय: रखना

उद्धार सम्पूर्ण मानवजाति के लिये उपलब्ध है (युहन्ना 1:12; 3:16; 4:42; 1 तिमोथी. 2:4; तीतुस 2:11; 2 पतरस . 3:9; 1 युहन्ना 2:2; 4:14). यीशु की मृत्यु ने पतित सृष्टि के पापों की समस्या का समाधान कर दिया है (मरकुस 10:45; युहन्ना 1:29; 2 कोरिन्थ. 5:21). परमेश्वर ने उद्धार का मार्ग तैयार कर दिया है और अब वह चाहता है कि सब लोग जो उसके स्वरूप पर रचे गए हैं, यीशु में उपलब्ध उसके इस प्रेम का उचित प्रत्युत्तर दें।(देखें विशेष विषय: यहोवा की YHWH मुक्ति योजना)

यदि इस विषय पर विस्तृत जानकारी करना चाहते हैं तो निम्न पुस्तकें पढ़ें :

1. डेल मूडी, "द वर्ड ऑफ ट्रुथ" एर्डमैन्स, 1981 पेज 348-365 (Dale Moody, *The Word of Truth*, Eerdmans, 1981 (pp. 348-365))
2. हावर्ड मार्शल, "कैप्ट बाई द पावर ऑफ गॉड" बैथनी फैलोशिप, 1969(Howard Marshall, *Kept by the Power of God*, Bethany Fellowship, 1969)
3. शैबर्ट शैंक, "लाइफ इन द सन", वैस्टकॉट, 1961(Robert Shank, *Life in the Son,* Westcott, 1961)

बाइबल इस विषय में दो भिन्न-भिन्न समस्याओं को सम्बोधित करती है (1) उद्धार के निश्चय को फलरहित और स्वार्थ पूर्ण जीवन जीने की बात समझ लेना (2) उन लोगों को प्रोत्साहित करना जो सेवकाई में संघर्ष और व्यक्तिगत पाप का सामना कर रहे हैं। समस्या का कारण यह है कि गलत समूह के लोग गलत सन्देश प्राप्त करते हैं और सीमित बाइबल पाठांशों पर गलत धार्मिक शिक्षाएँ बना लेते हैं। कुछ मसीही लोगों को आश्वासन के सन्देश की अति आवश्यकता होती है जबकि अन्यों को धीरजवन्त रहने के विषय में कड़ी चेतावनी की आवश्यकता होती है आप किस समूह में हैं?

फिर एक ऐतिहासिक धर्म वैज्ञानिक मतभेद (Theological Controversy) पाया जाता है जो अगस्तीन व पेलेगयुस तथा काल्विन और आरमीनियस के बीच पाया जाता है। इसमें उद्धार से संबंधित यह प्रश्न पाया जाता है : यदि कोई मनुष्य वास्तव में उद्धार पा लेता है तो क्या उसे विश्वास में और फलवन्त जीवन बनाने में निरंतर प्रयत्नशील रहना चाहिए?

काल्विनवादी लोग बाइबल के उन पाठांशो को मानते हैं जो परमेश्वर की प्रभुसत्ता और उसकी रक्षा करने वाले सामर्थ के बारे में बताते हैं जैसे (यूहन्ना 10:27-30; 1 यूह. 5:13,18; 1 पत. 1:3-5) और क्रिया का काल इफि. 2:5,8 के समान पूर्ण सकर्मक क्रिया है।

आरमीनियन्स (Armenians) उन बाइबल पाठांशों पर बल देते हैं जो एक विश्वासी को "स्थिर रहने" "दृढ़तापूर्वक थामें रहने" अथवा "निरन्तर बढ़ने" की चेतावनी देते हैं जैसे (मत्ती 10:22; 24:9-13; मर. 13:13; यूह. 15:4-6; 1 कुरि. 15:2; गला. 6:9; प्रका. 2:7,11,17,26; 3:5,12,21; 21:7)। मैं निजी तौर पर विश्वास करता हूँ इब्रानियों 6 व 10 यहाँ लागू नहीं होते हैं, परन्तु अनेक आरमीनी लोग इसे पथ-भ्रष्ट होने के विरुद्ध चेतावनी मानते हैं। यूहन्ना 8:31-59 की तरह मत्ती 13 और मरकुस 4 का बीज बोने वाला दृष्टान्त प्रत्यक्ष विश्वास के मुद्दे को सम्बोधित करता है। जबकि काल्विनवादी पूर्ण कालिक क्रिया को उद्धरित करते हैं कि उद्धार के बारे में बताएँ, तो आरमीनियन्स वर्तमान काल के पाठांशों को उद्धरित करते हैं जैसे 1 कुरि. 1:18; 15:2; 2 कुरि. 2:15।

यह एक उपयुक्त उदाहरण है कि किस प्रकार के धर्म-वैज्ञानिक प्रणाली में (Theological System)

मूलपाठ की व्याख्या के उचित तरीके का दुरूपयोग किया जाता है। आमतौर पर धर्म वैज्ञानिक ढांचा (Theological Grid) तैयार करने के लिए मार्गदर्शन के सिद्धान्तों अथवा मुख्य पाठांशों का उपयोग किया जाता है जिसके द्वारा अन्य पाठों को देखा जाता है किसी भी स्रोत से ढाँचा तैयार करने में सावधान रहें। वे पश्चिमी तर्क पर आधारित होते हैं न कि प्रकाशन पर, बाइबल एक पूर्वीय पुस्तक है, यह सच्चाई को तनावपूर्ण विरोधाभाषी शब्दों में प्रस्तुत करती है। मसीहीयों को दोनों बातें स्वीकार करनी पड़ती हैं और तनाव में ही जीना पड़ता है।

नया नियम विश्वासी की सुरक्षा और निरन्तर विश्वास और भक्तिपूर्ण जीवन की माँग को प्रस्तुत करता है। मसीही धर्म पश्चाताप करने और विश्वास लाने का आरम्भिक कार्य है और पश्चाताप व विश्वास का यह कार्य आगे भी चलता रहता है। उद्धार, अर्जित की हुई वस्तु (Product) नहीं, (स्वर्ग जाने का टिकट अथवा अग्नि सुरक्षा-बीमा पॉलिसी नहीं), परन्तु परमेश्वर के साथ एक सम्बन्ध है। यह चेला बनने का निर्णय है। नए नियम में सभी क्रिया-कालों में इसका उल्लेख किया गया है :

- भूतकाल (AORIST) (पूर्ण किया हुआ कार्य), प्रेरि. 15:11; रोमि. 8:24; 2 तीम. 1:9; तीतुस 3:5
- पूर्णकालिक काल (पूर्ण कार्य निरन्तर परिणामों सहित), इफि. 2:5,8
- वर्तमान काल (जारी रहने वाला कार्य), 1 कुरि. 1:18; 15:2; 2 कुरि. 2:15
- भविष्य काल (भविष्य की घटनाएँ अथवा निश्चित घटनाएँ), रोमि. 5:8,10; 10:9; 1 कुरि. 3:15; फिलि. 1:28; 1 थिस्स. 5:8-9; इब्रा. 1:14; 9:28)

विशेष विषय: धर्मत्याग
विशेष विषय: आश्वासन
विशेष विषय: मसीही आश्वासन

Copyright © 2014 Bible Lessons International

- **"और बपतिस्मा लेकर फिलिप्पुस के साथ रहने लगा"** यह बड़ी पेचीदा बात है, सिलसिले पर ध्यान दीजिएः-
  1. उसने वचन सुना - प्रेरि. 8:6-7,12
  2. उसने देखा - प्रेरि. 8:6-7,13
  3. उसने विश्वास किया - प्रेरि. 8:13
  4. उसने बपतिस्मा लिया - प्रेरि. 8:13
  5. वह फिलिप्पुस के साथ रहने लगा, - प्रेरि. 8:13

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 8:14-24

**[14]जब प्रेरितों ने जो यरूशलेम में थे, सुना कि सामरियों ने परमेश्वर का वचन मान लिया है तो
पतरस और यूहन्ना को उनके पास भेजा। [15]और उन्होंने जाकर उनके लिये प्रार्थना की कि पवित्र आत्मा
पाएं। [16]क्योंकि वह अब तक उनमें से किसी पर न उतरा था, उन्होंने तो केवल प्रभु यीशु के नाम में
बपतिस्मा लिया था। [17]तब उन्होंने उन पर हाथ रखे और उन्होंने पवित्र आत्मा पाया। [18]जब शमौन ने
देखा कि प्रेरितों के हाथ रखने से पवित्र आत्मा दिया जाता है, तो उनके पास रुपये लाकर कहा, [19]"यह
अधिकार मुझे भी दो कि जिस किसी पर हाथ रखूं, वह पवित्र आत्मा पाए।" [20]पतरस ने उससे कहा,
"तेरे रुपये तेरे साथ नष्ट हों, क्योंकि तू ने परमेश्वर का दान रुपयों से मोल लेने का विचार किया। [21]इस
बात में न तेरा हिस्सा है, न भाग; क्योंकि तेरा मन परमेश्वर के आगे सीधा नहीं। [22]इसलिये अपनी इस
बुराई से मन फिराकर प्रभु से प्रार्थना कर, सम्भव है तेरे मन का विचार क्षमा किया जाए। [23]क्योंकि मैं
देखता हूं, कि तू पित्त की सी कड़वाहट और अधर्म के बन्धन में पड़ा है।" [24]शमौन ने उत्तर दिया, "तुम
मेरे लिये प्रभु से प्रार्थना करो कि जो बातें तुमने कहीं, उनमें से कोई मुझ पर न आ पड़े।"**

8:14 "जब प्रेरितों ने जो यरूशलेम में थे, सुना कि सामरियों ने परमेश्वर का वचन मान लिया है, तो पतरस और यूहन्ना को उनके पास भेजा" यीशु के जीवनकाल में सामरियों के मध्य सेवा करना मना था (देखें, मत्ती

10:5)। परम्परागत रीति से घृणित समझी जाने वाली इस सामरी जाति के मध्य पवित्र आत्मा के गहरे व अद्भुत कार्य की सूचना पाकर प्रेरितों ने सहर्ष औचारिक अनुमति पतरस व यूहन्ना को दे दी। सामरिया क्षेत्र का विशेष उल्लेख प्रेरि. 1:8 के आदेश में पाया जाता है। फिलिप्पुस ने यीशु की संपूर्ण जगत में सुसमाचार प्रचार योजना को अन्य बारह शिष्यों से पहले पहचाना।

यहाँ पर ध्यान दीजिए कि यीशु पर विश्वास करना ‘‘परमेश्वर के वचन’’ को ग्रहण करने के समान है। परमेश्वर का वचन अनेक बातों का प्रतीक हो सकता है जैसे:

1. वचन के द्वारा परमेश्वर मनुष्यों से बातचीत करता है।
2. वचन, मानवजाति के साथ परमेश्वर की बातचीत का लिखित प्रमाण है (पवित्र शास्त्र)।
3. वचन, परमेश्वर का पुत्र है (देखें यूहन्ना 1:1) जो परमेश्वर का अंतिम प्रकाशन है (इब्रा. 1:3)।

ध्यान दीजिए कि पतरस और यूहन्ना भेजे जाते हैं। पतरस-प्रेरितों में एक जाना-माना चेला था और यूहन्ना वह चेला था जो सामरियों को स्वर्ग की अग्नि से भस्म करना चाहता था (देखें लूका 9:54)।

8:15 ‘‘उन्होंने जाकर उनके लिये प्रार्थना की, कि पवित्र आत्मा पाएँ’’ प्रेरितों के काम की पुस्तक से निम्नलिखित कुछ कारणों से उद्धार के विषय में अनेक जटिल धर्म-वैज्ञानिक समस्याएँ खड़ी की जाती हैं: घटनाओं का क्रम तथा उद्धार संबंधी घटनाओं के विवरण हर पाठांश में भिन्न-भिन्न पाए जाते हैं। इस पाठांश में पवित्र आत्मा उद्धार की पुष्टि की ओर संकेत करता है जैसे पिन्तेकुस्त के दिन किया था, और दर्शाता है कि परमेश्वर ने इन सामरियों को ग्रहण करके उद्धार प्रदान किया है। पहले वे पूर्णरूप से नहीं बचाए गए थे जबकि उन्होंने विश्वास किया था, परन्तु जब उनमें पवित्र आत्मा का कार्य हुआ तो वे बचाए गए (देखें रोमियों 8:9)।

मैं सोचता हूँ कि पिन्तुेस्त का अनुभव एक नमूना था, जिसे परमेश्वर भिन्न जाति और भिन्न भौगोलिक परिस्थिति के जनसमूह के अनुभव में नया बनाता है ताकि विश्वासी यहूदी कलीसिया पर दर्शाए और पुष्टि करे कि उसी ने स्वयं इस नए जनसमूह को पूर्णरूप से ग्रहण किया है। इस प्रकार पवित्र आत्मा का जो प्रकाशन प्रेरितों के काम की पुस्तक में पाया जाता है, (अर्थात् पिन्तेकुस्त) वह धर्म वैज्ञानिक दृष्टिकोण से कुरिन्थुस के अन्य-भाषाओं के प्रकाशन से बिल्कुल अलग है।

उद्धार की पुष्टि के लिए, इस पाठांश को कुरिन्थुस के समान अनुभव की माँग करने के लिये इस्तेमाल नहीं किया जा सकता है (देखें 1 कुरि. 12:29-30, जहाँ बहुत से प्रश्न पाए जाते हैं और सबका जवाब ‘‘नहीं’’ है)। लूका यहाँ वहीं विवरण लिखता है जो घटित हुआ, न कि वह विवरण लिखता है जो बार बार घटित होना चाहिए।

8:16-17: यह प्रेरितों के काम 2:38 में वर्णित घटनाओं के क्रम से भिन्न है। विसंगति के कारण है
पवित्र आत्मा की विशिष्ट क्रिया: (1) प्रेरितों के काम 2:38 में उद्धार के संबंध में और (2) प्रेरितों के काम 8:16 में एक के संबंध में पिन्तेकुस्त प्रकार का अनुभव। प्रेरितों के काम 2 की वही "पवित्र आत्मा घटना" अब सामरियों के साथ घटी।
यह केवल उनके लाभ के लिए नहीं था, बल्कि ज्यादातर यहूदी मसीही समुदाय के लिए था। इसने उन्हें दिखाया कि परमेश्वर सामरी लोगों को पूरी तरह से स्वीकार कर लिया था! यह दो-चरणीय प्रारंभिक मुक्ति अनुभव का दावा करने के लिए नहीं है।

कृपया ध्यान दें कि पतरस और यूहन्ना ने यहां पर महसूस किया कि जो पवित्र आत्मा के उतरने का विशेष अनुभव उन्होंने पिन्तेकुस्त के दिन पाया था, वह अनुभव सामरियों के पास नहीं है। इसका यह अर्थ नहीं कि फिलिप्पुस की सेवकाई के दौरान जो आश्चर्यकर्म और चिन्ह प्रकट हुए थे, वे पवित्र आत्मा का सच्चा प्रकटीकरण नहीं था (देखें प्रेरि.8:13)। पतरस और यूहन्ना सामरियों का पिन्तेकुस्त देखना चाहते थे। यह बड़ा आवश्यक भी था, क्योंकि कुरनेलियुस ने भी यही अनुभव पाया था (देखें, प्रेरि. 10), और पतरस जान गया था कि परमेश्वर ने पूर्णरूप से उस रोमी अधिकारी कुरनेलियुस और उसके घराने को ग्रहण किया है। सुसमाचार सब लोगों के लिये है; यह एक महान सच्चाई है जिसे यह अनुभव प्रेरितों के काम पुस्तक में प्रकाशित करता है।

8:16: इसे सामरियों का पिन्तेकुस्त कहा जा सकता है।

8:17 इन पदों को "हाथ रखने" की विधि की आवश्यकता का प्रमाण नहीं कहा जा सकता है। इस प्रकार का तरीका दुबारा प्रेरितों के काम में नहीं पाया जाता है। ये पद प्रेरितों की सामर्थ और अधिकार को जरूर दिखाते हैं। देखें प्रेरि. 6:6 में विशेष विषयः हाथ रखना

8:20 जो प्रश्न हमारे लिए धर्म वैज्ञानिक हैं, वे शमौन के लिए मोक्षशास्त्र संबंधी प्रश्न हैं। क्या शमौन उद्धार पाया हुआ व्यक्ति था अथवा नहीं? जो शब्द पतरस ने उस से कहे उन्हें हमें चेतावनी के शब्द अथवा शाप के शब्द समझना चाहिए। अधिकांश नए विश्वासियों को सुसमाचार की अपूर्ण और गलत जानकारी होती है, परन्तु क्या जो कुछ शमौन ने समझा और कहा वह उसके अहंकार को दिखाता है? क्या मनुष्य अपने जीवन में परस्पर विरोधी प्राथमिकताएँ रखकर उद्धार पा सकता है?

■ **"परमेश्वर का दान"** यहाँ पवित्र आत्मा का अर्थ परमेश्वर के उन सब कार्यों से है जिन्हें वह विद्रोही और अपराधी मानवजाति के लिए करने को तैयार है (देखें, यशा. 55:1-2; यिर्म. 31:31-34; यहेज. 36:22-38; लूका 11:13; प्रेरि. 2:38)।

8:21 "इस बात में न तेरा हिस्सा है, न भाग" शब्द "हिस्सा" के लिये यूनानी शब्द "मैरिस" ;उमतपेद्ध प्रयुक्त किया गया है। 2 कुरि. 6:15 और यहाँ पर इस शब्द में नकारात्मक भाव है।

दूसरा शब्द इस पद में "भाग" है, जो यूनानी शब्द (i.e., *klēros*) से बना है। पुराने नियम में चिट्ठियाँ डालकर परमेश्वर की इच्छा जानने में यह शब्द प्रयुक्त किया जाता था (अर्थात् ऊरीम और तुम्मीम) (i.e., *Urim* and *Thummim*) । चिट्ठियाँ डालकर प्रतिज्ञात देश कनान का विभिन्न गोत्रों में बँटवारा भी किया गया था (देखें, यहोशू 12-19)। इस प्रकार इस शब्द का प्रयोग उत्तराधिकार पाने में किया गया। अंग्रेजी में इस शब्द का प्रयोग "पादरी" के लिए होने लगा, परन्तु नए नियम में इसका संकेत प्रत्येक विश्वासी की ओर है।

■ **" तेरा मन परमेश्वर के आगे सीधा नहीं"** यह भजन 78:37 की ओर संकेत हो सकता है। शब्द "सीधा" की तथा यही अर्थ रखने वाले तमाम शब्दों की उत्पत्ति नदी किनारे मैसोपोटमिया में पाए जाने वाले शब्द "सरकण्डे" से हुई है, जो बिल्कुल सीधे हुआ करते हैं और जिनकी लम्बाई करीब 15 से 20 फुट होती थी। सरकण्डा दीवारों की सीधाई नापने में भी प्रयुक्त किया जाता था। यह बड़ी रोचक बात है कि परमेश्वर ने अपना नैतिक स्वभाव दिखाने के लिए इस शब्द का प्रयोग किया। परमेश्वर ही ऐसा सीधा मापदण्ड है जिसके द्वारा सम्पूर्ण मानव जाति मापी जाएगी। मापने के बाद संपूर्ण मानव जाति कम ठहरती है (देखें रोमियों 3:9-18, 23)।

8:22 "मन फिरना" यह आदेशात्मक अनिश्चितकालिन क्रिया सूचक है। प्रेरि. 2:38 की व्याख्या और विशेष शीर्षक देखें।

■**"प्रार्थना"**: प्रार्थना करना परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत सम्बन्ध बनाए रखने का प्रमाण होता है और पश्चाताप करने की प्रेरणा देता है। परमेश्वर पर हमारा दृढ़ विश्वास रखना, प्रमाणित करता है कि पवित्र आत्मा हम में निवास करता है।

■**"यदि"** यह बड़ा अच्छा वाक्यांश है जिसमें एक शर्त पाई जाती है कि प्रार्थना करने पर ही लेखक का उद्देश्य पूरा होगा। शमौन के लिए पश्चाताप करना और प्रार्थना करना आवश्यक है क्योंकि उसकी मन की स्थिति और कार्य आदर्श मसीही जीवन के विपरीत और गम्भीर हैं।

■**"मन का विचार"** पाप हमारे मन के विचारों में जन्म लेता है। रब्बी लोग कहा करते थे कि मन हल चलाई हुई भूमि के समान होता है जो तैयार रहती है कि उसमें बीज बोया जाए। अपनी आँखों और कानों द्वारा हम जिन विचारों को उगने की अनुमति देते हैं वे ही मन में जड़ पकड़ते हैं। यदि हम उन विचारों पर ध्यान दें तो वह हमारे

कार्य बन जाते हैं। यही कारण है कि नया नियम बताता है कि हमें ''अपनी बुद्धि की कमर बाँधनी'' चाहिए (देखें, 1 पतरस 1:13) अथवा ''मन को नया बनाएं'' (रोमियों 12:2; इफि. 4:23)।

8:23
NASB, NRSV ''पित्त के समान कड़वाहट''
NKJV ''कड़वाहट से विषैला होना''
TEV ''ईष्र्या की कड़वाहट से भरपूर''
NJB ''पित्त की सी कड़वाहट''

शब्द ''पित्त'' (कीले) (*cholē*) तथा ''कड़वाहट'' (पिक्रास) (*pikros*) दोनों ही शब्द कड़वाहट से भरी हुई आत्मा की ओर संकेत करते हैं और सामान्य रूप से इनका सम्बन्ध क्रोध और अधर्म से होता है (देखें, व्यवस्थाविवरण 29:18; 32:28-33; इब्रानियों 12:15)। पौलुस ने बहुत बार ''कड़वाहट'' शब्द का प्रयोग उन बातों की सूची में किया हैं जिन्हें त्यागना चाहिए (देखें, रोमियों 3:14; इफि. 4:31)।

NASB ''अधर्म के बन्धन में''
NKJV ''अधर्म में जकड़ा हुआ''
NRSV ''दुष्टता की जंजीरों से बंधा हुआ''
TEV ''पाप की कैद में पड़ा हुआ''
NJB ''पाप की जंजीरों से बंधा हुआ''

यह मसीह द्वारा किए गये कार्य की ओर संकेत हो सकता है (देखें, यशायाह 58:6)। यीशु शमौन को उसके बन्धनों से छुड़ा सकता है और उसे अपनी सामर्थ दे सकता है क्योंकि पाप के दण्ड से उसे छुड़ाया है। पाप के दो पहलू होते हैं: (1) पाप आत्मिक और शारीरिक दोनों प्रकार की मृत्यु लाता है (2) यह पापी मनुष्य के जीवन को नियन्त्रण में रखता है (यह धर्मी व अधर्मी दोनों पर प्रभाव डाल सकता है, देखें, 1 कुरि. 3:1-3)। पाप का इलाज अभी और सर्वदा के लिए किया जाना चाहिए, उसकी सामर्थ और उसके दण्ड के प्रति कदम उठाना चाहिए, परन्तु केवल मसीह और पवित्र आत्मा ही यह कार्य कर सकते हैं; यदि हम चाहते हैं कि हमारे जीवनों में यह कार्य हो तो विश्वासी होने के नाते हमें मसीह और उसके आत्मा को कार्य करने की अनुमति देनी होगी।

8:24 ''तुम मेरे अपने लिये प्रभु से प्रार्थना करो'' यह आदेशात्मक वाक्यांश है (बहुवचन में है, और संपूर्ण सेवा दल की ओर इसका इशारा हो सकता है)। शमौन प्रेरि. 8:22 के पतरस के शब्द दोहराता है। पतरस के शब्दों ने उसे भयभीत कर दिया था। मैं विश्वास करता हूँ कि शमौन विश्वासी हो गया था, परन्तु अभी वह बालक था।

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 8:25
[25]अतः वे गवाही देकर और प्रभु का वचन सुनाकर, यरूशलेम को लौट गए, और सामरियों के बहुत गांवों में सुसमाचार सुनाते गए।

8:25 ''गवाही देकर'' देखें प्रेरि. 2:40 में टिप्पणी।

- **''और सामरियों के बहुत से गाँवों में सुसमाचार सुनाते गये''** यह सामरियों के प्रति प्रेरितों के व्यवहार में भारी परिवर्तन होने का प्रतीक है। हमें यहाँ यह भी पता चलता है कि ''प्रभु का वचन'' और ''सुसमाचार'' दोनों का अर्थ समान है।

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 8:26-40
[26]फिर प्रभु के एक स्वर्गदूत ने फिलिप्पुस से कहा, ''उठ और दक्खिन की ओर उस मार्ग पर जा, जो

यरूशलेम से गाज़ा को जाता है।'' यह रेगिस्तानी मार्ग है। [27]वह उठकर चल दिया, और देखो, कूश देश का एक मनुष्य आ रहा था जो खोजा और कूशियों की रानी कन्दाके का मंत्री और खजांची था। वह आराधना करने को यरूशलेम आया था। [28]और वह अपने रथ पर बैठा हुआ था, और यशायाह भविष्यद्वक्ता की पुस्तक पढ़ता हुआ लौटा जा रहा था। 29तब आत्मा ने फिलिप्पुस से कहा, ''निकट जाकर इस रथ के साथ हो ले।'' [30]फिलिप्पुस उसकी ओर दौड़ा और उसे यशायाह भविष्यद्वक्ता की पुस्तक पढ़ते हुए सुना, और पूछा, ''तू जो पढ़ रहा है क्या उसे समझता भी है?'' [31]उसने कहा, ''जब तक कोई मुझे न समझाए तो मैं कैस समझूं?'' और उसने फिलिप्पुस से विनती की कि वह चढ़कर उसके पास बैठे। [32]पवित्रशास्त्र का जो अध्याय वह पढ़ रहा था, वह यह था: ''वह भेड़ के समान वध होने को पहुंचाया गया, और जैसा मेमना अपने ऊन कतरनेवालों के सामने चुपचाप रहता है, वैसे ही उसने भी अपना मुंह न खोला। [33]उसकी दीनता में उसका न्याय होने नहीं पाया, और उसके समय के लोगों का वर्णन कौन करेगा, क्योंकि पृथ्वी से उसका प्राण उठा लिया जाता है।'' [34]इस पर खोजे ने फिलिप्पुस से पूछा, ''मैं तुझ से विनती करता हूं, यह बता कि भविष्यद्वक्ता यह किसके विषय में कहता है, अपने या किसी दूसरे के विषय में?'' [35]तब फिलिप्पुस ने अपना मुंह खोला और इसी शास्त्र से आरम्भ करके उसे यीशु का सुसमाचार सुनाया। [36]मार्ग में चलते-चलते वे किसी जल की जगह पहुंचे, तब खोजे ने कहा, ''देख यहां जल है, अब मुझे बपतिस्मा लेने में क्या रोक है।'' [37]फिलिप्पुस ने कहा, ''यदि तू सारे मन से विश्वास करता है तो ले सकता है।'' उसने उत्तर दिया, ''मैं विश्वास करता हूं कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है।'' 38तब उसने रथ खड़ा करने की आज्ञा दी, और फिलिप्पुस और खोजा दोनों जल में उतर पड़े, और उसने खोजा को बपतिस्मा दिया। [39]जब वे जल में से निकलकर ऊपर आए, तो प्रभु का आत्मा फिलिप्पुस को उठा ले गया, और खोजे ने उसे फिर न देखा, और वह आनन्द करता हुआ अपने मार्ग पर चला गया। [40]और फिलिप्पुस अशदोद में आ निकला, और जब तक कैसरिया में न पहुंचा, तब तक नगर-नगर सुसमाचार सुनाता गया।

8:26 ''प्रभु के एक स्वर्गदूत ने फिलिप्पुस से कहा'' यहाँ पर ''प्रभु का एक स्वर्गदूत'' और ''पवित्र आत्मा'' समानार्थी प्रतीत होते हैं (देखें, प्रेरि. 8:29)। यह प्रेरितों के काम पुस्तक में सामान्य बात है, देखें प्रेरि. 5:19 की टिप्पणी।

▪ **''उठ, और दक्खिन की ओर जा''** यहाँ आदेश पाया जाता है। यह मिस्र जाने वाले दो रास्तों में से एक की ओर संकेत हो सकता है। यह स्पष्ट सन्देश था इसलिए सुना जा सकता था। यह स्पष्ट था। यह स्पष्ट रूप से परमेश्वर द्वारा निर्धारित की गई बातचीत थी (पौलुस की तरह)।

NASB **''(यह रेगिस्तानी मार्ग है)''**
NKJV **''यह रेगिस्तान है।''**
NRSV **''(यह मार्ग जंगल में है।)''**
TEV **''(आजकल इस मार्ग का उपयोग नहीं होता है)''**
NJB **''रेगिस्तानी मार्ग है''**

यदि यह लूका द्वारा कही हुई बात है, तो क्या लूका यहाँ अपने स्रोत के विषय में स्पष्टीकरण दे रहा है अथवा यह लूका के स्रोत की टिप्पणी है (संभवतः फिलिप्पुस, देखें प्रेरि. 21:8)? इन प्रश्नों के उत्तर निश्चयपूर्वक नहीं दिए जा सकते हैं। चाहे कितने भी व्यक्तियों का उल्लेख हो, बाइबल के विवरण प्रेरणा-प्राप्त हैं।

8:27 ''एक राजगृह अधिकारी '' शाब्दिक रूप से वह खोजा था। तौभी निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता है कि वह शारीरिक रूप से खोजा था अथवा खोजों का प्रधान था। पुराने नियम में पोतीपर भी खोजा कहलाता था, परन्तु तो भी वह शादीशुदा था (देखें, उत्प. 39:1)। व्यवस्थाविवरण 23:1 के अनुसार खोजों को यहोवा (YHWH) की सभा में आना वर्जित था, परन्तु यशायाह 56:3-5 में यह प्रतिबन्ध हटा लिया गया। इससे स्पष्ट प्रकट होता है कि

पवित्र आत्मा का नया-युग आरम्भ हो गया है। यह व्यक्ति परमेश्वर का भय रखता था अथवा नया चेला था, यह अनिश्चित है, परन्तु संभवतः वह नया विश्वासी था। विवरण से ज्ञात होता है कि वह एक सरकारी उच्च पद पर आसीन था।

■ **''कूशियों की रानी कन्दाके''** ''फिरौन'' अथवा ''कैसर'' के समान कन्दाके एक पदवी थी। इथियोपिया के राजा को देवता माना जाता था, इसलिए रानी के अधीन सारा शासन-प्रबन्ध खोजे के द्वारा किया जाता था।

8:28 ''यशायाह भविष्यद्वक्ता को पढ़ रहा'' स्पष्ट रूप से इस व्यक्ति ने यशायाह चमड़े का बना 29 फुट लम्बा और कीमती स्क्रोल खरीदा होगा (ऐसे स्क्रोल मृतक सागर स्क्रोलों में पाये गये थे) पवित्र आत्मा की अगुवाई से उसने मसीह-संबंधी पाठांश यशा. 53:7-8 निकाला और पढ़ता हुआ लौटा जा रहा था।

8:29 ''तब आत्मा ने फिलिप्पुस से कहा, ''जा और इस रथ के साथ हो ले।'' यह आदेशात्मक कथन है। इसका शाब्दिक अर्थ है ''चिपक जाना।'' पवित्र आत्मा फिलिप्पुस की हर बात में अगुवाई करता है।

8:30 ''फिलिप्पुस उसकी ओर दौड़ा और उसे यशायाह भविष्यद्वक्ता की पुस्तक पढ़ते हुए सुना'' प्राचीन काल में सब ऊँची आवाज़ में यह पुस्तक पढ़ते थे, चाहे वे अकेले ही क्यों न हों।

■ **''तू जो पढ़ रहा है क्या उसे समझता भी है?''** यह बड़ा ही अर्थपूर्ण प्रश्न है। पवित्र शास्त्र पढ़ते हुए उसे न समझ पाना संभव है। पवित्र आत्मा फिलिप्पुस को परमेश्वर द्वारा निर्धारित एक प्रबन्ध की ओर भेजता है जहां प्रकट होगा कि

1. नया युग आरम्भ हो गया है।
2. और जहाँ उसे लोगों में सामर्थपूर्ण गवाही देनी होगी।

8:31 ए.टी. रौबर्टसन, वार्ड पिक्चर्स इन द न्यू टैस्टामैन्ट (A. T. Robertson's *Word Pictures in the New Testament)* में बताते हैं कि इस पद की शर्त मिश्रित है। जो सारांश पहले निकलता है वह चैथी श्रेणी... का है, परन्तु शर्त पहले दर्जे... की है जो बोलचाल की भाषा में सामान्य है।'' (पेज 110)। लूका 19:40 की तरह यह पहले दर्जे की शर्त मप के स्थान पर मंद का इस्तेमाल करती है। शर्त मनोदशा के द्वारा निर्धारित की जाती है, न कि शर्त रखकर निर्धारित की जाती है। (देखें लूका 19:40)।

8:32-33: यह दोनों पद सप्तूजैन्त की यशायाह 53:7-9 से लिया गया मसीह-संबंधी उद्धरण है। मुझे आश्चर्य होता है कि पुराने नियम के मसीह संबंधी पदों में से केवल इन्हीं पदों पर जोर दिया गया है तथा अन्य पद छोड़ दिए गये हैं। तौभी फिलिप्पुस इन्हीं पदों को लेकर खोजे को यीशु मसीह के जीवन, उसकी सेवकाई उसकी मृत्यु और पुनरुत्थान का संपूर्ण विवरण सुनाता है। पुराने नियम की भविष्यद्वाणी पूरी हो जाती है और मानव जाति को पापों की क्षमा दी जाती है।

8:35 ''फिलिप्पुस ने अपना मुँह खोला'' यह पद पुराने नियम के ''दुखी दास'' संबंधी विवरण की उस विशेष और केन्द्रीय बात को दर्शाता है जिसका प्रचार सुसमाचारों में हुआ। मैं विश्वास करता हूं कि स्वयं यीशु ही ने प्रारम्भिक कलीसिया को बताया था कि प्राचीन भविष्यद्वाणियाँ उस पर लागू होती हैं (देखें, लूका 24:27)।

8:36 ''देख! जल! अब मुझे बपतिस्मा लेने में क्या रोक है'' फिलिप्पुस के सुसमाचार प्रचार में बपतिस्मा लेना भी शामिल था (देखें, मत्ती 3; 28:19; प्रेरि. 2:38; रोमि. 6:1-11; कुलु. 2:12)। प्रेरि. 2:38 में विशेष शीर्षक देखें। यहाँ ध्यान दीजिए कि फिलिप्पुस को एक नए मसीही को बपतिस्मा देने के लिये यरूशलेम के प्रेरितों से अनुमति नहीं लेनी पड़ी। बपतिस्मा संस्थागत विवाद का विषय नहीं होता है परन्तु राज्य का मुद्दा होता है। हमें संस्थागत

परम्पराओं से सावधान रहना चाहिए जिनमें पानी को लेकर विवाद पाया जाता है। क्या खोजा चिन्तित था कि उसे ग्रहण किया जाएगा अथवा नहीं?

1. जाति संबंधी बाधाएँ
2. शारीरिक बाधाएँ
3. सामाजिक-आर्थिक बाधाएँ
4. प्रश्नोत्तरी संबंधी बाधाएँ

मसीह में सब प्रकार की बाधाएँ दूर हो जाती हैं (देखें इफि. 2:11-3:31)। जो कोई चाहे वह आए, मसीह में उसका स्वागत होता है (देखें, यूहन्ना 1:12; 3:16; रोमि. 10:9-13)।

8:37 इस पद में जो खोजे के विश्वास का अंगीकार पाया जाता है, यह बहुत सी प्राचीन पाण्डुलिपियों में नहीं पाया जाता है, जैसे चैस्टर बैटली P[45](Chester Beatty Papyri), पेपयरी-पी[45]; पी[74] (बाडमेर पेपयरी) P[74] (Bodmer Papyri) अथवा प्राचीन यूनानी हस्तलेख बय ए, बी तथा सी हस्तलेख इत्यादि। यह पद कुछ अनुवादों में भी नहीं पाया जाता है जैसे वुलगाता, सीरियाक, कापटिक अथवा इथिपियाई अनुवादों में। पद 37 प्रेरितों के काम की पुस्तक का मूल पद नहीं है। यू बी एस[4] UBS[4] भी इसे मानता है। यह पद न्यू अमेरिकन स्टैन्डर्ड बाइबल (1970) में भी सम्मिलित नहीं किया गया है, परन्तु 1995 के आधुनिक संस्करण में यह पद कोष्ठक में दिया गया है।

8:38-39 ''दोनों जल में उतरे...जल में से बाहर आए'' यह डूब के बपतिस्में का प्रमाण नहीं है। संदर्भ से ज्ञात होता है कि दोनों जल में उतरे, न कि बपतिस्में के तरीके में या विधि में उतरे। अपनी पूर्व धारणाओं की प्रवृत्ति से सावधान रहें।

8:39 ''प्रभु का आत्मा फिलिप्पुस को उठा ले गया'' क्या यह एलिय्याह के समान (देखें, 1 राजा 18:12; 2 राजा 2:16) अथवा यहेजकेल के समान (देखें यहेज. 3:14; 8:3) एक आश्चर्यजनक घटना थी अथवा फिलिप्पुस का वहाँ से तत्काल चले जाने का एक साधारण सा विवरण है; कुछ निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता है। परन्तु एक बात सत्य है कि यहाँ हृदय-परिवर्तन में पवित्र आत्मा गहराई से क्रियाशील था। इस बात पर भी ध्यान दें कि उस नए मसीही खोजे के पास यशायाह की पुस्तक का स्क्रोल था और उसमें पवित्र आत्मा निवास करता था और उससे सवाल-जवाब नहीं किए गए थे और न ही उसका गहराई के साथ फौलो-अप किया गया था।

▪ **''आनन्द मनाता हुआ अपने मार्ग पर चला गया''** सुसमाचार में सदैव आनन्द पाया जाता है (देखें, प्रेरि. 8:8)। ईरैनीयुस एक परम्परा का उल्लेख करता है जिसमें कहा गया है कि यह खोजा आगे चलकर अपने लोगों के मध्य सुसमाचार का महान् प्रचारक बना। पवित्र आत्मा ने स्वयं उसका फालो-अप किया और उसका शिक्षण किया।

8:40 फिलिप्पुस ने कैसरिया पहुंचने तक, अपने प्रचार-कार्य को पलीस्तीन नगर अशदोद (i.e., *Azotus*) में जारी रखा। वह स्पष्ट रूप से समझ चुका था कि सुसमाचार को सामरियों और इथियोपियाई लोगों सहित सारी दुनियाँ में सुनाया जाना आवश्यक है, तथा पलीस्तीन भी इसमें शामिल हैं।

विचार विमर्श के लिये प्रश्न

यह अध्ययन में <u>मार्गदर्शन</u> करने की टीका है, इसका अर्थ है कि आप बाइबल की अपनी व्याख्या करने के स्वयं ही जिम्मेदार हैं। हम में से प्रत्येक को उसी ज्ञान के अनुसार चलना चाहिए जो हमारे पास है। व्याख्या करने के कार्य में आप आपकी बाइबल और पवित्र आत्मा केन्द्रिय स्थान रखते हैं। यह कार्य व्याख्याकार पर न छोड़ दें।

निम्नलिखित प्रश्न अपनी सहायता के लिए दिए गए है ताकि आप पुस्तक के गम्भीर विषयों पर पुनर्विचार कर सकें। वे आपके विचारों को आन्दोलित करने के लिए हैं, इनके अलावा और भी प्रश्न हो सकते हैं:

1. प्रारम्भिक कलीसिया पर परमेश्वर ने सताव क्यांे आने दिया?
2. सामरिया में क्यों सुसमाचार का प्रचार प्रभावशाली रूप से किया गया?

3. क्या शमौन विश्वासी था?
4. सामरियों ने विश्वास करते समय पवित्र आत्मा क्यों नहीं पाया था?
5. खोजा किस प्रकार के लोगों का प्रतिनिधित्व करता है?
6. पद 37 सारी बाइबलों में क्यों नहीं पाया जाता है?

Copyright © 2013 Bible Lesson International

प्रेरितों के काम-9
बाइबल के विभिन्न आधुनिक अनुवादों में पैराग्राफ-विभाजन

UBS4	NKJV	NRSV	TEV	NJB
शाऊल का हृदय परिवर्तन	दमिश्क का मार्ग: शाऊल का बदल जाना	तरसुस निवासी शाऊल का हृदय- परिवर्तन	शाऊल का हृदय-परिर्वतन	शाऊल का हृदय परिर्वतन
9:1-9	9:1-9	9:1-9	9:1-2	9:1-2
			9:3-4	9:3-9
			9:5a	
			9:5b-6	
			9:7-9	
	हनन्यान द्वारा शाऊल का बपतिस्मा			
9:10-19a	9:10-19	9:10-19a	9:10a	9:10-12
			9:10b	
			9:11-12	
			9:13-14	9:13-19अ
			9:15-16	
			9:17-19a	
दमिश्क में शाऊल का प्रचार	शाऊल द्वारा मसीह का प्रचार		दमिश्क में शाऊल द्वारा प्रचार	दमिश्क में शाऊल का प्रचार
9:19b-22		9:19b-20	9:19b-22	9:19b-22
	9:20-22		9:21	9:21
			9:22	
शाऊल का यहूदियों से बचना	शाऊल का मृत्यु से बचना	शाऊल का यरूशलेम में प्रथम आगमन		
9:23-25	9:23-25	9:23-25	9:23-25	9:23-25
शाऊल यरूशलेम में	शाऊल यरूशलेम में		शाऊल यरूशलेम में	यरूशलेम में शाऊल की भेंट
9:26-30	9:26-30	9:26-30	9:26-30	9:26-30
	कलीसिया की उन्नति			शान्ति
9:31	9:31	9:31	9:31	9:31
एनियास की चंगाई	एनियास का स्वस्थ होना	लुद्दा और याफा की ओर पतरस की यात्रा	लुद्दा और याफा में पतरस	याफा में लकवे के रोगी की पतरस द्वारा चंगाई
9:32-35	9:32-35	9:32-35	9:32-35	9:32-35
दोरकास का जिलाया जाना	दोरकास का जिलाया जाना			याफा में पतरस द्वारा एक स्त्री को जिलाना
9:36-43	9:36-43	9:36-43	9:36-43	9:36-38
				9:39-42
				9:43

पठन चक्र तीसरा (''अच्छे बाइबल अध्ययन का मार्गदर्शन'' से)

पैराग्राफ स्तर पर मूल लेखक के अभिप्राय को समझना

यह अध्ययन करने की मार्गदर्शक टीका है, जिसका अर्थ है कि आप अपनी बाइबल-व्याख्या के स्वयं उत्तरदायी हैं। हम में से प्रत्येक को अपने ज्ञान व समझ के अनुसार कार्य करना चाहिए। व्याख्या-प्रक्रिया में आप, आपकी बाइबल तथा पवित्र आत्मा प्राथमिक स्थान रखते हैं। आपको यह टीका कार्य टीकाकार पर नहीं छोड़ना चाहिए।

पूरा अध्याय एक बैठक में पढ़ें। विषयों को पहचानें। अपने विषय-विभाजन की तुलना उपरोक्त पाँच आधुनिक अनुवादों के विषय-विभाजन से करें। पैराग्राफों का विभाजन प्रेरणा प्राप्त नहीं होता है, परन्तु यह मूल लेखक के अभिप्राय को समझने की कुंजी है, जो कि व्याख्या करने का आधार है। प्रत्येक पैराग्राफ में केवल एक ही मूल विषय होता है:

1. पहला पैराग्राफ
2. दूसरा पैराग्राफ
3. तीसरा पैराग्राफ
4. अन्य

सन्दर्भ की जानकारी

A. प्रेरितों के काम पुस्तक में बल देने में परिवर्तन
   1. पतरस से हटकर प्रेरित पौलुस पर बल
   2. पलीस्तीन से हटकर मेडिटेरियन संसार पर बल
   3. यूहदियों से हटकर गैर-यहूदियों पर बल

B. पौलुस का हृदय-परिवर्तन कलीसियाई इतिहास की इतनी अधिक महत्वपूर्ण घटना है कि इस पुस्तक में तीन बार इसका वर्णन किया गया है:
   1. लूका का विवरण, प्र्रेरि. 9:1-30
   2. यरूशलेम की भीड़ के सामने पौलुस द्वारा विवरण, प्रेरि. 22:3-16
   3. कैसरिया में अग्रिप्पा-प्प्, के सामने पौलुस का विवरण, प्रेरि. 26:4-18
   4. गलतियों 1:13-17 तथा 2 कुरि. 11:32-33 में भी पौलुस संक्षेप में इसी काल से संबंधित बातों की चर्चा करता है।

C. स्तिफनुस और पौलुस के उपदेशों में समानता स्पष्ट दिखाई देती है। पौलुस उन्हीं हेलेनीवादी यहूदियों के बीच अपनी सेवकाई आरम्भ करता है जिनके मध्य स्तिफनुस ने सेवकाई आरम्भ की थी। पौलुस ने प्रेरि. 7 के स्तिफनुस के भाषण को सुना था (देखें, प्रेरि. 7:58; 8:1; 22:20)। यह भी हो सकता है कि पौलुस उन अगुवों में से एक था जो स्तिफनुस से वाद-विवाद करने के लिए कुरेनी, सिकन्दरिया, किलिकिया और एशिया से यरूशलेम के सभाघर में एकत्रित हुए थे, और वह प्रभावित हुआ हो।

D. पौलुस के हृदय-परिवर्तन में सहायक कुछ संभावित बातें:
   1. मन की शान्ति और आनन्द प्रदान करने में यहूदीवाद की असफलता।
   2. रब्बी लोगों के मध्य यीशु की शिक्षाओं पर चर्चा होना और जानकारी होना (विशेषकर यरूशलेम में)।
   3. उसने स्तिफनुस का उपदेश सुना था और उसकी मृत्यु में सम्मिलित था, शायद उसने उस से वाद-विवाद भी किया हो।
   4. उसने सताव के दौरान उनका आचरण और विश्वास देखा था।

5. जी उठे हुए प्रभु के साथ उसकी व्यक्तिगत भेंट ने उसका सब कुछ बदल दिया।

शब्दों और वाक्यांशों का अध्ययन

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 9:1-9
1और शाऊल जो अब तक प्रभु के चेलों को धमकाने और घात करने की धुन में था, महायाजक के पास गया। 2और उससे दमिश्क के आराधनालयों के नाम पर इस अभिप्राय की चिट्ठियां मांगी कि क्या पुरुष, क्या स्त्री, जिन्हें वह इस पंथ पर पाए उन्हें बान्धकर यरूशलेम में ले आए। 3परन्तु चलते-चलते जब वह दमिश्क के निकट पहुंचा, तो एकाएक आकाश से उसके चारों ओर ज्योति चमकी। 4और वह भूमि पर गिर पड़ा, और यह शब्द सुना, ''हे शाऊल, हे शाऊल, तू मुझे क्यों सताता है?'' 5उसने पूछा, ''हे प्रभु, तू कौन है?'' उसने कहा, ''मैं यीशु हूं; जिसे तू सताता है। 6परन्तु अब उठकर नगर में जा, और जो तुझे करना है, वह तुझसे कहा जाएगा।'' 7जो मनुष्य उसके साथ थे, वे अवाक् रह गए; क्योंकि शब्द तो सुनते थे, परन्तु किसी को देखते न थे। 8तब शाऊल भूमि पर से उठा, परन्तु जब आंखें खोलीं तो उसे कुछ दिखाई न दिया और वे उसका हाथ पकड़के दमिश्क में ले गए। 9और वह तीन दिन तक न देख सका, और न खाया और न पीया।

9:1 ''शाऊल जो अब तक धमकाने और घात करने की धुन में था'' उसे इस कार्य की धुन सवार थी और वह कई चेलों को घात भी कर चुका था (प्रेरि. 8:1)। वह अपने विषय में बताता है कि वह चेलों के विरुद्ध अत्यन्त क्रोध से भरकर बाहर के नगरों में भी उनका पीछा किया करता था (देखें प्रेरि. 26:11)।

■ **''प्रभु के चेलों को''** अर्थात् वे लोग जो नए विश्वासी थे और सीखा करते थे। यह शब्द केवल सुसमाचारों में और प्रेरितों के काम पुस्तक में आया है। शीघ्र ही यह शब्द ''पवित्र लोग'' में बदल गया इस अध्याय में परमेश्वर के लोगों को सम्बोधित करने के लिए विभिन्न शब्द प्रयुक्त हुए हैं, ध्यान दें:

1. चेले, प्रेरि. 9:1,10,19,25,26,36,38
2. पंथ, प्रेरि. 9:2
3. पवित्र लोग, प्रेरि. 9:13,32,41
4. भाई, प्रेरि. 9:17

■ **''महायाजक के पास गया''** यह स्पष्ट रूप से सन्हेद्रिन की ओर संकेत है (देखें, प्रेरि. 26:10)। प्रेरि. 4:5 में सन्हेद्रिन विषय देखें।

9:2 ''दमिश्क के आराधनालयों के नाम चिट्ठियाँ '' रोमी सरकार ने सन्हेद्रिन को जो यहूदियों की महासभा कहलाती थी, आराधनालयों की गतिविधियों को चलाने और यहूदियों के जीवनों की देखभाल के लिये सीमित अधिकार दे रखे थे (देखें, 1 मकाबी 15:16-21 तथा योसेपस, एंटीक्वीटी 14,10.2)।(cf. I Macc. 15:16-21 or Josephus, *Antiq.* 14.10.2) यहूदी धर्म यूनानी-रोमी साम्राज्य का मान्यता प्राप्त धर्म था।
स्पष्ट रूप से इन चिट्ठियों का सम्बन्ध उन यहूदी मसीहियों को वापस लाने से संबंधित था जो यहूदियों के सताव के कारण यरूशलेम छोड़कर भाग गए थे (देखें, प्रेरि. 9:14, 21; 22:5; 26:10)।

■ **"यदि"** यह एक तीसरी श्रेणी का सशर्त वाक्य है जिसका अर्थ है संभावित कार्रवाई

■ **''मार्ग''** प्रारम्भ में विश्वासियों को पन्थ कहा जाता था (देखें, प्रेरि. 19:9, 23; 22:4; 24:14, 22 और 18:25, 26)। इस शब्द के पीछे पुराने नियम की पृष्ठभूमि है जो उनके विश्वास को दर्शाती है (देखें, भजन 1:1; 16:11; 119:105; 139:24; नीति. 4:10-19)। मत्ती 7:14 में यीशु ने इस धारणा का उपयोग किया और यूहन्ना 14:6 में

अपने लिये इसका उपयोग किया। मसीही धर्म यीशु के साथ व्यक्तिगत संपर्क है और प्रतिदिन उसकी संगति में व्यतीत किया जाता है।

▪ **''स्त्रियाँ''** स्त्रियों का तीन बार उल्लेख किया जाना जिन्हें पौलुस ने सताया, उसके घोर अत्याचार को दर्शाता है (देखें, प्रेरि. 8:3; 22:4)। लूका को स्त्रियों की विशेष चिन्ता थी।

9:3 ''दमिश्क'' यह एक प्राचीन नगर था और रोमियों के प्रान्त सीरिया की राजधानी था जो गलील के उत्तर-पूर्व की दिशा में था। यह यरूशलेम से 150 मील की दूरी पर था।

▪ **''एकाएक''** इस शब्द में ऐसी घटना का भाव भी छिपा है जो अचानक आ पड़े और जिसकी आशा न हो।

▪ **''आकाश से ज्योति चमकी''** पौलुस इस ज्योति के बारे में अलग अलग विवरण तीन बार देता है:

1. ''एकाएक आकाश से उसके चारों ओर ज्योति चमकी'' (प्रेरि. 9:3)।
2. ''एकाएक एक बड़ी ज्योति आकाश से मेरे चारों ओर चमकी'' (प्रेरि. 22:6)।
3. ''मैंने आकाश से सूर्य के तेज से भी बढ़कर एक ज्योति, चमकती हुई देखी'' (प्रेरि. 26:13)।

पौलुस अक्सर इस घटना को याद रखता है। धर्म विज्ञान की दृष्टि से यह ज्योति परमेश्वर की उपस्थिति अथवा यहोवा (YHWH) के शकीनाह का प्रतीक हो सकती है जो सदा जंगलों में इस्राएल जाति के मध्य रहा करती थी। इस्राएली लोग ज्योति को परमेश्वर की महिमा मानते थे (देखें, प्रेरि. 3:13 में विशेष शीर्षक ''महिमा'' (डोक्सा) *(DOXA)*। संभवतः शाऊल को, जो एक विद्वान रब्बी था, परमेश्वर की उपस्थिति का दर्शन प्राप्त हुआ।

9:4 ''शब्द सुना'' इस स्वर्गीय शब्द से यहूदीवाद परिचित था। इसे बाथ कोल *(bath kol)* कहा जाता था। इसके द्वारा यहूदियों को, मलाकी अथवा इतिहास की पुस्तक की समाप्ति के काल में और यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की सेवकाई के आरम्भ में, परमेश्वर की ओर से सूचनाएँ अथवा परमेश्वर का अनुमोदन प्राप्त होता था। इस प्रकार का प्रकाशन प्राप्त करना आवश्यक था क्योंकि इस काल में कोई प्रेरणा-प्राप्त नबी नहीं पाया जाता था।

▪ **''शाऊल, शाऊल''** इब्रानी में इस प्रकार से नाम दोहराया जाना, परस्पर गहरे सम्बन्ध को दर्शाता है।

▪ **''तू मुझे क्यों सताता है''** धर्म-वैज्ञानिक रूप से यह बड़ी महत्वपूर्ण बात है क्योंकि यह कलीसिया और यीशु के मध्य परस्पर गहरे संबंध और निरंतरता को दर्शाता है (देखें, मत्ती 10:40; 25:40, 45)। पौलुस कलीसिया को सता रहा था, परन्तु यीशु ने इसे व्यक्तिगत रूप से लिया। प्रेरि. 26:14 के आधार पर हम जानते हैं कि यीशु ने आरामी भाषा में पौलुस से बातचीत की।

धर्म वैज्ञानिक रूप से ;जीमवसवहपबंससलद्ध यह बात भी महत्वपूर्ण है कि मसीही धर्म एक व्यक्ति (यीशु) तथा एक समूह (कलीसिया) दोनों है। कलीसिया के लिये नए नियम में निम्नलिखित सामूहिक रूपकों का उपयोग किया गया है:

1. देह
2. परिवार
3. इमारत
4. संत

उपरोक्त सारी बातें सामूहिक विश्वास को दर्शाती हैं (देखें 1 कुरि. 12:7)। इसका आरम्भ व्यक्तिगत रूप से होता है परन्तु बाद में समूह बन जाता है जहां एक दूसरे की चिन्ता की जाती है। यह व्यक्तिगतता और सामूहिकता रोमियों 5:12-21 में देखी जा सकती है, जहाँ पौलुस आदम और मसीह की चर्चा करता है। एक मनुष्य सब मनुष्यों का हिस्सा होता है, उस एक मनुष्य का प्रभाव सब मनुष्यों पर पड़ सकता है (देखें, यहोशू 7)।

9:5a "हे प्रभु, आप कौन है" पौलुस का यहाँ "प्रभु" शब्द का प्रयोग करने का अर्थ क्या था?

1. हे प्रभु अथवा हे श्रीमान्! आदर सूचक शब्द होता है (उदाहरणार्थ देखें, यूहन्ना 4:11)
2. पुराने नियम में यहोवा (YHWH) शब्द का अनुवाद प्रभु किया गया है (जैसे, उत्पत्ति 2:4)

यदि वह आश्चर्यचकित था, तो उपरोक्त पहली बात लागू होगी, परन्तु यदि आकाश की ज्योति को परमेश्वर का कार्य कहा जाए, तब उपरोक्त दूसरी बात लागू होगी। यदि हम दूसरी बात लागू करते हैं, तो यह पौलुस के रब्बीपन के सोच-विचारों पर अचानक पड़ने वाली चुनौती अथवा प्रहार था। उसके लिए यह बड़ा ही विस्मयकारी और भयानक समय रहा होगा! प्रेरि. 1:6 में देखें विशेष शीर्षक: ईश्वरत्व के नाम

9:5b-6b ये पद प्रारम्भिक यूनानी हस्तलेखों में नहीं पाए जाते हैं। ये शब्द केवल एक ही लातीनी हस्तलेख में पाये जाते हैं। ईरास्मुस ने बुलगाता (Vulgate) से अनुवाद करते हुए अपने 1516 के यूनानी नए नियम के प्रथम संस्करण में इन पदों को शामिल किया। ये शब्द प्रेरि. 26:14 में पाए जाते हैं। जो शास्त्रियों की प्रवृत्ति को दर्शाता है ताकि सम्पूर्ण विवरण प्राप्त हो सके और समान्तरता दिखाई दे।

9:5 "मैं यीशु हूँ जिसे तू सताता है" पौलुस ने दावा किया है कि उसने महिमान्वित यीशु का दर्शन किया था (देखें, प्रेरि. 22:14; 1 कुरि. 9:1; 15:8-9)। पौलुस ने आगे चलकर समझा कि वह अन्य जातियों में मसीह का प्रचार करने के लिये बुलाया गया है। उसने अनुभव से जान लिया कि नासरत का क्रूस पर चढ़ाया हुआ यीशु ही महिमान्वित मसीह है।

9:6 प्रेरि. 9:10-19 में यह पद विस्तार के साथ समझाया गया है।

- **"ज़रूर करना"** प्रेरि. 1:16 में टिप्पणी (*dei*) देखें।

9:7 "जो मनुष्य उसके साथ सफ़र किया" इसका अर्थ संभवतः यह हो सकता है:

1. मन्दिर के सिपाही पौलुस के साथ हों।
2. संभवतः हेलेनीवादी सभाघर के अन्य उत्साही यहूदी साथ हों।
3. यरूशलेम के अन्य धर्म वैज्ञानिक छात्र उसके साथ हों।

- **"शब्द तो सुनते थे परन्तु किसी को देखते न थे"** पद 9:7 तथा 22:9 के बीच असंगति दिखाई देती है क्योंकि वहां पौलुस कहता है "मेरे साथियों ने ज्योति तो देखी, परन्तु जो मुझ से बोलता था उसका शब्द न सुना।" इस समस्या के समाधान के लिए बहुत सी परिकल्पनाएँ की गई हैं जैसे:

1. यह वाक्य रचना संबंधी समस्या है। क्रिया शब्द "सुनना" सम्बन्ध कारक (प्रेरि. 9:7) अथवा कर्म कारक (प्रेरि. 22:9) का स्थान ले सकता है। इन भिन्न भिन्न रूपों के भिन्न-भिन्न अर्थ हो सकते हैं अथवा प्रयोग हो सकते हैं। एनआरएसवी (NRSV) बाइबल के फुटनोट में इस प्रकार लिखा है, "यूनानी भाषा के अनुसार पौलुस के साथियों ने आवाज़ तो सुनी, परन्तु जो शब्द कहे गये उन्हें नहीं सुना।"
2. अन्य कुछ लोगों का विचार है कि यह यूहन्ना 12:29-30 के समान घटना है, जबकि यीशु यरूशलेम में प्रवेश करने वाला था और आकाशवाणी हुई थी।
3. कुछ अन्य कहते हैं कि यहां यीशु की आवाज़ की ओर नहीं परन्तु पौलुस की आवाज की ओर संकेत पाया जाता है। उन्होंने पौलुस को बोलते सुना, परन्तु उन्होंने यीशु को बोलते नहीं सुना।
4. कुछ अन्य कहते हैं कि सहदर्शी सुसमाचारों के समान समस्या है। जहां हर एक सुसमाचार लेखक अपने दृष्टिकोण से ही, एक समान घटना, उपदेशों और यीशु के कार्यों का वर्णन करता है, और जो भिन्न चश्मदीद गवाहों के विवरण हैं।

9:8 "उसकी आँखें तो खुली है, उसे कुछ दिखाई न दिया" इस घटना के बाद से पौलुस को स्पष्टरूप से आँखों की तकलीफ रही (देखें, गला. 4:13-15; 6:11)। मैं स्वयं व्यक्तिगत रूप से विश्वास करता हूं कि "पौलुस की देह में

जो काँटा चुभाया गया (देखें, 2 कुरि. 12:7-10; गला. 4:13-15; 6:11) वह संभवतः इसी घटना का परिणाम था। यहाँ एक व्यंग्य पाया जाता है; पौलुस अपने अन्दर नयापन सा अनुभव करने लगा था। वह सोचता था कि वह देख सकता है (आत्मिक रूप से और शारीरिक रूप से, देखें यूहन्ना 9), परन्तु उसने पाया कि वह तो अन्धा है। यीशु का दर्शन पाने के बाद वह कुछ समय तक शारीरिक रूप से अन्धा रहा, परन्तु आत्मिक रूप से उसकी आँखें बिल्कुल खुली थीं।

9:9 ''वह तीन दिन तक न देख सका'' यह मिली जुली सी अपूर्ण बात है। कुछ टीकाकार इस अवसर को पौलुस द्वारा स्वर्गलोक का दर्शन करने का समय मानते हैं जिसका वर्णन वह 2 कुरि. 12:1-4 में करता है।

▪ **''और न खाया, और न पीया''** पौलुस इस समय उपवास रखकर प्रार्थना में लगा था (देखें, प्रेरि. 9:11)। पौलुस के हृदय व विचारों में अद्‌भुत जागृति आ गई होगी। अब उसमें परिवर्तन आना आरम्भ हो गया होगा क्योंकि वह सुसमाचार के विरोधी से सुसमाचार का प्रचारक बन रहा था।

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 9:10-19 अ
[10]दमिश्क में हनन्याह नाम एक चेला था, उससे प्रभु ने दर्शन में कहा, ''हे हनन्याह!'' उसने कहा, ''हां, प्रभु।'' [11]तब प्रभु ने उससे कहा, ''उठकर उस गली में जा जो 'सीधी' कहलाती है, और यहूदा के घर में शाऊल नाम एक तरसुसवासी को पूछ ले; क्योंकि देख, वह प्रार्थना कर रहा है। [12]और उसने हनन्याह नामक एक पुरुष को भीतर आते, और अपने ऊपर हाथ रखते देखा है; ताकि फिर से दृष्टि पाए।'' [13]हनन्याह ने उत्तर दिया, ''हे प्रभु, मैंने इस मनुष्य के विषय में बहुतों से सुना है कि इसने यरूशलेम में तेरे पवित्र लोगों के साथ बड़ी-बड़ी बुराइयां की हैं। [14]और यहां भी इसको महायाजकों की ओर से अधिकार मिला है कि जो लोग तेरा नाम लेते हैं, उन सबको बान्ध ले।'' [15]परन्तु प्रभु ने उससे कहा, ''तू चला जा; क्योंकि यह तो अन्यजातियों और राजाओं, और इस्राएलियों के सामने मेरा नाम प्रगट करने के लिये मेरा चुना हुआ पात्र है। [16]और मैं उसे बताऊंगा, कि मेरे नाम के लिये उसे कैसा-कैसा दुःख उठाना पड़ेगा।'' [17]तब हनन्याह उठकर उस घर में गया, और उस पर अपना हाथ रखकर कहा, ''हे भाई शाऊल, प्रभु, अर्थात् यीशु, जो उस रास्ते में, जिससे तू आया तुझे दिखाई दिया था, उसी ने मुझे भेजा है कि तू फिर दृष्टि पाए और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो जाए।'' [18]और तुरन्त उसकी आंखों से छिलके से गिरे और वह देखने लगा और उठकर बपतिस्मा लिया; [19]फिर भोजन करके बल पाया।

9:10 ''हनन्याह'' इस नाम का अर्थ है ''यहोवा (YHWH) अनुग्रहकारी है।'' वह भक्त और प्रतिष्ठित व्यक्ति था (22:12)।

▪ **''मैं यहाँ हूँ, प्रभु''** यह यहूदियों में हाजिर होने का एक मुहावरा है (देखें, यशायाह 6:8)। पद 11 मुहँ से कहा गया वचन था क्योंकि यह एक विशेष आज्ञा थी।

9:12 ''उसने हनन्याह नामक एक पुरुष का दर्शन देखा'' प्राचीन यूनानी लेखों में अर्थात् पी[74], ए तथा ए ,א, हनन्नयाह द्वारा दर्शन देखे जाने का उल्लेख नहीं है, परन्तु एम एस एस, बी तथा सी (UBS4) हस्तलेखों में दर्शन देखने का उल्लेख है। यू बी एस4 में संक्षेप में लिखा गया है परन्तु कठिनाई के साथ ''सी'' श्रेणी दी गई है। यह पद दर्शाता है कि हनन्याह का आना, प्रार्थना करना और संदेश देना, उन बातों की पुष्टि करता है जो यीशु ने पहले पौलुस से कहीं थीं (देखें, प्रेरि. 9:6)।

▪ **''अपने हाथ उसपर रखे''** प्रेरि. 6:6 में विशेष टिप्पणी देखें।

9:13 ''मैंने बहुतों से सुना है'' स्पष्ट रूप से हनन्याह ने पौलुस के भयंकर सतावों के बारे में यरूशलेम से भाग आए शरणार्थियों द्वारा बुरे समाचार सुने होंगे।

▪ **"तेरे पवित्र लोग"** यूनानी शब्द हगीओई *(hagioi)* का सम्बन्ध हगिऔस शब्द (*hagios)* से है, जिसका अर्थ है "पवित्र।" पुराने नियम में पवित्र कादोश (*kadosh)* शब्द का अर्थ उस वस्तु व्यक्ति, स्थान आदि से संबंध रखता है जो परमेश्वर के कार्य के लिये पृथक की जाती है। फिलि. 4:21 को छोड़कर सभी जगह "पवित्र" शब्द बहुवचन में आया है लेकिन संदर्भ के अनुसार फिलिप्पियों में भी यह शब्द बहुवचन में है। मसीही कहलाना, परिवार या समुदाय का भाग होना है। विश्वास में कोई भी अकेला नहीं है।

विशेष विषय: पवित्र जन

यह यूनानी शब्द इब्रानी भाषा के कादोश (Kadosh) का समानार्थी शब्द है (संज्ञा (NOUN), BDB 871; VERB (क्रिया) BDB 872, KB 1066-1067 ; देखें विशेष विषय : पवित्र (Holy), जिसका आधारभूत अर्थ है, किसी व्यक्ति या किसी वस्तु या किसी स्थान को यहोवा (YHWH) के प्रयोग के लिए पृथक करना। अंग्रेजी में "The Sacred" शब्द के अर्थ को यह दर्शाता है। इस्राएल यहोवा (YHWH) परमेश्वर की "पवित्र प्रजा" कहलाती थी (देखें,1 पत. 2:9 जो निर्ग. 19:6 का उद्धरण है)।यहोवा अपने स्वभाव और चरित्र के कारण मानव जाति से पृथक है (अनन्त, असृजी पवित्रता)। वह मानदण्ड (Standard) है जिसके द्वारा अन्य सब नावे और जाँचे जापे हैं। वह अति पवित्र है, एकमात्र पवित्र परमेश्वर।

परमेश्वर ने सहभागिता के लिये मानवजाति की रचना की, परन्तु पाप में गिरने के कारण (उत्पत्ति 3) पवित्र परमेश्वर और पापपूर्ण मानवजाति के बीच नैतिक दीवार खड़ी हो गई। परमेश्वर को भाया कि अपनी विवेकशील रचना को बहाल (Restore) करे, इसलिए उसने अपने लोगों को पुकारा कि वे "पवित्र" बनें (देखें, लैव्य. 11:44; 19:2; 20:7,26; 21:8)। यहोवा (YHWH) पर विश्वास लाकर और वाचा का पालन करने से लोग पवित्र बने, परन्तु उनसे कहा गया कि वे पवित्र जीवन व्यतीत करें (देखें, विशेष विषय : पवित्रकरण, देखें, मत्ती 5:48; इफि. 4:1,17; 5:2-3,15; 1 पत. 1:15)

यह पवित्र जीवन बिताया जा सकता है, असम्भव नहीं है, क्योंकि विश्वासी पूरी तरह ग्रहण किये और माफ कर दिये गये हैं (1) वे यीशु के जीवन द्वारा और (2) उसके कार्य द्वारा तथा उनके जीवनों व हृदयों में पवित्र आत्मा की उपस्थिति द्वारा ग्रहण किए गए हैं यह विश्वासी की विरोधाभाषी स्थिति स्थापित करता है :

1. वे पवित्र इसलिए हैं क्योंकि मसीह के धार्मिकता उनमें डाली गई है (रोमियों 4)
2. वे पवित्र आत्मा की उपस्थिति के कारण पवित्र जीवन जीने के लिए बुलाए गए हैं (देखे, विशेष विषय : पवित्रीकरण

निम्नलिखित बातों के कारण विश्वासी "पवित्र लोग" (Hagioi) हैं :

1. यह पवित्र परमेश्वर की इच्छा है (पिता की, यूह. 6:29,40; 1 पत. 1:15-16)
2. पवित्र पुत्र का कार्य है (यीशु का, 2 कुरि. 5:21; 1 पत. 1:18-21)
3. पवित्र आत्मा का भीतर निवास (रोमि. 8:9-11,27)

(फिलि. 4:21 को छोड़कर), नए नियम में सदैव पवित्र लोगों का उल्लेख बहुवचन में है। तो भी फिलिप्पीयों में यदि संदर्भ देखें, तो बहुवचन प्रतीत होता है। उद्धार पाना, एक परिवार का, एक देह का, एक इमारत का हिस्सा बनना है। बाइबिल का विश्वास व्यक्तिगत रूप से ग्रहण करने पर आरंभ होता है, परन्तु सामूहिक सहभागिता में यह विश्वास दिखाई देता है। हमें कलीसिया अथवा मसीह की देह की उन्नति रक्षा और भलाई के लिए विभिन्न वरदान दिए जाते हैं ; देखें, 1 कुरि. 12:7,11; हम दूसरों की सेवा करने के लिए बचाए गए हैं। पवित्रता, एक परिवार की विशेषता होती है।

"पवित्र लोग" विश्वासियों का शीर्षक (Title) बना (देखें, प्रेरि. 9:13,32,41; 26:10; रोमि. 1:7; 1 कुरि. 1:2; 2 कुरि. 1:1; इफि. 1:1; फिलि. 1:1; कुलु. 1:2) और यह शब्द दूसरों की सेवा का प्रतीक बना (रोमि. 12:13; 16:2; इफि. 1:15; कुलु. 1:4; 1 तीम 5:10; इब्रा. 6:10)। पौलुस, गैर यहूदी कलीसियाओं की ओर से यरूशलेम

की कलीसिया के निर्धन पवित्र लोगों की सेवा में आर्थिक सहायता ले गया था (रोमि. 15:25-26; 1 कुरि. 16:1; 2 कुरि. 8:4; 9:1)

Copyright © 2014 Bible Lessons International

9:14 "प्रधान याजकों" पुराने नियम में लेवी गोत्र से याजक बना करते थे और हारून के वंश में से महायाजक चुना जाता था जो जीवन भर का पद होता था (देखें लैव्य. 8-10)। परन्तु जैसे जैसे समय बीता, यह परम्परा समाप्त हो गई और रोमी शासनकाल में महायाजक पद रोमी सरकार द्वारा खरीदा जाने लगा। इसी कारण हन्ना महायाजक के परिवार से अनेक सदूकी महायाजक पाए जाते थे।

■ **"जो तेरा नाम लेते हैं"** इस वाक्यांश में महत्वपूर्ण धार्मिक शिक्षाएँ पाई जाती हैं। लूका ने अनेक बार प्रेरितों के काम पुस्तक में इसका उपयोग उन लोगों के लिए किया है जो:

1. यीशु को पुकारते हैं, (देखें, प्रेरि. 7:59)
2. जो यीशु को अपना उद्धारकर्त्ता स्वीकार करते हैं, (देखें, प्रेरि. 9:14,21)
3. जो यहोवा (YHWH) के लोग कहलाते हैं, जैसाकि आमोस 9:12 में लिखा है, अर्थात् विश्वासी लोग, (देखें, प्रेरि. 15:17)।
4. जो सार्वजनिक रूप से यीशु में अपना विश्वास प्रकट करते हैं, (देखें, प्रेरि. 22:16)।

यह वाक्यांश इस्राएल से किए गये पौलुस के आग्रह का भी हिस्सा है जो उसने रोमियों 10:9-3 में योएल 2:32 के आधार पर किया (देखे, 2 तीमु. 2:22)। पतरस ने इसी पाठांश को (योएल 2:28-32) अपने पिन्तेकुस्त के उपदेश में इस्तेमाल किया और योएल 2:32 के आधार पर वहाँ उपस्थिति लोगों को निमन्त्रण दिया कि वे "प्रभु का नाम लें।"

प्रभु का नाम मनुष्य को संभालता है। प्रभु से प्रार्थना करने के द्वारा पापी मनुष्य यीशु से निवेदन करता है कि वह उसके हित में कार्य करे और उसे अपने परिवार में ग्रहण करे। देखें प्रेरि. 2:22 में विशेष टिप्पणी।

9:15 ""जा" परन्तु प्रभु ने उससे कहा, यह आदेशात्मक वाक्यांश है। यीशु अधिकार के साथ हनन्याह को शाऊल के पास भेजता है, जो झिझक रहा था।

■ **"वह मेरा चुना हुआ पात्र है"** क्या ही महान है परमेश्वर का अनुग्रह और उसके द्वारा चुना जाना! पौलुस सुसमाचार सेवा के लिये अयोग्य था, उसका बदल जाना कठिन था तौभी वह अद्भुत रीति से बदल गया और प्रभु में स्थिर किया गया।

NASB, NKJV	**"गैर यहूदियों के सम्मुख"**
NRSV, NJB	**"गैर यहूदियों के सम्मुख मेरा नाम प्रकट करने के लिए"**
TEV	**"गैर यहूदियों में मेरे नाम को प्रकट करने के लिए"**

क्या आश्चर्यजनक यह कथन एक यहूदी के लिए है कि वह बताए (देखें, इफि. 3:7)। तो भी यह हमेशा परमेश्वर की योजना में रहा है (देखें, उत्पत्ति 12:3; निर्म. 19:5-6; इफि. 2:11-3:13, देखें प्रेरित. 1:8 में विशेष टिप्पणी)। इस्राएल जो परमेश्वर के स्वरूप पर बनाई गई थी, समस्त संसार में सुसमाचार सुनाने का एक माध्यम मात्र थी (उत्प. 1:26-27), परन्तु वह पाप में गिर गई (उत्प. 3:15)।

■ **"राजाओं"** पौलुस ने छोटे-बड़े सभी सरकारी अधिकारियों और कैसर को सुसमाचार सुनाया।

■ **"इस्राएलियों के सामने"** पौलुस की प्रचार सेवा का मुख्य नियम यह रहा था कि वह सर्वप्रथम स्थानीय सभाघरों में जाकर प्रचार करे (देखें, रोमि. 1:16)। ऐसा करने से यहूदियों और पुराना नियम जानने वाले भक्त लोगों को

अवसर मिलता था कि वे सुसमाचार पर पहले ध्यान दें और विश्वास करें। इस्राएलियों को सुसमाचार सुनाने के बाद ही उसने गैर यहूदियो में प्रचार किया।

9:16 ''मैं उसे बताऊँगा कि मेरे नाम के लिये उसे कैसा कैसा दुख उठाना पड़ेगा'' इस भ्रष्ट संसार में दुख उठाना एक मसीही के लिये नई बात नहीं है बल्कि जीवन का हिस्सा है (देखें, मत्ती 5:10-12; यूहन्ना 15:18-21; 16:1-2; 17:14; प्रेरि. 14:22; रोमि. 5:3-4; 8:17-18; 2 कुरि. 4:7-12; 6:3-10; 11:24-33; फिलि. 1:29; 1 थिस्स. 3:3; 2 तीमु. 3:12; याकूब 1:2-4; 1 पतरस 4:12-16)।

इस पतित संसार में मसीह के दुखों और उसके अनुयायियों द्वारा दुख उठाए जाने के बीच एक गहरा माध्यात्मिक सम्बन्ध है। पतरस की पहली पत्री इस समान्तरता को भली-भाँति चित्रित करती है:

1. यीशु के दुख, (1 पतरस 1:11; 2:21, 23; 3:18; 4:1, 13; 5:1)
2. उसके अनुयायियों के दुख, (1 पत. 1:6-7; 2:19; 3:13-17; 4:1, 12-19; 5:9-10)

यदि संसार यीशु का तिरस्कार करता है, तो वह उसके अनुयायी का भी तिरस्कार करेगा (देखें, यूहन्ना 7-7; 15:18-19; 17:14)।

9:17 ''और उस पर अपना हाथ रखकर कहा'' सिर पर हाथ रखकर आत्मिक वरदान बाँटने का अधिकार प्रेरितों को है, इसका कोई ठोस प्रमाण पवित्रशास्त्र में नहीं मिलता है। हनन्याह दमिश्क का एक गुमनाम आम विश्वासी था, जो

1. परमेश्वर द्वारा भेजा गया अधिवक्ता बना
2. ताकि पौलुस पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो जाए (देखें, प्रेरि. 9:17)
3. पौलुस उसके द्वारा शारीरिक चंगाई पाए (देखें, प्रेरि. 9:18)
4. ताकि पौलुस बपतिस्मा पाए (देखें, प्रेरि. 9:18)

■ **''भाई शाऊल''** यह आज्ञा पालन और प्रेम का अद्‌भुत नमूना है।

9:18 ''उसकी आंखों से छिलके-से गिरे और वह देखने लगा'' यह एक चिकित्सा संबंधी शब्दावली है जिसका प्रयोग लूका करता है। सप्तूजैन्त में मछली के शरीर पर पाए जाने वाले छिलकों के लिये इस शब्द का प्रयोग किया गया है (देखें, लैव्य. 11:9, 10, 12; व्यव. 14:9)। गिनती 16:38 में इस शबद का लाक्षणिक उपयोग देखा जा सकता है, जहां धूपदानों के पत्तर पीट पीटकर बनाए जाते हैं। इस संदर्भ में संभवतः ये खाल के छिलके हो सकते हैं जो पौलुस की आँखों में से झड़कर गिरे।

■ **''बपतिस्मा लिया''** हनन्याह ने पौलुस को बपतिस्मा भी दिया (देखें, प्रेरि. 8:36, 38)। नए नियम में बपतिस्मा लेना यीशु के नमूने का पालन करना (देखें, मत्ती 3:13-17; मरकुस 1:9-11; लूका 3:21-22) तथा उसकी आज्ञा का पालन है (देखें, मत्ती 28:19)। यह स्वामित्व और निष्ठा में परिवर्तन लाता है।

9:19a ''फिर भोजन करके बल पाया'' जब से उस ज्योति ने उसे भूमि पर गिरा दिया था तब से वह उपवास और प्रार्थना में लीन था (देखें, प्रेरि. 9:9)। तीन दिन तक पूर्ण उपवास रखकर वह संभवतः दुर्बल और भूखा होगा।

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 9:19ब-22

19बवह कई दिन उन चेलों के साथ रहा जो दमिश्क में थे। 20और वह तुरन्त आराधनालयों में यीशु का प्रचार करने लगा कि वह परमेश्वर का पुत्र है। 21और सब सुननेवाले चकित होकर कहने लगे, ''क्या यह वही व्यक्ति नहीं है जो यरूशलेम में उन्हें जो इस नाम को लेते थे नष्ट करता था, और यहां भी इसीलिये आया था, कि उन्हें बान्धकर महायाजकों के पास ले जाए?'' 22परन्तु शाऊल और भी सामर्थी होता गया; और इस बात का प्रमाण दे देकर कि मसीह यही है, दमिश्क के रहनेवाले यहूदियों का मुंह बन्द करता रहा।

9:20 "वह तुरन्त आराधनालयों में यीशु का प्रचार करने *लगा*" यह अपूर्ण क्रिया सूचक वाक्यांश है। इसका अर्थ यह हो सकता है: (1) उसके कार्य का आरम्भ (2) कार्य को दोहराना। यह बड़ी रोचक बात है कि कुछ ही दिन पहले वह दमिश्क के आराधनालयों के नाम प्रधान याजकों की चिट्ठी लाया था कि विश्वासियों को सताए परन्तु अब वह उन्हीं आराधनालयों में जाकर यीशु का प्रचार करता है कि वह मसीह है (देखें, पद 21)।

■ **"वह परमेश्वर का पुत्र है"** प्रेरि. 13:33 में भजन 2:7 के उद्धरण को छोड़कर, यही एकमात्र स्थल है जहाँ इस पुस्तक में "परमेश्वर का पुत्र" पदवी का प्रयोग किया गया है। इस पदवी की पुराने नियम की पृष्ठभूमि इसका महत्व प्रकट करती है: (1) इस्राएल जाति को परमेश्वर का पुत्र कहा गया है (देखें, होशे 11:1); (2) इस्राएल के राजाओं को परमेश्वर का पुत्र कहा गया है (देखें, 2 शमू. 7:14); (3) मसीह को परमेश्वर का पुत्र कहा गया है (देखें, मत्ती 2:15)। पौलुस के कट्टर एकेश्वरवाद को यहाँ पुनः परिभाषित किया गया है। (देखें, प्रेरि. 2:39 में विशेष टिप्पणी)

विशेष विषय: परमेश्वर का पुत्र

यह नए नियम की एक महत्वपूर्ण उपाधि (Title) है जो यीशु मसीह को दी गई। इसमें निस्सन्देह ईश्वरीय अर्थ पाए जाते हैं। यह यीशु को "पुत्र" अथवा "मेरा पुत्र" ठहराती है, उसने परमेश्वर को "पिता" के रूप में सम्बोधित किया (देखें विशेष विषय "परमेश्वर का पितृत्व" यह वाक्यांश नए नियम में 124 से अधिक बार प्रयुक्त हुआ। दानिय्येल 7:13-14 से लिया गया वाक्यांश "मनुष्य का पुत्र" भी जिसे यीशु ने अपने लिए प्रयुक्त किया, दिव्य अर्थों से पूर्ण वाक्यांश है। देखें विशेष विषय के पुत्र

पुराने नियम में "पुत्र" की उपाधि निम्नलिखित चार विशेष समूहों की ओर संकेत कर सकती है :

A. स्वर्गदूतों की ओर (देखें, उत्प. 6:2; अयूब 1:6; 2:1) (यह शब्द अक्सर बहुवचन में प्रयुक्त हुआ है)
B. इस्राएल का राजा (देखें, 2 शमू. 7:14; भजन. 2:7; 89:26-27)
C. संपूर्ण इस्राएल जाति (देखें, निर्ग. 4:22-23; व्यव. वि. 14:1; होशे. 11:1; मला. 2:10)
D. इस्राएली न्यायी (देखें, भजन. 82:6)।

"परमेश्वर का पुत्र" वाक्यांश का जो दूसरा उपयोग है, वह यीशु से जुड़ा है । इसके अनुसार "दाऊद का पुत्र" तथा "परमेश्वर का पुत्र" दोनों 2 शमू. 7 ; भजन. 2; और 89 से संबंधित हैं। पुराने नियम में "परमेश्वर का पुत्र" कभी भी मसीह के लिये प्रयुक्त नहीं किया गया है, यह केवल युग के अन्त में आने वाले अभिषिक्त राजा के लिए प्रयुक्त हुआ है। परंतु मृतक सागर कुन्डलपत्रों (Dead Sea Scrolls) में इस उपाधि का मसीह संबंधी अर्थों में प्रयोग सामान्य बात है (विशिष्ट संदर्भों के लिए देखें, 'डिक्शनरी ऑफ जीज़स एण्ड द गॉस्पल्स, पेज 770 ; ("Dictionary of Jesus and the Gospels")।
बाइबल के अलावा अन्य दो यहूदी प्रकाशनात्मक साहित्यों में भी "परमेश्वर का पुत्र" मसीह-संबंधी पदवी मानी जाती है (देखें II एस्द्रास (Esdras) 7:28; 13:32,37,52; 14:9 तथा 1 हनोक (Enoch) 105:2।

नए नियम में यीशु के संदर्भ में विभिन्न प्रकार से समझाया गया है :

1. उसके पूर्वास्तित्व (Pre-existence) के विषय में (देखें, यूहन्ना 1:15-30; 8:56-59; 16:28; 17:5; 2 कुरि. 8:9; फिलि. 2:6-7; कुलु. 1:17; इब्रा. 1:3; 10:5-8)।
2. उसका अलौकिक जन्म (कुंवारी द्वारा) : (देखें, यशा. 7:14; मत्ती. 1:23; लूका 1:31-35)
3. उसका बपतिस्मा (देखें, मत्ती 3:17; मर. 1:11; लूका 3:22; परमेश्वर की स्वर्गीय वाणी भजन 2 के प्रतापी राजा को यशा. 53 के दुखी दास से जोड़ती है)।
4. शैतान द्वारा उसकी परीक्षाएँ (देखें, मत्ती 4:1-11; मर. 1:12,13; लूका 4:1-13) उसकी परीक्षा हुई कि वह अपने पुत्रत्व पर सन्देह करने लगे अथवा क्रूस के मार्ग से भटक कर अन्य उपायों द्वारा अपने उद्देश्य पूरे करे।
5. घृणित प्राणियों द्वारा उसकी स्वीकारोक्ति व अभिपुष्टि :

a. दुष्टात्माओं द्वारा (देखें, मरकुस 1:23-25; लूका 4:31-37,41; मर. 3:11-12; 5:7; (देखें विशेष विषय : "नए नियम में अशुद्ध आत्माएँ"
b. अविश्वासी लोग (देखें, मत्ती 27:43; मर. 14:61; यूहन्ना 19:7)

6. उसके चेलों द्वारा उसकी स्वीकारोक्ति अथवा अभिपुष्टि :
   a. मत्ती 14:33; 16:16
   b. यूहन्ना 1:34,49; 6:69; 11:27
7. स्वयं उसके स्वीकारोक्ति :
   a. मत्ती 11:25-27
   b. यूहन्ना 10:36
8. परमेश्वर को अपना पिता कहना (कौटुम्बिक सम्बोधन)
   a. परमेश्वर को उसके द्वारा अब्बा पुकारा जाना
      1. मरकुस 14:36
      2. रोमियों 8;15
      3. गलतियों 4:6
   b. पिता शब्द का बार-बार उपयोग, ईश्वरत्व को दर्शाता है।

सारांश में, "परमेश्वर का पुत्र" उपाधि उन लोगों के लिए गहरे धर्म वैज्ञानिक अर्थ (Great Theological Meaning) रखती है जो पुराने नियम से और उसकी प्रतिज्ञाओं से तथा वैचारिक रूपों से भलीभाँति परिचित हैं, परन्तु नए नियम के लेखक अन्यजातियों में उनकी देवताओं संबंधी पृष्ठभूमि के कारण इस वाक्यांश का प्रयोग करने में संकोच करते थे, क्योंकि उनके देवताओं के पुत्र "दानव" अथवा "राक्षस" हुआ करते थे।

Copyright © 2014 Bible Lessons International

9:21 यह पद प्रश्नों के रूप में है, जिसका उत्तर "हाँ" में है।

▪ **"नष्ट करना"** यह बड़ा ही प्रचण्ड शब्द है जिसका अर्थ है सर्वनाश करना, उजाड़ देना, बरबादी करना। यह शब्द केवल यहीं पर तथा गलातियों 1:13, 23 में पाया जाता है, और चार मकाबी Macc 4:23 में भी पाया जाता है। वास्तव में पौलुस पहले बड़ा ही दुष्ट था।

9:22

NASB	**"शाऊल बलवन्त होता गया"**
NKJV	**"शाऊल और अधिक सामर्थी हो गया"**
NRSV	**"शाऊल पहले से अधिक सामर्थी हो गया"**
TEV	**"शाऊल का प्रचार और अधिक प्रभावपूर्ण हो गया"**
NJB	**"धीरे धीरे शाऊल की सामर्थ बढ़ती गई"**

शाऊल के वरदानों और उसकी कार्य कुशलता को विकसित होने में थोड़ा समय लगा। आगे चलकर वह प्रभावशाली उपदेशक और वाद-विवाद में दक्ष बन गया। (देखें, टी.ई.वी.) (cf. TEV)

▪ **"संकरण"** यह शबद केवल प्रेरितों के काम पुस्तक में ही नीचे दिए गए स्थानों में पाया जाता है।
1. प्रेरि. 2:6, भौचक्के हो जाना
2. प्रेरि. 9:22, मुँह बन्द होना
3. प्रेरि. 19:32, गड़बड़ी मच जाना
4. प्रेरि. 21:27, भड़का देना

5. प्रेरि. 21:31, गड़बड़ी मच जाना

यहूदी लोग पौलुस के परिवर्तन को समझ न पाए और न ही जान पाए कि पुराने नियम के प्रतिज्ञात मसीह के रूप में यीशु का प्रभावशाली प्रचार वह कैसे कर पा रहा है।

▪ **''प्रमाण दे देकर''** इस शब्द का अर्थ है सारांश प्रस्तुत करना (देखें, प्रेरि. 16:10; 19:33) तथा प्रमाण देना। पौलुस का तरीका बहुत कुछ स्तिफनुस के तरीके से मिलता-जुलता है। दोनों ही यीशु को पुराने नियम का प्रतिज्ञात मसीह प्रमाणित करने के लिए पुराने नियम का उपयोग करते हैं।

▪ **''मसीह''** यीशु को अभिषिक्त जन, आने वाला प्रतिज्ञात जन, तथा मसीह घोषित करने का यही तरीका है (देखें, प्रेरि. 2:31 में विशेष टिप्पणी)। प्रेरितों के काम में अनेक बार विशेष उपपद संज्ञा से पहले आया है (देखें, प्रेरि. 2:31, 36; 3:18, 20)। शाऊल दृढ़तापूर्वक और सामर्थ्य के साथ कहता था कि यीशु नासरी जो यरूशलेम में मार डाला गया, वह वास्तव में परमेश्वर का पुत्र अर्थात् मसीह था। यदि इस सच्चाई को वे मान लेते तो उनका सब कुछ बदल जाता। उन्होंने इस सच्चाई को न जाना, गलत समझा और यीशु का तिरस्कार किया। उन्होंने परमेश्वर के वरदान को तुच्छ जाना और आत्मिक अंधकार में भटकते रहे।

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 9:23-25
23जब बहुत दिन बीत गए तो यहूदियों ने मिलकर उसे मार डालने का षड्यन्त्र रचा। 24परन्तु उनका षड्यन्त्र शाऊल को मालूम हो गया। वे तो उसके मार डालने के लिये रात दिन फाटकों पर घात में लगे रहते थे। 25परन्तु रात को उसके चेलों ने उसे लेकर टोकरे में बैठाया, और शहरपनाह पर से लटकाकर उतार दिया।

9:23 ''जब बहुत दिन बीत गए'' हमें गलातियों 1:15-24 में लिखित पौलुस के व्यक्तिगत विवरण पर भी ध्यान देना चाहिए, जहाँ अरब में उसने बहुत दिन बिताए थे। इस संदर्भ में अरब नबातियन राज्य की ओर संकेत करता है जहाँ अरितास ए ने 9 ई.पू. से 40 ईस्वी तक राज्य किया था। यह राज्य दमिश्क की दक्षिण-पूर्वी दिशा में स्थित था। संभवतः जो तीन वर्ष पौलुस ने अरब में बिताए वह लगभग 18 महीने का समय था। यहूदी लोग दिन का छोटा भाग भी पूरा दिन मानते थे (देखें, मत्ती 26:61; 27:40, 63); वर्षों की गिनती में भी वे यही करते थे।

▪ **''यहूदियों ने मिलकर षड्यन्त्र रचा''** यहूदियों ने स्पष्ट रूप से नगर के अधिकारियों को पौलुस के विरुद्ध भड़का दिया था (देखें, 2 कुरि. 11:32-33)। यह सब कुछ संभवतः पौलुस को दीन बनाने के लिये था जैसा कि वह 2 कुरिन्थियों 11 अध्याय में बताता है।

9:25 ''दीवार में एक छेद के माध्यम से'' यह किसी के निजी घर की खिड़की की ओर इशारा करता है जिसकी दीवारें शहरपनाह से सटी हुई हों। (देखें, 2 कुरि. 11:33; यहोशू 2:15; 1 शमू. 19:12)।

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 9:26-30
26यरूशलेम में पहुंचकर उसने चेलों के साथ मिल जाने का प्रयत्न किया। परन्तु सब उससे डरते थे, क्योंकि उनको विश्वास न होता था कि वह भी चेला है। 27परन्तु बरनबास ने उसे अपने साथ प्रेरितों के पास ले जाकर उनको बताया कि इसने किस रीति से मार्ग में प्रभु को देखा, और उसने इससे बातें कीं; फिर दमिश्क में इसने कैसे हियाव से यीशु के नाम से प्रचार किया। 28वह उनके साथ यरूशलेम में आता-जाता रहा। 29और निधड़क होकर प्रभु के नाम से प्रचार करता था: और यूनानी भाषा बोलनेवाले यहूदियों के साथ बातचीत और वाद-विवाद करता था; परन्तु वे उसे मार डालने का यत्न करने लगे। 30यह जानकर भाई उसे कैसरिया में ले आए और तरसुस को भेज दिया।

9:26 ''वह यरूशलेम आया'' स्पष्ट रूप से यह 18 से 36 महीने बाद की घटना है (देखें, गला. 1:15-24)। यह पद दर्शाता है कि किस हद तक यरूशलेम के विश्वासियों ने अपने सताने वाले मनुष्य पर सन्देह किया। प्रेरितों के काम की पुस्तक हृदय परिवर्तन के बाद पौलुस की अनेक यरूशलेम की यात्राओं का वर्णन करती है:

1. प्रेरि. 9:26, पहली यात्रा।
2. प्रेरि. 11:30, सहायता सामग्री पहुंचाने की यात्रा।
3. प्रेरि. 12:25, अपनी सेवा की समाप्ति के बाद यात्रा।
4. प्रेरि. 15:2, यरूशलेम की सभा में जाना।
5. प्रेरि. 18:22, यरूशलेम की कलीसिया में लघु भेंट।
6. प्रेरि. 21:17, याकूब और प्राचीनों से भेंट, शुद्धि करना और गिरफ्तारी।

9:27 ''बरनबास '' इसका नाम यूसुफ था और वह साइप्रस निवासी एक लेवी था, परन्तु प्रेरितों ने उसका नाम बरनबास रखा था, जिसका अर्थ है ''शान्ति का पुत्र।'' वह एक महान् सन्त था जो आगे चलकर पौलुस का प्रथम मिश्नरी सहयोगी बना। प्रेरि. 4:36-37 में उसका परिचय मिलता है। देखें प्रेरि. 4:36 में सम्पूर्ण विवरण।

- **''प्रेरितों के पास लाया''** गलातियों 1:18 में भी कुछ विवरण देखें।

- **''उनको बताया''** जो कुछ वह शाऊल के विषय में जानता था, उसने शाऊल की गवाही दी। इससे शाऊल के लिए सेवकाई के द्वार खुले (देखें, प्रेरि. 9:28)।

9:28

NASB	**''स्वतन्त्रतापूर्वक आता-जाता रहा''**
NKJV	**''आता और जाता रहा''**
NRSV	**''आता और बाहर जाता रहा''**
TEV	**''सब जगह घूमता-फिरा''**
NJB	**''चक्कर लगाता रहा''**

यह दैनिक जीवन अथवा दैनिक गतिविधियों के संबंध में पुराने नियम का एक मुहावरा है (देखें, गिनती 27:17; 1 राजा 3:7)।

9:29 ''और यूनानी भाषा बोलने वाले यहूदियों के साथ बातचीत और वाद-विवाद करता था'' ये यूनानी-भाषी यहूदी उसी समूह के लोग थे जिन्होंने स्तिफनुस की हत्या की थी और जिनका आराधनालय यरूशलेम में था। अब वही लोग शाऊल को भी मार डालने की योजना बनाते हैं, जो एक प्रवासी यहूदी था। उन्होंने संभवतः सोचा होगा कि स्तिफनुस वापस लौट आया है।

9:30 ''जब भाइयों ने *इसके बारे में* सीखा '' प्रेरि. 22:17-21 में हम पढ़ते हैं कि इस अवसर पर यीशु ने पौलुस को दर्शन देकर उसे यरूशलेम छोड़कर भाग जाने के लिए कहा था। यीशु ने अनेकों बार पौलुस को दर्शन दिया था ताकि उसका मार्गदर्शन करता रहे (देखें, प्रेरि. 18:9-11; 22:17-21; तथा 27:23 जहां स्वर्गदूत ने उससे बातें कीं)

- **''कैसरिया''** यह पलीस्तीन में मैडीटेरियन समुद्री तट पर बने रोमी साम्राज्य के बन्दरगाह की ओर संकेत करता है। कैसरिया रोमी साम्राज्य का मुख्यालय था।

- **''तरसुस''** पौलुस अब अपनी जन्मभूमि तरसुस जाकर कुछ वर्षों के लिए दृष्टि से ओझल हो जाता है। तरसुस एक स्वतन्त्र नगर था। प्राचीन काल में सिकन्दरिया और एथेन्स के समान यह तीसरा सबसे बड़ा शिक्षण केन्द्र

था। तरसुस के विश्वविद्यालयों में दर्शनशास्त्र, साहित्य और कानून पर अधिक बल दिया जाता था। पौलुस स्पष्ट रूप से यूनानी-साहित्य और दर्शनशास्त्र में निपुण था और साथ ही यहूदीवाद के रब्बीयों के बराबर ज्ञानी था।

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 9:31
31इस प्रकार सारे यहूदिया, और गलील, और सामरिया में कलीसिया को चैन मिला और उसकी उन्नति होती गई; और वह प्रभु के भय और पवित्र आत्मा की शान्ति में चलती और बढ़ती गई।

9:31 इस पद में सारांश दिया गया है, इसके साथ ही पौलुस के हृदय-परिवर्तन का विवरण समाप्त हो जाता है और पतरस की यात्राओं का विवरण आरम्भ होता है। लूका अक्सर प्रेरितों के काम पुस्तक में ऐसे सारांश पद देता है। देखें आरम्भ में दिया गया परिचय, उद्देश्य और संरचना।

- **"कलीसिया"** प्रेरि. 5:11 में दी गई विशेष टिप्पणियाँ देखें और ध्यान दें कि किस प्रकार से एक वचन "कलीसिया" शब्द में बहुत सी छोटी छोटी कलीसियाओं की ओर संकेत पाया जाता है। शब्द कलीसिया का अर्थ स्थानीय कलीसिया (जैसे कुलु. 1:18, 24; 4:15, 16), किसी क्षेत्र की सारी कलीसियाएँ (जैसे इफि. 1:22; 3:10, 21; 5:23-25, 27, 29, 32) तथा विश्व की सारी कलीसियाएँ हो सकता है (जैसे मत्ती 16:18)।

- उन बातों पर ध्यान दें जिनका उल्लेख लूका करता है:
    1. सारी कलीसियाओं में शान्ति
    2. बढ़ती और उन्नति हो
    3. पवित्र आत्मा की शान्ति

प्रेरि. 8:1 के सताव की तुलना में हम अब भारी बदलाव देखते हैं। समस्याएं तो अभी भी थीं, परन्तु परमेश्वर ने अपनी दया से कलीसिया की देखभाल की।

विचार विमर्श के लिये प्रश्न

यह अध्ययन में मार्गदर्शन करने की टीका है, इसका अर्थ है कि आप बाइबल की अपनी व्याख्या करने के स्वयं ही जिम्मेदार हैं। हम में से प्रत्येक को उसी ज्ञान के अनुसार चलना चाहिए जो हमारे पास है। व्याख्या करने के कार्य में आप आपकी बाइबल और पवित्र आत्मा केन्द्रिय स्थान रखते हैं। यह कार्य व्याख्याकार पर न छोड़ दें।

निम्नलिखित प्रश्न अपनी सहायता के लिए दिए गए हैं ताकि आप पुस्तक के गम्भीर विषयों पर पुनर्विचार कर सकें। वे आपके विचारों को आन्दोलित करने के लिए हैं, इनके अलावा और भी प्रश्न हो सकते हैं:

1. पौलुस कलीसिया को सताने में उग्र क्यों था?
2. प्रेरितों के काम पुस्तक में पौलुस के हृदय-परिवर्तन के तीन विवरण क्यों हैं?
3. पौलुस को हनन्याह द्वारा बपतिस्मा दिए जाने, उसके सिर पर हाथ रखने, और उसे भेजे जाने का क्या महत्व है?
4. पौलुस द्वारा यीशु को परमेश्वर का पुत्र कहने का क्या महत्व है?
5. लूका ने पौलुस की अरब में तीन वर्ष की यात्रा का विवरण क्यों नहीं लिखा?

संदर्भ की जानकारी: (9:32-10:48)

A. हालांकि प्रेरितों के काम पुस्तक का आरम्भ पतरस से पौलुस होने के परिवर्तन के साथ होता है तो भी प्रेरि. 9:32-12:25 पतरस की भ्रमणशील सेवकाई को दर्शाता है।

B. इस खण्ड में पतरस की सेवकाई के बारे में बताया जाता है जो उसने लुद्दा में (प्रेरि. 9:32-35); याफा में (प्रेरि. 9:36-43) (10:9-23); कैसरिया में (प्रेरि. 10:1-8, 23-48) तथा यरूशलेम (प्रेरि. 11:1-18; 12:1-17) में की।

C. यह खण्ड बहुत महत्वपूर्ण खण्ड है क्योंकि इसमें गैर मसीहियों के बीच सेवकाई के संबंध में निरन्तर संघर्ष की, और कलीसिया का मुखिया होने के नाते पतरस द्वारा इस संघर्ष में योगदान करने का वर्णन पाया जाता है। लूका कुरनेलियुस के वृत्तान्त को इतना महत्वपूर्ण समझता है कि उसका वर्णन इस खण्ड में तीन बार करता है।

शब्दों और वाक्यांशों का अध्ययन

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 9:32-35

32फिर ऐसा हुआ कि पतरस हर जगह फिरता हुआ, उन पवित्र लोगों के पास भी पहुंचा जो लुद्दा में रहते थे। 33वहां उसे एनियास नामक लकवे का रोगी एक मनुष्य मिला, जो आठ वर्ष से खाट पर पड़ा था। 34पतरस ने उससे कहा, ''हे एनियास! यीशु मसीह तुझे चंगा करता है; उठ, अपना, बिछौना बिछा।'' तब वह तुरन्त उठ खड़ा हुआ। 35तब लुद्दा और शारोन के सब रहनेवाले उसे देखकर प्रभु की ओर फिरे।

9:32 ''पतरस यात्रा कर रहा था'' यह स्पष्ट है कि प्रेरित सम्पूर्ण पलीस्तीन और आसपास के देशों में भी प्रचार किया करते थे।

- **''संत''** शब्द पवित्र लोग इस पुस्तक में कलीसिया के लिए प्रयुक्त किया गया है। प्रेरि. 9:13 में विशेष टिप्पणी ''पवित्र लोग'' देखें। शब्द 'चेले'' धीरे-धीरे ''पवित्र लोगों'' शब्द में परिवर्तित हो गया। यह शब्द पुराने नियम के ''पवित्र'' शब्द से संबंध रखता है जिसका अर्थ है, ''परमेश्वर की सेवा के लिए पृथक किया हुआ।'' यह शब्द कभी भी एक वचन रूप में प्रयुक्त नहीं किया गया सिवाय एक बार फिलि. 4:21 में एक वचन के रूप में प्रयुक्त हुआ, परन्तु सामूहिक सन्दर्भ में। इससे प्रकट होता है कि पवित्र लोग कहलाना एक ''समुदाय'' में सम्मिलित होना है। देखें प्रेरि. 9:13 में विशेष टिप्पणी। नए नियम में सारे विश्वासी ''पवित्र लोग'' कहलाते हैं। मसीह में हमारी हैसियत क्या है, इस बात पर इस शब्द में बल दिया जाता है।

विशेष विषय: नए नियम की पवित्रता/पवित्रीकरण

नया नियम बताता है कि जब पापी जन पश्चाताप करके यीशु पर विश्वास लाते हैं (देखें, मर. 1:15; प्रेरि. 3:16,19; 20:21), तो तुरन्त ही वे धर्मी ठहराए जाते और पवित्र किए जाते हैं। यह मसीह में उनकी नई स्थिति (New Position) होती है। मसीह की धार्मिकता उन लोगों पर मढ़ दी जाती है अथवा मसीह की धार्मिकता का उन्हें श्रेय प्राप्त होता है (देखें उत्प. 15:6; रोमि. 4)। वे धर्मी और पवित्र घोषित कर दिए जाते हैं (परमेश्वर की अदालती कार्यवाही)

परंतु नया नियम विश्वासियों से यह भी निवेदन करता है कि वे पवित्रता में बढ़ते जाएँ अथवा उनका पवित्रीकरण होता रहे। यह यीशु मसीह के द्वारा पूर्ण किए गए कार्य के द्वारा उनकी नई स्थिति के साथ-साथ, मसीह के समान स्वभाव अपने अन्दर निर्मित करने और अपने प्रतिदिन के जीवन में इसे प्रकट करने की बुलाहट भी है। जिस प्रकार उद्धार परमेश्वर का निशुल्क दान है और संपूर्ण जीवन की मांग करता है उसी प्रकार पवित्रीकरण भी दान है और सब कुछ की मांग करता है।

प्रारंभिक औचित्य और पवित्रीकरण	एक प्रगतिशील पवित्रीकरण, मसीह की समानता
प्रेरि. 26:18	रोमि. 6:19

रोमि. 15:16	2 कुरि. 7:1
1 कुरि. 1:2-3; 6:11	इफि. 1:4; 2:10
2 थिस्स. 2:13	1 थिस्स. 3:13; 4:3-4,7; 5:2
इब्रा. 2:11; 10:10,14; 13:12	1 तीमु. 2:15
1 पत. 1:2	2 तीमु. 2:21
	1 पत. 1:15 -16
	इब्रा. 12:14

जब हम मरते हैं तो उद्धार का लक्ष्य स्वर्ग नहीं होता बल्कि अब मसीह जैसा होना होता है (रोम. 8:28-30; 2 कुरिंथ. 3:18; गलाती. 4:19; इफि. 1:4; 4:13; 1 थिस. 3:13; 4:3; 5:23; 2 थिस. 2:13; तीतुस 2:14; 1 पतरस. 1:15), ताकि जो लोग हमारी गवाही देखें वे यीशु की ओर खिंचे चले आएँ और हमारे साथ स्वर्ग जाएँ ! पवित्रीकरण, न्यायोचित की तरह, एक उपहार और एक विकल्प है!

Copyright © 2014 Bible Lessons International

"लुद्दा" लुद्दा नामक यह शहर बेबीलोन से मिस्र जाने वाले व्यापारिक मार्ग पर स्थित था। पुराने नियम में यह सथान "लोद" कहलाता था (देखें, 1 इति. 8:12)। मैडीटेरियन सागर से यह ग्यारह मील की दूरी पर था। यह वही स्थान है जहाँ फिलिप्पुस ने प्रेरि. 8:40 में प्रचार किया।

9:33 "एनियास नामक व्यक्ति" इसके यूनानी नाम का अर्थ है "स्तुति"। यह व्यक्ति विश्वासी था, या नहीं, कहना कठिन है, परन्तु स्पष्ट रूप से पतरस उन कलीसियाओं में भेंट कर रहा था जो फिलिप्पुस द्वारा स्थापित की गई थीं।

- **"जो आठ वर्ष से खाट पर पड़ा था,लकवा मारे जाने के कारण"** यूनानी मूलपाठ का यह अत्यन्त सामान्य अनुवाद है (NASB, NKJV, NRSV, TEV, NJB), परन्तु यूनानी वाक्यांश का अर्थ यह भी हो सकता है-"जो आठ वर्ष की आयु से खाट पर पड़ा था।" (देखें, न्यूमैन और निदा, पेज 199. हैंडबुक ऑन द एक्ट्स ऑफ़ द अ ऑसल्स) (Newman and Nida, *A Translator's Handbook on the Acts of the Apostles,* p. 199)

9:34 "यीशु मसीह तुझे चंगा करता है" यहां कोई लेख नहीं है, जिसका अर्थ है कि ये दो पद एक सामान्य पदनाम बन गए थे। यह एक साहित्यिक रूप है जिसे एक वस्तुगत वर्तमान के रूप में जाना जाता है, जिसका अर्थ है "यह तुरंत मसीहा आपको ठीक कर रहा है"।

- **"उठ, अपना बिस्तर ठीक कर"** यह आदेशात्मक वाक्यांश है जो तुरन्त कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करता है।

- **"वह तुरन्त उठ खड़ा हुआ"** यह उस मनुष्य के विश्वास को दर्शाता है कि उसने पतरस की आज्ञा का पालन किया।

- **9:35 "लुद्दा के सब रहने वाले"** यह बाइबल में "सब" शब्द के प्रयोग का सबसे अच्छा उदाहरण है (देखें, उत्प. 41:37; व्य.वि. 2:25; लू. 2:1; रोमि. 11:26)

- **"शारोन"** यह पलीस्तीन के उत्तरी समुद्री तट के मैदानों की ओर संकेत करता है। याफा से कैसरिया तक इसकी 30 मील के लगभग लम्बाई है।

- **"उसे देखकर प्रभु की ओर फिरे"** प्रभु की ओर फिरने का अर्थ पश्चाताप करना भी हो सकता है, अर्थात् पापों से मन फिराना और प्रभु यीशु पर विश्वास लाना (प्रेरि. 11:21)।

यह छोटा सा वाक्यांश जो सारांश समान है, अनेक बार इस पुस्तक में आया है, जो पतरस और पौलुस के माध्यम से पवित्र आत्मा के महान आन्दोलन को दर्शाता है। इस आश्चर्यजनक घटना ने सुसमाचार प्रचार के लिए द्वार खोले।

विशेष विषय: पुराने नियम में पश्चाताप

यह अवधारणा महत्वपूर्ण तो है परंतु इसको परिभाषित करना बड़ा कठिन है। हममें से बहुतों के पास अपनी-2 डिनोमिनेशनों के आधार पर इस शब्द की परिभाषाएँ अवश्य होंगी। तो भी आमतौर पर कुछ इब्रानी और यूनानी शब्दों की धर्म वैज्ञानिक परिभाषाएँ लागू की गई हैं जो उचित परिभाषा कही जा सकें। हमें याद रखना चाहिए कि लूका को छोड़कर नए नियम के सभी लेखक यूनानी की आम बोलचाल की भाषा इस्तेमाल करते थे और वे सब इब्रानी भाषा बोलते थे। अतः इब्रानी शब्दों से आरम्भ करना अच्छा होगा, जिसमें दो शब्द मुख्य है :

1. नकेम *(Nacham)* (BDB 636, KB 688)
2. शूब *(Shub)* (BDB 996, KB 1427)

पहले शब्द नकेम (Nacham) का मूल अर्थ है "गहरी साँस लेना" (To Draw a Deep Breath) यह शब्द विभिन्न अर्थों में प्रयुक्त किया गया है :

a. "विश्राम" अथवा "शांति" (उदाहरणार्थ, उत्प. 5:29; 24:67; 27:42; 37:35; 38:12; 50:21; अक्सर नामों में प्रयुक्त, देखें, 2 राजा 15:14; 1 इति. 4:19; नहे. 1:1; 7:7; नहूम 1:1)
b. "खेदित होना" (जैसे, उत्प. 6:6, 7)
c. "विचार बदल देना" (जैसे, निर्ग. 13:17; 32:12,14; गिनती 23:19; अयूब 42:5-6)
d. "तरस" (जैसे, व्यव. वि. 32:36)

ध्यान दीजिए कि इन सब में गहरी भावनाएँ सम्मिलित हैं। इसका मूल कारण यह है कि गहरी भावनाएँ कार्य करने के लिए विवश करती हैं। कार्य का यह परिवर्तन अक्सर दूसरे लोगों की ओर संकेत करता है, पर साथ ही परमेश्वर के ओर भी। यही आचरण का और कार्यों का परिवर्तन जो परमेश्वर की ओर से किया जाता है, इस शब्द पश्चाताप को अर्थपूर्ण बनाता है ; परन्तु यहाँ सावधान रहने की आवश्यकता है। परमेश्वर के विषय में बताया जाता है कि वह "पछताया" (देखें, उत्प. 6:6,7; निर्ग. 32:14; न्या. 2:18; 1 शमू. 15:11,35; भजन. 106:45); परन्तु यह पछताना पाप या गलती के कारण दुख प्रकट करना नहीं था, परन्तु परमेश्वर की चिन्ता व तरस को दिखाने का एक तरीका था (देखें, गिन. 23:19; 1 शमू. 15:29; भजन. 110:4; यिर्म. 4:27-28; यहेज. 24:14)। विद्रोह और पाप का उपयुक्त दण्ड क्षमा पाना है, यदि पापी जन सचमुच में अपने पापों से तौबा करके परमेश्वर की ओर फिरता है। यह जीवन का नया आरम्भ है।

दूसरे शब्द शूब (Shub) का अर्थ है "फिर जाना" (से फिरना, घूम जाना, की ओर फिरना) क्रिया शब्द शूब का मूल अर्थ है, "विपरीत दिशा में घूम जाना" अथवा "लौट आना" (BDB 996, KB 1427) इस शब्द का उपयोग इन बातों के लिये हो सकता है :

1. परमेश्वर की ओर से फिर जाना, (गिनती 14:43; यहो. 22:16,18,23,29; न्या. 2:19; 8:33; 1 शमू. 15:11; 1 राजा 9:6; यिर्म. 3:19; 8:4
2. परमेश्वर की ओर फिरना, 1 राजा 8:33,48; 2 इति. 7:14; 15:4; 30:9; भजन. 51:13; 116:7; यशा. 6:10; 10:21-22; 31:6; यिर्म. 3:7,12,14,22; 4:1; 5:3; होशे 3:5; 5:4; 6:1; 7:10,16; 11:5; 14:1-2; आमोस 4:6,8-11 (विशेषकर देखें, 7 और आमोस 4)।
3. आरम्भ में यहोवा (YHWH) ने यशायाह से कहा था कि यहूदा कभी भी पश्चाताप नहीं कर सकता है (देखें, यशा. 6:10) परन्तु पुस्तक में पहली बार नहीं परन्तु वह उनसे बार-बार कहता है कि वे उसकी ओर फिरें और लौट आएँ।

पश्चात् केवल एक भावनात्मक बात ही नहीं है, पर यह परमेश्वर के प्रति एक आचरण है। यह अपने आप का त्याग करके जीवन का नया आरम्भ परमेश्वर के साथ है। इसमें परिवर्तन के लिए इच्छुक होना और परिवर्तित हो जाना शामिल है। यह पूर्णरूप से पापों की समाप्ति ही नहीं, परन्तु इसमें प्रतिदिन अपने विद्रोह की समाप्ति भी शामिल है। यह उत्पत्ति 3 के दूषित परिणाम और पतन का उलट जाना है। यह प्रकट करता है कि परमेश्वर का स्वरूप और उसकी समानता (उत्प. 1:26-27) हालांकि नष्ट हो चुकी थी, परंतु अब फिर से बहाल हो गई है। पतित मनुष्यों की परमेश्वर के साथ सहभागिता फिर से संभव हो जाती है।

पुराने नियम में मुख्य रूप से पश्चाताप का अर्थ है "कार्यों में परिवर्तन" जबकि नए नियम में इसका मुख्य अर्थ है "विचारों में परिवर्तन" (Change of Mind) (देखें विशेष विषय : पश्चाताप नए नियम में)। बाइबल आधारित सच्चे पश्चाताप के लिए दोनों ही जरूरी हैं। यह भी जानना जरूरी है कि पश्चाताप में दोनों बातें आती हैं, आरम्भिक कार्यों से पश्चाताप तथा पश्चाताप की निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया। आरम्भिक कार्यों को मर. 1:15; प्रेरि. 3:16,19; 20:21 में देखा जा सकता है। तथा निरन्तर प्रक्रिया को 1 यूहन्ना 1:9; प्रका. 2 व 3 मैं देखा जा सकता है। पश्चाताप विकल्प नहीं है (देखें लूका 13:3,5)।

यदि यह सत्य है कि दोनों वाचाओं की माँग "पश्चाताप करना" और "विश्वास करना" है (उदा. मत्ती 3:2; 4:17; मर. 1:4,15; 2:17; लूका 3:3,8; 5:32; 13:3,5; 15:7; 17:3), तो शब्द नकेम (Nacham) मनुष्य को उसके पापों को पहचानने और उनसे मन फिराने की गहन अभिलाषा की ओर अग्रसर करता है, जबकि शब्द शूब (Shub) पापों से मन फिराकर परमेश्वर की ओर फिरने की ओर संकेत करता है (इन दोनों आत्मिक कार्यों का श्रेष्ठ उदाहरण आमोस 4:6-11 है जहाँ लिखा है, तौ भी तुम मेरी और फिराकर न आए" (पाँच बार ऐसा लिखा है) और आमोस 5:4,6,14 में लिखा है "मेरी खोज में लगो, तब जीवित रहोगे।"

पश्चाताप के सामर्थ्य का पहला और महान उदाहरण दाऊद द्वारा बतशेबा के साथ पाप करने का है (देखें 2 शमू. 12; भजन 32; 51)। दाऊद और उसके परिवार तथा इस्राएल को परिणाम भुगतने पड़े, परन्तु केवल दाऊद ही परमेश्वर के साथ संगति में बहाल किया गया। दुष्ट राजा मनश्शे भी पश्चाताप करके क्षमादान पा सका (देखें, 2 इति. 33:12-13)।

भजन 90:13 में ये दोनों शब्द साथ साथ प्रयोग किये गये हैं। पश्चाताप करने में पाप की पहचान और इससे उद्देश्यपूर्ण मन फिराव होना चाहिए और साथ ही परमेश्वर को और उसकी धार्मिकता को खोजने की इच्छा होनी चाहिए (देखें यशा 1:16-20)। पश्चाताप एक अनुभव है जो व्यक्तिगत और नैतिकता से संबंध रखता है। परमेश्वर के साथ नया संबंध आरम्भ करने और संबंध को बनाए रखने के लिए इन तीनों बातों की जरूरत होती है। पश्चाताप के बाद हमारा खेदित मन परमेश्वर की भक्ति में लीन हो जाता है।

Copyright © 2014 Bible Lessons International

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 9:36-43

**[36]याफा में तबीता अर्थात् दोरकास नामक एक विश्वासिनी रहती थी, वह बहुत से भले-भले काम
और दान किया करती थी। [37]उन्हीं दिनों में वह बीमार होकर मर गई; और उन्होंने उसे नहलाकर
अटारी पर रख दिया। [38]और इसलिये कि लुद्दा याफा के निकट था, चेलों ने यह सुनकर कि पतरस वहां
है दो मनुष्य भेजकर उससे विनती की, ''हमारे पास आने में देर न कर।'' [39]तब पतरस उठकर उनके
साथ हो लिया, और जब वह पहुंचा, तो वे उसे उस अटारी पर ले गए; सब विधवाएं रोती हुईं उसके पास
आ खड़ी हुईं, और जो कुरते और कपड़े दोरकास ने उनके साथ रहते हुए बनाए थे, दिखाने लगीं। [40]तब
पतरस ने सबको बाहर कर दिया, और घुटने टेककर प्रार्थना की; और शव की ओर देखकर कहा, ''हे
तबीता उठ।'' तब उसने अपनी आंखें खोल दीं; और पतरस को देखकर उठ बैठी। [41]उसने हाथ देकर
उसे उठाया, और पवित्र लोगों और विधवाओं को बुलाकर उसे जीवित दिखा दिया। [42]यह बात सारे
याफा में फैल गईः और बहुतेरों ने प्रभु पर विश्वास किया। [43]और पतरस याफा में शमौन नामक किसी
चमड़े के धन्धा करनेवाले के यहां बहुत दिन तक रहा।**

9:36 "याफा" आजकल इस नगर को जाफा (याफो) कहा जाता है। यह यरूशलेम का प्राचीन बन्दरगाह था। आजकल यह नगर वर्तमान तेल-अवीव-याफो Tel Aviv-*Yafo* का भाग है।

- **"शिष्य"** शब्द चेला या शिष्य प्रेरितों के काम पुस्तक में इस खण्ड में अक्सर आया है। इसका शाब्दिक अर्थ है सीखने वाला, परन्तु यहाँ पर यह विश्वासी जन के रूप में प्रयुक्त हुआ है।

- **"तबीता" ..."दोरकास"** इस स्त्री का आरामी नाम तबीता था और यूनानी नाम दोरकास। अधिकांश यहूदियों के, जिनका व्यवहार गैर यहूदियों के साथ व्यापार आदि के विषय में अधिक रहता था, उनके दो नाम हुआ करते थे, एक नाम आरामी का तथा दूसरा यूनानी का । इन दोनों नामों का जो इस स्त्री के थे, एक ही अर्थ चिकारा या हरिण है, जो अनुग्रह और सुन्दरता का प्रतीक है। (देखें, श्रेष्ठगीत 2:9, 17; 4:5; 7:3)।

- **"भले-भले काम और दान"** यह यहूदियों द्वारा दान देने की प्रथा की ओर संकेत करता है। समाज में निर्धन यहूदियों की सहायता और देखभाल के लिये आराधनालय में साप्ताहिक दान एकत्रित किया जाता था। यीशु के दिनों में यह कार्य यहूदियों द्वारा आवश्यक माना जाता था। आरम्भिक कलीसिया ने इस नमूने का पालन किया (देखें प्रेरि. 6)। प्रेरि. 3:2 में टिप्पणी देखें।

- **"यह स्त्री निरन्तर नित्य करती थी"** यह कार्य करना उसकी आदत थी।

9:37 "उन्होंने उसे नहलाकर ऊपर के कमरे में रख दिया" शव को गाड़ने से पहले नहलाया जाता था। यरूशलेम में शव को उसी दिन गाड़ना आवश्यक था, परन्तु यरूशलेम के बाहर शव को तीन दिन बाद भी गाड़ा जा सकता था। प्रेरि. 5:6 में विशेष टिप्पणी देखें।

9:38 "दो मनुष्यों को उसके पास भेजा" निश्चय ही इन दोनों ने सुन रखा था कि परमेश्वर ने पतरस द्वारा महान आश्चर्यकर्म किया है और वे विश्वास करते थे कि पतरस अवश्य इस भली स्त्री के लिए भी कुछ कर सकता है।

9:39 "सब विधवाएँ उसके पास आ खड़ी हुईं" स्पष्ट रूप से इन सबने वे वस्त्र पहन रखे होंगे जो दोरकास ने उन्हें सिलकर दिए थे अर्थात् (1) अन्दरूनी और (2) बाहरी वस्त्र।

9**:40 "तब पतरस ने सबको बाहर कर दिया"** उसने ज़बरदस्ती सबको बाहर कर दिया। मरकुस 5:40 में यीशु ने भी बिल्कुल ऐसा ही किया था। इस खण्ड में किए गए आश्चर्यकर्मों और यीशु के दिनों में किए गए आश्चर्यकर्मों के मध्य बहुत समानता पाई जाती है। प्रेरितों के सामने यीशु की सेवकाई का ही नमूना था जिसका वे पालन करते थे।

यहाँ प्रश्न यह उठता है कि "पतरस क्यों चाहता था कि सब लोग कमरे से बाहर चले जाएँ?" यीशु ने तो इसलिए सब लोगों को बाहर निकाल दिया था क्योंकि वह नहीं चाहता था कि लोग उसे केवल एक चंगाई देने वाले मनुष्य के रूप में जानें और अभी सुसमाचार प्रचार का कार्य भी पूरा नहीं हुआ था। परन्तु पतरस ने क्यों सबको कमरे से बाहर कर दिया? ऐसा प्रतीत होता है कि आश्चर्यकर्मों द्वारा लोग विश्वास लाते हैं, अतः पतरस चाहता था कि जब चंगाई हो जाए तो अधिक से अधिक लोग देखें और विश्वास करें।

- **"घुटने टेक कर"** आमतौर पर यहूदी लोग खड़े होकर अपने हाथ स्वर्ग की ओर फैलाते और दृष्टि स्वर्ग की ओर करते थे, परन्तु इस पुस्तक में अनेक बार उल्लेख पाया जाता है कि चेले घुटनों के बल होकर प्रार्थना करते थे। गतसमनी बाग में यीशु ने घुटने टेककर प्रार्थना की थी (देखें, लूका 22:41), चेले यीशु के इसी आदर्श पर चलते थे (देखें, प्रेरि. 7:60; 20:36; 21:5)।

- **“तबीता उठ”** निस्सन्देह उसने यह आरामी भाषा में कहा। यीशु स्वयं भी आरामी बोलता था, और प्रथम शताब्दी में पलीस्तीन निवासी सभी यहूदी यही भाषा बोलते थे, न कि इब्रानी भाषा। प्राचीन काल के एज्रा और नहेम्याह भी यही भाषा बोलते थे (देखें, नहे. 8:4-8)।

9:41 “पवित्र लोगों” प्रेरि. 9:13 में विशेष विषय “पवित्र लोग” देखें।

9:42 “और बहुतों ने प्रभु पर विश्वास किया” यह एक और सारांश प्रस्तुत करने वाला पद है जो पतरस की प्रचार करने वाली और आश्चर्यकर्म करने वाली सेवकाई का श्रेष्ठ परिणाम दर्शाता है। देखें, प्रेरि. 2:40 और 3:16 में विशेष विषय।

9:43 “और पतरस, याफा में चमड़े का धन्धा करने वाले शमौन के साथ बहुत दिन तक रहा” व्यवस्था के अनुसार शमौन जैसे चमड़े का धन्धा करने वाले अशुद्ध जन के साथ रहने से पतरस के यहूदीपन का अभिमान टूट चुका था।

विचार विमर्श के लिये प्रश्न

यह अध्ययन में मार्गदर्शन करने की टीका है, इसका अर्थ है कि आप बाइबल की अपनी व्याख्या करने के स्वयं ही जिम्मेदार हैं। हम में से प्रत्येक को उसी ज्ञान के अनुसार चलना चाहिए जो हमारे पास है। व्याख्या करने के कार्य में आप आपकी बाइबल और पवित्र आत्मा केन्द्रिय स्थान रखते हैं। यह कार्य व्याख्याकार पर न छोड़ दें।

निम्नलिखित प्रश्न अपनी सहायता के लिए दिए गए हैं ताकि आप पुस्तक के गम्भीर विषयों पर पुनर्विचार कर सकें। वे आपके विचारों को आन्दोलित करने के लिए हैं, इनके अलावा और भी प्रश्न हो सकते हैं:

1. प्रेरितों के काम पुस्तक में पौलुस के हृदय-परिवर्तन का वृत्तान्त तीन बार क्यों दिया गया है?
2. पौलुस के हृदय-परिवर्तन के विवरणों में परस्पर थोड़ी सी भिन्नता क्यों है?
3. पौलुस को अपने हृदय-परिवर्तन में चुनाव करने की कितनी गुनजाईश थी? क्या उसके अनुभव हमारे लिए आदर्श हैं?
4. यूनानी भाषा बोलने वाले यहूदी पौलुस को क्यों मार डालना चाहते थे?
5. जबकि पतरस और पौलुस ने सुसमाचार फैलाने में आश्चर्यकर्मों को करने का सहारा लिया, तो परमेश्वर वर्तमान समय में क्यों नहीं इसी उपाय को और अधिक काम में लाता है?

Copyright © 2013 Bible Lesson International

प्रेरितों के काम-10
बाइबल के विभिन्न आधुनिक अनुवादों में पैराग्राफ-विभाजन

UBS[4]	NKJV	NRSV	TEV	NJB
पतरस और कुरनेलियुस	कुरनेलियुस द्वारा प्रति- निधियों को भेजा जाना	कुरनेलियुस का मन-परिवर्तन	पतरस और कुरनेलियुस	पतरस का रोमी सूबेदार के पास जाना
10:1-8	10:1-8	10:1-8	10:1-3	10:1-2 10:3-8
			10:4a	
	पतरस का दर्शन		10:4b-8	
10:9-16	10:9-16	10:9-16	10:9-13 10:14 10:15-16	10:9-16
	कैसरिया को बुलाया जाना			
10:17-23a	10:17-23	10:17-23a	10:17-18 10:19-21 10:22-23a	10:17-23a
10:23b-33	पतरस की कुरनेलियुस से भेंट 10:23-33	10:23b-29	10:23b-29	10:23b-33
		10:30-33	10:30-33	
कुरनेलियुस के घर में पतरस का प्रचार	कुरनेलियुस के घराने में प्रचार		पतरस का उपदेश	कुरनेलियुस के घर में पतरस का सन्देश
10:34-43	10:34-43	10:34-43	10:34-43	10:34-35 10:36-43
अन्य जातियों द्वारा पवित्र आत्मा पाया जाना	अन्य जातियों पर पवित्र आत्मा उतरना		अन्य जातियों द्वारा पवित्र आत्मा का स्वागत	प्रथम अन्य जातियों का बपतिस्मा
10:44-48	10:44-48	10:44-48	10:44-48	10:44-48

पठन चक्र तीसरा (“अच्छे बाइबल अध्ययन का मार्गदर्शन” से)

पैराग्राफ स्तर पर मूल लेखक के अभिप्राय को समझना

यह अध्ययन करने की मार्गदर्शक टीका है, जिसका अर्थ है कि आप अपनी बाइबल-व्याख्या के स्वयं उत्तरदायी हैं। हम में से प्रत्येक को अपने ज्ञान व समझ के अनुसार कार्य करना चाहिए। व्याख्या-प्रक्रिया में आप, आपकी बाइबल तथा पवित्र आत्मा प्राथमिक स्थान रखते हैं। आपको यह टीका कार्य टीकाकार पर नहीं छोड़ना चाहिए।

पूरा अध्याय एक बैठक में पढ़ें। विषयों को पहचानें। अपने विषय-विभाजन की तुलना उपरोक्त पाँच आधुनिक अनुवादों के विषय-विभाजन से करें। पैराग्राफों का विभाजन प्रेरणा प्राप्त नहीं होता है, परन्तु यह मूल लेखक के अभिप्राय को समझने की कुंजी है, जो कि व्याख्या करने का आधार है। प्रत्येक पैराग्राफ में केवल एक ही मूल विषय होता है:

1. पहला पैराग्राफ
2. दूसरा पैराग्राफ
3. तीसरा पैराग्राफ
4. अन्य

सन्दर्भ की जानकारी

A. सुसमाचार अपनी यहूदी सीमाएँ तोड़ देता है
   1. कुरनेलियुस - एक रोमी सूबेदार व परमेश्वर का भक्त
   2. इथियोपिया का खोजा - परमेश्वर का भय रखने वाला अन्यजाति

B. यूनानी बोलने वाले यहूदियों का बढ़ता हुआ प्रभाव (प्रेरि. 6 के सात सुनामी पुरुष)

C. पिन्तेकुस्त के अनुभव का दोहराया जाना दर्शाता है कि परमेश्वर सबको ग्रहण करता है।
   1. सामरी लोग (प्रेरि. 8)
   2. रोमी लोग (प्रेरि. 10)
   3. कूशी लोग (प्रेरि. 8)

D. प्रेरि 15 की यरूशलेम की सभा के लिए धर्म-वैज्ञानिक मंच तैयार किया जाता है, और सुसमाचार को विश्वव्यापी तथा सबके लिये सुलभ किया जाता है।

शब्दों और वाक्यांशों का अध्ययन

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 10:1-8
[1]कैसरिया में कुरनेलियुस नामक एक मनुष्य था, जो इतालियानी नामक पलटन का सूबेदार था।
[2]वह भक्त था, और अपने सारे घराने समेत परमेश्वर से डरता था, और यहूदी लोगों को बहुत दान देता,
और बराबर परमेश्वर से प्रार्थना करता था। [3]उसने दिन के तीसरे पहर के निकट दर्शन में स्पष्ट रूप से
देखा कि परमेश्वर का एक स्वर्गदूत उनके पास भीतर आकर कहता है ''हे कुरनेलियुस!'' [4]उसने उसे
ध्यान से देखा; और डरकर कहा, ''हे प्रभु, क्या है?'' उसने उससे कहा, ''तेरी प्रार्थनाएं और तेरे दान
स्मरण के लिये परमेश्वर के सामने पहुंचे हैं। [5]और अब याफा में मनुष्य भेजकर शमौन को, जो पतरस
कहलाता है, बुलवा ले। [6]वह शमौन चमड़े का धन्धा करनेवाले के यहां अतिथि है, जिसका घर समुद्र के
किनारे है।'' [7]जब वह स्वर्गदूत जिसने उससे बातें की थीं चला गया, तो उसने दो सेवक, और जो उसके
पास उपस्थित रहा करते थे उनमें से एक भक्त सिपाही को बुलाया। [8]और उन्हें सब बातें बताकर याफा
को भेजा।

10:1 ''कैसरिया में एक मनुष्य *था*'' कुरनेलियुस का परिवर्तन एक बहुत बड़ी घटना थी। परन्तु हमें स्मरण रखना चाहिए कि केवल वही प्रथम सामाजिक बाधा नहीं थी, जिस पर सुसमाचार ने विजय पाई, अन्य और भी बाधाएँ थीं:
1. पहली बाधा सामरी लोग थे।
2. फिर इथियोपिया का खोजा था, वह भी एक भक्त था।
3. फिर कुरनेलियुस, जो न केवल एक सज्जन और भक्त पुरुष ही था, पर साथ ही प्रतिज्ञात देश में रोमी सेना का उच्च अधिकारी भी था।

इस सम्पूर्ण विवरण का बल केवल कुरनेलियुस के मन-परिवर्तन ही पर नहीं है, क्योंकि वह तो पहले ही से परमेश्वर का भय मानने वाला मनुष्य था, जैसे कि इथिपोपिया का खोजा परमेश्वर का भय रखता था, परन्तु बल उन लोगों पर

है जिनका उल्लेख प्रेरि. 10:1, 24, 27, 44, व 48 में किया गया है और जो कुरनेलियुस के मित्र और रिश्तेदार थे जिन्होंने उद्धार पाया। प्रेरि. 15:7-9 में पतरस ने यरूशलेम की सभा में इस विवरण का उल्लेख किया था और अन्य जातियों के मध्य सुसमाचार प्रचार कार्य का मंच तैयार किया था।

▪**"कुरनेलियुस"** प्रेरितों के काम पुस्तक पर एफ.एफ. ब्रूस द्वारा लिखित टीकाग्रन्थ (F.F. Bruce's *Commentary on the Book of the Acts,* p. 214) में एक फुटनोट पाया जाता है, जिसमें इस प्रकार लिखा है, "रोम में अपना नाम कुरनेलियुस रख लेना उस समय से एक साधारण सी बात बन गई थी, जब से पुबलियुस कुरनेलियुस सुल्ला ने 82 ई.पू. में ऐसे दस हज़ार गुलामों को आज़ाद किया था जिनके नाम कारनेलिया नामक उसके कबीले में दर्ज़ थे।"

▪**"सूबेदार"** नए नियम में सूबेदारों का उल्लेख अनेक बार किया गया है और सदैव उनका चित्रण उदार और भले मनुष्य के रूप में हुआ है (देखें, मत्ती 8:5; लूका 7:2; 23:47; प्रेरि. 10:1; 22:5; 27:3 इत्यादि)। तकनीकी तौर पर वे सौ मनुष्यों पर अधिकारी होते थे तौ भी अधीन रहने वाले अधिकारी थे, जैसे कि हमारे सारजैन्ट मेजर होते हैं।

▪**"इतालियानी नामक पलटन"** आमतौर पर एक रोमी पलटन में 600 सिपाही होते थे, परन्तु इस पलटन में एक हज़ार रोमी सिपाही थे जो सीरिया में रहा करते थे। ऐतिहासिक प्रमाणों से ज्ञात होता है, ये लोग सहायता कार्य करने वाली पलटन होती थी। संभवतः ये तीरन्दाज़ होते थे। रोमी सेना को यहूदियों के विद्रोही स्वभाव के कारण पलीस्तीन ही में रहना पड़ता था।

10:2 "एक भक्त व्यक्ति" इसके भक्तिपूर्ण जीवन के बारे में तीन बातें बताई गई हैं:
1. वह अपने सारे घराने समेत परमेश्वर से डरता था (प्रेरि. 10:22 की टिप्पणी देखें)
2. लोगों को बहुत दान दिया करता था, अर्थात् उदार था।
3. परमेश्वर से बराबर प्रार्थना करता था (देखें, प्रेरि. 10:22; 13:16, 26)।

यह व्यक्ति धार्मिक, भावनात्मक और सामाजिक दृष्टि से आराधनालय से जुड़ा व्यक्ति था, फिर भी पूर्ण रूप से मसीही व परिवर्तित जन नहीं था। पूर्ण रूप से परिवर्तित होने के लिए उसे:
1. पुरुष होने के नाते ख़तना कराना आवश्यक था।
2. स्वयं ही गवाहों के सामने बपतिस्मा लेना था।
3. संभव हो तो मन्दिर में जाकर बलिदान चढ़ाना था।

ये तीन शर्तें बहुत से रुचि रखने वाले अन्य जाति लोगों को पूरा चेला बनने से रोकती थीं।

▪ **"अपने सारे घराने समेत"** प्रेरितों के काम पुस्तक में हम यहाँ पर पहली बार किसी घराने के विषय में पाते हैं कि वह घराना धार्मिक था; अन्य स्थलों पर भी ऐसा मिलता है (देखें, प्रेरि. 10:2; 11:14; 16:15, 31; 18:8)। यह सांस्कृतिक परिवेश को दर्शाता है कि जो विश्वास पिता का होता था वही परिवार के सदस्यों और परिवार के दास-दासियों का भी होता था।

▪**"बहुत दान"** यह दान देने की प्रथा के पालन की ओर संकेत करता है। ऐसा करने से कुरनेलियुस के विषय में यहूदी लोग सोचते थे कि वह स्थानीय आराधनालय का सक्रिय सदस्य और परमेश्वर का भय रखने वाला मनुष्य है। देखें प्रेरि. 3:2 में विशेष विषय "दान देना।"

▪**"बराबर परमेश्वर से प्रार्थना"** कुरनेलियुस के भक्त जीवन को दर्शाने वाली तीन निरन्तर की जाने वाली क्रियाओं का उल्लेख किया गया है:
1. वह परमेश्वर का भय रखता था।
2. दान दिया करता था।
3. प्रार्थना किया करता था।

कुरनेलियुस प्रतिदिन और व्यक्तिगत तौर पर उपरोक्त तीनों बातों का पालन करता था। उसके दो कार्य तो रब्बियों की दृष्टि में अति सम्मानजनक थे, पहला दान देना, तथा दूसरा प्रार्थना।

10:3 ''तीसरे पहर के निकट'' यह संध्याकालीन बलिदान चढ़ाने के समय की ओर संकेत करता है, अर्थात् शाम 3 बजे का समय; (देखें, निर्ग. 29:39, 41; गिनती 28:3-31; 1 राजा 18:29-56; भजन 55:17; 141:2; दानि. 6:10; योसेपस एंटीक्वीटि 11.4.1; वार्स 1.1.1)(*Antiq.* 11.4.1; *Wars* 1.1.1). यह प्रार्थना करने का पारम्परिक समय था।

NASB,NRSV
TEV ''स्पष्ट देखा''
NKJV ''स्पष्ट रूप से देखा''
NJB,NIV ''सुस्पष्ट देखा''

सुसमाचारों में यूनानी विशेषण शब्द *phanerōs* का अर्थ है सार्वजनिक रूप से स्पष्ट प्रकट करना (देखें, मरकुस 1:45; यूहन्ना 7:10)। यह दर्शन दिन के प्रकाश में स्पष्ट रीति से देखा गया और बिल्कुल भिन्न प्रकार का दर्शन था।

■**''दर्शन में परमेश्वर का एक स्वर्गदूत''** एक प्रकार से यह बातचीत शाऊल की बातचीत के समान थी। यह व्यक्ति जो दर्शन देख रहा था, पूर्णतः सज्जन तथा धार्मिक जन था। परमेश्वर ने एक अलौकिक प्रतिनिधि को उसके पास भेजा ताकि विश्वास करने में उसका मार्गदर्शन करे। ऐसी स्थिति में कौन है जो इंकार कर सके? इस प्रकार के हृदय-परिवर्तन परमेश्वर की इच्छा से होते हैं, ऐसे परिवर्तनों में मानवीय स्वतन्त्र इच्छा का कोई हस्तक्षेप नहीं होता। ऐसे लोग सुसमाचार की सच्चाई के ज़बरदस्त अनुभव का प्रत्युत्तर देते हैं।

10:4, यहाँ स्वर्गदूत दो मुख्य बातें कहता है, ''तेरे दान और तेरी प्रार्थनाएँ'' स्मरण के लिए परमेश्वर के सामने पहुंचे हैं।'' स्पष्ट रूप से परमेश्वर ने सुसमाचार सुनने से पहले ही इस मनुष्य की आराधना ग्रहण की (अर्थात् उसकी प्रार्थना और दान)।

■ **''उसने उसे ध्यान से देखा''** प्रेरि. 1:10 में टिप्पणी देखें।

■ **''हे प्रभु, क्या है''** इस शब्द ''प्रभु'' की व्याख्या करना बड़ा ही कठिन है। इसके अनेक अर्थ हो सकते हैं (1) ''श्रीमान'' ''मिस्टर'' (2) धर्मवैज्ञानिक रूप से स्वामी/मालिक/सर्वोच्च सत्ता। नए नियम में एक और पाठांश जो अनेक अर्थ प्रकट करता है-यूहन्ना 4:1, 11, 15, 19, 49.

प्रभु शब्द के संबंध में प्रेरितों के काम पुस्तक के आधार पर और भी बातें कही जा सकती हैं। कुरनेलियुस स्वर्गदूत को प्रभु कहता है (देखें, प्रकाशितवाक्य 7:14) और पतरस ''आवाज़'' को प्रभु कहता है (देखें, प्रेरि. 10:13, 15 तथा प्रेरि. 10:14)। इस प्रकार यह शब्द किसी अलौकिक जन का व्यक्तिगत प्रकाशन हो सकता है, जो यीशु के अलावा कोई और नहीं हो सकता। प्रेरि. 8:26 और 29 में प्रभु के स्वर्गदूत को पवित्र आत्मा के रूप में पहचाना गया। प्रेरि. 10:13, 14, 15 और 19, 20 में भी ''आवाज़'' और पवित्र आत्मा के मध्य यही बात नज़र आती है।

10:5 ''और अब याफा में मनुष्य भेजकर'' यह आदेशात्मक वाक्यांश है। ध्यान दें कि स्वर्गदूत ने सुसमाचार नहीं सुनाया, परन्तु पतरस को बुलवाया। परमेश्वर मानवीय माध्यम का उपयोग करता है (देखें, निर्गमन 3:7-10)। यह मनुष्य कुरनेलियुस हालांकि शाऊल की भाँति भक्त और धार्मिक विधियों का पालन करने वाला व्यक्ति था, तौ भी उसे प्रभु यीशु मसीह का सुसमाचार सुनने और उचित प्रत्युत्तर देने की आवश्यकता थी।

10:7 ''उसने दो सेवक और एक भक्त सिपाही को बुलाया'' दो सेवक और एक भक्त सिपाही द्वारा तीन लोगों का एक समूह बन गया, पद 19 में भी इनका उल्लेख पाया जाता है। संभवतः सिपाही उसके घर का चैकीदार और अन्य दो लोग घरेलू नौकर होंगे।

10:8 कुरनेलियुस ने अपने विश्वास में अपने परिवार और मित्रों को भी सहभागी बनाया। इस मनुष्य ने अपने विश्वास के अनुसार जीवन भी व्यतीत किया। उसके माध्यम से पूरा समुदाय मसीह पर विश्वास करने वाला बना।

इन तीनों मनुष्यों ने संभवतः रात्रि भर यात्रा की होगी, और स्वर्गदूत के सन्देश और अपने स्वामी और उसके मित्रों के विश्वास की आपस में चर्चा की होगी और आश्चर्यचकित हुए होंगे।

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 10:9-16
[9]दूसरे दिन, जब वे चलते-चलते नगर के पास पहुंचे, तो दोपहर के निकट पतरस छत पर प्रार्थना करने चढ़ा। [10]और उसे भूख लगी, और कुछ खाना चाहता था; परन्तु जब वे तैयार कर रहे थे, तो वह बेसुध हो गया। [11]और उसने देखा कि आकाश खुल गया; और एक पात्र बड़ी चादर के समान चारों कोनों से लटकता हुआ, पृथ्वी की ओर उतर रहा है। [12]जिसमें पृथ्वी के सब प्रकार के चैपाए और रेंगनेवाले जन्तु और आकाश के पक्षी थे। [13]और उसे एक ऐसा शब्द सुनाई दिया, ''हे पतरस उठ, मार और खा।'' [14]परन्तु पतरस ने कहा, ''नहीं प्रभु, कदापि नहीं; क्योंकि मैंने कभी कोई अपवित्र या अशुद्ध वस्तु नहीं खाई है।'' [15]फिर दूसरी बार उसे शब्द सुनाई दिया, ''जो कुछ परमेश्वर ने शुद्ध ठहराया है, उसे तू अशुद्ध मत कह।'' [16]तीन बार ऐसा ही हुआ; तब तुरन्त वह पात्र आकाश पर उठा लिया गया।

10:9 ''दोपहर के निकट प्रार्थना करने'' हालांकि यहूदी रब्बियों ने प्रार्थना का समय प्रातः 9 बजे और दोपहर 3.00 बजे निर्धारित कर रखा था (जो मन्दिर में प्रतिदिन बलिदान चढ़ाने का समय था) फिर भी फरीसियों ने इसमें दोपहर का समय भी जोड़ दिया था। स्पष्ट रूप पतरस दोपहर को प्रार्थना करने के द्वारा पूर्वजों की परम्परा पर चल रहा था, अथवा संभव है वह दोपहर का भोजन करने से पहले नींद की झपकी लेने छत पर गया हो।

10:10 ''उसे भूख लगी'' जिस समय पतरस चमड़े का धन्धा करने वाले शमौन के घर की छत पर से मैडीटेरियन समुद्री तट का दृश्य देख रहा था और जब उसे भूख लगी, तो इसी दौरान उसने दर्शन पाया। यहां भूख के लिये जो यूनानी शब्द प्रयुक्त हुआ है उसका उचित अर्थ समझना कठिन है, परन्तु इसमें प्रौस *(pros)* शब्द पहले जुड़ जाने से इसका अर्थ ''बहुत तेज़ भूख'' हो सकता है, परन्तु संदर्भ के अनुसार यह अर्थ आश्चर्यजनक प्रतीत होता है। यह शब्द हपैक्स लेगोमेनाॅन (*hapaxlegomenon*) के एक ही बार नए नियम में प्रयुक्त हुआ है और इसका सही अर्थ लगाना अनिश्चित ही रहेगा जब तक की और शाब्दिक खोजबीन नहीं की जाती। लूका ने क्यों इस दुर्लभ शब्द को प्रयुक्त किया, इस विषय में कुछ कहना कठिन है, परन्तु सामान्य रूप से सन्दर्भ स्पष्ट है।

■**''तो वह बेसुध हो गया''** यह शाब्दिक रूप से अपना आपा खो देने जैसी स्थिति है। अक्सर इस शब्द का प्रयोग अत्यन्त चकित हो जाने में प्रयोग किया जाता है (देखें, मर. 5:42; 16:8; लूका 5:26 (LXX)और अनेक बार यह शब्द सप्तूजैन्त पाठांशों में आया है) यहां प्रयुक्त यूनानी शब्द से हमें ''एक्स्टॅसि'' (ecstasy) अंग्रेज़ी शब्द प्राप्त हुआ है जिसका अर्थ भाव-समाधि या हर्षोन्माद है। इस पद में और 11:5 तथा 22:17 में इसका अर्थ अर्ध-चेतन मानसिक अवस्था में पहुंच जाना है, जहाँ परमेश्वर को अर्ध-चेतन अवस्था में बातचीत करने का अवसर मिलता है। यह उस शब्द से भिन्न है जो पद 3 में कुरनेलियुस के दर्शन का चित्रण करने के लिये प्रयुक्त हुआ है।

10:11

NASB	**''आकाश खुल गया''**
NKJV, TEV	**''स्वर्ग खुल गया''**
NRSV	**''स्वर्ग खुल गया''**
NJB	**''स्वर्ग पूरा खोल दिया गया''**

शाब्दिक रूप से इसका अर्थ है “आकाश खोल दिया गया और खुला रहा।” पुराने नियम में स्वर्ग बहुवचन में है। आकाश खुल गया एक मुहावरा है ताकि आत्मिक व अदृश्य विस्तार को भौतिक वास्तविकता के रूप में समझा जा सके (देखें, यहेज. 1:1; मत्ती 3:16; मरकुस 1:10; लूका 3:21; यूहन्ना 1:51; प्रेरि. 7:56; 10:11; प्रका. 4:1; 19:11)।

- **“बड़ी चादर के समान”** यह वही शब्द है जो पानी के जहाज चलाने में प्रयुक्त होता है।

10:12 “पृथ्वी के सब *प्रकार* के चैपाए और रेंगने वाले जन्तु और आकाश के पक्षी थे” यह उत्पत्ति 1 तथा 6:20 में पाए जाने वाले जानवरों के तीन विभागों में समान है। स्पष्ट रूप से इसमें लैव्यव्यवस्था 11 में दिए गए यहूदी भोजन नियमों के अनुसार शुद्ध और अशुद्ध पशु शामिल हैं।

10:13 “उसे एक ऐसा शब्द सुनाई दिया” मलाकी की पुस्तक की समाप्ति और नए नियम के आरम्भ होने के बीच के अन्तराल में यहूदियों के बीच परमेश्वर की ओर से कोई अधिकार युक्त वचन प्राप्त नहीं हुआ था। तो यहूदी लोग किसी बात की पुष्टि के लिए कि यह परमेश्वर की ही ओर से है, वे बाथकोल (आकाशवाणी) पर निर्भर रहते थे। हम मत्ती 3:17; 17:5; प्रेरि. 9:7 तथा यहां, यही आकाशवाणी पाते हैं।

10:14 “नहीं प्रभु, कदापि नहीं मैंने कभी कोई अपवित्र या अशुद्ध वस्तु नहीं खाई है” “नहीं प्रभु, कदापि नहीं” यह यूनानी भाषा में बड़ा कठोर शब्द है जो सप्तूजैन्त में अनेक इब्रानी मुहावरे अनुवादित करने में प्रयुक्त हुआ है। पतरस अभी तक अपने यहूदी कट्टरपन में पढ़ा था। वह अपने कार्यों का आधार लैव्यव्यवस्था 11 अध्याय बना रहा था, हालांकि, ऐसा लगता है कि यीशु ने विशेष रूप से मरकुस 7:14 में इस मुद्दे से निपटा है, विशेष रूप से पद 19। यह ध्यान रखना दिलचस्प है कि मरकस का सुसमाचार स्पष्ट रूप से रोम से प्रेरित पतरस का बाद का स्मरण या उपदेश है।

10:15 “जो कुछ परमेश्वर ने शुद्ध ठहराया है, *अशुद्ध नहीं*” यह आदेश है जिसमें शुद्ध को अशुद्ध कहना मना किया गया है, जबकि परमेश्वर ने मूसा के भोजन संबंधी नियमों (अर्थात् लैव्य. 11) को स्पष्ट रूप से समाप्त कर दिया है। नई वाचा के विश्वासियों पर ये लागू नहीं होते हैं। परन्तु यहाँ पर यह बताने के लिए इनका उपयोग किया गया है कि सब मनुष्यों को स्वीकार करना चाहिए।

10:16 “तीन बार ऐसा ही हुआ” बाइबल में महत्वपूर्ण प्रार्थनाएँ, स्तुति गीत अथवा कार्य तीन बार दोहराया जाना असामान्य बात नहीं है:

1. गतसमनी बाग में यीशु की तीन बार प्रार्थना (देखें मर. 14:36, 39)
2. पुनरुत्थान के बाद पतरस के साथ यीशु का वार्तालाप (देखें, यूहन्ना 21:17)
3. पौलुस के शरीर में से कांटा दूर करने की प्रार्थना (देखें, 2 कुरि. 12:8)

यह सामी भाषा का किसी बात पर बल देने का तरीका था (देखें, यशायाह 6:3; यिर्म. 7:4)। परन्तु यहाँ पर विशेषकर स्वर्गीय वाणी का पतरस द्वारा आज्ञा पालन न करना दर्शाया जाता है। इस सम्बन्ध में ए.टी. रौबर्टसन की टिप्पणी बहुत कठोर है जिसे उन्होंने अपनी पुस्तक वर्ड पिक्चर्स इन द न्यू टैस्टामेन्ट (A. T. Robertson, *Word Pictures In the NewTestament)* में दिया है, जो इस प्रकार है:

> “यहाँ एक ऐसे मनुष्य के हठधर्म का असाधारण उदाहरण मिलता है, जो परमेश्वर की वाणी को अपने लिये स्वीकार करता है, जबकि प्रभु की आज्ञा उसकी प्राथमिकताओं और पूर्व-धारणाओं को पार करती है। इस बात के बहुत से उदाहरण आज विद्यमान हैं। सही मायनों में देखा जाए तो पतरस प्रभु की इच्छा के विरुद्ध भक्ति का भेष धारण कर रहा था” (पेज 137)

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 10:17-23 अ

[17]जब पतरस अपने मन में दुविधा में था, कि वह दर्शन जो मैंने देखा वह क्या हो सकता है, तो देखो, वे मनुष्य जिन्हें कुरनेलियुस ने भेजा था, शमौन के घर का पता लगाकर द्वार पर आ खड़े हुए। [18]और पुकारकर पूछने लगे, "क्या शमौन जो पतरस कहलाता है, यहीं अतिथि है?" [19]पतरस तो उस दर्शन पर सोच ही रहा था, कि आत्मा ने उससे कहा, "देख, तीन मनुष्य तेरी खोज में हैं। [20]सो उठकर नीचे जा, और बेखटके उनके साथ हो ले; क्योंकि मैंने ही उन्हें भेजा है।" [21]तब पतरस ने उतरकर उन मनुष्यों से कहा, "देखो, जिसकी खोज तुम कर रहे हो, वह मैं ही हूं; तुम्हारे आने का क्या कारण है?" [22]उन्होंने कहा, "कुरनेलियुस सूबेदार जो धर्मी और परमेश्वर से डरनेवाला और सारी यहूदी जाति में सुनाम मनुष्य है, उसने एक पवित्र स्वर्गदूत से यह चेतावनी पाई है कि तुझे अपने घर बुलाकर तुझसे वचन सुने।" [23]तब उसने उन्हें भीतर बुलाकर उनकी पहुनाई की।

10:17 " पतरस अपने मन में दुविधा में था" यह वाक्यांश भूतकाल में आरम्भ हुए कार्य को दर्शाता है। ये शब्द लूका द्वारा मानसिक दुविधा दर्शाने के लिए कई बार प्रयुक्त हुए हैं (देखें, लूका 9:7; प्रेरि. 2:12; 5:24; 10:17)। पतरस तुरन्त ही नहीं समझ पाया कि दर्शन का अभिप्राय क्या है?

▪**"दर्शन"** पतरस के दर्शन के लिये जो यूनानी शब्द "होरामा" *(horama)* उपयुक्त हुआ है, वही शब्द प्रेरि. 10:3 में कुरनेनियुस के दर्शन के लिए भी हुआ है (देखें, प्रेरि. 10:19)।

10:19 "पवित्र आत्मा ने उस से कहा" सम्पूर्ण सन्दर्भ में "पवित्र आत्मा" के बोलने (प्रेरि. 10:19) और "स्वर्गदूत के बोलने" (प्रेरि. 10:3, 22) के बीच आपस में क्या संबंध है, यह बताना अनिश्चित है (प्रेरि. 10:20, "क्योंकि मैं ही ने उन्हें भेजा है")। स्पष्ट रूप से स्वर्गदूत पवित्र आत्मा की ओर से बोलता है। इन दोनों को पुराने नियम के दर्शन के समान समझना चाहिए (देखें, निर्ग. 3:2-4; प्रेरि. 8:26, 29)।

10:20 यह पद बड़ा प्रभावशाली है.

1. उठो, पूर्वकालिक एक अनिवार्यता के रूप में इस्तेमाल किया
2. नीचे जाएं, नृजातीय सक्रिय अनिवार्य
3. उनके साथ, वर्तमान मध्य (प्रतिपादक) जरूरी है
4. गलतफहमी के बिना, पूर्वकालिक एक अनिवार्यता के रूप में इस्तेमाल किया
5. मैंने उन्हें स्वयं भेजा है, पूर्ण सक्रिय संकेत के साथ अहंकार

इस प्रकार पतरस के सामने जाने के अतिरिक्त कोई विकल्प नहीं था। यह परमेश्वर की ओर से निर्धारित कार्य था। कुरनेनियुस को दर्शन, कुरनेलियुस द्वारा मनुष्यों को भेजा जाना, पतरस को दर्शन मिलना और अब पतरस का कैसरिया जाना, ये सारे कार्य पवित्र आत्मा द्वारा किए गये।

10:22 जो कुछ हुआ था, उन्होंने सब कुछ ईमानदारी से बता दिया।

NASB	**"धर्मी"**
NKJV	**"एक खरा मनुष्य"**
NRSV, NJB	**"धर्मी"**
TEV	**"एक भला मनुष्य"**

संभवतः यह शब्द पुराने नियम के "दोषरहित" अर्थों में प्रयुक्त हुआ है, यह पाप रहित होने को नहीं दर्शाता (देखें, उत्पत्ति 6:1; अय्यूब 1:1; लूका 1:6; 2:25) अथवा मसीह की धार्मिकता को भी नहीं दर्शाता है (देखें, रोमियों 4)। जो कुछ यह मनुष्य परमेश्वर की इच्छा के बारे में जानता था, उसी स्तर के अनुसार जीवन व्यतीत करता था। देखें प्रेरि. 3:14 में विशेष विषय : धार्मिकता (RIGHTEOUSNESS)

NASB, NRSV, NJB	**''परमेश्वर का भय मानने वाला''**
NKJV	**''परमेश्वर से डरने वाला''**
TEV	**''परमेश्वर की आराधना करने वाला''**

कुरनेलियुस के बारे में बताने के लिए अक्सर उपरोक्त वाक्यांशों (अथवा इनके समान अन्यों) का उपयोग किया जाता है (देखें, प्रेरि. 10:2, 22, 35)। प्रेरि. 13:16, 26, 43, 50 में यह उनके लिये प्रयुक्त हुआ जो जातिगत रूप से यहूदी नहीं और यहूदीमत में पूरी तरह नहीं आए थे, परन्तु जो सभाघरों में आया करते थे। उन्हें परमेश्वर का भय मानने वाले कहा जाता था (देखें, प्रेरि. 16:14; 17:4, 17; 18:7)।

10:23 ''तब उसने उन्हें भीतर बुलाकर उनकी पहुनाई की'' यह एक और उदाहरण है जब पतरस यहूदी कर्म काण्डवाद से दूर रहा। निश्चय ही सिपाही रोमी मनुष्य था, तो भी पतरस ने उसे सहभागिता और भोजन के लिये आमंत्रित किया। ध्यान दीजिए कि किस प्रकार से प्रेरि. 10:48 में पतरस एक रोमी नागरिक के घर में कुछ दिन तक रहा।

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 10:23ब-29
[23]बऔर दूसरे दिन, वह उनके साथ गया; और याफा के भाइयों में से कई उसके साथ हो लिए।
[24]दूसरे दिन वे कैसरिया में पहुंचे, और कुरनेलियुस अपने कुटुम्बियों और प्रिय मित्रों को इकट्ठे करके उनकी बाट जोह रहा था। [25]जब पतरस भीतर आ रहा था, तो कुरनेलियुस ने उससे भेंट की और पांवों पर गिरकर उसे प्रणाम किया। [26]परन्तु पतरस ने उसे उठाकर कहा, ''खड़ा हो, मैं भी तो मनुष्य हूं।''
[27]और उसके साथ बातचीत करता हुआ भीतर गया और बहुत से लोगों को इकट्ठे देखकर [28]उनसे कहा, ''तुम जानते हो कि अन्यजाति की संगति करना या उसके यहां जाना यहूदी के लिये अधर्म है, परन्तु परमेश्वर ने मुझे बताया है, कि किसी मनुष्य को अपवित्र या अशुद्ध न कहूं। [29]इसीलिये मैं जब बुलाया गया; तो बिना कुछ कहे चला आया। अब मैं पूछता हूं कि मुझे किस काम के लिये बुलाया गया है?''

10:24 ''याफा के भाइयों में से कुछ उसके साथ हो लिए'' प्रेरि. 11:12 से ज्ञात होता है कि ये छः भाई थे। पतरस जानता था कि यह घटना यीशु के यहूदी अनुयायियों में समस्या उत्पन्न कर सकती है, इसलिए वह अपने साथ छः गवाह भी ले गया (देखें, प्रेरि. 11:12)।

■ **''कैसरिया''** कैसरिया समुद्री तट पर बसा एक सुन्दर नगर था। इसका नाम रोमी सम्राट कैसर के सम्मान में कैसरिया रखा गया था। यह रोमी सेना का पलीस्तीन में मुख्यालय था। रोमियों ने यहाँ छोटा सा आश्रय स्थान या बन्दरगाह बना रखा था।

■ **''कुटुम्बियों और प्रिय मित्रों को इकट्ठा किया''** कुरनेलियुस परमेश्वर की ओर से एक वकता आने की उम्मीद करता था, इसलिए उसने अपने कुटुम्ब, मित्रों, दास-दासियों और संभवतः अन्य रोमी सिपाहियों को भी बुला रखा था। सब बड़ी आशाओं के साथ जमा थे और संभवतः दर्शन व संदेश की आपस में चर्चा करते रहे होंगे।

हो सकता है यरूशलेम की कलीसिया के यहूदी अगुवों को यह सुनकर धक्का लगा हो कि बड़ी संख्या में अन्यजाति जमा थे जिनमें अधिकांश परमेश्वर का भय नहीं रखते थे, तो भी पवित्रा आत्मा से परिपूर्ण हुए और बपतिस्मा पाया (देखें, प्रेरि. 10:27)।

10:25, 27 ''जब पॉल भीतर गया... वह भीतर गया'' यहाँ पर यूनानी पाठ में भिन्नता पाई जाती है। प्रेरि. 10:25 में बताया गया पहला प्रवेश घर के आँगन बाहर नगर द्वार से प्रवेश हो सकता है, और प्रेरि. 10:27 का दूसरा प्रवेश कुरनेलियुस के घर में प्रवेश हो सकता है। कुछ भी हो, पतरस यहाँ फिर से यहूदी कर्मकाण्ड का उल्लंघन कर रहा था। यहूदी के लिये अन्यजाति के घर में प्रवेश निषिद्ध था।

10:25 "उसके पाँवों पर गिरकर उसकी वंदना की" यह सप्तूजैन्त में और सुसमाचारों में प्रणाम करने का नियमित मुहावरा है, परन्तु यहां पर इसका तात्पर्य "आदर देने" से है (देखें, NJB)। पतरस का आना, स्वर्गदूत द्वारा किया गया प्रबन्ध था, निस्सन्देह ऐसे सन्देशवाहक का आदर कुरनेलियुस द्वारा किया जाना स्वाभाविक था (देखें, प्रका. 19:10; 22:8-9)।

10:28 "तुम जानते हो कि अन्यजाति की संगति करना, यहूदी के लिये अधर्म है" पतरस रब्बियों अथवा सभाघर की शिक्षा उद्धरित करता है, परन्तु यह शिक्षा पुराने नियम की नहीं है, केवल रब्बियों की व्याख्या है।

■ **"विदेशी"** या "अन्य जाति" इस अध्याय में लूका ने बहुत से असामान्य शब्दों का प्रयोग किया है; विदेशी शब्द भी असामान्य शब्द हैं और केवल यहीं पर प्रयुक्त हुआ है। कुछ असामान्य शब्द इस प्रकार हैं:

1. प्रेरि. 10:2, 7 में इयूसिबेस भक्त (देखें, 2 पत. 2:9) *(eusebēs)*
2. प्रेरि. 10:10 में, प्रोसपेइनीस भूखा *(prospeinos)*
3. प्रेरि. 10:19 में डायन्थूमेओमाए सोच विचार करना *(dienthumeomai)*
4. प्रेरि. 10:27 में, सूनोमिलेओ बातचीत करना *(sunomileō)*
5. प्रेरि. 10:28 में, अथेमिटन अधर्म *(athemiton)*
6. प्रेरि. 10:28 में, ओलोफूलो विदेशी *(allophulō)*
7. प्रेरि. 10:29 में, अनान्तीरेटास बिना किसी आपत्ति के (प्रेरि. 19:36) *(anantirrētos)*
8. प्रेरि. 10:34 में, प्रोसोपोलेमपेस पक्षपात करना(रोमि. 2:11; इफि. 6:9; याकूब 2:19) *(prosōpolēmpēs)*
9. प्रेरि. 10:38 में कायडूनासतेयू सताए जाना (याकूब 2:6) *(katadunasteuō)*
10. प्रेरि. 10:41 में, प्रोकीरोटोनियो पहले से चुने जाना। *(procheirotoneō)*

निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता है कि लूका ने प्रेरितों के काम पुस्तक के आरम्भिक उपदेशों और घटनाओं की अन्य स्रोतों से नकल की है अथवा चश्मदीद गवाहों के साथ बातचीत करके इन्हें एकत्रित किया है।

■"***परन्तु* परमेश्वर ने मुझे बताया है कि किसी मनुष्य को अपवित्र या अशुद्ध न कहूँ"** पतरस दर्शन का अर्थ समझा चुका था। चादर में जो सब प्रकार के जीव-जन्तु उसने देखे थे वे सम्पूर्ण मानव जाति का प्रतीक थे जो परमेश्वर के स्वरूप पर बनाए गए थे (देखें, उत्पत्ति 1:26-27)। कुरनेलियुस, उसके घराने तथा मित्रों के प्रति परमेश्वर के प्रेम ने पतरस पर प्रकट कर दिया था कि सुसमाचार में सम्पूर्ण जगत के उद्धार की क्षमता है और इसकी पुष्टि स्तिफनुस की गवाही और फिलिप्पुस के सुसमाचार प्रचार द्वारा हुई।

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 10:30-33
30कुरनेलियुस ने कहा, "इसी घड़ी पूरे चार दिन हुए कि मैं अपने घर में तीसरे पहर को प्रार्थना कर रहा था; तो देखो, एक पुरुष चमकीला वस्त्र पहने हुए मेरे सामने आ खड़ा हुआ। 31और कहने लगा, 'हे कुरनेलियुस, तेरी प्रार्थना सुन ली गई, और तेरे दान परमेश्वर के सामने स्मरण किए गए हैं। 32इसलिये किसी को याफा भेजकर शमौन को जो पतरस कहलाता है, बुला; वह समुद्र के किनारे शमौन चमड़े का धन्धा करनेवाले के घर में अतिथि है।' 33तब मैंने तुरन्त तेरे पास लोग भेजे, और तूने भला किया, जो आ गयाः अब हम सब यहां परमेश्वर के सामने हैं, ताकि जो कुछ परमेश्वर ने तुझसे कहा है उसे सुनें।"

10:30 "चमकीला वस्त्र पहने" स्वर्गदूत प्रायः इसी रूप में दिखाई देते हैं (पढ़ें, प्रेरि. 1:10; मत्ती 28:3; मरकुस 16:5; यूहन्ना 20:12; लूका 24:4)।

10:31 इस अध्याय में तीसरी बार कुरनेलियुस की धार्मिकता एवं भक्ति का अंगीकार किया गया है (देखें प्रेरि. 10:4, 22)। कुरनेलियुस ही नहीं अपितु उसका संपूर्ण घराना, मित्रगण तथा दास-दासियाँ भी मसीह पर विश्वास करने लगे थे। प्रेरितों के काम पुस्तक में "घरानों के उद्धार" के अनेक उदाहरणों में से यह एक श्रेष्ठ उदाहरण है।

हम लोगों में से जिनका पालन-पोषण पाश्चात्य सुसमाचार प्रचार प्रणाली के वातावरण में हुआ है, जहाँ मसीह को व्यक्तिगत रीति से ग्रहण करने पर बल दिया जाता है, इस प्रकार की सामूहिक रीति से मसीह को ग्रहण करने की घटनाओं पर आश्चर्य होता है, परन्तु संसार में अधिकतर जन जातियाँ और परिवार समूहों में रहते हैं। परमेश्वर किसी भी सुसमाचार प्रचार प्रणाली को काम में लाने की सामर्थ रखता है। सुसमाचार प्रचार का कोई एक निर्धारित तरीका नहीं है, परमेश्वर किसी भी माध्यम द्वारा मानवजाति तक पहुंच सकता है जो उसके स्वरूप के अनुसार सृजी गई है।

10:33 ये सभी लोग सुनने के लिये तैयार थे! उन्होंने महसूस किया कि वे परमेश्वर द्वारा भेजे गए सन्देशवाहक के साथ उसकी उपस्थिति में हैं।

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 10:34-43
[34]तब पतरस ने कहा, ''अब मुझे निश्चय हुआ कि परमेश्वर किसी का पक्ष नहीं करता, [35]वरन् हर जाति में जो उससे डरता और धर्म के काम करता है, वह उसे भाता है। [36]जो वचन उसने इस्राएलियों के पास भेजा, जब कि उसने यीशु मसीह के द्वारा (जो सबका प्रभु है) शान्ति का सुसमाचार सुनाया। [37]वह वचन तुम जानते हो जो यूहन्ना के बपतिस्मा के प्रचार के बाद गलील से आरम्भ करके सारे यहूदिया में फैल गई। [38]कि परमेश्वर ने किस रीति से यीशु नासरी को पवित्र आत्मा और सामथ्र्य से अभिषेक कियाः वह भलाई करता, और सबको जो शैतान के सताए हुए थे, अच्छा करता फिरा; क्योंकि परमेश्वर उसके साथ था। [39]और हम उन सब कामों के गवाह हैं; जो उसने यहूदिया के देश और यरूशलेम में भी किए, और उन्होंने उसे काठ पर लटकाकर मार डाला। [40]उसको परमेश्वर ने तीसरे दिन जिलाया, और प्रगट भी कर दिया है। [41]सब लोगों को नहीं वरन् उन गवाहों को जिन्हें परमेश्वर ने पहले से चुन लिया था, अर्थात् हम पर जिन्होंने उसके मरे हुओं में से जी उठने के बाद उसके साथ खाया-पीया। [42]और उसने हमें आज्ञा दी कि लोगों में प्रचार करो; और गवाही दो कि यह वही है; जिसे परमेश्वर ने जीवतों और मरे हुओं का न्यायी ठहराया है। [43]उसकी सब भविष्यद्वक्ता गवाही देते हैं, कि जो कोई उस पर विश्वास करेगा, उसको उसके नाम के द्वारा पापों की क्षमा मिलेगी।''

10:34 ''परमेश्वर किसी का पक्ष नहीं करता'' इस वाक्यांश के साथ पतरस अपना उपदेश कुरनेलियुस को सुनाना आरम्भ करता है। यह प्रारम्भिक कलीसिया का गैर-यहूदियों को सुसमाचार सुनाने का एक अच्छा उदाहरण है। पुराने नियम में यह वाक्यांश परमेश्वर के स्वभाव को दर्शाता था (देखें, व्यवस्थाविवरण 10:17; 2 इति. 19:7) और परमेश्वर के लोगों से भी इसी की माँग की जाती थी (देखें, व्यवस्थाविवरण 1:17; 16:19)। नए नियम में भी परमेश्वर का चित्रण इसी बात के आधार पर करना सामान्य बात है (देखें, रोमि. 2:11; गला. 2:6; इफि. 6:9; कुलु. 3:24-25; 1 पतरस 1:17)। पुराने नियम में इस वाक्यांश का शाब्दिक अर्थ था ''अपना चेहरा ऊपर उठाना।'' इब्रानी न्यायालयों में बचाव पक्ष का मनुष्य अपना सिर झुकाए रहता था ताकि न्यायी उसे पहचान न सके, और पक्षपाती न बन पाए।

परमेश्वर किसी का पक्षपात नहीं करता चाहे कोई किसी भी देश, जाति व समुदाय का हो। यदि यह बात सत्य है तो पहले से चुन लिया जाना किस प्रकार लागू होता है? अथवा इस्राएल किस प्रकार से विशेष जाति है? वर्तमान समय की व्याख्याओं से सावधान रहें।

10:35 "हर राष्ट्र में जो आदमी उससे डरता है और जो सही है वह उसका स्वागत करता है'' यह कथन आत्मिक उद्धार पर नहीं परन्तु स्पष्ट रूप से दान देने, प्रार्थना करने और भक्ति पर लागू होता है। देखें विशेष विषय प्रेरि. 3:2 में। इस वाक्यांश का धर्म वैज्ञानिक दृष्टिकोण से सुसमाचार ग्रहण करने की आज्ञा के साथ तालमेल बैठाना चाहिए (देखें, यूहन्ना 1:12; 3:16; रोमि. 10:9-13)।

यहाँ मूल सत्य यह है कि परमेश्वर अन्यजातियों को बिना यहूदी धर्म स्वीकार किये ग्रहण करता है। प्रेरि. 15 की सभा में इसी बात पर धर्मवैज्ञानिक मंच व समझौता तैयार किया गया था।

10:36-39 इन नामों के विषय में जेरोम बिबलीकल कमेन्ट्री (भाग 2, पेज 188) *The Jerome Biblical Commentary* (vol. II, p. 188) कुछ अच्छी टिप्पणियाँ करती है:

1. उसमें पतरस के सुसमाचार के सारांश पाए जाते हैं अर्थात् केरिगमा *(Kerygma)*
2. इनकी वाक्य रचना भद्दी है जो दर्शाती है कि लूका ने ठीक ठीक अपने स्रोतों से एकत्रित की गई जानकारी को लिखा और अपनी तरफ से कुछ नहीं लिखा, अथवा संपादन नहीं किया, न ही उनका अविष्कार किया।

10:36 "जो वचन उसने इस्राएल के पास भेजा" यह पुराने नियम की ओर संकेत नहीं करता, परन्तु यीशु और प्रेरितों के प्रचार की ओर संकेत करता है।

■ **"यीशु मसीह के द्वारा शान्ति का सुसमाचार सुनाया"** यह यशा. 52:7 की ओर संकेत हो सकता है। नए नियम में "शान्ति" शब्द का प्रयोग निम्न तीन रूपों में हुआ है:

1. मनुष्य और मानव जाति के बीच शान्ति (देखें, कुलु. 1:20)
2. विश्वासी जन की व्यक्तिगत शान्ति (यूहन्ना 14:27; 16:33; फिलि. 4)
3. उन मानवीय समूहों के मध्य शान्ति जिन्होंने मसीह को ग्रहण किया है (इफि. 2:14-3:6; कुलु. 3:16)

मसीह में सारी मानवीय बाधाएँ दूर होती हैं (गला. 3:28; कुलु. 3:11)

■ **"(जो सबका प्रभु है)"** यह लेखक की टिप्पणी है। इसमें सन्देश की सार्वभौमिकता का तत्व और यीशु मसीह के सुसमाचार का निमन्त्रण पाया जाता है जो अभी तक एक कट्टर यहूदी के मुंह द्वारा उग्र-सुधारवादी सुनाई पड़ता है (देखें, प्रेरि. 2:36; मत्ती 28:18; रोमि. 10:12; इफि. 1:20-22; कुलु. 2:10; 1 पतरस 3:22)। वह सब जातियों का और सब वस्तुओं का प्रभु है।

10:37, 39 "जो चीज़ें हुई हैं उनके बारे में तुम जानते हो" पतरस वही तरीका अपनाता है जैसा उसने पिन्तेकुस्त के उपदेश में अपनाया था (देखें, प्रेरि. 2:22, 33)। वे यीशु के बारे में जानते थे कि यरूशलेम में उसके साथ कैसा व्यवहार किया गया था।

इन सबको कैसे जानकारी मिली, यह सोचकर हमें आश्चर्य हो सकता है। क्या पतरस ने बढ़ा-चढ़ाकर बोला कि वे जानते हैं? क्या इनमें से कुछ लोग उन घटनाओं में शामिल थे जो यरूशलेम में यीशु के साथ घटीं? क्या दास-दासियों में से कुछ यहूदी थे? हम इन सबके बारे में कुछ नहीं जानते हैं क्योंकि यहाँ पर संक्षेप में वर्णन किया गया है। कुछ लोगों ने पतरस के इस उपदेश का उपयोग इन बातों के लिए किया:

1. प्रेरितों के काम में लूका ने सभी उपदेश लिखे (हालांकि लूका आम बोलचाल की भाषा का अच्छा लेखक है तौ भी प्रेरि. 10:36-48 अच्छी और ग्रहणयोग्य यूनानी में नहीं है)।
2. लूका अपने स्रोतों के संबंध में सच्चा था, उसने ठीक ठीक बिना उनकी व्याकरण को सुधारे, उद्धरित किया।
3. 3. यह पाठांश प्रेरित के काम पुस्तक के बाद के पाठकों को समझने के लिए है देखें, जेरोम की कमेन्ट्री भाग दो, पेज 189 I (cf. *The Jerome Commentary*, vol.II, p. 189)

10:37 "बपतिस्मा के बाद युहन्ना ने घोषणा की" विश्वासियों में यह जानने की जिज्ञासा सदैव रही है कि यीशु मसीह ने बपतिस्मा क्यों लिया, क्योंकि यूहन्ना का बपतिस्मा मन-फिराव का था, और यीशु तो निष्पाप था और उसे पापों की क्षमा पाने और मन-फिराने की आवश्यकता नहीं थी (देखें, 2 कुरि. 5:21; इब्रा. 4:15; 7:26; 1 पतरस 2:22; 1 यूहन्ना 3:5)। परिकल्पनाएँ इस प्रकार हैं:

1. यीशु का बपतिस्मा विश्वासियों के लिए पालन किए जाने का नमूना है।
2. यह विश्वासियों की आवश्यकता में उसका एकीकरण है।
3. यह उसका अभिषेक और सेवकाई के लिए तैयार होना था।
4. यह उसके उद्धार के कार्य का प्रतीक है।

5. यह यूहन्ना के सन्देश और उसकी सेवकाई का उसके द्वारा पुष्टि किया जाना था।
6. यह उसकी मृत्यु, गाड़े जाने और पुनरुत्थान की पूर्व छाया की भविष्यद्वाणी थी (देखें, रोमियों 6:4; कुलु. 2:12)।

यूहन्ना के बपतिस्मा को यीशु की पवित्रात्मा से परिपूर्ण सार्वजनिक सेवा के शुभारम्भ के रूप में देखा जाता है। चारों सहदर्शी सुसमाचार यीशु की इसे सार्वजनिक सेवा के शुभारम्भ की घटना का विवरण लेखबद्ध करते हैं। मरकुस (जो पतरस के उपदेशों का संकलन है) अपना सुसमाचार इसी घटना से आरम्भ करता है। आरम्भिक कलीसिया द्वारा इसे पवित्र आत्मा के नए युग के आरम्भ की विशेष घटना के रूप में देखा जाता था जिसका सम्बन्ध यीशु की सार्वजनिक सेवा से है।

10:38 ''परमेश्वर ने किस रीति से यीशु नासरी को पवित्र आत्मा और सामथ्र्य से अभिषेक किया'' ध्यान दें कि यीशु के सम्बन्ध में पतरस किन बातों को दृढ़तापूर्वक मानता था:

1. परमेश्वर ने उसका अभिषेक (यह इब्रानी में मसीह शब्द की जड़ है)
2. पवित्र आत्मा द्वारा किया (नया युग, पवित्र आत्मा का युग है)
3. सामथ्र्य द्वारा अभिर्षक किया (प्रभावशाली सेवकाई)
    a. भले कार्यों को किया
    b. शैतान की शक्ति द्वारा सताए हुओं को चंगा किया
4. परमेश्वर उसक साथ था (उसने यहोवा (YHWH) के प्रतिनिधि के रूप में कार्य किया और उपदेश दिए, देखें, यूहन्ना 3:2; 9:33; 10:38; 14:10-11)।

स्पष्ट रूप से यह यीशु के बपतिस्मे की ओर संकेत करता है देखें, एफ.एफ. ब्रूस की पुस्तक, ''आपके प्रश्नों के उत्तर, पेज 171-172 (cf. F. F. Bruce, *Answers to Questions*, pp. 171-172).

रौबर्ट बी. गिरडलस्टोन, सिनोनिम्स ऑफ द ओल्ड टैस्टामैन्ट (Robert B. Girdlestone, *Synonyms of the old Testament*) बड़ी रोचक निम्नलिखित टिप्पणी करता हैः-

> ''क्रिया शब्द एक्सपीइन (*XPIEIN)* नए नियम में पाँच बार इस्तेमाल किया गया है। इन पांच में से चार स्थलों पर पिता द्वारा यीशु का अभिषेक किए जाने की ओर संकेत पाया जाता है जैसे लूका 4:18, जो यशायाह 61:1 से लिया गया; इब्रा. 1:9, भजन 45:7 से लिया गया; प्रेरि. 4:27 जहाँ भजन 2 का हवाला इस्तेमाल किया गया; अन्त में प्रेरि. 10:38, जहाँ हमें बताया जाता है कि परमेश्वर ने पवित्र आत्मा द्वारा यीशु का अभिषेक किया" (पेज 183)।

देखें विशेष विषय प्रेरि. 2:14 में: केरिगमा (*kerygma)*

▪**''वह सबको ठीक करता और जो शैतान के सताए हुए थे,** अच्छा करता फिरा'' प्रेरि. 5:3 तथा प्रेरि. 5:16 में विशेष विषय एवं टिप्पणी देखें।

10:39 ''और उन्होंने उसे काठ पर लटकाकर मार डाला'' ''उन्हांने'' यहूदी नेताओं, भीड़ तथा रोमी अधिकारियों एवं सिपाहियों की ओर इशारा करता है। प्रेरि. 2:23 में टिप्पणी देखें। पेड़ पर लटकाए जाने का विचार प्रेरि. 5:30 में आया है और व्यवस्थाविवरण 21:23 को दर्शाता है; (जो मूल रूप से मृत्यु के बाद काठ पर लटकाना है किसी को नीचा दिखाने व अपमानित करने के लिये, परन्तु यीशु के समय के रब्बियों ने इसकी व्याख्या रोमियों द्वारा क्रूस पर चढ़ाया जाना किया), जबकि यीशु ने पुराने नियम के व्यवस्था के शाप को हमारे लिए सहा (देखें, यशायाह 53; गला. 3:13)

10:40 ''उसको परमेश्वर ने जिलाया'' धर्म वैज्ञानिक रूप से यह बड़ी रोचक बात है कि यशायाह 53:4-6,10 दृढ़तापूर्वक बताता है कि यह यहोवा (YHWH) की इच्छा और उसकी योजना थी कि यीशु दुख उठाए और मारा जाए (देखें, उत्पत्ति 3:15)। यहोवा (YHWH) ने निम्नलिखित प्रतिनिधियों को प्रयुक्त कियाः-

1. शैतान को

2. भ्रष्ट यहूदी अगुवों को
3. छली रोमी अधिकारियों को
4. क्रोधित यहूदी भीड़ को

बुराई परमेश्वर की योजना में है! वह इसका प्रयोग मानवजाति के लिये जो उसके स्वरूप पर सृजी गई है, अपने उद्देश्यों की पूर्ति हेतु करता है। परमेश्वर के कार्य कैसे अद्‌भुत हैं!

वह मृत्यु को आने देता है, तब उसके बाद यीशु को तथा सबको पुनरुत्थित जीवन प्रदान करता है।

नया नियम दृढ़तापूर्वक स्वीकार करता है कि यीशु के पुनरुत्थान में त्रिएकत्व के तीनों व्यक्तित्व क्रियाशील थेः-

1. पवित्र आत्मा (रोमियों 8:11)
2. यीशु (यूहन्ना 2:19-22; 10:17-18)।
3. पिता (प्रेरि. 2:24, 32; 3:15,25; 4:10; 5:30; 10:40; 13:30,34,37,; 27:31; रोमियों 6:4,9)।

पुनरुत्थान, प्रभु यीशु मसीह के जीवन, मृत्यु और परमेश्वर के विषय में उसकी शिक्षाओं की पुष्टि करता है। यह केरिगाम का अर्थात् प्रेरितों के काम पुस्तक के तमाम उपदेशों का मूल तत्व था। प्रेरि. 2:14 में विशेष विषय व टिप्पणी देखें।

- **"तीसरे दिन"** 1 कुरि. 15:4 के कारण कुछ लोग इसे भजन 16:10 अथवा होशे 6:2 के साथ जोड़ते हैं, परन्तु अधिकांशतः मत्ती 12:40 के कारण योना 1:17 से जोड़ते हैं।

10:40-41 "और प्रगट भी कर दिया है; सब लोगों पर नहीं" यीशु केवल कुछ चुने हुए समूहों ही पर प्रगट हुआ (देखें, यूहन्ना 14:19,24; 15:27; 16:16,22; 1 कुरि. 15:5-9)।

10:41 "उसके मरे हुओं में से जी उठने के बाद उसके साथ खाया-पीया" हालांकि यीशु की पुनरुत्थित देह को शारीरिक भोजन की आवश्यकता नहीं थी, तौभी उसने यह दिखाने के लिये कि वह वास्तविक है और उनके साथ संगति रख सकता है, खाया-पीया और अपनी विशेष गवाही दी (देखें, लूका 24:35,41-43; यूहन्ना 21:9-13)।

10:42 "उसने हमें आज्ञा दी कि लोगों में प्रचार करो" यहाँ सर्वनाम "उसने" यीशु की ओर संकेत करता है (देखें, मत्ती 28:18-20; लूका 24:47-48; यूहन्ना 15:27)। यह गवाही यरूशलेम में आरम्भ हुई, परन्तु समस्त संसार में पहुँच गई (देखें, प्रेरि. 1:18)।

- **"जीवतों और मरे हुओं का न्यायी"** न्याय करने में मसीह, पिता का प्रतिनिधि है (देखें, दानि. 7:13-14; यूहन्ना 5:22,27; प्रेरि. 17:31; 2 कुरि. 5:10 2 तीमु. 4:1; 1 पतरस 4:5) जैसे कि सृष्टि निर्माण के समय वह परमेश्वर का प्रतिनिधि था (देखें, यूहन्ना 1:3; कुलु. 1:16; इब्रा. 1:2)। यीशु संसार में न्याय करने के लिये, परन्तु संसार का उद्धार करने के लिए आया था (देखें, यूहन्ना 3:17-19)।

वाक्यांश "जीवतों और मरे हुओं" का न्याय युग के अन्त में होने वाले न्याय की ओर संकेत करता है, जबकि मसीह का दूसरा आगमन होगा। उस समय कुछ विश्वासी जीवित बचे रहेंगे (देखें 1 थिस्स. 4:13-18)।

विशेष विषयः यशायाह में, न्यायी, न्याय और इंसाफ שפט

पुराने नियम में यह विस्तृत रूप से प्रयोग में लाया जाने वाले शब्द हैं (BDB 1047, KB 1622)। NIDOTTE, vol. 4, P. 214, ने इसके वितरण और महत्व का उल्लेख किया है :

1. पंचग्रन्थ, (Pentateuch) 13% मानवी न्यायी
2. ऐतिहासिक पुस्तकों में (History Books) 34% मानवीय अगुवे
3. बुद्धि साहित्य में (Wisdom Literature) 22% दिव्य गतिविधियाँ
4. नबियों की पुस्तकों में (Prophets) 31% अधिकांश दिव्य गतिविधियाँ

यशायाह के निम्नलिखित चार्ट पर ध्यान दें

यहोवा (YHWH) न्यायी के रूप में	मसीह न्यायी के रूप में	इस्राएल का आदर्श न्यायी	इस्राएल के सच्चे न्यायी
2:4,	9:7	1:17	1:23
3:14	11:3,4	26:8	3:2
4:4	16:5	56:1	5:7
5:16	32:1	58:2,8	10:2
28:6,17,26	40:14		59:4,9,11,14,15
30:18	42:1,3,4		
33:5,22	51:4,5		
61:8	53:8		
66:16			

इस्राएल को विभिन्न जातियों में यहोवा (YHWH) के गुण प्रकट करने थे। वह असफल रही, इसलिए यहोवा (YHWH) ने संसार को अपना व्यक्तिगत प्रकाशन देने के लिए एक इस्राएली "आदर्श" को उठाया (अर्थात मसीह को, जो नसरत का यीशु मसीह था, देखें, यशा. 52:11-53:12)।

Copyright © 2014 Bible Lessons International

10:43 ‘‘उसकी सब भविष्यद्वक्ता गवाही देते हैं’’ इम्माऊस के मार्ग पर यीशु ने अपने दो चेलों को दर्शन देकर (देखें, लूका 24:13-35 जो लूका में एकमात्र विवरण है) उन्हें बताया कि पुराने नियम में कहाँ पर उसे विषय में लिखा है। फिर उन्होंने ये सारी बातें उपरौठी कोठरी में अन्य चेलों को बताईं और इस प्रकार ये सारी बातें यूहदियों में गवाही देने का माध्यम बनीं (देखें प्रेरि. 3:18)। यीशु ने समझने के लिये चेलों की बुद्धि खोली (लू. 24:45)।

- **"उसके नाम से"** (योएल 2:32 और लूका 24:47)

- **"हर कोई जो उस पर विश्वास करता है उसे पापों की क्षमा मिलती है" यह सुसमाचार का संदेश है:**
    1. सबको।
    2. उसके नाम के द्वारा।
    3. जो कोई उस पर विश्वास करेगा।
    4. उसको पापों की सभा मिलेगी (लूका 24:46-47)

पापों की क्षमा यीशु केन्द्रित है, अच्छे कार्य-प्रदर्शन पर नहीं (अर्थात् यिर्मयाह की नई वाचा 31:31-34; यहेजकेल 36:22-38)। सबके उद्धार के लिये जो भी कुछ करना आवश्यक था, वह सब सम्पन्न कर दिया गया है। पतित मानव जाति के लिए परमेश्वर ने वाचा के माध्यम से कार्य करना चुना। उसने पहल की और कार्य-सूची तैयार की, साथ ही वह मांग करता है कि मानवजाति पश्चाताप, विश्वास, आज्ञापालन और अध्यवसाय द्वारा प्रत्युत्तर दे। मनुष्यों को मसीह में परमेश्वर के दान को ग्रहण करना चाहिये (देखें, यूहन्ना 1:12; 3:16; रोमि. 10:9-13)। यह अपने आप ट्रान्सफर होने वाली बात नहीं है।

फैंक स्टैग की पुस्तक न्यू टैस्टामैन्ट थिओलाजी (Frank Stagg, *NewTestament Theology*) पापों की क्षमा और पश्चाताप के साथ इसके सम्बन्ध पर बड़ी रोचक टिप्पणी करती है जो इस प्रकार हैः-

> ‘‘क्षमा के लिये जरूरी है कि पाप की और उस से मन-फिराने की नई जानकारी हो। पवित्र शास्त्र में आश्वासन दिया गया है कि पापों को मान लेने पर पापों की क्षमा और अधर्म से शुद्धता निश्चय ही मिलेगी (देखें, 1 यूहन्ना 1:9), परन्तु जब पापों का अंगीकार नहीं किया जाएगा, तो कोई प्रतिज्ञा नहीं दी जायेगी। कुरनेलियुस के घर में पतरस ने क्षमा का सम्बन्ध विश्वास से जोड़ते हुए कहा कि, ‘सब नबी उसकी अर्थात् यीशु की साक्षी देते हैं कि जो कोई उस पर विश्वास करेगा, उसको उसके नाम के द्वार पापों की क्षमा मिलेगी’ (प्रेरि. 10:43)। इस विश्वास में पश्चाताप और अंगीकार करते हुए पापों की क्षमा मिलती है। इसका अर्थ यह नहीं कि पश्चाताप

करके क्षमा पाई जा सकती है; पश्चाताप करना किसी मनुष्य को क्षमा पाने के योग्य नहीं बनाता है। जैसा कि किसी अन्य ने कहा, कि पापी जन को स्वीकार करना होगा कि वह अयोग्य और अस्वीकृत है और तब उसकी स्वीकृति को स्वीकार करना होगा क्योंकि वह जन स्वयं ही जानता है कि वह ग्रहण किए जाने योग्य नहीं है। पापी जन क्षमा के योग्य तब तक नहीं बन सकता जब तक कि वह परमेश्वर की ओर से *हाँ* सुनने से पहले परमेश्वर की न सुनने के लिए तैयार *न* हों'' (पेज 94)

''जो कोई उस पर विश्वास करे'' के लिए देखें प्रेरि. 3:16 में विशेष विषय।

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 10:44-48

44पतरस ये बातें कह ही रहा था कि पवित्र आत्मा वचन के सब सुननेवालों पर उतर आया। 45और जितने खतना किए हुए विश्वासी पतरस के साथ आए थे, वे सब चकित हुए कि अन्यजातियों पर भी पवित्र आत्मा का दान उंडेला गया है। 46 क्योंकि उन्होंने उन्हे भांति-भांति की भाषा बोलते और परमेश्वर की बड़ाई करते सुना। इस पर पतरस ने कहा, 47''क्या कोई जल की रोक कर सकता है कि ये बपतिस्मा न पाएं, जिन्होंने हमारे समान पवित्र आत्मा पाया है?'' 48और उसने आज्ञा दी कि उन्हें यीशु मसीह के नाम में बपतिस्मा दिया जाए। तब उन्होंने उससे विनती की कि वह कुछ दिन और उनके साथ रहे।

10:44 ध्यान दीजिए कि पतरस ने अभी अपना उपदेश समाप्त भी नहीं किया था कि पवित्र आत्मा उतर आया (देखें, प्रेरि. 8:16-17; 10:44; 11:15)।

▪ **''वचन के सब सुनने वालों पर''** वास्तविक धर्म-वैज्ञानिक अड़चन की बात कुरनेलियुस नहीं था। वह तो पूर्ण रूप से स्थानीय आराधनालयों द्वारा स्वीकार कर लिया गया था। परन्तु अड़चन की बात उसके सारे मित्रगण थे! उनके यहूदियों से पहले से दृश्य रूप में सम्बन्ध नहीं थे, और अब परमेश्वर द्वारा उन्हें पूरी तरह ग्रहण कर लिया गया था, और उनके ग्रहण किये जाने की पुष्टि भी उसी प्रकार सामथ्र्य और पवित्र आत्मा के प्रकटीकरण के साथ हुई थी जिस प्रकार पिन्तेकुस्त के दिन हुई थी।

साथ ही यह भी ध्यान दें कि घटना का क्रम भी बदला हुआ था। पवित्र आत्मा पानी का बपतिस्मा लेने से पहले उतरा था, न कि बपतिस्मा लेते समय (प्रेरि. 2:38) अथवा बपतिस्मा लेने के बाद (प्रेरि. 8:17)। लूका वही बातें लिखता है जो हुआ, न कि वे बातें जो ''होना चाहिए थीं।'' अतः इन घटनाक्रमों को परिवर्तित करने की कोशिश से सावधान रहिए।

10:45 यह आत्मा का उसी प्रकार का अलौकिक प्रकटीकरण (देखें, 10:46) था जैसा पिन्तेकुस्त के दिन हुआ था; जब दुबारा हुआ और इस बार रोमी भी इसमें शामिल थे। यह विशेष चिन्ह केवल कुरनेलियुस और उसे मित्रों के लिये ही <u>नहीं</u> था परन्तु मुख्यरूप से खतना किये हुए विश्वासियों के लिये था (देखें, प्रेरि. 10:47)। परमेश्वर ने रोमियों और अन्य जातियों ग्रहण कर लिया है, इसे उसने सामथ्र्य और निर्विवाद रूप से प्रकट किया (देखें, प्रेरि. 11:17)।

लूका सचमुच में प्रेरि. 15 की यरूशलेम की सभा का मंच तैयार करता है। पतरस और पौलुस दोनों हेलेनीवादी यहूदी विश्वासियों सहित आश्वस्त हो चुके थे कि परमेश्वर ने मसीह के माध्यम से अन्यजातियों को ग्रहण किया है।

▪ **''पवित्र आत्मा का दान''** पवित्र आत्मा की सेवकाई यूहन्ना 16:8-14 में स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है। एक प्रकार से, पापों के प्रति कायल होना, पवित्र आत्मा का वरदान है। स्वयं उद्धार भी पवित्र आत्मा का दान है। हृदय में पवित्र आत्मा का निवास भी पवित्र आत्मा का दान है। पवित्र आत्मा का नया युग आ गया था (देखें, प्रेरि. 2:38; 8:20; 11:17)। पवित्र आत्मा की सामर्थ और उपस्थिति के बिना कुछ भी प्रभावशाली और स्थाई नहीं होता है।

▪ **"उंडेला गया है"** उंडेला जाना पुराने नियम की बलिदान संबंधी विधि का हिस्सा था। पवित्र आत्मा के उंडेले जाने की भविष्यद्वाणी योएल 2:28 में की गई थी और पतरस द्वारा पिन्तेकुस्त के उपदेश में इसे उद्धरित किया गया (देखें, प्रेरि. 2:17,33)। परमेश्वर द्वारा स्थाई रूप से और पूर्णरूप से विश्वासियों को पवित्र आत्मा प्रदान किया गया।

10:47 यह भाषण में पूछा जाने वाले आलंकारिक प्रश्न है जिसका उत्तर "न" है। यह प्रश्न उन यहूदी विश्वासियों की सम्मत्ति जानने के लिए पूछा गया जो पतरस के साथ याफा से आए थे। देखें प्रेरि. 2:38 में विशेष विषय: बपतिस्मा

10:48 "उसने आज्ञा दी कि उन्हें यीशु मसीह के नाम में बपतिस्मा दिया जाए" ध्यान दें कि तुरन्त बपतिस्मा दिया गया। यह भी ध्यान दें कि बपतिस्मा यीशु के नाम में दिया गया जैसाकि प्रेररि. 2:38 और 19:5 में दिया गया। प्रेरितों के काम में बपतिस्में का फार्मूला है "यीशु के नाम में" जबकि मत्ती 28:19 में त्रिएक परमेश्वर के नाम में है। मूल बात फार्मूला नहीं वरन् प्रार्थी का हृदय है।

विचार विमर्श के लिये प्रश्न

यह अध्ययन में मार्गदर्शन करने की टीका है, इसका अर्थ है कि आप बाइबल की अपनी व्याख्या करने के स्वयं ही जिम्मेदार हैं। हम में से प्रत्येक को उसी ज्ञान के अनुसार चलना चाहिए जो हमारे पास है। व्याख्या करने के कार्य में आप आपकी बाइबल और पवित्र आत्मा केन्द्रिय स्थान रखते हैं। यह कार्य व्याख्याकार पर न छोड़ दें।

निम्नलिखित प्रश्न अपनी सहायता के लिए दिए गए हैं ताकि आप पुस्तक के गम्भीर विषयों पर पुनर्विचार कर सकें। वे आपके विचारों को आन्दोलित करने के लिए हैं, इनके अलावा और भी प्रश्न हो सकते हैं:

1. कुरनेलियुस का उद्धार क्यों महत्वपूर्ण है?
2. कुरनेलियुस का उद्धार किस प्रकार से पौलुस के उद्धार के समान है?
3. कुरनेलियुस के सम्बन्ध में पतरस के दर्शन और उसके द्वारा की गई टिप्पणी का धर्मवैज्ञानिक महत्व क्या है?
4. कुरनेलियुस के मित्रों का धर्म-परिवर्तन एक धर्मवैज्ञानिक समस्या क्यों थी?
5. पतरस के उपदेश की रूपरेखा बनाएँ और प्रेरितों के काम में पाई जाने वाली उद्धार की अन्य घटनाओं से उसकी तुलना करें? ये सब घटनाएँ भिन्न भिन्न हैं, तो भी एक समान हैं।

Copyright © 2013 Bible Lesson International

प्रेरितों के काम-11
बाइबल के विभिन्न आधुनिक अनुवादों में पैराग्राफ-विभाजन

UBS[4]	NKJV	NRSV	TEV	NJB
यरूशलेम की कलीसिया में पतरस का विवरण	पतरस द्वारा परमेश्वर के अनुग्रह का बचाव	पतरस का बचाव	यरूशलेम की कलीसिया में पतरस की रिपोर्ट	यरूशलेम: पतरस अपने आचरण को सही ठहराता है
11:1-18	11:1-18	11:1-18	11:1-4	11:1-10
			11:5-17	
				11:11-14
				11:15-17
			11:18	11:18
अन्ताकिया की कलीसिया	अन्ताकिया में बरनबास और शाऊल	अन्ताकिया में यूनानियों के मध्य सेवा	अन्ताकिया की कलीसिया	अन्ताकिया की कलीसिया की स्थापना
11:19-26	11:19-26	11:19-26	11:19-26	11:19-21
				11:22-24
				11:25-26
	यहूदियों को सहायता भेजना	यरूशलेम को सहायता सामग्री भेजना		यरूशलेम के प्रतिनिधि के रूप में बरनवास और शाऊल का भेजा जाना
11:27-30	11:27-30	11:27-30	11:27-30	11:27-30

पठन चक्र तीसरा (''अच्छे बाइबल अध्ययन का मार्गदर्शन'') **से**

पैराग्राफ स्तर पर मूल लेखक के अभिप्राय को समझना

यह अध्ययन करने की मार्गदर्शक टीका है, जिसका अर्थ है कि आप अपनी बाइबल-व्याख्या के स्वयं उत्तरदायी हैं। हम में से प्रत्येक को अपने ज्ञान व समझ के अनुसार कार्य करना चाहिए। व्याख्या-प्रक्रिया में आप, आपकी बाइबल तथा पवित्र आत्मा प्राथमिक स्थान रखते हैं। आपको यह टीका कार्य टीकाकार पर नहीं छोड़ना चाहिए।

पूरा अध्याय एक बैठक में पढ़ें। विषयों को पहचानें। अपने विषय-विभाजन की तुलना उपरोक्त पाँच आधुनिक अनुवादों के विषय-विभाजन से करें। पैराग्राफों का विभाजन प्रेरणा प्राप्त नहीं होता है, परन्तु यह मूल लेखक के अभिप्राय को समझने की कुंजी है, जो कि व्याख्या करने का आधार है। प्रत्येक पैराग्राफ में केवल एक ही मूल विषय होता है:

1. पहला पैराग्राफ
2. दूसरा पैराग्राफ
3. तीसरा पैराग्राफ
4. अन्य

शब्दों और वाक्यांशों का अध्ययन

NASB (नवीनतम) पाठ : प्रेरितों के काम 11:1-18
1फिर प्रेरितों और भाइयों ने जो यहूदिया में थे सुना, कि अन्यजातियों ने भी परमेश्वर का वचन मान
लिया है। 2इसलिए जब पतरस यरूशलेम में आया, तो खतना किए हुए लोग उससे वाद-विवाद करने
लगे, 3"तूने खतनारहित लोगों के यहां जाकर उनके साथ खाया।" 4तब पतरस ने उन्हें आरम्भ से
क्रमानुसार कह सुनायाः 5"मैं याफा नगर में प्रार्थना कर रहा था, और बेसुध होकर एक दर्शन देखा कि
एक पात्र, बड़ी चादर के समान चारों कोनों से लटकाया हुआ आकाश से उतरकर मेरे पास आया। 6जब
मैंने उस पर ध्यान किया, तो पृथ्वी के चैपाए और वनपशु और रेंगनेवाले जन्तु और आकाश के पक्षी
देखे। 7और यह शब्द भी सुना, 'हे पतरस उठ मार और खा।' 8मैंने कहा, 'नहीं प्रभु, नहीं, क्योंकि कोई
अपवित्र या अशुद्ध वस्तु मेरे मुंह में कभी नहीं गई।' 9इसके उत्तर में आकाश से दूसरी बार शब्द हुआ,
'जो कुछ परमेश्वर ने शुद्ध ठहराया है, उसे अशुद्ध मत कह।' 10तीन बार ऐसा ही हुआ; तब सब कुछ
फिर आकाश पर खींच लिया गया। 11और देखो, तुरन्त तीन मनुष्य जो कैसरिया से मेरे पास भेजे गए थे,
उस घर पर जिसमें हम थे, आ खड़े हुए। 12तब आत्मा ने मुझसे उनके साथ बेखटके हो लेने को कहा,
और ये छः भाई भी मेरे साथ हो लिए; और हम उस मनुष्य के घर में गए। 13और उसने बताया कि मैंने
एक स्वर्गदूत को अपने घर में खड़ा देखा, जिसने मुझसे कहा, 'याफा में मनुष्य भेजकर शमौन को जो
पतरस कहलाता है, बुलवा ले। 14वह तुमसे ऐसी बातें कहेगा, जिनके द्वारा तू और तेरा सारा घराना
उद्धार पाएगा।' 15जब मैं बातें करने लगा तो पवित्र आत्मा उन पर उसी रीति से उतरा, जिस रीति से
आरम्भ में हम पर उतरा था। 16तब मुझे प्रभु का वह वचन स्मरण आया; जो उसने कहा था, 'यूहन्ना ने तो
पानी से बपतिस्मा दिया, परन्तु तुम पवित्र आत्मा से बपतिस्मा पाओगे।' 17सो जब परमेश्वर ने उन्हें भी
वही दान दिया, जो हमें प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करने से मिला था; तो मैं कौन था जो परमेश्वर को
रोक सकता?" 18यह सुनकर, वे चुप रहे, और परमेश्वर की बड़ाई करके कहने लगे, "तब तो परमेश्वर ने
अन्यजातियों को भी जीवन के लिये मन फिराव का दान दिया है।"

11:1 यह पद संकेत करता है कि यरूशलेम की कलीसिया के अगुवे इस घटना पर आश्चर्यचकित थे। उन्हें धक्का सा लगा और वे पूर्णरूप से सहमत नहीं थे। उन्होंने महान आज्ञा (मत्ती 28:18-20; लूका 24:47; प्रेरि. 1:8) का अभिप्राय नहीं समझा था कि इसमें अन्यजातियों को शामिल करना है। प्रेरि. 8:14 में भी ऐसा ही हुआ जबकि सामरियों ने सुसमाचार ग्रहण किया था।

■ **"भाइयों"** यह आरम्भिक विश्वासियों के लिये प्रयुक्त किया जाने वाला शब्द है जो परिवार के रूप में हमारी सामूहिक पहचान पर बल देता है (देखें, प्रेरि. 1:15; 6:3; 9:30; 10:23; 11:1, 12,29; 12:17; 14:2; 15:1,3,22,23,32-33,40; 16:2, 40; 17:6,10,14; 18:18, 27; 21:7, 17; 22:5; 28:14-15)। मसीही होना, एक परिवार का हिस्सा होना है (देखें, कुरि. 12:13; गला. 2:28; कुलु. 3:11)।

■ **"पूरे यहूदिया में"** यह उस समय की कलीसिया की भौगोलिक सीमा को दर्शाता है। बहुत वर्ष बीत जाने के बाद भी कलीसिया अपनी सांस्कृतिक सीमा से बाहर नहीं निकल पाई थी। प्रेरि. 1:8 की यीशु द्वारा दी गई आज्ञा का पालन नहीं हुआ था। यह बिल्कुल उत्पत्ति 10-11 अध्याय के समानान्तर स्थिति थी।

■ **"अन्यजातियों ने भी परमेश्वर का वचन स्वीकार किया"** यह सुसमाचार को व्यक्तिगत स्तर पर ग्रहण करने की आवश्यकता को दर्शाता है (देखें, यूहन्ना 1:12; 3:16; रोमि. 10:9-13; इफि. 2:8-9)। वाक्यांश "परमेश्वर का वचन" का अर्थ "सुसमाचार" है। पुराने नियम की विश्वव्यापी प्रतिज्ञाएँ व भविष्यद्वाणियाँ पूरी होती जा रहीं हैं। देखें प्रेरि. 1:8 में विशेष और टिप्पणियाँ।

11:2 ''जब पतरस यरूशलेम में आया'' स्पष्ट रूप से अन्यजातियों के बीच सुसमाचार प्रचार की सेवा, प्रेरि. 15 में यरूशलेम की आरम्भिक कलीसिया के अगुवों के सामने बार बार उठने वाली समस्या थी। कलीसिया में शामिल होने वाले यहूदी मसीही अभी भी राष्ट्रवादी विचारधारा के थे (देखें प्रेरि. 15:5; 21:18-26)।

NASB	**''जो खतना किए हुए थे''**
NKJV	**''खतना किए हुओं में से''**
NRSV, NJB	**''खतना वाले विश्वासी''**
TEV	**''वे जो खतना वाले अन्यजातियों के पक्ष में थे''**
Willims	**''जो खतने का समर्थन करने में निपुण थे''**

यह वाक्यांश भिन्न-भिन्न अर्थों में अनेक बार प्रयुक्त हुआ हैः

1. प्रेरि. 10:45 में पतरस के छः यहूदी साथियों के लिए
2. यहाँ पर यरूशलेम की कलीसिया के विश्वासी समूह के लिए (देखें, प्रेरि. 11:18; 15:5)
3. गलातियों की पत्री में यह यरूशलेम की कलीसिया से आए विश्वासियों की ओर संकेत करता है (गला. 2:12), साथ ही यहूदी अविश्वासियों की ओर भी (प्रेरि. 1:7; 2:4; 5:10,12)।

इन विश्वासियों के विषय में उनकी विश्वासयोग्यता और उनकी हैसियत के सम्बन्ध में कोई सन्देह व तर्क-वितर्क नहीं पाया जाता है तो भी सुसमाचार के मूल स्वभाव ने उन सबके लिये द्वार खोल दिया जो मूसा की व्यवस्था से पूर्णतः अनभिज्ञ व पृथक थे (जैसाकि रोमियों 3:21-31 में लिखा है) यह ऐसा सन्देश है जिसे बहुत से आधुनिक विश्वासियों को सुनने व इस पर ध्यान देने की आवश्यकता है कि उद्धार कार्यों द्वारा नहीं परन्तु अनुग्रह से होता है।

NASB	**''विवाद खड़ा किया''**
NKJV	**''वाद-विवाद खड़ा किया''**
NRSV	**''आलोचना करने लगे''**
NJB	**''विरोध करने लगे''**

उपरोक्त वाक्यांश की व्याकरण संरचना भूतकाल के कार्य को दोहराए जाने अथवा कार्य के आरम्भ किए जाने का संकेत दे सकती है। ध्यान दीजिए कि इन परम्परावादी विश्वासियों ने पतरस के विरुद्ध वाद-विवाद खड़ा किया था, सुसमाचार के विरुद्ध नहीं। वे जान नहीं पाए कि यह तो सुसमाचार संबंधी विवाद है।

11:3 ''तू ने खतनारहित लोगों के यहाँ जाकर उनके साथ खाया'' स्पष्ट रूप से पतरस ऐसा अगुआ नहीं था जिसने चुनौतियों का सामना न किया हो। व्याकरण की दृष्टि से यह पद एक प्रश्न अथवा अभियोग कथन हो सकता है (एन आर एस वी) (NRSV)।

भोजन की संगति का मुद्दा यहूदी लोगों में बड़ा महत्वपूर्ण था। यह मुद्दा लैव्य. 11 अध्ययन में भोजन संबंधी नियमों के आधार पर हो सकता है। यहूदी लोग कनानी लोगों के किसी भी सामाजिक उत्सव एवं कार्यक्रमों में हिस्सा नहीं ले सकते थे। प्राचीन पूर्वी देशों में खाना-पीना एक प्रकार की संगति की वाचा स्थापित करना माना जाता था।

यीशु पर इसी प्रकार की परम्परा का उल्लंघन करने का दोष लगाया गया था (देखें, मत्ती 9:11; 11:19; लूका 5:30; 15:2)।

पतरस ने अपनी सेवकाई में ऐसे ही मुद्दों के साथ संघर्ष किया (देखें, गला. 2:12)। इन प्रथम विश्वासियों के सामने यह बड़ा गम्भीर मामला था। परम्पराओं, संस्कृति और व्यक्तिगत बातों पर दुबारा विचार करना या सोचना बड़ा कठिन होता है, परन्तु सुसमाचार माँग करता है कि हम पुनः विचार करें (देखें, 1 कुरि. 12:13; गला. 3:23-29; कुलु. 3:11) यहूदी बनाम अन्यजाति के पुराने नियम के नमूने के स्थान पर अब पूर्णरूप से विश्वासी बनाम अविश्वासी नमूना हो गया है।

11:4-18 पतरस, शमौन और कुरनेलियुस के घरों के अपने अनुभव (प्रेरि. 10) यरूशलेम के अगुवों को बताता है। यह पुनरावृत्ति (देखें, प्रेरि. 15 में यरूशलेम की सभा) लूका की अपनी शैली है जिसके द्वारा वह दर्शाता है कि मसीही कलीसिया के जीवन के लिए, सुसमाचार का समस्त संसार में प्रचार करने का मुद्दा कितना महत्वपूर्ण है। यह धर्मवैज्ञानिक अलगाव का आन्दोलन था।

11:4
NASB **''क्रमानुसार''**
NKJC **''आरम्भ से क्रमानुसार''**
NRSV **''एक एक करके''**
TEV **''सम्पूर्ण विवरण''**
NJB **''एक एक करके संपूर्ण विवरण''**

नए नियम में यूनानी शब्द कैथेक्सस (*kathexēs)* का प्रयोग केवल लूका द्वारा ही किया गया है (देखें लूका 1:3; 8:1; प्रेरि. 3:24; 11:4; 18:23)। इस शब्द में किसी बात को तर्क पूर्ण ढंग से समझाने अथवा क्रमानुसार बताने का अर्थ छिपा है। यह शब्द लूका के खोजबीन करने के तरीके पर सही बैठता है (देखें लूका 1:1-4)।

11:6 ''मैंने उस पर आँखें टिका दी'' प्रेरि. 1:10 में टिप्पणी देखें।

11:12
NASB **''बिना देर किए''**
NKJV **''बिना सन्देह''**
NRSV **''बिना बहाना बनाए''**
TEV **''बिना हिचकिचाए''**
NJB **''निःसंकोच लेकर''**

उपरोक्त पद के यूनानी मूलपाठों में काल के सम्बन्ध में अन्तर पाया जाता है। प्रेरि. 10:20 वर्तमान कालिन है, '' P^{74} अब उठ और नीचे जा (MSS P^{74}, א ^{2}, B) ।'' फिर यूनानी मूलपाठ $P^{45,}$ D तथा कुछ पुराने लैटिन और एक सीरियन मूलपाठ में इसे हटा दिया गया है। लेखकों ने अर्थात् शास्त्रियों ने सबको ठीक किया। नए नियम में अनेक जगह ऐसे थोड़े से अन्तर पाए जाते हैं परन्तु इससे वाक्यांश के अर्थ पर कोई फर्क नहीं पड़ता। UBS^4 इस पद को भूत कालिन क्रिया में लिखता है परन्तु ''सी'' वर्ग में रखता है (अर्थात् निर्णय लेना कठिन है)

11:14 ''उद्धार पाएगा'' कुरनेलियुस की भक्ति व धार्मिकता तथा उदारता ने उसे मसीही नहीं बनाया! वह, उसका परिवार तथा उसके मित्रगण मसीह पर विश्वास लाने से बचाए गये।

11:15 ''जब मैं बातें करने लगा, तो पवित्र आत्मा उन पर उसी रीति से उतरा जिस रीति से आरम्भ में हम पर उतरा था'' प्रेरितों के काम पुस्तक में पिन्तेकुस्त के अनभुव को दोहराए जाने के उद्देश्य को देखते हुए यह पद धर्म वैज्ञानिक दृष्टिकोण से बड़ा कठिन पद है। परमेश्वर ने यरूशलेम में उस आरम्भिक अनुभव को यह दर्शाने के लिये प्रयुक्त किया कि वह अन्य भौगोलिक और सांस्कृतिक जन जातियों को भी ग्रहण करता है (देखें, प्रेरि. 11:17) यह अनुभव केवल कुरनेलियुस ही के लिये नहीं था, पर निम्नलिखित के लिए भी था:

1. पतरस के लिए।
2. उन छः मनुष्यों के लिए जो याफा से आए थे।
3. यरूशलेम की कलीसिया के लिए।

11:16 "मुझे प्रभु का वह वचन स्मरण आया" यह यीशु के उन वचनों की ओर संकेत है जो उसने प्रेरि. 1:5 में कहे। यह प्रारम्भिक प्रेरितों की ईश्वरीय ज्ञान तक पहुंच के नमूने को दिखाता है।

1. वे यीशु को उद्धरित करते थे
2. यीशु के उदाहरण प्रयुक्त करते थे
3. वे पुराना नियम उद्धरित करते थे (देखें, मत्ती 3:11; प्रेरि. 1:5)

पतरस बताना चाहता है कि प्रभु ने स्वयं पहले ही से, ये सब बातें जो इस समय हो रही हैं, देख लिया था।

11:17 "यदि" यह प्रथम श्रेणी का सशर्त वाक्य है जिसे लेखक के दृष्टिकोण से या उसके साहित्यिक उद्देश्यों के लिए सत्य माना जाता है।

▪ **"परमेश्वर ने उन्हें वही उपहार दिए"** यह, प्रेरितों के काम 11:15 की तरह, पिन्तेकुस्त के अनुभव को संदर्भित करता है (प्रेरितों के काम 2:1-4; 8:15; 10:46; 15:8)। उद्धार, आत्मा की तरह, भी परमेश्वर की ओर से एक उपहार है (रोम. 3:24; 5:15-17: 6:23;इफी. 2:8)।

▪ **"विश्वास करने से मिला"** इसे स्वीकार किया जाना चाहिए (देखें, प्रेरि. 11:1; यूह. 1:12; इफि. 2:8-9)।

ध्यान दें कि प्रेरि. 11:17 में किस प्रकार परमेश्वर की सर्वोच्चता व मानव के प्रत्युत्तर को दर्शाया गया है। नये नियम में यीशु में विश्वास करने को भिन्न-भिन्न शब्दों द्वारा वर्णित किया गया है जैसे:

1. पर = (इपी)*epi*
2. में = (ईस)*eis*
3. में = (ईन)*en*
4. यीशु के विषय में कथन = (होती) *hoti*
5. बिना शब्दयोगी अव्यय सम्प्रदान का उदाहरण

ऐसा प्रतीत होता है कि यीशु में विश्वास *(pisteuō)* से संबंधित ऐसा उपयुक्त शब्द नहीं मिल रहा होगा जो उचित रूप अर्थ प्रकट कर सके इसीलिए उपरोक्त विभिन्न शब्दों का उपयोग किया गया। यीशु स्वागत करने और ग्रहण करने योग्य है। प्रेरि. 2:40 और 3:16 में टिप्पणी और विशेष विषय देखें।

11:18 "यह सुनकर वे चुप रहे, और परमेश्वर की बड़ाई की " पतरस की गवाही ने न केवल नकारात्मक वातावरण को शान्त कर दिया, पर साथ ही स्तुति भी उत्पन्न कर दी। इन अगुवों और विश्वासियों में अधिकांश मुलायम और सीखने का मन रखने वाले लोग थे। वे अपने विचारों व ईश्वरीय ज्ञान के साथ तालमेल बैठाने और परमेश्वर की अगुवाई में चलने के लिए तैयार हो गये।

▪ **"परमेश्वर ने अन्यजातियों को भी जीवन *के लिए* मन-फिराव का दान दिया है"** नए नियम में बहुत से ऐसे पाठांश पाए जाते हैं जो बताते हैं कि सर्वोच्च परमेश्वर ही मन फिराव और अनुग्रह का दाता है (प्रेरि. 5:31; 8:22; 2 तीमु 2:25)।

इस पद में जो धर्म वैज्ञानिक विवाद पाया जाता है वह है, "उद्धार से परमेश्वर की प्रधानता का सम्बन्ध तथा मानव जाति का प्रत्युत्तर।" अर्थात् जब परमेश्वर उद्धार देता है तो वह मानव जाति से कैसे प्रत्युत्तर की आशा करता है? क्या विश्वास करना और मन फिराना (देखें, मरकुस 1:15; प्रेरि. 3:16,19; 20:21) मानवजाति द्वारा दिया गया प्रत्युत्तर है अथवा यह परमेश्वर का दान है? पवित्रशास्त्र में बहुत से पद इस बात को दृढ़तापूर्वक बताते हैं कि विश्वास और मन फिराना परमेश्वर का दान है। (देखें, प्रेरि. 5:31; 11:8 रोमि. 2:4 तथा 2 तीमु. 2:25) जबकि हम विश्वास करते हैं कि सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र प्रेरणा-प्राप्त है (देखें, 2 तीमु. 3:16) तो हमें किसी भी धर्म वैज्ञानिक विवाद को पवित्र वचन के प्रकाश में ही जाँचना चाहिये तथा किसी भी अन्य बात को या संस्थागत तरीकों को नहीं मानना चाहिये, क्योंकि परमेश्वर सब बातों पर नियंत्रण रखता है और सर्वोच्च है। प्रेरितों के काम की पुस्तक बार बार इसी बात पर बल देती है। फिर भी उस परमेश्वर को अच्छा लगा कि अपनी सर्वोच्च रचना मानव जाति के साथ वाचा के द्वारा सम्बन्ध स्थापित करे। वह हमेशा पहल करता और एजेन्डा तैयार करता है, मानव जाति का कत्र्तव्य है कि

उसकी आज्ञा का पालन करे और उसके अधीन निरन्तर बनी रहे। इसमें किसी भी प्रकार का बहाना नहीं होना चाहिए। यह स्थाई सम्बन्ध होना चाहिए। देखें, प्रेरि. 2:47 में विशेष विषय ''वाचा'' तथा प्रेरि. 2:38 में देखें विशेष विषय ''मन फिराना''

प्रारम्भिक यरूशलेम के विश्वासी यहूदी भविष्य के बारे में क्या सोचा करते थे कि क्या होगा, इस विषय में माईकल मैगिल अपनी पुस्तक एन.टी. ट्रान्सलाई (पेज 435, # 24) (Michael Magill, *NT TransLine* (p. 435, #24) में अच्छा सारांश लिखते हैं जो इस प्रकार हैः-

> ''यहूदी विश्वासी जानते थे कि सुसमाचार सन्देश संसार के लिये है, परन्तु वह उद्धार अन्य जातियों के पास यहूदीवाद के बाहर से आना था और सारी आशीषों के साथ आना था जो इसमें निहित हैं, यह उनके लिए एक नया विचार था। वे कल्पना कर रहे थे कि सच्चे आत्मिक यहूदीवाद के द्वारा उसका एक भाग के रूप में संसार को उद्धार का सन्देश सुनाया जाएगा, वही यहूदीवाद राज्य करेगा और सारे लोग यहूदी बन जाएंगे और मसीह में
> जीवन पाएँगे, ताकि इस्राएल की संस्कृति महिमापूर्ण रीति से संसार की संस्कृति बन जाए।''

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 11:19-26
19सो जो लोग उस क्लेश के मारे जो स्तिफनुस के कारण पड़ा था, तितर-बितर हो गए थे, वे फिरते-फिरते फीनीके और साइप्रस और अन्ताकिया में पहुंचे; परन्तु यहूदियों को छोड़ किसी और को वचन न सुनाते थे। 20परन्तु उनमें से कितने साइप्रसवासी और कुरेनी थे, जो अन्ताकिया में आकर यूनानियों को भी प्रभु यीशु के सुसमाचार की बातें सुनाने लगे। 21और प्रभु का हाथ उन पर था, और बहुत लोग विश्वास करके प्रभु की ओर फिरे। 22जब उनकी चर्चा यरूशलेम की कलीसिया के सुनने में आई, तो उन्होंने बरनबास को अन्ताकिया भेजा। 23वह वहां पहुंचकर, और परमेश्वर के अनुग्रह को देखकर आनन्दित हुआ; और सबको उपदेश दिया कि तन मन लगाकर प्रभु से लिपटे रहो। 24क्योंकि वह एक भला मनुष्य था; और पवित्र आत्मा और विश्वास से परिपूर्ण थाः और और बहुत से लोग प्रभु में आ मिले। 25तब वह शाऊल को ढूंढ़ने के लिये तरसुस को चला गया। 26और जब वह उससे मिला तो उसे अन्ताकिया में लाया, और ऐसा हुआ कि वे एक वर्ष तक कलीसिया के साथ मिलते और बहुत लोगों को उपदेश देते रहे, और चेले सबसे पहले अन्ताकिया ही में मसीही कहलाए।

11:19-30 ये सारे पद ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और धर्मवैज्ञानिक प्रतीत होता है। ये पद प्रेरि. 8:4 से जुड़ते हैं।

11:19 ''जो लोग उस क्लेश के मारे तितर-बितर हो गए थे'' हमें प्रेरितों के काम पुस्तक में ऐसे सतावों के अनेक उदाहरण मिलते हैं (देखें, प्रेरि. 5:17 से आगे; 6:8-15; 8:1-3 9:1-2)। सुसमाचार में पाए जाने वाले मूल अर्थ को समझने की स्तिफनुस की क्षमता ने पलीस्तीन के यहूदी विश्वासियों पर दबाव डाला कि वे अपने विश्वास और सुसमाचार के उद्देश्य के प्रति पुनः मूल्यांकन कर सकें।

▪**''अन्ताकिया''** रोम और सिकन्दरिया के बाद अन्ताकिया रोमी-साम्राज्य का सबसे बड़ा तीसरा नगर था। यह सीरिया की राजधानी था और यहाँ पर बड़ी संख्या में यहूदी रहते थे। यह नगर विश्व-विद्यालयों और यौन-संबंधी पापाचार के मामले में प्रसिद्ध था। यह संपूर्ण विश्व में रथों की रेस के लिये भी प्रसिद्ध नगर था। बाद में यह विशाल मसीही केन्द्र बन गया।

▪**''यहूदियों को छोड़ किसी और को वचन न सुनाते थे''** इससे पता चलता है कि आरम्भिक कलीसिया नहीं जानती थी कि अन्यजातियों को सुसमाचार सुनाना सही है अथवा नहीं। संभवतः रूढ़िवादी व कट्टर लोग मत्ती 10:5 का हवाला देते होंगे ''गैर यहूदियों के पास न जाना'' जबकि दर्शन प्राप्त लोग मत्ती 28:18-20 अथवा प्रेरि. 1:8 का उद्धरण देते होंगे। यह धर्म वैज्ञानिक विवाद फिर से प्रेरि. 15 में उठा।

11:20 ''साइप्रसवादी और कुरैनी लोग'' ये यूनानी बोलने वाले यहूदी विश्वासी उन्हीं में से थे जिनका उल्लेख प्रेरि. 6-8 में पाया जाता है, और जिन्होंने यरूशलेम में मसीही सुसमाचार का प्रचार आरम्भ कर दिया था कि यह विश्वव्यापी है। बरनाबास भी इन्हीं में से था।

▪ **''यूनानियों को''** शब्द हेलेन (*Hellēn*) आमतौर पर अन्यजाति लोगों की ओर संकेत करता है (देखें, प्रेरि. 14:1; 16:1,3; 18:4; 19:10,17; 20:21; 21:28)। परन्तु प्रेरि. 17:4 में यह उन अन्यजातियों की ओर संकेत करता है जो आराधनालय में तो आते थे (परमेश्वर का भय मानते थे) परन्तु वहां के सदस्य नहीं थे (अर्थात् नए नए यहूदी बने थे)। यहां प्रश्न उठता है ''लूका किनकी ओर संकेत करता है जिन्हें सुसमाचार सुनाया गयाः-

1. प्रेरि. 6:1 व 9:29 के यूनानी-भाषी हेलेनीवादी (*Hellēnists*)
2. आराधनालय से संबंध रखने वाले अन्यजाति हेलेन (*Hellēn*)
3. पूर्ण रूप से अन्यजाति देखें, टी ई वी एन जे बी (cf. TEV, NJB)?

उपरोक्त समस्या के बीच हम कह सकते हैं कि उन्हें सुसमाचार सुनाया गया जो यूनानी बोलते थे, उनमें कुछ प्रवासी यहूदी थे और अन्य पूर्णरूप से अन्यजाति थे।

▪ **''यीशु के सुसमाचार को सुनाने लगे''** यह सन्देश पुराने नियम की व्यवस्था और रीति-विधियों के बारे में नहीं था बल्कि यीशु नासरी के बारे में था कि वही मसीह है (देखें, प्रेरि. 2:31 में विशेष विषय) इसी शब्द ''सुसमाचार सुनाने'' से हमें अंग्रेजी शब्द इवैन्जल ;मअंदहमसद्ध तथा इवैन्जलीज्म ;मअंदहमसपेउद्ध प्राप्त हुआ है।

11:21 ''प्रभु का हाथ उन पर था, और बहुत लोग विश्वास करके प्रभु की ओर फिरे'' सुसमाचार प्रचार के परिणाम स्वरूप यह एक और परमेश्वर के आन्दोलन की उन्नति का विवरण है। अन्ततः प्रेरि. 1:8 की भविष्यद्वाणी पूर्ण हो गई (देखें, प्रेरि. 11:24ब)।

''प्रभु का हाथ उन पर था'' यह पुराने नियम का एक मुहावरा है जो यहोवा (YHWH) परमेश्वर की उपस्थिति और सामथ्र्य को दर्शाता है ताकि इसके द्वारा मानव जाति में उसके उद्देश्य पूरे किये जा सकें। (2 सेम 3:12)

यह बड़ी रोचक बात है कि इस पद में पहली बार प्रयुक्त शब्द (*Kurious*) ''प्रभु'' यहोवा (YHWH) की ओर संकेत करता है (देखें सप्तूजैन्त (LXX) मे निर्गमन 3:14; 2 शमू. 3:12; यशा. 59:1, तथा प्रेरि. 1:6 में विशेष विषय)। परन्तु इस पद के बाद के भाग में इस शब्द का प्रयोग यीशु मसीह के लिये किया गया है। यह नए नियम के लेखकों की यीशु के ईश्वरत्व को दर्शाने की सामान्य शैली है। उन पुराने नियम के हवालों पर भी ध्यान दें जो पौलुस ने प्रयुक्त किए और उन्हें यीशु पर लागू किया (देखें, रोमियों 10:13; 1 कुरि. 2:16; फिलि. 2:10-11)।

''प्रभु का हाथ'' पुराने नियम का मानवता-रोपण का एक मुहावरा है (देखें, प्रेरि. 2:33 में विशेष विषय)। यहोवा (YHWH)अनन्त आत्मा है जो सृष्टि के आरम्भ से उपस्थित है। परमेश्वर के पास दृश्य शरीर नहीं है। मनुष्य के पास जितना भी शब्द भण्डार है उसे वह अपनी ही भाषा में व्यक्त कर सकता है। हमें स्मरण रखना चाहिए कि पतित मनुष्य की भाषा की सीमा होती है यह भाषा आत्मिक संसार की बातों को रूपकों, दृष्टान्तों, तुलना करने और खण्डन करने के द्वारा व्यक्त करती है। यह सच्चाई तो प्रकट करती है परन्तु संक्षिप्त रूप में। परमेश्वर हमारी योग्यता और ज्ञान से कहीं अधिक बढ़कर है। वह वास्तव में हम से बातें करता है पर इस तरीके से नहीं कि हम थक जाएँ। हम परमेश्वर के प्रकाशन के रूप में बाइबल पर भरोसा रख सकते हैं परन्तु हमें स्वीकार करना चाहिए कि वह फिर भी अति महान परमेश्वर है। मानवीय भाषा उसे व्यक्त तो करती है परन्तु सीमित है।

विशेष विषयः हाथ (यहेजकेल की पुस्तक द्वारा व्याख्या)

शब्द "हाथ" के (BDB388, KB 386) बहुत से अर्थ व उपयोग हैं।

1. शब्दशः (जैसे मनुष्य का हाथ)
   a. संपूर्ण व्यक्तित्व का प्रतीक, यहेज. 3:18; 18:8,17; 33;6,8
   b. मानवीय दुर्बलता का प्रतीक, यहेज. 7:17,27; 21:7; 22:14
   c. विदेशी शत्रु का प्रतीक, यहेज. 7:21; 11:9; 16:39; 21:31; 23:9,28; 28:10; 30:12; 34:27; 38:12; 39:23

d. अक्षरशः हाथ, यहेज. 8:11; 12:7; 16:11; 37:17,19,20;
e. झूठे अगुवे की शक्ति का प्रतीक, यहेज. 13:21-23; 34:10
f. देश या जाति का प्रतीक, यहेज. 23:31,37,42,45; 25:14; 27:15; 28:9; 30:10,22,24-25; 31:11; 39:3

2. ईश्वरत्व का मानवीकरण
   a. यहोवा(YHWH) द्वारा प्रकाशन दिया जाना, यहेज. 1:3;3:14,22;8:1;33:22;37:1;40:1(2:9 अन्य काल्पनिक प्रकाशन है-हाथ में स्क्रोल)
   b. न्याय करने में यहोवा (YHWH) की सामर्थ, यहेज.6:14; 13:9; 14:9,13; 16:27; 20:33; 25:7,13,16; 35:3; 39:21
   c. स्वयं यहोवा (YHWH) (उसकी व्यक्तिगत उपस्थिति), यहेज. 20:22
   d. यहोवा (YHWH) की छुड़ा लेने के सामर्थ,यहेज.20:34 (मुख्य उपयोग निर्गमन 3:20; 4:17; 6:1; 7:19; 13:3)।
3. करूबो का मानवीकरण, यहेज. 1:8; 8:3; 10:7-8,12,21
4. विनाश करने वाले स्वर्गदूतो का मानवीकरण 9:1-2; 21:11
5. प्रतिज्ञा अथवा शपथ का प्रतीक, 17:18; 20:5 (दोबार), 6,15,23,28; 36:7; 44:12; 47:14
6. आनंद का प्रतीक, 25:6
7. स्वर्गदूत का मानवीकरण, 40:3,5; 47:3

Copyright © 2014 Bible Lessons International

11:22 "बरनबास" प्रेरितों के काम पुस्तक में बरनबास एक मुख्य व्यक्तित्व है (देखें, प्रेरि. 4:36-37; 9:27)। उसके नाम का अर्थ है "शान्ति का पुत्र" अर्थात् प्रोत्साहन देने वाला जिसे हम प्रेरि. 11:23 मे प्रोत्साहन देते हुए देख सकते हैं। यरूशलेम की कलीसिया अभी भी बेचैन थी क्योंकि उसमे अन्यजातियों ने प्रवेश कर लिया था। प्रेरि. 4:36 में टिप्पणी देखें।

11:23 वह वहाँ पहुंचकर और परमेश्वर के अनुग्रह को देखकर आनन्दित हुआ यह बड़ी रोचक बात है कि जब उसने परमेश्वर के अनुग्रह को क्रियाशील देखा तो सबको प्रोत्साहित किया कि विश्वास में स्थिर रहें (प्रेरि. 14:22)। यह स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि परमेश्वर के लोगों को सतर्क रहना चाहिए धैर्यपूर्वक उद्देश्यपूर्ण जीवन यापन कर सकें (प्रेरि. 14:22 में टिप्पणी देखें) अन्यजातियों की अनैतिक संस्कृति के प्रति कलीसिया तथा यहूदियों को चिन्ता थी। सुसमाचार न केवल उद्धार का मुफ्त उपहार ही है परन्तु साथ ही भक्तिपूर्ण जीवन जीने की बुलाहट भी है (देखें मत्ती 5:48; रोमि. 8:28-29; 2 कुरि. 3:18; गला. 4:19; इफि. 4:1; 1 थिस्स. 3:13; 4:3; 1 पत. 1:5)। परमेश्वर ऐसे लोग चाहता है जो उसके गुण प्रकट कर सकें। मसीही धर्म केवल मरने के बाद स्वर्ग प्राप्ति ही नहीं है, परन्तु यीशु के समान बनना है ताकि अन्य लोग मसीह पर विश्वास कर सकें।

11:24 "वह एक भला मनुष्य था, और पवित्र आत्मा और विश्वास से परिपूर्ण था" यह विवरण बहुत कुछ उस विवरण से मिलता जुलता है जो प्रेरि. 6:3,5 में (सात सुनाम) यूनानी बोलने वाले यहूदी विश्वासियों का किया गया है। प्रारम्भिक कलीसिया ऐसे लोगों से भरी हुई थी। काश कि यही बात आज हमारी संस्कृति और हमारी कलीसिया के विषय में भी सत्य हो।

11:25 "तब वह शाऊल को ढूँढ़ने के लिये तरसुस को चला गया" यह मिस्र की भाषा के पटेर पत्रों में पाया जाता, परन्तु सप्तूजैन्त में नहीं पाया जाता, इसका अर्थ है कि शाऊल को ढूँढ़ निकालना सरल नहीं था। नए नियम में केवल लूका ही ने यह शब्द इस्तेमाल किया है (देखें, लूका 2:44, 45; प्रेरि. 11:25)। गलातियों 1:21 में स्पष्ट रूप से इन गुप्त वर्षों का उल्लेख किया गया है। सही सीमा बताना अनिश्चित है पर अनुमान है कि यह कम से कम दस वर्ष का समय होगा।

11:26 ''कलीसिया'' देखें प्रेरि. 5:11 में विशेष विषय।

■ **''वह उसे अन्ताकिया लाया...चेले सबसे पहले अन्ताकिया ही में मसीही कहलाए''** प्रारम्भ में ''मसीही'' शब्द विश्वासियों को दिया गया अपमानजनक शब्द था। नए नियम में यह असामान्य शब्द है। जो शब्द पंदवे से खत्म होता है, उस शब्द के समर्थक अथवा अनुयायी उसी से जाने जाते हैं जैसे हेरोदेस व उसका परिवार अथवा उसके समर्थक ''हेरोदियन'' कहलाते हैं, (देखें, मरकुस 3:6; 12:13; मत्ती 22:16)। हेलेनेवादी वातावरण में इस शब्द मसीह अथवा क्राईस्ट का उपयोग दर्शाता है कि किस प्रकार से यीशु के अनुयायियों को मसीही अथवा क्रिश्चियन कहा जाने लगा।

इस हेलेनी वातावरण में यह भी हो सकता है कि रोमी सरकारी अधिकारियों ने यहूदियों और विश्वाासियों के बीच अन्तर करने के लिए विश्वासियों को मसीही नाम दिया हो।

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 11:27-30
[27]उन्हीं दिनों में कई भविष्यद्वक्ता यरूशलेम से अन्ताकिया में आए। [28]उनमें से अगबुस नामक एक ने खड़े होकर आत्मा की प्रेरणा से यह बताया कि सारे जगत में बड़ा अकाल पड़ेगा, और वह अकाल क्लौदियुस के समय में पड़ा। [29]तब चेलों ने निर्णय किया कि हर एक अपनी अपनी पूंजी के अनुसार यहूदिया में रहनेवाले भाइयों की सेवा के लिये कुछ भेजे। [30]और उन्होंने ऐसा ही किया; और बरनबास और शाऊल के हाथ प्राचीनों के पास कुछ भेज दिया।

11:27 ''भविष्यद्वक्ता'' नये नियम में भविष्यद्वक्ताओं का उल्लेख कई बार किया गया है (देखें, प्रेरि. 13:1; 15:32; 21:10; 1 कुरि. 12:28; 14:1-5, 29-33; इफि. 2:20; 4:10)। यह सदैव निश्चित नहीं है कि इन लोगों का मुख्य कार्य भविष्यद्वाणी करना अथवा भविष्य की बातें बताना है अथवा नहीं, जैसाकि यहां पर भविष्यद्वाणी है और जैसा 1 कुरि. 14 और प्रेरि. 2:17 में है (देखें, प्रेरि. 13:6; 15:32; 1 कुरि. 12:28; 14:1-5, 29-33; इफि. 2:20; 4:10)।

पुराने नियम में भविष्यद्वक्ताओं को परमेश्वर के अधिवक्ता के रूप में देखा गया है जो परमेश्वर के प्रकाशन की बातें बताया करते थे; परन्तु नए नियम में भविष्यद्वक्ता परमेश्वर के प्रकाशन के मध्यस्थ नहीं हैं। प्रकाशन नए नियम के लेखकों तक सुरक्षित है, उनमें से अधिकांश प्रेरित थे अथवा प्रेरितों के संपर्क में थे जैसे मरकुस और लूका। नए नियम का भविष्यद्वाणी का वरदान संभवतः सीमित होगा। प्रेरणा-प्राप्त प्रकाशन रुक गया था (देखें यहूदा 3, 20)।

विशेष विषयः नए नियम की नबूवत

I. नए नियम के नबूवत पुराने नियम की भविष्यवाणियों की तरह नहीं है (BDB 611, KB 661: देखें विशेष विषय : पुराने नियम की भविष्यवाणी (Prophecy [OT]), इसमें रब्बियों की तरह परमेश्वर यहोवा (YHWH) की ओर से प्रेरणा-प्राप्त प्रकाशनों को प्राप्त करना और उन्हें लेखबद्ध करना पाया जाता है (देखें, प्रेरि. 3:18,21; रोमि. 16:26)।पवित्रशास्त्र केवल नबी ही लिख सकता है।
   A. मूसा नबी कहलाता था (व्यव. वि. 18:15-21)
   B. ऐतिहासिक पुस्तकें (यहोशू-राजाओं (रूत को छोड़कर) "पहले के नबी" कहलाते थे देंखे, प्रेरि. 3:24)
   C. नबियों ने परमेश्वर की ओर से संदेश प्राप्ति के स्रोत के रूप में महायाजकों का स्थान ले लिया (जैसे यशायाह-मलाकी)
   D. हीब्रू कानोन का दूसरा खण्ड "नबी" है (मत्ती 5:17; 22:40; लूका 16:16; 24:25,27; रोमि. 3:21)।

II. नए नियम में अवधारणा (Concept) भिन्न भिन्न प्रकार से प्रयुक्त हुई है :

A. पुराने नियम के नबियों और उनके संदेश के संदर्भ में (मत्ती 2:23; 5:12; 11:13; 13:14; रोमि. 1:2)
B. सामूहिक रूप से नहीं बल्कि व्यक्तिगत रूप से संदेश के संदर्भ में (अर्थात पुराने नियम के नबी विशेषकर इस्राएल से बोले)
C. यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले (मत्ती 11:9; 14:5; 21:26; लूका 1:76) तथा यीशु के परमेश्वर के राज्य की घोषणा करने वाले के संदर्भ में (मत्ती 13:57; 21:11,46; लूका 4:24; 7:16; 13:33; 24:19)। यीशु ने स्वयं को नबियों से बड़ा भी कहा (मत्ती 11:9; 12:41; लूका 7:26)।
D. नए नियम में अन्य नबी :
    1. लूका रचित सुसमाचार में यीशु का जीवन चरित्र (मरियम की यादों के अनुसार)
        a. इलिशिबा (लूका 1:41-42)
        b. जकरयाह (लूका 1:67-79)
        c. शमौन (लूका 2:25-35)
        d. हन्ना (लूका 2:36)
    2. कैफा महायाजक की हास्यपूर्ण भविष्यवाणी (यूह. 11:51)
E. जो सुसमाचार प्रचार करता है, उसके संदर्भ में (सूचि में शामिल प्रचार का वरदान) (1 कुरि. 12:28-29; इफि. 4:11)
F. कलीसिया में निरन्तर प्राप्त होने वाले वरदान के संदर्भ में (देखें, मत्ती 23:34; प्रेरि. 13:1; 15:32; रोमि. 12:6; 1 कुरि. 12:10,28-29; 13:2; इफि. 4:11)। कभी-कभी यह स्त्रियों की ओर भी संकेत कर सकता है, (लूका 2:36; प्रेरि. 2:17; 21:9; 1 कुरि. 11:4-5)।
G. प्रकाशनात्मक पुस्तक प्रकाशितवाक्य के कुछ भागों के संदर्भ में (प्रका. 1:3; 22:7,10,18,19)।

III.नए नियम के नबी :

A. नए नियम के नबी उस प्रकार का प्रकाशनात्मक संदेश प्रस्तुत नहीं करते जैसे पुराने नियम के नबी करते थे (अर्थात पवित्रशास्त्र का)। यह कथन संभव इसलिए हो सकता है क्योंकि वे "विश्वास" शब्द का प्रयोग करते थे (जो संपूर्ण सुसमाचार को दर्शाता है) और इन पदों में प्रयुक्त हुआ, प्रेरि. 6:7; 13:8; 14:22; गला. 1:23; 3:23; 6:10; फिलि. 1:27; यहूदा 3,20.

यह अवधारणा उस सम्पूर्ण वाक्यांश से स्पष्ट है जो यहूदा 3 पद में प्रयुक्त किया गया है, "तुम उस विश्वास के लिए यत्नपूर्वक संघर्ष करते रहो जो पवित्र लोगों को एक ही बार सदा के लिए सौंपा गया था।" यह विश्वास जो सदा के लिए सौंपा गया और सच्चाईयों की ओर संकेत करता है जो मसीही धर्म के शिक्षाएँ व सिद्धान्त हैं। इसी बात के आधार पर नए नियम की पुस्तकें ही प्रकाशन प्राप्त मानी गई और शेष सभी लेखों को अप्रमाणित माना गया (देखें, विशेष विषय : प्रेरणा। नए नियम में अनेक संदिग्ध, अनिश्चित और अस्पष्ट विषय पाए जाते हैं (देखें विशेष विषय : पूर्वीय साहित्य [बाइबल संबंधी विरोधाभाष]), परन्तु विश्वासी लोग दृढ़तापूर्वक विश्वास के साथ यह मानते हैं कि नए नियम में सब आवश्यक बातें स्पष्ट पाई जाती हैं जो विश्वास और धर्म से संबंध रखती हैं। इसी अवधारणा का वर्णन "प्रकाशनात्मक त्रिकोण" में किया गया है, :

1. परमेश्वर ने इतिहास में स्वयं का प्रकाशन दिया है (Revelation)।
2. उसने कुछ मानवीय लेखक चुने कि वे उसके कार्यों (प्रेरणा) को लिखें व समझाएँ।
3. उसने अपना पवित्र आत्मा दिया कि मनुष्यों के मन व हृदय खोले ताकि वे इन लेखों को समझ सकें व उद्धार पाएं और प्रभावशाली मसीही जीवन व्यतीत करें प्रकाशन। (देखें विशेष विषय : प्रकाशन, इन बातों की खास बात यह है कि प्रेरणा केवल पवित्रशास्त्र के लेखकों तक ही सीमित है।

   नए नियम के बाद आगे कोई भी अधिकारयुक्त लेख, दर्शन अथवा प्रकाशन नहीं

है। कसौटी बन्द हो गया है। हमारे पास सम्पूर्ण सत्य है जिसकी हमें आवश्यकता थी कि परमेश्वर के प्रति प्रत्युत्तर दे सकें। यह सच्चाई बाइबल के लेखकों की सहमति बनाम विश्वासयोग्य, भक्त विश्वासियों की असहमति में अच्छी तरह दिखाई देती है। बाइबिल के लेखकों का जो दिव्य स्तर है, उसके बराबर किसी भी आधुनिक लेखक अथवा वक्ता का नहीं है।

B. कुछ हद तक नए नियम के नबी, पुराने नियम के नबियों के समान हैं :
   1. भविष्य की घटनाओं की भविष्यवाणी (देखें, पौलुस, प्रेरि. 27:22; अगबुस, प्रेरि. 11:27-28; 21:10-11; अन्य गुमनाम नबी, प्रेरि. 20:23)
   2. दण्ड की घोषणा (देखें, पौलुस, प्रेरि. 13:11; 28:25-28)
   3. प्रतीकात्मक कार्य जो स्पष्ट रूप से घटना को दर्शाता है (अगबुस, प्रेरि. 21:11)

C. नए नियम के नबियों ने कभी-कभी सुसमाचार के सत्य का प्रचार भविष्यवाणी की तरह किया (देखें, प्रेरि. 11:27-28; 20:23; 21:10-11), पर उनका मुख्य ध्यान इस पर नहीं था। 1 कुरिन्थियों की पत्री में भविष्यवाणी करना मुख्यरूप से सुसमाचार सुनाने से संबंधित था (देखें, 1 कुरि. 14:24,39)।

D. वे नई परिस्थितियों, संस्कृतियों अथवा अपने समय में परमेश्वर की समकालीन सच्चाईयों का प्रकाशन करने और उन्हें लागू करने में, पवित्र आत्मा के समकालीन माध्यम थे (देखें 1 कुरि. 14:3)।

E. वे पौलुस की आरंभिक कलीसियाओं में क्रियाशील थे : (देखें, 1 कुरि. 11:4-5; 12:28,29; 13:2,8,9; 14:1,3,4,5,6,22,24,29,31,37,39; इफि. 2:20; 3:5; 4:11; 1 थिस्स. 5:20) और उनका उल्लेख डिडखे (Didache) में (जो प्रथम शताब्दी के अंत में और दूसरी शताब्दी के आरंभ में लिखी गई थी) तथा उत्तरी अफ्रीका के मोन्टानीवाद (Montanism) में हुआ है जो दूसरी और तीसरी शताब्दी में पाया जाता था।

IV. क्या नए नियम के वरदान बंद हो गए हैं?

A. इस प्रश्न का जवाब देना बड़ा कठिन है, पर इस प्रश्न से वरदान के उद्देश्यों की परिभाषा करने में सहायता मिलती है। क्या वरदानों का उद्देश्य आरम्भिक सुसमाचार प्रचार की पुष्टि करना है अथवा यह निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है कि कलीसिया स्वयं अपनी और खोए हुए संसार की सेवा करे?

B. इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए क्या किसी को कलीसिया का इतिहास देखना चाहिए या नया नियम देखना चाहिए? नए नियम में ऐसा कोई संकेत नहीं पाया जाता है कि आत्मिक वरदान अस्थाई थे। जो व्यक्ति इस प्रश्न के समाधान में 1 कुरि. 13:8-13 का उपयोग करने का प्रयत्न करता है, वह इस पाठांश के मूल अधिकारिक उद्देश्य का दुरुपयोग करता है, क्योंकि यह पाठांश बताता है कि विश्वास, आशा, प्रेम तीनों स्थाई हैं, परन्तु इनमें सबसे बड़ा प्रेम है।

C. मैं इस विषय में यह कहना चाहता हूं कि एक विश्वासी को दृढ़तापूर्वक स्वीकार करना चाहिए कि आत्मिक वरदान अभी भी जारी हैं, क्योंकि अधिकारयुक्त नए नियम की यही शिक्षा है, न कि कलीसियाई इतिहास की। परन्तु फिर भी मैं मानता हूं कि संस्कृति व्याख्या पर प्रभाव डालती है। क्योंकि नए नियम के कुछ जाने-माने और प्रचलित पाठांश अब लागू नहीं है जैसे, पवित्र चुम्बन, स्त्रियों द्वारा सिर ढका जाना, घरों में कलीसियाएँ सभा इत्यादि। यदि पाठांश पर संस्कृति का प्रभाव पड़ सकता है तो कलीसियाई इतिहास का प्रभाव क्यों नहीं पड़ सकता?

D. अतः कहा जा सकता है कि यह मात्र एक प्रश्न है जिसका उपयुक्त उत्तर नहीं दिया जा सकता है। कुछ विश्वासी कह सकते हैं "वरदान" बन्द हो गए हैं और कुछ कह सकते हैं कि बन्द नहीं हुए हैं। ऐसी विवादास्पद स्थिति में मूल बात यह है कि विश्वासी का हृदय क्या कहता है? नया नियम इस विषय में सांस्कृतिक और अस्पष्ट है। समस्या यह निर्णय करने में आती है कि कौन सा पाठांश संस्कृति/कलीसियाई इतिहास से प्रभावित है तथा कौन सा पाठांश प्रभावित नहीं है तथा कौन सा

प्रत्येक काल और प्रत्येक संस्कृति के लिए है (देखें, फी और स्टुअर्ड की पुस्तक, "हाओ टू रीड द बाइबल फार ऑल इट्स वर्थ", पेज 14-19, 69-77) (cf. Fee and Stuart's *How to Read the Bible for All Its Worth*, pp. 14-19 and 69-77) रोमि. 14:1-15:13 तथा 1 कुरि. 8-10 अध्यायों में स्वतन्त्रता और उत्तरदायित्वों से संबंधित महत्वपूर्ण वाद-विवाद पाए जाते हैं। हमें उन प्रश्नों का निम्न दो प्रकार से प्रतियुत्तर देना चाहिए :

1. प्रत्येक विश्वासी को अपने विश्वास और समझ के अनुसार चलना चाहिए। परमेश्वर हमारे मनों और उद्देश्यों को देखता है।
2. प्रत्येक विश्वासी को अन्य विश्वासियों को उनके विश्वास और समझ के अनुसार चलने की अनुमति प्रदान करना चाहिए। बाइबल की सीमाओं के अन्तर्गत उन्हें सहनशील होना चाहिए। परमेश्वर चाहता है कि हम दूसरों से वैसा ही प्रेम रखें, जैसा परमेश्वर हम से प्रेम करता है।

E. संपूर्ण विषय का सारांश यह है कि मसीही धर्म विश्वास और प्रेम का जीवन है न कि धार्मिक शिक्षाओं को पूर्ण करने का जीवन। परमेश्वर के साथ हमारा सही सम्बन्ध दूसरों के साथ हमारे सम्बन्धों को प्रभावित करता है; हमारे धार्मिक विश्वास और हमारे ज्ञान से बढ़कर यही बात महत्व रखती है।

Copyright © 2014 Bible Lessons International

11:28 "सारे जगत में बड़ा अकाल... क्लौदियुस" यह भौगोलिक वाक्यांश रोमी-साम्राज्य की ओर संकेत करता है (देखें, प्रेरि. 17:6, 31; 19:27; 24:5)। क्लौदियुस ने सन् 41-54 ई. तक राज्य किया। वह कैलीगुला के बाद तथा नीरो सम्राट से पहले गद्दी पर बैठा था। उसके शासनकाल में अनेक बार अकाल पड़े थे देखें, सूटोनियस, क्लोदियुस का जीवन चरित्र 18:2। (cf. Suetonius, *Life of Caludius* 18:2) योसेपस, एन्टीक्वीटि 20.5.2. (*Antiq.* 20.5.2) के अनुसार पलीस्तीन का सबसे भयंकर अकाल सन् 44-48 के बीच पड़ा।

11:29 "किसी भी शिष्य के पास जिस अनुपात में साधन थे, उनमें से प्रत्येक ने एकांत भेजने के लिए दृढ़ संकल्प किया" यह बहुत बड़ा और प्रशंसनीय कदम था जो गैरयहूदी कलीसियाओं ने अपनी सहयोगी यरूशलेम की कलीसिया के साथ अपनी संगीत बढ़ाने के उद्देश्य से उठाया। पौलुस द्वारा स्थापित कलीसियाओं में यह एक उदाहरण बन गया (देखें, प्रेरि. 24:17; रोमियों 15:2-28; 1 कुरि. 16:1-4; 2 कुरि. 8-9; गला. 2:10)।

11:30 "प्राचीनों के पास कुछ भेज " यहाँ पर पहली बार कलीसिया के "प्राचीनों" का उल्लेख किया गया है (देखें, प्रेरि. 14:23; 15:2, 4, 6, 22, 23; 16:4; 20:17; 21:18)। शब्द "प्राचीन", इन सब शब्दों का समानार्थी शब्द है-प्रैसबितर (*presbuteros*), बिशप, और पास्टर (देखें, प्रेरि. 20:17,28 तथा तीतुस 1:5,7)। शब्द प्राचीन (प्रैसबितर) की पुराने नियम की जनजातीय पृष्ठभूमि है, जबकि बिशप शब्द की पृष्ठभूमि यूनानी नगर के सरकारी अधिकारी की है। यह स्पष्ट है कि यरूशलेम की कलीसिया के विशिष्ठ अगुवों (*episkopos*) की ओर ये शब्द संकेत करते हैं (देखें, प्रेरि. 15:2,6,22,23)। नए नियम में अन्य यहूदी पुस्तकों में जैसे याकूब और इब्रानियों में, भी इन्हीं शब्दों का प्रयोग पाया जाता है परन्तु पास्टर शब्द नहीं पाया जाता।

▪ **"बरनबास और शाऊल के हाथ"** इस विषय में मतभेद पाया जाता है कि क्या गलातियों 2:2,10 में लिखित वर्णन इस यात्रा की ओर संकेत करता है या प्रेरि. 15 की सभा में जाने की यात्रा का वर्णन करता है। पौलुस के प्रारम्भिक जीवन और सेवकाई के विषय में कम जानकारी उपलब्ध है।

विचार विमर्श के लिये प्रश्न

यह अध्ययन में मार्गदर्शन करने की टीका है, इसका अर्थ है कि आप बाइबल की अपनी व्याख्या करने के स्वयं ही जिम्मेदार हैं। हम में से प्रत्येक को उसी ज्ञान के अनुसार चलना चाहिए जो हमारे पास है। व्याख्या करने के कार्य में आप आपकी बाइबल और पवित्र आत्मा केन्द्रिय स्थान रखते हैं। यह कार्य व्याख्याकार पर न छोड़ दें।

निम्नलिखित प्रश्न अपनी सहायता के लिए दिए गए है ताकि आप पुस्तक के गम्भीर विषयों पर पुनर्विचार कर सकें। वे आपके विचारों को आन्दोलित करने के लिए हैं, इनके अलावा और भी प्रश्न हो सकते हैं:ं।

1. अन्यजातियों द्वारा मसीह के ग्रहण किया जाना क्यों धर्म वैज्ञानिक विवाद का विषय है?
2. क्या मन-फिराव परमेश्वर का दान है (प्रेरि. 11:18) अथवा वाचा की शर्त है (मरकुस 1:15; प्रेरि. 3:16,19; 20:21)?
3. बरनबास शाऊल को ढूँढ़ने क्यों गया?

Copyright © 2013 Bible Lesson International

प्रेरितों के काम-12
बाइबल के विभिन्न आधुनिक अनुवादों में पैराग्राफ-विभाजन

UBS[4]	NKJV	NRSV	TEV	NJB
याकूब की हत्या और पतरस बन्दी	कलीसिया पर हेरोदेस का अत्याचार	हेरोदेस अग्रिप्पा द्वारा सताव	अधिक सताव	पतरस का बन्दी होना और आश्चर्यपूर्ण छुटकारा
12:1-5	12:1-5	12:1-5	12:1-5	12:1-5
पतरस का बन्दीगृह से छुटकारा	पतरस का बन्दीगृह से छुटना		बन्दीगृह से पतरस की स्वतन्त्रता	
12:6-17	12:6-19	12:6-11	12:6-10	12:6-11
			12:11	
		12:12-17	12:12-15	12:12-17
			12:16-17	
12:18-19		12:18-19	12:18-19a	12:18-19
			12:19b	
हेरोदस की मृत्यु	हेरोदेस की हिंसक मृत्यु	हेरोदेस अग्रिप्पा की मृत्यु	हेरोदेस की मृत्यु	सताने वाले की मृत्यु
12:20-23	12:20-24	12:20-23	12:20	12:20-23
			12:21-23	
	बरनबास और शाऊल का नियुक्त किया जाना	बरनाबास और शाऊल साइप्रस में		बरनाबास और शाऊन का अन्ताकिया लौटना
		(12:24-13:12)		
12:24-25		12:24-25	12:24	12:24
	12:25-13:3		12:25	12:25

पठन चक्र तीसरा (**"अच्छे बाइबल अध्ययन का मार्गदर्शन" से**)

पैराग्राफ स्तर पर मूल लेखक के अभिप्राय को समझना

यह अध्ययन करने की मार्गदर्शक टीका है, जिसका अर्थ है कि आप अपनी बाइबल-व्याख्या के स्वयं उत्तरदायी हैं। हम में से प्रत्येक को अपने ज्ञान व समझ के अनुसार कार्य करना चाहिए। व्याख्या-प्रक्रिया में आप, आपकी बाइबल तथा पवित्र आत्मा प्राथमिक स्थान रखते हैं। आपको यह टीका कार्य टीकाकार पर नहीं छोड़ना चाहिए।

पूरा अध्याय एक बैठक में पढ़ें। विषयों को पहचानें। अपने विषय-विभाजन की तुलना उपरोक्त पाँच आधुनिक अनुवादों के विषय-विभाजन से करें। पैराग्राफों का विभाजन प्रेरणा प्राप्त नहीं होता है, परन्तु यह मूल लेखक के अभिप्राय को समझने की कुंजी है, जो कि व्याख्या करने का आधार है। प्रत्येक पैराग्राफ में केवल एक ही मूल विषय होता है:

1. पहला पैराग्राफ
2. दूसरा पैराग्राफ
3. तीसरा पैराग्राफ

4. अन्य

सन्दर्भ की जानकारी

हेरोदेस महान की वंशावली (अधिक जानकारी हेतु देखें फ्लेवियुस योसेपस की पुस्तक एन्टीक्वीटि ऑफ द ज्यूस (*Antiquities of the Jews)* की अनुक्रमणिका)

I. हेरोदेस महान
   A. यहूदिया का राजा (ई.पू. 37-4 से ई.पू.)
   B. मत्ती 2:1-19; लूका 1:5
II. उसके पुत्र
   A. हेरोदेस फिलिप (मरियाम्ने का पुत्र)
      1. हेरोदियास का पति
      2. इतुरैय्या का राज्यपाल (ई.पू. 4-34 ईस्वी)
      3. मत्ती 14:3; मरकुस 6:17
   B. हेरोदेस फिलिप (क्लेओपात्रा का पुत्र)
      1. गलील सागर की उत्तरी और पश्चिमी इलाके का राज्यपाल (4 ई.पू. से 34 ई.)
      2. लूका 3:1
   C. हेरोदेस अन्तिपास
      1. गलील और पीरिया का राज्यपाल (ई.पू. 4 से 39 ईस्वी)
      2. यहून्ना बपतिस्मा देने वाले का सिर कटवाया।
      3. मत्ती 14:1-12; मरकुस 6:14,29; लूका 3:19; 9:7-9; 13:31; 23:6-12,15; प्रेरि. 4:27; 13:1
   D. अरखिलाऊस
      1. यहूदिया, सामरिया और इदूमियाँ का शासक (4 ई.पू. से 6 ई.)
      2. मत्ती 2:22
   E. अरितोबुलूस (मरियाम्ने का पुत्र)
      1. उसका एकमात्र पुत्र हेरोदेस अग्रिप्पा प्रथम था
         a. सम्पूर्ण पलीस्तीन पर राज्य किया (41-44 ईस्वी)
         b. याकूब को तलवार से मरवाया और पतरस को बन्दीगृह में डाला
         c. प्रेरितों के काम 12:1-24; 23:35
            i. हेरोदेस अग्रिप्पा-प्प् उसका पुत्र था, जो उत्तर क्षेत्र का राज्यपाल था (ई. 50-70)
            ii. उसकी पुत्री का नाम बिरनीके था
               (1) अपने भाई की पत्नी
               (2) प्रेरि. 25:13-26:32
            iii. उसकी पुत्री का नाम द्रुसिल्ला था
               (1) फेलिक्स की पत्नी
               (2) प्रेरि. 24:24

शब्दों और वाक्यांशों का अध्ययन

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 12:1-5
[1]उस समय हेरोदेस राजा ने कलीसिया के कई व्यक्तियों को सताने के लिये उन पर हाथ डाले।

[2]उसने यूहन्ना के भाई याकूब को तलवार से मरवा डाला। [3]जब उसने देखा कि यहूदी लोग इस से आनन्दित होते हैं, तो उसने पतरस को भी पकड़ लिया। वे दिन अखमीरी रोटी के दिन थे। [4]उसने उसे पकड़ के बन्दीगृह में डाला, और चार-चार सिपाहियों के चार पहरों में रखा; इस विचार से कि फसह के बाद उसे लोगों के सामने लाए। [5]बन्दीगृह में पतरस बन्द था; परन्तु कलीसिया उसके लिए लौ लगाकर परमेश्वर से प्रार्थना कर रही थी।

12:1 ''हेरोदेस '' यह हेरोदेस अग्रिप्पा प्रथम है। इसने ईस्वी 37-44 तक पलीस्तीन के विभिन्न क्षेत्रों में राज्य किया। वह रोम में पला-बढ़ा था और गयूस का मित्र बन गया जो सम्राट तिबिरियुस के समान कार्य करता था और बाद में वह सम्राट केलिगुला बना। यहूदी लोग सहर्ष हेरोदेस को नेता मानते थे क्योंकि उसकी दादी (मरियाम्ने) हशमोनी/मकाबियन अर्थात यहूदी देशभक्त राजकुमारी थी। वह यहूदीवाद का कट्टर अनुयायी था (संभवतः इसके कुछ राजनैतिक कारण थे)। इसकी विस्तृत जानकारी हेतु देखें, योसेपस की एन्टीक्वीटि 19:7, 3;19:82

■ **''कलीसिया''** प्रेरि. 5:11 में विशेष विषय देखें।

■ **''उनके साथ गलत व्यवहार करने के लिए''** हेरोदेस ने यहूदी नेताओं का समर्थन व सहानुभूति पाने के लिये ऐसा किया (देखें प्रेरि. 12:3,1)। रोमी अधिकारियों ने भी यहूदी नेताओं को खुश करने के लिए ऐसा ही किया (देखें, प्रेरि. 24:27; 25:9)।

लूका ने ऐसे शब्दों का प्रयोग कई बार किया (देखें, प्रेरि. 7:6,19;12:1,14:2; 18:10)। यह सप्तूजैन्त में दुव्र्यवहार करने का सामान्य शब्द था। लूका की शब्दावाली सन्तूजैन्त से बहुत प्रभावित है।

12:2 ''उसने यूहन्ना के भाई याकूब को तलवार से मरवा डाला'' यह प्रेरित याकूब की ओर संकेत करता है जो यूहन्ना का भाई था (देखें, लूका 5:10; 6:14; 8:51; 9:28, 54)। वह चेलों के प्रधान समूह (*inner circle*) में शामिल था (देखें, मत्ती 17:1; 26:37; मरकुस 5:37; 9:2; 14:33; लूका 9:28)। याकूब को क्यों मरने देना चाहिए और पतरस को क्यों सुरक्षित रखना चाहिये, यह परमेश्वर के रहस्य की बातें हैं। रोमी नागरिकों के लिये तलवार से सिर काट देना मृत्युदण्ड का सामान्य तरीका था, परन्तु यह स्पष्ट रूप से यहूदियों के लिये घृणित कार्य था।

यह बड़ी रोचक बात है कि इस अवसर पर प्रारम्भिक कलीसिया ने इस बात की आवश्यकता नहीं समझी कि याकूब के स्थान पर दूसरा चेला नियुक्त किया जाता, जैसाकि यहूदा-इस्करियोती की मृत्यु के बाद किया गया था (देखें, प्रेरि. 1:15-20)। इसके कारण अस्पष्ट हैं, संभवतः यहूदा के विश्वासघात के कारण ऐसा किया हो, उसकी मृत्यु के कारण नहीं (प्रेरि. 1:15-20)।

कुछ लोग मान सकते व कह सकते हैं कि पौलुस गलतियों 1:19 में याकूब को यरूशलेम की कलीसिया का प्रेरित व अगुवा तथा यीशु का भाई कहता है, इससे उसकी नियुक्ति का प्रमाण मिलता है। परन्तु प्रश्न, 12 चेलों की अधिकृत अवस्था बनाम प्रेरित पद के वरदान की निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया से संबंधित है, (देखें इफि. 4:11)।

जेम्स डी.जी. डयून की पुस्तक ''यूनिटी एण्ड डायवर्सिटी इन द न्यू टैस्टामैन्ट (D. G. Dunn, *Unity and Diversity in the NewTestament.)* पढ़कर मैं मज़बूर हो गया कि प्रथम शताब्दी की कलीसया के विभिन्न अधिकार-पदों के बारे में विचार करूँ। ये सम्मान प्राप्त पद इस प्रकार हैं:

1. यरूशलेम के प्रेरित
2. घनिष्ट आत्मीय समूह (*Inner Circle)* के सदस्य, पतरस, याकूब, यूहन्ना जो प्रेरितों में से थे।
3. याकूब, जो यीशु का सौतेला भाई था और यरूशलेम की कलीसिया का भी अध्यक्ष था।
4. प्रेरि. 6 के सुनाम सात व्यक्ति जो यूनानी बोलने वाले यहूदियों के अगुवे थे।
5. बाद के सम्मानित जन पौलुस और बरनबास जो अंताकिया की कलीसिया द्वारा भेजे गए।

इनमें मसीही धर्म से संबंधित धार्मिक पन्थों को भी जोड़ा जा सकता है जैसे जूडाइजर्स, ज्ञानवाद, इबोनी इत्यादि। इनमें प्रत्येक के अपने अगुवे होते थे। जिस एकता का उल्लेख लूका अक्सर मसीहियों की करता है उसको बनाए रखना कठिन था। यीशु और पवित्रशास्त्र का प्रचार इतना अस्पष्ट था कि इसमें बहुत सी गलत व्याख्याएँ आ गई थीं।

इसी कारण से प्रथम शताब्दी में "विश्वास के नियम" बनाए गये, ताकि विभिन्न प्रकार की धार्मिक शिक्षाओं का मूल्यांकन किया जा सके। नए नियम पर जो पवित्र आत्मा की अगुवाई में बल दिया जाता था, अब वह बदलकर सुसंगठित पूर्वी और पश्चिमी कलीसियाओं के केन्द्रों पर हो गया। उस पीढ़ी के सामने कट्टरवाद आ गया था जिनके संस्थापक और चश्मदीद गवाह मर चुके थे।

12:3 "पतरस गिरफ्तार" यह तीसरी बार था जबकि पतरस को पकड़ा गया (देखें प्रेरि. 4:3; 5:18)। मसीही लोग सताव से सुरक्षित नहीं होते हैं।

■**"अखमीरी रोटी के दिनों में"** यह फसह-पर्व की ओर संकेत करता है (देखें, प्रेरि. 12:4) जिसमें अखमीरी रोटी का पर्व भी सम्मिलित होता है, यह पर्व आठ दिन चलता था (देखें, निर्ग. 12:18; 23:15; लूका 22:1)। ये दोनों पर्व मिस्र की गुलामी से छूट जाने के स्मरण में मनाए जाते थे। यह पर्व निसान महीने की 14-21 तारीख तक मनाया जाता था जो हमारे कलैन्डर के अनुसार मार्च व अप्रैल का महिना है, और यहूदी कलैन्डर की चन्द्रमा गणना पर आधारित है।

12:4 "चार सिपाहियों के पहरों में" इसका शायद यह अर्थ है कि एक दिन में चार बार चार सिपाहियों के समूह द्वारा चैकसी किया जाना अथवा 16 सिपाहियों द्वारा चैकसी। यह गिनती दर्शाती है कि हेरोदेस कितना सतर्क था कि कहीं पतरस भाग न जाए (देखें, प्रेरि. 5:19)

12:5 "कलीसिया उसके लिये लौ लगाकर परमेश्वर से प्रार्थना कर रही थी" कलीसिया प्रार्थना कर रही थी (देखें, प्रेरि. 12:12), परन्तु जब परमेश्वर ने प्रार्थना का उत्तर दिया तो वे आश्चर्यचकित रह गए। लौ लगाकर प्रार्थना करना बड़ा ही अर्थपूर्ण शब्द है (देखें, लूका 22:44)। यह शब्द नए नियम में केवल तीन बार प्रयुक्त हुआ (1 पत.1:22)।

विशेष विषय : लौ लगाकर प्रार्थना

I.परिचय :

A. यीशु के नमूने के कारण प्रार्थना महत्वपूर्ण होती है :
   1. व्यक्तिगत प्रार्थना, मर. 1:35; लूका 3:21; 6:12; 9:29; 22:31-46
   2. मंदिर की सफ़ाई करते समय यीशु ने कहा - मत्ती 21:13; मर. 11:17; लू. 19:46
   3. आदर्श प्रार्थना, मत्ती 6:5-13; लू. 11:2-4

B. प्रार्थना, अपने विश्वास को कार्यरूप देना है, कि परमेश्वर हमारी प्रार्थना सुनता और उत्तर देता है।

C. परमेश्वरन अनेक बार अपनी सन्तानों की प्रार्थना का उत्तर नहीं देता है (याकूब 4:2)

D. प्रार्थना का मुख्य उद्देश्य है, त्रिएक परमेश्वर के साथ संगति में समय लगाना।

E. किसी भी बात के लिए प्रार्थना की जा सकती है ; हम विश्वास के साथ एक बार या बार-बार प्रार्थना कर सकते हैं कि उत्तर मिलेगा।

F. प्रार्थना में निम्न बातें शामिल की जा सकती है :
   1. त्रिएक परमेश्वर की स्तुति, प्रशंसा।
   2. उसकी आशीषों के लिये धन्यवाद।
   3. भूत और वर्तमान के पापों का अंगीकार।
   4. अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए विनती व निवेदन :
   5. परहित प्रार्थनाएँ करना।

G. मध्यस्थता की प्रार्थना एक रहस्य की बात है। जिनके लिए हम प्रार्थना करते हैं, परमेश्वर उन से हम से अधिक प्रेम रखता है। प्रार्थना हम में और उनमें अवश्य परिवर्तन लाती है।

II. बाइबल सामग्री

A. पुराना नियम

1. मध्यस्थता की प्रार्थना के कुछ उदाहरण :

a. अब्राहम द्वारा सदोम के लिए प्रार्थना, उत्प. 18:22 क्रमशः

b. मूसा द्वारा इस्राएल के लिए प्रार्थना

(1) निर्ग. 5:22-23

(2) निर्ग. 32:9-14, 31-35

(3) निर्ग. 33:12-16

(4) निर्ग. 34:9

(5) व्यव. वि. 9:18, 25-29

c. शमूएल द्वारा इस्राएल के लिए प्रार्थना :

(1) 1 शमूएल 7:5-6, 8-9

(2) 1 शमू. 12:16-23

(3) 1 शमू. 15:11

d. दाऊद द्वारा अपने बच्चे के लिए प्रार्थना, 2 शमू. 12:16-18

2. परमेश्वर मध्यस्थता करने वालों को खोजता है, यशायाह 59:16

3. पाप और बुरा आचरण हमारी प्रार्थना पर प्रभाव डालता है

a. भजन. 66:18

b. नीतिवचन 28:9

c. यशायाह 59:1-2; 64:7

B. नया नियम :

1. पुत्र और पवित्र आत्मा की मध्यस्था की सेवाकाई :

a. यीशु

1. रोमियो 8:34

2. इब्रानियों 7:25

3. 1 यूहन्ना 2:1

b. पवित्र आत्मा, रोमियों 8:26-27

2. पौलुस द्वारा मध्यस्थता की सेवकाई

a. वह यहूदियों के लिए प्रार्थना करता है

(1) रोमियों 9:1 क्रमशः

(2) रोमियों 10:1

b. कलीसियाओं के लिए प्रार्थना करता है

(1) रोमियो 1:9

(2) इफिसियों 1:16

(3) फिलिप्पियों 1:3-4,9

(4) कुलुस्सियों 1:3,9

(5) 1 थिस्स. 1:2-3

(6) 2 थिस्स. 1:11

(7) 2 तीमु. 1:3

(8) फिलेमोन, पद 4

c. पौलुस कलीसियाओं से अपने लिए प्रार्थना करने का निवेदन करता है :

(1) रोमियो 15:30

(2) 2 कुरि. 1:11

(3) इफि. 6:19
(4) कुलु. 4:3
(5) 1 थिस्स. 5:25
(6) 2 थिस्स. 3:1

3. कलीसिया द्वारा मध्यस्थता की सेवकाई :
   a. एक दूसरे के लिए प्रार्थना करना
      (1) इफि. 6:18
      (2) 1 तीम. 2:1
      (3) याकूब 5:16
   b. विशेष समूहों के लिए प्रार्थना - निवेदन
      (1) अपने शत्रुओं के लिए, मत्ती 5:44
      (2) मसीही सेवकों के लिए, इब्रानियों 13:18
      (3) हाकिमों के लिए, 1 तीमु. 2:2
      (4) बीमारों के लिए, याकूब 5:13-16
      (5) धर्म त्याग करने वालों के लिए, 1 यूहन्ना 5:16

III. प्रार्थना का उत्तर पाने की शर्तें :

A. मसीह और पवित्र आत्मा के साथ हमारा संबंध :
1. उसमें बने रहना, यूहन्ना 15:7
2. उसके नाम में, यूहन्ना 14:13-14; 15:16; 16:23-24
3. आत्मा में प्रार्थना, इफिसियों 6:18; यहूदा, 20
4. परमेश्वर की इच्छा के अनुसार, मत्ती 6:10; 1 यूह. 3:22; 5:14-15

B. उद्देश्य
1. संदेह रहित, मत्ती 21:22; याकूब 1:6-7
2. विनम्रता और पश्चाताप के साथ, लूका 18:9-14
3. बुरे उद्देश्य से मांगना, याकूब 4:3
4. स्वार्थीपन, याकूब 4:2-3

C. अन्य पहलू :
1. निराश हुए बिना प्रार्थना करना
   a. लूका 18:1-8
   b. कुलुस्सियों 4:2
2. निरन्तर माँगते रहना
   a. मत्ती 7:7-8
   b. लूका 11:5-13
   c. याकूब 1:5
3. घर में मन-मुटाव, 1 पतरस 3:7
4. पाप से स्वतंत्र रहना
   a. भजन. 66:18
   b. नीतिवचन 28:9
   c. यशायाह 59:1-2
   d. यशायाह 64:7

IV. धर्म वैज्ञानिक (Theological) समापन :

A. प्रार्थना करना-हमारा सौभाग्य है ; सअवसर है और हमारा उत्तरदायित्व है।
B. यीशु इसमें हमारा आदर्श है, पवित्र आत्मा मार्गदर्शक है, और पिता प्रसन्नतापूर्वक इच्छुक है।
C. प्रार्थना, आपको, आपके परिवार को, आपके मित्रों को और संसार को बदल सकती है।

Copyright © 2014 Bible Lessons International

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 12:6-17

**[6]जब हेरोदेस उसे लोगों के सामने लाने को था, उसी रात पतरस दो जंजीरों से बंधा हुआ, दो सिपाहियों
के बीच में सो रहा था; और पहरूए द्वार पर बन्दीगृह की रखवाली कर रहे थे। [7]तो देखो, प्रभु का एक
स्वर्गदूत आ खड़ा हुआ और उस कोठरी में ज्योति-चमकी, और उसने पतरस की पसली पर हाथ मार
के उसे जगाया और कहा, ''उठ, जल्दी कर।'' और उसके हाथों से जंजीरें खुलकर गिर पड़ीं। [8]तब
स्वर्गदूत ने उससे कहा, ''कमर बाँध, और अपने जूते पहिन ले।'' उसने वैसा ही किया। फिर उसने
उससे कहा, ''अपना वस्त्र पहिनकर मेरे पीछे हो ले।'' [9]वह निकलकर उसके पीछे हो लिया; परन्तु यह
न जानता था कि जो कुछ स्वर्गदूत कर रहा है वह सच है, वरन् यह समझा कि मैं दर्शन देख रहा हूँ।
[10]तब वे पहले और दूसरे पहरे से निकलकर उस लोटे के फाटक पर पहुँचे, जो नगर की ओर है। वह
उनके लिये आप से आप खुल गया, और वे निकलकर एक ही गली होकर गए, और तुरन्त ही स्वर्गदूत
उसे छोड़कर चला गया। [11]तब पतरस ने सचेत होकर कहा, ''अब मैं ने सच जान लिया है कि प्रभु ने
अपना स्वर्गदूत भेजकर मुझे हेरोदेस के हाथ से छुड़ा लिया, और यहूदियों की सारी आशा तोड़ दी है''
[12]यह जानकर वह उस यूहन्ना की माता मरियम के घर आया, जो मरकुस कहलाता है। वहाँ बहुत से
लोग इकट्ठे होकर प्रार्थना कर रहे थे। [13]जब उसने फाटक की खिड़की खटखटाई, तो रूदे नामक एक
दासी देखने को आई। [14]पतरस का शब्द पहचाकर उसने आनन्द के मारे फाटक न खोला, परन्तु
दौड़कर भीतर गई और बताया कि पतरस द्वार पर खड़ा है। [15]उन्होंने उससे कहा,''तू पागल है।'' परन्तु
वह दृढ़ता से बोली कि ऐसा ही है। तब उन्होंने कहा, ''उसका स्वर्गदूत होगा।'' [16]परन्तु पतरस
खटखटाता ही रहा; अतः उन्होंने खिड़की खोली, और उसे देखकर चकित रह गये। [17]तब उसने उन्हें
हाथ से संकेत किया कि चुप रहें; और उनको बताया कि प्रभु किस रीति से उसे बन्दीगृह से निकाल
लाया है। फिर कहा, ''याकूब और भाइयों को यह बात बता देना।'' तब निकलकर दूसरी जगह चला
गया।**

12:6''उसी रात'' लूका की लेखन शैली की विशेषता है कि उसमें समय का उल्लेख भी होता है (देखें, प्रेति. 12:3-10,18)। इस विवरण की व्याख्या पाश्चात्य क्रमबद्ध ऐतिहासिक विवरण की तरह करने से सावधान रहें। लूका का यहाँ धर्म शिक्षा के रूप में सुसमाचार प्रचार का उद्देश्य है।

■ **'' दो सिपाहियों के बीच ''** यह पद पतरस के बच निकलने की असम्भवता को दर्शाता है। वे शायद सन्देह करते थे कि कोई पतरस को छुड़ाने की कोशिश कर सकता है (देखें, प्रेरि. 5:19)।

12:7 ''प्रभु का एक स्वर्गदूत एकाएक प्रकट हुआ'' प्रभु के एक स्वर्गदूत का अलौकिक हस्ताक्षेप (देखें, प्रेरि. 5:19; 7:30,35,38,53; 8:26; 10:3,7,22) और साथ ही पवित्र आत्मा (देखें, प्रेरि. 8:29,39; 10:19) का हस्ताक्षेप इस सम्पूर्ण पुस्तक में असाधारण बात है। स्पष्टरूप से पवित्र आत्मा व्यक्तिगत रूप से बात करता है, परन्तु स्वर्ग का दर्शन परमेश्वर का बाहरी प्रकटीकरण होता है जो दिखाई देता है। इस विवरण में लौकिक और अलौकिक दोनों का तालमेल दिखाई देना बड़ी रोचक बात है (यह निर्गमन की पुस्तक में वर्णित दस विपत्तियों के समान रोचक है)

■ **''उठ, जल्दी कर''** यह आदेशात्मक कथन है जो शीघ्रता को प्रकट करता है। स्वर्गदूत इतनी जल्दबाज़ी में क्यों था? क्या घटनाओं पर नियंत्रण नहीं?

12:8" कमर बाँध और जूते पहिन ले" ये दोनों वर्तमानकालीन आदेशात्मक कथन हैं।

▪ **"अपना वस्त्र पहिनकर मेरे पीछे हो ले"** यह भी आदेशात्मक कथन है, स्वर्गदूत वास्तव में अपना कार्य पूरा करने के लिए उतावली में था।

12:9 पतरस नहीं जानता था कि यह दर्शन है या स्वप्न है या वास्तविकता है (देखें, प्रेरि. 12:11-12; 10:17,19; 11:5)।

12:11 "तब पतरस ने सचेत होकर कहा" उड़ाऊ पुत्र का वर्णन करते हुए लूका ऐसे ही शब्दो का प्रयोग करता है (देखें, लूका 15:17)। एकाएक उस पर सच्चाई और उसमें निहित अर्थ प्रकट हो गया (देखें, प्रेरि. 12:12)।

12:12 "मरियम के घर" मरियम एक सामान्य नाम था। सुसमाचारों में बहुत सी मरियमों का उल्लेख पाया जाता है जैसे:

1. यीशु की माता मरियम (लूका 1:27)
2. मरियम मगदलीनी, गलील निवासी शिष्या (लूका 8:2; 24:10)
3. याकूब और यूहन्ना की माता मरियम (लूका 24:10)
4. लाज़र और मार्या की बहन मरियम (लूका 10:39,42)
5. क्लोपास की पत्नी मरियम (यूहन्ना 19:25)
6. यूहन्ना मरकुस की माता मरियम (यहां वर्णित)

▪ **"उस यूहन्ना की माता"** यह यूहन्ना मरकुस की माता मरियम है। यरूशलेम की आरम्भिक कलीसिया इसी घर में इक्ट्ठा होकर प्रार्थना किया करती थी (देखें, प्रेरि. 12:12) यहीं पर यीशु ने जीवित हो उठने के बाद तीन बार चेलों को दर्शन दिया था और यहीं पर पिन्तेकुस्त के दिन पवित्र आत्मा उतरा था।

यूहन्ना मरकुस प्रथम मिशनरी यात्रा में (देखें, प्रेरि. 12:25-13:13) पौलुस और अपने भाई बरनबास के साथ गया था पर किसी कारणवश बीच में ही यात्रा छोड़कर घर चला गया था (देखें, प्रेरि. 15:38)। बाद में बरनबास दूसरी मिशनरी यात्रा में मरकुस को फिर शामिल करना चाहता था, परन्तु पौलुस ने इन्कार किया (देखें प्रेरि. 15:36-41)। फलस्वरूप पौलुस और बरनबास अलग हो गये और बरनबास मरकुस को लेकर साइप्रस चला गया था (देखें, प्रेरि. 15:39)। आगे चलकर जब पौलुस बन्दीगृह में था,तब उसका उल्लेख सकारात्मक शब्दों में करता है (देखें, कुलु. 4:10)। फिर जब पौलुस दूसरी बार रोम में बन्दी बनाया गया, तब अपनी मृत्यु से कुछ समय पहले ही मरकुस का उल्लेख फिर करता है (देखें, 2 तीमु. 4:11)।

यह बिल्कुल स्पष्ट बात है कि यूहन्ना मरकुस मिशनरी यात्राओं में पतरस का सहयोगी बन गया था (देखे,1 पतरस 5:13)। यूसेबियुस (Eusebius' *Eccl*) की पुस्तक "कलीसियाई इतिहास" 3,39.12 में यूहन्ना मरकुस और पतरस के मध्य सम्बन्धों के विषय में हमें बड़ा रोचक वृत्तान्त मिलता है, जो इस प्रकार है:

> "पेपियस अपनी पुस्तक में प्रभु के कथनों का विवरण हमें देता है जिन्हें उसने अरिस्टियन द्वारा प्राप्त किया था अथवा सीधे प्रेरित यूहन्ना से सुना था। जब ये बातें विद्वानों के सामने आईं तो मुझे उन बातों पर कार्य करना पड़ा जो उसने यूहन्ना मरकुस सुसमाचार लेखक के बारे में लिखी थीं।
>
> प्रेरित यूहन्ना यह भी कहा करता था, "मरकुस, जो पतरस का व्याख्याता रहा था, उसने सब बातों को सावधानीपूर्वक लिखा, परन्तु क्रमानुसार नहीं लिखा। जो बातें प्रभु की उसे याद रहीं वही लिखीं। उसने उन बातों को प्रभु द्वारा नहीं सुना था क्योंकि वह उसका चेला नहीं था, परन्तु बाद में पतरस का चेला बन गया था। पतरस अपने उपदेशों में प्रभु के कथन और शिक्षाएँ प्रयोग करता था परन्तु व्यवस्थित रूप से नहीं,और मरकुस ने उन्हें सुना और उनमें से कुछ बातें जो उसे याद रहीं भलीभाँति लिख दिया, क्योंकि उसके सामने एक ही उद्देश्य था कि जो बातें उसने सुनी हैं उन्हें सही सही लिखे और कोई बात छूट न जाए।" (पेज 152)

उपरोक्त उद्धरण में पेपियस "यूहन्ना प्रेरित" का उल्लेख करता है। इस विषय में इरेनियुस कहता है, "ये बातें जो पेपियस ने लिखीं इस बात की गवाही देती हैं कि उसने यूहन्ना प्रेरित से सब बातें सुनी थीं, और वह पौलीकार्ब का साथी था।" इसका अर्थ यह हुआ कि पेपियस ने यूहन्ना प्रेरित से सुना था।

▪ **"बहुत से लोग इकट्ठे होकर प्रार्थना कर रहे थे"** इस वाक्यांश की व्याकरण बताती है कि कलीसिया इक्ट्ठा थी और संकल्पित थी कि प्रार्थना में लीन रहेगी।

12:13 "गेट के दरवाज़े पर" यह दरवाज़ा गली में था और छोटा था परन्तु सीढ़ी के ऊपर जाकर बड़ा दरवाज़ा था। रूदे नाम का अर्थ है "गुलाब का फूल।" यह स्त्री नौकरानी थी या फिर चर्च की सदस्या थी, कहना कठिन है।

▪ **"रोडा"** उसके नाम का अर्थ है "गुलाब।" यह अनिश्चित है कि उसने घर के मालिकों के लिए काम किया या प्रार्थना   सभा की सदस्य थी

12:15 "तू पागल है" कलीसिया परमेश्वर से कार्य करने की प्रार्थना कर रही थी, परन्तु जब उसने कार्य किया और प्रार्थना का उत्तर दिया तो वे आश्चर्य करने लगे (प्रेरि. 12:16)।

▪ **"तब उन्होंने कहा"** यहाँ दो अपूर्ण क्रियाएँ दिखाई देती हैं, रूदे द्वारा दृढ़तापूर्वक अपनी बात कहना तथा प्रार्थना में लीन लोगों की प्रार्थना का पुनः उत्तर दिया जाना।

▪ **"उसका स्वर्गदूत होगा"** लूका के लेखों में स्वर्गदूत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। स्पष्ट रूप से यहूदी विश्वास करते थे कि किसी का रक्षक स्वर्गदूत शारीरिक रूप धारण कर सकता है (इस विषय में अधिक जानकारी हेतु देखें एन्सायक्लोपीडिया जुडाइका भाग 2, पेज 963 (*Encyclopaedia Judaica Vol.2 p. 963*)। पवित्रशास्त्र में इस विश्वास का कोई आधार नहीं मिलता। यह विचारधारा संभवतः पारसी धर्मसे आई। रब्बियों की अधिकांश विचारधाराएँ पारसी (*fravashi*)धर्म से प्रभावित थीं। नए विश्वासियों के लिए रक्षक स्वर्गदूतों का थोड़ा सा संकेत पवित्रशास्त्र में है, (देखें मत्ती 18:10)। स्वर्गदूत, उद्धार प्राप्त किए लोगों की सेवा करने वाली आत्माएँ होती हैं (देखें इब्रा. 1:14)।

12:17 "उन्हें हाथ से संकेत किया कि चुप रहें" यह स्पष्ट रूप से चश्मदीद गवाह द्वारा बताई गई बात है। (देखें प्रेरि. 13:16)। लूका अनेक बार संकेत शब्द का उपयोग करता है (देखें, प्रेरि. 13:16; 19:33; 21:40)।

▪ **"याकूब और भाइयों को यह बात बता देना"** यह वाक्यांश दर्शाता है कि यीशु का सौतेला भाई याकूब पहले ही से यरूशलेम की कलीसिया का अध्यक्ष नियुक्त था (देखें, प्रेरि. 15:13-21)।

विशेष विषय: यीशु का सौतेला भाई, याकूब

A. याकूब को "धर्मी याकूब" तथा "ऊंट समान घुटनों वाला" याकूब कहा जाता है क्योंकि वह घुटनों के बल बहुत प्रार्थनाएं किया करता था (हिग्गेसिप्पुस से), (यूसेबियुस ने कलीसिया के इतिहास 2.23-24; 4-18 में ऐसा लिखा है)
B. जब तक यीशु मृतकों में से न जी उठा, तब तक वह अविश्वासी था (देखें मर. 3:21; यूहन्ना 7:5)।मृतकों में से जी उठने के बाद यीशु ने व्यक्तिगत रूप से उसे दर्शन दिया था (देखें, 1 कुरि. 15:7)
C. वह अन्य चेलों के साथ उपरौठी कोठरी में उपस्थित था (देखें, प्रेरि. 1:14) और अवश्य ही पिन्तेकुस्त के दिन भी वहां उपस्थित रहा होगा जबकि पवित्र आत्मा उतरा था।
D. वह शादीशुदा था (देखें, 1 कुरि. 9:5)
E. पौलुस ने उसे कलीसिया का खम्भा कहा ; शायद वह प्रेरित था, देखें गला. 1:19; (विशेष विषय : "भेजा

जाना" देखें) [*apostellō*] लेकिन वह बारह चेलों में शामिल नहीं था (देखें गला. 2:9; प्रेरि. 12:17; 15:13 क्रमशः ; 21:18)।

F. "एन्टीक्विटी ऑफ द ज्यूस" (*Antiquities of the Jews*, 20.9.1.) में योसेपस बताता है कि सन्हेदिन की आज्ञा से 62 ई. में याकूब को पत्थरवाह कर दिया गया था, जबकि अन्य दूसरी शताब्दी की परम्परा (जो क्लेमेंट ऑफ एलेक्जेन्ड्रिया अथवा हेगेसीप्पुस लिखित है) के अनुसार उसे मंदिर की दीवार से धक्का दे दिया गया था।

G. यीशू की मृत्यु के बाद, यीशु का यह रिश्तेदार अनेक पीढ़ियों तक यरूशलेम की कलीसिया का अगुवा रहा।

H. वह नए नियम की "याकूब" नाम पुस्तक का लेखक और यहूदा की पुस्तक के लेखक "यहूदा" का भाई था। (देखें यहूदा पद एक)।

Copyright © 2014 Bible Lessons International

■ **" दूसरी जगह चला गया"** कोई नहीं जानता कि कहाँ चला गया था, पर यह स्पष्ट है कि वह रोम नहीं गया जैसा कि कुछ लोग अनुमान लगाते हैं, क्योंकि वह यरूशलेम की सभा में उपस्थित था (देखें, प्रेरि. 15)।

हालांकि परमेश्वर ने पतरस की अलौकिक रूप से रक्षा की और उसे छुड़ाया था तौभी इसका अर्थ यह नहीं होता कि वह लापरवाह हो जाए और हर बार एक आश्चर्यकर्म अपने साथ घटने की आशा लगाए। याद कीजिए कि याकूब तलवार से मार डाला गया था। पतरस ने भी कलीसिया को सन्देश दे दिया था कि उसके इस अद्‌भुत छुटकारे के कारण उन पर और अधिक सताव आ सकता है।

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 12:18-19

[18]भोर को सिपाहियों में बड़ी हलचल मच गई कि पतरस का क्या हुआ। [19]जब हेरोदेस ने उसकी खोज की और न पाया, तो पहरूओं की जाँच करके आज्ञा दी कि वे मार डाले जाएँ; और वह यहूदिया को छोड़कर कैसरिया में जाकर रहने लगा।

12:18 "बड़ी हलचल मच गई" यह रोचक बात है कि अक्सर लूका नकारात्मक बातों को एक कथन के रूप में वर्णन करता है देखें, प्रेरि. 12:18; 15:2; 19:11, 23-24; 20:12; 26:19, 26; 27:30; 28:2 साथ ही देखें जी.बी. केअर्ड की पुस्तक का फुटनोट पेज. 134। (footnote #8, p. 134, of G. B.Caird,*The Language and Imagery of the Bible*) इब्रानी भाषा में यह साहित्यिक शैली नहीं है परन्तु यूनानी में यह शैली अक्सर इस्तेमाल की जाती है। लूका यूनानी भाषा का बड़ा विद्वान व्यक्ति था।

12:19" पहरूओं की जाँच करके आज्ञा दी कि वे मार डाले जाएँ" यह पद में निहित अर्थ है। कुछ अनुवादों में उन शब्दों को इटैलिक्स में लिखा है जो मूल यूनानी पाठ (cf. NKJV, NRSV, TEV) में नहीं पाए (NJB)जाते हैं। उस काल में यदि किसी पहरूये का कैदी भाग जाए तो पहरूए को वही दण्ड सहना होता था जो कैदी का था (देखें, प्रेरि. 16:27; 27:42 तथा जस्टिन की नियमावली 9.4,4)।

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 12:20-23

[20]हेरोदेस सूर और सैदा के लोगों से बहुत अप्रसन्न था। इसलिए वे एकचित्त होकर उसके पास आए, और बलास्तुस को जो राजा का एक कर्मचारी था, मनाकर मेल करना चाहा; क्योंकि राजा के देश से उनके देश का पालन-पोषण होता था। [21]ठहराए हुए दिन हेरोदेस राजवस्त्र पहिनकर सिंहासन पर बैठा, और उनको व्याख्यान देने लगा। [22]सब लोग पुकार उठे, "यह तो मनुष्य का नहीं ईश्वर का शब्द है।" [23]उसी क्षण प्रभु के एक स्वर्गदूत ने तुरन्त उसे मारा, क्योंकि उसने परमेश्वर को महिमा न दी; और वह कीड़े पड़के मर गया।

12:20 "सूर और सैदा के लोगों से बहुत अप्रसन्न था" हेरोदेस उन से क्रोधित था और क्रोधित रहा था। इतिहास में इस विशेष ऐतिहासिक घटना का और व्यक्तियों का उल्लेख नहीं मिलता, परन्तु सूर और सैदा के लोग गलील के कृषि उत्पादन पर निर्भर थे (देखें, 1 राजा 5:11; एज्रा. 3:7; यहेज. 27:17)।

12:21 "ठहराए हुए दिन हेरोदेस राजवस्त्र पहिनकर" यह घटना सन 44 ईस्वी में हुई थी सम्पूर्ण जानकारी के लिए देखें योसेपस की एंटीक्वीटि 19.8.2 (अनुवादकः विलियम वाईटस्टोन) (translated by William Whiston, Kregal)

> "उस उत्सव के अवसर पर, उसके प्रान्त के गणमान्य और प्रधान व्यक्तियों की बड़ी भीड़ जमा हो जाती थी। उत्सव के दूसरे दिन राजा चांदी के वस्त्रों के समान चमकते हुए राजसी वस्त्र पहनकर बड़े सवेरे रंगशाला में उपस्थित हो जाता था। जैसे जैसे सूर्य की किरणें उन वस्त्रों पर पड़तीं वे वस्त्र और अधिक चमकने लगते थे, मानों उन लोगों पर अपना भय फैला रहे हों जो उस से कुछ पाने की आशा से उसे ताकते थे: उसी क्षण राजा के चापलूस चारों ओर से चिल्ला उठते थे कि वह परमेश्वर है, फिर वे कहते, हे राजा! हम पर दया कर और क्षमा कर कि अब तक हमने तुझे केवल मनुष्य समझकर तेरा आदर सम्मान किया है, परन्तु आगे से हम तुझे मनुष्य नहीं परन्तु एक अनन्त व अमर शक्ति के रूप में ग्रहण करेंगे। ये बातें सुनकर राजा ने उन्हें न तो डांटा और न ही अपने विषय में कही गई चापलूसी का इंकार किया। उसके तुरन्त बाद ही राजा ने जब अपनी दृष्टि उठाई तो एक उल्लू को देखा जो उसके ठीक सामने एक रस्सी पर बैठा था। उल्लू को देखकर राजा तुरन्त समझ गया कि यह किसी बुरे समाचार की सूचना है; इस से पहले वह उल्लू उसके लिये शुभ-संदेश लाया करता था; तब राजा गहरे शोक में डूब गया। फिर राजा के पेट में दर्द उठने लगा और धीरे-धीरे वह दर्द भयंकर हो गया। तब राजा ने अपने मित्रों की ओर देख कर कहा-"जिस राजा को तुम ने अभी अभी परमेश्वर कहा है, उसे आज्ञा मिली है कि इसी क्षण संसार छोड़कर चला जाए। उस आज्ञा देने वाले सर्वोच्च परमेश्वर ने तुम्हारी सारी बातों को झूठा ठहरा दिया है जिन्हें तुमने मेरे विषय में कहा है कि मैं अमर हूँ, देखो, शीघ्र ही मैं मृत्यु के कारण दफनाया जाने वाला हूँ।" (पेज 412)

हेरोदेस के स्वभाव और उसके भौतिक आचरण के सम्बन्ध में भी एन्टीक्वीटि 17:6:5 (*Antiq*. 17:6:5) में बहुत सा घिनौना विवरण पाया जाता है।

जेरोम बाइबल कमेन्ट्री भाग 2, पेज 191 (*Jerome Biblical Commentary* (vol. 2, p. 191) बताती है कि किसी व्यक्ति की मृत्यु पर इस प्रकार का घिनौना विवरण लिखना प्राचीन लेखकों की एक शैली हुआ करती थी, जिसके माध्यम से वे बताना चाहते थे कि जो लोग परमेश्वर को दुख पहुंचाते हैं, उनके साथ क्या होता है।

1. अंतियाखुस एपिफेनेस iv - II मकाबी 9:5-18 (Antiochus IV Epiphanes – II Macc. 9:5-18)
2. हेरोदेस महान - योसेपस, *एंटीक्वीटि* 17.6.5 (Herod the Great – Josephus, *Antiq*. 17.6.5)

12:23 "प्रभु का स्वर्गदूत" यह मृत्यु के स्वर्गदूत की ओर संकेत करता है (देखें निर्गमन 12:23; 2 शमू. 24:16; 2 राजा 19:35)। मृत्यु शैतान के नहीं परन्तु परमेश्वर के हाथों में होती है। यह सांसारिक न्याय का प्रतीक है।

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 12:24
24परन्तु परमेश्वर का वचन बढ़ता और फैलता गया।

12:24 यह लूका की सारांश प्रस्तुत करने की शैली है। लूका ने कई बार सारांश प्रस्तुत किया है (देखें, प्रेरि. 6:7; 9:31; 12:24; 16:5; 19:20; 28:31)।

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 12:25
25जब बरनबास और शाऊल अपनी सेवा पूरी कर चुके तो यूहन्ना को जो मरकुस कहलाता है, साथ लेकर यरूशलेम से लौटे।

12:25 यहां से आगे पौलुस की मिशनरी यात्राओं का विवरण आरम्भ होता है। इस आयत के बारे में मूलपाठों में परस्पर असमानता पाई जाती है कि वे यरूशलेम को लौटे जैसाकि एम एस एस और बी में है (cf. *eis*, MSS א and B) या फिर वे यरूशलेम से लौटे जैसा ए वी ओ एम एस डी, एम एस एस [74], ए में है । (cf. *apo*, MS D or *ek*,
MSS P[74], A) अध्याय प्रेरी 13 बरनवास और पौलुस की अन्ताकिया की सेवा से आरम्भ होता है देखें, एम एस ई तथा पुरानी लैटिन, सीरियल व कौपटिक वर्ज़न, वे यरूशेलम, से अंतकिया लौटे ("from Jerusalem to Antioch," cf. MS E and Old Latin, Syrian, and Coptic versions)

■ **"मरकुस"** प्रेरि. 16 में दी गई भूमिका में "व्यक्तियों का उल्लेख" शीर्षक देखें।

विचार विमर्श के लिये प्रश्न

यह अध्ययन में मार्गदर्शन करने की टीका है, इसका अर्थ है कि आप बाइबल की अपनी व्याख्या करने के स्वयं ही जिम्मेदार हैं। हम में से प्रत्येक को उसी ज्ञान के अनुसार चलना चाहिए जो हमारे पास है। व्याख्या करने के कार्य में आप आपकी बाइबल और पवित्र आत्मा केन्द्रिय स्थान रखते हैं। यह कार्य व्याख्याकार पर न छोड़ दें।

निम्नलिखित प्रश्न अपनी सहायता के लिए दिए गए हैं ताकि आप पुस्तक के गम्भीर विषयों पर पुनर्विचार कर सकें। वे आपके विचारों को आन्दोलित करने के लिए हैं, इनके अलावा और भी प्रश्न हो सकते हैं:

1. परमेश्वर ने क्यों पतरस को तो जीवित रखा परन्तु याकूब को मरने दिया?
2. जब प्रार्थना में लगी हुई व एकत्रित कलीसिया की प्रार्थना का उत्तर मिला तो क्या वह आश्चर्यचकित थी? समझाएँ?
3. जबकि विश्वासियों के अन्दर पवित्र आत्मा निवास करता है, तो क्या उनको स्वर्गदूतों की आवश्यकता पड़ेगी कि वे उनकी रक्षा करें?

Copyright © 2013 Bible Lesson International

प्रेरितों के काम-13
बाइबल के विभिन्न आधुनिक अनुवादों में पैराग्राफ-विभाजन

UBS^{4}	**NKJV**	**NRSV**	**TEV**	**NJB**
बरनबास और शाऊल का भेजा जाना	बरनबास और शाऊल की नियुक्ति (12:25-13:3)	साइप्रस में बरनबास और शाऊल (12:23-13:12)	बरनबास और शाऊल का चुना और भेजा जाना	भेजे जाने की सेवा
13:1-3		13:1-3	13:1-2 13:3	13:1-3
साइप्रस में प्रेरितों का प्रचार	साइप्रस में प्रचार		साइप्रस में	साइप्रसः इलीमास टोन्हा
13:4-12	13:4-12	13:4-12	13:4-5 13:6-11a 13:11b-12	13:4-5 13:6-12
पिसिदया के अन्ताकिया में पौलुस और बरनबास	पिसिदया के अन्ताकिया में	पिसिदिया के अन्ताकिया और इकुनियुम की यात्रा	पिसिदिया के अन्ताकिया में	पिसिदिया के अन्ताकिया में आगमन
13:13-16a 13:16b-25	13:13-41	13:13-16a 14:16b-25	13:13-16a 13:16b-20a 13:20b-25	13:13-16a 13:16b-25
13:26-41 13:32-37		13:26-41	13:26-41	13:26-31 13:32-37 13:38-39 13:40-41
	अंताकिया में आशीष और मतभेद			
13:42-43	13:42-52	13:42-43	13:42-43	13:42-43
				अन्यजातियों में पौलुस और बरनबास का प्रचार
13:44-52		13:44-47 13:48-52	13:44-47 13:48 13:49-52	13:44-47 13:48-49 13:50-52

पठन चक्र तीसरा (“अच्छे बाइबल अध्ययन का मार्गदर्शन” से)

पैराग्राफ स्तर पर मूल लेखक के अभिप्राय को समझना

यह अध्ययन करने की मार्गदर्शक टीका है, जिसका अर्थ है कि आप अपनी बाइबल-व्याख्या के स्वयं उत्तरदायी हैं। हम में से प्रत्येक को अपने ज्ञान व समझ के अनुसार कार्य करना चाहिए। व्याख्या-प्रक्रिया में आप, आपकी बाइबल तथा पवित्र आत्मा प्राथमिक स्थान रखते हैं। आपको यह टीका कार्य टीकाकार पर नहीं छोड़ना चाहिए।

पूरा अध्याय एक बैठक में पढ़ें। विषयों को पहचानें। अपने विषय-विभाजन की तुलना उपरोक्त पाँच आधुनिक अनुवादों के विषय-विभाजन से करें। पैराग्राफों का विभाजन प्रेरणा प्राप्त नहीं होता है, परन्तु यह मूल लेखक के अभिप्राय को समझने की कुंजी है, जो कि व्याख्या करने का आधार है। प्रत्येक पैराग्राफ में केवल एक ही मूल विषय होता है:

1. पहला पैराग्राफ
2. दूसरा पैराग्राफ
3. तीसरा पैराग्राफ
4. अन्य

संदर्भ की जानकारी

A. यह पौलुस और बरनबास की प्रथम मिशनरी यात्रा का वर्णन है। प्रेरितों के काम पुस्तक के अगले भागों में पौलुस की सेवकाई का उल्लेख है।

B. प्रेरि. 13 व 14 से संबंधित अपनी बाइबल में दिए गए नक्शों और बाइबल एटलस का प्रयोग करना लाभदायक होगा।

C. अध्याय 13 व 14 में हम एक परिवर्तन देखते हैं कि सेवकाई का नेतृत्त्व बरनाबास से पौलुस के पास आ जाता है।

शब्दों और वाक्यांशों का अध्ययन

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 13:1-3
[1]अन्ताकिया की कलीसिया में कई भविष्यद्वक्ता और उपदेशक थे; जैसेः बरनबास और शमौन जो नीगर कहलाता है; और लूकियुस कुरेनी, और चैथाई देश के राजा हेरोदेस का दूधभाई मनाहेम, और शाऊल। [2]जब वे उपवास सहित प्रभु की उपासना कर रहे थे, तो पवित्रआत्मा ने कहा, ‘‘मेरे लिये बरनबास और शाऊल को उस काम के लिये अलग करो जिसके लिये मैं ने उन्हें बुलाया है।’’ [3]तब उन्होंने उपवास और प्रार्थना करके और उन पर हाथ रखकर उन्हें विदा किया।

13:1‘‘अन्ताकिया’’ प्रेरि. 11:19 में टिप्पणी देखिए।

▪ **‘‘कलीसिया’’** प्रेरि. 5:11 में विशेष विषय देखें।

▪ **‘‘भविष्यद्वक्ता और उपदेशक’’** 1 कुरि. 12:28 तथा इफि. 4:11 में पवित्र आत्मा के इन दोनों वरदानों का उल्लेख किया गया है। इस वाक्यांश की व्याकरण से स्पष्ट नहीं है कि क्या ये पाँचों व्यक्ति भविष्यद्वक्ता और उपदेशक थे अथवा पहले तीन तो भविष्यद्वक्ता और अंतिम दो उपदेशक थे।

भविष्यद्वक्ता शब्द में एक समस्या पाई जाती है कि नये नियम का भविष्यद्वाणी या नबूवत का वरदान पुराने नियम के शब्द भविष्यद्वक्ता से कैसा संबंध रखता है? पुराने नियम में भविष्यद्वक्ता पवित्रशास्त्र के लेखक हुआ करते थे। नए नियम में यहीं कार्य मूल प्रेरितों अर्थात् 12 चेलों और उनके सहायकों को दे दिया गया है। चूंकि इफिसियों 4:11 के अनुसार शब्द ‘‘प्रेरित’’ को एक वरदान माना गया है और परमेश्वर ने कलीसिया में प्रेरित और भविष्यद्वक्ता नियुक्त किए, जिन्होंने प्रकाशन प्राप्त करके नया नियम लिखा। इन नए नियम के भविष्यद्वक्ताओं के बाद प्रकाशन मिलना बन्द हो गया और नए नियम के बाद कोई पवित्रशास्त्र नहीं लिखा गया। इन नए नियम के भविष्यद्वक्ताओं का प्रथम कार्य है सुसमाचार का प्रचार करना साथ ही अन्य कार्य भी करना जैसे नए नियम के सन्देश को दैनिक जीवन तथा परिस्थितियों पर लागू करना। विस्तृत जानकारी हेतु प्रेरि. 11:27 की टिप्पणी देखें।

उपदेशक के वरदान का उल्लेख प्रेरि. 13:1 में किया गया है जहां इसका संबंध भविष्यद्वाणी के साथ है, परन्तु इफि. 4:11 में इसका संबंध पास्टरों के साथ है। फिर 2 तीमु. 1:11 में पौलुस अपने विषय में बताता है, "मैं प्रचारक, प्रेरित तथा शिक्षक नियुक्त किया गया, "इससे ज्ञात होता है कि रोमियों 12:7 की तरह यह उसका स्वतन्त्र कार्य था। याकूब 3:1 और आगे भी शिक्षक (अथवा उपदेशक) का उल्लेख पाया जाता है, जो एक स्वतन्त्र कार्य है। इन सब बातों से निष्कर्ष निकलता है कि ये विभिन्न वरदान विभिन्न विश्वासियों की आत्मिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए विभिन्न प्रकार से प्रयुक्त किए जा सकते हैं। वरदान प्राप्त इन सब व्यक्तियों का एक ही मूल अर्थ है कि विभिन्न प्रकार से सुसमाचार का प्रचार करें (इफि. 4:11)।

विशेष शीर्षक: प्रेरणा

यह विश्वास की निश्चित घोषणा है कि परमेश्वर अपने पवित्रआत्मा के द्वारा मानव जाति के लिए अपने कार्यों, प्रतिज्ञाओं और अपनी इच्छा को लेखबद्ध कराने के लिए सक्रिय रुप से संलग्न रहा। यह उसका स्वयं का "दिव्य प्रकाशन" था। इसे "प्रकाशन" कहा जाता है। भावी पीढ़ी के लिए इसे लेखबद्ध कराने को "प्रेरणा" कहा जाता है।

बाइबिल में केवल एक ही स्थान पर "प्रेरणा" शब्द का इस्तेमाल किया गया है और वह है 2 तीमु 3:16 और यह शब्दशः स्वयं परमेश्वर द्वारा लिखवाया जाना है। इस बात पर ध्यान दीजिए कि नया नियम सदैव पुराने नियम का उल्लेख करता है अर्थात 2 तीमु 3:15 में बताया जाता है कि तीमुथियुस का पालन-पोषण यहूदी धर्म के वातावरण में हुआ और पवित्रशास्त्र बचपन ही मे उसका जाना हुआ है। ध्यान दीजिए कि पवित्रशास्त्र दिए जाने के उद्देश्य दो हैं :

1. बुद्धि प्राप्त हो सके कि उद्धार हो, 2 तीमु. 3:15
2. धार्मिक बातों का प्रशिक्षण प्राप्त हो, 2 तीमु. 3:16

इस बात पर भी ध्यान दें की यूहन्ना 5:39; 1 कुरि 15:3-4; और 1 पत 1:10-12 में बताया जाता है कि पुराना नियम मसीह की ओर संकेत करता है। लूका 24:25-27 में स्वयं यीशु भी कहता है कि पुराना नियम उसकी ओर संकेत करता है। पुराने नियम के लेखक जो पवित्र आत्मा की प्रेरणा प्राप्त थे इसी बात को मानते थे (देखें, 2 पत 1:20-21)।

कलीसिया ने पुराने नियम के कानोन को स्वीकार किया (देखें, विशेष विषय : कानोन)। कलीसिया ने पवित्र शास्त्र को पूर्ण रूप से प्रेरणा-प्राप्त माना (देखें मत्ती 5:17-19)। कलीसिया ने यह भी माना कि नया नियम जिसमें यीशु के वचनों और कार्यों का उल्लेख है, अंतिम प्रकाशन है (देखें मत्ती 5:21-28; इब्रा 1:1-2)। यीशु, यहोवा (YHWH) का पूर्ण, और अंतिम प्रकाशन है (देखें, यूहन्ना 1:1-5, 14; कुल 1:15-16)। वह मसीह संबंधी पुराने नियम की समस्त प्रतिज्ञाओं की पूरिपूर्ति करता है देखें विशेष विषय: मसीहा (जैसे, मत्ती 26:31,56;14:27,49; लूका 20:17; यूहन्ना 12:14-16; 13:18; 15:25; 17:12; 19:24-36; प्रेरि 1:16;3:18,21-26;4:25-28)।

इससे पहले कि कोई पवित्रशास्त्र को समझे, पवित्र आत्मा द्वारा उसके हृदय को खोल देना चाहिए (देखें, विशेष विषय: प्रकाशन प्रेरि 8:34-35;13:27)। पवित्र आत्मा की प्रेरणा प्राप्त बाइबल लेखकों ने मानवीय शब्दों में परमेश्वर के आत्मा-प्रकाशन को जो यीशु में हुआ, व्यक्त किया है (देखें, यूह 14:26;15:26-27;1 कुरि 2:10-11,13-16)।

मिलर्ड जे. एरिकसन की पुस्तक "क्रिश्चियन थियोलॉजी" (Millard J. Erickson, *Christian Theology*, 2nd ed., pp. 224-245.) में अच्छी जानकारी दी गई है।

साथ ही जॉन. एच. वाल्टन और ब्रेंट सैन्डी की पुस्तक "द लॉस्ट वर्ल्ड ऑफ स्क्रीप्चर" (John H. Walton and D. Brent Sandy, *The Lost World of Scripture* (2013).) में भी अच्छी और विस्तृत जानकारी पाई जाती है।

विशेष विषय: बाइबल (यह अनोखी और उत्साह देने वाली)
विशेष विषय: बाइबल (बॉब की पूर्वकल्पना)

Copyright © 2014 Bible Lessons International

विशेष शीर्षक: अन्तर्दृष्टि पाना

भूतकाल में स्वयं को स्पष्टरूप से प्रकट करने के लिए परमेश्वर क्रियाशील रहा है (जैसे, सृष्टि निर्माण, जलप्रलय, पूर्वजों की बुलाहट, निर्गमन, विजय-प्राप्ति इत्यादि)। धर्मविज्ञान (Theology) में इसे "प्रकाशन" (revelation) कहा जाता है। परमेश्वर ने अपने इस आत्म-प्रकाशन को लेखबद्ध कराने और समझाने के लिए अनेक लोगों को चुना (उदाहरणार्थ, यूह. 14:26; 16:12-15)। धर्म विज्ञान में इसे "प्रेरणा" (inspiration) कहा जाता है। परमेश्वर ने अपना पवित्र आत्मा पाठकों की सहायता के लिए भेजा कि वे उसे, उसकी प्रतिज्ञाओं को, उसके प्रावधानों व प्रबन्ध को और विशेषकर आने वाले मसीह को समझ सकें। धर्म विज्ञान (Theology) में इसे "समझ प्राप्त करना" या "ज्योर्तिमय होना" (illumination) कहा जाता है। जबकि पवित्र आत्मा परमेश्वर को समझाने में संलग्न है, तो समस्याएँ क्यों आती हैं, और क्यों परमेश्वर और उसकी इच्छा के संबंध में और उसकी युक्तियों के संबंध में अनेक व्याख्याएँ पाई जाती है?

कुछ समस्याएँ तो पाठकों के पूर्व-ज्ञान अथवा व्यक्तिगत अनुभवों में पाई जाती हैं। अक्सर बाइबल से प्रमाण देकर अपनी व्यक्तिगत बातों का समर्थन किया जाता अथवा उन्हें सिद्धांत रूप में प्रस्तुत किया जाता है। अक्सर बाइबल पर धर्म वैज्ञानिक बातें थोप दी जाती हैं और बाइबिल को अनुमति दी जाती है कि वह कुछ क्षेत्रों में बोले और निर्धारित तरीके से बोले। समझ प्राप्त करने (illumination) को प्रेरणा (Inspiration) के बराबर नहीं ठहराया जा सकता है, हालांकि दोनों में पवित्र आत्मा क्रियाशील रहता है। नए नियम के बाद "प्रेरणा" प्राप्त होना समाप्त हो चुका है (यहूदा 3,20)। नए नियम के अधिकांश पाठांश जो समझ प्राप्त करने से संबंध रखते हैं वे सुसमाचार का ज्ञान और मसीह समान जीवन जीने की ओर संकेत करते हैं (देखें, रोमियो 8:12-17; 1 कुरि. 2:10-13; फिलि. इफी 1:17-19, 1:9-11; कुलु. 1:9-13; 1 यूहन्ना 2:20:27)।यही वास्तव में "नई वाचा" की एक प्रतिज्ञा है (देखें, यिर्म. 31:31-34)।

सबसे अच्छा तरीका, जिसके द्वारा विश्वासी पवित्र आत्मा की सहायता से प्रकाशन को समझ सकता है वह यह हो सकता है कि हम पैराग्राफ के मूल विचार को खोजें, न कि पाठांश के प्रत्येक पद की व्याख्या करें। मूल विचार ही मूल लेखक के अभिप्राय का अर्थ हम तक पहुंचाता है। पुस्तक अथवा साहित्य इकाई की रूपरेखा बनाना प्रेरणा-प्राप्त मूल लेखक के अभिप्राय को समझने में हमारी सहायता करता है। कोई भी टीकाकार प्रेरणा-प्राप्त नहीं होता है। हम बाइबल लेखक के व्याख्या करने के तरीके की दुबारा रचना नहीं कर सकते हैं (अर्थात प्रेरणा प्राप्त करना)। वे अपने समय के लोगों को क्या संदेश दे रहे थे, हमें उसे समझने का प्रयास करना चाहिए और फिर उस सच्चाई को अपने समय पर लागू करना चाहिए। बाइबल के कुछ पाठांश संदिग्ध व छिपे हुए होते हैं (कुछ समय तक) किसी विषय अथवा पाठांश के संबंध में सदैव मतभेद पाए जाते रहेंगे परंतु हमें केंद्रीय सच्चाई को स्पष्ट रूप से बताना चाहिए और मूल लेखक के अभिप्राय की सीमा के अंतर्गत अन्य विश्वासियों को व्याख्या की स्वतंत्रता देनी चाहिए। टीकाकारों को उसी ज्ञान के अनुसार चलना चाहिए जो उनके पास है, तथा सदैव बाइबल और पवित्रात्मा की ओर से और अधिक ज्ञान पाने के लिए तैयार रहना चाहिए। परमेश्वर हमारी समझ के और हम उस समझ के अनुसार कैसा जीवन जीते हैं, न्याय करेगा।

चूँकि पवित्र आत्मा प्रकाशन में महत्वपूर्ण है, इसलिए मैं अपने विचारों को बाइबल की व्याख्या के "आत्मिक पहलू" पर सम्मिलित करता हूँ। निम्नलिखित बाइबिल व्याख्या पर मेरे संगोष्ठी से लिया गया है (अर्थात, व्यावहारिक प्रक्रियाएं. www.freebiblecommentary.org

बाइबल अध्ययन के आत्मिक पहलू (जो इतना आवश्यक है) पर चर्चा करना मुश्किल है क्योंकि पर्मेश्वरिय, शिक्षित, ईमानदार विश्वासियों द्वारा पुष्टि की गई विभिन्न व्याख्याओं की विशाल श्रृंखला है।

1. हर बार जब हम पढ़ते हैं और बाइबल को समझने का प्रयास करते हैं तो आत्मा की सहायता के लिए प्रार्थना करें (1 कुरिं. 1:26-2:16)।
2. व्यक्तिगत पवित्रता के लिए प्रार्थना करें (1 यूहन्ना 1:9)।
3. परमेश्वर को जानने की अधिक इच्छा के लिए प्रार्थना करें (भजन 19:7-14; 42:1भावी पद; 119:1)।

4. अपने स्वयं के जीवन में नई अंतर्दृष्टि लागू करें (इफी 4:1; 5:2,15; 1 यूहन्ना 1:7)।
5. एचएच रोवले (H. H. Rowley): "यह मानता है कि बाइबल की कोई भी बौद्धिक समझ, चाहे कितनी भी पूर्ण क्यों न हो, इसके सभी खजाने को प्राप्त नहीं कर सकती है। यह ऐसी समझ से घृणा नहीं करती है, क्योंकि यह पूरी समझ के लिए आवश्यक है। लेकिन इसे आत्मिक समझ की ओर ले जाना चाहिए। इस पुस्तक के आत्मिक खजाने को पूर्ण होना है। और उस आत्मिक समझ के लिए बौद्धिक सतर्कता से अधिक कुछ आवश्यक है। आत्मिक चीजें आत्मिक रूप से समझी जाती हैं, और बाइबल छात्र को आत्मिक ग्रहणशीलता के दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है, परमेश्वर के खोजने के लिए एक उत्सुकता की आवश्यकता होती है। यदि वह अपने वैज्ञानिक अध्ययन से आगे बढ़कर इस महानतम पुस्तकों की समृद्ध विरासत तक पहुंचना चाहता है, तो स्वयं को उसके हवाले कर दें।" बाइबल की प्रासंगिकता (पृष्ठ 19)।
6. द एक्सपोज़िटर्स बाइबल कमेंट्री, वॉल्यूम 1, पेज 66-67(The Expositor's Bible Commentary, vol. 1, pp. 66-67) में एक अच्छा लेख पाया गया है।
7. गॉर्डन डी. फी द्वारा लिखित एक अच्छी किताब लिसनिंग टू द स्पिरिट इन द टेक्स्ट है। (Gordon D. Fee. Listening to the Spirit in the Text)

Copyright © 2014 Bible Lessons International

■ **"शमौन जो नीगर कहलाता है"** नीगर लैटिन भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है काला। कुछ टीकाकार इस शमौन का संबंध मरकुस 15:21 के शमौन से जोड़ते हैं।

■ **"लूकियुस कुरेनी"** संभवतः यह यूनानी भाषा बोलने वाला विश्वासी था जिसने अन्ताकिया के गैर यहूदियों के मध्य सुसमाचार प्रचार किया (देखें, प्रेरि. 11:20)। यह रोमि. 16:21 का लूकियुस नहीं है।

■ **"दूधभाई मनाहेम को हेरोदेस के साथ लाया गया था"** इब्रानी शब्द मनाहेम का यूनानी शब्द "मनोऐन" (*leitourgia*) है जिसका अर्थ है "शान्ति देने वाला" इसका पालन-पोषण हेरोदेस के साथ हुआ था और उसका दुधभाई था। प्रेरि. 12 की भूमिका में हेरोदेस अंतीपास की जानकारी देखें । लूका ने संभवतः इसी मनुष्य के द्वारा हेरोदेस अंतीपास (चैथाई के राजा) की विस्तृत जानकारी पाई होगी।

13:2
NASB "आराधना कर रहे थे"
NKJV "उपासना कर रहे थे"
NRSV "आराधना कर रहे थे"
TEV "प्रभु की सेवा कर रहे थे"
NJB "आराधना कर रहे थे"

यहाँ पर यूनानी शब्द "लिटौरज़िया" (*leitourgia)* प्रयुक्त किया गया है (जो दो कार्यों से मिलकर बना है "सार्वजनिक कार्य" तथा "कार्य") और इसी शब्द से हमें अंग्रेजी शब्द "लिटरजी" (*liturgy*) प्राप्त हुआ है। मूलरूप से यह शब्द ऐसे मनुष्य की ओर संकेत करता है जो अपने खर्चे पर सार्वजनिक सेवा करता है। परन्तु इस सन्दर्भ में इसका अर्थ है वह समय जिसमें आराधना करते समय परमेश्वर की इच्छा जानने का प्रयास किया जाता है। क्रिया शब्द पूरे चर्च की ओर अथवा केवल यहाँ वर्णित पांच लोगों की ओर संकेत कर सकते हैं।

■ **"उपवास किया"** पुराने नियम में केवल प्रायश्चित-दिवस पर साल में एक बार उपवास रखा जाता था, लैव्यव्यवस्था 16 में देखें। परन्तु प्रथम शताब्दी में रब्बियों ने इसमें दो साप्ताहिक उपवासों को भी जोड़ दिया। हालांकि विश्वासियों के लिए उपवास रखने की स्पष्ट आज्ञा नहीं है, तौभी कभी कभी परमेश्वर को जानने में इससे बड़ी सहायता मिलती है (देखें प्रेरि. 14:23)।

विशेष शीर्षकः उपवास

हालांकि नए नियम में उपवास रखने की आज्ञा नहीं दी गई है तौ भी यीशु के चेलों से अपेक्षा की गई है कि उचित समय पर वे उपवास रखे (देखें, मत्ती 6:16-17; 9:15; मरकुस 2:19; लूका 5:35)। सही उपवास का वर्णन यशायाह 58 में किया गया है। यीशु ने स्वयं भी उपवास रखा था (देखें, मत्ती 4:2)। प्रथम कलीसिया भी उपवास रखती थी (देखें, प्रेरि. 13:2-3; 14:23; 2 कुरि. 6:5; 11:27)। किस उद्देश्य से और किस तरीके से उपवास रखा है, यह महत्वपूर्ण बात है, कितना लम्बा और कितनी बार उपवास रखा यह सब महत्वहीन होता है। नए नियम के विश्वासियों के लिए पुराने नियम का उपवास आवश्यक शर्त नहीं है (देखें, प्रेरि. 15:19-29)। उपवास रखना, अपनी धार्मिकता या आत्मिकता को प्रदर्शित करने का साधन नहीं है (देखें, यशा. 58; मत्ती 6:16-18), परंतु यह परमेश्वर के निकट आने और उसका मार्गदर्शन पाने का तरीका है (यीशु, मत्ती 4:2)। आत्मिक रूप से उपवास लाभदायक हो सकता है।

आरंभिक कलीसिया की तपस्यावाद में रुचि के कारण शास्त्री लोगों ने कुछ पठांशों में "उपवास" को भी सम्मिलित कर दिया (देखें, मत्ती 17:21; मरकुस 9:29; प्रेरि. 10:30; 1 कुरि. 7:5)। इस विषय में विस्तृत जानकारी के लिए ब्रूस मेट्सगर की पुस्तक "ए टैक्चुअल कमन्ट्री ऑन द ग्रीक न्यू टैस्टामेन्ट" देखें (Bruce Metzger's *A Textual Commentary on the Greek New Testament*, published by United Bible Societies) जिसका प्रकाशन यूनाइटिड बाइबल सोसायटी ने किया है।

Copyright © 2014 Bible Lessons International

■ **"पवित्र आत्मा ने कहा"** यह पवित्र आत्मा के व्यक्तित्व का एक और बाइबल का प्रमाण है (देखें विशेष शीर्षक प्रेरि. 1:2 में) यह बात स्पष्ट नहीं है कि उन्हें आवाज सुनाई दी या उन्होंने मनों में महसूस किया (देखें, प्रेरि. 8:29; 10:19; 11:12; 20:23; 21:11)। परन्तु यह स्पष्ट है कि सन्देश स्पष्ट और विशेष था (प्रेरि. 16:6-7), संभवतः उनमें उपस्थिति किसी नबी द्वारा संदेश दिया गया हो।

■ **"अलग करो"** यह वर्तमान कालीन आदेशात्मक कथन है। यहाँ प्रयुक्त शब्द (*aphorizō)* अफोरिज़ो का वही अर्थ है जो "पवित्र" (*hagiazō)* का है। इसका अर्थ है, दिव्य कार्य के लिये अलग करना (देखें, रोमि. 1:1; गला. 1:15)।

■ यूनानी भाग का यह शब्द जो पवित्र करने या अलग करने के लिए प्रयुक्त हुआ है
वह यूनानी पाठ में "जिसके लिए बुलाया गया" के बाद *dē* है इस कार्य के महत्व पर ज़ोर देता है कि यह ज़रूरी कार्य है (देखें, लूका 2:15; 1 कुरि. 6:20)। यह पवित्र आत्मा की आज्ञा का पालन तुरन्त करने का भाव प्रकट करता है। यह प्रेरि. 15:36 के पौलुस के कथन के समान है।

■ **"जिस काम के लिए मैं ने उन्हें बुलाया है"** यह पवित्र आत्मा की ओर से एक निश्चित बुलाहट है, और पवित्र आत्मा ही सेवकाई के कार्य के लिए सामर्थी भी बनाता है (देखें, 1 कुरि. 12:7,11)।

13:3 उन्हें विदा किया विदा करते समय तीन प्रकार की आत्मिक तैयारियाँ की गईं, तब अंताकिया की कलीसिया से पहली मिशनरी यात्रा के लिए दोनों भेजे गये-

1. उपवास रखा गया।
2. प्रार्थना की गई।
3. सिर पर हाथ रखे गए।

ऐसा प्रतीत होता है कि यह कार्य सम्पूर्ण कलीसिया ने मिलकर किया, न कि केवल उस कलीसिया के नबियों और शिक्षकों ने। महान आज्ञा को पूरा करने में पूरी कलीसिया को सम्मिलित होना चाहिए।'

▪ **"उन पर हाथ रखकर"** यह एक अस्पष्ट बाइबल पद है, जिस पर वर्तमान समय की "अभिषेक करने की" विधि आधारित है। इस पद को अपनी संस्था की अभिषेक-विधि का आधार नहीं बनाना चाहिए क्योंकि बाइबल में "हाथ रखने" के बहुत से उदाहरण पाए जाते हैं जैसे:

1. पुराने नियम में "हाथ रखने" के उद्देश्य:
    a. बलि चढ़ाते समय, एकीकरण का प्रतीक (देखें, लैव्य. 1:4; 3:2; 4:4; 16:21)
    b. आशीर्वाद का प्रतीक (देखें उत्पत्ति 48:13 क्रमशः; मत्ती 19:13, 15)
    c. उत्तराधिकारी नियुक्त करना (देखें, गिनती 27:23; व्य. वि. 34:9)
2. नए नियम में हाथ रखने के विभिन्न कारण:
    a. चंगाई के लिये (लूका 4:40; 13:13; प्ररि. 9:17; 28:8)।
    b. विशेष कार्य के लिए समर्पण (प्रेरि. 6:6; 13:3)
    c. पवित्र आत्मा और आत्मिक वरदान पाने से संबंध (प्रेरि. 8:17; 19:6; 1 तीमु. 4:14; 2 तीमु. 1:6)।
    d. हाथ रखना, यहूदी धर्म अथवा कलीसिया की मूल शिक्षा के रूप में (देखें इब्रानियों 6:2)।

हाथ रखना उनके लिये नया अनुभव नहीं था। ये मनुष्य पहले ही से बुलाए हुए, वरदान प्राप्त और सेवकाई में व्यस्त रहने वाले अगुवे थे। वे किसी नई सेवकाई के लिए नहीं बुलाए गये थे, पर उसी सेवकाई को जिसे वे करते रहे थे, और अधिक विस्तरित रूप से करने के लिए बुलाए गये थे।

हाथ रखकर उनका अभिषेक इसलिए किया गया ताकि अन्य विश्वासियों और उनके बीच अन्तर दिखाई दे। इससे साधारण लोग और पुरोहित के बीच विभाजन होता है। जब भी नए नियम में यूनानी शब्द क्लेरारॅस *(cleros)* और लाऔस ;स्वेद्ध का प्रयोग हुआ है तो सदैव इस का संकेत विश्वासियों के समूह की ओर रहता है। सभी विश्वासीगण सुसमाचार प्रचार के पूर्ण कालिक सेवक के रूप में बुलाए गये हैं और सभी वरदान प्राप्त हैं, (देखें, इफि.4:11-12)। बाइबल में ऐसा कोई प्रमाण नहीं पाया जाता है जो विश्वासियों को वंशागत रूप से समूहों में बाँटे। मसीह की देह की सेवकाई के लिए सभी विश्वासी सेवा के योग्य है और वरदान प्राप्त हैं (देखें, 1 कुरि. 12:7,11)।

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 13:4-12
4अतः वे पवित्र आत्मा के भेजे हुए सिलूकिया को गए; और वहाँ से जहाज पर चढ़कर साइप्रस को चले;
5और सलमीस में पहुँचकर, परमेश्वर का वचन यहूदियों के आराधनालयों में सुनाया। यूहन्ना उनका
सेवक था। 6वे उस सारे टापू में होते हुए पाफुस तक पहुँचे। वहाँ उन्हें बार-यीशु नामक एक यहूदी टोन्हा
और झूठा भविष्यद्वक्ता मिला। 7वह हाकिम सिरगियुस पौलुस के साथ था, जो बुद्धिमान पुरुष था।
उसने बरनबास और शाऊल को अपने पास बुलाकर परमेश्वर का वचन सुनना चाहा। 8परन्तु इलीमास
टोन्हे ने, क्योंकि यही उसके नाम का अर्थ है, उनका विरोध करके हाकिम को विश्वास करने से रोकना
चाहा। 9तब शाऊल ने जिसका नाम पौलुस भी है, पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो उसकी ओर टकटकी
लगाकर देखा और कहा, 10"हे सारे कपट और सब चतुराई से भरे हुए शैतान की सन्तान, सकल धर्म के
बैरी, क्या तू प्रभु के सीधे मार्गों को टेढ़ा करना न छोड़ेगा? 11अब देख, प्रभु का हाथ तुझ पर लगा है;
और तू कुछ समय तक अंधा रहेगा और सूर्य को न देखेगा।" तब तुरन्त धुंधलापन और अन्धेरा उस पर
छा गया, और वह इधर उधर टटोलने लगा ताकि कोई उसका हाथ पकड़के ले चले। 12तब हाकिम ने
जो हुआ था उसे देखकर और प्रभु के उपदेश से चकित होकर विश्वास किया।

13:4 "पवित्र आत्मा के भेजे हुए" यहाँ पर सन्दर्भ स्थानीय कलीसिया के अधिकार के बारे में नहीं परन्तु पवित्र आत्मा के अधिकार के बारे में बताता है। पवित्र आत्मा, त्रिएकत्व का भाग है (देखें प्रेरि. 2:32 में विशेष शीर्षक) जिस पर संपूर्ण पुस्तक बल देती है। "मसीह का नया युग" "पवित्र-आत्मा का युग" कहलाता है। इस युग में पवित्र आत्मा लोगों को बुलाता है, निर्देश देता है, वरदानों से परिपूर्ण करता है, पापों के प्रति कायल करता है और लोगों को सामथ्र्य से परिपूर्ण करता है (देखें, यूहन्ना 14:16-17, 26;15:26; 16:7-15)। पवित्र आत्मा की उपस्थिति और उसकी आशीष के बिना कोई भी सेवकाई चिरस्थाई और प्रभावशाली नहीं हो सकती है।

▪ **''सिलूकिया''** यह सीरिया के अन्ताकिया का एक बन्दरगाह था। यह दक्षिण-पश्चिम की ओर लगभग पन्द्रह मील की दूरी पर स्थित था। इस शहर का नाम सिकन्दर महान के सेनापति सैल्यूकस के नाम पर रखा गया था जिसने सिकन्दर की मृत्यु के बाद इस क्षेत्र में राज्य किया था।

▪ **''साइप्रस''** यहाँ पर बरनबास का घर था (देखें, प्रेरिः 4:36)। यहाँ पर बड़ी संख्या में यहूदी रहा करते थे। पुराने नियम में इस स्थान का नाम कित्तीम (*Kittim)* था। वहाँ पर पहले भी सुसमाचार का प्रचार किया जा चुका था (देखें, प्रेरि. 11:19-20)।

13:5 ''सलमीस'' यह साइप्रस टापू की पूर्वी दिशा में स्थित समुद्री तट पर बसा हुआ एक नगर था। यह व्यापार का केन्द्र था।

▪ **''परमेश्वर का वचन आराधनालयों में सुनाया''** यहूदियों के आराधनालयों में परमेश्वर का वचन सुनाने का कारण स्पष्ट है:

1. ये यहूदी पुराने नियम से भली-भाँति परिचित थे।
2. यहूदी परमेश्वर के चुने हुए लोग थे (उत्पत्ति 12:1-3) तथा उनकी प्रथम जिम्मेदारी बनती थी कि वे सुसमाचार के प्रति अपना प्रत्युत्तर दें (प्रेरि. 3:26; 13:46; 17:2; 18:4, 19; 19:8; रोमि. 1:16)
3. आराधनालयों में गैर यहूदियों की भी आराधना होती थी जो सच्चे परमेश्वर पर विश्वास करने लगे थे और वे पुराने नियम की भी जानकारी रखते थे।

आराधनालयों में जाकर प्रचार करना पौलुस की मिशनरी यात्रा का नियमित भाग बन गया था।

▪ **''यूहन्ना''** यह यूहन्ना मरकुस की ओर संकेत है जिसके घर में प्रथम कलीसिया आराधना किया करती थी (प्रेरि. 12:12)। परम्परागत रूप से यही मनुष्य मरकुस रचित सुसमाचार का लेखक माना जाता है जिसने पतरस की आँखों देखी बातों को लेखबद्ध किया। इसी के कारण बरनबास और पौलुस के बीच मतभेद हो गया था और मिश्नरी टीम बँट गई थी (देखें, प्रेरि. 15:36-41)। परन्तु बाद में चलकर पौलुस ने यूहन्ना मरकुस के बारे में सकारात्मक बातें लिखीं (देखें, कुलु. 4:10; 2 तीमु. 4:11 तथा फिलेमोन 1:24)। प्रेरि. 16 की भूमिका में विस्तृत टिप्पणी देखें।

13:6 ''वे उस सारे टापू में होते हुए'' संभवतः इसका अर्थ है कि वे कुछ समय तक रूके और प्रत्येक आराधनालय में, जो वहाँ पाए जाते थे, जा जाकर सुसमाचार प्रचार किया।

▪ **''पाफुस''** यह नए पाफुस नगर की ओर संकेत करता है जो पुराने नगर फीनीके से करीब पाँच मील की दूरी पर स्थित था। इन दोनों नगरों के नाम यहाँ के देवता पाफियान के नाम पर रखे गए थे। यह प्रेम का देवता माना जाता था और इसे अरतिमिस, और वीनस (*Aphrodite*, *Astarte*, *Venus*,)भी कहा जाता था। यह नगर साइप्रस की राजनैतिक राजधानी था।

▪ **''बार-यीशु''** यह मनुष्य एक झूठा यहूदी नबी था। उसके नाम का अर्थ है यहोशू का पुत्र! प्रेरि. 13:8 से ज्ञात होता है कि वह इलीमास टोन्हे के नाम से प्रसिद्ध था। "जादूगर" (प्रेरितों के काम 13:10)। प्रेरितों के काम 8 :9 में विशेष विषय देखें।

13:7 ''हाकिम सिरगियुस पौलुस'' लूका के द्वारा प्रस्तुत किये गए इस विवरण के विषय में वाद-विवाद किया जाता है कि यह ऐतिहासिक विवरण नहीं है परन्तु यह विवरण ऐतिहासिक रूप से बिल्कुल सही है। लूका सिरगियुस को एक हाकिम अर्थात् राज्यपाल कहता है, इसका अर्थ यह हुआ कि साइप्रस रोमी साम्राज्य का एक प्रान्त था। अगस्तुस कैसर ने 22 ई. में इसे रोमी प्रान्त घोषित किया था। सलोई के लैटिन हस्तलेखों द्वारा पता चलता

है कि सिरगियुस पौलुस 53 ई. में राज्यपाल नियुक्त किया गया था। प्रथम शताब्दी के मैडीटेरियन क्षेत्र की जितनी पुरातत्व खोजें की जा रही हैं उन सब से सिद्ध हो रहा है कि लूका का यह विवरण बिल्कुल सही है।

■ **''एक बुद्धिमान पुरुष''** इन शब्दों के बहुत से अर्थ हो सकते हैं, परन्तु इस सन्दर्भ में हम कह सकते हैं कि वह राज्यपाल पद संभालने और राज्य करने के योग्य था। इन शब्दों से यह भी सिद्ध होता है कि सुसमाचार न केवल निर्धन और अनपढ़ लोगों को ही प्रभावित करता है बल्कि धनी और बुद्धिमान लोगों को भी प्रभावित करता है (देखें मनाइन 13:1)। यह भी संभव हो सकता है कि प्रेरितों के काम पुस्तक को लिखने का लूका का उद्देश्य यह दर्शाना है कि सुसमाचार रोमी साम्राज्य को धमकी नहीं देता है।

13:8 ''इलीमास'' ऐसा प्रतीत होता है कि यह यूनानी शब्द इसका अनुवाद है:

1. बुद्धिमान मनुष्य के लिये प्रयुक्त अरबी शब्द का जैसे बुद्धिमान, शगुन बताने वाला, भविष्य की बातें बताने वाला, अदृश्य शक्तियों को वश में रखने वाला, एबी भाग 2, पेज 487(AB, vol. 2, p. 487)
2. आरामी शब्द का अनुवाद जो स्वप्नों का अर्थ बताने वाले के लिये प्रयुक्त होता है।

■ **''टोन्हे''** यह शब्द ''ज्योतिषियों'' से संबंधित है। इसमें वे सब लोग आते हैं जिनका वर्णन दानिय्येल की पुस्तक में है जैसे, कसदी, तंत्री इत्यादि (देखें, दानि. 2:2; 4:9; मत्ती 2:1)। परन्तु पौलुस के दिनों में यह शब्द रोमी साम्राज्य के अन्तर्गत भ्रमणशील जादूगरों व टोन्हों के लिये प्रयुक्त होता था। देखें प्रेरि. 8:9 में विशेष शीर्षक।

■ **''विश्वास''** यह शब्द नए नियम में तीन प्रकार से प्रयुक्त हुआ है:

1. प्रभु यीशु को अपना व्यक्तिगत उद्धारकर्त्ता स्वीकार करने के रूप में।
2. विश्वासयोग्यता के साथ भला जीवन व्यतीत करने के रूप में।
3. सुसमाचार में पाई जाने वाली धर्मवैज्ञानिक शिक्षा पर विश्वास (अर्थात् धर्म शिक्षा, देखें यहूदा 3,20) प्रेरि.

6:7 में भी ऐसी ही समस्या पाई जाती है। संदर्भ को देखते हुए यहां पर उपरोक्त 3 सही बैठता है। प्रेरि. 3:16 और 6:5 में विशेष विषय देखें।

13:9 ''पौलुस '' प्रेरितों के नाम पुस्तक में यहां पर पहली बार पौलुस का रोमी उपनाम ''पौलुस'' इस्तेमाल में लाया गया है। पौलुस एक यूनानी शब्द है जिसका अर्थ है ''छोटा'' अथवा नाटा। कुछ लोग मानते हैं कि यह शब्द पौलुस प्रेरित के शारीरिक कद को दर्शाता है कि वह नाटा था। परन्तु अन्य कहते हैं कि यह शब्द उसके अपने व्यक्तिगत मूल्यांकन को दर्शाता है कि वह प्रेरितों की सूची में सबसे छोटा है क्योंकि उसने कलीसिया को सताया था। अधिक संभावना यह है कि उसके माता-पिता ने उसके जन्म पर यह पौलुस नाम उसे दिया।

■ **''पौलुस ने पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होकर''** जो पवित्र आत्मा आरम्भिक कलीसिया का मार्गदर्शन करता था उसकी सामथ्र्य का वर्णन परिपूर्णता से किया गया है (देखें, प्रेरि. 2:4; 4:8, 31; 6:3; 7:55; 9:17; 13:9, 52)। सामान्य रूप से सभी विश्वासी पवित्रात्मा से परिपूर्ण रहा करते थे (देखें, इफि. 5:18)। प्रेरितों के काम पुस्तक में पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होने का सम्बन्ध सुसमाचार को सामर्थ के साथ प्रचार करने से जुड़ा है।

■ **''टकटकी लगाकर देखा''** प्रेरि. 1:10 में टिप्पणी देखें।

13:10 पौलुस यहां पर उस झूठे यहूदी नबी को कई शब्दों द्वारा सम्बोधित करता है, जैसे:

1. ''हे सारे कपट से भरे हुए'' अर्थात् लालची मनुष्य (लूका ने केवल यहीं पर यह शब्द प्रयोग किया)

2. ''सब चतुराई से भरे हुए'' यह ऐसे यूनानी शब्द से बना है जिसका अर्थ ऐसे कार्य से है जो हलके से किया जाता है परन्तु बाद में उसके द्वारा बुराई की जाती है (प्रेरि. 18:14)। यह शब्द केवल प्रेरि. 13:10; 18:14; में ही पाया जाता है।
3. ''शैतान की सन्तान'' यह सामी भाषा का मुहावरा है (देखें, प्रेरि. 3:25; 4:36) जो शैतानी कार्यों को दर्शाता है (देखें, मत्ती 13:38; यूह. 8:38, 41,44; देखें प्रेरि. 5:3 में विशेष टिप्पणी)
4. ''सकल धर्म के बैरी'' यह शब्द लूका के लेखों में पुराने नियम के उद्धरणों सहित अनेक बार इस्तेमाल किया गया है (देखें, लूका 1:71,74; 20:43; प्रेरि. 2:35)। यह मनुष्य उन सबके विरुद्ध था, जो परमेश्वर के समान है। देखें प्रेरि. 3:14 में विशेष शीर्षक: धार्मिकता
5. पौलुस इस मनुष्य की भ्रष्टता दर्शाने के लिए तीन बार ''सब'' शब्द का यहाँ प्रयोग करता है।

▪ **''प्रभु के सीधे मार्गों को टेढ़ा करना न छोड़ेगा?''** इस प्रश्न का उत्तर हां में है। नए नियम में ''सीधा मार्ग'' पुराने नियम के शब्द धार्मिकता को प्रकट करता है जो मापने का एक मानदण्ड है। नए नियम के ''टेड़ा'' और दूषित'' शब्द पुराने नियम के पाप शब्द को दर्शाते हैं, जो मानदण्ड के स्तर से गिर जाना है, वह मानदण्ड स्वयं परमेश्वर है। इस मनुष्य ने सब कुछ टेढ़ा कर दिया था (अर्थात् धार्मिकता के विपरीत)। देखें प्रेरि. 3:14 में विशेष विषय:

13:11 ''प्रभु का हाथ '' यह सामी भाषा का एक मुहावरा है, जो यहोवा (YHWH) परमेश्वर की उपस्थिति को दर्शाता है (देखें, लूका 1:66; प्रेरि. 11:21)। पुराने नियम मे अक्सर यह परमेश्वर के दण्ड का प्रतीक है (देखें, निर्गमन 9:3; 1 शमू. 5:6; अय्यूब 19:2; 23:2, भजन 32:4; 38:2; 39:10) यहाँ पर भी यह दण्ड का प्रतीक है।

▪ **''तू अंधा हो जाएगा''** जिन कड़े शब्दों में पौलुस ने इस मनुष्य की दशा का वर्णन किया और उस मनुष्य पर पड़े दण्ड उल्लेख किया, वह पौलुस की पिछली जिन्दगी की एक झलक हो सकती है। अब वह अपनी पिछली दिनचर्या पर दृष्टि करता है कि वह स्वयं भी इसी झूठे नबी की तरह था (देखें, प्रेरि. 9:8)। अंधापन अक्सर आत्मिक बातों की जानकारी न रखने के संदर्भ में प्रयोग किया जाता है (देखें, यूहन्ना 9; प्रेरि. 9; व्यव. वि. 28:28-29 पर भी ध्यान दें)

13:12''उसे देखकर विश्वास किया'' यह वही यूनानी शब्द पिस्तेयो (*pisteuō*) है जो सम्पूर्ण नये नियम में सच्चा विश्वास करने के संबंध में प्रयुक्त किया गया है। इस हाकिम अथवा राज्यपाल ने सुसमाचार संदेश सुनकर सकारात्मक प्रत्युत्तर दिया। यहाँ पर एक मनुष्य की आँखें तो अंधी हो जाती हैं परन्तु दूसरे की आँखें खुल जाती हैं। यह विश्वास करने या विश्वास न करने के फलस्वरूप होता है (देखें, यूहन्ना 9)। देखें, प्रेरि. 3:16 में विशेष विषय ''विश्वास'' तथा प्रेरि. 6:5 में ''पुराने नियम का विश्वास''।

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 13:13-16a
[13]पौलुस और उसके साथी पाफुस से जहाज खोलकर पंफूलिया के पिरगा में आए; और यूहन्ना उन्हें छोड़कर यरूशलेम को लौट गया। [14]पिरगा से आगे बढ़कर वे पिसिदिया के अन्ताकिया में पहुँचे; और सब्त के दिन आराधनालय में जाकर बैठ गये। [15]व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तक से पढ़ने के बाद आराधनालय के सरदारों ने उनके पास कहला भेजा, ''हे भाइयो, यदि लोगों के उपदेश के लिये तुम्हारे मन में कोई बात हो तो कहो।'' [16]तब पौलुस ने खड़े होकर और हाथ से संकेत करके कहा; ''हे इस्राएलियो, और परमेश्वर से डरनेवालो, सुनोः

13:13 ''पौलुस और उसके साथी'' यहाँ स्पष्ट रूप से हम देखते हैं कि नेतृत्व में परिवर्तन हो गया है। प्रेरितों के काम पुस्तक में यहाँ से आगे तक पौलुस का नाम सूची में पहले आता है।

▪ **" पंफूलिया के पिरगा "** रोमी प्रान्त पंफूलिया में पिरगा सबसे बड़ा नगर था, जो टर्की की दक्षिणी-मध्य दिशा में स्थित था। यह नगर मीलों अन्दर था इसलिए समुद्री डाकू यहां आक्रमण नहीं करते थे।
स्पष्ट रूप से पौलुस ने इस समय यहाँ पर सुसमाचार प्रचार नहीं किया परन्तु कुछ समय बाद आकर प्रचार किया (देखें प्रेरि. 14:25)। कई सौ वर्षों तक यहाँ पर मसीही समूह मिलने के ऐतिहासिक प्रमाण नहीं मिलते हैं। वह इस नगर से होकर आगे बढ़ जाता है।

▪ **"यूहन्ना उन्हें छोड़कर यरूशलेम को लौट गया"** लूका ने यह विवरण लेखबद्ध तो कर दिया परन्तु उसने कारण नहीं बताया कि क्यों वह उन्हें छोड़कर यरूशलेम को लौट गया और न ही नए नियम के किसी अन्य लेखक ने इसका कारण बताया है। वह प्रभु की सेवा करने के लिए लौट गया था, प्रेरि. 16 की भूमिका देखें।

13:14 "पिसिदिया के अन्ताकिया" इसका शाब्दिक अर्थ है कि वे पिसिदिया की ओर अन्ताकिया में पहुंचे क्योंकि यह गलतिया नामक रोमी प्रान्त के पिरगिया क्षेत्र के गैर यहूदी क्षेत्र में स्थित था। यह एक भिन्न प्रकार का गैर यहूदी इलाका था, संभवतः यहां यूरोप से आए हुए लोग रहते थे।

▪ **"सब्त के दिन"** शुक्रवार सूर्यास्त से शनिवार सूर्यास्त तक सब्त का दिन माना जाता था। यहूदी लोग उत्पत्ति 1 के आधार पर संध्या से संध्या तक दिन गिनते थे।

▪ **"बैठ गये"** आराधनालय में जाकर बैठना संभवतः एक मुहावरा हो सकता है जो यह दर्शाता है कि उस व्यक्ति को उस दिन वहाँ उपदेश देना है। रब्बी लोग तभी शिक्षा देते थे जब बैठे हों (देखें, मत्ती 5:1; लूका 4:20)। सभाघरों में सदैव भ्रमणशील उपदेशकों को, यदि वे चाहें, तो बोलने का अवसर दिया जाता था (देखें, प्रेरि. 13:15)।

13:15"व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तक से पढ़ने के बाद" यहूदियों में आराधनालय की आराधना का यह एक हिस्सा होता था। मूल रूप से केवल मूसा की व्यवस्था पढ़ी जाती थी, परन्तु 163 ई.पू. में अंतियाखुस एपीफोनेस चतुर्थ ने इस पर प्रतिबन्ध लगा दिया था, तब से यहूदियों ने बदले में नबियों की पुस्तकें पढ़ना आरम्भ कर दिया। मकाबियों के विद्रोह के बाद यहूदी धर्म फिर बहाल हो गया और आराधनालयों में फिर से व्यवस्था और नबियों की पुस्तकें आवश्यक विधि के रूप में पढ़ी जाने लगीं। (प्रेरि. 13:27) देखें नीचे विशेष विषय:

विशेष विषय: हीब्रू कैनन

हीब्रू बाइबल तीन भागों में बँटी हुई है (इंग्लिश बाइबल का क्रम सप्तूजैन्त के क्रमानुसार है)।

1. तोरह (पंचग्रंथ) (Pentateuch) : उत्पत्ति से व्यवस्था विवरण तक
2. नबियों की पुस्तकें (नेबिईम) (*Neviim*)
    a. पहले के नबी, यहोशू से राजाओं (रूत को छोड़कर)
    b. बाद के नबी, यशायाह से मलाकी (विलापगीत व दानिय्येल छोड़कर)
3. लेख (केतुबीम) (Kethubim)
    a. बुद्धि साहित्य : अय्यूब से नीतिवचन तक
    b. बन्धुआई के बाद का साहित्य, एज्रा से ऐस्तर
    c. मेगिलोथ (पाँच सक्रोल, पर्वों के दौरान पढ़ी जाती थी)
        (1) रूत (पिन्तेकुस्त पर्व के समय पढ़ी जाती थी)
        (2) सभोपदेशक (झोपड़ियों के पर्व के दौरान)
        (3) श्रेष्ठगीत (फसह पर्व के दौरान)
        (4) विलापगीत (586 ई.पू. में यरूशलेम के पतन के स्मरण में पढ़ी जाती थी)
        (5) एस्तेर (पूरीम पर्व के अवसर पर पढ़ी जाती थी)
    d. 1 और 2 इतिहास

e. दानिय्येल
कानोन की सबसे नई पुस्तक 2 इतिहास है। कुछ वंशावलियाँ जोड़ देने के कारण इसकी तिथि अज्ञात है।

Copyright © 2014 Bible Lessons International

▪ **'आराधनालय के सरदारों ने''** ये लोग इमारत की देखभाल करते और आराधना-विधि के संचालन का प्रबन्ध देखते थे (देखें, लूका 8:41,49)। ये मेहमानों को अक्सर बोलने का निमंत्रण देते थे।

▪ **''तुम्हारे मन में कोई बात हो तो कहो''** आराधनालय में इस प्रकार से आदर देना सामान्य बात थी। पौलुस ने इस अवसर का लाभ उठाया।

13:16''पौलुस ने खड़े होकर कहा'' आमतौर पर यहूदी उपदेशक बैठकर उपदेश दिया करते थे, परन्तु खड़े होकर उपदेश देना रोमी-यूनानी सभ्यता थी। तब पौलुस ने सभा को संबोधित किया।

▪ **''हाथ से संकेत करके कहा''** पौलुस ने हाथ से शान्त रहने का संकेत किया। लूका अक्सर ऐसी आँखों-देखी बातों का वर्णन करता है (देखें, प्रेरि. 12:17; 13:16; 19:33; 21:40)।

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 13:16ब-25
16ब''हे इस्राएलियो, और परमेश्वर से डरने वालो, सुनोः 17इन इस्राएली लोगों के परमेश्वर ने हमारे बापदादों को चुन लिया और जब ये लोग मिस्र देश में परदेशी होकर रहते थे, तो उनकी उन्नति की; और बलवन्त भुजा से निकाल लाया। 18वह कोई चालीस वर्ष तक जंगल में उनकी सहता रहा, 19और कनान देश में सात जातियों का नाश करके उनका देश कोई साढ़े चार सौ वर्ष में इनकी मीरास में कर दिया। 20इसके बाद उसने शमूएल भविष्यद्वक्ता तक उनमें न्यायी ठहराए। 21उसके बाद उन्होंने एक राजा माँगाः तब परमेश्वर ने चालीस वर्ष के लिए बिन्यामीन के गोत्र में से एक मनुष्य; अर्थात् कीश के पुत्र शाऊल को उन पर राजा ठहराया। 22फिर उसे अलग करके दाऊद को उनका राजा बनाया; जिसके विषय में उसने गवाही दी, 'मुझे एक मनुष्य, यिशै का पुत्र दाऊद, मेरे मन के अनुसार मिल गया है; वही मेरी सारी इच्छा पूरी करेगा।' 23इसी के वंश में से परमेश्वर ने अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार इस्राएल के पास एक उद्धारकर्त्ता, अर्थात् यीशु को भेजा। 24जिसके आने से पहले यूहन्ना ने सब इस्राएलियों में मन फिराव के बपतिस्मा का प्रचार किया। 25जब यूहन्ना अपनी सेवा पूरी करने पर था, तो उसने कहा, ''तुम मुझे क्या समझते हो? मैं वह नहीं! वरन् देखो, मेरे बाद एक आनेवाला है, जिसके पाँवों की जूती भी मैं खोलने के योग्य नहीं।'

13:16b ''इस्राएलियो, और परमेश्वर से डरनेवालो, सुनो'' वहाँ पर दो समूह के लोग उपस्थिति थे, यहूदी और गैरयहूदी अर्थात् अन्य जाति ''प्रभु से डरनेवाले लोग (देखें, प्रेरि. 13:26; 10:2,22,35)। यह उपदेश जो पौलुस ने दिया, प्रेरि-7 के स्तिफनुस के उपदेश से बहुत कुछ मिलता-जुलता है। अनेक प्रकार से पौलुस, स्तिफनुस की पुराने नियम और सुसमाचार की जानकारी से बड़ा प्रभावित था।

13:17 पौलुस पुराने नियम के इतिहास को दोहराना उस समय से आरम्भ करता है जब परमेश्वर ने प्राचीनों को अर्थात् अब्राहम, इसहाक और याकूब को बुलाया था, जिसका वर्णन उत्पत्ति नामक पुस्तक में पाया जाता है। फिर वह मिस्र के दासत्व से छुटकारे (निर्गमन से व्यवस्थाविवरण) का वर्णन करता है।

▪ **''बलवन्त भुजा से निकाल लाया''** यह यहोवा (YHWH) परमेश्वर की शारीरिक रूप से उपस्थिति की लाक्षणिक भाषा है (देखें सप्तूजैन्त (LXX) में निर्गमन 6:1,6)। यह ''यहोवा (YHWH) का दाहिना हाथ'' के समान वाक्य है। बाइबल मानवीय भाषा व शब्दों में परमेश्वर का वर्णन करती है, हालांकि परमेश्वर अनन्त, अदृश्य और सर्वोपस्थित परमेश्वर है। और मानवीय शब्दों के प्रयोग से अनेक गलत धारणाएँ उत्पन्न हो सकती हैं, तो भी बाइबल

दृष्टान्तों, उपमाओं आदि के द्वारा परमेश्वर के विषय में बताती है। लेकिन परमेश्वर पतित मानव के सोच विचारों और कल्पनाओं से परे है; मनुष्य की समझ से कहीं बड़ा है। देखें प्रेरि. 2:33 में विशेष टिप्पणी।

13:18"वह कोई चालीस वर्ष तक जंगल में उनकी सहता रहा" यह पद हमें व्यवस्थाविवरण 1:31 की याद दिलाता है और इसका अनुवाद "नर्स की तरह देखभाल करना" भी किया जा सकता है देखें (cf. MSS A, C) इस पद द्वारा पुराने नियम की निर्गमन और गिनती नामक पुस्तकों का विवरण भी याद आता है।
40 वर्ष की संख्या को अक्सर इसी पूर्ण अंक संख्या में लिखा जाता है। वास्तव में होरेब से शित्तिम पहुंचने में 38 वर्ष लगे थे, और होरेब (सीनै) में दो वर्ष बिताने के कारण यह समय होता है। देखें, प्रेरि. 1:3 में विशेष टिप्पणी।

13:19 "सात राष्ट्रों का नाश " पलीस्तीन की इन सात जातियों को अनेक प्रकार से परिभाषित किया जा सकता है, जैसे:

1. सामूहिक शब्दों में, कनानी लोग (अर्थात् निम्न भूमि वाले, देखें उत्पत्ति 10:18-29; न्या. 1:1) अथवा अमोरी (अर्थात् अधिक भूमि वाले, देखें उत्पत्ति 15:16)
2. दो जातियाँ (कनानी, परिज्जी, देखें उत्पत्ति 13:7; 34:30; न्या. 1:4-5)
3. तीन जातियाँ (हिब्बी, कनानी, हित्ती, देखें निर्गमन 23:28) (Hivites, Canaanites, Hittites)
4. 4.छः जातियाँ (कनानी, हित्ती, अमोरी, परिज्जी, हिब्बी, यबूसी, देखें निर्ग. 3:8,17; 33:2; 34:11; व्य.वि. 20:17; यहोशू 9:1; 12:8) (Canaanite, Hittite, Amorite, Perizzite, Hivite, Jebusite)
5. सात जातियाँ (हित्ती, गिर्गाशी, एमोरी, कनानी, परिज्जी, हिब्बी, यबूसी, देखें व्य.वि. 7:1; यहोशू 3:10; 24:11) (Hittites, Girgashites, Amorites, Canaanites, Perizzites, Hivites, Jebusites)
6. दस जातियाँ (केनियों, कनिज्जियों, कदमोनियों, हित्तीयों, परिज्जियों, रपाइयों, एमोरियों, कनानियों, गिर्गाशियों, यबूसियों का देश,) (देखें, उत्पत्ति 15:19-21) (Kenites, Kenizzites, Kadmonites, Hittites, Perizzites, Rephaim, Amonites, Canaanites, Girgashites, Jebusites)

विशेष विषय:इस्राएलियों से पूर्व के पलीस्तीन निवासी

A. बाइबल में इनकी कुछ सूचियाँ पाई जाती है जैसे :

1. उत्पत्ति 15:19-21 में, दस जातियाँ :

a. कनानी	d. परिज्जी	g. गिर्गाशी	j यबूसी
b. कनिज्जी	e. रपाई	h. यबूसी	
c. कदमोनी	f. एमोरी	i. गिर्गाशी	

2. निर्गमन 3:17 में छः जातियाँ :

a. कनानी	d. परिज्जी
b. हित्ती	e. हिब्बी
c. एमोरी	f. यबूसी

3. निर्गमन 23:28 में तीन जातियाँ :
   a.हिब्बी
   b. कनानी
   c. हित्ती

4. व्यवस्था विवरण 7:1 में सात जातियाँ :

a. हित्ती	d. कनानी	g. यबूसी
b. गिर्गाशी	e. परिज्जी	
c. एमोरी	f. हिब्बी	

5. यहोशू 24:11 में सात जातियाँ :

a. एमोरी	d. हित्ती	g. यबूसी

b. परिज्जी e. गिर्गाशी

c. कनानी f. हिब्बी

B. ऐतिहासिक प्रमाणों के अभाव के कारण इन नामों की उत्पत्ति में सन्देह है। उत्पत्ति 10:15-19 में इन जातियों में से कुछ को हाम के पुत्र कनान का वंशज बताया गया है।

C. उपरोक्त जातियों का संक्षिप्त विवरण :

1. केनी – डी बी डी 884, के बी 1098 (BDB 884, KB 1098)
   - गैर इस्राएली।
   - धातु के कार्यों और वाघ-यन्त्रों के प्रवर्तक हुए (उत्प. 4:19-22)
   - हेब्रोन के उत्तरी क्षेत्र सीनै से उनका संबंध रहा।
   - यह नाम मूसा के ससुर यित्रो से जुड़ा था (न्या. 1:16; 4:11)
2. कनिज्जी – डी बी डी 889, के बी 1114 (BDB 889, KB 1114)
   - यहूदियों के रिश्तेदार
   - एदोम का गोत्र (उत्प. 15:19)
   - नेगेव के निवासी
   - सभवतः यहूदा में शामिल हो गए (गिनती. 32:12; यहो. 14:6,14)
3. कदमोनी – डी बी डी 870 II, के बी 1071 II (BDB 870 II, KB 1071 II)
   - गैर-इस्राएली संभवतः इश्माएल के वंशज (उत्प. 25:15)
   - यह नाम "पूर्वी लोगों" से संबंध रखता है।
   - नेगेव के निवासी
   - संभवतः इनका संबंध "पूर्वी लोगों" से था (अयूब 1:3)
4. हित्ती – डी बी डी 366, के बी 363 (BDB 366, KB 363)
   - गैर इस्राएली
   - हेत के वंशज
   - (एशिया माइनर तुर्की के) राज्य अनातोलिया से।
   - कनान में बहुत पहले से बसे थे (उत्प. 23; यहो. 11:3)
5. परीज्जी – डी बी डी 827, के बी 965 (BDB 827, KB 965)
   - गैर इस्राएली, संभवतः हुर्रियन्स
   - यहूदा के जंगली क्षेत्रों में रहते थे (उत्प. 34:30; न्या. 1:4; 16:10)
6. रपाई – डी बी डी 952, के बी 1274 (BDB 952, KB 1274)
   - गैर इस्राएली संभवतः राक्षस समान (उत्प. 14:5; गिन. 33:33; व्य. वि. 2:10-11,20)
   - यरदन नदी के पूर्वी/तट पर रहते थे (उत्प. 15:20; यहो. 12:4; 13:12; व्यव. वि. 2:8-11,20; 3:13) अथवा पश्चिमी किनारे पर (यहो. 15:8; 17:15; 2 शमू. 5:18,22; 23:13 1 इति. 20:4)
   - ये बड़े योद्धा और लड़ाकू होते थे।
7. एमोरी – डी बी डी 57, के बी 67 (BDB 57, KB 67)
   - उत्पत्ति 10:16 के अनुसार ये हाम के वंशज उत्तरी-पश्चिमी समारी लोग थे।
   - बाद में कनान निवासी कहलाए (देखें, उत्प. 15:16; व्यव. 1:7; यहो. 10:5; 24:15; 2 शमू. 21:2)
   - इस नाम का अर्थ "पश्चिमी" हो सकता है।
   - आई एस बी ई (ISBE), Vol. 1 पेज 119 पर इस शब्द के विषय में बताता है :
     a. ये आमतौर पर पलीस्तीन निवासी थे
     b. पहाड़ी क्षेत्रों की जनसंख्या मैदानी क्षेत्रों की अपेक्षा अधिक थी।

c. ये लोगों का विशेष समूह था, जिसका अपना राजा था।

8. कनानी – डी बी डी 489, के बी 485 (BDB 489, KB 485)
- हाम के वंशज (उत्प. 10:15)
- यरदन के पश्चिम में सभी जातियाँ कनानी कहलाती थीं।
- कनान का अर्थ अनिश्चित है, संभवतः इसका अर्थ है "व्यापारी लोग" अथवा "लाल-बैंगनी रंग"।
- लोगों का समूह होने के कारण ये मैदानी क्षेत्रों में समुद्र किनारे रहते थे (गिनती 13:29)।

9. गिर्गाशी – डी बी डी 173, के बी 202 (BDB 173, KB 202)
- हाम के वंशज (उत्प. 10:16) अथवा "कनान के पुत्र" आईएसबीई, वॉल्यूम 2, पेज. 1232 (ISBE,vol.2,p.1232))

10. यबूसी – डी बी डी 101, के बी. 382 (BDB 101, KB 382)
- हाय के वंशज (उत्प. 10:16)
- यबूस/सालेम/यरूशलेम नगरों के निवासी (यहो. 15:63; न्या. 19:10)
- यहेज. 16:3,45 बताता है, ये एमोरी वे हित्ती जातियों का मिश्रण थे।

11. हिब्बी – डी बी डी 295, के बी 297 (BDB 295, KB 297)
- हाम के वंशज (उत्प. 10:17)
- सप्तूजैन्त (LXX) में इन्हें होरी जाति अनुवादित किया गया (देखें उत्प. 34:2; 36:20-30; यहो. 9:7)
- संभवतः यह नाम इब्रानी शब्द "गुफा" से निकला, इसलिए ये गुफाओं में रहते थे
- ये लेबनोन के ऊंचे क्षेत्रों में रहते थे (यहो. 11:3; न्या. 3:3) 2 शमू. 24:6-7 में उनका उल्लेख सोर और सीदोन के बाद किया गया।

Copyright © 2014 Bible Lessons International

■ **"मीरास"** सप्तूजैन्त में इन तीन मिले जुले शब्दों (*kata + klēros + nemō*) का प्रयोग एक सामान्य बात है, परन्तु नए नियम में केवल यहीं पर इन शब्दों का प्रयोग पाया जाता है अन्य मूलपाठों में (*kata + klēros + didōmi*) का प्रयोग किया गया है। इनका अर्थ है चिट्ठियाँ डालकर विभिन्न गोत्रों में प्रतिज्ञात देश का बँटवारा करना (देखें, यहोशू 13-19 अध्याय)। शब्द (*klēros)* से हमें अंग्रेजी शब्द (क्लर्जी) प्राप्त हुआ है, परन्तु नए नियम में सदैव यह मसीह के विश्वासी समूह की ओर संकेत करता है।

■ **"कोई साढ़े चार सौ वर्ष"** यह साढ़े चार सौ वर्ष का समय इस प्रकार से बनता है:
1. 400 वर्ष तक मिस्र की गुलामी (देखें, उत्पत्ति 15:13)।
2. 40 वर्ष जंगलों में भ्रमणकाल (देखें, निर्ग.16:35; गिनती 14:33-34; 32:13)।
3. 7 से 10 वर्ष कनान पर विजय पाने में लगे (देखें, यहोशू 14:7,10)।

सर्वमान्य मूलपाठ (किंग जैम्स वर्ज़न) (KJV) प्रेरि. 13:20 की ओर आगे बढ़ जाता है और न्यायियों को सम्मिलित करता है, परन्तु यह शब्दावली पुराने यूनानी में नहीं है (देखें ।एठएयोसेफस एक्टीक्वीटि 8:31) (Josephus, *Antiq.* 8.3.1) जो 1 राजा 6:1 की तारीख से मेल खाए। एन एएस बी में पाया जाने वाला रिक्त स्थान (NASB) ज़बरदस्ती लगाया गया है ताकि संख्या को सही स्थान पर रखा जा सके।

13:20 यह पद न्यायियों की पुस्तक से लेकर 1 शूमएल 7 अध्याय तक के काल को दर्शाता है।

13:21 यह पद 1 शमूएल 8-10 अध्याय की ओर संकेत करता है।

▪ "**चालीस वर्ष के लिये**" इस पद की संख्या 40 वर्ष, पुराने नियम में नहीं पाई जाती है, जब तक कि इस समस्या को 1 शमूएल 13:1 से न जोड़ा जाए और वहाँ 40 वर्ष न लिखा जाए (देखें एन आई वी) (NIV)योसेफस की एन्टीक्वीटि 6.14.9 (Josephus, *Antiq.* 6.14.9) शाऊल का राज्यकाल 40 वर्ष बताती है। सप्तूजैन्त संपूर्ण पहले पद को हटा देता है और 1 शमूएल के इस पद को 2 से आरम्भ करता है। स्पष्ट रूप में 40 वर्ष रब्बियों की परम्परा के अनुसार है।

13:22 "यिशै का पुत्र दाऊद, मेरे मन के अनुसार मिल गया है" यह सीधे पुराने नियम से लिया गया उद्धरण नहीं है, परन्तु भजन 89:20 और 1 शमूएल 13:14 का मिश्रण है। हमें यह बात याद रखना चाहिए कि पौलुस अपने इस उपदेश में वही ऐतिहासिक क्रम अपना रहा है जो प्रेरि. 7 में स्तिफनुस का था। यह प्रत्येक विश्वासी के लिए प्रोत्साहन की बात है कि दाऊद जैसा घोर अपराधी (देखें, भजन. 32; 51; 2 शमू. 11) ऐसा मनुष्य बन सकता है जो परमेश्वर के मन के अनुसार हो। यह उद्धरण निम्नलिखित बातें बताता है:

1. यह रब्बियों की मान्यता प्राप्त प्रथा थी जिसके द्वारा हम नए नियम के बहुत से असमान्य उद्धरणों को समझ सकते हैं।
2. यह मसीही प्रश्नोत्तरी का पहले से ही हिस्सा रहा है। पौलुस अक्सर आरम्भिक मसीहियों के गीतों से और अन्य साहित्यिक रचनाओं से उद्धरण देता रहा है।
3. यह उद्धरण पौलुस के लिए बड़ा अर्थपूर्ण था; इससे पता चलता है कि पौलुस के इस उपदेश को लूका ने पौलुस के द्वारा ही सुनकर लेखबद्ध किया होगा।

NASB, NKJV **"जो मेरी संपूर्ण इच्छा पूरी करेगा"**
NRSV **"जो मेरी सारी अभिलाषाओं को पूरा करेगा"**
TEV **"जो कार्य मैं करना चाहता हूँ उन सबको वह पूर्ण करेगा"**
NJB **"जो मेरी सम्पूर्ण इच्छा पूरी करेगा"**

उपरोक्त बाइबल पद पुराने नियम में नहीं पाया जाता है परन्तु पुराने नियम के पदों में निहित संकेतों और अर्थों का मिश्रण है। पुराने नियम में शाऊल राजा परमेश्वर के प्रति अनाज्ञाकारी रहा और गद्दी से हटा दिया गया। परन्तु दाऊद भी कई अवसरों पर अनाज्ञाकारी रहा था। परमेश्वर अपनी उद्धारक योजना को पूरा करने के लिए कमज़ोर और असिद्ध मनुष्यों को इस्तेमाल करता है।

13:23 यह पद प्रेरि. 7:52 से समानता रखता है जो पुराने नियम की प्रतिज्ञा की ओर इशारा करता है:

1. स्त्री के वंश के द्वारा छुटकारा अथवा उद्धार (उत्पत्ति 3:15)
2. यहूदा गोत्र से शासक का आना (उत्पत्ति 49:19)
3. मूसा के समान एक भविष्यद्वक्ता का आगमन (व्यवस्थाविवरण 18:15,18)
4. दाऊद के वंश से एक अगुवा आना (2 शमू. 7; भजन 132:11; यशायाह 11:1, 10; मत्ती 1:1)
5. दुख उठाने वाला दास (यशा. 52:13-53:12)
6. एक उद्धारकर्त्ता का आना (लूका 2:11; मत्ती 1:21; यूहन्ना 1:29; 4:42; प्रेरि. 5:31)

उपरोक्त सब बातों में चैथी बात लूका के लिये महत्व रखती है (देखें, लूका 1:32; 69; 2:4; 3:31; प्रेरि. 2:29-31; 13:22-23)। मसीह दाऊद के वंश से होगा (देखें, यशा. 9:7; 11:1,10; 16:5)।

13:24 यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की सेवकाई और उसके संदेशों का विवरण इन स्थलों पर पाया जाता है: मरकुस 1:1-8; मत्ती 3:11-11; लूका 3:2-17; यूहन्ना 1:6-8, 19-28; यूहन्ना ने मत्ती 3:1; 4:5-6 की भविष्यद्वाणी को पूरा किया। उसके मन-फिराव के प्रचार ने यीशु की सेवकाई के लिए एक नमूना रखा (देखें, मत्ती 4:17; मरकुस 1:14-15)।

यूहन्ना ने प्रचार करते हुए कहा, "मेरे बाद एक आने वाला है जिसकी जूतियों का बन्ध मैं खोलने योग्य नहीं, वह मुझ से महान् है (देखें, मत्ती 3:11, मर. 1:7; लूका 3:16; यूहन्ना 1:27, 30; प्रेरि. 13:25)।

13:25 "यूहन्ना अपनी सेवा पूरी करने पर था" परमेश्वर ने यूहन्ना को एक विशेष कार्य सौंपा था कि वह उसे करे। यूहन्ना की सार्वजनिक सेवा मात्र अठारह महीने की रही। परन्तु यह डेढ़ वर्ष का समय बड़ा प्रभावशाली और पवित्र आत्मा की सामथ्र्य से परिपूर्ण रहा, जिसमें उसने मसीह के आगमन का मार्ग तैयार किया।

पौलुस ने आराधनालय की पाठशाला से अपनी युवावस्था में पुराने नियम का अच्छा अध्ययन किया और बाद में यरूशलेम के प्रसिद्ध गुरु गमलिएल के चरणों में बैठकर रब्बियों का प्रशिक्षण प्राप्त किया था। उसने सुसमाचार की कथा इन माध्यमों से सुनी थी:

1. स्तिफनुस द्वारा।
2. जिन लोगों को उसने सताया, उनके द्वारा।
3. यीशु का विशेष दर्शन प्राप्त करके।
4. दीमश्क में रहने वाले विश्वासियों के द्वारा।
5. यीशु के द्वारा जबकि वह अरब में था।
6. जब उसने अन्य प्रेरितों से भेंट की।

वह जहाँ भी जाता, यीशु के विषय में बताता और अपनी साक्षी देता था।

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 13:26-41

26"हे भाइयो, तुम जो अब्राहम की सन्तान हो; और तुम जो परमेश्वर से डरते हो, तुम्हारे पास इस उद्धार का वचन भेजा गया है। 27क्योंकि यरूशलेम के रहनेवालों और उनके सरदारों ने, न उसे पहचाना और न भविष्यद्वक्ताओं की बातें समझीं, जो हर सब्त के दिन पढ़ी जाती हैं, इसलिये उसे दोषी ठहराकर उन बातों को पूरा किया। 28उन्होंने मार डालने के योग्य कोई दोष उसमें न पाया, तौभी पिलातुस से विनती की कि वह मार डाला जाए। 29जब उन्होंने उसके विषय में लिखी हुई सब बातें पूरी कीं, तो उसे क्रूस पर से उतारकर कब्र में रखा। 30परन्तु परेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, 31और वह उन्हें जो उसके साथ गलील से यरूशलेम आए थे, बहुत दिनों तक दिखाई देता रहा; लोगों के सामने अब वे ही उसके गवाह हैं। 32हम तुम्हें उस प्रतिज्ञा के विषय में जो बापदादों से की गई थी, यह सुसमाचार सुनाते हैं, 33कि परमेश्वर ने यीशु को जिलाकर, वही प्रतिज्ञा हमारी सन्तान के लिये पूरी की; जैसा दूसरे भजन में भी लिखा है, 'तू मेरा पुत्र है; आज मैं ही ने तुझे जन्माया है।" 34और उसके इस रीति से मरे हुओं में से जिलाने के विषय में भी कि वह कभी न सड़े, उसने यों कहा है: 'मैं दाऊद पर की पवित्र और अटल कृपा तुम पर करूँगा' 35इसलिए उसने एक और भजन में भी कहा, 'तू अपने पवित्र जन को सड़ने न देगा।" 36क्योंकि दाऊद तो परमेश्वर की इच्छा के अनुसार अपने समय में सेवा करके सो गया, और अपने बापदादों में जा मिला, और सड़ भी गया। 37परन्तु जिसको परमेश्वर ने जिलाया, वह सड़ने नहीं पाया। 38इसलिये, हे भाइयो, तुम जान लो कि इसी के द्वारा पापों की क्षमा का समाचार तुम्हें दिया जाता है; 39और जिन बातों में तुम मूसा की व्यवस्था के द्वारा निर्दोष नहीं ठहर सकते थे, उन्हीं सब में हर एक विश्वास करनेवाला उसके द्वारा निर्दोष ठहरता है। 40इसलिए चैकस रहो, ऐसा न हो कि जो भविष्यद्वक्ता की पुस्तक में आया है, तुम पर भी आ पड़े: 41'हे निन्दा करनेवालो, देखो, और चकित हो, और मिट जाओ; क्योंकि मैं तुम्हारे दिनों में एक काम करता हूँ, ऐसा काम कि यदि कोई तुम से उसकी चर्च करे, तो तुम कभी विश्वास न करोगे।"

13:26 "अब्राहम की सन्तान, और जो तुम में परमेश्वर से डरते है" यह पद नए विश्वासी यहूदी और अन्य जाति जो परमेश्वर से डरते थे और नैतिक रूप से यहूदी धर्म का आदर करते थे, दोनों की ओर संकेत करता है।

▪ **"इस उद्धार"** यह परेश्वर की उस प्रतिज्ञा की ओर संकेत करता है कि वह पतित मानव जाति का मसीह के माध्यम से उद्धार करेगा (देखें, उत्पत्ति 3:15)। इसमें अन्यजाति लोग भी शामिल हैं (देखें, उत्पत्ति 12:5; निर्म. 19:5-6 तथा प्रेरि. 28:28 तथा 13:46)।

13:27 यह अत्यन्त दुख पहुँचाने वाला पद है। यह पवित्र शास्त्र के विषय में यरूशलेम के यहूदियों के अंधेपन को दिखाता है जिसे वे निरन्तर पढ़ा करते थे तौभी उसे समझते नहीं थे। उन्होंने भविष्यद्वाणियों के चिन्हों को नहीं समझा (देखें, भजन 22; यशा. 53; जकर्याह, मलाकी) और न ही यशायाह व योना के संकेतों को समझा; वे स्वयं ही भविष्यद्वाणी का चिन्ह बन गए! ''वह अपने घर आया और उसके अपनों ने उसे ग्रहण नहीं किया'' (यूहन्ना 1:11-12)।

13:28 प्रेरितों के काम पुस्तक बार-बार यरूशलेम के यहूदियों के आध्यात्मिक उत्तरदायित्व एवं कत्र्तव्य का उल्लेख करती है (देखें, प्रेरि. 2:23,36; 3:13-15; 4:10; 5:30; 7:52; 10:39; 13:27-28)।

13:29 ''वह ...वह '' यह विभिन्न जन समूहों की ओर संकेत करता है। पहले तो वह लोग जो उसे मार डालने पर तुले हुए थे (जैसे यहूदी अगुवे और पिलातुस के सामने उपस्थित भीड़)। दूसरे वे लोग जो ठीक रीति से उसे दफन करना चाहते थे। इनमें भले यहूदी शामिल हो सकते हैं जिन्होंने अन्याय होते देखा, जैसे के प्रेरित 8:2 में स्तिफनुस के दफनाते समय लोग शामिल थे, अथवा गुप्त चेले शामिल हो सकते हैं जैसे अरिमतिया का यूसुफ और नीकुदेमुस (देखें, यूहन्ना 19:38-42)।

■ **''लिखी हुई सब बातें पूरी कीं''** यीशु का जीवन ऐसा था जो भविष्यद्वाणियों की पूर्ति करता था। नासरत का यीशु ही मसीह है, तथा बाइबल पवित्र आत्मा की पे्ररणा से रचा हुआ पवित्रशास्त्र है, इस बात का पक्का सबूत यह है कि पहले ही से भविष्यद्वाणी कर दी गई थी (देखें, लूका 22:22; प्रेरि. 2:23 3:18; 4:28; 10:43; 13:29; 24:14; 26:22)।

यीशु के जीवन की बहुत सी बातें ऐसी हैं जिन्हें कलीसिया में आज हम भविष्यवाणी कहते हैं, परन्तु वास्तव में वे एक प्रकार से प्रतीकात्मक बातें होती हैं, यह निश्चय ही सत्य बात है। इस्राएल जाति में ऐसी अनेक घटनाएँ घटीं थीं जो बाद में यीशु के जीवन में भी घटती हुई दिखाई दीं (इसका एक उदाहरण होशे 11:1 है)। अक्सर बाइबल के ऐसे पाठांश जो पढ़ते समय समझ में नहीं आते और न ही भविष्यद्वाणी की गई प्रतीत होते हैं, परन्तुं एकाएक पता चलता है कि यह तो यीशु के जीवन में दिखाई देता है (उदाहरणार्थ भजन 22; यशायाह 53)। पुराने नियम में यीशु की पूर्व-छाया को समझने और पूर्णरूप से इसका आत्मिक आनन्द पाने के लिये पवित्र आत्मा की प्रेरणा और उद्धारक-इतिहास के प्रवाह को समझने की आवश्यकता होती है, परन्तु मैं एक बात और कहना चाहता हूं कि आधुनिक उपदेशकों और प्रचारकों को व्याख्या करते समय ऐसे तरीके का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए। आन लाईन देखें: Bob's Biblical Interpretation Seminer at www.freebiblecommentary.org

■ **''क्रूस''** प्रेरि. 5:30 तथा 10:29 में टिप्पणियां देखें।

13:30, 33, 34, 37 ''परन्तु परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया'' नया नियम द्दढ़तापूर्वक बताता है कि यीशु के पुनरुत्थान में त्रिएकत्व के तीनों व्यक्ति क्रियाशील थे:

1. पवित्र आत्मा (देखें, रोमियों 8:11)
2. पुत्र (देखें, यूहन्ना 2:19-22; 10:17-18)
3. पिता (देखें प्रेरि. 2:24,32; 3:15,26; 4:10; 5:30; 10:40; 13:30,33-34,37; 17:31)

रोमियों 6:4,9; 10:9; 1 कुरि. 6:14; 2 कुरि. 4:14; गला. 1:1; इफि. 1:20; कुलु. 2:12; 1 थिस्स. 1:10)
यीशु का पुनरुत्थान, यीशु के जीवन व शिक्षाओं की पिता की ओर से पुष्टि थी। यही प्रेरितों के काम पुस्तक के उपदेशों (*Kerygma*) की मूल विषय-वस्तु था। प्रेरि. 2:14 में विशेष विषय देखें।

13:31 ''बहुत दिनों तक'' प्रेरि. 1:3 बताता है ''चालीस दिन'' तक दिखाई देता रहा, जो पुराने नियम की सामान्य बात है। देखें, प्रेरि. 1:3 में विशेष विषय।

■ **''दिखाई दिया''** प्रेरि. 1:3 में विशेष विषय ''जी उठने के बाद यीशु के दर्शन'' देखें।

13:32 "बापदादों को प्रतिज्ञा की" यह इस प्रतिज्ञा की ओर संकेत है जो यहोवा (YHWH) ने अब्राहम से की थी (देखें, उत्पत्ति 12:1-3; रोमि. 4) यही प्रतिज्ञा प्राचीनों और उनकी सन्तानों के साथ दोहराई गई (देखें, यशायाह 44:3; 54:13; योएल 2:32)। पुराना नियम देश पर जोर देता है जबकि नया नियम वंश पर बल देता है। पौलुस इसी प्रतिज्ञा का संकेत रोमियों 1:2-3 में करता है।

13:33 भजन 2:7 से लिया गया यह उद्धरण है; यह भजन परमेश्वर के चुने हुए मसीह के विरोध और उसकी विजय के संबंध में भजन है। यीशु दुष्ट शक्तियों (मानव और शैतान) द्वारा मार डाला गया, परन्तु परमेश्वर ने उसे जिला उठाकर विजय प्रदान की (देखें, रोमियों 1:4)

इस पद के तथा रोमियों 1:4 के आधार पर आरम्भिक भ्रान्त शिक्षक कहा करते थे कि पुनरूत्थान के कारण ही यीशु, मसीह बना था। निश्चित रूप से नया नियम बल देता है कि यीशु का अंगीकार किया गया और उसे महिमा दी गई क्योंकि वह आज्ञाकारी रहा था, परन्तु इसे यीशु के पूर्व-अस्तित्व महिमा और ईश्वरत्व को अलग नहीं करना चाहिए (देखें, यूह. 1:1-5,9-18; फिलि. 2:6-11; कुलु. 1:13-18; इब्रा. 1:2-3)।

यही क्रिया शब्द "जिला कर- (*anistēm)* प्रेरि. 3:26 में परमेश्वर द्वारा अपने सेवक को जिलाने के संबंध में प्रयुक्त हुआ है, तथा प्रेरि. 3:22 में अपने एक भविष्यद्वक्ता को खड़ा करने अथवा उठाने के संबंध में प्रयुक्त हुआ है (देखें, प्रेरि. 7:37; व्य.वि. 18:19)। यह मृतकों में से जिलाने से भिन्न प्रयोग है (देखें, प्रेरि. 13:30,34,37)। यीशु मरने से पूर्व महिमान्वित किया गया।

13:34 "वह कभी न सड़े" यह वाक्य यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान की ओर इशारा करता है। वह पहला मनुष्य था जो मुर्दों में से जी उठा, (1 कुरि. 15:20 के अनुसार जो सोए हुए हैं उनमें वह पहला फल है)। वह पुनर्जीवित नहीं हुआ बल्कि पुनरुत्थित हुआ। बाइबल में बहुत से लोगों को जो मर गए थे, जिला देने का वर्णन पाया जाता है, परन्तु बाद में उन सबको फिर मरना पड़ा। हनोक और एलिय्याह बिना मरे स्वर्ग पर उठा लिये गये थे, परन्तु वे पुनरुत्थित नहीं हुए थे।

■ **"मैं दाऊद पर की पवित्र और अटल *कृपा* तुम पर करूँगा"** यह सप्तूजैन्त की यशायाह 53:3 से लिया गया उद्धरण है। इसमें बहुवचन में "अटल कृपा" शामिल है परन्तु यह स्पष्ट नहीं बताया गया है इसका संकेत किस ओर है। यह कुछ इस प्रकार है कि यह कृपा परमेश्वर से दाऊद पर आई, दाऊद से यीशु पर अब उसके बाद यीशु के अनुयायियों पर (क्योंकि इस उद्धरण में "तुम" शब्द आया है) पुराने नियम का पाठांश "तुम" शब्द का महत्व प्रकट करता है (देखें यशायाह 55:4-5, LXX में), "देखो, मैंने उसे अन्यजातियों के मध्य एक गवाह और अन्य जातियों के लिए एक राजकुमार और सेना-नायक ठहराया है। जो जातियाँ, तुझे जानती भी नहीं थीं, तुझे पुकारेंगी, और जो लोग तुझे जानते भी नहीं थे, तेरी शरण में भागकर आएंगे; यह इस्राएल के पवित्र और तेरे प्रभु परमेश्वर के कारण होगा, क्योंकि उसने तुझे महिमान्वित किया है" सप्तूजैन्त, जोनडरवैन, 1976, पेज 890 (The Septuagint, Zondervan, 1976, p. 890)

जो आशीषें और प्रतिज्ञाएं दाऊद के लिये थीं (अर्थात् यहूदियों के लिए) अब वे आशीषें और प्रतिज्ञाएँ अन्यजातियों के लिए (अर्थात् सम्पूर्ण मानवजाति) के लिए हैं।

13:35-37 यहाँ पर ठीक उसी प्रकार का तर्क-वितर्क पाया जाता है जैसा पिन्तकुस्त के दिन (देखें, प्रेरि. 2:24-32) पतरस ने किया था। यह भी भजन 16 का उद्धरण है। ये आरम्भिक उपदेश प्रारम्भिक मसीही प्रश्नोत्तरी को दर्शाते हैं। बहुत से मसीहा-संबंधी पाठांश आपस में जुड़े थे। इसलिए उनके विवरण और सर्वनाम नए नियम के लेखक के केन्द्रिय उद्देश्य से मेल खाते हुए प्रतीत नहीं होते थे कि यीशु शारीरिक रूप से पुनरुत्थित हो चुका है, और दाऊद सड़ गया था।

13:38 इस आराधनालय के श्रोताओं को सुसमाचार सुनाने के लिए पौलुस पुराने नियम से उसी प्रकार का तर्क प्रस्तुत करता है जैसा पतरस ने (प्रेरि. 2) और स्तिफनुस ने (प्रेरि. 7) लोगों के सामने प्रस्तुत किया था।

पौलुस पापों की क्षमा का संपूर्ण आश्वासन देता है, ऐसा आश्वासन यहूदीवाद नहीं दे सकता था (देखें, प्रेरित. 13:39)। यह आश्वासन उनके लिये है जो पूरा विश्वास करते हैं कि यीशु ही मसीह है (अर्थात् "यही" प्रेरि. 13:38-39)।

13:39 "और उसके द्वारा सभी को" यहाँ ध्यान दें कि यह एक विश्वव्यापी कथन है और संपूर्ण विश्व पर लागू होता है। परमेश्वर सबसे प्रेम करता है, और सबको अवसर है कि विश्वास करके निर्दोष ठहरे (देखें, प्रेरि.10:43; यशा. 42:1, 4,6,10-12; 55; यहेज. 18:23,32; योएल 2:28,32; यूह. 3:16; 4:42; रोमियों 3:22, 29, 30; 10:9-13; 1 तीमु. 2:4; 4:10; तीतुस 2:11; 2 पतरस 3:9; 1 यूह. 2:1; 4:14)।

▪ **"जिन्होंने विश्वास किया"** प्रेरि. 3:16 और 6:5 में विशेष टिप्पणियाँ देखें।

NASB, NKJV	**"सब बातों से छुटकारा पाता है" (प्रेरि. 13:39)**
NRSV	**"सब पापों से स्वतन्त्रता पाता है" (प्रेरि. 13:39)**
TEV	**"सारे पापों से छुटकारा पाता है" (प्रेरि. 13:39)**
NJB	**"सब पापों से छुटकारा" (प्रेरि. 13:38)**

शाब्दिक रूप से यह शब्द "छुटकारा पा लिया" है, ये दर्शाता है (वर्तमान कालीन सूचक)। यह शब्द एक वैधानिक शब्द है जो मसीह की धार्मिकता के द्वारा परमेश्वर के सम्मुख हमें निर्दोष खड़ा होने को दर्शाता है (देखें, 2 कुरि. 5:21)। इब्रानी भाषा में मूल रूप से इसका अर्थ है "नदी किनारे का सरकण्डा" जो मापदण्ड में प्रयुक्त होता है (देखें प्रेरि. 3:14 में विशेष विषय)। परमेश्वर इस मापदण्ड द्वारा प्रतीकात्मक रूप से मानों जाँच करता है।

▪ **"जिससे तुम मूसा की व्यवस्था के द्वारा निर्दोष नहीं ठहर सकते थे"** पौलुस की धर्म शिक्षा का यह मुख्य बिन्दु था जिस पर वह बल दिया करता था (देखें, रोमियों 3:21-30)। मसीह तक पहुंचाने के लिये व्यवस्था हमारी शिक्षक थी ताकि हम अपने व्यक्तिगत पापों को देख सकें और मसीह द्वारा उनसे छुटकारा पा सकें (देखें, गलातियों 3:23-29)। पुराने नियम की व्यवस्था उद्धार पाने का माध्यम नहीं है, क्योंकि सबने पाप किया है (देखें, रोमियों 3:9-18, 23; गला. 3:22)। व्यवस्था हमारे लिये शाप अर्थात् मृत्युदण्ड पाने की आज्ञा बन गई थी (देखें, गला. 3:13; कुलु. 2:14)।

विशेष विषय: मूसा की व्यवस्था के विषय में पौलुस के विचार

व्यवस्था अच्छी है और परमेश्वर की ओर से है (देखें रोमि. 7:12,16)

A. व्यवस्था के द्वारा परमेश्वर के यहाँ कोई धर्मी नहीं ठहरता ; जो व्यवस्था के कामों पर भरोसा रखते हैं वे शाप के अधीन हैं (पढ़ें, गला. 3)। देखें विशेष विषय : मूसा की व्यवस्था और मसीही जन
B. तो भी विश्वासीको व्यवस्था पालन करना चाहिए क्योंकि यह परमेश्वर का आत्म-प्रकाशन है (पौलुस अक्सर विश्वासियों को कायल करने और उन्हें प्रोत्साहित करने के लिए पुराने नियम का उपयोग करता है)। (मत्ती 5:20, 48; रोम 7:7-12; गला 3:1; याको 2:10)।
C. विश्वासियों को पुराने नियम से शिक्षाएँ प्राप्त होती है (रोमि. 4:23-24; 15:4; 1 कुरि. 10:6,11), परंतु वे पुराने नियम द्वारा उधार नहीं पाते हैं (प्रेरि. 15; रोमि. 4; गला. 3; इब्रानियों)। व्यवस्था धर्मी नहीं बनाती परन्तु शुद्धता पाने में सहायक है।
D. नई वाचा में व्यवस्था इस प्रकार कार्य करती है :
    1. पाप से पूर्ण दशा दिखाने के लिए (गला. 3:15-19)।
    2. समाज में उद्धार पाई हुई मानवजाति का मार्गदर्शन करने में।
    3. मसीहीयों को नैतिक निर्णय बताने के लिये।

व्यवस्था के विषय में पौलुस की उपरोक्त धर्म-शिक्षाएँ ही उसकी विचारधारा को समझने में समस्याएं उत्पन्न करती हैं कि कैसे शाप से (गला. 3:10-13) छुटकारा पाकर स्थाई रूप से आशीष प्राप्त होती है। जेम्स स्टूअर्ड अपनी पुस्तक "अ मैन इन क्राईस्ट" (*A Man in Christ,* James Stewart) में पौलुस की इसी विरोधाभाषी विचारधारा व लेख को समझाते हुए लिखते हैं.

> "आमतौर पर आप उस व्यक्ति से जो अपने विचारों और सिद्धांतों को लिख रहा हो अपेक्षा करेंगे कि जिन शब्दों का वह प्रयोग कर रहा है वे सटीक हों। आपकी आशा होगी कि उसके मुख्य विचार सुस्पष्ट हों। आप चाहेंगे कि आपके उस लेखक द्वारा जो शब्द किसी विशेष अर्थों में प्रयुक्त हुआ है, संपूर्ण लेख में भी उस शब्द का वही अर्थ रहे ; परन्तु यदि आप यही सब बातें पौलुस के लेखों में खोजेंगे तो आप के हाथ निराशा लगेगी क्योंकि उसकी अधिकांश शब्दावली कठोर नहीं परन्तु धारावाहिक है... वह लिखता है की, "व्यवस्था पवित्र है"; फिर आगे कहता है, "मैं भीतरी मनुष्यत्व से तो परमेश्वर की व्यवस्था से बहुत प्रसन्न रहता हूँ।" (रोमि. 7:12,22), परन्तु स्पष्ट रूप से इसी बात का दूसरा पहलू भी है जो उसे यह कहने के लिए मजबूर करता है कि, "मसीह ने जो हमारे लिए शापित बना, हमें मोल लेकर व्यवस्था के शाप से छुड़ाया (गला. 3:13)" (पेज 26)

Copyright © 2014 Bible Lessons International

13:40-41 पौलुस यहाँ पर श्रोताओं से आग्रह करता है कि अपने पापों की क्षमा के लिये विश्वास करें कि यीशु ही प्रतिज्ञात मसीह और उद्धारकर्त्ता है और वही क्षमा पाने का एकमात्र उपाय है (देखें, यूहन्ना 14:6; प्रेरि. 4:12; 1 तीमु. 2:5)।

इसके बाद पौलुस सप्तुजैन्त की हबक्कूक 1:5 से उद्धरण देते हुए उन्हें चेतावनी भी देता है। अपने लेखों के अन्य स्थलों पर पौलुस हबक्कूक 2:4 से उद्धरण देता है कि किस प्रकार का प्रत्युत्तर उन्हें देना चाहिए (देखें, रोमियों 1:17; गला. 3:11)। पौलुस आग्रह करता है कि श्रोतागण एक फैसला करें। यह फैसला बौद्धिक नहीं होना चाहिए, तर्क वितर्क से फैसला करना काफी नहीं है, वह कहता है कि व्यक्तिगत रूप से मसीह के प्रति पूर्ण समर्पण होना चाहिए कि केवल मसीह ही एकमात्र आशा है। फिर यह विश्वास और पश्चाताप मसीह की तरह जीवन व्यतीत करने के द्वारा प्रतिदिन के जीवन में दिखाई भी देना चाहिए।

पद 41 मसीह में नई वाचा के उद्धार की दिल दहला देने वाली चेतावनी उन लोगों के बारे में प्रस्तुत करता है जो मसीह की निन्दा करते और उसके प्रेम को ठुकराते हैं।

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 13:42-43

42उनके बाहर निकलते समय लोग उनसे विनती करने लगे कि अगले सब्त के दिन हमें ये बातें फिर सुनाई जाएँ। 43जब सभा उठ गई तो यहूदियों और यहूदी मत में आए हुए भक्तों में से बहुत से पौलुस और बरनबास के पीछे हो लिए; और उन्होंने उनसे बातें करके समझाया कि परमेश्वर के अनुग्रह में बने रहो।

13:42 लोग उनसे विनती करने लगे ये बातें फिर सुनाई जाएँ यह पवित्र आत्मा के सामथ्र्य को प्रकट करता है (1) कि उसने पौलुस के उपदेश का प्रयोग किया और (2) पाप क्षमा पाने की भूख और परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप करने की भावना लोगों के मनों में जागृत हुई। सभी लोग परमेश्वर के स्वरूप पर सृजे गये हैं।

13:43

NASB	**''यहूदी मत के नए भक्तों**
NKJV	**''नए भक्त''**
NRSV	**''यहूदी मत में आए भक्त''**
TEV	**''वे अन्यजाति जो यहूदी बन गए''**
NJB	**''नए भक्त''**

शाब्दिक रूप से उपरोक्त वाक्यांश का अर्थ है वे लोग जो यहूदी बन गए थे और उपासना किया करते थे। यह प्रेरि. 13:16,26 के ''परमेश्वर का भय मानने वाले'' लोगों से भिन्न लोग थे (देखें, प्रेरि. 10:2,22,35)।

पद 43 उन अन्यजाति लोगों की ओर संकेत करता है जो औपचारिक रूप से यहूदी बन गए थे और जिन्होंने निम्न बातों को पूरा किया था:

1. गवाहों के सामने स्वयं ही बपतिस्मा लिया हो।
2. पुरुष होने पर खतना कराया हो।
3. यरूशलेम के मन्दिर में जाकर बलिदान चढ़ाया हो।

नए नियम में इस प्रकार के यहूदियों के संदर्भ बहुत कम पाए जाते हैं (देखें, मत्ती 23:15; प्रेरि. 2:11; 6:5; 13:43)।

■ **''उन्होंने समझाया कि परमेश्वर के अनुग्रह में बने रहो''** संदर्भ द्वारा इस वाक्यांश की परिभाषा देना कठिन है:

1. संभव है कुछ श्रोताओं ने अपने मनों में पहले ही से सुसमाचार ग्रहण कर रखा हो।
2. ये लोग उनमें से हो सकते हैं जो पुराने नियम से परमेश्वर के अनुग्रह के विषय में जो कुछ जानते थे उसमें ईमानदार थे, तथा पौलुस द्वारा और बातें सुनना चाहते थे (प्रेरि. 13:44)।

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 13:44-47
44अगले सब्त के दिन नगर के प्रायः सब लोग परमेश्वर का वचन सुनने को इकट्ठे हो गए। 45परन्तु यहूदी भीड़ को देखकर डाह से भर गए, और निन्दा करते हुए पौलुस की बातों के विरोध में बोलने लगे। 46तब पौलुस और बरनबास ने निडर होकर कहा, ''अवश्य था कि परमेश्वर का वचन पहले तुम्हें सुनाया जाता; परन्तु जब तुम उसे दूर हटाते हो, और अपने को अनन्त जीवन के योग्य नहीं ठहराते, तो देखो, हम अन्यजातियों की ओर फिरते हैं। 47क्योंकि प्रभु ने हमें यह आज्ञा दी है, 'मैंने तुझे अन्यजातियों के लिये ज्योति ठहराया है, ताकि तू पृथ्वी की छोर तक उद्धार का द्वार हो।'

13:44 ''नगर के प्रायः सब लोग....वचन सुनने इकट्ठा हो गए'' यह अतिश्योक्ति है, नगर के सब लोगों ने तो सभा में हिस्सा नहीं लिया होगा। परन्तु पौलुस के उपदेश का स्पष्ट प्रभाव हम लोगों पर देखते हैं।

NASB, NRSV, TEV ''**प्रभु का वचन**''
NKJV, NJB, REB ''**परमेश्वर का वचन**''

यहाँ पर यूनानी मूल पाठों में जरा सी भिन्नता पाई जाती है:

1. ''प्रभु'' इसमें MSS P^{74},א,A, B^2
2. ''परमेश्वर'' इसमें MSS B, C, E

UBS^4 में ''प्रभु'' लिखा है, परन्तु ''सी'' "C" श्रेणी में रखता है (निर्णय करना कठिन)। हालांकि इतनी सारी भिन्नताएँ हैं तो भी पाठांश के मूल अर्थ में कोई परिवर्तन नहीं; क्योंकि सुसमाचार यीशु के विषय में दिव्य प्रकाशन है, जो मसीह है।

13:45 ''परन्तु यहूदी भीड़ को देखकर डाह से भर गए'' चाहे बड़ी भीड़ एकत्रित हो जाए अथवा भीड़ में बड़ी संख्या में यहूदी आ जाएँ, यहूदियों का डाह से भर जाना निश्चित था। यहूदी अगुवों के जीवन में डाह व ईश्र्या यरूशलेम में और बाहर के क्षेत्रों में भी पाई जाती थी (देखें, मत्ती 27:18; मरकुस 15:10; प्रेरि. 17:5)।

आगे चलकर रोमियों की पत्री में पौलुस ने इसे यहूदियों के अविश्वास की समस्या कहा (देखें, रोमियों 9-11)। उसने कहा कि परमेश्वर ने थोड़े समय के लिए इस्राएल की आँखों को अन्धा कर दिया था ताकि अन्यजाति लोग उद्धार पा सकें। परन्तु परमेश्वर ने अन्य जातियों के उद्धार पाने को एक साधन के रूप में इस्तेमाल किया ताकि

इस्राएली ईष्र्या से भर जाएं और मसीह पर विश्वास करने लगें, और इस प्रकार सुसमाचार के द्वारा सारे लोग एकता में बन्ध जाएँ (देखें, इफि. 2:11-3:13)।

परन्तु यहाँ एक समस्या है कि ऐसा कब होगा? यही प्रश्न जकर्याह 12:10 के सम्बन्ध में भी पूछा जा सकता है। क्या यह भविष्यद्वाणी प्रारम्भिक कलीसिया के सम्बन्ध में थी जिससे विश्वास करने वाले यहूदी शामिल थे अथवा भविष्य के काल के संबंध में थी? डाह व ईष्र्या द्वारा उद्धार प्रदान करने के उद्देश्य से थी (देखें, रोमियों 10:19; 11:11,14)। परन्तु यहाँ पर ईष्र्या अविश्वास उत्पन्न करती है।

■ **''डाह से भर गए''** प्ररि. 3:10 में टिप्पणी देखें।

■ **''परमेश्वर निन्दा करते हुए''** जब कि ये यहूदी अपनी परम्पराओं का बचाव करते हुए पौलुस के प्रचार का विरोध कर रहे थे, स्वयं भी निन्दा करने के दोषी थे। यहाँ पर बीच में रहने का प्रश्न नहीं था, या तो मसीही विश्वास सच्चा और परमेश्वर की इच्छा का सच्चा प्रकाशन है या फिर यहूदीवाद सच्चा है।

13:46 ''निडर होकर कहा'' प्रेरितों के काम पुस्तक में आत्मा से परिपूर्णता का यह एक चिन्ह है।

■ **''अवश्य था कि परमेश्वर का वचन पहले तुम्हें सुनाया जाता''** प्रारम्भिक मिशनरियों के प्रचार का यही तरीका था। यहूदियों को प्राथमिकता दी जाती थी (देखें रोमियों 9-11), परन्तु इसमें परमेश्वर ने अन्यजातियों को भी शामिल कर लिया। जो यहूदी आराधनालय में थे वे पुराना नियम जानते थे और वे भविष्यद्वाणियों को अपनी पुस्तकों में जाँच सकते थे। इस पुस्तक में बहुत से नमूने और पाठांश इस विषय में पाए जाते हैं। (देखें, प्रेरि. 3:26; 9:20; 13:5,14; 16:13; 17:2,10,17)।

■ **''तुम उसे दूर हटाते हो...''** यह बड़ा कठोर क्रिया शब्द है जो सप्तूजैन्त में अनेक बार प्रयुक्त किया गया है। इसका मूल अर्थ है ''दूर फैंक देना।'' अथवा त्याग देना। यह शब्द स्तिफनुस के उपदेश में इस्राएलियों के लिए प्रयुक्त हुआ है (देखें, प्रेरि. 7:39)। पौलुस ने भी रोमियों 11:1-2 में इस शब्द का उपयोग यह बताने के लिए किया है कि परमेश्वर ने अपने लोगों को त्यागा नहीं है, परन्तु उन्होंने ही उसके पुत्र को जो उद्धार का एकमात्र माध्यम, और उसका पूर्ण प्रकाशन था, त्याग दिया है।

■ **''अपने को अनन्त जीवन के योग्य नहीं ठहराते''** यीशु को व्यक्तिगत रूप से उद्धारकर्ता स्वीकार करने की अनिवार्यता की विचारधारा और ''पहले से चुन लिए जाने'' की विचारधारा को, जिस पर अक्सर प्रेरितों के काम पुस्तक में बल दिया गया है, साथ-साथ रखना बड़ा ही कठिन कार्य है। परन्तु कोई भी मनुष्य विश्वास में तब तक नहीं आ सकता है जब तक कि पवित्र आत्मा उसे खींचकर न लाए। (देखें, यूहन्ना 6:44, 65), परन्तु हमारा न्याय इस बात के आधार पर होगा कि हमने मसीह पर विश्वास किया है अथवा नहीं। पौलुस के प्रचार को ठुकरा कर उन्होंने अपनी सच्ची तस्वीर सामने रख दी, (देखें, यूहन्ना 3:17-21)। सुसमाचार सुनकर, उचित प्रत्युत्तर न देने का इल्ज़ाम परमेश्वर पर नहीं लगाया जा सकता है। परमेश्वर ने तो उद्धार का एकमात्र उपाय, अपना पुत्र दे कर संसार में प्रस्तुत कर दिया है। अब मनुष्य पर ही निर्भर है कि उस पर विश्वास करें या न करें।

■ **''हम अन्यजातियों की ओर फिरते हैं''** आगे चलकर सुसमाचार प्रचार का यह नियमित नमूना बना गया (देखें, प्रेरि.18:6; 22:21; 26:20; 28:28; रोमि. 1:16)।

13:47 यह यशायाह 49:6 से लिया गया सप्तूजैन्त का उद्धरण है (देखें, यशा. 42:6)। लूका 2:32 में शमौन ने यीशु को आशीष देते समय इस उद्धरण का उपयोग करके उसके विश्वव्यापी उद्धार के मसीह संबंधी कार्य की पुष्टि की थी (देखें, प्रेरि. 1:8 में विशेष विषय)। यह भी हो सकता है यहाँ पर शब्द ''ज्योति'' पौलुस और बरनबास की ओर संकेत करता है जो इन अन्जातियों के मध्य सुसमाचार प्रचार कर रहे थे (देखे, डैरेक बौच द्वारा लिखित पुस्तक फाउन्डेशन्स फॉर बिबलीकल इन्टरप्रटेशन, ब्रॉडमैन एण्ड होल्मैन पब्लिशर्स, 1994, पेज 97। (Darrell Boch, p.

97 in *Foundations for Biblical Interpretation*, Broadman & Holman Publishers, 1994) अब यहाँ पर पौलुस इसी उद्धरण का उपयोग विश्वव्यापी सुसमाचार को संपूर्ण विश्व में प्रचार करने के संबंध में करता है। "ताकि तू पृथ्वी की छोर तक उद्धार का द्वार हो" इस वाक्यांश में प्रेरि. 1:8 की ओर संकेत हो सकता है। यह वाक्यांश सुसमाचार की विश्व-व्यापकता को दर्शाता है।

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 13:48-52

[48]यह सुनकर अन्यजाति आनन्दित हुए, और परमेश्वर के वचन की बड़ाई करने लगे; और जितने अनन्त जीवन के लिये ठहराए गए थे, उन्होंने विश्वास किया। [49]तब प्रभु का वचन उस सारे देश में फैलने लगा। [50]परन्तु यहूदियों ने भक्त और कुलीन स्त्रियों को और नगर के प्रमुख लोगों को उसकाया, और पौलुस और बरनबास के विरुद्ध उपद्रव करवाकर उन्हें अपनी सीमा से निकाल दिया। [51]तब वे उनके सामने अपने पाँवों की धूल झाड़कर इकुनियुम को चले गए। [52]और चेले आनन्द से और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होते गए।

13:48 "जब अन्यजातीय ने यह सुना, और परमेश्वर के वचन की बड़ाई *करने लगे*" इनमें अधिकांश लोग आराधनालय में वर्षों से आते रहे थे और कभी भी विश्वव्यापी सुसमाचार नहीं सुना था कि मसीह पर विश्वास लाने के द्वारा वे ग्रहण किये जा सकते हैं। जब उन्हेंाने वचन सुना तो उत्साहपूर्वक उसे स्वीकार किया (देखें, प्रेरि. 28:28) और दूसरों को भी सुसमाचार सुनाने लगे (प्रेरि. 13:49)।

■ **"जितने अनन्त जीवन के लिए ठहराए गये थे, उन्होंने विश्वास किया"** यह पहले से ठहराए जाने के संबंध में बिल्कुल स्पष्ट वक्तव्य है, जो रब्बियों में और नए नियम काल में सामान्य विचार था। परन्तु यह विचार नए नियम के अन्य पाठांशों की तरह जटिल और अस्पष्ट है जिनका सम्बन्ध परमेश्वर की इच्छा और मनुष्य की स्वतन्त्र इच्छा से है (देखें, फिलि. 2:12,13)। यहाँ पर मिलिट्री का यूनानी शब्द टास्सो (*tassō*) प्रयुक्त हुआ है जिसका अर्थ है "भर्ती करना" अथवा "नियुक्त करना।"

भर्ती करना अथवा नियुक्त करने की धारणा दो लाक्षणिक पुस्तकों की ओर इशारा करती है जो परमेश्वर के पास हैं (देखें, दानिय्येल 7:10; प्रका. 20:12)। पहली पुस्तक में मनुष्यों के कार्य लिखे जाते हैं (देखे, भजन 56:8; 139:16; यशायाह 65:6 तथा मलाकी 3:16)। दूसरी जीवन की पुस्तक है (देखें, निर्ग. 32:32; भजन 69:28; यशा. 4:3; दानि. 12:1; लूका 10:20; फिलि. 4:3; इब्रा. 12:23; प्रका. 3:5; 13:8; 17:8; 20:12-15; 21:27)। देखें विशेष विषयः चुना जाना, पूर्व-निर्धारण तथा प्रेरि. 2:47 में "धर्म वज्ञानिक सन्तुलन की आवश्यकता।

13:50 "परन्तु यहूदियों ने भक्त और कुलीन स्त्रियों को उसकाया" यह पद प्रथम शताब्दी में एशिया माइनर में स्त्रियों को सम्मानित स्थान दिए जाने का ऐतिहासिक व सांस्कृतिक प्रमाण देता है (देखें, प्रेरि. 16:14; 17:4)।

प्रस्तुत सन्दर्भ में यह उन यहूदी मत में आए नए विश्वासियों की ओर संकेत करता है जो स्त्रियाँ समाज में अगुवा थीं और उच्च नागरिकों में जिनका विवाह हुआ था। ए.टी. रौबर्टसन की पुस्तक "वर्ल्ड पिक्चर्स इन द न्यू टैस्टामैन्ट, भाग 3 पेज 201 पर बताती है (A. T. Robertson, *Word Pictures in the NewTestament*, vol. 3, p. 201)कि अन्यजाति स्त्रियाँ यहूदी मत में बड़ी रुचि रखती थीं क्योंकि वे चरित्रवान होती थीं (देखें, *strabo* 7:2 तथा *Juvenal* 6:542। (cf. *Strabo* 7:2 and *Juvenal* 6:542)

■ **"पौलुस के विरुद्ध उपद्रव करवाकर"** 2 तीमु. 3:11 में पौलुस इसका उल्लेख करता है।

13:51 "तब वे उनके सामने अपने पाँवों की धूल झाड़कर" यह परित्याग करने का यहूदी चिन्ह है (देखें, मत्ती 10:14; मरकुस 6:11; लूका 9:5; 10:11)। यह अनिश्चित है कि क्या यह (1) उनके पैरों पर धूल और चलने से चप्पल या (2) उनके कपड़ों पर धूल जो काम करते समय लग गई थी।

▪ **"इकुनियुम"** यह लुकाउनिया का एक बड़ा नगर था जो रोमी प्रान्त गलातिया में स्थित था। यह पिसिदिया के अन्ताकिया की दक्षिण-पूर्वी दिशा में लगभग 80 मील दूर और लुस्त्रा के सामने उत्तरी दिशा में स्थित था।

13:52 "आनन्द से परिपूर्ण होते गए" जिस प्रकार वे पहले आनन्द से और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण थे उसी प्रकार आगे भी आनन्द से और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होते गए। एन ए एस बी (NASB) 1995 बताता है, वे पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होते गए। केवल पवित्र आत्मा ही सताव के मध्य आनन्द से परिपूर्ण कर सकता है (देखें, रोमियों 5:3; याकूब 1:2 क्रमशः 1 पतरस 4:12 क्रमशः)।

यहाँ पर शब्द चेले किसकी ओर संकेत करता है, नए विश्वासियों की ओर अथवा मिशनरी टीम की ओर या फिर दोनों की ओर, यह बात अस्पष्ट है।

विचार विमर्श के लिये प्रश्न

यह अध्ययन में मार्गदर्शन करने की टीका है, इसका अर्थ है कि आप बाइबल की अपनी व्याख्या करने के स्वयं ही जिम्मेदार हैं। हम में से प्रत्येक को उसी ज्ञान के अनुसार चलना चाहिए जो हमारे पास है। व्याख्या करने के कार्य में आप आपकी बाइबल और पवित्र आत्मा केन्द्रिय स्थान रखते हैं। यह कार्य व्याख्याकार पर न छोड़ दें।

निम्नलिखित प्रश्न अपनी सहायता के लिए दिए गए हैं ताकि आप पुस्तक के गम्भीर विषयों पर पुनर्विचार कर सकें। वे आपके विचारों को आन्दोलित करने के लिए हैं, इनके अलावा और भी प्रश्न हो सकते हैं:

1. चुनाव-समूह के द्वारा नियुक्त करते समय 13:2-3 को आधार क्यों नहीं बनाया जा सकता है?
2. पौलुस आराधनालय में जाकर क्यों सबसे पहले प्रचार करता था?
3. यूहन्ना मरकुस ने प्रचारक टीम का साथ क्यों छोड़ दिया था? (देखें, प्रेरि. 13:13)
4. प्रेरि. 13:39 किस प्रकार से गलतियों 3 से मेल खाता है?
5. पहले से ठहराए जाने और मानवीय स्वतन्त्र इच्छा के सन्दर्भ में प्रेरि. 13:48 को समझाईए?

Copyright © 2013 Bible Lesson International

प्रेरितों के काम-14
बाइबल के विभिन्न आधुनिक अनुवादों में पैराग्राफ-विभाजन

UBS4	NKJV	NRSV	TEV	NJB
पौलुस और बरनबास इकुनिया में	इकुनिया में	इकुनिया क्षेत्र में सेवकाई और वापसी	इकुनिया में	इकुनिया में सुसमाचार प्रचार
14:1-7	14:1-7	14:1-7	14:1-4	14:1-1
				14:1-2
				14:1-3
				14:4 -7
			14:5-7	
पौलुस और बरनबास लुस्त्रा में	लुस्त्रा में व्यभिचार		लुस्त्रा और दरीबे में	अपंग को चंगाई
14:8-18	14:8-18	14:8-18	14:8-13	14:18-10
				14:11-18
			14:14-18	
	पथराव, दरीबे भागना			कार्य की समाप्ति
14:19-20	14:19-20	14:19-20	14:19-20	14:19-20
अन्ताकिया और सीरिया वापस लौटना	यीशु में नए आयों को बल देना		अन्ताकिया और सीरिया वापस लौटना	
14:21-28	14:21-28	14:21-23	14:21-23	14:21-23
		14:24-28	14:24-26	14:24-26
			14:27-28	14:27-28

पठन चक्र तीसरा (''अच्छे बाइबल अध्ययन का मार्गदर्शन'' से)

पैराग्राफ स्तर पर मूल लेखक के अभिप्राय को समझना

यह अध्ययन करने की मार्गदर्शक टीका है, जिसका अर्थ है कि आप अपनी बाइबल-व्याख्या के स्वयं उत्तरदायी हैं। हम में से प्रत्येक को अपने ज्ञान व समझ के अनुसार कार्य करना चाहिए। व्याख्या-प्रक्रिया में आप, आपकी बाइबल तथा पवित्र आत्मा प्राथमिक स्थान रखते हैं। आपको यह टीका कार्य टीकाकार पर नहीं छोड़ना चाहिए।

पूरा अध्याय एक बैठक में पढ़ें। विषयों को पहचानें। अपने विषय-विभाजन की तुलना उपरोक्त पाँच आधुनिक अनुवादों के विषय-विभाजन से करें। पैराग्राफों का विभाजन प्रेरणा प्राप्त नहीं होता है, परन्तु यह मूल लेखक के अभिप्राय को समझने की कुंजी है, जो कि व्याख्या करने का आधार है। प्रत्येक पैराग्राफ में केवल एक ही मूल विषय होता है:

1. पहला पैराग्राफ
2. दूसरा पैराग्राफ

3. तीसरा पैराग्राफ
4. अन्य

गलातियों की पत्री से पौलुस की सेवकाई का सम्बन्ध

A. पृष्ठभूमि के इन दोनों पहलुओं का साथ साथ अध्ययन किया जाना अति आवश्यक है क्योंकि पत्री के प्राप्त-कर्त्ताओं की परस्पर दो विरोधी विचारधाराएँ पत्री के तिथि-निर्धारण पर प्रभाव डालती हैं। दोनों विचारधाराओं के अपने तर्क हैं और सीमित बाइबल संबंधी प्रमाण हैं।
B. दो विचारधाराएँ ये हैं:
   1. परम्परावादी विचारधारा; जो 18वीं शताब्दी तक सर्वमान्य रही।
      a. इसे ''उत्तरी गलातिया विचारधारा'' कहते हैं।
      b. यह विचारधारा मानती है कि ''गलातिया'' टर्की के उत्तरी केन्द्रिय पठार के गैर यहूदियों-गलातियों की ओर इशारा करता है (देखें 1 पतरस 1:1)। इन गैर यहूदी जातियों ने तीसरी शताब्दी ई.पू. में इस क्षेत्र पर आक्रमण किया था (Greek *Keltoi* or Latin *Gall*) । अपने आप को पश्चिमी यूरोपियन भाइयों से अलग रखने के लिये वे स्वयं को ''गालो-ग्रेसियन'' (Greek *Keltoi* or Latin *Gall*) कहा करते थे। पिरगमुम के राजा अतालुस प् के द्वारा 230 ई.पू. में इन्हें पराजित कर दिया गया। वर्तमान टर्की अथवा उत्तरी सैन्ट्रल एशिया माइनर तक इनका अधिकार-क्षेत्र सीमित था।
      c. यदि इसी जातीय समूह को स्वीकार करें तो तिथि का निर्धारण पौलुस की दूसरी अथवा तीसरी मिश्नरी यात्रा के दौरान 50 ई. के मध्य होगा, और सिलास तथा तीमुथियुस पौलुस के सह-यात्री रहे होंगे।
      d. कुछ लोग गला. 4:13 की पौलुस की बीमारी को मलेरिया मानते हैं। उनका मानना है कि पौलुस दलदल वाले मलेरिया प्रभावित समुद्री तट के निचले इलाके से उत्तरी दिशा के ऊपरी क्षेत्र में चला गया था।
   2. दूसरी विचारधारा का समर्थन सर एम. रैमज़े द्वारा किया जाता है, जो सेंट पौल द ट्रैवलर एण्ड रोमन सिटिजन के लेखक हैं, न्यूयार्कः जी.पी. पुटनाम सन्स, 1896. (Sir Wm. M. Ramsay, *St. Paul the Traveler and Roman Citizen*, New York: G. P. Putnam's Sons, 1896.)
      a. जब कि परम्परावादी विचारधारा ''गलातियों'' को गैरयहूदी जाति मानती है, तो यह विचारधारा उन्हें शासन करने वाली जाति मानती है। पौलुस ने अक्सर अपनी पत्रियों में रोमी प्रान्तों का उल्लेख किया है (जैसे 1 कुरि. 16:19; 2 कुरि. 1:1; 8:1 इत्यादि) तो इससे ज्ञात होता है कि ''गलातिया'' में इन गैर यहूदी जाति की अपेक्षा अधिक विस्तृत क्षेत्र शामिल था। इन सब जातियों ने बहुत पहले से रोम का समर्थन करना आरम्भ कर दिया था और इन्हें स्थानीय स्वतन्त्रता और अपने क्षेत्र पर अधिकार प्राप्त था। यदि यह सारा विस्तृत क्षेत्र ''गलातिया'' नाम से जाना जाता था तो यह संभव हो सकता है कि इन क्षेत्रों में कलीसियाएँ पाई जाती थीं, जहाँ अपनी प्रथम मिशनरी यात्रा के दौरान पौलुस ने दौरा किया, और इन दक्षिणी नगरों के नामों का उल्लेख प्रेरि. 13-14 अध्यायों में पाया जाता है, जैसे पिसिदिया का अन्ताकिया, लुस्त्रा, दिरबे और इकुनियुम इत्यादि।
      b. यदि हम इस ''दक्षिणी विचारधारा'' को स्वीकार करते हैं तो गलातियों की रचना तिथि यरूशलेम की सभा (प्रेरि.15) होने से पहले निर्धारित होती है। यरूशलेम की यह सभा ई. सन् 48-49 में हुई थी, और गलातियों की पत्री संभवतः इसी दौरान लिखी गई। यदि यह बात सही है, तो गलातियों की पत्री नए नियम की सबसे पहले लिखी गई पत्री है।
      c. दक्षिणी गलातियों विचारधारा के कुछ प्रमाण:

(1) पौलुस की यात्रा के सह-यात्रियों का कहीं भी उल्लेख नहीं पाया जाता है, केवल बरनबास ही का उल्लेख तीन बार पाया जाता है (देखें, प्रेरि. 2:1, 9, 13)। यह बात पौलुस की प्रथम मिश्नरी यात्रा में सही ठहरती थी क्यांेकि बरनबास पौलुस के साथ था।
(2) इस बात का भी उल्लेख पाया जाता है कि तीतुस का खतना नहीं हुआ था (प्रेरि. 2:1-5) इससे रचना तिथि यरूशलेम की सभा से पहले सही बैठती है।
(3) पतरस का उल्लेख (प्रेरि. 2:11-14) तथा अन्य जातियों के साथ संगति रखने की समस्या का यरूशलेम की सभा होने से पहले की घटनाएँ होना सही जान पड़ती हैं।
(4) जब यरूशलेम की कलीसिया में सहायता सामग्री भेजी गई (प्रेरि. 20:4) तो पौलुस के कुछ साथी साथ में थे। उनमें उत्तरी गलातिया के नगरों में से कोई नहीं था जबकि इन कलीसियाओं ने इसमें भाग लिया था (देखें, 1 कुरि. 16:1)।

उपरोक्त विचारधाराओं से संबंधित तर्क वितर्क के श्रेष्ठ प्रस्तुतीकरण के लिए किसी अच्छी कमेन्ट्री-पुस्तक का प्रयोग कीजिए। उनमें आपको और भी विस्तृत और सही जानकारी मिल सकेगी। इस सम्बन्ध में किसी और बात पर सहमति नहीं है, कि “दक्षिणी विचारधारा” सब तथ्यों में उचित प्रतीत होती है।

C. प्रेरितों के काम से गलतिया की पत्री का सम्बन्धः
1. पौलुस ने यरूशलेम की पाँच यात्राएँ कीं, लूका द्वारा प्रेरितों के काम की पुस्तक में दर्ज की गईं
   a. पौलुस के मन-परिवर्तन के बाद, प्रेरि. 9:26-30
   b. अन्य जातियों की ओर से सहायता-सामग्री पहुंचाना, प्रेरि. 11:30; 12:25
   c. यरूशलेम की सभा में जाना - प्रेरि. 15:1-30
   d. संक्षिप्त भेंट, प्रेरि. 18:22
   e. अन्यजातियों के मध्य कार्य का स्पष्टीकरण, प्रेरि. 21:15 क्रमशः
2. गलातियों की पत्री में पौलुस की दो यरूशलेम यात्रा का उल्लेखः
   a. तीन वर्ष के बाद जाना, (गला. 1:18)
   b. 14 वर्ष बाद जाना (गला. 2:1)
3. संभवतः यह उचित जान पड़ता है कि प्रेरि. 9:26 का संबंध गला. 1:18; प्रेरित. 11:30 और 15:1 क्रमशः से है, जो अलिखित विवरणों का भाग है और जिनका उल्लेख गला. 2:1 में है।
4. प्रेरि. 15 तथा गला. 2 के विवरणों में थोड़ी सी भिन्नता पाई जाती है जो संभवतः निम्न कारणों से हैः
   a. भिन्न दृष्टिकोण के कारण
   b. लूका और पौलुस के भिन्न भिन्न उद्देश्यों के कारण
   c. संभवतः गलातियों 2 की घटना प्रेरि. 15 की सभा के बाद हुई हो, या उसी दौरान हुई हो।

शब्दों और वाक्यांशों का अध्ययन

NASB (**नवीनतम) पाठः प्रेरितों के काम** 14:1-7

[1]इकुनियुम में ऐसा हुआ कि वे यहूदियों के आराधनालय में साथ-साथ गए, और इस प्रकार बातें कीं कि यहूदियों और यूनानियों दोनों में से बहुतों ने विश्वास किया। [2]परन्तु विश्वास न करनेवाले यहूदियों ने अन्यजातियों के मन भाइयों के विरोध में उसकाए और कटुता उत्पन्न कर दी। [3]वे बहुत दिन तक वहाँ रहे, और प्रभु के भरोसे पर हियाव से बातें करते थे; और वह उनके हाथों से चिन्ह और अद्भुत काम करवाकर अपने अनुग्रह के वचन पर गवाही देता था। [4]परन्तु नगर के लोगों में फूट पड़ गई थी, इससे कितने तो यहूदियों की ओर, और कितने प्रेरितों की ओर हो गए। [5]परन्तु जब अन्यजातीय और यहूदी उनका अपमान और उन पर पथराव करने के लिये अपने सरदारों समेत उन पर दौड़े [6]तो वे इस बात को जान गए, और लुकाउनिया के लुस्त्रा और दिरबे नगरों में, और आसपास के प्रदेशों में भाग गए [7]और वहाँ सुसमाचार सुनाने लगे।

14:1 ''इकुनियुम'' दूसरी शताब्दी के अप्रमाणिक साहित्य में एक पुस्तक पाई जाती है जिसका नाम है ''पौलुस के कार्य और ठेकला'' जिसमें पौलुस की गतिविधियों का उल्लेख है जो उसके द्वारा इकुनियुम में हुईं। केवल इसी पुस्तक में पौलुस के बाहरी रंग रूप व शारीरिक रचना का वर्णन इस प्रकार पाया जाता हैः वह नाटा, गंजा, घनी भौंहे वाला और बाहर को आँखें निकली हुई वाला व्यक्ति था। यह वर्णन प्रभावशाली तो नहीं जान पड़ता है पर फिर भी इससे पता चलता है कि एशिया माइनर में उसका कितना प्रभाव था। यह सम्पूर्ण क्षेत्र रोमी प्रान्त गलातिया का भाग था।

▪ **''आराधनालय में प्रवेश किया''** यह पौलुस और बरनबास की सामान्य क्रिया थी। यहाँ के यहूदी और यूनानी दोनों ही पुराने नियम की प्रतिज्ञाओं से और भविष्यद्वाणियों से भली-भाँति परिचित थे।

▪ **''यहूदियों और यूनानियों दोनों में से बहुतों ने विश्वास किया ''** यह वाक्यांश इस पुस्तक का अभिप्राय दर्शाता है। सुसमाचार विभिन्न जन समूहों के मध्य सामर्थ के साथ फैलता जा रहा था। पुराने नियम की प्रतिज्ञाओं की पूर्ति (उत्पत्ति 3:15; 12:3) अब मानव जाति में महसूस की जा रही थी। कलीसिया की तीव्र गति से उन्नति को दर्शाना लूका के लेखों की एक विशेषता है।

14:2 ''विश्वास न करने वाले यहूदी'' उद्धार की प्राप्ती विश्वास करने के द्वारा दिखाई देती है (प्रेरि. 14:1), परन्तु आत्मिक अंधापन और अक्खड़पन अनाज्ञाकारिता और अविश्वास करने से प्रकट होता है। सुसमाचार का इन्कार करने से मनुष्य पतन और अन्धेपन का शिकार हो जाता है:

लूका यहाँ पर यहूदियों के विषैले विरोध रूपी अविश्वास और निरन्तर सताने का लिखित प्रमाण देता है। उनके इसी अविश्वास और सुसमाचार के विरोध ने ग़ैर यहूदियों के लिये विश्वास का द्वार खोला (देखें, रोमियों 9-11)

▪ **''उकसाए गए''** यह सप्तूजैन्त में विद्रोह को दर्शाने वाला एक सामान्य क्रिया शब्द है (देखें, 1 शमू. 3:12; 22:8; 2 शमू. 18:31; 22:49; 1 इति. 5:26), परन्तु नये नियम में यह शब्द केवल यहीं पर और प्रेरि. 13:50 में प्रयुक्त हुआ है।

▪ **''कड़वाहट से भरा''** सप्तूजैन्त में यह बुराई और अत्याचारी लोगों का आचरण दर्शाने का एक और सामान्य शब्द है जो दूसरों के साथ अभद्र व्यवहार करते हैं। लूका प्रेरितों के काम में अक्सर यह शब्द प्रयुक्त करता है (देखें, प्रेरि. 7:6,19; 12:1; 14:2; 18:10)।

14:3 इस नए युग में परमेश्वर यीशु मसीह के सुसमाचार की विश्वासयोग्यता और अपने अनुग्रह पूर्ण स्वभाव की पुष्टि के लिए अद्भुत चिन्हों और अद्भुत कामों का प्रयोग करता है (देखें, प्रेरि. 4:29-30; इब्रा-2:4)

14:4 ''परन्तु नगर के लोगों में फूट पड़ गई '' सत्य वचन हमेशा विभाजन लाता है (देखें प्रेरि. 17:4-5; 19:9; 28:24; मत्ती 10:34-36)। आराधनालय के कुछ यहूदियों ने विश्वास किया, परन्तु अन्य सुसमाचार के विरुद्ध लड़ाकू बन गए।

▪ **''प्रेरितों के साथ''** यह पौलुस और बरनबास दोनों की ओर इशारा करता है। इस अध्याय में (अर्थात् 14:4 और 14 में) केवल यही वह अवसर है जब लूका ने मूल 12 प्रेरितों को छोड़कर किसी अन्यों के लिए प्रेरित शब्द का इस्तेमाल किया है। बरनबास प्रेरित कहलाता है (देखें, प्रेरि. 14:14)। बरनबास को 1 कुरि. 9:5-6 में भी प्रेरित कहा गया है। बारह प्रेरितों की तुलना में, यहाँ प्रेरित शब्द का प्रयोग स्पष्टरूप से व्यापक अर्थों में किया गया है। गलातियों 1:19 में याकूब को केवल प्रभु का भाई कहा गया है; 1 थिस्स. 1:1 में सिलवानुस और तीमुथियुस को 2:6 सहित प्रेरित गया; रोमियों 16:6-7 में अन्द्रनीकुस और यूनियास को (किंग जेम्स वर्ज़न में यूनिया) (Junia in KJV) प्रेरित कहा गया है, तथा अपुल्लौस को 1 कुरि. 4:6-9 में प्रेरित कहा गया है।

बारह प्रेरित सबसे अलग और अलौकिक थे। जब वे मर गये, तो उनका स्थान किसी ने नहीं लिया, मत्तियाह के अतिरिक्त, जो यहूदा के स्थान पर नियुक्त हुआ था (देखें, प्रेरि. 1)। परन्तु 1 कुरि. 12:28 और इफि. 4:11 में प्रेरित की सेवकाई का वरदान प्राप्त करने की निरन्तर प्रक्रिया का उल्लेख पाया जाता है जिसके आधार पर प्रेरित नियुक्त होते रहे। नए नियम में इस वरदान के कार्यों के विषय में विस्तृत जानकारी नहीं दी गई है। देखें विशेष विषय भेजा जाना (*Apostellō*)

विशेष विषय: भेजें (एपोस्टेलो), जिसमें से "प्रेरित" आता है

अपौसटैलो (*Apostello*) एक सामान्य यूनानी शब्द है जिसका अर्थ है "भेजना"। धर्म वैज्ञानिक रूप से अनेक प्रकार से इसका उपयोग हुआ है :

1. श्रेष्ठ यूनानी में और रब्बियों में इस शब्द का उपयोग ऐसे व्यक्ति के लिए प्रयुक्त होता है जो बुलाया और किसी का औपचारिक प्रतिनिधि बनाकर भेजा गया हो ; बहुत कुछ इंग्लिश के शब्द एम्बेस्डर (Ambassador) के सामान (देखें, 2 कुरि. 5:20)।
2. सुसमाचारों में अक्सर यह क्रिया शब्द पिता की ओर से यीशु को भेजे जाने के संबंध में प्रयुक्त हुआ। यूहन्ना रचित सुसमाचार में यह "मसीह" संबंधी शब्द है (देखें, मत्ती 10:40; 15:24; मर. 9:37; लूका 9:48 तथा विशेषकर यूहन्ना 5:36,38; 6:29,57; 7:29; 8:42; 10:36; 11:42; 17:3,8,18,21,23,25; 20:21) इसका उपयोग यीशु को विश्वासियों को भेजने के लिए किया जाता है (देखें योहन 17:18; 20:21) पद 21 में अपौसटैलो और इसका समानार्थी "पैम्पो" (Pempo) प्रयुक्त हुआ।
3. नए नियम में चेलों के लिए संज्ञा शब्द अपोसल (Apostle) प्रयुक्त हुआ :
   a. मूल बारह चेलों के लिए (मर. 6:30; लू. 6:13; प्रेरि. 1:2,26)
   b. प्रेरितों के विशेष समूह के सहायकों व सहकर्मियों के लिए, जैसे :
      (1) बरनबास (प्रेरि. 14:4,14)
      (2) अन्द्रुनीकुस और यूनियास (KJV में यूनिया, रोमि. 16:7)
      (3) अपुल्लोस (1 कुरि. 4:6-9)
      (4) प्रभु यीशु का भाई याकूब (गला. 1:19)
      (5) सिलवानुस और तीमुथियुस (1 थिस्स. 2:6)
      (6) संभवतः तीतुस (2 कुरि. 8:23)
      (7) संभवतः इपफ्रुदीतुस (फिलि. 2:25)
   c. कलीसिया में पाय जाने वाले आत्मिक वरदान (1 कुरि. 12:28-29; इफि. 4:11)
4. पौलुस ने प्रेरित (अपॉस्ल) शब्द का प्रयोग अपने अधिकांश पत्रों में अपने स्वयं के लिए किया यह दर्शाने के लिए कि वह परमेश्वर की ओर से अधिकार प्राप्त मसीह का प्रतिनिधि है (देखें, रोमि. 1:1; 1 कुरि. 1:1; 2 कुरि. 1:1; गला. 1:1; इफि. 1:1; कुलु. 1:1; 1 तीमु. 1:1; 2 तीमु. 1:1; तीतुस 1:1)।
5. आधुनिक विश्वासी होने के नाते हमें एक समस्या का सामना करना पड़ता है, और वह समस्या यह है कि नया नियम नहीं बताता कि प्रेरितो के इस वरदान में कौन-कौन सी बातें शामिल हैं और विश्वासियों में इसे कैसे पहचाना जा सकता है। स्पष्टरूप से हमें मूल 12 प्रेरितों (#3a) तथा बाद में प्रेरित शब्द के उपयोग (#3b) के बीच अन्तर करना चाहिए। देखें विशेष विषय : प्रेरणा तथा विशेष विषय: ज्योर्तिमय होना । यदि आधुनिक "प्रेरित" (Apostle) प्रेरणा प्राप्त नहीं है कि और अधिक पवित्रशास्त्रों की रचनाएं कर सकें (क्योंकि यहूदा पद 3 के अनुसार कानोन बंद हो चुका है ; देखें विशेष विषय : कानोन तो ये प्रेरित ऐसा कौन सा कार्य करते हैं जो नए नियम के नबियों या प्रचारकों से भिन्न है (इफि. 4:11)?मेरा विचार इस प्रकार है :
   a. जिन क्षेत्रों में सुसमाचार नहीं सुनाया गया वहां कलीसियाएं स्थापित करना (जैसा कि डिडखे (Didache) में पाया जाता है)।
   b. किसी क्षेत्र या संस्था में अगुवा अथवा पास्टर बन जाना।
   c. कोई नहीं जानता।

Copyright © 2014 Bible Lessons International

14:5 "उनके सरदारों के साथ" इस वाक्यांश का संकेत नगर के सरदारों अथवा आराधनालय के अगुवों की ओर हो सकता है। कुछ आरम्भिक शास्त्री लोग और आधुनिक टीकाकार दो सतावों को मानते हैं (1) प्रेरि. 14:2 का और (2) प्रेरि. 14:5 का सताव, परन्तु संदर्भ के अनुसार केवल एक ही सताव संभव है। विभिन्न अनुवादों में:

NASB, NRSV, TEV	**"दुव्र्यवहार करने का प्रयत्न किया"**
NKJV	**" अपशब्द बोलने लगे"**
NJB	**"आक्रमण करने लगे"**

यूनानी शब्द हुबरीज़ो *(hubrizō)* दुव्र्यवहार शब्द से अधिक प्रचण्ड है, संभवतः बलवा करना अथवा हिंसक कार्य करना। सप्तूजैन्त में यह शब्द सामान्य बात है। लूका ने अक्सर इस शब्द का प्रयोग तीन अर्थों में किया है:

1. अपमान करने में (लूका 11:45)
2. हिंसक कार्यवाही में (लूका 18:32; प्रेरि. 14:5)
3. भौतिक सम्पत्ति की हानि में (प्रेरि. 27:10,21)

▪ **"पथर"** यह दूसरा कार्य था जो वे करना चाहते थे; यह कार्य दर्शाता है कि उनके विरोधी उनके विरुद्ध कितने हिंसक हो गए थे। संभवतः यहूदी अगुवों ने यह कार्य इसलिए चुना क्योंकि इस कार्य का संबंध पुराने नियम में निन्दा करने वाले से संबंधित था, (देखें, लैव्य. 24:16; यूहन्ना 8:59; 10:31-33)

14:6 "और लुकाउनिया के लुस्त्रा और दिरबे नगरों में भाग गये" इकुनियुम पिरगा में था। यह नगर एक भिन्न जाति के नगर के निकट था। इससे इस पुस्तक की ऐतिहासिकता का बोध होता है।

14:7 यह एक संयुक्त क्रिया शब्द है जिसका अर्थ है कि वे बार बार सुसमाचार सुनाने लगे। पौलुस की मिश्नरी यात्राओं का मूल विषय यही था (देखें, प्रेरि. 14:21; 16:10)। उसका प्रचार सुनकर जो लोग विश्वास लाते थे वे भी अपना कत्र्तव्य समझते थे कि दूसरों को सुसमाचार सुनाएँ। सुसमाचार सुनाना उनकी प्राथमिकता थी (देखें, मत्ती 28:19-20; लूका 24:47; प्रेरि. 1:8)।

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 14:8-18

**8लुस्त्रा में एक मनुष्य बैठा था, जो पाँवों का निर्बल था। वह जन्म ही से लंगड़ा था और कभी न चला
था। 9वह पौलुस को बातें करते सुन रहा था। पौलुस ने उसकी ओर टकटकी लगाकर देखा कि उसे चंगा हो
जाने का विश्वास है, 10और ऊँचे शब्द से कहा, "अपने पाँवों के बल सीधा खड़ा हो।" तब वह उछलकर
चलने फिरने लगा। 11लोगों ने पौलुस का यह काम देखकर लुकाउनिया की भाषा में ऊँचे शब्द से कहा,
"देवता मनुष्यों के रूप में होकर हमारे पास उतर आए हैं।" 12उन्होंने बरनबास को ज्यूस, और पौलुस को
हिरमेस कहा क्योंकि वह बातें करने में मुख्य था। 13ज्यूस के उस मन्दिर का पुजारी जो उनके नगर के
सामने था, बैल और फूलों के हार फाटकों पर लाकर लोगों के साथ बलिदान करना चाहता था। 14परन्तु
बरनबास और पौलुस प्रेरितों ने जब यह सुना, तो अपने कपड़े फाड़े और भीड़ में लपके, और पुकारकर
कहने लगे; 15"हे लोगो, तुम क्या करते हो? हम भी तो तुम्हारे समान दुःख-सुख भोगी मनुष्य हैं, और तुम्हें
सुसमाचार सुनाते हैं कि तुम इन व्यर्थ वस्तुओं से अलग होकर जीवते परमेश्वर की ओर फिरो, जिसने स्वर्ग
और पृथ्वी और समुद्र और जो कुछ उनमें है बनाया। 16उसने बीते समयों में सब जातियों को अपने-अपने
मार्गों में चलने दिया। 17तौभी उसने अपने आप को बे-गवाह न छोड़ा; किन्तु वह भलाई करता रहा, और
आकाश से वर्षा और फलवन्त ऋतु देकर तुम्हारे मन को भोजन और आनन्द से भरता रहा।" 18यह कहकर
भी उन्होंने लोगों को बड़ी कठिनाई से रोका कि उनके लिये बलिदान करें।**

14:8 "लुस्त्रा में" इस नगर में तीमुथियुस का घर था (देखें, प्रेरि. 16:1)। यह रोमी उपनिवेश था जिसे अगस्तुस कैसर ने ई. 6 में स्थापित किया था। यहाँ पर संभवतः कोई आराधनालय नहीं था, इसलिए पौलुस और बरनबास सड़क पर ही प्रचार सभा कर रहे थे।

▪ ताकि चाल या धोखे की कोई संभावना न रहे प्रेरित 3: 2यहाँ लंगड़े मनुष्य की दुर्दशा निम्न तीन बातों द्वारा दर्शाई गई है:

1. उसके पाँवों में बल नहीं था
2. माँ के गर्भ ही से लंगड़ा था
3. कभी चला-फिरा नहीं था

▪ **"निर्बल"** यहाँ प्रयुक्त यूनानी शब्द अडूनाटौस (*adunatos)* का आमतौर पर अर्थ होता है "असम्भव" अथवा "अयोग्य" (देखें, लूका 18:27; इब्रा. 6:4, 18; 10:4; 11:6) परन्तु यहाँ पर लूका वैद्य लेखक के रूप में इस शब्द का उपयोग दुर्बल या क्षमता हीन के रूप में करता है (देखें रोमियों 8:3; 15:1)।

यह बड़ी रोचक बात है कि लूका पतरस और पौलुस की सेवकाईयों में सामान्तरता दिखता है। पतरस और यूहन्ना ने प्रेरि. 3:1-10 में एक लंगड़े को चंगा किया था, यहाँ पर पौलुस और बरनबास भी एक लंगड़े को चंगा करते हैं।

14:9 "जब उसने टकटकी लगाकर देखा" लूका अक्सर इस वाक्यांश का प्रयोग करता है (देखें, प्रेरि. 3:4; 10:4)। प्रेरि. 1:10 में टिप्पणी देखें। पौलुस ने देखा कि यह मनुष्य ध्यानपूर्वक उसकी बातें सुन रहा है, इसीलिये उसने उसे खड़े होने और चलने-फिरने की आज्ञा दी (पद 10) और वह चलने फिरने लगा।

▪ **"उसे चंगा हो जाने का विश्वास है"** यह वाक्यांश उद्धार पाने अर्थात् शारीरिक चंगाई पाने के पुराने नियम के अर्थों में प्रयोग किया गया है। ध्यान दीजिए कि चंगा करने की पौलुस की योग्यता उस मनुष्य के विश्वास पर आधारित थी। नए नियम में अक्सर ऐसा होता है पर सदैव नहीं होता (देखें, लूका 5:20; यूहन्ना 5:5-9)। आश्चयकर्मों के कुछ उद्देश्य होते हैं:

1. परमेश्वर का प्रेम दिखाने के लिए
2. सुसमाचार की सामर्थ और सुसमाचार की सच्चाई दिखाने के लिए
3. उपस्थिति विश्वासियों को प्रशिक्षित करने और प्रोत्साहित करने के लिए

14:11 "लुकाउनिया की भाषा में" स्पष्ट रूप से पौलुस और बरनबास भीड़ की बातें समझ नहीं पा रहे थे। यह उस स्थान की स्थानीय भाषा थी।

14:12 "उन्होंने बरनबास को ज्यूस और पौलुस को हिरमेस को बुलया क्योंकि वह मुख्य वक्ता थे" वहाँ की स्थानीय परम्परा के अनुसार यूनानी देवता अक्सर मुनष्य बनकर आते और मनुष्यों से भेंट करते हैं देखें, ओविड, मैटामोरफोसिस 8:626 क्रमशः। (cf. Ovid, *Metamorphoses* 8:626ff) स्थानीय लेखों से ज्ञात होता है कि इस क्षेत्र में ज्यूस और हिरमेस नामक देवताओं की पूजा होती थी (प्रेरि. 14:13)।

ध्यान दें कि यहाँ पर बरनबास का नाम पहले आता है। यह संभवतः इसलिए है क्योंकि पौलुस वक्ता होने के कारण उन मूर्ति पूजकों द्वारा हिरमेस (मरकरी) स्वीकार किया गया था, और चुप रहने वाला बरनबास सर्वोच्च देवता ज्यूस (जूपीटर) स्वीकार किया गया था।

14:13 "फाटक" यह नगर के फाटक अथवा संभवतः ज्यूस देवता के मन्दिर के फाटक की ओर संकेत करता है जो नगर के फाटक के बाहर स्थित था। चारों ओर भगदड़ और भ्रम का वातावरण छाया हुआ था।

14:14 "प्रेरितों" प्रेरि. 14:4 में टिप्पणी देखें।

▪ **"अपने कपड़े फाड़े"** यह शोक करने और निन्दा करने की यहूदी विधि थी (देखें, मत्ती 26:65; मरकुस 14:63)। निश्चय ही वे मूर्तिपूजक समझ गए होंगे कि कोई समस्या है।

▪ **"लपके"** हालांकि सप्तूजैन्त में यह सामान्य शब्द है, परन्तु यहाँ नया नियम में केवल यहीं प्रयुक्त हुआ है। पौलुस और बरनबास भीड़ में "लपक कर" रोकथाम करने लगे।

14:15-17 यहाँ पर मूर्तिपूजकों को पौलुस द्वारा दिए गए प्रथम उपदेश का सारांश पाया जाता है, यह उपेदश बहुत कुछ उसी उपदेश के समान है जो उसने मार्स पर्वत पर दिया था (देखें, प्रेरि. 17:22-33)।

14:15
NASB, NKJV **"तुम्हारे स्वभाव जैसे मनुष्य हैं"**
NRSV **"तुम्हारी तरह नश्वर मनुष्य हैं"**
TEV **"हम तुम्हारी ही तरह मानव मात्र हैं"**
NJB **"हम मात्र मनुष्य हैं, तुम्हारी तरह नश्वर"**

यहाँ पर प्रयुक्त यूनानी शब्द "होमयोपैथेस" (*homoiopathēs*) "समान" और "अभिलाषा" शब्दों का मिश्रित शब्द है। यह केवल यहीं पर और याकूब 5:17 में प्रयुक्त हुआ है। स्थानीय लोगों ने सोचा कि पौलुस और बरनबास देवता (होमयोथेन्सटस) ((*homoiōthentes*) हैं (देखें, प्रेरि. 4:11) जिसका अर्थ है वे मनुष्य के समान बन गये हैं। पौलुस इसी भावार्थ को लेकर उसके द्वारा अपनी मानवता दर्शाता है। लूका पौलुस और बरनबास की विनम्रता को प्रेरि. 12:20-23 में वर्णित हेरोदेस अन्तिपास के स्वभाव के विपरीत प्रदर्शित करता है।

▪ **"तुम इन व्यर्थ वस्तुओं से अलग होकर" शब्द "व्यर्थ"** का अर्थ है, खाली अस्तित्व रहित और नीरस। पौलुस सीधे उनके मूर्तिपूजकवाद के अन्धविश्वास का सामना करता है।

▪ **"जीवते परमेश्वर की ओर फिरो"** अर्थात् यहोवा (YHWH) परमेश्वर की ओर फिरो (निर्ग. 3:14)। यहोवा (YHWH) ही एकमात्र और अनन्त परमेश्वर है। देखें प्रेरि. 1:6 में विशेष विषय: ईश्वरत्व के नाम

▪ **"जिसने बनाया"** यह निर्ग. 20:11 व भजन 146:6 से लिया गया हवाला है। इब्रानी भाषा का शब्द इलोहीम ;म्सवीपउद्ध (देखें, उत्प. 1:1) परमेश्वर को सृष्टिकर्त्ता और पालनहार के रूप में दर्शाता है (देखें, एक्सपोज़ीटर्स बाइबल कमेन्टी भाग 1, पेज 468-469) (cf. *The Expositor's Bible Commentary*, vol. 1, pp. 468-469) इसी पुस्तक में पेज 471-(cf. *The Expositor's Bible Commentary,* vol. 1, pp. 471-472) पर परमेश्वर यहोवा (YHWH) स्वयं को उद्धारकर्त्ता, छुड़ाने वाला और वाचा स्थापित करने वाला परमेश्वर कहता है। प्रेरि. 1:6 में विशेष टिप्पणी देखें।

14:16 "उसने बीते समयों में सब जातियों को अपने-अपने मार्गों में चलने दिया" हो सकता है यह वाक्यांश व्यव. वि. 32:7-8 की ओर संकेत करता है जहाँ मूसा कहता है कि यहोवा (YHWH) ने देश-देश के लोगों की सीमाएँ ठहराईं हैं। धर्म-शिक्षा के अनुसार यह बात जातियों के प्रति उसकी चिन्ता और ध्यान रखने को दर्शाता है देखें गिरडल स्टोन की पुस्तक सिनोनिम्स ऑफ द ओल्ड टैस्टामैन्ट, पेज 258-259 (Gentiles, cf. Girdlestone, *Synonyms of the Old Testament*, pp. 258-259) परमेश्वर चाहता है कि लोग उसे जानें परन्तु मानव जाति के पतन के कारण अन्धविश्वास और मूर्तिपूजा आ गई (रोमियों 1:18-2:29)। तौभी परमेश्वर उनसे प्रेम रखता रहा (प्रेरि. 14:17)।

परमेश्वर के विषय में अन्यजातियों की अज्ञानता, यहूदियों के द्वारा परमेश्वर का ज्ञान होने से विपरीत था। व्यंग्य की बात तो यह है कि अन्यजातियों ने बड़ी संख्या में सुसमाचार पर विश्वास किया, जबकि यहूदियों ने बड़ी संख्या में सुसमाचार का परित्याग और सताव किया (देखें, रोमि. 9-11)।

14:17 ''उसने अपने आप को बे-गवाह न छोड़ा'' यह स्वाभाविक प्रकाशन की अवधारणा है (देखें, भजन 19:1-6; रोमि. 1:19-20; 2:14-15)। प्रत्येक मनुष्य सृष्टि के आरम्भ ही से और अपनी अन्तरात्मा में परमेश्वर के बारे में कुछ न कुछ जानता है।

▪ **''फलवन्त...ऋतु''** स्थानीय मूर्तिपूजक परम्परा में कहा जाता था कि ज्यूस देवता वर्षा देता है और हिरमेस देवता भोजन वस्तु देता है। परन्तु पौलुस व्यव.विवरण 27-29 के आधार पर दृढ़पूर्वक कहता है कि परमेश्वर प्रकृति पर नियन्त्रण रखता है और वही वर्षा व खाद्य-सामग्री का देने वाला है।

ये मूर्तिपूजक जातियाँ परमेश्वर को नहीं जानती थीं, इसलिए परमेश्वर के धैर्य द्वारा व्यवस्थाविवरण के शाप जो वाचा के अन्तर्गत थे, परिवर्तित कर दिया गया (देखें, प्रेरि. 17:30; रोमियों 3:25; 4:15; 5:13)। पौलुस अद्भुत रीति से परमेश्वर द्वारा चुना गया ताकि अन्यजातियों का प्रेरित कहलाए और अन्यजातियों में सुसमाचार सुनाए। पौलुस लोगों से संपर्क साधने के लिए परमेश्वर की सृष्टि और प्रकृति की आशीषों का उपयोग करता है (देखें, भजन 145:15-16; 147:8; यिर्म. 5:24; योना 1:9)।

यह बड़ी रोचक बात है कि पौलुस ने अपने इस उपदेश में सुसमाचार से संबंधित कोई बात नहीं कही। हम कल्पना कर सकते हैं कि जिस प्रकार के तर्क पौलुस ने प्रेरि. 17:16-34 में एथेन्स के अपने उपदेश में प्रयुक्त किए, उसी प्रकार के तर्क वह भविष्य में भी करता रहा। हमें आश्चर्य हो सकता है कि क्या लूका ने वह उपदेश स्वयं पौलुस से प्राप्त किया अथवा तीमुथियुस से प्राप्त किया, क्योंकि यहाँ पर तीमुथियुस का घर था।

14:18 ''यह कहकर भी उन्होंने लोगों को बड़ी कठिनाई से रोका'' यह विवरण चश्मदीद गवाह का है।

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 14:19-23

[19]परन्तु कुछ यहूदियों ने अन्ताकिया और इकुनियुम से आकर लोगों को अपनी ओर कर लिया, और पौलुस पर पथराव किया, और मरा समझकर उसे नगर के बाहर घसीट ले गए। [20]पर जब चेले उसके चारों ओर आ खड़े हुए, तो वह उठकर नगर में गया और दूसरे दिन बरनबास के साथ दिरबे को चला गया। [21]वे उस नगर के लोगों को सुसमाचार सुनाकर, और बहुत से चेले बनाकर, लुस्त्रा और इकुनियुम और अन्ताकिया को लौट आए, [22]और चेलों के मन को स्थिर करते रहे और यह उपदेश देते थे कि विश्वास में बने रहो; और यह कहते थे, ''हमें बड़े क्लेश उठाकर परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना होगा।'' [23]और उन्होंने हर एक कलीसिया में उनके लिये प्राचीन ठहराये, और उपवास सहित प्रार्थना करके उन्हें प्रभु के हाथ सौंपा जिस पर उन्होंने विश्वास किया था।

14:19 जिन नगरों में पौलुस ने प्रचार किया उन नगरों में यहूदियों ने मिलकर उस पर बार बार आक्रमण किया (देखें, 2 कुरि. 4:7-15; 6:3-10; 11:23-30)। ध्यान दीजिए कि बरनबास पर नहीं परन्तु पौलुस पर आक्रमण किया जाता था। मूर्तिपूजक भीड़ की अस्थिरता पर भी ध्यान दीजिए। एक पल तो उनके द्वारा पौलुस और बरनबास का देवताओं के समान आदर किया जाता है परन्तु अगले ही पल पथराव किया जाता है।

▪ **''पौलुस पर पथराव किया''** पथराव के बाद वह फिर जी नहीं उठा, और एक आश्चर्यकर्म हुआ, बल्कि यह पौलुस की शारीरिक सहनशीलता और बहादुरी थी (देखें, प्रेरि. 14:20-21) इसी प्रकार की घटनाओं का उल्लेख 2 कुरि. 11:25 तथा गला. 6:17 में भी है। प्रेरि. 14:5 में जो पथराव की योजना बनाई गई थी, उसे अब पूरा किया गया।

14:20 "जब चेले उसके चारों ओर आ खड़े हुए" हालांकि यह बात स्पष्ट रूप से यहाँ नहीं कही गई है तौभी मैं समझता हूँ कि चेलों ने उसके लिए प्रार्थना सभा की होगी जिसका परमेश्वर ने अद्‌भुत रीति से उत्तर दिया। यहाँ ध्यान दीजिए कि सुसमाचार प्रचार के लिए सताव रूकावट नहीं बना, परन्तु प्रेरणा-स्रोत बना। वे नए नगरों जाकर सुसमाचार प्रचार करने लगे।

14:21 "उस नगर में लोगों को सुसमाचार सुनाने के बाद" यह नगर दिरबे की ओर संकेत करता है (देखें, प्रेरि. 14:20)। यह नगर भी रोमी प्रान्त गलातिया के लुकाउनिया नगर का भाग था। यह नगर दक्षिण की ओर थोड़ी ही दूरी पर था जहां पौलुस और बरनबास पैदल जा सकते थे। इस नगर दिरबे में बहुत से लोगों ने सुसमाचार पर विश्वास करके उद्धार पाया।

- **"लुस्त्रा और इकुनियुम और अन्ताकिया को लौट आए"** स्पष्ट रूप से लौटते समय उन्होंने कोई सार्वजनिक प्रचार सभा नहीं की, बल्कि व्यक्तिगत रूप से भेंट करके विश्वासियों को प्रोत्साहित किया (देखें, प्रेरि.14:22-23)।

14:22 यह पद चेले बनाने के पौलुस के उपदेश का सारांश है। ध्यान दीजिए कि यह पद दो बातों पर बल देता है (1) धैर्य से सब बातें सहन करना और (2) क्लेश उठाना। विश्वासी सतावों के माध्यम से ही परिपक्व बनते हैं (देखें, रोमि. 5:3-4; 8:17-18; 1 थिस्स. 3:3; तीमु. 3:12; याकूब 1:2-4; 1 पत. 4:12-16)

- **"बल प्रदान करना"** "विश्राम पाने" अथवा "स्थिर रहने" के अर्थों में यह शब्द सप्तूजैन्त में अनेक बार प्रयोग में आया है। पौलुस की चेलों को दृढ़ करने की सेवकाई का उल्लेख करने के लिए लूका ने अनेक बार इस शब्द का प्रयोग किया है (देखें, प्रेरि. 14:22; 15:32,41; 18:23)।

- **"चेलों के मन"** शब्द मन (*psuchē*) का प्रयोग "मनुष्य" अथवा उनकी मानसिक क्रियाओं के सन्दर्भ में किया गया है। यह यूनानी अवधारणा नहीं है कि मनुष्य की आत्मा अनन्त व अनश्वर होती है बल्कि यह आत्मा की इब्रानी अवधारणा है, नेपेश, बी डी बी 659, के बी 711-713, देखें, उत्पत्ति 2:7 (*nephesh*, BDB 659, KB 711-713, cf. Gen. 2:7) जो मानव की ओर संकेत करती है (देखें, प्रेरि. 2:41; 3:23; 7:14; 14:2, 22; 15:24; 27:37)।

- **"और यह उपदेश देते थे कि विश्वास में बने रहो"** देखें, विशेष विषय: धैर्य रखना

विशेष विषय: धैर्य रखने की आवश्यकता

मसीही जीवन से संबंध रखने वाली बाइबल की सैद्धान्तिक शिक्षाओं को समझाना बड़ा कठिन होता है क्योंकि उन्हें विशिष्ट पूर्वीय भाषाओं में प्रस्तुत किया जाता है (देखें विशेष विषय : पूर्वीय साहित्य [बाइबल संबंधी विरोधाभास]) ये शब्दावली जिसमें इन सैद्धान्तिक शिक्षाओं को व्यक्त किया जाता है, अक्सर एक दूसरे के विपरीत नज़र आती हैं, हालांकि दोनों ही बातें बाइबल की होती हैं और सही होती हैं। पश्चिमी देशों के मसीही इनमें से एक सत्य चुन लेते हैं और दूसरे को तिरसकृत कर देते अथवा तुच्छ समझ लेते हैं। उदाहरण के तौर पर :

A. मसीह पर विश्वास करने का, क्या उद्धार पाना सबसे बड़ा निर्णय होता है अथवा यह चेले बनने का आजीवन समर्पण है?
B. क्या सर्वोच्च परमेश्वर के अनुग्रह, दया और उसके द्वारा चुन लिए जाने से उद्धार होता है या परमेश्वर के दान को मानव जाति द्वारा विश्वास से ग्रहण करने और पश्चाताप करने से प्राप्त होता है?
C. क्या एक बार उद्धार पाने के बाद वह खो नहीं सकता अथवा इसे बनाए रखने के लिए निरंतर प्रयत्न की आवश्यकता होती है?

"दृढ़ रहने" का यह विषय सम्पूर्ण कलीसियाई इतिहास में विवादास्पद रहा है। यह विवाद नए नियम के निम्नलिखित पाठांशों के कारण उठ खड़ा होता है :

A. आश्वासन संबंधी पाठांश :
   1. यीशु के कथन (यूहन्ना 6:37; 10:28-29)।
   2. संत पौलुस के कथन (रोमि. 8:35-39; इफि. 1:13; 2:5,8-9; फिलि. 1:6; 2:13; 2 थिस्स. 3:3; 2 तीमु. 1:12; 4:18)।
   3. तरस के कथन (1 पत. 1:4-5)।

B. दृढ़ रहने की आवश्यकता के संबंध में पाठांश **:**
   1. यीशु के कथन (मत्ती 10:22; 13:1-9, 24:30; 24:13; मर. 13:13; यूह. 8:31; 15:4-10; प्रका. 2:7,17,26; 3:5,12,21)।
   2. पौलुस के कथन (रोमि. 11:22; 1 कुरि. 15:2; 2 कुरि. 13:5; गला. 1:6; 3:4; 5:4; 6:9; फिलि. 2:12; 3:18-20, कुल. 1:23; 2 तीमु. 3:2)।
   3. इब्रानियों की पत्री के लेखन के कथन (2:1; 3:6,14; 4:14; 6:4-12; 10:26-27)।
   4. यूहन्ना के कथन (1 यूह. 2:6; 2 यूह. 9)।
   5. पिता के कथन (प्रका. 21:7)।

बाइबल उद्धार का स्रोत सर्वोच्च त्रिएक परमेश्वर का प्रेम, अनुग्रह और दया है। जब तक पवित्र आत्मा ही पहल न करे तब तक कोई भी मनुष्य उद्धार नहीं पा सकता है (देखें, यूहन्ना 6:44,65)। परमेश्वर ही है जो प्रबंध करता है और चाहता है कि मानवजाति इस उद्धार के प्रबंध को निरंतर पश्चाताप और विश्वास के द्वारा ग्रहण करे। परमेश्वर वाचागत सम्बन्धों के आधार पर मानवजाति से व्यवहार करता है। इसके अन्तर्गत कुछ कर्तव्य और कुछ उत्तरदायित्व निहित हैं। देखें विशेष विषय: वाचा और विशेष विषय: रखना सम्पूर्ण मानव जाति को उद्धार पाने का अवसर प्राप्त है। पतित मानवजाति की समस्या का समाधान यीशु की मृत्यु में पाया जाता है। परमेश्वर ने उद्धार का प्रबंध कर दिया है और वह चाहता है कि संपूर्ण मानवजाति जो उसके स्वरूप पर रची गई है, मसीह में प्राप्त इस उद्धार को प्रेम और विश्वास के साथ ग्रहण करे। देखें विशेष विषय: यहोवा YHWH'S की अनन्त छुटकारे की योजना

यदि आप इस विषय में और अधिक जानकारी चाहते हैं तो निम्न पुस्तकें देखें :
   1. डेल मूडी की पुस्तक "द वर्ड ऑफ ट्रुथ") पेज 348-365 (Dale Moody, *The Word of Truth,* Eerdmans, 1981 (pp. 348-365)
   2. हावर्ड मार्शल की पुस्तक, "कैप्ट बाई द पावर ऑफ गॉड" (Howard Marshall, *Kept by the Power of God*, Bethany Fellowship, 1969)
   3. रॉबर्ट शैंक की पुस्तक, "लाइफ इन द सन" वैस्टकॉट 1961 (Robert Shank, *Life in the Son*, Westcott, 1961)

इस संबंध में बाइबल दो समस्याओं की ओर संकेत करती है : (1) आश्वासन को स्वार्थी और फलरहित जीवन जीने का एक लाइसैन्स मान लेना और (2) उन लोगों को प्रोत्साहित करना जो अपनी सेवकाई में संघर्ष और व्यक्तिगत पापों का सामना कर रहे हैं। इसमें खतरे की बात यह है कि गलत समूह के लोग गलत संदेश ग्रहण करते हैं और सीमित बाइबल पाठांशो पर धर्मवैज्ञानिक शिक्षाएं अपना लेते हैं। कुछ मसीही लोगों को वास्तव में आश्वासन के संदेश की आवश्यकता होती है जबकि अन्यों को कड़ी चेतावनियों की आवश्यकता होती है। आप कौन से समूह में हैं?

ऑगस्टीन बनाम पेलागियस और केल्विन बनाम आर्मिनियस (अर्ध-पेलाजियन) से संबंधित एक ऐतिहासिक धार्मिक विवाद है। इस मुद्दे में उद्धार का प्रश्न शामिल है: यदि कोई वास्तव में बचाया जाता है, तो क्या उसे विश्वास और फलदायीता में दृढ़ रहना चाहिए?

कैल्विनवादी उन बाइबिल ग्रंथों के पीछे पंक्तिबद्ध हैं जो परमेश्वर की संप्रभुता और पालन-शक्ति का दावा करते हैं (यूहन्ना 10:27-30; रोम 8:31-39; 1 यूहन्ना 5:13,18; 1 पतरस 1:3-5) और क्रिया काल इफी 2:5,8 के पूर्ण निष्क्रिय कृदंत की तरह।

आर्मिनियन उन बाइबिल ग्रंथों के पीछे पंक्तिबद्ध हैं जो विश्वासियों को "पकड़ो," "पकड़ो," या "जारी रखें" (मत्ती 10:22; 24:9-13; मरकुस 13:13; यूहन्ना 15:4-6;) की चेतावनी देते हैं। 1 कुरि. 15:2; गला. 6:9; प्रका.

2:7,11,17,26; 3:5,12,21; 21:7)। मैं व्यक्तिगत रूप से विश्वास नहीं करता कि इब्रानियों 6 और 10 लागू हो सकते हैं, लेकिन कई आर्मीनियाई उन्हें धर्मत्याग के खिलाफ चेतावनी के रूप में उपयोग करते हैं। मत्ती 13 और मरकुस 4 में बोने वाले का दृष्टान्त प्रत्यक्ष विश्वास के मुद्दे को संबोधित करता है, जैसा कि यूहन्ना 8:31-59 करता है। जैसा कि केल्विनवादियों ने उद्धार का वर्णन करने के लिए उपयोग किए जाने वाले सही काल की क्रियाओं को उद्धृत किया है, आर्मीनियाई 1:18; 15:2; 2 कोर. 2:15 जैसे वर्तमान काल के अंशों को उद्धृत करते हैं।

यह इस बात का एक आदर्श उदाहरण है कि कैसे धर्मशास्त्रीय प्रणालियाँ व्याख्या की प्रूफ-टेक्सटिंग पद्धति का दुरुपयोग करती हैं। आमतौर पर एक मार्गदर्शक सिद्धांत या मुख्य पाठ का उपयोग एक धार्मिक ग्रिड के निर्माण के लिए किया जाता है जिसके द्वारा अन्य सभी ग्रंथों को देखा जाता है। किसी भी स्रोत से ग्रिड से सावधान रहें। वे पश्चिमी तर्क से आते हैं, रहस्योद्घाटन से नहीं। बाइबिल एक पूर्वी किताब है। यह तनाव से भरे, प्रतीत होने वाले विरोधाभासी जोड़े में सच्चाई प्रस्तुत करता है। मसीही दोनों की पुष्टि करने और तनाव के भीतर जीने के लिए हैं। नए नियम विश्वासी की सुरक्षा और निरंतर विश्वास और पर्मेश्वरियता की मांग दोनों को प्रस्तुत करता है। मसीही धर्म पश्चाताप और विश्वास की प्रारंभिक प्रतिक्रिया है जिसके बाद पश्चाताप और विश्वास की निरंतर प्रतिक्रिया होती है। उद्धार कोई उत्पाद नहीं है (स्वर्ग का टिकट या अग्नि बीमा पॉलिसी), बल्कि एक रिश्ता है। यह एक निर्णय और शिष्यत्व है। यह NT में सभी क्रिया काल में वर्णित है:

- ओरिस्ट (पूर्ण कार्य), प्रेरितों के काम 15:11; रोम 8:24; 2 तिमोथी1:9; तीतुस 3:5
- बिल्कुल सही (निरंतर परिणामों के साथ पूर्ण कार्रवाई), इफी 2:5,8
- वर्तमान (निरंतर कार्रवाई), 1 कुरिं 1:18; 15:2; 2 कोर. 2:15
- भविष्यभविष्य (भविष्य की घटनाएँ या कुछ निश्चित घटनाएँ), रोम 5:8,10; 10:9; 1 कोर. 3:15; फिल. 1:28; 1 थीस 5:8-9; इब्रा 1:14; 9:28

विशेष विषय: धर्मत्याग
विशेष विषय: आश्वासन
विशेष विषय: मसीही आश्वासन

Copyright © 2014 Bible Lessons International

▪ **"परमेश्वर का राज्य"** इस वाक्यांश की व्याख्या करना बहुत कठिन है। यीशु ने अपनी सेवकाई में अक्सर इसका उपयोग किया है। स्पष्ट रूप से चेलों ने इस शब्द 'परमेश्वर का राज्य' को गलत रूप से समझा था (देखें, प्रेरि. 1:3,6)। प्रेरितों के काम पुस्तक में इसका अर्थ वही है जो सुसमाचारों में है (देखें, प्रेरि. 8:12; 19:8; 20:25; 28:23,31) फिर भी प्रेरि. 14:22 में यह युगान्त संबंधी अर्थ दर्शाता है। परमेश्वर का राज्य आ चुका है (देखें मत्ती 12:28; लूका 16:16) परन्तु फिर भी "अभी नहीं आया है" (देखें, मत्ती 24:14, 30,36-37; 25:30-31; 2 पतरस 1:11)। देखें विशेष टिप्पणी प्रेरि. 2:17 में)। यीशु के प्रथम आगमन के समय परमेश्वर का राज्य आ गया था, परन्तु इसकी परिपूर्णता यीशु के दूसरे आगमन पर भविष्य में होगी।

14:23 "उनके लिए प्राचीन ठहराए" प्राचीन (*elders)* शब्द, नए नियम में बिशप (*episkopos)* और "पास्टर" (*poimenos*) का समानार्थी व पर्यायवाची शब्द है (देखें, प्रेरि. 20:17, 28 तथा तीतुस 1:5,7)। शब्द "ऐल्डर" की पृष्ठभूमि यहूदी पृष्ठभूमि है गिर्लस्टोन, पुराने नियम का पर्यायवाची, पृ। 244-246 औरफ्रेंक स्टैग, न्यूटेस्टमेंट थियोलॉजी, पीपी। 262-264 (cf. Girdlestone, *Synonyms of the Old Testament*, pp. 244-246 and Frank Stagg, *NewTestament Theology*, pp. 262-264) जबकि "बिशप" अथवा "ओवरसियर" की पृष्ठभूमि यूनानी नगर की है। नए नियम में केवल दो प्रकार के कलीसिया के अधिकारियों को सूचीबद्ध किया गया है (1) पास्टर (2) डीकन (देखें, फिलि. 1:1)।

प्राचीन ठहराए का अर्थ, हाथ उठाकर सहमति दिखाते हुए नियुक्त करना है देखें, 2 कुरि. 8:19; तथा ग्रीक इंगलिश लेकसीकन, पेज न. 363, 484, लेखक लो और निदा। (cf. 2 Cor. 8:19 and Louw and Nida,

GreekEnglish Lexicon, pp. 363, 484) आगे चलकर प्रारम्भिक कलीसिया के पितामाहों द्वारा "अभिषेक" करते समय इस शब्द का प्रयोग किया जाने लगा। यहाँ वास्तविक समस्या यह है कि वोट डालकर नियुक्त करने की विधि किस प्रकार सही हो सकती है? वोट डालना इन नई कलीसियाओं में लगता है, उचित नहीं माना गया (हालांकि यरूशलेम की कलीसिया में जब प्रेरि. 6 में सात लोगों को नियुक्त किया गया तो वोट डाले गए, तथा प्रेरि. 15 में भी वोट द्वारा पौलुस की अन्यजातियों में सेवकाई को मान्यता दी गई थी)।

एफ.एफ. ब्रूस अपनी पुस्तक "आनसर्स टू क्शचन्स" पेज 79 में कहते हैं, (F. F. Bruce, *Answers to Questions*, p. 79) "मूल रूप से नियुक्त किया जाना अथवा हाथ खड़े करके लोगों द्वारा नियुक्त किया जाना, नए नियम के युग में अपना महत्व खो चुका था, और इसका अर्थ केवल "नियुक्त" करना रह गया था, चाहे किसी भी रीति से नियुक्ति हुई हो, विधि का कोई महत्व नहीं रह गया था।" नए नियम में इस शब्द के इस्तेमाल पर कोई भी जन कलीसिया की व्यवस्था का तिरस्कार नहीं कर सकता था।

ध्यान दें कि पौलुस तीतुस के क्रेते में "एल्डर्स" को नियुक्त करने का आदेश देता है, परन्तु इफिसुस में तीमुथियुस से पौलुस कहता है कि कलीसिया ऐसे लोगों को चुने जिनमें आत्मिक गुण हों (देखें, 1 तीमु. 3)े। नए क्षेत्रों में अगुवे नियुक्त किए जाते थे, परन्तु पुराने और स्थापित हो चुके क्षेत्रों में अगुवेपन को स्थानीय कलीसिया द्वारा स्वीकार किए जाने और स्वयं के प्रकट करने के अवसर होते हैं।

इस बात पर भी ध्यान दें कि पौलुस की मिशनरी यात्राओं का उद्देश्य था कि ऐसी स्थानीय कलीसियाएँ स्थापित की जाएँ जो अपने इलाकों में सुसमाचार प्रचार का कार्य जारी रख सकें और चेले बनाती रहें (देखें, मत्ती 28:19-20)। सम्पूर्ण संसार में सुसमाचार पहुँचाने का यह स्वयं परमेश्वर का तरीका था, अर्थात् यह कि स्थानीय कलीसियाएँ प्रचार कार्य और चेले बनाने का कार्य करें।

▪ **"कलीसिया"** कलीसिया के लिए देखें प्रेरि. 5:11 में टिप्पणी।

▪ **"उपवास सहित प्रार्थना करके"** संभव है कि यह जानबूझकर प्रेरि. 13:2-3 के सामान्तर रखा गया हो। पौलुस अन्ताकिया में पवित्र आत्मा की सामर्थ और निर्देशन का अनुभव कर चुका था। उसने इसी आत्मिक नमूने को जारी रखा। उन्हें परमेश्वर की इच्छा का प्रकाशन पाने के लिए स्वयं को तैयार करना था। देखें, प्रेरि. 13:2 में विशेष विषय: उपवास

▪ **"जिस पर उन्होंने विश्वास किया था"** इन सब नए एल्डरों ने काफी समय तक विश्वास रखा और स्वयं को विश्वासयोग्य और अगुवेपन के गुणों से सम्पन्न प्रमाणित किया था।

यह व्याकरणीय प्रयोग (*pisteuō*) (देखें, प्रेरि.10:43) से जुड़ा है, जो यूहन्ना की लेखन शैली की विशेषता है, परन्तु यही शैली पौलुस (देखें, रोमि. 10:14; गला. 2:16; फिलि. 1:29) तथा पतरस (देखें, 1 पतरस 1:8) के लेखों में भी दिखाई देती है। प्रेरि. 3:16 और 6:5 में विशेष विषय देखें।

▪ **"उन्हें प्रभु के हाथ सौंपा"** यह किसी प्रकार के अभिषेक की ओर संकेत नहीं करता है। यही क्रिया शब्द प्रेरि. 14:26 में पौलुस और बरनबास के लिए, और प्रेरि. 20:32 में उनके लिए प्रयोग किया गया जो पहले ही से ऐल्डर थे। अभिषेक उस समय लाभदायक है जब यह इस सच्चाई को प्रकट करता है कि परमेश्वर ने लोगों को अगुवाई की भूमिका अदा करने के लिए बुलाया हो। यह उस समय नकरात्मक और बाइबल के अनुसार नहीं होता जब विश्वासियों के बीच भेदभाव लाता है। सभी विश्वासी परमेश्वर द्वारा बुलाए गये हैं और वरदान प्राप्त हैं कि सेवकाई कर सकें (इफि. 4:11-12)। नए नियम में पुरोहित और ग़ैरपुरोहित जैसा कोई भेदभाव नहीं है।

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 14:24-28

24तब पिसिदिया से होते हुए वे पंफूलिया पहुँचे; 25फिर पिरगा में वचन सुनाकर अत्तालिया में आए,
26और वहाँ से वे जहाज पर अन्ताकिया गए, जहाँ वे उस काम के लिए जो उन्होंने पूरा किया था, परमेश्वर के
अनुग्रह में सौंपे गए थे। 27वहाँ पहुँचकर उन्होंने कलीसिया इकट्ठी की और बताया कि परमेश्वर ने उनके
साथ होकर कैसे बड़े-बड़े काम किए, और अन्यजातियों के लिये विश्वास का द्वार खोल दिया। 28और वे चेलों

के साथ बहुत दिन तक रहे।

14:24 पिसिदिया प्रान्त पंफूलिया प्रान्त की उत्तरी दिशा में स्थित था। इस क्षेत्र का मुख्य नगर पिरगा था। पहले पौलुस स्पष्ट रूप से इस नगर से होता हुआ आगे बढ़ गया था (देखें, प्रेरि. 13:13), परन्तु अब लौटते समय वहाँ सुसमाचार प्रचार करता है (देखें, प्रेरि. 14:25)।

14:25 "अत्तालिया" यह पिरगा का बन्दरगाह था।

14:26"जहाज पर अन्ताकिया गए" वे साइप्रस नहीं गए। बरनबास साइप्रस लौट गया था क्योंकि मरकुस के संबंध में पौलुस और बरनबास के बीच झगड़ा हो गया था (देखें, प्रेरि. 15:36-39)।

▪ **"वे परमेश्वर के अनुग्रह में सौंपे गए थे"** यह प्रथम मिश्नरी यात्रा थी जिसके लिए पवित्र आत्मा ने पौलुस और बरनबास को अलग किया था और पवित्र आत्मा अगुवाई करता रहा, और इन दोनों को अद्‌भुत सफलताएँ दी थीं।

14:27 "उन्होंने कलीसिया इकट्ठी की, वे उन सभी चीजों को बताने लगे जो परमेश्वर ने की थीं" ध्यान दीजिए कि वे कलीसिया के प्रति उत्तरदायी थे। "अन्यजातियों के प्रेरित" को भी स्थानीय कलीसिया में अपने कार्यों का लेखा-जोखा प्रस्तुत करना पड़ा (देखें, प्रेरि. 5:11 में विशेष टिप्पणी)। उन्होंने इस बात को भी जाना कि किसके द्वारा उन्हें भारी सफलताएँ मिलीं, अर्थात् यहोवा (YHWH) परमेश्वर तथा पवित्र आत्मा।

उन्होंने वहां के अगुवों को अपनी यात्रा का लेखा जोखा नहीं दिया (देखें, प्रेरि. 13:1), परन्तु कलीसिया को रिपोर्ट दी, और बाद में यरूशलेम की कलीसिया को (देखें, प्रेरि. 15:4) तथा अन्य कलीसियाओं को रिपोर्ट दी जो उनके मार्ग में आईं (देखें, प्रेरि. 15:3)। मैं सोचता हूँ कि समस्त कलीसिया ने उन पर हाथ रखकर मिश्नरी कार्य के लिए उन्हें भेजा था।

▪ **"अन्यजातियों के लिए विश्वास का द्वार खोल दिया"** पौलुस अक्सर "विश्वास का द्वार" वाक्यांश का प्रयोग करता है (देखें, 1 कुरि. 16:9; 2 कुरि. 2:12; कुलु. 4:3; प्रका. 3:8)। परमेश्वर ने सुसमाचार के द्वारा सम्पूर्ण मानवजाति के उद्धार के लिए ऐसा द्वार खोला है जिसे कोई बन्द नहीं कर सकता। प्रेरि. 1:8 के यीशु के वचन अब पूरे होते जा रहे हैं।

विचार विमर्श के लिये प्रश्न

यह अध्ययन में मार्गदर्शन करने की टीका है, इसका अर्थ है कि आप बाइबल की अपनी व्याख्या करने के स्वयं ही जिम्मेदार हैं। हम में से प्रत्येक को उसी ज्ञान के अनुसार चलना चाहिए जो हमारे पास है। व्याख्या करने के कार्य में आप आपकी बाइबल और पवित्र आत्मा केन्द्रिय स्थान रखते हैं। यह कार्य व्याख्याकार पर न छोड़ दें।

निम्नलिखित प्रश्न अपनी सहायता के लिए दिए गए हैं ताकि आप पुस्तक के गम्भीर विषयों पर पुनर्विचार कर सकें। वे आपके विचारों को आन्दोलित करने के लिए हैं, इनके अलावा और भी प्रश्न हो सकते हैं:

1. भौगोलिक स्थानों सहित पौलुस की प्रथम मिश्नरी यात्रा की रूपरेखा बनाएँ?
2. पौलुस के द्वारा यहूदियों को और मूर्तिपूजकों को दिए गए उपदेशों की रूपरेखा बनाएँ?
3. उपवास रखने का आधुनिक मसीहीयों से क्या सम्बन्ध है?
4. यूहन्ना मरकुस ने मिश्नरी टीम का साथ क्यों छोड़ दिया था?

Copyright © 2013 Bible Lesson International

प्रेरितों के काम-15
बाइबल के विभिन्न आधुनिक अनुवादों में पैराग्राफ-विभाजन

UBS[4]	NKJV	NRSV	TEV	NJB
यरूशलेम की सभा	खतना विषय पर मतभेद	अन्यजतियों के प्रवेश पर वाद-विवाद	यरूशलेम में सभा	अन्ताकिया में वाद-विवाद
15:1-5	15:1-5	15:1-5	15:1-2 15:3-5	15:1-2 15:3-4
	यरूशलेम में सभा			यरूशलेम में वाद-विवाद 15:5-7a
15:6-11	15:6-21	15:6-21	15:6-11	पतरस का भाषण 15:7b-11
15:12-21			15:12-18	15:12 याकूब का भाषण 15:13-18
			15:19-21	15:19-21
सभा का प्रत्युत्तर विश्वासियों को पत्र	यरूशलेम का आज्ञापत्र		अन्यजाति विश्वासियों को पात्र	प्रेरितिक पत्र
15:22-29	15:22-29	15:22-29	15:22-29	15:22-29
	सीरिया में सेवकाई जारी रहना			अन्ताकिया में प्रतिनिधि
15:30-35	15:30-35	15:30-35	15:30-34 15:35	15:30-35
पौलुस और बरनबास का अलग अलग होना	यूहन्ना मरकुस को लेकर मतभेद	दूसरी मिश्नरी यात्रा पर जाना	पौलुस और बरनबास का अलगाव	पौलुस का बरनबास से अलग होना तथा दूसरा साथी सिलास चुनना
15:36-41	15:36-41	15:36-41	15:36-41	15:36-38 15:39-40

पठन चक्र तीसरा (“अच्छे बाइबल अध्ययन का मार्गदर्शन” **पी vi)**

पैराग्राफ स्तर पर मूल लेखक के अभिप्राय को समझना

यह अध्ययन करने की मार्गदर्शक टीका है, जिसका अर्थ है कि आप अपनी बाइबल-व्याख्या के स्वयं उत्तरदायी हैं। हम में से प्रत्येक को अपने ज्ञान व समझ के अनुसार कार्य करना चाहिए। व्याख्या-प्रक्रिया में आप, आपकी बाइबल तथा पवित्र आत्मा प्राथमिक स्थान रखते हैं। आपको यह टीका कार्य टीकाकार पर नहीं छोड़ना चाहिए।

पूरा अध्याय एक बैठक में पढ़ें। विषयों को पहचानें। अपने विषय-विभाजन की तुलना उपरोक्त पाँच आधुनिक अनुवादों के विषय-विभाजन से करें। पैराग्राफों का विभाजन प्रेरणा प्राप्त नहीं होता है, परन्तु यह मूल लेखक के अभिप्राय को समझने की कुंजी है, जो कि व्याख्या करने का आधार है। प्रत्येक पैराग्राफ में केवल एक ही मूल विषय होता है:

1. पहला पैराग्राफ
2. दूसरा पैराग्राफ
3. तीसरा पैराग्राफ
4. अन्य

सन्दर्भ की जानकारी

A. यह अध्याय सामान्यतः ‘‘यरूशलेम की सभा’’ कहलाता है।

B. प्रारम्भिक कलीसिया की कार्य-प्रणाली और उद्देश्यों में यहाँ पर एक भारी धर्म वैज्ञानिक परिवर्तन आया। एक प्रकार से यहाँ पर दो मसीही केन्द्रों, यरूशलेम और अन्तकिया के बीच गठबन्धन हुआ था।

C. प्रेरि. 8-11 के धर्म-परिवर्तनों को मान्यता दे दी गई, उन्हें मूर्तिपूजक नहीं माना गया और न ही अन्य जातियों में प्रचार को नई नीति माना गया जिसका बलपूर्वक पालन किया जाए (प्रेरि. 11:19)।

D. इस अध्याय और गलातियों 2 के बीच परस्पर संबंध में ज़रा सा विवाद पाया जाता है। प्रेरि. 15 अथवा प्रेरि. 11:27-30, गलातियों 2 की पृष्ठभूमि हो सकता है। देखें प्रेरि. 14 की भूमिका-स।

E. यह बड़ी रोचक बात है कि अन्य भाषा बोलने के वरदान को (प्रेरि. 2,8,10,15:8) अन्यजातियों और मूर्तिपूजकों के लिये प्रमाण नहीं माना गया, कि उनका उद्धार हुआ है।

शब्दों और वाक्यांशों का अध्ययन

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 15:1-5

**[1]फिर कुछ लोग यहूदिया से आकर भाइयों को सिखाने लगेः ‘‘यदि मूसा की रीति पर तुम्हारा खतना न
हो तो तुम उद्धार नहीं पा सकते।’’ [2]जब पौलुस और बरनबास का उनसे बहुत झगड़ा और वाद-विवाद
हुआ तो यह ठहराया गया कि पौलुस और बरनबास और उनमें से कुछ व्यक्ति इस बात के विषय में प्रेरितों
और प्राचीनों के पास यरूशलेम को जाएँ। [3]अतः कलीसिया ने उन्हें कुछ दूर तक पहुँचाया; और वे फीनीके
और सामरिया से होते हुए अन्यजातियों के मन फिराने का समाचार सुनाते गए और सब भाई बहुत
आनन्दित हुए। [4]जब वे यरूशलेम पहुँचे, तो कलीसिया और प्रेरित और प्राचीन उनसे आनन्द के साथ मिले,
और उन्होंने बताया कि परमेश्वर ने उनके साथ होकर कैसे-कैसे काम किए थे। [5]परन्तु फरीसियों के पंथ में
से जिन्होंने विश्वास किया था, उनमें से कुछ ने उठकर कहा, ‘‘उन्हें खतना कराने और मूसा की व्यवस्था को
मानने की आज्ञा देनी चाहिए।’’**

15:1 ‘‘कुछ लोग यहूदिया से आए’’ यह पैराग्राफ अंताकिया की घटनाओं की ओर संकेत करता है। ‘‘कुछ लोग’’ उन यहूदी विश्वासियों की ओर संकेत करता है जो यहूदीवाद और यीशु दोनों के प्रति आस्था रखते थे। वे यीशु को पुराने नियम के विश्वास की पूर्ति तो मानते थे (मत्ती 5:17-19), परन्तु उसका प्रतिद्वन्द्वी अथवा एवज़ी नहीं मानते थे (देखें, प्रेरि. 11:2; 15:5; गला. 2:12)। इन लोगों की धर्म-शिक्षा झूठे यहूदी शिक्षकों से संबंध रखती थी (जो

यहूदीवादी थे) और जिनका उल्लेख गलातियों की पत्री में पाया जाता है। किसी तरह से ये लोग यरूशलेम की कलीसिया से जुड़ गये थे (देखें प्रेरि. 15:24), परन्तु वे उसके औपचारिक प्रतिनिधि नहीं थे। उनकी धर्म शिक्षा यरूशलेम की कलीसिया की दृष्टि में भ्रान्त शिक्षा थी जिसका विरोध किया जाना आवश्यक था (देखें, प्रेरि. 15:2।

▪ **"शिक्षा देने *लगे*"** इसका अर्थ यह हो सकता है (1) सिखाना आरम्भ किया अथवा (2) बार बार सिखाते रहे।

▪ **"जब तक तुम्हारी खतना न हो"** इस वाक्यांश में तीसरे दर्जे की शर्त है अर्थात् कि वे खतना करा सकते हैं। अब्राहम और उसके वंश को वाचा का चिन्ह के रूप में खतना का पालन करने को कहा गया था (देखें, उत्पत्ति 17:10-11)। यह यहूदीवाद में हलकी बात नहीं थी, बल्कि उद्धार से संबंधित बात मानी जाती थी। ये लोग मानते थे कि यहूदीवाद ही वह एकमात्र मार्ग है जिसके माध्यम से यहोवा (YHWH) तक पहुँच होती है (देखें, प्रेरि. 15:5)। इस प्रकार के लोगों को यहूदीवादी (Judaizers) कहा जाता है (देखें, गलातियों 1:7; 2:4) वे मसीह पर विश्वास तो करते थे, परन्तु साथ ही मूसा की व्यवस्था का भी पालन करते थे (देखें, प्रेरि. 15:5)। उनके भले कार्यों पर उनकी धार्मिकता आधारित थी न कि परमेश्वर के अनुग्रह के मुफ्त दान पर। भले कार्य करके मनुष्य परमेश्वर के साथ अपने सम्बन्ध सही कर सकता है, ऐसा वे मानते थे (देखें, रोमियों 3:21-30; गला. 5:2-9)। यहाँ वास्तविक वाद विवाद का विषय यह था कि "परमेश्वर के लोग कौन हैं" और उनकी परिभाषा क्या है?

15:2"पौलुस और बरनबास का उनसे बहुत झगड़ा और वाद-विवाद हुआ" लूका यहाँ पर तीव्र भावनात्मक उत्तेजना दर्शाने के लिए "बड़ी परिचर्चा और वाद-विवाद "शब्दों का प्रयोग करता है (देखें, लूका 23:19,25; प्रेरि. 15:2; 19:40; 23:7, 10; 24:5)। यह बड़ा गम्भीर वाद-विवाद था, जो मूल सुसमाचार संदेश से संबंधित था:

1. परमेश्वर की दृष्टि में मनुष्य कैसे धर्मी ठहर सकता है?
2. क्या नई वाचा मूसा की व्यवस्था से जुड़ी है और अलग नहीं हो सकती?

यह पद एन ए एस बी (NASB) अनुवाद में इस प्रकार है, "पौलुस और बरनबास का उनके साथ भारी वाद-विवाद और बहस हुई।" शाब्दिक रूप से यह बहस इतनी बड़ी थी कि उनके बीच झगड़ा और गहरा मतभेद हो गया। यंग लिटरल ट्रान्सलेशन ऑफ द बाइबल, पेज 95 पर लिखा है, (*Young's Literal Translation of the Bible* (p. 95) "यह हल्का मतभेद और वाद-विवाद नहीं था।" इस प्रकार की साहित्यिक शैली लूका के लेखों की विशेषता है। प्रेरि. 12:18 में विस्तृत टिप्पणी देखें।

▪ **"*तो यह ठहराया* गया"** यह कलीसिया की ओर संकेत करता है कि कलीसिया ने ठहराया (देखें, प्रेरि. 15:3)। प्रेरित 15 अध्याय में अनेक समूह पाए जाते थे जो विभिन्न अगुवों और शासन व्यवस्था से संबंध रखते थे।

1. पद 2,3,12 और 22 में कलीसियाई अधिकार का वर्णन किया गया है।
2. पद 6 और 22 में प्रेरितिक अथवा बिशप के अधिकार (अर्थात् याकूब) का उल्लेख है, जो आजकल रोमन कैथलिक अथवा एंग्लिकन शासन व्यवस्था में है।
3. पद 6 और 22 में एल्डर्स के भी अधिकार का उल्लेख है। यह प्रैसबिटिरियन शासन व्यवस्था के समान है।

नए नियम में उपरोक्त सभी शासन व्यवस्थाओं का उल्लेख है। प्रेरितिक अधिकार से (जो किसी दिन मर सकते हैं) कलीसियाई अधिकार के विकास को भी हम पाते हैं जिसमें पास्टर अगुवाई करता है (देखें, प्रेरि. 15:19)।

मेरे विचार से कलीसियाई शासन-प्रबन्ध इतना महत्वपूर्ण नहीं है जितना कि अगुवे का आत्मिक जीवन महत्वपूर्ण है। सुसमाचार की महत्वपूर्ण बातें हैं, महान आज्ञा और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण अगुवे। कोई भी शासन व्यवस्था पक्षपात कर सकती है और सांस्कृतिक राजनीति पर आधारित हो सकती है।

▪ **"उनमें से कुछ व्यक्ति"** इस वाक्यांश के विषय में ए.टी. रौबर्टसन बड़ी रोचक टिप्पणी अपनी पुस्तक "वर्ड पिक्चर्स इन द न्यू टैस्टामैन्ट, पेज 224" में देते हैं, (A. T. Robertson, *Word Pictures in the NewTestament*, p. 224) "निश्चय ही प्रेरितों के काम पुस्तक में तीतुस का (गला. 2:1,3) जो एक यूनानी और संभवतः लूका का भाई था, उल्लेख नहीं किया गया है।" निश्चित रूप से ऐसा हो सकता है, परन्तु यह कुछ अनुमानों

पर आधारित है। हमें सावधान होना चाहिए कि यदि कोई पाठांश हमारी कल्पना के अनुसार अर्थ प्रकट कर सकता है या हमारी कल्पना के अनुसार जिसका अर्थ हो सकता है, तो इसका अर्थ यह नहीं है, वह अर्थ सही है। हमें उसी बात पर संतोष करना चाहिए जिसे मूल लेखक लिखता है, न कि अपनी कल्पनाओं पर भरोसा करना चाहिए चाहे वे कितनी भी सही क्यों न हों।

▪ **''प्रेरितों के लिए''** यरूशलेम की कलीसिया का शासन प्रबन्ध व्यवस्थित व स्थिर नहीं था। कई पाठांशों से पता चलता है कि यीशु का भाई याकूब अगुवा था। इस अध्याय से भी यह सत्य प्रतीत होता है कि याकूब प्रधान अगुवा था तौभी वहाँ अगुवों के समूह थे (देखें, प्रेरि. 15:4,22):

1. बारह प्रेरित
2. स्थानीय ऐल्डर लोग
3. सम्पूर्ण कलीसिया

यह बात अनिश्चित है कि याकूब किस प्रकार से इन समूहों का संचालन करता होगा। गलातियों 1:19 में वह प्रेरित कहलाता है। यह भी हो सकता है कि वह ऐल्डरों के समूह का मान्यता प्राप्त अगुवा हो (देखें, 1 पत. 5:1 में पतरस स्वयं को ऐल्डर कहता है; 2 यूह. 1 तथा 4 यूह.1 में यूहन्ना स्वयं को प्राचीन (ऐल्डर) कहता है।

▪ **''प्राचीन''** ''ऐल्डर'' उस समूह की ओर संकेत कर सकता है जो आराधनालयों के प्राचीनों के समान कलीसिया में थे। प्रेरि. 11:30 व 14:23 में टिप्पणी देखें।

15:3 ''अतः कलीसिया ने'' प्रेरि. 5:11 में विशेष विषय देखें।

▪ **''वे फीनीके और सामरिया से होते हुए''** यह एक अपूर्ण मध्य संकेत है। फिनिके ज्यादातर अन्याय जाती थे, जबकि सामरिया यहूदियों और अन्यजातियों की मिश्रित आबादी थी। इन क्षेत्रों को पहले प्रचारित किया गया था (प्रेरितों 8: 5, 11:19)

▪ **"अन्यजातियों का धर्म परिवर्तन का उल्लेख"** ऐसा लगता है कि पोलुस और बरनबास ने उन्हें "राष्ट्रों" के बीच परमेश्वर के अद्भुत कार्य की सूचना दी, जिसके साथ वे संपर्क में आए। ओटी के जानकार लोगों के लिए, "राष्ट्रों" का रूपांतरण एक पूर्ण भविष्यवाणी थी (यानी, यशा 2:2-4; 42:6;49:6)

यह भी संभव है कि मिशन के प्रयास की सफलता को व्यापक रूप से रिपोर्ट करने के द्वारा यरूशलेम में चर्च चुपचाप और गुप्त रूप से इस मुद्दे को खारिज करने में सक्षम नहीं होगा (देखें प्रेरी 21:18-20)।

▪ **''सब भाई बहुत आनन्दित हुए''** यह सारा अन्यजाति क्षेत्र था। जो कलीसियाएँ इन क्षेत्रों में पाई जाती थीं वे अवश्य मिश्रित कलीसियाएँ रही होंगी। यरूशलेम की कलीसिया को ये सारी सफलताएँ नबियों के कथन याद दिलाती होंगी। जो विश्वव्यापी सुसमाचार प्रचार का कार्य यूनानी-भाषी विश्वासियों द्वारा आरम्भ हुआ था, अब यूनानी-भाषी कलीसियाओं द्वारा उसी कार्य की पुष्टि हो रही थी।

15:4 ''कलीसिया और प्राचीन और प्रेरित'' कलीसियाई शासन प्रबन्ध के अन्तर्गत सभी समूहों का यहाँ उल्लेख है, जैसाकि पद 22 में भी है।

▪ **''उन्होंने बताया जो परमेश्वर ने उनके साथ किया''** आगे चलकर यह एक नमूना बन गया।

15:5 ''परन्तु फरीसियों के पंथ में से जिन्होंने विश्वास किया था'' कलीसिया के विश्वास का आधार था, यीशु ही प्रतिज्ञात मसीह है। परन्तु कलीसिया में ही इस बात पर मतभेद था कि नए विश्वासियों पर इस्राएल से की गई प्रतिज्ञाओं और यीशु पर विश्वास को किस प्रकार लागू किया जाए। फरीसियों के इस पंथ ने कहा कि पुराना नियम

अनन्त और प्रेरणा-प्राप्त है (मत्ती 5:17-19) इसलिए हमें यीशु पर विश्वास करने के साथ साथ मूसा की आज्ञाओं का भी पालन करना चाहिए। (अर्थात् कमप आवश्यक है (1) खतना करना (2) उन्हें आज्ञा देना (3) व्यवस्था मानना) इन्हीं प्रश्नों पर रोमियों 1-8 अध्याय तथा गलातियों की पत्री की विषय वस्तु आधारित है। प्रेरि. 5:34 में विशेष विषयः फरीसी देखें।

- **"यह ज़रूरी है"** प्रेरि. 1:16 में कमप विषय पर टिप्पणी देखें।

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 15:6-11

[6]जब प्रेरित और प्राचीन इस बात के विषय में विचार करने के लिये इकट्ठे हुए। [7]तब पतरस ने बहुत वाद-विवाद हो जाने के बाद खड़े होकर उनसे कहा, "हे भाइयो, तुम जानते हो कि बहुत दिन हुए परमेश्वर ने तुम में से मुझे चुन लिया कि मेरे मुँह से अन्यजाति सुसमाचार का वचन सुनकर विश्वास करें। [8]मन के जाँचने वाले परमेश्वर ने उनको भी हमारे समान पवित्र आत्मा देकर उनकी गवाही दी; [9]और विश्वास के द्वारा उनके मन शुद्ध करके हम में और उनमें कुछ भेद न रखा। [10]तो अब तुम क्यों परमेश्वर की परीक्षा करते हो कि चेलों की गरदन पर ऐसा जूआ रखो, जिसे न हमारे बापदादे उठा सके थे और न हम उठा सकते हैं? [11]हाँ, हमारा यह निश्चय है कि जिस रीति से वे प्रभु यीशु के अनुग्रह से उद्धार पाएँगे; उसी रीति से हम भी पाएँगे।"

15:6 "प्रेरित और प्राचीन इकट्ठे हुए" यहाँ निजी तौर पर पहले सारे अगुवे आपस में मिले। यह प्रैसबिटिरियन शासन प्रबन्ध को दर्शाता है।

15:7 "बहुत वाद-विवाद हो जाने के बाद" अगुवे एकमत नहीं थे। कुछ प्रेरि. 15:5 के वक्तव्य से सहमत थे। ये सभी अगुवे विश्वासी और विश्वासपात्र अगुवे थे। परन्तु कुछ सुसमाचार के मूल स्वभाव के प्रति अन्धे होकर अपनी पुरानी बात पर अड़े रहे। प्रेरितगण भी संपूर्ण परिणाम देखने की जल्दबाज़ी में नहीं थे (देखें, प्रेरि. 8:1)। नीति निर्धारण की प्रक्रिया पर ध्यान दें (1) नीजि तौर विचार विमर्श (2) फिर खुला वाद-विवाद (3) तब मंडली द्वार वोट डालकर निर्णय लेना।

- **"पतरस ने खड़ा हुआ"** संभवतः यह एकत्रित लोगों के सामने बोलने का तरीका था (देखें, प्रेरि. 15:5)। यहाँ पर प्रेरितों के काम पुस्तक में पतरस का अंतिम बार उल्लेख है। उसे कुरनेलियुस के साथ अपने अनुभवों की याद आई (देखें, प्रेरि. 10-11)।

- **"अन्यजातीय सुसमाचार का वचन सुनकर विश्वास करें"** परमेश्वर ने पतरस को इस्तेमाल किया कि वह उसके प्रेम और अन्यजातीय लोगों को ग्रहण किए जाने की गवाही दे सके। परमेश्वर ने इस नई मूल सच्चाई की समझ को थोड़ा थोड़ा करके आगे बढ़ने दिया:

  1. पहले सामरियों को समझाया (प्रेरि. 8)
  2. फिर इथियोपिया के खोजे को समझाया (प्रेरि. 8)
  3. फिर कुरनेलियुस को समझाया (प्रेरि. 10-11)

उपरोक्त लोग पूरे तरीके से मूर्तिपूजक नहीं थे, परन्तु यहूदी मत में रूचि रखते थे। सामरी लोगों की और कुरनेलियुस की पुष्टि पिन्तेकुस्त का अनुभव पाने के द्वारा हुई, प्रारम्भिक कलीसिया के लिए भी यह एक प्रमाण ठहरा कि अन्य जातियाँ भी परमेश्वर द्वारा ग्रहण की जाती हैं।

15:8 "मन के जाँचने वाले परमेश्वर ने" यह पद परमेश्वर के सर्वज्ञानी होने की पुष्टि करता है (देखें, 1 शमू. 1:24; 16:7; भजन 26:2; 139:1; नीति. 21:2; 24:12; यिर्म. 11:20; 17:10; लूका 16:15; रोमियों 8:27; प्रका. 2:23) कि वह इन अन्यजाति विश्वासियों के विश्वास को जानता है।

▪ **''उनको पवित्र आत्मा देकर''** यह स्पष्ट रूप से उसी पिन्तेकुस्त के अनुभव की ओर संकेत करता है जो उन्होंने स्वयं पाया था। पवित्र आत्मा का यही प्रकटीकरण यरूशलेम में, सामरिया में और कुरनेलियुस के घर कैसरिया में हुआ था। यह यहूदी विश्वासियों के लिए अन्य जातीय लोगों को ग्रहण किए जाने का परमेश्वर की ओर से चिन्ह था (देखें, प्रेरि. 15:9; 11:17)।

15:9 ''हम में और उन में कुछ भेद न रखा'' यह पतरस का धर्म-वैज्ञानिक सारांश था जिसे उसने प्रेरि. 10:28, 34; 11:12 में पाया था। परमेश्वर किसी का पक्षपात नहीं करता (देखें, गला. 3:28; इफि. 3:11-4:13; कुलु. 3:11)। संपूर्ण मानव जाति परमेश्वर के स्वरूप पर बनाई गई है (देखें, उत्पत्ति 1:26-27)। परमेश्वर की इच्छा है कि सब लोग उद्धार पाएँ (देखें, उत्पत्ति 12:3; निर्ग. 19:5-6; 1तीमु. 2:4; 4:10; तीतुस 2:11; 2 पतरस 3:9)। परमेश्वर संपूर्ण संसार से प्रेम रखता है (देखें, यूहन्ना 3:16-17)।

▪ **''विश्वास के द्वारा उनके मन शुद्ध करके''** सैप्तूजैन्त में इस शब्द का प्रयोग लेवियों की शुद्धता प्रकट करने के लिये किया गया है। यह उस अशुद्धता को दूर करने को दिखाता है जो परमेश्वर से हमें पृथक करती है।

यह वही क्रिया शब्द है जो प्रेरि. 10:15 और 11:9 में पतरस के शुद्ध व अशुद्ध पशु-पक्षियों के दर्शन में दिखाई दिये थे (जहाँ LXX की उत्पत्ति 7:2, 8; 8:20 का प्रयोग किया गया है)।

लूका के सुसमाचार में इसका प्रयोग कोढ़ी को शुद्ध करने में किया गया है (देखें, प्रेरी 4:27; 5:12-13; 7:22; 17:14,17) यह पापों से शुद्ध करने का प्रभावशाली दृष्टान्त बना (देखें, इब्रा. 9:22-23; 1 यूह. 1:7)।

पुराने नियम में मन अथवा हृदय मनुष्य के सम्पूर्ण व्यक्तित्व को दर्शाता है। प्रेरि. 1:24 में विशेष विषय देखें। ये अन्यजाति लोग मसीह के द्वारा पूर्ण रूप से शुद्ध किए गए और ग्रहण किए गए। जिस साधन द्वारा वे शुद्ध हुए वह सुसमाचार पर उनका विश्वास था। उन्होंने यीशु के व्यक्तित्व और उसके द्वारा किए गये कार्य पर विश्वास किया, यीशु को ग्रहण किया और उस पर पूरा भरोसा किया (देखें, रोमियों 3:21-5:11; गला. 2:15-21)।

15:10 '' तुम क्यों परमेश्वर की परीक्षा करते हो'' इस वाक्यांश की पृष्ठभूमि निर्ग. 17:2,7 तथा व्यवस्थाविवरण 6:16 है। परीक्षा के लिए यूनानी शब्द (*peirazō*) पिराज़ों प्रयुक्त किया गया है जिसमें ''विनाश के लिए परीक्षा करने'' का अर्थ पाया जाता है। यह बड़ा गम्भीर वाद-विवाद था। देखें प्रेरि. 5:9 में ''परीक्षा के लिए यूनानी शब्द और उसका अर्थ'' विशेष विषय।

▪ **''जूआ''** इसका प्रयोग रब्बियों द्वारा शेमा का पाठ करने में किया जाता था ;व्य.वि. 6:4-5); अतः यह शब्द लिखित व मौखिक व्यवस्था का प्रतीक था (देखें, मत्ती 23:4; लूका 11:46; गला. 5:1)। यीशु ने इस शब्द का प्रयोग मत्ती 11:29 में अपने द्वारा नई वाचा की शर्तों को पूरा करने के लिए किया और कहा ''मेरा जूआ अपने ऊपर उठा लो''

▪ **''न हमारे बापदादे उठा सके थे और न हम उठा सकते हैं''** यह यीशु की शिक्षाओं की ओर संकेत करता है (देखें, लूका 11:46)। इस विषय के सम्बन्ध में पौलुस द्वारा गलतियों 3 में विचार व्यक्त किये गये हैं,यहां पतरस है जो याकूब की तरह यहूदीवाद के बोझ का अनुभव करता है (देखें, गला. 2:11-21)।

यहाँ यह वाक्यांश इस धर्म वैज्ञानिक सच्चाई को स्वीकार करता है कि व्यवस्था द्वारा उद्धार प्राप्त नहीं किया जा सकता है क्योंकि पतित मानवजाति पवित्र व्यवस्था का पालन नहीं कर सकती है (देखें, रोमियों 7)। उद्धार कभी भी भले कार्यों पर, जो मनुष्य करता है, आधारित नहीं हो सकता है, पर फिर भी उद्धार पाए हुए, वरदान प्राप्त और आत्मा द्वारा चलने वाले विश्वासी को भला जीवन बिताने की आवश्यकता है (देखें, मत्ती 11:30; इफि. 1:4; 2:10)। भक्तिपूर्ण जीवन अर्थात् मसीह की तरह जीवन व्यतीत करना (देखें, रोमि. 8:29; गला. 4:19; इफि. 4:13) सदैव ही मसीही धर्म का लक्ष्य रहा है, ताकि सुसमाचार जीवनों से प्रकट हो, न कि स्वयं का घमण्ड प्रकट हो और हम धर्मी कहलाए जाएँ।

15:11 यह उद्धार का सारांश है, अर्थात् विश्वास के द्वारा अनुग्रह से उद्धार पाना। (पतरस के उपदेशों के लिए देखें प्रेरि. 2-3; तथा पौलुस के आदेशों के लिए देखें, प्रेरि.13:38-39; रोमियों 3-8; गला. 3; इफि. 1-2)। यहूदी और गैरयहूदियों दोनों के लिए उद्धार पाने का तरीका एक समान है (देखें, रोमियों 3:21-31; 4; इफि. 2:1-10)।

NASB (**नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम** 15:12-21

[12]**तब सारी सभा चुपचाप बरनबास और पौलुस की सुनने लगी, कि परमेश्वर ने उनके द्वारा अन्यजातियों में कैसे बड़े-बड़े चिन्ह, और अद्‌भुत काम दिखाए।** [13]**जब वे चुप हुए तो याकूब कहने लगा, "हे भाइयो, मेरी सुनो।** [14]**शमौन ने बताया कि परमेश्वर ने पहले पहल अन्यजातियों पर कैसी कृपादृष्टि की, कि उनमें से अपने नाम के लिए एक लोग बना ले।** [15]**इससे भविष्यद्वक्ताओं की बातें भी मिलती हैं, जैसाकि लिखा है,** [16]**'इसके बाद मैं फिर आकर दाऊद का गिरा हुआ डेरा उठाऊँगा, और उसके खंडहरों को फिर बनाऊँगा, और उसे खड़ा करूँगा।** [17]**इसलिये कि शेष मनुष्य अर्थात् सब अन्यजाति जो मेरे नाम के कहलाते हैं, प्रभु को ढूँढ़ें,** [18]**यह वही प्रभु कहता है जो जगत की उत्पत्ति से इन बातों का समाचार देता आया है।'** [19]**इसलिये मेरा विचार यह है कि अन्य जातियों में से जो लोग परमेश्वर की ओर फिरते हैं, हम उन्हें दुःख न दें;** [20]**परन्तु उन्हें लिख भेजें कि वे मूरतों की अशुद्धताओं और व्यभिचार और गला घोंटे हुओं के मांस से और लहू से दूर रहें।** [21]**क्योंकि प्राचीन काल से नगर नगर मूसा की व्यवस्था का प्रचार करने वाले होते आए हैं, और वह हर सब्त के दिन आराधनालय में पढ़ी जाती हैं।**"

15:12 "सारे लोग चुप हो गए, और वे सुनने लगे " पतरस के विचारों ने समूह के सब अगुवों को शान्त कर दिया था। संदर्भ से ज्ञात होता है कि पतरस के बाद दो और मिश्नरियों ने अपनी यात्राओं के अनुभव बताए। इस बार तमाम अगुवों ने उनकी बातें सुनीं। जेरोम बाइबल कामेन्ट्री (भाग दो, पेज 195) (The *Jerome Biblical Commentary* (vol. 2, p.195) मानती है कि यह प्रेरि. 15:6-11 की सभा से अलग दूसरी सभा हुई थी। परन्तु मैं मानता हूँ कि यह वही सभा थी।

▪ **"पौलुस और बरनबास"** ध्यान दीजिए कि नामों को गुप्त रखा गया था क्योंकि यह स्थान जहाँ सभा हो रही थी, बरनबास की कलीसिया थी जिसका वह सदस्य था।

▪ **"चिन्ह और अद्‌भुत काम सम्बंधित"** प्रेरितों के काम पुस्तक में पिन्तेकुस्त के दिन अन्य भाषा का धर्म वैज्ञानिक उद्देश्य, परमेश्वर द्वारा ग्रहण किए जाने का चिन्ह था, इसलिए हम पूछ सकते हैं कि क्या यह विशेष चिन्ह दुबारा प्रकट हो सकता है जिससे प्रकट हो कि परमेश्वर ने ग्रहण किया है।

चिन्ह, स्वयं यीशु द्वारा (प्रेरि. 2:22), प्रेरितों द्वारा (देखें, 2:43; 3:7; 4:16, 30; 5:12), सात द्वारा (देखें, प्रेरि. 6:8; 8:6,13), तथा पौलुस और बरनबास द्वारा (देखें, प्रेरित. 14:3; 15:12) प्रकट किये गये। इन चिन्हों और अद्‌भुत कामों के द्वारा परमेश्वर सुसमाचार के माध्यम से अपनी उपस्थिति और अपनी सामथ्र्य की पुष्टि कर रहा था। आगे चलकर यहूदीवादी समूहों के लिए भी ये चिन्ह प्रमाण ठहरे कि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से परमेश्वर ने पूर्ण रूप से मूर्तिपूजकों को ग्रहण किया है।

15:13 "याकूब" यह प्रेरित याकूब नहीं था क्योंकि वह प्रेरि. 12:1-2 के अनुसार मार डाला गया था। यह याकूब यीशु का सौतेला भाई था जो अब यरूशलेम की कलीसिया का अगुवा बना दिया गया था और यही नए नियम की याकूब नामक पत्री का लेखक था। उसे धर्मी कहा जाता था। कभी कभी उसे "ऊँठ के घुटनों वाला" भी कहा जाता था क्योंकि वह अक्सर घुटनों के बल प्रार्थना किया करता था। इस वाद-विवाद में यरूशलेम के दो अगुवे ही मुख्य वक्ता थे अर्थात् पतरस और याकूब। प्रेरि. 12:17 में टिप्पणी देखें।

15:14 "शमौन" यह पतरस का आरामी भाषा का नाम था (देखें, 2 पतरस 1:1)

▪ **"अन्य लोगों में से उनके नाम के लिए लोगों के बीच से लेने के बारे में**यह पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं का विश्वव्यापी सम्बोधन था (उदाहरणार्थ, यशा. 2:2-4; 42:6; 45:20-23; 49:6; 52:10)। परमेश्वर के लोगों में सदैव यहूदी और गैरयहूदी शामिल थे (देखें उत्पत्ति 3:15; 12:3; निर्ग. 9:16; इफि. 2:11-3:13)।

"अपने नाम के लिये" वाक्यांश का संकेत इन पदों की ओर हो सकता है (यिर्म. 13:11 और 32:20 अथवा यशायाह 63:12,14)।

15:15-18 "जैसाकि लिखा है" यह सप्तूजेन्त में आमोस 9:11-12 का एक स्वतन्त्र उद्धरण है। पद 17 में आया "शेष मनुष्य" मैसोरैटिक Masoretic मूलपाठ में एदोम *(Edom)* जाति है परन्तु सप्तूजैन्त में मानवजाति है। याकूब सप्तूजैन्त से उद्धरण देता है क्योंकि परमेश्वर के उद्धार की विश्वव्यापी प्रतिज्ञा दर्शाने के लिए उसे इस उद्धरण से सहायता मिलती है।

ध्यान दीजिए कि प्रतिज्ञा किए हुए कार्यों को करने वाला यहोवा (YHWH) है, जो यहेजकेल 36:22-38 से मिलता जुलता है। इस पर ध्यान दें कि "है" शब्द कितनी बार आया है।

सप्तूजैन्त (LXX) से लिया गया उद्धरण स्पष्टरूप से मैसोरैटिक पाठ से भिन्न है जो यह दर्शाता है कि सच्चा विश्वास सही मूलपाठ पर नहीं परन्तु सही व सिद्ध परमेश्वर और मानव जाति के लिये उसकी योजना पर होना चाहिए। हम में से कोई भी नए नियम या पुराने नियम में असंगतियों को पसन्द नहीं करता, परन्तु ये असंगतियाँ किसी भी विश्वासी के पवित्रशास्त्र की विश्वासयोग्यता के भरोसे पर कोई प्रभाव नहीं डाल सकती हैं। परमेश्वर ने सच्चाई के साथ और प्रभावपूर्ण तरीके से स्वयं को पतित मानवजाति पर प्रकट किया है। हस्तलेखों की प्राचीन मूलपाठ लीपियों को बहाना बनाकर कोई भी परमेश्वर के प्रकाशन का तिरस्कार नहीं कर सकता है। देखें मैनफ्रैल ब्राउक की पुस्तक, एब्यूज़िंग स्क्रीपचर अध्याय 1, तथा "द नेचर ऑफ स्क्रीपचर, पेज 23-32)। (Manfred Brauch, *Abusing Scripture*, chapter 1, "The Nature of Scripture," pp.23-32).

15:16 संदर्भ से स्पष्ट है कि याकूब ने यह हवाला सप्तूजैन्त से लेकर चुना और उसमें कुछ तब्दीली की और अन्यजातियों को मसीही धर्म में शामिल होने के बारे में बताया। क्या उसने यह हवाला इसलिए भी चुना क्योंकि यह पुराने नियम की मूसा की विधियों के विनाश के बारे में बताता है? नई वाचा मूलतः बिल्कुल भिन्न है:

1. यह अनुग्रह पर आधारित है, न कि भले व धार्मिक कार्यों पर (योग्यता का महत्व नहीं)
2. मसीह केन्द्रित है, न कि मन्दिर केन्द्रित (यीशु नया मन्दिर है)
3. यह विश्वव्यापी है, न कि यहूदी जाति तक सीमित है।

ये परिवर्तन विश्वासियों के "खतना वाले दल" के लिए विनाशकारी रहे होंगे। अब प्रधान प्रेरित पतरस, रब्बी प्रेरित पौलुस जिसका मन-परिवर्तन हो गया था, और यरूशलेम की कलीसिया का अगुवा याकूब सब के सब एकमत होकर इस खतना वाले दल के विरोध में थे और कलीसिया ने भी उनके विरोध में वोट डाले, जैसाकि आजकल भी कलीसिया में होता है।

15:17 यह बड़ा अद्‌भुत विश्वव्यापि वक्तव्य है। परन्तु इस वाक्यांश पर ध्यान दें "सब अन्यजाति जो मेरे नाम के कहलाते हैं, प्रभु को ढूँढ़ें" (देखें, दानि. 9:19)। इसमें उपासना करने का भावार्थ पाया जाता है (देखें, (LXX)सप्तूजैन्त की व्यवस्थाविरण 28:10; साथ ही देखें यशा. 63:19; यिर्म. 14:9)।

15:18 अन्यजातियों का प्रवेश किया जाना सदैव ही परमेश्वर की योजना का भाग रहा है (देखें, गला. 3:26-29; इफि. 3:3-6; प्रेरि. 1:8 में विशेष टिप्पणी भी देखें)। उद्धारकर्त्ता राजा दाऊद के वंश से आएगा (देखें, प्रेरि. 15:16; 2 इति. 6:33)।

15:19 यह याकूब द्वारा दिया गया निचोड़ है।

15:20 जो सुझाव दिए गए उनका तात्पर्य यह थाः (1) मिश्रित कलीसियाओं में भोजन की संगति पवित्र रहे और (2) स्थानीय यहूदियों में सुसमाचार प्रचार की संभावनाएँ रहें। इन बातों का गैर यहूदियों के व्यक्तिगत उद्धार से कोई

सरोकार नहीं था। ये सुझाव यहूदियों और गैर-यहूदियों की आराधना के विषय में दोनों को दिए गए (देखें, प्रेरि. 15:29; 21:25)।

कनानियों और यहूदियों के मध्य सामाजिक और धार्मिक अन्तर रखने के लिए लेवियों के नियम दिए गए। उस व्यवस्था या नियमों का मुख्य उद्देश्य था कि उनके साथ संगति न की जाए, परन्तु यहाँ पर उद्देश्य ठीक विपरीत है। ये "आवश्यक बातें" इसलिए दी गईं कि दो विभिन्न संस्कृतियों के विश्वासियों के मध्य मधुर संगति बनाए रखने में सहायता मिल सके।

इस प्रेरितिक आज्ञा से संबंधित यूनानी मूलपाठों में बहुत सी असंगतियाँ पाई जाती हैं। किसी-किसी मूलपाठ में दो बातें, किसी में तीन व चार हैं। विस्तृत जानकारी व विकल्प के लिए देखें, ब्रूस एम. मेटज़र की पुस्तक, "ए टैक्सचूअल कमेन्ट्री ऑन द ग्रीक न्यू टैस्टामैन्ट, पेज 429-434 (*Bruce M. Metzger's A Textual Commentary on the Greek New Testament, pp. 429-434)* अधिकांश अंग्रेजी अनुवादों में चार बातें दी गई हैं।

NASB, NRSV, REB	**"व्यभिचार से"**
NKJV, REV, NET	**"अनैतिक यौन-संबंधों *से*"**
NJB	**"अनैतिक विवाह-संबंधों से"**

निश्चयपूर्वक कहना कठिन है कि ये प्रतिबन्ध किन बातों की ओर संकेत करते हैं:

1. मूर्तिपूजक अनैतिक आराधना विधियों के संबंध में (अर्थात् अनैतिकता)
2. कौटुम्बिक व्यभिचार के संबंध में यहूदी समझदारी के विषय में देखें, लैव्य. 18; एफ.एफ. ब्रूस की पुस्तक आंसर टू कुएस्चें पेज 43 देखें (F. F. Bruce, *Answers to Questions*, p. 43;NJB)

▪ **"गला घोंटे हुओं और लहू से"** कुछ टीकाकार इन दोनों बातों को मूसा के भोजन-संबंधी नियमों के साथ जोड़ते हैं (देखें, लैव्य. 17:8-16)। संभवतः यह सही हो सकता है, "लहू" हत्या करने को दर्शाता है और हत्या करना मूसा की व्यवस्था में गम्भीर बात है।

15:21 इस पद का अर्थ यह है:

1. कर्मकाण्डियों को विश्वास दिलाने के लिए कि तोरह अन्यजातियों में हर जगह सिखाई जाती है। अथवा
2. इसलिए कि हर बस्ती में यहूदी विश्वासी पाए जाते थे तो उनकी धार्मिकता का आदर सब जगह किया जाना चाहिए ताकि उनके द्वारा सुसमाचार, प्रचार प्रभावपूर्ण ढंग से हो सके (देखें, 2 कुरि. 3:14-15)

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 16:22-29

22तब सारी कलीसिया सहित प्रेरितों और प्राचीनों को अच्छा लगा कि अपने में से कुछ मनुष्यों को चुनें, अर्थात् यहूदा जो बरसब्बा कहलाता है, और सीलास को जो भाइयों में मुखिया थे; और उन्हें पौलुस और बरनबास के साथ अन्ताकिया भेजें। 23उन्होंने उनके हाथ यह लिख भेजा: "अन्ताकिया और सीरिया और किलिकिया के रहने वाले भाइयों को जो अन्यजातियों में से हैं, प्रेरितों और प्राचीन भाइयों का नमस्कार। 24हमने सुना है कि हम में से कुछ ने वहां जाकर, तुम्हें अपनी बातों से घबरा दिया; और तुम्हारे मन उलट दिए हैं परन्तु हमने उनको आज्ञा नहीं दी थी। 25इसलिये हमने एकचित्त होकर ठीक समझा कि चुने हुए मनुष्यों को अपने प्रिय बरनबास और पौलुस के साथ तुम्हारे पास भेजें। 26ये ऐसे मनुष्य हैं जिन्होंने अपने प्राण हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम के लिये जोखिम में डाले हैं। 27इसलिये हमने यहूदा और सीलास को भेजा है, जो अपने मुँह से भी ये बातें कह देंगे। 28पवित्र आत्मा को और हमको ठीक जान पड़ा कि इन आवश्यक बातों को छोड़, तुम पर और बोझ न डालें; 29कि तुम मूरतों पर बलि किए हुओं से और लहू से, और गला घोंटे हुओं के मांस से, और व्यभिचार से दूर रहो। इनसे दूर रहो तो तुम्हारा भला होगा। आगे शुभ।"

15:22 यह प्रतिनिधि मण्डल एकता के उद्देश्य से भेजा गया (प्रेरि. 15:23), न कि उनसे आज्ञापालन कराने के लिये।

▪ **"यहूदा जो बरसब्बा कहलाता है"** नए नियम के अनेक विश्वासयोग्य अगुवों में यह भी एक ऐसा अगुवा है जिसके बारे में अधिक जानकारी उपलब्ध नहीं है। नया नियम इसके विषय अधिक नहीं बताता परन्तु परमेश्वर उसे अच्छी तरह जानता है।
यह संभव हो सकता है कि वह यूसुफ बरसब्बा का भाई हो जो प्रेरि. 1:23 में यहूदा इस्करियोती का स्थान लेने के लिए एक प्रार्थी नियुक्त हुआ था। यदि यह सत्य है तो ये दोनों बरसब्बा के पुत्र थे।

▪ **"सीलास"** बरनबास की तरह सीलास भी यरूशलेम की कलीसिया का अगुवा था। पौलुस द्वारा उसे सिलवानुस कहा गया है। उसने दूसरी मिश्नरी यात्रा में बरनबास का स्थान लिया था और पौलुस का सहयोगी बना था। संभव है पौलुस ने उसे अपना सहयोगी इसलिए बनाया हो कि (1) यदि कोई उस पर दोष लगाए कि वह बारह प्रेरितों वाला सुसमाचार नहीं परन्तु कोई और सुसमाचार प्रचार करता है, अथवा (2) मूल यरूशलेम की कलीसिया से संगति नहीं रखता है तो सीलास इन सब बातों का जवाब दे सके।

विशेष विषय: सीलास/सिलवानुस

सीलास अथवा सिलवानुस वह व्यक्ति था जिसे पौलुस ने अपने साथ दूसरी मिशनरी यात्रा पर चलने के लिए चुना था (देखें प्रेरि. 15:40-18:5) जबकि मरकुस के विषय में उसका बरनबास से विवाद हो गया था। जब बरनबास मरकुस को लेकर साइप्रस चला गया (प्रेरि. 15:36-39) तो पौलुस सीलास को लेकर यात्रा पर निकल पड़ता है।

A. सीलास का पहली बार उल्लेख प्रेरि. 15:22 में हुआ जहाँ उसे भाइयों में मुखिया कहा गया है।
B. वह भविष्यद्वक्ता भी था (देखें प्रेरि. 15:32)
C. वह पौलुस की तरह एक रोमी नागरिक था (प्रेरि. 16:37)
D. वह तथा यहूदा बरसब्बा यरूशलेम की कलीसिया द्वारा अन्तकिया भेजे गए ताकि परिस्थितियों की जांच-पड़ताल करें (प्रेरि. 15:22,30-35)
E. 2 कुरि. 1:19 में पौलुस उसे सुसमाचार प्रचार में सहयोगी कहता है।
F. बाद में वह पत्र लेखन में पतरस का सहयोगी बना (1 पत. 5:12) यहां पतरस बहुत कुछ पौलुस के समान दिखाई देता है।
G. पौलुस और पतरस दोनों ही उसे सिलवानुस नाम से पुकारते हैं जबकि लूका उसे सीलास पुकारता है (जो शाऊल का आरामी रूप है)। यह हो सकता है कि सीलास उसका यहूदी नाम हो तथा सिलवानुस उसका लैटिन नाम। (देखें, एफ. एफ. ब्रूस की पुस्तक "पौल : अपोसल अफ द हार्ट सेट फ्री पेज 213) (F.F. Bruce, "Paul : *Apostle of the Heart Set Free*")

Copyright © 2014 Bible Lessons International

15:23 यरूशलेम की कलीसिया की ओर से यह पत्र केवल उन्हीं कलीसियाओं में भेजा गया जहाँ पर यहूदियों की संख्या ज्यादा थी। कुछ ही क्षेत्रों के नामों जैसे अन्ताकिया, सीरिया और किलिकिया, के द्वारा याकूब यह दर्शाना चाहता था कि यह गैरयहूदी कलीसियाओं के लिये नियम नहीं है। यह पत्र केवल सहभागिता और सुसमाचार प्रचार के उद्देश्य से था, न कि नैतिकता अथवा उद्धार से संबंधित मार्गदर्शन था।

क्या आप आधुनिक विश्वासी होने के नाते कुछ बातों से अलग रहते हैं? देखें:

1. मैन फ्रैड ब्राऊच की पुस्तक, एबयूज़िंग स्क्रिपचर (Manfred Brauch, *Abusing Scripture,* chapter 7), अध्याय 7, पेज 202-249, विषय है: ऐतिहासिक परिस्थितियाँ और सांस्कृतिक वास्तविकता Historical Situation and Cultural Reality, pp. 202-249

2. गारडन फी, गास्पल एण्ड स्पीरिट (Gordon Fee, *Gospel and Spirit)* ।
3. हार्ड सेईंग्स आफ द बाइबल, पेज 527-530 तथा क्या खाएँ और क्या न खाएँ, पेज 576-578 (*Hard Sayings of the Bible*, "How Kosher Should Christians Live?", pp. 527-530 and "To Eat or Not to Eat," pp. 576-578)

ऊपर दिए गए सारे लेख बड़े लाभप्रद हैं। अन्य सच्चे और बाइबल पर विश्वास रखने वाले मसीही लोगों के बारे में पढ़कर शान्ति प्राप्त होती है कि किस प्रकार से वे समस्याओं का सामना कर रहे हैं। उनके लेख अन्य विश्वासियों को सोचने समझने की स्वतन्त्रता और उस ज्ञान के अनुसार जीवन व्यतीत करने की प्रेरणा देते हैं जो उनके पास है। एक स्वस्थ, बढ़ने वाली और महान आज्ञा का पालन करने वाली कलीसिया की उन्नति की कुंजी समानता नहीं परन्तु एकता होती है।

■ "**किलिकिया**" इस क्षेत्र में पौलुस का घर था (देखें, प्रेरि. 22:3)।

15:24 यह पद दिखाता है कि यरूशलेम की कलीसिया को पता चल गया था कि उनकी कुछ सदस्यता, जिनके पास कोई अधिकार या आधिकारिक पद नहीं था (देखें प्रेरी 15:1), (1) इन मिशन चर्चों की यात्रा कर रहे थे और (2) मोज़ेक कानून के अनुरूप होने की मांग (देखें प्रेरी 15:1)। क्रिया (anaskeuazō) का प्रयोग किया जाता है एक मजबूत शहर को लूटने के लिए केवल एनटी में सैन्य शब्द का इस्तेमाल किया गया था।

15:25

NASB	**"एक मन होकर"**
NKJV	**"एक मन से इकट्ठे होकर"**
NRSV, NJB	**"सर्वसम्मत्ति से हमने निर्णय लिया"**
TEV	**"हम एक साथ जमा हुए और सब सहमत हैं"**

विश्वासियों के मध्य ऐसी एकता पवित्र आत्मा की उपस्थिति का प्रतीक थी (देखें, प्रेरि. 15:28)। इस पर ध्यान दें कि इसका अर्थ यह नहीं है कि उनके बीच वाद विवाद अथवा विचारों का सख्त आदान-प्रदान नहीं होता था। इन सब बातों के होते हुए भी वे अच्छा और सकारात्मक हल सर्वसम्मत्ति से निकाल लेते थे।

समस्याओं के सर्वसम्मत्ति से निकाले गए ऐसे निर्णयों को सब लोगों तक पहुंचाने की आवश्यकता होती है ताकि दुबारा समस्या उत्पन्न न हो। यरूशलेम की कलीसिया ने अब सुसमाचार से संबंधित बातों का औपचारिक समाधान अन्यजातियों के लिए निकाल लिया था।

15:26 पौलुस और बरनबास ने अपनी सेवकाई के बारे में बताते हुए न केवल सफलताओं ही का वर्णन किया था पर साथ ही कठिनाइयों का भी उल्लेख किया था जिन पर उन्होंने अपने समर्पण द्वारा विजय पाई थी।

15:28 "पवित्र आत्मा को और हमको ठीक जान पड़ा" इस महत्वपूर्ण सभा में परमेश्वर उपस्थित था, उसने वाद-विवाद के माध्यम से अपनी इच्छा प्रकट की। पवित्र आत्मा ने उनके मध्य एकता उत्पन्न की थी। यहाँ पर बाइबल की वाचा के दोनों पहलु उजागर किए गए हैं-परमेश्वर की क्रियाशीलता तथा उचित मानवीय प्रत्युत्तर। ध्यान दीजिए कि यह एक प्रकार का समझौता था जिसमें दोनों पक्षों को लाभ प्राप्त हुआ। केवल अनुग्रह, केवल विश्वास का सुसमाचार सुदृढ़ व प्रमाणित हुआ, परन्तु यहूदी विचारधाराओं व समझ का भी सम्मान किया गया। देखें विशेष विषयः पवित्र आत्मा का व्यक्तित्व प्रेरि. 1:2

■ "**इन आवश्यक बातों**" यह व्यक्तिगत उद्धार की ओर संकेत नहीं करता, परन्तु स्थानीय कलीसियाओं में यहूदी और गैरयहूदी विश्वासियों के मध्य परस्पर मधुर संगति की ओर संकेत करता है।

15:29 एक अन्यजाति के लिए इसका अर्थ था अपने भूतकालीन मूर्तिपूजक जीवन से पूर्णतः रिश्ता तोड़ना। मसीही स्वतन्त्रता और उत्तरदायित्वों के बीच सन्तुलन बनाए रखना कठिन तो है परन्तु सन्तुलन बनाए रखने का प्रयत्न करना होगा (देखें, रोमियों 14:1 से 5:13; 1 कुरि. 8:1-13; 10:23-28)। इन मूर्तिपूजकों की पहले की उपासना विधि में ये तीनों वर्जित बातें शामिल थीं। विभिन्न यूनानी मूलपाठों में ये तीनों आवश्यक बातें विभिन्न प्रकार से लिखी गई हैं। परन्तु मूल प्रश्न यह है कि ये बातें हमें क्या शिक्षा देती हैं:

1. मूर्तियों पर बलि की हुई वस्तुएँ, माँस की ओर संकेत करता है (देखें, 1 कुरि.8; 10:23-33)।
2. लहू दो बातों की ओर संकेत करता है:
   a. मांस जो मूर्तियों पर चढ़ाया हुआ हो
   b. पहले से विचार करके हत्या करना
3. गला घोंटे हुओं के मांस से, अर्थात् गलत तरीके से पशु को मारना; पहली दो बातें यहूदियों की भोजन वस्तुओं से संबंधित नियमों से संबंध रखती हैं (देखें, लैव्य. 11 अध्याय)
4. व्यभिचार, निम्न बातों की ओर संकेत कर सकता है:
   a. मूर्तिपूजकों की उपासना-विधि में भाग लेना, व भोजन संगति करना।
   b. कौटुम्बिक व्यभिचार संबंधी लेवियों के नियम (देखें, लैव्य. 17:10,14 तथा एफ.एफ. ब्रूस की पुस्तक, ''प्रश्नों के उत्तर'' पेज 43 (F. F. Bruce, *Answers to Questions*, p.43)

ये सारी आवश्यक बातें उद्धार से संबंध नहीं रखती हैं, परन्तु मिश्रित कलीसियाओं में परस्पर सहभागिता और सुसमाचार प्रचार के अवसरों से संबंध रखती है। देखें, एफ.एफ. ब्रूस की पुस्तक, ''प्रश्नों के उत्तर'' पेज 80.81(F. F. Bruce, *Answers to Questions*, pp. 80-81.)

विशेष विषयः मसीही स्वतन्त्रता बनाम मसीही उत्तरदायित्व

A. रोमि. 14:1-15:13 मसीही स्वतंत्रता और मसीही उत्तरदायित्वों के मध्य विरोधाभास में संतुलन बनाए रखने का प्रयत्न करता है। इस संपूर्ण खण्ड में इसी का उल्लेख है

B. इस पाठांश में जो समस्या दिखाई देती है उसका कारण संभवतः रोम की कलीसिया में गैरयहूदी और यहूदी विश्वासियों के मध्य तनावपूर्ण स्थित का पाया जाना हो सकता है। धर्म परिवर्तन से पहले यहूदी कानूनी और गैर यहूदी गैरकानूनी और अनैतिक समझे जाते थे। याद रखना चाहिए कि यह बातें यीशु के सच्चे अनुयायियों से कहीं गई हैं। यह अध्याय नामधारी व सांसारिक विश्ववासियों को सम्बोधित नहीं करता है। दोनों समूहों के लिए ये बातें हैं। किसी भी एक पक्ष पर अधिक बल देना खतरनाक हो सकता है। यह विचार विमर्श कर्मकाण्डवाद के लिए तथा स्वतंत्रतावाद के लिए मुख्य बातों का लाइसेंस नहीं है।

C. विश्वासियों को सतर्क रहना चाहिए कि अपनी धर्म शिक्षा अथवा नैतिकता को अन्य सब विश्वासियों का मानदण्ड ना बनाएँ (2 कुरि. 10:12)। विश्वासियों को उसी ज्ञान के अनुसार चलना चाहिए जो उनके पास है और उन्हें जानना चाहिए कि उनकी धर्म शिक्षा (Theology) स्वतः ही (Automatically) परमेश्वरीय धर्म शिक्षा नहीं है। विश्वासीगण भी पाप से प्रभावित होते हैं। हमें पवित्रशास्त्र से, तर्क-वितर्क से और अपने अनुभवों से एक दूसरे को प्रोत्साहित करना चाहिए परन्तु सब कार्य प्रेम पूर्वक करना चाहिए। जितना अधिक ज्ञान कोई रखता है, वह जानता है कि उसे और ज्ञान की जरूरत है, (देखें, 1 कुरि. 13:12)।

D. मसीह भाई अथवा बहन के कार्यों के मूल्यांकन की सच्ची कुंजी परमेश्वर के निकट अपना आचरण और अपना उद्देश्य होते हैं। मसीही लोग एक दिन मसीह के न्यायासन के सामने लेखा देने के लिए प्रस्तुत होंगे कि उन्होंने एक-दूसरे के साथ कैसा बर्ताव किया (देखें, प्रेरि. 15:10,12 तथा 2 कुरि. 5:10)।

E. मार्टिन लूथर ने कहा, "एक मसीही जन सबसे अधिक स्वतंत्र स्वामी है, वह किसी के अधीन नहीं ; मसीही जन सबसे अधिक कर्तव्य-परायण दास है, जो सबके अधीन है।" बाइबल की सच्चाई अक्सर तनावपूर्ण

विरोधाभास में प्रस्तुत की जाती है (देखें, विशेष विषय : "पवित्रशास्त्र में विरोधाभास")।

F. इस कठिन और महत्वपूर्ण विषय का समाधान रोमि. 14:1-15:13, 1 कुरि. 8-10 तथा कुलु. 2:8-23 में किया गया है।

G. फिर भी यह कहने की आवश्यकता है कि विश्वासियों के मध्य अनेकावाद बुरी बात नहीं है। प्रत्येक विश्वासी बलवन्त और दुर्बल है। प्रत्येक को उसे ज्ञान के अनुसार कार्य करना चाहिए जो उसके पास है, अधिक ज्ञान प्राप्ति के लिए पवित्रात्मा और बाइबल पर निर्भर रहना चाहिए। इस समय जबकि हमें दर्पण में धुन्धला दिखाई देता है (1 कुरि. 13:8-13), तो हमें प्रेम में (प्रेरि. 15:15)शांति में (प्रेरि. 15:17,19) और आपसी उन्नति करते हुए चलना चाहिए।
विश्वासी होने के नाते हमारे आपसी मतभेद विभिन्न अविश्वासियों के लिए परमेश्वर का खुला द्वार है ताकि वे मसीह में क्षमा पाकर बहाल हो सकें। मसीही अनेकतावाद यदि बाइबल की सीमा में है तो सुसमाचार प्रचार के लिए अच्छी बात है।

H. जो शीर्षक "बलवान" और "निर्बल पौलुस इन दोनों समूहों को देता है, वह उन्हें हमारे प्रति द्वेष से भरता है निश्चय ही पौलुस का उद्देश्य यह नहीं था। दोनों ही समूह सच्चे विश्वासी थे हमें अन्य विश्वासियों को फुसलाकर अपने में शामिल करने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। हम मसीह में एक दूसरे को स्वीकार करते हैं।

I. संपूर्ण तर्क वितर्क की रूपरेखा इस प्रकार बनाई जा सकती है :
   1. एक दूसरे को ग्रहण करना क्योंकि मसीह में परमेश्वर हमें ग्रहण करता है (रोमि. 15; 14:1,3; 15:7)
   2. एक दूसरे पर दोष ना लगाओ क्योंकि मसीह हमारा स्वामी और न्यायी है (रोमि. 14:3-12)
   3. व्यक्तिगत स्वतंत्रता से प्रेम अधिक महत्वपूर्ण है (रोमि. 14:13-23)
   4. मसीह के आदर्श पर चलें और दूसरों की भलाई व उन्नति के लिए अपने स्वतंत्रता एवं अधिकारों का बलिदान करें। (रोमि. 15:1-13)।

Copyright © 2014 Bible Lessons International

▪ **"यदि"** व्याकरण देखें तो यह वाक्यांश शर्त नहीं है। न्यू जेरूसलेम बाइबल में इस प्रकार दिया गया है, "इनसे दूर रहो, तो तुम सही करोगे।"

▪ **"आगे शुभ"** या "अलविदा" यह किसी बात को समाप्त करने और स्वस्थ रहने की शुभकामना करने का सामान्य तरीका है।

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 15:30-35
30फिर वे विदा होकर अन्ताकिया पहुँचे, और सभा को इकट्ठी करके वह पत्री उन्हें दे दी। 31वे पत्री पढ़कर उस उपदेश की बात से अति आनन्दित हुए। 32यहूदा और सीलास ने जो आप भी भविष्यद्वक्ता थे, बहुत बातों से भाइयों को उपदेश देकर स्थिर किया। 33वे कुछ दिन रहकर, भाइयों से शान्ति के साथ विदा हुए कि अपने भेजनेवालों के पास जाएँ। 34(परन्तु सीलास को वहाँ रहना अच्छा लगा)। 35परन्तु पौलुस और बरनबास अन्ताकिया में रह गये: और अन्य बहुत से लोगों के साथ प्रभु के वचन का उपदेश करते और सुसमाचार सुनाते रहे।

15:30 "सभा इकट्ठी करके वह पत्री उन्हें दी" यह मण्डली की एक और सभा थी। यह कलीसिया के महत्व को प्रकट करता है।

15:31 इस दूसरी कलीसिया ने अर्थात् अन्ताकिया की अन्यजाति कलीसिया ने, इन आवश्यक बातों को नकारात्मक रूप से नहीं लिया अथवा प्रतिबन्ध व पाबन्दी नहीं समझा। वह आनन्दित हुई।

15:32 यह पद नए नियम की भविष्यद्वाणी पर भरोसे को दर्शाता है। यह मुख्य रूप से सुसमाचार का प्रचार और उसे जीवनों पर लागू किया जाना था; संभवतः यह लम्बा उपदेश था। देखें, प्रेरि. 11:27 में विशेष विषय: नए नियम की भविष्यवाणी।

15:33 ''शान्ति के साथ'' स्पष्ट अर्थ समझने के लिए एन के जे वी अथवा एन आर एस वी (NRSV) (NKJV) अनुवाद पढ़ें, क्योंकि एन ए एस बी (NASB) अनुवाद अस्पष्ट है। संभवतः यह इब्रानी भाषा के शब्द शालोम को दर्शाता है जो विदा होने के समय इस्तेमाल किया जाता था (अर्थात् ''शान्ति'' बी डी बी BDB1022)। यह पद यरूशलेम की कलीसिया की ओर से पूरा सहायोग देने को भी दर्शाता है।

15:34 यह पद यूनानी पाण्डूलिपि P[74],א , A, B, E और वुल्गाता के लैटिन अनुवाद में शामिल नहीं किया गया है। NRSV, TEV, NJB तथा NIV अनुवादों में भी इस पद को नहीं लिखा गया है। अन्य यूनानी मूलपाठों में जैसे सी और डी (C and D) यह शब्द सुधार करके लिखा गया है। संभवतः यह पद मूल रूप से प्रेरितों के काम पुस्तक का भाग नहीं था। यू बी एस[4] (UBS[4]) इस पद को शामिल न करने का समर्थन करता है ए (A)।

15:35 यह पद दर्शाता है कि प्रथम शताब्दी के बहुत से प्रचारकों, शिक्षकों और अगुवों की हम जैसे आधुनिक लोगों को जानकारी बिल्कुल नहीं है। नए नियम ने कुछ ही चुने हुए गवाहों और प्रेरितों का उल्लेख किया है, शेष प्रचारकों, मिश्नरियों और प्रेरितों को छोड़ दिया है। परमेश्वर जानता है कि प्रेरितों के काम नामक यह पुस्तक जीवनियाँ प्रस्तुत करने में रुचि नहीं रखती है।

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 15:36-41
[36]कुछ दिन बाद पौलुस ने बरनबास से कहा, ''जिन जिन नगरों में हम ने प्रभु का वचन सुनाया था, आओ, फिर उनमें चलकर अपने भाइयों को देखें कि वे कैसे हैं।'' [37]तब बरनबास ने यूहन्ना को जो मरकुस कहलाता है, साथ लेने का विचार किया। [38]परन्तु पौलुस ने उसे जो पंफूलिया में उनसे अलग हो गया था, और काम पर उनके साथ न गया, साथ ले जाना अच्छा न समझा। [39]अतः ऐसा विवाद उठा कि वे एक दूसरे से अलग हो गए; और बरनबास, मरकुस को लेकर जहाज पर साइप्रस चला गया। [40]परन्तु पौलुस ने सीलास को चुन लिया, और भाइयों से परमेश्वर के अनुग्रह में सौंपा जाकर वहाँ से चला गया; [41]और वह कलीसियाओं को स्थिर करता हुआ सीरिया और किलिकिया से होते हुए निकला।

15:36 ''आओ वापस चलें'' यह पौलुस और बरनबास की योजना थी कि जो नई कलीसियाएँ उनकी प्रथम मिशनरी यात्रा के दौरान स्थापित हुईं थीं, वहाँ जाएँ और भाइयों को आत्मिक शिक्षा में बलवन्त बनाएँ। ध्यान दीजिए कि जिस प्रकार से प्रथम मिशनरी यात्रा पर जाते समय उन्हें ईश्वरीय प्रकाशन प्राप्त हुआ था, इस बार प्राप्त नहीं हुआ (देखें, प्रेरि. 13:2)।

15:38 ''पौलुस जिद्द करता रहा'' स्पष्ट रूप से पौलुस मरकुस को साथ न ले जाने पर बल देता रहा होगा क्योंकि वह यात्रा छोड़कर लौट गया था; वह क्यों लौट गया था?

- **"जिन्होंने उन्हें छोड़ दिया था"** बिल्कुल इसलिए कि युहन्ना मरकुस ने पहला मिशन छोड़ दिया अनिश्चित है (प्रेरितों 13:13)।

15:39 "अतः ऐसा विवाद उठा कि वे एक दूसरे से अलग हो गए" यह विवाद बहुत तीव्र था। यहाँ पर जो यूनानी शब्द प्रयुक्त हुआ उसका अर्थ है "ब्लेड की धार की तरह तीव्र"। यह शब्द इब्रा. 10:24 में सकारात्मक अर्थों में प्रयुक्त हुआ है। यही क्रिया शब्द प्रेरि. 17:6 और 1 कुरि. 13:5 में भी प्रयुक्त हुआ। उनमें वास्तव में बहुत गम्भीर विवाद हो गया था।

- **"और बरनबास मरकुस को लेकर साइप्रस चला गया"** इस प्रकार अब दो मिशनरी दल बन गए।

15:40 "पौलुस ने सीलास को चुन लिया" यरूशलेम की कलीसिया के इस अगुवे को पौलुस ने चुन लिया।

- **"भाइयों से परमेश्वर के अनुग्रह में सौंपा जाकर"** शायद उनके लिए समर्पण की प्रार्थना सभा का आयोजन किया होगा (देखें, प्रेरि. 6:6; 13:3; 14:26; 20:32)। यह चुने हुए समूह की ओर नहीं परन्तु संपूर्ण कलीसिया की ओर संकेत करता है।

15:41 "किलिकिया" ये कलीसियाएँ किस प्रकार स्थापित हुईं, कहना कठिन है। संभवतः ये कलीसियाएँ स्वयं पौलुस द्वारा स्थापित की गई होंगी जबकि पौलुस तरसुस में रह रहा था। किलिकिया उसकी जन्मभूमि था।

- **"कलीसियाओं को स्थिर करता हुआ"** देखें प्रेरि. 5:11 में विशेष टिप्पणी।

विचार विमर्श के लिये प्रश्न

यह अध्ययन में मार्गदर्शन करने की टीका है, इसका अर्थ है कि आप बाइबल की अपनी व्याख्या करने के स्वयं ही जिम्मेदार हैं। हम में से प्रत्येक को उसी ज्ञान के अनुसार चलना चाहिए जो हमारे पास है। व्याख्या करने के कार्य में आप आपकी बाइबल और पवित्र आत्मा केन्द्रिय स्थान रखते हैं। यह कार्य व्याख्याकार पर न छोड़ दें।

निम्नलिखित प्रश्न अपनी सहायता के लिए दिए गए हैं ताकि आप पुस्तक के गम्भीर विषयों पर पुनर्विचार कर सकें। वे आपके विचारों को आन्दोलित करने के लिए हैं, इनके अलावा और भी प्रश्न हो सकते हैं:

1. यह अध्याय क्यों महत्वपूर्ण है?
2. यहूदी वादी-मसीही कौन थे?
3. याकूब के विचार को क्यों मान्यता दी गई?
4. प्राचीन कौन थे?
5. पद 28-29 के प्रतिबन्ध क्या उद्धार की ओर संकेत करते हैं अथवा सहभागिता की ओर?

Copyright © 2013 Bible Lesson International

प्रेरितों के काम-16
बाइबल के विभिन्न आधुनिक अनुवादों में पैराग्राफ-विभाजन

UBS4	NKJV	NRSV	TEV	NJB
पौलुस और सीलास के साथ तीमुथियुस	तीमुथियुस पौलुस और सीलास के साथ	तीमुथियुस पौलुस से जुड़ता है	तीमुथियुस पौलुस और सीलास के साथ जाता है	लुकिनिया:पौलुस ने तिमोथी को नियुक्त किया
				15:41-16:3
16:1-5	16:1-5	16:1-5	16:1-5	16:4 16:5
मैसीडोनिया के एक पुरुष का पौलुस को दर्शन	मैसीडोनिया की बुलाहट	एशिया माइनर से त्रोआस	त्रोआस में:पौलुस का दर्शन	एशिया माइनर से गुजरना
16:6-10	16:6-10	16:6-10	16:6-10	16-6-8 16:9-10
लुदिया का हृदय-परिवर्तन	लुदिया का फिलिप्पी में बपतिस्मा	फिलिप्पी में पौलुस और सीलास	फिलिप्पी में: लुदिया का हृदय परिवर्तन	फिलिप्पी में आगमन
16:11-15	16:11-15	16:11-15	16:11-15	16:11-15
फिलिप्पी में बन्दी बनाया जाना	पौलुस और सीलास बन्दीगृह में		फिलिप्पी के बन्दीगृह में	पौलुस और सीलास की गिरफ्तारी
16:16-24	16:16-24	16:16-18 16:19-24	16:16-22a 16:22b-24	16:16-18 16:19-24
	फिलिप्पीयन दरोगा का उद्धार			पौलुस और सीलास का अद्भुत छुटकारा
16:25-34	16:25-34	16:25-34	16:25-38 16:29-30 16:31-34	16:25-38 16:29-34
	चुपके से जाने पर पौलुस का इंकार			
16:35-40	16:35-40	16:35-40	16:35 16-36 16:37 16:38-40	16:35-37 16:38-40

पठन चक्र तीसरा (''अच्छे बाइबल अध्ययन का मार्गदर्शन'' से)

पैराग्राफ स्तर पर मूल लेखक के अभिप्राय को समझना

यह अध्ययन करने की मार्गदर्शक टीका है, जिसका अर्थ है कि आप अपनी बाइबल-व्याख्या के स्वयं उत्तरदायी हैं। हम में से प्रत्येक को अपने ज्ञान व समझ के अनुसार कार्य करना चाहिए। व्याख्या-प्रक्रिया में आप, आपकी बाइबल तथा पवित्र आत्मा प्राथमिक स्थान रखते हैं। आपको यह टीका कार्य टीकाकार पर नहीं छोड़ना चाहिए।

पूरा अध्याय एक बैठक में पढ़ें। विषयों को पहचानें। अपने विषय-विभाजन की तुलना उपरोक्त पाँच आधुनिक अनुवादों के विषय-विभाजन से करें। पैराग्राफों का विभाजन प्रेरणा प्राप्त नहीं होता है, परन्तु यह मूल लेखक के अभिप्राय को समझने की कुंजी है, जो कि व्याख्या करने का आधार है। प्रत्येक पैराग्राफ में केवल एक ही मूल विषय होता है:

1. पहला पैराग्राफ
2. दूसरा पैराग्राफ
3. तीसरा पैराग्राफ
4. अन्य

प्रेरि. 15:36-16:40 के संदर्भ की जानकारी

I. दूसरी मिश्नरी यात्रा (प्रेरि. 15:36-18:23)
   A. इस यात्रा ने पहली यात्रा की अपेक्षा अधिक समय लिया, संभवतः 3-4 वर्ष।
   B. विशेष रूप से इस यात्रा का ध्यान मैसीडोनिया और अखाया में केन्द्रित रहा, जो आजकल ग्रीस कहलाता है।
   C. संक्षिप्त रूपरेखाः-
      1. बरनबास और पौलुस का अलग अलग होना, प्रेरि. 15:36-40 (यूहन्ना मरकुस को लेकर झगड़ा)
      2. सीरिया और किलकिया, प्रेरि. 15:41 (ये कलीसियाएं कब और कैसे स्थापित हुईं, अनिश्चित है)
      3. लुस्त्रा और दिरबे, प्रेरि. 16:1-5 (तीमुथियुस टीम में शामिल होता है)
      4. त्रोआस, प्रेरि. 16:6-10 (पौलुस पश्चिम की ओर जाने का दर्शन पाता है)
      5. फिलिप्पी, प्रेरि. 16:11-40
      6. थिस्सलुनिके, प्रेरि. 17:1-9
      7. बिरीया, प्रेरि. 17:10-14
      8. एथेन्स, प्रेरि. 17:15-34
      9. कुरिन्थ, प्रेरि. 18:1-17
      10. वापस सीरिया के अन्ताकिया लौटना, प्रेरि. 18:18-22

पौलुस के सहकर्मी

A. यूहन्ना मरकुस: (यूहन्ना एक यहूदी नाम है, मरकुस रोमी नाम है, प्रेरि. 12:25)
   1. वह यरूशलेम में पला-बढ़ा। उसकी माँ का घर प्रेरि. 12:12 में यरूशलेम की कलीसिया का प्रार्थना-घर कहलाता है।
   2. अनेक विद्वानों का मत है कि उसका घर प्रभु-भोज का स्थान था तथा मर. 14:51-52 का नंगा पुरुष स्वयं मरकुस ही था। दोनों बातें सही हो सकती हैं, परन्तु यह मात्रा अनुमान है।
   3. वह बरनबास का सौतेला भाई था (देखें कुलु. 4:10)

4. वह बरनबास और पौलुस का सेवक था (देखें प्रेरि. 13:5)
5. वह टीम को छोड़कर यरूशलेम लौट गया था (देखें, प्रेरि. 13:13)
6. बरनबास उसे दूसरी मिश्नरी यात्रा में साथ ले जाना चाहता था, परन्तु पौलुस ने उसे ले जाने से स्पष्ट इंकार किया (देखें, प्रेरि. 15:36-41)।
7. बाद में पौलुस और यूहन्ना मरकुस में मेल मिलाप हो गया (देखें, 2 तीमु. 4:11; फिले. 24)।
8. स्पष्ट रूप से वह पतरस का घनिष्ठ मित्र बन गया था (देखें, 1 पत. 5:13)
9. परम्परा के अनुसार उसने सुसमाचार लिखा जो उसके नाम पर मरकुस रचित सुसमाचार कहलाता है जो पतरस के उपदेशों पर आधारित है जो उसने रोम में दिए थे। मरकुस रचित सुसमाचार में नए नियम की अन्य पुस्तकों की अपेक्षा बहुत अधिक लैटिन भाषा के शब्द पाए जाते हैं और यह सुसमाचार रोमी लोगों के लिए लिखा गया। यह हियरापुलिस का पेपियास मानता था और यूसेवियुस इसकी पृष्टि करता है (3.39.15)।
10. परम्परा के अनुसार सिकन्दरिया की कलीसिया की स्थापना में मरकुस का सहयोग था।

B. सीलास
1. प्रेरितों के काम पुस्तक में वह सीलास तथा पत्रियों में सिलवानुस कहलाता है।
2. बरनबास की तरह वह भी यरूशलेम की कलीसिया का एक लीडर था (देखे, प्रेरि. 15:22-23)।
3. वह पौलुस के साथ घनिष्ठ संबंध रखता था (देखें, प्रेरि. 15:40; 16:19 क्रमश; 17:1-15; 1 थिस्स. 1:1)
4. पौलुस और बरनबास की तरह वह एक नबी था (देखें, प्रेरि. 15:32)।
5. वह प्रेरित कहलाता था (देखें थिस्स. 2:6)
6. पौलुस की तरह वह भी रोमी नागरिक था (देखें, प्रेरि. 16:37-38)
7. यूहन्ना मरकुस की तरह वह भी पतरस के साथ घनिष्ठ संबंध रखता था, यह भी संभव है वह उसके साथ शास्त्री के समान कार्य करता था (देखें, 1पत. 5:12)।

C. तीमुथियुस -
1. उसके नाम का अर्थ है “परमेश्वर का आदर करने वाला।”
2. उसकी माँ यहूदी थी परन्तु पिता यूनानी था, और वह लुस्त्रा निवासी था। ओरिगेन कमेन्ट्री का लैटिन अनुवाद रोमियों 16:21 पर टिप्पणी करते हुए बताता है कि तीमुथियुस दिरबे का नागरिक था। संभवतः प्रेरि. 20:4 के आधार पर ऐसा कहा गया था कि वह दिरबे का निवासी था। यहूदी विश्वास की शिक्षा उसे उसकी माँ तथा नानी से मिली थी (देखें 2 तीमु. 1:5; 3:14-15)।
3. दूसरी मिश्नरी यात्रा के अवसर पर उससे कहा गया कि वह पौलुस और सीलास के संग हो ले (देखें, प्रेरि. 16:1-5)। नबूवत द्वारा उसे वरदान प्राप्त हुआ था (देखें, 1 तीमु. 1:18; 4:14)।
4. पौलुस ने उसका खतना करवाया था ताकि वह यहूदियों और यूनानियों दोनों में सेवा कर सके।
5. वह पौलुस का एक समर्पित सेवक और सहकर्मी था। पौलुस के अन्य सहकर्मियों की अपेक्षा उसका नाम लेकर सबसे ज्यादा उसे सम्बोधित किया गया (10 पत्रियों में 17 बार उसका नाम लिया गया, देखें 1 कुरि. 4:17; 16:10; फिलि. 1:1; 2:19; कुलु. 1:5; 1 थिस्स. 1:1; 2:6; 3:2; 1 तीमु. 1:2, 18; 4:14; 2 तीमु. 1:2; 3:14-15)।
6. उसे “प्रेरित” कहकर सम्बोधित किया गया (देखें, 1थिस्स. 2:6)।
7. तीन पास्तरीय पत्रों में, दो उसे सम्बोधित की गईं।
8. इब्रा. 13:23 में अन्तिम बार उसका उल्लेख हुआ।

शब्दों और वाक्यांशों का अध्ययन

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 16:1-5

[1]फिर वह दिरबे और लुस्त्रा में भी गया। वहाँ तीमुथियुस नाम का एक चेला था, जो किसी विश्वासी यहूदिनी का पुत्र था, परन्तु उसका पिता यूनानी था। [2]वह लुस्त्रा और इकुनियुम के भाइयों में सुनाम था। [3]पौलुस की इच्छा थी कि वह उसके साथ चले; और जो यहूदी लोग उन जगाहों में थे उनके कारण उसने उसका खतना किया, क्योंकि वे सब जानते थे, कि उसका पिता यूनानी था। [4]और नगर नगर जाते हुए वे उन विधियों को जो यरूशलेम के प्रेरितों और प्राचीनों ने ठहराई थीं, मानने के लिये उन्हें पहुँचाते जाते थे। [5]इस प्रकार कलीसियाएँ विश्वास में स्थिर होती गईं और संख्या में प्रतिदिन बढ़ती गईं।

16:1 ''दिरबे और लुस्त्रा में भी गया'' ये नगर रोमी प्रान्त गलातिया (वर्तमान टर्की) के दक्षिणी भाग में स्थित थे। अपनी प्रथम मिश्नरी यात्रा के दौरान पौलुस इन स्थानों में आया था (प्रेरि. 16:14)।

▪ **''वहाँ एक चेला था''** यह वाक्यांश लिखने में पौलुस (*idou*) शब्द का प्रयोग करता है। यह किसी बात पर बल देने का एक तरीका था। पौलुस की सेवकाई में तीमुथियुस एक महत्वपूर्ण सहकर्मी बनने वाला था।

▪ **''विश्वासी यहूदिनी का पुत्र था, परन्तु उसका पिता यूनानी था''** 2 तीमु. 1:5 से हमें पता चलता है कि उसकी नानी का नाम लोइस था जो यहूदियों में से विश्वासी बनी थी; और उसकी माता का नाम यूनीके था। संभवतः उसकी माँ और नानी दोनों पौलुस की प्रथम मिश्नरी यात्रा के दौरान मसीही बने थे।

16:2 ''वह सुनाम था'' यह अपूर्ण कालीन क्रिया है। लोग बार-बार तीमुथियुस के भले होने की चर्चा किया करते थे। कलीसिया के अगुवे की एक विशेषता यह थी कि वह कलीसिया के बाहर के लोगों में भी सुनामी हो और दोषरहित हो (देखें, 1 तुीम. 3:2,7,10)।

▪ **''लुस्त्रा में''** लुस्त्रा तीमुथियुस का जन्मस्थान था, लेकिन प्रेरि. 20:4 की कुछ यूनानी हस्तलिपियाँ (तथा ओरिगेन के लेख) उसका जन्मस्थान दिरबे मानती हैं।

16:3 ''पौलुस की इच्छा थी कि वह आदमी उसके साथ चले'' ध्यान दें कि पौलुस तीमुथियुस को बुलाता है। यह केवल तीमुथियसु ही का चुनाव करना नहीं था (देखें, 1 तीमु. 3:1)। एक प्रकार से तीमुथियुस पौलुस का प्रेरितिक प्रतिनिधि बनता है।

▪ **''उसने उसका खतना किया''** पौलुस चाहता था कि वह यहूदियों के साथ सेवा करने योग्य होवे (देखें, 1 कुरि. 9:20; प्रेरि. 15:27-29)। यह यहूदीवादियों के साथ समझौता करना नहीं था

1. जो यरूशलेम की सभा का परिणाम हो (प्रेरि. 16:15)
2. उसने तीतुस का खतना कराने से इंकार किया था (गला. 2:3)

पौलुस के इस खतना करने के कार्य ने सचमुच में हमें उलझन में डाल दिया है, परन्तु फिर भी पौलुस का ये कथन कि ''मैं सब मनुष्यों के लिए सब कुछ बना'' लोगों को और उनके उद्धार को प्राथमिक बनाता है (देखें, 1 कुरि. 9:19-23)।

▪ **''उसका पिता यूनानी था''** यह अपूर्ण कालीन क्रिया बताती है कि उसका पिता मर चुका था।

16:4 पौलुस और सीलास उन निर्णयों को जो यरूशलेम की सभा में लिए गये थे (देखें, प्रेरि. 15:22-29), लोगों से उनका पालन करने के लिए कहते थे। स्मरण रखें कि जो आवश्यक बातें वे बताया करते थे, उसके निम्न दो उद्देश्य थे:

1. कलीसिया के अन्दर अच्छी सहभगिता रहे
2. यहूदियों में सुसमाचार प्रचार हो (जैसे तीमुथियुस का खतना)

16:5 यह लूका का एक और सारांश कथन है (देखें, प्रेरि. 6:7; 9:31; 12:24; 16:5; 19:20; 28:31)। पौलुस लोगों को सच्चे चेले बनाना चाहता था जो विश्वास में दृढ़ हों (देखें प्रेरि. 14:22; 15:36; 15:5)। बिना चेले बनाए सुसमाचार प्रचार करना, महान आज्ञा का उल्लंघन होता है (मत्ती 28:18-20) जिसका परिणाम आध्यात्मिक भ्रूण हत्या है।

- "कलीसियाएँ" प्रेरि. 5:11 में विशेष टिप्पणी देखें।

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 16:6-10
[6]वे फ्रूगिया और गलातिया प्रदेशों में से होकर गए, क्योंकि पवित्र आत्मा ने उन्हें एशिया में वचन सुनाने से मना किया। [7]उन्होंने मूसिया के निकट पहुंचकर, बितूनिया में जाना चाहा; परन्तु यीशु के आत्मा ने उन्हें जाने न दिया। [8]अतः वे मूसिया से होकर त्रोआस में आए। [9]वहाँ पौलुस ने रात को एक दर्शन देखा कि एक मकिदुनी पुरुष खड़ा हुआ उससे विनती करके कह रहा है, "पार उतरकर मकिदुनिया में आ, और हमारी सहायता कर।" [10]उसके यह दर्शन देखते ही हम ने तुरन्त मकिदुनिया जाना चाहा, यह समझकर कि परमेश्वर ने हमें उन्हें सुसमाचार सुनाने के लिये बुलाया है।

16:6 "फ्रूगिया और गलातिया प्रदेशों में से होकर गए" इस पद में लूका रोमी राजनैतिक विभाजन अथवा प्रान्तों से अधिक जातियों के भाषा संबंधी समूहों के बारे में बातें करता है, जो इन गैर यहूदी समूहों की गैरकानूनी सीमाओं की ओर संकेत करता है।

- **"मना किया गया है"** यह सप्तूजैन्त और नया नियम में सामान्य बात है। पवित्र आत्मा आरम्भिक कलीसिया के कार्यों और निर्णयों में प्रेमपूर्वक सम्भागी होता था (देखें, प्रेरि. 2:4; 8:29, 39; 10:19; 11:12, 28; 15:28; 16:6,7; 21:4; रोमि. 1:13)। आधुनिक कलीसिया ने, आरम्भिक कलीसिया की उस सामर्थ को आज खो दिया है।

- **"एशिया में"** यह रोमी प्रान्त एशिया माइनर की ओर संकेत करता है जो वर्तमान टर्की देश की पश्चिम दिशा में है।

16:6, 7 "पवित्र आत्मा... यीशु का आत्मा" पवित्र आत्मा के व्यक्तित्व के विषय में प्रेरि. 1:2 में विशेष विषय नीचे देखें:

विशेष विषय: यीशु और पवित्र आत्मा

प्रेरितों के काम16:8-14 और गलातियों 4 यीशु के पुत्र और पवित्र आत्मा के बीच घनिष्ठ संबंध का वर्णन करते हैं। इस नए युग में आत्मा का कार्य यीशु को बढ़ाना और सहन करना है (युहन्ना 16: 13-15)

A. यीशु पिता से पूछता है और वह आत्मा भेजता है
   1. यीशु ने आत्मा को युहन्ना 14:16 में भेजा; 15:26; 16: 7
   2. पिता यूहन्ना 14:26 में आत्मा भेजता है
   3. लूका 24:49 में पिता और पुत्र दोनों से
   4. यीशु ने पिता के साथ अपनी एकता की बात करते हैं, इसलिए आत्मा उन दोनों के साथ अपनी एकता को बताती है
B. "उसी तरह का एक और।" आत्मा के लिए सबसे अच्छा नाम "अन्य यीशु" (जी कैम्पबेल मॉर्गन) है (G.

Campbell Morgan)

1. दोनों पिता से "भेजे गए"
   a. पुत्र - गल 4: 4
   b. आत्मा - गल। 4: 6
2. दोनों ने "सत्य" कहा
   a. पुत्र - यूहन्ना 14: 6
   b. आत्मा - युहन्ना 14:17; 15:26; 16:13
3. दोनों को "पैरासेलेट" कहा जाता है (यानी, वकील)
   a. पुत्र - 1 यूहन्ना 2 :1
   b. आत्मा -यूहन्ना14:16, 26; 15:26; 16: 7
4. यीशु के नाम से पुकारने वाली आत्मा (NASB)
   a. प्रेरितों के काम 16: 7 - "यीशु की आत्मा"
   b. रोम 8: 9 - "परमेश्वर की आत्मा...मसीह की आत्मा।"
   c. कोर। 3:17 - "प्रभु आत्मा है... प्रभु की आत्मा।"
   d. 2 कोर। 3:18 - "प्रभु, आत्मा"
   e. गल 4: 6 - "उनके बेटे की आत्मा"
   f. फिल 1:19 - "यीशु मसीह की आत्मा"
   g. 1 पतरस 1:11 - "मसीह की आत्मा"
5. दोनों अंतर्निवास विश्वासी (पिता के रूप में)
   a. बेटा - मत्ती 28:20; युहन्ना 14:20, 23; 15: 4; 17:23; रोम 8:10; 2 कोर 13:5; गला 2:20; इफिसियों 3:17, कुलु 1:27
   b. आत्मा - युहन्ना 14: 16-17; रोम 8: 9,11; 1 कोर 3:16; 06:19; 2 तिमोथी 1:14 1 पतरस 1:11
   c. पिता - युहन्ना 14:23; 17:23; 2 कोर 6:16
6. दोनों को "पवित्र" बताया गया
   a. आत्मा - मत्ती 1:18, लूका 1:35
   b. पुत्र - मरकुस 1:24; लूका 1:35; 4:34; प्रेरितों 3:14; 4:27,30

विशेष विषय: त्रिएकता
विशेष विषय : आत्मा का व्यक्तित्व
विशेष विषय : नए नियम में आत्मा

Copyright © 2014 Bible Lessons International

16:7 "मूसिया" यह रोमी प्रान्त एशिया माइनर की उत्तर-पश्चिम दिशा में गैर-यहूदी क्षेत्र था। यह पर्वतीय इलाका था और बहुत सी रोमी बड़ी सड़कें यहाँ थीं। इसके मुख्य शहर त्रोआस, अस्सोस और पिरगामुम थे।

▪ **"बितूनिया"** यह क्षेत्र भी एशिया माइनर की उत्तर-पश्चिम दिशा में था परन्तु मूसिया की उत्तर-पूर्वी दिशा में था। लूका के दिनों में यह रोमी प्रान्त नहीं था, परन्तु पुन्तुस के साथ जुड़ा एक राजनीतिक यूनिट था। बाद में पतरस ने यहाँ सुसमाचार प्रचार किया (देखें, 1 पत. 1:1)। फिलो बताता है कि यहाँ पर बहुत सी यहूदी बस्तियाँ थीं।

16:8 "वे मूसिया से होकर" यहाँ पर इसका अर्थ यह हो सकता है कि मूसिया में चक्कर लगाते हुए (BAGD 625)। याद रखें कि संदर्भ पढ़ते समय अर्थ समझा जा सकता है, शब्द कोष द्वारा नहीं।

▪ **"त्रोआस"** यह नगर प्राचीन द्रोय नगर से चार मील दूर था। इसकी स्थापना 400 वर्ष पहले हो गई थी और रोमी प्रान्त बनने से पहले यह स्वतन्त्र यूनानी नगर था। मूसिया से मकिदुनिया जाने का यह नियमित बन्दगाह था।

16:9 "पौलुस ने एक दर्शन देखा" परमेश्वर ने अनेक बार पौलुस की अलौकिक रूप से अगुवाई की थी

1. अद्भुत ज्योति देखना और यीशु की वाणी उसने सुनी, प्रेरि. 9:3-4
2. दर्शन, प्रेरि. 9:10
3. दर्शन, प्रेरि. 16:9,10
4. दर्शन, प्रेरि. 18:9
5. बे सुध हो जाना, प्रेरि. 22:17
6. स्वर्गदूत का उसके पास आना, प्रेरि. 27:23

▪ **"एक मकिदुनी पुरुष"** पौलुस को यह कैसे पता चला कि वह पुरुष मकिदूनी था? यह अज्ञात बात है। संभव है दर्शन में यह शब्द बोला गया हो या कपड़े, आभूषण आदि देखकर उसने पहचाना हो कि यह मकिदुनी पुरुष है। कुछ टीकाकार सोचते हैं, यह व्यक्ति लूका था (प्रेरि. 16:10)।
दर्शन देखते ही तुरन्त मकिदुनिया जाने का निर्णय लेना एक बहुत बड़ा भौगोलिक निर्णय था। सुसमाचार यूरोप की तरफ मुड़ता है।

▪ **"आ, हमारी... सहायता कर"** यह दर्शन स्पष्ट और प्रभावपूर्ण था, उससे स्पष्ट कहा गया कि वह आए और सहायता करे।

16:10 "हम" इस पुस्तक में कई बार "हम" शब्द का प्रयोग किया गया है, यहाँ पर पहली बार प्रयुक्त हुआ। यह संकेत देता है कि पौलुस, सीलास और तीमुथियुस के साथ यात्रा में लूका भी शामिल है (देखें, प्रेरि. 16:10-17; 20:5-15; 21:1-18; 27:1-28:16)। कुछ विद्वान टीकाकार सोचते हैं, प्रेरि. 16:9 में जिस पुरुष को पौलुस ने दर्शन में देखा, वह लूका था, जो अन्य जाति वैद्य और प्रेरितों के काम पुस्तक का लेखक है।

▪ **"मकिदुनिया"** वर्तमान ग्रीस देश दो रोमी प्रान्तों में बँटा हुआ था:

1. दक्षिण में अखाया (जिसमें एथेन्स, कुरिन्थ और स्पार्टा थे)
2. मकिदुनिया उत्तर में था (इसमें फिलिप्पी, थिस्सलुनिका और बिरिया थे)

▪ **"यह समझ कर"** यह यूनानी शब्द "सम्बीबाजों" (*sumbibazō*) है जिसका शाब्दिक अर्थ है एक साथ रखना अथवा आपस में एक कर देना। यहाँ पर इसका अर्थ है कि जो कुछ भी हुआ वह परमेश्वर की अगुवाई में हुआ ताकि वे मकिदुनिया जाएँ।

1. पवित्र आत्मा ने उन्हें एशिया में प्रचार करने को मना किया (देखें, प्रेरि. 16:6)
2. यीशु के आत्मा ने उन्हें बितूनिया में न जाने दिया (देखें, पद 7)
3. फिर उन्होंने दर्शन देखा, प्रेरि. 16:9

▪ **"परमेश्वर ने बुलाया है"** पवित्र आत्मा की अगुवाई में जो कुछ उनसे कहा गया था, मना किया गया था, वह उनकी सुरक्षा के लिये नहीं था, परन्तु सुसमाचार प्रचार के लिये था। सुसमाचार प्रचार करना सदैव ही परमेश्वर की इच्छा है।

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 16:11-15
11इसलिये त्रोआस से जहाज खोलकर हम सीधे सुमात्राके और दूसरे दिन नियापुलिस में आए। 12वहाँ से
हम फिलिप्पी पहुँचे, जो मकिदुनिया प्रान्त का मुख्य नगर और रोमियों की बस्ती है; और हम उस नगर में
कुछ दिन तक रहे। 13सब्त के दिन हम नगर के फाटक के बाहर नदी के किनारे यह समझकर गए कि

वहाँ प्रार्थना करने का स्थान होगा, और बैठकर उन स्त्रियों से जो इकट्ठी हुई थीं, बातें करने लगे। [14]लुदिया नामक थुआथीरा नगर की बैंजनी कपड़े बेचने वाली एक भक्त स्त्री सुन रही थी। प्रभु ने उसका मन खोला कि वह पौलुस की बातों पर चित्त लगाए। [15]जब उसने अपने घराने समेंत बपतिस्मा लिया, तो उसने हम से विनती की, ''यदि तुम मुझे प्रभु की विश्वासिनी समझते हो, तो चलकर मेरे घर में रहो,'' और वह हमें मनाकर ले गई।

16:11 ''सीधे कार्यवाही'' अनेक समुद्री शब्दों में से यह एक शब्द लूका ने प्रयोग किया है (देखें अध्याय 27)। उन्होंने जहाज का सीधा रास्ता अपनाया। लूका मार्गों से भली भाँति परिचित था अथवा जहाज चलाने वालों से अच्छी तरह बातचीत की।

▪ **''सुमात्रा के''** यह एक छोटा सा पहाड़ी टापू था, जो एजियन सागर तट से 5000 फुट की ऊंचाई पर था। यह त्रोआस और फिलिप्पी के मध्य थोड़ी सी दूरी पर था।

▪ **''नियापुलिस''** यह एक नया नगर था। इस नाम के बहुत से नगर मैडीटेरियन समुद्री तट पर थे। यह नगर फिलिप्पी का बन्दरगाह था जो लगभग 10 मील दूर था। यहाँ से इग्नेशियन मार्ग, जो रोमी लोगों की सबसे बड़ी सड़क थी, पश्चिम की ओर जाती थी और पूर्वी दिशा में समाप्त होती थी।

16:12 ''फिलिप्पी'' यह रोमियों की प्रसिद्ध सड़क इग्नेशियन हाईवे पर स्थित नगर था। यूनानी भाषा में यह नाम बहुवचन में है जो बताता है कि अनेक नगरों को एक करके इसे बसाया गया था। मूल रूप से यह कुओं का नगर कहलाता था। यहाँ पर सोना पाया जाता था इसलिए मकिदुनिया के फिलिप द्वितीय ने इस नगर पर अधिकार करके इसे अपने नाम से बसाया था। विभिन्न अनुवादों में यह पद इस प्रकार है:

NASB, NRSV	**''मकिदुनिया जिले का अग्रणी नगर''**
NKJV	**''मकिदुनिया का हिस्सा जो सबसे मुख्य था''**
TEV	**''मकिदुनिया जिले का प्रथम नगर**
NJB	**''उस जिले का मुख्य नगर''**

फिलिप्पी को मकिदुनिया का मुख्य नगर और रोमियों की बस्ती लूका ने क्यों कहा जबकि एम्पीपुलिस मकिदुनिया का मुख्य नगर था, इस संबंध में निश्चय से कुछ नहीं कहा जा सकता है। लूका का उद्देश्य क्या था, इस बारे में बड़ा मतभेद पाया जाता है। संभवतः लूका आदरभाव प्रकट करता है।

▪ ***''एक रोमियों की बस्ती''*** इस नगर के निकट 42 ई. पू. में आक्टावियन और मार्क एन्थौनी ने कैसियस और ब्रूटस को पराजित किया था। इसी विजय की यादगारी में आक्टावियन ने फिलिप्पी को रौमन कालोनी बनाया था और अपनी सेना वहाँ पर तैनात कर दीं। 31 ई. पू. में एन्थौनी और क्लोपैट्रा की अतीयूम में पराजय के बाद आक्टावियन ने और अधिक सेनाएँ वहाँ तैनात कर दीं। नए नियम में लिखित अन्य रोमी कालोनियों के नाम हैं: पिसिदिया का अन्ताकिया, लुस्त्रा, त्रोआस, कुरिन्थ और तोलमा। इन कालोनियों को इटली की कालोनियों के समान सारे सौभाग्य प्राप्त थे:

1. स्वयं की सरकार
2. कोई कर नहीं
3. पूर्ण स्वतन्त्रता

पौलुस ने अक्सर इन रोमी कालोनियों में सुसमाचार प्रचार किया और कलीसियाएँ स्थापित कीं।

16:13 ''सब्त के दिन'' स्पष्ट रूप से फिलिप्पियों में कोई भी आराधनालय नहीं था। रोमन कालोनी होने के कारण संभवतः यहाँ पर 10 यहूदी पुरुष नहीं थे, जो आराधनालय स्थापित करने की न्यूनतम शर्त थी। परन्तु परमेश्वर का

भय रखने वाले स्पष्टरूप से यहां पाए जाते थे (देखें, प्रेरि. 16:14; 13:43; 17:4; 17; 18:7)। यहूदी धर्म की नैतिकता और आचार व्यवहार से अनेक स्त्रियाँ प्रभावित थीं।

■ **"नदी के किनारे"** ऐसा प्रतीत होता है कि यह धार्मिक उपासना का सार्वजनिक स्थान था (देखें, योसेपस की, एन्टीक्वीटि ऑफ द ज्यूस 14.10.23) (*Antiquities of the Jews* 14.10.23)

■ **"और बैठकर"** यह रब्बियों द्वारा शिक्षा देने का प्रतीक है जो बैठकर उपदेश दिया करते थे, परन्तु जहां पौलुस था वह एक रोमी कालोनी थी इसलिए संभवतः इसका कोई महत्व नहीं था। यह मात्र एक आँखों देखी घटना का लूका द्वारा वर्णन है।

16:14 "लुदिया नामक स्त्री थुआथीरा नगर की" प्रथम शताब्दी के भूमध्य सागर की दुनियाँ में रोमी प्रान्त मकिदुनिया में स्त्रियों के लिए अन्य किसी स्थान की तुलना में अधिक सुअवसर प्राप्त थे। लुदिया एशिया माइनर के नगर की थी (देखें, प्रका. 2:17, क्रमशः) जो रेशमी व बैंजनी रंगे हुए वस्त्रों के लिए प्रसिद्ध था जिन्हें रोमी लोग बहुत पसन्द करते थे। उसी नगर में एक आराधनालय भी था। उसका नाम प्राचीन नगर लीडिया के नाम पर था जो वहीं स्थित था। उसका नाम पौलुस के किसी भी पत्र में दुबारा नहीं आया है, संभवतः वह मर गई हो।

■ **"परमेश्वर के भक्त"** यह ऐसे भक्त लोगों की ओर संकेत करता है जो यहूदीवाद से प्रभावित थे और उसमें रूचि रखते थे परन्तु उन्होंने धर्म-परिवर्तन नहीं किया था।

■ **"प्रभु ने उसका मन खोला"** बाइबल, परमेश्वर और मनुष्यों के परस्पर सम्बन्ध को वाचा कहती है। परमेश्वर इस वाचा में सदैव पहल करता है और संबंध स्थापित करता है तथा वाचा की शर्तों को निर्धारित करता है (प्रेरि. 2:47 के अन्तर्गत विशेष टिप्पणी देखें)। उद्धार एक वाचागत सम्बन्ध है। जब तक परमेश्वर पहल न करे तो कोई भी उद्धार नहीं पा सकता है (देखें, यूहन्ना 6:44, 65)। तौ भी परमेश्वर की इच्छा है कि सम्पूर्ण मानवजाति उद्धार पाए (देखें, यूहन्ना 3:16; 4:42; तीतुस 2:11; 1 तीमु. 2:4; 4:10; 2 पत. 3:9; 1 यूह. 2:1; 4:14); अतः इसका अर्थ है कि परमेश्वर अपने स्वभाव के अनुसार (स्वाभाविक प्रकाशन, देखें, भजन 19:1-6 अथवा विशेष प्रकाशन, देखें भजन 19:7-14) मनुष्य के पापों का सामना करता है (देखें, रोमियो 1-3 अध्याय)।

यह बड़े रहस्य की बात है कि कुछ उसकी बातों पर ध्यान देते हैं और कुछ लोग उस परमेश्वर की बातों पर ध्यान नहीं देते हैं। मैं इस बात को नहीं मानता कि परमेश्वर कुछ को चुन लेता है और कुछ को नहीं चुनता कि उद्धार पाएँ। सभी मनुष्य परमेश्वर के स्वरूप पर बनाए गये हैं (देखें, उत्प. 1:26-27) तथा परमेश्वर सभी मनुष्यों का उद्धार चाहता है (उत्प. 3:15)।

परमेश्वर क्यों सबका उद्धार चाहता है, संभव है हम यह जानना आवश्यक नहीं समझते हों, परन्तु हम विश्वासयोग्यता के साथ सुमाचार सुनाते हैं और उसे लोगों के मनों में अपना कार्य करने देते हैं (देखें, मत्ती 13:1-23)। पौलुस ने लुदिया को सुसमाचार सुनाया और उसने तथा उसके परिवार ने प्रत्युत्तर दिया।

16:15 "जब उसने अपने घराने समेत बपतिस्मा लिया" यह स्पष्ट रूप से लुदिया के परिवार, दास-दासियों और कर्मचारियों की ओर संकेत करता है (देखें, कुरनेलियुस, प्रेरि. 10:2;11:4; तथा फिलिप्पी के बन्दीगृह का दारोगा, प्रेरि. 16:33)। ध्यान दीजिए कि नए नियम में वर्णित अन्य लोगों की तरह उसने तुरन्त बपतिस्मा लिया। यह विकल्प नहीं है। प्रेरि. 2:38 में विशेष शीर्षक "बपतिस्मा" देखें।

यह पद एक धर्म वैज्ञानिक प्रश्न खड़ा करता है, "क्या प्रेरितों के काम पुस्तक के घराने समेत बपतिस्मा लेने और धर्म परिवर्तन करने के उदाहरणों में बच्चे भी शामिल थे?" यदि शामिल थे तो उन "घरानों के उद्धार" में बच्चों के बपतिस्में की मिसाल पाई जाती है। जो लोग इसे बच्चों के बपतिस्में का प्रमाण मानते हैं वे यह भी कहते हैं कि पुराने नियम में भी छोटे बच्चों के आठ दिन की आयु में खतना करके इस्राएल जाति में शामिल किया जाता था देखें जेम्स डी.जी.डन, पेज 175-176। (i.e., circumcision at eight days of age, see James D. G. Dunn, pp. 175-176) हालांकि यह निश्चित रूप से संभव है कि मसीह पर विश्वास लाना तुरन्त संपूर्ण परिवार पर प्रभाव डाले

(देखें, व्यवस्थाविवरण 5:9 तथा 7:9) परन्तु सवाल फिर भी है, कि "क्या इस विश्वव्यापी सच्चाई को प्रत्येक संस्कृति में लागू किया जा सकता है?" मैं कहना चाहूंगा कि नया नियम पाप की गम्भीरता को भली भाँति जान लेने का प्रकाशन है और उससे छुटकारा पाने के लिए एक उद्धारकर्त्ता की आवश्यकता का अनुभव है। फिर भी एक और प्रश्न उठ खड़ा होता है, "क्या आदम में सब मनुष्य पाप में जन्म लेते हैं, अथवा जब वे परमेश्वर की आज्ञाओं को तोड़ते हैं तभी पापी बनते हैं? यहूदीवाद बच्चों को उस समय तक निर्दोष मानता था जब तक कि वे व्यवस्था को जान नहीं लेते और उसका पालन करने के लिए वचनबद्ध नहीं होते थे। उन्होंने पुरुष बच्चों की आयु सीमा 13 तथा स्त्री लिंग की आयु सीमा 12 निर्धारित की थी। रब्बी लोग उत्पत्ति 3 पर उतना बल नहीं देते थे जितना कलीसिया देती है।

नया नियम पुस्तक सियाने अथवा व्यस्क लोगों के लिए है। यह स्वीकार करता है कि परमेश्वर बच्चों से प्रेम रखता है परन्तु इसके सन्देश व्यस्कों को सम्बोधित करते हैं। परन्तु हम तो आत्म-केन्द्रित और प्रजातन्त्र समाज में रहते हैं, परन्तु पूर्वी देशों का समाज पिछड़ा और कबीलों में रहा करता था।

■ **"यदि"** यह एक प्रथम श्रेणी की शर्त है, जिसे लेखक के दृष्टिकोण से या उसके साहित्यिक उद्देश्यों के लिए एक सच्चा विश्वास माना जाता है।

■ **"तुमने मुझे प्रभु के प्रति वफादार रहने के लिए परखा है"** लेखक के दृष्टिकोण से वह सच्ची विश्वासिनी थी और सच्चाई के साथ विनती कर रही थी। यह यीशु के सन्देश के अनुसार था जबकि उसने सत्तर चेलों को सेवकाई के लिए भेजा था (देखें लूका 10:5-7)।

■ **"तो चलकर मेरे घर में रहो"** लुदिया आग्रह करने वाली व्यापारी स्त्री थी। उसने उन्हें मनाया, विनती की और घर ले गई। यह एक सकारात्मक क्रिया थी।

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 16:16-18

16जब हम प्रार्थना करने की जगह जा रहे थे, तो हमें एक दासी मिली जिसमें भावी कहनेवाली आत्मा थी; और भावी कहने से अपने स्वामियों के लिये बहुत कुछ कमा लाती थी। 17वह पौलुस के और हमारे पीछे आकर चिल्लाने लगी, "ये मनुष्य परमप्रधान परमेश्वर के दास हैं, जो हमें उद्धार के मार्ग की कथा सुनाते हैं।" 18वह बहुत दिन तक ऐसा ही करती रही; परन्तु पौलुस दुःखी हुआ, और मुड़कर उस आत्मा से कहा, "मैं तुझे यीशु मसीह के नाम से आज्ञा देता हूँ कि उसमें से निकल जा।" और वह उसी घड़ी निकल गई।

16:16 "यह घटित हुआ" स्पष्ट रूप से यह घटना अगले दिन हुई होगी, संभवतः अगले सब्त के दिन। यह आमना-सामना अचानक हुआ परन्तु परमेश्वर अन्य घटनाओं की तरह अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिये क्रियाशील था।

■ **"भावी कहने वाली आत्मा"** इस लड़की का वर्णन करने के लिए इस वाक्य में दो शब्द प्रयुक्त किये गए हैं, पहली बात उसमें भावी कहने वाली आत्मा थी (यह केवल यहीं पर नया नियम में प्रयुक्त हुआ है) इसके पीछे पुराने नियम की पृष्ठभूमि है, परन्तु सप्तूजैन्त में भिन्न यूनानी शब्द प्रयुक्त हुआ है (देखें, लैव्य. 19:31; 20:6,27; व्यवस्थाविवरण 18:11; 1 शमू. 28:3,7; 2 राजा 21:6; 1 इति. 10:13)। दूसरी बात यह लड़की भावी कहने से कुछ कमा लाती थी। इसमें दुष्टात्मा थी जो अपने जादू टोने, तन्त्र-मन्त्र से और प्राकृतिक बातें देखकर (अर्थात् चिड़ियों का उड़ना देखकर, बादलों द्वारा, कटोरे का पेय पदार्थ देखकर, पशु के कलेजे से इत्यादि) भविष्य बता सकती थी और कुछ हद तक भविष्य पर प्रभाव डाल सकती थी।

इस यूनानी संस्कृति में यूनानी दन्तकथाओं से, जहाँ एक बड़ा अजगर अपोलो द्वारा बलि किया गया था, एक शब्द पुथौन (*puthōn)* पाया जाता है। यही दन्तकथा देववाणी का अनुष्ठान बन गई अर्थात् डेलफी (Delphi), जहाँ मनुष्य आकर देवताओं से पूछताछ कर सकते थे। यह स्थान अजगरों के संबंध में प्रसिद्ध था, जो उन मनुष्यों के

ऊपर आकर सांप (pythons)रेंगा करते थे जो मन्दिर के फर्श पर लेटे रहते थे और अपना भविष्य जानना चाहते थे अथवा भविष्य सुधारना चाहते थे। वे अजगरों को अपने ऊपर रेंगने देते थे।

▪ **''भाग्य बताने से''** नए नियम में केवल यहीं पर ये शब्द आए हैं। सप्तूजैन्त में सामान्य रूप से नाकारात्मक संदर्भ में इस शब्द का प्रयोग भावी कहने वाले, दर्शी और नबी के लिए किया गया है, जो बे मतलब की बातें बोलता है, और बेसुध होकर भविष्यवाणी कहता है यहाँ पर इसका अर्थ है वह व्यक्ति जो पैसा कमाने के लिए भविष्य के कथन बोलता है। संदर्भ से पता चलता है कि यह लड़की अशुद्ध आत्मा से भरी हुई थी।

16:17 ''पौलुस के पीछे आकर...रोने लगा'' यह वर्तमान कालीन निरंतर चलने वाली क्रिया थी। वह लड़की उनके पीछे पीछे चल रही थी और लगातार पुकार रही थी (देखें प्रेरि. 16:18)।

▪ **''ये मनुष्य परमप्रधान परमेश्वर के दास हैं''** यीशु ने शैतान की गवाही को ग्रहण नहीं किया था (देखें, लूका 8:28; मरकुस 1:24; 3:11; मत्ती 8:29) और पौलुस ने भी ग्रहण नहीं किया क्योंकि इसका अर्थ यह हो सकता था कि पौलुस शैतान की सहायता से कार्य करता है।

उत्प. 14:18-19 तथा 2 शमू. 22:14 में ''परम प्रधान'' शब्द (देखें, मरकुस 5:7; लूका 8:28) (*El, Elyon*))यहोवा (YHWH) परमेश्वर के लिए प्रयुक्त हुआ है (प्रेरि. 1:6 में विशेष शीर्षक देखें), परन्तु यहाँ के लोगों की संस्कृति में यह शब्द ज्यूस देवता के लिए भी प्रयुक्त किया जाता था। जो आत्मा उस लड़की में थी वह परमेश्वर की महिमा नहीं कर रही थी, परन्तु सुसमाचार का संबंध शैतान से जोड़ रही थी।

▪ **''जो तुम्हें उद्धार का मार्ग बता रहे हैं''** एन आर एस वी अनुवाद में (NRSV) के साथ ष्जीमष् नहीं लगाया गया है। जिसका अर्थ है कि वह लड़की चिल्लाकर मानों यह कह रही थी कि ''जो हमें परम प्रधान के अनेक मार्गों में से एक उद्धार के मार्ग की कथा सुनाते हैं। इस प्रकार उस लड़की का यह कथन पौलुस की सेवकाई में सहयोग नहीं कर रहा था। उस लड़की के कथन का उद्देश्य यह था:

1. मेरे भविष्य कथन के द्वारा पौलुस को पहचानों
2. पौलुस एक मात्र उद्धार का मार्ग प्रस्तुत नहीं कर रहा है बल्कि वैकल्पिक मार्ग को प्रस्तुत कर रहा है (अर्थात् मसीह पर विश्वास का मार्ग)

एन ई टी बाइबल पेज 20 22#16 (The NET Bible (p. 2022 #16) *"the way"* बनाम *"A way"* के विषय में अनुवाद से संबंधित रोचक वाद-विवाद लिखती है वह *"The way"* का समर्थन करती है और बताती है,

''परन्तु वास्तविक विवाद का विषय तो यह है कि प्रथम शताब्दी के फिलिप्पी लोगों ने क्या अर्थ समझा होगा। उनकी संस्कृति के परिवेश में ''परम प्रधान'' ज्यूस की ओर संकेत करता होगा, *(Zeus)* व्याख्यात्मक विवाद नहीं है।''

16:18 ''पौलुस बहुत गुस्सा हुआ'' अब पौलुस प्रतिक्रिया करता है, प्रेमपूर्वक नहीं परन्तु अत्यन्त दुखी और व्याकुल होने के बाद। पौलुस भी तो आखिर मनुष्य ही था, कब तक बर्दास्त करता। यही सख्त क्रिया सप्तूजैन्त में सभोपदेशक 10:9 में भी पाई जाती है जहां इसका अर्थ कठिन परिश्रम है। नया नियम में यह शब्द केवल यहीं और प्रेरि. 4:2 में प्रयुक्त हुआ है। यह ऐसे मनुष्य के बारे में बताता है जो पूर्ण रूप से थक चुका हो!

▪ **''आत्मा से''** ध्यान दीजिए कि पौलुस ने उस दासी लड़की से बात नहीं की, परन्तु उस दुष्टात्मा से जो उसके अन्दर थी और उसे नियंत्रण में किए हुई थी। पौलुस ने दुष्टात्मा निकालते समय उन्हीं शब्दों का प्रयोग किया जो नए नियम की अन्य घटनाओं में दुष्टात्मा निकालते समय प्रयुक्त किए गए (अर्थात् यीशु मसीह के नाम से आज्ञा देता हूँ।)। देखें विशेष शीर्षक; प्रेरि. 5:16 में (दुष्टात्माएँ-निकलना)।

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 16:19-24
[19]जब उसके स्वामियों ने देखा कि हमारी कमाई की आशा जाती रही, तो पौलुस और सीलास को पकड़ के

चैक में प्रधानों के पास खींच ले गए; [20]और उन्हें फौजदारी के हाकिमों के पास ले गए और कहा, "ये लोग जो यहूदी हैं, हमारे नगर में बड़ी हलचल मचा रहे हैं; [21]और ऐसी रीतियाँ बता रहे हैं, जिन्हें ग्रहण करना या मानना हम रोमियों के लिये ठीक नहीं।" [22]तब भीड़ के लोग उनके विरोध में इकट्ठे होकर चढ़ आए, और हाकिमों ने उनके कपड़े फाड़कर उतार डाले, और उन्हें बेंत मारने की आज्ञा दी। [23]बहुत बेंत लगवाकर उन्होंने उन्हें बन्दीगृह में डाल दिया और दारोगा को आज्ञा दी कि उन्हें चैकसी से रखे। [24]उसने ऐसी आज्ञा पाकर उन्हें भीतर की कोठरी में रखा और उनके पाँव काठ में ठोंक दिए।

16:19 "देखा कि कमाई की आशा जाती रही" इन स्वामियों ने इस बात की बिल्कुल भी चिन्ता नहीं की कि एक मानव-प्राणी बुराई के दासत्व से स्वतन्त्र हो गया था। वे अपनी वित्तीय हानि से दुखी थे (देखें, प्रेरि. 16:16), ठीक उन लोगों की तरह जिनका वर्णन लूका 8:26-39 में है।

▪ **'पौलुस और सीलास को पकड़ लिया"** लूका और तीमुथियुस उनके साथ क्यों नहीं पकड़ लिए गए, यह अज्ञात है।

16:20 "फौज दारी के हाकिमों" हाकिमों के लिए यूनानी शब्द प्रीटर्र्स *(Praetors)* प्रयुक्त किया जाता है। अधिकारिक रूप से उनकी पदवी डयूमविर्स *(duumvirs)* थी, परन्तु सिसरो हमें बताता है कि अनेक लोग प्रीटर्स कहलाना पसन्द करते थे। लूका रोमी सरकार की पदवियों को अच्छी तरह जानता था और उनका बिल्कुल सही प्रयोग करता है। यह उसकी अनेक ऐतिहासिक प्रमाणिकता में से एक है।

16:20, 21 " यहूदी होना... रोमी होना, जिन्हें ग्रहण करना हम रोमियों के लिए ठीक नहीं" यह उनकी जातिगत पूर्वधारणाओं और अभिमान को दर्शाता है। 49-50 ईस्वी में क्लौडियस सम्राट की राजाज्ञा द्वारा सब यूहदियों को रोम से भागने के फलस्वरूप संभवतः फिलिप्पी में पौलुस का समय समाप्त हो गया था (वास्तव में क्लौडियस ने यहूदी आराधना रोम में मना की थी)। रोमियों द्वारा किए गए अत्याचारों को सिसरो की पुस्तक प्रो-फिआस्को 28 तथा जावेनल 14.96-106 में पढ़ा जा सकता है। (Cicero's *Pro Fiasco* 28 and *Javenal* 14.96-106)

▪ **"ऐसी रीतियाँ जिन्हें ग्रहण करना हमारे लिए ठीक नहीं"** ध्यान दीजिए कि इस दोषारोपण का उस लड़की में से अशुद्ध आत्मा निकालने से कोई संबंध नहीं है। यह स्पष्ट रूप से उनके द्वारा यीशु मसीह के सुसमाचार का प्रचार करने की ओर संकेत करता है। यहूदीवाद रोमी साम्राज्य का वैधानिक धर्म माना जाता था, परन्तु अब स्पष्ट हो चुका था कि मसीही धर्म यहूदीवाद से भिन्न है, और इसलिए अवैधानिक धर्म की दृष्टि से देखा जाता था। भक्त रोमियों से संबंध रखना एक यहूदी के लिए गैरकानूनी था, पौलुस के संबंध में भी यह गैरकानूनी था।

16:22 "उनके कपड़े फाड़कर उतार डाले और उन्हें आदेश देने के लिए आगे बढ़े" भीड़ के विरोध से उत्तेजित होकर संभवतः दो हाकिमों ने स्वयं पौलुस और सीलास के कपड़े उतारे। यह उनके लिए शायद सबसे अनोखी बात रही होगी:

1. उन्होंने कपड़े उतारकर फाड़ डाले।
2. और बेंत मारने की आज्ञा दी।

▪ **"बेंत से पीटा"** रोमी सिपाहियों की कोड़ों की मार की तुलना में नगर के न्यायालय में दी गई यह ताड़ना अधिक भयंकर नहीं हुआ करती थी। बेंत मारने की कोई गिनती निर्धारित नहीं थी। पौलुस ने तीन बार इस प्रकार की बेंतें खाई थीं (देखें, 2 कुरि. 11:25)। तीन में से केवल एक का उल्लेख यहाँ पाया जाता है (देखें, 1 थिस्स. 2:2)।

16:24 "भीतरी बंदीगृह" इसका अर्थ है कड़ी से कड़ी सुरक्षा में रखना। यहाँ पर भय पाया जाता है (देखें प्रेरि. 16:29)। पौलुस द्वारा अशुद्ध आत्मा निकाले जाने की घटना ने उनका ध्यान आकर्षित किया था।

▪ **"उनके पाँव काठ में ठोंक दिए"** उस समय के अधिकांश बन्दीगृहों में जिन बेड़ियों से कैदी बंधा होता था उसकी जंजीरें दीवारों से जुड़ी होती थीं, इसलिए दरवाजों पर केवल सिटकनी लगाते थे पर ताला नहीं लगाते थे। काठ में पांव ठोंकने से उनके पांव का फासला चैड़ा होने से तकलीफ बढ़ जाती थी और सुरक्षा कड़ी हो जाती थी।

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 16:25-34
25आधी रात के लगभग पौलुस और सीलास प्रार्थना करते हुए परमेश्वर के भजन गा रहे थे, और कैदी उनकी सुन रहे थे। 26इतने में एकाएक बड़ा भूकम्प आया, यहाँ तक कि बन्दीगृह की नींव हिल गई, और तुरन्त सब द्वार खुल गए; और सब के बन्धन खुल पड़े। 27दारोगा जाग उठा, और बन्दीगृह के द्वार खुले देखकर समझा कि कैदी भाग गये हैं, अतः उसने तलवार खींचकर अपने आप को मार डालना चाहा। 28परन्तु पौलुस ने ऊंचे शब्द से पुकारकर कहा, "अपने आप को कुछ हानि न पहंुचा, क्योंकि हम सब यहीं हैं" 29तब वह दीया मँगवाकर भीतर लपका, और काँपता हुआ पौलुस और सीलास के आगे गिरा; 30और उन्हें बाहर लाकर कहा, "हे सज्जनों, उद्धार पाने के लिये मैं क्या करूँ?" 31उन्होंने कहा, "प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास कर, तो तू और तेरा घराना उद्धार पाएगा।" 32और उन्होंने उसको और उसके सारे घर के लोगों को प्रभु का वचन सुनाया। 33रात को उसी घड़ी उसने उन्हें ले जाकर उनके धाव धोए, और उसने अपने सब लोगों समेत तुरन्त बपतिस्मा लिया 34तब उसने उन्हें अपने घर में ले जाकर उनके आगे भोजन रखा, और सारे घराने समेत परमेश्वर पर विश्वास करके आनन्द किया।

16:25 "आधी रात के लगभग" वे संभवतः दर्द, खून बहने और पांव काठ में ठुके होने के कारण रात्री में सो नहीं पा रहे थे।

▪ **"प्रार्थना करते हुए परमेश्वर के भजन गा रहे थे"** यह हो सकता है कि प्रार्थना और भजन सुनकर कैदी मसीह पर विश्वास करने लगे हों क्योंकि वे गीतों को सुन रहे थे और जब भूकम्प के कारण द्वार खुल गए तो वे भागे नहीं, पौलुस कहता है, "हम सब यहीं हैं।" (प्रेरि. 16:26,28)।

▪ **"कैदी उनकी सुन रहे थे"** अर्थात् वे पौलुस और सीलास को लगातार सुन रहे थे। यहाँ पर क्रिया शब्द एपाक्रोआओमाय (*epakroaomai)* नए नियम और सप्तूजैन्त में बहुत कम प्रयुक्त हुआ है। शमू. 15:22 में इस शब्द का प्रयोग आनन्द के साथ ध्यानपूर्वक सुनने को दर्शाता है। ये कैदी भी ध्यानपूर्वक आनन्द के साथ सुन रहे थे और परमेश्वर के प्रेम के सन्देश का सकारात्मक प्रत्युत्तर दिया।

16:26 "भूकम्प" यह प्राकृतिक घटना थी, परन्तु इसमें अलौकिक उद्देश्य और प्रभाव छिपा था (देखें, मत्ती 27:51,54; 28:2)। परमेश्वर ने पतरस को स्वर्गदूत द्वारा छुड़ाया था (देखें प्रेरि. 4:31), परन्तु यहाँ पर इस घटना के द्वारा पौलुस को अवसर दिया गया कि वह कैदियों और दारोगा को सुसमाचार का सन्देश सुना सके।

16:27 "तलवार" यह दोधारी छोटी सी तलवार थी जो बैल्ट में बाँधी जाती थी और जिसका आकार जीभ के समान होता था। रोमी नागरिक के लिये यह मृत्युदण्ड का हथियार था। यदि किसी पहरेदार का कैदी भाग जाए तो उसे मृत्युदण्ड भुगतना आवश्यक था (देखें, प्ररि. 12:19)।

16:28 पौलुस और सीलास के विश्वास और गीतों ने अन्य कैदियों पर बड़ा प्रभाव डाला था (मैं सोचता हूं, उन्होंने भी उद्धार पा लिया था)।

16:29 "दीया मंगवाकर" बहुवचन पर ध्यान दें। वहां पर अन्य जेलर थे।

16:30 "हे सज्जनों, उद्धार पाने के लिये मैं क्या करूँ" यह मानव जाति की दो बातों को दर्शाता है 1. अलौकिकता का भय तथा 2. परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप। वह उस शान्ति और आनन्द को पाना चाहता था जो

उसने इस विपरीत परिस्थिति में उनके अन्दर देखी। दारोगा पर ध्यान दीजिए, संसार में बहुत से लोगों की स्थिति ऐसी है ताकि वे सकारात्मक प्रत्युत्तर दे सकें (देखें, लूका 3:10,12,14; प्रेरि. 2:37; 22:10)।

16:31 ''प्रभु मसीह पर विश्वास कर'' यहाँ पर प्रयुक्त क्रिया शब्द पिस्तेऊ (*pisteuō*) का अनुवाद ''विश्वास'' ''भरोसा'' ''यकीन'' भी किया जा सकता है। प्रेरि. 2:40, 3:16 तथा 6:5 में दी टिप्पणियाँ व विशेष शीर्षक देखें। मुख्य रूप से यह व्यक्तिगत संकल्प के साथ भरोसा करना है ;देखें, प्रेरि. 10:43)। इस पर भी ध्यान दें कि यह व्यक्ति में भरोसा करना है न कि धर्म-शिक्षा और धर्म-सिद्धान्तों में विश्वास करना है। इस व्यक्ति की पृष्ठभूमि यहूदी धर्म की नहीं थी (अर्थात् योना की पुस्तक में नीनवे के लोगों की तरह था)। तौभी पूर्ण उद्धार पाने की शर्तें बहुत सरल और उसी की तरह हैं। यह नए नियम में सुसमाचार का संक्षिप्त शब्दों में सारांश है (देखें प्रेरि. 10:43)। उसका पश्चाताप (देखें, मरकुस 1:15; प्रेरि. 3:16,19;20:21) उसके कार्यों द्वारा प्रदर्शित किया गया।

■**'' तू, और तेरा घराना उद्धार पाएगा''** प्राचीन युग में परिवार के मुखिये का धर्म, परिवार का धर्म हुआ करता था (देखें, प्रेरि. 10:2; 11:14; 16:15; 18:8)। व्यक्तिगत स्तर पर यह कैसे किया जाता था, कुछ नहीं कहा जा सकता है, परन्तु स्पष्टरूप से प्रत्येक व्यक्ति का निजी विश्वास इसमें सम्मिलित माना जाता था। पौलुस ने दारोगा और उसके परिवार के प्रत्येक सदस्य को सुसमाचार पूरा पूरा सुनाया था (देखें, प्रेरि. 16:32)।

16:32 ''परमेश्वर का वचन'' इस वाक्यांश में भिन्नताएँ पाई जाती हैं।

1. मूललेख MSS $P^{45,74}$, $\aleph^2$, A, C, D, E. में ''प्रभु का वचन'' लिखा है। USB[4] इसे "B" श्रेणी में रखता है।
2. MSS $\aleph^*$,B ''परमेश्वर का वचन'' लिखा है।

संदर्भ पढ़ने से प्रश्न उठता है कि ''प्रभु'' शब्द किसकी ओर संकेत करता है:

1. यीशु प्रेरी 16:31
2. यहोवा (YHWH) की ओर (देखें, प्रेरी 16:25,34; 13:44, 48; यह पुराने नियम का शब्द है, देखें, उत्त 15:14; यशा 1:10, 1 शमू. 15:10; योना 1:1)

16:33 ''और उसने अपने सब लोगों समेत तुरन्त बपतिस्मा लिया'' इससे बपतिस्में का महत्व प्रकट होता है। प्रेरितों के काम पुस्तक में इसका बार बार उल्लेख किया गया है। देखें प्रेरि. 2:38 में विशेष शीर्षक बपतिस्मा यीशु ने बपतिस्मा लिया था (देखें, लूका 3:21) तथा इसकी आज्ञा दी (देखें, मत्ती 28:19) और इसे निर्धारित किया गया (देखें, प्रेरि. 2:38)। प्रेरितों के काम पुस्तक में जहाँ भी लोगों ने विश्वास किया उन्होंने बपतिस्मा लिया (देखें, प्रेरि. 10:47-48)। यह मसीह पर उनके विश्वास का मुँह से अंगीकार और दृश्य रूप में जनता के सामने अंगीकार करना था (रोमियों 10:9-13)।

16:34 ''सारे घराने समेत परमेश्वर पर विश्वास करके आनन्द किया'' यहां पर दो क्रिया शब्द एकवचन में हैं जो दारोगा की ओर संकेत करते हैं, परन्तु क्रिया-विशेषण शब्द उसके परिवार की ओर संकेत करते हैं। सारे घराने ने आनन्द मनाया। ''विश्वास करके'' संपूर्ण क्रिया शब्द है। प्रेरि. 16:31 के बाद, काल-परिवर्तन पर भी ध्यान दें।

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 16:35-40

35जब दिन हुआ तब हाकिमों ने सिपाहियों के हाथ कहला भेजा कि उन मनुष्यों को छोड़ दो। 36दारोगा ने ये बातें पौलुस से कहीं, ''हाकिमों ने तुम्हें छोड़ देने की आज्ञा भेज दी है। इसलिये अब निकलकर कुशल से चले जाओ।'' 37परन्तु पौलुस ने उनसे कहा, ''उन्होंने हमें जो रोमी मनुष्य हैं, दोषी ठहराये बिना लोगों के सामने मारा और बन्दीगृह में डाला। अब क्या हमें चुपके से निकाल रहे हैं? ऐसा नहीं; परन्तु वे स्वयं आकर हमें बाहर निकालें।'' 38सिपाहियों, ने ये बातें हाकिमों से कहीं, और वे यह सुनकर कि रोमी हैं डर गए, 39और आकर उन्हें मनाया, और बाहर ले जाकर विनती की कि नगर से चले जाएँ। 40वे बन्दीगृह से निकलकर लुदिया के यहाँ गये, और भाइयों से भेंट करके उन्हें शान्ति दी, और चले गए।

16:35 "सिपाहियों" सिपाही का अर्थ शाब्दिक रूप से वह व्यक्ति है जो डण्डा लेकर चलता है। यह उनकी ओर संकेत करता है जो अनुशासन रखते हैं (प्रेरि. 16:20)। इटली की "फेसिस्ट" पार्टी ने अपना नाम इसी शब्द को लेकर रखा था। डण्डों का गट्ठा उनकी पार्टी का चिन्ह था।

16:37 "जो रोमी मनुष्य हैं" फिलिप्पी एक रोमी कालोनी थी और बड़ी सुविधाएँ उन्हें मिली हुई थीं, यदि यह सूचना रोम पहुँचती कि किसी रोमी नागरिक के साथ बुरा व्यवहार किया गया है तो रोमी सरकार से मिली हुई फिलिप्पी की सुविधाओं को खतरा उत्पन्न हो सकता था। किसी रोमी को पीटना उस कालोनी की बदनामी का कार्य था देखें, प्रेरि. 16:39; देखें लिवी, "इतिहास" 10.9.4 या सिसेरो, "प्रो रैबिरियो 4.12-13 (Livy, "*History*" 10.9.4 or Cicero, "*Pro Rabirio* 4.12-13)

16:39 संभवतः पौलुस द्वारा विरोध करने का उद्देश्य फिलिप्पी की कलीसिया को बचाना और उसे मान्यता दिलवाना था। हाकिम अपने कार्यों द्वारा प्रमाणित कर रहे थे कि सुसमाचार प्रचार करना अवैध कार्य है। इस प्रकार भविष्य में फिलिप्पी के लिए सुसमाचार का द्वार खुला रह सकता था।

16:40 "चले गये" स्पष्ट रूप से लूका वहीं रहा। हम उसे फिर प्रेरि. 20:5-6 में पाते हैं।

विचार विमर्श के लिये प्रश्न

यह अध्ययन में मार्गदर्शन करने की टीका है, इसका अर्थ है कि आप बाइबल की अपनी व्याख्या करने के स्वयं ही जिम्मेदार हैं। हम में से प्रत्येक को उसी ज्ञान के अनुसार चलना चाहिए जो हमारे पास है। व्याख्या करने के कार्य में आप आपकी बाइबल और पवित्र आत्मा केन्द्रिय स्थान रखते हैं। यह कार्य व्याख्याकार पर न छोड़ दें।

निम्नलिखित प्रश्न अपनी सहायता के लिए दिए गए हैं ताकि आप पुस्तक के गम्भीर विषयों पर पुनर्विचार कर सकें। वे आपके विचारों को आन्दोलित करने के लिए हैं, इनके अलावा और भी प्रश्न हो सकते हैं:

1. पवित्र आत्मा क्यों यीशु का आत्मा कहलाता है?
2. परमेश्वर क्यों मिश्नरियों को इतने अधिक विरोधों और परीक्षाओं का सामना करने देता है?
3. पौलुस ने उस दासी लड़की की गवाही को स्वीकार क्यों नहीं किया?
4. उन लोगों की सूची बनाएँ जिन्होंने फिलिप्पी में उद्धार पाया?
5. क्यों केवल पौलुस और सीलास ही बन्दी बनाए गए?
6. क्यों शेष कैदी नहीं भाग गये?
7. इस अध्याय में उद्धार के मूल-तत्वों की सूची बनाएँ। क्या यह सूची अन्य अध्यायों में पाई जाने वाली बातें से भिन्न है?
8. क्या इस दारोगा की पृष्ठभूमि यहूदीवाद अथवा मसीही धर्म से संबंधित थी?
9. "तू और तेरा घराना उद्धार पाएगा" इसका क्या अर्थ है?
10. पौलुस ने ऐसा क्यों कहा कि "वे स्वयं आकर हमें बाहर निकालें?"

Copyright © 2013 Bible Lesson International

प्रेरितों के काम-17
बाइबल के विभिन्न आधुनिक अनुवादों में पैराग्राफ-विभाजन

UBS[4]	NKJV	NRSV	TEV	NJB
थिस्सलुनीके में हुल्लड़ का प्रचार	थिस्सलुनीके में मसीह एथेन्स	थिस्सलुनीके से	थिस्सलुनीके में विरोध	थिस्सलुनीके: यहूदियों का
17:1-9	17:1-4	17:1-9	17:1-4	17:1-4
	यासोन के घर पर चढ़ाई			
	17:5-9		17:5-9	17:5-9
प्रेरित बिरीया में	बिरीया में सेवकाई		बिरिया में	बिरिया में नई समस्याएँ
17:10-15	17:10-15	17:10-15	17:10-15	17:10-12 17:13-15
पौलुस एथेन्स में	एथेन्स के दार्शनिक	पौलुस एथेन्स में	एथेन्स में	पौलुस एथेन्स में
17:16-21	17:16-21	17:16-21	17:16-21	17:16-18 17:19-21
	अरियुपगुस में भाषण			
17:22-28a	17:22-34	17:22-31	17:22-31	17:22a
				अरियुपगुस की सभा में पौलुस का भाषण
				17:22b-23
17:28b-31				17:24-28
				17:29 17:30-31
17:32-34		17:32-34	17:32-34	17:32-34

पठन चक्र तीसरा (“अच्छे बाइबल अध्ययन का मार्गदर्शन” से)

पैराग्राफ स्तर पर मूल लेखक के अभिप्राय को समझना

यह अध्ययन करने की मार्गदर्शक टीका है, जिसका अर्थ है कि आप अपनी बाइबल-व्याख्या के स्वयं उत्तरदायी हैं। हम में से प्रत्येक को अपने ज्ञान व समझ के अनुसार कार्य करना चाहिए। व्याख्या-प्रक्रिया में आप, आपकी बाइबल तथा पवित्र आत्मा प्राथमिक स्थान रखते हैं। आपको यह टीका कार्य टीकाकार पर नहीं छोड़ना चाहिए।

पूरा अध्याय एक बैठक में पढ़ें। विषयों को पहचानें। अपने विषय-विभाजन की तुलना उपरोक्त पाँच आधुनिक अनुवादों के विषय-विभाजन से करें। पैराग्राफों का विभाजन प्रेरणा प्राप्त नहीं होता है, परन्तु यह मूल लेखक के अभिप्राय को समझने की कुंजी है, जो कि व्याख्या करने का आधार है। प्रत्येक पैराग्राफ में केवल एक ही मूल विषय होता है:

1. पहला पैराग्राफ
2. दूसरा पैराग्राफ
3. तीसरा पैराग्राफ

4. अन्य

संदर्भ की जानकारी

एथेन्स के यूनानी विद्वानों के मध्य पौलुस के संदेशों की संक्षिप्त रूपरेखा (17:15-34)। यह संदेश प्रेरि. 14:15-18 के समान है।

A. एक ही परमेश्वर है जिसने स्वर्ग (आत्मा) और पृथ्वी (तत्व) के बनाया।
   1. जिसे वे नहीं जानते
   2. जो मानवीय मन्दिरों अथवा मूत्तियों में नहीं रहता
   3. जिसे मनुष्यों की किसी वस्तु की आवश्यकता नहीं
   4. सच्चे जीवन का वही एकमात्र स्रोत है

B. मानवीय इतिहास उसके नियंत्रण में है
   1. उसने एक ही मनुष्य से संसार की सारी जातियाँ बनाईं
   2. जातियों की सीमाएँ ठहराई

C. उसने मनुष्यों में स्वयं अपने को जानने की इच्छा डाली; उसे पा लेना कठिन नहीं है।

D. पाप ने हमें परमेश्वर से पृथक किया
   1. उसने हमारे अज्ञानता के समयों की उपेक्षा की
   2. हमें अब पश्चाताप करना चाहिए

E. परमेश्वर अपनी सृष्टि का न्याय करेगा
   1. न्याय का एक दिन ठहरा दिया गया है
   2. यह न्याय मसीह के द्वारा किया जाएगा
   3. मसीह को मृतकों में से जिलाया गया ताकि उसका व्यक्तित्व और कार्य प्रमाणिक ठहरें।

थिस्सलुनीके नगर:

A. थिस्सलुनीके नगर का संक्षिप्त इतिहास:
   1. थिस्सलुनीके नगर समुद्री तट थेरमाइक टापू के निकट बसा हुआ एक नगर था। यह रोमी साम्राज्य के सबसे बड़े मार्ग इरनेशिया पर बसा था जो रोम में पूर्वी दिशा की ओर आता था। यह बन्दरगाह था जिसके आसपास उपजाऊ और हरे भरे मैदान थे। इन्हीं उपजाऊ मैदानों के कारण यह नगर मकिदुनिया का राजनैतिक केन्द्र, व्यवसायिक केन्द्र और घनी आबादी वाला नगर बन गया था।
   2. प्रारम्भ में थिस्सलुनीके का नाम थेरमा था। यह नाम इसलिए पड़ा था क्योंकि यहाँ पर गर्म पानी के स्रोते पाए जाते थे। प्राचीन इतिहासकार पलीनी थेरमा और थिस्सलुनीके को एक ही नगर मानता था। यदि यह बात सही है तो थिस्सलुनीके थेरमा के साथ जुड़ा हुआ था लेआन मौरिस,, थिस्सलुनीकियों के नाम पहली और दूसरी पत्री, ग्रैन्ड रैपिड्सः डब्ल्यू. बी. एर्डमन्डस पब्लिशिंग कम्पनी, 1991, पेज 11 (Leon Morris, *The First and Second Epistles to the Thessalonians*, Grand Rapids: Wm. B. Eerdmans Publishing Company, 1991, p. 11). तौभी अधिकांश इतिहासकार मानते हैं कि सिकन्दर महान के एक सेनापति कसिन्दर ने 315 ई. पू. थेरमा का नाम बदलकर, मकिदुनिया के फिलिप की बेटी, जो सिकन्दर महान्

की सौतेली बहन थी, और पत्नी थिस्सलुनीका के नाम पर रख दिया था (स्ट्राबो टप्प् फ्रैगमैन्ट 21)। दूसरी शताब्दी के दौरान जब यहाँ मसीही धर्म का प्रचार खूब हो गया तो थिस्सलुनीके नगर को "कट्टर नगर" के नाम से जाना जाने लगा क्योंकि मसीही लोगों का आचरण उच्च कोटि का हो गया था डीन फरार, द लाइफ एण्ड वर्क ऑफ सेंट पौल, न्यू यार्कः कैसल एण्ड कंपनी, लिमिटेड, 1904, पेज 364। (Dean Farrar, *The Life and Work of St. Paul*, New York: Cassell and Company, Limited, 1904, p. 364). वर्तमान समय में थिस्सलुनीके सालोनीका के नाम से जाना जाता है और अभी तक यूनान का एक महत्वपूर्ण नगर है।

3. थिस्सलुनीके नगर कुरिन्थ के समान एक विश्वव्यापी महानगर था जहाँ पर समस्त संसार के लोग रहते थे।
    a. वहां पर उत्तर से आए हुए बारबरिक जर्मनिक लोग रहते थे, जो वहाँ अपने साथ मूर्तिपूजक धर्म और संस्कृतिक लाए थे।
    b. वहाँ पर यूनानी लोग रहते थे। जो अखाया से लेकर दक्षिण तक और एजियन सागर के टापुओं से आए थे और अपने साथ यूनानी दर्शन लाए थे।
    c. पश्चिम से आए हुंए रोमी लोग वहाँ रहते थे। वे अधिकतर रिटायर सैनिक थे, जो अपने साथ वहाँ दृढ़ इच्छा शक्ति, धन और राजनैतिक बल लाए थे।
    d. पूरब से वहाँ पर भारी संख्या में यहूदी आ बसे थे, फलस्वरूप वहाँ की एक तिहाई आबादी यहूदियों की हो गई थी। वे वहाँ पर अपना एकेश्वरवादी विश्वास और राष्ट्रीय पूर्व धारणाएँ लाए थे।
4. अपनी दो लाख की आबादी के साथ थिस्सलुनीके वास्तव में एक सर्वदेशीय महानगरी था। गर्म स्रोतों के कारण यह नगर स्वास्थ्य के लिए विश्राम स्थल हो गया था। चूँकि यह बन्दरगाह था, उपजाऊ मैदान यहाँ थे और निकट ही में इग्नेशियन हाइवे रोड था, इसलिए यह व्यवसायिक केन्द्र भी बन गया था।
5. एक बड़ा नगर और प्रान्तीय राजधानी होने के नाते थिस्सलुनीके मकिदुनिया का राजनैतिक मुख्यालय भी बन गया था। यहाँ पर अनेक रिटायर्ड रोमी सैनिक रहते थे इसलिये यह एक स्वतन्त्र नगर था। अधिकांशतः यहाँ रोमी नागरिक थे इसलिए थिस्सलोनीके रोमी सरकार को कर नहीं देता था परन्तु नियमों के अधीन रहता था। थिस्सलोनीके के शासक राजनायिक कहलाते थे। यह पदवी किसी अन्य साहित्य में नहीं पाई जाती है; थिस्सलुनीके में पाए जाने वाले एक विजय-स्तम्भ मेहराब पर यह पदवी अंकित की गई है जिसे वरदार गेट कहा जाता है फर्रार, पेज 371 (Farrar, p.371n.)

B. वे घटनाएँ जिनके कारण पौलुस को थिस्सलुनीके आना पड़ा:
    1. बहुत सी घटनाओं ने पौलुस की अगुवाई की जिनमें वह थिस्सलुनीके आया, तो भी सब भौतिक परिस्थितियों के पीछे परमेश्वर की ओर से उसे स्पष्ट बुलाहट प्राप्त होना था। पौलुस ने मूलरूप से यूरोप महाद्वीप में आने की योजना नहीं बनाई थी। उसकी इच्छा थी कि अपनी दूसरी मिश्नरी यात्रा के दौरान वह एशिया माइनर की उन कलीसियाओं में फिर भेंट करे जो उसने अपनी प्रथम मिश्नरी यात्रा के दौरान स्थापित की थीं, और उसके बाद पूर्वी दिशा में चला जाए। फिर भी जब उसके सामने अवसर आए कि वह उत्तरी दिशा में जाए तो परमेश्वर ने उसके लिए द्वार बन्द करना आरम्भ कर दिया। फिर अन्त में उसने मकिदुनिया जाने का दर्शन देखा (देखें, प्रेरि. 16:6-10)। इससे दो बातें हुईं: पहली, यूरोप महाद्वीप में सुसमाचार फैल सका और दूसरी, मकिदुनिया की परिस्थितियों के कारण पौलुस ने पत्रियाँ लिखना आरम्भ कर दिया (थौमस कार्टर, लाइफ एण्ड लैटर्स ऑफ पौल, नैशविल: काक्सबरी प्रैस, 1921, पेज 112)।
    2. भौतिक परिस्थितियाँ जो पौलुस को थिस्सलुनीके लाईं:

a. पौलुस फिलिप्पी गया जहाँ पर कोई भी आराधनालय नहीं था। यहाँ पर दुष्टात्माग्रस्त भावी कहने वाली लड़की के स्वामियों और नगर की सभा की ओर से अपनी सेवकाई में बाधा पहुंचाई गई। पौलुस को पीटा गया, उसका अपमान किया गया, तौभी कलीसिया स्थापित हो गई। विरोध और शारीरिक ताड़नाओं के कारण पौलुस को शीघ्र ही स्थान छोड़कर चले जाना पड़ा।
b. अब वह कहाँ जाए? तब वह अम्फिपुलिस और अपुल्लोनिया की ओर गया। वहाँ पर भी कोई आराधनालय नहीं था।
c. तब वह इस क्षेत्र के सबसे बड़े नगर में आया जो थिस्सुलिनके था, और यहाँ पर आराधनालय था। पौलुस की रीति थी कि वह सबसे पहले स्थानीय यहूदियों के पास जाता था। वह ऐसा इसलिए करता था क्योंकि:
   (1) वे पुराना नियम जानते थे
   (2) आराधनालय में जाकर वह उनकी शिक्षाओं के अनुसार अपनी शिक्षा दे सकता था।
   (3) यहूदी लोग परमेश्वर के चुने हुए लोग थे (देखें, मत्ती 10:6; 15:24; रोमियों 1:16-17; 9-11)।
   (4) यीशु ने स्वयं भी पहले यहूदियों को सुसमाचार सुनाया उसके बाद संसार को, अतः पौलुस मसीह का अनुसरण करता था।

पौलुस के सहकर्मी:

A. थिस्सलुनीके में पौलुस के साथ सीलास और तीमुथियुस थे। लूका पौलुस के साथ फिलिप्पी में था और वह वहीं रूक गया था। हमें यह जानकारी प्रेरित 16 और 17 अध्याय में पाए जाने वाले ''हम'' और ''वे'' शब्दों का उल्लेख करने से होती है। लूका फिलिप्पी में ''हम'' शब्द का प्रयोग करता है परन्तु जब वे थिस्सलुनीके में यात्रा करते हैं तो ''वे'' शब्द का प्रयोग करता है।

B. दूसरी मिशनरी यात्रा आरम्भ करते समय जब बरनबास और यूहन्ना मरकुस साइप्रस चले गये थे तो पौलुस ने सीलास को अपना सहमर्की के रूप में चुना था, जो सिलवानुस भी कहलाता है।
   1. सीलास का बाइबल में पहली बार उल्लेख प्रेरि. 15:22 में हुआ है, जहाँ उसे यरूशलेम की कलीसिया का भाइयों में मुखिया कहा गया है।
   2. वह भविष्यद्वक्ता भी था (देखें, प्रेरि. 15:32)
   3. वह पौलुस की भाँति एक रोमी नागरिक था (देखें, प्रेरि. 16:37)
   4. सीलास यहूदा बरसब्बा के साथ यरूशलेम की कलीसिया की ओर से जांच पड़ताल के लिए अन्ताकिया भेजा गया (देखें, प्रेरि. 15:22,30-35)।
   5. 2 कुरि. 1:19 में पौलुस उसकी प्रशंसा करता है और कई पत्रों में उसका उल्लेख करता है।
   6. आगे चलकर वह पतरस के साथ पत्र-लेखन कार्य में जुट गया (1 पत. 5:12)
   7. लूका उसे सीलास कहता है परन्तु पौलुस और पतरस उसे सिलवानुस कहते हैं।

C. तीमुथियुस भी पौलुस का सहकर्मी था:
   1. पौलुस लुस्त्रा में उससे मिला था और उसकी पहली मिश्नरी यात्रा के दौरान विश्वासी बना था।
   2. तीमुथियुस आधा यूनानी और आधा यहूदी था; उसका पिता यूनानी और माता यहूदी विश्वासी थी। पौलुस चाहता था कि वह यहूदियों को सुसमाचार सुनाए।
   3. पौलुस ने उसका खतना करवाया ताकि वह यहूदियों के मध्य सेवा कर सके।

4. तीमुथियुस का उल्लेख, 2 कुरिन्थियों, कुलुस्सियों, एवं 2 थिस्सलुनीकियों तथा फिलेमोन की पत्रियों की प्रस्तावनाओं में हुआ है।
5. पौलुस उसे अपना पुत्र मानता था (देखें, 1 तीमु. 1:2; 2 तीमु. 1:2; तीतुस 1:4)।
6. पौलुस के पत्रों के प्रवाह से ज्ञात होता है कि तीमुथियुस युवा और डरपोक था। फिर भी पौलुस को उस पर बड़ा भरोसा था (देखें, 1 कुरि. 4:17; फिलि. 2:9)।

D. पौलुस के अन्य सहकर्मियों और साथियों का भी यहाँ पर उल्लेख करना उचित होगा जब बाद में थिस्सलुनीके आए और पौलुस के साथ सेवा में जुट गए। उनमें अरिस्तर्खुस (प्रेरित 19:29; 20:4; 27:2) सिकुन्दुस (प्रेरि. 20:4) तथा देमास जो संभवतः थिस्सलुनीके का था (देखें, फिले. 24; 2 तीमु. 4:10) उसके साथ सेवा में सहभागी रहे।

नगर में पौलुस की सेवकाई

A. थिस्सलुनीके नगर में पौलुस ने अपनी सेवकाई के पुराने तरीके को अपनाया कि सबसे पहले यहूदियों के पास जाए। वह तीन सब्त तक आराधनालयों में गया और प्रचार किया। उसका मूल संदेश यह था, ‘‘यीशु ही मसीह है।’’ उसने पुराने नियम से प्रमाण दिए कि मसीह को दुख उठाना अवश्य था (देखें, उत्पत्ति 3:15़़; यशा. 53,) और वह राजनैतिक सांसारिक मसीह नहीं है। पौलुस ने पुनरुत्थान पर भी बल दिया और उद्धार पाने का सबको निमन्त्रण दिया। उसके द्वारा यीशु का स्पष्ट प्रचार किया गया कि वह पुराने नियम का प्रतिज्ञात मसीह है जो सबका उद्धारकर्ता है।

B. उसके प्रचार का परिणाम यह हुआ कि कुछ यहूदी लोग, अधिकांश भक्त अन्यजाति और बहुत सी सम्माननीय स्त्रियों ने यीशु को अपना प्रभु और उद्धारकर्ता ग्रहण किया। इस कलीसिया को जो पत्र पौलुस ने बाद में लिखा उसे समझने में इन सब हृदय-परिवर्तन करने वाले लोगों का विश्लेषण करना बड़ा ही अर्थपूर्ण है।

C. अधिकांश कलीसियाओं में अधिकतर सदस्य अन्यजाति थे जैसाकि दोनों पत्रियों से पता चलता है कि उनमें पुराने नियम के संकेत नहीं पाए जाते हैं। अन्यजातियों ने तुरन्त यीशु को अपना उद्धारकर्त्ता ग्रहण किया, इसके कुछ कारण थे:
1. उनके पारम्परिक धर्मों में अन्धविश्वास पाया जाता था जिसमें कोई सामर्थ नहीं थी। थिस्सलुनीके नगर आलंपस पर्वत के नीचे बसा था और सभी जानते थे कि पर्वत की चोटियों पर खालीपन है।
2. सुसमाचार सब के लिए उपलब्ध था
3. मसीही धर्म में यहूदियों का राष्ट्रवाद सम्मिलित नहीं था। यहूदीवाद ने अपने नैतिक स्तर और एकेश्वरवाद से बहुतों को आकर्षित किया था, परन्तु साथ ही बहुतों को अपनी प्रतिकूल विधियों द्वारा (जैसे खतना) और अपनी राष्ट्रीय अवधारणाओं द्वारा खेदित भी किया था।

D. बहुत सी प्रमुख स्त्रियों ने भी मसीही धर्म को स्वीकार किया क्योंकि इन स्त्रियों में अपनी योग्यताओं के अनुसार धार्मिक चुनाव करने की क्षमता थी। मकिदुनिया और एशिया माइनर में स्त्रियाँ शेष यूनानी-रोमी संसार की अपेक्षा अधिक स्वतन्त्र थीं ;सर एम. रैम्जे, सेंट पाल द टैवलर एण्ड रोमन सिटिजन, न्यू यार्कः जी.पी. पुटनाम सन्स, 1896, पेज 227। (Sir Wm. M. Ramsay, *St. Paul the Traveler and Roman Citizen*, New York: G. P. Putnam's Sons, 1896, p. 227) फिर भी निर्धन वर्ग की स्त्रियाँ, हालांकि स्वतन्त्र थीं, तौभी अभी अन्धविश्वास और बहुईश्वर वाद का शिकार थी (रैम्जे, पेज 229)।

E. थिस्सलुनीके में लम्बे समय तक रहने से, बहुतों को समस्या अनुभव होती है:

1. 1 थिस्स. 17:2 बताता है कि पौलुस तीन सब्त तक थिस्सलुनीके में रहकर यहूदियों से वाद-विवाद करता रहा।
2. 1 थिस्स. 2:7-11 बताता है कि पौलुस ने वहाँ रात-दिन काम-धन्धा किया और सुसमाचार सुनाया। उसका धन्धा तम्बू बनाने का था जैसाकि अनेक विद्वानों का विचार है।
3. फिलि. 4:16 उसके और अधिक लम्बे समय तक रहने की पुष्टि करता है क्योंकि पौलुस ने फिलिप्पी की कलीसिया की ओर से अनेक बार दान सहयोग थिस्सलुनीके में रहते हुए प्राप्त किया था। इन दोनों नगरों के बीच का फासला लगभग 100 मील का था। कुछ लोगों का मत है कि पौलुस थिस्सलुनीके में दो या तीन महीने रहा, और तीन सब्त की उसकी सेवकाई यहूदियों के मध्य उसकी सेवकाई की ओर संकेत करता है (शेपर्ड, पेज. 165)
4. उपरोक्त विचार का समर्थन प्रेरि. 17:4 और 1 थिस्स. 1:9 और 2:4 में धर्म परिवर्तन करने वालों के विवरण की भिन्नता करती है, विवरण में मुख्य भिन्नता अन्यजातियों द्वारा मूर्तिपूजा का त्याग है। प्रेरितों के काम में अन्यजाति लोग भक्त यहूदी थे, जो पहले ही मूर्तिपूजा त्याग चुके थे। संदर्भ पढ़कर पता चलता है कि पौलुस की मूर्तिपूजक अन्यजातियों में यहूदियों की अपेक्षा अधिक विस्तृत सेवा हो सकती है।
5. यह विस्तृत सेवा कब आरम्भ हुई, कुछ नहीं कहा जा सकता है, क्योंकि पौलुस सदैव पहले यहूदियों के पास जाता था और जब वे उसका सन्देश नहीं सुनते थे और विरोध करते थे, तभी वह अन्यजातियों की ओर जाता था। जब अन्यजातियों ने बड़ी संख्या में सुसमाचार ग्रहण किया तो यहूदी क्रोधित हो उठे और नगर की भीड़ के साथ मिलकर उपद्रव किया।

F. इसी उपद्रव के कारण पौलुस ने यासोन का घर छोड़कर तीमुथिमुस और सीलास के साथ स्वयं को कहीं छिपा लिया अथवा जब भीड़ उसे ढूंढ़ती हुई यासोन के घर पर चढ़ आई, तो वह वहाँ नहीं था। लोग यासोन को हाकिमों के पास घसीट ले गये और हाकिमों ने जमानत लेकर यासोन को छोड़ दिया। इस उपद्रव के कारण पौलुस को रातोंरात नगर छोड़कर बिरीया भाग जाना पड़ा। फिर भी कलीसिया इन सतावों के बीच भी मसीह की गवाही देती और विश्वास में दृढ़ होती गई।

शब्दों और वाक्यांशों का अध्ययन

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 17:1-9

[1]फिर वे अम्फिपुलिस और अपुल्लोनिया होकर थिस्सलुनीके में आए, जहाँ यहूदियों का एक आराधनालय था। [2]पौलुस अपनी रीति के अनुसार उनके पास गया, और तीन सब्त के दिन पवित्रशास्त्रों से उनके साथ वाद-विवाद किया; [3]और उनका अर्थ खोल खोलकर समझाता था कि मसीह को दुःख उठाना, और मरे हुओं में से जी उठना, अवश्य था; और "यही यीशु जिसकी मैं तुम्हें कथा सुनाता हूँ, मसीह है।" [4]उनमें से कितनों ने, और भक्त यूनानियों में से बहुतों ने, और बहुत सी कुलीन स्त्रियों ने मान लिया, और पौलुस और सीलास के साथ मिल गए। [5]परन्तु यहूदियों ने डाह से भरकर बाजारू लोगों में से कुछ दुष्ट मनुष्यों को अपने साथ में लिया, और भीड़ इकट्ठी करके नगर में हुल्लड़ मचाने लगे, और यासोन के घर पर चढ़ाई करके उन्हें लोगों के सामने लाना चाहा। [6]उन्हें वहाँ न पाकर वे यह चिल्लाते हुए यासोन और कुछ भाइयों को नगर के हाकिमों के सामने खींच लाए, "ये लोग जिन्होंने जगत को उलटा-पुलटा कर दिया है, यहाँ भी आ गए हैं। [7]यासोन ने उन्हें अपने यहाँ उतारा है। ये सब के सब यह कहते हैं कि यीशु राजा है, और कैसर की आज्ञाओं का विरोध करते हैं।" [8]उन्होंने लोगों को और नगर के हाकिमों को यह सुनाकर घबरा दिया। [9]इसलिये उन्होंने यासोन और बाकी लोगों से मुचलका लेकर उन्हें छोड़ दिया।

17:1 "अम्फिपुलिस और अपुल्लोनिया होकर" ये दोनों नगर इग्नेशियन हाईवे पर बसे हुए थे जो राष्ट्रीय राजमार्ग था। यह पूर्व और पश्चिम को जोड़ने वाला 500 मील लम्बा राजमार्ग था। थिस्सलुनीके की यह मुख्य सड़क थी।

▪ **“थिस्सुनीके में आए”** इस अध्ययन का परिचय देखें।

▪ **“जहाँ एक आराधनालय था”** पौलुस की सेवकाई का तरीका व क्रम पहले आराधनालय में जाना था (देखें, प्रेरि. 17:2; 3:26; 13:46; रोमि. 1:16; 2:9-10; प्रेरि. 9:20; 13:5,14; 14:1; 17:2,10,17; 18:4,19; 19:18)। यह संभवतः इसलिए था क्योंकि वह सोचता था कि सुसमाचार सुनने का पहला हक यहूदियों का है (देखें, रोमि. 1:16) यह पुराने नियम की भविष्यद्वाणी थी। आराधनालय में अन्य भक्त लोग भी आते थे जो पुराना नियम जानते थे और उसका आदर करते थे।

17:2 “तीन सब्त के दिन” इसका अर्थ होता है कि वह इस आराधनालय में केवल तीन सब्त के दिन बोला। वह संभवतः इस नगर में तीन सप्ताह से ज्यादा तक रहा (देखें फिली. 4:15), परन्तु ज्यादा समय तक नहीं रहा।

▪ **“पवित्र शास्त्रों से उनके साथ वाद-विवाद किया”** पौलुस ने मसीह संबंधी भविष्यद्वाणियों को यीशु की शिक्षाओं, उसकी मृत्यु व पुनरुत्थान तथा उसके जीवन पर लागू किया। उसने यह नमूना स्तिफनुस (प्रेरित 7) तथा अपनी रब्बीयों के प्रशिक्षण से लिया।

17:3

NASB	**“समझाता और प्रमाण देता था”**
NKJB	**“अर्थ समझाता और प्रमाण प्रस्तुत करता था”**
NRSV, JNB	**“अर्थ समझते हुए प्रमाणित करता था”**
TEV	**“पवित्रशास्त्र समझाता, और उसके आधार पर उन्हें प्रमाण देता था”**

वह पहला शब्द डियानोइग dianoigō है, जिसका प्रयोग यीशु द्वारा इम्मॉस के मार्ग पर दोनों के लिए पवित्रशास्त्र को खोलने के लिए किया जाता है (देखें लूका 24:32,45)। इसका उपयोग यीशु द्वारा उनकी आँखें खोलने के लिए भी किया गया था ताकि वे उसे पहचान सकें (देखें लूका 24:31)। इसी शब्द का प्रयोग प्रेरितों के काम 16:14 में परमेश्वर द्वारा लुदिया के हृदय को सुसमाचार को समझने के लिए किया गया था।

दूसरा शब्द जो यहाँ प्रयुक्त हुआ वह है “पैरातीथैमी” (*paratithēmi*) जो अक्सर लूका के लेखों में किसी के सामने भोजन परोसने के संदर्भ में प्रयुक्त हुआ है, परन्तु यहां उसका अर्थ है “किसी के सामने सत्य प्रस्तुत करना अथवा “सौंपना” (देखें. प्रेरि. 14:23; 20:32)। लूका में दो बार (देखें, लूका 12:48; 23:46) यह शब्द किसी को कुछ सौंपने के संदर्भ में प्रयुक्त हुआ है। पौलुस ने सावधानी और सर्तकता के साथ सुनने वालों को सुसमाचार सौंपा। (अर्थात् उनके पास जमा किया, सौंपा (“पार थेके”) (देखें, *parathēkē* 1 तीमु 6:20; 2 तीमु. 1:12,14)। कुछ ने सुसमाचार सुना और प्रत्युत्तर दिया जैसे कुछ यहूदी, कुछ अन्यजाति भक्त और कुछ कुलीन स्त्रियाँ इत्यादि।

▪ **“मसीह को दुख उठाना”** यहां यूनानी शब्द कपम (*dei*) प्रयुक्त हुआ जिसका अर्थ है मसीह को दुख उठाना अवश्य है (देखें प्रेरि. 1:16 में टिप्पणी) दुख उठाने वाले मसीह की भविष्यद्वाणी पुराने नियम में की गई थी। (देखें, उत्प. 3:15; भजन 22; यशा. 52:13-53:12; जकर्याह 12:10), परन्तु रब्बियों ने इसे जाना और समझा नहीं। मसीह के दुख उठाने पर प्रेरितों ने बल दिया (देखें, लूका 24:46; प्रेरि. 3:18; 26:23; 1 पत. 1:10-12)। यह सच्चाई यहूदियों को बड़ी बाधा डालती थी (देखें, 1 कुरि. 1:22-23)। प्रेरि. 3:18 में टिप्पणी देखें।

▪ **“मरे हुओं में से जी उठना”** पतरस, स्तिफनुस और पौलुस तीनों के उपदेशों में यह मूल बात थी (यह सुसमाचार प्रचार, केरिगमा का हिस्सा था) (देखें, प्रेरि. 2:14 में विशेष टिप्पणी)। यह वाक्यांश सुसमाचार का आधार है (देखें, 1 कुरि. 15)।

▪ **“यही यीशु जिसकी मैं कथा सुनाता हूँ मसीह है”** इस वाक्य के अंतिम शब्द के विषय में यूनानी मूलपाठों में भिन्नताएँ पाई जाती हैं:

1. “यीशु मसीह” - MS B
2. “मसीह यीशु”- कुछ वुलगाता और काप्टिक अनुवादों में।(some Vulgate and the Coptic translations)
3. “मसीह यीशु”- MSS P^{74}, A, D
4. “यीशु मसीह”- MS א
5. “यीशु जो मसीह है”- MS E तथा बोहायरिक काप्टिक वर्ज़न (MS E and Bohairic Coptic version)
6. “मसीह”-द जार्जीयन वर्ज़न (he Georgean version)

बहुत से विद्वान न. 1 को सही मानते हैं (वेटिकानुस) क्योंकि यह सामान्य है (UBS[4] इसे C श्रेणी में रखता है)।

इस आराधनालय में “मसीह” का अर्थ पुराने नियम का प्रतिज्ञात अभिषिक्त जन अर्थात् मसीह है। (देखें, प्रेरि. 2:31 में विशेष टिप्पणी)। पुराने नियम में तीन लोगों के अभिषिक्त पद होते थे: राजा लोग, नबी लोग, तथा पुरोहित (याजक) लोग। यीशु ने इन तीनों पदवियों की परिपूर्ति की (देखें, इब्रानियों 1:1-3)। यह अभिषेक परमेश्वर के चुनाव और सेवाकार्य के योग्य ठहराने का प्रतीक था। देखें विशेष शीर्षक: बाइबल में अभिषेक (बी डी बी 603) (BDB 603) प्रेरि 4:27 के अन्तर्गत देखें।

प्रारम्भिक कलीसिया ने बार बार प्रचार करते हुए कहा कि यीशु नासरी ही परमेश्वर का प्रतिज्ञात मसीह है (देखें, प्रेरि. 2:31-32; 3:18; 5:42; 8:5; 9:22; 17:3; 18:5,28)। उन्होंने उसी बात को कहा जो उन्होंने स्वयं अपने विषय में यीशु द्वारा सुनी थी कि वह मसीह है।

17:4 “मिल गए” यह यूनानी क्रिया शब्द नए नियम में केवल यहीं पर पाया जाता है। शाब्दिक रूप से इसका अर्थ है “चिट्ठियाँ डालकर चुन लेना।” इस संदर्भ में इसका अर्थ है “अनुगमन करना” अथवा “मिल जाना”। चिट्ठियाँ डालना, परमेश्वर की इच्छा जानने का पुराने नियम का तरीका था। परमेश्वर ने लोगों के मनों

1. पूर्वसर्ग (*pros*)
2. जड़ (*klēpoō*)
3. निष्क्रिय आवाज से तात्पर्य है एक दिव्य क्रिया

को खोला जैसे उसने लुदिया के मन को खोला था (देखें प्रेरि. 16:24; साथ ही यही विचार देखें 1 पत. 5:3 में)

▪ “**परमेश्वर का भय मानने वाले यूनानी**” ये यहूदीवाद के अनुयायी थे जो अभी पूर्ण रूप से यहूदी नहीं बने थे और न हृदय परिवर्तन किया था जिसमें ये बातें शामिल थीं:

1. खतना करवाना
2. अपने आप दो तीन गवाहों के सामने बपतिस्मा लेना
3. जब संभव हो तो यरूशलेम के मंदिर में जाकर बलिदान चढ़ाना

▪ **“और बहुत सी”** यह लूका की लेखन शैली है। वह बहुत से विशेष कथन लिखता है (देखें, प्रेरि. 12:18; 15:2; 19:11, 23, 24; 20:12; 26:19, 26; 27:20; 28:2) ये कथन आमतौर पर प्रतिवाद या खण्डन करने के रूप में होते हैं परन्तु यहां वाक्य के अन्त में यह शब्द बल देने के लिए उसने रखा है कि बहुत सी स्त्रियों सहित लोग पौलुस व सीलास के साथ हो लिए।

▪ **“अगुआ स्त्री”** मकिदुनिया की महिलाओं को अन्य मैडीटेरियन संसार की तुलना में अधिक स्वतन्त्रता प्राप्त थी, जैसे लुदिया। जो पिसिदिया के अंताकिया में हुआ था वही यहां पर होता है (देखें, प्रेरि. 13:43, 45, 50)। पश्चिमी यूनानी मूलपाठों में प्रेरि. 17:4 में यह वाक्यांश भी जोड़ दिया गया है कि कुलीन स्त्रियाँ प्रसिद्ध और अग्रणी मनुष्यों की पत्नियाँ थीं।

17:5 “यहूदियों डाह से भर गए” यहूदियों ने विश्वास नहीं किया, यह मेरे लिए बहुत दुख की बात है (देखें 14:2), पर डाह (प्रेरित 5:17) करना तो घातक बात है। पौलुस की तरह वे धार्मिक उत्साह से भरकर डाह नहीं कर रहे थे,

बल्कि इसलिए डाह से भर गए थे क्योंकि बहुत से लोग विश्वास लाकर हृदय-परिवर्तन करते थे, (देखें, प्रेरि. 13:45) उनकी डाह का कारण प्रेरितों का प्रभावशाली उपदेश नहीं था, परन्तु उद्धार पाने वालों की बढ़ती हुई संख्या थी।

लूका अक्सर ''यहूदी'' शब्द निन्दात्मक और नकारात्मक अर्थों में प्रयुक्त करता है (देखें, प्रेरि. 12:3; 13:45; 14:2; 17:13) जैसाकि पौलुस भी करता है (देखें, 1 थिस्स. 2:15-16)। जो लोग सुसमाचार का विरोध करते व सामना करते थे उनका यह पर्यायवाची शब्द बन गया था।

NASB	**''बाजारों से आए हुए दुष्ट लोग''**
NKJV	**''बाजारों के कुछ बुरे लोग''**
NRSV	**''बाजारों के कुछ गुण्डे''**
TEV	**''गलीकुंचों के लोफर''**
NJB	**''बाजारों के बदमाश गिरोह''**

यह शब्द ऐसे लोगों के बारे में बताता है जो बिना काम काज से बाजारों में घूमते फिरते रहते हैं, बेकार और सुस्त लोग जो किसी काम के नहीं होते।

▪ **''एक भीड़''** नये नियम में ये शब्द केवल यहीं पर पाए जाते हैं, यूनानी भाषा के साहित्य में ये शब्द बहुत कम प्रयुक्त होते हैं। ये सप्तूजैन्त में भी नहीं पाए जाते हैं। ''भीड़'' शब्द का प्रयोग सन्दर्भ के अनुसार अर्थ स्पष्ट करने के लिए किया गया है। लूका के पास शब्दों का प्रचुर भण्डार था क्योंकि वह एक विद्वान मनुष्य था। उसे चिकित्सा व समुद्र संबंधी शब्दों का अच्छा ज्ञान था।

17:6 ''यासोन को खींचना'' परन्तु हो सकता है कि । कुछ लोगों का अनुमान है कि रोमि. 16:21 में जिस यासोन का उल्लेख हुआ है वह यही यासोन है, परन्तु यह निश्चित नहीं है।

▪ **"और कुछ भाइयों"** वाक्य रचना से पता चलता है कि यासोन अभी विश्वासी नहीं बना था। उसने मिश्नरी टीम का अपने घर में कैसे और क्यों स्वागत किया, यह अज्ञात है।

1. पौलुस या सीलास ने उसका कोई काम किया हो।
2. उन्होंने उससे किराए पर स्थान लिया हो।
3. वे उसके घर में रहते हों।

प्रेरि. 17:7 में क्रिया शब्द स्वागत का अर्थ है, ''अतिथि के समान'' स्वागत करना (देखें, लूका 10:38; 19:6; याकूब 2:25)। कुछ लोगों का अनुमान है कि रोमि.

▪ **''नगर के हाकिमों''** इस शब्द का अर्थ है नगर के अगुवे। मकिदुनिया के स्थानीय सरकारी लोगों को हाकिम कहा जाता था। यह शब्द बहुत कम प्रयोग में लाया जाता है। नए नियम में इसका प्रयोग केवल यहीं पर और प्रेरि. 17:8 में हुआ है। यूनानी साहित्य में इस शब्द का प्रयोग बहुत कम है; इसका लूका द्वारा प्रयोग किया जाना उसके ज्ञान को दर्शाता है और प्रेरितों के काम पुस्तक की इतिहासिकता का समर्थन करता है (एन ए एस बी स्टडी बाइबल, पेज 1607, परन्तु यह (NASB Study Bible, p. 1607) शब्द थिस्सलुनीके के इग्नेशियन हाईवे पर बने मेहराब पर यूनानी भाषा में खुदे पाए गए हैं)। जबकि यह शब्द बहुत कम प्रयोग में लाया जाता है, लूका ने इसे ठीक ठाक लिखा, वह वास्तव में महान इतिहासकार था। उसमें विश्वास था और जो उसने लिखा, विश्वासी मानते हैं कि पवित्र आत्मा की प्रेरणा से लिखा।

NASB	**''संसार में उथल-पुथल मचा दी है''**
JKJV, NRSV, NJB	**''संसार को उलटा-पुलटा कर दिया है''**
TEV	**''सब जगह समस्या उत्पन्न कर दी है''**

इसका अर्थ है उन पर राजद्रोह का अभियोग लगाया गया (देखें, प्रेरि. 21:38; साथ ही 16:20 और 24:5 पर भी ध्यान दें)। यह बड़ा गम्भीर अभियोग था। गला. 5:12 में जो कुछ पौलुस ने कहा उस पर ध्यान दें। 1 थिस्स. 2:14-16 से हमें पता चलता है कि थिस्सलुनीके की कलीसिया ने बहुत सताव सहा था।

कोई आश्चर्य करता है कि क्या यह अतिशयोक्ति है या वे यहूदी धर्म के इस नए संप्रदाय के प्रसार के बारे में जानते थे।

17:7 "कैसर की आज्ञाओं का विरोध करते हैं" कुछ विद्वान सोचते हैं कि इसका संबंध क्लोदियुस (41-54 ई.) की उस राजाज्ञा से है जो उसने ईस्वी 49-50 में रोम में यहूदी आराधना के विरुद्ध निकाली थी। इस राजाज्ञा का परिणाम यह हुआ कि यहूदी लोग रोम छोड़कर भाग खड़े हुए। परन्तु मैं सोचता हूँ कि सन्दर्भ से स्पष्ट है कि यह सुसमाचार प्रचार की ओर संकेत करता है। किसी रोमी का धर्म परिवर्तन करना अवैध ठहरा दिया गया था।

■ **"ये कहते हैं कि यीशु राजा है"** संभवतः यह अभियोग इन कारणों से लगाया गया:

1. थिस्सलुनीके में पौलुस ने अपने प्रचार में यीशु के दूसरे आगमन पर बहुत अधिक बल दिया था
2. जिन शब्दों का प्रयोग मसीही लोग यीशु के लिए करते थे, उन्हीं शब्दों का प्रयोग रोमी लोग कैसर के लिये करते थे जैसे, राजा, प्रभु, उद्धारकर्त्ता इत्यादि।

17:8
NASB **"नगर के हाकिमों"**
NASB **"नगर के शासकों "**
NASB **"नगर के अधिकारी"**
NASB **"नगर के काउन्सलर"**

यह यूनानी शब्द "पौलीटार्कस" है अर्थात् हाकिम, जो मकिदुनिया नगर के हाकिम एक वर्ष के लिए नियुक्त किये जाते थे। ये हाकिम रोमी नहीं थे परन्तु स्थानीय नेता होते थे (AB Vol. 5,pp. 384-389)

17:9 "एक वादा" संभवतः यह बहुत बड़ी धनराशि थी जो जमानत के तौर पर उन नए विश्वासियों से वसूली गई (देखें, प्रेरि. 17:4,6,10), ताकि सुनिश्चित हो सके कि पौलुस अब नगर में सुसमाचार प्रचार दुबारा नहीं करेगा। कुछ लोग इसका सम्बन्ध 1 थिस्स. 2:18 से बताते हैं।

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 17:10-15
[10]भाइयों ने तुरन्त रात ही रात पौलुस और सीलास को बिरीया भेज दिया; और वे वहाँ पहुँचकर यहूदियों के आराधनालय में गए। [11]ये लोग तो थिस्सलुनीके के यहूदियों से भले थे, और उन्होंने बड़ी लालसा से वचन ग्रहण किया, और प्रतिदिन पवित्र शास्त्रों में ढूँढ़ते रहे कि ये बातें योंही हैं कि नहीं।
[12]इसलिये उनमें से बहुतों ने, और यूनानी कुलीन स्त्रियों में से और पुरुषों में से भी बहुतों ने विश्वास किया।
[13]किन्तु जब थिस्सुलीके के यहूदी जान गए कि पौलुस बिरीया में भी परेश्वर का वचन सुनाता है, तो वहाँ भी आकर लोगों को उसकाने और हलचल मचाने लगे। [14]तब भाइयों ने तुरन्त पौलुस को विदा किया कि समुद्र के किनारे चला जाए; परन्तु सीलास और तीमुथियुस वहीं रह गये [15]पौलुस को पहुँचानेवाले उसे एथेन्स तक ले गए; और सीलास और तीमुथियुस के लिये यह आज्ञा पाकर विदा हुए कि वे उसके पास शीघ्र से शीघ्र आएँ।

17:10 "बिरीया" पौलुस के दिनों में यह एक बहुत बड़ा नगर था जो पश्चिम की ओर लगभग 60 मील तक फैला था और इग्नेशियन हाइवे के बिल्कुल निकट था। यहाँ पर ऐसा यहूदी समाज भी था जो पौलुस की बातें हर्षपूर्वक सुनता है और जो बातें वह पुराने नियम से पेश करता था, उसे वे जांचते भी थे।

▪ **“वे यहूदियों के आराधनालय में गए”** सारी रात यात्रा करने बाद भी वे वहाँ पहुँचकर तुरन्त आराधनालय में गए। संभव है वह सब्त का दिन हो अथवा शायद वे जानते थे कि उनके विरोधी उनका पीछा करेंगे। उन्होंने समय नष्ट नहीं किया। आधुनिक पश्चिमी विश्वासियों ने सुसमाचार प्रचार की प्राथमिकता और आवश्यकता को बिसरा दिया है।

17:11 “ये लोग ज़्यादा भले थे” ये शब्द धनी, शिक्षित और उच्च श्रेणी के लोगों के लिये प्रयुक्त किये जाते थे (देखें, सप्तूजैन्त की LXX अय्यूब की पुस्तक 1:3; लूका 19:12)। परन्तु यह परिभाषा बिरीया के यहूदियों पर ठीक नहीं बैठती है क्योंकि वे धनी, शिक्षित और उच्च श्रेणी के नहीं थे तोभी प्रतीकात्मक रूप से भले लोग थे क्योंकि नये विचार सुनने और उनको जाँचने-परखने के इच्छुक थे। संभव है जो उच्च नागरिक उस आराधनालय में उपासना करने आते थे उनमें यही विशेषता पाई जाती हो (देखें, प्रेरि. 17:12)।

▪ **“प्रतिदिन पवित्र शास्त्रों में ढूँढ़ते रहे कि ये बातें योंही हैं कि नहीं”** सच्चाई जानने का तरीका यही होता है। पौलुस द्वारा प्रचार का तरीका था कि वह पुराने नियम से उद्धरण लेकर उन्हें समझता और यीशु पर उन्हें लागू करता था।
यहाँ वाक्यांश “ये बातें यों ही हैं कि नहीं” कुछ सकारात्मक कार्य करने का संकेत देता है कि जो बातें सत्य से अलग हैं उन्हें हटा दें और सकारात्मक कदम उठाएँ; अतः कुछ लोगों ने सुसमाचार ग्रहण किया और कुछ ने नहीं, (देखें, प्रेरि. 17:27; 20:16; 24:19; 27:12)।

17:12 “बहुतों ने विश्वास किया” अर्थात् आराधनालय के बहुत से यहूदियों ने और परमेश्वर का भय रखने वाले लोगों ने विश्वास किया। प्रेरि. 3:16 और 2:40 में विशेष टिप्पणियाँ देखें।

▪ **“कुलीन”** यह भले और प्रतिष्ठित लोगों का मिश्रित शब्द है। यह शब्द सम्मानित, प्रतिष्ठित और प्रभावशाली लोगों के लिये प्रयुक्त किया जाता था (देखें, प्रेरि. 13:50 तथा मरकुस 15:43, अरिमतिया का यूसुफ)।

17:13 यह पौलुस के विरोधियों की जानबूझकर की गई कार्यवाही को बताता है। इनमें बहुत से यहूदी धार्मिक उन्माद में भरकर यह कार्य कर रहे थे जैसाकि शाऊल किया करता था। उनके तरीके उनकी आत्मिक दशा को प्रकट करते हैं

17:14 “तब भाइयों ने तुरन्त पौलुस को विदा किया कि समुद्र किनारे चला जाए” इसका यह अर्थ हो सकता हैः-

1. ताकि पौलुस जहाज द्वारा एथेन्स जा सके।
2. या वह एथेन्स का मार्ग पकड़ सके।

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 17:16-21
[16]जब पौलुस एथेन्स में उनकी बाट जोह रहा था, तो नगर को मूरतों से भरा हुआ देखकर उसका जी
जल गया। [17]अतः वह आराधनालय में यहूदियों और भक्तों से, और चैक में जो लोग उससे मिलते थे उनसे
हर दिन वाद-विवाद किया करता था। [18]तब इपिकूरी और स्तोईकी दार्शनिकों में से कुछ उससे तर्क करने
लगे, और कुछ ने कहा, “यह बकवादी क्या कहना चाहता है?” परन्तु दूसरों ने कहा, “वह अन्य देवताओं
का प्रचारक मालूम पड़ता है” - क्योंकि वह यीशु का और पुनरुत्थान का सुसमाचार सुनाता था। [19]तब वे
उसे अपने साथ अरियुपगुस पर ले गये और पूछा, “क्या हम जान सकते हैं कि यह नया मत जो तू सुनाता
है, क्या है? [20]क्योंकि तू अनोखी बातें हमें सुनाता है, इसलिये हम जानना चाहते हैं कि इनका अर्थ क्या
है।” [21](इसलिये कि सब एथेंसवासी और परदेशी जो वहाँ रहते थे, नई-नई बातें कहने और सुनने के
सिवाय और किसी काम में समय नहीं बिताते थे।)

17:16 ''एथेन्स'' यह पुरानी यूनानी सभ्यता का महान् केन्द्र था और अभी भी रोमी संसार का बौद्धिक केन्द्र है। यह नगर परम्पराओं, अन्धविश्वासों और अनैतिकता में डूबा पड़ा था।

- **''उसकी आत्मा''** अथवा ''आत्मा जल गई''। यूनानी लिपि के नए नियम में:
  1. शब्दों के बीच में स्थान अथवा स्पेस नहीं है।
  2. उसमें विराम चिन्ह-विधान नहीं है
  3. सभी अक्षर कैपिटल हैं अर्थात् बड़े अक्षर हैं
  4. पदों और अध्यायों का विभाजन नहीं है

इस कारण से संदर्भ निर्धारित कर सकता है कि कहाँ बड़े अक्षर की आवश्यकता है। आमतौर पर निम्न बातों के लिए कैपिटल अक्षर प्रयुक्त किया जाता हैः-

1. देवताओं के नामों के लिए
2. स्थानों के नामों के लिए
3. व्यक्तिगत नामों के लिए

शब्द ''आत्मा'' इन बातों का इशारा कर सकता है:

1. पवित्र आत्मा (देखें, मरकुस 1:5)
2. व्यक्तिगत मानवीय चेतना (देखें, मरकुस 8:12; 14:38)
3. आत्मिक संसार का प्राणी (जैसे अशुद्ध आत्मा, देखें, मरकुस 1:23)

इस सन्दर्भ में यह पौलुस के व्यक्तित्व की ओर संकेत करता है।

पौलुस के लेखों में अनेक स्थलों पर इस व्याकरणिक निर्माण प्रयोग यह बताने के लिये किया गया है कि पवित्र आत्मा किसी मनुष्य के विश्वासी जीवन में कौन सी बातें उत्पन्न करता है:

1. ''दासत्व का आत्मा'' नहीं, परन्तु ''लेपालकपन का आत्मा'' पाया है (रोमियों 8:15)
2. ''प्रेम और नम्रता की आत्मा'' (1 कुरि. 4:21)
3. ''विश्वास की आत्मा'' (2 कुरि. 4:13)
4. ''ज्ञान और प्रकाशन की आत्मा'' (इफि. 1:17)

संदर्भ पढ़ने से स्पष्ट ज्ञात होता है कि पौलुस ने आत्मा शब्द का प्रयोग स्वयं के बारे में प्रयोग किया अथवा अन्य मनुष्यों के लिए (देखें, 1 करि. 2:11; 5:4; 2 कुरि. 2:13; 7:13; रोमि. 1:9; 8:16; फिलि. 4:23)।

NASB ''अपने अन्दर क्रोध से भर गया''
NKJV ''अपने अन्दर उत्तेजित हो गया''
NRSV ''बहुत खेदित हो गया''
TEV ''अत्यन्त व्याकुल हो उठा''
NJB ''विद्रोह से भर गया''

यहाँ यूनानी शब्द ''पैराक्सूनो'' (*paroxunō)* प्रयुक्त हुआ है, जिसका शाब्दिक अर्थ है ''तेज करना'' परन्तु यहाँपर प्रतीकात्मक रूप से इसका अर्थ है उत्तेजित होना, भड़क जाना। यूहन्ना मरकुस के संबंध में पौलुस और बरनबास के मध्य झगड़े को व्यक्त करने के लिए इसी शब्द का संज्ञा रूप प्रयुक्त किया गया है (देखें, प्रेरि. 15:39)। इब्रा. 10:24 में इस शब्द का प्रयोग सकारात्मक रूप में हुआ है।

17:17 पौलुस सभी प्रकार के लोगों के प्रति चिन्तित था, चाहे वह यहूदी हो, गैरयहूदी हो, भक्तजन हो या बाजारों में पाए जाने वाले मूर्तिपूजक हों। वह हर समूह के लोगों से बातचीत करने में अलग अलग विधियाँ अपनाता था। यहूदियों और भक्त जनों में वह पुराने नियम का उपयोग करता था परन्तु मूर्तिपूजकों के साथ बातचीत में वह सामान्य आधार ढूँढ़ता था (देखें, प्रेरि. 17:22-31)। कट्टर यहूदियों के साथ वह शास्त्रों पर तर्क वितर्क करता था।

17:18 "इपिकूरी" इस समूह के लोग आनन्द अथवा सुख को जीवन का परम लक्ष्य मानते थे। वे मृत्यु के बाद के जीवन पर विश्वास नहीं रखते थे। उनके जीवन का लक्ष्य था "खाओ पीओ और आनन्द मनाओ; सुखवाद पर उनका यकीन था। वे कहते थे कि देवताओं को मनुष्यों से कोई लगाव नहीं है। एक अथेनी दार्शनिक एपीक्यूरस (341-270 ई. पू.) के नाम पर इनका नाम इपिकूरी पड़ा था, परन्तु उन्होंने इस दार्शनिक के इस विचारों को समझा नहीं। व्यक्तिगत आमोद-प्रमोद और सुख-विलास की अपेक्षा इस दार्शनिक के विचार बड़े ऊँचे थे अर्थात् वह स्वस्थ शरीर और शान्त मन पर जोर देता था। एपिक्यूरस कहा करता था, "यदि आप मनुष्य को प्रसन्न बनाना चाहते हैं तो उसे संपत्ति मत दीजिए, परन्तु उसकी इच्छाएँ दूर कीजिए।" देखें, धार्मिक ज्ञान, वॉल्यूम के न्यूरो स्केफ-हर्ज़ोग एनसिएलोपेडिया। IV, पी 153 (*The Neu schaff-Herzog Encyelopedia of Religious Knowledge,* Vol. IV, P 153)

■ **"स्तोईकी"** यह समूह मानता था कि ईश्वर (1) जगत की आत्मा है अथवा (2) सम्पूर्ण सृष्टि में व्याप्त है (सर्वेश्वरवाद)। वे मानते थे कि मनुष्यों को प्रकृति के साथ मेलमिलाप में रहना चाहिये (अर्थात् देवता के साथ)। सबसे उत्तम बात वे बुद्धि-विवेक पर भरोसा रखना मानते थे। उनका लक्ष्य था कि आत्म संयम, आत्म-सन्तोष और भावनाओं को हर परिस्थिति में नियंत्रण में रखकर जीवन व्यतीत करें। वे मृत्यु के बाद के जीवन पर विश्वास नहीं रखते थे। उनके संस्थापक का नाम जेनो था जो 300 ई. पू. में साइप्रस से एथेन्स में आया था और एक दार्शनिक था, तथा जिसने एथेन्स में शिक्षा दी थी और जिस स्टोआ नामक स्थान पर उसने शिक्षा दी। उसी स्थान के नाम पर उनका नाम स्तोईकी पड़ा।

■ **"आलस्य बकवादी"** यहाँ पर प्रयुक्त यूनानी शब्द उस चिड़िया के लिए प्रयुक्त होता है जो खेत में दाना चुगती है। बाद में प्रतीकात्मक रूप से इस शब्द का प्रयोग भ्रमणकारी उपदेशकों के लिए प्रयोग में आने लगा जो इधर-उधर से सूचनाएँ एकत्रित करके लोगों को बताते फिरते थे। एल्फ्रेड मार्शल अपनी पुस्तक आर.एस.वी. इन्टरलीनीयर में इसका अनुवाद (The *R.S.V. Interlinear* by Alfred Marshall)"अज्ञानी साहित्यिक चोरी करने वाला" करता है। न्यू जेरूसलेम बाइबल में इसका अनुवाद "तोता" किया गया है।

■ **"अजीब देवताओं की घोषणा"** शाब्दिक रूप से विदेशी देवताओं का प्रचारक(देखें 1 कोर. 10:20-21).। ये एथेनी दार्शनिक बहुईश्वरवादी धार्मिक लोग थे।

1. संभव है इन दार्शनिकों ने समझा हो कि पौलुस दो देवताओं के बारे में बता रहा है जेरोम बाइबल कमेन्ट्री, भाग 2, पेज 199 I (*Jerome Biblical Commentary*, vol. 2, p. 199)
    a. स्वास्थ्य की देवी
    b. पुनरुत्थान की देवी
2. यह भी संभव है कि उन्होंने एक को
    a. यीशु (पुरुष)
    b. स्त्री (पुनरुत्थान स्त्रीलिंग संज्ञा है) समझा हो
3. संभव है पौलुस द्वारा प्रयुक्त की गई शब्दावली ही भ्रम उत्पन्न करने का कारण बनी हो कि परमेश्वर तीन व्यक्तियों में पाया जाता है (अर्थात् त्रिएक में, देखें प्रेरि. 2:32 में टिप्पणी)
    a. पिता
    b. पुत्र
    c. पवित्र आत्मा

■ **"क्योंकि वह यीशु का और पुनरुत्थान का सुसमाचार सुनाता था"** सुसमाचार का "दुख उठाने वाला मसीह" यहूदियों के लिए ठोकर का कारण था, तथा "मसीह का पुनरुत्थान" यूनानियों के लिए ठोकर का कारण था (देखें, 1 कुरि. 1:18-25)। देवताओं और मनुष्यों का देह सहित जी उठना यूनानी लोगों की समझ से परे की बात

थी। वे मानते थे कि प्रत्येक मनुष्य में दिव्य अंश पाया जाता है जो शरीर में कैद रहता है। जब यह अंश शरीर से निकलकर वापस देवता में समा जाता है तो मानव का उद्धार होता है।

17:19 ''वह उसे अपने साथ अरियुपगुस पर ले गये'' अरियुपगुस का अर्थ है पर्वत (युद्ध के देवता का पर्वत)। रोमियों के देवतागणों में युद्ध के देवता का नाम मार्स था। एथेन्स के सुनहरे युग में अरियुपगुस इस बौद्धिक नगर का दार्शनिक सभा स्थल था जहाँ नगर के अगुवे इकट्ठा होकर विचार विमर्श करते थे।

जिस प्रकार से प्रेरि. 13:16 क्रमशः में भक्त यहूदियों के लिये पौलुस का भाषण था, उसी प्रकार का यहाँ पर मूर्तिपूजकों के लिये पौलुस के भाषण का नमूना पाया जाता है। पौलुस के भाषण की इन संक्षिप्त बातों के लिए परमेश्वर का धन्यवाद हो।

■ **''क्या हम जान सकते हैं कि यह नया मत जो तू सुनाता है, क्या है''** यहाँ पर बौद्धिक जिज्ञास (प्रेरि. 17:20-21) तथा प्रकाशन के बीच अन्तर देखते हैं। परमेश्वर ने हमें जिज्ञासु बनाया है (देखें, सभो. 1:8-9, 18; 3:10-11), परन्तु मानवीय बुद्धि व ज्ञान शान्ति और आनन्द प्रदान नहीं कर सकता है। केवल सुसमाचार ही आनन्द और शान्ति प्रदान करता है। पौलुस 1 कुरिन्थियों 1 से 4 अध्यायों में मानवीय ज्ञान और परमेश्वर के प्रकाशन के बीच अन्तर पर विचार करता है।

17:19-20 ये शब्द सामाजिक रूप से बहुत विनम्रता पूर्ण हैं। स्थिति को सामान्य बनाने वाले शब्द हैं।

17:21 यह पद अधिकारपूर्ण टिप्पणी प्रतीत होती है। यह पद प्रकट करता है कि प्रेरि. 17:19-20 की विनम्रता सच्ची बौद्धिक खोज नहीं थी, बल्कि एक सांस्कृतिक सनक थी जो एकाएक उत्पन्न हो गई थी। वे केवल सुनकर और बहस आदि करके आनन्द प्राप्त कर रहे थे। वे एथेन्स की प्राचीन परम्परा और गौरव को पुनः जागृत कर रहे थे। दुख की बात तो यह है कि वे मानवीय ज्ञान और दिव्य प्रकाशन के बीच अन्तर नहीं समझ पा रहे थे (यही आज हमारे विश्व-विद्यालयों में होता है)।

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 17:22-31

22तब पौलुस ने अरियुपगुस के बीच में खड़े होकर कहा, ''हे एथेंस के लोगों, मैं देखता हूँ कि तुम हर बात में देवताओं के बड़े माननेवाले हो। 23क्योंकि मैं फिरते हुए जब तुम्हारी पूजने की वस्तुओं को देख रहा था, तो एक ऐसी वेदी भी पाई, जिसपर लिखा था, ''अनजाने ईश्वर के लिए।' इसलिये जिसे तुम बिना जाने पूजते हो, मैं तुम्हें उसका समाचार सुनाता हूँ। 24जिस परमेश्वर ने पृथ्वी और उसकी सब वस्तुओं को बनाया, वह स्वर्ग और पृथ्वी का स्वामी होकर हाथ के बनाए हुए मन्दिरों में नहीं रहता; 25न किसी वस्तु की आवश्यकता के कारण मनुष्यों के हाथों की सेवा लेता है, क्योंकि वह स्वयं ही सब को जीवन और श्वास और सब कुछ देता है। 26उसने एक ही मूल से मनुष्यों की सब जातियाँ सारी पृथ्वी पर रहने के लिये बनाई हैं; और उनके ठहराये हुए समय और निवास की सीमाओं को इसलिये बाँधा है, 27कि वे परमेश्वर को ढूँढ़ें, कदाचित उसे टटोलकर पाएँ, तौभी वह हम में से किसी से दूर नहीं। 28क्योंकि हम उसी में जीवित रहते, और चलते-फिरते, और स्थिर रहते हैं; जैसाकि तुम्हारे कितने कवियों ने भी कहा है, 'हम तो उसी के वंशज हैं।' 29अतः परमेश्वर का वंश होकर हमें यह समझना उचित नहीं कि ईश्वरत्व सोने या रूपे या पत्थर के समान है जो मनुष्य की कारीगरी और कल्पना से गढ़े गए हों। 30इसलिये परमेश्वर ने अज्ञानता के समयों पर ध्यान नहीं दिया, पर अब हर जगह सब मनुष्यों को मन-फिराने की आज्ञा देता है। 31क्योंकि उसने एक दिन ठहराया है, जिसमें वह उस मनुष्य के द्वारा धर्म से जगत का न्याय करेगा, जिसे उसने ठहराया है, और उसे मरे हुओं में से जिलाकर यह बात सब पर प्रमाणित कर दी है।''

17:22 ''तुम बहुत धार्मिक हो'' शाब्दिक रूप से देवताओं का भय मानने वाले हो। इसके ये अर्थ हो सकते हैं (1) नकारात्मक रूप से, ''अन्धविश्वासी'' हो, जैसाकि किंग जेम्स वर्जन में है, अथवा (2) सकारात्मक अर्थों में, ''धार्मिक

बातों का पालन करने में पीछे हो (एन के जे बी, एन जे बी, NKJV, NIVदेखें, प्रेरि. 25:19)। इन लोगों में बौद्धिक जिज्ञासा थी और धार्मिक बातों के प्रति आदरभाव था, परन्तु कुछ सीमा तक (अर्थात् परम्पराओं तक)।

▪ **''सब''** तुम हर बात मे' इस बात पर ध्यान दीजिए कि पौलुस अपने भाषण में अनेक बार ''सब'' शब्द का प्रयोग करता है:

1. प्रेरि. 17:22 ''हर बात में''
2. प्रेरि. 17:24 ''उसकी सब वस्तुओं को बनाया''
3. प्रेरि. 17:25 ''सबको जीवन और श्वास''
4. प्रेरि. 17:25 ''सब कुछ देता है''
5. प्रेरि. 17:26 ''सारी जातियाँ''
6. प्रेरि. 17:26 ''सारी पृथ्वी पर''
7. प्रेरि. 17:27 ''हम में से''
8. प्रेरि. 17:28 ''हम'' (दूसरी बार आया)
9. प्रेरि. 17:30 ''हर जगह''
10. प्रेरि. 17:31 ''जगत का'' (पृथ्वी का)
11. प्रेरि. 17:31 ''सब मनुष्यों का''

पौलुस का शुभ सन्देश था कि परमेश्वर सम्पूर्ण मानवजाति से प्रेम रखता है (अर्थात् मानवजाति परमेश्वर के स्वरूप पर रची गई है, उत्पत्ति 1:26-27) और उसने मानव जाति के लिये मार्ग तैयार किया है (अर्थात् सृष्टि निर्माण का मूल उद्देश्य है कि मानव जाति परमेश्वर की संगति में रहे, उत्पत्ति 3:8) और क्षमा पाए (अर्थात् उत्पत्ति 3 के पाप के दण्ड से और पाप के परिणामों से)।

17:23 ''लेख, ''अनजाने ईश्वर के लिए'' यूनानी लोग डरते थे कि कहीं वे किसी देवता की पूजा करना न भूल गए हों, जो उनकी हानि कर सकता है, इसलिए वे उसके लिये भी वेदी बना दिया करते थे (देखें, पौसानियास की पुस्तक, डिस्क्रिपशन ऑफ ग्रीस 1:1:4 तथा फिलोस्ट्रेटस की पुस्तक, लाइफ ऑफ अपोलोनियुस 6:3:5) (cf. Pausanias, *Description of Greece* 1:1:4 and Philostratus, *Life of Apollonius* 6:3:5) यह उनके आत्मिक संसार और बहुईश्वरवाद के प्रति भय को प्रकट करता है।

▪ **''इसलिए जिसे तुम बिना जाने पूजते हो''** यहाँ पर ''बिना जाने'' (*agnōetō*) तथा ''अनजाने'' (*agnoountes*) शब्दों के बीच में शब्द-खेल पाया जाता है। इसी यूनानी शब्द से अंग्रेजी भाषा का शब्द ष्हदवेजपबष् बना है। पौलुस ऐसे लोगों के सामने सुसमाचार प्रस्तुत करने का प्रयत्न करता है जो मूर्तिपूजक हैं और व्यक्तित्वहीन आत्मा के संसार पर विश्वास करते हैं।

▪ **''मैं इसकी घोषणा करता हूँ''** पौलुस स्पष्ट रूप से कहता है कि वह ''बकवादी'' नहीं है (प्रेरि. 17:18) और जिस सर्वोच्च परमेश्वर को वे नहीं जानते हैं, उसे वह अच्छी तरह जानता है।

17:24 ''जिस परमेश्वर ने पृथ्वी और उसकी सब वस्तुओं को बनाया'' पौलुस की पहली धर्म वैज्ञानिक शिक्षा यह है कि परमेश्वर सृष्टिकर्त्ता है (देखें, उत्पत्ति 1-2 अध्याय; भजन 104; 146:6; यशा. 42:5)। यूनानी लोगों का विश्वास था कि आत्मा (परमेश्वर) और तत्व (एटम) दोनों अनन्त हैं। पौलुस उत्पत्ति एक अध्याय के सृष्टि-निर्माण का सिद्धान्त प्रस्तुत करता है जहां पर व्यक्तित्व संपन्न और उद्देश्यपूर्ण परमेश्वर स्वर्ग और पृथ्वी तथा सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का निर्माण करता है।

▪ **''वह हाथ के बनाए हुए मन्दिरों में नहीं रहता''** यह दो जगह से लिया गया हवाला है (1) पुराने नियम से (देखें, 1 राजा 8:27; यशा. 66:1-2) तथा (2) एक यूनानी दार्शनिक इयूरीपिडेस का, फ्रैगमैन्ट 968. (Euripides,

Fragment 968) इसी संबंध में यहां और भी यूनानी लेखकों के उद्धरण पाए जाते हैं (जैसे, प्रेरि. 17:25,28)। पौलुस यूनानी शास्त्रों में भी प्रशिक्षित था।

17:25 "किसी वस्तु की आवश्यकता के कारण" यही विचार (1) यूरिपिड्स हेराक्लीज़ 1345 क्रमश ; (Euripides' Heracles 1345f;) (2) प्लेटो का यूथिफ्रो 14 सी; (Plato's Euthyphro 14c;) (3) अरिस्टोबुलस, फ्रैगमेंट 4; या (Aristobulus, Fragment 4;) (4) भजन 50:9-12 यूनानी मंदिर थे अक्सर उस स्थान के रूप में देखा जाता है जहां देवताओं को खिलाया जाता था और उनकी देखभाल की जाती थी।

▪ **"वह स्वयं ही *सबको* जीवन और श्वास और सब कुछ देता है"** यह यशा. 42:5 की ओर संकेत हो सकता है। पौलुस निश्चयपूर्वक कहता था (1) परमेश्वर का अनुग्रह, दया और प्रेम सब मनुष्यों के लिये है और (2) परमेश्वर संपूर्ण मानवजाति का प्रबन्ध करता है, उनकी आवश्यकताएँ पूरी करता है। स्तोईकी मत के संस्थापक जेनो भी इसी के समान सच्चाई का प्रचार करता था जिन्हें सिकन्दरिया के क्लेमैन्ट की पुस्तक स्ट्रोमाटेइज 5:76:1 (Clement of Alexandria, *Stromateis* 5:76:1) में लेखबद्ध किया गया है। इस बात पर ध्यान दीजिए "वह स्वयं ही सबको।" यह मूर्तिपूजक अन्यजातीय लोगों के लिए सुनने और ग्रहण करने के लिए अद्भुत सच्चाई थी।

17:26 "एक ही मूल से" यूनानी मूलपाठों की पश्चिमी लिपियों में लिखा है "एक खून" से मनुष्यों की सब जातियाँ बनाईं। परन्तु यूनानी हस्तलिपि P^{74},ℵ,A, और B शब्द हटा दिया है (USB^{4} इस हटाए जाने को ठीक "B" मानता है)। यदि मूल रूप से देखें तो यह वाक्यांश आदम की ओर संकेत करता है कि आदम द्वारा सब जातियाँ बनाई गईं। यदि हम कहें कि यह वाक्यांश यूनानी दर्शन की ओर संकेत करता है तो यह मानव जाति की एकता एक ही मूल से दर्शाता है। यह वाक्यांश और अगला वाक्यांश स्पष्ट रूप से सम्पूर्ण मानवजाति की एकप्राणता को बताता है (संभवत; यह मलाकी 2:10 और स्ग् की LXX व्यवस्थाविवरण 32:8 की ओर संकेत करता है), और धर्म वैज्ञानिक दृष्टिकोण से यह निश्चयतापूर्वक बताता है कि सब मनुष्य परमेश्वर के स्वरूप पर बनाए गये हैं (देखें, उत्पत्ति 1:26-27)।

इस पद का शेष भाग भी उत्पत्ति के विवरण की ओर संकेत कर सकता है। मानवजाति को आज्ञा दी गई थी कि वह फूले- फले और पृथ्वी में भर जाए (देखें उत्पत्ति 1:28; 9:1,7)। मनुष्य पृथ्वी पर फैलने को तैयार नहीं थे। बाबेल की मीनार द्वारा परमेश्वर ने अपने उद्देश्यों को पूरा किया और भाषाओं में गड़बड़ी के कारण लोग पृथ्वी पर फैल गए (देखें उत्पत्ति 10-11 अध्याय)।

▪ **"*उनके* ठहराये हुए समय और निवास की सीमाओं को बाँधा है"** पौलुस बताना चाहता है कि परमेश्वर ने न केवल सब वस्तुओं बनाया ही है पर साथ ही सब का निर्देशन भी करता है, उन्हें चलाता भी है। ये स्ग् की व्यवस्थाविवरण 32:8 (LXX) की ओर संकेत करता है तौभी पुराने नियम में भी यही सच्चाई प्रकट की गई है (देखें अय्यूब 12:23; भजन 47:7-9; 66:7)।

17:27 इस पद का पहला वाक्यांश यूनानी कवि अरस्तु के कथन का हवाला है।

▪ **"यदि"** उसे टटोलकर पाएँ" इसका अर्थ है वे सच्चाई से बहुत दूर हैं। मनुष्यों को अपनी आत्मिक आवश्यकता पहचानने की जरूरत है।

NASB, NKJV, NRSV	**"ताकि उसे टटोल कर पा सकें"**
TEV	**"ताकि उसे ढूँढ़े और उसे पा सकें और उसे अपने निकट महसूस करें"**
NJB	**"महसूस करें कि उनका रास्ता परेश्वर की ओर जाना है"**

वचन का अर्थ है "छूना" अथवा "महसूस करना" (देखें, लूका 24:39)। यहाँ पर शब्द टटोलने का प्रयोग हुआ है क्योंकि भ्रम और अंधकार है, लोग परमेश्वर को पाने का प्रयत्न कर रहे हैं, और यह कार्य सरल नहीं है।

मूर्तिपूजावाद अन्धेपन को लाने की एक ताकत है जो पाप में गिरने को दर्शाता है। मूर्तिपूजा करना और अन्धविश्वास में पड़ना पाप में गिरने के समान है (देखें, रोमियों 1-2 अध्याय), परन्तु परमेश्वर दूर नहीं है, वह निकट है।

▪ **''वह हम में से किसी से दूर नहीं''** क्या ही अद्भुत सत्य है। परमेश्वर ने हमें बनाया है और वह हमारे लिए है, और हमारे साथ है (देखें, भजन 139)। पौलुस सम्पूर्ण मानवजाति के साथ परमेश्वर की उपस्थिति, उसके प्रेम और उसकी देखभाल की घोषणा पूरे बल के साथ करता है। यही सुसमाचार की सच्चाई है (इफि. 2:11-3:13)। संभव है पौलुस व्यवस्थाविवरण 4:7 और यिर्मयाह 23:23-24 की ओर संकेत कर रहा हो परन्तु इसे सम्पूर्ण मानवजाति पर लागू कर रहा हो। यह नई वाचा का गुप्त रहस्य है।

17:28 ''तुम्हारे अपने कवियों ने भी कहा है'' इससे पहले का उद्धरण ''हम उसी में जीवित रहते, चलते-फिरते और स्थिर रहते हैं'' इनकी ओर से लिया गयाः-

1. क्लीन्थेस का ज्यूज (*Hymn to Zeus)* के लिए गीत। वह स्टोईकी स्कूल का 263-232 ई. पू. में अध्यक्ष था! अथवा
2. अरातुस के फायनोमीना, लाइन 5 से लिया गया। अरातुस किलिकिया के सोली नगर से था जो तरसुस के निकट था। वह ई. पू. 315 से 240 तक जीवित रहा। ये उद्धरण निम्न दो बातों पर बल दे ेते हैं:
    a. परमेश्वर सब जगह उपस्थित रहता है (देखें, प्रेरि. 17:27)
    b. सब मनुष्य परमेश्वर की रचना हैं (देखें, प्रेरि. 17:26)

पौलुस ने इप्पीक्यूरियन्स का भी उल्लेख 1 कुरि 15:32 में तथा मेनन्दर, थाईस का उल्लेख 1 कुरि. 15:33 में किया। पौलुस तरसुस से यूनानी साहित्य और वाक्पटुता का प्रशिक्षण प्राप्त किया था जो उन दिनों सबसे बड़ा शिक्षा केन्द्र था।

▪ **''हम तो उसी के बच्चे हैं''** यह एक और उद्धरण है जो संभवतः एपिमेन्डीस से लिया गया, जिसे डायगनेस लायरियुस ने भी फिलोस्फर्स के जीवन चरित्र में प्रयुक्त किया, 1:112 (*Lives of the Philosophers* 1:112)

17:29 यह पौलुस का निष्कर्ष और मूर्तिपूजा का खण्डन है (देखें, भजन 115:1-18; यशा. 40:18-20; 44:9-20; 46:1-7; यिर्म. 10:6-11; हब. 2:18-19)। इस पतित मानवजाति की दुखद बात यह है कि वह मनुष्यों द्वारा बनाई गई वस्तुओं में आत्मिक सत्य और सहभागिता ढूँढ़ती है जो न सुनती, न उत्तर देती और न सहायता करती हैं।

17:30 ''अज्ञानता के समयों पर ध्यान नहीं दिया'' यह परमेश्वर के अनुग्रह का आश्चर्यपूर्ण पहलु है (देखें, रोमियों 3:20,25; 4:15; 5:13,20:7:5,7-8; 1 कुरि. 15:56)। परन्तु अब सुसमाचार सुनने के बाद वे आत्मिक दृष्टि से उत्तरदायी हैं।

▪ **''परमेश्वर अब हर जगह सब मनुष्यों को घोषणा की''** यह वाक्य बताता है:

1. परमेश्वर केवल एक ही है।
2. वह परमेश्वर हर जगह सब मनुष्यों को पश्चाताप करने की आज्ञा देता है।

यह परमेश्वर के प्रेम और दया की सार्वभौमिकता को प्रदर्शित करता है (देखें, यूहन्ना 3:16; 4:42; 1 तीमु. 2:4; तीतुस 2:11; 2 पत. 3:9; 1 यूहन्ना 2:1; 4:14)। यह इन अर्थों में सार्वभौमिकता नहीं है कि सब लोग उद्धार पाएँगे (देखें, प्रेरि. 17:32-33), परन्तु इन अर्थों में है कि परमेश्वर की इच्छा है कि सब मनुष्य मन-फिराएँ और उद्धार पाने के लिये यीशु पर विश्वास करें। क्योंकि यीशु ने सबके लिये प्राणों का बलिदान दिया है। अब सब लोग विश्वास लाकर उद्धार पा सकते हैं। परन्तु बुराई व दुष्टता कहती है कि सब मनुष्य उद्धार नहीं पाएँगे।

▪ **''मन-फिराना''** इब्रानी भाषा में इसका अर्थ है ''अपने कार्यों में परिवर्तन'' लाना जबकि यूनानी भाषा संकेत करती है कि ''हृदय में परिवर्तन'' लाना। दोनों ही अति आवश्यक हैं। परन्तु प्रेरि. 17:18 में लिखित दोनों दार्शनिक

विचार धाराओं, इपिकूरी ओर स्तोईकी ने इसको तुच्छ जाना। देखें, प्रेरि. 2:38 में विशेष विषयः"पुराने नियम में मन-फिराना"

17:31 "क्योंकि उसने एक दिन ठहराया है...जिसमें वह जगत का न्याय करेगा" पौलुस ने अपने उपदेशों व सन्देशों में बार बार और स्पष्ट रीति से परमेश्वर के अनुग्रह और प्रबन्ध का उल्लेख किया है, परन्तु यह सन्देश की आधी ही सच्चाई हैै। प्रेम और दया करने वाला परमेश्वर न्याय करने वाला परमेश्वर भी है जो धार्मिकता चाहता है। मनुष्यों को जो उसके स्वरूप पर रचे गये हैं, उन्हें अपने जीवनों के उपहार का व अपने भण्डारीपन का उसे लेखा देना होगा (देखें, भजन 96:13; 98:9)। नए नियम के इस मूल विषय को कि परमेश्वर जगत का न्याय करेगा, बार बार बताया गया है और यह अतिशियोक्ति नहीं है (उदाहरणार्थ, मत्ती 10:15; 11:22,24; 16:27; 22:36; 25:31-46; प्रका. 20:11-15)।

- **"जिस मनुष्य को उसने ठहराया है"** न्याय के दिन की अवधारणा हमारे उस विश्वास के रिश्ते पर आधारित है जो पुनरुत्थित मनुष्य अर्थात् यीशु नासरी पर हमारा है (जो न्याय करने में यहोवा (YHWH) का प्रतिनिधि है) और जिसके विषय में यूनानी लोगों ने नहीं सुना था और जो इन बुद्धिजीवी यूनानियों की दृष्टि में मूर्खता था (देखें, 1 कुरि. 1:23), परन्तु जो सुसमाचार के गवाहों का हृदय था (देखें, प्रेरि. 10:42; मत्ती 25:31-33)।

- **"और उसे मरे हुओं में से जिलाकर"** इस मूल विषय को अनेक बार प्रेरितों के काम पुस्तक में दोहराया गया है (देखें, प्रेरि. 2:24, 32; 3:15,26; 4:10; 5:30; 10:40; 13:30, 33, 34, 37; 17:31)। यीशु का पुनरूत्थान सुसमाचार की केन्द्रिय बात है कि परमेश्वर पिता ने यीशु की मृत्यु को, जो मानवजाति के बदले में हुई, और यीशु की शिक्षाओं को व उसके जीवन को ग्रहण किया है। इस विषय से संबंधित सम्पूर्ण जानकारी अर्थात् (1) यीशु का पुनरुत्थान और (2) विश्वासियों का पुनरुत्थान, हमें 1 कुरि. 15 अध्याय में मिलती है।

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 17:32-34

32मरे हुओं के पुनरुत्थान की बात सुनकर कुछ तो ठट्ठा करने लगे, और कुछ ने कहा, "यह बात हम तुझ से फिर कभी सुनेंगे।" 33इस पर पौलुस उनके बीच में से निकल गया। 34परन्तु कुछ मनुष्य उसके साथ मिल गए, और विश्वास किया; जिनमें दियुनुसियुस और अरियुपगुस का सदस्य था, और दमरिस नामक एक स्त्री थी, और उनके साथ और भी लोग थे।

17:32 "जब उन्होंने मरे हुओं के पुनरुत्थान की बात सुनी" इपीकूरियों को छोड़कर, शेष यूनानी देह की नहीं परन्तु आत्मा की अमरता पर विश्वास रखते थे। यूनानियों के लिये पुनरुत्थान भारी ठोकर का कारण था (देखें, प्रेरि. 17:18; 1 कुरि. 1:23)।

- **"ठट्ठा"** यह शब्द नए नियम में केवल यहीं पर प्रयुक्त हुआ है, परन्तु इसकी तीव्रता प्रेरि. 5:30 और 26:21 में दिखाई देती है। इस शब्द का मूल "केल्यूज्मा" अथवा "केल्यूस्मौस" (*chleusma* or *chleusmos*) सप्तूजैन्त में "ठट्ठा उड़ाने" के सन्दर्भ में अनेक बार प्रयोग में लाया गया है (देखें, अय्यूब 12:4; भजन 79:4; यिर्म. 20:8)।

- **" कुछ अन्यों ने कहा, 'यह बात हम तुझ से फिर कभी सुनेंगे"** परमेश्वर के प्रेम और पालन-पोषण के संबंध में पौलुस के सन्देश मूलरूप से नए और प्रभावशाली होते थे कि सुनने वाले आमतौर पर आकर्षित हो जाते थे, परन्तु पूरी तरह कायल नहीं होते थे।

17:34 "कुछ मनुष्य उसके साथ मिल गए और विश्वास किया दियुनुसियुस भी उनमे था' सुसमाचार सुनने वालों के तीन संभव प्रत्युत्तर:

1. कुछ ने तिरस्कार किया, "ठट्ठा करने लगे" (प्रेरि. 17:32)
2. निर्णय करने में देर की, "यह बात हम तुझ से फिर कभी सुनेंगे" (प्रेरि. 17:32)

3. विश्वास किया, "कुछ मनुष्य उसके साथ मिल गये" (प्रेरि. 17:34; थिस्स. 1:9-10)
4. यह बीज बोने वाले के दृष्टान्त के समान प्रतीत होते हैं (देखें, मत्ती 13)

▪ **"दियुनुसियुस अरियुपगुस"** हो सकता है कि वह इन दार्शनिकों के वाद-विवाद को मार्स पर्वत पर नियामित रूप से सुना करता हो। कम से कम एक बुद्धिजीवी विश्वासी बना।

यूसेबियुस (Eusebius, *Eccl)* अपनी पुस्तक कलीसियाई इतिहास 3:4:6-7 तथा 4:23:6 में बताता है कि यह व्यक्ति एथेन्स अथवा कुरिन्थ का पहला बिशप बना। यदि यह सत्य है तो यह बहुत विशेष सूचना है। सुसमाचार लोगों के जीवन परिवर्तित कर रहा है।

विचार विमर्श के लिये प्रश्न

यह अध्ययन में मार्गदर्शन करने की टीका है, इसका अर्थ है कि आप बाइबल की अपनी व्याख्या करने के स्वयं ही जिम्मेदार हैं। हम में से प्रत्येक को उसी ज्ञान के अनुसार चलना चाहिए जो हमारे पास है। व्याख्या करने के कार्य में आप आपकी बाइबल और पवित्र आत्मा केन्द्रिय स्थान रखते हैं। यह कार्य व्याख्याकार पर न छोड़ दें।

निम्नलिखित प्रश्न अपनी सहायता के लिए दिए गए हैं ताकि आप पुस्तक के गम्भीर विषयों पर पुनर्विचार कर सकें। वे आपके विचारों को आन्दोलित करने के लिए हैं, इनके अलावा और भी प्रश्न हो सकते हैं:

1. पौलुस ने क्यों कुछ बड़े नगरों, जैसे अम्फिपुलिस और अपुल्लोनिया को छोड़ दिया?
2. मसीह के दुख उठाने की बात से यहूदी लोग क्यों व्याकुल होते हैं?
3. सुसमाचार के प्रति बिरीया नगर के लोगों का प्रत्युत्तर क्यों महत्वपूर्ण और उत्साहवर्धक है?
4. एथेन्स की आत्मिक दशा देखकर पौलुस क्यों अपनी आत्मा में जल उठा?
5. अरियुपगुस की सभा में पौलुस द्वारा दिया गया भाषण क्यों महत्वपूर्ण है? (देखें, पद 22-24)।

Copyright © 2013 Bible Lesson International

प्रेरितों के काम-18
बाइबल के विभिन्न आधुनिक अनुवादों में पैराग्राफ-विभाजन

UBS[4]	NKJV	NRSV	TEV	NJB
पौलुस कुरिन्थ में	कुरिन्थ में सेवकाई	कुरिन्थ में कलीसिया की स्थापना	कुरिन्थ में की स्थापना	कुरिन्थ की कलीसिया
18:1-4	18:1-17	18:1-4	18:1-4	18:1-4
18:5-11		18:5-11	18:5-8	18:5-11
			18:9-11	यहूदियों द्वारा पौलुस को न्यायालय ले जाया जाना
18:12-17		18:12-17	18:12-13	18:12-17
			18:14-17	
पौलुस का अन्ताकिया लौटना	पौलुस का अन्ताकिया लौटना	दूसरी मिश्नरी यात्रा की समाप्ति तथा तीसरी का आरम्भ	अन्ताकिया लौटना	अन्ताकिया लौटना और तीसरी यात्रा पर जाना
18:18-23	18:18-23	18:18-21	18:18-21	18:18
				18:19-21
		18:22-23	18:22-23	18:22-23
इफिसुस में अपुल्लौस का प्रचार	अपुल्लौस की सेवकाई	अपुल्लौस इफिसुस में	अपुल्लौस इफिसुस और कुरिन्थ में	अपुल्लौस
18:24-28	18:24-28	18:24-28	18:24-28	18:24-26
				18:27-28

पठन चक्र तीसरा ("अच्छे बाइबल अध्ययन का मार्गदर्शन" से)

पैराग्राफ स्तर पर मूल लेखक के अभिप्राय को समझना

यह अध्ययन करने की मार्गदर्शक टीका है, जिसका अर्थ है कि आप अपनी बाइबल-व्याख्या के स्वयं उत्तरदायी हैं। हम में से प्रत्येक को अपने ज्ञान व समझ के अनुसार कार्य करना चाहिए। व्याख्या-प्रक्रिया में आप, आपकी बाइबल तथा पवित्र आत्मा प्राथमिक स्थान रखते हैं। आपको यह टीका कार्य टीकाकार पर नहीं छोड़ना चाहिए।

पूरा अध्याय एक बैठक में पढ़ें। विषयों को पहचानें। अपने विषय-विभाजन की तुलना उपरोक्त पाँच आधुनिक अनुवादों के विषय-विभाजन से करें। पैराग्राफों का विभाजन प्रेरणा प्राप्त नहीं होता है, परन्तु यह मूल लेखक के अभिप्राय को समझने की कुंजी है, जो कि व्याख्या करने का आधार है। प्रत्येक पैराग्राफ में केवल एक ही मूल विषय होता है:

1. पहला पैराग्राफ
2. दूसरा पैराग्राफ
3. तीसरा पैराग्राफ
4. अन्य

शब्दों और वाक्यांशों का अध्ययन

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 18:1-4

[1]इसके बाद पौलुस एथेन्स को छोड़कर कुरिन्थुस में आया। [2]वहाँ उसे अक्विला नामक एक यहूदी मिला, जिसका जन्म पुन्तुस में हुआ था। वह अपनी पत्नी प्रिस्किल्ला के साथ इटली से हाल ही में आया था, क्योंकि क्लौदियुस ने सब यहूदियों को रोम से निकल जाने की आज्ञा दी थी। इसी लिये वह उनके यहाँ गया। [3]उसका और उनका एक ही उद्यम था, इसलिये वह उनके साथ रहा और वे काम करने लगे; और उनका उद्यम तम्बू बनाने का था। [4]वह हर एक सब्त के दिन आराधनालय में वाद-विवाद करके यहूदियों और यूनानियों को भी समझाता था।

18:1 ''पौलुस एथेन्स को छोड़कर कुरिन्थुस में आया'' कुरिन्थुस, एथेन्स की पश्चिमी दिशा में 50 मील की दूरी पर स्थित था, जो एक सकरे मार्ग पर था (इस्थमुस)। पौलुस एथेन्स में अकेला था, और कुरिन्थुस में भी कुछ दिन अकेला रहा (देखें, प्रेरि. 18:5)। पौलुस की आँखों में कुछ तकलीफ थी (देह में एक कांटा चुभाया गया, 2 कुरि. 12:8)। उसके लिये अकेला रहना कठिन हो रहा था।

विशेष विषयः कुरिन्थ नगर

A. यूनान के दक्षिणी क्षेत्र (अर्थात कैप मालिया) के आसपास सर्दियों में जहाजों की समुद्री यात्रा बहुत खतरनाक होती थी। इस कारण छोटे से छोटे मार्ग की यात्रा भी संकटपूर्ण थी। कुरिन्थ की खाड़ी (अर्थात एड्रियाटिक सागर) और सारोनिक खाड़ी (अर्थात एजियन सागर) के मध्य इस्तमुस के चार मील के भौगोलिक क्षेत्र ने कुरिन्थ को एक बड़ा व्यापारिक केंद्र और सैनिक केंद्र बना दिया था, जहाँ समुद्री जहाज आते और पीतल के विशेष बर्तनों का कारोबार होता था। पौलुस के दिनों में यह वास्तव में वह स्थान था जहाँ पूर्व और पश्चिम की संस्कृतियाँ मिलती थी।

B. कुरिन्थ, यूनानी-रोमी साम्राज्य का भी एक बड़ा सांस्कृतिक केंद्र था, क्योंकि यहां पर हर दूसरे वर्ष इस्तामियन खेलों का आयोजन होता था, जो 581 ई.पू. में पोसीडोन के मंदिर में आरंभ हुए थे। इन खेलों की तुलना केवल एथेंस के ओलम्पिक खेलों से की जा सकती है जो हर चार वर्ष बाद आयोजित किए जाते थे (थूसीडीडेस, हिस्ट्री 1.13.5) (Thucydides, *Hist.* 1.13.5).

C. 146 ई.पू. में कुरिन्थ, रोम के विरुद्ध विद्रोह में शामिल हुआ था और रोमी जनरल लूसीयस मुमीयुस द्वारा नष्ट कर दिया गया था। और यहाँ की जनसंख्या तितर-बितर हो गई थी। आर्थिक और सैनिक रूप से महत्वपूर्ण नगर होने के कारण यह नगर या तो 46 में अथवा 48 ई.पू. में फिर से जूलियस कैसर द्वारा बनाया गया। फिर यह एक रोमी उपनिवेश बन गया जहाँ रोमी सैनिक विश्राम किया करते थे। यह नगर भवन-निर्माण और संस्कृति में रोम की नकल, और रोमी प्रशासन आखया का केंद्र था (अर्थात् सेनेटोरियल) 27 ई.पू. में। बाद में 15 ई.पू. में यह राजकीय प्रान्त बन गया।

D. पुराने शहर कुरिन्थ का दुर्ग समतल भूमि से 1880 फुट की ऊंचाई से भी अधिक था जहाँ अफ्रोडाईट मंदिर था। इस मंदिर में 1000 वैश्याएँ थी (स्ट्राबो ज्योग्राफी, (*Strabo Geography;* 8.6 20-22)। किसी को कुरिन्थ निवासी पुकारना, चरित्रहीनता और ऐश्वर्ययुक्त जीवन का प्रतीक था (Korinthiazesthai), इस शब्द को अरिस्टोफिनेस (*Aristophanes*) ने 450-385 ई.पू. में आरम्भ किया था)। अन्य नगरों के समान यह मंदिर भी पौलुस के यहां पर आने से 150 वर्ष पहले भूकंप द्वारा नष्ट हो गया था, फिर बाद में सन् ई. 77 में फिर नष्ट हुआ। पौलुस के दिनों में वेश्यावृत्ति जारी थी या नहीं, यह अनिश्चित है चूंकि 146 ई.पू. में यह शहर रोमियों द्वारा पूरी तरह नष्ट कर दिया गया था और यहां के निवासियों को गुलाम बना लिया था और अधिकांश को मार डाला था, तब से यहां यूनानी प्रभाव समाप्त हो रहा गया और रोमियो का उपनिवेश यहाँ बन गया (पॉवसानियास, (*Pausanias, II.* 3.7)।

18:2 "अक्विला नामक एक यहूदी मिला,...प्रिस्किल्ला" उसकी पत्नी प्रिस्किल्ला, जो प्रिसका भी कहलाती है, और अक्सर उसका नाम पति से पहले लिखा गया है (देखें, प्रेरि. 18:18, 26; 1 कुरि. 16:19; 2 तीमु. 4:19), जो एक विचित्र सी बात है देखें, प्रेरि. 2:17 में विशेष शीर्षक: बाइबल में स्त्रियाँ । इस स्त्री का नाम रोम की एक धनी स्त्री जेन प्रिसका से मिलता जुलता है। उसे कभी भी यहूदी स्त्री नहीं कहा गया। यदि प्रिस्किल्ला रोमी धनी परिवार की थी, तो यह एक रोचक प्रेम कहानी होगी कि एक धनी रोमी महिला ने एक भ्रमणशील यहूदी तम्बू बनाने वाले चमड़े के कारीगर अक्विला से प्रेम किया। इन दोनों ने पौलुस के साथ मिलकर तम्बू बनाने का व्यवसाय आरम्भ किया। इन्होंने अपुल्लौस को चेला बनने में सहायता की थी।

■ **"हाल ही में"** इटली से हाल ही में आया था यहाँ शब्द "हाल ही में" के लिए यूनानी शब्द "प्रोसफाटॅस" (*prosphatos)* का प्रयोग हुआ है। इस यूनानी शब्द के विषय में टिप्पणी करते हुए, न्यूमन-नीड़ा अपनी एक पुस्तक "ट्रान्सलेटर्स हैन्डबुक ऑन द एक्ट्स ऑफ द अपौसिल्स पेज. 347 (*A Translator's Handbook on the Acts of the Apostles p 47* Newman and Nida), पर बताते हैं कि मूल रूप से इस शब्द का अर्थ है "ताज़ा-ताज़ा मारा गया," परन्तु इसका उपयोग प्रतीकात्मक रूप से "हाल ही में" के रूप में होने लगा। अतः हमें सन्दर्भ के अनुसार किसी शब्द का अर्थ निकालना चाहिए, और साथ ही मुहावरों, रूपकों व दृष्टान्तों का भी ज्ञान होना चाहिए। बहुत से अनुवादकों को इनका ज्ञान नहीं होता, इसलिए वे गलत अर्थ निकाल लेते हैं।

■ **"इटली से अपनी पत्नी प्रिसिला के साथ आ रहा है, क्योंकि क्लॉडियस ने सभी यहूदियों को आज्ञा दी थी रोम से चले जाओ"** ओरोसियुस अपनी पुस्तक "हिस्टीरिया कान्ट्रा पैगानुस" 7.6.15 (*Historia Contra Paganus* 7.6.15*)* में इस राजाज्ञा की तिथि ई. 49 बताते हैं। सुटोनीयुस, अपनी पुस्तक "लाईफ ऑफ क्लौडियुस" 25.4 में हमें बताते हैं कि क्रस्तुस नाम के व्यक्ति के भड़काये जाने पर यहूदी बस्तियों में विद्रोह भड़क उठा था, रोमी लोगों ने गलती से समझा कि यह विद्रोह क्रिस्तुस के (अर्थात् मसीही) लोगों ने किया है, इसलिए सब मसीहियों के विरुद्ध आज्ञा निकाली गई देखें, टैसीटस, अनाइस 25:44:3। (cf. Tacitus, *Annais* 25:44:3) डायो कैसियस, हिस्ट्रीज 60.6 (Dio Cassius in *Histories* 60.6) में कहते हैं कि यहूदी निकाले नहीं गये, परन्तु उनके पूर्वजों की रीति विधियों का पालन करने पर प्रतिबन्ध लगाया गया था।

ये दोनों पति-पत्नी रोम छोड़कर स्थाई रूप से आ गये थे। यह बात भी निश्चित है कि क्लौदियुस ने आज्ञा दी थी।

18:3 "क्योंकि उनका एक ही उद्यम था" आमतौर पर समझा जाता है कि यह उद्यम तम्बू बनाने का था, परन्तु यह शब्द चमड़े का काम करने का भी संकेत कर सकता है। पौलुस एक रब्बी था, और रब्बी शिक्षा देने के बदले में पैसा नहीं ले सकता था, इसलिये संभवतः पौलुस आरम्भ ही से कोई न कोई धन्धा अपनाए हुए था। पौलुस की जन्म भूमि किलिकिया बकरी के बालों और बकरी की खाल के धन्धे के लिये प्रसिद्ध नगर था।

18:4 "वह हर सब्त के दिन आराधनालय में वाद-विवाद करके" पौलुस हर सब्त के दिन "वाद विवाद" करता और "समझाता" था, (यह अपूर्ण कालिक क्रिया है) और बड़ा सक्रिय रहता था। वह पहले यूहदियों के पास जाता था, क्योंकिः

1. यह यीशु का नमूना था (देखें, मत्ती 10:5-6)
2. यहूदी लोग पुराना नियम जानते थे
3. वहाँ पाए जाने वाले भक्त यूनानी आमतौर पर उसका सन्देश रूचिपूर्वक सुनते थे (द्रखें, रोमि. 1:16)

बाबेल की गुलामी के दौरान आराधनालयों का विकास हुआ था ताकि वहां प्रार्थना, उपासना और शिक्षा दी जा सके। यह यहूदी संस्कृति को जीवित रखने के लिए विकसित किए गए।

NASB (नवीनतम) पाठ : प्रेरितों के काम 18:5-11

[5]जब सीलास और तीमुथियुस मकिदुनिया से आए, तो पौलुस वचन सुनाने की धुन में यहूदियों को

गवाही देने लगा कि यीशु ही मसीह है। [6]परन्तु जब वे विरोध और निन्दा करने लगे, तो उसने अपने कपड़े झाड़कर उनसे कहा, ''तुम्हारा लहू तुम्हारी ही गर्दन पर रहे! मैं निर्दोष हूँ। अब से मैं अन्यजातियों के पास जाऊँगा।'' [7]वहाँ से चलकर वह तितुस यूस्तुस नामक परमेश्वर के एक भक्त के घर में आया; जिसका घर आराधनालय से लगा हुआ था। [8]तब आराधनालय के सरदार क्रिसपुस ने अपने सारे घराने समेत प्रभु पर विश्वास किया; और बहुत से कुरिन्थवासी सुनकर विश्वास लाए और बपतिस्मा लिया। [9]प्रभु ने एक रात दर्शन के द्वारा पौलुस से कहा, ''मत डर, वरन् कहे जा और चुप मत रह; [10]क्योंकि मैं तेरे साथ हूँ, और कोई तुझ पर चढ़ाई करके तेरी हानि न करेगा; क्योंकि इस नगर में मेरे बहुत लोग हैं।'' [11]इसलिये वह उनमें परमेश्वर का वचन सिखाते हुए डेढ़ वर्ष तक रहा।

18:5 ''सीलास और तीमुथियुस मकिदुनिया से आए'' वे स्पष्ट रूप से फिलिप्पियों के विश्वासियों की ओर से पौलुस के लिये दान-सहयोग लाए होंगे, जिसके द्वारा पौलुस पूर्णकालिक सेवा कर सकता था (देखें, 2 कुरि. 11:9; फिलि .4:15)। तीमुथियुस भी थिस्सलुनीकियों की कलीसिया का समाचार लाया होगा, जिसके उत्तर में पौलुस ने दो पत्रियाँ 1 व 2 थिस्सलुनीकियों लिखी (देखें, प्रेरि. 17:14)। ऐसा प्रतीत होता है कि जिस प्रकार लूका नये विश्वासियों को मसीही शिक्षा में सुदृढ़ करने के लिये फिलिप्पी में छोड़ दिया गया था, उसी प्रकार से तीमुथियुस थिस्सलुनीके में और सीलास बिरीया में नए विश्वासियों को सुदृढ़ बनाने के लिए छोड़ दिए गये। पौलुस को नए मसीही लोगों के प्रशिक्षण की बड़ी चिन्ता थी (महान आज्ञा की पूर्ति तभी होती है, जब सिखाया और प्रशिक्षित किया जाता है और चेला बनाया जाता है)। पौलुस उस प्रत्येक नगर में जहाँ उसने भेंट की थी, एक सक्रिय, बढ़ने वाली और दूसरों को चेला बनाने वाली कलीसियाएँ देखनें का अभिलाषी था।

NASB ''पौलुस ने स्वयं को पूर्णरूप से वचन में लगाना आरम्भ कर दिया था''
NKJV ''पौलुस पवित्र आत्मा द्वारा बाध्य कर दिया गया था''
RSV ''पौलुस वचन के प्रचार की धुन में था''
TEV ''पौलुस अपना सारा समय सन्देश देने में लगाता था''
NJB ''पौलुस अपना सारा समय प्रचार में लगा देता था''

इस वाक्यांश की यूनानी पाण्डूलीपियों में अन्तर पाया जाता है। सबसे प्राचीन और श्रेष्ठ मूलपाठ में लोगास आया है (देखें, MSS P^{74},א,A, B, D, E साथ ही बुल्गाता, पेशीता और काप्टिक अनुवादों में)। UBS^4 ''बी'' में रखता है (जो निश्चित है)। सर्वमान्य पाठों में ''पवित्र आत्मा'' (*pneumati*) आया है, जो केवल बहुत बाद के यूनानी पाठों में है (दसवीं शताब्दी के तीन पाठ सबसे पुराने हैं)।

▪ **''यहूदियों को गवाही देने लगा कि यीशु ही मसीह है''** पौलुस किस प्रकार से वचन को समझाता था इस विषय में प्रेरि. 9:22 और 17:3 से इस पद की तुलना कीजिये (*sunechō)* । वह बहुत कुछ स्तिफनुस के तरीके को अपनाता और बड़े जोश के साथ वाद विवाद करता था (देखें प्रेरि. 7) प्रेरि. 2:40 में भी टिप्पणी देखें। वह अक्सर धर्म वैज्ञानिक बातें दोहराता था और कहता था, यीशु ही मसीह है, देखें प्रेरि. 17:3 में टिप्पणी। यह सबके लिये भी है।

18:6 ''विरोध और परमेश्वर की निन्दा'' यरूशलेम के बाहर रहने वाले यहूदियों का सुसमाचार के प्रति यह एक सामान्य व्यवहार बन गया था।

▪ **''उसने अपने कपड़े झाड़े''** यह तिरस्कार करने का यहूदी चिन्ह था (देखें, नहे. 5:13; प्रेरि. 13:51; लूका 9:5; 10:11)। प्रेरि. 13:51 में संपूर्ण टिप्पणी देखें।

▪ **''तुम्हारा लहू *तुम्हारी* ही गर्दन पर रहे''** इस पुराने नियम के मुहावरे के बहुत से अर्थ हो सकते हैं:

1. व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से एक पहरूए का उत्तरदायित्व (यहेज. 3:16 क्रमशः; 33:1-6)

2. व्यक्ति उत्तरदायित्व (यहोशू 2:19; 2 शमू 1:16; यहेज. 18:13; प्रेरि. 18:6; 20:26)
3. प्राचीनों व पूर्वजों या जातिगत सामूहिक उत्तरदायित्व (2 शमू. 3:28; 2 रा. 2:33)
4. नए नियम का 2 और 3 मिलाकर उत्तरदायित्व (मत्ती 27:25)

लहू में जीवन पाया जाता है (देखें, लैव्यः 17:11,14)। लहू बहाना हमें परमेश्वर के प्रति उस मृत्यु का उत्तरदायी बनाता है (देखें, उत्पत्ति 4:10; 9:4-6)।

▪ **''मैं निर्दोष हूँ''** यह पुराने नियम के बलिदानों से संबंधित व्यक्तिगत जिम्मेदारी का प्रतीक है। पौलुस अब आगे से इस बात का जिम्मेदार नहीं (यहेज़. 33) कि यहूदी इस नगर में सुसमाचार सुनें या न सुनें। उसको सुसमाचार सुनाना था तो उनसे सुना दिया, अब वे प्रत्युत्तर नहीं देते, जो कसूर उनका है, पौलुस निर्दोष है।

▪ **''अब से मैं अन्यजातियों के पास जाऊँगा''** सुसमाचार प्रचार का यह तरीका और शाप देना पौलुस के लिए सामान्य स्थिति बन गई थी (देखें, प्रेरि. 13:46; 18:6; 26:20; 28:28)। पौलुस सबसे पहले इस्राएली घरों में जाकर सुसमाचार सुनाना कत्त्तव्य समझता था क्योंकि वह यीशु के पदचिन्हों पर चलता था (देखें, मत्ती 10:6; 15:24; मरकुस 7:27)। उसने रोमियों 1:3,5,9-11 में इसे धर्म वैज्ञानिक रूप से समझाया और भावनात्मक रूप से प्रेरि. 9:15; 22:21; 26:17 में समझाया (देखें, रोमि. 11:13; 15:16; गला. 1:16; 2:7-9; इफि. 3:2,8; 1 तीमु. 2:7; 2 तीमु. 4:17)।

18:7 ''तितुस यूस्तुस'' इस परमेश्वर के भक्त की पहचान को लेकर अनेक सम्भावनाओं का उल्लेख पाया जाता है, जो कुरिन्थ के आराधनालय के निकट रहता था:

1. उसका पूरा नाम गयूस तितुस यूस्तुस था और कुरिन्थ की कलीसिया आराधना के लिये उसके घर में एकत्रित हुआ करती थी (देखें, रोमि. 16:23)
2. यह 1 कुरि. 1:14 में वर्णित गयुस हो सकता है जिसे पौलुस ने बपतिस्मा दिया था।
3. इस नाम के संबंध में यूनानी मूलपाठों में भिन्नता पाई जाती है:
   a. तितिओऊ लोऊसतोऊ (*Titiou Ioustou)*, MSS B, D^2 UBS^4 इसे ''सी'' रेटिंग देता है)
   b. तितोऊ लोऊसतोऊ (*Titou Ioustou*, MSS, א, E,P)
   c. लोऊसतोऊ ;सवनेजवनद्धए (*Ioustou*, MSS A, B^2, D)
   d. तितोऊ (*Titou*, Peshitta and Coptic translation)

▪ **''परमेश्वर का एक भक्त''** तीसरी शताब्दी का अफ्रोडिसियास अपने एक लेख में ''परमेश्वर का भक्त'' शब्द का प्रयोग उन अन्यजाति लोगों के लिये करता है जो आराधनालय में आते और रुचि रखते थे। इस प्रकार ''परमेश्वर का भय मानने वाले'' (प्रेरि. 10:1-2,22; 13:16,26) तथा ''परमेश्वर का भक्त'' (प्रेरि. 13:50; 16:14; 18:6-7) समानार्थी शब्द हैं।

इस शब्द की परिभाषा देना बड़ा कठिन है। प्रेरि. 16:14 यह शब्द लुदिया के लिए प्रयुक्त हुआ प्रेरि. 17:4 और 17:17 में अन्य अनेक यूनानियों के लिये प्रयुक्त हुआ जो थिस्सलुनीके और बिरीया में पाये जाते थे। वे ऐसे यूनानी प्रतीत होते हैं जो यहूदीवाद से आकर्षित थे और जब संभव होता तो आराधनालय में उपस्थित हो जाया करते थे परन्तु वे पूरी तरह से मसीही नहीं बने थे तथा धर्म परिवर्तन नहीं किया था। तौभी प्रेरि. 13:43 में पंफूलिया के पिरगा आराधनालय के बहुत से परमेश्वर का भय रखने वालों को पूरी तरह से यहूदी धर्म में शामिल लो ेग कहा गया है।

18:8 ''क्रिसपुस '' यह मनुष्य स्थानीय आराधनालय का प्रबन्धक और देखभाव करने वाला था (कुरि. 1:14)।

▪ **''अपने सारे घराने समेत प्रभु पर विश्वास किया''** प्रेरितों के काम पुस्तक ऐसे अनेक विवरण प्रस्तुत करती है जहाँ परिवार के मुखिया ने हृदय परिवर्तन किया और उसके सम्पूर्ण घराने ने भी बाद में बपतिस्मा लिया देखें, प्रेरि.

11:14; 16:15,31-34; 18:3; देखें प्रेरि. 2:38 में विशेष शीर्षकः बपतिस्मा प्राचीन मैडिटेरियन संसार में जो स्थान घरानों का था उसे आज पश्चिमी विश्वासियों ने भुला दिया है। उस समय परिवारों को प्राथमिकता दी जाती थी। वैयक्तिकता पर बल नहीं दिया जाता था। हालांकि यह हमारी सुसमाचारीय समझ से परे की बात है तौभी इससे परिवारों का महत्व कम नहीं होता।

हमें इस बात पर भी ध्यान देना चाहिए कि जो परिवार बचाया हुआ परिवार कहलाता है और नियामित रूप से कलीसियाई गतिविधियों में भी हिस्सा लेता है उसमें भी सभी सदस्य बचाए हुए नहीं होते हैं। उनेसिमुस फिलेमोन के घर में एक दास था, जहाँ पर कलीसिया आराधना के लिये एकत्रित होती थी, परन्तु फिर भी उनेसिमुस उद्धार पाया हुआ तब तक नहीं बना जब तक कि वह पौलुस से नहीं मिला। प्रेरि. 2:40 और 3:16 में "विश्वास" के सम्बन्ध में विशेष टिप्पणी देखें।

▪ " **बहुत से कुरिन्थवासी सुनकर विश्वास लाए और बपतिस्मा लिया**" बहुत से कुरिन्थ वासियों ने पौलुस के सन्देश को प्रसन्नतापूर्वक ग्रहण किया और बपतिस्मा लिया, परन्तु पौलुस कुछ निराश सा था, और उसे एक विशेष दर्शन के द्वारा प्रोत्साहन दिया गया (देखें, प्रेरि. 18:10)। कुरिन्थ की कलीसियाएँ पौलुस के लिए कठिन और समस्याओं का कारण रही हैं। वह उनसे प्रेम रखता था परन्तु उन्होंने उसे व्यक्तिगत दुख पहुंचाया था (देखें, 1 व 2 कुरिन्थियों)।

इसी संदर्भ से मिलता जुलता पाठांश 1 कुरि. 1:14-17 में पाया जाता है। मैं यहाँ पर 1 कुरि. की अपनी कमेन्ट्री से कुछ बातें यहाँ प्रस्तुत करना चाहता हूँ। आप इसे आन लाईन भी देख सकते हैं, जिसका पता है www.freebiblecommentary.org

> **"1 कुरि. 1:17 "क्योंकि मसीह ने मुझे बपतिस्मा देने के लिये नहीं, परन्तु सुसमाचार प्रचार के लिये भेजा है"** जब पौलुस ने यह कहा कि उसे बपतिस्मा देने के लिये नहीं परन्तु सुसमाचार प्रचार के लिये भेजा गया है तो इसका अर्थ नहीं कि वह बपतिस्मा की निन्दा करता है या उसे तुच्छ समझता है परन्तु वह दलबन्दी की आत्मा के विरुद्ध प्रतिक्रिया करता है, जिसके कारण बहुत से लीडर उठ खड़े हुए थे। फिर भी यह कथन इस बात का संकेत अवश्य देता है कि बपतिस्मा को अनुग्रह पाने का माध्यम अथवा "संस्कार" नहीं समझना चाहिये। यह आश्चर्य की बात है कि कुछ टीकाकार पौलुस के लेखों को संस्कार के अर्थों में लेते हैं, जबकि अपने सभी लेखों में पौलुस ने विशेष रूप से प्रभु भोज का उल्लेख केवल एक बार 1 कुरिन्थियों 11 अध्याय में किया है और बपतिस्में का उल्लेख दो बार रोमियों 6:1-11 में तथा कुलुस्सियों 2:12 में किया है। इसलिए बपतिस्मा प्रत्येक विश्वासी के लिये परमेश्वर की इच्छा है कि वह इसे लें:
>
> 1. यह प्रभु यीशु का उदाहरण है, उसने भी बपतिस्मा लिया था।
> 2. यह यीशु की आज्ञा है।
> 3. सब विश्वासियों से इसकी अपेक्षा की जाती है।
>
> मैं इस बात पर विश्वास नहीं रखता हूँ कि बपतिस्मा परमेश्वर का अनुग्रह पाने का या पवित्र आत्मा पाने का माध्यम है। बपतिस्मा एक नए विश्वासी के लिए अपने विश्वास व निर्णय की साक्षी सार्वजनिक रूप से देने का एक अवसर है। नए नियम का कोई भी विश्वासी यह नहीं कहेगा कि "क्या मुझे उद्धार पाने के लिए" बपतिस्मा लेना चाहिए होगा? उद्धार तो यीशु दे चुका है। यीशु ने कलीसिया को बपतिस्मा देने की आज्ञा दी है। इसलिए बपतिस्मा दीजिए। बपतिस्मा अभी भी अपने स्वयं के विश्वास के निर्णय की घोषणा सबके सामने करने का, विशेष रूप से गैर-मसीही वातारण में घोषणा करने का अवसर है।

18:9 "अब डरने की *ज़रूरत नहीं*" यह वर्तमान में दिया गया एक आदेश है, जिसका अर्थ है, उस कार्य को बन्द कर दे जो अब तक जारी रहा था। यह उत्पत्ति 26:24 अथवा व्यवस्थाविवरण 1:29-33; 20:1 की ओर संकेत हो सकता है, जबकि इसहाक भयभीत था। पौलुस भयभीत था और उसे मसीह के प्रोत्साहन की जरूरत थी। लूका ने ऐसे उत्साह देने वाले दर्शनों का उल्लेख प्रेरि. 22:17-18; 23:11; 27:23-24 में भी किया है। जब पौलुस जैसा

व्यक्ति कार्य करते करते निढाल और थकामांदा हो सकता है तो इसमें क्या आश्चर्य की बात है कि आप न हों? पर यीशु हमारे साथ भी है (देखें, प्रेरि. 18:10; मत्ती 28:20)। प्रभु की महान आज्ञा हमारे लिये मुख्य बात और प्रोत्साहन है (देखें, मत्ती 28:18-20; लूका 24:47; प्रेरि. 1:8)।

■ **"वरन् कहे जा और चुप मत रह"** ये दोनों आदेशात्मक कथन हैं। सुसमाचार प्रचारक को भयभीत होकर चुप नहीं रहना है। हमारी भावनाएँ ऊपर नीचे और अस्थिर हो सकती हैं पर प्रेरि. 1:8 हमें राह दिखाने वाली ज्योति है (देखें, 2 तीमु. 4:2-5)।

18:10 "मैं तेरे साथ हूं" इससे बड़ी और क्या प्रतिज्ञा हो सकती है (देखें, उत्पत्ति 26:24; निर्ग. 3:12; 33:4; भजन 23:4; मत्ती 28:20; इब्रा. 13:5)। ध्यान दीजिए, वह हमारे साथ है, हमारी सुरक्षा और हमारे आराम के लिये नहीं, परन्तु सुसमाचार प्रचार में हमें साहस देने के लिये (यही उद्देश्य प्रेरितों के काम पुस्तक में आत्मा से परिपूर्ण किये जाने का है)। पवित्र आत्मा की उपस्थिति हमारी व्यक्तिगत शान्ति ही के लिए नहीं है परन्तु साथ ही सुसमाचार की घोषणा के लिए भी है।

■ **"इस नगर में मेरे बहुत लोग हैं"** यह वाक्यांश "मेरे बहुत लोग हैं" पुराने नियम के उस कथन की ओर संकेत है जो इस्राएल के लिए प्रयोग किया गया, परन्तु यहाँ नए नियम में कुरिन्थ निवासियों की ओर, चाहे वे यहूदी हों या गैरयहूदी, संकेत करता है, जो सुसमाचार पर विश्वास लाएँगे। फिर वे यहूदी और यूनानी नहीं कहलाएंगे (देखें, रोमियों 3:22; 1 कुरि. 12:13; गला. 3:28; कुलु. 3:11)। वे पुराने नाम से जाने जाएँगे अर्थात् परमेश्वर की निज सम्पत्ति और परमेश्वर का इस्राएल (देखें, गला. 6:16; 1 पत. 2:5,9; प्रका. 1:6)।

यह परमेश्वर द्वारा पहले से ठहराए जाने और उसके पूर्वज्ञान पर बल है (देखें, रोमि. 9; इफि.1) काश कि हम जीवन की पुस्तक को *अभी* देख पाते! कलीसिया की गवाही प्रभावशाली है (देखें, प्रका. 13:8)। सुसमाचारीय साहस और हियाव के लिए व्यक्तिगत आश्वासन है, न कि मरने के बाद विश्वासी के लिए स्वर्ग के टिकट का आश्वासन है।

18:11 यह पद पौलुस की मिश्नरी यात्राओं का क्रम निर्धारित करने में सहायता करता है। हालांकि यह वाक्यांश अस्पष्ट सा है, तो भी यह कुरिन्थ के प्रचार कार्य का समय 18 महिने बताता है।

NASB (नवीनतम) पाठ : प्रेरितों के काम 18:12-17

[12]जब गल्लियो अखाया देश का हाकिम था, तो यहूदी लोग एका करके पौलुस पर चढ़ आए, और उसे न्यायआसन के सामने लाकर कहने लगे, [13]"यह लोगों को समझाता है कि परमेश्वर की उपासना ऐसी रीति से करें, जो व्यवस्था के विपरीत है।" [14]जब पौलुस बोलने पर ही था, तो गल्लियो ने यहूदियों से कहा, "हे यहूदियो, यदि यह कुछ अन्याय या दुष्टता की बात होती, तो उचित था कि मैं तुम्हारी सुनता। [15]परन्तु यदि यह वाद-विवाद शब्दों, और नामों, और तुम्हारे यहाँ की व्यवस्था के विषय में है, तो तुम ही जानो; क्योंकि मैं इन बातों का न्यायी नहीं बनना चाहता।" [16]और उसने उन्हें न्याय आसन के सामने से निकलवा दिया। [17]तब सब लोगों ने आराधनालय के सरदार सोस्थिनेस को पकड़ के न्याय आसन के सामने मारा। परन्तु गल्लियो ने इन बातों की कुछ भी चिन्ता नहीं की।

18:12 "गल्लियो" बाइबल के और बाइबल के बाहर के स्रोतों से ज्ञात होता है कि गल्लियो एक सुयोग्य और खरा राजनीतिज्ञ था। उसके बारे में उसका भाई सेनेका कहता है कि, "मेरे भाई गल्लियो से जो लोग अपनी पूरी सामर्थ से प्रेम रखते थे, वह भी उनसे अधिक प्रेम रखता था," और "कोई भी मनुष्य गल्लियो की तरह सबसे प्रेम रखने वाला कभी नहीं हुआ।" यह राजनैतिक नेता पौलुस की यात्राओं के तिथि निर्धारण में हमारी सहायता करता है। ई. 51 से आरम्भ कर के वह ढाई साल तक राज्यपाल अथवा प्रान्तपति रहा।

▪ **"गल्लियो अखाया का हाकिम था"** लूका बिल्कुल सही इतिहास लेखक था। ई. 44 के बाद से इस क्षेत्र के रोमी अधिकारियों की पदवियाँ बदल चुकी थीं; "हाकिम" या "राज्यपाल" (देखें, प्रेरि. 13:7; 19:38) लूका ने बिल्कुल सही लिखा क्योंकि सम्राट क्लोदियुस ने यह प्रान्त राज्यसभा को सौंप दिया था।

▪ **"यहूदी लोग एका करके"** लूका ने इस वाक्यांश का प्रयोग अनेक बार विश्वासियों की एकता को दर्शाने के लिये किया है (देखें, प्रेरि. 1:14; 2:1,46; 4:24; 5:12; 8:6; 15:25), परन्तु यहाँ पर यह वाक्यांश कुरिन्थ के ईष्र्यालु और सुसमाचार विरोधी यहूदियों की एकता के बारे में बताता है (देखें, प्रेरि. 18:6)। इस वाक्यांश के नकारात्मक उपयोग के अन्य उदाहरण हमें 7:57; 12:20 और 19:29 में मिलते हैं। लूका के लेखों में शब्द "यहूदी" अक्सर निन्दात्मक अर्थों में आया है।

▪ **"उसे न्यायआसन के सामने लाकर कहने लगे"** यह यूनानी शब्द "बेमा" (*bēma)* है जिसका शाब्दिक अर्थ है चबूतरा। यह सीट होती थी अथवा रोमी न्यायाधीश का ऊँचा मंच जिस पर वह बैठता था (देखें, मत्ती 27:19; यूहन्ना 19:13; प्रेरि. 25:6,10,17; 2 कुरि. 5:10)

18:13 "परमेश्वर की उपासना जो व्यवस्था के विपरीत है" यहूदी दावा करते हैं कि मसीही-धर्म उनकी व्यवस्था का उल्लंघन है, इसलिए यहूदीवाद का अंश नहीं है, और यह वैधानिक मुद्दा है। यदि गल्लियो उनकी बात सुनकर कार्यवाही करता तो मसीही-धर्म एक गैर-कानूनी धर्म घोषित हो गया होता। परन्तु पहले की तरह अब भी मसीही धर्म राजनैतिक-संरक्षण का आनन्द उठाता है। (मसीही धर्म को यहूदीवाद के एक पंथ के रूप में देखा गया, जो एक कानूनी धर्म था)। मसीही लोग नीरो के सताव आने तक, अर्थात् 10-12 वर्ष तक, रोमी सरकार के कानूनों के अन्तर्गत आनन्द उठाते रहे।

यह भी हो सकता है कि प्रेरितों के काम पुस्तक लिखने का उद्देश्य लूका का यह रहा है कि वह यह दर्शाए कि मसीही धर्म रोमी साम्राज्य के लिए खतरा नहीं है। रोमी अधिकारियों का उल्लेख पुस्तक में इस प्रकार किया गया है कि वे यह सच्चाई जानते हैं।

18:14 "यदि" यह शर्त वाला वाक्य है। यह बहुत कम होता है कि झूठी बात को सत्य बनाया जाए अथवा वाद-विवाद जारी रखा जाए। इसे "सत्य के विपरीत" बात कहा जाता है। इसका अनुवाद इस प्रकार करना चाहिए, -- यदि यह गलत और अपराधिक मामला होता तो मैं तुम्हारी बात सुनता, परन्तु यहां ऐसी कोई बात नहीं है।"

18:15 "यदि" वास्तव में यह एक धार्मिक वाद-विवाद का विषय था। गल्लियो यहूदियों का मूल उद्देश्य जान गया था। इस प्रकार के धार्मिक मामलों में वह कभी भी न्यायी के रूप में हस्ताक्षेप नहीं करता।

18:16 "उसने सामने से निकलवा दिया" सप्तूजैन्त में ऐसे वाक्यांश कई बार प्रयुक्त हुए हैं परन्तु नए नियम मे केवल यहीं पर यह वाक्यांश प्रयुक्त हुआ है (देखें सप्तुजैन्त में, 1 शमू 6:8; यहेजकेल 34:12)। उसने यहूदियों को बलपूर्वक निकलवा दिया, यहाँ पर प्रयुक्त यूनानी शब्द "इलाऊनों" ;मसंनदवद्ध का यही अर्थ है।

18:17 "तब सब लोगों ने सोस्थिनेस को पकड़ा" यह वे यहूदी थे जिनका वर्णन 18:12 में है। सोस्थिनेस का जिक्र 1 कुरि. 1:1 में आया है, परन्तु क्या वह यही है, ठीक से नहीं पता। यह बहुत कम लोगों का नाम होता है। इस सोस्थिनेस ने आराधनालय के सरदार के रूप में क्रिसपुस का स्थान लिया था। यहूदियों ने उसे क्यों पीटा, इसका कारण अज्ञात है। संभव है इसलिए पीटा क्योंकि उसने आराधनालय में पौलुस को बोलने का मौका दिया था।

▪ **"परन्तु गल्लियो ने इन बातों की कुछ भी चिन्ता न की"** वह रोमी राजनैतिक नेता पिलातुस की तरह भीड़ के बहकावे में नहीं आया।

NASB (नवीनतम) पाठ : प्रेरितों के काम: 18:18-21

[18]पौलुस बहुत दिन तक वहाँ रहा। फिर भाइयों से विदा होकर किंख्रिया में इसलिये सिर मुण्डाया, क्योंकि उसने मन्नत मानी थी, और जहाज पर सीरिया को चल दिया और उसके साथ प्रिस्किल्ला और अक्विला थे। [19]उसने इफिसुस पहुँचकर उनको वहाँ छोड़ा, और आप आराधनालय में जाकर यहूदियों से विवाद करने लगा। [20]जब उन्होंने उससे विनती की, ''हमारे साथ और कुछ दिन रह'' तो उसने स्वीकार न किया; [21]परन्तु यह कहकर उनसे विदा हुआ, ''यदि परमेश्वर ने चाहा तो मैं तुम्हारे पास फिर आऊँगा।'' तब वह इफिसुस से जहाज खोलकर चल दिया।

18:18 ''किंख्रिया'' कुरिन्थुस के दो बन्दगाहों में से एक यह था। वह एजियन सागर की पूर्वी दिशा में इस्थमुस के निकट जहाँ कुरिन्थुस था, किंख्रिया भी स्थित था। रोमियों 16:1 के अनुसार यहाँ एक कलीसिया भी थी।

▪ **''उसने मन्नत मानी थी''** यह गिनती 6:1-21 मे लिखित सीमित दिनों तक नजीर की मन्नत मानने की ओर संकेत करता है देखें, एफ. एफ. ब्रूस की पुस्तक ''आन्सर्स टू क्शचन'' पेज 52। (cf. F.F. Bruce, *Answers to Questions*, p. 52) प्रेरि. 21:24 में पौलुस ने फिर यही मन्नत मानी थी (वहाँ दी गई टिप्पणी देखें।) सिर मुण्डाना मन्नत की समाप्ति बताता है।

ए.टी. रौबर्टसन तथा एम. आर. विन्सेन्ट (A. T. Robertson and M. R. Vincent) दोनों सोचते हैं कि यह नजीर की मन्नत नहीं थी क्योंकि यहूदी रीति-विधि के अनुसार नजीरों की मन्नत केवल यरूशलेम ही में तोड़ी जा सकती थी निश्चय ही पौलुस ''सब मनुष्यों के लिए सब कुछ बना कि किसी न किसी तरह कुछ का उद्धार करा सकूँ'' (देखें, 1 कुरि. 9:19-23)। हमें निश्चय होना चाहिए कि जो मन्नत उसने मानी वह सुसमाचार प्रचार के लिये थी, न कि रीति-विधियों को पूरा करने के लिए। इस बात में भी कोई सन्देह नहीं है कि उसका सिर अक्विला ने मूढ़ा था।

18:19 ''इफिसुस'' पश्चिमी एशिया माइनर में यह एक बहुत बड़ा व्यवसायिक नगर था। मायन्डर नदी की गाद के कारण जब मिलेतुस का बन्दरगाह नष्ट हो गया तो इफिसुस का व्यवसायिक कारोबार ऊपर किनारे पर चला गया, वह भी एक बन्दरगाह था। नए नियम का काल जब आया तो उस समय तक इफिसुस के अच्छे दिन जा चुके थे। वह अभी भी, था तो बड़ा और प्रभावशाली नगर परन्तु पहले के समान उसकी कीर्ति और प्रतिष्ठा जाती रही थी।

1. यह एशिया माइनर का सबसे बड़ा रोमी प्रान्त था। हालांकि वहाँ राज्यपाल रहता था तौभी वह राजधानी नहीं था। स्वाभाविक बन्दरगाह होने के कारण यह व्यवसायिक केन्द्र था।
2. यह स्वतन्त्र नगर था जिसकी अपनी स्थानीय सरकार थी और पूर्ण स्वतन्त्रता थी, रक्षा सैनिक नहीं थे।
3. यही एकमात्र ऐसा नगर था जिसे हर दो वर्ष बाद एशियन खेल-कूद आयोजित करने की अनुमति थी।
4. यहाँ पर अरतिमिस देवी का (लैटिन में डायना) भव्य मन्दिर था, जो अपने समय का संसार के सात अजूबों में से एक था। मंदिर की लंबाई चैड़ाई 425 × 220 थी और 127 खम्बे थे जो 60’ लम्बे थे; उनमें से 86 खम्बे सोने से मढ़े हुए थे (देखें, प्लीनी की हिस्टरी 36:9)। अरतिमिस देवी को उल्कापिण्ड माना जाता था उसकी आकृति बहुत से स्तनों वाली स्त्री से मिलती जुलती थी। इसका अर्थ है वहाँ पर उस नगर में बहुत सी वैश्याएँ पाई जाती थीं (देखें प्रेरि. 19)। इस नगर में बहुत सी संस्कृतियाँ पाई जाती थीं और यह अनैतिक नगर था।
5. पौलुस इस नगर में तीन वर्ष से अधिक समय तक रहा (देखें, प्रेरि. 18:18 क्रमशः; 20:13)।
6. परम्परा के अनुसार पलीस्तीन में मरियम की मृत्यु के बाद यूहन्ना ने यहाँ अपना घर बनाया था।

▪ **''आप आराधनालय में जाकर यहूदियों से विवाद करने लगा''** पौलुस अपने लोगों से प्रेम रखता था (देखें रोमि. 9:1-5)। वह उन्हें सुसमाचार सुनाने का निरन्तर प्रयास करता था कि उन्हें मसीह के लिए जीत ले।

18:20 ये यहूदी बिरिया के यहूदियों के समान थे। वे उसकी बातें सुनने के इच्छुक थे। पौलुंस क्यों वहाँ रूकना नहीं चाहता था, इसकी जानकारी नहीं दी गई है, परन्तु प्रेरि. 18:21 बताता है कि वह फिर वहाँ आएगा जब प्रभु चाहेगा।

18:21 "यदि परमेश्वर ने चाहा तो मैं तुम्हारे पास फिर आऊंगा" पौलुस विश्वास करता था कि उसका जीवन उसके अपने हाथों में नहीं बल्कि परमेश्वर के हाथों में है (देखें, रोमि. 1:10; 15:32 1 कुरि. 4:19; 16:7)। यह बाइबल का विश्व दर्शन है (देखें, इब्रा. 6:3; याकूब 4:15; 1 पत. 3:17)। पौलुस पुनः लौटता है और इफिसुस उसकी तीसरी मिश्नरी यात्रा में विशेष ध्यान का केन्द्र बनता है।

NASB (नवीनतम) पाठ : प्रेरितों के काम 18:22-23
[22]और कैसरिया में उतरकर (यरूशलेम) को गया और कलीसिया को नमस्कार करके अन्ताकिया में आया। [23]फिर कुछ दिन रहकर वह वहाँ से निकला, और एक ओर से गलातिया और फ्रूगिया प्रदेशों में सब चेलों को स्थिर करता फिरा।

18:22 पद 21 की समाप्ति पौलुस द्वारा इफिसुस से जहाज खोलकर चल देने से होती है। पद 22 में वह पलीस्तीन में (कैसरिया) उतरता है और यरूशलेम की कलीसियाओं में भेंट करता है (धर्म वैज्ञानिक भाषा में, वह ऊपर चढ़ता है") उसके बाद (नीचे आता है) अर्थात् सीरीया के अन्ताकिया में आता है। हमें याद रखना चाहिए कि लूका प्रतिदिन की थका देने वाली यात्रा का विवरण नहीं लिख रहा है, परन्तु वह महत्वपूर्ण धर्म वैज्ञानिक घटना से दूसरी महत्वपूर्ण घटना का विवरण प्रस्तुत कर रहा था। प्रेरितों के काम पुस्तक का इतिहास आधुनिक इतिहास नहीं, परन्तु यह एक श्रेष्ठ और बिल्कुल सही इतिहास है। पद 22 पौलुस की दूसरी मिश्नरी यात्रा की समाप्ति है और पद 23 तीसरी मिश्नरी यात्रा का आरम्भ है।

▪ **"कलीसिया"** प्रेरि. 5:11 में विशेष शीर्षक देखें।

▪ **"गलातिया और फ्रूगिया प्रदेशों में"** गलातिया और फ्रूगिया प्रदेश वर्तमान समय के टर्की देश के किन प्रदेशों की ओर संकेत करता है, इस बात को लेकर विद्वानों के मध्य बड़ा मतभेद पाया जाता है, वे कहते हैं कि क्या यह वाक्यांश विभिन्न जातियों की ओर संकेत करता है या राजनैतिक विभाजन की ओर संकेत करता है।

फ्रूगिया का पहली बार उल्लेख प्रेरि. 2:10 में किया गया है। पिन्तेकुस्त वाले दिन इस फ्रूगिया प्रदेश के भी कुछ लोग वहाँ मौजूद थे। प्रेरि. 16:6 में हम पढ़ते हैं कि पौलुस से फ्रूगिया और गलातिया प्रदेशों में प्रचार करने के लिये पवित्र आत्मा ने मना किया था।

परन्तु प्रेरि. 18:23 में हमें यह पढ़कर आश्चर्य होता है कि पौलुस "गलातिया और फ्रूगिया" प्रदेशों में सब चेलों को स्थिर करता फिरा। उसने ऐसा इसलिये किया क्योंकि अब उसकी तीसरी मिश्नरी यात्रा आरम्भ हो गई थी (देखें, प्रेरि. 18:23 से 21:16)। ये चेले जिन्हें वह स्थिर करता था वे लोग थे जो पिन्तेकुस्त के दिन विश्वास लाए थे, और बाद में दिरबे, लुस्त्रा और इकुनियुम में विश्वासी बने थे, और रोमी प्रान्त गलातिया के दक्षिणी भाग पिसिदिया में रहते थे।

▪ **"सब चेलों को स्थिर करता फिरा"** पौलुस ने महान आज्ञा की बातों को गम्भीरतापूर्वक लिया (मत्ती 28:19-20)। उसकी सेवकाई में दोनों बातें शामिल थीं, सुसमाचार प्रचार करना। (मत्ती 28:19) तथा चेला बनाना (प्रेरि. 15:36; मत्ती 28:20)।

NASB (नवीनतम) पाठ : प्रेरितों के काम 18:24-28
[24]अपुल्लौस नामक एक यहूदी, जिसका जन्म सिकन्दरिया में हुआ था, जो विद्वान पुरुष था और पवित्रशास्त्र को अच्छी तरह से जानता था, इफिसुस में आया। [25]उसने प्रभु के मार्ग की शिक्षा पाई थी, और मन लगाकर यीशु के विषय ठीक-ठीक सुनाता और सिखाता था, परन्तु वह केवल यूहन्ना के बपतिस्मा की बात जानता था। [26]वह आराधनालय में निडर होकर बोलने लगा, पर प्रिसकिल्ला और अक्विला उसकी बातें सुनकर उसे अपने यहां ले गए और परमेश्वर का मार्ग इसको और भी ठीक ठीक बताया। [27]जब उसने निश्चय किया कि पार उतरकर अखाया को जाए तो भाइयों ने उसे ढाढ़स देकर चेलों

को लिखा कि वे उससे अच्छी तरह मिलें; और उसने वहां पहुंचकर उन लोगों की बड़ी सहायता की जिन्होंने अनुग्रह के कारण विश्वास किया था। [28]क्योंकि वह पवित्रशास्त्र से प्रमाण दे देकर कि यीशु ही मसीह है, बड़ी प्रबलता से यहूदियों को सब के सामने निरुत्तर करता रहा।

18:24-28 यह संपूर्ण विवरण निम्न तीन बातों में से एक हो सकता है:

1. प्रिस्किल्ला और अक्विल्ला
2. यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के चेले (यह क्रम के अनुसार नहीं है)
3. पौलुस द्वारा अपुल्लौस के विषय में अनुमोदन-पत्र।

18:24 ''अपुल्लौस नामक एक यहूदी'' यह एक घोर असामान्य बात है कि एक यहूदी व्यक्ति का नाम यूनानी देवता के नाम पर है। अपुल्लौस एक विद्वान और बोलने में बड़ा निपुण व्यक्ति था (देखें, प्रेरि. 18:24-19:1)। कुरिन्थ में उसकी सेवकाई फलदायक तो थी परन्तु बाद में समस्याएँ उठ खड़ी हुईं जबकि एक दल ने उसे अपना अगुवा बना लिया, और कुरिन्थ में तीन दल हो गए अर्थात् पौलुस, पतरस और अपुल्लौस के दल (1 कुरि. 1-4)। उसने कुरिन्थ आने से इंकार किया (देखें 1 कुरि. 16:12)।

▪ **''जन्म से सिकन्दरिया''** रोमी साम्राज्य का यह दूसरा महानगर था जो सबसे बड़े पुस्तकालय और शिक्षा-केन्द्र के लिए प्रसिद्ध था। यहाँ भारी संख्या में यहूदी रहते थे जिनके लिए इब्रानी भाषा की बाइबल का अनुवाद यूनानी भाषा में किया गया था जिसे सप्तूजैन्त ;स्ग्ग्द्ध कहते हैं। यहीं पर प्रसिद्ध यहूदी दार्शनिकों फिलो और प्लाटो का जन्म हुआ था।

▪ **''इफिसुस में आया''** प्रेरितों के काम पुस्तक क्रमबद्ध विस्तरित विवरण नहीं है। पौलुस हाल में ही वहाँ से गया था (प्रेरि. 18:23)

▪ **''जो कुशल आदमी''** आम बोलचाल की यूनानी भाषा में इसका अर्थ अच्छा वक्ता और विद्वान हो सकता है। सप्तूजैन्त में परमेश्वर के वचनों के लिए ''लॉगिआस'' (*logios*) शब्द का प्रयोग हुआ है। अपुल्लौस स्पष्ट रूप से पौलुस से अधिक कुशल वक्ता था (तुलना करें 1 कुरि. 1:17; 2:1; 2 कुरि. 10:10 तथा 11:6)। वह जबरदस्त प्रचारक था।

▪ **''पवित्रशास्त्र को अच्छी तरह से जानता था''** पवित्रशास्त्र का अर्थ है पुराना नियम (देखें, 1 थिस्स. 2:13; 2 तीमु. 3:16; 1 पत. 1:23-25; 2 पत. 1:20-21), इसमें पौलुस की पत्रियाँ शामिल नहीं, जहाँ उसकी रचनाओं को प्रेरणा प्राप्त कहा गया है, (2 पत. 3:15-16)। अपुल्लौस अपने पवित्रशास्त्र को अच्छी तरह से जानता था।

यहां ''अच्छी तरह से जानने'' के लिए डयूनाटौस (*dunatos)* शब्द का प्रयोग हुआ है अर्थात् सामर्थी। लूका 24:19 में यीशु के लिए तथा प्रेरि. 7:22 में मूसा के लिए यही शब्द प्रयुक्त हुआ है। वे दोनों कार्य और वचन में सामर्थी थे।

18:25 ''इस व्यक्ति ने शिक्षा पाई थी'' उसने शिक्षा तो पाई थी परन्तु कुछ स्तर तक, पूरी शिक्षा नहीं पाई थी। कर्टिस वाघन अपनी पुस्तक एक्ट्स पेज 118 (Curtis Vaughan, *Acts*,p. 118, footnote #2) पर उन बातों की सूची लिखते हैं जिसे संभवतः अपुल्लौस जानता और प्रचार में इस्तेमाल करता था:

1. वह जानता व प्रचार करता था कि यूहन्ना, मसीह के आगे भेजा गया अग्रदूत था।
2. वह मसीह के बारे में कहता था कि मसीह परमेश्वर का मेमना है जो जगत का पाप उठा ले जाता है।
3. वह प्रचार करता था कि यीशु ही मसीह है।

मैं सोचता हूँ कि उसके प्रचार में पश्चाताप पर भी बल दिया जाता होगा क्योंकि यीशु और यूहन्ना दोनों ने ही पश्चाताप पर बल दिया था।

■ **"प्रभु के मार्ग की"** प्रेरितों के काम में मसीही लोगों को "पन्थ" कहकर सम्बोधित किया गया है (देखें, प्रेरि. 9:2; 19:9,23; 22:4; 24:14, 22; यूहन्ना 14:6)। पुराने नियम में अक्सर इसका प्रयोग हुआ (देखें, व्यवस्थाविवरण 5:32-33; 31:29; भजन 27:11; यशा. 35:8), जहाँ विश्वास पूर्ण जीवन के विषय बताया गया है। निश्चय के साथ नहीं कहा जा सकता है कि यहाँ पर भी यही अर्थ हो (प्रेरि. 18:26)।
अपुल्लौस यीशु के बारे में भी थोड़ी बहुत जानकारी रखता था, परन्तु स्पष्ट रूप से उसकी वह जानकारी केवल यीशु की जन-सेवा व शिक्षाओं से संबंधित थी जिसमें कलवरी के दुख के बाद का तथा पुनरुत्थान का सुसमाचार शामिल नहीं था।

■ **"आत्मा से मन लगाकर"** इसका शाब्दिक अर्थ है आत्मा में उत्तेजित होना। यह अपुल्लौस के जोश को दर्शाता है कि वह यीशु के बारे में और उसकी शिक्षाओं को कितना समझता व जानता तथा सिखाता था।

■ **"यूहन्ना के बपतिस्मे की बात जानता था"** यह लूका की एक शैली हो सकती है जो वह इस पुस्तक में यूहन्ना के चेलों के बारे में बताने के लिए प्रयुक्त करता है (प्रेरि. 19:1-7)। पलीस्तीन में प्रथम शताब्दी में अनेक भ्रान्त शिक्षाएँ यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले से संबंधित फैल गई थीं।
यूहन्ना पुराने नियम का अन्तिम नबी था जिसने मसीह के आगमन से पूर्व लोगों को तैयार किया (देखें, यशा. 40:3; मत्ती 3:3), परन्तु वह पहला सुसमाचार प्रचारक नहीं था। यदि अपुल्लौस की शिक्षाएँ यूहन्ना ही पर बहुत अधिक केन्द्रित रहतीं तो वह यीशु का महत्व खो बैठता। यूहन्ना और यीशु दोनों ने "पश्चाताप", "विश्वास" और "भक्तिपूर्ण जीवन बिताने" पर बल दिया था। दोनों ने यहूदियों को नए समर्पण के साथ विश्वास लाने और कार्य करने की बुलाहट दी। परन्तु यीशु के सन्देश बाद में अपने आप को प्रकट करने में परिवर्तित हो गये और उसने प्रबल रूप से अपने विषय में दावे किये (उदाहरणार्थ. यूह. 10 और 14), यही वे बातें थीं जिन्हें अपुल्लौस नहीं जानता था।

18:26 "वह आराधनालय में निडर होकर बोलने लगा" अपुल्लौस सामर्थी और प्रभावशाली प्रचारक था। यही क्रिया शब्द पौलुस द्वारा आराधनालयों में प्रचार करने के सम्बन्ध में प्रयुक्त हुआ है देखें, प्रेरि. 13:46; 14:3; 19:8 तथा प्रेरि. 26:26 में फेस्तुस के सम्मुख।

■ **"आराधनालय में"** ध्यान दीजिये कि उसी आराधनालय में जहाँ वह प्रचार कर रहा था, अक्लिल्ला और प्रिस्किल्ला भी मौजूद थे। पौलुस भी नियमित रूप से आराधनालय में जाता था।

■ **"प्रिस्किल्ला और अक्लिल्ला"** प्रिस्किल्ला पत्नी का नाम था और अनेक बार उसका नाम इस पुस्तक में पहले लिया गया है, (देखें, प्रेरि. 18:18, 26; रोमि. 16:3; 2 तीमु. 4:19)। संभवतः वह रोमी धनी परिवार की प्रभावशाली महिला थी। प्रेरि. 18:2 में अक्लिल्ला को एक यहूदी कहा गया है, परन्तु कभी भी उसे प्रिस्किल्ला नहीं कहा गया। ई. 49 में क्लौदियुस की रोम छोड़ने की राजाज्ञा के कारण उन्हें रोम छोड़ना पड़ा। वे कुरिन्थ में पौलुस के मित्र बने और उसके साथ इफिसुस गये। ये तीनों तम्बू बनाने का व्यवसाय करते थे।

■ **"उसे अपने साथ ले गये"** ये शब्द किसी को मित्र बनाने अथवा ग्रहण करने के संबंध में प्रयुक्त किये गए हैं। उन दोनों पति-पत्नी ने किस प्रकार से अपुल्लौस को और ठीक ठीक रूप से बताया होगा, इसके बारे में अधिक जानकारी नहीं है। उन्होंने व्यक्तिगत रीति से बातचीत की होगी। ध्यान दीजिए कि उन्होंने लोगों के सामने अपुल्लौस का अपमान नहीं किया और न उसे चुनौती दी।

■ **"परमेश्वर का मार्ग उसको और भी ठीक बताया"** विद्वान मनुष्यों में सीखने की भावना का वरदान होना बड़ी कठिन बात होती है, परन्तु अपुल्लौस में सीखने की विनम्रता थी। उसने यीशु के बारे में बताई गई सब बातों को स्पष्ट रूप से ग्रहण किया।

18:27 "वह उतरकर अखाया जाना मांगता था" यूनानी मूलपाठ डी इसमें यह भी "D" जोड़ता है "कुरिन्थ के मसीहीयों से आग्रह करने पर।" अपुल्लौस उनका स्नेही प्रचारक था। (यूनानी आलंकारिक शैली)

▪ **"भाइयों ने.... लिखा "** सिफारिश का पत्र एक कलीसिया से दूसरी कलीसिया को लिखे जाने का उल्लेख रोमियों 16:1; 2 कुरि. 3:1 और 2 यूहन्ना में किया गया है। यह आरम्भिक कलीसिया का झूठे और बाधा पहुंचाने वाले प्रचारकों से बचने का तरीका था।

▪ **"उन लोगों की बड़ी सहायता की जिन्होंने विश्वास किया था"** इस वाक्यांश को समझने के दो तरीके हैं:

1. यह उन लोगों की ओर संकेत करता है जो अनुग्रह द्वारा पहले ही उद्धार पा चुके हैं (टी ई वी; एन ए एस बी; एन आर एस वी;) (NASB, NKJV, NRSV, TEV)
2. यह वाक्यांश अपुल्लौस पर परमेश्वर के अनुग्रह की सामर्थ की ओर संकेत करता है (एन जे बी)(NJB)

अपुल्लौस उन लोगों के लिए महान् आशीषों का स्रोत रहा हालांकि वे विश्वासी लोग थे। अपुल्लौस कुरिन्थ में एक सुसमाचार प्रचारक की हैसियत से नहीं परन्तु चेला बनाने वाले के रूप में कार्य कर रहा था।

18:28 अपुल्लौस पुराने नियम का उपयोग उसी प्रकार करता है जिस प्रकार पतरस, स्तिफनुस और पौलुस ने किया। प्रेरितों के काम पुस्तक में पुराने नियम से यहूदियों को प्रमाण देना कि यीशु ही मसीह है, बार बार प्रयुक्त की जाने वाली विधि है (देखें, प्रेरि. 17:3 में टिप्पणी)।

विचार विमर्श के लिये प्रश्न

यह अध्ययन में मार्गदर्शन करने की टीका है, इसका अर्थ है कि आप बाइबल की अपनी व्याख्या करने के स्वयं ही जिम्मेदार हैं। हम में से प्रत्येक को उसी ज्ञान के अनुसार चलना चाहिए जो हमारे पास है। व्याख्या करने के कार्य में आप आपकी बाइबल और पवित्र आत्मा केन्द्रिय स्थान रखते हैं। यह कार्य व्याख्याकार पर न छोड़ दें।

निम्नलिखित प्रश्न अपनी सहायता के लिए दिए गए हैं ताकि आप पुस्तक के गम्भीर विषयों पर पुनर्विचार कर सकें। वे आपके विचारों को आन्दोलित करने के लिए हैं, इनके अलावा और भी प्रश्न हो सकते हैं:

1. नए नियम में अक्सर प्रिस्किल्ला का नाम पहले क्यों लिखा गया है?
2. पौलुस की प्रिस्किल्ला और अक्विल्ला से भेंट कैसे हुई? क्यों वे मित्र बन गए?
3. क्या प्रिस्किल्ला और अक्विल्ला वापस रोम लौटे? आप कैसे जानते हैं?
4. पौलुस और अपुल्लौस की प्रचार शैली की तुलना करें?
5. क्या अपुल्लौस प्रिस्किल्ला और अक्विल्ला से भेंट करने से पहले मसीही जन था?

Copyright © 2013 Bible Lesson International

प्रेरितों के काम-19
बाइबल के विभिन्न आधुनिक अनुवादों में पैराग्राफ-विभाजन

UBS[4]	NKJV	NRSV	TEV	NJB
पौलुस इफिसुस में	पौलुस इफिसुस में	पौलुस की इफिसुस में लम्बी सेवकाई	पौलुस इफिसुस में	इफिसुस के शिष्य
19:1-7	19:1-10	19:1-7	19:1-2a	19:1-7
			19:2b	
			19:3a	
			19:3b	
			19:4	इफिसुस में कलीसिया की नींव
			19:5-7	
19:8-10		19:8-10	19:8-10	19:8-10
स्कवा के पुत्र	चमत्कार मसीह की महिमा करते हैं		स्कवा के पुत्र	यहूदी जादू-टोना
19:11-20	19:11-20	19:11-20	19:11-14	19:11-12
				19:13-17
			19:15	
			19:16-20	
				19:18-19
				19:20
इफिसुस में विद्रोह	इफिसुस में विद्रोह		इफिसुस में विद्रोह	पौलुस की योजना
19:21-27	19:21-41	19:21-22	19:21-22	19:21-22
				इफिसुस:सुनार विद्रोह
		19:23-27	19:23-27	19:23-31
19:28-41		19:28-41	19:28-34	
				19:32-41
			19:35-41	

पठन चक्र तीसरा ("अच्छे बाइबल अध्ययन का मार्गदर्शन" से)

पैराग्राफ स्तर पर मूल लेखक के अभिप्राय को समझना

यह अध्ययन करने की मार्गदर्शक टीका है, जिसका अर्थ है कि आप अपनी बाइबल-व्याख्या के स्वयं उत्तरदायी हैं। हम में से प्रत्येक को अपने ज्ञान व समझ के अनुसार कार्य करना चाहिए। व्याख्या-प्रक्रिया में आप, आपकी बाइबल तथा पवित्र आत्मा प्राथमिक स्थान रखते हैं। आपको यह टीका कार्य टीकाकार पर नहीं छोड़ना चाहिए।

पूरा अध्याय एक बैठक में पढ़ें। विषयों को पहचानें। अपने विषय-विभाजन की तुलना उपरोक्त पाँच आधुनिक अनुवादों के विषय-विभाजन से करें। पैराग्राफों का विभाजन प्रेरणा प्राप्त नहीं होता है, परन्तु यह मूल लेखक के

अभिप्राय को समझने की कुंजी है, जो कि व्याख्या करने का आधार है। प्रत्येक पैराग्राफ में केवल एक ही मूल विषय होता है:

1. पहला पैराग्राफ
2. दूसरा पैराग्राफ
3. तीसरा पैराग्राफ
4. अन्य

शब्दों और वाक्यांशों का अध्ययन

NASB (नवीनतम) पाठ : प्रेरितों के काम 19:1-7

1जब अपुल्लौस कुरिन्थुस में था, तो पौलुस ऊपर के सारे प्रदेश से होकर इफियुस में आया। वहाँ कुछ चेलों को देखकर 2उनसे कहा ''क्या तुम ने विश्वास करते समय पवित्र आत्मा पाया?'' उन्होंने उससे कहा, ''हम ने तो पवित्र आत्मा की चर्चा भी नहीं सुनी।'' 3उसने उनसे कहा, ''तो फिर तुम ने किसका बपतिस्मा लिया?'' उन्होंने कहा, ''यूहन्ना का बपतिस्मा।'' 4पौलुस ने कहा, ''यूहन्ना ने यह कहकर मन फिराव का बपतिस्मा दिया कि जो मेरे बाद आनेवाला है, उस पर अर्थात् यीशु पर विश्वास करना।'' 5यह सुनकर उन्होंने प्रभु यीशु के नाम में बपतिस्मा लिया। 6जब पौलुस ने उन पर हाथ रखे, तो पवित्र आत्मा उन पर उतरा, और वे भिन्न-भिन्न भाषा बोलने और भविष्यद्वाणी करने लगे। 7ये सब लगभग बारह पुरुष थे।

19:1 ''ऊपर के देश '' यह उस वैकल्पिक रास्ते की ओर संकेत करता है जो ऊपर के प्रदेशों से होता हुआ उन कलीसियाओं तक जाता था जिन्हें दक्षिणी गलातिया में पौलुस ने अपनी पहले की मिश्नरी यात्राओं के दौरान स्थापित किया था।

▪ **''इफिसुस''** माइकल मागिल अपनी पुस्तक न्यू टैस्टामैन्ट ट्रान्सलाईन पेज 413, #25 (Michael Magill, *NT TransLine*, p. 413, #25) में इस विषय में एक लाभदायक टिप्पणी लिखते हुए बताते हैं कि ''इफिसुस एशिया की राजधानी था, जहाँ प्रेरि. 16:6 में पवित्र आत्मा ने पौलुस को वचन सुनाने से मना किया था। प्रेरि. 18:19-21 में वह थोड़े समय के लिए इफिसुस में ठहरा और वहाँ से जाने की योजना बनाने लगा। परन्तु अब प्रेरि. 19:10 में वह इफिसुस में दो वर्ष से अधिक समय तक रहता है।''

▪ **''चेले''** इस पद द्वारा जान पड़ता है कि वे यीशु पर विश्वास करते थे, उन्होंने या तो यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के सन्देश को सुनकर या फिर अपुल्लौस के प्रचार द्वारा यीशु पर विश्वास किया था (देखें 19:2, ''क्या तुमने विश्वास करते समय पवित्र आत्मा पाया?'' देखें प्रेरि. 3:16 और 6:5 में विशेष शीर्षक)।

स्पष्ट रूप से पवित्र आत्मा ने पौलुस को इस ऊपरी मार्ग द्वारा इस उद्देश्य से भेजा था कि वह इन ''चेलों' की सहायता करे ताकि वे सुसमाचार की पूरी सत्यता जान सकें।

19:2 ''क्या तुमने विश्वास करते समय पवित्र आत्मा पाया'' प्रेरी 19:1 पढ़कर तथा इस कथन द्वारा कि ''क्या तुमने विश्वास करते समय'' स्पष्ट ज्ञात होता है कि ये लोग विश्वासी थे। यह प्रश्न कि क्या तुमने विश्वास करते समय पवित्रा आत्मा पाया, दो बातों से जुड़ा है (1) विश्वास करते समय व्यक्तिगत रूप से पवित्र आत्मा पाना तथा (2) पवित्र आत्मा के आरम्भिक कार्य होना, जिनके बिना कोई विश्वास नहीं कर सकता (देखें, यूहन्ना 6:44,65; रोमि. 8:9)। ये पवित्र आत्मा के कार्य के स्तर और पड़ाव कहलाते हैं (देखें प्रेरि. 8:11,15-17)। वर्तमान समय में जो लोग बाइबल की व्याख्या करते हैं उन्हें प्रेरितों के काम पुस्तक के विवरणों से चेतावनी लेनी चाहिए कि उद्धार संबंधी बातों में आवश्यक बातों और उद्धार की क्रमबद्धता के प्रति सिद्धान्तवादी न बनें। क्योंकि यह पुस्तक उन्हीं बातों का विवरण देती है जो घटी हैं, यह उन बातों का विवरण नहीं देती जो घटना चाहिए। उद्धार एक व्यक्तिगत सम्बन्ध है जिसमें सम्पूर्ण व्यक्तित्व होता है, परन्तु यह प्रगतिशील अनुभव होता है; जैसे जैसे सम्बन्ध गहरा होता जाता है वैसे वैसे आत्मिक समझ बढ़ती है। देखें प्रेरि. 2:40 में विशेष शीर्षक।

■ **"हम ने तो पवित्र आत्मा के बारे में भी नहीं सुना"** यूहन्ना का प्रचार बिना पवित्र आत्मा के आत्मिक प्रभाव उत्पन्न नहीं कर सकता है (देखें, रोमि. 8:6-11; 1 कुरि. 12:3; 1 यूहन्ना 4:2)। यूहन्ना ने अपने प्रचार में पवित्र आत्मा का उल्लेख किया था (देखें, मत्ती 3:11; मरकुस 1:8; लूका 3:16; यूहन्ना 1:32-33), परन्तु याद रखना चाहिए कि उसका सन्देश तैयारी का सन्देश था, वह परिपूर्ति नहीं थी (देखें, यशा. 40:3; मत्ती 3:3)। यूहन्ना पुराने नियम का अन्तिम भविष्यद्वक्ता और प्रचारक और मसीह के आगमन की तैयारी कराने वाला था। उसने लोगों का ध्यान यीशु की ओर आकर्षित किया (देखें, यूहन्ना 1:19-42)।

19:3 "तो फिर तुमने किसका बपतिस्मा लिया" ये लोग यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के चेले थे। स्पष्टरूप से वे उसी जानकारी के प्रति विश्वासयोग्य थे जो उनके पास थी, परन्तु उन्हें अपुल्लौस की तरह यीशु के बारे में अर्थात् सुसमाचार के विषय में यीशु के जीवन, मृत्यु और पुनरुत्थान तथा स्वर्गारोहण की और अधिक जानकारी की आवश्यकता थी। (देखें, प्रेरि. 18:24-28)।

19:3-4 "यूहन्ना का बपतिस्मा" यूहन्ना के बपतिस्में में दो बातें शामिल थीं, मन फिराना और प्रतीक्षा करना या मसीह की आशा करना (देखें, मत्ती 3:11; मरकुस 1:15)। परन्तु यीशु पर विश्वास लाने के द्वारा इसे पूर्ण व सिद्ध हो जाना चाहिए। इतिहास से हमें पता चलता है कि प्रथम शताब्दी में बहुत से भ्रान्त शिक्षा वाले समूह उठ खड़े हुए थे, जो यूहन्ना के चेले होने का दावा करते थे रैकिगनेशन ऑफ क्लैमेन्ट अध्याय 60, (*Recognitions of Clement*, chapter 60) । ऐसे झूठे समूहों को व्यर्थ करने के लिये लूका ने अपने विवरणों को लिखा। यूहन्ना ने यीशु की ओर लोगों का ध्यान आकर्षित किया था (देखें, यूहन्ना 1:19-42)।

19:4 "यीशु पर विश्वास करना" प्रेरि. 3:16 और 6:5 में विशेष शीर्षकः विश्वास देखें।

19:5 "उन्होंने बपतिस्मा लिया" देखें, प्रेरि. 2:38 में विशेष शीर्षक।

■ **"प्रभु यीशु के नाम में"** लूका बपतिस्में को प्रभु यीशु के नाम में बताता है (देखें प्रेरि. 2:38; 8:12,16; 10:48)। प्रेरि. 2:21 में विशेष शीर्षक: "प्रभु के नाम में" देखें। मत्ती इसे पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम में बताता है (देखें, मत्ती 28:19)। उद्धार पाने के लिये बपतिस्में का फार्मूला महत्व नहीं रखता, परन्तु मनुष्य का हृदय महत्व रखता है, बपतिस्मा हृदय से होना चाहिए। फार्मूले को महत्वपूर्ण समझना गलत बात पर जोर देना है। भली भाँति संस्कार-विधि में शामिल होना उद्धार नहीं है, परन्तु पश्चाताप करते हुए, विश्वास करना और यीशु के साथ सम्बन्ध स्थापित करना उद्धार है। प्रेरि. 2:38 में टिप्पणी देखें।

जहाँ तक हम जानते हैं, अपुल्लौस, जो केवल यूहन्ना के बपतिस्में के बारे में जानता था, बपतिस्मा पाया हुआ नहीं था। पवित्र आत्मा स्पष्ट रूप से उसके प्रभावशाली प्रचार और शिक्षा में था।

19:6 "पौलुस ने उन पर हाथ रखे, तो पवित्र आत्मा उन पर उतरा" पवित्र आत्मा के साथ साथ अक्सर हाथ रखने का भी जिक्र पाया जाता है, (देखें, प्रेरि. 8:16-17; 9:17), परन्तु ऐसा हमेशा नहीं होता (देखें, प्रेरि. 10:44; प्रेरि. 6:6 में विशेष विषय)। बाइबल विश्वासी के साथ पवित्र आत्मा को तीन विभिन्न प्रकार से जोड़ता है:

1. विश्वास करते समय
2. बपतिस्मा लेते समय
3. हाथ रखते समय

ये भिन्नताएँ हमें इस विषय में सैद्धान्तिकवाद से बचने की चेतावनी होनी चाहिए। प्रेरितों के काम का उद्देश्य किसी विशेष निर्धारित तरीके को सिखाना नहीं है, परन्तु पवित्र आत्मा की दिव्य क्रियाशीलता का उल्लेख करना है। मुझे मान लेना चाहिए कि यूहन्ना के इन बारह चेलों का भिन्न भिन्न भाषाओं में बोलना मेरे लिए एक आश्चर्यजनक बात है। आमतौर पर प्रेरितों के काम पुस्तक में अन्य भाषाएँ एक यहूदी विश्वासी के लिए प्रमाण है कि परमेश्वर ने:

1. एक नए समूह को ग्रहण किया है अथवा

2. सारी भौगोलिक बाधाएँ तोड़ दी हैं (प्रेरि. 2:4 ब में पूर्ण टिप्पणी देखें)

ये मनुष्य कौन से नए समूह का प्रतिनिधित्व करते थे? वे तो पहले ही से चेले थे (देखें, प्रेरि. 19:1)। लूका ने क्यों इस घटना को लेखबद्ध करने का फैसला किया? वह इस घटना को प्रेरि. 18 में वर्णित अपुल्लौस के साथ बताना पसन्द करता है। यह तरीका कुछ ठीक नहीं लगता; संभवतः इसका अर्थ है कि आधुनिक व्याख्याकार अपनी कुछ बातें मिलाने की कोशिश कर रहे हैं अथवा अपनी व्याख्या को लूका की बातों पर, जो ठीक नहीं हैं, थोप देना चाहते हैं। अन्य भाषाओं में बालने की यह घटना संभवतः उन लोगों के जैसी हो जो कुरिन्थ में थे।

लोगों पर व्यक्तिगत रूप से पवित्र आत्मा उतरने की घटना को, नए नियम में भिन्न भिन्न प्रकार से दर्शाया गया है। इसमें रोचक अन्तर पाया जाता है:

1. पवित्र आत्मा उतरता है (इरकोमाए, इपी) (*erehomai plus epi)* देखें मत्ती 3:16; लू. 19:6, इफी 2:25)
2. पवित्र आत्मा से बपतिस्मा (देखें, मत्ती 3:11; मर. 1:8; लू. 3:16; 11:16; यूह. 1:33; प्रेरि. 1:5)
3. ऊपर आता है (देखें, मत्ती 3:16; मर. 1:10; लू. 3:22)
4. तुझ पर उतरेगा (देखें, लू. 1:35; प्रेरि. 1:8) (इपरकोमाए, इपी) (*eperhomaiplus epi)*
5. परिपूर्ण होना (देखें लू. 1:15, 41, 67; प्रेरि. 2:4; 4:8, 31; 9:17; 13:9, 52)
6. पवित्र आत्मा उण्डेला जाना एककेओ (*ekcheō*) (देखें, प्रेरि. 2:17-18, 33; 10:45; तीतुस 3:6)
7. पाना (देखें, प्रेरि. 2:33, 38; 8:15,17,19; 10:47; 19:2)
8. पवित्र आत्मा दिया गया है (देखें, प्रेरि. 5:32; 10:45; 15:8)
9. पवित्र आत्मा नहीं उतरा था इप्पीपटो (*epipiptō*) (देखें, प्रेरि. 8:16; 10:44; 11:45)

▪ **''और भविष्यद्वाणी करने लगे''** इन शब्दों में पुराने नियम की भाव-विभोर अथवा उल्लासित हो जाने का भाव पाया जाता है (देखें, 1 शमू. 10:10-12; 19:23-24) । सन्दर्भ के अनुसार यह सही हो सकता है। परन्तु 1 और 2 कुरिन्थियों में यह शब्द (देखें, 1 कुरि. 11:4,5,9; 14:1,3,4,5,24,31,39) सुसमाचार को जोश के साथ प्रचार करने का अर्थ प्रकट करता है। नए नियम के अनुसार भविष्यद्वाणी करने की परिभाषा करना कठिन है। इसलिए कि पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होना सुसमाचार को साहस के साथ प्रचार करने से जुड़ा है तो संदर्भ का भी यही अभिप्राय हो सकता है। देखें प्रेरि. 11:27 में विशेष शीर्षक नए नियम में भविष्यद्वाणी

19:7 ''ये सब लगभग बारह पुरुष थे'' बारह एक ऐसी संख्या है जिसका प्रतीकात्मक रूप से अक्सर बाइबल में प्रयोग किया गया है परन्तु यहाँ पर यह इतिहास संबंधी प्रतीत होता है। प्रेरि. 1:22 में विशेष शीर्षक देखें तथा प्रेरि. 1:3 में शीर्षक ''पवित्रशास्त्र में प्रतीकात्मक संख्या'' देखें।

NASB (नवीनतम) पाठ : प्रेरितों के काम 19:8-10
[8]वह आराधनालय में जाकर तीन महिने तक निडर होकर बोलता रहा, और परमेश्वर के राज्य के विषय में विवाद करता और समझाता रहा। [9]परन्तु जब कुछ लोगों ने कठोर होकर उसकी नहीं मानी वरन् लोगों के सामने इस मार्ग को बुरा कहने लगे, तो उसने उनको छोड़ दिया और चेलों को अलग कर लिया, और प्रतिदिन तुरन्नुस की पाठशाला में वाद-विवाद किया करता था। [10]दो वर्ष तक यही होता रहा, यहाँ तक कि आसिया के रहनेवाले क्या यहूदी क्या यूनानी सब ने प्रभु का वचन सुन लिया।

19:8 ''उसने आराधनालय में प्रवेश किया'' आराधनालय में जाना पौलुस का सबसे महत्वपूर्ण कार्य था (देखें, प्रेरि. 9:20; 13:5,14; 14:1; 17:2, 10; 18:4,19,26)।

▪ **''निडर होकर बोलता रहा''** वह इसलिए निडर होकर बोलता रहा क्योंकि पवित्र आत्मा से परिपूर्ण था (देखें, प्रेरि. 4:13,29,31; 9:28,29; 14:3; 18:26)। इसी बात के लिए उसने इफि. 6:19 में प्रार्थना निवेदन रखा।

■ **"तीन महिने तक"** स्पष्ट रूप से इफिसुस के इस आराधनालय ने पौलुस को प्रचार करने, सिखाने और आने वाले कई सब्त के दिनों तक अपने साथ वाद-विवाद करने की अनुमति दी थी। यह सुसमाचार के प्रति उनके खुले हृदय और परमेश्वर द्वारा पौलुस को दी गई योग्यताओं का आदर करना दर्शाता है।

■ **"परमेश्वर के राज्य"** यीशु के प्रचार का यह केन्द्रिय विषय था। यह मनुष्यों के जीवन में परमेश्वर द्वारा राज्य करने और साथ ही एक दिन सम्पूर्ण पृथ्वी पर उसकी इच्छा पूरी होने की ओर संकेत करता है (देखें, मत्ती 6:10) प्रेरि. 1:3 में विशेष टिप्पणी देखें।

19:9 "कुछ लोगों ने कठोर होकर उसकी नहीं मानी" जो भी सुसमाचार सुनता है उसके सामने चुनाव करने का प्रश्न आता है (देखें, प्रेरि. 17:32,34)। यह हमें बीज बोने वाले के दृष्टान्त का स्मरण कराता है (देखें, मत्ती 13; मर. 4)। यह पाप का परिणाम है (देखें, 2 कुरि. 4:4)।

कुछ लोगों ने कठोर होकर उसकी नहीं मानी, यह अपूर्ण कालिक क्रिया है, वे बार बार यह कार्य करते रहे। यहां प्रयुक्त यूनानी शब्द "सक्लेरूनो" (*sklērunō*) का अर्थ बार बार दोहराया जाने वाला कार्य है। यही शब्द रोमियों 9:18 में तथा इब्रा. 3 व 4 (कर्मशा प्रेरी 3:8,13,15; 4:7)में भी प्रयुक्त हुआ है कि इस्राएल जाति ने जंगलों के भ्रमणकाल में बार बार अपना मन कठोर किया। परमेश्वर मनुष्यों को कठोर होने देता है, परन्तु वह किसी के मन को कठोर नहीं करता क्योंकि वह मानवजाति से प्रेम करता है जो उसके स्वरूप पर सृजी गई हैं (रोमि. 1:24,26,28;) और चाहता है कि मानवजाति हर प्रकार के भ्रष्ट कार्यों से बचे और शैतान का सामना करे (इफि. 2:1-3; 4:14; 6:10-18) ।

■ **"लोगों के सामने बुरा कहने लगे"** सुसमाचार मूलरूप से यहूदी धर्म से इतना भिन्न है कि यदि सुसमाचार के आधार भूत सिद्धान्तों की अवहेलना कर दी जाए, तो इनमें परस्पर समझौते की कोई गं ुजाईंश नहीं रहती। लूका बार बार बताता है कि सुसमाचार के प्रति यहूदियों का विरोध निरन्तर जारी रहा है (देखें, प्रेरि. 13:46-48; 18:5-7; 19:8-10; 28:23-28)।

■ **"मार्ग"** प्रेरि. 18:25 तथा 19:23 में टिप्पणी देखें।

■ **"तुरन्नुस की पाठशाला"** कोडेक्स बेजाए, डी, जो पांचवीं शताब्दी के हैं, इस विषय में बताते हैं कि पौलुस सुबह 11.00 बजे से 4.00 बजे शाम तक वाद विवाद करता व सिखाता था, इस दौरान नगर के सब लोग विश्राम करते थे और बिल्डिंग में स्थान उपलब्ध हो जाता था। यह मौखिक परम्परा हो सकती है। पौलुस नियमित रूप से अपना व्यवसाय भी करता था और फिर विश्राम काल में सिखाता था। (देखें, प्रेरि. 20:34)।

तुरन्नुस की पाठशाला के संबंध में बहुत सी विचारधाराएँ पाई जाती हैं:

1. वह एक मिथ्यावादी था जिसका उल्लेख सुईदास ने किया था। सुईदास ने दसवीं शताब्दी में लेखन कार्य किया और प्राचीन श्रेष्ठ स्रोतों का उपयोग किया। उसकी साहित्यिक रचनाएँ बड़ी श्रेष्ठ और राजनीति के एनसायक्लोपीडिया के समान थीं।
2. वह एक यहूदी रब्बी था और मूसा की व्यवस्था को सिखाने का एक स्कूल चलाता था, परन्तु इसका कोई लिखित प्रमाण उपलब्ध नहीं है।
3. यह एक इमारत थी जो आरम्भ में व्यायामशाला थी, पर बाद में लैक्चर हाॅल बन गया जिसे तुरन्नुस नामक व्यक्ति ने खरीद लिया।

पौलुस को यहूदियों के विरोध के कारण आराधनालय छोड़कर जाना पड़ा, उसके साथ बहुत से विश्वासी लोग थे जिन्हें सिखाने के लिए उसे लैक्चर हाॅल किराए पर लेना पड़ा अर्थात् तुरन्नुस को लेना पड़ा, इससे उसे अन्य इफिसुस निवासियों से बातचीत करने का अवसर भी प्राप्त हुआ।

19:10 "दो वर्ष" प्रेरि. 20:31 में पौलुस कहता है, "मैंने तीन वर्ष तक रात-दिन आंसू बहा-बहाकर एक-एक को समझाना न छोड़ा।"

▪ **"आसिया के रहने वाले"** यह स्पष्ट रूप से बढ़ा चढ़ाकर कहीं हुई बात है। यह एक साधारण मुहावरे की शैली है। यीशु ने भी ऐसे बड़े बड़े कथन बोले हैं।

विशेष शीर्षक: पूर्व साहित्य

A. इस बात की पूरी जानकारी (कि बाइबल एक पूर्वीय पुस्तक है, न कि पश्चिमी पुस्तक) व्यक्तिगत रूप से मेरे लिए, जो बाइबल से प्रेम रखता और उस पर भरोसा रखता है कि यह परमेश्वर का सत्य वचन है, आशीष का माध्यम रही है। बाइबल को गम्भीरतापूर्वक पढ़ने पर स्पष्ट प्रतीत होता है कि इसके विभिन्न पाठांश सच्चाई का प्रकाशन सिलसिलेवार नहीं करते हैं बल्कि आंशिक रूप से में करते हैं। प्रेरणा-प्राप्त एक पाठांश, किसी अन्य पाठांश को कभी भी काट नहीं सकता अथवा उसका मूल्य कम नहीं कर सकता है। सच्चाई का प्रकाशन पूरा पवित्रशास्त्र जानने पर होता है, क्योंकि पूरा पवित्रशास्त्र, न कि इसके कुछ ही भाग, प्रेरणा प्राप्त है बल्कि सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र प्रेरणाप्राप्त है, (देखें 2 तीमु. 3:16-17)।

B. बाइबल की अधिकांश सच्चाईयाँ (पूर्वीय साहित्य) प्रान्तीय भाषा या बोली में अथवा विरोधाभासी शब्दों में प्रस्तुत की गई हैं (याद कीजिए कि लूका को छोड़कर नए नियम के सभी लेखक इब्रानी विचारक थे जिन्होंने लेखन में सामान्य यूनानी भाषा का प्रयोग किया था। बुद्धि साहित्य और काव्य साहित्य समानान्तर रूप में सच्चाई को प्रस्तुत करते हैं, जो विरोधाभासी प्रतीत होते हैं, परंतु दोनों ही बातें समान रूप से सत्य होती हैं। विरोधाभासी प्रतीत होने वाली ये बातें हमारी संस्थागत परम्पराओं के लिए जिन्हें हम हृदय में संजोए रखते हैं, पीड़ादायक होती हैं। जैसे :

1. पूर्वासितत्व बनाम मानवीय स्वतंत्र इच्छा।
2. विश्वासी की सुरक्षा बनाम लगे रहना या दृढ़ रहना। देखें विशेष विषय : "दृढ़ रहना"
3. मूल पाप बनाम जानबूझकर पाप करना
4. यीशु परमेश्वर है बनाम यीशु मनुष्य है।
5. यीशु पिता के बराबर बनाम यीशु पिता के अधीन
6. बाइबल परमेश्वर का वचन बनाम मानवीय लेखक
7. पाप रहित (सिद्धतावाद रोमि. 6) बनाम पाप करने से रहित
8. तुरन्त धर्मी ठहराया जाना बनाम धीरे-धीरे प्रगति देखें विशेष विषय : पवित्रीकरण
9. विश्वास द्वारा धर्मी ठहराया जाना (रोमि. 4) बनाम कर्मों द्वारा धर्मी ठहराया जाना (देखें याकूब 2:14-26)
10. मसीही स्वतंत्रता (देखें, रोमि. 14:1-23; 1 कुरि. 8:1-13; 10:23-33) बनाम मसीही उत्तरदायित्व (गला. 5:16-21; इफि. 4:1)
11. परमेश्वर अनुभवातीत है बनाम अन्तर्यामी है
12. परमेश्वर को नहीं जाना जा सकता है बनाम पवित्रशास्त्र और यीशु द्वारा जाना जा सकता है उद्धार के संबंध में पौलुस द्वारा दी गई उपमाएँ
13. परमेश्वर का राज्य उपस्थित है, बनाम भविष्य में परिपूर्णता।
14. पश्चाताप परमेश्वर के वरदान के रूप में (देखें, प्रेरि. 11:18; रोमि. 2:4; 2 तीमु. 2:25) बनाम पश्चाताप उद्धार पाने का आवश्यक प्रत्युत्तर (देखें, मर. 1:15; प्रेरि. 20:21)
15. पुराना नियम स्थाई है बनाम पुराना नियम व्यर्थ और गुजर चुका है (देखें मत्ती 5:17-19 बनाम मत्ती 5:21-28; रोमि. 7 बनाम गलतियों 3)
16. विश्वासी दास है अथवा परमेश्वर की सन्तान व उत्तराधिकारी।
17. उद्धार के लिए पौलस के कई रूपकों में से कौन सा सत्य है?
    a. ले पालक पुत्र होना

b. पवित्रीकरण
c. धर्मी ठहराया जाना
d. छुटकारा
e. महिमान्वित होना
f. पूर्वास्तित्व
g. मेल-मिलाप

"दोनों ... और" "या तो ... या" की तुलना में एक बेहतर धार्मिक मॉडल है। सिद्धांत "सत्य के नक्षत्र" में आते हैं, न कि कौन सा तारा सबसे चमकीला है" या "मुझे कौन सा सबसे अच्छा लगता है" ?!

Copyright © 2014 Bible Lessons International

NASB (नवीनतम) पाठ : प्रेरितों के काम 19:11-20

[11]परमेश्वर पौलुस के हाथों से सामथ्र्य के अनोखे काम दिखाता था। [12]यहाँ तक कि रूमाल और अंगोछे उसकी देह से स्पर्श करा कर बीमारों पर डालते थे, और उनकी बीमारियाँ जाती रहती थीं; और दुष्टात्माएँ उनमें से निकल जाया करती थीं। [13]परन्तु कुछ यहूदी जो झाड़ा फूँकी करते फिरते थे, यह करने लगे कि जिनमें दुष्टात्मा हो उन पर प्रभु यीशु का नाम यह कहकर फूँके, "जिस यीशु का प्रचार पौलुस करता है, मैं तुम्हें उसी की शपथ देता हूँ।" [14]और स्किवा नाम के एक यहूदी प्रधान याजक के सात पुत्र थे, जो ऐसा ही करते थे। [15]पर दुष्टात्मा ने उनको उत्तर दिया, "यीशु को मैं जानती हूँ और पौलुस को भी पहचानती हूँ, परन्तु तुम कौन हो?" [16]और उस मनुष्य ने जिसमें दुष्ट आत्मा थी उन पर लपककर और उन्हें वश में लाकर, उन पर ऐसा उपद्रव किया कि वे नंगे और घायल होकर उस घर से निकल भागे। [17]यह बात इफिसुस के रहने वाले सब यहूदी और यूनानी भी जान गये, और उन सब पर भय छा गया; और प्रभु यीशु के नाम की बड़ाई हुई। [18]जिन्होंने विश्वास किया था, उनमें से बहुतेरों ने आकर अपने अपने कामों को मान लिया और प्रगट किया। [19]जादू करनेवालों में से बहुतों ने अपनी-अपनी पोथियाँ इकट्ठी करके सब के सामने जला दीं, और जब उनका दाम जोड़ा गया, तो पचास हजार चाँदी के सिक्कों के बराबर निकला। [20]इस प्रकार प्रभु का वचन बलपूर्वक फैलता और प्रबल होता गया।

19:11 यह पहली बार नहीं है जबकि परमेश्वर ने अपनी सच्चाई की और अपने अधिवक्ता की पुष्टि करने के लिये आश्चर्यकर्म किए (देखें, प्रेरि. 3:1-10; 5:15; 8:6,13; 9:40-42; 13:11-12; 14:8-11)। इफिसुस नगर में अन्धविश्वास और झाड़ा फंकी आदि प्रचुर मात्रा में विद्यमान था। परमेश्वर ने अपनी अपार दया से पौलुस के माध्यम से सामथ्र्य के कार्य इन शैतानी बन्धनों में पड़े लोगों के मध्य होने दिए ताकि यीशु की महिमा प्रकट हो। परमेश्वर वास्तव में अनुग्रहकारी है।

19:12 "रूमाल" यह संभवतः पसीना सुखाने के लिये काम करते समय सिर से बाँधे जाते थे।

■ **"अंगोछे"** यह उन अंगोछों की ओर संकेत करता है जो काम करते समय बढ़ई कमर में बाँधा करते थे। जो चंगाईयाँ होती थीं वह परमेश्वर के अनुग्रह और सामथ्र्य को दर्शाती हैं और पौलुस की सेवकाई और सुसमाचार की सत्यता की पुष्टि करती हैं।

■ **"दुष्टात्माएँ निकल गई"** यहाँ पर ये दुष्टात्माएँ (देखें लूका 10:17) "अशुद्ध आत्माएँ" कहलाती हैं (देखें मत्ती 12:45; लूका 7:21; 8:2; 11:26; प्रेरि. 19:12,13,15-16)। परन्तु लूका उन्हें "अशुद्ध आत्माएँ" भी कहता है (देखें, प्रेरि. 5:16; 8:7; देखें प्रेरि. 5:3 और 5:16 में विशेष शीर्षक)। प्रेरि. 16:16 में यह "भविष्य बताने वाली आत्मा" कहलाती है। ये सारे शब्द समानार्थी प्रतीत होते हैं।

पौलुस ने अक्सर इन शैतानी आत्माओं की विभिन्न श्रेणियों का जिक्र किया है जैसे, "सब प्रकार की प्रधानता, अधिकार, सामथ्र्य और प्रभुता" (इफि. 1:21), "प्रधानों और अधिकारियों पर, जो आकाश में है" (इफि. 3:10); तथा "प्रधानों, अधिकारियों, अन्धकार की सांसारिक शक्तियाँ, तथा दुष्टता की आत्मिक सेनाएँ, जो आकाश में हैं" (इफि. 6:12)। ये श्रेणियाँ शैतानी आत्माओं के संगठित व व्यवस्थित समूहों की ओर संकेत करती हैं। परन्तु ये आत्माएँ कहाँ है, क्यों हैं, कैसी हैं और कौन हैं, ये सब कल्पनाओं की बातें हैं क्योंकि बाइबल आत्मिक संसार का विस्तृत और स्पष्ट विवरण प्रकाशित नहीं करती है। परन्तु बाइबल इस बात का स्पष्ट विवरण प्रकाशित करती है कि मसीह को तथा उसके प्रेरितों के इन शैतानी दुष्टात्माओं और उनके अन्धकार पूर्ण राज्य तथा मृत्यु पर सामथ्र्य प्राप्त है। यीशु का "नाम" सब नामों में श्रेष्ठ है! यीशु को जानना उद्धार, शान्ति, परिपूर्णता, स्वास्थ्य और बहाली लाता है।

विशेष शीर्षकः पौलुस के लेखों में स्वर्गदूत

रब्बी लोग सोचते थे कि स्वर्गदूत परमेश्वर से ईर्ष्या रखते हैं क्योंकि उसने पतित मानव जाति को सीनै पर्वत पर अपनी व्यवस्था दी, और मानवजाति से प्रेम रखता और उसका ध्यान रखता है, इस कारण वे मानवजाति के शत्रु हैं। ज्ञानवादी झूठे शिक्षक कहा करते थे कि उद्धार केवल एक गुप्त-वाक्यांश द्वारा इन्हीं शत्रु स्वर्गदूतों के माध्यम से मिलता है जो अच्छे देवताओं के पास ऊंचे स्थानों में रहते हैं (देखें, कुलुस्सियों और इफसियों की पत्री)।

पौलुस ने जो शब्द स्वर्गदूतों के लिए प्रयुक्त किए हैं उनके संबंध में जॉर्ज एल्डन लैड ने अपनी पुस्तक "आ थियोलॉजी ऑफ दी न्यू टैस्टामैंट" (A Theology of the NT) में निम्नलिखित रोचक जानकारी दी है :

"पौलुस, शैतान और दुष्टात्माओं को न केवल भले और बुरे स्वर्गदूत ही कहता है पर साथ ही वह उन्हें अन्य शब्दों द्वारा भी पुकारता है जो उनके पदों को दर्शाते हैं। उसकी शब्दावली इस प्रकार है :

- "सारी प्रधानता" : 1 कुरि. 15:24; इफि. 1:21; कुलु. 2:10 (Rule) [*archē*]
- "अधिकारी":इफि.3:10; 6:12; कुलु. 1:16; 2:15; रोमि. 8:38 (Rulers) [*archai*; RSV, "principalities']
- "सारा अधिकार" : 1 कुरि. 15:24; इफि. 1:21; कुलु. 2:10 (Authority) (*Exousia*)
- "अधिकार": इफि. 1:21(*Authorities*) [*exousiai*; RSV, "authorities"]
- "सामर्थ": 1 कुरि. 15:24; इफि. 1:21 (Power) [*dynamis*]
- "प्रधानताएँ" रोमि. 8:38 (Power) [*dynameis*]
- "सिंहासन" : कुलु. 1:16 (Thrones) [*thronoi*]
- "प्रभुता": इफि. 1:21(Lordship) [*kyriotē*s; RSV, "dominion"]
- "प्रभुताएँ": कुलु. 1:16 (Lordships) [*kvriotes*]
- "इस संसार के अन्धकार के हाकीम" : इफि. 6:12 (World rulers of this darkness)
- "दुष्टता की आत्मिक सेना, जो आकाश में है: इफि. 6:12 (The Spiritual hosts of evil)
- "अन्धकार का वश": कुलु. 1:13 (The Authority of darkness)
- "हर एक नाम जो लिया जाता है" इफि. 1:21 (Every name that is named) :
- "जो स्वर्ग में, पृथ्वी पर और पृथ्वी के नीचे है" फिलि. 2:10 (पेज 401)

Copyright © 2014 Bible Lessons International

19:13-16 "यहूदी ओझा" अशुद्ध आत्माओं को निकालने वाले यहूदी पाया जाना सामान्य बात थी (देखें, लूका 11:19)। संदर्भ पढ़ने से स्पष्ट ज्ञात होता है कि दुष्टात्माएँ जादू से अथवा "नाम" लेकर नहीं निकलती हैं जैसा कि इन यहूदी लोगों ने यीशु के नाम से दुष्टात्मा निकालने की कोशिश की, परन्तु दुष्टात्मा तब निकलती है जब हमारा यीशु के साथ व्यक्तिगत सम्बन्ध होता है। यदि यह विवरण दुखपूर्ण न होता, तो हस्यस्पद होता। योसेपस एक एलियाजर नामक यहूदी के बारे में बताता है जो सुलैमान का नाम लेकर दुष्टात्मा निकालता था (एंटीक्वीटि 8.2.5)(*Antiq.* 8.2.5)

19:13 ''अशुद्ध आत्माओं'' यह शैतानी शक्ति की ओर संकेत है। नए नियम में अक्सर आत्मिक जगत की इन दुष्ट आत्माओं का उल्लेख किया गया है परन्तु इनके आरम्भ और गतिविधियों की विस्तृत जानकारी नहीं दी गई है। नए नियम में दुष्टात्माएँ निकालने के वरदान का उल्लेख नहीं है, परन्तु इसकी स्पष्ट रूप से आवश्यकता है। इस विषय में सहायक पुस्तकें:

1. क्रिश्चियन काऊन्सिलिंग एण्ड द अकल्ट, लेखकः काऊच (*Christian Counseling and the Occult* by Kouch)
2. बिबलीकल डीमनोलाजी एण्ड डीमन्स इन द वल्र्ड टूडे, लेखकः उंगर (*Biblical Demonology* and *Demons in the World Today* by Unger)
3. प्रिन्सीपैलिटीज एण्ड पावर्स, लेख: मौन्टोगोमेरी (*Principalities and Powers* by Montgomery)
4. क्राईस्ट एण्ड द पावर्स, लेखक: हैन्ड्रिक बरकाफ (*Christ and the Powers* by Hendrik Berkhof)
5. थ्री क्रूशल क्शचन्स अबाउट स्प्रिचुअल वारफेयर, लेखकः क्लीन्टन अर्नाल्ड (Three *Crucial Questions About Spiritual Warfare* by Clinton E. Arnold)

(देखें, प्रेरि. 5:16 में शीर्षक: शैतानी आत्माएँ)

19:14 ''स्किवा एक यहूदी प्रधान याजक'' वर्तमान समय के विद्वान यह नाम कहीं और नहीं पा सकते हैं। एक यहूदी प्रधान याजक का (*archiereus*) इफिसुस में रहना समस्याओं की बात थी। यहाँ पर स्थानीय सभाघर भी था परन्तु एकमात्र यहूदियों का मन्दिर यरूशलेम ही में था। सुसमाचार में और प्रेरितों के काम पुस्तक में लूका ने प्रधान याजक का नाम अनेक बार इस्तेमाल किया है पर वे सब सपरिवार यरूशलेम में रहते थे।

कुछ लोगों का अनुमान है कि यह यहूदी प्रधान याजक उन याजकों में से किसी एक का वंशज हो सकता है जिनकी नियुक्ति राजा दाऊद ने की थी (देखें, 1 इतिहास 24:7-19)।

यदि यह प्रधान याजक और उसके सातों पुत्र याजक थे, तो यह बड़े आश्चर्य की बात है कि उन्होंने दुष्टात्मा को वश में करने के लिये यहोवा (YHWH) का नाम क्यों नहीं लिया, जैसाकि अन्य यहूदी झाड़ा-फूँकी करने वाले किया करते थे।

19:15 ''यीशु को मैं जानती हूँ, और पौलुस को भी पहचानती हूँ'' यहां पर क्रिया शब्द ''जानती'' हूं के लिए यूनानी शब्द ''गिनोस्को'' (*ginōskō)* का तथा ''पहचानती'' हूं के लिए यूनानी शब्द एपिस्टामाए (*epistama)* का प्रयोग किया गया है। ये दोनों शब्द समानार्थी हैं। दोनों का प्रयोग अक्सर प्रेरितों के काम में हुआ है, परन्तु इस सन्दर्भ में स्पष्ट रूप से थोड़ा अन्तर है। दुष्टात्मा यीशु को मसीह के रूप में जानती थी और पौलुस को उसका अधिवक्ता के रूप में पहचानती थी।

19:17 लूका यह सारा विवरण यह दर्शाने के लिये लिखता है कि पवित्रात्मा किस प्रकार से यीशु की महिमा व बड़ाई कर रही थी (देखें, यूहन्ना 14:25; 16:13-14)।

19:18 ''जिन्होंने विश्वास किया था'' यह पूर्ण कालिक क्रिया है। प्रश्न उठता है कि वे तन्त्र-मन्त्र पर विश्वास करने वाले लोग थे, या यह वाक्यांश उनके सुसमाचार पर नए विश्वास की ओर संकेत करता है? यह भी संभव हो सकता है कि ये सुसमाचार पर विश्वास करने वाले लोग आरम्भ में अपने पुराने अन्धविश्वासों से प्रभावित रहे हों। प्रेरि. 2:40 में विशेष शीर्षक देखें ''उद्धार के लिए प्रयुक्त होने वाली यूनानी क्रिया का काल।''

प्रेरि. 19:13-16 में दुष्टात्मा निकालने वाले उस यहूदी मनुष्य के साथ क्या घटना घटी उसे देखकर वे तन्त्र-मन्त्र करने वाले अवश्य कायल हुए होंगे जो जादू-टोना करते रहे होंगे। इस घटना की चर्चा जिसके द्वारा यीशु की महिमा प्रकट हुई थी, तुरन्त सब जगह फैल गई (प्रेरि. 19:17)। ये लोग ''नाम'' की सामर्थ देखकर भौचक्के रह गये होंगे।

- **''आते रहे''** यह अपूर्ण कालिक क्रिया है। वे लोग निरन्तर आते रहे।

▪ **“स्वीकार करना और उनकी प्रथाओं का खुलासा करना”** सम्पूर्ण प्राचीन मैडिटेरियन इलाका जादू-टोने एवं तंत्रमंत्र से परिपूर्ण था। सामान्य विश्वास यह पाया जाता था कि तन्त्र-मन्त्र से दुष्टात्मा का प्रभाव कम होता है। पोथियाँ जला देना उनका एक तरीका था कि उन्होंने भूतकाल की जादू-टोने वाली गतिविधियों को त्याग दिया है। प्राचीन काल में वहाँ जादूई साहित्य प्रचुर मात्रा में पाया जाता था जो बड़ा प्रसिद्ध था और “इफिसियों के ग्रन्थ” कहलाते थे। यहाँ उन्हें पोथियाँ कहा गया है। उन पोथियों को इक्टठा करके जला दिया जाना, अन्धविश्वास और जादू-टोने पर सुसमाचार की श्रेष्ठता व विजय को दर्शाता है (प्रेरि. 19:20)।

विशेष शीर्षक: अंगीकार करना

A. "पापों का अंगीकार" तथा "खुले आम उन्हें प्रकट करना" इनके लिए यूनानी मूल शब्द के दो रूप प्रयुक्त किए जाते हैं - होमोलोगियो तथा एक्समोलोगो (*homologeō/exomologo)* । इन दोनों में मिश्रित शब्द होमो है जो एक समान है। लोगो (*legō*) का अर्थ है, बोलना अथवा शब्द निकालना। इस प्रकार मूल अर्थ है वही बात कहना, सहमत होना। प्रीपोजिशन (Preposition) *ex* जोड़ने से इसका अर्थ होता है सार्वजनिक रूप से घोषणा करना।

B. इस शब्द के अंग्रेजी में अनुवाद इस प्रकार हैं :
   1. स्तुति (Praise)
   2. सहमत होना (Agree)
   3. घोषणा करना (मत्ती 7:23) (Declare)
   4. अंगीकार करना (Profess)
   5. स्वीकार करना (इब्रा. 4:14; 10:23) (Confess)

C. इस शब्द समूह के दो विपरीत प्रयोग प्रतीत होते हैं :
   1. परमेश्वर की स्तुति करना (To praise God)
   2. पापों का अंगीकार करना (To admit Sin)
      संभव है इस उपयोग का विकास मानव जाति द्वारा परमेश्वर की पवित्रता का अहसास करने और अपनी स्वयं की पापमयी दशा को पहचानने से हुआ हो। इनमें से एक सच्चाई को मानना दोनों को ही मान लेना है।

D. इस शब्द समूह का नए नियम में उपयोग :
   1. प्रतिज्ञा करना (मत्ती 14:7; प्रेरि. 7:17) (To Promise)
   2. किसी बात पर सहमति प्रकट करना (यूह. 1:20; लूका 22:6; प्रेरि. 24:14; इब्रा. 11:13) (To Agree to Something)
   3. स्तुति करना (मत्ती 11:25; लूका 10:21; रोमि. 14:11; 15:9; इब्रा. 13:15) (To Praise)
   4. स्वीकृति (To Assent)
      a. मनुष्य की (मत्ती 10:32; लूका 12:8; यूह. 9:22; 12:42; रोमि. 10:9; फिलि. 2:11; 1 यूह. 2:23; प्रका. 3:5)
      b. सत्य की (प्रेरि. 23:8; 1 यूह. 4:2)
   5. सार्वजनिक घोषणा करना (वैधानिक अनुभूति धार्मिक अंगीकार बन जाता है, प्रेरि. 24:14; 1 तीमु 6:13)   (To Make Public Declaration of)
      a. बिना अपराध बोध (1 तीमु. 6:12; इब्रा. 10:23)
      b. अपराध बोध सहित (मत्ती 3:6; प्रेरि. 19:18; इब्रा. 4:14; याकूब 5:16; 1 यूह. 1:9)

विशेष विषय: "पाना," "विश्वास," "स्वीकार / मान लेना ," और "बुलाना" का क्या अर्थ है?

Copyright © 2014 Bible Lessons International

19:19 ''जादू'' प्रेरि. 8:9 में विशेष विषय देखें।
इन लोगों ने अपनी अपनी पोथियाँ (किताबें) (यूनानी में बिबलौस (*biblous*) जला दीं। ये मोटी किताबें अथवा पटेर-पत्रों पर लिखे छोटे स्क्रोल हो सकते हैं। इन में शपथ और शाप लिखे होते थे, जिन्हें तावीज के रूप में बाँधा जाता था। पुस्तकों का आंका गया भारी मूल्य दो बातें दर्शता है (1) कि ये लोग बहुत अधिक अन्धविश्वासी थे (2) कितने अद्भुत रूप से सुसमाचार द्वारा ये लोग स्वतन्त्र किये गये।

■ **''सबके सामने जला दी''** ये पोथियाँ अथवा चर्म-पत्र बड़े कीमती थे, जिनकी बहुत तलाश की जाती थी। उनका जला दिया जाना, इन नए विश्वासियों का मसीह पर खुल्लमखुल्ला अपने विश्वास की घोषणा करना था।

19:20 यहाँ सुसमाचार को प्रभु का वचन कहा गया है तथा सारांश बताया गया है। लूका द्वारा इस प्रकार के सारांश बताने से हमें प्रेरितों के काम की पुस्तक को छः खण्डों में विभाजित करने में सहायता मिलती है (देखें, प्रेरि. 6:7; 9:31; 12:24; 16:5; 19:20; 28:31)।

NASB (नवीनतम) पाठ : प्रेरितों के काम 19:21-22
[21]जब ये बातें हो चुकीं तो पौलुस ने आत्मा में ठाना कि मकिदुनिया और अखाया से होकर यरूशलेम को जाऊँ, और कहा, ''वहाँ जाने के बाद मुझे रोम को भी देखना अवश्य है।'' [22]इसलिये अपनी सेवा करनेवालों में से तीमुथियुस और इरास्तुस को मकिदुनिया भेजकर आप कुछ दिन आसिया में रह गया।

19:21

NASB	**''पौलुस ने अपनी आत्मा में निश्चय किया''**
NKJV	**''पौलुस ने आत्मा में दृढ़ निश्चय किया''**
NRSV	**''पौलुस ने आत्मा में ठाना''**
TEV, NJB	**''पौलुस ने अपने मन में इरादा किया''**
TEV (फुटनोट)	**''पवित्र आत्मा की अगुवाई में पौलुस ने निर्णय किया''**

यहाँ पर परमेश्वर की सर्वोच्चता और मानवजाति की स्वतन्त्र इच्छा का मिश्रण है। यह अस्पष्ट बात है कि ''आत्मा'' शब्द का उपयोग निम्न दो बातों में से किस एक के लिये किया गया:

1. पवित्र आत्मा के लिये अथवा
2. मानवीय आत्मा के लिये (देखें, प्रेरि. 7:59; 17:16; 18:25; रोमि. 1:9; 8:16; 1 कुरि. 2:11; 5:4; 16:18; 2 कुरि. 2:11; 7:13; 12:18; गला. 6:18; फिलि. 4:23)।

यदि पवित्र आत्मा के लिए उपयोग किया है तो यह एक और इस बात का उदाहरण है कि मनुष्य के उपयुक्त प्रत्युत्तर के साथ परमेश्वरीय नेतृत्व शामिल है।

लूका अक्सर आगे आने वाली घटना का संक्षिप्त विवरण पहले ही अपने विवरण में दे देता है। यह हो सकता है कि लूका मानता था कि पौलुस ने यरूशलेम जाने का निर्णय परमेश्वर से मार्गदर्शन पाने के बाद ही किया था (प्रेरि. 19:21); (*die*) प्रेरि. 1:16 में पूरी टिप्पणी देखें)। उसने यह निर्णय इसलिए नहीं किया कि देमेत्रियुस और कुछ चांदी के कारीगरों ने उसके विरुद्ध इफिसुस में उपद्रव कर दिया था (देखें, प्रेरि. 19:23-41)।

■ **''मुझे रोम को भी देखना अवश्य है''** पौलुस रोम की (*die*) कलीसिया से भी भेंट करना चाहता था (देखें, प्रेरि. 9:15; रोमि. 1:10) जबकि वह स्पेन जाने की तैयारी में था (देखें, रोमि. 15:24,28)। वह उनसे मिलने और उन्हें आत्मिक वरदान देना चाहता था कि वे दृढ़ हो जाएँ।

19:22 ''इरास्तुस'' रोमि. 16:23 में इस नाम के एक व्यक्ति का उल्लेख पाया जाता है, वह कुरिन्थ नगर का कोषाध्यक्ष था। 2 तीमु. 4:20 में फिर उसका उललेख हुआ है यह कहना कठिन है कि यही वह व्यक्ति है।

▪ **"वह स्वयं कुछ समय के लिए एशिया में रहा"** सुसमाचार महिमा के साथ चारों ओर फैलता रहा, लोग प्रभावित होते रहे और विश्वास करते गए (देखें, 1 कुरि. 16:9)।

NASB (नवीनतम) पाठ : प्रेरितों के काम 19:23-27
[23]उस समय उस पन्थ के विषय में बड़ा हुल्लड़ हुआ। [24]क्योंकि देमेत्रियुस नाम का एक सुनार अरतिमिस के चाँदी के मन्दिर बनवाकर कारीगरों को बहुत काम दिलाया करता था। [25]उसने उनको और ऐसी ही वस्तुओं के कारीगरों को इकट्ठा करके कहा, "हे मनुष्यों, तुम जानते हो कि इस काम में हमें कितना धन मिलता है। [26]तुम देखते और सुनते हो कि केवल इफिसुस ही में नहीं, वरन् प्रायः सारे आसिया में यह कह कहकर इस पौलुस ने बहुत से लोगों को समझाया और भरमाया भी है, कि जो हाथ की कारीगरी हैं, वे ईश्वर नहीं। [27]इससे अब केवल इसी बात का ही डर नहीं है कि हमारे इस धन्धे की प्रतिष्ठा जाती रहेगी, वरन् यह कि महान् देवी अरतिमिस का मन्दिर तुच्छ समझा जाएगा, और जिसे सारा आसिया और जगत पूजता है उसका महत्व भी जाता रहेगा।"

19:23 "मार्ग" मसीही धर्म को आरम्भ में पन्थ कहा जाता था। यह पुराने नियम की विचारधारा को दर्शाता है (उदाहरणार्थ भजन 1:1, 6; 5:8; 25:4,8,9,12; 27:11; 37:5,7,23,34; 119:101; 105) अपने विश्वास के कारण (देखें, प्रेरि. 9:2; 19:9,23; 22:4; 24:14,22; 18:25-26)।

19:24 "चाँदी के मन्दिर" यह चाँदी की बनी दो आकृतियों की ओर संकेत करता है (1) अरतिमिस देवी के मन्दिर (2) बहुत से स्तनों वाली स्त्री के समान दिखने वाला उल्कापिण्ड। पुरातत्व-विज्ञान ने इस देवी की बहुत सी चांदी की मूर्तियाँ खोज निकाली हैं परन्तु एक भी मन्दिर नहीं पाया। इस देवी का मन्दिर संसार के सात अद्‌भुत चमत्कारों में से एक है। प्रेरि. 18:19 में टिप्पणी 4 देखें।

▪ **"अरतिमिस"** अरतिमिस, जिसकी उपासना इफिसुस में की जाती थी, इसे रोमी मंदिर की डायना देवी नहीं समझना चाहिए। यह पालन पोषण करने वाली माता देवी समान समझी जाती थी। ये धार्मिक रीतियाँ कनान की रीति-विधियों से बहुत कुछ मिलती जुलती थीं देखें एम.आर.विन्सेन्ट की पुस्तक, वर्ड स्टडीज भाग 1, पेज 271। (see M. R. Vincent, *Word Studies*, vol. 1, p. 271)

▪ **"थोड़ा सा व्यापार जनता था"** इस उपद्रव का कारण आर्थिक समस्या से संबंधित था (देखें, प्रेरि. 19:25,27)। (प्रेरि. 12:18 में विस्तृत जानकारी देखें) (*litotes*)

▪ **"कारीगरों को"** इस यूनानी शब्द से अंग्रेजी शब्द "टैक्नीशियन" बना है। प्राचीन मैडीटेरियन संसार में कारीगरों के संगठन बड़े प्रभावशाली और प्रसिद्ध होते थे। पौलुस भी तम्बू बनाने का कुशल कारीगर था।

19:26-27, यह वाक्यांश हमें एशिया में पौलुस की सेवकाई की सफलता और उसके प्रभाव के बारे में अन्तर्दृष्टि प्रदान करता है।

▪ **"जो हाथ से बने हैं, वे ईश्वर *नहीं*"** यह पुराने की यह विचारधारा दर्शाता है कि मूर्तियों की पूजा व्यर्थ है (देखें, व्यवस्थाविवरण 4:28; भजन 115:4-8; 135:15-18; यशा. 44:9-17; यिर्म. 10:3-11)।

19:27 यूनानी साहित्य में अनगिनित प्रथम शताब्दी के लेख पाये जाते हैं जो अरतिमिस देवी का उल्लेख करते हैं। स्पष्टरूप से मैडीटेरियन संसार के 39 नगर ऐसे हैं जहाँ इस माता देवी अरतिमिस की पूजा की जाती है।

NASB (नवीनतम) पाठ : प्रेरितों के काम 19:28-41

[28]वे यह सुनकर क्रोध से भर गये और चिल्ला-चिल्लाकर कहने लगे, ''इफिसियों की अरतिमिस, महान् है।'' [29]और सारे नगर में बड़ा कोलाहल मच गया, और लोगों ने मकिदुनियावासी गयुस और अीरस्तर्खुस को जो पौलुस के संगी यात्री थे, पकड़ लिया, और एक साथ रंगशाला में दौड़ गए। [30]जब पौलुस ने लोगों के पास भीतर जाना चाहा तो चेलों ने उसे जाने न दिया। [31]आसिया के हाकिमों में से भी उसके कई मित्रों ने उसके पास कहला भेजा और विनती की, कि रंगशाला में जाकर जोखिम न उठाना। [32]वहाँ कोई कुछ चिल्लाता था और कोई कुछ, क्योंकि सभा में बड़ी गड़बड़ी हो रही थी, और बहुत से लोग तो यह जानते भी नहीं थे कि हम किस लिये इकट्ठे हुए हैं। [33]तब उन्होंने सिकन्दर को, जिसे यहूदियों ने खड़ा किया था, भीड़ में से आगे बढ़ाया। सिकन्दर हाथ से संकेत करके लोगों के सामने उत्तर देना चाहता था। [34]परन्तु जब उन्होने जान लिया कि वह यहूदी है, तो सब के सब एक शब्द से कोई दो घण्टे तक चिल्लाते रहे, ''इफिसियों की अरतिमिस, महान् है।'' [35]तब नगर के मन्त्री ने लोगों को शान्त करके कहा, ''हे इफिसुस के लोगो, कौन नहीं जानता कि इफिसियों का नगर महान् देवी अरतिमिस के मन्दिर, और ज्यूस की ओर से गिरी हुई मूर्ति का टहलुआ है। [36]अतः जबकि इन बातों का खण्डन ही नहीं हो सकता, तो उचित है कि तुम शान्त रहो और बिना सोचे-विचारे कुछ न करो। [37]क्योंकि तुम इन मनुष्यों को लाए हो जो न मन्दिर के लूटनेवाले हैं और न हमारी देवी के निन्दक हैं। [38]यदि देमेत्रियुस और उसके साथी करीगरों को किसी से विवाद हो तो कचहरी खुली है और हाकिम भी हैं; वे एक दूसरे पर नालिश करें। [39]परन्तु यदि तुम किसी और बात के विषय में कुछ पूछना चाहते हो, तो नियत सभा में फैसला किया जाएगा। [40]क्योंकि आज के बलवे के कारण हम पर दोष लगाए जाने का डर है, इसलिये कि इसका कोई कारण नहीं, और हम इस भीड़ के इकट्ठा होने का कोई उत्तर न दे सकेंगे। [41]यह कहकर उसने सभा को विदा किया।

19:28 यह पद बताता है कि उस समय का संसार कितनी कट्टरता के साथ अपनी परम्पराओं और धार्मिक रीति-रिवाजों को मानता था। बहुत से लोगों की रोजी-रोटी मन्दिर पर आधारित थी।

▪ **''इफिसियों की अरतिमिस महान है''** उत्पादकता की यह देवी अक्सर ''महान्'' कहलाती थीं संभवतः यह मन्दिर की उपासना का ''स्लोगन'' अथवा नारा था।

▪ **19:29 ''रंगशाला... में दौड़ गए''** इस विशाल रोमी रंगशाला के खण्डर आज भी मौजूद हैं। इसमें लगभग 25 से 56 हजार लोग समा सकते थे (अनुमान भिन्न भी हो सकता है)।

▪ **''एक साथ''** विश्वासियों के मध्य ''मन की एकता'' दर्शाने के लिए इस वाक्यांश ''एक साथ'' का प्रेरितों के काम पुस्तक में अक्सर प्रयोग हुआ है (देखें, प्रेरि. 1:14; 2:1,46; 4:24; 5:12; 8:6; 15:25), परन्तु दुष्ट लोग भी एक हो जाते हैं (देखें, प्रेरि. 7:57; 12:20; 18:12)। एकता रखना इतना महत्वपूर्ण नहीं होता, जितना एकता का उद्देश्य महत्वपूर्ण होता है।

▪ **''गयुस''** वह दिरबे का निवासी था (देखें. 20:4)। यह बड़ा सामान्य नाम था, इसलिए पहचानना कठिन होता है (देखें, 1 कुरि. 1:14; 3 यूहन्ना 1:3)।

▪ **''अरिस्तर्खुस''** यह व्यक्ति थिस्सलुनीके का निवासी था (देखें, प्रेरि. 20:4; 27:2; कुलु. 4:10-11; फिलि. 2:4)।

19:30 ''चेलों ने उसे जाने न दिया'' पौलुस दृढ़ संकल्प वाला मनुष्य था! फिर भी उसने अन्य चेलों की बात मानी (देखें, प्रेरि. 19:31)।

19:31 ''आसिया के कुछ'' इसका अर्थ ''स्थानीय चुने हुए अधिकारी'' है, परन्तु अनेक अर्थों में यह शब्द प्रयुक्त होता था। यह एक और शब्द है जो स्थानीय राजनैतिक अधिकारी के लिए प्रयुक्त होता था परन्तु लूका द्वारा इसका

बिल्कुल सही उपयोग किया गया। स्पष्ट रूप से ये लोग भी विश्वासी बन गये थे अथवा कम से कम पौलुस के मित्र कहलाते थे। लूका फिर से यहाँ दर्शाता है कि मसीही धर्म स्थानीय सरकारी अधिकारियों के लिए खतरा नहीं था। इसी प्रकार की आयतों के आधार पर कुछ टीकाकार यह निष्कर्ष निकालते हैं कि प्रेरितों के काम पुस्तक को इसलिये लिखा गया ताकि पढ़ा जा सके कि पौलुस का मुकदमा रोम में होगा। कलीसिया का झगड़ा यहूदियों से बार-बार होता रहा, परन्तु रोमी सरकार से एक बार भी कलीसिया का झगड़ा नहीं हुआ।

19:32 "सभा " यहाँ सभा के लिए वही यूनानी शब्द "एक्लेसिया" (*ekklesia*) प्रयुक्त हुआ है जो कलीसिया के लिये (चर्च) प्रयुक्त होता है। प्रेरि. 19:32, 39 तथा 41 में यह शब्द नगर के लोगों की सभा की ओर संकेत करता है।

प्रारम्भिक कलीसिया ने इसी शब्द एक्लेसिया को अपने लिए इसलिये पसन्द किया क्योंकि सप्तूजैन्त में यह शब्द "परमेश्वर की सभा" के लिए प्रयुक्त हुआ है। प्रेरि. 5:11 में विशेष शीर्षक "एक्लेसिया" (चर्च) देखें।

▪ **"बहुत से लोग यह जानते भी नहीं थे कि हम किस लिए इकट्ठे हुए हैं"** भीड़ का नजारा बड़ा ही अजीब सा रहा होगा।

19:33 "सिकन्दर" स्थानीय यहूदी समझाना चाहते थे कि वे इन भ्रमणकारी मसीही मिश्नरियों से भिन्न समूह के लोग हैं, परन्तु इसका परिणाम उनके लिए उल्टा निकला। क्या यह सिकन्दर वही व्यक्ति है जिसका उल्लेख 2 तीमु. 4:14 में हुआ है, यह बताना कठिन है, क्योंकि 1 तीमु. 1:20 सन्देह में डालता है।

▪ **"हाथ से संकेत करके"** यह लोगों को शान्त करने का एक सांस्कृतिक तरीका है ताकि जब लोग शान्त हो जाएं तो कुछ कहा जा सके (देखें, प्रेरि. 12:17; 13:16; 19:33; 21:40)।

▪ **"सुरक्षा"** यहां प्रयुक्त यूनानी शब्द से अंग्रेजी का शब्द "अपौलोजी" (*apology)* बना है, जो वैधानिक बचाव की ओर संकेत करता है। लूका ने बहुत बार इस क्रिया-शब्द का प्रयोग किया है (देखें, लूका 12:11; 21:14; प्रेरि. 19:32; 24:10; 25:8; 26:1,2,24) तथा प्रेरि. 22:1 और 25:16 में संज्ञा रूप में प्रयुक्त किया है।

19:34 यह दो बातें दर्शाता है (1) यूनानी-रोमी संसार का सामीवाद विरोधी व्यवहार अथवा (2) भीड़ का पौलुस की सेवकाई के प्रति क्रोध।

19:35 "नगर का मन्त्री " यह प्रधान नागरिक-अधिकारी था, जो रोमी सरकार के साथ इन मन्दिरों के नगर में संपर्क-अधिकारी के रूप में कार्य करता था। यह शब्द (*grammateus)* अधिकांश रूप से इस पुस्तक में यहूदी शास्त्रियों के लिए प्रयुक्त हुआ है (देखें, प्रेरि. 4:5; 6:12; 23:9)। सप्तूजैन्त में यह शब्द मिस्री अगुवों की ओर संकेत करता है जो उच्चाधिकारियों को लेखा जोखा दिया करते थे (देखें निर्ग. 5:6) तथा यहूदी अधिकारियों को लेखा देते थे (देखें व्यवस्थाविवरण 20:5)।

▪ **"इफिसियों का नगर अरतिमिस के मन्दिर का टहलुआ है"** शाब्दिक रूप से यहां प्रयुक्त यूनानी शब्द नेओकौस (*neōko)* का अर्थ है मन्दिर की सफाई करने वाला। बाद में यह सम्मानित पद हो गया हालांकि मूल रूप से सबसे निम्न पद था, अर्थात् मन्दिर का नौकर।

▪ **"स्वर्ग से गिरी हुई *मूर्ति*"** स्पष्ट रूप से यह उल्कापिन्ड (टूटे हुए तारे) के समान बहुत से स्तनों वाली स्त्री की आकृति थी। यह उत्पादक पन्थ की मूर्ति थी। स्वर्ग का शाब्दिक अर्थ है ज्यूस से गिरी हुई मूर्ति (*dios*) ।

19:37 दंगे का उचित कारण और आधार नहीं था इसलिए इसे रोमी अदालती अनुशासन के अधीन कर दिया गया (देखें, प्रेरि. 19:40)।

19:38-39 "वे एक दूसरे पर नलिश करें" भीड़ से कह दिया गया कि वे उचित तरीके से शिकायत करें। इन दोनों पदों में शर्तें भी पाई जाती हैं।

19:38 "कचहरी खुली है और हाकिम भी हैं" दो प्रकार के रोमी प्रान्त होते थे, कुछ सम्राट द्वारा नियंत्रित थे और कुछ राज्य सभा या सिनेट के नियंत्रण में थे अगस्तुस, एक्ट्स ऑफ सैटलमेन्ट, 27 बी.सी.। (Augustus, *Acts of Settlement*, 27 b.c.). रोमी प्रान्तों की देखभाल, इनके द्वारा की जाती थी:

1. राज्यसभा के प्रान्त राज्यपाल द्वारा शासित थे।
2. साम्राज्य के अधीन प्रान्तों का प्रबन्ध प्रतिनिधियों अथवा राजदूतों द्वारा होता था।
3. अन्य छोटे और समस्या वाले प्रान्तों की देखभाल हाकिमों द्वारा की जाती थी।
4. स्वतन्त्र नगर स्थानीय अगुवों द्वारा सरकार की सलाह से चलाए जाते थे।
5. पलीस्तीन जैसे आश्रित प्रान्त स्थानीय अगुवों द्वारा सीमित अधिकारों के साथ चलाए जाते थे।

इफिसुस एक राज्य सभा का प्रान्त था इसलिये वहाँ एक "राज्यपाल" नियुक्त था।
राज्यपालों का उल्लेख प्रेरितों के काम में तीन बार किया गया है:

1. प्रेरि. 13:7-8,12 में, साइप्रस का राज्यपाल सिरगियुस पौलुस।
2. प्रेरि. 18:12 में, अखाया का राज्यपाल गल्लियो।
3. प्रेरि. 19:38 में इफिसुस के राज्यपाल का नाम नहीं दिया गया।

19:39-41 "सभा" यह यूनानी शब्द "एक्लीसिया" (*ekklesia*) है जो नगर की सभा के लिए प्रयुक्त किया गया है बाद में इस शब्द का उपयोग चर्च की सहभागिता के लिए होने लगा क्योंकि इस शब्द का प्रयोग सैप्तूजैन्त में "यहोवा (YHWH) की सभा" (*Qahal*) के लिए किया गया है।

विचार विमर्श के लिये प्रश्न

यह अध्ययन में मार्गदर्शन करने की टीका है, इसका अर्थ है कि आप बाइबल की अपनी व्याख्या करने के स्वयं ही जिम्मेदार हैं। हम में से प्रत्येक को उसी ज्ञान के अनुसार चलना चाहिए जो हमारे पास है। व्याख्या करने के कार्य में आप आपकी बाइबल और पवित्र आत्मा केन्द्रिय स्थान रखते हैं। यह कार्य व्याख्याकार पर न छोड़ दें।

निम्नलिखित प्रश्न अपनी सहायता के लिए दिए गए हैं ताकि आप पुस्तक के गम्भीर विषयों पर पुनर्विचार कर सकें। वे आपके विचारों को आन्दोलित करने के लिए हैं, इनके अलावा और भी प्रश्न हो सकते हैं:

1. क्या हमें प्रेरि. 19:2-6 पदों को निम्न दो बातों का प्रमाण मानना चाहिएः
   a. कुछ विश्वासियों का दुबारा बपतिस्मा लेने का प्रमाण।
   b. सिर पर हाथ रखवाना ताकि पवित्र आत्मा और अन्य भाषा बोलने का वरदान पाया जा सके।
2. भविष्यद्वाणी करने की परिभाषा दें (प्रेरि. 19:6)
3. प्रेरितों के काम पुस्तक क्यों अपुल्लौस और इन बारह चेलों के साथ पौलुस के द्वारा आमना-सामना किए जाने का विवरण प्रस्तुत करती है?
4. क्या प्रेरि. 19:11-12 की बातें कलीसिया के हर युग में और हर संस्कृति में लागू करने के लिए हैं? क्यों/क्यों नहीं?
5. आत्मिक वरदानों की सूची में दुष्टात्माएँ निकालने का वरदान क्यों शामिल नहीं है?
6. इस संबंध में विश्वासियों को क्यों बाइबल संबंधी विस्तृत शिक्षा नहीं दी गई?
7. इन आश्चर्यक्रर्मों की घटनाओं को लिखने का उद्देश्य क्या था? (देखें, प्रेरि. 19:17)

Copyright © 2013 Bible Lesson International

प्रेरितों के काम-20
बाइबल के विभिन्न आधुनिक अनुवादों में पैराग्राफ-विभाजन

UBS[4]	NKJV	NRSV	TEV	NJB
मकिदुनिया की ओर पौलुस की यात्रा	यूनान की ओर यात्राएँ	यूनान की ओर अंतिम यात्रा	मकिदुनिया और अखाया की ओर	पौलुस द्वारा इफिसुस छोड़ना
20:1-6	20:1-6	20:1-6	20:1-6	20:1-6
त्रोआस की ओर पौलुस की विदाई भेंट	त्रोआस में सेवकाई	पौलुस का पलिस्तीं लौटना	त्रोआस में पौलुस की अंतिम भेंट	त्रोआसः पौलुस मृतक को जिलाता है।
		(20:7-21:14)		
20:7-12	20:7-12	20:7-12	20:7-12	20:7-12
त्रोआस से मिलेतुस तक समुद्री-यात्रा	त्रोआस से मिलेतुस तक		त्रोआस से मिलेतुस	त्रोआस से मिलेतुस
20:13-16	20:13-16	20:13-16	20:13-16	20:13-16
इफिसियों के प्राचीनों को पौलुस का उपदेश	इफिसियों के प्राचीनों को प्रोत्साहन		इफिसुस के प्राचीनों को पौलुस का विदाई संदेश	इफिसुस के प्राचीनों से विदाई
20:17-24	20:17-38	20:17-18a	20:17-24	20:17-18a
		20:18b-24		20:18b-21
				20:22-24
20:25-35		20:25-35	20:25-31	20:25-27
				20:28
				20:29-32
			20:32-35	
				20:33-35
20:36-38		20:36-38	20:36-38	20:36-38

पठन चक्र तीसरा ("अच्छे बाइबल अध्ययन का मार्गदर्शन" से)

पैराग्राफ स्तर पर मूल लेखक के अभिप्राय को समझना

यह अध्ययन करने की मार्गदर्शक टीका है, जिसका अर्थ है कि आप अपनी बाइबल-व्याख्या के स्वयं उत्तरदायी हैं। हम में से प्रत्येक को अपने ज्ञान व समझ के अनुसार कार्य करना चाहिए। व्याख्या-प्रक्रिया में आप, आपकी बाइबल तथा पवित्र आत्मा प्राथमिक स्थान रखते हैं। आपको यह टीका कार्य टीकाकार पर नहीं छोड़ना चाहिए।

पूरा अध्याय एक बैठक में पढ़ें। विषयों को पहचानें। अपने विषय-विभाजन की तुलना उपरोक्त पाँच आधुनिक अनुवादों के विषय-विभाजन से करें। पैराग्राफों का विभाजन प्रेरणा प्राप्त नहीं होता है, परन्तु यह मूल लेखक के अभिप्राय को समझने की कुंजी है, जो कि व्याख्या करने का आधार है। प्रत्येक पैराग्राफ में केवल एक ही मूल विषय होता है:

1. पहला पैराग्राफ

2. दूसरा पैराग्राफ
3. तीसरा पैराग्राफ
4. अन्य

संदर्भ की जानकारी - पद 1-6

A. पौलुस की तीसरी मिश्नरी यात्रा के दौरान मकिदुनिया और यूनान की सेवकाई का यह सारांश संक्षिप्त है, इसलिये उल्झन में डालने वाला सारांश है।

B. इस क्षेत्र में पौलुस की सेवकाई को समझने का सबसे अच्छा तरीका उसकी पत्रियाँ पढ़ना है, विशेषकर उसकी 1 और 2 कुरिन्थियों की पत्रियाँ।

C. लूका समय और स्थानों के नाम देकर पौलुस के आने-जाने का विवरण प्रस्तुत करने का प्रयत्न करता है, परन्तु ये संक्षेप में होने के कारण उल्झन पैदा करता है।

शब्दों और वाक्यांशों का अध्ययन

NASB (नवीनतम) पाठ : प्रेरितों के काम 20:1-6
[1]जब हुल्लड़ थम गया तो पौलुस ने चेलों को बुलवाकर समझाया, और उनसे विदा होकर मकिदुनिया की ओर चल दिया। [2]उस सारे देश प्रदेश में से होकर और चेलों को बहुत उत्साहित कर वह यूनान में आया। [3]जब तीन महीने रहकर वह वहाँ से जहाज पर सीरिया की ओर जाने पर था, तो यहूदी उसकी घात में लगे, इसलिये उसने यह निश्चय किया कि मकिदुनिया होकर लौट जाए। [4]बिरीया के पुर्रूस का पुत्र सोपत्रुस और थिस्सलुनीकियों में से अरिस्तर्खुस और सिकुन्दुस, और दिरबे का गयुस, और तीमुथिसुस, और आसिया का तुखिकुस और त्रुफिमुस आसिया तक उसके साथ हो लिए। 5वे आगे जाकर त्रोआस में हमारी बाट जोहते रहे। [6]और हम अखमीरी रोटी के दिनों के बाद फिलिप्पी से जहाज पर चढ़कर पाँच दिन में त्रोआस में उनके पास पहुँचे, और सात दिन तक वहीं रहे।

20:1 ''जब हुल्लड़ थम गया'' यह वाक्यांश अस्पष्ट सा है। इसका अर्थ यह नहीं है कि पौलुस हुल्लड़ समाप्त होते ही तुरन्त चल दिया था। पौलुस हुल्लड़ थम जाने के कारण नहीं चला था बल्कि इसलिये चला था कि उसका सुसमाचार प्रचार कार्य पूरा हो चुका था, इसकी गवाही स्वयं देमेत्रियुस का कथन देता है (देखें, प्रेरि. 19:26)।

■ **''पौलुस ने शिष्यों के लिए भेजा और जब उन्होंने उन्हें बताया था''** पौलुस को सुसमाचार प्रचार और चेले बनाने दोनों की चिन्ता थी (देखें, प्रेरि. 20:2; मत्ती 28:18-20)। हालांकि मनुष्य व्यक्तिगत रूप से सुसमाचार ग्रहण करता है, तौभी वह परिवार का सदस्य बन जाता है जिसकी आत्मिक सेवा की जानी चाहिए (देखें, 1 कुरि. 12:7)। स्थानीय विश्वासी का लक्ष्य कलीसिया बन जाना है।

20:2 ''वह उन ज़िलों से गुज़रा था'' यह संभवतः दो प्रदेशों की ओर संकेत करता है (1) इल्लुरिकुम (देखें रोमि. 15:19) तथा (2) मकिदुनिया के फिलिप्पी, थिस्सलुनीके और बिरिया नगर।

■ **''वह यूनान में आया''** यूनान (*Hellas*) का अर्थ है कि रोमी प्रान्त अखाया (देखें, प्रेरि. 19:21)। यह विशेषकर कुरिन्थुस नगर की ओर संकेत करता है। यहाँ पर पौलुस की सेवा विस्तृत थी। इसी दौरान उसने रोमियों नामक पत्री लिखी थी। उसे कुरिन्थ की कलीसिया की बड़ी चिन्ता थी जैसाकि ये पद दर्शाते हैं (देखें, 1 कुरि. 16:5-9 तथा 2 कुरि. 2:12-13)।

20:3, यह पद पौलुस की यात्राओं की योजना से संबंधित है। परिस्थितियों के कारण उसे अक्सर योजनाएँ बदलनी पड़ती थीं। यहूदियों के षड्यन्त्र के कारण उसने यरूशलेम जाने वाला जहाज नहीं पकड़ा, और स्थल मार्ग से यात्रा की।

▪ **''वह वहाँ से जहाज पर सीरिया की ओर जाने पर था, तो यहूदी उसकी घात में लगे''** वह संभवतः वह जहाज पकड़ना चाहता था जो तीर्थ यात्री यहूदियों को यरूशलेम ले जाता था और सभी बन्दरगाहों पर रूकता था।

▪ **''सोपत्रुस, अरिस्तर्खुस, सिकुन्दुस, गयुस, तीमुथियुस, तुखिकुस, त्रुफिमुस''** ये लोग संभवतः विभिन्न कलीसियाओं से भेजे गए लोग थे ताकि पौलुस के साथ चलकर यरूशलेम की कलीसिया में जाकर विशेष दान पहुँचा सकें। (देखें 1 कुरि. 16:1-3; 2 कुरि. 8-9 अध्याय)।

1. सोपत्रुस, संभवतः रोमियों 16:21 में लिखित सोसिपत्रुस है।
2. अरिस्तर्खुस का उल्लेख, प्रेरि. 19:29; 27:2 और कुलु. 4:10 में हुआ है।
3. तुखिकुस का उल्लेख, इफि. 6:21-22; कुलु. 4:7-8; 2 तीमु. 4:12 और तीतुस 3:12 में हुआ है।
4. गयुस का उल्लेख प्रेरि. 19:29 में हुआ है।
5. त्रुफिमुस का उल्लेख, प्रेरि. 21:29 और 2 तीमु. 4:20 में हुआ है।

निम्नलिखित टिप्पणी 1 कुरिन्थियों पर लिखी गई मेरी कमेन्ट्री की पुस्तक से ली गई है। (देखें www.freebiblecommentary.org)

> **''एकत्रित ''** यूनानी शब्द ''लोगिया'' (*Logia*) वह शब्द है, जो मिस्र के एक यूनानी भाषा के पटेर-पत्र पर धार्मिक कार्यों के लिये दिये गये धन के रूप में उपयोग किया गया पाया गया है, परन्तु इसका सम्बन्ध नियमित टैक्स देने से संबंधित नहीं था देखें, मोल्टन मिलिगन, ग्रीक शब्दावली का शब्दावली, पृष्ठ 377। (cf. Moulton, Milligan, The Vocabulary of the Greek Testament, p. 377) क्या यह शब्द कलीसिया में दिए गये नियमित दान अथवा अतिरिक्त धन देने की ओर संकेत करता है, इस विषय में कुछ कहना कठिन है। यहूदिया के निर्धन लोगों की देखभाल की चिन्ता करना पौलुस ने उस समय आरम्भ किया जब उसकी बातचीत याकूब, पतरस, यूहन्ना और बरनबास से हुई, जिसका उल्लेख गलातियों 2:10; 6:10 में पाया जाता है। यह विशेष दान देने का रिवाज अन्ताकिया की कलीसिया द्वारा आरम्भ किया गया था, जहाँ पर पौलुस और बरनबास सेवकाई करते थे, (देखें, प्रेरि. 11:27-30)। इस दान का वर्णन नए नियम की कुछ अन्य पुस्तकों में भी पाया जाता है (देखें, रोमि. 15:26; 2 कुरि. 8-9 अध्याय; 1 कुरि. 16:1)। यह प्रारम्भिक इब्रानी कलीसिया और गैरयहूदी कलीसियाओं के बीच आपसी संबंधों को सुदृढ़ बनाने की दिशा में एक प्रयास था।
>
> पौलुस अनेक नामों से, इस चन्दे को, जो एक ही बार दिया जाता था, पुकारता था:
>
> 1. दान, (प्रेरि. 24:17)
> 2. सहभागिता, (रोमि. 15:26-27; 2 कुरि. 8:4; 9:13)
> 3. ऋणी होना (रोमि. 15:27)
> 4. सेवा (रोमि. 15:27; 2 कुरि. 9:12)

2 कुरि. 8:6,16 से प्रतीत होता है कि तीतुस कलीसिया का प्रतिनिधि रहा होगा। यह भी आश्चर्य की बात है कि लूका ने प्रेरितों के काम पुस्तक में एक बार भी तीतुस का उल्लेख नहीं किया। ऐसा करने के पीछे एक विचार यह है कि तीतुस लूका का भाई था, और इसी संकोच के कारण उसने तीतुस का नाम कभी नहीं लिखा। 2 कुरि. 8:18 में जिस बिना नाम के भाई का उल्लेख किया गया है, उसके विषय में बहुत से विद्वान् मानते हैं कि वह ''लूका'' था, ओरीगेन, अपनी पुस्तक में तथा ए.टी. रौबर्टसन अपनी, पेज . 245 में, इस बात का समर्थन करते हैं। (Origen recorded in Eusebius' *His. Eccl.* 6.25.6; A. T. Robertson's, *Word Pictures in the NewTestament*, p. 245)

एफ. एफ. ब्रूस अपनी एपोस्टल ऑफ़ द हार्ट सेट फ़्री (F. F. Bruce, Paul: Apostle of the Heart Set Free) में टिप्पणी करते हुए बताते हैं कि तीतुस और लूका भाई-भाई थे। वे बताते हैं:

"लूका पौलुस के एक विश्वासयोग्य योद्धा के नाम का उल्लेख अपनी पुस्तक में क्यों नहीं करता इसका एक स्पष्टीकरण यह हो सकता है कि तीतुस लूका का भाई था; इसके अलावा और पुस्तकें देखें सीएफ डब्ल्यू. एम. रामसे, सेंट पॉल द ट्रैवलर और रोमन नागरिक (लंदन, 1895), पी. 390; ल्यूक द फिजिशियन एंड अदर स्टडीज़ (लंदन, 1908), पीपी. 17 एफ .; ए. सॉटर, 'टाइटस और ल्यूक के बीच एक सुझाव दिया गया संबंध', एक्सपोजिटरी टाइम्स 18 (1906-7), पेज 285, और "दटाइटस और ल्यूक के बीच संबंध, ई ब इ डी, पीपी 335 एफ (W.M Ramsay, *"St. Paul the Traveler and he Roman Citizen* (London, 1895), P.390; *Luke the Physician and other studies* (London, 1908), pp. 17F.; *A Souter, 'A Suggested Relationship between Titus and Luke,"* ibid., pp.335f. यदि हम इन सब बातों के आधार पर मान लेते हैं कि लूका और तीतुस आपस में सगे भाई थे, तो यह बात सही जान पड़ती है कि 2 कुरि. 8:18 में जिस "भाई" का उल्लेख हुआ है वह लूका ही था। पौलुस ने इस "भाई" को अर्थात् लूका को, तीतुस के साथ इसलिये भेजा था कि वह "धन-सहयोग" के इस कार्य का एक ईमानदार गवाह हो तथा सब कुछ भली-भाँति हो सके। पौलुस का यह उद्देश्य विफल हो जाता यदि कोई आलोचक इन दोनों के आपसी रिश्तों पर उंगली उठाता या रिश्ते पर संदेह करता, तब समस्या हो सकती थी P 339 फुटनोट 5I (p. 339 footnote #5)

20:5 "हमारी " यहां लूका अपनी आँखों देखा हाल बताना आरम्भ करता है जो फिलिप्पी में जारी रखना रूक गया था (देखें, प्रेरि. 16)। इन सब हवालों में "हम" पाया जाता है, प्रेरि. 16:10-17; 20:5-15; 21:1-18 तथा 27:1-28:1b)I

20:6 "अखमीरी रोटी के दिनों के बाद" अप्रैल के मध्य आने वाले इस सात-दिन के अखमीरी रोटी के पर्व में अंतिम दिन फसह का पर्व शामिल होता था। (देखें, निर्ग. 13)। फिलिप्पी के आराधनालय के बारे में और वहां के यहूदियों के बारे में हम कुछ नहीं जानते हैं, अतः पौलुस इस पर्व को गवाही देने के उद्देश्य से पालन नहीं करता (देखें, 1 कुरि. 9:19-23)। संभवतः इसका उल्लेख इसीलिये किया गया है क्योंकि पौलुस पिन्तेकुस्त के दिन यरूशलेम में उपस्थित होने की योजना बना रहा था (देखें, प्रेरि. 20:16)।

NASB (नवीनतम) पाठ : प्रेरितों के काम 20:7-12

7सप्ताह के पहले दिन जब हम रोटी तोड़ने के लिये इकट्ठे हुए, तो पौलुस ने जो दूसरे दिन चले जाने पर था, उनसे बातें कीं; और आधी रात तक बातें करता रहा। 8जिस अटारी पर हम इकट्ठे थे, उसमें बहुत दीये जल रहे थे। 9और यूतुखुस नाम का एक जवान खिड़की पर बैठा हुआ गहरी नींद से झुक रहा था। जब पौलुस देर तक बातें करता रहा तो वह नींद के झौंके में तीसरी अटारी पर से गिर पड़ा, और मरा हुआ उठाया गया। 10परन्तु पौलुस उतरकर उससे लिपट गया, और गले लगाकर कहा, "घबराओ नहीं; क्योंकि उसका प्राण उसी में है।" 11और ऊपर जाकर रोटी तोड़ी और खाकर इतनी देर तक बातें करता रहा कि पौ फट गई। फिर वह चला गया। 12और वे उस जवान को जीवित ले आए और बहुत शान्ति पाई।

20:7 "सप्ताह के पहले दिन जब हम रोटी तोड़ने के लिए इकट्ठे हुए" यह प्रारम्भिक कलीसिया की रविवार को प्रार्थना सभा के लिए जमा होने की विधि को दर्शाता है (जो सप्ताह का पहला कार्य-दिवस था) ताकि एक साथ संगति-भोज (प्रेरि. 20:11) और प्रभु का स्मरण-भोज ("रोटी तोड़ना" नए नियम में प्रभु-भोज कहलाता है) ले सकें। यीशु ने स्वयं रविवार को, अपने पुनरुत्थान के बाद तीन दर्शनों द्वारा, आराधना का दिन ठहराया था (देखें, यूहन्ना 20:19, 26; 21:1; लू. 24:36; 1 कुरि. 16:2)।

अनुवादकों के लिये सहायता श्रृंखला में न्यूमैन और निदा द्वारा प्रेरितों के कार्य, पृष्ठ 384 (*The Acts of the Apostles by Newman and Nida,* p.384) बताया गया है कि लूका यहाँ पर यहूदी समय के अनुसार लिखता है जो संभवतः शनिवार संध्या हो सकता है (देखें, टी ई वी)(TEV), परन्तु अधिकांश अनुवादकों ने "सप्ताह के पहले दिन" लिखा है। प्रेरितों के काम पुस्तक में केवल यहीं पर यह वाक्यांश आया है। पौलुस इस वाक्यांश "सप्ताह के पहले दिन" का उपयोग केवल 1 कुरि. 16:2 में ही करता है, जहाँ इसका अर्थ रविवार है।

▪ **"संदेश लम्बा कर दिया"** पौलुस उन्हें अधिक से अधिक शिक्षा देना और प्रोत्साहित करना चाहता था (देखें, प्रेरि. 20:2,31)।

▪ **"आधी रात तक"** उत्पत्ति अध्याय 1 के आधार पर यहूदी लोग दिन का आरम्भ सन्धया से या जब छुटपुट अन्धेरा हो जाता है, तब से मानते थे, जबकि रोमी लोग दिन का आरंभ आधी रात से मानते थे।

20:8 "बहुत दीये वहाँ थे" संभवतः कमरे में बड़ी गर्मी और घुटन रही हो और धुआँ हो। ऐसा प्रतीत होता है कि लूका बताना चाहता हो कि यूतुखुस (Eutychus) क्यों नींद से भर गया था।

20:9 "एक जवान" यह शब्द बताता है कि यूतुखुस पूर्ण यौवनावस्था में था। प्रेरि. 20:12 में भिन्न शब्द प्रयुक्त हुआ है, जिसका अर्थ है बालक। वह बालक नहीं पर स्याना व प्रौढ़ावस्था का युवक था।

▪ **"यूतुखुस...गहरी नींद से झुक रहा था, पौलुस देर तक बोलता रहा"** वह वाक्यांश लम्बे उपदेश और नींद में झौंके लेते हुए श्रोताओं दोनों का बाइबल का प्रमाण है।

▪ **"मरा हुआ उठाया गया"** स्पष्ट रूप से वह मर चुका था! देखें पद-12

20:10 "उससे लिपट गया, और गले लगाया" पौलुस ने ठीक उसी प्रकार कार्य किया जैसा एलिय्याह और एलीशा ने पुराने नियम में किया था जबकि उन्होंने मृतक को जिलाया था। उन्होंने भी इसी तरह किया था (देखें, 1 राजा 17:21; 2 राजा 4:34)। पौलुस लोगों से कहता है, "घबराओ नहीं।" परन्तु सच्चाई तो यह थी, कि उसे इस घटना से बड़ा दुख हुआ होगा।

▪ **"घबराओ नहीं"** यह वर्तमान कालीन आदेशात्मक कथन है परन्तु नकारात्मक भाव में है, जिसका आमतौर पर अर्थ है कि जो कार्य तुम कर रहे हो उसे मत करो।

20:12

NASB, TEV	**"उन्होंने बहुत राहत महसूस की"**
NKJV, NRSV	**"उन्हें कम शान्ति नहीं मिली"**
NJB	**"वे बहुत उत्साहित हुए"**

एन के जे वी और एन आर एस वी शाब्दिक अनुवाद हैं और लूका की प्रवृत्ति को दर्शाते हैं, जो किसी भी घटना को कम महत्व का नहीं समझता था, उसके लिए हर घटना महत्वपूर्ण थी (देखें, प्रेरि. 12:18; 15:2; 19:11,23-24; 20:12; 26:19,26; 27:20; 28:2)।

NASB (नवीनतम) पाठ : प्रेरितों के काम 20:13-16

[13]हम पहले ही जहाज पर चढ़कर अस्सुस को इस विचार से आगे गए कि वहाँ से हम पौलुस को चढ़ा लें, क्योंकि उसने यह इसलिये ठहराया था कि आप ही पैदल जानेवाला था। [14]जब वह हमें अस्सुस में मिला तो हम उसे चढ़ाकर मितुलेने में आए। [15]वहाँ से जहाज खोलकर हम दूसरे दिन खियुस के सामने पहुँचे, और अगले दिन सामुस में जा लगे; फिर दूसरे दिन मिलेतुस में आए। [16]क्योंकि पौलुस ने इफिसुस के पास से होकर जाने का निश्चय किया था कि कहीं ऐसा न हो कि उसे आसिया में देर लगे; क्योंकि वह जल्दी में था कि यदि हो सके तो वह पिन्तेकुस्त के दिन यरूशलेम में रहे।

20:13 "जहाज" पौलुस को यहूदियों के षड्यन्त्र के कारण अपनी यात्रा-योजना में परिवर्तन करना पड़ा था जिसे वे यहूदी समुद्र किनारे अन्जाम देना चाहते थे (देखें, प्रेरि. 20:3)। जहाज पर चढ़ने से पहले शायद पौलुस जानना

चाहता था कि जहाज पर कौन हैं। पौलुस त्रोआस से अस्सुस को पैदल चलकर पहुंचा था जहाँ से उसे जहाज पर चढ़ा लिया गया जिन लोगों का जिक्र प्रेरि. 20:4 में है, वे सब पहले से जहाज में मौजूद थे।

20:14 ‘‘मितुलेने में आए’’ यह लिसबास टापू का मुख्य नगर था। यह टापू सबसे बड़ा टापू था जो एशिया माइनर से थोड़ी दूरी पर (पश्चिमी टर्की में) था।

20:15-16 यह बड़े आश्चर्य की बात है कि लूका जहाज के मार्ग की अच्छी जानकारी रखता था। वह समुद्री यात्रा के अनेक टैक्नीकल शब्दों का अपने ‘‘हम’’ विवरणों में प्रयुक्त करता है। उसकी समुद्री यात्रा में कई बार ‘‘हम’’ का प्रयोग किया गया है। स्पष्ट रूप से लूका एक विद्वान था जिसने अनेक समुद्री यात्राएँ की थीं।

20:15 ‘‘खियुस’’ यह भी एजियन सागर का एक टापू था। यह टापू लम्बा और सकरा तथा किनारे पर था।

- **‘‘सामुस’’** यह भी इफिसुस के निकट एशिया माइनर के पश्चिमी तट पर एक टापू था।

- **‘‘मिलेतुस’’** किसी समय यह इफिसुस के दक्षिणी तट पर एक समुद्री तट का बड़ा और महत्वपूर्ण नगर था जो माईन्डर नदी के मुंहाने पर था। पौलुस यहाँ पर उतरा और इफिसुस के प्राचीनों को अपने पास बुलवाया। यह लगभग 30 मील की यात्रा थी।

20:16 ‘‘पौलुस ने इफिसुस के पास से होकर जाने का निश्चिय किया था’’ ऐसा जान पड़ता है कि पौलुस को उस जहाज पर किसी प्रकार का नियन्त्रण प्राप्त था। यदि यह सही है तो (1) या तो उसने जहाज अपने लिए किराए पर ले लिया था अथवा (2) उन्होंने ऐसा जहाज पकड़ा था जो इफिसुस में नहीं रुकता था।

- **‘‘यदि’’** यहाँ पर उसकी अभिलाषा प्रकट होती है कि कहीं देर न हो जाए।

- **‘‘पिन्तेकुस्त’’** यह यहूदियों का एक पर्व था जो फसह के बाद 50वें दिन आता था। पद 3 के कारण पौलुस फसह का पर्व नहीं मना सका था।

सन्दर्भ की जानकारी में प्रेरि. 20:17 से 21:16 के संबंध में

A. इस पाठांश में आत्म-रक्षा का भाव पाया जाता है मानों कोई है जो पौलुस पर आक्रमण करके उसकी हानि करना चाहता है (देखें, प्रेरि. 20:33)।

B. प्रेरितों के काम पुस्तक में केवल यही एकमात्र उदाहरण है जब पौलुस विश्वासियों में प्रचार करता है। प्रेरि. 13:16 क्रमशः में वह यहूदियों को सम्बोधित करता है, जबकि प्रेरि. 14:15 क्रमशः में और 17:22 क्रमशः में वह अन्यजातिय यूनानी मूर्ति पूजकों को सम्बोधित करता है।

C. इस सन्देश की बहुत सी बातें पौलुस की पत्रियों की बातों के समान हैं। पौलुस की अद्भुत शब्दावली उसके विदाई सन्देश में पाई जाती है। दूसरों की साक्षियाँ लिखने में हम यहाँ लूका की विश्वासयोग्यता देखते हैं।

NASB (नवीनतम) पाठ : प्रेरितों के काम 20:17-18अ
17उसने मिलेतुस से इफिसुस में कहला भेजा, और कलीसिया के प्राचीनों को बुलवाया। 18जब वे उस के पास आए, तो उनसे कहा:

20:17 ‘‘मिलेतुस’’ यह बन्दरगाह इफिसुस के दक्षिण में 30 मील की दूरी पर था।

▪ **"प्राचीनों"** यूनानी में "प्रेसबुटरास" (*presbuteros*), इस शब्द से "प्रेसबिटर" तथा "प्रेसबिटिरियन" शब्द बने हैं। प्रेरि. 20:17,28 और तीतुस 1:5,7 के कारण "ऐल्डर" या "प्राचीन" और "बिशप" (*episcopoi*) शब्दों का अर्थ "पास्टर" (*poimenos*) (इफि. 4:11) का समानार्थी शब्द बनता है। "प्राचीन" शब्द की पृष्ठभूमि यहूदी है, तथा "बिशप" अथवा "ओवरसीयर" की पृष्ठभूमि यूनानी राजनीतिज्ञ। प्रबन्धक की है।

नए नियम में केवल दो स्थानीय चर्च लीडरों का उल्लेख किया गया है-पास्टर और डीकन (देखें, फिलि. 1:1)। 1 तीमुथियुस 3 में सूचीबद्ध तीन समूह हो सकते हैं, जिसमें विधवाओं की भूमिका या सेवकों की (क्रमशः रोम 16:1)।

ध्यान दें कि ये शब्द बहुवचन में है, जिसका अर्थ घर की कलीसियाओं के अगुवे हो सकता है (देखें, प्रेरि. 11:30; 14:23; 15:2,4,6,22-23; 16:4; 21:18; 1 तीमु. 5:17,19, तीतु. 1:5; याकु 5:14 1 पत. 5:1)।

▪ **"कलीसिया"** यह यूनानी शब्द "एक्लीसीया" (*ekklesia*) नगर की सभा के लिये प्रयोग में लाया जाता है (देखें, प्रेरि. 19:39)। परन्तु सप्तूजैन्त में इसका प्रयोग पुराने नियम की "इस्राएल की सभा कहल (*qahal*) के लिये किया गया है। प्रारम्भिक कलीसिया ने इस शब्द का प्रयोग विश्वासियों की नई मण्डली के लिये अर्थात् अपने लिये इस्तेमाल करना चुना ताकि यह मण्डली, परमेश्वर की प्रजा इस्राएल का प्रतीक कहलाए। नए नियम की कलीसिया मानती है कि यीशु नासरी ही प्रतिज्ञात मसीह है, इसलिये पुराने नियम की सारी प्रतिज्ञाएँ यीशु में पूर्ण होती हैं। और यही सच्चा इस्राएल है (देखें, प्रेरि. 5:11 में विशेष शीर्षक)।

NASB (नवीनतम) पाठ : प्रेरितों के काम 20:18ब से 24

[18]"तुम जानते हो कि पहले ही दिन से जब मैं आसिया में पहुँचा, मैं हर समय तुम्हारे साथ किस प्रकार रहा-[19]अर्थात् बड़ी दीनता से, और आँसू बहा-बहाकर, और उन परीक्षाओं में जो यहूदियों के षड्यन्त्र के कारण मुझ पर आ पड़ी, मैं प्रभु की सेवा करता ही रहा; [20]और जो-जो बातें तुम्हारे लाभ की थीं, उनको बताने और लोगों के सामने और घर-घर सिखाने से कभी न झिझका, [21]वरन् यहूदियों और यूनानियों के सामने गवाही देता रहा कि परमेश्वर की ओर मन-फिराना और हमारे प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करना चाहिए। [22]अब देखो, मैं आत्मा में बन्धा हुआ यरूशलेम को जाता हूँ, और नहीं जानता कि वहाँ मुझ पर क्या-क्या बीतेगा; [23]केवल यह कि पवित्र आत्मा हर नगर में गवाही दे देकर मुझ से कहता है कि बन्धन और क्लेश तेरे लिये तैयार हैं। [24]परन्तु मैं अपने प्राण को कुछ नहीं समझता कि उसे प्रिय जानूँ, वरन् यह कि मैं अपनी दौड़ को और उस सेवा को पूरी करूँ, जो मैं ने परमेश्वर के अनुग्रह के सुसमाचार पर गवाही देने के लिये प्रभु यीशु से पाई है।

20:18 "तुम जानते हो...मैं हर समय तुम्हारे साथ किस प्रकार रहा" पौलुस मसीह के साथ अपने सम्बन्धों और रहन-सहन की पुष्टि करता है। प्रेरि. 20:18-19 में पौलुस जिस दृढ़ता के साथ इन सच्चाई को प्रस्तुत करता है उससे उसके आलोचकों की उपस्थिति प्रकट होती है।

20:19 "बड़ी दीनता से...मैं प्रभु की सेवा करता ही रहा" मसीही सदगुणों की सूची का आरम्भ दीनता और नम्रता से होता है, जिसका परिणाम परस्पर आत्मा की एकता है (देखें, इफि. 4:2-3)। "दीनता" सबसे अलग मसीही सदगुण है जो यूनानी सदाचारियों (स्तोईकी) की सूची में नहीं पाया जाता है। मूसा (गिनती 12:3) तथा यीशु (मत्ती 11:29) दोनों का उल्लेख इसी शब्द द्वारा किया गया है। पौलुस भी इस शब्द का प्रयोग अनेक बार करता है (देखें, इफि. 4:2; फिलि. 2:3; कुलु. 2:18,23; 3:12)।

विशेष शीर्षकः "नए नियम में अवगुण तथा सद्गुण

नए नियम में सामान्य रूप से दुर्गुणों और सदगुणों की सूची पाई जाती है इन सूचियों की परस्पर विरोधी विशेषताओं को निम्नलिखित पाठों आंसुओं में देखा जा सकता है

1. पौलुस	दुर्गुण	सदगुण

	रोमियों 1:28-32	
	रोमियों 13:13	रोमियों 12:9-21
	1 कुरि. 5:9-11	
	1 कुरि. 6:10	1 कुरि. 6:6-9
	2 कुरि. 12:20	2 कुरि. 6:4-10
	गला. 5:19-21	गला. 5:22-23
	इफि. 4:25-32	
	इफि. 5:3-5	
		फिलि. 4:8-9
	कुलु. 3:5,8	कुलु. 3:12-14
	1 तीमु. 1:9-10	
	1 तीमु. 6:4-5	
	2 तीमु. 2:22 अ, 23	तीमु. 2: 22 ब, 24
	तीतुस 1:7; 3:3	तीतुस 1:8-9; 3:1-2
2. याकूब	याकूब 3:15-16	याकूब 3:17-18
3. पतरस	1 पत. 4:3	1 पत. 4:7-11
	2 पत. 1:9	2 पत. 1:5-8
4. यूहन्ना	प्रका. 21:8; 22:15	

Copyright © 2012 Bible Lessons International

▪ **"आँसू बहा-बहाकर, और परीक्षाओं में"** अन्यजातियों का प्रेरित होने के नाते जो जो शारीरिक और भावनात्मक कष्ट
उसने 2 कुरि. 4:7-12; 6:3-10; 11:24-28 में उठाए उनकी वह सूची प्रस्तुत करता है। सेवकाई में कीमत चुकानी होती है।

▪ **"यूहदियों के षड्यन्त्र के कारण "** प्रेरितों के काम पुस्तक में इन षड्यन्त्रों के बहुत से उदाहरण मिलते हैं (देखें, प्रेरि. 9:24; 13:45,50; 14:2,4,5,19; 17:5,13; 18:12; 20:3; 21:27; 23:12,27,30; 24:5-9,18-19)।

20:20 "कभी न झिझका" यह शब्द जहाज चलाते समय प्रयुक्त होता है। जलयान जब बन्दरगाह पर पहुंचता है तो जहाज किनारे लगाने में चालक जरा भी नहीं झिझकता (प्रेरि. 20:27)।

▪ **"जो जो बातें तुम्हारे लाभ की थीं"** सुसमाचार से संबंधित हर बात वह उन्हें सिखाता था कि कैसे सुसमाचार ग्रहण करें, कैसे उसके अनुसार जीएँ, कैसे सुसमाचार की रक्षा करें और कैसे इसे फैलाएँ? हर बात वह सिखाता था।

▪ **"लोगों के सामने और घर-घर सिखाने से"** इसका संभवतः अर्थ यह है कि न केवल पौलुस सार्वजनिक सभाओं में ही परन्तु घरेलू कलीसियाओं व घरों में जाकर भी सिखाया करता था। मूल बात यह है कि किस प्रकार उनके मध्य कार्य करता और कहता था उससे वे भली-भाँति परिचित हैं। पौलुस पर संभवतः किसी स्थानीय समूह ने आक्रमण किया होगा। वह इसी तरीके से आलोचनाओं को दूर करता था।

20:21 "यहूदियों और यूनानियों के सामने गवाही देता रहा" दोनों समूहों के लिए उसके पास एक ही सन्देश था। प्रस्तुति अक्सर भिन्न होती थी परन्तु सन्देश की विषय-वस्तु एक ही होती थी जैसा कि प्रेरितों के काम के

उपदेशों में पाई जाती है (देखें, प्रेरि. 2:14 में विशेष विषय *kerygma* "करिगमा"। पौलुस का तरीका था कि पहले वह यहूदियों को सुसमाचार सुनाता था (देखें, रोमि. 1:16; 1 कुरि. 1:18,24)।

▪ **"परमेश्वर की ओर मन-फिराना और हमारे प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करना चाहिए"** मन-फिराना हृदय का परिवर्तन होता है (यूनानी शब्द), फिर इसके बाद कार्यों में परिवर्तन है (इब्रानी शब्द)। यह उद्धार पाने की दो शर्तों में से एक शर्त है। दूसरी शर्त है प्रभु यीशु मसीह में विश्वास करना (देखें, मरकुस 1:15; प्रेरि. 3:16; देखें प्रेरि. 3:16 में विशेष शीर्षक) इनमें एक नकारात्मक है (अपने आपे से फिरना और पाप से फिरना)। दूसरी सकारात्मक है (यीशु को गले लगाने के लिये फिरना और अपने बदले में उसके द्वारा दिए गये प्रायश्चित को स्वीकार करना)। दोनों ही शर्तें आवश्यक हैं। मैं विश्वास करता हूँ कि नए नियम में कुछ और भी शर्तों हैं: निश्चित रूप से आरम्भिक पश्चाताप और विश्वास तथा निरन्तर पश्चाताप करना और विश्वास करना परन्तु साथ में आज्ञापालन करना और धीरजन्त रहना चाहिए।

"हमारे प्रभु यीशु मसीह" के विषय में कुछ प्राचीन यूनानी मूलपाठों में अन्तर या भिन्नताएँ पाई जाती हैं। यहपदवी "मसीह" मूलपाठ बी वैटिकानुस (Vaticanus) में नहीं है, परन्तु P^{74},א,A, और C और सी में पाई जाती है। अधिकतर मूलपाठों की ये भिन्नताएँ अर्थ में कोई परिवर्तन नहीं करती हैं। UBS^4 यूनानी पाठांश अल्प-पठन को उपयुक्त मानता है, क्योंकि इसका कोई कारण नहीं है कि क्यों कोई लेखक इसे हटा देता है। परन्तु ऐसे भी प्रमाण पाए जाते हैं जब उन्होंने विस्तृत वाक्यांश लिखे हैं (देखें, परिशिष्ठ 2: पाठालोचन)।

20:22

NASB	**"आत्मा में बन्धा हुआ"**
NKJV	**"आत्मा में बन्धा हुआ"**
NRSV	**"आत्मा का बन्धुआ बनकर"**
TEV	**"पवित्र आत्मा के आज्ञा पालन में "**
NJB	**"आत्मा की बन्धुआई में"**

यह पूर्ण कालिक-क्रिया है। यह वाक्यांश पौलुस के विश्वास को दर्शाता है कि परमेश्वर सब बातों में उसकी अगुवाई कर रहा है (देखें, प्रेरि. 18:21; 19:21; 20:23; 1 कुरि. 4:19; 7:40; 16:7)। 2:2 तथा प्रेरि. 19:21 की टिप्पणी देखें, तथा विशेष देखें नए नियम में पवित्र आत्मा *(PNEUMA)* प्रेरि. 20:23 में शब्द "पवित्र आत्मा" आया है।

20:23 "पवित्र आत्मा हर नगर में गवाही देकर मुझ से कहता है कि बन्धन और क्लेश तेरे लिए तैयार हैं" यह कार्य पवित्र आत्मा ने विभिन्न नबियों का उपयोग करके पूरा किया जिन्होंने पौलुस को चेतावनी दी (देखें, प्रेरि. 9:16; 21:4,10-12)। अक्सर परमेश्वर ऐसे लोगों को भेजता और इस्तेमाल करता है जो नकारात्मक प्रतीत होते हैं। परन्तु उनका उद्देश्य सकारात्मक होता है (देखें, यशा. 55:8-11)। पौलुस अक्सर अपनी व्यक्तिगत परेशानियों के कारण विचलित नहीं होता, वह जानता और विश्वास करता है कि उसके द्वारा परमेश्वर के उद्देश्यों की पूर्ति होगी।

20:24 "मैं अपने प्राण को कुछ नहीं समझता कि उसे प्रिय जानूँ" इस प्रकार की सोच पतित और आत्म-केन्द्रित मानवजाति की सोच से बिल्कुल विपरीत है। मसीही लोगों का विश्वदृष्टिकोण भिन्न होता है। वे पाप और स्वार्थ के लिए मृतक होते हैं। परन्तु परमेश्वर के लिए जीवित होते हैं (देखें, रोमि. 6; 2 कुरि. 5:14-15; गला. 2:20; 1 यूह. 3:16)। अपनी मनमानी के लिए मर जाना, जीवन में निस्वार्थ सेवा करने की स्वतन्त्रता लाता है।

▪ **"अपनी दौड़ को पूरी करूँ"** पौलुस अक्सर इस उपमा "दौड़" का उपयोग करता है। वह अपने जीवन को एक खिलाड़ी के रूप में बताता है (देखें, 1 कुरि. 9:24-27; गला. 2:2; 5:7; फिलि. 2:16; 3:14; 2 तीमु. 2:5; 4:7)। पौलुस विश्वास करता था कि उसके लिए परमेश्वर के पास एक विशेष योजना, उद्देश्य और इच्छा है।

■ **''उस सेवा को पूरी करूँ जो मैंने यीशु से पाई है''** पौलुस ने दमिश्क के मार्ग पर बुलाहट पाई थी (प्रेरि.9)। सभी विश्वासी बुलाए गये हैं और उन्हें वरदान दिए गये हैं (देखें, इफि. 4:11-12)। इसका अहसास करना और यह विचारधारा रखना हमारे जीवन को बदल देगा (देखें, 2 कुरि. 5:18-20)। हम सेवकाई में संलग्न स्त्री-पुरुष हैं। हमने सेवा करने के लिये उद्धार पाया है। हम सब सुसमाचार के और वरदानों के भण्डारी हैं।

■ **''परमेश्वर के अनुग्रह का सुसमाचार''** पतित मानवजाति की एकमात्र आशा परमेश्वर की सदा रहने वाली करुणा और दया में पाई जाती है। अनन्त जीवन पाने के लिए जो कुछ हमारे लिए आवश्यक है उस सब कुछ का प्रबन्ध त्रिएक परमेश्वर ने हमारे लिए कर दिया है। हमारी आशा इसी बात में पाई जाती है कि परमेश्वर कौन है और उसने हमारे लिए क्या किया है।

यह बड़े आश्चर्य की बात है कि लूका ने संज्ञा रूप में ''सुसमाचार'' का बहुत कम प्रयोग किया है, (लूका में तो बिल्कुल नहीं, पर प्रेरितों के काम में दो बार, 15:7 में और 20:24 में) परन्तु क्रिया रूप में दोनों ही पुस्तकों में कई बार किया है।

NASB (नवीनतम) पाठ : प्रेरितों के काम 20:25-35

**25अब देखो, मैं जानता हूँ कि तुम सब जिनमें मैं परमेश्वर के राज्य का प्रचार करता फिरा, मेरा मुँह
फिर न देखोगे। 26इसलिये मैं आज के दिन तुम से गवाही देकर कहता हूँ कि मैं सब के लहू से निर्दोष हूँ
27क्योंकि मैं परमेश्वर के सारे अभिप्राय को तुम्हें पूरी रीति से बताने से न झिझका 28इसलिये अपनी और
पूरे झुण्ड की चैकसी करो जिसमें पवित्र आत्मा ने तुम्हें अध्यक्ष ठहराया है, कि तुम परमेश्वर की कलीसिया
की रखवाली करो, जिसे उसने अपने लहू से मोल लिया है। 29मैं जानता हूँ कि मेरे जाने के बाद फाड़नेवाले
भेड़िये तुम में आएँगे और झुण्ड को न छोड़ेंगे। 30तुम्हारे ही बीच में से भी ऐसे-ऐसे मनुष्य उठेंगे, जो चेलों
को अपने पीछे खींच लेने को टेढ़ी-मेढ़ी बातें कहेंगे। 31इसलिये जागते रहो, और स्मरण करो कि मैं ने तीन
वर्ष तक रात दिन आँसू बहा-बहाकर हर एक को चितौनी देना न छोड़ा। 32और अब मैं तुम्हें परमेश्वर को,
और उसके अनुग्रह के वचन को सौंप देता हूँ; जो तुम्हारी उन्नति कर सकता है और सब पवित्र किए गए
लोगों में साझी करके मीरास दे सकता है। 33मैं ने किसी के चाँदी, सोने या कपड़े का लालच नहीं किया।
34तुम आप ही जानते हो कि इन्हीं हाथों ने मेरी और मेरी साथियों की आवश्यकताएँ पूरी कीं। 35मैंने तुम्हें
सब कुछ करके दिखाया कि इस रीति से परिश्रम करते हुए निर्बलों को सम्भालना और प्रभु यीशु के वचन
स्मरण रखना अवश्य है, जो उसने आप ही कहा हैः ''लेने से देना धन्य है''।**

20:25 ''मैं जानता हूँ कि तुम सब मेरा मुँह फिर न देखोगे'' वह स्पेन जाने की योजना बना रहा था (देखें, रोमियों 15:24,28), परन्तु संभवतः सन्दर्भ के अनुसार यह आने वाले समय में उसको यरूशलेम में बन्दी बना लिए जाने और उसकी मृत्यु हो जाने की ओर संकेत करता है। यदि पास्तरीय पत्र उसकी चैथी मिश्नरी यात्रा का वर्णन करते हैं तो संभवतः वह निम्न क्षेत्रों में फिर अवश्य आया होगा:

1. इफिससु, 1 तीमु. 1:3; 3:14; 4:13
2. मिलेतुस, 2 तीमु. 4:20
3. संभवतः त्रोआस में भी, 2 तीमु. 4:13

पौलुस परमेश्वर पर अटल विश्वास के साथ जीता था कि परमेश्वर उसकी अगुवाई करता है। वह भविष्य के बारे में कुछ नहीं जानता था।

■ **''परमेश्वर के राज्य का प्रचार''** देखें प्रेरित 2:34

20:26 "मैं सभी पुरुषों के खून से निर्दोष हूं" यह प्रेरि. 18:6 की तरह और विशेषकर यहेज. 3:16 क्रमशः तथा 33:1 क्रमशः तथा 33:1 क्रमशः की तरह एक यहूदी मुहावरा है। पौलुस ने ईमानदारी के साथ सबको सुसमाचार सुनाया था (देखें, 2 कुरि. 2:17)। अब जिन्होंने सुसमाचार पर विश्वास किया और जिन्होंने तिरस्कार किया, अपने

अपने निर्णयों, के अनुसार दण्ड एवं प्रतिफल पाएँगे। कुछ लोग प्रभु की सेवा करेंगे और कुछ अनन्त दण्ड के भागीदार होंगे (देखें 2 कुरि. 2:15-16)।

20:27 ''मैं झिझका नहीं'' प्रेरि. 20:20 में टिप्पणी देखें।

■ **''परमेश्वर का सारा अभिप्राय''** हमें परमेश्वर के सम्पूर्ण सन्देश का प्रचार करना चाहिए न कि अपनी पसन्द के पाठांशों का प्रचार करना चाहिए। यह वाक्यांश संभवतः यहूदीवादियों की ओर संकेत है जो दावा करते थे कि पौलुस अपने संदेश में बहुत सी बातें छोड़ देता है (जैसे, मूसा की व्यवस्था व विधियाँ) और अपनी पसन्द की बातें बोलता है जैसे 2 कुरि. 12; वे सोचते थे कि पौलुस आध्यात्मिक अनुभवों से रहित है। परमेश्वर चाहता है कि संपूर्ण मानवजाति उसकी संगति में रहे, यही सृष्टि निर्माण का उद्देश्य था (देखें, उत्पत्ति, 1:26-27; 3:8; 12:3)।

20:28 ''अपनी चैकसी करो'' यह वर्तमान कालीन आदेशात्मक कथन है। यही चेतावनी 1 कुरि. 16:13; कुलु. 4:2; 1 थिस्स. 5:6,10 में भी पाई जाती है। मसीही जीवन में परमेश्वर संबंधी और मानवीय संबंधी दो पहलु पाए जाते हैं। परमेश्वर हमेशा पहल करता और कार्यसूची निर्धारित करता है, परन्तु विश्वासियों का कत्र्तव्य है कि उसकी आज्ञायों का पालन निरन्तर करते रहें। एक प्रकार से हम स्वयं अपने आत्मिक जीवन के जिम्मेदार हैं (फिलि. 2:12-13)। जो बातें प्रत्येक विश्वासी के लिए उचित हैं, वे ही कलीसिया के अगुवों के लिए भी उचित हैं (देखें, 1 कुरि. 3)।

■ **''फिर सारे झुण्ड की''** परमेश्वर के लोगों की उपमा भेड़ों के झुण्ड से की जाती है (देखें, भजन 23; लूका 12:32; यूहन्ना 21:15-17)। इसी शब्द से ''पास्टर'' शब्द बना है। प्रेरि. 20:17 में टिप्पणी देखें। कलीसिया के अगुवे अपने और अपनी कलीसिया के प्रति परमेश्वर को लेखा देंगे (1 कुरि. 3)।

■ **''पवित्र आत्मा ने तुम्हें ठहराया है''** कलीसिया के अगुवों को परमेश्वर बुलाहट देकर अध्यक्ष नियुक्त करता है।

■ **''अध्यक्ष''** प्रेरि. 20:17 में टिप्पणी देखें।

■ **''परमेश्वर की कलीसिया''** प्राचीन यूनानी पाण्डूलिपि P^{74}, A, C, D, तथा E में ''परमेश्वर'' शब्द पाया जाता है, जबकि MSS א और B में ''प्रभु'' शब्द है। पौलुस अक्सर ''परमेश्वर की कलीसिया'' वाक्यांश का प्रयोग करता है परन्तु उसने कभी भी ''प्रभु की कलीसिया'' का प्रयोग नहीं किया। सन्दर्भ ''प्रभु की कलीसिया'' वाक्यांश का समर्थन करता है, क्योंकि इस पद में आगे लिखा है ''जिसे उसने अपने लहू से मोल लिया'' है, जो यीशु मसीह की ओर संकेत करता है। फिर भी इसे स्वीकार कर लेना चाहिए यह समझकर कि यह एक प्रकार का संपादकीय परिवर्तन लेखक की ओर से किया गया है पुस्तक ब्रूस एम. मेटाजर, एक पाठ्य टिप्पणी, पीपी 480-482 देखें (see Bruce M. Metzger, A Textual Commentary, pp. 480-482)। इस प्रकार USB^4 यूनानी पाठांश ''परमेश्वर'' लिखता है परन्तु इसे "सी" "C" रेटिंग देता है। ''प्रभु'' शब्द का उपयोग असामान्य और पढ़ने में कठिन होगा देखें, परिशिष्ठ-दोः पाठालोचन । (see Appendix Two: Textual Criticism)

यह पाठांश इस बात का एक अच्छा उदाहरण है कि किस प्रकार से लेखक धर्म वैज्ञानिक शिक्षा के कारण पाठांश में परिवर्तन कर देता है। इसके विषय में, बार्ट डी. एहरमैन की पुस्तक द ऑर्थोडॉक्स करप्शन ऑफ इंजील, पीपी. 87-89. (*Bart D. Ehrman's The Orthodox Corruption of Scripture, pp. 87-89)* में एक रोचक वाद-विवाद पाया जाता है। लेखकों ने अपने युग की गलत मसीही शिक्षाओं के विरुद्ध अपने पाठांश को सैद्धान्तिक रूप से सुदृढ़ बनाने के उद्देश्य से यह परिवर्तन किया। प्रेरि. 20:28 हमारे सामने विभिन्न प्रकार के परिवर्तन जो संभवतः आन्तरिक इतिहासिक/धर्मवैज्ञानिक उलझनों से संबंधित हैं, लाता है।

इससे पहले कि हम हार मान लें और निराश हों, हमें याद रखना चाहिए कि नए नियम में सर्वश्रेष्ठ पाठांश परम्परा का पालन किया गया है जो किसी भी प्राचीन लेख से श्रेष्ठ है। हालांकि हमें मूल पाण्डूलिपि की शब्दावली नहीं मालूम तौभी जो पाठांश हमारे पास मौजूद है वह विश्वस्त और बिल्कुल सही है। मूल शब्दों में भिन्नताएँ हैं। परन्तु ये भिन्नताएँ मुख्य सैद्धान्तिक शिक्षा पर प्रभाव नहीं डालती हैं। देखें, एड. डेविड एलन ब्लैक की पुस्तक

रीथिंकिंग न्यूटेस्टामेंट टेक्स्टुअल। (Rethinking NewTestament Textual Criticism ed. David Alan Black).

▪ **"उसने अपने लहू से मोल लिया है"** यह पुराने नियम की अपने बदले में चढ़ाए जाने वाले बलिदानों की विचारधारा को दर्शाता है (देखें, लैव्यव्यवस्था 1-7; यशा. 53)। आश्चर्य की बात है कि प्रेरितों के काम के केरिगामा में इस पर बल नहीं दिया गया है देखें, एनटी में जेम्स डी. जी. डन, एकता और विविधता पीपी. 17-18 । (see James D. G. Dunn, Unity and Diversity in the NT, pp. 17-18) संभवतः यह यीशु के ईश्वरतत्व की ओर प्रबल संकेत है (अर्थात् "परमेश्वर की कलीसिया")। पौलुस अक्सर ऐसे वाक्यांशों का प्रयोग करता है जो इसी सच्चाई की ओर संकेत करते हैं (देखें, रोमि. 9:5; कुलु. 2:9; तीतुस 2:13)।

इस यूनानी वाक्यांश का अनुवाद यह भी किया जा सकता है..."जिसे उसने किसी अपने के लहू से मोल लिया है।" (यह अपना उसका ही पुत्र यीशु है)। एफ. एफ. ब्रूस, एक्ट्स की पुस्तक पर टिप्पणी, पी. 416 # 59 (F. F. Bruce, Commentary on the book of the Acts, p. 416 #59) में बताते हैं, इस पद का अनुवाद इस प्रकार करना चाहिए..."अपने निजी संबंधी के लहू के माध्यम से मोल लिया है।" आगे वे कहते हैं कि यह अनुवाद मिस्र के पेपरी साहित्य द्वारा अनुमोदित है।

20:29 "फाड़नेवाले भेड़िए तुम में आएँगे" यह पिछली उपमाओं "झुण्ड" तथा "चरवाहा" पर आधारित एक उपमा है। यह कलीसिया में झूठे शिक्षकों के आ जाने पर बल देता है जो बाहर से (प्रेरि. 20:29) तथा अन्दर (20:30) ही उठ खड़े होंगे। ये दोनों भेड़ों के भेष में आएंगे (देखें, मत्ती 7:15-23; लूका 10:3; यूहन्ना 10:12; अप्रमाणिक साहित्य में देखें 1 हनोक 89:10-27; 4 एज्रा 5:18) विश्वासियों को ऐसे शिक्षकों को परखना होगा जो परमेश्वर की ओर से बोलने का दावा करेंगे (देखें, 1 यूहन्ना 4:1)। सुसमाचार के प्रति उनकी विश्वासयोग्यता वचन और कार्यों के आधार पर जाँची जानी होगी (देखें, प्रेरि. 20:18-24; मत्ती 7; रोमि. 16:17-18)।

20:30 "टेढ़ी-मेढ़ी बातें करना" इसका मूल अर्थ है तोड़ना-मरोड़ना। इस शब्द का प्रयोग मानव-समाज की पतित दशा के दर्शाने के लिए किया गया है जो दुष्ट और भ्रष्ट पीढ़ी है (देखें, लूका 9:41; फिलि. 2:15)। तोड़ने-मरोड़ने की क्रिया को भिन्न शब्दों में भली भाँति 2 पतरस 3:15-16 में दर्शाया गया है।

▪ **"जो चेलों को अपने पीछे खींच लेने को"** एक धर्म-वैज्ञानिक प्रश्न यहाँ उठता है, "क्या वे पीछे खींच लिए जाएँगे, आत्मिक रूप से भ्रष्ट और भ्रमित हो जाएँगे? (देखें, मत्ती 24:24)। सिद्धान्तवादी होना तो असम्भव है परन्तु सच्चा विश्वास स्थिर रहता है (देखें, 1 यूहन्ना 2:18)

विशेष शीर्षक: धर्मत्याग *(APHISTĒMI)*

यूनानी शब्द अफिसटेमी (*aphistemi*) एक बहुअर्थी शब्द है। इस शब्द से अंग्रेजी शब्द "अपौस्टैसी" (*apostasy*) बना है और आधुनिक पाठक विभिन्न रूपों में इस शब्द का प्रयोग करते हैं। संदर्भ के अनुसार ही इस शब्द का उचित अर्थ निकाला जा सकता है।

"अफिसटेमी" शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है - *apo* तथा *histemi* ; "अपो" (*apo*) का अर्थ है "से दूर होना" तथा *histemi* का अर्थ है "बैठना" "खड़े होना" या "फिक्स करना" ; इस शब्द के गैर धर्म वैज्ञानिक उपयोगों पर ध्यान दें :

1. भौतिक रूप से छोड़ना या त्यागना
   a. मंदिर छोड़ना, लूका 2:37
   b. घर छोड़ना, मरकुस 13:34
   c. किसी मनुष्य को छोड़ना, मरकुस 12:12; 14:50; प्रेरि. 5:38
   d. सब कुछ छोड़ना, मत्ती 19:27,29
2. राजनीतिक रूप से छोड़ना, प्रेरि. 5:37

3. समझदारी से अलग हो जाना, प्रेरि. 5:38; 15:38; 19:9; 22:29
4. वैधानिक रूप से अलग होना (तालाक), व्य. वि. 24:1,3 (LXX) तथा नया नियम, मत्ती 5:31; 19:7; मरकुस 10:4; 1 कुरि. 7:11
5. कर्जा छोड़ देना, मत्ती 18:24
6. छोड़कर जाने के द्वारा लापरवाही दिखाना, मत्ती 4:20; यूह. 4:28; 16:32
7. छोड़कर न जाने के द्वारा परवाह करना दिखाना, यूह. 8:29; 14:18
8. अनुमति देना या जाने के लिए कहना, मत्ती 13:30; 19:14; मर. 14:6; लूका 13:8

धर्म वैज्ञानिक अर्थों (Theological Sense) में क्रिया के भी व्यापक उपयोग होते हैं :

1. रद्द करना, क्षमा करना, पाप का दोष मिटाना, निर्ग. 32:32 (LXX); गिनती 14:19; अयूब 42:10 तथा नए नियम में, मत्ती 6:12, 14-15; मर. 11:25-26
2. पाप से बचना, 2 तीमु. 2:19
3. दूर जाना और इन बातों को छोड़ना :
    a. व्यवस्था को, मत्ती 23:23; प्रेरि. 21:21
    b. विश्वास को, यहेज. 20:8 ; लूका 8:13; 2 थिस्स. 2:3; 1 तीमु. 4:1; इब्रा. 3:12

आधुनिक विश्वासी बहुत से धर्म वैज्ञानिक प्रश्न पूछते हैं जिनके बारे में नए नियम लेखक सोचते भी नहीं। उनमें से एक प्रश्न आधुनिक मनोवृत्ति से जुड़ा है, "विश्वास धर्मी ठहराने - (Justification) को, विश्वासयोग्यता (Sanctification) से अलग करना।"

बाइबल में ऐसे लोग पाए जाते हैं जो परमेश्वर के लोगों में शामिल थे परंतु कोई ऐसी बात हो गई जिससे उन्हें धर्म त्याग करना पड़ा :

1. पुराने नियम में :

A. जिन्होंने 12 भेदियों की रिपोर्ट सुनी ; गिनती 14 (देखें, इब्रा. 3:16-19)
B. कोरह, गिनती 16
C. एली के पुत्र, 1 शमू. 2,4
D. शाऊल, 1 शमू. 11-31
E. झूठे नबी (उदाहरण)
    1. व्य. वि. 13:1-5; 18:19-22 (झूठे नबियों की पहचान के उपाय)
    2. यिर्मयाह 28
    3. यहेजकेल 13:1-7
F. झूठी नवी स्त्रियाँ :
    1. यहेजकेल 13:17
    2. नहेम्याह 6:14
G. इस्राएल के दुष्ट अगुवे (उदाहरण)
    1. यिर्मयाह 5:30-31; 8:1-2; 23:1-4
    2. यहेजकेल 22:23-31
    3. मीका 3:5-12

II. नया नियम में :

A. इस यूनानी शब्द का शाब्दिक अर्थ है "धर्म या दल" त्याग देना। पुराना और नया दोनों नियम पुष्टि करते हैं कि दूसरे आगमन से पहले बुराइयाँ और झूठी शिक्षाएं बढ़ जाएँगी (देखें, मत्ती 24:24; मरकुस 13:22; प्रेरि. 20:29-30; 2 थिस्स. 2:9-12; 2 तीमु. 4:4)। यह यूनानी शब्द मत्ती 13 में

और लूका 8 में पाए जाने वाले बीज बोने वाले के दृष्टान्त में यीशु के शब्दों को दर्शा सकता है। ये झूठे नबी व शिक्षक स्पष्ट रूप से मसीही जन नहीं हैं, परन्तु मसीही जनों में से ही उत्पन्न हुए (देखे, प्रेरि. 20:29-30; 1 यूह. 2:19); परंतु यह अपरिपक्व विश्वासियों को धोखा देने में समर्थ हैं (देखें, इब्रा. 3:12)।

धर्म वैज्ञानिक प्रश्न है कि क्या ये झूठे शिक्षक कभी विश्वासी रहे थे? इस प्रश्न का उत्तर देना कठिन है क्योंकि स्थानीय कलीसियाओं में झूठे शिक्षक पाए जाते थे (देखें, 1 यूहन्ना 2:18-19)। अक्सर हमारी धार्मिक संस्थागत परम्पराएँ इस प्रश्न का उत्तर बिना किसी विशेष बाइबल पाठ के आधार पर देने का प्रयत्न करती है अथवा संदर्भ के बिना अपने तर्क को प्रस्तुत करती हैं।

B. ऊपरी विश्वास (Apparent Faith)

1. यहूदा इस्करियोती (यूहन्ना 17:12)
2. शमौन जादूगर (प्रेरि. 8)
3. वे लोग जिनका उल्लेख मत्ती 7:13-23 में है।
4. वे लोग जिनका उल्लेख मत्ती 13; मर. 4; लूका 8 में है।
5. यूहन्ना 8:31-59 के यहूदी लोग
6. हुमिनयुस और सिकन्दर, 1 तीमु. 1:19-20
7. जिनका उल्लेख 1 तीमु. 6:21 में है।
8. हुमिनयुस और फिलेतुस, 2 तीमु. 2:16-18
9. देमास, 2 तीमु. 4:10
10. झूठे शिक्षक, 2 पत. 2:19-22; यहूदा 1:12-19
11. मसीह-विरोधी, 1 यूहन्ना 2:18-19

C. निष्फल विश्वास

1. 1 कुरि. 3:10-15
2. 2 पतरस 1:8-11

हम मुश्किल से ही उपरोक्त बातों के बारे में सोचते हैं क्योंकि हमारी व्यवस्थित धर्म वैज्ञानिक शिक्षा (काल्विनवाद व आरमीनिवाद) हमें निर्धारित आदेशात्मक प्रत्युत्तरों में बांधे रहती है। इन सब विषयों पर विचार-विमर्श करने के लिए कृपया मुझ पर दोषारोपण न करें। मेरी रुचि उचित व्याख्या प्रस्तुत करने में रहती है। हमें चाहिए कि हम बाइबल को स्वयं से बातें करने दें और बाइबल की बातों को अपनी पूर्व-निर्धारित धर्म शिक्षा के अनुसार ढालने की कोशिश न करें। यह अक्सर पीड़ादायक बात होती है क्योंकि हमारी अधिकांश धार्मिक शिक्षा (Theology) संस्था से संबंधित, सांस्कृति या तर्कों पर आधारित होती है, न कि बाइबल के तथ्यों पर। (देखें विशेष विषय : 'ग्रहण करना" "विश्वास करना" "मान लेना" "पुकारना" का क्या अर्थ है? जो लोग परमेश्वर के जन कहलाते हैं उनमें सब परमेश्वर के जन नहीं होते हैं (उदाहरणार्थः रोमि. 9:6)

Copyright © 2014 Bible Lessons International

20:31 "इसलिये जागते रहो" यह वर्तमान आदेश सूचक क्रिया है (देखें, मरकुस 13:35), जो प्रेरि. 20:28 के समान है, "अपनी चैकसी करो।" परमेश्वर के अगुवों को और कलीसिया के सदस्यों को निरन्तर झूठे शिक्षकों से सावधान रहना चाहिए, न केवल उन्हीं से जो हमारी व्यक्तिगत प्राथमिकताओं का अनादर करते हैं, परन्तु साथ ही उनसे भी जो सुसमाचार का और सुसमाचार की जीवन शैली का अपमान करते हैं।

▪ **"तीन वर्ष तक"** यह पौलुस के इफिसुस में तीन वर्ष तक रहने को दर्शाता है। इस क्षेत्र की उसकी सारी गतिविधियों को यह समय बताता है। जितने लम्बे समय तक वह यहां के विश्वासियों के साथ रहा उतना किसी अन्य

क्षेत्र, नगर व कलीसिया में नहीं रहा। वे अब सुसमाचार को जान गए थे। अब उन्हें सुसमाचार की रक्षा करनी थी और उसे फैलाना था।

20:32 "अब तुम्हें परमेश्वर को" अर्थात् परमेश्वर को सौंपता हूँ (देखें, प्रेरि. 14:23)। हमें जो सुसमाचार सौंपा गया है, उसका लेखा हमें परमेश्वर को देना होगा (देखें, 1 तीमु. 1:18)। हमारा उत्तरदायित्व है कि हम दूसरों तक सुसमाचार पहुंचाएँ, ताकि वे भी अन्यों तक उसे पहुंचा सकें (देखें, 2 तीमु. 2:2)।

"परमेश्वर" नाम MSS P[74],ℵ,A, C, D, और E में पाया जाता है। "प्रभु" शब्द डैठ में पाया जाता है। MS B. UBS[4] परमेश्वर शब्द को "B" रेटिंग देता है।

▪ **"और उसके अनुग्रह के वचन"** यह "सुसमाचार" का समानार्थी वाक्यांश है। देखें प्रेरि. 20:24 में टिप्पणी।

▪ **"जो तुम्हारी उन्नति *कर* सकता है"** ध्यान दीजिए कि उन्नति करने वाला या परिपक्व बनाने वाला एक व्यक्तित्व है और परमेश्वर की सच्चाई है (अर्थात् सुसमाचार है) (देखें, प्रेरि. 9:31)। पौलुस इस उपमा को अक्सर इस्तेमाल करता है। इस यूनानी शब्द का अनुवाद "सुदृढ़ करना" और "उन्नति करना" दोनों किया जा सकता है (देखें, 1 कुरि. 14)। सुसमाचार का लक्ष्य यही है, कि परिपक्व बनाए, न केवल विश्वासी को व्यक्तिगत स्तर पर, परन्तु साथ ही सम्पूर्ण कलीसिया को भी परिपक्व बनाए।

विशेष शीर्षक: परिपक्व बनाना

पौलुस द्वारा अक्सर शब्द आइकोडोमियो (*oikodomeō*) और इस शब्द के अन्य रूपों को प्रयोग में लाया गया है। इस शब्द का अक्षरशः अर्थ है "घर बनाना" (देखें मत्ती 7:24), परंतु निम्न बातों के लिए इसका प्रयोग उपमा के तौर पर होने लगा :

1. मसीह की देह अर्थात कलीसिया के लिए, 1 कुरि. 3:9; इफि. 2:21; 4:16
2. निर्माण करना (Building Up) :
    a. दुर्बल भाइयों का, रोमि. 15:1
    b. पड़ोसियों का, रोमि. 15:2
    c. एक दूसरे का, इफि. 4:29; थिस्स. 5:11
    d. सेवकाई के लिए पवित्र लोगों का, इफि. 4:11
3. हम निम्न बातों द्वारा निर्माण करते अथवा उन्नति करते हैं :
    a. प्रेम द्वारा, 1 कुरि. 8:1; इफि. 4:16
    b. व्यक्तिगत स्वतंत्रता का त्याग करके, 1 कुरि. 10:23-24
    c. व्यर्थ की बातों पर मन न लगाकर, 1 तीमु. 1:4
    d. आराधना के समय वक्ताओं को कम करके (जैसे गायक, सिखानेवाले, नबी, अन्य भाषा बोलने वाले, तथा अनुवादक), 1 कुरि. 14:3-4, 12
4. सब बातों द्वारा आत्मिक उन्नति होना चाहिए :
    a. पौलुस का अधिकार 2 कुरि. 10:8; 12:19; 13:10
    b. सारांश की बातें, रोमि. 14:19 तथा 1 कुरि. 14:26

Copyright © 2014 Bible Lessons International

▪ **"मीरास *तुम्हें* दे सकता है"** पुराने नियम में स्वयं परमेश्वर लेवीयों और याजकों की मीरास था। नए नियम में परमेश्वर सब विश्वासियों की मीरास है क्योंकि मसीह के व्यक्तित्व और कार्यों के कारण विश्वासी लोग परमेश्वर की सन्तान हैं (देखें, रोमि. 8:15,17; गला. 4:17; कुल. 1:12)।

पुराने नियम के इस्राएलियों के समान नए नियम के विश्वासी याजक हैं (देखें, 1 पत. 2:5, 9; प्रका. 1:6) हमें भटके हुए संसार की सेवा करने के लिए नियुक्त किया गया है।

▪ **"सब पवित्र किए गए लोगों में साझी करके"** यह पूर्ण कालिक क्रिया है। देखें विशेष शीर्षक, "नए नियम में पवित्रता/शुद्धिकारण।"

20:33 "चाँदी-सोने या कपड़े " ये वस्तुएँ धन समझी जाती थीं। पौलुस अपने कार्यों और उद्देश्यों का बचाव करता है। नए नियम में लालच और यौन-संबंधों में पड़ना झूठे शिक्षकों के प्रमाण-चिन्ह हैं (देखें, 1 कुरि. 3:10-17)।

20:34 "इन्हीं हाथों से आवश्यकताएँ पूरी कीं" झूठे शिक्षकां की ओर से निरन्तर पौलुस पर उसके उद्देश्यों के विषय में आरोप लगाए जाने के कारण, उसने जिन कलीसियाओं में सेवा की थी उनसे आर्थिक सहयोग लेना अस्वीकार कर दिया था। पौलुस स्वयं अपनी सहायता आप करता था (देखें, 1 कुरि. 4:12; 9:3-7; 2 कुरि. 11:7-12; 12:13; 1 थिस्स. 2:9; 2 थिस्स. 3:6-13)। फिर प्रशिक्षित रब्बी होने के कारण शिक्षा देने के बदले में धन स्वीकार करना उसे शायद अच्छा नहीं लगता था। फिर भी वह मानता था कि सुसमाचार के सेवक को मजदूरी मिलना चाहिए (देखें, 1 कुरि. 9:3-18; 1 तीमु. 5:17-18)।

जेम्स एस. जैफर्स द्वारा लिखित पुस्तक जेम्स एस. जेफर्स, द ग्रीको-रोमन वर्ल्ड ऑफ द न्यू टेस्टमेंट एरा (James S. Jeffers, *The Greco-Roman World of the NewTestament Era*) में प्रथम शताब्दी के मैडीटेरियन संसार का संक्षिप्त रोचक इतिहास दिया गया है। उसमें एक जगह लिखा है कि पौलुस संकेत देता है कि अपने हाथों से काम करे और अपनी तीनों यात्राओं में अपनी भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति करे (देखें, पेज 28)।

1. पहली यात्रा (1 कुरि. 4:12; 9:6; 1 थिस्स. 2:9)।
2. दूसरी यात्रा (प्रेरि. 18:3)
3. तीसरी यात्रा (प्रेरि. 19:11-12; 20:34; 2 कुरि. 12:14)

20:35 ध्यान दीजिए कि एक विश्वासी का कठिन परिश्रम उसके अपने व्यक्तिगत लाभ अथवा ऐशोआराम के लिए नहीं होता है परन्तु मसीह के नाम में दूसरों की आवश्यकताएँ पूरी करने के लिए होता है (देखें, 2 कुरि. 9:8-11) पौलुस ने यीशु के कथन का जो हवाला दिया है वह किसी भी सुसमाचार में नहीं पाया जाता है। अतः संभवतः यह मौखिक परम्परा रही हो।

इस पद में निर्बलों के सम्भालने का अर्थ है जो भाई आवश्यकता ग्रस्त है, उसकी सहायता करना। निर्बल का अर्थ भीरू नहीं है (देखें, रोमि. 14:1; 15:1; 1 कुरि. 8:9-13; 9:22)। पौलुस ने अन्य विश्वासियों की सहायता करने और स्वयं अपनी आवश्यकताएँ पूरी करने के लिए कार्य किया।

NASB (नवीनतम) पाठ : प्रेरितों के काम 20:36-38

36यह कहकर उसने घुटने टेके और उन सब के साथ प्रार्थना की। 37तब वे सब बहुत रोए और पौलुस के गले लिपट कर उसे चूमने लगे। 38वे विशेषकर इस बात से शोकित थे जो उसने कही थी कि तुम मेरा मुँह फिर न देखोगे। तब उन्होंने उसे जहाज तक पहुँचाया।

20:36 "घुटने टेके" पौलुस की यहूदी पृष्ठभूमि के अनुसार यह प्रार्थना करने का सामान्य तरीका नहीं था। यह संभवतः विशेष समर्पण विधि थी (देखें, प्रेरि. 20:32; 21:5)।

20:37 "पौलुस को गले लगाया" न्यू किंग जेम्स वर्जन (NKJV)अधिक शाब्दिक अनुवाद है, "वे पौलुस की गर्दन पर गिर गए"। धन्यवाद हो परमेश्वर का, कि चर्च लीडर हमारी सहायता करने आ जाते हैं जबकि कोई हम पर गिर पड़ता है।

20:38 "वे विशेषकर इस बात से शोकित थे जो उसने कही थी" यह प्रेरि. 20:25 की ओर संकेत है।

विचार विमर्श के लिये प्रश्न

यह अध्ययन में मार्गदर्शन करने की टीका है, इसका अर्थ है कि आप बाइबल की अपनी व्याख्या करने के स्वयं ही जिम्मेदार हैं। हम में से प्रत्येक को उसी ज्ञान के अनुसार चलना चाहिए जो हमारे पास है। व्याख्या करने के कार्य में आप आपकी बाइबल और पवित्र आत्मा केन्द्रिय स्थान रखते हैं। यह कार्य व्याख्याकार पर न छोड़ दें।

निम्नलिखित प्रश्न अपनी सहायता के लिए दिए गए हैं ताकि आप पुस्तक के गम्भीर विषयों पर पुनर्विचार कर सकें। वे आपके विचारों को आन्दोलित करने के लिए हैं, इनके अलावा और भी प्रश्न हो सकते हैं:

1. प्रेरि. 20:4 में पौलुस क्यों विभिन्न नगरों के ढेर सारे मनुष्यों के साथ यात्रा करता है?
2. प्रेरि. 20:7-10 का धर्म वैज्ञानिक उद्देश्य क्या है?
3. प्रेरि. 20:13 क्यों उलझनों भरा है?
4. पौलुस क्यों इफिसियों के प्राचीनों के सामने स्वयं का बचाव करता है?
5. जबकि नबी पौलुस को यरूशलेम न जाने की चेतावनी दे रहे थे, तौभी वह क्यों वहाँ जाता है? (प्रेरि. 20:22-23)।
6. झूठे नबी हर युग और स्थान में क्यों पाए जाते हैं? और जो लोग उनके पीछे चलते हैं, क्या वे उद्धार पाए हुए होते हैं? झूठे नबी कौन होते हैं?
7. प्रेरि. 20:36-38 के आधार पर हमें क्यों अपने स्थानीय अगुवों से प्रेम करना और उनके लिए प्रार्थना करनी चाहिए?

Copyright © 2013 Bible Lesson International

प्रेरितों के काम-21
बाइबल के विभिन्न आधुनिक अनुवादों में पैराग्राफ-विभाजन

UBS^4	NKJV	NRSV	TEV	NJB
पौलुस की यरूशलेम यात्रा	यरूशलेम की यात्रा के विषय-चेतावनी	पौलुस का पलीस्तीन लौटना	पौलुस का यरूशलेम में जाना	यरूशलेम की ओर यात्रा
		(20:7-21:14)		
21:1-6	21:1-14	21:1-6	21:1-6	21:1-6
21:7-14		21:7-14	21:7-11	21:7-14
			21:12-13	
	पौलुस से शान्ति स्थापना का आग्रह	पौलुस द्वारा यहूदीवाद का अनुपालन		पौलुस का यरूशलेम आगमन
			21:14	
21:15-16	21:15-25	21:15-16	21:15-16	21:15-16
पौलुस की याकूब से भेंट			पौलुस की याकूब से भेंट	
21:17-26	मन्दिर में गिरफ्तारी	21:17-26	21:17-25	21:17-25
21:26-36		21:26	21:26	
मन्दिर में पौलुस की गिरफ्तारी		पौलुस की गिरफ्तारी और बचाव करना	मन्दिर में पौलुस को पकड़ना	पौलुस की गिरफ्तारी
21:27-36		(21:27-22:29)	21:27-29	21:27-29
		21:27-36		
			21:30-36	21:30-36
पौलुस स्वयं को बचाता है	यरूशलेम की भीड़ को सम्बोधन		पौलुस स्वयं को बचाता है	
21:37-22:5	(21:37-22:21)	21:37-40	(21:37-22:5)	21:37-40
			21:37a	
			21:37b-38	
			21:39	
			21:40-22:2	

पठन चक्र तीसरा ("अच्छे बाइबल अध्ययन का मार्गदर्शन" से)

पैराग्राफ स्तर पर मूल लेखक के अभिप्राय को समझना

यह अध्ययन करने की मार्गदर्शक टीका है, जिसका अर्थ है कि आप अपनी बाइबल-व्याख्या के स्वयं उत्तरदायी हैं। हम में से प्रत्येक को अपने ज्ञान व समझ के अनुसार कार्य करना चाहिए। व्याख्या-प्रक्रिया में आप, आपकी बाइबल तथा पवित्र आत्मा प्राथमिक स्थान रखते हैं। आपको यह टीका कार्य टीकाकार पर नहीं छोड़ना चाहिए।

पूरा अध्याय एक बैठक में पढ़ें। विषयों को पहचानें। अपने विषय-विभाजन की तुलना उपरोक्त पाँच आधुनिक अनुवादों के विषय-विभाजन से करें। पैराग्राफों का विभाजन प्रेरणा प्राप्त नहीं होता है, परन्तु यह मूल लेखक के

अभिप्राय को समझने की कुंजी है, जो कि व्याख्या करने का आधार है। प्रत्येक पैराग्राफ में केवल एक ही मूल विषय होता है:

1. पहला पैराग्राफ
2. दूसरा पैराग्राफ
3. तीसरा पैराग्राफ
4. अन्य

सन्दर्भ की जानकारी

आश्चर्य की बात है कि इस अध्याय में कुछ बातों को नहीं बताया गया है। इसमें उस दान सहयोग का उल्लेख नहीं है जो गैर-यहूदी कलीसियाओं ने यरूशलेम की कलीसिया के लिये पौलुस के हाथ से भेजा था।

इस विषय में जेम्स डी. जी. डन, एकता और नए नियम में विविधता, पीपी. 272-278 (James D. G. Dunn, *Unity and Diversity* in the NT, pp. 272-278) में रोचक टिप्पणी करते हुए बताते हैं कि उस समय याकूब (जो यहूदीवाद की परम्पराओं में निष्ठा रखता था) और पौलुस के बीच इस बात को लेकर वाद विवाद हो रहा था कि मौखिक परम्पराओं का विश्वासी यहूदी के जीवन में क्या महत्व है।

शब्दों और वाक्यांशों का अध्ययन

NASB (नवीनतम) पाठ : प्रेरितों के काम 21:1-6

[1]जब हमने उनसे अलग होकर जहाज खोला, तो सीधे मार्ग से कोस में आए, और दूसरे दिन रूदुस में और वहाँ से पतरा में। [2]वहाँ एक जहाज फीनीके को जाता हुआ मिला, और हम ने उस पर चढ़कर उसे खोल दिया। [3]जब साइप्रस दिखाई दिया, तो हमने उसे बाएँ हाथ छोड़ा, और सीरिया को चलकर सूर में उतरे; क्योंकि वहाँ जहाज का माल उतारना था। [4]चेलों को पाकर हम वहाँ सात दिन तक रहे। उन्होंने आत्मा के सिखाए पौलुस से कहा कि यरूशलेम में पाँव न रखना। [5]जब वे दिन पूरे हो गए, तो हम वहाँ से चल दिए. और सब ने स्त्रियों और बालकों समेत हमें नगर के बाहर तक पहुँचाया; और हमने किनारे पर घुटने टेककर प्रार्थना की। [6]तब एक दूसरे से विदा होकर, हम तो जहान पर चढ़े और वे अपने-अपने घर लौट गए।

21:1 ‘‘सीधे मार्ग से’’ यह समुद्री यात्रा संबंधी शब्द है, जिसका अर्थ है जहाज का सीध मार्ग (देखें, प्रेरि. 16:11)। लूका ऐसे शब्दों से भली-भाँति परिचित था (देखें, प्रेरि. 21:3)। समुद्री यात्राओं में ‘‘हम’’ शब्द का अधिक प्रयोग है।

▪ **‘‘कोस’’** कोस शब्द का अर्थ है ‘‘शिखर’’ या चोटी। यह टापू का और साथ ही बड़े नगर का भी नाम था। यह टापू ई. पू. पाँचवीं शताब्दी के हिप्पोक्रेट्स की जन्मभूमि था। यहाँ पर एक बड़ा चिकित्सा विद्यालय पाया जाता था। यह एक स्वतन्त्र प्रदेश था और रोमी प्रान्त एशिया का भाग था। यह मिलेतुस के दक्षिणी में लगभग 40 मील की दूरी पर स्थित था।

▪ **‘‘रूदुस’’** रूदुस भी एक मुख्य नगर और टापू का नाम है। यह व्यवसायिक टापू दो बातों के लिए प्रसिद्ध था (1) गुलाब के फूलों के लिए (2) और अपनी यूनिवर्सिटी के लिए जो भाषण-कला में विशेषज्ञ थी। 29 ई. पू. में यह काँसे की 104 फुट ऊंची एक मनुष्य की मूर्ति के लिए विश्व-प्रसिद्ध था जो बन्दरगाह के किनारे स्थित थी। यह मूर्ति लाईट-हाऊस के रूप में थी।

■ **''पतरा में''** पश्चिमी यूनानी हस्थलेख (जैसे P41, D तथा कुछ प्राचीन लैटिन अनुवाद इस वाक्यांश में ''और मूरा'' में आए जोड़ देते हैं, अर्थात् ''वहाँ से पतरा और मूरा में आए'' लिखते हैं। संभवतः यह प्रेरि. 27:5 से है। मूरा सीरिया जाने का मुख्य बन्दरगाह था। USB4 इसे संक्षेप में लिखता और "A" रेटिंग देता है।)

पतरा लुकिया में समुद्री तट का नगर था। किसी समय यह नगर अपोलो देवता के कारण प्रसिद्ध था जो डेलफी देवी की बराबरी पर था।

21:2 ''वहाँ एक जहाज फीनीके को जाता हुआ मिला'' यह संभवतः बड़ा जहाज था। छोटे जहाज तो किनारे पर चलते थे, परन्तु यह बड़ा जहाज सीधा मार्ग पकड़कर उनका काफी समय बचा सकता था।

21:3 ''साइप्रस दिखाई दिया'' साइप्रस पहुंचते ही उसे बरनाबास और अपनी प्रथम मिश्नरी यात्रा का स्मरण आ गया होगा।

■ **''सूर''** यह फीनीके की समुद्री तट की राजधानी था।

21:4 ''चेले '' यहाँ पर एक कलीसिया थी जो संभवतः स्तिफनुस के सताव के बाद स्थापित हुई होगी (देखें, प्रेरि. 8:4; 11:19)। इस काल में एक विश्वासी दूसरे विश्वासी की तलाश करता था ताकि उसके साथ संगति कर सके (देखें, प्रेरि. 21:7,16)।

■ **''आत्मा के सिखाए पौलुस से कहा कि यरूशलेम में पाँव न रखना''** इस वाक्यांश से संकेत मिलता है कि इस स्थानीय कलीसिया में नबी उपस्थित थे (देखें, प्रेरि. 20:23; 21:10-12)। सताव के बारे में उनके सन्देश बिल्कुल सत्य थे परन्तु फिर भी पौलुस की यात्रा स्पष्ट रूप से परमेश्वर की योजना थी (देखें, प्रेरि. 21:14)। यीशु ने हनन्याह के द्वारा पौलुस को उसके जीवन-लक्ष्यों के संबंध में पहले ही बता दिया था (देखें, प्रेरि. 9:15-16)। संकट, क्लेश उसके जीवन का भाग होंगे और उसे राजाओं के सामने भी गवाही देनी होगी।

21:5 ''और किनारे पर घुटने टेककर प्रार्थना करने के बाद'' यह मसीही प्रेम और एक दूसरे की चिन्ता करने की सुन्दर तस्वीर है। यह संभवतः प्रेरि. 20:32,36 की तरह एक विशेष प्रार्थना-सभा रही होगी।

NASB (नवीनतम) पाठ : प्रेरितों के काम 21:7-14

7तब हम सूर से जलयात्रा पूरी करके पतुलिमयिस में पहुँचे, और भाइयों को नमस्कार करके उनके साथ एक दिन रहे। 8दूसरे दिन हम वहाँ से चलकर कैसरिया में आए, और फिलिप्पुस सुसमाचार प्रचारक के घर में, जो सातों में से एक था; जाकर उसके यहाँ रहे। 9उसकी चार कुँवारी पुत्रियाँ थीं, जो भविष्यद्वाणी करती थीं। 10जब हम वहाँ बहुत दिन रह चुके, तो अगबुस नामक एक भविष्यद्वक्ता यहूदिया से आया। 11उसने हमारे पास आकर पौलुस का कटिबन्ध लिया, और अपने हाथ-पाँव बाँधकर कहा, ''पवित्र आत्मा यह कहता है कि जिस मनुष्य का यह कटिबन्ध है, उसको यरूशलेम में यहूदी इसी रीति से बाँधेंगे, और अन्यजातियों के हाथ में सौंपेंगे।'' 12जब हमने ये बातें सुनीं, तो हम और वहाँ के लोगों ने उससे विनती की कि यरूशलेम को न जाए। 13परन्तु पौलुस ने उत्तर दिया, ''तुम क्या करते हो कि रो-रोकर मेरा दिल तोड़ते हो? मैं तो प्रभु यीशु के नाम के लिये यरूशलेम में न केवल बाँधे जाने ही के लिये वरन् मरने के लिए भी तैयार हूँ।'' 14जब उसने न माना तो हम यह कहकर चुप हो गए, ''प्रभु की इच्छा पूरी हो।''

21:7 ''पतुलिमयिस'' इस नगर का नाम सिकन्दर महान् के एक सेनापति के नाम पर था जिसने मिस्र पर राज्य किया था और जो तोलमी का पूर्वज था जिसने 26 ई. पू. में इस नगर की स्थापना की थी। यह पलीस्तीन का एकमात्र प्राकृतिक बन्दरगाह था। पुराने नियम में यह अक्को कहलाता था (देखें, न्यायियों 1:31)। आज यह अपने एक देशभक्त के नाम पर अकरा कहलाता है।

■ **"भाइयों"** भाइयों शब्द, "चेलों" शब्द का अर्थ रखता है (देखें, प्रेरि. 21:4,16)। मसीह पर विश्वास करने वालों को भाई कहकर सम्बोधित किया जाता था।

■ **"हम उनके साथ रहे"** प्रेरि. 21:4 में टिप्पणी देखें।

21:8 "वहाँ से चले" वे पैदल गये या जलयात्रा द्वारा, यह अनिश्चित है।

■ **"कैसारिया "** यह पलीस्तीन में रोमी मुख्यालय था। समुद्री तट पर एक छोटा सा मनुष्यों द्वारा बनाया गया बन्दरगाह था। सुसमाचार प्रचारक फिलिप्पुस यहाँ अपनी चार पुत्रियों सहित रहता था (प्रेरि. 8:40)।

■ **"सुसमाचार प्रचारक"** यह शब्द नए नियम में केवल तीन बार प्रयुक्त हुआ है (देखें, इफि. 4:11 तथा 2 तीमु. 4:5)। हम निश्चित रूप से नहीं जानते हैं कि इस सेवकाई के वरदान में कौन कौन सी बातें शामिल थीं। शब्द ही से पता लगता है कि जो "सुसमाचार प्रचार" करता है वही सुसमाचार प्रचारक है।

■ **"जो सातों में से एक था"** यह यरूशलेम की आरम्भिक कलीसिया की उस समस्या की ओर संकेत है जब यूनानी भाषा बोलने वाले यहूदियों का इब्रानी भाषा बोलने वाले यहूदियों के साथ यह विवाद उठ खड़ा हुआ था कि प्रतिदिन भोजन-वितरण में यूनानी विधवाओं की उपेक्षा की जाती है, और कलीसिया ने समस्या के समाधान के लिए सात व्यक्ति चुने थे। उन सभी सातों के नाम यूनानी थे। ये सातों व्यक्ति प्रभावशाली प्रचारक थे। ये वे पहले व्यक्ति थे जिन्होंने सुसमाचार के विश्वव्यापी दर्शन को आगे बढ़ाया (देखें प्रेरि. 6)।

21:9 "उसकी चार कुँवारी पुत्रियाँ थीं जो भविष्यद्वाणी करती थीं" याद कीजिए, लूका स्त्रियों का बड़ा ध्यान रखता था। सेवकाई में स्त्रियों के नेतृत्व के विषय पर हमें अपनी स्थिति पर पुनः विचार करने की आवश्यकता है (देखें, योएल 2:28-32; प्रेरि. 2:16-21)। क्या कलिसियाओं में आज नए नियम के आधार पर नेतृत्व में स्त्रियों की पर्याप्त भागीदारी है? प्रेरि. 2:17 में विशेष शीर्षक देखें: "बाइबल में स्त्रियाँ।" इस विषय में गौरडन फी की पुस्तक गोस्पल एंड स्पिरिट (Gordon Fee, *Gospel and Spirit)* ने मेरी बहुत सहायता की।

कलीसियाई परम्परा के अनुसार फिलिप्पुस की ये पुत्रियाँ एशिया माइनर पिरगा (Phrygia) चली गईं और बुढ़ापे तक परमेश्वर की सेवा करती रहीं। इस परम्परा के बारे में यूसेबियुस, पौलीक्रेट और पेपीयास के हवाले से हमें बताता है (देखें Ecel.Hist. 3:31:2-5)।

21:10 "अगबुस नामक एक भविष्यद्वक्ता" इस शब्द भविष्यद्वक्ता को समझने के दो तरीके हैं:

1. कुरिन्थियों की पहली पत्री में भविष्यद्वाणी करने का अर्थ है सुसमाचार प्रचार करना (देखें, 1 कुरि. 14:1)
2. प्रेरितों के काम पुस्तक में भविष्यद्वक्ताओं का उल्लेख किया है (देखें, प्रेरि. 11:27-28; 13:1; 15:32; 21:10; और भविष्यद्वक्तनी का भी वर्णन है, 21:9)।

भविष्यद्वक्ता शब्द के साथ समस्या यह है कि नए नियम के इस वरदान का सम्बन्ध पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं के साथ कैसे समझा जाए? पुराने नियम में भविष्यद्वक्ता पवित्र शास्त्र के लेखक हैं। नए नियम में यह लेखन कार्य मूल 12 चेलों और उनके सहायकों को दिया गया है। चूंकि शब्द "प्रेरित" एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया का वरदान है देखें विशेष विषय प्रेरी 13:1 आगे कोई प्रेरित पवित्रशास्त्र नहीं है (देखें, इफि. 4:11) इसलिए 12 चेलों की मृत्यु के बाद भविष्यद्वाणी का कार्य प्रेरितों का हो गया। प्रेरणा प्राप्त करना बन्द हो गया था, आगे कोई प्रेरणा प्राप्त पवित्रशास्त्र नहीं था (देखें, यहूदा की पत्रीः प्रेरि. 21:20)। अब नये नियम के नबियों का मुख्य कार्य है सुसमाचार का प्रचार करना, परन्तु साथ ही यह दर्शाना कि नए नियम की सच्चाईयों को वर्तमान परिस्थियितों में और अपनी आवश्यकताओं के अनुसार कैसे लागू किया जाता है। देखें विशेष शीर्षक: प्रेरि. 11:27 में "नए नियम में भविष्यद्वाणी"।

21:11 पुराने नियम के नबियों, यिर्मयाह और यहेजकेल की भाँति, अगबुस पौलुस के कमरबन्ध से अपने हाथ बाँधकर प्रदर्शन करने लगा और जो प्रकाशन उसने पाया था, उसे बताने लगा।

21:12 "उससे विनती" यह वाक्यांश अपूर्ण कालिक क्रिया है। इसका अर्थ हो सकता है (1) किसी क्रिया को शुरू करना या (2) पिछले समय में दोहराई गई क्रिया।

21:13 पौलुस के विचार से यरूशलेम जाना परमेश्वर की इच्छा थी, परन्तु नबी के विचार से उसे यरूशलेम नहीं जाना चाहिए, इन दोनों बातों में सन्तुलन बनाना बड़ा कठिन है (देखें पद-4)।

- **"मैं तो प्रभु यीशु के नाम के लिए...मरने के लिए भी तैयार हूँ"** प्रेरि. 2:21 में देखें विशेष शीर्षकः प्रभु का नाम

21:14 "प्रभु की इच्छा पूरी हो" अर्थात् वे प्रभु से प्रार्थना करने लगे कि उसी की इच्छा पूरी हो। पौलुस के जीवन के लिए परमेश्वर के पास एक निर्धारित इच्छा थी। पौलुस आने वाली समस्याओं के होते हुए भी जानता था कि परमेश्वर की इच्छा उसके लिए क्या है। पौलुस ने जरूर महसूस किया होगा कि जो भविष्यवाणियाँ उसके बारे में की जा रही हैं वे उसकी रूकावट के लिये नहीं परन्तु उसे आत्मिक और मानसिक रीति से तैयार करने के लिए हैं।

शीर्षकः परमेश्वर की इच्छा (*thelēma*)

"परमेश्वर की इच्छा" वाक्यांश में निम्नलिखित विचार सम्मिलित है :

यूहन्ना रचित सुसमाचार में :

- यीशु अपने पिता की इच्छा पूरी करने के लिए संसार में आया (यूह. 4:34; 5:30; 6:38)
- यीशु उन्हें अंतिम दिन फिर जिला उठाए, जिन्हें पिता ने उसे दिया है (यूह. 6:39)
- सब पुत्र पर विश्वास करें (यूह. 6:29,40)
- परमेश्वर उनकी सुनता है, जो उसकी इच्छा पर चलते हैं (यूह. 9:31; 1 यूह. 5:14)

सहदर्शी सुसमाचारों में :

- परमेश्वर की इच्छानुसार चलना आवश्यक है (मत्ती 7:21)
- परमेश्वर पिता की इच्छा पर चलने वाला, यीशु का भाई व बहन है (मत्ती 12:50; मर. 3:35)
- पिता की इच्छा नहीं कि एक भी नष्ट हो (मत्ती 18:14; 1 तीमु. 2:4; 2 पत. 3:9)
- यीशु के लिए कलवरी पिता की इच्छा थी (मत्ती 26:42; लूका 22:42)

पौलुस की पत्रियाँ :

- परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान चढ़ाना (रोमि. 12:1-2)
- पिता के इच्छा अनुसार विश्वासी वर्तमान बुरे संसार से छुड़ाए गए (गला. 1:4)
- उद्धार की योजना, परमेश्वर की इच्छा है (इफि. 1:5,9,11)
- विश्वासी आत्मा से परिपूर्ण रहते और आत्मिक जीवन बिताते हैं (इफि. 5:17-18)
- आत्मिक ज्ञान सहित परमेश्वर की इच्छा की पहिचान में परिपूर्ण होना (कुलु. 1:9)
- सिद्ध होकर पूर्ण विश्वास के साथ परमेश्वर की इच्छा पर स्थिर रहना (कुलु. 4:12)
- परमेश्वर की इच्छा है कि विश्वासी पवित्र बनें (1 थिस्स. 4:3)
- परमेश्वर की इच्छा है कि विश्वासी हर बात में धन्यवाद करें (1 थिस्स. 5:18)

पतरस की पत्रियाँ :

- परमेश्वर की इच्छा है कि विश्वासी दुष्ट अधिकारियों के अधीन रहें और इस प्रकार मूर्ख लोगों की अज्ञानता की बातें बन्द करें, ताकि सुसमाचार प्रस्तुत करने का अवसर मिले (1 पत. 2:15)
- परमेश्वर की इच्छा है विश्वासी दुख उठाएँ (1 पत. 3:17; 4:19)
- अपना शारीरिक जीवन परमेश्वर की इच्छानुसार व्यतीत करना (1 पत. 4:2)

यूहन्ना की पत्रियाँ :

- परमेश्वर की इच्छानुसार चलने के कारण विश्वासी सर्वदा बने रहते हैं (1 यूह. 2:17)
- परमेश्वर की इच्छा अनुसार मांगना, प्रार्थना के उत्तर की कुंजी है (1 यूह. 5:14)

Copyright © 2014 Bible Lessons International

NASB (नवीनतम) पाठ : प्रेरितों के काम 21:15-16

15इन दिनों के बाद हमने तैयारी की और यरूशलेम को चल दिए। 16कैसरिया से भी कुछ चेले हमारे साथ हो लिए, और हमें मनासोन नामक साइप्रस के एक पुराने चेले के यहाँ ले आए, कि हम उसके यहाँ टिकें।

21:15 ''हमने तैयारी की'' यह शब्द नए नियम में केवल यहीं NKJV में पाया जाता है। यह शब्द यात्रा की तैयारी में प्रयुक्त होता है। किंग जेम्स वर्जन में लिखा है ''हमने अपना सामान बाँधा''।

- **''यरूशलेम''** यह लगभग 64 मील दूर था।

21:16 ''मनासोन'' यह बरनबास की तरह एक यहूदी मसीही था। वह संभवतः प्रेरि. 6 के सात चुने हुए लोगों की तरह हेलेनीवादी अर्थात् यूनानी बोलने वाला मसीही था। स्पष्ट रूप से वह आरम्भ ही से मसीही था। जब पौलुस कैसरिया में बन्दी था तो संभवतः लूका ने अपने सुसमाचार के लिए उसका साक्षात्कार लिया होगा, जबकि वह पलीस्तीन में रहता हो।

सन्दर्भ से संबंधित जानकारी प्रेरि. 21:17-23:30:

A. प्रेरि. 21:17 से 26:32 की संक्षिप्त रूपरेखा (पौलुस का बंदी बनाया जाना और यरूशलेम व कैसारिया में अपना बचाव करना)

1. बलवा और मन्दिर में पौलुस की गिरफ्तारी (प्रेरि. 21:17-40)
2. भीड़ के सामने पौलुस द्वारा अपना बचाव करना (प्रेरि. 22:1-22)
3. रोमियों द्वारा पूछताछ (प्रेरि. 22:23-30)
4. सन्हेद्रिन द्वारा पूछताछ (प्रेरि. 23:1-10)
5. पौलुस को मार डालने का षड्यन्त्र (प्रेरि. 23:11-35)
6. फेलिक्स के सामने पौलुस (प्रेरि. 24:1-23)
7. निजी तौर पर पौलुस फेलिक्स और द्रुसिल्ला के सामने (प्रेरि. 24:24-27)
8. फेस्तुस के सामने पौलुस (प्रेरि. 25:1-12)
9. राजा अग्रिप्पा-प्प् और बिरनीके के सामने पौलुस (प्रेरि. 25:13 से 26:32)

B. पौलुस के बचाव की सामान्य बातें:

सामान्य बातें	**भीड़ के सामने पौलुस**	**सन्हेद्रिन के सामने पौलुस**	**पौलुस फेलिक्स के सामने**	**पौलुस फेस्तुस के सामने**	**अग्रिप्पा के सामने पौलुस**
1. उसकी यहूदी पृष्ठभूमि	22.3		24:14,17-18		26:4
2. उसका उत्साह और फरीसी प्रशिक्षण	22:3	23:6-9	24 :15,21		26:5-8
3. उसके द्वारा 'पन्थ'' पर सताव	22:4-5				26:9-11

4. हृदय-परिवर्तन की उसकी व्यक्तिगत साक्षी	22:6-16	26:12-16
5. परमेश्वर द्वारा उसे बुलाया जाना	22:17-22	26:17-23

C. सदूकियों और फरीसियों की परस्पर तुलना:

	सदूकी	**फरीसी**
आरम्भ	मकाबियों का काल	मकाबियों का काल
नाम का अर्थ	"सादोक वंशी"?	"अलग किए हुए"?
सामाजिक हैसियत	पुरोहित वर्ग	मध्यवर्गीय अप्रशिक्षित लोग
पवित्रशास्त्र संबंधी प्रश्न	केवल लिखित व्यवस्था मानते थे। (विशेषकर उत्पत्ति से व्यवस्थाविवरण)	सब मौखिक व लिखित व्यवस्था तथा नबीयों और पुराने नियम की सब पुस्तकं मानते थे
धर्म विज्ञान	रूढ़िवादी फरीसियों के बिल्कुल विपरीत जिन पर पारसी धर्म के प्रभावित होने का दोष था (देखें प्रेरि. 23:8)	प्रगतिशील विचारधारा वाले -स्वर्गदूतां पर विश्वास करते थे -मृत्यु के बाद जीवन पर विश्वास करते थे, -पुनरुत्थान पर विश्वास रखते थे, -प्रतिदिन अनुशासित जीवन बिताते थे।

NASB (नवीनतम) पाठ : प्रेरितों के काम 21:17-26

17जब हम यरूशलेम में पहुँचे, तो भाई बड़े आनन्द के साथ हमसे मिले। 18दूसरे दिन पौलुस हमें लेकर
याकूब के पास गया, जहाँ सब प्राचीन इकट्ठे थे। 19तब उसने उन्हें नमस्कार करके, जो जो काम परमेश्वर ने
उसकी सेवा के द्वारा अन्यजातियों में किए थे, एक-एक करके सब बताए। 20उन्होंने यह सुनकर परमेश्वर
की महिमा की, फिर उससे कहा, "हे भाई, तू देखता है कि यहूदियों में से कई हजार ने विश्वास किया है;
और सब व्यवस्था के लिये धुन लगाए हैं। 21उनको तेरे विषय में सिखाया गया है कि तू अन्यजातियों में
रहनेवाले यहूदियों को मूसा से फिर जाने को सिखाता है, और कहता है, कि न अपने बच्चों का खतना
कराओ और न रीतियों पर चलो। 22तो क्या किया जाए? लोग अवश्य सुनेंगे कि तू आया है। 23इसलिये जो
हम तुझसे कहते हैं, वह कर। हमारे यहां चार मनुष्य हैं, जिन्होंने मन्नत मानी है। 24उन्हें लेकर उनके साथ
अपने आप को शुद्ध कर; और उनके लिये खर्चा दे कि वे सिर मुड़ाएं: तब सब जान लेंगे कि जो बातें उन्हें
तेरे विषय में बताई गईं, उनमें कुछ सच्चाई नहीं है परन्तु तू आप भी व्यवस्था को मानकर उसके अनुसार
चलता है। 25परन्तु उन अन्यजातियों के विषय में जिन्होंने विश्वास किया है, हमने यह निर्णय करके लिख
भेजा है कि वे मूर्तियों के सामने बलि किए हुए मांस से और लहू से और गला घोंटे हुओं के मांस से, और
व्यभिचार से बचे रहें। 26तब पौलुस उन मनुष्यों को लेकर और दूसरे दिन उनके साथ शुद्ध होकर मन्दिर में
गया, और वहाँ बता दिया कि शुद्ध होने के दिन, अर्थात् उनमें से हर एक के लिये चढ़ावा चढ़ाए जाने तक
के दिन कब पूरे होंगे।

21:17 "जब हम यरूशलेम पहुंचे तो भाई बड़े आन्नद के साथ हम से मिले" यरूशलेम के विश्वासियों द्वारा इन अन्यजातीय विश्वासियों का स्वागत किया जाना उत्साहवर्धक बात थी (देखें, लूका 8:40; 9:11; प्रेरि. 2:41; 18:27; 21:17; 24:3; 28:30), परन्तु यरूशलेम की कलीसिया में उनके प्रति पूर्वधारणाएँ भी थीं (देखें, प्रेरि. 21:20-21)।

21:18-19 "पौलुस हमें लेकर याकूब के पास गया" यहाँ पर उस दान सहयोग का विशेष प्रकार का उल्लेख नहीं किया गया जो उनके लिए गैर-यहूदी कलीसियाओं ने भेजा था (देखें, प्रेरि. 24:17)। प्रेरि. 15:12 में भी पौलुस इसी तरह की रिपोर्ट याकूब के सामने पेश करता है। याकूब, प्रभु यीशु मसीह का सौतेला भाई और यरूशलेम की कलीसिया का सम्मानित अगुवा था (देखें, प्रेरि. 12:17; 15:13)।

21:18 "सारे प्राचीन इकट्ठे थे" ध्यान दीजिए कि यहाँ पर प्रेरितों का कोई उल्लेख नहीं है। स्पष्ट रूप से वे शायद प्रचार यात्रा में बाहर गए होंगे, और संभवतः कुछ भर भी गए होंगे। यहाँ पर "प्राचीन" शब्द का प्रयोग यहूदी अर्थों में (देखें, प्रेरि. 4:5, 8, 23; 6:12; 11:30; 15:2, 4, 6, 22-23; 16:4; 23:14; 24:1, 25; 25:15; इब्रा. 11:2; याकूब 5:14) हुआ है, न कि कलीसिया द्वारा पास्टर के अर्थों प्रयोग किए जाने (देखें, प्रेरि. 14:23; 20:17-18,23; 1 तीमु. 5:17,19; तीतुस 1:5; 1 पतरस 5:1; 2 यूह. 1; 3 यूह. 1) के रूप में हुआ है।

21:19 "उन्हें नमस्कार करके, जो जो काम परमेश्वर ने उसकी सेवा के द्वारा अन्यजातियों में किये थे, एक एक करके सब बताए" कुछ टीकाकार सोचते हैं कि पौलुस का हार्दिक-स्वागत तो किया गया परन्तु अन्य जाति कलीसियाओं के धन-सहयोग की प्रशंसा नहीं की गई। उनके तर्क इस प्रकार हैं:

1. पौलुस एक हेलेनीवादी यहूदी के घर में टिका था, किसी चर्च के अगुवे के यहाँ नहीं रूका था।
2. जो उपहार पौलुस लाया था उसके प्रति उनमें आभार की अभिव्यक्ति नहीं थी, उसका तो उन्होंने उल्लेख भी नहीं किया।
3. अगुवों ने तुरन्त पौलुस को बताया कि वह यरूशलेम की कलीसिया के हजारों लोगों द्वारा नापसन्द किया जाता है।
4. कलीसिया ने ऐसा कभी नहीं कहा कि उन्होंने पौलुस की कैद में अथवा उसकी जांच पड़ताल के दौरान उसका सहयोग किया।

कलीसिया में पौलुस के संदेश और उसकी सेवकाई के बारे में मतभेद और भ्रम अवश्य पाया जाता होगा, परन्तु प्रेरि. 21:19 मुझे सकारात्मक प्रतीत होता है।

21:20 "यहूदियों में से कई हजार ने विश्वास किया है" यरूशलेम के यहूदी लोगों के संबंध में सुसमाचार के सामथ्र्य और परमेश्वर के प्रेम की यह एक श्रेष्ठ साक्षी है। यहाँ पर विश्वास करने वाले बचे हुए शेष यहूदियों का समूह था; संभवतः यहाँ जकर्याह 12:10 की पूर्ति हुई।

▪ **"जिन्होंने विश्वास किया "** यह पूर्ण कालिक क्रिया है, उन्होंने विश्वास कर लिया था (देखें, प्रेरि. 3:16 व 6:5 में विशेष शीर्षक)। निश्चित रूप से यह उद्धार करने वाला विश्वास था। बिना संपूर्ण ज्ञान व समझ रख और धर्म वैज्ञानिक विषयों को अच्छी तरह समझे बिना भी मनुष्य उद्धार पा सकता है (देखें, प्रेरि. 1:6; लूका 19:11)। पौलुस ऐसे मसीहियों को "निर्बल" कहता है (देखें, रोमि. 14:1-15:13; 1 कुरि. 8; 10:22-33)। वह उन्हें प्रोत्साहित करने और विश्वास में सुदृढ़ करने का भरसक प्रयत्न करता है (उन्हें जो गलातिया में यहूदीवादी हैं)

▪ **"सब व्यवस्था के लिये धुन लगाए हैं"** यह धर्म-परिवर्तन करने वाले फरीसियों, जेलोतियों और असेनियों की बड़ी संख्या को दर्शाता है। परन्तु उनका धर्म-परिवर्तन करके मसीही बन जाना उनकी धार्मिक प्रवृत्तियों को नहीं बदल पाता है। ये लोग गलातियों के यहूदीवादियों की भाँति थे। यह बड़ी अद्‌भुत बात है कि पौलुस इन "दुर्बलों" का समर्थन करता और उनसे प्रेम रखता था, परन्तु "झूठे शिक्षकों" अथवा सुसमाचार को तोड़-मरोड़कर पेश करने वालों को बर्दाशत नहीं करता।

21:21 "उनको तेरे विषय में सिखाया गया है कि तू अन्यजातियों में रहने वालों को मूसा से फिर जाने को सिखाता है" यह वाक्यांश "तेरे विषय में सिखाया गया है" यह इब्रानी मुहावरा है जिसका अर्थ है मौखिक शिक्षा देना। इस वाक्यांश में वर्तमान कालिन क्रिया यह दर्शाने के लिए जुड़ी है कि ये यहूदी यरूशलेम में बार बार अपनी प्रवृत्ति के अनुसार पौलुस की गतिविधियों की चर्चा किया करते थे, पौलुस पर लगाए गए ये इल्जाम अन्यजातियों में उसकी शिक्षा से अधिक गम्भीर व घातक थे जिन्होंने बड़ी समस्याएँ खड़ी कीं (देखें, प्रेरि. 15)।

यह वाक्यांश "मूसा से फिर जाने को सिखाता है" बड़ा शक्तिशाली है जिसे अंग्रेजी में "अपौस्टैसी" (*Apostasy)* कहा जाता है अर्थात् "धर्म-त्याग" (देखें, 2 थिस्स. 2:3)। अभी तक इस वाद-विवाद का कोई समाधान नहीं निकाला जा सका है कि इन यहूदी विश्वासियों को पुराने नियम के आधार पर किस प्रकार समझना चाहिए। एक प्रकार से यह "मसीह संबंधी आराधनालय" के विवाद को दर्शाता है।

21:23 "हमारे यहाँ चार मनुष्य हैं जिन्होंने मन्नत मानी है" स्पष्ट रूप से ये चारों कलीसिया के सदस्य थे। यह सीमित दिनों के लिए नाजीर की मन्नत मानने की ओर संकेत करता है (देखें, गिनती 6:1-8)। पौलुस पहले भी इसी प्रकार की मन्नत मान चुका था (देखें, प्रेरि. 18:18)। इस सीमित दिनों की मन्नत के विषय में हमें विस्तृत जानकारी प्राप्त नहीं है (देखें, नाजीर 1:3)। (*Nazir 1:3*)

21:23-25 यह पाठांश हमें यहूदी मसीहियों का मूसा की व्यवस्था के साथ सम्बन्ध के विषय में पौलुस के विचारों की जानकारी देता है। हो सकता है कि पौलुस यहूदीयों की परम्पराओं का (देखें, प्रेरि. 18:18; 20:6) कम से कम यहूदियों को जीतने अथवा उन्हें सुसमाचार सुनाने के उद्देश्य से, पालन करता रहा हो (देखें, 1 कुरि. 9:19-23)। यह संभवतः यहूदी-मसीही सहभागिताओं की हमारे मध्य स्वीकृति है।

21:24 "उनके लिये खर्चा दे" संभव है पौलुस ने स्वयं तो नाजीर की मन्नत न मानी हो, परन्तु दूसरों के लिए उसने आवश्यक बलिदानों के चढ़ाने का खर्चा दिया। रब्बी लोग सिखाया करते थे कि नाजीरों की मन्नत के लिय देना, बड़े आदर की बात होती है (*Nel.10a*)

विशेष विषय: "नाजीरों की मन्नत"

A. यह एक व्यवस्था थी, जिसके द्वारा ऐसा पुरुष या स्त्री जो लेवी गोत्र का नहीं हो, स्वयं को परमेश्वर की सेवा के लिए समर्पित कर सकता था अर्थात परमेश्वर के लिए पवित्र बन सकता था (देखें गिन. 6:1) नाज़ीर का अर्थ है "अलग किया हुआ" (BDB 634, KB 684) अथवा "पवित्र किया हुआ।" (देखें, विशेष विषय : "पवित्र" (Holy)।
B. पुराने नियम में यह जीवन भर की शपथ होती थी
    1. शमशोन (न्या. 13:7)
    2. शमूएल (1 शमू. 1:21)
    3. यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला
C. यहूदी धर्म ने कम समय की नाज़ीरों की मन्नत विकसित की (संभवतः गिनती 6:5 के शब्दों के आधार पर विकसित किया गया)। सबसे कम समय 30 दिन का था। यह कम समय की मन्नत सिर के बाल मुंढाने और उन्हें जलाने तथा मंदिर में बलिदान चढ़ाने के साथ संपूर्ण होती थी।
D. विशेष शर्तें (गिनती 6:1-8)
    1. दाख मधु, मदिरा, दाखरस, सिरका न पीए और न दाखलता से उत्पन्न कोई वस्तु खाए (गिनती 6:3-4)।
    2. बाल न कटवाए
    3. मृतक शरीर न छूट। इससे वह किसी भी यहूदी दाह संस्कार में हिस्सा नहीं ले सकता था।
    4. गिनती 6:9 में अचानक अशुद्ध हो जाने पर उसकी शुद्धता का समाधान व उपाय बताया गया है। प्रेरि. 21:23-25 में पौलुस स्पष्ट रूप से इसी समस्या में पड़ गया था। निर्धारित समय में शुद्धता प्राप्त होती थी और बलिदान चढ़ाना पड़ता था (गिनती 6:9-12)।

Copyright © 2015 Bible Lessons International

▪ **"अपने सिर मुड़ाएँ"** गिनती 6 में नाजीरों की मन्नत का विवरण पाया जाता है। जो लोग स्थाई रूप से नाजीरों की मन्नत मानते थे उन्हें सिर के बाल काटने की आज्ञा नहीं थी। परन्तु सिर मुड़ाना अस्थाई रूप से मन्नत मानने का प्रतीक था। यह पद दर्शाता है कि पौलुस उस संस्कृति के अनुरूप स्वयं को ढालने का प्रयत्न करता है जिसे वह सुसमाचार सुनाना चाहता था (देखें, 1 कुरि. 9:19-23; 10:23-33)।

2:25 ''हमने लिखा'' यह यरूशलेम की सभा के औपचारिक वक्तव्य की ओर संकेत करता है (देखें, प्रेरि. 15:19-20, 28-29)। इस दस्तावेज ने मुख्य रूप से उन धार्मिक रीति-विधियों और भोजन संबंधी बाधाओं को दूर किया जो विश्वासी यहूदियों और पलीस्तीन के बाहर रहने वाले मिश्रित कलीसियाओं के गैरयहूदी विश्वासियों के मध्य पाई जाती थीं। परन्तु यह लेख विश्वासी यहूदी और मूसा की वाचा के साथ उसके संबंध पर लागू नहीं था।

21:26 ''मन्दिर में गया'' इसी बात ने समस्या उत्पन्न कर दी, जिसका समाधान नहीं हुआ।

NASB (नवीनतम) पाठ : प्रेरितों के काम 21:27-36

27जब वे सात दिन पूरे होने पर थे तो आसिया के यहूदियों ने पौलुस को मन्दिर में देखकर सब लोगों को उकसाया और यों चिल्लाकर उसको पकड़ लिया। 28कि हे इस्राएलियो, सहायता करो; यह वही मनुष्य है जो लोगों के और व्यवस्था के, और इस स्थान के विरोध में हर जगह सब लोगों को सिखाता है, यहां तक कि यूनानियों को भी मन्दिर में लाकर उसने इस पवित्र स्थान को अपवित्र किया है। 29उन्होंने इससे पहले इफिसुसवासी त्रुफिमुस को उसके साथ नगर में देखा था और समझे थे कि पौलुस उसे मन्दिर में ले आया है। 30तब सारे नगर में कोलाहल मच गया और लोग दौड़कर इकट्ठे हुए और पौलुस को पकड़कर मन्दिर के बाहर घसीट लाए और तुरन्त द्वार बन्द किए गए। 31जब वे उसे मार डालना चाहते थे, तो पलटन के सरदार को सन्देश पहुंचा कि सारे यरूशलेम में कोलाहल मच रहा है। 32तब वह तुरन्त सिपाहियों और सूबेदारों को लेकर उनके पास नीचे दौड़ आया; और उन्होंने पलटन के सरदार को और सिपाहियों को देख कर पौलुस को मारना-पीटना छोड़ दिया। 33तब पलटन के सरदार ने पास आकर उसे पकड़ लिया; और दो जंजीरों से बान्धने की आज्ञा देकर पूछने लगा, यह कौन है, और इसने क्या किया है? 34परन्तु भीड़ में से कोई कुछ और कोई कुछ चिल्लाता रहा और जब हुल्लड़ के मारे वह ठीक सच्चाई न जान सका, तो उसे गढ़ में ले जाने की आज्ञा दी। 35जब वह सीढ़ी पर पहुंचा तो ऐसा हुआ कि भीड़ के दबाव के मारे सैनिकों को उसे उठाकर ले जाना पड़ा। 36क्योंकि लोगों की भीड़ यह चिल्लाती हुई उसके पीछे पड़ी थी, ''उसका अन्त कर दो।''

21:27 ''आसिया के यहूदी'' पौलुस के ये पुराने शत्रु भी पर्व मनाने, यरूशलेम में आये थे। अब पौलुस यहूदीवाद के हाथों में पड़कर घिर गया था।

21:28 ''यह वही मनुष्य है जो प्रचार करता है'' इन आसिया के यहूदियों ने पौलुस के प्रचार को पुराने नियम की प्रतिज्ञाओं की परिपूर्ति के बजाए यहूदी धर्म का विरोध करना समझा। जो अभियोग उन्होंने पौलुस पर लगाए, वे बिल्कुल उन अभियोगों के समान हैं जो स्तिफनुस पर लगाए गये थे (देखें, प्रेरि. 6:13)। मसीह के साथ दमिश्क में आमना-सामना होने से पहले पौलुस की भी यही विचारधारा रही होगी, जिसे वह स्वीकार भी करता है (प्रेरि. 22:20)। मसीह के सन्देश द्वारा प्रथम शताब्दी का प्रसिद्ध यहूदीवाद और उसकी सब रीति-विधियाँ महत्वहीन हो गईं। यूहदीवाद की निरर्थकता को हम न केवल पौलुस की उद्धार से संबंधित शिक्षाओं ही में देखते हैं, पर साथ ही इस बात में भी देखते हैं कि उद्धार केवल मसीह पर विश्वास लाकर अनुग्रह ही से होता है न कि व्यवस्थापालन और भले कार्यों द्वारा।

- **''यहाँ तक कि यह यूनानियों को भी मन्दिर में लाया''** यह घटना मंदिर के इस्राएलियों के आंगन में हुई होगी, जहाँ दक्षिण-पूर्वी कोने में नजीरों की मन्नत की विधि पूरी की जाती थी। गैर-यहूदी लोगों को मन्दिर के बाहरी आंगन तक आने की अनुमति थी, अतः यह आरोप झूठा था (प्रेरि. 21:29)।

21:29 ''इफिसुसवासी त्रुफिमुस'' आसिया के ये यहूदी इफिसुस के थे, और पौलुस तथा त्रुफिमुस को जानते थे। इन्होंने पहले भी पौलुस के विरुद्ध षड्यन्त्र रचा था (देखें, प्रेरि. 20:3)। तब वे सफल नहीं हुए थे; अब उन्हें अवसर मिल गया था कि पौलुस को मार डालें (देखें, प्रेरि. 21:31,36)।

21:30 "तुरन्त द्वार बन्द किए गये" यह वह द्वार था जो इस्राएलियों के आँगन और स्त्रियों के आँगन के बीच में था। मन्दिर में लेवीय सिपाही भी रहते थे जो मन्दिर की चैकसी करते थे:

1. कि मन्दिर अपवित्र न होने पाए
2. इन सिपाहियों ने ही द्वार बन्द कर दिए कि पौलुस दुबारा लौटकर मन्दिर में न आने पाए।

जो भीड़ इस समय मौजूद थी उसने ठीक उसी प्रकार से हुल्लड़ किया जैसा इफिसुस में किया था (देखें, प्रेरि. 19)।

21:31 "रोमी पलटन का सरदार" सरदार का शाब्दिक अर्थ है, एक हजार लोगों पर मुखिया। यह रोमी सेना (equestrian) का सर्वोच्च पद था। पर्व के दौरान यरूशलेम में उसकी नियुक्ति की जाती थी जबकि नगर की आबादी सामान्य से तीन गुना बढ़ जाती थी, शान्ति बनाए रखना उसका मुख्य काम था।

▪ **"पलटन"** यह पलटन अन्टोनियों के किले में रहती थी और मन्दिर के आँगन पर नजर रखती थी। यह महल के रूप में हेरोदेस महान द्वारा बनाया गया था परन्तु बाद में रोमी सेना के मुख्यालय के रूप में प्रयोग किया जाने लगा (देखें, योसेपस, वार्स 5.5.8)।

21:32 "*कुछ* सैनिक और सूबेदार" सूबेदार सौ सैनिकों पर अधिकारी होता था। अन्टोनियों किले से मन्दिर क्षेत्र पर निगरानी रखी जाती थी। पर्व के अवसरों पर यहाँ भारी संख्या में सेना उपस्थित रहती थी।

21:33 "दो जंजीरों से उसे बाँधना" इसके दो अर्थ हो सकते हैं (1) हाथ और पाँव बाँधना अथवा (2द्ध दो रोमी सिपाहियों के बीच बाँंधना। स्पष्ट रूप से सिपाहियों ने सोचा होगा कि पौलुस एक राजद्रोही है (देखें, प्रेरि. 21:38)।

21:34-35 यह भीड़ की हिंसा और पागलपन को दर्शाता है (देखें, प्रेरि. 21:30)।

21:35 "सीढ़ी" ये सीढ़ियाँ अन्टोनियो किले से मन्दिर क्षेत्र तक जाने वाली सीढ़ियों की ओर संकेत करती है जिसका उल्लेख 21:32 में है, "वह तुरन्त सैनिकों को लेकर उनकी ओर दौड़ पड़ा।" इन सीढ़ियों के दो भाग थे, और प्रत्येक भाग मन्दिर के विभिन्न भागों की ओर जाता था। रोमी सिपाही हर दंगे को शीघ्र शान्त करना चाहते थे। पर्व के दिनों में अक्सर सरकार को अशान्ति का सामना करना पड़ता था।

21:36 "उनसे दूर" ये उसी प्रकार के शब्द हैं, जो यीशु के विषय में भीड़ ने कहे थे (देखें, प्रेरि. 22:2; लूका 23:18; यूहन्ना 19:15)। यहूदियों और रोमियों द्वारा पौलुस और यीशु के साथ जो व्यवहार किया गया, उसमें परस्पर बहुत समानताएँ पाई जाती हैं।

NASB (नवीनतम) पाठ : प्रेरितों के काम 21:37-40

37जब वे पौलुस को गढ़ में ले जाने पर थे, तो उसने पलटन के सरदार से कहा; क्या मुझे आज्ञा है कि मैं तुझसे कुछ कहूं? उसने कहा; क्या तू यूनानी जानता है? 38क्या तू वह मिस्री नहीं, जो इन दिनों से पहले विद्रोही बनाकर चार हज़ार कटारबन्द लोगों को जंगल में ले गया? 39पौलुस ने कहा, मैं तो तरसुस का यहूदी मनुष्य हूं! किलिकिया के प्रसिद्ध नगर का निवासी हूं: और मैं तुझसे विनती करता हूं कि मुझे लोगों से बातें करने दे। 40जब उस ने आज्ञा दी, तो पौलुस ने सीढ़ी पर खड़े होकर लोगों को हाथ से संकेत किया। जब वे चुप हो गए, तो वह इब्रानी भाषा में बोलने लगा:

21:37 "क्या तू यूनानी जानता है" पलटन का सरदार आश्चर्यचकित था कि पौलुस बोलचाल की यूनानी जानता है क्योंकि वह सोचता था कि पौलुस एक मिस्री राजद्रोही है जिसके बारे में उसने सुन रखा था (देखें, प्रेरि. 21:38 तथा योसेपस की एंटीक्वीटि. 2.13.5; 20:8-6) (*Antiq.* 2.13.5; 20.8.6) यह मिस्री का विद्रोह ईस्वी 52-57 के मध्य हुआ था।

21:38 "क्या तू कटारबन्द तो नहीं" कटार बन्द के लैटिन भाषा का शब्द सिकारी (zealots) प्रयुक्त किया जाता है। नए नियम में इन लोगों को अक्सर "जेलोती" कहा गया है (देखें, लूका 6:15; प्रेरि. 1:13)। यह यहूदियों का ऐसा समूह था जो रोमी शासन को जड़ से उखाड़ फैंकने के लिये वचनबद्ध था।

ए. टी. रॉबर्टसन, न्यू पिक्चर में शब्द चित्र, वॉल्यूम. 3, पी. 382 (A. T. Robertson, *Word Pictures in the NewTestament,* vol. 3, p. 382) में जेलोती शब्द के विषय में बताते हैं कि इस शब्द का प्रयोग योसेपस द्वारा मिस्री विद्रोही के अनुयायियों के लिये किया गया है (देखें, योसेपस, वार्स 2.13.5; एंटीक्वीटि 20.8.6.10)।

21:39 "बिना महत्वहीन शहर का नागरिक" यह एक मुहावरा है (प्रेरि. 12:18 में टिप्पणी देखें) (*litotes*)(जिसका प्रयोग पौलुस ने अपनी नागरिकता एक विश्व-स्तर के नगर की बताने के लिए किया। यह पद इस बात को नहीं बताता कि क्या वह रोमी अधिकारी इससे प्रभावित हुआ या नहीं?

21:40 "उसने आज्ञा दी" रोमी सूबेदार भी जानना चाहता था कि यह सब क्या और क्यों हो रहा है!

- **"लोगों को हाथ से संकेत किया"** यह स्पष्ट रूप से सर्व-प्रचलित हाथ का संकेत है कि वे चुप हो जाएँ ताकि बोलने वाला बोल सके (देखें, प्रेरि. 12:17; 13:16; 19:33; 21:40; 26:1)। यह संभवतः भाषण कला है जिसको पौलुस ने तरसुस के भाषण कला केन्द्र से सीखा होगा।

- **"वह इब्रानी बोली में बोला"** पौलुस ने भीड़ के साथ आरामी भाषा में बातचीत की (यहूदियों ने यह भाषा उस समय सीखी जब वे फारसी साम्राज्य के अधीन थे)। भीड़ कुछ समय तक शान्त हो गई (देखें, प्रेरि. 22:2)।

विचार विमर्श के लिये प्रश्न

यह अध्ययन में मार्गदर्शन करने की टीका है, इसका अर्थ है कि आप बाइबल की अपनी व्याख्या करने के स्वयं ही जिम्मेदार हैं। हम में से प्रत्येक को उसी ज्ञान के अनुसार चलना चाहिए जो हमारे पास है। व्याख्या करने के कार्य में आप आपकी बाइबल और पवित्र आत्मा केन्द्रिय स्थान रखते हैं। यह कार्य व्याख्याकार पर न छोड़ दें।

निम्नलिखित प्रश्न अपनी सहायता के लिए दिए गए हैं ताकि आप पुस्तक के गम्भीर विषयों पर पुनर्विचार कर सकें। वे आपके विचारों को आन्दोलित करने के लिए हैं, इनके अलावा और भी प्रश्न हो सकते हैं:

1. जबकि प्रत्येक नगर में भविष्यद्वक्ता पौलुस से कह रहे थे कि वह यरूशलेम में न जाए, परन्तु वह फिर भी यरूशलेम गया, क्यों?
2. मूसा की वाचा या व्यवस्था के साथ विश्वासी यहूदियों को कैसा रिश्ता रखना चाहिए?
3. प्रेरि. 21:28a में आसिया के यहूदियों द्वारा पौलुस पर लगाया गया आरोप, क्या सच था?
4. प्रेरि. 21:38 में सेनापति की टिप्पणी का अर्थ क्या यह है कि भीड़ में थोड़े ही यहूदी यूनानी जानते हैं अथवा यह है कि उसने सोचा कि पौलुस मिस्री है?

Copyright © 2013 Bible Lesson International

प्रेरितों के काम-22
बाइबल के विभिन्न आधुनिक अनुवादों में पैराग्राफ-विभाजन

UBS4	NKJV	NRSV	TEV	NJB
पौलुस द्वारा अपना बचाव	यरूशलेम की भीड़ को सम्बोधन	पौलुस की गिरफ्तारी और बचाव	पौलुस द्वारा अपना बचाव	यरूशलेम के यहूदियों को पौलुस का सम्बोधन
		(21:27-22:29)	(21:37-22:5)	
21:37-22:5	21:37-22:21	21:37-22:1		
				22:1-5
		22:2		
		22:3-5	22:3-5	
पौलुस अपने मन-परिवर्तन के विषय में बताता है			पौलुस अपने मन-परिवर्तन के विषय बताता है।	
22:6-11		22:6-11	22:6-11	22:6-11
22:12-16		22:12-16	22:12-16	22:12-16
पौलुस अन्यजातियों में भेजा गया			अन्यजातियों में प्रचार करने की पौलुस की बुलाहट	
22:17-21		22:17-21	22:17-21	22:17-21
पौलुस तथा रोमी अधिकारी	पौलुस की रोमी नागरिकता			पौलुस एक रोमी नागरिक
22:22-29	22:22-29	22:22-29	22:22-25	22:22-29
			22:26	
			22:27a	
			22:27b	
			22:28a	
			22:28b	
			22:29	
			पौलुस महासभा के सामने	सन्हेद्रिन के सामने उसकी पेशी
(22:30-23:11)	22:30-23:10	22:30	(22:30-23:11)	(22:30-23:11)
22:30-23:5			22:30	22:30

पठन चक्र तीसरा (''अच्छे बाइबल अध्ययन का मार्गदर्शन'' से)

पैराग्राफ स्तर पर मूल लेखक के अभिप्राय को समझना

यह अध्ययन करने की मार्गदर्शक टीका है, जिसका अर्थ है कि आप अपनी बाइबल-व्याख्या के स्वयं उत्तरदायी हैं। हम में से प्रत्येक को अपने ज्ञान व समझ के अनुसार कार्य करना चाहिए। व्याख्या-प्रक्रिया में आप,

आपकी बाइबल तथा पवित्र आत्मा प्राथमिक स्थान रखते हैं। आपको यह टीका कार्य टीकाकार पर नहीं छोड़ना चाहिए।

पूरा अध्याय एक बैठक में पढ़ें। विषयों को पहचानें। अपने विषय-विभाजन की तुलना उपरोक्त पाँच आधुनिक अनुवादों के विषय-विभाजन से करें। पैराग्राफों का विभाजन प्रेरणा प्राप्त नहीं होता है, परन्तु यह मूल लेखक के अभिप्राय को समझने की कुंजी है, जो कि व्याख्या करने का आधार है। प्रत्येक पैराग्राफ में केवल एक ही मूल विषय होता है:

1. पहला पैराग्राफ
2. दूसरा पैराग्राफ
3. तीसरा पैराग्राफ
4. अन्य

शब्दों और वाक्यांशों का अध्ययन

NASB (नवीनतम) पाठ : प्रेरितों के काम 22:1
1"हे भाइयो, और पितरो, मेरा प्रत्युत्तर सुनो, जो मैं अब तुम्हारे सामने प्रस्तुत करता हूं।"

22:1
NASB "भाइयो और पितरो"
NKJV "लोगो भाइयो और पितरो"
NRSV "भाइयो और पितरो"
TEV "मेरे यहूदी साथियो"
NJB "मेरे भाइयो और पितरो"

न्यूमैन और निदा द्वारा प्रेरितों के कार्य पर एक अनुवादक की पुस्तिका न्यूमैन और निदा द्वारा *प्रेरितों के कार्य पर एक अनुवादक की पुस्तिका* (*A Translator's Handbook on the Acts of the Apostles*, by Newman and Nida)में कहते हैं कि "भाइयो" शब्द पौलुस की आयु के बराबर के मनुष्यों की ओर, तथा "पितरो" शब्द उससे आयु में बड़े मनुष्यों की ओर संकेत करता है, (देखें, पेज 419)। परन्तु मैं सोचता हूँ कि यह एक मुहावरा होगा, (स्तिफनुस ने प्रेरि. 7:2 में भाषण आरम्भ करते हुए इन्हीं शब्दों का प्रयोग किया था), क्योंकि पौलुस इस समय 60 वर्ष की आयु से थोड़ा अधिक था, तो भीड़ पर उसके ये शब्द ठीक नहीं बैठते हैं।

इस भीड़ में संभवतः कुछ विश्वासी लोग भी होंगे। तो "भाइयो" शब्द उन पर बिल्कुल सही बैठता है। पौलुस हमेशा अपनी जाति और राष्ट्रीयता द्वारा जाना जाता था (देखें, रोमि. 9:1-5; फिलि. 3:5)।

■ **"बचाव"** यहां यूनानी शब्द "अपोलौजिया"(*apologia)* प्रयुक्त हुआ है, जिससे अंग्रेजी शब्द "अपौलाजी" (*Apology*) बना है। इसका अर्थ है। मौखिक वैधानिक बचाव। यह शब्द प्रेरितों के काम पुस्तक में पौलुस की जांच पड़ताल के संबंध में कई बार प्रयुक्त हुआ है (देखें, प्रेरि. 25:16; 2 तीमु. 4:16)।

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 22:2
2वे यह सुनकर कि वह हमसे इब्रानी भाषा में बोलता है, और भी चुप हो गए। तब उस ने कहा:

22:2 "इब्रानी बोली" यह आरामी भाषा की ओर संकेत है। सुसमाचारों में जहाँ भी यीशु द्वारा बोले गए शब्द लिखे हैं वे सब आरामी भाषा के हैं। आरामी भाषा प्राचीन इब्रानी की सजातीय भाषा है। यह फारसी साम्राज्य की भाषा थी। जब यहूदी उनके अधीन थे, तब उन्होंने यह भाषा आरामी सीखी। उदाहरणार्थ: नहेम्याह 8 में जब एज्रा ने मूसा की व्यवस्था इब्रानी में पढ़कर सुनाई तो लेवीयों को लोगों के लिए उसे आरामी भाषा में अनुवाद करना पड़ा था (देखें, नहे. 8:7)।

▪ **"वे और भी चुप हो गए"** पौलुस की विनम्र भूमिका, उसके साथ धारावाहिक आरामी भाषा का मिश्रण और भीड़ के अधिकांश लोगों को पौलुस की और उसके विषय में जानकारी होना; इन सब बातों ने एकाएक वातावरण शान्त बना दिया। वे जानना चाहते थे कि वह अब क्या कहना चाहता है-यहूदी धर्म के अगुवों के सामने प्रचार करने का यह एक सुनहरा अवसर था।

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 22:3-5
[3]मैं तो यहूदी मनुष्य हूं, जो किलिकिया के तरसुस में जन्मा; परन्तु इस नगर में गमलीएल के पांवों के पास बैठकर पढ़ाया गया, और बापदादों की व्यवस्था की ठीक रीति पर सिखाया गया; और परमेश्वर के लिये ऐसी धुन लगाए था, जैसे तुम सब आज लगाए हो। [4]मैंने पुरुष और स्त्री दोनों को बान्ध-बान्धकर, और बन्दीगृह में डाल डालकर, इस पंथ को यहां तक सताया कि उन्हें मरवा भी डाला। [5]इस बात के लिये महायाजक और सब पुरनिये गवाह हैं; कि उनसे मैं भाइयों के नाम पर चिट्ठियां लेकर दमिश्क को चला जा रहा था, कि जो वहां हों उन्हें भी दण्ड दिलाने के लिये बान्धकर यरूशलेम में लाऊं।

22:3 "मैं यहूदी हूँ, तरसुस में जन्मा" पौलुस इस यहूदी भीड़ के साथ अपने आपको एकात्म करने का प्रयास करता है। वह कहता है कि वह भी यहूदी है (देखें, 2 कुरि. 12:22; फिलि. 3:5-6)। संभवतः उसे यूनानी बोलने वाला पलीस्तीन के बाहर का रहने वाला यहूदी समझा गया होगा।

इस वाक्यांश के "परन्तु इस नगर में... पढ़ाया गया" के दो अर्थ हो सकते हैं (1) तरसुस अथवा (2) यरूशलेम नगर। संदर्भ पढ़ने से यरूशलेम नगर उपयुक्त लगता है, अतः वह यरूशलेम में पढ़ा। परन्तु उसकी भाषण देने की शिक्षा व प्रशिक्षण तरसुस में हुआ।

▪ **"गमलीएल ने पढ़ाया"** गमलीएल एक सम्मानित रब्बी था (देखें, प्रेरि. 5:34-40)। उसका उल्लेख मिशना में कई बार हुआ है। वह हिल्लेल रब्बी की पाठशाला का छात्र था। यह बात सुनकर भीड़ अवश्य प्रभावित हुई होगी। देखें, प्रेरि. 5:34 में विशेष शीर्षक: गमलीएल

▪ **"हमारे पिता के कानून के अनुसार सख्ती से"** इसका अर्थ हुआ कि वह फरीसी था (देखें, प्रेरि. 23:6; 26:5) और बड़ा उत्साही था (देखें, प्रेरि. 22:4; गला. 1:14; फिलि. 3:6)। फरीसी लोग मौखिक व्यवस्था का सख्ती के साथ पालन करते थे अर्थात् तालमूद का, जिसमें पुराने नियम की व्याख्या पाई जाती थी।

▪ **"जैसे तुम सब आज लगाए हो"** पौलुस उनके उत्साह और समर्पण की सराहना करता है। वह भी उन ही की तरह किसी समय बड़ा उत्साही था।

22:4 "मैंने सताया" पौलुस ने अपनी सम्पूर्ण सेवकाई में, अपने पुराने जीवन को, दुख के साथ याद किया। उसने कई बार इसका उल्लेख किया (देखें, प्रेरि. 9:1,13,21; 22:4,19; 26:10-11; गला. 1:13, 23; फिलि. 3:6; 1 तीमु. 1:13)। इन कामों के कारण उसने अपने आपको प्रेरितों में सबसे छोटा कहा (देखें, 1 कुरि. 15:9; 2 कुरि. 12:11; इफि. 3:8; 1 तीमु. 1:15)।

▪ **"मार्ग"** मसीही मण्डली को प्रारम्भ में पन्थ कहा जाता था (देखें, प्रेरि. 9:2; 19:9,23; 22:4; 28:14,22)। यह शब्द निम्न बातों को दर्शाता है

1. यीशु "मार्ग" है (देखें, यूहन्ना 14:6)
2. बाइबल पर विश्वास करके उसके अनुसार जीना (देखें, व्यव. 5:32-33; 31:29; भजन 27:11; यशा. 35:8)

▪ "उन्हें मरवा भी डाला" पौलुस ने कुछ मसीही विश्वासियों को घात कराया था (देखें, प्रेरि. 8:1,3; 26:10)। निश्चित रूप से वह स्तिफनुस को घात कराने में शामिल था (प्रेरि. 7:58; 8:1)।

■ **"पुरुष और स्त्री दोनों को बाँध-बाँधकर और बन्दीगृह में डाला"** पौलुस ने स्त्रियों को भी बाँध-बाँध कर बन्दीगृह में डलवाया और उन्हें मरवा भी डाला, यह वास्तव में उसके सताव की क्रूरता को दर्शाता है।

22:5 यहाँ पौलुस उन बातों को बताता है जो मसीह पर विश्वास लाने में सहायक रहीं (देखें, प्रेरि. 9)।

■ **"पुरनियो की महासभा"** लूका 22:66 में यह वाक्यांश सन्हेद्रिन के लिए प्रयुक्त हुआ है। ये यहूदी अगुवे थे जिनके पास अधिकार था। महायाजक और पुरनिए शब्द किसी भी छोटे शासन प्रबन्ध की कमेठी के लिए भी प्रयुक्त किया जा सकता था।

■ **"मुझे चिट्ठियाँ भी मिलीं "** एफ. एफ. ब्रूस, पॉल अपनी पुस्तक *एपोस्टल ऑफ़ द हार्ट सेट फ़्री* (F. F. Bruce, *Paul: Apostle of the Heart Set Free*) में सन्हेद्रिन के अधिकारों का रोचक वर्णन करते हैं जिनके आधार पर सन्हेद्रिन बाहर के देशों में रहने वाले यहूदियों को वापस यरूशलेम बुला सकती थी। (पेज 72)। अधिक ऐतिहासिक जानकारी के लिए देखें 1 मकाबी 15:21 तथा फ्लेवियुस योसेपस।

■ **"जो वहाँ हों"** यह वाक्यांश उन विश्वासी यहूदियों की ओर इशारा करता है जो यरूशलेम में कलीसिया पर सताव होने के कारण भाग गये थे।

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 22:6-11
[6]जब मैं चलते-चलते दमिश्क के निकट पहुंचा, तो ऐसा हुआ कि दो पहर के लगभग एकाएक एक बड़ी ज्योति आकाश से मेरे चारों ओर चमकी। [7]और मैं भूमि पर गिर पड़ाः और यह शब्द सुना कि हे शाऊल, हे शाऊल, तू मुझे क्यों सताता है? मैंने उत्तर दिया, कि हे प्रभु, तू कौन है? [8]उसने मुझसे कहा; मैं यीशु नासरी हूं, जिसे तू सताता है? [9]और मेरे साथियों ने ज्योति तो देखी, परन्तु जो मुझसे बोलता था उसका शब्द न सुना। [10]तब मैंने कहा; हे प्रभु, मैं क्या करूं? प्रभु ने मुझसे कहा; उठकर दमिश्क में जा और जो कुछ तेरे करने के लिये ठहराया गया है वहां तुझसे सब कह दिया जाएगा। [11]जब उस ज्योति के तेज के मारे मुझे कुछ दिखाई न दिया तो मैं अपने साथियों के हाथ पकड़े हुए दमिश्क में आया।

22:6 "दोपहर के लगभग" यह अतिरिक्त वाक्यांश है जो प्रेरि. 9:3 में नहीं पाया जाता है।

22:7 यह प्रेरि. 9:4 की दोहराई गई बातें हैं।

22:8
NASB, NJB **"यीशु नासरी"**
NKJV, NRSV, TEV **"नासरत का यीशु"**

पौलुस ने प्रेरितों के काम पुस्तक में तीन बार अर्थात् 9:1-31; 26:4-18 तथा यहाँ पर अपनी साक्षी का उल्लेख किया है। और केवल यहीं तथा 26:9 में बताया है कि उसका कार्य क्या था और वह कहता है, "मैंने भी समझा था कि यीशु नासरी के नाम के विरोध में मुझे बहुत कुछ करना चाहिए।" उसके नाम के विरोध में कुछ करने का अर्थ है स्वयं "यीशु नासरी" के विरोध में करना। प्रेरि. 24:5 में यीशु नासरी एक उपहास का शब्द है परन्तु मत्ती 2:23 में एक भविष्यद्वाणी का शब्द है। संभव है कि यह एक भौगोलिक पद न हो, परन्तु यह एक मसीह संबंधी पदवी है जो "डाली" शब्द से आया है (देखें, यशा. 11:1; 53:2) और इब्रानी शब्द नेसर *(nēser)* से आया है (देखें, यिर्म. 23:5; 33:15; जक. 3:8; 6:12)। देखें प्रेरि. 2:22 में विशेष शीर्षक।

■ **"जिसे तू सताता है"** प्रेरि. 9:4 में पूरी टीका देखें।

22:9 "परन्तु आवाज़ नहीं समझ पाया" पौलुस के मन-परिवर्तन के विवरणों के बीच कोई भी विरोधाभास नहीं है जो प्रेरि. 9:7 तथा 22:9 में पाए जाते हैं। यूनानी व्याकरण में यह अर्थ छिपा है कि उसके साथियों ने आवाज तो सुनी परन्तु शब्दों को समझा नहीं। वाद विवाद के लिए (देखें 9:7)।

22:10" जो कुछ तेरे करने के लिए ठहराया गया है" यह पूर्ण कालिक क्रिया सूचक है। यह उन शब्दों की ओर संकेत करता है जो यीशु ने हनन्याह से कहे थे (देखें, प्रेरि. 9:15-16)। पौलुस को एक कठिन और विशिष्ट सेवा पूरी करनी थी। अनेक प्रकार से पौलुस का दर्शन और उसका भेजा जाना पुराने नियम के नबियों का अनुसरण था (देखें, यशा. 6; यिर्म. 1; यहेज. 2-3 अध्याय)।

22:11 "जब उस ज्योति के तेज के मारे मुझे कुछ दिखाई न दिया" मैं समझता हूँ कि पौलुस की "देह में काँटा" होने का कारण यही था। पौलुस की देह में "काँटा" पाए जाने के संबंध में कुछ विचार धाराएँ इस प्रकार हैं:

1. प्रारम्भिक चर्च-फादर्स जैसे, मार्टिन लूथर और जॉन काल्विन कहते हैं कि यह उसके पतित स्वभाव की एक आत्मिक समस्या थी (अर्थात् "उसकी देह में")
2. ख्रीसौस्तम इसे लोगों की ओर से समस्याएँ कहता है, जैसाकि गिनती 33:55; न्या. 2:3 में लिखा है।
3. कुछ लोग इसे मिरगी की बीमारी मानते हैं।
4. सर विलियम रैम्जे कहते हैं कि यह मलेरिया था।
5. मैं सोचता हूँ कि यह एक आँखों की समान्य समस्या थी (गला. 4:13-15 और 6:11 की परस्पर तुलना करें) जो दमिश्क के मार्ग पर जब वह अन्धा हो गया था तो उत्पन्न हुई थी (देखें, प्रेरि. 9; यहोशू 23:13)।

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 22:12-16
[12]और हनन्याह नामक व्यवस्था के अनुसार एक भक्त मनुष्य, जो वहां के रहनेवाले सब यहूदियों में सुनाम था, मेरे पास आया। [13]और खड़े होकर मुझसे कहा; हे भाई शाऊल, फिर देखने लग; उसी घड़ी मेरे नेत्र खुल गए और मैंने उसे देखा। [14]तब उसने कहा; हमारे बापदादों के परमेश्वर ने तुझे इसलिये ठहराया है कि तू उसकी इच्छा को जाने, और उस धर्मी को देखे और उसके मुंह से बातें सुने। [15]क्योंकि तू उसकी ओर से सब मनुष्यों के सामने उन बातों का गवाह होगा जो तूने देखी और सुनी हैं। [16]अब क्यों देर करता है? उठ, बपतिस्मा ले, और उसका नाम लेकर अपने पापों को धो डाल।

22:12 9:10 की तुलना में यह हनन्याह के बारे में कुछ अधिक वर्णन पाया जाता है। वह एक सामान्य मनुष्य था और स्पष्टरूप से मूसा की व्यवस्था के मानदण्डों के अनुसार पौलुस की भाँति धर्मी और भक्त था। इसका अर्थ यह हो सकता है कि वह एक फरीसी भी था।

1. लूका इसी प्रकार का विवरण शमौन के विषय में भी लिखता है, जिसने मन्दिर में बालक यीशु का दर्शन किया था और परमेश्वर की स्तुति की थी (देखें, लूका 2:25)।
2. लूका इन्हीं शब्दों का प्रयोग उन तितर-बितर यहूदियों के लिए भी करता है जो पिन्तेकुस्त के दिन यरूशलेम में एकत्रित हुए थे (प्रेरि. 2:5)।
3. लूका तीसरी बार इन्हीं शब्दों का प्रयोग उनके लिये भी करता है जिन्होंने पत्थरवाह द्वारा मृत्यु होने के उपरान्त स्तिफनुस को कब्र में दफनाया था (देखें, प्रेरि. 8:2)।

इस प्रकार ये शब्द जितना गहरा सम्बन्ध यहूदी धर्म का विश्वासयोग्यता से पालन करने वालों में रखता है, उतना मसीह पर विश्वास करने वालों से नहीं रखता। प्रेरि. 9:10 में हनन्याह को "चेला" कहा गया है, जिसका अर्थ है वह विश्वासी बन चुका था। हालांकि वह मसीही था पर तौभी दमिश्क के यहूदी समाज से प्रीति रखता था।

22:13 पौलुस के प्रति हनन्याह की सेवकाई दर्शाती है कि नए नियम में विश्वासियों के मध्य पुरोहित वर्ग (विशेष अभिषित समूह) और साधारण सदस्य में कोई स्पष्ट अन्तर नहीं है। यीशु के वचन, हनन्याह के लिये निम्न बातों का अधिकार थे:

1. कि वह पौलुस पर हाथ रखकर (प्रेरि. 9:12,17) उसे चंगा होने की आज्ञा दे सके (प्रेरि. 22:13), (देखें प्रेरि. 6:6 में विशेष शीर्षक)।
2. पौलुस की सेवकाई के लिए यीशु की इच्छा व योजना का प्रकाशन कर सके (प्रेरि. 22:15)।
3. पौलुस से बपतिस्मा लेने के लिए कह सके (संभवतः पौलुस ने स्वयं ही बपतिस्मा लिया होगा, जैसाकि प्रत्येक धर्म-परिवर्तन करने वाले से यहूदियों की माँग थी) (प्रेरि. 22:16)।
4. पौलुस को पवित्र आत्मा से भरे जाने का माध्यम बने (प्रेरि. 9:17)।

जब हनन्याह ने पौलुस जैसे दुष्ट अत्याचारी और हत्यारे को ''भाई'' कहकर पुकारा तो इससे आप उसके हृदय को देख सकते हैं। (प्रेरि. 9:13-14)।

22:14 ''हमारे बापदादों के परमेश्वर'' यह वाक्यांश यहूदी उपासना में परमेश्वर के ईश्वरत्व के लिये प्रयुक्त किया जाता था। पौलुस स्पष्ट बताना चाहता है कि यहोवा(YHWH) परमेश्वर (प्रेरि. 1:68 में विशेष शीर्षक देखें) ने ही उससे संपर्क किया और अपने पुत्र यीशु के द्वारा उसे भेजा है। यहूदियों के परमेश्वर के अतिरिक्त किसी अन्य देवता द्वारा वह नहीं बुलाया गया।

▪ **''उसकी इच्छा को जाने''** यहोवा (YHWH) की सबसे बड़ी इच्छा यह है कि मानवजाति यीशु को जाने (देखें, यूहन्ना 6:29,40)। इसके बाद पौलुस के लिए परमेश्वर की इच्छा थी कि वह अन्यजातियों का सेवक बने (देखें, प्रेरि. 9:15; 22:15; 26:16)।

▪ **''उस धर्मी को देखें''** यह मसीह संबंधी पदवी है (देखें, भजन 45; 72; प्रेरि. 3:14; 7:52; 1 यूहन्ना 2:1)। पौलुस को महिमान्वित यीशु का व्यक्तिगत प्रकाशन प्राप्त होने का सौभाग्य मिलने वाला था (जैसाकि स्तिफनुस को प्रकाशन मिला था, देखें, प्रेरि. 7:55-56)। प्रेरि. 3:14 में देखें विशेष शीर्षक धार्मिकता

▪ **''और उसके मुँह से बातें सुने''** यह प्रेरि. 22:7-8 (*Bat Kol*) की स्वर्ग से आने वाली आवाज की ओर संकेत प्रतीत होता है अर्थात् ''बाथकोल'' (देखें, व्यव-विवरण 4:12; राजा 19:12-13; अय्यूब 4:16; यिर्म. 25:30; यहेज. 1:25,28; योएल 3:16; आमोस 1:2; लूका 3:22; 9:35; प्रेरि. 10:13,15), परन्तु यह आवाज उसके समान हो सकती है जिसका उल्लेख प्रेरि. 22:17-21 में किया गया है। इसका यह संकेत भी संभव हो सकता है कि जो विशेष दर्शन अपनी सेवकाई के दौरान पौलुस ने पाए। प्रेरि. 22:17-21 में सूची देखें।

22:15 ''सब मनुष्यों के सामने...गवाह होगा'' यह एक अद्‌भुत सत्य है कि यीशु मसीह का सुसमाचार सब लोगों के लिए है (देखें, यूहन्ना 3:16; 4:42; 1 तीमु. 2:4; 4:10; तीतुस 2:11; 2 पत. 3:9; 1 यूहन्ना 2:1; 4:14)।

सभी लोग यह सुसमाचार ग्रहण नहीं करेंगे, न सब लोग स्पष्ट रूप से सुनेंगे, परन्तु सबके सब परमेश्वर के प्रेम में और यीशु के बलिदान में और पौलुस के प्रचार में सम्मिलित हैं! यही वह सच्चाई है जिसका इस भीड़ ने तिरस्कार किया (देखें, प्रेरि. 22:22)।

पौलुस जानबूझकर शब्द ''अन्यजाति'' का प्रयोग नहीं करता है जिसे हनन्याह ने यीशु की ओर से उसके पास पहुँचाया था (देखें, प्रेरि. 9:15)। पौलुस जानता था कि यह शब्द इन अति रूढ़िवादी यहूदियों की दृष्टि में अपमानजनक है। उनकी प्रवृत्ति और जातिगत घमण्ड ने पुराने नियम के नबियों को उन्हें अपनी भविष्यद्वाणी में शामिल करने तक से रोका था।

▪ **''जो तू ने देखी और सुनी है''** इस वाक्य में पहला भाग पूर्ण कालिक क्रिया है तथा दूसरा भाग भूतकालिन क्रिया है। ऐसा क्यों है यह बताना कठिन है। वे साथ साथ प्रतीत होते हैं। पौलुस अपने सम्पूर्ण जीवनभर, जीवित मसीह के साथ अपनी इस व्यक्तिगत मुठभेड़ के अनुभव को स्मरण करता रहा। प्रेरितों के काम पुस्तक में उसने तीन बार इस मुठभेड़ का जिक्र किया है। उसने संभवतः प्रत्येक आराधनालय में जाकर अपनी व्यक्तिगत साक्षी प्रस्तुत की।

22:16 ''बपतिस्मा ले, और अपने पापों को धो डाल'' ये आदेशात्मक कथन हैं। यहाँ पुराने नियम के स्नान संबंधी आनुष्ठानिक रीति-विधि की ओर संकेत पाया जाता है (देखें, लैव्य. 11:25,28,40; 13:6,34,56; 14:8-9; 15:5-13,21-22,27; 16:26,28; 17:15-16; गिनती 8:7,21; 19:19; व्यवस्थाविवरण 23:11)। यहाँ पर यह हमारी मसीह में आत्मिक शुद्धता के प्रतीक के रूप में प्रयुक्त किया गया है (देखें 1 कुरि. 6:11; इफि. 5:26; तीतुस 3:5; इब्रा. 10:22)। आरम्भिक कलीसिया में बपतिस्मा सार्वजनिक रूप से अपने विश्वास की घोषणा करना था। अधिक जानकारी के लिए व विचार विमर्श के लिए प्रेरि. 2:38 में विशेष टिप्पणी व शीर्षक देखें।

यहाँ बपतिस्मा लेने और पापों को धोने के लिए कहा गया है। पौलुस तो अपने पापों को धो नहीं सकता था परन्तु वह स्वयं को अपना बपतिस्मा दे सकता था। (धर्म परिवर्तन करने वाले व्यक्ति को स्वयं ही गवाहों के सामने अपना बपतिस्मा खुद लेना पड़ता था)। अक्सर कहा जाता है कि बपतिस्मा लेने की उचित रीति केवल डूब का बपतिस्मा ही है (देखें, रोमि. 6 और कुलु. 3), परन्तु यहाँ बपतिस्मा शुद्ध होने की उपमा से जुड़ा है (देखें, प्रेरि. 2:38; 1 कुरि. 6:11; इफि. 5:26; तीतुस 3:5; इब्रा. 10:22)। धर्म वैज्ञानिक रूप से 1 पत. 3:21 दर्शाता है कि बपतिस्मा एक प्रतीक है, अनुष्ठान नहीं है। आधुनिक व्याख्याकारों को इस बारे में सावधान रहना चाहिए कि किस प्रकार बपतिस्मा दिया जाए और कौन सी विधि सही है। प्रेरि. 9:18 में लिखा है जब वह देखने लगा तो उठकर बपतिस्मा लिया। उसने किस विधि द्वारा बपतिस्मा लिया यह विवाद का विषय नहीं है, पर उसका बपतिस्मा ही स्वयं में विवाद का विषय है।

▪ **''उसका नाम लेकर''** ''नाम'' कोई जादूई फार्मूला नहीं है, परन्तु लोगों के सामने इस बात का अंगीकार है कि अब यीशु मेरा स्वामी है और इस प्रकार यह यीशु के साथ एक व्यक्तिगत सम्बन्ध का आरम्भ है जिसका परिणाम मसीह का सा स्वभाव अपने अन्दर विकसित करना और यीशु की सी जीवन-शैली अपनाना है। आरम्भिक कलीसिया में बपतिस्में का फार्मूला प्रार्थी अपने मुँह से बोलता था कि ''यीशु प्रभु है'' (देखें, रोमि. 10:9-13; 1 कुरि. 1:2; 2 तीमु. 2:22)। मूल बात यह नहीं है कि उपयुक्त शब्द और सही फार्मूला क्या है, परन्तु मूल बात उसका हृदय है कि क्या वह हृदय से यीशु पर विश्वास करता और उसे ग्रहण करता है अथवा नहीं (प्रेरि. 2:38 में टिप्पणी देखें और 2:21 में विशेष शीर्षक)।

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 22:17-21
[17]जब मैं फिर यरूशलेम में आकर मन्दिर में प्रार्थना कर रहा था, तो बेसुध हो गया। [18]और उसको देखा कि मुझसे कहता है; जल्दी करके यरूशलेम से झट निकल जा; क्योंकि वे मेरे विषय में तेरी गवाही न मानेंगे। [19]मैंने कहा; हे प्रभु वे तो आप जानते हैं, कि मैं तुझ पर विश्वास करनेवालों को बन्दीगृह में डालता और जगह-जगह आराधनालय में पिटवाता था। [20]और जब तेरे गवाह स्तिफनुस का लहू बहाया जा रहा था तब मैं भी वहां खड़ा था और इस बात में सहमत था, और उसके घातकों के कपड़ों की रखवाली करता था। [21]और उसने मुझसे कहा, चला जा: क्योंकि मैं तुझे अन्यजातियों के पास दूर-दूर भेजूंगा।

22:17-21 यह पौलुस के विशेष दर्शन का एक और उदाहरण है (देखें, प्रेरित, 18:9-10; 23:11; 27:23-24)। इस सन्दर्भ में यह प्रेरि. 22:14 की पूर्ति है।

22:17 ''जब मैं फिर यरूशलेम में आया'' पौलुस की दोनों साक्षियों में जो यहाँ पर और प्रेरि. 9 में पाई जाती है, पढ़कर ऐसा लगता है मानों पौलुस हृदय-परिवर्तन के तुरन्त बाद ही यरूशलेम आया हो, परन्तु गला. 1:11-23 बताता है कि इसके बीच लम्बा समय था (लगभग तीन वर्ष का)। तीन वर्ष बाद वह लौटा था।

▪ **''बेसुध हो गया''** प्रेरि. 10:10 में टिप्पणी देखें।

22:18 यीशु यहाँ पौलुस को दो वर्तमान कालिन आदेश देता है ''जल्दी कर'' तथा ''यरूशलेम से झट निकल जा।'' यीशु की चेतावनी का उल्लेख यूनानी-भाषी यहूदियों के षड्यन्त्र द्वारा प्रेरि. 9:29 में समझाया गया है।

22:19 ''प्रभु'' अर्थात् हे हमारे ''पूर्वजों के परमेश्वर'' अथवा ''धर्मी परमेश्वर'' (प्रेरि. 22:14)। यहूदी भीड़ ने समझा होगा यहोवा, (YHWH) परन्तु वहाँ उपस्थित विश्वासियों ने इसे यीशु समझा होगा। पुराने नियम का कोई भी उद्धरण जो यीशु के लिये प्रयुक्त होता है उसमें शब्दों की अदला-बदली होना नए नियम में सामान्य बात है। यह त्रिएक परमेश्वर का रहस्य है। (देखें प्रेरि. 2:32 और 2:39 में विशेष शीर्षक)।

■ **''मैं बन्दीगृह में डालता और पिटवाता था''** पौलुस का कार्य निरन्तर चलता रहता था, संपूर्ण टिप्पणी प्रेरि. 22:4 में देखें।

■ **''जो तुझ पर विश्वास करते थे''** प्रेरि. 2:40; 3:16 और 6:5 में इससे संबंधित विशेष शीर्षक देखें।

22:20 प्रेरि. 7:58-59 और 8:1 में टिप्पणियाँ देखें। पौलुस अपने पहले के कष्टदायक कामों का वर्णन यहाँ तीन वाक्यांशों का प्रयोग करके करता है:

1. वह भीड़ के साथ खड़ा रहता था।
2. वह पत्थरवाह में सहमत था।
3. जो स्तिफनुस को पत्थरवाह कर रहे थे, उनके वस्त्रों की रखवाली कर रहा था।

स्तिफनुस के उपदेश और उसकी मृत्यु का पौलुस पर गहरा प्रभाव पड़ा।

22:21 ''मैं तुझे अन्यजातियों के पास दूर दूर भेजूँगा'' यह एक स्पष्ट विवरण है जहाँ हम पाते हैं कि पौलुस ने तीन मिश्नरी यात्राएँ कीं, और अन्त में पलीस्तीन के रोमी अधिकारियों के सामने और रोम में कैसर के सामने भी गवाही दी (देखें, प्रेरि. 23:11)। वह जानता था कि यह कथन भीड़ को और भड़का देगा।

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम: 22:22-29

[22]वे इस बात तक उसकी सुनते रहे; तब ऊंचे शब्द से चिल्लाए कि ऐसे मनुष्य का अन्त करो; उसका जीवित रहना उचित नहीं। [23]जब वे चिल्लाते और कपड़े फेंकते और आकाश में धूल उड़ाते थे; [24]तो पलटन के सूबेदार ने कहा; कि इसे गढ़ में ले जाओ; और कोड़े मारकर जांचो कि मैं जानूं कि लोग किस कारण उसके विरोध में ऐसा चिल्ला रहे हैं। [25]जब उन्होंने उसे तसमों से बान्धा तो पौलुस ने उस सूबेदार से जो पास खड़ा था, कहा, क्या यह उचित है कि तुम एक रोमी मनुष्य को, और वह भी बिना दोषी ठहराए हुए कोड़े मारो? [26]सूबेदार ने यह सुनकर पलटन के सरदार के पास जाकर कहा; तू यह क्या करता है? यह तो रोमी मनुष्य है। [27]तब पलटन के सरदार ने उसके पास आकर कहा; मुझे बता, क्या तू रोमी है? उसने कहा, हां। [28]यह सुनकर पलटन के सरदार ने कहा कि मैंने रोमी होने का पद बहुत रुपये देकर पाया है। पौलुस ने कहा, मैं तो जन्म से रोमी हूं। [29]तब जो लोग उसे जांचने पर थे, वे तुरन्त उसके पास से हट गए; और पलटन का सरदार भी यह जानकर कि यह रोमी है, और मैंने उसे बान्धा है, डर गया।

22:22 उनका कथन मुहावरेदार भाषा में था जिसके दो भाग हैं:

1. ऐसे मनुष्य का अन्त करो (देखें, लूका 23:18; प्रेरि. 21:36)
2. उसका जीवित रहना उचित नहीं (देखें, प्रेरि. 25:24)। उनकी जातिगत और धार्मिक प्रवृत्ति प्रकाशित हो गई। सभी मनुष्य अपने इतिहास और संस्कृति से बँधे होते हैं।

22:23

NASV ''अपने कपड़े फैकने लगे''
NKJV ''अपने कपड़े फाड़ने लगे''
NRSV ''अपने चोगे उतारकर फैंकने लगे''
TEV ''अपने कपड़े हवा में लहराने लगे''
NJB ''अपने जोगे उतारकर लहराने लगे''

कपड़ों को फाड़कर उतार फेंकना व उन्हें हवा में लहराना, ये पुराने नियम के निन्दा करने पर शोक प्रकट करने के चिन्ह थे देखें, ग्रीक-इंगलिश लैक्सीकन, लो एण्ड नीदा, भाग 1, पेज 213; प्रेरि. 14:14.(*Greek-English Lexicon*, Louw and Nida, vol. 1, p. 213, cf. Acts 14:14)

▪ **"और आकाश में धूल उड़ाते थे"** यह तो अच्छा हुआ कि वहाँ ईंट-पत्थर उपलब्ध नहीं थे। अपने सिर पर धूल डालना विलाप करने का चिन्ह होता है (देखें, यहोशू 7:6; 1 शमू. 4:12; 2 शमू. 1:2; अयूब 2:12), यहाँ पर निन्दा करने पर विलाप किया जा रहा था (देखें, यशा. 47; विलापगीत 2; मीका 1:10)

विशेष शीर्षक: शोक मनाने की धार्मिक विधियाँ

इस्राएली लोग अपने प्रियजन की मृत्यु पर, व्यक्तिगत पश्चाताप पर, सामूहिक अपराध पर, अनेक प्रकार से शोक प्रकट करते थे, जैसे :

1. अपने वस्त्र फाड़ना, उत्प. 37:29,34; 44:13; न्या. 11:35; 2 शमू. 1:11; 3:31; 1 राजा 21:27; अयूब 1:20
2. टाट ओढ़ना, उत्प. 37:34; 2 शमू. 3:31; 1 राजा 21:27; यिर्म. 48:37
3. जूतियाँ उतारना, 2 शमू. 15:30; यशा. 20:3
4. सिर पर हाथ रखना, 2 शमू. 13:19; यिर्म. 2:37
5. सिर पर धूल डालना, यहो. 7:6; 1 शमू. 4:12; नहे. 9:1
6. जमीन पर बैठना, विलाप. 2:10; यहेज. 26:16; (भूमि पर लेटना, 2 शमू. 12:16); यशा. 47:1
7. छाती पीटना, 1 शमू. 25:1; 2 शमू. 11:26; नहे. 2:7
8. मातम मनाना, विलाप करना, 1 शमू. 25:1; 2 शमू. 11:26
9. शरीर चीरना, व्यव. वि. 14:1; यिर्म 16:6; 48:37
10. उपवास, 2 शमू. 1:12; 12:16,21; 1 राजा 21:27; 1 इति. 10:12; नहे. 1:4
11. विलाप का गीत गाना, 2 शमू 1:17; 3:31; 2 इति. 35:25
12. गंजा होना (बाल नोचना या बाल कटवाना) यिर्म. 48:37
13. दाढ़ी कटवाकर छोटी करना, यिर्म. 48:37
14. सिर या मुंह ढांकना, 2 शमू. 15:30; 19:4

ये सब आन्तरिक भावनाओं का बाहरी प्रकृटीकरण थे।

Copyright © 2014 Bible Lessons International

22:24 "सरदार" के सरदार" यहां यूनानी शब्द चिलियार्क ;बीपसपंतबीद्ध (प्रेरि. 22:27-29) प्रयुक्त हुआ है जिसका अर्थ है 1000 मनुष्यों पर अधिकारी; शब्द सूबेदार (प्रेरि. 22:25-26) का अर्थ है 100 मनुष्यों पर अधिकारी। यह व्यक्ति यरूशलेम में रोमी सेना का एक उच्चाधिकारी था।

▪ **"गढ़"** यह अन्टोनियों के किले की ओर संकेत करता है, जो मंदिर क्षेत्र के निकट था और वहाँ से मंदिर पर नजर रखी जाती थी। इसे नहेम्याह के दिनों में फारसी साम्राज्य द्वारा बनाया गया (देखें नहे. 2:8; 7:2) हेरोदेस महान् ने इसका नया नाम मार्क एन्थोनी रखा। पर्व के दिनों में यरूशलेम की जनसंख्या बढ़कर तीन गुणा तक हो जाती थी इसलिए सुरक्षा उद्देश्य से यहाँ कैसरिया से भारी संख्या में सेना बुलाकर अन्टोनियो के किले में तैनात कर दी जाती थी।

▪ **"कोड़े मारकर जाँचो"** इसका अर्थ है, तब तक पीटते रहो जब तक कि सच न उगल दे। कोड़े मारना पीड़ा पहुंचाने का सबसे खतरनाक तरीका था। बहुत से मनुष्य कोड़ों की मार से मर जाया करते थे। यह यहूदी कोड़ों

अथवा रोमियों की पिटाई से कहीं अधिक पीड़ादायक होती थी। इस चमड़े के कोड़े के आगे धातू, हड्डियों व अन्य घातक वस्तुएँ लगी होती थीं।

22:25 "उसे बाहर निकालो" आमतौर पर अपराधी को झुकाकर खम्भे से बाँध दिया जाता था और फिर पीठ पर कोड़े लगाए जाते थे।

- **"क्या यह उचित है"** कई बातों में ये सिपाही अपने ही कानूनों का उल्लंघन करने पर थेः
  1. एक रोमी नागरिक को बाँधा नहीं जा सकता था (देखें प्रेरि. 21:33 व 22:29)
  2. 2. रोमी नागरिक को कोड़े नहीं मारे जा सकते थे। (cf. Livy, *History* 10:9:4; Cicero, *Pro Rabirio* 4:12-13)
  3. पौलुस की जाँच नहीं हुई और अपराधी नहीं ठहराया गया (देखें, प्रेरि. 16:37)।

22:27 "क्या तू रोमी है" यहाँ शब्द "तू" पर बल है। वह रोमी अधिकारी विश्वास नहीं कर पाया कि पौलुस एक रोमी नागरिक है।

22:28 "मैंने रोमी नागरिकता बहुत रुपये देकर पाई है" रोमी नागरिक बनने के तीन उपाय थे:

1. जन्म से रोमी होना
2. राज्य के लिए किसी ने विशेष सेवा की हो, तो उसे रोमी नागरिकता दी जाती थी।
3. नागरिकता खरीदना (Dio Cassius, *Rom. Hist.* 60:17:5-6)

इस सूबेदार का नाम बताता है कि इसने क्लौदियुस के शासनकाल में रोमी नागरिकता खरीदी थी और स्वयं एक यूनानी था (देखें, प्रेरि. 23:26, क्लौदियुस लूसियास)। क्लौदियुस की पत्नी मैसालिन, बहुत रूपया वसूल करके रोमी नागरिकता बेचा करती थी।

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम: 22:30

30दूसरे दिन उसने ठीक-ठीक जानने की इच्छा से कि यहूदी उस पर क्यों दोष लगाते हैं, उसके बन्धन खोल दिए; और महायाजकों और सारी महासभा को इकट्ठा होने की आज्ञा दी, और पौलुस को नीचे ले जाकर उनके सामने खड़ा कर दिया।

22:30 "प्रधान याजकों ...और सारी महासभा को इकट्ठा होने की आज्ञा... दी" यह रोमी साम्राज्य की ताकत को दर्शाता है। सन्हेद्रिन पर इकट्ठा होने का दबाव डाला गया। संभवतः उन्हें अन्टोनियो किले में जमा होने के लिए कहा गया। यह अनौपचारिक सभा प्रतीत होती हैं पौलुस को अब रोमियों की देखरेख में, उस पर लगाए गए स्थानीय अभियोगों का सामना करना था।

विचार विमर्श के लिये प्रश्न

यह अध्ययन में <u>मार्गदर्शन</u> करने की टीका है, इसका अर्थ है कि आप बाइबल की अपनी व्याख्या करने के स्वयं ही जिम्मेदार हैं। हम में से प्रत्येक को उसी ज्ञान के अनुसार चलना चाहिए जो हमारे पास है। व्याख्या करने के कार्य में आप आपकी बाइबल और पवित्र आत्मा केन्द्रिय स्थान रखते हैं। यह कार्य व्याख्याकार पर न छोड़ दें।

निम्नलिखित प्रश्न अपनी सहायता के लिए दिए गए हैं ताकि आप पुस्तक के गम्भीर विषयों पर पुनर्विचार कर सकें। वे आपके विचारों को आन्दोलित करने के लिए हैं, इनके अलावा और भी प्रश्न हो सकते हैं:

1. पौलुस भीड़ से अपनी रक्षा क्यों करना चाहता था?
2. लूका तीन बार क्यों पौलुस की मन-परिवर्तन की गवाही इस पुस्तक में लिखता है?
3. पवित्र आत्मा द्वारा हनन्याह का उपयोग किया जाना, किस प्रकार से प्रेरितिक-उत्तराधिकार का खण्डन करता है?
4. पौलुस के विशेष दर्शनों की सूची बनाएँ। उसे इतने अधिक दर्शनों की आवश्यकता क्यों थी?
5. मंदिर की भीड़ से पौलुस के बचाव का परिणाम किस प्रकार से परमेश्वर की योजना को पूरा करता है?

Copyright © 2013 Bible Lesson International

प्रेरितों के काम-23
बाइबल के विभिन्न आधुनिक अनुवादों में पैराग्राफ-विभाजन

UBS^4	NKJV	NRSV	TEV	NJB
महासभा के सामने पौलुस	सन्हेद्रिन में फूट पड़ना	सन्हेद्रिन के सामने पौलुस	महासभा के सामने पौलुस	सन्हेद्रिन के समक्ष उसकी पेशी
		(22:30-23:10)	(22:30-23:11)	(22:30-23:11)
22:30-23:5	22:30-23:10	22:30-23:05		
			23:1-3	23:1-5
			23:4	
			23:5	
23:6-10		23:6-10	23:6	23:6-10
			23:7-9	
	पौलुस के विरुद्ध षड्यन्त्र	पौलुस को कैसरिया भेजा जाना	23:10	
23:11	23:11-22	23:11	23:11	23:11
पौलुस को मार डालने का षड्यन्त्र			पौलुस को मार डालने का षड्यन्त्र	यहूदियों का पौलुस के विरुद्ध षड्यन्त्र
23:12-22		23:12-15	23:12-15	23:12-15
		23:16-22	23:16-18	23:16-22
			23:19	
			23:20-21	
			23:22	
राज्यपाल फेलिक्स के पास पौलुस को भेजा जाना	फेलिक्स के पास भेजना		राज्यपाल फेलिक्स के पास पौलुस का भेजा जाना	पौलुस का तबादला कैसरिया में
23:23-30	23:23-35	23:23-25	23:23-25	23:23-25
		23:26-30	23:26-30	23:26-30
23:31-35		23:31-35	23:31-35	23:31-35

पठन चक्र तीसरा (“अच्छे बाइबल अध्ययन का मार्गदर्शन” से)

पैराग्राफ स्तर पर मूल लेखक के अभिप्राय को समझना

यह अध्ययन करने की मार्गदर्शक टीका है, जिसका अर्थ है कि आप अपनी बाइबल-व्याख्या के स्वयं उत्तरदायी हैं। हम में से प्रत्येक को अपने ज्ञान व समझ के अनुसार कार्य करना चाहिए। व्याख्या-प्रक्रिया में आप, आपकी बाइबल तथा पवित्र आत्मा प्राथमिक स्थान रखते हैं। आपको यह टीका कार्य टीकाकार पर नहीं छोड़ना चाहिए।

पूरा अध्याय एक बैठक में पढ़ें। विषयों को पहचानें। अपने विषय-विभाजन की तुलना उपरोक्त पाँच आधुनिक अनुवादों के विषय-विभाजन से करें। पैराग्राफों का विभाजन प्रेरणा प्राप्त नहीं होता है, परन्तु यह मूल लेखक के अभिप्राय को समझने की कुंजी है, जो कि व्याख्या करने का आधार है। प्रत्येक पैराग्राफ में केवल एक ही मूल विषय होता है:

1. पहला पैराग्राफ

2. दूसरा पैराग्राफ
3. तीसरा पैराग्राफ
4. अन्य

शब्दों और वाक्यांशों का अध्यय

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 23:1-5
[1]पौलुस ने महासभा की ओर टकटकी लगाकर देखा और कहा, हे भाइयो, मैंने आज तक परमेश्वर के लिये बिल्कुल सच्चे विवेक से जीवन बिताया है। [2]इस पर हनन्याह महायाजक ने उनको जो उसके पास खड़े थे, उसके मुंह पर थप्पड़ मारने की आज्ञा दी। [3]तब पौलुस ने उससे कहा; हे चूना फिरी हुई भीत, परमेश्वर तुझे मारेगाः तू व्यवस्था के अनुसार मेरा न्याय करने को बैठा है, और फिर क्या व्यवस्था के विरुद्ध मुझे मारने की आज्ञा देता है? [4]जो पास खड़े थे, उन्होंने कहा, क्या तू परमेश्वर के महायाजक को बुरा कहता है? [5]पौलुस ने कहा; हे भाइयो, मैं नहीं जानता था कि यह महायाजक है; क्योंकि लिखा है कि अपने लोगों के प्रधान को बुरा न कह।

23:1

NASB, NRSV	**"की ओर टकटकी लगाकर देखा"**
NKJV	**"की ओर उत्सुकता से देखा"**
TEV	**"सीधे उनकी ओर देखा"**
NJB	**"की ओर निरन्तर देखा"**

प्रेरि. 1:10 में सम्पूर्ण टीका देखें। लूका यह शब्द अक्सर इस्तेमाल करता है। यहाँ वह पौलुस के लिए यह शब्द इस्तेमाल करता है। पौलुस ने यह शब्द केवल 2 कुरि. 3:7, 13 में प्रयुक्त किया है।

■ **"महासभा"** देखें विशेष शीर्षक: सन्हेद्रिन प्रेरि. 4:5 में।

■ **"भाइयो"** पौलुस ने यहूदियों को कई बार "भाई" कहा है (देखें, प्रेरि. 13:26,38; 22:1,5; 23:1,5-6)। यहूदियों ने पौलुस को प्रेरि. 13:15 में भाई कहकर पुकारा। प्रेरि. 9:17 में हनन्याह ने और 21:20 में यरूशलेम की कलीसिया ने पौलुस को भाई कहा।

यहूदी विश्वासी भी भाई कहकर पुकारे जाते हैं (उदाहरणार्थ, प्रेरि. 9:30; 10:23; 11:1, 12; 12:17; 15:3,7,13,22)। प्रेरि. 11:29 तथा 18:27 में यह शब्द "चेलों" से जुड़ा है। प्रेरि. 16:2,40 में यूनानी विश्वासियों को भाई कहा गया।

■ **"मैंने परमेश्वर के लिए... जीवन बिताया है"** यहाँ पर यूनानी शब्द "पॉलीटेऊ" *(politeuō)* प्रयुक्त हुआ है, जिससे अंग्रेजी शब्द पॉलीटीकल political अथवा policy) शब्द बना है। यह शब्द यहाँ नागरिक होने का अर्थ लिए हुए प्रयुक्त हुआ है (देखें फिलि. 1:27)। पौलुस यहाँ बताना चाहता है कि उसने यहूदीवाद का सदस्य होने के नाते परमेश्वर के सामने अपनी सारी जिम्मेदारियों को विश्वासयोग्यता के साथ पूरा किया है। विभिन्न अनुवाद में इसे इस प्रकार लिखा गया है:

NASB	**"अच्छे व सिद्ध विवेक के साथ"**
NKJV	**"सम्पूर्ण शुद्ध विवेक के साथ"**
NRSV	**"स्वच्छ विवेक के साथ"**
TEV	**"मेरा विवेक पूर्णतः शुद्ध है"**
NJB	**"पूर्ण रूप से शुद्ध विवेक के साथ"**

कुरिन्थियों की पत्री में पौलुस अक्सर ''विवेक'' शब्द का प्रयोग करता है (देखें, 1 कुरि. 4:4; 8:7,10,12; 10:25,27-29; 2 कुरि. 1:12; 4:2; 5:11)। यह आन्तरिक नैतिक भावना की ओर संकेत करता है कि उचित क्या है और अनुचित क्या है (प्रेरि. 23:1)। हमारे विवेक पर हमारी पुरानी जिन्दगी का, हमारे गलत चुनावों का अथवा परमेश्वर के आत्मा का प्रभाव पड़ सकता है। विवेक परिशुद्ध या बेऐब मार्गदर्शक नहीं होता, परन्तु यह व्यक्तिगत विश्वास की सीमाएँ अवश्य निर्धारित करता है। अतः अपने विवेक की उपेक्षा करना, चाहे वह गलत अथवा दुर्बल ही क्यों न हो, एक विश्वास संबंधी भारी समस्या है।

एक विश्वासी के विवेक को परमेश्वर के वचन और परमेश्वर के आत्मा के द्वारा प्रशिक्षित होने की आवश्यकता है (देखें, 1 तीमु. 3:9)। परमेश्वर विश्वासियों का न्याय करेगा (चाहे वह दुर्बल हो अथवा बलवन्त हो, देखें, रोमि. 14:1-15:13) और यह न्याय उस ज्ञान के आधार पर होगा जो उनके पास है, परन्तु हम सबको बाइबल का और पवित्र आत्मा का आदर करना होगा ताकि हमें और ज्ञान प्राप्त हो और हम प्रभु यीशु मसीह की पहचान में बढ़ते जाएँ।

■ **''आज तक परमेश्वर के लिये''** पौलुस 2 कुरि. 1:12 तथा 2 तीमु. 1:3 में भी ऐसा ही दावा करता है। वह इस बात को भी मानता है कि उसने भी लालच किया (देखें, रोमि. 7:23; प्रेरि. 23:7)। रोमियों 1-8 अध्याय में उसकी धर्म-शिक्षा का आधार है कि प्रत्येक मनुष्य ने व्यवस्था का और विवेक का उल्लंघन किया है (देखें, रोमि. 3:9-23; 4:15; 5:20)।

23:2 ''हनन्याह महायाजक'' इब्रानी भाषा में उसका नाम हनन्याह है। यह वह हन्ना महायाजक नहीं है जिसका उल्लेख लूका 3:2; यूहन्ना 18:13; प्रेरि. 4:6 में है, परन्तु यह बहुत बाद में हुआ यह नबेदायुस अथवा नदेबाकुस का पुत्र था (Ananias, son of Nebedaeus or Nedebacus) जिसकी नियुक्ति हेरोदेस काल्सिस द्वारा हुई थी और जिसने इस्वी 48 से 59 तक राज्य किया था योसेपस, एन्टीक्वीटि.20.9.2। (Josephus, *Antiq*. 20.9.2) पलीस्तीन की घटनाओं और व्यक्तियों की प्राचीन समकालिन जानकारियाँ हम तक पहुँचाने का हमारा एकमात्र स्रोत योसेपस है।

इस महायाजक के बारे में योसेपस बहुत सी बातें हमें बताता है:

1. वह कब महायाजक बना था, एन्टीक्वीटि. 20.5.2; वार्स, 2:12,6 (*Antiq*. 20.5.2; *Wars*, 2.12.6.)
2. कब वह और उसका पुत्र (अनायुस) बन्दी बनाकर रोम भेजे गए, एन्टीक्वीटि. 20.6.2 (*Antiq.* 20.6.2)
3. कब वह अपने भाई के साथ विद्रोहियों के हाथों मार डाला गया, वार्स 2.17.9 (*Wars* 2.17.9)

फिलिस्तीन में यहूदी घटनाओं और व्यक्तियों के लिए जोसेफस Josephus अक्सर हमारा एकमात्र प्राचीन समकालीन स्रोत है।

■ **''उसके मुँह पर थप्पड़ मारने की आज्ञा दी''** यह निन्दा करने का चिन्ह था (देखें, यूहन्ना 18:22)।

23:3 ''परमेश्वर तुझे मारेगा'' यह योसेपस की पुस्तक वार्स, 2.17.9 में बहुत विस्तार से लेखबद्ध है।

■ ''हे चूना फिरी हुई भीत'' पौलुस क्या कहना चाहता है, यह बताना कठिन है:

1. यहूदी लोग यह उपमा कपटी व पाखण्डी मनुष्य के लिये प्रयुक्त करते थे (देखें, मत्ती 23:27)।
2. यह यहेज. 13:10-15 की ओर संकेत हो सकता है।

■ **''व्यवस्था के विरुद्ध''** यह संभवतः लैव्य. 19:15 और यूहन्ना 7:51 की ओर संकेत है।

23:5 ''मैं नहीं जानता था कि यह महायाजक है'' पौलुस नहीं जानता था, इसके विषय में अनेक विचारधाराएँ पाई जाती हैं:

1. उसकी दृष्टि, कमजोर थी, इसलिए उसे पहचान न सका।
2. पौलुस कई वर्ष तक यरूशलेम से बाहर रहा था, इसलिए महायाजकों की जानकारी नहीं रखता था।
3. वह महायाजक को नहीं पहचान सका क्योंकि उसने औपचारिक वस्त्र नहीं पहने थे।

4. वह नहीं जानता था कि बोल कौन रहा है।
5. उसका व्यवहार पौलुस के साथ ठीक नहीं था। (देखें आक्षेप वाक्य sarcasm)

▪ **"क्योंकि लिखा है"** निर्गमन 22:28 का उद्धरण देकर पौलुस दर्शाता है कि वह व्यवस्था का आदर करता है और जानता है कि प्रधानों को बुरा नहीं कहना चाहिए

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 23:6-10
[6]तब पौलुस ने यह जानकर कि एक दल सदूकियों और दूसरा फरीसियों का है, सभा में पुकारकर कहा, हे भाइयो, मैं फरीसी और फरीसियों के वंश का हूं, मरे हुओं की आशा और पुनरुत्थान के विषय में मेरा मुकद्दमा हो रहा है। [7]जब उसने यह बात कही तो फरीसियों और सदूकियों में झगड़ा होने लगा; और सभा में फूट पड़ गई। [8]क्योंकि सदूकी तो यह कहते हैं कि न पुनरुत्थान है, न स्वर्गदूत और न आत्मा है; परन्तु फरीसी दोनों मानते हैं। [9]तब बड़ा हल्ला मचा और कितने शास्त्री जो फरीसियों के दल के थे, उठ खड़े हुए और यह कहकर झगड़ने लगे कि हम इस मनुष्य में कुछ बुराई नहीं पाते; और यदि कोई आत्मा या स्वर्गदूत उससे बोला है तो फिर क्या? [10]जब बहुत झगड़ा हुआ तो पलटन के सरदार ने इस डर से कि वे पौलुस के टुकड़े-टुकड़े न कर डालें पलटन को आज्ञा दी कि उतरकर उसको उनके बीच में से जबरदस्ती निकालें, और गढ़ में ले जाएं।

23:6 "समझना" संभवतः पौलुस समझ गया था कि यह सदूकी महायाजक उसे न्याय नहीं दिला सकेगा और उसकी बात पर ध्यान देगा।

▪ **"सदूकी"** प्रेरि. 4:1 में विशेष शीर्षक देखें।

▪ **"फरीसी"** पौलुस एक फरीसी रह चुका था (देखें, प्रेरि. 26:5; फिलि. 3:5-6)। वह फरीसी वंश का था। प्रेरि. 5:34 में विशेष शीर्षक देखें।

▪ **"मरे हुओं की आशा और पुनरुत्थान के विषय में मेरा मुकदमा हो रहा है"** पौलुस ने एक ऐसा धर्म वैज्ञानिक विषय उठाया जिसके बारे में सदूकी और फरीसी आपस में मतभेद रखते थे। सदूकी लोग पुनरुत्थान और मृत्यु के पश्चात् जीवन में विश्वास नहीं रखते थे, जबकि फरीसी लोग इन दोनों बातों पर विश्वास करते थे (देखें, अयूब 14:14; 19:23-27; यशा. 25:8; 26:19; दानिय्येल 12:2)। इस प्रकार महासभा में परस्पर विरोधी दो दल बन गये (देखें, प्रेरि. 23:7-10)।

23:7 "सभा में फूट पड़ गई" इस शब्द का जो यहाँ प्रयुक्त हुआ, मूल अर्थ है "फट जाना"। (देखें, लूका 5:36; 23:45)। फिर इसका प्रयोग विभाजन के लिए प्रयुक्त होने लगा (देखें, 14:4; 23:7)। इन दोनों दलों के बीच विभाजन अब तक सदैव छिपा हुआ रहा था। पौलुस ने दोनों के बीच में आग भड़का दी।

23:8 "न स्वर्गदूत और न आत्मा है" पद 8 किसी स्रोत से लिया गया लूका का अपना कथन व टिप्पणी है। क्या इस वाक्यांश का अर्थ यह है कि आत्मा के संसार में दो श्रेणियाँ पाई जाती हैं? या एक ही श्रेणी पाई जाती है? बाइबल के आधार पर इन दोनों ही का आरम्भ अस्पष्ट है, परन्तु इब्रा. 1:5,13 और 14 से ज्ञात होता है कि सब एक ही हैं।

जिस बात का सदूकी इन्कार करते थे वह भली और बुरी आत्माओं का द्वैतवाद था (पारसी धर्म का द्वैतवाद)। फरीसियों ने पुराने नियम की विचारधारा को पारसी धर्म के द्वैतवाद के साथ मिलाकर विस्तृत कर दिया था और स्वर्गदूतों और शैतानी आत्माओं की परम्परा विकसित कर ली थी (प्रत्येक के सात-सात अगुवे थे)। स्वर्गदूतों के संबंध में जो विचार धाराएँ प्रथम शताब्दी में यहूदी लोग रखा करते थे, उनके विषय में एल्फ्रेड एडरशीम अपनी

पुस्तक द लाइफ एंड टाइम्स ऑफ जीसस द मसीहा, परिशिष्ट XIII. (Alfred Edersheim, *The Life and Times of Jesus the Messiah*, Appendix XIII).

23:9
NASB **"वहाँ बड़ा हल्ला मच गया"**
NKJV **"वहाँ बड़ा शोरगुल उठने लगा"**
NRSV **"तब भारी होहल्ला उठा"**
NJB **"चिल्लाहट तेज होने लगी"**

यही वाक्यांश सप्तूजैन्त की निर्गमन की पुस्तक 12:30 में भी पाया जाता है (साथ ही देखें, निर्गमन 3:7; 11:6; एस्तेर 4:3; यशा. 58:4; 65:19)। शब्द "चिल्लाना" ;ज्ञतंनहमद्ध इन स्थलों पर भी पाया जाता है, मत्ती 25:6; लूका 1:42; इफि. 4:31; इब्रा. 5:7; प्रका. 21:4; परन्तु सन्दर्भ पढ़ने से ही ऊंचे शब्द से चिल्लाने का अर्थ समझा जा सकता है कि अर्थ नकारात्मक है या सकारात्मक।

यहाँ पर एक और वाक्यांश आया है "फरीसियों और सदूकियों में झगड़ा होने लगा।" यह शब्द भी सप्तूजैन्त में आया है दानिय्येल 10:20 में। पौलुस की बात के द्वारा सभा में बड़ा हल्ला मच गया, और आपस में झगड़ा होने लगा; पौलुस वास्तव में चाहता भी यही था।

■ **"और कुछ शास्त्री...उठ खड़े हुए"** ये लोग मौखिक व्यवस्था (तालमूद) तथा लिखित व्यवस्था (पुराना नियम) में बड़े निपुण हुआ करते थे। ये लोग अधिकार फरीसी होते थे।

विशेष शीर्षक: शास्त्री

यह शीर्षक एक इब्रानी संज्ञा शब्द से बना है (BDB706, KB767) जिसका अर्थ है "उपदेश" या "लिखित दस्तावेज/राजाज्ञा (KB766)। यूनानी अनुवाद (LXX) अक्सर इसका अर्थ लिखित संदेश मानता है। इसका निम्नलिखित अर्थ हो सकता है :

1. सिखाने वाला (नहे. 8) (Educator)
2. सरकारी हाकिम (2 रा. 22:3-13) (Government Official)
3. लेखक/सचिव (1 इति. 24:6; 2 इति. 34:13; यिर्म. 36:22) (Recorder/Secretary)
4. सेनापति (न्या. 5:14) (Military Muster Officer)
5. धार्मिक नेता (जैसे एज्रा 7:6; नहे. 12:12-13) (Religious Leader)

नए नियम में शास्त्री अक्सर फरीसियों के साथ दिखाई देते हैं (देखें, विशेष विषय : "फरीसी") ये ऐसे लोग थे जो पुराने नियम और मौखिक परम्पराओं (अर्थात तालमूद) में बड़े निपुण हुआ करते थे। वे दिन प्रतिदिन के जीवन में यहूदी परम्पराओं को लागू करने और उनकी व्याख्या करने में सहायता किया करते थे (देखें सीरख 39:6)। शास्त्री अक्सर व्यवस्थापक कहलाते थे (देखें, मर. 12:28; लूका 7:30; 10:25; 11:45; 14:3)। तौ भी उनकी धार्मिकता, (अर्थात यहूदी रीति-विधियों का पालन किया जाना) निरर्थक थी (देखें, मत्ती 5:20; रोमि. 3:19-20; 9:1-5, 30-32; 10:1-6; कुलु. 2:20-22)।

सहदर्शी सुसमाचारों में उन्हें अक्सर यीशु का विरोधी चित्रित किया गया है, और वे अक्सर यरूशलेम से प्रतिनिधि बनकर यीशु के पास आए (मर. 3:22; 7:1) परंतु कुछ शास्त्रियों ने अच्छा प्रत्युत्तर भी दिया (मत्ती 8:19) (यूहन्ना ने कभी भी उनका उल्लेख नहीं किया, यूहन्ना 8:3 पुराने हस्तलेखों में नहीं है)।

1. चुंगी लेने वालों और पापियों के साथ खाने पीने के संबंध में वाद-विवाद (देखें, मर. 2:16; मत्ती 9:9-13)
2. दुष्टात्माएं निकालने के अधिकार के स्रोत के विषय में वाद-विवाद, मर. 3:22
3. यीशु द्वारा पाप क्षमा करने के विषय में वाद-विवाद, मत्ती 9:3; लूका 5:21
4. विशेष चिन्ह की माँग, मत्ती 12:38
5. हाथ धोने के विषय में वाद-विवाद, मत्ती 15:1-2; मर. 7:1-5

6. यरूशलेम में विजय प्रवेश के समय भीड़ द्वारा स्तुति करने पर वाद-विवाद, मत्ती 21:15
7. यीशु द्वारा उनकी भर्त्सना (जो मुख्य मुख्य स्थान चाहते थे), मरकुस 12:38-40
8. यीशु ने उन पर मूसा के आसन पे पाखंडी और अंधे मार्गदर्शक होने का आरोप लगाया मत्ती 23:1-36। पवित्रशास्त्र की बातों में निपुण होने के कारण उन्हें प्रथम मनुष्य होना चाहिए था कि यीशु का आदर करते व उसे गले लगाते, परन्तु उनकी परम्पराओं ने उन्हें अन्धा कर दिया था (देखें यशा. 29:13; 6:9-10)। "जब उजियाला अन्धकार बन जाए, तो वह अन्धकार कैसा बड़ा होगा" (मत्ती 6:23)

Copyright © 2014 Bible Lessons International

■ **"यह मनुष्य"** संज्ञा शब्द "इस मनुष्य में" प्रयोग करने से यह वाक्यांश नकारात्मक नहीं है।

■ **"मान लो"** ये शास्त्री समझ रहे थे कि पौलुस ने आत्मिक संसार की कोई बात देखी है, परन्तु वे निश्चित नहीं थे। वे पौलुस का बचाव कर रहे थे जो यह दर्शाता है कि वे सदूकियों से कितनी घृणा करते थे और अपने दल का पक्ष करते थे क्योंकि पौलुस भी फरीसी था।

यह वाक्यांश अपूर्ण है इसलिए सर्वमान्य पाठ में यूनानी लिपि एच, एल तथा पी जोड़कर इस प्रकार लिखा है, "हमें परमेश्वर से नहीं लड़ना चाहिए," जो प्रेरि. 5:39 में लिया गया है।

23:10 "पलटन के सरदार ने आज्ञा दी कि उसे गढ़ में ले जाएँ" रोमी सरकार ने यरूशलेम में दो बार पौलुस की रक्षा की। इसमें सन्देह नहीं कि पौलुस सरकार को परमेश्वर के सेवक मानता था (देखें, रोमि. 13)। इसको 2 थिस्स. 2:6-7 के "रोकने वाले" से जोड़ा जा सकता है।

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 23:11
11उसी रात प्रभु ने उसके पास खड़े होकर कहा; हे पौलुस, ढाढ़स बाँध; क्योंकि जैसी तूने यरूशलेम में मेरी गवाही दी, वैसी ही तुझे रोम में भी गवाही देनी होगी।

23:11 "प्रभु उसके पास खड़े हुए " यहाँ पर पौलुस के एक और व्यक्तिगत दर्शन का उल्लेख पाया जाता है कि उसे उत्साह मिले (देखें, प्रेरि. 18:9-10; 22:17-19; 27:23-24)। पौलुस भी निरूत्साहित हो जाया करता था।

■ **"ढाढ़स बाँध"** यह आदेशात्मक कथन है। लूका के लेखों में केवल यहीं पर इस शब्द का प्रयोग हुआ है। पौलुस ने लूका को अवश्य इसके बारे में बताया होगा। यीशु ने कई बार इस शब्द का प्रयोग किया है (देखें, मत्ती 9:2,22; 14:27; यूहन्ना 16:33)।

■ **"तुझे रोम में भी गवाही देनी होगी"** यह परमेश्वर ही की योजना थी कि पौलुस बन्दी बनाया जाए ताकि वह रोम में कैसर के सामने उपस्थित हो सके। रोम में सुसमाचार सुनाया जाना था (देखें, प्रेरि. 19:21; 22:21)। प्रेरि. 1:16 में टिप्पणी देखें, "गवाही देनी होगी"।

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 23:12-15
12जब दिन हुआ तो यहूदियों ने षड्यन्त्र रचा और शपथ खाई कि जब तक हम पौलुस को मार न डालें, तब तक खाएं या पीएं तो हम पर धिक्कार। 13जिन्होंने आपस में यह शपथ खाई थी, वे चालीस जनों से अधिक थे। 14उन्होंने महायाजकों और पुरनियों के पास जाकर कहा, हमने यह ठान लिया है कि जब तक हम पौलुस को मार न डालें, तब तक यदि कुछ चखें भी, तो हम पर धिक्कार है। 15इसलिये अब महासभा समेत पलटन के सरदार को समझाओ कि उसे तुम्हारे पास ले आए, मानो कि तुम उसके विषय में और भी ठीक जांच करना चाहते हो, और हम उसके पहुंचने से पहिले ही उसे मार डालने के लिये तैयार रहेंगे।

23:12-15 यह पाठांश पौलुस को मार डालने के कुछ यहूदियों के षड्यन्त्र के बारे में हमें बताता है। यह हत्या की उनकी एक और पूर्व-नियोजित योजना थी (देखें, प्रेरि. 23:21)। ऐसी ही योजना यहूदियों ने यीशु के लिए भी बनाई थी।

23:13 " चालीस से अधिक" चालीस एक यहूदी मुहावरा है जो लम्बे समय को दर्शाता है, परन्तु यहाँ लोगों के लिए यह शब्द प्रयुक्त हुआ, इसलिए संभवतः वे चालीस से अधिक ही लोग होंगे। प्रेरि. 1:3 में देखें विशेष शीर्षक: "पवित्र शास्त्र में गिनतियाँ"।

23:14 "प्रधान याजकों और पुरनियों" यह संक्षिप्त वाक्यांश है जो सन्हेद्रिन को दर्शाता है। प्रेरि. 4:5 में विशेष शीर्षक देखें।

NASB	**"हमने गम्भीर शपथ खाई है"**
NKJV	**"हमने बड़ी गम्भीर शपथ खाकर स्वयं को वचनबद्ध किया है"**
NRSV	**"हमने संकल्प के साथ शपथ खाई है"**
TEV	**"हमने गम्भीर शपथ खाई है"**
NJB	**"हमने गम्भीर शपथ खाई है"**

उपरोक्त अंग्रेजी अनुवादों द्वारा यह दर्शाने का प्रयत्न किया गया है कि उन्होंने ठान लिया है, और यदि उसे पूरा न करें तो शापित हों। परन्तु ये शपथ खाने वाले लोग पौलुस को मार नहीं पाए। हमें नहीं मालूम कि उन्होंने अपनी शपथ से अनुसार कुछ खाया अथवा भूखे मर गए। स्पष्ट रूप से मौखिक व्यवस्था में इस प्रकार की गम्भीर शपथ से बचने के उपाय भी मौजूद थे।

विशेष शीर्षक देखें: "शाप" (अनाथेमा) *(ANATHEMA)*

I. पुराना नियम :

"शाप" (curse) के लिए इब्रानी भाषा में अनेक शब्द हैं। इनमें एक शब्द है "हैरम" (*herem*) (BDB355 I, KB353) जो उस वस्तु के लिए प्रयुक्त किया जाता है जो परमेश्वर को दी जाती है में इसे अनाथेमा अनुवाद किया गया है, BDB 356,, लैव्य. 27: 21,28-29; गिनती 18:14; व्यवस्था। 7:26; 13:17; यहो. 6:17-18; 7:1,11,12,13,15) एक ही मूल (BDB 355) का अर्थ है "पूरी तरह से नष्ट करना" (यिर्म. 25:9; 50:21,26; 51:3; निर्गमन 22:20; लेव 27:28,29; गिनती 21:2,3; व्यवस्था 2:34; 3:6; 7:2; 13:15; 20:17)

यह वह शब्द था जो "धर्म युद्ध" की अवधारणा में प्रयुक्त होता था। यहोशू की विजय में इस्राएल लिए लड़ने वाले ईश्वर अब मूर्तिपूजक यहूदा और यरूशलेम के खिलाफ लड़ता है (यानी, उसी स्थान पर जहां उसने अपना नाम रखा था)।

II. नया नियम :

नए नियम में अनाथेमा और इससे संबंधित अन्य शब्द-रूप विभिन्न अर्थों में प्रयुक्त किए गए हैं :

A. परमेश्वर को भेंट चढ़ाने के रूप में, (देखें, लूका 21:5)
B. मरने के शपथ लेने के रूप में (देखें, प्रेरि. 23:14)
C. धिक्कारने और कसम खाने के रूप में, (मरकुस 14:71)
D. यीशु को श्रापित कहना (1 कुरि. 12:3)
E. किसी को परमेश्वर के शाप के अधीन करना (रोमि. 9:3; 1 कुरि. 16:22; गला. 1:8-9)

उपरोक्त बातों में नंबर D बड़ी विवादास्पद बात है। यहाँ पर मैं 1 कुरि. 12:3 के विषय में अपनी टिप्पणियों से कुछ विचार प्रस्तुत करता हूँ :

"यीशु श्रापित है" यह एक ऐसा वक्तव्य है जो चोट पहुंचाता है। परम्परावादी यहूदियों को छोड़कर, ऐसा कोई भी जन जो परमेश्वर के पक्ष में बोलने का दावा करता है क्यों इस तरह की बात कह सकता है? स्वयं यह यूनानी शब्द अनाथेमा (anathema) अथवा इब्रानी शब्द हेरेम (herem) पुराने नियम की पृष्ठभूमि से हैं, जो "धर्म युद्ध" (Holy War) से संबंध रखते हैं, जिसके अंतर्गत संपूर्ण नगर परमेश्वर को समर्पित कर दिया जाता था और इस प्रकार वह पवित्र ठहरता था। इसका अर्थ यह हुआ कि प्रत्येक जीवधारी जो मनुष्य हो या पशु जो उस नगर में रहता है, उसे मरना ही है (देखें यहोशू 6:17; 7:12)। कुरिन्थ में यह शब्द किस प्रकार प्रयुक्त होता था, इस विषय में कुछ विचारधाराएँ इस प्रकार हैं :

1. इसमें आराधनालय की शपथ से संबंधित यहूदी सोच थी (प्रेरि. 26:11 अर्थात् बाद में आराधनालय से मसीहीयों को हटाने के लिए रब्बियों के शाप देने वाले सूत्र प्रयुक्त किए जाते थे) आराधनालय का सदस्य बने रहने के लिए लोगों को यीशु नासरी का तिरस्कार करना और उसे श्रापित कहना पड़ता था।
2. इसमें सम्राट पूजा की रोमन सोच थी, जहाँ केवल कैसर के "प्रभु" कहा जाता था।
3. इसमें मूर्तिपूजक आराधना की सोच थी, जहां देवताओं के नाम से लोगों को श्रापित किया जाता था। इसे बाद में, "यीशु श्रापित करे" अनुवादित किया जा सकता था, (देखें 1 --------------कुरि. 16:22)।
4. किसी ने इस वाक्यांश को लेकर, इस अवधारणा से जोड़ दिया कि यीशु ने हमारे बदले में पुराने नियम के श्राप सहन किये (व्य. वि. 21:23; गला. 3:13)।
5. हाल ही के कुरिन्थ की पत्री के एक अध्ययन ने श्राप अभिलेख का उल्लेख किया है जो कुरिन्थ नगर के एक प्राचीन दुर्ग में पाया गया था (देखें, ब्रूस विन्टर की पुस्तक "आफ्टर पॉल लेफ्ट कुरन्थ" (*After Paul Left Corinth*) में फुटनोट #1, पेज 164)। बाइबल के विद्वानों का मानना है कि जोड़ने वाली क्रिया वाक्यांश यीशु श्रापित है (Jesus is accursed) में दी जानी चाहिए, परंतु इस पुरातत्व विज्ञान के प्रमाण में क्रिया नहीं है (जिस प्रकार से सप्तूजेन्त (LXX) व्यव. वि. 22:15-20 में नहीं है), और जैसा 1 कुरि. 12:3 में है। इसके अतिरिक्त और भी पुरातत्व विज्ञान के प्रमाण है कि प्रथम शताब्दी के रोमन कुरिन्थ मसीही लोग दफन क्रिया के दौरान श्राप फार्मूला का उपयोग करते थे (अर्थात बाइज़नटईन काल में, जो मसीही कब्रों पर पाए गए थे (जे.एच. कैन्ट, इनस्क्रिप्शन्स (The Inscription - 1926-50) प्रिन्सटन (Princeton) : अमेरिकन स्कूल ऑफ क्लासिकल स्टडीज (American School of Classical Studies, 1966, Vol. 8:3, No. 644)।

कुरिन्थ की कलीसिया के कुछ लोग अन्य सदस्यों के विरुद्ध मूर्तिपूजकों के शापों को लेकर यीशु के नाम से दिया करते थे। यह एक गलत और घृणा पूर्ण तरीका था। इसके अलावा कलीसिया में एक और तनाव था, पौलुस से चाहता था कि वे कलीसिया का निर्माण करें, उसकी आत्मिक उन्नति करें परन्तु वे कलीसिया के कुछ भाग को शापित करना चाहते थे।

Copyright © 2014 Bible Lessons International

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 23:16-25

16और पौलुस के भांजे ने सुना कि वे उसकी घात में हैं तो गढ़ में जाकर पौलुस को सन्देश दिया।

[17]पौलुस ने सूबेदारों में से एक को अपने पास बुलाकर कहा; इस जवान को पलटन के सरदार के पास ले जाओ, यह उससे कुछ कहना चाहता है। [18]सो उसने उसको पलटन के सरदार के पास ले जाकर कहा; बंदी पौलुस ने मुझे बुलाकर विनती की कि यह जवान पलटन के सरदार से कुछ कहना चाहता है; उसे उसके पास ले जा। [19]पलटन के सरदार ने उसका हाथ पकड़कर, और अलग ले जाकर पूछा; मुझसे क्या कहना चाहता है? [20]उसने कहा; यहूदियों ने षड्यन्त्र किया है कि तुझसे विनती करें कि कल पौलुस को महासभा में लाए, मानो वे और ठीक से उसकी जांच करना चाहते हैं। [21]परन्तु उनकी मत मानना, क्योंकि उनमें से चालीस के ऊपर मनुष्य उसकी घात में हैं, जिन्होंने यह ठान लिया है, कि जब तक वे पौलुस को मार न डालें, तब तक न खाएंगे और न पीएंगे और अब वे तैयार हैं और तेरे वचन की प्रतीक्षा कर रहे हैं। [22]तब पलटन के सरदार ने जवान को यह आज्ञा देकर विदा किया कि किसी से न कहना कि तूने मुझको ये बातें बताई हैं। [23]और उसने दो सूबेदारों को बुलाकर कहा; दो सौ सिपाही, सत्तर सवार, और दो सौ भालैत, पहर रात बीते कैसरिया को जाने के लिये तैयार कर रखो। [24]और पौलुस की सवारी के लिये घोड़े तैयार रखो कि उसे फेलिक्स हाकिम के पास कुशल से पहुंचा दें। [25]उसने इस प्रकार की चिट्ठी भी लिखी;

23:16 ''पौलुस का भांजा'' पौलुस के परिवार के विषय में अधिक जानकारी उपलब्ध नहीं है। उसके भांजे को षड्यन्त्र का पता कैसे चला? यह भी अज्ञात है। संभवतः वह भी फरीसी था।

23:21 इस आक्रमण में रोमी पहरेदारों की हत्या भी शामिल हो सकती है।

23:23 जिस सैनिक दल को पौलुस के साथ जाना था उसमें (1) 200 सैनिक और 70 घुड़सवार तथा 200 भाला चलाने वाले सैनिक अथवा (2) 200 भालैत तथा 70 घुड़सवार सैनिक शामिल थे। पश्चिमी यूनानी लीपियों में इसका विस्तृत विवरण पाया जाता है (देखें, एन के जे वी) (NKJV)

- **''तीसरे पहर''** यह रोमी समय है। वे शाम 6 बजे से रात्री गिनना आरम्भ कर देते थे। इस प्रकार यह रात्री 9 बजे का समय होगा।

- **''कैसरिया'',** पलीस्तीन में यह रोमी सेना का मुख्यालय था।

NASB, NKJV, NRSV, TEV	**''भालैत''**
NJB	**''सहायक सैनिक''**
REB	**''हल्के शस्त्रधारी सैनिक''**
NASB (Footnote)	**''अतिरिक्त घुड़सवार''**
NEB	**''धनुर्धर''**

शब्द डैक्सीओलेबौस (*dexiolabos*) का उपयुक्त अर्थ निश्चित नहीं है। इसका शाब्दिक अर्थ है ''वह सैनिक जो शस्त्र लेकर सही दिशा में तैनात है।'' (*dexios*) यह इन बातों की ओर संकेत करता हैः-

1. हलके शस्त्र लिए हुए सैनिक (जैसे तीर कमान अथवा भाला)
2. जो कैदी को लेकर सही जगह पहुँचा सकता है।
3. वह जो दूसरा घोड़ा भी संभालता है।
4. पीछे पीछे चलने वाला सैनिक।

ये अनेक अर्थ दर्शाते हैं कि आधुनिक पाठक सही अर्थ नहीं जान पाता है।

23:24 ''फेलिक्स '' रोमी इतिहासकार टैसीटस अंटोनीथुस फेलिक्स को दुष्ट और विलास-भोगी मनुष्य कहता है *(Histories 5:9, Annals 12:54)* उसने अपने भाई पलास के द्वारा उच्च पद प्राप्त किया था (दोनों ही स्वतन्त्र

किए हुए गुलाम थे), और वह सम्राट क्लौदीपुस का परम मित्र था। अपने पलीस्तीन में राज्यपाल के रूप में ईस्वी सन् 52 से 59 तक शासन किया और वह ग्यारहवाँ राज्यपाल था।

23:25 ''इस प्रकार'' प्रेरि. 7:43 में विशेष शीर्षक देखें। (*tupos*)

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 23:26-30

[26]महामहिम फेलिक्स हाकिम को क्लौदियुस लूसियास का नमस्कार। [27]इस मनुष्य को यहूदियों ने पकड़कर मार डालना चाहा, परन्तु जब मैंने जाना कि यह रोमी है, तो पलटन लेकर छुड़ा लाया। [28]और मैं जानना चाहता था कि वे उस पर किस कारण दोष लगाते हैं, इसलिये उसे उनकी महासभा में ले गया। [29]तब मैंने जान लिया, कि वे अपनी व्यवस्था के विवादों के विषय में उस पर दोष लगाते हैं, परन्तु मार डाले जाने या बान्धे जाने के योग्य उसमें कोई दोष नहीं। [30]और जब मुझे बताया गया कि वे इस मनुष्य की घात में लगे हैं तो मैंने तुरन्त उसको तेरे पास भेज दिया; और मुद्दइयों को भी आज्ञा दी, कि तेरे सामने उस पर नालिश करें।

23:26-30 इन पदों में रोमी अधिकारी का आवश्यक पत्र पाया जाता है जिसमें पौलुस के विषय में स्पष्टीकरण दिया गया है (देखें, प्रेरि. 25:12 क्रमशः)। इस पत्र में पूरा घटना क्रम बताया गया है, परन्तु इस प्रकार लिखा गया है मानों लूसीयास एक भला मनुष्य है।

23:26 इस पद में अधिकारियों के नाम दिए गये हैं।

23:29 यह पद लूका की लेखन-शैली के अनुसार उपयुक्त है क्योंकि वह प्रायः यही दर्शाता है कि जब भी मसीही धर्म पर और उसके अगुवों पर दोष लगाया जाता है तो वे जाँच पड़ताल के बाद निर्दोष पाए जाते हैं। रोमी साम्राज्य के लिए ''यह पन्थ'' भय का कारण नहीं है।

NASB (नवीनतम) पाठ: पाठांश: प्रेरितों के काम 23:31-35

[31]अतः जैसी सिपाहियों को आज्ञा दी गई थी वैसे ही पौलुस को लेकर रातों-रात अन्तिपत्रिस में आए। [32]दूसरे दिन वे सवारों को उसके साथ जाने के लिये छोड़कर आप गढ़ को लौटे। [33]उन्होंने कैसरिया में पहुंचकर हाकिम को चिट्ठी दीः और पौलुस को भी उसके सामने खड़ा किया। [34]उसने चिट्ठी पढ़कर पूछा, यह किस देश का है? [35]और जब जान लिया कि किलिकिया का है; तो उससे कहा; जब तेरे मुद्दई भी आएंगे, तो मैं तेरा मुकद्दमा करूंगा: और उसने उसे हेरोदेस के किले में पहरे में रखने की आज्ञा दी।

23:31 ''रातों-रात अन्तिपत्रिस में आए'' यह नगर हेरोदस महान द्वारा बनवाया गया था और उसके पिता अंतिपत्र-प्प् के नाम पर इसका नाम रखा। यह संभवतः 30-40 मील की लम्बी पैदल यात्रा थी। इस नगर के बारे में यह बताना कठिन है कि यह कहाँ स्थित था। सैनिक तुरन्त लौट गए (प्रेरि. 23:32) इसका कारण संभवतः इस प्रकार रहा होगाः -

1. यह मुख्य्र रूप से अन्यजातियों का क्षेत्र था।
2. खुला और समतल क्षेत्र था, इस कारण अचानक हमले का अंदेशा था।

23:33 ''हाकिम'' मूल रूप से यह राज्यपाल है। लूका स्थानीय और रोमी अधिकारियों के पद बिल्कुल सही लिखता है।

23:34 '' पूछा यह किस प्रान्त का है'' यह प्रश्न अधिकार क्षेत्र जानने के लिए पूछा होगा; चूंकि पौलुस शाही प्रान्त का था तो फेलिक्स उसके मुकदमें की सुनवाई कर सकता था। रोमी साम्राज्य में न्याय के तीन अधिकार क्षेत्र थे:

1. सम्राट द्वारा (कैसर)

2. सिनेट द्वारा
3. स्थानीय (जैसे हेरोदेस द्वारा)

23:35 "तेरे मुद्दई भी आएँगे" ये मुद्दई एशिया के यहूदी हो सकते हैं जिन्होंने पौलुस पर मंदिर को अशुद्ध करने का आरोप लगाया था। यदि वे नहीं आते तो मुकदमा खारिज हो सकता था, परन्तु जैसा अक्सर होता है, स्थानीय राजनीति न्याय पर प्रबल होती है।

▪ **"हेरोदेस के किले में रखना"** जब भी पौलुस बन्दी बना रोमी अधिकारी उस पर कृपालु रहे (देखें, प्रेरि. 24:23)। पौलुस हेरोदेस द्वारा बनाए गए महल में रखा गया, जो पहले राजा का निवास स्थान था, परन्तु अब रोमी सेना का मुख्यालय बन गया था।

विचार विमर्श के लिये प्रश्न

यह अध्ययन में मार्गदर्शन करने की टीका है, इसका अर्थ है कि आप बाइबल की अपनी व्याख्या करने के स्वयं ही जिम्मेदार हैं। हम में से प्रत्येक को उसी ज्ञान के अनुसार चलना चाहिए जो हमारे पास है। व्याख्या करने के कार्य में आप आपकी बाइबल और पवित्र आत्मा केन्द्रिय स्थान रखते हैं। यह कार्य व्याख्याकार पर न छोड़ दें।

निम्नलिखित प्रश्न अपनी सहायता के लिए दिए गए हैं ताकि आप पुस्तक के गम्भीर विषयों पर पुनर्विचार कर सकें। वे आपके विचारों को आन्दोलित करने के लिए हैं, इनके अलावा और भी प्रश्न हो सकते हैं:

1. पौलुस के बचाव की बातों की परस्पर तुलना कीजिए और एक समान बातों की सूची बनाएँ।
2. क्या पौलुस स्वयं को एक विश्वासयोग्य यहूदी मानता था?
3. प्रेरितों के काम पुस्तक में, क्या हम पौलुस के परिवार की जानकारी पाते हैं?

Copyright © 2013 Bible Lesson International

प्रेरितों के काम-24
बाइबल के विभिन्न आधुनिक अनुवादों में पैराग्राफ-विभाजन

UBS[4]	NKJV	NRSV	TEV	NJB
पौलुस के विरुद्ध मुकदमा	उपद्रवी होने का आरोप	फेलिक्स के सामने पौलुस	पौलुस के विरुद्ध मुकदमा	फेलिक्स के सामने मुकदमा
24:1-9	24:1-9	24:1-2a	24:1-2a	24:1-9
		24:2b-8	24:2b-9	
		24:9		
फेलिक्स के सामने पौलुस द्वारा अपना बचाव	फेलिक्स के सामने पौलुस द्वारा बचाव करना		फेलिक्स के सामने पौलुस द्वारा बचाव करना	
24:10-21	24:10-21	24:10a	24:10a	24:10a
				रोमी गवर्नर के सामने पौलुस का भाषण
		24:10b-21	24:10b-16	24:10b-13
				24:14-16
			24:17-21	24:17-21
	फेलिक्स द्वारा विलम्ब			कैसरिया में पौलुस का बन्दी बनाया जाना
24:22-23	24:22-27	24:22-23	24:22-23	24:22-23
पौलुस हिरासत में			पौलुस फेलिक्स और द्रुसिल्ला के सामने	
24:24-26		24:24-26	24:24-26	24:24-26
24:27		24:27	24:27	24:27

पठन चक्र तीसरा (“अच्छे बाइबल अध्ययन का मार्गदर्शन” से)

पैराग्राफ स्तर पर मूल लेखक के अभिप्राय को समझना

यह अध्ययन करने की मार्गदर्शक टीका है, जिसका अर्थ है कि आप अपनी बाइबल-व्याख्या के स्वयं उत्तरदायी हैं। हम में से प्रत्येक को अपने ज्ञान व समझ के अनुसार कार्य करना चाहिए। व्याख्या-प्रक्रिया में आप, आपकी बाइबल तथा पवित्र आत्मा प्राथमिक स्थान रखते हैं। आपको यह टीका कार्य टीकाकार पर नहीं छोड़ना चाहिए।

पूरा अध्याय एक बैठक में पढ़ें। विषयों को पहचानें। अपने विषय-विभाजन की तुलना उपरोक्त पाँच आधुनिक अनुवादों के विषय-विभाजन से करें। पैराग्राफों का विभाजन प्रेरणा प्राप्त नहीं होता है, परन्तु यह मूल लेखक के अभिप्राय को समझने की कुंजी है, जो कि व्याख्या करने का आधार है। प्रत्येक पैराग्राफ में केवल एक ही मूल विषय होता है:

1. पहला पैराग्राफ
2. दूसरा पैराग्राफ
3. तीसरा पैराग्राफ

4. अन्य

शब्दों और वाक्यांशों का अध्ययन

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 24:1-2a

[1]पांच दिन के बाद हनन्याह महायाजक कई पुरनियों और तिरतुल्लुस नामक किसी वकील को साथ लेकर आया; उन्होंने हाकिम के सामने पौलुस पर नालिश की। [2] जब वह बुलाया गया तो तिरतुल्लुस उस पर दोष लगाकर कहने लगा:

24:1 ''हनन्याह महायाजक'' प्रेरि 23:2 में पूरी टिप्पणी देखें। बड़े आश्चर्य की बात है कि स्वयं महायाजक कई पुरनियों को लेकर यरूशलेम से कैसरिया पहुँचा। पौलुस सचमुच में उनकी देह का काँटा बन गया था।

▪ **''नीचे आया''** यहूदियों के लिए यरूशलेम सदैव ''ऊँचा'' स्थान रहा है और अन्य नगर ''नीचे'' रहे हैं।

▪ **''प्राचीन''** पुराने नियम में यह शब्द गोत्रों के अगुवों को दर्शाता था। गुलामी के बाद के काल में इस शब्द का प्रयोग यरूशलेम के धनी और प्रभावशाली लोगों के लिए होने लगा। नए नियम में अक्सर सन्हेद्रिन को ''महायाजक, शास्त्री और पुरनिए'' करके सम्बोधित किया गया। ये लोग सन्हेद्रिन के सदस्य हुआ करते थे और सदूकियों का पक्ष लेते थे। जब फरीसी लोग सभा में उपस्थित होते थे, तो मन्दिर के अगुवे समस्या में पड़ जाते थे (देखें, प्रेरि. 23:6-10)।

▪ **''तिरतुल्लुस''** यह किराए पर लिया गया एक वकील था, अथवा अधिवक्ता (NKJV)। अधिवक्ता यूनानी शब्द ''रेमा'' (*rēma)* का एक रूप है, जिसका अर्थ है ''बोले हुए वचन'' । स्पष्ट रूप से इसी वकील ने सन्हेद्रिन के मुकदमे को संभवतः लैटिन भाषा में प्रस्तुत किया, जो रोमी कानून के अनुसार ग्रहणयोग्य था।

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 24:2ब-9

[2]ब''हे महाप्रतापी फेलिक्स, तेरे द्वारा हममें बड़ा कुशल होता है; और तेरे प्रबन्ध से इस जाति के लिये अनेक बुराइयां सुधरती जाती हैं। [3]इसको हम हर जगह और हर प्रकार से धन्यवाद के साथ मानते हैं। [4]परन्तु इसलिये कि तुझे और दुःख नहीं देना चाहता, मैं तुझसे विनती करता हूं, कि कृपा करके हमारी दो एक बातें सुन ले। [5]क्योंकि हमने इस मनुष्य को उपद्रवी और जगत के सारे यहूदियों में बलवा करानेवाला और नासरियों के कुपन्थ का मुखिया पाया है। [6]उसने मन्दिर को अशुद्ध करना चाहा और हमने उसे पकड़ लिया। हमने उसे अपनी व्यवस्था के अनुसार दण्ड दिया होता; [7]परन्तु पलटन के सरदार लूसियास ने उसे जबरदस्ती हमारे हाथ से छीन लिया, [8]और मुद्दइयों को तेरे सामने आने की आज्ञा दी।, इन सब बातों को जिनके विषय में हम उस पर दोष लगाते हैं, तू आप ही उसको जांच करके जान लेगा। [9]यहूदियों ने भी उसका साथ देकर कहा, ये बातें इसी प्रकार की हैं।

24:2b-4 वकील की यह भूमिका, जैसी कि आशा की जा सकती है, मात्र एक चापलूसी ही नहीं, पर साथ ही इसमें सच्चाई भी नहीं थी। फैलिक्स वैसा नहीं था जैसा वह बता रहा था, वह एक दुष्ट व क्रूर मनुष्य था (देखें, टैसटिस की पुस्तक, टैसिटस, *इतिहास 5.9 और इतिहास 12.2* (cf. Tacitus, *Histories* 5.9 and *Annals* 12.2) । वह अपने पद पर केवल अपने भाई पलास की वजह से था, जो फेलिक्स सहित, अन्टोनिया मार्क अन्थोनी की पुत्री (Marc Antony's daughter) का स्वतन्त्र किया हुआ मनुष्य था, जो सम्राट क्लौदियुस की माँ थी। बाद में लोगां के कहने पर सम्राट नीरो ने फेलिक्स को गद्दी से हटा दिया था देखें, योसेपस, वार्स 2.12.8-13.7 तथा एन्टीक्वीटि 20.7.7-8.9 (cf. (Josephus, *Wars* 2.12.8-13.7 and *Antiq.* 20.7.7-8.9).

24:2b “बहुत शांति मिली” कुछ लोगों का विचार है कि यह उस घटना की ओर संकेत करता है जब फेलिक्स ने यहूदियों के कटारबन्द विद्रोहियों का दमन किया था। (देखें योसेपस की पुस्तक वार्स (*Wars*) 2.13.2)।

24:5 “हमें यह मनुष्य मिला” प्रेरितों के काम की पूरी पुस्तक में लूका का उद्देश्य रोमी-जगत को यह दर्शाना रहा है कि जो भी आरोप मसीही-धर्म पर लगाए जाते हैं। वे झूठे और निराधार होते हैं। यही कारण है कि लूका ने रोमी न्यायालय और अधिकारियों के सामने पेश होने के इतने सारे विवरणों का उल्लेख किया है।

पौलुस पर तीन बातों के आरोप लगाए गये:

1. वह उपद्रवी है, बलवा कराता है।
2. वह नासरियों के पन्थ का मुखिया है।
3. उसने मन्दिर को अशुद्ध करना चाहा।

NASB	**“पीड़क जन्तु है”**
NRSV	**“घातक मनुष्य है”**
NKJV	**“महामारी है”**
TEV	**“खतरनाक काँटा है”**
NJB	**“पूरा पीड़क जन्तु है”**

उपरोक्त सारे शब्द जिससे बने हैं उसका अर्थ महामारी है (देखें, लूका 21:11)। पुराने नियम सप्तूजैन्त (LXX)में भी इसका यही अर्थ है, परन्तु उसका प्रयोग उपमा के रूप में किसी मनुष्य के लिए किया जा सकता है (देखें, नीति. 19:25)।

▪ **“सारे जगत में”** यह निश्चय ही उद्देश्यपूर्ण अतिश्योक्ति है, परन्तु यह तितर-बितर यहूदियों में पौलुस की प्रभावशाली सेवकाई को दर्शाते हैं।

▪ **“मुखिया”** यहाँ पर जो यूनानी शब्द प्रयुक्त हुआ है वह एक मिश्रित शब्द है जो अंग्रेजी के “प्रथम” और “खड़े होना” से मिलकर बना है। सप्तूजैन्त में इसका प्रयोग “प्रथम श्रेणी के अगुवे” के लिए किया गया है (अयूब 15:24)। यह शब्द केवल यहीं पर पाया जाता है और न मिस्र के पेपरी में है।

▪ **“पन्थ”** शब्द ‘हेयरसिस” *(hairesis)* का मूल अर्थ है “विभाजन “अथवा” “दलबन्दी” (शाब्दिक रूप से “चुनना”)। धीरे धीरे इसमें नकारात्मक का अर्थ आ गया जैसा कि हम अंग्रेजी शब्द “हेरसी” (*heresy)* में देखते हैं जो इसी यूनानी शब्द हेयरसिस से बना है। प्रेरि. 5:17 में सदूकियों को इसी शब्द पंथ द्वारा और फरीसियों को प्रेरि. 15:5 में पन्थ नाम से सम्बोधित किया गया है। इस संदर्भ में पौलुस मसीही-धर्म को ऐतिहासिक यहूदी विश्वास और आशा का अभिन्न अंग मानता है (देखें, प्रेरि. 24:14)।

▪ **“नासरियों”** यह शब्द यीशु के अनुयायियों की ओर इशारा करता है। कुछ लोग मानते हैं कि इस शब्द की उत्पत्ति नासरत नगर से हुई है, परन्तु अन्य लोग इस शब्द का संबंध नेजेर डी बी डी 666 *nezer* (BDB 666) अथवा “शाखा” (Barnch) से मानते हैं, जो मसीह संबंधी पदवी है (देखें, यशा. 11:1; 53:2)। प्रेरि. 2:22 में विशेष शीर्षक देखें।

24:6 प्रेरि. 21:28 में पौलुस के विरुद्ध लगाए गए इल्जाम पर ध्यान दें और यहाँ पर लगाए गए आरोप से तुलना करें। आप परिवर्तन देखेंगे। पहले इल्जाम था मन्दिर को अपवित्र का दिया है, अब इल्जाम है, “मन्दिर को भी भ्रष्ट करना चाहा।” वास्तव में उनका मुकदमा कमजोर था। पौलुस का प्रभावशाली प्रचार ही वास्तविक समस्या थी।

24:7 NASB में यह पद कोष्ठक में है जो 8वीं और 9वीं शताब्दी की कुछ लीपियों में इन्हें जोड़ने को दर्शाता है। एन के जे वी NKJV में विस्तृत पठन पाया जाता है। यह यहूदियों के पौलुस पर दबाव को हटाकर लूसियास के अधीन करने को दिखाता है।

UBS[4] जोड़ने का कार्य नहीं करता और छोटे अनुवाद तथा प्राचीन लैटिन, बुल्गाता, कौप्टिक तथा जौर्जियन वर्जन) (MSS P[74],א,A D, some Old Latin,Vulgate, Coptic, and Georgian versions) आदि को ''बी'' "B" रेटिंग देता है (निश्चित रूप से)। UBS3 बड़े पठन को जोड़ता है परन्तु ''डी'' "D" रेटिंग देता है (जो संदेह की उच्च स्थित है)।

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 24:10-21

[10]जब हाकिम ने पौलुस को बोलने के लिये संकेत किया तो उसने उत्तर दिया, मैं यह जानकर कि तू बहुत वर्षों से इस जाति का न्याय कर रहा है आनन्द से अपना प्रत्युत्तर देता हूं। [11]तू आप जान सकता है कि जब से मैं यरूशलेम में आराधना करने को आया, मुझे बारह दिन से ऊपर नहीं हुए। [12]और उन्होंने मुझे न मन्दिर में न आराधनालयों में, न नगर में किसी से विवाद करते या भीड़ लगाते पाया। [13]और न तो वे उन बातों को, जिनका वे अब मुझ पर दोष लगाते हैं, तेरे सामने सच प्रमाणित कर सकते हैं। [14]परन्तु यह मैं तेरे सामने मान लेता हूं कि जिस पन्थ को वे कुपन्थ कहते हैं, उसी की रीति पर मैं अपने बापदादों के परमेश्वर की सेवा करता हूं और जो बातें व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकों में लिखी हैं, उन सब पर विश्वास करता हूं। [15]और परमेश्वर से आशा रखता हूं जो वे आप भी रखते हैं कि धर्मी और अधर्मी दोनों का जी उठना होगा। [16]इससे मैं आप भी यत्न करता हूं कि परमेश्वर की, और मनुष्यों की ओर मेरा विवेक सदा निर्दोष रहे। [17]बहुत वर्षों के बाद मैं अपने लोगों को दान पहुंचाने और भेंट चढ़ाने आया था। [18]उन्होंने मुझे मन्दिर में, शुद्ध दशा में, बिना भीड़ के साथ, और बिना दंगा करते हुए इस काम में भेंट चढ़ाते पाया- हां, आसिया के कई यहूदी थे-उनको उचित था, [19]कि यदि मेरे विरोध में उनके पास बात हो तो यहां तेरे सामने आकर मुझ पर दोष लगाते। [20]या ये आप ही कहें कि जब मैं महासभा के सामने खड़ा था, तो उन्होंने मुझमें कौन सा अपराध पाया? [21]इस एक बात को छोड़ जो मैंने उनके बीच में खड़े होकर पुकारकर कही थी, कि मरे हुओं के जी उठने के विषय में आज मेरा तुम्हारे सामने मुकद्मा हो रहा है।''

24:10 जिस प्रकार विधि अनुसार सन्हेद्रिन के प्रतिनिधि ने भूमिका आरम्भ की, उसी प्रकार पौलुस ने भी किया।

▪**''बचाव''** यहाँ प्रयुक्त यूनानी शब्द से अंग्रेजी शब्द ''अपोलाजी'' (Apology) बना है। इसका मूल अर्थ है न्यायालय में अपना बचाव मौखिक रूप से प्रस्तुत करना।

24:11-12 पौलुस बताता है कि उस पर मन्दिर को अशुद्ध करने का दोष लगाया गया है और उसकी सार्वजनिक गतिविधियाँ कलहप्रिय रही हैं, परन्तु सच्चाई तो यह है कि वह धार्मिक विधि पूरी कर रहा था।

24:14 ''पन्थ'' यह आरम्भ के मसीही लोगों को दिया गया एक शीर्षक या पदवी थी, उन्हें पन्थ कहा जाता था जिसका अर्थ है, परमेश्वर तक पहुंचने का एक ही रास्ता यीशु है (देखें, यूहन्ना 14:6) और एक जीवन शैली है (देखें, प्रेरि. 9:2; 19:9, 23; 22:4; 24:22; 18:25-26)।

▪ **''मैं अपने बापदादों के परमेश्वर की सेवा करता हूँ''** इस पद में पौलुस स्पष्ट रूप से बताता है कि यीशु के विषय में वह जो कुछ भी प्रचार करता है, उससे पुराने नियम का उल्लंघन नहीं होता है। यीशु ही इस्राएल को दी गई प्रतिज्ञाओं और आशा की परिपूर्ति है। वह मसीहीयत को भिन्न और नया नहीं मानता बल्कि परिपूर्ति मानता है (देखें, मत्ती 5:17-19 में यीशु)।

▪ **''व्यवस्था...भविष्यद्वक्ताओं''** ये पुराने नियम के कानोन (*canon)* के तीन विभाजनों में से दो विभाजन हैं:

1. तोरहः (व्यवस्था) - उत्पत्ति की पुस्तक से व्यवस्था-विवरण तक।

2. भविष्यद्वक्ता की पुस्तकें:
    a. पहले के नबी - यहोशू से राजाओं तक (रूत को छोड़कर)
    b. बाद के नबी - यशायाह से मलाकी तक (विलापगीत व दानिय्येल छोड़कर)
3. लेख:
    a. मेगिलोथ - रूत, एस्तेर, सभोपदेशक, श्रेष्ठगीत और विलापगीत
    b. बुद्धि साहित्य - अय्यूब, भजनसंहिता नीतिवचन
    c. दासत्व के बाद का इतिहास - 1 व 2 इतिहास, एज्रा व नहेम्याह

24:15 "परमेश्वर से आशा रखता हूँ जो ये आदमी भी रखते हैं" पौलुस बताता है कि पुनरुत्थान के विषय में उसके विचारों को छोड़कर, उसकी और उस पर दोष लगाने वालों की धार्मिक प्रवृत्ति का स्रोत एक ही है (देखें, प्रेरि. 24:16)। पौलुस स्वयं को बचाते हुए कहता है कि उनका जो आपसी झगड़ा है वह यहूदीवाद का धर्म-सैद्धांतिक झगड़ा है जिसमें शायद रोमी शासन पड़ना नहीं चाहेगा। प्रेरि. 2:25 में देखें विशेष शीर्षक देखें आशा

■ **"धर्मी और अधर्मी दोनों का जी उठना होगा"** यह फरीसियों की विचारधारा की ओर संकेत है, सदूकी लोग जी उठना नहीं मानते थे। योसेपस, एन्टीक्वीटि 18:1.3 (*Antiq.* 18.1.3)में बताता है कि कुछ फरीसी दुष्टों के पुनरुत्थान को नहीं मानते थे। (दुष्टों के विनाश की आधुनिक विचारधारा की जानकारी के लिए देखें एडवर्ड फुज की पुस्तक, द फायरडेट कन्जुम्स (Edward Fudge, *The Fire That Consumes*) । बाइबल इस विचारधारा को धर्मी और अधर्मी के जी उठने के द्वारा समर्थन देती है (देखें, यशा. 25:8; दानि. 12:2; मत्ती 25:46; यूहन्ना 5:29; रोमि. 2:6-11; प्रका. 20:11-15)। पौलुस मसीही धर्म को पुराने नियम की परिपूर्ति मानता था (देखें, मत्ती 5:17-19)। मसीही धर्म कोई नया धर्म नहीं था।

24:16 "मैं आप भी यत्न करता हूँ कि मेरा विवेक सदा निर्दोष रहे" प्रेरि. 23:1-2 में जब पौलुस ने अपने खरे विवेक की बात कही थी, तो महायाजक क्रोधित हो उठा था। पौलुस फिर से इसी बात को महायाजक की उपस्थिति में यहाँ फिर से दोहराता है। यह उसके 1 कुरि. 9:24-27 के व्यक्तिगत संघर्ष के समान है। फेलिक्स के सामने भी उसने आत्म संयम का प्रचार किया था (देखें, प्रेरि. 24:25), यह सरल कार्य नहीं है। गला. 5:25 में आत्म संयम पवित्र आत्मा का एक फल है।

24:17 "अपने लोगों को दान पहुँचाने आया हूँ" के लिए प्रेरि. 3:2 में विशेष शीर्षक देखें। यह उस दान की ओर संकेत करता है जिसे अन्यजाति कलीसियाओं ने यरूशलेम की कलीसिया के लिये भेजा था (देखें, रोमि: 15:25-27; 1 कुरि. 16:1-4; 2 कुरि. 8-9 अध्याय)। यह बड़े आश्चर्य की बात है कि प्रेरि. 21:15 क्रमशः में इसका कोई उल्लेख नहीं किया गया। ऐसा जान पड़ता है कि यरूशलेम के सभी लोगों ने इसे प्रसन्नतापूर्वक ग्रहण नहीं किया था देखें, जेम्स डी.जी.डयून की पुस्तक, यूनिटी एंड दैवेर्सिटी इन द न्यू टेस्टामेंट (James D. G. Dunn, *Unity and Diversity in the NewTestament*) । विश्वासी लोग तक जातिवाद का सामना नहीं कर सकते हैं।

■ **"और भेंट चढ़ाने आया था"** इसका संकेत इन बातों की ओर है:
1. पौलुस की मन्नत की समाप्ति (देखें. प्रेरि. 21:24)
2. दूसरों की मन्नत पूरी होने के लिये खर्चा देना (देखें, प्रेरि. 21:24)
3. इस पद की व्याकरण रचना से पता चलता है कि पौलुस चढ़ाने के लिये भेंट लाया था, अतः ये दोनों बातें यहूदी धार्मिक विधि हो सकती हैं, न कि अन्यजाति कलीसियाओं की ओर से भेजी गई दान की राशि।

24:18 "उन्होंने मुझे मन्दिर में *व्यस्त* पाया, शुद्ध दशा में पाया" यह धार्मिक विधि याकूब और कलीसिया के प्राचीनों के कहने पर पूरी की जा रही थीं (देखें, प्रेरि. 21:17-26)। यह धार्मिक क्रिया इसलिए की जा रही थी ताकि

कर्मकाण्डवादी विश्वासी यहूदी शान्त हो जाएँ, या खुश हों, परन्तु हुआ यह कि एशिया के यूनानी भाषी यहूदी भड़क गये।

24:18-19 ''आसिया के कई यहूदी थे-उनको उचित था'' पौलुस के बचाव में यह बहुत महत्वपूर्ण मुद्दा था (देखें, प्रेरि. 24:19)। जिन्होंने आँखों से यह घटना देखी थी वे मौजूद नहीं थे। जो लोग पौलुस पर दुनियाँ भर के यहूदियों के भड़काने का आरोप लगा रहे थे, उनके पास अनुभव का कोई प्रमाण नहीं था (देखें, प्रेरि. 24:20)।

एशिया दक्षिणी और पश्चिमी तुर्की के यहूदी लोगों के लिए एक भौगोलिक संदर्भ है, जिसे तब एशिया माइनर कहा जाता है।

24:19b ''यदि'' यह किसी आकस्मिक घटना के आने को दर्शाने का एक तरीका है। ए.टी. रौबर्टसन *वर्ल्ड पिक्चर्स द न्यू टेस्टामेंट* पेज 420 इसे मिली-जुली शर्त कहते हैं (A. T. Robertson, *Word Pictures in the NewTestament*, p. 420) जिसमें दूसरे दर्जे का परिणाम भी संयुक्त होता है जैसे, प्रेरि. 24:19a, ''वे वहाँ नहीं थे'' पेज 1022 (*Grammar* p. 1022) पुस्तक में ऐसे शर्त वाले और भी उदाहरण हैं (देखें, लू. 17:6; प्रेरि. 8:31)।

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 24:22-23

[22]फेलिक्स ने जो इस पन्थ की बातें ठीक-ठीक जानता था, उन्हें यह कहकर टाल दिया, कि जब पलटन का सरदार लूसियास आएगा तो तुम्हारी बात का निर्णय करूंगा। [23]और सूबेदार को आज्ञा दी कि पौलुस को कुछ छूट में रखकर रखवाली करना, और उसके मित्रों में से किसी को भी उसकी सेवा करने से न रोकना।

24:22 यह बात तो निश्चित है कि फेलिक्स यीशु और मसीही-धर्म के बारे में जानकारी रखता था। संभवतः वह रोमी अधिकारी होने के नाते स्थानीय परिस्थितियों के कारण चुप था।

फेलिक्स की पत्नी एक यहूदिनी थी (देखें, प्रेरि. 24:24), इसका अर्थ है कि उसे भी यहूदी धर्म की शिक्षाओं के बारे में जानने का मौका मिला था। मसीही धर्म यहूदीवाद में एक पन्थ समझा जाता था, इसलिये रोमी साम्राज्य की दृष्टि में यह ''मान्यता प्राप्त'' धर्म था।

24:23 यह पद दर्शाता है कि फेलिक्स पौलुस को खतरा नहीं समझता था, इसलिए उसने उसे कुछ स्वतन्त्रता और सुविधाएँ प्रदान कीं। यहाँ पुनः हम देखते हैं कि रोमी अधिकारी मसीही धर्म को राजनैतिक समस्या नहीं समते थे। यही लूका का सुसमाचार को लिखने का उद्देश्य भी है कि प्रकट करे कि मसीही धर्म रोमियों के लिए खतरा नहीं है।

NASB (नवीनतम) पाठांश: प्रेरितों के काम 24:24-27

[24]कितने दिनों के बाद फेलिक्स अपनी पत्नी द्रुसिल्ला को, जो यहूदिनी थी, साथ लेकर आया; और पौलुस को बुलवाकर उस विश्वास के विषय में जो मसीह यीशु पर है, उससे सुना। [25]जब वह धर्म और संयम और आनेवाले न्याय की चर्चा करता था, तो फेलिक्स ने भयभीत होकर उत्तर दिया, कि अभी तो जा, अवसर पाकर मैं तुझे फिर बुलाऊंगा। [26]उसे पौलुस से कुछ रुपये मिलने की भी आस थी; इसलिये और भी बुला-बुलाकर उससे बातें किया करता था। [27]परन्तु जब दो वर्ष बीत गए तो पुरकियुस फेस्तुस फेलिक्स की जगह पर आया, और फेलिक्स यहूदियों को खुश करने की इच्छा से पौलुस को बन्दी ही छोड़ गया।

24:24 ''द्रुसिल्ला'' यह हेरोदेस अग्रिप्पा प्रथम की सबसे छोटी बेटी और स्पष्ट रूप से सुन्दर महिला थी, और अग्रिप्पा द्वितीय और बिरनीके की बहन थी। वह फेलिक्स की तीसरी पत्नी थी, जिसको उसने इमेसा के राजा अजीजुस से प्राप्त किया था देखें, योसपस, एन्टीक्वीटि 20.7.2 (cf. Josephus, *Antiq.* 20.7.2)

NASB, NRSV, TEV, NJB ''मसीह यीशु''
NKJV ''मसीह''

MSS P^{74}, א*, B, E, तथा प्राचीन लैटिन और वुल्गाता अनुवाद में, विकल्प 1 पाया जाता है। MSS ,$א^C$, A,C तथा पेशित्ता और कौप्टिक अनुवाद में लघु-पठन पाया जाता है। UBS^4 दीर्घ-पठन प्रस्तुत करता है और ''बी'' "B" रेटिंग देता है।

यदि इस संदर्भ में ''ख्रीस्त'' का अनुवाद ''मसीह'' किया जाता तो पाठक को आश्चर्य होता (एम एस 044 में ''मसीह'' लिखा गया है)।

■ **''विश्वास''** यह बड़ा जटिल धर्म-वैज्ञानिक शब्द है। प्रेरि. 2:40; 3:16 और 6:5 में विशेष शीर्षक देखें। याद रखें कि आम बोलचाल की यूनानी के ये धर्म वैज्ञानिक शब्द सैप्तूजैन्त पर आधारित हैं, न कि यूनानी पर। लूका को सप्तूजैन्त की अच्छी जानकारी थी। यह कलीसिया के लिये पुराना नियम थी।

24:24-25 पौलुस ने फेलिक्स और द्रुसिल्ला को कई बार सुसमाचार सुनाया था (देखें, प्रेरि. 24:26b) यीशु पौलुस से यही चाहता था कि वह करे (देखें, प्रेरि. 9:15)। फेलिक्स कायल भी हुआ, परन्तु वह लालची भी था अर्थात् वह पौलुस से घूस लेना चाहता था, जब पौलुस ने घूस नहीं दी तो उसने अपना फैसला बदल दिया (देखें, प्रेरि. 24:26)।

24:26 स्पष्ट रूप से बन्दी होने की दशा में उसके पास धन उपलब्ध था। संभवतः यह धन (1) उसकी व्यक्तिगत विरासत हो सकती है (2) कलीसियाओं से उसे सहयोग मिलता होगा (अर्थात् फिलिप्पी और थिस्सलुनीके से)। फेलिक्स अक्सर पौलुस को अपने पास बुलाता था, उसका उपदेश सुनने के लिए नहीं, परन्तु उससे घूस प्राप्त करने की आशा में।

24:27 ''जब दो वर्ष बीत गये'' बहुत से विद्वान मानते हैं कि यही वह समय था जब लूका ने अपना सुसमाचार लिखने के लिये चश्मदीद गवाहों से पलीस्तीन में सूचनाएँ एकत्रित की थीं (देखें, लूका 1:1-4)। यह समय पौलुस जैसे उत्साही मनुष्य के लिए सचमुच में निराशाजनक रहा होगा! परन्तु उसने घूस देकर अपनी स्वतन्त्रता प्राप्त करने का प्रयत्न नहीं किया। वह जानता था कि वह परमेश्वर की इच्छा के अधीन है।

■ **''पुरकियुस फेस्तुस''** इस विषय में रोमी इहिासकारों सुटोनियुस और टैसीटस के मध्य कुछ मतभेद पाए जाते हैं कि कब इस अधिकारी ने पदभार संभाला। ई. 55 में फेलिक्स पर मुकदमा चला, परन्तु निश्चित नहीं कि वह दोषी ठहरा और हटाया गया। फेलिक्स ई. 62 में मरा जबकि वह राज्य कर रहा था देखें, योसेपस, एन्टीक्वीटि 20.9.1। (cf. Josephus, Antiq. 20.9.1). देखें, योसेपस, एक्टीक्वीटि 20.8.9-10; वार्स 2.14.1। (cf. Josephus, *Antiq.* 20.8.9-10; *Wars* 2.14.1) इस विषय में उसकी बहुत कम जानकारी है।

■ **''फेलिक्स पौलुस को बन्दी ही छोड़ गया''** उन दिनों, ऐसा रिवाज था कि जब अधिकारी बदलता था, तो कैदी आजाद कर दिए जाते थे। यह पद पलीस्तीन की राजनैतिक दशा और रोमी साम्राज्य की दुर्बलता को, परन्तु साथ ही सन्हेद्रिन की ताकत को दर्शाता है।

विचार विमर्श के लिये प्रश्न

यह अध्ययन में मार्गदर्शन करने की टीका है, इसका अर्थ है कि आप बाइबल की अपनी व्याख्या करने के स्वयं ही जिम्मेदार हैं। हम में से प्रत्येक को उसी ज्ञान के अनुसार चलना चाहिए जो हमारे पास है। व्याख्या करने के कार्य में आप आपकी बाइबल और पवित्र आत्मा केन्द्रिय स्थान रखते हैं। यह कार्य व्याख्याकार पर न छोड़ दें।

निम्नलिखित प्रश्न अपनी सहायता के लिए दिए गए हैं ताकि आप पुस्तक के गम्भीर विषयों पर पुनर्विचार कर सकें। वे आपके विचारों को आन्दोलित करने के लिए हैं, इनके अलावा और भी प्रश्न हो सकते हैं:

1. शब्द ''नासरी'' का क्या अर्थ है?
2. प्रेरितों के काम पुस्तक में कलीसिया को पन्थ "मार्ग" कहा जाना क्या दर्शाता है?

3. प्रेरि. 24:15 का क्या महत्व है? समझाएँ

प्रेरितों के काम-25
बाइबल के विभिन्न आधुनिक अनुवादों में पैराग्राफ-विभाजन

UBS4	NKJV	NRSV	TEV	NJB
पौलुस की कैसर से अपील	पौलुस की कैसर से अपील	सम्राट से अपील	सम्राट से पौलुस की अपील	कैसर से पौलुस की अपील
25:1-5	25:1-12	25:1-5	25:1-5	25:1-5
25:6-12		25:6-12	25:6-8	25:6-12
			25:9	
			25:10-11	
			25:12	
पौलुस को अग्रिप्पा और बिरनीके के लाया जाना	अग्रिप्पा के सामने पौलुस	अग्रिप्पा के सामने पौलुस का बचाव	अग्रिप्पा और बिरनीके के सामने पौलुस	राजा अग्रिप्पा के सामने पौलुस का सामने लाया जाना
		(25:13-26:32)		
25:13-22	25:13-27	25:13-22	25:13-21	25:13-22
			25:22a	
			25:22b	
25:23-27		25:23-27	25:23-27	25:23-26:1

पठन चक्र तीसरा ("अच्छे बाइबल अध्ययन का मार्गदर्शन" से)

पैराग्राफ स्तर पर मूल लेखक के अभिप्राय को समझना

यह अध्ययन करने की मार्गदर्शक टीका है, जिसका अर्थ है कि आप अपनी बाइबल-व्याख्या के स्वयं उत्तरदायी हैं। हम में से प्रत्येक को अपने ज्ञान व समझ के अनुसार कार्य करना चाहिए। व्याख्या-प्रक्रिया में आप, आपकी बाइबल तथा पवित्र आत्मा प्राथमिक स्थान रखते हैं। आपको यह टीका कार्य टीकाकार पर नहीं छोड़ना चाहिए।

पूरा अध्याय एक बैठक में पढ़ें। विषयों को पहचानें। अपने विषय-विभाजन की तुलना उपरोक्त पाँच आधुनिक अनुवादों के विषय-विभाजन से करें। पैराग्राफों का विभाजन प्रेरणा प्राप्त नहीं होता है, परन्तु यह मूल लेखक के अभिप्राय को समझने की कुंजी है, जो कि व्याख्या करने का आधार है। प्रत्येक पैराग्राफ में केवल एक ही मूल विषय होता है:

1. पहला पैराग्राफ
2. दूसरा पैराग्राफ
3. तीसरा पैराग्राफ
4. अन्य

शब्दों और वाक्यांशों का अध्ययन

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 25:1-5

[1]फेस्तुस उस प्रान्त में पहुंचने के तीन दिन बाद कैसरिया से यरूशलेम को गया। [2]तब महायाजकों और यहूदियों के प्रमुख लोगों ने उसके सामने पौलुस की नालिश की। [3]और उससे विनती करके उसके विरोध में यह वर चाहा कि वह उसे यरूशलेम में बुलवाए, क्योंकि वे उसे रास्ते ही में मार डालने की घात लगाए हुए थे। [4]फेस्तुस ने उत्तर दिया कि पौलुस कैसरिया में पहरे में है, और मैं आप जल्द वहां जाऊंगा।

[5]फिर कहा, ''तुममें जो अधिकार रखते हैं, वे साथ चलें, और यदि इस मनुष्य ने कुछ अनुचित काम किया है, तो उस पर दोष लगाएं।''

25:1 ''फेस्तुस'' यह फेलिक्स का उत्तराधिकारी था। वह प्रभावशाली व्यक्तित्व का मनुष्य था, परन्तु स्पष्ट रूप से उसी राजनैतिक दबाव और मानसिकता से प्रभावित था जिसका फैलिक्स पर प्रभाव था। वह दो वर्ष तक कार्य भार संभालता रहा और अपने शासन काल के दौरान ही 62 ईसवी में मर गया देखें, योसेपस एंटीक्वीटि, 20.8.9। (Josephus, *Antiq*. 20.8.9)

▪ **''तीन दिन बाद''** जैसे ही फेस्तुस यरूशलेम पहुंचा तो प्रधान याजक व यहूदी उसके पास आए, इससे पता चलता है कि वे पौलुस को लेकर कितने अधीर व उतावले थे। फेस्तुस भी उन पर अपना प्रथम प्रभाव अच्छा डालना चाहता था।

25:2 ''प्रधान याजकों और प्रमुख यहूदी लोग'' इस वाक्यांश का संकेत सन्हेद्रिन के सदस्यों की ओर है जो यरूशलेम के 70 यहूदी अगुवों से मिलकर बनी थी। यह यहूदियों की राजनैतिक व धार्मिक व्यवस्था की सर्वोच्च समिति थी। प्रेरित. 4:5 में विशेष शीर्षक देखें। यह यरूशलेम के अन्य धनी और गणमान्य लोगों की ओर भी संकेत कर सकता है जो नए राज्यपाल से मिलना और उससे अच्छे संबंध स्थापित करना चाहते हों।

यह भी हो सकता है कि यह पद दोनों समूहों की ओर संकेत करता हो। दो वर्ष बाद अब नया महायाजक इश्माएल-बिन-फेबुस (ई. 56-62) आ गया था। वह भी अपना प्रभाव डालना चाहता था और एक भगोड़े फरीसी पौलुस पर आक्रमण करके वह यह कार्य कर सकता था।

▪ **''उससे विनती करके''** वे उससे बार बार विनती कर रहे थे।

25:3 यह पद पौलुस के प्रति यहूदी अगुवों के बैरभाव को दर्शाता है। वे पौलुस को अपना सबसे बड़ा शत्रु मानते थे।

▪ **(उसी समय, वे उसे रास्ते ही में मार डालने की घात में *लगे हुए थे*)** यहूदी अगुवों की यह युक्ति अभी तक बदली नहीं थी (देखें, प्रेरि. 23:12-15)।

25:5 ''यदि'' यह प्रथम श्रेणी का शर्त के साथ वाक्य है जो लेखक की नजर में सत्य है अथवा उसके उद्देश्यों के अनुसार है (देखें, ए. टी. रॉबर्टसन, की पुस्तक वर्ड पिक्चर्स इन द न्यू टेस्टामेंट, खंड 3, पृष्ठ 429, (cf. A. T. Robertson, *Word Pictures in the NewTestament*, vol. 3, p. 429)। डा. ब्रूस टकरस्ले, Dr. Bruce Tankersley, the Koine Greek जो ईस्ट टैक्सास बैपटिस्ट यूनीवर्सिटी में यूनानी भाषा के विशेषज्ञ थे, कहते हैं कि यह तृतीय श्रेणी का वाक्य भी हो सकता है क्योंकि इसके प्रथम भाग में क्रिया नहीं है। फेस्तुत पौलुस को अपराधी मानता था। तब यरूशलेम के यहूदी अगुवे क्यों बार बार उससे विनती और जिद्द कर रहे थे?

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 25:6-12
[6]उनके बीच कोई आठ दस दिन रहकर वह कैसरिया चला गया; और दूसरे दिन न्याय आसन पर बैठकर पौलुस को लाने की आज्ञा दी। [7]जब वह आया तो जो यहूदी यरूशलेम से आए थे, उन्होंने आस-पास खड़े होकर उस पर बहुत से गम्भीर आरोप लगाए जिनका प्रमाण वे नहीं दे सकते थे। [8]परन्तु पौलुस ने उत्तर दिया कि मैंने न तो यहूदियों की व्यवस्था के और न मन्दिर के, और न ही कैसर के विरुद्ध कोई अपराध किया है। [9]तब फेस्तुस ने यहूदियों को खुश करने की इच्छा से पौलुस से कहा, क्या तू चाहता है कि यरूशलेम को जाए; और वहां मेरे सामने तेरा यह मुकद्दमा तय किया जाए? [10]पौलुस ने कहा; मैं कैसर के न्याय आसन के सामने खड़ा हूं: मेरे मुकद्दमे का यहीं फैसला होना चाहिएः जैसा तू अच्छी तरह जानता है, यहूदियों का मैंने कुछ अपराध नहीं किया। [11]यदि मैं अपराधी हूं और मार डाले जाने योग्य कोई काम

किया है; तो मरने से नहीं मुकरता; परन्तु जिन बातों का ये मुझ पर दोष लगाते हैं, यदि उनमें से कोई बात सच न ठहरे तो कोई मुझे उनके हाथ नहीं सौंप सकताः मैं कैसर की दोहाई देता हूं। [12]तब फेस्तुस ने मन्त्रियों की सभा के साथ बातें करके उत्तर दिया, तूने कैसर की दोहाई दी है, तू कैसर के ही पास जाएगा।''

25:6-9 ये घटनाएँ पौलुस को यही दिखाती थीं कि फेस्तुस से उसे न्याय नहीं मिल सकेगा। वह यह भी जानता था कि यदि वह यरूशलेम गया तो उसके साथ क्या हो सकता है (देखें, प्रेरि. 25:3)। वह यह भी जानता था कि उससे यीशु चाहता है कि वह रोम को जाए (देखें, प्रेरि. 9:15)।

25:6 ''उनके बीच कोई आठ दस दिन रहकर'' मैं कल्पना कर सकता हूँ कि इस बीच यहूदियों ने फेस्तुस के साथ खाया-पीया और मेल जोल बढ़ाया होगा। सब रोमी अधिकारियों को भी उन्होंने अपनी चालाकी से प्रभावित कर लिया होगा।

25:8 पौलुस उन्हें बताता है कि वह निम्नलिखित आरोपों का दोषी नहीं है:

1. मूसा की व्यवस्था उसने नहीं तोड़ी (देखें, प्रेरि. 21:21,28)
2. मन्दिर को अशुद्ध नहीं किया (देखें, प्रेरि. 21:28; 24:6)
3. कैसर के विरुद्ध कुछ नहीं कहा (देखें, प्रेरि. 16:21;17:7)

नम्बर 1 और 2 तो बिल्कुल वही अभियोग हैं, जो प्रेरि. 6:13-14 में स्तिफनुस पर लगाए गये थे।

25:10-11 पौलुस यहाँ कहता है कि वह पहले ही उचित अधिकारी के सामने और उचित स्थान में खड़ा है। लूका प्रेरि.
25:11 में कैसर से उसकी औपचारिक अपील लेखबद्ध करता है।

कैसर से अपील करने का अधिकार सबसे पहले ई. पू. 30 में ओक्टावियन (cf. Dio Cassius, *History*, 51.19) द्वारा आरम्भ किया गया था फिर इसमें विस्तार करके किसी भी रोमी नागरिक को बाँधने कोड़े लगाने और प्रताड़ित करने पर प्रतिबन्ध लगाया गया, जो व्यक्ति कैसर की दोहाई दें। (देखें, डिओ कैसियस की पुस्तक, सैन्टेन्टाय 5.26.1) (cf. Paulus, *Sententiae* 5.26.1) ।

ए.एन. शेरविन-व्हाइट्स रोमन सोसाइटी और रोमन लॉइन द न्यू टेस्टामेंट में पहली शताब्दी A. N. Sherwin-White's Roman Society and Roman Lawin the NewTestament, "lecture four: Paul before Felix and Festus," pp. 48-70.के रोमन कानून की अच्छी चर्चा है, "व्याख्यान चार: फेलिक्स और फेस्टस से पहले पॉल," पेज 48-70।

25:11 ''यदि...यदि'' ये दो प्रथम श्रेणी के शर्तें सहित वाक्य हैं जो लेखक के विचार से या उसके उद्देश्यों के अनुसार सत्य हैं। इन दोनों वाक्यों का प्रयोग दर्शाता है कि किस प्रकार से अपने तर्क को सिद्ध करने के लिये इन्हें प्रयोग किया जा सकता है। पहले वाक्य में सत्यता नहीं है (परन्तु प्रेरि. 25:5 में यही शर्त फेस्तुस द्वारा प्रयुक्त की गई) दूसरे वाक्य में सत्यता पाई जाती है।

▪ **''मैं मरने से नहीं मुकरता''** पौलुस राज्य की ताकत को जानता था (देखें, रोमि. 13:4) उत्पत्ति 9:6 में मृत्यु दण्ड का विचार देखा जा सकता है। मृत्यु-दण्ड के विषय में रोचक जानकारी प्राप्त करने के लिए देखें पुस्तक हार्ड सयिंग ऑफ़ द बाइबल पेज 114-116 (*Hard Sayings of the Bible* pp 114-116)

NASB, TEV **''कोई भी मुझे उनके हाथों में नहीं सौंप सकता है''**
NKJV **''कोई भी मुझे उन्हें नहीं सौंप सकता''**
NRSV **''कोई भी मुझे उनकी ओर फेर नहीं सकता''**
NJB **''किसी को अधिकार नहीं कि मुझे उन्हें सौंप दे''**

शब्द केरिजोमेय *charizomai* का शाब्दिक अर्थ है ‘‘प्रसन्न करना’’ अथवा ‘‘पक्ष लेना।’’ पौलुस ने अच्छी तरह समझ लिया था कि फेस्तुस उसे यहूदी अगुवों को सौंपकर उन्हें प्रभावित करना व खुश करना चाहता है।

लेकिन यह भी हो सकता है कि फेस्तुस जूलियस कैसर की उस राजाज्ञा का पालन करने की कोशिश कर रहा हो जिसमें कहा गया था कि रोमी अधिकारियों को पलीस्तीन में महायाजक की इच्छाएँ पूरी होने देना चाहिए (देखें, योसेपस, एन्टीक्वीटि 14.10.2)।

▪ **‘‘मैं कैसर की दोहाई देता हूँ’’** कैसर से अपील करना एक रोमी नागरिक का अधिकार था जबकि उसे मृत्युदण्ड की आज्ञा सुनाई गई हो (देखें, Pliny the Younger, Letter 10.96)। इस वक्त इतिहास में नीरो कैसर था (ईस्वी सन् 54-68)।

25:12 ‘‘मन्त्रियों की सभा’’ यह यहूदी अगुवों की ओर नहीं बल्कि फेस्तुस के कानूनी विशेषज्ञों की ओर संकेत है।

प्रेरि. 25:13 से 26:32 के संबंध में जानकारी:

पृष्ठभूमि

A. हेरोदेस अग्रिप्पा (मार्कस जूलियस अग्रिप्पा)
   1. यह हेरोदेस अग्रिप्पा प् का पुत्र था (देखें, प्रेरि. 12); यह यहूदिया का शासक था और मन्दिर तथा याजकों पर नियन्त्रण रखता था (ईस्वी. 41-44) तथा यह हेरोदेस महान् का पोता था।
   2. उसकी शिक्षा-दीक्षा रोम में हुई थी और वह रोमी था। ईस्वी 70 में यहूदियों से लड़ाई के बाद वह रोम लौट गया और सन् 100 ई. में वहाँ मर गया।
   3. जब वह 17 वर्ष का था तो उसके पिता की मृत्यु हो गई। अल्पायु के कारण वह राजपाठ संभाल न सका।
   4. 50 ईस्वी में अग्रिप्पा प्प् का चाचा हेरोद कालिसस मर गया जो कालिसस का राजा था (यह उत्तरी पलीस्तीन में एक छोटा सा राज्य था) तब अग्रिप्पा प्प् को सम्राट क्लौदियुस की ओर से राजपाठ दिया गया और साथ ही मन्दिर और महायाजकों पर नियन्त्रण सौंपा गया।
   5. ईस्वी 53 में उसने अपने छोटे राज्य को राज्यपाल हेरोद फिलिप से बदल लिया (जो इतूरैया और त्रखोनीतिस तथा लिसानियास अबिलेने का शासक था)
   6. बाद में सम्राट नीरो ने उसके राज्य में गलील सागर के आसपास के नगर और गाँव भी जोड़ दिए। उसने कैसरिया फिलिप्पी को अपनी राजधानी बनाया और उसका नाम बदलकर नीरोनियास रख दिया।
   7. उसकी ऐतिहासिक जानकारी के लिए देखें:
      a. योसेपस की ज्यूस वार्स (*Jewish Wars)* 2.12.1,7-8; 15:1; 16:4; 7.5.1
      b. योसेपस की एन्टीक्वीटि आफ द ज्यूज (*Antiquities of the Jews)* 19:9.2; 20:5.2; 6.5; 7:1; 8:4; 9,6

B. बिरनीके
   1. यह अग्रिप्पा i की सबसे बड़ी बेटी थी।
   2. वह अग्रिप्पा ii की बहन थी, तथा लम्बे समय तक उसके साथ उसके अनैतिक संबंध रहे (परन्तु इसका ठोस प्रमाण नहीं मिलता)। बाद में सम्राट टाइटस से उसने विवाह कर लिया जबकि वह सेनानायक था। उसी रोमी सेनापति ने यरूशलेम का मन्दिर सन् 70 में ध्वस्त किया था।
   3. वह द्रुसिल्ला की बहन थी (देखें, प्रेरि. 24:24)

4. उसने हेरोदेस काल्सिस से (हेरोदेस अग्रिप्पा प् का भाई व उसका चाचा) विवाह किया, परन्तु जब वह मर गया तो फिर अपने भाई के साथ रहने लगी।
5. बाद में उसने पोलेमोन से जो किलिकिया का राजा था, विवाह कर लिया परन्तु उसे छोड़ दिया और अपने भाई के पास आ गई जिसे ‘‘राजा’’ की पदवी मिल गई थी।
6. वह सम्राट वेस्पसीयान की भी पत्नी बनी।
7. उसकी ऐतिहासिक जानकारी के स्रोत:
   a. योसेपस, ज्यूस वार्स 2.1.6; 15:1; 17:1 (Josephus *Jewish Wars* 2.1.6; 15.1; 17.1.)
   b. योसेपस की एन्टीक्वीटि ऑफ द ज्यूस 19.1.9; 15.1; 20.1.3 (Josephus' *Antiquities of the Jew*19.9.1; 15.1; 20.1.3)
   c. टैसीटस की हिस्ट्री 2.2 (Tacitus' *History* 2.2)
   d. सिटोनियुस की पुस्तक लाइफ ऑफ टाइटस 7 (*Life of Titus* 7)
   e. डीओ कैसिअस की हिस्ट्री 65.15; 66.18 (Dio Cassius’*Histories* 65.15; 66.18)
   f. जुवेनल की स्टायर 61.156-157 (Juvenal's *Satire* 61.156-157)

शब्दों और वाक्यांशों का अध्ययन

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 25:13-22
[13]कुछ दिन बीतने के बाद अग्रिप्पा राजा और बिरनीके ने कैसरिया में आकर फेस्तुस से भेंट की।
[14]उनके बहुत दिन वहां रहने के बाद फेस्तुस ने पौलुस के विषय में राजा को बताया; कि एक मनुष्य है,
जिसे फेलिक्स बन्दी छोड़ गया है। [15]जब मैं यरूशलेम में था तो महायाजक और यहूदियों के पुरनियों ने
उसकी नालिश की; और चाहा कि उस पर दण्ड की आज्ञा दी जाए। [16]परन्तु मैंने उनको उत्तर दिया कि
रोमियों की यह रीति नहीं कि किसी मनुष्य को दण्ड के लिये सौंप दें, जब तक मुद्दाअलैह को अपने
मुद्दइयों के सामने खड़े होकर दोष के उत्तर देने का अवसर न मिले। [17]सो जब वे यहां इकट्ठे हुए, तो मैंने
कुछ देर न की, परन्तु दूसरे ही दिन न्याय आसन पर बैठकर उस मनुष्य को लाने की आज्ञा दी। [18]जब
उसके मुद्दई खड़े हुए, तो उन्होंने ऐसी अनुचित बातों का दोष नहीं लगाया, जैसा मैं समझता था। [19]परन्तु वे
अपने मत के, और यीशु नामक किसी मनुष्य के विषय में जो मर गया था, और पौलुस उसको जीवित
बताता था, विवाद करते थे। [20]और मैं उलझन में था, कि इन बातों का पता कैसे लगाऊं? इसलिये मैंने
उससे पूछा, क्या तू यरूशलेम जाएगा कि वहां इन बातों का फैसला हो? [21]परन्तु जब पौलुस ने दोहाई दी
कि उसके मुकद्दमे का फैसला महाराजाधिराज के यहां हो; तो मैंने आज्ञा दी कि जब तक उसे कैसर के
पास न भेजूं, उसे हिरासत में रखा जाए। [22]तब अग्रिप्पा ने फेस्तुस से कहा, मैं भी उस मनुष्य की सुनना
चाहता हूं: उसने कहा, ‘‘तू कल सुन लेगा।’’

25:13 ‘‘राजा अग्रिप्पा और बिरनीके’’ यह पद अग्रिप्पा प्प् की ओर संकेत करता है। वह द्रुसिल्ला और बिरनीके का भाई था। उसकी पढ़ाई-लिखाई रोम में हुई थी और वह रोमी साम्राज्य की नीतियों और कार्य प्रणालियों का विश्वासयोग्य पात्र था।

विशेष शीर्षक: बिरनीके

1. वह हेरोद अग्रिप्पा - I की बड़ी बेटी थी (जन्म 28 ई.)
2. वह अग्रिप्पा - II की बहन थी, तथा कुछ समय तक उसकी प्रेमिका भी रही। उसके बाद जब टाइटस सेनापति था तो उसकी पत्नी बन गई।
3. वह फेलिक्स के तीसरी पत्नी भी रही, द्रुसिल्ला की बहन
4. उसने हेरोद काल्सिस से विवाह किया (जो हेरोद अग्रिप्पा I का भाई तथा उसका अंकल था) परंतु जब वह

मर गया तो वह अपने भाई के साथ रहने लगी।

5. बाद में उसने सिलीसिया के राजा पोलेमोन से विवाह किया परंतु उसे छोड़ दिया और अपने भाई के साथ रहने लगी जिसे राजा की उपाधि मिल गई थी।
6. वह वेसपस्यान और टाइटस की प्रेमिका रही।
7. उसकी ऐतिहासिक जानकारी के लिए :
   a. योसेपस की पुस्तक, ज्यूज़ वार 2.11.6; 15.1; 17.1 (Josephus' *Jewish Wars* 2.11.6; 15.1; 17.1.)
   b. योसेपस की पुस्तक, एंटीक्विटीजज़ ऑफ द ज्यूज़ 19.9.1; 15.1; 20.1:3 (Josephus' *Antiquities of the Jews* 19.9.1; 15.1; 20.1:3)
   c. टैक्टियुस हिस्ट्री 2:2 (Tactius' *History* 2:2)
   d. सिटोनियस की पुस्तक "लाईफ ऑफ टाइटस" 7 (Seutonius' *Life of Titus* 7)
   e. डिओ कैसीयस की पुस्तक "हिस्ट्रीज़" 65.15; 66.18 (Dio Cassius' *Histories* 65.15; 66.18)
   f. जुवेनल्स की पुस्तक "स्टायर" 61.156-157(Juvenal's *Satire* 61.156-157)

Copyright © 2014 Bible Lessons International

25:13-19 यहाँ हम फिर लूका के उद्देश्य को देखते हैं जो अपने लेखों द्वारा बताना चाहता है कि मसीही धर्म रोमी साम्राज्य के लिए राजनैतिक खतरा नहीं है (देखें, प्रेरि. 25:25)। प्रथम शताब्दी के आरम्भिक दशकों में मसीही धर्म को यहूदीवाद का एक पन्थ समझा जाता था, जिसे रोमी सरकार ने वैधानिक धर्म की मान्यता प्रदान की थी और रोमी सरकार यहूदी धर्म में कोई झगड़ा या विवाद देखना नहीं चाहती थी।

25:18 "उन्होंने ऐसी अनुचित बातों का दोष लगाया, जैसा मैंने सोचा भी न था" यह यहूदियों के विरोध की गहराई और स्वरूप को दर्शाता है। उनका विरोध राजनैतिक नहीं, परन्तु धार्मिक बातों का था।

NASB, NRSV, NJB, NIV	**"अपराध का दोष नहीं लगाया"**
NKJV	**"ऐसी बातों का"**
TEV	**"बुरे अपराधों का दोष"**
REB	**"दोष नहीं लगाया"**
NET Bible	**"बुरे कार्यों का दोष"**
ASV	**"अनुचित बातों का दोष"**

यहाँ बहुत सी भिन्नताएँ पाई जाती हैं!

1. पोनेरोन- बहुवचन; इसका अर्थ है "बुरी बातें" (प्रेरि. 28:21)।(*ponērōn*) MSS א^2, B, E
2. पोनेरेऊ- में एक वचन। (*ponērau*) MSS P^{74} A, C*
3. पोनेरा में बहुवचन।(*ponēra*) MSS א*, C^2
4. नहीं पाया जाता - तथा कुछ पाठों में (देखें, एन के जे वी) (NKJV) MSS L, P

UBS^4 पाठ में नं. 1 रखता है और "सी" "C" रेटिंग देता है (निर्णय करने में कठिनाई)।

फेलिक्स हैरान था कि आरोप गंभीर नहीं थे और यहूदी धार्मिक मामलों से संबंधित थे, कानूनी मामलों के नहीं।

25:19 "धर्म" शाब्दिक रूप से धर्म या मत शब्द दो बातों का मिश्रण होता है "भय" तथा "देवतागण"। इसका शब्द का अर्थ "अन्धविश्वास" भी हो सकता है, वास्तव में तो रोमी लोग यहूदी धर्म को अन्धविश्वास ही मानते थे। परन्तु शायद फेस्तुस अपने सम्मानित यहूदी मित्रों को अपमानित नहीं करना चाहता था इसलिए अस्पष्ट शब्दों का प्रयोग करता है, पौलुस भी यही करता है (देखें प्रेरि. 17:22)।

पद 18-19 फिर दर्शाते हैं कि रोमी सरकार पौलुस और मसीही धर्म में कोई दोष नहीं पाती।

■ **"मृत मनुष्य के विषय में , येशु ,पौलुस उसको जीवित बताता था"** यीशु मसीह का मृतकों में से जी उठना प्रेरितों के काम पुस्तक में प्रेरितों के उपदेशों का मूल विषय है (इसे करिगमा (*kerygma*) कहते हैं, देखें, प्रेरि. 2:14 में विशेष शीर्षक) (प्रेरि. 26:8)। मसीही धर्म इसी अंगीकार पर आधारित है कि यीशु जी उठा है (देखें, 1 कुरि. 15 अध्याय)।

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 25:23-27
[23]सो दूसरे दिन, जब अग्रिप्पा और बिरनीके बड़ी धूमधाम से आकर पलटन के सरदारों और नगर के प्रमुख लोगों के साथ दरबार में पहुंचे तब फेस्तुस ने आज्ञा दी कि वे पौलुस को ले आएं। [24]फेस्तुस ने कहा; हे राजा अग्रिप्पा, और हे सब मनुष्यो, जो यहां हमारे साथ हो, तुम इस मनुष्य को देखते हो, जिसके विषय में सारे यहूदियों ने यरूशलेम में और यहां भी चिल्ला-चिल्लाकर मुझसे विनती की कि इसका जीवित रहना उचित नहीं। [25]परन्तु मैंने जान लिया कि उसने ऐसा कुछ नहीं किया कि मार डाला जाए; और जब कि उसने आप ही महाराजाधिराज की दोहाई दी, तो मैंने उसे भेजने का निर्णय किया। [26]मैंने उसके विषय में कोई ठीक बात नहीं पाई कि अपने स्वामी के पास लिखूं, इसलिये मैं उसे तुम्हारे सामने और विशेष करके हे राजा अग्रिप्पा तेरे सामने लाया हूं कि जांचने के बाद मुझे कुछ लिखने को मिले। [27]क्योंकि बन्दी को भेजना और जो दोष उस पर लगाए गए उन्हें न बताना, मुझे व्यर्थ जान पड़ता है।"

25:23 सुसमाचार प्रचार का यह क्या ही अद्‌भुत अवसर है।

■ **"सरदारों"** यह (*chiliarch)* क्लीयार्क शब्द है जिसका अर्थ है एक हजार सैनिकों का सरदार; तथा सूबेदार का अर्थ है 100 सैनिकों पर अधिकारी। हमें योसेपस की एन्टीक्वीटि 19.19.2 से पता चलता है कि कैसरिया के मुख्यालय में इस अवसर पर पाँच सैनिक दल थे। अतः संभवतः यहाँ पाँच सरदारों के उपस्थिति होने का संकेत मिलता है।

■ **"नगर के प्रमुख लोगों के साथ"** संभवतः यह कैसरिया के नागरिक अधिकारियों की ओर संकेत है। यहाँ पर निम्न समूह उपस्थित थे:

1. रोमी राज्यपाल
2. इदूमियाँ का क्षेत्रिया राजा।
3. रोमी पलटन के सरदार।
4. कैसरिया के प्रमुख लोग।

■ **"25:26 "सम्राट"** "राजा" यह सेबसटौस ;ेमइंेजवेद्ध शब्द है जो लैटिन भाषा के शब्द अगस्तुस का समानार्थी है। इसकी उत्पत्ति "आदर करने" "स्तुति करने" "श्रद्धा रखने" अथवा "उपासना" करने इत्यादि शब्दों से हुई है। इस शब्द का सबसे पहले उपयोग 27 ई.पू. में सिनेट द्वारा ओक्टावियन के लिये किया गया था। यहाँ पर इसका उपयोग नीरो (ई. 54-68) के लिए हुआ है। नीरो ने सम्राट पूजा का आदेश निकाला था।

25:26 "मैंने उसके विषय में कोई निश्चित बात नहीं पाई" फेस्तुस (*sebastos*)के सामने भी वही समस्या थी जो पलटन के सरदार लूसियास के सामने यरूशलेम में थी। उसके लिए रोमी कानून के अनुसार पौलुस के विरुद्ध अभियोग-पत्र लिखना आवश्यक था, परन्तु लिख नहीं पा रहा था। पौलुस इन रोमी अधिकारियों के लिये रहस्य बन गया था।

■ **"स्वामी"** यह यूनानी शब्द क्यूरिआस *(kurios)* है, जिसका अर्थ है, "स्वामी, मालिक, शासक। यह इस शब्द का नीरो के लिए पहली बार उपयोग है। इस पदवी का अगुस्तुस और तिबिरियास द्वारा परित्याग किया गया क्योंकि वे समझते थे कि इस शब्द का अर्थ लैटिन के शब्द रेक्स *(rex)* राजा से जुड़ा है, जो रोमी लोगों और सिनेट को कष्ट

पहंुचाता है। परन्तु इस शब्द का उपयोग नीरो के युग में और उसके बाद भी होता रहा। बेस्पसियान और टाइटस अपने "उद्धारकर्त्ता" और दोमित्यान अपने लिए "देवता" शब्द का प्रयोग करते थे (देखें, जेम्स एस. जैफर्स की पुस्तक *ग्रीको-रोमन वर्ल्ड* पेज 101, (cf. James S. Jeffers, *The Greco-Roman World* p. 101) मसीही लोग इस शब्द *kurios* का उपयोग केवल यीशु के लिए करते थे, इसलिए वे सताए जाते थे। वे इस शब्द का उपयोग रोम के सम्मान में करने से स्पष्ट इंकार करते थे।

विचार विमर्श के लिये प्रश्न

यह अध्ययन में मार्गदर्शन करने की टीका है, इसका अर्थ है कि आप बाइबल की अपनी व्याख्या करने के स्वयं ही जिम्मेदार हैं। हम में से प्रत्येक को उसी ज्ञान के अनुसार चलना चाहिए जो हमारे पास है। व्याख्या करने के कार्य में आप आपकी बाइबल और पवित्र आत्मा केन्द्रिय स्थान रखते हैं। यह कार्य व्याख्याकार पर न छोड़ दें।

निम्नलिखित प्रश्न अपनी सहायता के लिए दिए गए हैं ताकि आप पुस्तक के गम्भीर विषयों पर पुनर्विचार कर सकें। वे आपके विचारों को आन्दोलित करने के लिए हैं, इनके अलावा और भी प्रश्न हो सकते हैं:

1. यहूदी अगुवे पौलुस से क्यों भयभीत थे, और क्यों उससे घृणा करते थे?
2. यह अध्याय किस प्रकार, यह पुस्तक लिखने के लूका के उद्देश्य को दर्शाता है?
3. अग्रिप्पा और बिरनीके के सामने अपने आप को बचाने का पौलुस का उद्देश्य क्या था?

Copyright © 2013 Bible Lesson International

प्रेरितों के काम-26
बाइबल के विभिन्न आधुनिक अनुवादों में पैराग्राफ-विभाजन

UBS4	NKJV	NRSV	TEV	NJB
अग्रिप्पा के सामने पौलुस का बचाव	पौलुस का आरम्भिक जीवन	अग्रिप्पा के सामने पौलुस द्वारा अपना बचाव	अग्रिप्पा के सामने पौलुस द्वारा अपना बचाव	राजा अग्रिप्पा के सामने पौलुस की पेशी
		(25:13-26:32)		25:13-26:1
26:1-11	26:1-11	26:1	26:1	राजा अग्रिप्पा के सामने पौलुस का भाषण
		26:2-3	26:2-3	26:2-3
		26:4-8	26:4-8	26:4-8
		26:9-11	26:9-11	26:9-11
पौलुस का मन-परिवर्तन करता है।	पौलुस अपने मन-परिवर्तन का वर्णन में बताता है		पौलुस अपने मन-परिवर्तन के विषय	
26:12-18	26:12-18	26:12-18	26:12-18	26:12-18
यहूदी और गैर यहूदियों में पौलुस की गवाही	मन परिवर्तन के बाद पौलुस का जीवन		पौलुस अपनी सेवा के विषय बताता है	
26:19-23	26:19-23	26:19-23	26:19-23	26:19-23
पौलुस द्वारा अग्रिप्पा से विश्वास करने की अपील				उसके सुनने वालों की प्रतिक्रिया
26:24-29	26:24-32	26:24-29	26:24	26:24-29
			26:25-27	
			26:28	
			26:29	
26:30-32		26:30-32	26:30-32	26:30-32

पठन चक्र तीसरा (**"अच्छे बाइबल अध्ययन का मार्गदर्शन" से**)

पैराग्राफ स्तर पर मूल लेखक के अभिप्राय को समझना

यह अध्ययन करने की मार्गदर्शक टीका है, जिसका अर्थ है कि आप अपनी बाइबल-व्याख्या के स्वयं उत्तरदायी हैं। हम में से प्रत्येक को अपने ज्ञान व समझ के अनुसार कार्य करना चाहिए। व्याख्या-प्रक्रिया में आप, आपकी बाइबल तथा पवित्र आत्मा प्राथमिक स्थान रखते हैं। आपको यह टीका कार्य टीकाकार पर नहीं छोड़ना चाहिए।

पूरा अध्याय एक बैठक में पढ़ें। विषयों को पहचानें। अपने विषय-विभाजन की तुलना उपरोक्त पाँच आधुनिक अनुवादों के विषय-विभाजन से करें। पैराग्राफों का विभाजन प्रेरणा प्राप्त नहीं होता है, परन्तु यह मूल लेखक के

अभिप्राय को समझने की कुंजी है, जो कि व्याख्या करने का आधार है। प्रत्येक पैराग्राफ में केवल एक ही मूल विषय होता है:

1. पहला पैराग्राफ
2. दूसरा पैराग्राफ
3. तीसरा पैराग्राफ
4. अन्य

शब्दों और वाक्यांशों का अध्ययन

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 26:1
[1]अग्रिप्पा ने पौलुस से कहा; तुझे अपने विषय में बोलने की आज्ञा है। तब पौलुस हाथ बढ़ाकर उत्तर देने लगा,

26:1 ''हाथ बढ़ाकर'' यह अभिवादन करने और भाषण देने का तरीका है (देखें, प्रेरि. 12:17; 13:16 और 21:40 जहाँ चुप कराने और ध्यान दिलाने के लिए यह संकेत किया गया)

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 26:2-3
[2]हे राजा अग्रिप्पा, जितनी बातों का यहूदी मुझ पर दोष लगाते हैं, आज तेरे सामने उनका उत्तर देने में मैं अपने को धन्य समझता हूं। [3]विशेष करके इसलिये कि तू यहूदियों के सब व्यवहारों और विवादों को जानता है, अतः मैं विनती करता हूं, धीरज से मेरी सुन ले।

26:2-3 पौलुस अपना बचाव बड़े अच्छे ढंग से राजा की प्रशंसा करते हुए आरम्भ करता है। इसी प्रकार का आरम्भ उसने फेलिक्स के सामने किया था (देखें, प्रेरि. 24:10)। सांस्कृतिक रूप से ऐसे ही आरम्भ की अपेक्षा की जाती है।

26:2 ''उन सब बातों का यहूदी मुझ पर जिसका दोष लगाते हैं'' अग्रिप्पा प्प् रोम द्वारा मन्दिर और याजकों का नियन्त्रक रह चुका था, हालांकि वह रोमी था, और रोम में उसने शिक्षा पाई थी, तौभी वह यहूदी विश्वास की जटिलताओं को समझता था (देखे, प्रेरि. 26:3)।

▪**''धन्य समझता हूँ''** यह वही ''धन्य'' शब्द है जो सप्तूजैन्त में तथा धन्यवादियों में आया है (देखें, मत्ती 5:3-12; लूका 6:20-22 तथा भजन 1:1)।

26:3

NASB, NKJV	**''सब व्यवहारों और विवादों को''**
NRSV	**''सब व्यवहारों और मतभेदों को''**
TEV	**''यहूदियों के सब व्यवहारों और झगड़ों को''**
NJB	**''व्यवहारों और मतभेदों को जानता है''**

उपरोक्त वाक्यांश का पहला भाग यूनानी शब्द ''इथोन'' है *(ethōn)* जिससे अंग्रेजी शब्द ''ऐथनिक'' *(ethnic)* की उत्पत्ति होती है, अथवा यह किसी व्यक्ति समूह के सांस्कृतिक पहलु से संबंध रखता है।

दूसरा भाग यूनानी शब्द ''जेटेमाथोन'' *(dzētēmatōn)* है, जो प्रेरितों के काम पुस्तक में अक्सर इस्तेमाल में आया है तथा यहूदी रब्बियों के तर्क वितर्क व वाद विवाद को दर्शाता है (देखें, प्रेरि. 15:2; 18:15; 23:19; 25:19; 26:3)। प्रथम शताब्दी के अनेक दलों के कारण ये असामान्य शब्द नहीं थे: जैसे सदूकी दल, फरीसी दल, शम्मा और हिल्लेल, जेलोती इत्यादि।

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 26:4-8

[4]मेरा चाल-चलन आरम्भ से अपनी जाति के बीच और यरूशलेम में जैसा था, वह सब यहूदी जानते हैं। [5]यदि वे गवाही देना चाहते हैं, तो आरम्भ से मुझे पहचानते हैं कि मैं फरीसी होकर अपने धर्म के सबसे खरे पन्थ के अनुसार चला। [6]और अब उस प्रतिज्ञा की आशा के कारण जो परमेश्वर ने हमारे बापदादों से की थी, मुझ पर मुकद्दमा चल रहा है। [7]उसी प्रतिज्ञा के पूरे होने की आशा लगाए हुए, हमारे बारहों गोत्र अपने सारे मन से रात-दिन परमेश्वर की सेवा करते आए हैं: हे राजा, इसी आशा के विषय में यहूदी मुझ पर दोष लगाते हैं। 8जबकि परमेश्वर मरे हुओं को जिलाता है, तो तुम्हारे यहां यह बात क्यों विश्वास के योग्य नहीं समझी जाती?

26:4 "मेरा चाल-चलन...सब यहूदी जानते हैं" पौलुस ने यह बात अनेक बार दोहराई है (देखें, प्रेरि. 22:3-5; 23:1; 24:16; 25:8)। यरूशलेम में पौलुस ने यहूदियों के मध्य आदर्श जीवन व्यतीत किया था (देखें, प्रेरि. 26:5)।

▪ **"*अपनी* जाति के बीच"** पौलुस कहाँ पला-बढ़ा था, यह अज्ञात है। तौभी इसका संकेत दो बातों की ओर हो सकता है (1) किलिकिया के तरसुस में (2) यरूशलेम में।

26:5 "यदि" यह तीसरी श्रेणी का सशर्त वाक्य है, जिसका अर्थ है वह कार्य जो वे कर सकते हैं। इस संदर्भ में पौलुस जानता था कि यदि यहूदी लोग उसके बीते समय की साक्षी देना चाहें तो दे सकते हैं, पर देंगे नहीं।

▪ **"फरीसी होकर अपने धर्म के सबसे खरे पन्थ के अनुसार चला"** यह यहूदी धर्म का एक धार्मिक पन्थ था जो मकाबियों के काल में उदित हुआ था। यह पन्थ मौखिक और लिखित व्यवस्था व परम्पराओं के पालन में समर्पित था (देखें, प्रेरि. 5:34 में विशेष शीर्षक)।

26:6 "अब उस प्रतिज्ञा में आशा के कारण जो परमेश्वर ने हमारे बापदादों से की थी" यह पुराने नियम की भविष्यवाणियों की ओर संकेत करता है (1) मसीह का आना (2) मृतकों का जी उठना (देखें, प्रेरि. 23:6; 24:15; अयूब 14:14-15; 19:25-27; दानि. 12:2)। पौलुस "पन्थ" को अर्थात् मसीही धर्म को, पुराने नियम की परिपूर्ति के रूप में मानता था (देखें, मत्ती 5:17-19; गला. 3)।

"आशा" के लिए देखें, प्रेरि. 2:25 में विशेष शीर्षक तथा प्रेरि. 2:14 में विशेष शीर्षक "करिगमा" (*Kerygma*)

26:7 "हमारे बारहों गोत्र" याकूब की सन्तान, 12 गोत्र अभी भी यहूदियों के लिये बड़े महत्वपूर्ण थे। उत्तरी इस्राएल के दस गोत्रों में से अधिकांश लोग अश्शूरियों के दासत्व से लौटकर वापस नहीं आए (722 ई. पू.)। हम नए नियम में कुछ गोत्रों की जानकारी पाते हैं:

1. मरियम, यूसुफ और यीशु यहूदा गोत्र के थे (देखें, मत्ती 1:2-16; लूका 3:23-3; प्रका. 5:5)
2. हन्नाह आशेर के गोत्र की थी (देखें, लूका 2:36)।
3. पौलुस बिन्यामीन के गोत्र का था (देखें, रोमि. 11:1; फिलि. 3:5)।

हेरोदेस महान् को यहूदियों की इन वंशावलियों से घृणा थी, अतः उसने मन्दिर के सारे दस्तावेज एकत्रित करवा कर उन्हें जला डालने की आज्ञा दी थी। "12 गोत्रों" की जानकारी के लिए प्रेरि. 1:22 में विशेष शीर्षक देखें।

▪ **"आशा"** हम उलझन में पड़ सकते हैं कि पौलुस यहाँ किस आशा की बात करता है। अन्य सन्दर्भ पढ़कर ज्ञात होता है कि वह पुनरुत्थान की आशा है (देखें, प्रेरि. 26:8)। देखें प्रेरि. 2:25 में विशेष शीर्षक: आशा

▪ **"अपने सारे मन से रात-दिन परमेश्वर की सेवा करते आए हैं"** पौलुस अपने जाति भाइयों से पे्रम रखता था (देखें, रोमि. 9:1-3)। वह जानता था कि बड़ी कठिनाई उठाते हुए वे यहोवा (YHWH) की सेवा करने का प्रयत्न करते हैं साथ ही वह अच्छी तरह से कर्मकाण्डवाद, हठधार्मिता और विशिष्ट वर्ग वाद के खतरों से भी परिचित था।

"रात-दिन" एक मुहावरा है जो लगन और नियमितता दर्शाता है (देखें, प्रेरि. 20:31; लू. 2:37)।

26:8 ''यह आप लोगों के बीच अविश्वसनीय क्यों माना जाता है?'' यहाँ पौलुस दो प्रकार के समूहों से बातचीत करता है:

1. अग्रिप्पा और वहाँ उपस्थित यहूदी।
2. अन्य जाति जो वहाँ उपस्थित थे जैसे फेस्तुस।

▪ **''यदि''** यह प्रथम श्रेणी का सशर्त वाक्य है जो लेखक के दृष्टिकोण और उद्देश्यों के अनुसार सत्य है।

▪ **''परमेश्वर मरे हुओं को जिलाता है''** यह वाक्यांश यहूदियों की सामान्य जी उठने की आशा के बारे में बताता है (देखें, अयूब 14:14-15; 19:25-27; यशा. 25:8; 26:19; दानि. 12:2-3), परन्तु पौलुस के दिमाग में विशेषरूप से मसीह का पुनरुत्थान था (देखें, 1 कुरि. 15:1-28)। यह सुनकर सदूकी लोग अवश्य विचलित हो गए होंगे (देखें, प्रेरि. 23:1-10)।

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 26:9-11

[9]मैंने भी समझा था कि यीशु नासरी के नाम के विरोध में मुझे बहुत कुछ करना चाहिए। [10]और मैंने यरूशलेम में ऐसा ही किया; और महायाजकों से अधिकार पाकर बहुत से पवित्र लोगों को बन्दीगृह में डाला, और जब वे मार डाले जाते थे, तो मैं भी उनके विरोध में अपनी सम्मति देता था। [11]और हर आराधनालय में मैं उन्हें ताड़ना दिला-दिलाकर यीशु की निन्दा करवाता था, यहां तक कि क्रोध के मारे ऐसा पागल हो गया कि बाहर के नगरों में भी जाकर उन्हें सताता था।

26:9 ''मैंने भी समझा था'' ईगो ''मैं'' तथा ''इमाउतो'' (*egō*, "I" and *emautō*, "myself") ''मैंने'' यहाँ पौलुस अपने गलत धार्मिक उत्साह का अंगीकार करता है और मान लेता है कि यह उसके लिये परमेश्वर की इच्छा नहीं थी (देखें, 1 तीमु. 1:13)। वह पहले सोचा करता था कि यीशु के अनुयायियों को सताना, परमेश्वर की सेवा और परमेश्वर को प्रसन्न करने वाला कार्य है। तब दमिश्क के मार्ग पर उसकी विचारधारा पूर्णरूप के बदल गई (देखें, प्रेरि. 9 अध्याय)।

▪ **''नाम''** यह सामी भाषा का मुहावरा है जो व्यक्तित्व को दर्शाता है (देखें, प्रेरि. 3:6,16)। यीशु का नाम जादुई फार्मूला नहीं, परन्तु उसके साथ व्यक्तिगत संबंध है।

▪ **''यीशु नासरी''** के लिए प्रेरि. 2:22 में विशेष शीर्षक देखें।

26:10 ''पवित्र लोग'' शाब्दिक रूप से वे पवित्र जन हैं। अब वास्तव में पौलुस जान गया कि जिन्हें वह सताता और मरवाता था, वे ही पवित्र और परमेश्वर के जन हैं। दमिश्क के मार्ग पर जो दर्शन पौलुस ने देखा उससे उसकी विचारधारा और जीवन ही बदल गया, और उसे एक नया आध्यात्मिक प्रकाश प्राप्त हुआ।

''पवित्र लोगों'' की विस्तृत जानकारी के लिए प्रेरि. 9:13 में विशेष शीर्षक देखें।

▪ **''अधिकार प्राप्त कर''** पौलस, सैनहेड्रिन के लिए "आधिकारिक" सताने वाला था।

▪ **''जब वे मार डाले जाते थे''** यह उसके सताव की गहराई को दर्शाता है। ''पन्थ'' अर्थात् मसीही लोग उसके लिए छोटी व हल्की बात नहीं बल्कि बड़ी गम्भीर बात थी; यह मरने-जीने का प्रश्न था और अभी भी है।

▪ **''उनके विरोध में अपना मत रखा''** यूनानी भाषा में सम्मत्ति देना या वोट देना एक टैक्नीकन शब्द है, चाहे वोट सन्हेद्रिन में दिया जाए अथवा स्थानीय आराधनालय में दिया जाए। स्थानीय आराधनालय में मृत्यु के संबंध में वोट नहीं दिया जा सकता था, इसलिए यह वोट सन्हेद्रिन में दिया गया। यदि वोट सन्हेद्रिन में दिया गया तो इसका

अर्थ है पौलुस शादी-शुदा था। मूल रूप से वोट देने का अर्थ ''पत्थर'' है जो वोट डालने में प्रयुक्त किया जाता था; और यह पत्थर या तो काला होता था या फिर श्वेत पत्थर होता था (देखें प्रका. 2:17)।

26:11 ''ज़ोर लगाया'' यह यूनानी शब्द की अपूर्ण कालिक क्रिया है जिसका अर्थ है, दबाव डालना अथवा बाध्य करना (देखें, प्रेरि. 28:19), परन्तु यहाँ पर प्रयत्न करने के संबंध में यह प्रयुक्त हुआ है। यह भूतकाल में किए कार्य के लिए दोहराने का संकेत देता है।

▪ **''परमेश्वर की निन्दा''** शाऊल मसीहियों पर दबाव डालता था कि वे सबके सामने यीशु को मसीह मानें, और फिर वह उन्हें दोषी ठहराता था। पहले के सातवों में विश्वासी लोगों पर दबाव डाला जाता था कि मसीह पर अपने विश्वास का इन्कार करें, परन्तु यहाँ पर सांस्कृतियाँ परिस्थितियाँ भिन्न थीं।

NASB **''अत्यन्त क्रोध से भरकर''**
NKJV **''बहुत अधिक क्रोधित होकर''**
NRSV **''मैं अत्यन्त क्रोध में भरकर''**
TEV **''बहुत उत्तेजित होकर''**
NJB **''उनके प्रति मेरा क्रोध अति प्रचण्ड था''**

यह एक बहुत ही तीव्र क्रिया विशेषण ("बहुत अधिक") और कृदंत (वर्तमान मध्य [प्रतिनिधि]) है। फेस्तुस पौलुस के लिए एक ही मूल का उपयोग करता है (अर्थात, प्रेरितों के काम 26:24 में बड़बड़ाना)

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 26:12-18
[12]इसी धुन में जब मैं महायाजकों से अधिकार और आज्ञा-पत्र लेकर दमिश्क को जा रहा था। [13]तो हे राजा, मार्ग में दोपहर के समय मैंने आकाश से सूर्य के तेज से भी बढ़कर एक ज्योति अपने और अपने साथ चलनेवालों के चारों ओर चमकती हुई देखी। [14]और जब हम सब भूमि पर गिर पड़े, तो मैंने इब्रानी भाषा में मुझसे यह कहते हुए एक शब्द सुना कि हे शाऊल, हे शाऊल, तू मुझे क्यों सताता है? पैने पर लात मारना तेरे लिये कठिन है। [15]मैंने कहा, हे प्रभु तू कौन है? प्रभु ने कहा, मैं यीशु हूं, जिसे तू सताता है। [16]परन्तु तू उठ, अपने पांवों पर खड़ा हो; क्योंकि मैंने तुझे इसलिये दर्शन दिया है कि तुझे उन बातों का भी सेवक और गवाह ठहराऊं, जो तूने देखी हैं, और उनका भी जिनके लिये मैं तुझे दर्शन दूंगा। [17]और मैं तुझे तेरे लोगों से और अन्यजातियों से बचाता रहूंगा, जिनके पास मैं अब तुझे इसलिये भेजता हूं। 18कि तू उनकी आंखें खोले कि वे अंधकार से ज्योति की ओर, और शैतान के अधिकार से परमेश्वर की ओर फिरें; कि पापों की क्षमा, और उन लोगों के साथ जो मुझ पर विश्वास करने से पवित्र किए गए हैं, मीरास पाएं।'

26:12 लूका तीन बार पौलुस की व्यक्तिगत गवाही को प्रेरितों के काम 9:1-31 में दर्ज करता है; 22:3-21, और यहाँ। परमेश्वर की दया और शाऊल के प्रति चुनाव इतना स्पष्ट है। यदि मसीह में परमेश्वर इस व्यक्ति को क्षमा और उपयोग कर सकता है, तो वह क्षमा कर सकता है और किसी का भी उपयोग कर सकता है!

26:13 प्रेरि. 9:3 में सम्पूर्ण टीका देखें।
जिन तीन स्थलों पर पौलुस की साक्षी का उल्लेख है उनमें कुछ भिन्नताएँ भी दिखाई देती हैं, पर ये भिन्नताएँ साक्षी को और अधिक स्पष्ट करती हैं। यही बात प्रेरितों के काम के उपदेशों में भी पाई जाती है।

26:14, प्रेरि. 9:4 में पूरी टीका देखें।
फ्रैंक स्टैग, अपनी पुस्तक ''न्यू टैस्टामैन्ट थियोलाजी'' (Frank Stagg, *NewTestament Theology)* में ''यीशु और उसकी कलीसिया'' के परस्पर संबंध के विषय में बड़ा शिक्षात्मक पैराग्राफ देते हैं:

“न्याय के संबंध में सबसे महत्वपूर्ण सच्चाई यह है कि मसीह के सन्दर्भ में हमारा न्याय होगा। दूसरे शब्दों में यह लोगों का न्याय होगा। उसके साथ हमारी सच्ची संगति का प्रमाण उसके लोगों के साथ हमारा संबंध है। उनकी सेवा करना स्वयं उसी की सेवा करने के समान है और उनका तिरस्कार करना उसी का तिरस्कार करने के बराबर है (देखें मत्ती 25:31-46)। नया नियम कभी भी किसी को अनुमति नहीं देता कि वह दूसरों से संबंध तोड़कर मसीह के साथ संबंध जोड़े। उन्हें सताना स्वयं उसे सताना है (प्रेरि. 9:1-2,4-5; 22:4,7-8; 26:10-11,14-15)। भाइयों के विरुद्ध पाप करना मसीह के विरुद्ध पाप करना है (1 कुरि. 8:12)। हालांकि हमारा उद्धार हमारे कार्यों के आधार पर नहीं, तौभी हमारा न्याय हमारे कार्यों के आधार पर होगा क्योंकि ये मसीह के साथ हमारी सच्ची संगति और उसके अनुग्रह को दर्शाते हैं। न्याय उनके प्रति दयालु होता है जो न्याय स्वीकार करते हैं, और न्याय उनके प्रति दया दिखाता है जो दयालु हैं (मत्ती 5:7)” (पेज 333)

▪ **“इब्रानी बोली”** प्रेरितों के काम में लिखित पौलुस की तीन व्यक्तिगत साक्षियों में केवल यही वह साक्षी है जिसमें यीशु द्वारा अरामी भाषा में बोलने का जिक्र है। देखें प्रेरि. 22:2 में पूरी टीका।

▪ **“शाऊल, शाऊल”** प्रेरि. 26:14 का अन्तिम आधा और 26:15 का अन्तिम भाग, साथ ही प्रेरि. 26:16-18 यीशु द्वारा पौलुस से कहे गए वे शब्द हैं जो उसने दमिश्क के मार्ग पर कहे।

▪ **“पैने पर लात मारना तेरे लिये कठिन है”** इस सन्दर्भ में यह वाक्यांश अजीब सा लगता है, संभवतः इसलिए क्योंकि यह यहूदी नहीं बल्कि यूनानी/लैटिन नीतिवचन है। पौलुस सदा यह जानता था कि किन लोगों से वह संपर्क कर रहा है और कैसे उनसे संपर्क किया जाना चाहिए। यह पद इन बातों की ओर संकेत करता है:

1. पैना एक छड़ी होती है जिसके आगे कील लगी होती है इसे बैल को हाँकने वाला किसान हल चलाते या बैलगाड़ी चलाते समय प्रयुक्त करता है।
2. बैलगाड़ी अथवा वैगन के आगे लगी आड़ ताकि पशु लात न मार सके।

यह कहावत, दिव्य हस्ताक्षेप के विरुद्ध, मनुष्य के द्वारा किये गये व्यर्थ प्रयास को व्यक्त करने के लिये प्रयुक्त की जाती है।

26:15 प्रेरि. 9:5 में पूर्ण टीका देखें।

▪ **“यीशु जिसे तू सताता है”** यह यीशु और उसकी कलीसिया के बीच घनिष्ट संबंध को दर्शाता है (देखें, मत्ती 10:40; 25:40, 45)। कलीसिया को सताना स्वयं उसे सताना है।

26:16 “परन्तु उठ, अपने पाँव पर खड़ा हो” यह आदेशात्मक कथन है। यह बहुत कुछ भविष्यद्वक्ता बनने की यिर्मयाह 1:7-8 तथा यहेजकेल 2:1,3 की बुलाहट के समान प्रतीत होता है।

▪ **“मैंने तुझे इसलिए दर्शन दिया है”** परमेश्वर ने पौलुस के लिये विशेष कार्य निर्धारित किए थे। पौलुस का मन-परिवर्तन और उसकी बुलाहट प्रतीकात्मक नहीं है, परन्तु अलौकिक व असाधारण हैं। इस बुलाहट में परमेश्वर की दया सामथ्र्य के साथ प्रकट की गई, साथ ही इसमें राज्य की सेवा करने और राज्य की उन्नति के लिए परमेश्वर का चुनाव प्रकट हुआ।

▪ **“मैंने तुझे दर्शन दिया है ...मैं तुझे दर्शन दूंगा”** ये दोनों बातें ‘होराओ” ;ीवतंवद्ध का हिस्सा हैं। पहला हिस्सा वर्तमान कालिन तथा दूसरा हिस्सा भविष्यकाल से संबंध रखता है। यहाँ मानों यीशु पौलुस से प्रतिज्ञा करता है कि वह भविष्य में भी उसे दर्शन देता रहेगा और उससे बातचीत किया करेगा। पौलुस ने अपनी सेवकाई के दौरान बहुत से ईश्वरीय दर्शन देखे थे (देखें, प्रेरि. 18:9-10; 22:17-21; 23:11; 27:23-24)। पौलुस ने अरब में अपने प्रशिक्षण काल का भी उल्लेख किया है, जिसके दौरान वह यीशु द्वारा शिक्षित किया गया था (देखें, गला. 1:12,17-18)।

▪ **“ठहराऊँ”** इसका शाब्दिक अर्थ है “अपने हाथों में लेना।” यह नियति को दर्शाने वाला मुहावरा है (देखें, प्रेरि. 22:14; 26:16)।

▪ **“सेवक और गवाह”** पहले शब्द सेवक का शाब्दिक अर्थ है जो जहाज के निचले भाग में चलाने का काम करता है। फिर यह शब्द मुहावरे के तौर पर नौकर के लिए प्रयुक्त होने लगा।

दूसरा शब्द यूनानी का मारटूस *(martus)* शब्द है जिससे अंग्रेजी शब्द “मार्टर” ;उंतजनतद्ध या शहीद बना है। इसके दो अर्थ हो सकते हैं:

1. गवाह (देखें, लूका 11:48; 24:48; प्रेरि. 1:8,22; 5:32; 10:39, 41; 22:15)
2. शहीद (देखें, प्रेरि. 22:20)।

ये दोनों अर्थ व्यक्तिगत अनुभव हैं और अधिकांश प्रेरितों और विश्वासियों ने युग युग से गवाह और शहीद होने का अनुभव किया है।

26:17 “तुझे बचाऊंगा ” यह वर्तमान कालीन क्रिया है। इसका आमतौर पर अर्थ है चुन लेना। सामान्य तौर पर इसका अनुवाद “छुड़ाना या बचा लेना” किया जाता है (देखें, प्रेरि. 7:10,34; 12:11; 23:27)। परमेश्वर अपने लोगों की चिन्ता करता है, यह यहाँ पर स्पष्ट है। पौलुस ने इस प्रकार के बहुत दर्शन देखे कि उसे बचाया जाएगा, जिनसे उसे प्रोत्साहन प्राप्त हुआ। यह संभवतः सप्तूजैन्त के पाठांश यशा. 48:10 तथा यिर्मयाह 1:7-8,19 की ओर संकेत करता है।

▪ **“*यहूदियों* से और अन्यजातियों से”** पौलुस पर इन दोनों ही समूहों की ओर से सताव आने की संभावनाएँ थीं (देखें, 2 कुरि. 11:23-27)।

▪ **“जिनके पास मैं तुझे भेजता हूँ”** प्रेरि. 26:15 की तरह यहाँ पर “मैं” पर बल है *(egō)* । यहाँ पर क्रिया शब्द “अपौस्टैलो” (apostello) है जिससे अंग्रेजी शब्द “अपौस्ल” *(Apostle)* निकला है, जिसका अर्थ है भेजा हुआ। जिस प्रकार पिता ने यीशु को भेजा, उसी प्रकार यीशु अपने गवाहों अथवा प्रेरितों को भेजता है (देखें, यूहन्ना 20:21)।

26:18 “ खोलना...मोड़” ये अनिश्चित कालीन क्रियाएँ हैं। यह यशा. 42:7 की ओर संकेत हो सकता है। मसीह अंधों की आत्मिक आँखें खोलेगा (देखें, यूहन्ना 9)। संकल्प के साथ पश्चात करने तथा विश्वास करने से पहले सुसमाचार का ज्ञान होना और समझ होना आवश्यक है। शैतान हमारे मन और हृदयों को बन्द करने का प्रयास करता है (देखें, 2 कुरि. 4:4) तथा पवित्र आत्मा उन्हें खोलने का प्रयत्न करता है (देखें, यूहन्ना 6:44, 65; 16:8-11)।

▪ **“अंधकार से...शैतान के अधिकार से”** यहाँ समान्तरता पर ध्यान दें। “अधिकार” यूनानी शब्द “एग्जौसिया” (*exousia*) है जिसका अर्थ अक्सर अधिकार रखना था प्रभुत्व करना लगाया जाता है (देखें, एन के जे वी, एन आर एस वी, टी ई वी) (NKJV, NRSV, TEV) संसार व्यक्तिगत बुराईयों के अधीन है (देखें, इफि. 2:2; 4:14; 6:10-18; 2 कुरि. 4:4; कुलु. 1:12-13, देखें प्रेरि. 5:3 में विशेष शीर्षक)।

पुराने नियम में, विशेषकर यशायाह की भविष्यद्वाणियों में, (देखें, प्रेरि. 2:31 में विशेष शीर्षक) मसीह आएगा और अन्धों की आँखें खोलेगा। यह शारीरिक भविष्य कथन और साथ ही सत्य की उपमा दोनों है (देखें, यशा. 29:18; 32:3; 35:5; 42:7, 16)।

विशेष शीर्षक: अधिकार

I. लूका द्वारा उपयोग-लूका द्वारा एक्ज़ौसिया (exousia) शब्द का प्रयोग बड़ा रोचक है (इसका अर्थ है, अधिकार, सामर्थ या कानूनी अधिकार)

1. लूका 4:6 में शैतान दावा करता है कि वह यीशु को अधिकार दे सकता है।
2. लूका 4:32,36 में यहूदी चकित थे कि यीशु का वचन अधिकार सहित था।
3. लूका 9:1 में यीशु ने अपने चेलों को सामर्थ्य और अधिकार दिया।
4. लूका 10:19 में उसने 70 चेलों को अधिकार दिया।
5. लूका का 20:2,8 में यीशु के अधिकार के विषय में प्रश्न किया गया।
6. लूका 22:53 में अंधकार को अधिकार दिया गया कि यीशु को मार डाले।

मत्ती 28:18 में यीशु के अधिकार का अद्‌भुत कथन पाया जाता है, "स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है।"

यीशु ने कहा कि उसे अधिकार प्राप्त है क्योंकि :

1. परमेश्वर के वचन इन अवसरों पर उसके पास पहुंचे हैं :
   a. बपतिस्मे के समय (लूका 3:21-22)
   b. रूपांतर के समय (लूका 9:35)
2. पुराने नियम की पूर्ण हुई भविष्यवाणियाँ :
   a. यहूदा गोत्र से (उत्प. 49:10)
   b. यिशै के घराने से (2 शमू. 7)
   c. बैतलहम में जन्म (मीका 5:2)
   d. चौथे रोमी साम्राज्य के काल में (दानिय्येल 2)
   e. कंगालों, अंधों और आवश्यकता ग्रस्त लोगों की सहायता (यशायाह)
3. उसके द्वारा दुष्टात्माओं को निकाला जाना शैतान और उसके राज्य पर उसके अधिकार और सामर्थ का प्रकाशन है।
4. उसका पुनरूत्थान, जीवन और मृत्यु पर उसका अधिकार प्रकट करता है।
5. उसके सारे आश्चर्यकर्म निम्न बातों पर उसके अधिकार और सामर्थ्य को दर्शाते हैं :
   a. प्रकृति पर उसका अधिकार
   b. भावनाओं पर उसका अधिकार
   c. चंगाई
   d. मन की बातें जान लेना
   e. मछलियाँ पकड़ना

II. मसीही महिलाओं से संबंधित **"अधिकार"** का पौलुस द्वारा उपयोग **:**

स्त्रियों के सिर ढकने के विषय में अधिकार संबंधी विषय की चर्चा 1 और 2 कुरिन्थियों में की गई है। निम्नलिखित बातें मेरी टिप्पणियों से ली गई हैं

1 कुरि. 11:10 "इसलिये स्त्री को उचित है कि अधिकार अपने सिर पर रखे।"

1 कुरिन्थियों में अधिकार का उपयोग, अनेक प्रकार से समझा जा सकता है। इस संदर्भ में मुख्य बात है कि "अधिकार" (*exousia*) किस बात का प्रतिनिधित्व करता है।

पहली बात : ध्यान में रखिए कि अक्सर "अधिकार" सामर्थ्य (*dunamis*) से संबंध रखता है। औट्टो बेट्ज़ (*Otto Betz*) अपनी पुस्तक "न्यू इंटरनेशनल डिक्शनरी ऑफ न्यू टैस्टामैंट थियोलॉजी", भाग-2, पेज 606-611 (*New International Dictionary of New Testament Theology*) में अधिकार (*exousia*) के
संबंध में बड़ा रोचक लेख लिखते हैं ; उसी पर आधारित पांच उदाहरण इस प्रकार हैं :

"यह नए नियम की विशेषता है कि अधिकार और सामर्थ्य दोनों मसीह के कार्य से संबंध रखते हैं, जिसका फल नई सांसारिक सामर्थ्य और विश्वासियों को सामर्थ्य से परिपूर्ण करना है" (पेज 609)

"विश्वासियों का अधिकार मसीह के शासन और सब प्रकार की सामर्थ्य को निरर्थक करने में पाया जाता है। इसमें स्वतन्त्रता और सेवा दोनों बातें हैं।" (पेज 611)
"वह कुछ भी करने के लिए स्वतन्त्र है (1 कुरि. 6:12; 10:23 *exestin*) ; यह भावना पहले कोरिन्थ के जोशीले लोगों में पाई जाती थी जो किसी पंथ के सदस्य थे, परन्तु इसे पौलुस ने अपना लिया और इसे अपने लिए सही समझा" (पेज 611)

"परन्तु व्यवहारिक रूप से इस काल्पनिक स्वतंत्रता का उपयोग यह विचार करते हुए किया जाने लगा कि अन्य मसीहीयों के लिए और सम्पूर्ण कलीसिया के उद्धार के लिए क्या करना उचित है ताकि भविष्य में सब उद्धार पांए (1 कुरि. 6:12; 10:23)" (पेज 611)

"सब वस्तुएँ मेरे लिए उचित तो हैं, परन्तु सब लाभ कि नहीं : सब वस्तुएँ मेरे लिए उचित तो हैं, परन्तु सब वस्तुओं से उन्नति नहीं। कोई अपनी ही भलाई को नहीं, वरन दूसरों की भलाई को ढूँढें" (1 कुरि. 10:23 क्रमशः)। इन उद्धरणों में नो उद्धरण पाए जाते हैं वे संभवतः कुरिन्थ के स्वतन्त्र विचारधारा वाले मनुष्यों के नारे थे। पौलुस उनके विचारों को सही तो मानता था, परंतु उनसे कहता था कि यह संपूर्ण सत्य नहीं है।" (पेज 611)

पौलुस कुरिन्थ के कलीसिया में अक्सर इन दो शब्दों का उपयोग करता था :

1. अधिकार *(exousia)* : 1 कुरि. 7:37; 9:4,5,6,12 (दो बार),18; 11:10; 2 कुरि. 13:10
2. सामर्थ्य *(dunamis)* : 1 कुरि. 1:18; 2:4-5; 4:19-20; 5:4; 15:24,43; 2 कुटि. 4:7; 6:7; 8:3 (दो बार); 12:9; 13:4 (दो बार)

अधिकार और सामर्थ्य रूढ़िवादी और स्वतंत्रवादी दोनों के लिए गम्भीर विषय थे। पौलुस इन दोनों चरमसीमाओं के बीच का मार्ग अपनाने की कोशिश करता है। इस संदर्भ में मसीही महिलाओं को प्रोत्साहित किया जाता है कि वे परमेश्वर द्वारा निर्धारित सृष्टि-क्रम का पालन करें, (अर्थात मसीह-मनुष्य-स्त्री) ताकि सुसमाचार की तथा राज्य की उन्नति हो। 1 कुरि. 11:11-12 में पौलुस पति-पत्नी के मूल व्यवहार (उत्प. 1:26-27; 2:18) का उल्लेख करता है। यह धर्म वैज्ञानिक रूप से इसके लिए ख़तरनाक है :

1. इस संदर्भ में एक पद अलग करना
2. प्रथम शताब्दी के स्त्री-पुरुष और पति-पत्नी के आपसी संबंधों के मुद्दे पर प्रत्येक संस्कृति की प्रत्येक शताब्दी में संस्थागत व्यवस्थित ढांचे को लागू करना।
3. मसीही स्वतंत्रता और मसीही सामूहिक वाचा गत उत्तरदायित्व के बीच पौलुस के संतुलन को खो देना।

मसीही महिलाओं ने कहाँ से एक अगुबे के रूप में कलीसिया में आराधना करने की स्वतंत्रता पाई? निश्चय ही आराधनालयों (*synagogue*) से नहीं पाई। क्या यह प्रथम शताब्दी के रोमी समाज की संस्कृति का रिवाज था? यह निश्चय ही संभव हो सकता है कि प्रथम शताब्दी के रोमी समाज में ऐसा प्रचलित हो, और मेरे विचार से इस अध्याय के अनेक पहलुओं को समझाने में यह सहायक है। फिर, यह भी हो सकता है कि सुसमाचार की सामर्थ्य अर्थात् परमेश्वर का स्वभाव जो पतित हो गया था, उसका पुनर्निर्माण, इसका स्रोत हो। मानवीय जीवन और समाज में चकित कर देने वाली समानता प्रत्येक क्षेत्र में दिखाई देती है, परंतु इस समानता का व्यक्तिगत रूप से दुरुपयोग भी हो सकता है। इस अनुचित बात के लिए पौलुस चेतावनी देता है।

एफ. एफ. ब्रूस की पुस्तक (F. F. Bruce, *Answers to Questions*) ने वास्तव में मेरी बहुत सहायता की है कि मैं आधुनिक पश्चिमी कलीसिया की परम्पराओं के विवादास्पद विषयों को समझ सकूँ। एक टीकाकार होने के नाते मैं हमेशा सोचा करता था कि नारियों का सिर ढकना परमेश्वर के द्वारा दिए गए

वरदान को दर्शाने के लिए है (अथवा उत्प. 1:26-27 की बराबरी को दर्शाने के लिए है, न अपने पति के अधिकार को दर्शाने के लिए है। परंतु मैंने उन स्रोतों में इस व्याख्या को नहीं पाया जिन्हें मैं इस्तेमाल करता था, इसलिए मैं इसका प्रचार करने और अपनी कमेंट्री में इसे लिखने में झिझकता था। मुझे आज तक वह उत्साह और स्वतंत्रता याद है, जब मैंने पढ़ा कि एफ. एफ. ब्रूस भी यही बात (F. F. Bruce) (*Answers to Questions* p.95) सोचता था (देखें इस पुस्तक का पेज 95)। मैं सोचता हूँ कि सारे विश्वासी मसीह के पूर्णकालिक व वरदान प्राप्त सेवक होने के लिए बुलाए गए हैं (इफि. 4:11-12)।

Copyright © 2014 Bible Lessons International

■ **"प्रकाश की ओर...परमेश्वर की ओर"** समान्तरता पर ध्यान दें। प्राचीन मानव अंधकार से डरता था। वह बुराई की उपमा कहलाने लगा अर्थात् अंधकार बुराई का प्रतीक बन गया, परन्तु दूसरी ओर सच्चाई के लिए, चंगाई और पवित्रता के लिए रूपक बन गया। यूहन्ना 3:17-21 सुसमाचार की ज्योति का एक अच्छा पाठांश है जहाँ समान्तरता दिखाई गई है।

■ **"पा सकें"** यूनानी पाठ में (सकें) शब्द नहीं पाया जाता है। केवल एक ही शर्त पाने के लिए है "कि वे मुझ में विश्वास करें" तथा इसे यूनानी वाक्य (TEV,NJB)के अन्त में बल देने के लिए रखा गया है। परमेश्वर की सारी आशीषें विश्वास के द्वारा प्राप्त होती हैं (देखें, यूहन्ना 1:12) और अनुग्रह से प्राप्त होती हैं (देखें, इफि. 2:8-9)। पुराने नियम की शर्त वाली वाचा के विपरीत यह नए नियम की वाचा है।

■ **"पापों की क्षमा"** लूका इस शब्द "एफैसिस *(aphesis)* को अक्सर प्रयुक्त करता हैः-

1. लूका 4:18 में यह शब्द यशा. 61:1 के उद्धरण के रूप में प्रयुक्त हुआ है जहाँ इसका अर्थ छुड़ाना है और जो सप्तूजैन्त (LXX) में निर्ग. 18:2 और लैव्य. 16:26 के उपयोग को दर्शाता है।
2. लूका 1:77; 3:3; 24:47; प्रेरि. 2:38; 5:31; 10:43; 13:38; 26:18 में इसका अर्थ "पाप के दोष को दूर करना" है, जो सप्तूजैन्त (LXX) में व्यवस्थाविवरण 15:3 के प्रयोग को दर्शाता है और जहाँ इस शब्द का प्रयोग कर्जा माफ करने के रूप में किया गया है।

लूका द्वारा प्रयोग किया जाना यिर्मयाह 31:34 की नए नियम की वाचा को प्रकट कर सकता है।

■ **"मीरास पाएँ"** यहाँ यूनानी शब्द "क्लेरास" (*klēros*) प्रयुक्त हुआ है जो चिट्ठियाँ डालने द्योतक है (देखें, लैव्य. 16:8; योना 1:7; प्रेरि. 1:26) ताकि मीरास पता लगा सकें जैसा कि उत्पत्ति 48:6; निर्गमन 6:8 और यहोशू 13:7-8 में पाया जाता है। पुराने नियम में लेवी गोत्र के लिए कोई मीरास नहीं थी, उनके लिए केवल 48 लैवीय नगर थे (देखें व्यवस्थाविवरण 10:9; 12:12), परन्तु उनकी मीरास स्वयं परमेश्वर ही था (देखें, गिनती 18:20)। अब नए नियम में सारे विश्वासी लोग पुरोहित हैं (देखें, 1 पत. 2:5,9; प्रका. 1:6)। तो प्रभु यहोवा (YHWH) हमारी मीरास है, और हम उसकी सन्तान हैं (देखें, रोमियों 8:15-17)।

■ **"जो पवित्र किए गये हैं"** यह पूर्ण कालिक क्रिया है। विश्वासी लोग मसीह पर विश्वास लाने से पवित्र किए गए और पवित्र किये जाते रहेंगे (देखें, प्रेरि. 20:21)। प्रेरि. 9:32 में विशेष शीर्षक देखें। न तो शैतान और न ही शैतानी ताकतें उनको अलग कर सकेंगी (देखें, रोमियों 8:31-39)।

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 26:19-23

[19]अतः हे राजा अग्रिप्पा, मैंने उस स्वर्गीय दर्शन की बात न टाली। [20]परन्तु पहले दमिश्क के, फिर
यरूशलेम के, और तब यहूदिया के सारे देश में रहनेवालों को, और अन्यजातियों को समझाता रहा कि
मन फिराओ और परमेश्वर की ओर फिरकर मन फिराव के योग्य काम करो। [21]इन बातों के कारण यहूदी
मुझे मन्दिर में पकड़ के मार डालने का यत्न करते थे। [22]परन्तु परमेश्वर की सहायता से मैं आज तक बना हूं
और छोटे बड़े सभी के सामने गवाही देता हूं और उन बातों को छोड़ कुछ नहीं कहता, जो भविष्यद्वक्ताओं

और मूसा ने भी कहा कि होनेवाली हैं। [23]**कि मसीह को दुःख उठाना होगा और वही सबसे पहले मरे हुओं में से जी उठकर, हमारे लोगों में और अन्यजातियों में ज्योति का प्रचार करेगा।**

26:19 ''अतः राजा अग्रिप्पा'' प्रेरि. 25:13 में टिप्पणी देखें। पौलुस इस मनुष्य को सुसमाचार सुनाने का प्रयत्न करता है (देखें, प्रेरि. 26:26-29)।

■ **''मैं अवज्ञाकारी साबित नहीं हुआ''** यूनानी शब्द ''पीथो'' (*peithō*) विश्वास की देवी के नाम से बना है। इस सन्दर्भ में इसमें एक यूनानी अक्षर का अभाव है, जो इस देवी के अस्तित्व का इंकार करता है, इसलिये इस शब्द का अर्थ ''आज्ञा उल्लंघन'' को दर्शाता है (देखें, लूका 1:17; रोमि. 1:30; 2 तीमु. 3:2; तीतुस 1:16; 3:3)। अतः एक प्रकार से यूनानी बोलचाल में किसीं का बलपूर्वक इंकार करने का यह एक तरीका था, परन्तु इस सन्दर्भ में यह पौलुस द्वारा आज्ञापालन करने का अंगीकार है।

■ **''स्वर्गीय दर्शन''** यह पौलुस के द्वारा जी उठे हु ुए महिमान्वित मसीह के साथ दमिश्क के मार्ग पर हुई भेंट की ओर संकेत करता है।

26:20 ''दमिश्क...यरूशलेम'' पौलुस की दमिश्क में सेवकाई के लिए प्रेरि. 9:19-25,27 तथा उसकी यरूशलेम की सेवकाई के लिए प्रेरि. 9:26-30 तथा यहूदियों की सेवकाई के लिए 9:31 देखें।

■ **''मन फिराओ और परमेश्वर की ओर फिरो''** पौलुस का सन्देश (प्रेरि. 20:21) उसी प्रकार का था जैसा:

1. यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का था (देखें, मत्ती 3:1-12; मर. 1:4-8)।
2. यीशु मसीह का था (देखें, मरकुस 1:15)।
3. पतरस का था (देखें, प्रेरि. 3:16,19)।

यूनानी शब्द मन फिराने का अर्थ है मन का परिवर्तन। इब्रानी मन फिराने का अर्थ कार्यों में परिवर्तन। सच्चे मन-फिराव में ये दोनों बातें सम्मिलित होती हैं। प्रेरि. 2:38 में विशेष शीर्षक देखें। उद्धार पाने की नई वाचा की (साथ ही पुरानी वाचा की भी) दो मुख्य शर्तें हैं - मन फिराना (पाप से और स्वयं से तौबा) और विश्वास करना (मसीह में परमेश्वर की ओर फिरना)।

■ **''मन फिराव के योग्य काम करो''** एक विश्वासी की जीवन शैली के द्वारा उसके आरम्भिक विश्वास के समर्पण की पुष्टि होती है (देखें, मत्ती 3:8; लूका 3:8; इफि. 2:8-10; याकूब, और 1यूहन्ना की पहली पत्री)। परमेश्वर ऐसे लोगों को चाहता है जो उसका स्वभाव प्रकट करने वाले हों। विश्वासी लोगों को मसीह के समान जीवन जीने के लिये बुलाया गया है (देखें, रोमियों 8:28-29; गलाः 4:19; इफि. 1:4; 2:10)। सुसमाचार यह है:

1. स्वागत करने वाला व्यक्ति है।
2. उस व्यक्ति के विषय में सच्चाई से विश्वास करना।
3. वैसा जीवन व्यतीत करना जैसा वह व्यक्ति व्यतीत करता है।

26:21 यह पौलुस की धर्म वैज्ञानिक विचारधारा नहीं परन्तु उसका प्रचार था कि ''अन्य जाति'' आएँ और शामिल हों (देखें, प्रेरि. 26:20) मन्दिर में इसी बात से दंगा उत्पन्न हुआ।

■ **''मार डालने का यत्न करते थे''** यह एक अपूर्ण मध्य (सांकेतिक) सूचक (बार-बार प्रयास किया गया) एक असामन्य मध्य अनियत (मारने के लिए) के साथ है। एशिया से (देखें प्रेरी 9:24) यहूदियों (देखें प्रेरी 20:3,19; 21:27,30) ने कई बार पॉल को मारने की कोशिश की।

26:22 ''छोटे-बड़े सभी के सामने गवाही देता हूँ'' यह सामी भाषा का मुहावरा है। यह पौलुस का विश्वास वचन था (जिस प्रकार पतरस का था, देखें, प्रेरि. 10:38) कि परमेश्वर की भाँति वह भी किसी मनुष्य का पक्षपात नहीं

करता (देखें, व्यवस्थाविवरण 10:17; 2 कुरि. 19:7; प्रेरि. 10:34 में पूरी टीका देखें)। वह सब मनुष्यों में जाकर प्रचार करता था।

▪ **"उन बातों को छोड़ कुछ नहीं कहता जो भविष्यद्वक्ताओं और मूसा कहा"** पौलुस बताता है कि उसका सन्देश और सुनने वाले (अर्थात् अन्यजाति) नया परिवर्तन नहीं परन्तु पुराने नियम की भविष्यद्वाणी है। वह मात्र पुराने नियम की आज्ञाओं, मार्गदर्शनों और सच्चाईयों का पालन कर रहा है (देखें, प्रेरि. 1:8 में विशेष शीर्षक)।

26:23 ध्यान दें कि पौलुस के सन्देश में तीन बातें हैं:

1. मसीह ने मानव जाति की क्षमा के लिए दुख उठाया
2. मसीह का जी उठना, सब विश्वासियों के जी उठने का प्रथम फल है।
3. यह सुसमाचार यहूदी और अन्यजाति सबके लिये है।

ये तीन धर्म वैज्ञानिक पहलू पद 20 के साथ जोड़े जाने चाहिए जिससे हमें पता चले कि हम मसीह को कैसे ग्रहण कर सकते हैं अर्थात् पश्चाताप करके, स्वयं का और पापों का परित्याग करके, मसीह पर विश्वास लाकर, मसीह में परमेश्वर की ओर फिरने के द्वारा।

▪ **"मसीह को दुख उठाना होगा"** प्रेरितों के उपदेशों की मूल बातों की धर्म वैज्ञानिक जानकारी के लिए देखें प्रेरि. 2:14 में विशेष शीर्षक। मसीह को दुख उठाना होगा, यह बात यहूदियों के लिये ठोकर का कारण थी (देखें,1 कुरि. 1:23), परन्तु मसीह का दुख उठाना पुराने नियम की भविष्यद्वाणी थी (देखें, उत्पत्ति 3:15; भजन 22; यशा. 53)। यही सच्चाई लूका 24:7,26,44-47 में भी पाई जाती है।

यूनानी का शब्द "ख्रीस्त" इब्रानी भाषा के "मसीह" शब्द को दर्शाता है। ये समानार्थी हैं। पौलुस बताता है कि यीशु जो सलीब पर चढ़ाया गया था, सचमुच में मसीह अर्थात् अभिषिक्त जन था (देखें, प्रेरि. 2:36; 3:6,18,20; 4:10,26; 13:33; 17:3, 26:23; प्रेरि. 2:31 में विशेष शीर्षक "मसीह" देखें)

▪ **"सबसे पहले *उसके* मरे हुओं में से जी उठकर"** रोमियों 1:4 तथा इस पद के कारण एक भ्रान्त-शिक्षा आरम्भिक कलीसिया में प्रचलित हो गई थी जिसे ष्।कवचजपवदपेउष् (ग्रहण किया जाना) कहते हैं (देखें, पुस्तक के अन्त में शब्दकोष)। इस भ्रान्त शिक्षा के अनुसार, मनुष्य यीशु को भला जीवन व्यतीत करने के फलस्वरूप मृतकों में से जीवित होने का पुरुस्कार दिया गया है। परन्तु यह शिक्षा उन सब पाठांशों की अनदेखी करती है जो मसीह के पूर्व-अस्तित्व से संबंध रखती हैं जैसे यूहन्ना 1:1; फिलि. 2:6-11; कुलु. 1:5-17; तथा इब्रा. 1:2-3 इत्यादि। यीशु सनातन काल से है; वह सदैव दिव्य रहा; वह निर्धारित समय पर देहधारी हुआ।

▪ **" ज्योति"** प्राचीनकाल से ही ज्योति सत्य और पवित्रता का प्रतीक रही है (देखें, प्रेरि. 26:18; यशा. 9:2; 42:6-7)।

▪ **"*यहूदियों* को, और अन्यजातियों को"** यहूदियों और अन्यजातियों दोनों ही के लिये एक ही सुसमाचार है (देखें, इफि. 2:11-3:13)। यह सुसमाचार एक रहस्य था जो युगों से छिपा हुआ था परन्तु मसीह में प्रकाशित हुआ। सम्पूर्ण मानव जाति एक सृष्टिकर्त्ता परमेश्वर के स्वरूप पर रची गई है (देखें, उत्पत्ति 1:26-27)। उत्पत्ति 3:15 में प्रतिज्ञा थी कि परमेश्वर पतित मानवजाति को उद्धार प्रदान करेगा। यशायाह मसीह की सार्वभौमिकता का अंगीकार करता है (उदाहरणार्थ, यशा. 2:2-4; 42:4,6,10-12; 45:20-25; 49:6; 51:4; 52:10; 60:1-3 तथा मीका 5:4-5)।

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 26:24-29

24जब वह इस रीति से उत्तर दे रहा था तो फेस्तुस ने ऊंचे शब्द से कहा; हे पौलुस, तू पागल है: बहुत विद्या ने तुझे पागल कर दिया है। 25परन्तु उसने कहा; हे महाप्रतापी फेस्तुस, मैं पागल नहीं, परन्तु सच्चाई और बुद्धि की बातें कहता हूं। 26राजा भी जिसके सामने मैं निडर होकर बोल रहा हूं, ये बातें जानता है,

और मुझे विश्वास है, कि इन बातों में से कोई उससे छिपी नहीं, क्योंकि यह घटना किसी कोने में नहीं हुई।
[27]हे राजा अग्रिप्पा, क्या तू भविष्यद्वक्ताओं का विश्वास करता है? हां, मैं जानता हूं, कि तू विश्वास करता है।
[28]तब अग्रिप्पा ने पौलुस से कहा, तू थोड़े ही समझाने से मुझे मसीही बनाना चाहता है? [29]पौलुस ने कहा,
''परमेश्वर से मेरी प्रार्थना है कि क्या थोड़े में, क्या बहुत में, केवल तू ही नहीं, परन्तु जितने लोग आज मेरी सुनते हैं, इन बन्धनों को छोड़ वे मेरे समान हो जाएं।''

26:24 ''फेस्तुस ने ऊँचे शब्द से कहा'' पौलुस के सन्देश पर फेस्तुस ने विश्वास नहीं किया। अपने पद, संस्कृति शिक्षा और अपने विश्व-दर्शन के कारण वह पौलुस की बातें समझने में अयोग्य रहा।

- **''बहुत विद्या ने *तुझे* पागल कर दिया है''** घुमा फिराकर कहें तो यह पद पौलुस द्वारा अपने बचाव पक्ष को स्पष्टता, और प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करने की योग्यता को दिखाता है।

26:25 ''मैं पागल नहीं परन्तु सच्चाई और बुद्धि की बातें कहता हूँ'' यूनानी शब्द ''सोफ्रोस्यून (*sōphrosunē*) दो यूनानी शब्दों "sound" तथा "mind" से मिलकर बना है। इसका अर्थ है जीवन में और विचारों में सन्तुलन रखना। यह ''पागल'' शब्द का विपरीत अर्थ देने वाला शब्द है। (देखें प्रेरी 26:24)

- **''सत्य''** देखें विशेष विषय सच्चाई नीचे

विशेष शीर्षक: पौलुस के लेखों में-सच्चाई

पौलुस द्वारा इस शब्द का उपयोग पुराने नियम के शब्द इमेट (*Emet*) के समान है जिसका अर्थ है विश्वासयोग्य अथवा विश्वासपात्र (BDB53; देखें विशेष विषय : विश्वास, भरोसा, विश्वासयोग्यता पुराने नियम में)। अन्य यहूदी रचनाओं में इसका उपयोग असत्यता के विपरित सत्यता के रूप में किया गया है। इसका सबसे निकट का समान्तर मृतक सागर के कुण्डल पत्रों का "धन्यवाद के गीत" हो सकता हैं, जहाँ पर इस शब्द का प्रयोग प्रकाशित सिद्धांत के रूप में किया गया है। असेनी समुदाय के सदस्य "सत्य के गवाह" कहे जाते हैं।

पौलुस इस शब्द का उपयोग "यीशु मसीह के सुसमाचार के लिए करता है :

1. रोमियों 1:18,25; 2:8,20; 3:7; 15:8
2. 1 कुरि. 13:6
3. 2 कुरि. 4:2; 6:7; 11:10; 13:8
4. गला. 2:5,14; 5:7
5. इफि. 1:13; 6:14
6. कुलु. 1:5-6
7. 2 थिस्स 2:10,12-13
8. 1 तीमु. 2:4; 3:15; 4:3; 6:5
9. 2 तीमु. 2:15,18,25; 3:7-8; 4:4
10. तीतुस 1:1,14

पौलुस इस शब्द का प्रयोग यह दर्शाने के लिए भी करता है कि वह सत्य बोल रहा है तथा सही सही विश्वासयोग्यता के साथ बोल रहा है :

1. प्रेरि. 26:25
2. रोमियों 9:1
3. 2 कुरि. 7:14; 12:6
4. इफि. 4:25

5. फिलि. 1:18
6. 1 तीमु. 2:7

पौलुस इस शब्द "सच्चाई" (सत्य) का उपयोग अपने उद्देश्यों को 1 कुरि 5:8 और जीवन शैली को (सब मसीहीयों के लिए) इफि. 4:24; 5:9; फिलि. 4:8 में दर्शाने के लिए भी करता है। कभी-कभी वह लोगों के लिए भी इसका प्रयोग करता है :

1. परमेश्वर, रोमि. 3:4 (देखें, यूहन्ना 3:33; 17:17)
2. यीशु, इफि. 4:21 (यूहन्ना 14:6 के समान)
3. प्रेरितिक गवाही, तीतुस 1:13
4. पौलुस, 2 कुरि. 6:8

पौलुस इसका क्रिया रूप (i.e., *alçtheuô*) एलेथेइयो, केवल गला. 4:16 और इफि. 4:15 में करता है, जहाँ इसका संकेत सुसमाचार की ओर है। विस्तृत जानकारी के लिए देखें, कॉलिन ब्राउन की पुस्तक "द न्यू इन्टरनेशनल डिक्शनरी ऑफ न्यू टैस्टामैंट थियोलॉजी", भाग 3, पेज 784-902; ("*The New International Dictionary of New Testament Theology*, vol. 3, pp. 784-902.)

Copyright © 2014 Bible Lessons International

26:26-28 "राजा भी ये बातें जानता है" इन पदों के संबंध में बड़ा वाद-विवाद रहा है। स्पष्ट रूप से पौलुस अपनी गवाही की पुष्टि के लिये अग्रिप्पा प्प् को इस्तेमाल करना चाहता था और साथ ही यह भी कि यदि संभव हो तो वह इस सच्चाई को ग्रहण कर ले। पद 28 का अनुवाद इस प्रकार भी किया जा सकता है, "क्या तू मुझे मसीही गवाह बनाना चाहता है?"

26:26 " मैंने उसके सामने विश्वास के साथ भी बात की " प्रेरितों के काम में अक्सर लूका ने इन शब्दों का प्रयोग किया है और हर बार पौलुस के बारे में ये शब्द रहे (देखें, प्रेरि. 9:27-28; 13:46; 14:3; 18:26; 19:8)। आमतौर पर इसका अनुवाद "साहस व निडरता के साथ बोलना" किया गया है (देखें, 1 थिस्स. 2:2)। यह पवित्र आत्मा की परिपूर्णता का एक प्रकाशन है। इफि. 6:20 में यह पौलुस के लिए प्रार्थना किए जाने का विषय रहा है। साहस के साथ सुसमाचार का प्रचार करना प्रत्येक विश्वासी के लिए पवित्र आत्मा की इच्छा व उद्देश्य रहा है।

■ **"यह किसी कोने में नहीं हुआ"** पतरस ने बार-बार अपने प्रथम श्रोताओं के सामने यरूशलेम में यही बात कही है (देखें, प्रेरि. 2:22,33)। सुसमाचार के सत्य ऐतिहासिक और प्रमाणिक हैं।

26:27 पौलुस जानता था कि अग्रिप्पा को पुराने नियम का ज्ञान है। पौलुस दावा करता है कि उसका सुसमाचार-सन्देश स्पष्ट रूप से पुराने नियम पवित्रशास्त्र से मेल खाता है और यह सन्देश नया नहीं है अथवा "नया बनाया हुआ" नहीं है बल्कि भविष्यवाणियों की पूर्ति है।

26:28

NASB	**"थोड़े ही समय में क्या तू मुझे मसीही बना लेगा"**
NKJB	**"तू मुझे मसीही बनाने का बहुत प्रयत्न कर चुका है"**
NRSV	**"क्या तू जल्दी ही मुझे मसीही बना लेगा"**
TEV	**"थोड़े ही समय में क्या तू सोचता है कि मुझे मसीही बना लेगा"**
NJB	**"तेरे थोड़े से और तर्क, मुझे मसीही बना लेंगे"**

ऑलिगो (*oligō)* (छोटे या छोटे का अर्थ) को समझने के तरीके के बारे में एक शाब्दिक विकल्प है, "थोड़े समय में" (NASB,NRSV, TEV), या "थोड़े प्रयास से" (NKJV, NJB)। यही भ्रम प्रेरितों के काम 26:29 में भी मौजूद है।

इस वाक्यांश से संबंधित एक पाठीय संस्करण भी है: "करने के लिए" या "बनाने के लिए" *(poieō)* पांडुलिपियों में P[74], ℵ, A (UBS[4] "A") इसे "ए" रेटिंग देता है, या एमएस ई MS E में "और" बनने के लिए वुल्गेट और पेशेटा अनुवाद करता है।

बड़े संदर्भ में अर्थ स्पष्ट है। पौलुस सुसमाचार को इस तरह से प्रस्तुत करना चाहता था जैसे कि वेओटी (अग्रिप्पा) को कौन जानता है और पुष्टि करता है, उसे दोषी ठहराया जाएगा या कम से कम, पुष्टि करेंइन ओटी भविष्यवाणियों की प्रासंगिकता।

▪ **''मसीही बनाना''** यीशु के पीछे चलने वाले लोग सीरिया के अंताकिया में सबसे पहले मसीही कहलाए थे (देखें, प्रेरि. 11:26)। मसीही नाम दूसरी बार प्रेरितों के काम पुस्तक में राजा अग्रिप्पा प्प् के मंुह से सुनाई दिया, इसका अर्थ है कि जल्द ही यह नाम प्रसिद्ध हो गया।

26:29 ''परमेश्वर से मेरी प्रार्थना है'' पौलुस अभिलाषा करता है कि सभी श्रोता, रोमी तथा यहूदी, उसकी तरह मसीह पर विश्वास करने वाले बन जाएँ; यह उसकी प्रार्थना भी है।

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 26:30-32
30तब राजा और हाकिम और बिरनीके और उनके साथ बैठनेवाले उठ खड़े हुए। 31और अलग जाकर आपस में कहने लगे, यह मनुष्य ऐसा तो कुछ नहीं करता जो मृत्युदंड या बन्दीगृह में डाले जाने के योग्य हो। 32अग्रिप्पा ने फेस्तुस से कहा; ''यदि यह मनुष्य कैसर की दोहाई न देता, तो छूट सकता था।''

26:30 लूका को किस प्रकार से इन बातों की सूचना मिली क्योंकि यह बात तो उनकी निजी बातचीत थी जिसमें सरकारी अधिकारी और उनके परिवार के सदस्य उपस्थित थे। संभवत:
1. किसी दास ने ये बातें सुनी होंगी और लूका तक पहुंचा दीं।
2. लूका ने अनुमान लगा लिया हो उन बातों के आधार पर जो बाद में कही गईं।
3. लूका इस सुअवसर को अपने इस लेखन-उद्देश्य को दर्शाने के लिए उपयोग में लाता है कि न तो मसीही धर्म और न ही पौलुस रोमी साम्राज्य के लिए खतरा हैं।

26:31-32 ''यदि यह मनुष्य कैसर की दोहाई न देता, तो छूट सकता था'' इस पद के द्वारा लूका का यह पुस्तक लिखने का उद्देश्य प्रकट होता है कि मसीही धर्म रोमी साम्राज्य के लिये देश द्रोहात्मक धर्म नहीं है। यह दूसरी श्रेणी का शर्त सहित वाक्य है जिसमें सच्चाई को झूठे तरीके से दर्शाया गया है। ''यह मनुष्य छूट सकता था'' (जबकि वह छूटा नहीं है), ''यदि कैसर से अपील न की होती'' (जबकि उसने अपील की थी)।

विचार विमर्श के लिये प्रश्न

यह अध्ययन में मार्गदर्शन करने की टीका है, इसका अर्थ है कि आप बाइबल की अपनी व्याख्या करने के स्वयं ही जिम्मेदार हैं। हम में से प्रत्येक को उसी ज्ञान के अनुसार चलना चाहिए जो हमारे पास है। व्याख्या करने के कार्य में आप आपकी बाइबल और पवित्र आत्मा केन्द्रिय स्थान रखते हैं। यह कार्य व्याख्याकार पर न छोड़ दें।

निम्नलिखित प्रश्न अपनी सहायता के लिए दिए गए हैं ताकि आप पुस्तक के गम्भीर विषयों पर पुनर्विचार कर सकें। वे आपके विचारों को आन्दोलित करने के लिए हैं, इनके अलावा और भी प्रश्न हो सकते हैं:
1. फेस्तुत और फेलिक्स के सामने के बचाव से यह बचाव किस प्रकार भिन्न है?
2. किस प्रकार से पौलुस की व्यक्तिगत साक्षी उसके सारे बचावों में फिट होती है?
3. दुख उठाने वाला मसीह क्यों यहूदियों के लिये ठोकर का कारण है?

4. पद 28 की व्याख्या करना क्यों कठिन है?
5. प्रेरि. 26:30-31 का फेस्तुस, अग्रिप्पा और बिरनीके का आपसी विचार-विमर्श किस प्रकार से प्रेरितों के काम पुस्तक लिखने के लूका के लेखन उद्देश्य को पूरा करता है?

Copyright © 2013 Bible Lesson International

प्रेरितों के काम-27
बाइबल के विभिन्न आधुनिक अनुवादों में पैराग्राफ-विभाजन

UBS[4]	NKJV	NRSV	TEV	NJB
पौलुस की समुद्री रोम-यात्रा	रोम की ओर समुद्री यात्रा	माल्टा की ओर समुद्री यात्रा	पौलुस की रोम की ओर समुद्री यात्रा	रोम को जाना
27:1-8	27:1-8	27:1-8	27:1-6	27:1-3
				27:4-6
			27:7-8	27:7-8
	पौलुस की चेतावनी न मानना			
27:9-12	27:9-12	27:9-12	27:9-12	27:9-12
समुद्र में तूफान	तूफान के बीच		समुद्र में तूफान	तूफान और जहाज टूटना
27:13-20	27:13-38	27:13-20	27:13-20	27:13-20
27:21-26		27:21-26	27:21-26	27:21-26
27:27-32		27:27-32	27:27-32	27:27-32
27:33-38		27:33-38	27:33-38	27:33-38
जहाज का टूटना	माल्टा में जहाज का टूटना		जहाज का टूटना	
27:39-44	27:39-44	27:39-44	27:39-41	27:39-41
			27:42-44	27:42-44

पठन चक्र तीसरा (''अच्छे बाइबल अध्ययन का मार्गदर्शन'' से)

पैराग्राफ स्तर पर मूल लेखक के अभिप्राय को समझना

यह अध्ययन करने की मार्गदर्शक टीका है, जिसका अर्थ है कि आप अपनी बाइबल-व्याख्या के स्वयं उत्तरदायी हैं। हम में से प्रत्येक को अपने ज्ञान व समझ के अनुसार कार्य करना चाहिए। व्याख्या-प्रक्रिया में आप, आपकी बाइबल तथा पवित्र आत्मा प्राथमिक स्थान रखते हैं। आपको यह टीका कार्य टीकाकार पर नहीं छोड़ना चाहिए।

पूरा अध्याय एक बैठक में पढ़ें। विषयों को पहचानें। अपने विषय-विभाजन की तुलना उपरोक्त पाँच आधुनिक अनुवादों के विषय-विभाजन से करें। पैराग्राफों का विभाजन प्रेरणा प्राप्त नहीं होता है, परन्तु यह मूल लेखक के अभिप्राय को समझने की कुंजी है, जो कि व्याख्या करने का आधार है। प्रत्येक पैराग्राफ में केवल एक ही मूल विषय होता है:

1. पहला पैराग्राफ
2. दूसरा पैराग्राफ
3. तीसरा पैराग्राफ
4. अन्य

सन्दर्भ की जानकारी

A. लूका को समुद्री यात्रा की विस्तृत व सम्पूर्ण जानकारी थी ए.टी. रौबर्टसन, अपनी पुस्तक द वर्ड पिक्चर इन न्यू टेस्टामेंट ,वोल. 3, पेज 456 *(pleō)* (A. T. Robertson, *Word Pictures in the New Testament*, vol. 3, p. 456) में बताते हैं, लूका ने नौ समुद्री यात्रा से संबंधित शब्दों का प्रयोग किया) साथ ही साहित्य संबंधी, चिकित्सा, इतिहास और धर्म वैज्ञानिक शब्दों का भी प्रयोग किया। उसके द्वारा प्रयुक्त विशेष शब्दों व वाक्यांशों की सूची जो समुद्र से संबंध रखते हैं, नीचे दी रही है:

1	जल यात्रा	(sailed)	(देखें, प्रेरि. 13:4;14:26; 20:15; 27:1)
2	आड़ में होकर चलना	(under the shelter)	(देखें, प्रेरि. 27:4,7)
3	लंगर उठाना	(weighed anchor)	(प्रेरि. 27:13)
4	उत्तर-पूर्वी भयंकर तूफान	(*euraquilo*)	(प्रेरि. 27:14)
5	आँधी का सामना करना	(face the wind)	(प्रेरि. 27:15)
6	आड़ में बहते-बहते चलना	(running under the shelter of)	(प्रेरि. 27:16)
7	जहाज को नीचे से ऊपर तक लपेटना	(undergirding)	(प्रेरि. 27:17)
8	जहाज को रस्सों से बाँधना	(sea anchor *skeuos*)	(प्रेरि. 27:17)
9	जहाज के रस्से तथा पाल फैंकना	(ship's tackle *skeuēn*)	(प्रेरि. 27:19)
10	दो बार गहराई की थाह लेना	(soundings)	(देखें प्रेरि. 27:28[दो बार])
11	दो बार नापना	(athoms)	(देखें प्रेरि. 27:28 [दो बार])
12	जहाज के पिछले भाग से चार लंगर डालना	(four anchors from the stern)	(प्रेरि. 27:29,40)
13	पतवारों के बन्धन ढीले करना	(the ropes of the rudders)	(प्रेरि. 27:40)
14	हवा के रूख में चलना	(hoisting the foresail to the wind)	(प्रेरि. 27:40)
15	सही रास्ते पर आना	(tacking)	(MSS P^{74},א , A प्रेरि. 28:13)

B. जेम्स स्मिथ की पुस्तक *द वॉयेज एंड शिप्रैक ऑफ़ संत पॉल* 1848 *(*James Smith's *The Voyage and Shipwreck of St. Paul*, 1848.*)* जो बहुत पुरानी पुस्तक है, टीकाकारों की बहुत सहायता की है।

C. रोम की ओर यह यात्रा वर्ष के सबसे खराब समय पर आरम्भ की गई (देखें, प्रेरि. 27:1,4,7,9-10,14) आमतौर पर नवम्बर से फरवरी तक का समय समुद्री यात्रा के लिये बहुत खतरनाक होता है। अनाज पहुँचाने वाले जलयान रोम पहुँचने में 14 से 21 दिन लगाते थे, परन्तु वापसी यात्रा विपरीत हवा चलने के कारण 60 दिन तक ले सकती थी।

D. इस पाठांश में तीन या चार जलयानों का उल्लेख पाया जाता है:
   1. समुद्री तट के जलयान जो प्रत्येक टापू पर रुककर किनारे खड़े हो जाते थे।
   2. मिस्र के दो जहाज जो मिस्र से रोम तक अनाज ले जाते थे।
   3. संभवतः यह संकटपूर्ण जलयात्रा दक्षिणी रोम तक 43 मील की थी।

मैडीटेरियन सागर के मानचित्र के अनुसार यदि हम इस जलयात्रा का विवरण पढ़ें तो बड़ा रोचक प्रतीत होगा।

वाक्यों व शब्दों का अध्ययन

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 27:1-8
1जब यह निश्चित हो गया कि हम जहाज़ द्वारा इटली जाएं, तो उन्होंने पौलुस और कुछ अन्य बन्दियों
को भी यूलियुस नाम औगुस्तुस की पलटन के एक सूबेदार के हाथ सौंप दिया। 2अद्रमुत्तियुम के एक

जहाज़ पर जो आसिया के किनारे की जगहों में जाने पर था, चढ़कर हमने उसे खोल दिया और अरिस्तर्खुस नामक थिस्सलुनीके का एक मकिदूनी हमारे साथ था। 3दूसरे दिन हमने सैदा में लंगर डाला और यूलियुस ने पौलुस पर कृपा करके उसे मित्रों के यहां जाने दिया कि उसका सत्कार किया जाए। [4]वहां से जहाज़ खोलकर हवा विरुद्ध होने के कारण हम साइप्रस की आड़ में होकर चले। [5]और किलिकिया और पंफूलिया के निकट के समुद्र में होकर लूसिया के मूरा में उतरे। [6]वहां सूबेदार को सिकन्दरिया का एक जहाज़ इटली जाता हुआ मिला और उसने हमें उस पर चढ़ा दिया। [7]और जब हम बहुत दिनों तक धीरे-धीरे चलकर कठिनाई से कनिदुस के सामने पहुंचे, तो इसलिये कि हवा हमें आगे बढ़ने न देती थी, सलमोने के सामने से होकर क्रेते की आड़ में चले। [8]और उसके किनारे-किनारे कठिनाई से चलकर "शुभलंगरबारी" नाम एक जगह पहुंचे, जहां से लसया नगर निकट था।

27:1 "जब यह निश्चित हो गया कि हम जहाज द्वारा इटली जाएँ" फेस्तुस ने वर्ष के सबसे खतरनाक समय पर उन्हें जलयान द्वारा भेजा। "हम" शब्द पौलुस तथा कुछ और लोगों की ओर इशारा करता है। प्रेरितों के काम पुस्तक में जहाँ जहाँ "हम" आया है वे अधिकांशतः समुद्री यात्रा से संबंधित हैं (देखें, प्रेरि. 16:10-17; 20:5-15; 21:1-18; 27:1-28:16)।

▪ **कुछ अन्य बन्दियों को"** हम इन बन्दियों के विषय कुछ नहीं जानते, बस इतना जानते हैं कि वे सरकारी कैदी थे और रोम जा रहे थे।

▪ **"सूबेदार"** नए नियम में सूबेदारों का उल्लेख सकारात्मक रूप में किया गया है (देखें, मत्ती 8; लूका 7; 23:47; प्रेरि. 10; तथा पौलुस की जाँच पड़ताल में 21-28 अध्याय)।

▪ **"औगुस्तुस की पलटन"** इनको रोम तथा प्रान्तों के मध्य विशेष दूत समझा जाता था, जो यात्रा का प्रबन्ध करते थे देखें, डब्ल्यू. एम. रैम्जे की पुस्तक संत पॉल *द ट्रेवलर एंड सिटीजन ऑफ़ रोम* पेज 315, 348, (cf. W. M Ramsay, *St. Paul the Traveler and Roman Citizen*, pp. 315, 348) परन्तु यह सम्राट हैड्रियन (ई. 117-138) के सामने जाने की कल्पना थी।

27:2 "अद्रमुत्तियुम के एक जहाज" यह समुद्री तट का एक छोटा जहाज था जो हर बन्दगाह पर रूकता था। इन जहाजों को एशिया माईनर के बड़े बन्दरगाह मूसिया पहुंचना होता था। यह रोम की कठिन और लम्बी यात्रा का पहला पड़ाव था।

▪ **"अरिस्तर्खुस"** इसका घर थिस्सलुनीके में था; संभवतः वह अपने घर लौट रहा था (देखें, प्रेरि. 19:29; 20:4; कुलु. 4:10; फिलेमोन 24)। हो सकता है वह सिकुन्दुस के साथ हो (प्रेरि. 20:4 तथा इस पद का पश्चिमी यूनानी लेख देखें)

27:3 "सैदा" यह फीनिके का एक नगर था, जो कैसरिया के उत्तर में लगभग 67 मील की दूरी पर था। यह नगर प्राचीनकाल में फीनिके की राजधानी था, परन्तु लम्बे समय से सैदा ने इसे अपने कब्जे में ले लिया था।

NASB	**"दया करके जाने दिया"**
NKJV,NRSV	**"कृपा करके"**
TEV	**"दया करके"**
NJB	**"दया करते हुए जाने दिया"**

यह "प्रेम" (*philos*) और "मानवता" (*anthrōpos*) शब्दों से बना मिश्रित शब्द है। यह शब्द प्रेरितों के काम में दो बार प्रयुक्त हुआ, पहली बार संज्ञा रूप में प्रेरि. 28:2 (देखें, तीतुस 3:4) तथा दूसरी बार यहाँ विशेषण रूप में

प्रेरि. 27:3 में)। यूलियुस एक दयालु मनुष्य था (बड़ी आश्चर्य की बात है कि एक पेशेवर रोमी सिपाही दयालु था)। संभवतः उसने पौलुस के मुकद्दमें के बारे में सुन रखा था।

▪ **''उसके मित्रों''** यह वहाँ पाए जाने वाले मसीही लोगों की ओर संकेत करता है। यूलियुस पौलुस पर भरोसा रखता था, परन्तु शायद पौलुस के साथ एक रोमी सिपाही भी गया हो।

▪ **''सत्कार मिला''** यह पद स्पष्ट नहीं है कि किस प्रकार का सत्कार (भावनात्मक, शारीरिक अथवा आर्थिक)।

27:4 ''साइप्रस की आड़'' यह भ्रम में डाल देने वाला पद है क्योंकि अंग्रेजी पाठक इसे पढ़कर समझेगा कि ''साइप्रस की दक्षिणी'' दिशा से चले, परन्तु वास्तव में इसका अर्थ उत्तरी दिशा है। अन्य नाम जो यहाँ आए हैं वे वर्तमान देश टर्की के दक्षिणी और पश्चिमी समुद्री तटों पर हैं।

27:6 ''सिकन्दरिया का जहाज इटली जाता हुआ'' यह एक बड़ा जहाज था, जिस पर 276 लोगों के साथ बहुत सा अनाज था। यह मिस्र से रोम जा रहा था। आधुनिक समय के लोग इस बड़े जहाजों के बारे में पौमपली और लूसीयन के लेखों में दी गई तस्वीरों द्वारा जानते हैं, जो ईस्वी 150 की हैं। ऐसे बड़े जहाजों के लिए जो अनाज पहुँचाते थे, मूरा नामक बड़ा बन्दरगाह बनाया गया था।

27:7 ''कनिदुस'' यह रोमी प्रान्त आसिया (एशिया) की दक्षिणी-पश्चिमी समुद्री तट का एक स्वतन्त्र नगर था। बहुत से रोमी जहाज यहाँ आते थे और इस बन्दरगाह को इस्तेमाल करते थे। (cf. Thucydides, *Hist*. 8.35) . यहाँ पर दो बन्दरगाह थे क्योंकि यह प्रायद्वीप में स्थित था।

▪ **''सलमोने''** यह नगर क्रेते टापू की पूर्वी छोर पर था। चूंकि मौसम खराब था इसलिए वे टापू के निकट होते हुए कठिनाई से पश्चिम की ओर जाने लगे।

27:8 ''शुभ लंगरबारी'' यह क्रेते टापू के लसया नगर की दक्षिणी की ओर एक खाड़ी थी। यह बन्दरगाह नहीं था। जाड़े के मौसम में यहाँ लम्बे समय तक रहना बहुत कठिन बात थी।

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 27:9-12
9जब बहुत दिन बीत गये और जलयात्रा में जोखिम इसलिए होती थी कि उपवास के दिन अब बीत चुके थे, अतः पौलुस ने उन्हें यह कहकर समझाया। 10कि हे सज्जनो, मुझे ऐसा जान पड़ता है कि इस यात्रा में विपत्ति और बहुत हानि न केवल माल और जहाज़ की वरन् हमारे प्राणों की भी होनेवाली है। 11परन्तु सूबेदार ने पौलुस की बातों से कप्तान और जहाज़ के स्वामी की बातों को बढ़कर माना। 12वह बन्दरगाह जाड़ा काटने के लिये अच्छा न था; इसलिये बहुतों का विचार हुआ कि वहां से जहाज़ खोलकर यदि किसी रीति से हो सके तो फीनिक्स में पहुंचकर जाड़ा काटंे: यह तो क्रेते का एक बन्दरगाह है जो दक्खिन-पश्चिम और उत्तर-पश्चिम की ओर खुलता है।

27:9 जाड़ों के दिनों में भूमध्य सागर में तेज हवाएँ और तूफान उठा करते थे जिसके कारण जहाज चलने में खतरे उत्पन्न होते थे

▪ **''उपवास''** यह प्रायश्चित दिवस की ओर संकेत करता है (देखें, लैव्यव्यवस्था 16)। मूसा की व्यवस्था में केवल इसी एक उपवास का उल्लेख किया गया है। इससे हम जान सकते हैं कि यह समुद्री यात्रा सितम्बर और अक्टूबर के मध्य की जा रही होगी। समुद्री यात्रा के लिये अक्टूबर का महिना अधिक सुरक्षित नहीं था, खतरे आ सकते थे।

▪ **"पौलुस कि *शुरुआत*"** यह वाक्य अपूर्ण कालिक है। यह दो बातें दर्शाता है (1) भूतकाल का कार्य जो अभी जारी है (2) कार्य का आरम्भ। यहाँ पर नं. 2 सही है।

27:10 पौलुस गम्भीर चेतावनी देता है। परन्तु वास्तव में ऐसा हुआ नहीं। पौलुस अपनी व्यक्तिगत विचारधारा प्रस्तुत कर रहा था। वह कहता है मुझे ऐसा जान पड़ता है, अथवा हो सकता है कि परमेश्वर दया कर दे और सब लोगों को खतरे से बचा ले (देखें, प्रेरि. 27:24)?

27:11
NASB "कप्तान और जहाज को चलाने वाले की"
NKJV "पतवार चलाने वाले और मालिक की"
NRSV "जहाज चलाने वाले और जहाज के स्वामी की"
TEV, NJB "कैप्टन और जहाज के स्वामी की"

यह वाक्यांश दो भिन्न लोगों के बारे में बताता है:
1. कप्तान क्यूबरनेट्स (*kubernētēs)*) जो जहाज चलाते थे (देखें, प्रका. 18:17)।
2. जहाज के स्वामी *(nauklēros)* (नाउक्लेरास)। यह दो शब्दों से मिलकर बना है "जहाज" (*naus)* तथा क्लेरास (*kleros)* "अधिकार रखने वाला"; इन दोनों शब्दों को मिलाकर "जहाज का स्वामी" शब्द बना है देखें, एफ. एफ. ब्रूस, द बुक ऑफ एक्ट्स, पृष्ठ 507, उद्धरण रामसे, सेंट. *पॉल द ट्रैवलर*, पी. 324, जो *शिलालेख ग्रेसे* को उद्धृत करते हैं, 14.918 (cf. F. F. Bruce, *The Book of Acts,* p. 507, quotes Ramsay, *St.Paul the Traveler*, p. 324, who quotes *Inscriptiones Graecae*, 14.918) आम बोलचाल की यूनानी में कप्तान कहा गया है। उपरोक्त दोनों शब्दों के मध्य अन्तर करना कठिन है (देखें सीएफ लोव और निदा, ग्रीक इंग्लिश लेक्सिकन, वॉल्यूम. 1, पेज 548 बनाम हेरोल्ड मौलटन, द *एनालिटिकल ग्रीक लेक्सिकन संशोधित*, पी. 275 लो और निदा की पुस्तक (cf. Louw and Nida, *Greek English Lexicon*, vol. 1, p. 548 vs. Harold Moulton, *The Analytical Greek Lexicon Revised*, p. 275) और हैरेल्ड मोल्टन की पुस्तक (*"The Analytical Greek Lexicon Revised*, p. 275),ए लेकिन संभवतः बड़े जहाजों पर (जैसा कि यह सिकन्दरिया का जहाज था) बहुत से कर्मचारी और मल्लाह हुआ करते थे।

27:12 "यदि हो सके तो" यह चैथी श्रेणी का शर्त सहित वाक्य है। जिन्होंने वहाँ से चलने का निर्णय किया था वे हालांकि जानते थे कि मार्ग में विपत्ति आ सकती है तौ भी निकल पड़े ताकि फीनीक्स पहुँच सकें।

▪ **"फीनिक्स"** यह क्रेते की दक्षिणी दिशा में एक बन्दरगाह था, जो लंगरबारी की पश्चिमी दिशा थी। परन्तु प्राचीन स्रोतों के अनुसार सन्देह है कि यह बन्दरगाह कहाँ स्थित था *स्ट्रैबो, भूगोल,* 10.4.3 बनाम टॉलेमी, *एक मिस्र भूगोल* 3.17.3 (Strabo, *Geography*, 10.4.3 vs. Ptolemy, *An Egyptian Geography* 3.17.3) वे लोग क्रेते टापू की दक्षिणी दिशा के किनारे किनारे आगे चलते रहे।

▪ **"दक्षिण-पश्चिम और उत्तर-पश्चिम की ओर खुलता है"** स्पष्ट रूप से फीनिक्स में दो नगर थे जो समुद्र के बीच पाई जाने वाली एक चट्टान के कारण अलग अलग थे। एक बन्दरगाह पर एक ओर से तेज हवाएँ आती थीं, और दूसरे बन्दरगाह पर दूसरी ओर से तेज हवाएँ आती थीं। यह मौसम पर निर्भर था कि कौन सा बन्दरगाह ठहरने के लिये उपयुक्त व उत्तम रहेगा।

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 27:13-20
13जब कुछ-कुछ दक्षिणी हवा बहने लगी तो यह समझकर कि हमारा अभिप्राय पूरा हो गया, लंगर उठाया और किनारा धरे हुए क्रेते के पास से जाने लगे। 14परन्तु थोड़ी देर में जमीन की ओर से एक बड़ी

आंधी उठी जो "यूरकुलीन" कहलाती है। [15]जब आंधी जहाज़ पर लगी, तो वह उसके सामने ठहर न सका, अतः हमने उसे बहने दिया, और इसी तरह बहते हुए चले गए। [16]तब कौदा नाम एक छोटे से टापू की आड़ में बहते-बहते हम कठिनाई से डोंगी को वश में कर सके। [17]फिर मल्लाहों ने उसे उठाकर अनेक उपाय करके जहाज़ को नीचे से बान्धा, और सुरतिस के चोर बालू पर टिक जाने के भय से पाल और सामान उतार कर बहते हुए चले गए। [18]जब हमने आंधी से बहुत हिचकोले और धक्के खाए तो दूसरे दिन वे जहाज़ का माल फेंकने लगे। [19]और तीसरे दिन उन्होंने अपने हाथों से जहाज़ का साज-सामान भी फेंक दिया। [20]जब बहुत दिनों तक न सूर्य न तारे दिखाई दिए, और बड़ी आंधी चल रही थी, तो अन्त में हमारे बचने की सारी आशा जाती रही।

27:14

NASB, NRSV	**"प्रचण्ड आँधी"**
NKJV	**"तेज़ हवा"**
TEV	**"प्रचण्ड वायु"**
NJB	**"तूफान"**

यह यूनानी शब्द ट्यूफोन टायफोन *tuphōn* (typhoon) + *ikos* है। यह अचानक से उठने वाला भयंकर आँधी-तूफान होता है। यह क्रेते के पहाड़ों पर 7000 फुट तक उठता है।

NASB	**"यूराक्लीको"**
NKJV	**"यूरोसायडोन"**
NRSV, TEV	**"उत्तरी-पूर्वी तूफान"**
NJB	**"उत्तरी-पूर्वीय"**

इस प्रकार की प्रचण्ड आँधी का नाम "यूरकुलीन" उस युग के मल्लाहों ने रखा था। यह नाम दो शब्दों से मिलकर बना है (1) पूर्वी हवा (*euros*) तथा (2) लैटिन शब्द "उत्तरी हवा" (*equilo)* यह भयंकर तूफान अचानक से उठने वाली "पूर्वी-उत्तरी" हवा होती है।

चूंकि "यूरकुलीन" (*eukakulōn*) एक विशेष शब्द था इसलिये बाद के लेखकों को इसका अर्थ समझ में नहीं आया, उन्होंने इस नाम को बदलकर अन्य प्रकार से सन्दर्भ समझाने का प्रयत्न किया।

27:15 "आंधी के सामने ठहर न सका" प्राचीन काल के जलयानों के सामने और चारों ओर आँख के चित्र बना दिए जाते थे। बाद में मनुष्यों के अथवा पशुओं के चित्र बना कर लगाए जाने लगे (देखें, प्रेरि. 28:11)। आज भी हम जहाजों को स्त्री का रूप दे देते हैं। यह वाक्यांश शाब्दिक रूप से "विरुद्ध" (*anti)* "आँख" (*ophthalmos)* से मिलकर बना है अर्थात् "आँख के विरुद्ध"। जहाज चलाने वाले जहाज को तेज हवा में आगे नहीं बढ़ा सके अर्थात् प्रचण्ड वायु का सामना न कर सके।

27:16 "कौदा" यह क्रेते टापू की दक्षिणी दिशा की ओर लगभग 50 मील की दूरी पर एक छोटा सा टापू था। मल्लाह लोग प्रचण्ड आँधी के सामने जहाज आगे बढ़ाने में बिल्कुल असमर्थ थे। तौभी वे टापू की आड़ में बहते चले गए।

इस टापू के नाम के बारे में यूनानी हस्तलेखों में अन्तर पाया जाता है:

1. कौदा, (*Kauda*, MSS P^{74}, $\aleph^2$, B)
2. क्लौदा, (*Klauda*, MSS , א *,A)
3. क्लौउदेन, एम एस एस एच, एल, पी, तथा बाद की छोटी लिपि के हस्तलेख। (*Klaudēn*, MSS H, L, P,)
4. गाओडेन, जेरोम द्वारा उपयोग में लाई गई यूनानी हस्तलिपि। (*Gaudēn)*

5. क्लाइडीआन, कुछ छोटे अक्षरों की हस्तलिपियां। (*Klaudion)*

UBS^3 और UBS^4 1 को सही मानती और ''बी'' "B" रेटिंग देती हैं। पहले दो विकल्प नाम के यूनानी और लातीनी रूप हो सकते हैं।

▪ **''जहाज की नाव को नियंत्रण में रखना''**यह साथ में बंधी हुई छोटी नावों की ओर संकेत करता है (देखें, प्रेरि. 27:30, 32)। ये जहाज चलाने में बाधा उत्पन्न कर रही थी।

27:17 ''फिर मल्लाहों ने....जहाज को नीचे से रस्सियों से बाँधा'' यह जहाज को विशेष रस्सों से बाँधने का संकेत देता है ताकि जहाज तूफान में स्थिर रहे सी. एफ. अरस्तू, रैस्टोरिक 2.5.18 (*Aristotle, Rhetoric* 2.5.18)।

▪ **''सुरतिस के *चोरबालू*''** ये उत्तरी अफ्रीका के समुद्री तटों पर पाए जाने वाले बालू के टीले हैं। इन्हें सुरतिस मेजर और सुरतिस माइनर कहा जाता था देखें, सीएफ. प्लिनी, नेट. हिस्ट. 5.4,27 (Pliny, Nat. Hist. 5.4.27)। ये जहाजों के लिए खतरनाक होते थे और ये जहाजों का कब्रिस्तान थे। बड़े टीलों से बचने के लिये मल्लाह जहाज को इनकी बगल में से निकाल कर दक्षिणी दिशा में आगे बढ़ जाते थे।

▪ **''लंगर''** इस सन्दर्भ को समझने का मूल शब्द है ''जहाज हल्का करना।'' उन्होंने क्या सामान उतारा और जहाज हल्का किया? (1) पाल उतारे या (2) जहाज का सामान कम किया? उनका उद्देश्य था कि किसी तरह जहाज हल्का हो जाए और नियन्त्रण में रहे।

पाल जहाज की गति धीमी करते थे, ताकि जहाज बहता न चला जाए देखें, प्राचीन लैटिन लिपि तथा एन ए एस बी, एन आर एस वी तथा एन जेबी (NASB, NRSV, and NJB).

बहुत से अंग्रेजी के अनुवादों में ''जहाज हल्का करना'' अनुवादित किया गया है देखें, एन के जे वी, टी ई वी, एन जे बी, तथा अंग्रेजी का पेशित्ता (cf. NKJV, TEV, NJB, and Peshitta in English) I यूनानी शब्द का शाब्दिक अर्थ है ''वस्तु'' (देखें, लो व निदा की पुस्तक, ग्रीक-इंगलिश लैक्सीकन, भाग 2, पेज 223 (cf. Louw & Nida, *Greek-English Lexicon*, vol. 2, p. 223) तथा इसकी व्याख्या विशिष्ठ संदर्भ सहित करनी चाहिए। कुछ खास पेपरी मूलपाठों में यह शब्द जहाज चलाने के लिए प्रयोग किया गया मौलटन और मिलिगन, द वोकैबुलरी ऑफ़ द ग्रीक टेस्टामेंट, पृष्ठ 577। (cf. Moulton & Milligan, *The Vocabulary of the Greek Testament*, p. 577) यदि ऐसा है तो उन्होंने जहाज पर से सारा सामान नहीं उतारा, थोड़ा ही सामान उतारा ताकि जहाज आगे बढ़े। उन्हें जहाज पर नियन्त्रण करना था और जितना संभव हो धीरे-धीरे आगे किनारे किनारे बढ़ना था।

27:18-19, ये पद दर्शाते हैं कि इस मौसम में यह तूफान कितना भयानक हो जाता था और यात्रियों को तथा मल्लाहों को कितनी परेशानी उठानी पड़ती थी (देखें, प्रेरि. 20)

27:18 ''जहाज का माल फैंकने लगे'' यह दर्शाता है कि मल्लाह भयभीत हो गए थे कि कहीं मर न जाएँ।

27:19 ''वह जहाज से निपटता है'' यह किस बात की ओर संकेत करता है, ठीक से कुछ कहा नहीं जा सकता है तो भी संभवतः यह साज सामान पाल व पतवार हो सकता है। यह अस्पष्ट सा वाक्य है। यह प्रेरि. 27:17 की तरह जहाज की कोई सामग्री हो सकती है।

27:20 ''बहुत दिनों तक न सूर्य, न तारे दिखाई दिए'' स्पष्ट रूप से यह पद दर्शाता है कि उन्हें कुछ पता नहीं चल रहा था कि वे हैं कहाँ पर। वे उत्तरी अफ्रीका के टापू से विशेषकर चोर बालू से डरते थे, पर वे कह नहीं सकते थे कि वे उसी स्थान के बिल्कुल निकट हैं (देखें, प्रेरि. 27:29)। बिना तारों के अथवा सूर्य के वे अपनी स्थिति नहीं जान पा रहे थे, और न ही मार्गदर्शन कर पा रहे थे।

■ **"अन्त में हमारे बचने की सारी आशा जाती रही"** जब उनके सारे सहारे जाते रहे तो इससे पौलुस के लिए मंच तैयार हुआ कि वह अपने दर्शन के आधार पर उन्हें सान्तवना दे सके (देखें, प्रेरि. 27:21-26)।

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 27:21-26
[21]जब वे बहुत दिन तक भूखे रह चुके तो पौलुस ने उनके बीच में खड़े होकर कहा; हे लोगो, चाहिए था कि तुम मेरी बात मानकर क्रेते से न जहाज़ खोलते और न यह विपत्ति आती और न यह हानि उठाते। [22]परन्तु अब मैं तुम्हें समझाता हूं कि ढाढ़स बान्धो; क्योंकि तुममें से किसी के प्राण की हानि न होगी, पर केवल जहाज़ की। [23]क्योंकि परमेश्वर जिसका मैं हूं, और जिसकी सेवा करता हूं, उसके स्वर्गदूत ने आज रात मेरे पास आकर कहा। [24]हे पौलुस, मत डर; तुझे कैसर के सामने खड़ा होना अवश्य हैः और देख, परमेश्वर ने सबको जो तेरे साथ यात्रा करते हैं, तुझे दिया है। 25इसलिये, हे सज्जनो ढाढ़स बान्धो; क्योंकि मैं परमेश्वर का विश्वास करता हूं, कि जैसा मुझ से कहा गया है, वैसा ही होगा। 26परन्तु हमें किसी टापू पर जा टिकना होगा।

27:21 "जब वे बहुत दिन तक भूखे रह चुके" प्रेरि. 27:33 के संबंध में भूखे रहने की कम से कम तीन निम्नलिखित संभावनाएँ हो सकती हैं

1. संभव है कि वे भयानक समुद्र से भयभीत होकर अपनी रक्षा में लगे रहे हों।
2. अपने आपको बचाने के लिये प्रार्थना और उपवास करने में लगे हों अथवा अपनी रीति विधियों में लगे हों (प्रेरि. 27:29)।
3. संभव है वे स्वयं को और जहाज को बचाने में इतने अधिक व्यस्त हों, कि भोजन उनके लिए महत्वहीन प्रतीत होता हो।

■ **"चाहिए था कि तुम मेरी बात मानकर"** यह पौलुस की सलाह थी, "तुम मेरी बात मानते", इसने पौलुस को अवसर दिया कि वह पवित्र आत्मा की ओर से अधिवक्ता बनकर बोल सके।

27:22 "जहाज़ को *छोड़*" पर केवल जहाज की" प्रेरि. 27:26 में ष्कमपष् के इस्तेमाल पर ध्यान दं। देखें, प्रेरि. 1:16 में कमप के विषय में संपूर्ण टीका। इस अध्याय में तीन बार इसका प्रयोग हुआ (प्रेरि. 27:21,24,26)।

27:23 "परमेश्वर का स्वर्गदूत" पौलुस को प्रोत्साहित करने के लिये यीशु ने और स्वर्गदूत ने अनेक बार उसे दर्शन दिए हैं (देखें, प्रेरि. 18:9-10; 22:17-19; 23:11; 27:23-24)। पौलुस के लिये परमेश्वर के पास सुसमाचार प्रचार की एक योजना और उद्देश्य था (देखें, प्रेरि. 27:26; 9:15), आँधी तूफान इस योजना को पूरा होने से रोक नहीं सकेगा।

27:24 "पौलुस, मत डर" यह वर्तमान कालीन आदेशात्मक कथन है। डरने का कार्य समाप्त हो गया है। (देखें, प्रेरि. 23:11; नीति. 3:5-6)।

■ **"परमेश्वर ने तुझको उन सभी को प्रदान किया है जो तेरे साथ जहाज़ पर थे"** परमेश्वर ने पौलुस के जीवन के लिए एक योजना बनाई थी (देखें, प्रेरि. 9:15; 19:21; 23:11)। उसे रोम की अधिकारियों और सैनिकों के सामने गवाही देना आवश्यक था (*Dei)*।

पौलुस के जीवन और उसके विश्वास ने उसके साथियों पर विशेष प्रभाव डाला। अनुग्रह की यह प्रगति हम इन पदों में देखते हैं, व्यवस्थाविवरण 5:10; 7:9; 1 कुरि. 7:14;। विश्वास करने वाले परिवारों, मित्रों और सहकर्मियों पर सदैव परमेश्वर का प्रेम और अनुग्रह बना रहता है।

27:25 यहाँ पर फिर से प्रेरि. 27:22 का उपदेश "साहस रखो" दोहराया गया है कि वे "साहस रखें।" यह एक आदेशात्मक कथन है।

▪ **''क्योंकि मैं परमेश्वर पर विश्वास रखता हूँ''** जीवित मसीह के साथ पौलुस की व्यक्तिगत भेंट ने उसे इस योग्य बनाया कि वह परमेश्वर के वचन पर विश्वास करते हुए कह सका ''जैसा मुझ से कहा गया है, वैसा ही होगा।'' विश्वास एक प्रकार से हाथ होते हैं जो न केवल परमेश्वर के वरदान उद्धार को थामते हैं पर साथ ही उसके प्रबन्ध को भी ग्रहण करते हैं।

रौबर्ट बी. गिरडिल स्टोन अपनी पुस्तक *सिनोनिम्स ऑफ़ द ओल्ड टेस्टामेंट* (Robert B. Girdlestone, *Synonyms of the Old Testament)* में बड़ा शिक्षाप्रद वक्तव्य देते हैं, जो इस प्रकार से है:

> ''अब हम विश्वास को एक ओर तथा आशा और निश्चय को दूसरी ओर रखते हुए, इन दोनों के बीच स्पष्ट अन्तर करते हुए, नए नियम से देखें। परमेश्वर अपने वचन को पूरा करता है, इस बात को मान लेना विश्वास कहलाता है, जबकि निश्चय, धीरज और आशा इस विश्वास के उपयुक्त फल हैं, जो विश्वासी द्वारा महसूस किए जाने वाले निश्चय के विभिन्न प्रकटीकरण हैं। हमारे जीवनों के कर्त्ता की ओर से हमें संदेश प्राप्त होता है यह सन्देश एक चेतावनी, एक प्रतिज्ञा अथवा एक आज्ञा हो सकती है। यदि हम इस चेतावनी, प्रतिज्ञा या आज्ञा को ''आमीन'' के साथ स्वीकार करते हैं, तो यह हमारा विश्वास कहलाएगा; और इससे जो कार्य उत्पन्न होंगे वे विश्वास के कार्य होंगे अथवा परमेश्वर के प्रति विश्वस्त होंगे। **amunah** पवित्रशास्त्र के अनुसार विश्वास का अर्थ वचन, सन्देश अथवा प्रकाशन प्रतीत होता है इसलिए अपनी पुस्तक *''लाईफ ऑफ फेथ''* में रोमैन कहते हैं -''विश्वास का अर्थ है परमेश्वर के वचन की सच्चाई पर भरोसा करना; यह कहे हुए वचनों अथवा परमेश्वर द्वारा की गई प्रतिज्ञा से संबंधित होता है,और यह व्यक्ति के भरोसे को, जो वचन सुनता है, और उनकी सत्यता को मानता है, व्यक्त करता है; वह व्यक्ति इस वचन से सहमति रखता और उन पर निर्भर रहता है, और उनके अनुसार कार्य करता है: इसी को विश्वास कहा जाता है।'' इस विश्वास के फल, प्राप्त संदेश के अनुसार अनेक होंगे और प्राप्तकर्त्ता की परिस्थितियों के अनुसार होंगे। इसी विश्वास ने नूह को जहाज बनाने की, अब्राहम को अपना पुत्र बलिदान करने की, मूसा को फिरौन की पुत्री का बेटा न कहलाने की, और इस्राएल को यरीहो की दीवार की परिक्रमा करने की प्रेरणा प्रदान की। ''मैं परमेश्वर पर विश्वास रखता हूँ कि जैसा मुझ से कहा गया है,वैसा ही होगा'' (27:25)। बाइबल जिसे विश्वास कहती है, वह इसी प्रकार से कार्य करता है (पेज 104-105)।

''विश्वास'' की अधिक जानकारी के लिए प्रेरि. 2:40; 3:16 तथा 6:5 में विशेष शीर्षक देखें।

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 27:27-32

27जब चैदहवीं रात आई और हम अद्रिया समुद्र में भटकते फिर रहे थे, तो आधी रात के निकट मल्लाहों ने अनुमान से जाना कि हम किसी देश के निकट पहुंच रहे हैं। 28थाह लेने पर उन्होंने बीस पुरसा गहरा पाया और थोड़ा आगे बढ़कर फिर थाह ली तो पन्द्रह पुरसा पाया। 29तब पत्थरीली जगहों से टकराने के डर से उन्होंने जहाज़ की पिछाड़ी चार लंगर डाले, और भोर होने की कामना करते रहे। 30परन्तु जब मल्लाह जहाज़ पर से भागना चाहते थे, और गलही से लंगर डालने के बहाने डोंगी समुद्र में उतार दी। 31तो पौलुस ने सूबेदार और सैनिकों से कहाः यदि ये जहाज़ पर न रहें तो तुम भी नहीं बच सकते। 32तब सिपाहियों ने रस्से काटकर डोंगी गिरा दी।

27:27 ''जब चैदहवीं रात आई'' जब से उन्होंने समुद्री यात्रा आरम्भ की थी, तब से अब तक का कितना फासला वे तय कर चुके थे, उसकी ठीक जानकारी इससे मिलती है। वे 476 मील का फासला 36 मील प्रतिदिन चलकर अब तक तय कर चुके थे।

▪ **''अद्रिया समुद्र''** यह दक्षिणी भूमध्य सागर केन्द्रिय भाग को बताता है। यह वर्तमान समय के अद्रियाटिक सागर के बारे (Adria) में नहीं बताता।

▪ **''पक्का करना शुरू कर दिया कि वे किसी भूमि पर आ रहे हैं''** उन्होंने शायद पक्षियों की आवाजें भोर के समय सुनी होंगी या मछलियाँ देख ली होंगी जिससे अनुमान लगाया।

27:28 "थाह लेने पर" संभवतः उन्होंने पानी की गहराई नापने के लिए रस्सी के आगे वजन लगाकर उसे पानी में डाला होगा ताकि पता लगा सकें कि कितनी गहराई है।

- **"नापना"** अर्थात् बीस हाथ पाया। मल्लाह पानी की गहराई इसी प्रकार नापते थे।

27:29 अभी तक अंधेरा ही था। वे जान नहीं पा रहे थे कि वास्तव में वे किस स्थान पर हैं। वे जहाज को खड़ा करना चाहते थे, और जानने के प्रयत्न में थे कि जहाज किस ओर जा रहा है।

27:30 जो मल्लाह जहाज चला रहे थे, वे विश्वासी नहीं थे। वे अपने को बचाने का हर संभव प्रयास कर रहे थे।

27:31 जो दर्शन पौलुस ने हाल ही में पाया था उसमें परमेश्वर की कुछ प्रतिज्ञाएँ थीं तथा शर्तों भी थीं।

- **"बचाए गए"** यह शारीरिक छुटकारे की पुराने नियम की विचारधारा है (देखें, याकूब 5:15)। इन मल्लाहों, रोमी सिपाहियों और सहयात्रियों ने भी सुसमाचार को सुना, पौलुस ने उन्हें आत्मिक उद्धार व छुटकारे के बारे में बताया; पर यह दुख की बात है कि शारीरिक मृत्यु से तो वे सब बच गये परन्तु अनन्त मृत्यु से वे नहीं बच पाएँगे।

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 27:33-38
[33]जब भोर होने पर था तो पौलुस ने यह कहके सबको भोजन करने के लिए समझाया कि आज चैदह दिन हुए कि तुम आस देखते-देखते भूखे रहे, और कुछ भोजन न किया। [34]इसलिये तुम्हें समझाता हूं कि कुछ खा लो जिससे तुम्हारा बचाव हो; क्योंकि तुममें से किसी के सिर का एक बाल भी न गिरेगा। [35]और यह कहकर उसने रोटी लेकर सबके सामने परमेश्वर का धन्यवाद किया; और तोड़कर खाने लगा। [36]तब वे सब भी ढाढ़स बान्धकर भोजन करने लगे। [37]हम सब मिलकर जहाज़ पर दो सौ छिहत्तर जन थे। [38]जब वे भोजन करके तृप्त हुए, तो गेहूं को समुद्र में फेंक कर जहाज़ हल्का करने लगे।

27:34 "तुम में से किसी के सिर का एक बाल भी न गिरेगा" पौलुस उन्हीं वचनों का प्रयोग करता है जो यीशु ने प्रयोग किये (देखें, लूका 12:7; 21:18)। यह इब्रानी भाषा का रक्षा करने के संबंध में मुहावरा है (देखें, 1 शमू. 14:45; 2 शमू.14:11; 1 राजा 1:52)।

27:35, यह प्रभु-भोज की ओर संकेत नहीं करता है, परन्तु पौलुस के विश्वास को इन कठिन परिस्थितियों में अवश्य प्रदर्शित करता है। पौलुस के इस विश्वास ने दूसरों को भी प्रभावित किया (देखें, प्रेरि. 27:36)।

27:37 "हम सब मिलकर जहाज पर 276 जन थे" इसमें जहाज के कर्मचारी और यात्रीगण शामिल हैं।

1. हस्तलिपि बी (चैथी शताब्दी) "76" यात्री बताती है।
2. एम एस एस-एन MSS א (चैथी शताब्दी) तथा सी (पाँचवीं शताब्दी) "276" बताती हैं।
3. हस्तलीपि ए (पाँचवीं शताब्दी) "275" जब बताती है।
4. आधुनिक सभी अंग्रेजी अनुवाद "276" जन बताते हैं।

UBS[4] इसे "बी" "B" रेटिंग देता है (सुनिश्चित)

27:38 यह मिस्र से आने वाला बड़ा जहाज था, जो अनाज ले जा रहा था। उन्होंने पहले ही अतिरिक्त माल तथा अन्य साज-सामान फैंक दिया था (देखें, प्रेरि. 27:18)।

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 27:39-44
[39]जब दिन निकला तो उन्होंने उस देश को नहीं पहिचाना, परन्तु एक खाड़ी देखी जिसका किनारा

चैरस था और विचार किया कि यदि हो सके तो इसी पर जहाज़ को टिकाएं। [40]तब उन्होंने लंगरों को खोलकर समुद्र में छोड़ दिया और उसी समय पतवारों के बन्धन खोल दिए, और हवा के सामने अगला पाल चढ़ाकर किनारे की ओर चले। [41]परन्तु दो समुद्र के संगम की जगह पड़कर उन्होंने जहाज़ को टिकाया, और गलही तो धक्का खाकर गड़ गई, और टल न सकी; परन्तु पिछाड़ी लहरों के बल से टूटने लगी। [42]तब सिपाहियों का यह विचार हुआ कि बंदियों को मार डालें; ऐसा न हो कि कोई तैर के निकल भागे। [43]परन्तु सूबेदार ने पौलुस को बचाने की इच्छा से उन्हें इस विचार से रोका और यह कहा कि जो तैर सकते हैं, पहले कूदकर किनारे पर निकल जाएं। [44]और बाकी कोई पटरों पर और कोई जहाज़ की अन्य वस्तुओं के सहारे निकल जाएं और इस रीति से सब कोई भूमि पर बच निकले।

27:39 वे अभी कुछ हद तक जहाज पर नियन्त्रण कर सके थे (देखें, प्रेरि. 27:40)। इस वाक्यांश के विषय में कि "यदि हो सके तो इसी पर जहाज को टिकाएँ" यूनानी हस्तलीपियों में थोड़ा अन्तर पाया जाता है देखें, (cf. MSS ,א,A, B[2]) (cf. MSS B* and C) । ये दोनों शब्द समानार्थी प्रतीत होते हैं (*exōsai* vs. *eksōsai*) प्राचीन यूनानी हस्तलीपियाँ अक्सर एक के द्वारा पढ़ी जाती थीं और बहुतों द्वारा उसकी प्रतिलिपियाँ बनाई जाती थीं। एक समान सुनाई पड़ने वाले शब्दों में अक्सर गड़बड़ी हो जाती थी।

27:40 समुद्री किनारे की चट्टानें अनेक जहाजों के टूटने का कारण बनती हैं। इस घटना में जहाँ पर महासागर की लहरें और खाड़ी का पानी आकर मिलता और इकट्ठा होता था, वहाँ पर यह समुद्री चट्टान बन गई थी।

NASB,NKJV, NJV	**"पतवारों"**
NRSV, TEV	**"जहाज चलाने के चप्पू"**

यहाँ पर दो पतवारों की ओर संकेत है, जो बड़े जहाज में होना अजीब सी बात है। याकूब ने 3:4 में इसी शब्द "पतवार" का प्रयोग किया है।

▪ **"पाल चढ़ाकर"** ये शब्द बहुत कम इस्तेमाल किया जाता है। इसका संकेत थोड़ी दूरी की समुद्री यात्रा हो सकता है देखें, (cf. Juvenal, *Sat.* 12.69)

27:42 "सैनिकों का यह विचार हुआ कि बन्दियों को मार डालें" यदि कैदी भाग जाते तो कैदियों का दण्ड सैनिकों को भुगतान पड़ता।

27:43 पौलुस के वचनों, उसके विश्वास और कार्यों ने रोमी पल्टन के सूबेदार को कायल कर दिया था कि वह पौलुस पर भरोसा करे और उसकी रक्षा करे।

विचार विमर्श के लिये प्रश्न

यह अध्ययन में मार्गदर्शन करने की टीका है, इसका अर्थ है कि आप बाइबल की अपनी व्याख्या करने के स्वयं ही जिम्मेदार हैं। हम में से प्रत्येक को उसी ज्ञान के अनुसार चलना चाहिए जो हमारे पास है। व्याख्या करने के कार्य में आप आपकी बाइबल और पवित्र आत्मा केन्द्रिय स्थान रखते हैं। यह कार्य व्याख्याकार पर न छोड़ दें।

निम्नलिखित प्रश्न अपनी सहायता के लिए दिए गए हैं ताकि आप पुस्तक के गम्भीर विषयों पर पुनर्विचार कर सकें। वे आपके विचारों को आन्दोलित करने के लिए हैं, इनके अलावा और भी प्रश्न हो सकते हैं:

1. लूका ने पौलुस की इस रोम-यात्रा के विवरण में बहुत से समुद्री-शब्दों का प्रयोग किया है। इन शब्दों से हम क्या शिक्षा ले सकते हैं?
2. धर्म वैज्ञानिक दृष्टिकोण से प्रेरि. 27:20 क्यों महत्वपूर्ण है?

Copyright © 2013 Bible Lesson International

प्रेरितों के काम-28
बाइबल के विभिन्न आधुनिक अनुवादों में पैराग्राफ-विभाजन

UBS^4	NKJV	NRSV	TEV	NJB
माल्टा द्वीप में पौलुस	माल्टा द्वीप में पौलुस की सेवा	पौलुस माल्टा में	माल्टा में	माल्टा में प्रतीक्षा
28:1-10	28:1-10	28:1-6	28:1-6	28:1-6
		28:7-10	28:7-10	28:7-10
पौलुस का रोम में आगमन	रोम में आगमन	रोम की ओर यात्रा	माल्टा से रोम की ओर	माल्टा से रोम की ओर
28:11-15	28:11-16	28:11-15	28:11-15	28:11-14
			रोम में	28:15-16
28:16		28:16	28:16	
रोम में पौलुस का प्रचार	रोम में पौलुस की सेवकाई	पौलुस और रोमी-यहूदी		पौलुस द्वारा रोम के यहूदियों से संपर्क
28:17-22	28:17-31	28:17-22	28:17-20	28:17-20
			28:21-22	28:21-22
				रोम के यहूदियों को पौलुस की घोषणा
28:23-29		28:23-29	28:23-27	28:23-27 (26-27)
			28:28	28:28
		उपसंहार	28:29	प्रस्तावना
28:30-31		28:30-31	28:30-31	28:30-31

पठन चक्र तीसरा (“अच्छे बाइबल अध्ययन का मार्गदर्शन” से)

पैराग्राफ स्तर पर मूल लेखक के अभिप्राय को समझना

यह अध्ययन करने की मार्गदर्शक टीका है, जिसका अर्थ है कि आप अपनी बाइबल-व्याख्या के स्वयं उत्तरदायी हैं। हम में से प्रत्येक को अपने ज्ञान व समझ के अनुसार कार्य करना चाहिए। व्याख्या-प्रक्रिया में आप, आपकी बाइबल तथा पवित्र आत्मा प्राथमिक स्थान रखते हैं। आपको यह टीका कार्य टीकाकार पर नहीं छोड़ना चाहिए।

पूरा अध्याय एक बैठक में पढ़ें। विषयों को पहचानें। अपने विषय-विभाजन की तुलना उपरोक्त पाँच आधुनिक अनुवादों के विषय-विभाजन से करें। पैराग्राफों का विभाजन प्रेरणा प्राप्त नहीं होता है, परन्तु यह मूल लेखक के अभिप्राय को समझने की कुंजी है, जो कि व्याख्या करने का आधार है। प्रत्येक पैराग्राफ में केवल एक ही मूल विषय होता है:

1. पहला पैराग्राफ
2. दूसरा पैराग्राफ
3. तीसरा पैराग्राफ
4. अन्य

शब्दों और वाक्यांशों का अध्ययन

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 28:1-6

[1]जब हम बच निकले तो पता चला कि यह द्वीप माल्टा कहलाता है। [2]वहां के निवासियों ने हम पर अनोखी कृपा की; क्योंकि मेंह बरसने के कारण ठंड थी, इसलिये उन्होंने आग सुलगाकर हम सबको ठहराया। [3]जब पौलुस ने लकड़ियों का गट्ठा बटोरकर आग पर रखा, तो एक सांप आंच पाकर निकला और उसके हाथ से लिपट गया। [4]जब उन निवासियों ने सांप को उसके हाथ में लटके ु हुए देखा तो आपस में कहा; सचमुच यह मनुष्य हत्यारा है, कि यद्यपि समुद्र से बच गया, तौभी न्याय ने जीवित रहने न दिया। [5]तब उसने सांप को आग में झटक दिया और उसे कुछ हानि न पहुंची। 6परन्तु वे बाट जोहते थे कि वह सूज जाएगा, या एकाएक गिरके मर जाएगा, परन्तु जब वे बहुत देर तक देखते रहे, और देखा कि उसका कुछ भी नहीं बिगड़ा, तो अपना विचार बदलकर कहा, ''यह तो कोई देवता है।''

28:1 ''जब हम बच निकले'' यहाँ यूनानी शब्द ''सोज़ो'' *(sōzō)* (देखें, प्रेरि. 27:31) प्रयुक्त हुआ है और साथ कपं जुड़ा है। यह शब्द उसके लिये प्रयुक्त किया जाता था जो सुरक्षित पहुँच जाए (देखें, प्रेरि. 23:24; 27:44; 28:1, 4)। लूका 7:3 में इसका प्रयोग शारीरिक चंगाई के लिये भी किया गया है।

इस भूतकालीन क्रिया शब्द द्वारा लूका दर्शाता है कि यह सुरक्षा परमेश्वर ने अपने वचन के अनुसार प्रदान की थी (देखें, प्रेरि. 27:21-26)।

▪ **''माल्टा''** फीनिक्स के मल्लाह भी इसे माल्टा द्वीप कहा करते थे, जो एक कनानी शब्द है, जिसका अर्थ है ''शरण-स्थान''। मूलरूप से किसी समय यह फीनिक्स कालोनी थी यह द्वीप सिसली और उत्तरी अफ्रीका के बीच में स्थित था। यह द्वीप मात्र 18 मील लम्बा और 8 मील चैड़ा था, परन्तु व्यापारिक केन्द्र था। यहाँ कई बन्दरगाह थे।

28:2 ''निवासियों'' शाब्दिक रूप से यह शब्द असभ्य या गंवार लोग की ओर संकेत है। बारबेरियन या बर्बर जाति अपमानजनक शीर्षक नहीं है परन्तु उन लोगों के लिए इस्तेमाल किया जाता था जो यूनानी लातीनी भाषा नहीं बोल पाते थे। इन लोगों ने उन पर अनोखी कृपा दिखाई।

NASB	**''असाधारण कृपा की''**
NKJV, NRSV, NJB	**''अनोखी दया दिखाई''**
TEV	**''बड़े मिलनसार थे''**

यह वाक्यांश यूनानी शब्द ''फिलेनथ्रोफॉस'' (*philanthrōpos)* से बना है जिसका शाब्दिक अर्थ है ''मनुष्यों को प्रेम करने वाला'' जैसा कि प्रेरि. 27:3 में है। वहाँ के निवासियों ने जो विशेष आदर-सत्कार किया वह इसलिए किया क्योंकि उन्होंने आश्चर्यजनक बात देखी थी कि पौलुस साँप के हमले से बच गया था। यह आश्चर्यजनक कार्य और अन्य अद्‌भुत कामों ने जिनका उल्लेख प्रेरितों के काम पुस्तक में है, (देखें, प्रेरि. 28:7-10), इन्होंने सुसमाचार प्रचार के द्वार खोले। पौलुस हमेशा सुअवसरों की तलाश में रहता था कि सुसमाचार सुना सके (देखें, 1 कुरि. 9:19-23)।

28:3 ''पौलुस ने लकड़ियों का गट्ठा बटोरकर'' यह पौलुस की विनम्रता को दर्शाता है। वह सबके साथ मिलकर कार्य करता है। जब से उसने दमिश्क का दर्शन पाया, छोटे-बड़े का अन्तर समाप्त हो गया।

▪ **''एक साँप निकला...और उसके हाथ से लिपट गया''** इसका मूल अर्थ है ''आक्रमण करना''। साँप द्वारा काट लिया जाना अथवा हाथ से लिपट जाना भी इसका अर्थ हो सकता है।

28:4 ''जंतु'' अंग्रेज़ी में बतमंजनतम (जन्तु) शब्द आया है, जिसका अर्थ विषैला सर्प है।

▪ **“न्याय ने जीवित न रहने दिया”** “न्याय” अथवा “भाग्य” उनके देवताओं के नाम थे। वे संभवतः आमोस 5:19 की तरह स्थिति पर व्यंग्य कर रहे थे। पद 6 से ज्ञात होता है कि ये निवासी अन्धविश्वासी और बहुदेववादी थे।

28:6 इन लोगों को इस टापू के साँपों का व्यक्तिगत अनुभव थां उनके व्यवहार में एकाएक मूल अन्तर आ जाना, प्रेरि. 14:11-13 में पाए जाने वाले मूर्तिपूजकों के व्यवहार के अन्तर के समान है, जो आश्चर्यकर्म देखकर उनके जीवन में आया।

▪ **“सूज जाएगा”** लूका द्वारा प्रयुक्त किए गये अनेक चिकित्सा संबंधी शब्दों में यह भी एक शब्द है (देखें, प्रेरि. 28:8)। नए नियम में इस शब्द “सूज जाएगा” का प्रयोग केवल यहीं पर हुआ है।

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 28:7-10

[7]उस जगह के आस-पास उस टापू के प्रधान पुबलियुस की भूमि थी। उसने हमें अपने घर ले जाकर तीन दिन मित्रभाव से पहुनाई की। [8]पुबलियुस का पिता ज्वर और आंव लहू से रोगी पड़ा था। अतः पौलुस ने उसके पास घर में जाकर प्रार्थना की और उस पर हाथ रखकर उसे चंगा किया। [9]जब ऐसा हुआ तो उस टापू के बाकी बीमार आए और चंगे किए गए। [10]और उन्होंने हमारा बहुत आदर किया, और जब हम चलने लगे तो जो कुछ हमारे लिये आवश्यक था, जहाज़ पर रख दिया।

28:7 “प्रधान” इस शब्द प्रधान का अर्थ कोई सरकारी अधिकारी के समान जैसा है, शाब्दिक अर्थ है “प्रथम” “मुख्य” (देखें, प्रेरि. 13:50; लूका 19:47 “मनुष्यों के लिये” प्रयुक्त; प्रेरि. 16:12 में नगर के प्रयुक्त “मुख्य नगर”। इस टापू पर यह शब्द दो शिलालेखों पर लिखा पाया गया; एक यूनानी में और दूसरा लातीनी भाषा में। रोमी साम्राज्य ने टापू को स्वयं-शासन करने की अनुमति दे दी थी और किसी हद तक रोमी नागरिकता भी प्रदान की थी।

28:8 “ ज्वर और आंव लहू से रोगी *पड़ा था*” माल्टा बुखार के लिये प्रसिद्ध था जिसका कारण वे रोगाणु थे, जो उनकी बकरियों के दूध में पाए जाते थे।

▪ **“उस पर हाथ रखकर उसे चंगा किया”** प्रेरि. 6:6 में विशेष शीर्षक “हाथ रखना” देखें।

28:9 ये दोनों अपूर्ण क्रियाएँ हैं जिसका अर्थ है चंगाई का काम जारी रहा। बीमार आते रहे और परमेश्वर पौलुस के द्वारा उन्हें चंगाई प्रदान करता रहा।

अंग्रेजी अनुवाद में “चंगाई प्राप्त की” के पीछे यूनानी क्रिया शब्द *(therapeuō)* थेरापयू है जिससे अंग्रेजी शब्द “थेरेपी” बना है। यह शब्द “सेवा” के लिए और “चंगाई” के लिये प्रयुक्त किया जा सकता है। संदर्भ द्वारा ही सही अर्थ निकाला जा सकता है।

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 28:11-15

[11]तीन महीने के बाद हम सिकन्दरिया के एक जहाज़ पर चल निकले, जो उस द्वीप में जाड़े भर रहा था और जिसका चिन्ह दियुसकूरी था। [12]सुरकूसा में लंगर डालकर हम तीन दिन टिके रहे। [13]वहां से हम घूमकर रेगियुम में आए; और एक दिन के बाद दक्षिणी हवा चली, तब दूसरे दिन पुतियुली में आए। [14]वहां हमको भाई मिले और उनके कहने से हम उनके यहां सात दिन तक रहे; और इस रीति से हम रोम को चले। [15]वहां से भाई हमारा समाचार सुनकर अप्पियुस के चैक और तीन-सराए तक हमसे भेंट करने को निकल आए जिन्हें देखकर पौलुस ने परमेश्वर का धन्यवाद किया और ढाढ़स बाँधा।

28:11 “सिकन्दरिया का एक जहाज” यह संभवतः दूसरा बड़ा अनाज ले जाने वाला जहाज था जो मिस्र से नेपलेस खाड़ी को जा रहा था (देखें, प्रेरि. 27:6, 38)।

▪ **"जहाज़ द्वीप में जाड़े भर रहा था"** भूमध्य सागर में जाड़े के मौसम में तूफान अधिक आते थे, इसलिए जाड़े में समुद्री यात्रा खतरनाक होती थी। फरवरी अथवा मार्च में फिर रास्ते खुल जाते थे।

▪ **"जुड़वाँ भाइयों का चित्र जहाज़ पर बना था"** यह ज्यूस के दो पुत्रों कास्टर और पोलक्स की ओर संकेत करता है। रोमियों के देवताकुल में ये दोनों मल्लाहों के रक्षक माने जाते थे। इन दोनों को आँधी, तूफान और समुद्री लहरों पर अधिकार था, ऐसा वे मानते थे। जेमिनी इनका विशेष नक्षत्र था। उन्होंने जहाज के आगे इन दोनों के राक्षस रूप के चित्र बना रखे थे।

28:12 "सुरकूसा" यह सिसली का मुख्य नगर था, जो माल्टा के उत्तरी दिशा में 80 मील की दूरी पर स्थित था।

28:13 "वहाँ से हम घूमकर" प्राचीन सीनाएटिकस (Siniaticus) यूनानी लिपि में और א बी B (वैटिकानुस) (Vaticanus) में "लंगर डालकर" ठहरे लिखा है, जो जहाज यात्रा का विशेष शब्द है (लूका की भी यही विशेषता है), परन्तु अन्य कुछ प्राचीन लिपियों में जैसे P[74], א[C], तथा A । में "घूमकर" शब्द आया है जैसाकि 16:8 में है।

▪ **"रेगियुम"** यह इटली की दक्षिणी-पश्चिमी छोर पर बसा एक नगर था।

▪ **"पुतियुली"** यह नेपलेस खाड़ी में अनाज आयात करने का रोमी केन्द्र था। अब तक दो दिनों में उन्होंने लगभग 180 मील का सफर तय किया था।

28:14 "वहाँ हमको *कुछ* भाई मिले" ये इटली में पाई जाने वाली एक जीवित मसीही कलीसिया थी (देखें, प्रेरि. 28:15) और इस प्रकार रोम में पौलुस का स्वागत हुआ।

28:15 "अप्पियुस के चैक" यहाँ दक्षिणी इटली से आने वाली यात्रा समाप्त होती थी और महान् रोम का राजमार्ग जो अप्पियन-मार्ग कहलाता था आरम्भ होता था। यहाँ से रोम लगभग 43 मील की दूरी पर था।

▪ **"तीन सराए"** यह रोम से 33 मील दूर एक विश्राम स्थल था।

▪ **"पौलुस ने...ढाढ़स बाँधा"** स्पष्ट रूप से पौलुस फिर निरुत्साहित हो गया था। वह अक्सर निराशा महसूस करने लगता था। इसीलिए यीशु ने उसे ढाढ़स देने के लिए कई बार अपना दर्शन दिया था।

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 28:16
16जब हम रोम में पहुंचे तो पौलुस को एक सिपाही के साथ जो उसकी रखवाली करता था, अकेले रहने की आज्ञा मिल गई।

28:16 "जब हम रोम में पहुँचे" पौलुस को इस तरीके से रोम पहुंचने की आशा नहीं थी। यह परमेश्वर ही का उसके लिए प्रबन्ध था कि वह रोम पहुंचे और रोमी अधिकारियों, सैनिकों और धार्मिक अगुवों के सामने गवाही दे सके।

▪ **"पौलुस को एक सैनिक के साथ अकेले रहने की आज्ञा मिल गई"** पौलुस को एक घर में नज़रबन्द कर दिया गया। जो सूबेदार उसे रोम लाया था, संभवतः उसी की गवाही के कारण पौलुस के लिए यह प्रबन्ध हुआ।

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 28:17-22
17तीन दिन के बाद उसने यहूदियों के प्रमुख लोगों को बुलाया, और जब वे इकट्ठे हुए, तो उनसे कहा, "हे भाइयो, मैंने अपने लोगों के या बापदादों के व्यवहारों के विरोध में कुछ भी नहीं किया, तौभी बन्दी

बनाकर यरूशलेम से रोमियों के हाथ सौंपा गया। [18]उन्होंने मुझे जांचकर छोड़ देना चाहा, क्योंकि मुझमें मृत्यु के योग्य कोई दोष न था। [19]परन्तु जब यहूदी इसके विरोध में बोलने लगे तो मुझे कैसर की दोहाई देनी पड़ी। यह नहीं कि मुझे अपने लोगों पर कोई दोष लगाना था। [20]इसलिये मैंने तुमको बुलाया है कि तुमसे मिलूं और बातचीत करूं; क्योंकि इस्राएल की आशा के लिये मैं इस जंजीर से जकड़ा हुआ हूं।'' [21]उन्होंने उससे कहा, ''न हमने तेरे विषय में यहूदियों से चिट्ठियां पाईं, और न भाइयों में से किसी ने आकर तेरे विषय में कुछ बताया, और न बुरा कहा। [22]परन्तु तेरा विचार क्या है? वही हम तुझसे सुनना चाहते हैं, क्योंकि हम जानते हैं कि हर जगह इस मत के विरोध में लोग बातें कहते हैं।''

28:17 ''पौलुस ने यहूदियों के प्रमुख लोगों को बुलाया'' पौलुस का लोगों से संपर्क करने का यह तरीका बड़ा उत्तम तरीका था (देखें, रोमि. 1:16; 2:9)। वह अपनी तत्कालिक परिस्थितियों से उन्हें अवगत कराता है फिर सुसमाचार सुनाने का अवसर खोजता है।

28:18-19, यहाँ फिर हम लूका का उद्देश्य स्पष्ट देख सकते हैं कि वह अपने धर्म एवं विश्वास की रक्षा करता है और बताना चाहता है कि मसीही धर्म रोमियों के लिए खतरा नहीं है।

28:19 ''यहूदीयों ने विरोध किया '' रोम में यहूदी अगुवों से जो पौलुस ने बातचीत की उसमें उसने जो शब्दावली प्रयुक्त की, वह अजीब सी लगती है। लूका यहूदी शब्द लओदयोस Ioudaios का प्रयोग दो भावार्थों में करता है:

1. राष्ट्रीयता-प्रेरि. 2:5, 11; 9:22; 10:22, 28; 11:19; 13:56; 14:1; 16:1, 3, 20; 17:1; 17:10, 17; 18:2, 4, 5, 19; 19:10, 17, 34; 20:21; 21:21, 39; 22:3, 12; 24:5, 9; 24:24, 27; 25:8, 9, 24; 20:7; 28:17
2. वे यहूदी जो यीशु के जीवनकाल के अंतिम सप्ताह की घटनाओं के चश्मदीद गवाह थे-प्रेरि. 2:15; 10:39

लूका विभिन्न मूल्यांकनों के अन्तर्गत भी इसका प्रयोग करता है:

1. नकारात्मक भावार्थ में-प्रेरि. 9:23; 12:3, 11; 13:45, 50; 14:2, 4-5, 19; 17:5, 13; 18:12, 14, 28; 19:13-14, 33; 20:3, 19; 21:11, 27; 22:30; 23:12, 20, 27; 24:19; 25:2, 7, 10, 15; 26:2, 21; 28:19
2. सकारात्मक भावार्थ में-प्रेरि. 13:43; 14:1; 18:2, 24; 21:20

संभवतः प्रेरितों के काम पुस्तक में सबसे अच्छा पाठांश प्रेरि. 14:1-2 है जो इस यहूदी शब्द का अर्थ अच्छी तरह समझा देता है।

28:20 ''इस्राएल की आशा के लिये'' पौलुस जिस प्रकार से अपने सुनने वालों से संपर्क साधने का प्रयत्न करता है उसी प्रकार से वह इन यहूदी अगुवों के साथ संपर्क साधने का प्रयत्न करता है। वह ''इस्राएल की आशा के'' संबंध में सामान्य आधार ढूंढ़ने का प्रयत्न करता है। पौलुस के विचार से यीशु इस्राएल की आशा है, परन्तु उनके विचार से आने वाला अभिषिक्त जन अर्थात् मसीह इस्राएल की आशा है अथवा संभवतः पुनरुत्थान है।

28:21 पौलुस के विषय में उन्हें कुछ नहीं पता था, यह बहुत आश्चर्य की बात है, क्योंकि पौलुस तो तीन मिश्नरी यात्राएँ कर चुका था और यरूशलेम में उसके विरुद्ध बहुत सी गलत बातें यहूदियों में प्रचलित थीं और चारों ओर वह प्रसिद्ध था।

28:22 स्पष्ट रूप से यीशु के बारे में समाचार सब जगह फैल चुका था और बहुत से लोग सुसमाचार ग्रहण कर रहे थे। यहूदियों के लिए यह अच्छा समाचार नहीं था! परन्तु ये यहूदी अगुवे पौलुस की बातें सुनने के इच्छुक थे।

- **''इस मत''** प्रेरि. 2:22 में विशेष शीर्षक: ''यीशु नासरी'' देखें।

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 28:23-29

[23]तब उन्होंने उसके लिये एक दिन ठहराया, और बहुत से लोग उसके यहां इकट्ठे हुए और वह परमेश्वर के राज्य की गवाही देता हुआ, और मूसा की व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकों से यीशु के विषय में समझा-समझाकर भोर से सांझ तक वर्णन करता रहा। [24]तब कुछ ने उन बातों को मान लिया, और कुछ ने विश्वास न किया। [25]जब वे आपस में एक मत न हुए तो पौलुस के इस एक बात के कहने पर चले गए कि पवित्र आत्मा ने यशायाह भविष्यद्वक्ता के द्वारा तुम्हारे बापदादों से ठीक ही कहा, [26]जाकर इन लोगों से कह, कि सुनते तो रहोगे, परन्तु न समझोगे, और देखते तो रहोगे, परन्तु न बूझोगे; [27]क्योंकि इन लोगों का मन मोटा, और उन के कान भारी हो गए हैं, और उन्होंने अपनी आंखें बन्द की हैं, ऐसा न हो कि वे कभी आंखों से देखें, और कानों से सुनें, और मन से समझें और फिरें, और मैं उन्हें चंगा करूं। [28]सो तुम जानो कि परमेश्वर के इस उद्धार की कथा अन्यजातियों के पास भेजी गई है, और वे सुनेंगे। [29]जब उसने यह कहा तो यहूदी आपस में बहुत विवाद करने लगे और वहां से चले गए।

28:23 ''बहुत से लोग... उसके यहाँ इकट्ठे हुए...भोर से साँझ तक वर्णन करता रहा'' पौलुस को कैसा अद्‌भुत अवसर मिला, और वह सारा दिन उन यहूदियों को मसीही विश्वास के विषय बताता रहा।

▪ **''परमेश्वर का राज्य''** यह यीशु के प्रचार का और दृष्टान्तों द्वारा शिक्षा देने का मूल विषय था। यह विश्वासियों के जीवन की वर्तमान वास्तविकता है और भविष्य में इस पृथ्वी पर उसके राज्य की स्थापना की परिपूर्णता है (देखें, मत्ती 6:10)। यह वाक्यांश स्पष्ट रूप से केवल इस्राएल से संबंध नहीं रखता, बल्कि इस्राएल की आशा का अभिन्न अंग है (देखें, प्रेरि. 28:20) प्रेरि. 1:3 में विशेष विषय देखें।

▪ **''मूसा की व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकों से''** ये इब्रानी कानोन ;बंदवदद्ध के तीन विभाजनों में से दो हैं (देखें, प्रेरि. 13:15 में विशेष शीर्षक तथा प्रेरि. 24:14 में टिप्पणी) जो सम्पूर्ण पुराने नियम से संबंधित हैं (देखें, मत्ती 5:17; 7:12; 22:40; लूका 16:16; 24:44; प्रेरि. 13:15; 28:23)। पौलुस के प्रचार की विधि यह थी कि वह पुराने नियम के मसीह संबंधी पाठांशों को यीशु के जीवन व सेवकाई पर लागू करता था, तथा समझाता था।

28:24 यह सुसमाचार के रहस्य को दर्शाता है। सुसमाचार को कुछ लोग ग्रहण कर लेते हैं और कुछ नहीं करते, यह मनुष्यों की स्वतन्त्र इच्छा और परमेश्वर की सर्वोच्चता का रहस्य है।

एक प्रकार से रोम के यहूदियों को सुसमाचार सुनाना व उनके बीच सेवा करना पौलुस की छोटी सी दुनिया थी। उसने सबसे पहले यहूदियों से ही प्रचार सेवा आरम्भ की। उसने प्रचार में कहा कि यीशु पुराने नियम की भविष्यद्वाणियों की परिपूर्ति है, यीशु ही में सब भविष्यद्वाणियाँ पूरी होती हैं। तब कुछ लोगों ने तो विश्वास किया परन्तु अधिकांश ने विश्वास नहीं किया। यह भी पुराने नियम में भविष्यद्वाणी कर दी गई थी (देखें, यशा. 6:9-10)।

28:25-27 ''पवित्र आत्मा ने यशायाह भविष्यद्वक्ता के द्वारा...ठीक ही कहा'' इस्राएल द्वारा अविश्वास करने के रहस्य के संबंध में यह पौलुस का विचार है। पद 26 व 27 यशायाह 6:9-10 का उद्धरण है। यीशु ने अक्सर इस पद का उपयोग मनुष्यों द्वारा विश्वास न करने के संदर्भ में किया (देखें, मत्ती 13:14-15; मरकुस 4:12; लूका 8:10; यूहन्ना 12:39-40)। इस समय तक पौलुस पहले ही रोमियों 9-11 अध्याय लिख चुका था कि इस्राएल ने अपने मसीह का तिरस्कार क्यों किया? पुराने नियम का इस्राएल भी विश्वास नहीं करता था। थोड़े ही बचे हुए लोग विश्वास करते थे, परन्तु अधिकांश अविश्वासी थे।

विशेष शीर्षक: शेष लोग, तीन भावार्थ

"विश्वासयोग्य बचे हुए" लोगों की अवधारणा, पुराने नियम के नबियों का बार-बार दोहराया जाने वाला मूल-विषय रहा है, (अधिकांशतः 8वीं शताब्दी के नबियों और यिर्मयाह द्वारा इस विषय की पुनरावृत्ति हुई)। इसे निम्नलिखित तीन अर्थों में प्रयुक्त किया गया :

1.वे लोग जो बाबुल की गुलामी से छूट गए थे (उदाहरणार्थ, एज्रा 9:8, 14-15; नहे. 1:2-3; यशा. 10:20-23;

17:4-6; 37:4, 31-22; 46:3; यिर्म. 23:3; 31:7-8; 42:15,19; 44:12,14,28; मीका 2:12; 5:7-8; 7:18; हाग्गै 1:12-14; 2:2; जक. 8:6,11-12)

2. वे जो यहोवा(YHWH) के विश्वासपात्र बने रहे (उदाहरणार्थ, यशा. 4:1-5; 11:11,16; 28:5; योएल 2:32; आमोस 5:14-15)
3. वे लोग जो युग के अंत में पुनर्निर्माण व पुनर्रचना के भागीदार होंगे (उदा. आमोस 9:11-15; जक. 8:6)।

मरकुस 4:1-20 और मत्ती 13:1-23 में पाया जाने वाला बीज बोने वाले का दृष्टान्त, जिसे यशा. 6:9-10 से उद्धरित किया गया है, एक अच्छा उदाहरण है जिसके द्वारा हम जान सकते हैं कि नया नियम इस विषय को किस प्रकार समझता है (पौलुस के दिनों में इस्राएल के संदर्भ में रोमियों 9:6 पर भी ध्यान दें)।

नए नियम के "बचे हुए" लोग वे यहूदी हैं जो यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं (देखें रोमियों 9:27-29) और साथ में वे गैर यहूदी भी हैं जो यीश पर विश्वास लाए (देखें, रोमियों 9:24-26)। इन दोनों समूहों का उल्लेख रोमियों 9:30-35; 11:11-24, 25-32 में किया गया है। इस्राएली लोग जातियता (racial) (देखें रोम 9:6; 2:18-19), के आधार पर विश्वासी नहीं बने परन्तु वह विश्वासी समूह है जो यीशु मसीह में परमेश्वर के नए और संपूर्ण प्रकाशन पर विश्वास करता है। जब हम ऐसा कहते हैं तो प्रतीत होता है कि हम पुराने नियम के इन पाठांशो का इंकार कर रहे हैं (अर्थात् यिर्म. 31:7-9; मीका 5:7-8) जिनमें इस्राएली राष्ट्र को बचे हुए लोग कहा गया है। कृपया मेरा विशेष विषय: "क्यों पुराने नियम के प्रतिज्ञाएँ नए नियम के प्रतिज्ञाओं से भिन्न प्रतीत होती हैं"।सुसमाचार सब कुछ बदल देता है।

Copyright © 2014 Bible Lessons International

28:28 "परमेश्वर ने यह उद्धार अन्यजातियों के पास भेजी गई है" यह भजन 67 की ओर संकेत हो सकता है और विशेषकर प्रेरि. 28:2 की ओर। मसीही धर्म का यही विश्वव्यापी या सार्वभौमिक पहलु है जिसके कारण यरूशलेम में दंगा खड़ा हो गया था और अनेक यहूदियों के लिए यह निरन्तर चलने वाली समस्या है। यह उत्पत्ति 1:26, 27; 3:15; 12:3 के अनुसार तर्कसंगत है। इसकी भविष्यद्वाणी यशायाह, मीका और योना में कर दी गई थी। इसके बारे में पौलुस ने इफि. 2:11 से 3:13 में स्पष्ट बताया कि यह परमेश्वर की अनन्त योजना है। प्रेरि. 1:8 में विशेष शीर्षक देखें।

▪ **"और वे सुनेंगे"** यह रोमियों 9-11 की सच्चाई है। यहूदियों ने मसीह का इन्कार इसलिये किया क्योंकि वह उनकी उम्मीदों के मुताबिक नहीं था और इसलिये भी कि सुसमाचार ने विश्वास का द्वार सब लोगों के लिये खोला।

नए नियम का विवाद वास्तव में यहूदी बनाम अन्यजाति नहीं, परन्तु विश्वासी बनाम अविश्वासी है। विवाद यह नहीं है कि कौन तुम्हारी माता है, परन्तु विवाद यह है कि क्या आपका हृदय परमेश्वर के आत्मा के लिए और परमेश्वर के पुत्र के लिए खुला है अथवा नहीं?

28:29 प्राचीन लिपियों P^{74}, ℵ, A, B, तथा E में यह पद नहीं पाया जाता है। छठी शताब्दी की पी P लिपि से पहले की किसी भी यूनानी लिपि में यह पद नहीं है। UBS^4 इसे "ए" "A" श्रेणी देता है (निश्चित रूप से)।

NASB (नवीनतम) पाठ: प्रेरितों के काम 28:30-31

[30]और वह पूरे दो वर्ष अपने भाड़े के घर में रहा। [31]और जो उसके पास आते थे, उन सबसे मिलता रहा और बिना रोक-टोक बहुत निडर होकर परमेश्वर के राज्य का प्रचार करता और प्रभु यीशु मसीह की बातें सिखाता रहा।

28:30 "पूरे दो वर्ष" यह संभवत:

1. कैसर के सामने प्रस्तुत होने का निर्धारित सामान्य समय होगा।

2. फेस्तुस की ओर से नए कागज़ात तैयार होने में लगने वाला समय होगा।
3. एशिया और यरूशलेम से गवाहों के उपस्थित होने की प्रतीक्षा का समय होगा।
4. वैधानिक सीमा निर्धारित हो।

यही वह समय था जब पौलुस ने बन्दीगृह से पत्रियां लिखीं (कुलुस्सियों, इफिसियों, फिलेमोन तथा फिलिप्पियों)।

▪ **"अपने किराए के घर में रहा"** पौलुस को संभवतः आर्थिक सहयोग प्राप्त होता होगा

1. वह तम्बू बनाने और चमड़े का काम करता था।
2. कलीसियाएँ उसकी आर्थिक सहायता करती थीं।
3. उसके पास अपनी संपत्ति भी थी।

▪ **"स्वागत"** के अर्थों में लूका ने इस शब्द का अक्सर प्रयोग किया है (देखें, प्रेरि. 18:27; 28:30 तथा प्रेरि. 15:24 में "पाराडेकोमाए"।(*paradechōmai*) यह शब्द भीड़ द्वारा स्वागत करने में भी प्रयुक्त हुआ (देखें, लूका 8:40; 9:11)। यह शब्द प्रेरि. 2:41 में पतरस के उपदेश का स्वागत करने में भी प्रयुक्त हुआ।

▪ **"सब जो आए थे"** यह समस्या की बात थी। पौलुस का सुसमाचार सार्वभौमिक था, यह शुभ-समाचार था जो संपूर्ण मानवजाति के लिये था, केवल यहूदियों ही के लिये नहीं था।

28:31 "प्रचार करता... सिखाता" प्रेरितों के काल के बाद की आरम्भिक कलीसिया ने प्रचार करने और यीशु मसीह की बातें सिखाने के बीच अन्तर निर्धारित किया है। प्रेरितों के काम पुस्तक में पतरस, स्तिफनुस और पौलुस के उपदेश केरिगमा *(kerygma)* कहलाते हैं, (देखें, प्रेरि. 20:25; 28:31; रोमि. 10:8; गला. 2:2; 1 कुरि. 9:27; 2 तीमु. 4:2) तथा पत्रियों में पाई जाने वाली यीशु की शिक्षाएं डिडखे *(Didache)* कहलती है (देखें, प्रेरि. 2:42; 5:28; 13:12; रोमि. 16:17; 1 कुरि. 14:20)।

▪ **"परमेश्वर के राज्य "** प्रभु यीशु मसीह के प्रचार का विषय भी यही था। यह मनुष्यों के हृदयों पर परमेश्वर के राज्य की और उसकी इच्छा पूरी किए जाने की ओर संकेत करता है, एक दिन यह राज्य पृथ्वी पर भी भरपूरी के साथ स्थापित होगा। यह पाठांश यह भी दर्शाता है कि यह विषय केवल यहूदियों ही के लिए नहीं है। प्रेरि. 1:3 में विशेष टिप्पणी देखें।

▪ **"प्रभु"** "प्रभु" शब्द का अनुवाद इब्रानी शब्द अदोन *(adon)* से किया गया है, जिसका अर्थ है, "मालिक" "स्वामी" "पति" और "प्रभु" (देखें, प्रेरि. 1:6 में विशेष शीर्षक ईश्वरत्व के नाम यहूदी, यहोवा (YHWH) का नाम लेने से डरते थे, वे इसे पवित्र मानते थे, और डरते थे कि कहीं वे यहोवा(YHWH) नाम व्यर्थ में लेकर उसे अपवित्र न कर डालें, इसलिए वे यहोवा(YHWH) के स्थान पर प्रभु शब्द इस्तेमाल करते थे। यही कारण है कि अंग्रेजी अनुवादों में जहां यहोवा (YHWH) शब्द आया है, वहां बड़े अक्षरों में (*kurios*) लिखा गया है। यह शब्द "प्रभु" नए नियम में यीशु को देने से नए नियम के लेखक यीशु को पिता की बराबरी पर ठहराते हैं कि पिता के साथ एक है।

▪ **"यीशु"** "यीशु" नाम स्वर्गदूत द्वारा बालक यीशु को बेतलहम में दिया गया था (देखें, मत्ती 1:21)। यह शब्द दो इब्रानी संज्ञाओं "यहोवा" और "उद्धार" (अर्थात् होशे) से मिलकर बना है। यह नाम इब्रानी नाम यहोशू के समान है। जब यह नाम अकेला प्रयोग किया जाता है तो मनुष्य को दर्शाता है, जैसे नासरत का यीशु, मरियम का पुत्र यीशु (उदाहरणार्थ, मत्ती 1:16, 25; 2:1; 3:13, 15-16)।

▪ **"ख्रीस्त"** "क्राईस्ट" यह इब्रानी शब्द मसीह का यूनानी अनुवाद है (अर्थात् अभिषिक्त जन, देखें, प्रेरि. 2:31 में विशेष शीर्षक)। यह शब्द यीशु को पुराने नियम का यहोवा (YHWH)द्वारा भेजा गया प्रतिज्ञात जन घोषित करता है जो धार्मिकता का नया युग स्थापित करेगा।

NASB	**"बिना रूकावट, बेझिझक होकर"**
NKJV	**"पूरे भरोसे के साथ, बिना किसी के रोके"**
NRSV	**"पूर्ण निर्भर होकर, बिना बाधा के"**
TEV	**"साहस और स्वतन्त्रता के साथ बोलता था"**
MJB	**"पूर्ण निर्भीकता और बिना रूकावट के"**

यह पद दर्शाता है कि रोमी सरकार मसीही धर्म को अपना शत्रु नहीं मानती थी। यह पद यूनानी में विशेषण शब्द "बिना किसी रूकावट" से समाप्त होता है। जो यह दर्शाता है कि प्रचार कार्य और पवित्र आत्मा की सामर्थ में होता रहा।

अनेक विद्वानों का अनुमान है, जो प्रेरित 1:1 पर आधारित है कि लूका तीसरी पुस्तक भी लिखना चाहता था। कुछ विद्वान तो कहते हैं कि उसकी तीसरी पुस्तक पास्तरीय-पत्र हो सकते हैं (1-2 तीमुथियुस तथा तीतुस)।

यूनानी शब्द "परहेसिया" (*parrhēsia*) के लिये प्रेरि. 4:29 में विशेष शीर्षक देखें जिसका अनुवाद एनएएसबी (NASB) में खुले हृदय से किया गया है।

विचार विमर्श के लिये प्रश्न

यह अध्ययन में मार्गदर्शन करने की टीका है, इसका अर्थ है कि आप बाइबल की अपनी व्याख्या करने के स्वयं ही जिम्मेदार हैं। हम में से प्रत्येक को उसी ज्ञान के अनुसार चलना चाहिए जो हमारे पास है। व्याख्या करने के कार्य में आप आपकी बाइबल और पवित्र आत्मा केन्द्रिय स्थान रखते हैं। यह कार्य व्याख्याकार पर न छोड़ दें।

निम्नलिखित प्रश्न अपनी सहायता के लिए दिए गए हैं ताकि आप पुस्तक के गम्भीर विषयों पर पुनर्विचार कर सकें। वे आपके विचारों को आन्दोलित करने के लिए हैं, इनके अलावा और भी प्रश्न हो सकते हैं।

1. प्रेरितों के काम पुस्तक पौलुस को कैदी के रूप में छोड़कर अचानक क्यों समाप्त होती है?
2. लूका पौलुस की समुद्री यात्रा और रोम में टिकने का वर्णन करने में क्यों बहुत समय लगाता है?
3. पौलुस सबसे पहले यहूदियों में क्यों अपनी गवाही देने की कोशिश करता था?
4. करिगमा *(kerygma)* और डिडखे के बीच क्या अन्तर है, बताएं?

Copyright © 2013 Bible Lesson International

व्याकरण संबंधी यूनानी शब्दों की संक्षिप्त परिभाषाएँ

आम बोलचाल की यूनानी भाषा को अक्सर हेलेनीवादी यूनानी भाषा कहा जाता है, जो भूमध्य सागर के संसार की सामान्य प्रचलित भाषा थी और जिसका आरम्भ सिकन्दर महान (336-323 ई.पू.) की विजयों के साथ हुआ तथा उसके बाद आठ सौ वर्षों (300 ई.पू. से 500 ई.पूर्व.) तक इस भाषा का बोलबाला रहा। यह सरल और श्रेष्ठ यूनानी तो नहीं थी परन्तु अनेक प्रकार से यह नए प्रकार की यूनानी थी, जो प्राचीन भूमध्य सागर के आसपास के सभी देशों की दूसरी भाषा बन गई थी।

कुछ हद तक नए नियम की यूनानी भाषा अलौकिक थी, क्योंकि लूका और इब्रानियों की पत्री के लेखक को छोड़कर, संभवतः सभी लेखक जो इसका प्रयोग करते थे वे अपनी प्राथमिक भाषा के रूप में आरामी भाषा का उपयोग करते थे। अतः उनकी लेखन शैली आरामी भाषा के मुहावरों व वाक्य रचना से प्रभावित थी। वे सप्तूजैन्त भी पढ़ते थे और उसमें से उद्धरण लेते थे। सप्तूजैन्त पुराने नियम का यूनानी अनुवाद है, जो आम बोलचाल की यूनानी भाषा में था, परन्तु सप्तूजैन्त ऐसे यहूदी विद्वानों द्वारा रचा गया था जिनकी मातृ-भाषा यूनानी नहीं थी।

यह हमारे लिए स्मरण दिलाने की बात है कि हम नए नियम को सख्त व्याकरण संबंधी संरचना में नहीं धकेल सकते हैं। यह अलौकिक है और तो भी (1) सप्तूजैन्त से (2) यहूदी रचनाओं से जैसे योसेपस के लेख तथा (3) मिस्र में पाए जाने वाले पटेर-पत्रों की लिपियों से मिलता-जुलता व मेल खाता है। तब प्रश्न उठता है कि हम कैसे नए नियम की व्याकरणीय समीक्षा या उसका विश्लेषण कर सकते हैं?

आम बोल चाल की यूनानी और नए नियम की आम बोलचाल की यूनानी भाषा की व्याकरण संबंधी विशेषताएँ प्रवाह पूर्ण हैं। अनेक प्रकार से यह व्याकरण को सरल बनाने का युग था। सन्दर्भ हमारा सबसे बड़ा मार्गदर्शक होगा। शब्दों का अर्थ केवल बड़े सन्दर्भों से ही प्राप्त हो सकता है, अतः व्याकरण संबंधी संरचना को केवल (1) विशिष्ठ लेखक की शैली और (2) विशिष्ठ सन्दर्भ के प्रकाश में ही समझा जा सकता है। यूनानी शब्दों के प्रारूप और संरचना को परिभाषित करना संभव नहीं है।

बोलचाल की यूनानी मुख्य रूप से मौखिक भाषा थी अर्थात् बोली जाने वाली भाषा। इसको अनुवाद करने का अक्सर तरीका मौखिक था। अधिकतर मुख्य वाक्यांशों में क्रिया पहले आती है, जो अपनी अग्रता दर्शती है। यूनानी क्रिया का विश्लेषण करने के लिए तीन बातों का ध्यान रखना होगाः (1) काल, क्रिया व अर्थ का मूल शोर या बल किस बात पर है (2) विशिष्ठ क्रिया शब्द का मूल अर्थ क्या है, तथा (3) सन्दर्भ का प्रवाह किस ओर है।

I.काल

A. काल अथवा रूप में क्रिया का सम्बन्ध कार्य के पूर्ण होने अथवा अपूर्ण कार्य के साथ जुड़ा होता है यह अक्सर "पूर्ण कार्य" और "अपूर्ण कार्य" कहलाता है।

1. पूर्ण कालिक काल कार्य के होने पर केन्द्रित होते हैं। इसके सिवाय कि कोई कार्य घटित हुआ, अन्य कोई सूचना नहीं दी जाती। इसके आरम्भ, जारी रहने अथवा पूर्ण होने के विषय में नहीं बताया जाता है।
2. अपूर्ण कालिक काल कार्य के जारी रहने की प्रक्रिया पर केन्द्रित होते हैं। इसे एक कार्य, देर तक जारी रहने वाले कार्य के रूप में वर्णित किया जा सकता है।

B. कालों की ऐसी श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है जैसा लेखक कार्य की प्रगति होते हुए महसूस करता है:

1. कार्य घटित हुआ = भूतकाल
2. यह घटा और परिणाम बने हुए हैं = पूर्ण भूत
3. भूतकाल में कार्य घट रहा था, और परिणाम बने थे, परन्तु अब अपूर्ण = अपूर्ण
4. कार्य घट रहा है = वर्तमान

5. कार्य जारी है = अपूर्ण कालिक
6. कार्य घटित होगा = भविष्यकाल

ये काल व्याख्या करने में किस प्रकार हमारी सहायता करते हैं, यह जानने का ठोस उदाहरण शब्द ‘‘उद्धार’’ होगा। यह शब्द विभिन्न कालों में प्रयुक्त हुआ है जिससे इसकी प्रक्रिया और पूर्ण होना प्रकट होता है।

1. भूतकाल - ‘‘उद्धार हुआ’’ (रोमियों 8:24)
2. पूर्ण कालिक - ‘‘उद्धार हुआ, और परिणाम जारी है (इफि. 2:5,8)
3. वर्तमान काल- ‘‘उद्धार पा रहे हैं’’ (1 कुुरि. 1:18; 15:2)
4. भविष्यकाल - ‘‘बचाए जाएँगे’’ (रोमियों 5:9,10; 10:9)

C. क्रिया के कालों पर ध्यान देते समय व्याख्याकार मूल लेखक के कारणों का पता लगाता है कि क्यों उसने स्वयं को व्यक्त करने के लिए किसी विशेष काल को चुना। वे विशेष करके भूतकाल में अपने विचारों को व्यक्त करते थे। यह नियमित अविशिष्ट और अलक्षित क्रिया रूप होता था। इसे विस्तृत रूप में अनेक प्रकार से इस्तेमाल किया जा सकता था जो सन्दर्भ द्वारा प्रकट होता था। इसमें केवल वह बताया जाता था जो घटना घटी है। केवल निर्देशात्मक क्रिया अर्थों में ही भूतकालिक रूप की आवश्यकता होती है। यदि अन्य कोई काल प्रयुक्त किया गया हो तो किसी और विशिष्ट बात पर शोर दिया जाता था। परन्तु निम्नलिखित के बारे में क्या कहें:

1. पूर्ण कालिक काल। यह कार्य के पूर्ण होने और परिणाम बने रहने के बारे में बताता है। यह कुछ हद तक भूतकाल और वर्तमान का मिश्रण है। आमतौर पर ध्यान का केन्द्र परिणाम बने रहने अथवा कार्य के पूर्ण होने पर रहता है (उदाहरणार्थ: इफि. 2:5 व 8, ‘‘तुम्हारा उद्धार हुआ’’ और यह उद्धार जारी रहेगा।)
2. परोक्ष भूत। यह पूर्ण कालिक काल के समान होता है, इसमें परिणाम रुक जाता है, उदाहरणार्थ, यूहन्ना 18:16, ‘‘पतरस बाहर द्वार पर खड़ा रहा।’’
3. वर्तमान काल। यह अपूर्ण कार्य के बारे में बताता है। आमतौर पर घटना के जारी रहने पर ध्यान केन्द्रित रहता है, उदाहरणार्थ, 1 यूहन्ना 3:6,9, ‘‘जो उसमें बना रहता है, वह पाप नहीं करता;’’ ‘‘जो परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है, वह पाप नहीं करता।’’
4. अपूर्ण काल। इस काल में वर्तमान काल से सम्बन्ध, पूर्णकालिक काल और परोक्ष भूत के बीच के संबंध के तुल्य होता है। अपूर्ण काल, अपूर्ण-कार्य के विषय में बताता है जो घट रहा था, परन्तु अब रुक गया है अथवा भूतकाल में कार्य के आरम्भ होने के बारे में बताता है। उदाहरणार्थ, मत्ती 3:5, ‘‘तब उसके पास यरूशलेम, समस्त यहूदिया और यरदन के आसपास स्थित सारे प्रदेश के लोग निकल आए।’’
5. भविष्यकाल। यह ऐसे कार्य के विषय में बताता है जिसका संबंध आमतौर पर भविष्य समय से होता है। इसमें कार्य अभी घटा नहीं पर संभावना है कि घट जाएगा। यह अक्सर घटना की निश्चयता के बारे में बताता है, उदाहरणार्थ, मत्ती 5:4-9, ‘‘धन्य हैं वे....क्योंकि वे .....।’’

II. वाच्य (VOICE)

A. वाच्य क्रिया और उसके कर्त्ता के बीच के संबंध को दर्शाता है।

B. कर्तवाच्य ;।बजपअम अवपबमद्ध कर्त्ता द्वारा किए गए कार्य को बताने का सामान्य तरीका है कि उसने कोई कार्य किया या उसने क्रिया की।

C. कर्मवाच्य (Passive voice) का अर्थ है कि कर्त्ता जो कार्य स्वीकार करता है, उसको करने की आज्ञा उसे किसी ने दी है। बाहर के किसी व्यक्ति द्वारा दी गई इस आज्ञा को (ग्रीक) यूनानी नए नियम में निम्नलिखित सम्बन्ध सूचक शब्दों और कारकों (cases) द्वारा दर्शाया गया है:

1. व्यक्तिगत प्रत्यक्ष आज्ञा देने वाले को अपादान कारक के साथ शब्द *"hupo"* (हयूपो) द्वारा दर्शाया गया है (देखें, मत्ती 1:22; प्रेरित. 22:30)

2. व्यक्तिगत मध्यस्त एजेन्ट को अपादान कारक के साथ *"dia"* शब्द द्वारा दर्शाया गया है, (देखें मत्ती 1:22)।
3. भाववाचक एजेन्ट को आमतौर पर करण कारक के साथ *"en"* द्वारा दर्शाया गया है।
4. कभी व्यक्तिगत अथवा भाववाचक एजेन्ट को केवल करण कारक द्वारा दर्शाया गया है।

D. मध्य वाच्य (middle voice) का अर्थ है कि कर्त्ता कोई कार्य करता है और साथ ही वह कार्य में सम्मिलित भी होता है। इसे अक्सर व्यक्तिगत रूचि कहा जाता है। यह वाक्य रचना कर्त्ता पर बल डालती है। यह वाक्य रचना इंगलिश में नहीं पाई जाती है। यूनानी भाषा में इसके अनेक अर्थ और अनेक अनुवाद हो सकते हैं सके कुछ उदाहारण इस प्रकार हैं:
1. आत्मवाचक (Reflexive) कर्त्ता पर उसक कार्य का सीधा प्रभाव, उदाहरण: मत्ती 27:5, ''जाकर फाँसी लगा ली।''
2. तीव्रता बोधक (Intensive) - कर्त्ता अपने लिए कार्य करता है। उदाहरण: 2 कुरि.11:14 ''शैतान भी ज्यातिर्मय स्वर्गदूत का रूप धारण करता है।''
3. पारस्परित (Reciprocal) दो कर्त्ताओं के बीच आपसी कार्य उदहारण, मत्ती 26:4 ''उन्होंने आपस में यीशु को पकड़ने और मार डालने का षड्यन्त्र रचा।''

III. क्रिया भाव (अथवा रूप) (or MODE)

A. सामान्य बोलचाल की यूनानी भाषा में चार प्रकार के क्रिया भाव (MOOD) होते हैं। ये क्रिया का सम्बन्ध वास्तविकता के साथ बताते हैं, जो लेखक के मन में होती है। क्रिया भाव को दो बड़ी श्रेणियों में बाँटा जाता हैः पहली वह जो वास्तविकता बताए (निर्देशात्मक) और दूसरी जो संभावना बताए ;संभाव्य, आदेश सूचक, और इच्छाबोधक)।

B. कार्य को व्यक्त करने का, जो हो चुका या हो रहा है, निर्देशात्मक क्रिया-भाव एक सामान्य विधि है; अर्थात् उस कार्य को व्यक्त करने का जो लेखक के मन में चल रहा है। यही एकमात्र यूनानी भाषा में ऐसा क्रियाभाव है जो निश्चित समय बताता है और यहाँ पर यह पहलू अप्रधान है।

C. संभाव्य क्रिया भाव भविष्य के कार्य को बताता है, जो अभी घटा नहीं, परन्तु संभावना है कि घट जाए। यह बहुत कुछ भविष्य के निर्देशात्मक क्रियाभाव से मिलता जुलता है। फर्क केवल इतना है कि संभाव्य क्रिया भाव कुछ सन्देह प्रकट करता है। अंग्रेजी में अक्सर इन्हें इन शब्दों द्वारा व्यक्त किया जाता है: “could," "may", और "might" ।

D. इच्छा बोधक क्रियाभाव अभिलाषा को व्यक्त करता है, जो सैद्धान्तिक रूप से पूरी हो सकती है। इसे संभाव्य क्रियाभाव की अपेक्षा वास्तविकता से एक कदम आगे माना जाता है। इच्छाबोधक क्रियाभाव संभावना को कुछ शर्तों के अधीन व्यक्त करता है। इच्छाबोधक क्रियाभाव नए नियम में बहुत कम पाया जाता है। यह अक्सर पौलुस के प्रसिद्ध कथन ''कदापि नहीं'' (KJV) द्वारा अधिकतर प्रयुक्त हुआ है। पौलुस ने 15 बार इस शब्द का प्रयोग किया (देखें, रोमियों 3:4,6,31; 6:2,15; 7:7,13; 9:14; 11:1,11; 1 कुरि. 6:15; गला. 2:17; 3:21; 6:4)। अन्य उदाहरण लूका में पाए जाते हैं, (1:38; 20:16; प्रेरि. 8:20; 1 थिस्स. 3:11)।

E. आदेश सूचक क्रियाभाव आज्ञा पर बल देता है जो संभव है, परन्तु बल वक्ता के अभिप्राय पर निर्भर होता है। इसमें केवल संकल्प के साथ संभावना पूरी होती है और यह दूसरों की इच्छा और शर्त पर निर्भर होता है। प्रार्थना में और तीसरे व्यक्ति की विनती में इसका विशेष उपयोग होता है। नए नियम में ये आदेश केवल वर्तमान काल और भूतकाल ही में पाए जाते हैं।

F. कुछ व्याकरणों में कृदन्त (Participle) को अन्य प्रकार की क्रियाभाव श्रेणी में रखा जाता है। यह यूनानी नए नियम में बहुत सामान्य बात है, आमतौर पर इन्हें क्रिया के विशेषण कहा जाता है। इन्हें मुख्य क्रिया के साथ जिससे इनका सम्बन्ध होता है, उनके साथ अनुवादित किये जाते हैं। कृदन्त का अनुवाद करने की अनेक संभावनाएँ होती हैं। अतः विभिन्न प्रकार के अंग्रेजी अनुवादों का

अध्ययन करना उत्तम होता है। बेकर द्वारा प्रकाशित पुस्तक "The Bible in the Twenty Six Translations" का उपयोग करना बहुत लाभदायक होगा।

G. किसी घटना का विवरण लिखने में भूतकालिन सक्रिय निर्देशक का उपयोग सामान्य होता है। जिन बातों को मूल लेखक बताना चाहता है, उनको अन्य किसी काल, वाच्य अथवा क्रियाभाव में अनुवाद का विशेष महत्व होता है।

IV. जो लोग यूनानी भाषा से अनभिज्ञ हैं, उनको निम्नलिखित अध्ययन-सामग्री वांछित सहायता प्रदान कर सकती **हैः**

A. फ्रीबर्ग, बाबरा और तिमोथी का "Analytical Greek New Testement" बेकर-1988.
B. मार्शल, एलफ्रेड की, "Interlinear Greek-English New Tastament" जोन्डरवैन-1976.
C. माउन्स, विलियम डी का, "The Analytical Lexicon to the Greek New Testament" - जोनडरवैन-1993.
D. समरस, रे, का, "Essentials of the New Testament Greek" नैशविल ब्रौडमैन-1950.
E. मूडी बाइबल इंस्टीट्यूट द्वारा यूनानी भाषा का पत्र-व्यवहारिक बाइबल अध्ययन कोर्स उपलब्ध है।

V. संज्ञा (Nouns)

A. वाक्य गत रूप से संज्ञा को कारकों में विभाजित किया जाता है। कारक संज्ञा का रूप होता है जो क्रिया के साथ और वाक्य के अन्य भागों के साथ अपना संबंध बताता है। आम बोलचाल की यूनानी भाषा में कारक सम्बन्ध सूचक शब्दों द्वारा दर्शाए जाते हैं।

B. यूनानी कारक निम्नलिखित आठ श्रेणियों में विभक्त होते हैं -

1. कर्त्ताकारक: यह आमतौर पर नाम देने के लिये प्रयुक्त होते हैं, और वाक्य या वाक्यांश का कर्त्ता होते हैं। यह संज्ञा और विशेषण शब्दों में योजक-क्रिया शब्द ‘‘होना’’ अथवा ‘‘कहलाना’’ के साथ भी प्रयुक्त किये जाते हैं।
2. सम्बन्ध कारक: यह वर्णन करने में प्रयुक्त होता है और जिस शब्द से इसका संबंध हो उसमें गुण या विशेषता दर्शाता है। यह इस प्रश्न का उत्तर देता है ‘‘किस प्रकार का’’? यह अंग्रेजी में शब्द द्वारा व्यक्त किया जाता है।
3. उपादान कारकः यह सम्बन्ध की तरह संज्ञा रूप में प्रयुक्त होता है, परन्तु पृथकता दर्शाने के लिये होता है। आमतौर पर यह समय, दूरी, स्रोत, मूल स्रोत अथवा अवस्था से पृथकता दर्शाता है। यह अंग्रेजी शब्द ‘‘थ्तवउष् के प्रयोग द्वारा व्यक्त किया जाता है।
4. संप्रदान कारक: यह व्यक्तिगत रूचि दर्शाने में प्रयुक्त किया जाता है। यह सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पहलू दर्शा सकता है। यह अक्सर अप्रत्यक्ष कर्म होता है। यह अंग्रेजी शब्द द्वारा व्यक्त किया जाता है।
5. अधिकरण कारक: यह संप्रदान कारक की तरह संज्ञा रूप होता है, परन्तु यह स्थिति अथवा दूरी, समय व तर्क सीमा को बताता है। यह अंग्रेजी शब्दों आदि शब्दों द्वारा व्यक्त किया जाता है।
6. करण कारक: यह संप्रदान कारक और अधिकरण कारक के समान संज्ञा रूप होता है। यह साधन अथवा सम्बन्ध दर्शाता है। यह अक्सर अंग्रेजी शब्दों तथा द्वार व्यक्त किया जाता है।
7. कर्म कारक: यह कार्य के सारांश को बताने में इस्तेमाल किया जाता है। यह सीमा को बताता है? इसका मुख्य कार्य है प्रत्यक्ष कर्म। यह इस प्रश्न का उत्तर देता है ‘‘कब तक’’? अथवा ‘‘किस हद तक’’?
8. सम्बोधक कारक: यह सीधे सम्बोधित करने में प्रयुक्त किया जाता है।

VI. समुच्चय बोधक और संयोजक (Conjunction and Connectors)

A. यूनानी भाषा में बहुत से संयोजक शब्द होते हैं इसलिये यह एक परिशुद्ध व सुस्पष्ट भाषा है। ये संयोजक शब्द वाक्यांशों, वाक्यों और पैराग्राफों व विचारों को आपस में जोड़ते हैं। व्याख्या में ये अत्यन्त महत्वपूर्ण होते हैं। ये संयोजक शब्द लेखक के विचारों का प्रवाह दर्शाते हैं कि किस ओर है। लेखक क्या बताना चाहता है यह पता लगाना अक्सर कठिन कार्य होता है।

B. नीचे समुच्चय बोधक और संयोजक शब्दों की उनके अर्थों के साथ सूची दी जा रही है। (यह जानकारी हमें एच.ई.दाना और जूलियस के. मैन्टी की पुस्तक से प्राप्त हुई है। (H. E. Dana and Julius K. Mantey's *A Manual Grammar of the Greek NewTestament*).

1. समय संयोजक
    a. एपाई, इपेदिए, होपोते, होस, होते, होतान (संभाव्य)- ''कब'' *epei, epeidē, hopote, hōs, hote, hotan* (subj.) - "when"
    b. हिओस - ''जबकि'' *heōs* - "while
    c. होतान, ऐपन (संभाव्य) - ''जब कभी भी'' (*hotan, epan* (subj.) - "whenever")
    d. हेओस, अचरी, मेच्री (संभाव्य) ''जब तक'' (*heōs, achri, mechri* (subj.) - "until")
    e. प्रिव (अनिश्चित) - ''पहले'' (*priv* (infin.) - "before)
    f. होस - ''जबकि'' ''कब'' ''जैसे'' (*hōs* - "since," "when," "as")
2. तार्किक संयोजक
    a. उद्देश्य
        (1) *हिना* (सबज.), *होप्स* (सबज.), *एचएस* - "क्रम में", "वह" (*hina* (subj.), *hopōs* (subj.), *hōs* - "in order that," "that")
        (2) *होस्टे* (आर्टिक्यूलर एक्सिसिटिव इन्फिनिटिव) - "वो" (*hōste* (articular accusative infinitive) - "that")
        (3) परोस (आर्टिकुलर एक्सीसेंटिव इनफिनिटिव) या ईआईएस (आर्टिकुलर एक्सीसिटिव इन्फिनिटिव) - "वह" (*pros* articular accusative infinitive) or *eis* (articular accusative infinitive) - "that"
    b. परिणाम (उद्देश्य और परिणाम में घनिष्ट संबंध होता है)
        (1) होस्टे (इनफिनिटिव, यह सबसे आम है) - "इस प्रकार," (*hōste* (infinitive, this is the most common) -"in order that," "thus - ''ताकि'' ''इस प्रकार'')
        (2) हिव (उप।) - "ताकि" *hiva* (subj.) - "so that"
        (3) ''इसलिये'' - "ara"
    c. कारण
        (1) गार (कारण / प्रभाव या कारण / निष्कर्ष) - "के लिए," "क्योंकि"*gar* (cause/effect or reason/conclusion) - "for," "because"
        (2) *दिओती, होतीय* - "क्योंकि" (*dioti, hotiy*) - "because
        (3) *इपीई, इपिडो, एचएस* - "चूंकि" - *epei, epeidē, hōs* - "since"
        (4) *दीया* (अभियोगात्मक के साथ) और (कलात्मक शिशु के साथ।) - "क्योंकि" *dia* (with accusative) and (with articular infin.) - "because"
    d. हस्तक्षेप
        (1) *आरा,* पॉइंटन, जल्दबाजी - "इसलिए" (*ara, poinun, hōste* - "therefore")
        (2) *डीआईओ* (सबसे मजबूत अनुमानात्मक संयोजन) - "किस खाते पर," "जहां से," "इसलिए" (*dio* strongest inferential conjunction) - "on which account," "wherefore," "therefore")
        (3) *ओउन*-"इसलिए," "तो," "फिर," "फलस्वरूप"- (*oun*-"therefore," "so," "then," "consequently)

(4) *तोइन्नौन* - "तदनुसार" – (*toinoun* - "accordingly")

e. विरोधात्मक

(1) अल्ला (मजबूत विरोधी) - "लेकिन," "सिवाय" (*alla* (strong adversative) - "but," "except")
(2) डे - "लेकिन," "हालांकि," "अभी तक," "दूसरी तरफ" (*de* -"but," "however," "yet," "on the other hand")
(3) काई - "लेकिन" (*kai* - "but)
(4) मेंटोई, यूएन - "हालांकि" (*mentoi, oun* - "however")
(5) प्लेन - "कभी नहीं-कम" (ज्यादातर ल्यूक में) (*plēn* - "never-the-less" (mostly in Luke)
(6) ओउन - "हालाँकि" (*oun* - "however)

f. तुलनात्मक

(1) *होस*, कथोस (तुलनात्मक खंड पेश करें) (*hōs, kathōs* (introduce comparative clauses)
(2) *काटा* (यौगिकों में, कथो, कथोती, कथासुपर, कथपर) (*kata* (in compounds, *katho, kathoti, kathōsper, kathaper*)
(3) *होसोस* (इब्रानियों में) (*hosos* in Hebrews)
(4) *इ* - "से (*ē*- "than)

g. निरन्तरता अथवा शृंखला

(1) डे - "और," अब " (*de* - "and," "now")
(2) कै - "और" (*kai* -"and")
(3) ती - "और" (*tei -"and"*)
(4) हिना, यूं - "वो" (*hina, oun* - "that")
(5) यूं - "फिर" (योहन्ना में) (*oun* - "then" (in John))

3. जोरदार प्रयोग

a. अल्ला - "निश्चितता," "हाँ," "वास्तव में" (*alla* - "certainty," "yea," "infact")
b. आरा - "वास्तव में," "निश्चित रूप से," "वास्तव में"(*ara* - "indeed," "certainly," "really)
c. गर -"लेकिन वास्तव में," "निश्चित रूप से," "वास्तव में" (*gar* - "but really," "certainly," "indeed")
d. डी - "वास्तव में" - "सम" (*de* - "indeed")
e. इएअन - "एक समान" (*ean* - "even")
f. काई - "भी," "वास्तव में," "वास्तव में" (*kai* - "even," "indeed," "really")
g. मेंटोय - "वास्तव में" (*mentoi* - "indeed")
h. सर्व - "वास्तव में," "हर तरह से (*oun* - "really," "by all means")

VII. शर्त वाले वाक्य (conditional sentences)

A. शर्त वाले वाक्य वे कहलाते हैं जिनमें एक या अधिक शर्तें उपवाक्य के रूप में सम्मिलित होती हें यह व्याकरणीय वाक्य रचना व्याख्या में सहायता करती है, क्योंकि इसमें शर्तें, कारण अथवा उपवाक्य दिए गये होते हैं कि क्यों मुख्य क्रिया का कार्य पूरा नहीं हो रहा है। चार प्रकार के शर्त वाले वाक्य होते हैं। लेखक के दृष्टिकोण से इन्हें सत्य माना जाता है, अथवा यह केवल उसकी इच्छा मात्र हो सकता है।

B. प्रथम श्रेणी के शर्त वाले वाक्य हालांकि ''यदि'' से आरम्भ होते हैं, तो भी लेखक की दृष्टि में सही और उसके उद्देश्यों के लिए होते हैं (देखें, मत्ती 4:3; रोमियों 8:31), परन्तु कुछ सन्दर्भों में वाक्य ''जबकि'' से आरम्भ

होते हैं। इसका अर्थ यह नहीं कि सभी प्रथम श्रेणी की शर्त के वाक्य सत्य होते हैं। अक्सर वे तर्क-वितर्क द्वारा अथवा गलत बात को उजागर करने के लिए तर्क प्रस्तुत करते हैं (देखें, मत्ती 12:27)।

C. दूसरी श्रेणी के शर्त वाले वाक्यों को ‘‘सत्य के विपरीत’’ कहा जाता है। इसमें अपनी बात सही ठहराने के लिए ऐसी बात कही जाती है जो वास्तविक से परे व असत्य होती है। इसके कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं:

1. ‘‘यदि यह मनुष्य नबी होता तो जान जाता कि वह स्त्री जो उसे छू रही है, कौन है और कैसी है, अर्थात् वह तो पापिन है।’’ (लूका 7:39)।
2. ‘‘यदि तुम मूसा का विश्वास करते, तो मेरा भी विश्वास करते; इसलिये कि उसने मेरे विषय में लिखा है (यूहन्ना 5:46)।
3. ‘‘यदि मैं अब तक मनुष्यों को प्रसन्न करने का प्रयत्न करता रहता तो मैं मसीह का दास न होता।’’ (गलातियों 1:10)।

D. तीसरी श्रेणी के शर्त वाले वाक्य भविष्य के कार्य के बारे में बताते हैं जो संभव हो सकता है। इसमें उस कार्य की संभावना को स्वीकार किया जाता है। आमतौर पर इसमें आकस्मिक घटना का संकेत होता है। मुख्य क्रिया का कार्य ‘‘यदि’’ उपवाक्य में संदिग्ध होता है। 1 यूहन्ना की पत्री से इसके कुछ इन पदों में पाए जाते हैं, 1:6-10; 2:4,6,9,15,20,21,24,29; 3:21; 4:20; 5:14,16;

E. चौथी श्रेणी के शर्त वाले वाक्य संभावना से बहुत दूर होते हैं। नए नियम में यह बहुत कम है। सत्य तो यह है कि चैथी श्रेणी का एक भी वाक्य ऐसा नहीं मिलता जिसमें शर्त के दोनों पहलु सही हो सकें। 1 पतरस 3:14 में इसका पहला उपवाक्य कुछ अंशों में चैथी श्रेणी का कहा जा सकता है। इसका एक और उदाहरण प्रेरि. 8:31 में पाया जाता है जो अंश मात्र चैथी श्रेणी का शर्त वाला वाक्य है।

VIII. मनाही (prohibitions)

A. वर्तमान आदेशात्मक कथन में अक्सर उस कार्य को रोकने पर बल पाया जाता है जो पहले से किया जाता रहा है। इसके कुछ उदाहरणः ‘‘अपने लिए पृथ्वी पर धन मत करो...’’ (मत्ती 6:19); ‘‘अपने प्राण के लिए यह चिन्ता न करना कि हम क्या खाएँगे...’’ (मत्ती 6:25); ‘‘न अपने शरीर के अंगों को अधर्म के हथियार बनाकर पाप को सौंपों’’, (रोमियों 6:13); ‘‘परमेश्वर के पवित्र आत्मा को शोकित मत करो...’’ (इफि. 4:30); ‘‘दाखरस पीकर मतवालो न बनो...’’ (इफि. 5:18)।

B. भूतकाल के संभाव्य वाक्य में ‘‘कार्य को आरम्भ न करने’’ पर बल पाया जाता है। कुछ उदाहरण: ‘‘यह न समझो कि मैं व्यवस्था या नबियों की पुस्तकों को नष्ट करने आया हूँ...(मत्ती 5:17); ‘‘इसलिए यह कहकर चिन्ता न करो ‘हम क्या खाएँगे’? अर्थात् चिन्ता करना आरम्भ भी मत करो (मत्ती 6:31); ‘‘तू न हमारे प्रभु की साक्षी देने से, न मुझ से...लज्जित हो...’’ (2 तीमु. 1:8)।

C. संभाव्य क्रिया भाव में दो गुण नकारात्मक बल पाया जाता है ‘‘नहीं, कभी नहीं’’ अथवा ‘‘किसी भी परिस्थिति में’’, इसके कुछ उदाहरणः ‘‘तो वह कभी भी मृत्यु को न देखेगा’’... (यूहन्ना 8:51); ‘‘तो मैं फिर कभी’’... (1 कुरि. 8:13)।

IX. उपपद: (Article)

A. आम बोल चाल की यूनानी से उपपद ;ंतजपबसमद्ध ष्ज्ीमष् का उपयोग उसी प्रकार का होता है जैसा अंग्रेजी में होता है। यह किसी शब्द या नाम अथवा वाक्यांश की ओर संकेत करता और ध्यान आकर्षित करता है। नए नियम में भिन्न भिन्न लेखकों ने भिन्न भिन्न प्रकार से इसका उपयोग किया है। निश्चित उपपद निम्न प्रकार से भी कार्य कर सकता है:

1. अन्तर बताने रूप में जैसे कि सर्वनाम करते हैं।
2. पहले बताए गए व्यक्ति या विषय की ओर संकेत करने के रूप में।
3. संयोजक क्रिया के साथ वाक्य में विषय को पहचानने के लिये एक माध्मय के रूप में। उदाहरणार्थ: ‘‘परमेश्वर आत्मा हैं’’ (यूहन्ना 4:24); ‘‘परमेश्वर ज्योति है’’ (1 यूहन्ना 1:5); ‘‘परमेश्वर प्रेम है’’ (4:8,16)।

B. जिस प्रकार से अंग्रेजी में अनिश्चित उपपद ष्ष्् ष्देष् होते हैं वैसे यूनानी भाषा में नहीं होते। इनके न होने का कारण इस प्रकार हो सकता है:
   1. किसी बात या वस्तु की विशेषताओं पर ध्यान देना।
   2. किसी वस्तु की श्रेणी पर ध्यान देना।
C. उपपद या आर्टिकल को कैसे उपयोग किया जाए, इस विषय में नए नियम के लेखकों में भिन्नताएँ पाई जाती हैं।

X. यूनानी नए नियम में बल दर्शाने के तरीके
A. नए नियम के लेखकों में बल दर्शाने के तरीके भिन्न भिन्न प्रकार के हैं। इन लेखकों में लूका और इब्रानियों का लेखक स्थिर और सुस्पष्ट लेखक हैं।
B. हम पहले बता चुके हैं कि बल देने का सबसे अच्छा सामान्य भूत होता है, परन्तु अन्य काल, वाच्य अथवा क्रिया भाव में व्याख्यात्मक महत्व होता है। इसका यह अर्थ नहीं कि सामान्य भूतकाल अक्सर विशेष व्याकरणीय अर्थों में प्रयोग नहीं किया जा सकता है। (उदाहरण: रोमियों 6:10 दो बार)
C. बोलचाल की यूनानी में शब्दों का क्रमः
   1. यूनानी भाषा अंग्रेजी की तरह शब्द-क्रम में स्वतन्त्र भाषा नहीं है, इसमें उतार चढ़ाव होता है, इसलिए लेखक बल दर्शाने में एक दूसरे से भिन्न हो सकते हैं।
      a. लेखक पाठकों के लिए किस बात पर बल देना चाहता है
      b. लेखक क्या सोचता है कि पाठकों को कौन सी बात आश्चर्य में डालेगी।
      c. किस बात के बारे में लेखक गहराई से सोचता है।
   2. यूनानी में सामान्य शब्द-क्रम निश्चित नहीं है। तौभी अनुमानित रूप से शब्द क्रम इस प्रकार है:
      a. संयोजक क्रिया के लिए
         (1) क्रिया
         (2) कर्त्ता
         (3) पूरक
      b. सकर्मक क्रिया के लिए
         (1) क्रिया
         (2) कर्त्ता
         (3) कर्म
         (4) अप्रत्यक्ष कर्म
         (5) सम्बन्ध सूचक वाक्यांश
      c. संज्ञा वाक्यांशों के लिये
         (1) संज्ञा
         (2) विशेषक
         (3) सम्बन्ध सूचक वाक्यांश
   3. शब्दों के क्रम व्याख्या की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण हो सकते हैं, उदाहरणार्थ:
      a. ‘‘मुझे और बरनबास को संगति का दाहिना हाथ दिया’’ यहाँ पर संगति का दाहिना हाथ महत्व प्रकट करने के लिए प्रयुक्त किया गया (गला. 2:9)।
      b. गला. 2:20 में ‘‘मसीह के साथ’’ पहले लिखा गया, उसकी मृत्यु केन्द्रिय बात है।
      c. इब्रा. 1:1 में ‘‘परमेश्वर ने बापदादों से थोड़ा थोड़ा करके और भाँति-भाँति से’’ शब्दों को पहले रखा गया, ताकि स्पष्ट हो सके कि किस प्रकार परमेश्वर ने स्वयं को प्रकाशित किया। इसकी तुलना परमेश्वर के प्रकाशन से नहीं की गई।
D. आमतौर पर कुछ हद तक इनके द्वारा बल प्रकट किया गया:

1. सर्वनामों के दोहराए जाने के द्वारा जो पहले से क्रिया के उतार-चढ़ाव में मौजूद हैं, उदाहरण: ''दोखें मैं युग के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूँ''... (मत्ती 28:20)।
2. समुच्चय बोधक अथवा अन्य संयोजक शब्दों का वाक्यांशों में न होना। यह समुच्चय बोधक लोप कहलाता है। इनका न होना ध्यान को आकर्षित करता है; इसके कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं:
    a. धन्यवादियाँ, मत्ती 5:3 क्रमशः (सूची पर बल देता है)
    b. यूहन्ना 14:1 (नया नियम)
    c. रोमियों 9:1 (नया खण्ड)
    d. 2 कुरि. 12:20 (सूची पर बल देता है)
3. शब्दों अथवा वाक्यांशों की पुनरावृत्ति जो संदर्भ में पाए जाते हैं। उदाहरणार्थ: ''उसके उस अनुग्रह की महिमा की स्तुति हो'' (इफि. 1:6,12 व 14)। यह वाक्यांश त्रियकत्व के तीनों व्यक्तियों के कार्यों को दर्शाने के प्रयुक्त किये गए।
4. शब्दों के मध्य प्रयुक्त होने वाले मुहावरे:
    a. मंगलभाषित - वर्जित विषयों के लिए दूसरे शब्द जैसे -''मृत्यु के लिए ''भेड़'' (यूहन्ना 11:11-14) अथवा ''पाँव'' पुरुष के जननांग के लिए (रूत 3:7-8; 1 शमू. 24:3)
    b. घुमाफिराकर कही बात - परमेश्वर के नाम के बदले में प्रयुक्त शब्द, जैसे ''स्वर्ग का राज्य'' (मत्ती 3:2) अथवा ''आकाशवाणी'' (मत्ती 3:17)।
    c. शब्दालंकार
        (1) असम्भव अतिशयोक्ति (मत्ती 3:9; 5:29-30; 19:24)
        (2) वचन सुनकर विनम्र होना (मत्ती 3:5; प्रेरि. 2:36)
        (3) मानवीकरण (1 कुरि. 15:55)
        (4) व्यंग्य (गला. 5:12)
        (5) काव्य पाठांश (फिलि. 2:6-11)
        (6) शब्दों का खेल
            a. ''कलीसिया''
                i. ''मंडली'' (इफि. 3:21)
                ii. ''बुलाहट'' (इफि. 4:1,4)
                iii. ''बुलाई गई'' (इफि. 4:1,4)
            b. ''स्वतन्त्र''
                i. ''स्वतन्त्र स्त्री'' (गला. 4:31)
                ii. ''स्वतन्त्र'' (गला. 5:1)
                iii. ''स्वतन्त्रता'' (गला. 5:1)
    d. मुहावरेदार भाषा - वह भाषा जो आमतौर पर सांस्कृतिक और विशिष्ठ भाषा है:
        (1) ''भोजन'' का प्रतीकात्मक उपयोग (यूहन्ना 4:31-34)
        (2) ''मन्दिर'' का प्रतीकात्मक उपयोग (यूहन्ना 2:19; मत्ती 26:61)
        (3) दया का इब्रानी मुहावरा ''घृणा'' (उत्पत्ति 29:31; व्यवस्थाविवरण 21:15; लूका 14:36; यूहन्ना 12:25; रोमियों 9:13)
        (4) ''सब'' बनाम ''बहुत''। तुलना करें यशा. 53:6 (''सब'') यशा. 53:11-12 (''बहुतों'')। ये शब्द रोमियों 5:18 व 19 समानार्थी हैं।
5. भाषा संबंधी अकेले शब्द के प्रयोग की जगह संपूर्ण वाक्यांश के रूप में प्रयोग। उदाहरणार्थ: ''प्रभु यीशु मसीह''
6. *स्वयं* शब्द का विशेष प्रकार से उपयोग
    a. उपपद के साथ प्रयोग होने पर ''समान'' अनुवादित होता है।

b. जब लेख (विधेय स्थिति) के बिना इसका अनुवाद एक गहन प्रतिवर्त सर्वनाम के रूप में किया गया था- "स्वयं," "स्वयं," या "स्वयं।"

E. जो बाइबल-छात्र यूनानी भाषा से अनभिज्ञ हैं, वे निम्न उपायों द्वारा ''बल'' की पहचान कर सकते हैं:

1. विश्लेषणात्मक शब्दकोण तथा इंगलिश-यूनानी पुस्तकों के प्रयोग द्वारा।
2. अंग्रेजी अनुवादों की परस्पर तुलना द्वारा। शाब्दिक अनुवादों की भावार्थ अनुवादों से तुलना। उदाहरण; "शब्द-दर-शब्द" अनुवाद की तुलना करना (KJV, NKJV, ASV, NASB, RSV, NRSV) इस विषय में बेकर द्वारा प्रकाशित पुस्तक अति लाभदायक होगी विलियम्स, एनआईवी, एनईबी, आरईबी, जेबी, एनजेबी, टीईवी, *द बाइबल इन ट्वेंटी सिक्स ट्रांसलेशन* (Williams, NIV, NEB, REB, JB, NJB, TEV) *द बाइबल इन ट्वेंटी सिक्स ट्रांसलेशन (The Bible in Twenty-Six Translations* published by Baker)
3. *द इम्जोफेसिसेद बाइबल सेफ ब्रायंट रॉदरहैम* (क्रैगेल, 1994) द्वारा दी गई(*The Emphasized Bible* by Joseph Bryant Rotherham (Kregel, 1994)
4. शाब्दिक अनुवादों के उपयोग द्वारा
    a. *1901 का अमेरिकी मानक संस्करण* (*The American Standard Version* of 1901)
    b. *रॉबर्ट यंग द्वारा संरक्षक यंग का साहित्यिक अनुवाद* (गार्जियन प्रेस, 1976) (*Young's Literal Translation of the Bible* by Robert Young) (Guardian Press, 1976) ।

व्याकरणीय अध्ययन एक नीरस व उबा देने वाला कार्य प्रतीत होता है परन्तु उपयुक्त व्याख्या के लिए आवश्यक होता है। यहाँ पर संक्षिप्त परिभाषाएँ, टिप्पणीयाँ और उदाहरण प्रस्तुत करने का अभिप्राय यह है कि जो छात्र यूनानी भाषा पढ़-लिख नहीं सकते हैं उन्हें प्रोत्साहन प्राप्त हो सके और वे इस पुस्तक में दी गई व्याकरण संबंधी टिप्पणियों का उपयोग कर सकें। प्रस्तुत की गईं परिभाषाएँ निश्चित रूप से बहुत ही सरल हैं। तौभी इन्हें सिद्धान्त रूप में प्रयुक्त नहीं किया जाना चाहिए परन्तु एक माध्यम के रूप में प्रयोग किया जाना चाहिए ताकि अन्त में नए नियम की शब्द रचना समझी जा सके। इन परिभाषाओं के द्वारा पाठक को अन्य सहायता-सामग्रियों की टिप्पणीयाँ, जैसे नए नियम पर विशेष टिप्पणीयाँ अथवा टीकाएँ, भी समझने में सहायता मिल सकेगी।

हमें बाइबल-पाठांशों पर आधारित अपनी व्याख्या को उचित प्रमाणित करने योग्य बनना चाहिए। इस संबंध में सहायक बातों में, व्याकरण हमारा सबसे श्रेष्ठ साधन होता है, इसके अतिरिक्त अन्य बातें भी अच्छी व्याख्या में सहायता करती हैं जैसेः ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, साहित्यिक संदर्भ, समकालिन शब्दावली का प्रयोग तथा सामान्तर पाठांश इत्यादि।

Copyright © 2013 Bible Lesson International

मूल पाठ विषय समालोचना (Textual criticism)

मूलपाठ विषयक समालोचना के अन्तर्गत उन्हीं मूलपाठ संबंधी नोट्स पर ध्यान दिया जाएगा जो इस कमेन्ट्री में पाए जाते हैं। हमारी रूपरेखा निम्न प्रकार से है:

I. हमारी बाइबल के मूलपाठों के स्रोत
   A. पुराने नियम के स्रोत
   B. नए नियम के स्रोत
II. ‘‘न्यून समालोचना’’ विचारधारा संबंधी समस्याओं का स्पष्टीकरण, इसे ‘‘मूलपाठ समालोचना’’ भी कहा जाता है।
III. विस्तृत अध्ययन के लिए प्रस्तावित स्रोत।

I. हमारी बाइबल के मूलपाठों के स्रोत
   A. पुराना नियम:
      1. मैसोरेटिक टैक्सट ;एम टी): इब्रानी अक्षरों का मूलपाठ रब्बी अकीबा द्वारा ईस्वी 100 में व्यवस्थित किया गया था। छठी शताब्दी ईस्वी में इसमें विराम-चिन्हों, स्वर-व्यन्जनों, सही उच्चारणों, इत्यादि का कार्य आरम्भ किया गया जो नवीं शताब्दी ईस्वी के अन्त तक समाप्त हुआ। यह कार्य यहूदी विद्वानों द्वारा किया गया जो मैसोरेट्स कहलाते थे। जो मूलपाठ तरीका उन्होंने इस्तेमाल किया वह उसी प्रकार का था जो मिशनाह, तालमूद, तरगुम, पेशिता और वुल्गाता में है।
      2. सैप्तूजैन्त (LXX) परम्परा के अनुसार राजा तोलमी-प्प् (285-246 ई. पू.) के संरक्षण में सिकन्दरिया (मिस्र) के पुस्तकालय के लिए सैप्तूजैन्त को 70 यहूदी विद्वानांे ने 70 दिनों के अन्दर तैयार किया था। माना जाता है कि सिकन्दरिया के यहूदी अगुवों ने अनुवाद करने की विनती की थी। यह परम्परा ‘‘अरितास के पत्रों’’ में पाई जाती है। सैप्तूजैन्त (LXX) रब्बी अकीबा के मूलपाठों से भिन्न इब्रानी मूलपाठों पर आधारित था।
      3. मृतक सागर के कुण्डलपत्र (DSS) डैड सी स्क्रोल (DSS) यहूदी अलगाववादी पन्थ ‘‘एस्सेनी’’ लोगों द्वारा रोमी साम्राज्य में 200 ई.पू. से 70 ईस्वी के दौरान लिखे गये। ये इब्रानी पाण्डुलिपियाँ मृतक सागर के आसपास के स्थानो में पाई गई थीं। इसके इब्रानी मूलपाठ सैप्तूजैन्त और मैसोरेटिक टैक्स्ट MT और LXX से भिन्न थे।
      4. इन सब मूलपाठों की परस्पर तुलना ने पुराने नियम को समझने में किस प्रकार से सहायता की, इसके कुछ खास उदाहरण:
         a. LXX ने MT को समझने में अनुवादकों और विद्वानों की सहायता की।
            (1) यशायाह 52:14 LXX में, ‘‘बहुतेरे उस पर आश्चर्य करेंगे’’
            (2) यशायाह 52:14 MT में, ‘‘जिस प्रकार बहुतेरे तुझ पर आश्चर्य करते थे’’
            (3) यशायाह 52:15 में स्ग् के सर्वनाम की भिन्नता की पुष्टि हुईः-
               a. LXX “इसी प्रकार बहुत सी जातियाँ उसे देखकर चकित होंगी’’
               b. MT ‘‘वह बहुत सी जातियों को छितराता है’’
         b. MT को समझने में DSS ने अनुवादकों और विद्वानों की सहायता की:
            (1) DSS में यशायाह 21:8, ‘‘जिस बुर्ज पर मैं खड़ा था, नबी वहाँ आकर चिल्लाया’’
            (2) MT में यशायाह 21:8, ‘‘मैं दिन में हमेशा बुर्ज पर खड़ा रहा और चिल्लाया, सिंह! मेरा प्रभु है।’’
         c. LXX व DSS दोनों ने यशायाह 53:11 समझने में सहायता कीः-

(1) एलएक्सएक्स और डीएसएस LXX & DSS “अपनी आत्मा की घोर पीड़ा के बाद वह ज्योति देखेगा और संतुष्ट होगा’’
(2) एम टी MT, "वह देखेगा ... उसकी आत्मा की पीड़ा, वह संतुष्ट होगा"

B. नया नियम:
1. यूनानी नए नियम की 5,300 से अधिक पाण्डुलिपियाँ आज भी पाई जाती हैं। लगभग 85 पाण्डुलिपियाँ पटेर-पत्रों पर और 268 लिपियाँ बड़े अक्षरों में लिखी हैं। बाद में लगभग नवीं शताब्दी इस्वी में छोटे अक्षर वाली ;चलत सिखाई में) लिपियाँ विकसित हुईं। लिखित में लगभग 2,700 यूनानी पाण्डुलिपियाँ मौजूद हैं। हमारे पास लगभग 2,100 प्रतियाँ पवित्रशास्त्र के पाठों की हैं जो आराधना में प्रयुक्त होती थीं, जिन्हें मे लैक्शनरी कहते हैं।
2. 85 यूनानी पाण्डुलिपियाँ जिनमें नया नियम पटेर पत्रों पर लिखा है, अजायबघर में सुरक्षित रखीं हैं। इनमें कुछ तो दूसरी शताब्दी ईस्वी की हैं, परन्तु अधिकांश तीसरी या चैथी शताब्दी ईस्वी की हैं। किसी भी पाण्डुलिपि में पूरा नया नियम नहीं हैं। चूंकि ये प्राचीनतम नए नियम की पाण्डुलिपियाँ हैं, तो इसका अर्थ यह नहीं है कि इनमें भिन्नताएँ नहीं होंगी या कम भिन्नता होगी। इनमें से अधिकतर प्रतिलिपियाँ हैं जिन्हें स्थानीय उपयोग के लिये शीघ्रता से नकल किया गया था। नकल करते समय विशेष ध्यान नहीं दिया गया। इसलिये इनमें भिन्नताएँ पाई जाती हैं।
3. कोडेक्स सिनाएटिकस ये सेंट कैथरीन मोनास्ट्री में जो सीनै पर्वत पर स्थित है, इब्रानी शब्द *אaleph* और (01) पाए गए। इनकी खोज टिस्केनड्रौफ द्वारा की गई थी। इन्हें चैथी शताब्दी ईस्वी का माना जाता है और इसमें LXX का पुराना नियम और यूनानी नया नियम दोनों ही पाए जाते हैं। ये सिकन्दरिया के मूलपाठों के समान हैं।
4. कोडेक्स सिकन्दरियानुस, जिसे “A” अथवा (02) संकेत शब्दों द्वारा पहचाना जाता है। यह पाँचवीं शताब्दी ईस्वी की यूनानी पाण्डुलिपि है, जो मिस्र के सिकन्दरिया में पाई गई थी।
5. कोडेक्स वेटिकानुस, जिसे “B” अथवा (03) संकेत चिन्ह् द्वारा पहचाना जाता है, रोम की वैटिकन लायब्रेरी में पाया गया था और इसकी तिथि चैथी शताब्दी ईस्वी के मध्य का समय बताया जाता है। इसमें LXX का पुराना नियम और यूनानी भाषा का नया नियम दोनो ही पाए जाते हैं। यह सिकन्दरिया के मूलपाठ के समान है।
6. कोडेक्स इफ्राईम, इसे “C” अथवा (04) सांकेतिक शब्दों द्वारा पहचाना जाता है, यह पांचवीं शताब्दी ईस्वी की यूनानी पाण्डुलिपि है, इसका कुछ भाग नष्ट हो गया है।
7. कोडेक्स बेजाए, जिसे “D” अथवा (05) सांकेतिक शब्दों द्वार पहचाना जाता है। यह पांचवीं या छटी शताब्दी ईस्वी की यूनानी पाण्डुलिपि है। यह ‘‘पश्चिमी मूलपाठ’’ की मुख्य प्रतिनिधि है। इसमें बहुत सी जोड़ी हुई बातें पाई जाती हैं और यह किंग जेम्स अनुवाद का मुख्य यूनानी गवाह है।
8. नए नियम MSS की पाण्डुलिपियों को तीन या चार समूहों में बाँटा जा सकता है, जो अपनी कुछ विशेषताएँ शेयर करती हैं:
   a. मिस्र से अलेक्जेंड्रियन पाठ
      (1) P^{75} P^{66} (लगभग 200 ईस्वी) इनमें सुसमाचार पाए जाते हैं।
      (2) P^{46} (लगभग 225 ईस्वी) इसमें पौलुस की पत्रियाँ पाई जाती हैं।
      (3) P^{72} (लगभग 225-250 ईस्वी) इसमें पतरस और यहूदा पाई जाती हैं।
      (4) कोडेक्स B जो वैटिकानुस कहलाता है (लगभग 325 ईस्वी) इसमें संपूर्ण पुराना नियम और नया नियम है।
      (5) ओरिगेन ने इसी से उद्धरण दिए।
      (6) अन्य MSS पाण्डुलिपियाँ जो इसी तरह की हैं: א,C, L, W, 33

b. उत्तरी अफ्रीका का वैस्टर्न मूलपाठ
   (1) उत्तरी अफ्रीका के चर्च फादर तरतूलियन, सिपरियन और ओल्ड लैटिन अनुवाद इसका उल्लेख करते हैं।
   (2) इरेनियुस इसका उल्लेख करता है।
   (3) टैटियन और ओल्ड सिरियाक अनुवाद इसका उल्लेख करते हैं।
   (4) कोडेक्स D ‘‘बेजाए’’ इसका अनुसरण करता है।

c. कौन्सटैन्टीनोपल का ईस्टर्न बायजनटाईन मूलपाठ
   (1) 5,300 पाण्डुलिपियों के 80% से अधिक भाग में यह मूलपाठ दिखाई देता है।
   (2) सीरिया के अन्ताकिया के चर्च फादर कप्पादोसियन, ख्रीसोस्तम और थेरोडोरेट इसका उल्लेख करते हैं।
   (3) कोडेक्स A, केवल सुसमाचारों में है।
   (4) कोडेक्स E, (आठवीं शताब्दी) संपूर्ण नए नियम में।

d. पलीस्तीन की ‘‘कैसरियाई’’ लिपि
   (1) यह मुख्य रूप से मरकुस में दिखाई देती है।
   (2) इसे कुछ गवाह हैं P^{45} और W

II. कुछ समस्याएँ तथा ‘‘न्यून समालोचना’’ अथवा ‘‘मूलपाठ समालोचना’’

A. भिन्नताएँ कैसे आती हैं?

1. असावधानी अथवा अक्समात (अधिकांशतः)
   a. नकल करते समय जरा सी असावधानी के कारण गलत अक्षर लिखा जा सकता है।
      (1) ठीक से देख न पाने के कारण दो समान अक्षरों में से एक हटाना भूल सकते हैं। हेप्लोग्रफी (haplography)
      (2) गलती से वाक्यांश दो बार लिखा जा सकता है। डीतोग्रफी (dittography)
   b. सुनकर नकल करते समय, सुनने में गलती हो सकती है और गलत अक्षर लिखा जा सकता है।
   c. पहले यूनानी पाठों में अध्याय या पद और विराम-चिन्ह नहीं होते थे, इस कारण किसी अक्षर को दूसरी जगह लिखने की संभावना हो सकती थी।
2. जानबूझकर
   a. जिन पाठों की नकल की गई उसमें सुधार किए गए और ठीक किया गया।
   b. बाइबल के अन्य पाठांशों के साथ समानता लाने के लिए पाठों में सुधार लाया गया। समानांतरों का सामंजस्य (harmonization of parallels)
   c. लम्बे वाक्यांशों में भिन्नता दूर करके एक अर्थपूर्ण अक्षर बनाने में परिवर्तन किए गये। सम्मिश्रण (conflation)
   d. पाठों में जटिलताएँ दूर करके उन्हें ठीक किया गया (देखें, 1 कुरि. 11:27; 1 यूह. 5:7-8)
   e. ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के अनुसार, पाठ के सही अर्थ को लिखा गया (देखें, यूह. 5:4)

B. मूलपाठ समालोचना के आरधारभूत सिद्धान्त (पाठ का सही अर्थ समझने के सुझाव)

1. व्याकरण संबंधी सबसे अधिक त्रुटि संभवतः मूलपाठ में ही होती है।
2. सबसे छोटा मूलपाठ संभवतः असली व सही होता है।
3. सबसे प्राचीन पाठ को महत्व दिया जाता है क्योकि वह ऐतिहासिकता के निकट होता है, शेष सब बराबर होता है।
4. MSS जो पाण्डुलिपियां भौगोलिक रूप से भिन्न होती हैं, वे मूल होती हैं।

5. धर्म-शिक्षा सिद्धान्तों के दुर्बल पाठों को, जो विशेषकर पाण्डुलिपि परिवर्तन के काल में धर्म सिद्धान्तों विवादों से संबंधित होते हैं, जैसे त्रिएकत्व का सिद्धान्त, 1 यूहन्ना 5:7-8; इन्हें महत्व देना चाहिए।
6. वे पाठ जो अन्य भिन्नताओं को अच्छी तरह समझा सकें उन्हें सही मानना चाहिए।
7. दो उद्धरण, जिनसे इन भिन्नताओं में सन्तुलन रखने में सहायता प्राप्त होती है:
    a. जे हैरल्ड ग्रीनली अपनी पुस्तक जे.हेराल्ड ग्रीन्लीस की पुस्तक *इन्त्रोदक्शन टू न्यू टेस्टामेंट तैक्स्तुअल क्रितिस्म* के पेज 68 में (J. Harold Greenlee's *Introduction to New Testament Textual Criticism"* 68)इस प्रकार कहते हैं:

        'कोई भी मसीही सिद्धान्त विवादास्पद पाठांश पर स्थिर नहीं रह सकता; नए नियम के छात्र को, मूल प्रेरणा प्राप्त पाठांश के अतिरिक्त, अन्य किसी पाठांश को सैद्धान्तिक रूप से अधिक उपयुक्त व प्रभावशाली समझने से सावधान रहना चाहिए।

    b. डब्ल्यू.ए. क्रिस्वेल ने ब्रिमिंघम न्यूज के ग्रेग गैरिसन से कहा;(W. A. Criswell told Greg Garrison of *The Birmingham News*) कि वह नहीं मानता है, कि बाइबल का प्रत्येक वचन पवित्र आत्मा की प्रेरणा से रचा गया है, "कम से कम उन वचनों को प्रेरणा प्राप्त नहीं मानता, जो सदियों से अनुवादकों द्वारा जनता को दिए गये हैं।" आगे क्रिस्वेल ने कहा: "मैं मूलपाठ समालोचना पर विश्वास करने वाला एक विश्वासी हूँ। इस कारण मैं सोचता हूँ कि मरकुस 16 अध्याय का अंतिम आधा भाग भ्रान्त है अर्थात् प्रेरणा प्राप्त नहीं बल्कि मन गढ़न्त हैं...। जब आप ऐसी पाण्डुलिपियों की तुलना प्राचीन पाण्डुलिपियों से करेंगे तो पाएँगे कि मरकुस की पुस्तक की ऐसी समाप्ती कहीं नहीं मिलेगी। इसे किसी अन्य ने जोड़ दिया है...।"

        एस.बी.सी.SBC के एक निभ्रांत प्राचीन ने भी दावा किया है कि यूहन्ना पाँचवें अध्याय में भी उपरोक्त प्रकार का जोड़ने का कार्य किया गया है जहाँ बैतहसदा के कुण्ड पर यीशु का विवरण पाया जाता है। उसने यहूदा की आत्महत्या के दो विवरणों का भी उल्लेख किया (देखें, मत्ती 27 तथा प्रेरि.1) इस संबंध में क्रिस्वेल ने कहा कि, "यह केवल आत्म-हत्या के संबंध में भिन्न दृष्टिकोण मात्र है; "यदि यह बाइबल में है तो इसका स्पष्टीकरण भी है। और यहूदा की आत्म-हत्या के दो विवरण बाइबल में हैं। आगे क्रिस्वेल ने कहा, "मूलपाठ समालोचना स्वयं में एक अद्भुत विज्ञान है। यह क्षणभंगुर नहीं है, और न ही अप्रासंगिक है। यह सक्रिय और केन्द्रीय है...।"

III. लिपि संबंधी समस्याएँ (मूलपाठ समालोचना)

A. विस्तृत अध्ययन हेतु प्रस्तावित स्रोत:

1. बाइबिल आलोचना: ऐतिहासिक, साहित्यिक और पाठ्य, आर.एच. हैरिसन द्वारा (*Biblical Criticism: Historical, Literary and Textual*, by R.H. Harrison)
2. ब्रूस न्यूटेस्टामेंट का पाठ: इसका संचरण, भ्रष्टाचार और पुनर्स्थापना ब्रूस एम। मेट्ज़गर द्वारा (*The Text of the NewTestament: Its Transmission, Corruption and Restoration* by Bruce M.Metzger)
3. जे. ग्रीनली द्वारा न्यूटेस्टामेंट टेक्स्टुअल क्रिटिसिज्म का परिचय (*Introduction to NewTestament Textual Criticism*, by J. H Greenlee)

Copyright © 2013 Bible Lesson International

पुराने नियम का वृत्तान्त

I.आरम्भिक कथन

A. पुराना नियम और अन्य घटनाक्रमों के तरीकों में संबन्धः
   1. अन्य प्राचीन पूर्वीय साहित्य पौराणिक कथाएँ हैं:
      a. बहुदेववादी (आमतौर पर मानवीय देवता जो अपनी शक्ति का प्रदर्शन करते हैं)
      b. प्राकृतिक क्रम पर आधारित (मरने और जीने वाले देवता)
   2. यूनानी-रोमी साहित्य मनोरंजन और प्रोत्साहन के लिए होता है, ऐतिहासिक घटनाएँ नहीं होतीं। (होमर कई तरह से मेसोपोटामिया के रूपांकनों को दर्शाता है)

B. संभवतः जर्मनी भाषा के तीन शब्द इतिहास की सही परिभाषा कर सकते हैं:
   1. "हिस्टोरी" - सत्य घटनाओं का विवरण (स्पष्ट तथ्य)
   2. "गैस्कीट" - घटनाओं की व्याख्या जिनसे मानवजाति को लाभ पहुंचे।
   3. "हेल्सगेस्टिक" - यह शब्द इतिहास में परमेश्वर की उद्धारक योजना और उसकी क्रियाशील की ओर संकेत करता है।

C. पुराने और नए नियम के वृत्तान्त "गैस्कीट" हैं (ऊपर न. 2), जो "हेल्सगेस्टिक" (ऊपर न. 3) के समझने में सहायता करते हैं; ये वृत्तान्त चुने हुए धर्मवैज्ञानिक वृत्तान्त और ऐतिहासिक घटनाएँ हैं:
   1. केवल चुनी हुई घटनाएँ
   2. क्रम महत्व नहीं रखता जितना कि धर्म विज्ञान महत्व रखता है।
   3. सत्य को प्रकाशित करने के लिए घटनाएँ प्रयोग की जाती हैं।

D. पुराने नियम में वर्णन करना एक सामान्य साहित्यिक शैली है। अनुमान लगाया गया है कि 40: पुराना नियम वर्णनात्मक शैली में है। अतः यह शैली परमेश्वर के सन्देश को पतित मानव जाति के साथ बाँटने के लिए पवित्र आत्मा का लाभदायक माध्यम है। परन्तु यह कार्य सुझावों के तौर पर नहीं किया गया (जैसा कि नये नियम की पत्रियाँ) परन्तु प्रत्यक्ष आज्ञा के तौर पर किया गया है। हमें निरन्तर सवाल करते रहना चाहिए कि यह बात क्यों लिखी गई हैं? यह किस बात पर बल दती है? और इस बात का धर्म वैज्ञानिक उद्देश्य क्या है? इसका अर्थ यह नहीं कि हम इतिहास का महत्व कम कर रहे हैं; परन्तु यह इतिहास ही है जो एक दास की तरह बनकर और प्रकाशन का माध्यम बनकर हमारी सहायता करता।

II.बाइबल के वृत्तान्त

A. परमेश्वर अपने संसार में क्रियाशील है। प्रेरणा प्राप्त बाइबल लेखकों ने परमेश्वर को प्रकट करने के लिए कुछ ही घटनाओं को चुना है। परमेश्वर ही पुराने नियम का मुख्य पात्र है।

B. प्रत्येक वृत्तान्त विभिन्न प्रकार से कार्य करता है:
   1. परमेश्वर कौन है और अपने संसार में वह क्या कार्य कर रहा है?
   2. व्यक्ति तौर पर और जातिगत रूप से परमेश्वर के व्यवहार के द्वारा मानवजाति को प्रकाशन मिलता है।
   3. यहोशू की विजयों के वृत्तान्त वाचा की पूर्ति के उदाहरण हैं (देखें, यहोशू 1:7-8; 8:30-35)।

C. अक्सर वृत्तान्त आपस में जुड़कर एक साहित्यिक इकाई बनते हैं जो एक धर्म-वैज्ञानिक सत्य प्रकाशित करते हैं।

III.पुराने नियम के वृत्तान्तों के व्याख्यात्मक सिद्धान्त

A. पुराने नियम की व्याख्या के सिधान्तो के सम्बन्ध में मेरे विचार से सबसे अच्छी पुस्तक जो सहायक हो सकती है वह डगलस स्टूअर्ड की पुस्तक है जिसका नाम है हाओ टू रीड बाइबल फॉर आल इट्स वर्थ पेज 83-84 (Douglas Stuart in How to Read the Bible For All Its Worth, pp. 83-84)
   1. आमतौर पर पुराने नियम के वृत्तान्त प्रत्यक्ष रूप से कोई धर्म-शिक्षा नहीं देते हैं।
   2. आमतौर पर पुराने नियम के वृत्तान्त धर्म-सिद्धान्त को समझाते हैं अथवा प्रस्तावित रूप से सिद्धान्त को किसी अन्य स्थल पर सिखाते हैं।
   3. जो घटता है, उसी का वर्णन किया जाता है-उनका नहीं जो घटना चाहिए अथवा जिसको बार-बार घटना चाहिए। इस कारण प्रत्येक वर्णन की कहानी की व्यक्तिगत शिक्षा प्राप्त नहीं की जा सकती है।
   4. वृत्तान्त में लोग जो कुछ करते हैं, जरूरी नहीं कि वह हमारे लिए अच्छा उदाहरण हो। अक्सर यह विपरीत होता है।
   5. पुराने नियम के वृत्तान्तों में अधिकांश पात्र सिद्धता से दूर होते हैं और उनके कार्य भी असिद्ध होते हैं।
   6. वृतान्त के अन्त में प्रायः हमें नहीं बताया जाता है कि जो हुआ वह अच्छा था या बुरा। हमसे अपेक्षा की जाती है कि हम स्वयं इस बात के आधार पर निर्णय करें कि परमेश्वर ने पवित्रशास्त्र के अन्य स्थलों पर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से क्या सिखाया है।
   7. सभी वृत्तान्त चुने हुए और अपूर्ण होते हैं। संपूर्ण प्रासंगिक विवरण सदैव नहीं दिया जाता है (देखें, यूहन्ना 21:25)। प्रेरणा-प्राप्त लेखक को जो कुछ हमारे हित में जान पड़ा, उसने उन्हीं को लिखा।
   8. हमारे सभी धर्म वैज्ञानिक प्रश्नों का उत्तर देने के लिए वृत्तान्त नहीं लिखे गए हैं। वृत्तान्तों का अपना सीमित और विशेष उद्देश्य होता है; और कुछ ही विषयों पर विचार किया जाता है, अन्य छोड़ दिए जाते हैं जिनका समाधान किसी अन्य जगह किया जाता है और अलग तरीके से किया जाता है।
   9. वृत्तान्त या तो स्पष्ट रूप से या फिर अस्पष्ट रूप से शिक्षा दे सकते हैं।
   10. सारांश रूप में, परमेश्वर स्वयं ही सभी बाइबल संबंधी वृत्तान्तों का स्वामी है।

B. वृत्तान्त संबंधी व्याख्या का एक और अच्छा विवरण वाल्टर कैसर की पुस्तक टुवर्ड्स एक्स्जैतिकल थिओलोजी Walter Kaiser's Toward Exegetical Theology में पाया जाता है, जो इस प्रकार है:

   "पवित्रशास्त्र के वर्णनात्मक अंशों का अनोखा पहलु यह है कि लेखक आमतौर पर अपने वृत्तान्त में लोगों के शब्दों और कार्यों की अनुमति देता है कि उसके सन्देश के मूल तत्व को पहुँचाएं। अतः बजाए इसके कि वह हमसे प्रत्यक्ष रूप से बातचीत करे, जैसा कि पवित्रशास्त्र के अन्य शिक्षात्मक पाठांशों में बातचीत करता है, वह प्रत्यक्ष शिक्षा न देकर पृष्ठभूमि में रहता है। परिणाम स्वरूप यह अति आवश्यक हो जाता है कि हम विस्तृत संदर्भ को देखें, जिसमें वृत्तान्त लिखा गया, और प्रश्न करें कि लेखक ने क्यों इस वृत्तान्त को चुनकर सुस्पष्ट रूप से लिखा। घटनाक्रम की व्यवस्थित प्रस्तुति और विवरण के चुनाव में हमें लेखक के अभिप्राय और अर्थ प्राप्त होंगे। हमें वृत्तान्त का अर्थ लेखक के उद्देश्यों के अनुसार ही लगाना चाहिए

और उसी प्रकार का प्रत्युत्तर देना चाहिए जिस प्रकार की लेखक अनुमति प्रदान करता है।" (P 205)

C. वत्तान्तों में सत्य का उल्लेख नहीं पाया जाता है बल्कि यह सम्पूर्ण साहित्यिक ईकाई में पाया जाता है। अतः पुराने नियम के वृत्तात्तों का उपयोग अपने जीवन के आदर्श के रूप में करने से सावधान रहना चाहिए।

IV. व्याख्या करने के दो स्तर:

A. अब्राहम के वंश के लिए यहोवा (YHWH) परमेश्वर द्वारा किए गए उद्धार के कार्यों व प्रकाशनात्मक कार्यों की व्याख्या करना।

B. (हर उम्र में) हर पीढ़ी के विश्वासियों के जीवनों के लिए यहोवा (YHWH) की इच्छा की व्याख्या करना।

C. ध्यान का प्रथम केन्द्र "परमेवर को जानना" (उद्धार को); ध्यान का दूसरा केन्द्र "परमेश्वर की सेवा करना" (विश्वास की मसीही जीवन, देखें, रोमि. 15:4; 1 कुरि. 10:6,11)।

Copyright © 2013 Bible Lesson International

शब्द संग्रह (GLOSSARY)

दत्तक पुत्रवाद (Adoptionism): यह यीशु मसीह के ईश्वरत्व के सम्बन्ध में पाई जाने वाली आठवीं शताब्दी ईस्वी की अल्पसंख्यकों की एक विचार धारा है जो आदि कलीसिया में प्रविष्ठ हो गई थी। इस विचारधारा के अनुसार यीशु, प्रत्येक दृष्टिकोण से, एक साधारण मनुष्य-मात्र था, परन्तु बपतिस्में के समय और साथ ही मृतकों में से जीवित हो उठने के परिणाम स्वरूप, परमेश्वर के द्वारा विशेष प्रकार से वह परमेश्वर के पुत्र के रूप में ग्रहण किया गया (देखें, मत्ती 3:17; मर. 1:11; रोमि. 1:4)। यह विचारधारा मानती थी कि यीशु ने आदर्श जीवन व्यतीत किया था, इसी कारण परमेश्वर ने उसे अपना दत्तक-पुत्र बनाया और उसे अपने पुत्र के रूप में ग्रहण किया (देखें, रोमियों 1:4; फिलि. 2:9)। यह आदि कलीसिया में अल्पसंख्यकों का विचार था। इसमें बजाए इसके कि परमेश्वर मानव बने (देहधारी हो), एक मनुष्य परमेश्वर बन जाता है, और इस तरह बात उल्टी हो जाती है।

यहाँ पर इस बात को शब्दों में व्यक्त करना कठिन हो जाता है कि किस प्रकार से यीशु को जो स्वयं परमेश्वर है, और जिसका अस्तित्व पहले ही से ईश्वरत्व है, किस प्रकार से आदर्श जीवन जीने के कारण पुरस्कृत किया जा सकता है। वह तो पहले ही से परमेश्वर है, तो उसे कैसे प्रतिफल दिया जा सकता है? हालांकि यह हमारे लिये कठिन है, तो भी परमेश्वर पिता ने यीशु को आदर दिया ताकि वह परमेश्वर पिता की सिद्ध इच्छा को पूरा कर सके।

सिकन्दरियाई मत (Alexandrian School). बाइबल की व्याख्या करने की इस विधि का आरम्भ सिकन्दरिया (मिस्र) में दूसरी शताब्दी ईस्वी में हुआ। इसमें फिलों द्वारा बनाए गए व्याख्या के मूल सिद्धान्तों को उपयोग किया जाता है, जो प्लाटो का शिष्य था। इसे अक्सर रूपक-कथा विधि-कहा जाता है। धर्म सुधार आन्दोलन के समय तक कलीसिया इससे प्रभावित रही। ऐरिगेन और अगस्तीन इसके प्रबल समर्थक थे। देखें मोएसिस सिल्वा की पुस्तक (Moises Silva, *Has The Church Misread The Bible?* (Academic, 1987)

एलक्सजेन्ड्रीनुस (**Alexandrinus)**. सिकन्दरिया, मिस्र की इस यूनानी पाण्डुलिपि में पुराना नियम, अपोक्रिफा और नए नियम के अधिकांश भाग पाए जाते हैं। यह पाण्डुलिपि हमारे सम्पूर्ण यूनानी नए नियम की ;मत्ती, यूहन्ना और प्प् कुरिन्थियों को छोड़कर) साक्षी है। इसे "।ष् और ष्ठष् पाण्डुलिपि कहा जाता है वैटिकानुस((Vaticanus))। जब किसी पाठांश-पठन पर ये दोनों पाण्डुलिपियाँ सहमत होती हैं तो वह अधिकांश विद्वानों द्वारा प्रमाणिक माना जाता है।

अलोगोरी (Allegory). यह बाइबल की व्याख्या करने का एक तरीका है जो मिश्र के सिकन्दरिया नगर के यहूदी निवासियों के मध्य विकसित हुआ था। इसे सिकन्दरिया के फिलो ने मशूहर बनाया। इस तरीके के द्वारा बाइबल की सच्चाईयों को उसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि अथवा संदर्भ की उपेक्षा करते हुए, अपनी सांस्कृतिक परिस्थितियों अथवा दार्शनिक प्रणालियों के अनुकूल बनाने पर बल दिया जाता है। इसमें पवित्रशास्त्र के प्रत्येक पद में छिपे आध्यात्मिक अर्थ का पता लगाने की कोशिश की जाती है। हमें स्वीकार करना चाहिए कि यीशु ने मत्ती 13 अध्याय में और पौलुस ने गलातियों 4 अध्याय में सच्चाईयाँ बताने में रूपक-कथा का उपयोग किया था। हालांकि यह प्रतीकात्मक व्याख्या के रूप में थी, बिल्कुल ठोस रूप से रूपक-कथा नहीं थी।

अनालिटिकल लैक्सीकन (Analytical Lexicon) . यह खोजबीन करने का एक साधन है जिसके द्वारा नए नियम के यूनानी शब्दों की जानकारी की जा सकती है। यह यूनानी शब्दों का क्रमबद्ध संग्रह है जिसमें यूनानी शब्दों की परिभाषाएँ दी गई हैं। यूनानी भाषा के नए छात्र इसके द्वारा नए नियम के यूनानी शब्दों का व्याकरणीय विश्लेषण करके अर्थ समझ सकते हैं।

पवित्रशास्त्र की अनुरूपता (Analogy of Scripture). सम्पूर्ण बाइबल पवित्र आत्मा की प्रेरणा द्वारा रची गई है, इसलिए इसमें विरोधाभास नहीं पाया जाता है बल्कि प्रत्येक पुस्तक एक दूसरे की पूरक हैं, इसी बात को व्यक्त करने के लिये यह वाक्यांश प्रयुक्त किया जाता है। इसी आधार पर बाइबल के पाठांशों की उसके समान अन्य पाठांशों के साथ मिलाकर व्याख्या की जा सकती है।

अनेकार्थकता (Ambiguity). यह शब्द ऐसी परिस्थिति की ओर संकेत करता है जब लिखित पाठांश में दो अर्थ निकलते हों। संभव हो सकता है कि यूहन्ना जानबूझकर दो अर्थ देने वाले शब्दों का प्रयोग करता हो।

एन्थ्रोपोमोरफिक (Anthropomorphic). इस शब्द का अर्थ है "मानव समान गुण रखना" यह शब्द यूनानी भाषा के शब्द से बना है जिसका अर्थ है मानव जाति। इसमें परमेश्वर का वर्णन इस प्रकार किया जाता है मानों वह एक मनुष्य है, जैसाकि हम उत्पत्ति 3:8 तथा 1 राजा 22:19-23 में पढ़ते हैं। हम अक्सर परमेश्वर का वर्णन अपनी भाषा में करते हैं जैसे, वह देखता, सुनता, बोलता और कार्य करता है। यही मानवगुण आरोपण कहलाता है। परमेश्वर के बारे में हमारा ज्ञान सीमित है।

अन्ताकियाई विचारधारा (Antiochian School). बाइबल की व्याख्या करने की इस विचारधारा का आरम्भ सीरिया के अन्ताकिया में तीसरी शताब्दी ईस्वी में, मिस्र की सिकन्दरियाई रूपक कथा विधि के विरोध में हुआ। इस विचारधारा का मुख्य बल बाइबल का ऐतिहासिक अर्थ निकालने पर था। इसमें बाइबल को एक सामान्य मानवीय साहित्य माना जाता था। यह विचारधारा इस मतभेद में उलझ गई कि क्या मसीह में दो स्वभाव थे नेस्टोरीवाद (Nestorianism) अथवा मसीह में एक ही स्वभाव (पूर्ण परमेश्वर और पूर्ण मानव) था। रौमन कैथलिक चर्च द्वारा इसे भ्रान्त-शिक्षा घोषित कर दिया और वह विचारधारा फारस चली गई, परन्तु इसका थोड़ा-बहुत महत्व अवश्य रहा। बाद में इसके व्याख्यात्मक सिद्धान्तों को श्रेष्ठ धर्म-सुधारक लूथर और काल्विन (Luther and Calvin) द्वारा अपनाया गया।

एन्टीथेटीकल (Antithetical). इब्रानी काव्य में इस्तेमाल होने वाले तीन शब्दों में से यह एक शब्द है जिसका संबंध इब्रानी कविता की उस पंक्ति से है जो विपरीत अर्थ देती है (देखें, नीतिवचन 10:1; 15:1)।

अपोक्लिपटिक लिटरेचर (Apocalyptic literature). यह मुख्य रूप से यहूदियों की साहित्यिक शैली थी और बड़ी अद्‌भुत थी। यह एक रहस्यपूर्ण लिखाई थी जिसका उपयोग वे आक्रमण के समय या विदेशी ताकतों के सामने करते थे। यहूदी मानते थे कि परमेश्वर संसार की घटनाओं पर नियंत्रण रखता है और इस्राएल की विशेषरूप से चिन्ता करता है। इस साहित्य में परमेश्वर की सहायता से अंतिम विजय की प्रतिज्ञा पाई जाती थी।

इस साहित्य में प्रतीकात्मक, विचित्र, काल्पनिक और रहस्यपूर्ण बातें पाई जाती थीं। इसमें सत्य को रंगों, गिनतियों, दर्शकों, स्वप्नों, स्वर्गदूतों की मध्यस्थता, गुप्त शब्दों और अच्छाई व बुराई के बीच संघर्ष द्वारा दर्शाया जाता है।

इस साहित्य के कुछ उदाहरण (1) पुराने नियम में यहेजकेल 36-48 अध्याय, दानिय्येल (अध्याय 7-12), जकर्याह में तथा (2) नए नियम में, मत्ती 24; मरकुस 13; प्प् थिस्सलुनीकियों 2 तथा प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में पाए जाते हैं।

अपोलोजिस्ट (अपोलोजैटिक) Apologist (Apologetics). जिस यूनानी शब्द से यह बना है उस शब्द का अर्थ है "विधि सम्मत अपना बचाव करना।" इसके अन्तर्गत अपने मसीही विश्वास की रक्षा में तर्क संगत प्रमाण प्रस्तुत किये जाते हैं। जो यह कार्य करता है वह अपोलोजैटिक कहलाता है।

प्राइअरि (*A priori*). यह पूर्वधारणा शब्द से मिलता जुलता शब्द है। इसमें तर्क, प्रमाण, परिभाषाएँ सिद्धान्त आदि शामिल होते हैं जिन्हें सत्य समझा जाता है। इसे बिना विश्लेषण व जांच पड़ताल किए स्वीकार किया जाता है।

एरियनवाद (Arianism). एरियस मिस्र के सिकन्दरिया नगर के तीसरी और चैथी शताब्दी के आरम्भ में एक चर्च का प्रैसबितर (पादरी) था। वह दृढ़तापूर्वक कहा करता था कि यीशु का पूर्व-अस्तित्व तो था परन्तु वह दिव्य नहीं था अर्थात् पिता के समान तत्व में एक नहीं था, संभवतः वह नीतिवचन 8:22-31 को मानता था। विशप ऑफ सिकन्दरिया (318 ई.) ने उसका विरोध किया और एक विवाद आरम्भ किया जो बहुत समय तक प्रचलित रहा। एरियनवाद ईस्टर्न चर्च का विश्वास-वचन बन गया। बाद में ई. 325 में नीकिया की परिषद ने एरियस का खण्डन किया और अंगीकार किया कि पुत्र पिता के साथ एक तत्व है।

अरस्तु (Aristotle). यह प्राचीन यूनान का एक दार्शनिक था और प्लैटो का शिष्य था और साथ ही सिकन्दर महान् राजा का गुरु भी था। आज भी उसका दर्शन शास्त्र संसार के विभिन्न देशों में पढ़ाया जाता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि उसने अवलोकन और वर्गीकरण द्वारा ज्ञान अर्जित करने पर बल दिया। यह सीखने का एक वैज्ञानिक सिद्धान्त है।

आटोग्राफ (Autographs). यह बाइबल के मूल लेखों को दिया गया नाम है। ये मूल लेख और हसतलीपियाँ अब खो गई हैं। अब केवल उनकी प्रतिलिपियों की प्रतिलिपियाँ ही शेष रह गई हैं। ये इब्रानी और यूनानी मूलपाठों और प्राचीन अनुवादों में पाई जाने वाली भिन्नताओं का स्रोत हैं।

बेजाए (Bezae).यह छठी शताब्दी इस्वी की एक यूनानी और लातीनी पाण्डुलिपि है। इसे “D” नाम दिया गया है। इसमें सुसमाचार, प्रेरितों के काम तथा कुछ पत्रियाँ पाई जाती हैं। अनेक शास्त्रियों द्वारा इसमें चरित्र चित्रण किया गया। किंग जेम्स अनुवाद जो सर्वमान्य है, इसी पर आधारित है।

पूर्वाग्रह (Bias). किसी विचार के प्रति अड़ जाने या दृढ़ बने रहने के संबंध में इस शब्द का उपयोग किया जाता है। यह एक दृढ़ संकल्पित स्थिति है जिसमें पक्षपात की गंुजाईश नहीं होती। यह पूर्व-धारण की स्थिति होती है।

बाइबल का प्रभुत्व (Biblical Authority). यह शब्द विशेष अर्थों में प्रयोग किया जाता है। इसे बाइबल की समझ रखने के रूप में परिभाषित किया जाता है कि मूल लेखक अपने युग के लोगों को क्या बताना चाहता है और उस सन्देश को अपनी परिस्थितियों पर लागू करना। आमतौर पर बाइबल के प्रभुत्व की परिभाषा करते हुए स्वयं बाइबल को अपने जीवन का एकमात्र अधिकार युक्त मार्गदर्शक स्वीकार किया जाता है। परन्तु वर्तमान समय में गलत व्याख्याओं को देखते हुए मैंने बाइबल की धारणा को सीमित कर दिया है जैसा कि ऐतिहासिक व्याकरणीय विधि के सिद्धान्तों द्वारा बताया गया है।

प्रमाणिक धर्म-ग्रन्थ संग्रह (Canon). नए नियम और पुराने नियम में जो पुस्तकें पवित्र आत्मा की प्रेरणा से लिखी गई हैं, उनका उल्लेख करने के लिए इस शब्द कानोन का प्रयोग किया जाता है। बाइबल में पाया जाने वाला पुस्तकों का सूची-पत्र कानोन के अन्तर्गत है।

मसीह केन्द्रित होना (Christocentric). यह शब्द यीशु की केन्द्रियता को दर्शाने के लिये उपयोग में लाया जाता है। मैं इस शब्द को इस धारणा के साथ उपयोग में लाता हूँ कि यीशु सम्पूर्ण बाइबल का प्रभु है। मुख्य नियम उसी की ओर संकेत करता है और यीशु ही में पुराना नियम पूरा होता है और वही लक्ष्य है (देखें, मत्ती 5:17-48)।

टीकाएँ (Commentary). ये अध्ययन करने के लिये खोजबीन की हुई सामग्री की पुस्तकें होती हैं। ये किसी भी बाइबल की पुस्तक की पृष्ठभूमि की सामान्य जानकारी देती हैं, फिर पुस्तक के प्रत्येक भाग का अर्थ स्पष्ट करने का प्रयत्न करती हैं। कुछ लोग शिक्षा को जीवनों पर लागू करने पर ध्यान देते हैं जबकि कुछ लोग पाठांशों पर और अधिक विशिष्ठ रीति से अध्ययन करते हैं। ये टीका-ग्रन्थ लाभदायक होते हैं, परन्तु व्यक्तिगत

छानबीन करने के बाद ही इनका उपयोग करना चाहिये। व्याख्याकार की व्याख्या बिना व्यक्तिगत विश्लेषण किये स्वीकार नहीं करना चाहिए। विभिन्न धर्म वैज्ञानिक दृष्टिकोणों से टीकाओं की परस्पर तुलना करना आमतौर पर लाभ्दायक होता है।

अनुक्रमाणिका (Concordance). यह बाइबल अध्ययन के लिए एक सहायक सामग्री है, जिसमें खोजबीन करके जानकारियाँ एकत्रित की गई होती हैं। इसमें पुराने नियम और नए नियम के प्रत्येक शब्द की सूची क्रमबद्ध होती है कि वह शब्द कहाँ पर लिखा है। यह अनेक प्रकार से सहायता करता है: (1) इस बात का पता लगाने में कि किसी विशेष अंग्रेजी शब्द की कौन से यूनानी अथवा इब्रानी शब्द से उत्पत्ति हुई; (2) पाठांशों की परस्पर तुलना करने में जहाँ एक जैसे यूनानी व इब्रानी शब्द प्रयुक्त हुए हों; (3) यह दर्शाने के लिए कि किसी अंग्रेजी शब्द के दो भिन्न इब्रानी या यूनानी शब्द अनुवादित हुए हैं; (4) लेखक द्वारा किसी पुस्तक में कितनी बार कोई शब्द प्रयुक्त हुआ है; (5) बाइबल में पाठांश ढूंढ़ने में सहायता मिलती है देखें, वाल्टर क्लार्क की पुस्तक *हाउ टू यूज़ न्यू टेस्टामेंट ग्रीक स्टडी एड्स*,पेज 54-55 (cf. Walter Clark's *Howto Use NewTestament Greek Study Aids*, pp. 54-55).

मृत्यु सागर कुण्डल-पत्र (Dead Sea Scrolls). यह 1947 में मृत्यु सागर के निकट पाए गये उन प्राचीन पाठों की ओर संकेत करता है जो इब्रानी और आरामी भाषा में लिखे हुए थे। ये प्रथम शताब्दी के कट्टर यहूदीवाद की धार्मिक लायब्रेरी समान थे। इन कुण्डल पत्रों को सन् 60 के जेलोती युद्धों और रोमी सरकार के अत्याचारों के कारण मिट्टी के बर्तनों में छिपाकर गुफाओं व दरारों में रख दिया गया था। ये प्रथम शताब्दी के पलीस्तीन की ऐतिहासिक परिस्थितियों को जानने में सहायता करते हैं, और ईस्वी पूर्व के मैसोरेटिक पाठों की पुष्टि करते हैं कि वे सही हैं। इन्हें ष्क्ैैष् संक्षिप्त शब्दों द्वारा पुकारा जाता है।

वियोजक (Deductive). तर्क अथवा सोच विचार करने की यह विधि सामान्य सिद्धान्तों से तर्क के आधार पर किसी बात को लागू करने की ओर आगे बढ़ती है। यह उस विधि से विपरीत होती है जिसमें तर्क-वितर्क नहीं किया जाता और जो किसी सामान्य निर्णय तक पहुंचने की वैज्ञानिक विधि है।

द्वन्द्वात्मक पद्धति (Dialectical). यह तर्क करने का ऐसा तरीका है जिससे विरोधाभासी तथ्यों के मध्य ऐसा उत्तर खोजा जाता है जो दोनों तरफ मान्य हो। बाइबल के ऐसे अनेक सिद्धान्त हैं जिनमें द्वन्द्व या उलझन दिखाई देती है जैसे, पहले से ठहराया जाना और मानवीय स्वतन्त्र-इच्छा; सुरक्षा और धीरजवन्त होना; विश्वास और कार्य; निर्णय तथा शिष्यता; मसीही-स्वतन्त्रता; मसीही-उत्तरदायित्व इत्यादि।

तितर-बितर होकर रहने वाले (Diaspora). यह एक यूनानी भाषा का तकनीकी शब्द है जिसका प्रयोग पलीस्तीन निवासी यहूदी उन यहूदियों के लिए करते थे जो प्रतिज्ञात देश पलीस्तीन की सीमाओं से बाहर अन्य देशों में रह रहे थे।

अलौकिक रीति से बराबर (Dynamic equivalent). यह बाइबल के अनुवादों के संबंध में एक विचारधारा है। बाइबल का अनुवाद शब्दशः हो सकता है, जिसमें अंग्रेजी शब्द का इब्रानी अथवा यूनानी शब्द दिया जाता है; भावानुवाद भी हो सकता है जिसमें मूल शब्द का भावार्थ लेकर अनुवाद हो सकता है, और अपने शब्दों में लिखा जा सकता है। इन दोनों के बीच का अनुवाद “अलौकिक रीति से बराबर” विचारधारा पाई जाती है, जिसमें मूल पाठ पर गम्भीरता से विचार किया जाता है परन्तु आधुनिक मुहावरों और व्याकरणीय आधारों पर अनुवाद किया जाता है। इस संबंध में एक रोचक वाद-विवाद शुल्क और स्टुअर्ट के *हावो टू रीड दबाइबल फॉर ऑल इट्स वर्थ,* पेज 35 और रॉबर्ट ब्रैचर का TEV से परिचय, (Fee and Stuart's *Howto Read the Bible For All Its Worth*, p. 35, Robert Bratcher's Introduction to the TEV) पर तथा रोबर्ट ब्रैचर की भूमिका में जो टुडे इंगलिश वर्ज़न में है, पाई जाती है।

उदार (Eclectic). यह शब्द मूलपाठ समालोचना के सम्बन्ध में प्रयुक्त किया जाता है। यह विभिन्न यूनानी लीपियों को पढ़ने और मूलपाठ के अनुसार सही अर्थ तक पहुचने के कार्य की ओर संकेत करता है। इसमें इस विचार को नहीं माना जाता है कि सभी यूनानी लिपियाँ मूलपाठों के सही अर्थ बताती हैं।

इसेजेसिस (Eisegesis). यह शब्द व्याख्या करने अथवा अर्थ-निरूपण करने का विपरीत शब्द है। यदि अर्थ-निरूपण मूल लेखक के अभिप्राय व उद्देश्य से बाहर ले जाता है तो यह शब्द उस गलत विचार और गलत सोच से रोकता है।

यह पता करना कि शब्द कैसे बना (Etymology). यह शब्द-अध्ययन करने से संबंधित कार्य होता है जिसमें प्रयत्न किया जाता है पता लगाने का कि शब्द का मूल-अर्थ क्या है। इस मूल अर्थ के आधार पर शब्द के प्रयोग में आसानी होती है। व्याख्या करने में "एटीमोनी" मुख्य बात नहीं होती है, बल्कि शब्द का समकालिन अर्थ और उसका उपयोग महत्वपूर्ण होता है।

व्याख्या करना (Exegesis). किसी पाठांश विशेष की व्याख्या करने का यह एक टैक्नीकल शब्द है। इसका अर्थ है कि पाठांश को ऐतिहासिक परिस्थितियों, साहित्यिक संदर्भ, वाक्य रचना और समकालिन अर्थों के आधार पर मूल लेखक के अभिप्राय को समझना और समझाना।

साहित्यिक शैली (Genre). यह फ्रैन्च भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है विभिन्न प्रकार के साहित्य, जैसे ऐतिहासिक विवरण, काव्य, नीतिवचन, प्रकाशनात्मक, विधान इत्यादि।

ज्ञानवाद (Gnosticism). इस भ्रान्त शिक्षा की अधिकांश जानकारी हमें दूसरी शताब्दी ईस्वी के ज्ञानवादी लेखों से प्राप्त होती है, परन्तु इसके आरम्भिक विचार व शिक्षाएँ प्रथम शताब्दी में पाए जाते थे। इसके कुछ सिद्धान्त इस प्रकार हैं: (1) भौतिक जगत और आत्मा के मध्य अनन्तकालिन द्वैतवाद है। भौतिक तत्व बुरा है और आत्मा अच्छी है। परमेश्वर, जो कि आत्मा है, कभी भी बुरे तत्व को बनाने अथवा गढ़ने में प्रत्यक्ष रूप से सम्मिलित नहीं हो सकता है। (2) परमेश्वर और भौतिक तत्व (*eons* or angelic levels) के बीच स्वर्गदूतों के समान शक्तियाँ पाई जाती हैं। अंतिम शक्ति यहोवा(YHWH) है, जिसने जगत को बनाया (3) यीशु भी यहोवा (YHWH) की तरह एक शक्ति है, परन्तु स्तर में श्रेष्ठ है और सत्य परमेश्वर के निकट है। कुछ लोगों ने उसे सर्वोच्च बना दिया है परन्तु अभी भी वह परमेश्वर से कम है और निश्चित रूप से देहधारी ईश्वर नहीं है। (देखें, यूहन्ना 1:14) चूँकि तत्व बुरा होता है इसलिए यीशु के पास मानवीय देह नहीं है सकती है, कि ईश्वरीय ठहर सके। वह एक प्रेतात्मा है (देखें, 1 यूह. 1:1-3; 4:1-6)। तथा (4) यीशु पर विश्वास करने से उद्धार पाया जा सकता है पर साथ ही विशेष ज्ञान द्वारा भी उद्धार पाया जा सकता है जो कुछ ही विशेष लोगों के पास है। स्वर्गीय स्थानों में पहुँचने के लिये ज्ञान बहुत आवश्यक है। यहूदी कर्मकाण्डवाद को भी परमेश्वर तक पहुंचने की आवश्यकता है।

झूठे ज्ञानवादी शिक्षक दो विपरीत नैतिक जीवनों की शिक्षा देते थे (1) कुछ का मानना था कि उद्धार का जीवन से कोई सम्बन्ध नहीं है, वे कहते थे कि उद्धार और आध्यात्मिक जीवन गुप्तज्ञान में पाया जाता है जो स्वर्गदूतों के संसार से (*eons*) प्राप्त होता है। (2) अन्य शिक्षक मानते थे कि जीवन शैली द्वारा उद्धार प्राप्त करना कठिन है, इसलिए वे संन्यासी जीवन व्यतीत करने पर बल देते थे, और इसी को आध्यात्मिक जीवन का प्रमाण मानते थे।

हारमेन्यूटिक्स (Hermeneutics). यह बाइबल पाठांशों की व्याख्या करने के संबंध में सिद्धान्त होते हैं जिनकी सहायता से व्याख्या करने में मार्गदर्शन प्राप्त होता है। यह एक कला है। ये दो तरह के सिद्धान्त होते हैं, सामान्य सिद्धान्त और विशेष सिद्धान्त। इन सिद्धान्तों का सम्बन्ध बाइबल में पाई जाने वाली विभिन्न साहित्यिक शैलियों से होता है ओर उनके अनुसार सुझाव होते हैं परन्तु साथ ही व्याख्या संबंधी कुछ अन्य बातें भी बताई जाती हैं।

उच्च समालोचना (Higher Criticism). यह बाइबल की व्याख्या का एक तरीका होता है जिसके अन्तर्गत बाइबल की किसी पुस्तक विशेष की ऐतिहासिक संरचना और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर ध्यान दिया जाता है।

मुहावरे (Idiom). यह शब्द उन वाक्यांशों के लिये उपयोग में लाया जाता है, जिनका अर्थ भिन्न होता है तथा वह अर्थ नहीं होता जो सामान्य रूप से प्रतीत होता है। जैसे, "इस मंदिर को ढा दो, और मैं इसे तीन दिन में फिर खड़ा कर दूंगा"। बाइबल में ऐसे बहुत से वाक्यांश पाए जाते हैं जिनका अर्थ कुछ और होता है।

आत्मिक आँखें खोलना (Illumination). यह नाम इस धारणा को दिया जाता है कि परमेश्वर ने मानवजाति से बातचीत की है। आमतौर पर इस धारणा को तीन शब्दों द्वारा व्यक्त किया जाता है: (1) प्रकाशन-अर्थात् कि परमेश्वर ने मानव इतिहास में हस्ताक्षेप किया (2) प्रेरणा-उसने उपयुक्त शब्द और अर्थ अपने चुने हुए लोगों को प्रदान किए, कि वे मानव जाति के लिए उसके विषय में वे बातें लिख सकें। (3) प्रकाशमान करना-उसने मानवजाति की सहायता के लिए अपना पवित्र आत्मा दिया कि वे उसे समझ सकें।

इन्डक्टिव (Inductive). यह तर्क-वितर्क करने का तरीका है जो विवरणों से सम्पूर्णता की ओर बढ़ता है। यह आधुनिक विज्ञान का अनुभव पर आधारित तरीका है। यह मूलरूप से अरस्तु का तरीका था।

इन्टरलीनियर (Interlinear). यह एक प्रकार का खोजबीन करने का साधन है जिसके द्वारा वे लोग जो बाइबल की भाषा पढ़ नहीं सकते और अर्थ नहीं समझ सकते, इसके द्वारा समझ सकते हैं। इसमें मूल बाइबल की भाषा के अनुसार अंग्रेजी का शब्दशः अनुवाद दिया गया है। इस साधन द्वारा और साथ में "विश्लेषणात्मक शब्दकोश" द्वारा इब्रानी और यूनानी शब्दों की परिभाषाएँ प्राप्त की जा सकती हैं।

पवित्रात्मक की प्रेरणा (Inspiration). यह एक धारणा है कि परमेश्वर ने मानव जाति से बातचीत की और बाइबल के लेखकों का मार्गदर्शन किया जिससे वे उसके प्रकाशन की बातें ठीक रूप से लिख सके। यह धारणा विस्तृत रूप से तीन बातों पर व्यक्त की जाती है: (1) प्रकाशन-परमेश्वर ने मानव इतिहास में कार्य किया; (2) पे्ररणा प्रदान की-उसके चुने हुए लोगों पर अपने कार्यों व उद्देश्यों की सही व्याख्या व अर्थ प्रकट किया ताकि वे सम्पूर्ण मानव जाति के लिये उन्हें लेखबद्ध कर सकें तथा (3) ज्योतिर्मय बनाना-उसने मानवजाति की सहायता के लिए अपना पवित्र आत्मा प्रदान किया ताकि वे उसके प्रकाशन को समझ सकें।

वर्णन करने की भाषा (Language of description). यह वाक्यांश उन मुहावरों के सम्बन्ध में प्रयोग किया जाता है जिसमें पुराना नियम लिखा हुआ है। इसका सम्बन्ध हमारे संसार से है, जैसा हम अपनी पाँच ज्ञानेन्द्रियों द्वारा समझते और वर्णन करते हैं। यह वैज्ञानिक वर्णन नहीं है और न ही यह इससे संबंध रखता है।

कर्मकाण्ड वाद (Legalism). धार्मिक नियमों और रीति-विधियों पर जब बहुत अधिक जोर दिया जाता है तब यह आचरण दिखाई देता है। परमेश्वर द्वारा ग्रहण योग्य ठहरने के लिये मानवीय नियमों और विधियों का पालन करने पर यह निर्भर होता है। इसमें परमेश्वर से संबंध पर कम तथा धार्मिक विधियों के पालन पर ज्यादा महत्व दिया जाता है; पवित्र परमेश्वर के साथ वाचागत संबंध में रहने के लिये पतित मानव जाति के लिए दोनों ही बातें आवश्यक होती हैं।

शब्दांश (Literal). यह व्याख्या की ऐतिहासिक विधि तथा पाठांश-आधारित व्याख्या को अन्ताकिया द्वारा दिया गया दूसरा नाम है। इसका अर्थ है कि व्याख्या में मानवीय भाषा के सामान्य और स्पष्ट अर्थ सम्मिलित होते हैं, जबकि सांकेतिक भाषा भी होती है।

साहित्यिक शैली (Literary genre). यह उन विभिन्न साहित्यिक शैलियों की ओर संकेत करता है जिन्हें मनुष्य चुन सकता है जैसे काव्य अथवा ऐतिहासिक विवरण आदि। प्रत्येक प्रकार की साहित्यिक शैली का अपना विशेष तरीका होता है जिसके द्वारा उसकी व्याख्या की जा सकती है, साथ ही सब प्रकार के लिखित साहित्य के सामान्य सिद्धान्त होते हैं।

साहित्यिक ईकाई (Literary unit). यह बाइबल की पुस्तक के मुख्य विचार खण्ड की ओर संकेत करता है। इसे कुछ पदों, पैराग्राफों अथवा अध्यायों को लेकर बनाया जा सकता है। यह केन्द्रिय विषय के साथ स्वतंत्र ईकाई होती है।

निम्न समालोचना (Lower criticism). देखें पाठ की आलोचना (textual criticism)

पाण्डुलिपि (Manuscript). इस शब्द का सम्बन्ध नये नियम की प्राचीन पाण्डुलिपियों से है। इन पाण्डुलिपियों को विभिन्न प्रकारों में बाँटा गया है (1) वस्तु जिस पर ये लिखी गईं जैसे पहेर-पत्र, चमड़ा इत्यादि, अथवा (2) किस रूप में ये लिखी गईं जैसे कैपिटल अक्षरों में या चलत-लिखाई में। एक वचन में इसे "MS" द्वारा तथा बहुवचन में "MSS" द्वारा इसे लिखा जाता है।

मैसोरेटिक मूलपाठ (Masoretic Text). यह नवीं शताब्दी ईस्वी का इब्रानी भाषा का पुराने नियम का मूलपाठ है जिसे यहूदी विद्वानों ने लिखा। इसमें स्वर और अन्य मूलपाठ टिप्पणीयाँ पाई जाती हैं। इसमें अंग्रेजी के पुराने नियम के मूल आधार पाठ पाए जाते हैं। इसके पाठ इब्रानी MS पाण्डुलिपियों द्वारा ऐतिहासिक रूप से प्रमाणिक हैं विशेषकर यशायाह, जिसे मृतक सागर कुण्डल पत्रों द्वारा जाना गया था। इसे संक्षिप्त रूप से “MT” करके लिखा जाता है।

काव्यालंकार (Metonymy). यह एक अलंकारिक शब्द है जिसका अर्थ किसी अन्य बात की ओर संकेत करता है जैसे ‘‘पतीला उबल रहा है’’ इसका वास्तविक अर्थ है, ‘‘पतीले में जो पानी है, वह उबल रहा है।’’

मुराटियन खंड (Muratorian Fragments). यह नए नियम की प्रमाणिक पुस्तकों की सूची है। इसे रोम में 200 ईस्वी से पहले लिखा गया। इसमें वही 27 पुस्तकें पाई जाती हैं जो प्रोटिस्टैन्ट नए नियम में हैं। इससे स्पष्ट पता चलता है कि रोमी साम्राज्य में पाई जाने वाली रौमन कैथलिक स्थानीय कलीसियाओं ने चैथी शताब्दी की चर्च काउन्सिल से पहले ही प्रमाणिक पुस्तकों का संग्रह बना लिया था।

स्वाभाविक प्रकाशन (Natural Revelation). यह मनुष्यों पर परमेश्वर के प्रकटीकरण की एक श्रेणी है। इसमें परमेश्वर के प्रकटीकरण का स्वाभाविक क्रम (रोमियों 1:19-20) तथा नैतिक विवेकशीलता निहित है (रोमियों 2:14-15)। इसका उल्लेख भजन संहिता 19:1-6 और रोमियों 1-2 अध्यायों में पाया जाता है। यह विशेष प्रकाशन से भिन्न है, जो यीशु मसीह में परमेश्वर का प्रकटीकरण हुआ।

परमेश्वर के इस स्वाभाविक प्रकटीकरण पर मसीही वैज्ञानिकों द्वारा ‘‘पुरानी पृथ्वी’’ के रूप में फिर से बल दिया जा रहा है, उदाहरणार्थ, हयूग रास (e.g. the writings of Hugh Ross) की रचनाएँ। वे इस श्रेणी को इस बात की घोषणा में प्रयोग करते हैं कि सारी सच्चाईयाँ परमेश्वर की सच्चाईयाँ हैं। प्रकृति द्वारा परमेश्वर के बारे में जाना जा सकता है। यह परमेश्वर के विशेष प्रकाशन से भिन्न बात है जिसके बारे में बाइबल बताती है। इसमें आधुनिक विज्ञान को स्वतन्त्रता है कि प्राकृतिक नियमों द्वारा परमेश्वर के ज्ञान की खोज कर सकती है। मेरे विचार से यह पश्चिमी देशों के विज्ञानिकों के सामने गवाही देने का एक नया महत्वपूर्ण अवसर है।

नेस्तोरीवाद (Nestorianism). नेस्टोरियुस पाँचवी शताब्दी में कान्सटैन्टीनोपल का एक पादरी था। उसने सीरिया के अन्ताकिया में प्रशिक्षण पाया था और मानता था कि यीशु में दो स्वभाव थे अर्थात् वह सिद्ध मानव और सिद्ध

परमेश्वर था। यह विचार सिकन्दरिया के रूढ़िवादी एक स्वभाव के विचार से विरुद्ध विचार था। नेस्टोरियुस के सामने विवाद का विषय शीर्षक “परमेश्वर की माता” था जो मरियम को दिया गया था। सिकन्दरिया के सिरिल द्वारा नेस्टोरियुस का और उसकी शिक्षाओं का विरोध किया गया। उन दिनों में अन्ताकिया बाइबल-व्याख्या और पदों की व्याकरणीय समीक्षा करने का मुख्यालय था और सिकन्दरिया “रूपक कथा” का मुख्यालय था (allegorical) । अन्त में नेस्टोरियुस को उसके पद से हटाकर निर्वासित कर दिया गया।

मूल लेखक (Original Author). यह नाम पवित्रशास्त्र के मूल लेखकों को दिया गया है।

पेटर-पत्र (Papyri). यह एक प्रकार की लिखाई करने की वस्तु होती थी जो मिस्र में नदी किनारे पाए जाने वाले पटेरों से बनती थी। यूनानी नए नियम की प्राचीनतम पाण्डुलिपियाँ इन्हीं पटेर-पत्रों पर लिखी हैं।

सामान्तर पाठांश(Parallel Passage) जबकि सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र बाइबल परमेश्वर द्वारा हमें प्रदान किया गया है, इसलिए सामान्तर पाठांश भी इस धारणा का भाग हैं और उनमें विरोधाभास नहीं पाया जाता है। जब इन पाठांशों को लेकर व्याख्या की जाती अथवा अस्पष्ट शब्दों का अर्थ खोजा जाता है तो सहायक होता है, और हमें सही अर्थ प्राप्त होता है। इन पाठांशों द्वारा हमें किसी विषय से संबंधित विशेष सहायता भी प्राप्त होती है।

भावानुवाद (Paraphrase): यह बाइबल का अनुवाद करने वाली एक विचारघारा का नाम है। बाइबल अनुवाद शब्दशः भी होता है जिसके अन्तर्गत प्रत्येक यूनानी अथवा इब्रानी शब्द का अंग्रेजी में शाब्दिक अनुवाद होता है, और एक अनुवाद “भावानुवाद” कहलाता है जिसमें मूल शब्द के अर्थ को छोड़कर भावार्थ के अनुसार अनुवाद किया जाता है। इन दोनों के मध्य की विचारधारा "the dynamic equivalent" कहलाती है। इसमें गम्भीरतापूर्वक मूलपाठ पर विचार किया जाता है परन्तु अनुवाद आधुनिक व्याकरण रूप और आधुनिक मुहावरों के अनुसार किया जाता है। अनुवादों के संबंध में एक रोचक जानकारी फी एण्ड स्टूअर्ड की पुस्तक *"How to Read the Bible For All its Worth" Page* 35 पर पाई जाती है।

पैराग्राफ (Paragraph): यह गद्य में व्याख्या करने की एक साहित्यिक ईकाई है। इसमें एक केन्द्रिय विचार और उसका विकास निहित होता है। यदि हम इसके मुख्य बल पर टिके रहें तो मूल लेखक के उद्देश्यों व अभिप्रायों को जानने में कभी भी असफल नहीं हो सकेंगे।

संकीर्णता (Parochialism): यह उन पूर्व धारणाओं से संबंधित विचार है जो स्थानीय धर्मवैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक प्रबन्ध में पाई जाती हैं। इसमें अन्य संस्कृतियों में पाए जाने वाले बाइबल के सत्यों को समझने और उन्हें लागू करने में परेशानी का अनुभव होता है।

विरोधाभास (Paradox): यह उन दो सत्यों की ओर संकेत करता है जो आपस में विपरीत जैसे प्रतीत होते हैं, जबकि दोनों ही सत्य होते हैं, परन्तु उनमें तनाव सा महसूस किया जाता है। प्रत्येक दृष्टिकोण से विचार करने पर सच्चाई सामने आ जाती है। बाइबल की बहुत सी सच्चाईयाँ विरोधाभासी रूप में प्रस्तुत की गई हैं। हमें जानना चाहिए कि बाइबल के सत्य अलग अलग सितारों के सामन नहीं हैं, परन्तु एक तारामण्डल हैं।

प्लाटो (Plato): प्लाटो यूनान का एक प्रसिद्ध दार्शनिक था। उसके दर्शनशास्त्र ने आरम्भिक कलीसिया के सिकन्दरिया के विद्वानों और बाद में अगस्तीन को बहुत प्रभावित किया। वह मानता था कि पृथ्वी पर पाई जाने वाली प्रत्येक बात छाया मात्र है उनका वास्तविक रूप स्वर्ग में पाया जाता है। आगे चलकर मसीही धर्म वैज्ञानिक ने प्ला ॅटो के इस विचार को “आत्मिक संसार” माना।

पूर्वधारणा (Presupposition): यह किसी बात के बारे में बनाए गए विचारों व समझ के बारे में बताता जिन्हें हम पहले से बनाए रखते हैं, जिसे पूर्वधारणाएँ कहा जाता है। अक्सर पवित्र शास्त्र में किसी विषय को देखने से

पहले ही हम उस विषय के बारे में अपने विचार बनाकर रखते हैं, यह स्थिति भी पूर्वधारणा अथवा पूर्व कल्पना होती है।

पद-व्याख्या (Proof-texting): यह पवित्रशास्त्र की व्याख्या करने का ऐसा तरीका है जिसमें किसी पद को लेकर व्याख्या की जाती है परन्तु उसके सन्दर्भ पर ध्यान नहीं दिया जाता है। ऐसा करने से मूल लेखक का अभिप्राय छिप जाता है और अपने ही विचार व्यक्त करने का अन्देशा बढ़ता है।

रब्बियों का यहूदीवाद (Rabbinical Judaism): यहूदियों के जीवनकाल की यह स्थिति उस समय आरम्भ हुई जब वे 586-538 ई.पू. के दौरान बाबुल की गुलामी में थे। याजकों ओर मन्दिर का महत्व समाप्त हो गया था और यहूदियों के जीवन का केन्द्र आराधनालय बन गये थे। यहूदी संस्कृति, सहभागिता, उपासना और पवित्रशास्त्र अध्ययन के यही स्थानीय केन्द्र आराधनालय उनके राष्ट्रीय धार्मिक जीवन का आधार व पहचान बन गए। यीशु के दिनों में शास्त्री और याजक लोग धार्मिक अगुवे माने जाते थे। सन् 70 ईस्वी में यरूशलेम के पतन के बाद फरीसियों ने यहूदियों की सारी धार्मिक व्यवस्था अपने नियंत्रण में कर ली। ये लोग मौखिक परम्पराओं का कड़ाई के साथ पालन करते थे जैसाकि तालमूद (Talmud) में लिखा है।

प्रकाशन (Revelation): यह इस धारणा को दिया गया नाम है कि परमेश्वर ने मानव जाति से बातचीत की है। इस शब्द को तीन बातों द्वारा व्यक्त किया जाता है: (1) प्रकाशन - अर्थात् कि परमेश्वर ने मानवीय इतिहास में महान् कार्य किये; (2) प्रेरणा-उसने कुछ चुने हुए लोगों को प्रेरणा दी कि वे उसके कार्यों का और उनके अर्थ का ठीक विवरण मानव जाति के लिये लेखबद्ध कर सकंे; और (3) ज्योतिर्मय बनाना - परमेश्वर ने मानव जाति की सहायता के लिये अपना पवित्रआत्मा दिया कि वे उसके आत्म-प्रकटीकरण को समझ सकें।

शब्दार्थ (Semantic field): यह शब्द के अर्थों से संबंधित बातों के बारे में बताता है। यह मूल रूप से शब्द के विभिन्न सन्दर्भों में अर्थ से संबंध रखता है।

सैप्तूजैन्त (Septuagiant): इब्रानी भाषा के पुराने नियम के यूनानी अनुवाद को सप्तूजैन्त कहा जाता है। परम्परा के अनुसार इसे 70 दिनों में, 70 यहूदी विद्वानों द्वारा मिस्र के सिकन्दरिया नगर की लायब्रेरी के लिए लिखा गया। इसकी परम्परागत तिथि लगभग 250 ई.पू. है (वास्तव में संभवतः इसे पूरा करने में सौ वर्ष लगे थे)। यह यूनानी अनुवाद बड़ा महत्वपूर्ण है क्योंकि (1) इससे प्राचीन मूलपाठों की मैसोरेटिक हीब्रू पाठों से तुलना करने में सहायता मिलती है (2) यह दूसरी और तीसरी शताब्दी ई.पू. की यहूदी अनुवाद की स्थिति को दर्शाता है (3) यह यीशु के तिरस्कार से पहले की मसीह संबंधी यहूदी विचारधारा के बारे में हमें बताता है। इसे संकेत चिन्ह स्ग् द्वारा दर्शाया जाता है।

सिनाएटिकस (Sinaiticus): यह चैथी शताब्दी ईस्वी की यूनानी पाण्डुलिपि है। इसे सेंट कैथरीन मोनास्ट्री में जो सीनै पर्वत पर एक पारम्परिक स्थल है, जर्मनी के एक टिस्केन्डोर्फ नामक विद्वान द्वारा पाया गया था। इस पाण्डुलिपि को इब्रानी भाषा के पहले अक्षर "एल्फी" नाम से जाना जाता है। इसमें संपूर्ण नया नियम और पुराना नियम पाया जाता है। यह अति प्राचीन पाण्डुलिपि है।

आध्यात्मिक बनाना (Spiritualizing): यह शब्द रूपक-कथा बनाने से मिलता जुलता है। इसमें पाठांश के ऐतिहासिक और साहित्यिक संदर्भों की उपेक्षा करके व्याख्या की जाती है।

समानार्थी (Synonymous): यह उन शब्दों के बारे में बताता है जो आपस में समान अर्थ रखते हैं। ये शब्द इतने घनिष्ट होते हैं कि एक दूसरे के बदले में प्रयुक्त किये जा सकते हैं और अर्थ भी नहीं बदलता है। इब्रानी कविता में प्रयोग किए जाने वाले तीन शब्दों में से यह एक शब्द है जिसे सामान्तरता कहते हैं, जिसमें कविता की दो पंक्तियों का अर्थ एक समान होता है, (देखें, भजन संहिता 103:3)।

वाक्य रचना (Syntax): यह यूनानी शब्द है जो वाक्य रचना के बारे में बताता है। इसका संबंध वाक्य को बनाने के तरीकों से है ताकि उसका अर्थ निकल सके।

संश्लेषित (Synthetical): यह इब्रानी कविता से संबंधित तीन शब्दों में से एक शब्द है। यह कविता की उस पंक्ति से संबंध रखता है जो दूसरी पंक्ति पर आधारित होती है और पूर्व अर्थ देती है। यह चरम-पंक्ति भी कहलाती है, (देखें, भजन संहिता 19:7-9)।

व्यवस्थित धर्म विज्ञान (Systematic Theology): इसमें बाइबल की सच्चाईयों को व्यवस्थित रूप से तर्क संगत आधार पर समझाया जाता है। इसमें मसीही धर्म वैज्ञानिक बातों को श्रेणीबद्ध रूप से तर्क के साथ प्रस्तुत किया जाता है न कि ऐतिहासिक परिवेश में, जैसे परमेश्वर, मनुष्य, पाप और उद्धार इत्यादि।

तालमूद (Talmud): यह यहूदियों की मौखिक परम्पराओं की संहिता का नाम है। यहूदी मानते थे कि सीनै पर्वत पर परमेश्वर ने मूसा को इसे दिया था। परन्तु वास्तव में यह प्राचीन यहूदी शिक्षकों के नीतिवचनों का संग्रह प्रतीत होता है। तालमूद के दो भिन्न लिखित विवरण हैं: बेबिलोन का विवरण तथा पलीस्तीन का अपूर्ण व छोटा विवरण।

मूलपाठ समालोचना (Textual Criticism): यह बाइबल की पाण्डुलिपियों का अध्ययन होता है। मूलपाठ समालोचना करना आवश्यक होता है क्योंकि मूल पाण्डुलिपि उपलब्ध नहीं है और प्रतिलिपियाँ ही उपलब्ध हैं जो परस्पर भिन्नता रखती हैं। इसके द्वारा भिन्नताओं का कारण समझते हुए नए और पुराने नियम की मूल पुस्तक के उचित अर्थ के निकट पहुँचने का प्रयास किया जाता है। इसे अक्सर “निम्न समालोचना” कहते हैं।

सर्वमान्य पाठ (Textus Receptus): यह पदवी सर्वप्रथम एलजेवियर के यूनानी नए नियम को 1633 ईस्वी में दी गई थी। मूलरूप से यह यूनानी नये नियम की तरह था जिसे प्राचीन यूनानी पाण्डु‍लिपियों और इरास्मुस (1510-1535), स्तिफनुस ;1546-1559) तथा एलजेबियर (1624-1678) की लैटिन लेखों द्वारा तैयार किया गया था। ए. टी. रौबर्टसन अपनी पुस्तक *"An Introduction to the Textual Criticism of the New Testament"* में कहते हैं, “बिजनटाईन की रचना वास्तव में “सर्वमान्य पाठ” है। बिजनटाईन पाठ यूनानी की तीन पाण्डुलिपियों (पाश्चात्य, सिकन्दरियाई और बिजनटाईन) में कम महत्व की है। इसमें सदियों पुरानी हस्तलिपियों की ढेर सारी गलतियाँ हैं। परन्तु ए. टी. रौबर्टसन यह भी कहते हैं कि “सर्वमान्य पाठ में हमारे लिये भरपूरी के साथ सही पाठ भी हैं” (पेज 21)। यह यूनानी पाण्डुलिपियों की परम्परा (विशेषकर इरास्मुख का 1522 का संस्करण) किंग जेम्स वर्जन 1611 ईस्वी की रचना का आधार बनीं।

तोरह (Torah): यह “सिखाने” का इब्रानी शब्द है। बाद में यह मूसा की पुस्तकों के लिये (उत्पत्ति से व्यवस्थाविवरण तक) प्रयोग में लाया जाने लगा। यहूदियों के लिये ये पुस्तकें अधिकारयुक्त मानी जाती हैं।

प्रतीकात्मक (Typological): यह एक विशष प्रकार की व्याख्या है। आमतौर पर इसमें वे नए नियम की सच्चाईयाँ सम्मिलित होती हैं जो पुराने नियम के पाठांशों में प्रतीक व चिन्हों के रूप में पाई जाती हैं। सिकन्दरिया के व्याख्यात्मक तरीकों में इस प्रकार की व्याख्या मुख्य स्थान रखती थी। चूँकि इस प्रकार की व्याख्या का दुरुपयोग होता है, इसलिए इसका कम उपयोग करना चाहिए और नए नियम में लिखित विशेष उदाहरणों का ही प्रयोग करना चाहिए।

वेटिकानुस (Vaticanus): यह चैथी शताब्दी ईस्वी की यूनानी पाण्डुलिपि है। यह वैटिकन के पुस्तकालय में पाई गई थी। मूलरूप से इसमें पूरा पुराना नियम, अपोक्रिफा और नया नियम पाया जाता है, फिर भी कुछ भाग लोप हो गए हैं (जैसे, उत्पत्ति, भजनसंहिता, इब्रानियों, पास्तरीय-पत्र, फिलेमोन और प्रकाशितवाक्य)। बाइबल

की पुस्तकों के शब्दों का मूल अर्थ जानने में यह पाण्डुलिपि बहुत सहायक है। इसे कैपिटल “B” द्वारा जाना जाता है।

वुल्गाता (Vulgate): यह जेरोम द्वारा लैटिन भाषा में अनुवाद की गई बाइबल का नाम है। यह रोमन कैथलिक कलीसिया का ‘‘सामान्य’’ अथवा मूल अनुवाद बन गया। यह 380 ईस्वी में पूरा हुआ।

बुद्धि/ज्ञान साहित्य (Wisdom Literature): यह प्राचीन पूर्वीय देशों की सामान्य साहित्यिक शैली थी और आज वर्तमान संसार की भी है। इसमें मूलतः नई पीढ़ी को सफल जीवन बनाने की कविताओं, नीतिवचनों और उपदेशों के माध्यम से परामर्श व सुझाव दिए जाते हैं। इसमें सामूहिक रूप से समाज को सम्बोधित करने की अपेक्षा व्यक्तिगत रूप से मनुष्य ही को सम्बोधित किया जाता है। इसमें ऐतिहासिक बातें नहीं होती अपितु जीवन के अनुभवों पर आधारित व्यावहारिक बातें होती हैं। बाइबल में अय्यूब की पुस्तक से लेकर श्रेष्ठ गीत की पुस्तक तक यहोवा (YHWH) परमेश्वर की भक्ति, उपस्थिति व उपासना का जैसा चित्रण पाया जाता है वैसा मानव जीवनों में दिखाई नहीं देता है।

साहित्यिक शैली होने के नाते इस साहित्य में सामान्य सत्य बताया जाता है, फिर भी यह शैली प्रत्येक परिस्थिति में प्रयुक्त नहीं की जा सकती है। ये सामान्य कथन होते हैं, जिन्हें सदैव ही प्रत्येक व्यक्तिगत परिस्थिति में लागू नहीं किया जा सकता है।

ये बुद्धिमान और विवेकशील लेखक जीवन के कठिन प्रश्नों को पूछने का साहस करते हैं। अक्सर वे पारम्परिक धार्मिक विचारें को चुनौती देते हैं (अय्यूब और सभोपदेशक)। वे जीवन के दुखों, और तनावों में सन्तुलन रखते हुए सरल उत्तर देने का प्रयास करते हैं।

सांसारिक चित्रण एवं विश्वदर्शन (World Picture and worldview): ये एक दूसरे से मिलते-जुलते शब्द हैं। ये सृष्टि के संबंध में दार्शनिक धारणाएँ हैं। ‘‘सांसारिक चित्रण’’ का संबंध सृष्टि-निर्माण से है कि सृष्टि कैसे बनीं तथा ‘‘विश्वदर्शन’’ शब्द का संबंध ‘‘कौन’’ शब्द से है कि सृष्टिकर्त्ता कौन है। ये शब्द उत्त्पति 1-2 की व्याख्या के अनुकूल हैं कि सृष्टिकर्त्ता कौन है तथा किसने सृष्टि बनाई है।

(YHWH): यह पुराने नियम में परमेश्वर का वाचागत नाम है। इसकी परिभाषा निर्गमन 3:14 में दी गई है कि ‘‘मैं जो हूँ सो हूँ।’’ यह इब्रानी शब्द ‘‘होना’’ का रूप है। यहूदी लोग यहोवा(YHWH) नाम का उच्चारण करने से डरते थे कि कहीं वे व्यर्थ में यहोवा (YHWH) का नाम लेकर पापी न ठहराए जाएँ, इसलिये उन्होंने इब्रानी शब्द अदोनाए के स्थान पर ‘‘प्रभु’’ *Adonai* या "Lord" शब्द का उपयोग करना आरम्भ कर दिया। इस प्रकार अंग्रेजी बाइबलों में "Lord" शब्द का प्रयोग होने लगा।

Copyright © 2013 Bible Lesson International

धर्म-सिद्धान्त संबंधी वक्तव्य

मैं विश्वास वचन को इतना महत्व नहीं देता, जितना स्वयं बाइबल द्वारा की गई पृष्टि को देता हूँ। तौ भी मैं मानता हूँ कि जो लोग मुझ से परिचित नहीं हैं, उनके लिये यह विश्वास वचन एक माध्यम बन सकेगा कि वे मेरे धर्म सिद्धान्त संबंधी विचारों का मूल्यांकन कर सकें। आजकल अनेक धर्म विज्ञान संबंधी त्रुटियाँ और भ्रमात्मक विचार पाए जाते हैं, इन सब बातों के होते हुए, प्रस्तुत है मेरी धर्म-वैज्ञानिक विचारधारा का संक्षिप्त सारांश:

1. बाइबल, अर्थात् नया और पुराना नियम, प्रेरणाप्राप्त, अचूक, अधिकारयुक्त और परमेश्वर का अनन्त वचन है। यह परमेश्वर का आत्म-प्रकाशन है जिसे मनुष्यों द्वारा अलौकिक मार्गदर्शन में लिखा गया। परमेश्वर और उसके अभिप्रायों के विषय में स्पष्ट सत्य को जानने का यही हमारा एकमात्र स्रोत है। यह उसकी कलीसिया के विश्वास और कार्यों का भी एकमात्र स्रोत है।
2. परमेश्वर केवल एक ही है जो अनन्त, सृजनहार और ताराणहार है। दृश्य व अदृश्य सभी वस्तुओं का वह सृजनहार है। उसने अपने आप को एक प्रेमी और देखभाल करने वाले परमेश्वर के रूप में प्रकट किया, हालांकि वह स्वयं भी भला और न्यायी परमेश्वर है। उसने अपने आप को तीन विभिन्न व्यक्तियों के रूप में प्रकाशित किया: पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा, जो वास्तव में अलग अलग हैं पर तौ भी एक ही तत्व हैं।
3. परमेश्वर सक्रियता के साथ अपने वचन पर नियन्त्रण रखता है। अपनी सृष्टि के लिये परमेश्वर के पास अनन्त योजना है जो बदल नहीं सकती, और एक योजना व्यक्तिगत है, जिसमें मनुष्यों को स्वतन्त्र इच्छा की अनुमति है। परमेश्वर की अनुमति के बिना कुछ नहीं हो सकता है, वह सब कुछ जानता है, पर फिर भी मनुष्यों और स्वर्गदूतों को उनकी व्यक्तिगत चुनाव की अनुमति प्रदान करता है। यीशु, पिता का चुना हुआ मनुष्य है तथा सब मनुष्य उसके द्वारा चुने हुए हैं। घटनाओं की परमेश्वर द्वारा पहले से जानकारी रखना, मनुष्यों को पहले से निर्धारित बातों के उत्तरदायित्व से हटाती नहीं है। हम सब अपने कार्यों और विचारों के लिये उत्तरदाई हैं।
4. मानवजाति हालांकि परमेश्वर के स्वरूप पर पाप रहित सृजी गई, तौभी उसने चुना कि परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह करे। हालांकि आदम और हव्वा अलौकिक प्रतिनिधि द्वारा परीक्षा में पड़े, तौभी वे अपनी जानबूझकर की गई आत्म-केन्द्रियता के लिये जिम्मेदार थे। उनके विद्रोह ने मानवजाति को और सृष्टि को प्रभावित किया। आदम में जो हमारी सामूहिक और व्यक्तिगत पतित दशा हुई, उन दोनों के लिए हम सबको परमेश्वर की दया और अनुग्रह की आवश्यकता है।
5. पतित मानव जाति के पापों की क्षमा और पुनर्स्थापना के लिए परमेश्वर ने स्वयं प्रबन्ध किया। परमेश्वर का एकलौता पुत्र, यीशु मसीह, मनुष्य रूप में आया, पाप रहित जीवन बिताया, और मानव जाति के पापों के बदले में अपने प्राण देकर मानव जाति के पापों की कीमत चुकाईं केवल वही है जिसके माध्यम से परमेश्वर के साथ संगति और पुनर्स्थापना हो सकती है। उसके द्वारा जो कार्य पूरा किया गया उस पर विश्वास करने के अलावा उद्धार पाने का कोई दूसरा उपाय नहीं है।
6. हम में से प्रत्येक को प्रभु यीशु मसीह में प्रदान की गई परमेश्वर की इस पापों की क्षमा और पुनर्स्थापना को व्यक्तिगत रूप से स्वीकार करना चाहिए। यदि आप संकल्प करते हुए प्रभु यीशु के द्वारा परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं पर भरोसा करें और सच्चे हृदय से अपने पापों का परित्याग करें तो पापों की क्षमा पा सकते हैं।
7. हम यीशु मसीह पर अपने विश्वास और पापों से पश्चाताप करने के आधार पर पूर्ण रूप से क्षमा किए जाते और बहाल होते हैं। परन्तु परमेश्वर के साथ इस नए रिश्ते का प्रमाण एक नए और परिवर्तित जीवन में दिखाई देता है। मानव जाति के लिए परमेश्वर का उद्देश्य केवल यही नहीं है कि एक दिन वह स्वर्ग में पहुँचे, परन्तु वह चाहता है कि मानव जाति अभी मसीह के समान जीवन जीए। जो वास्तव में उद्धार पा चुके हैं, हालांकि यदाकदा उनसे पाप हो जाता है, पर वे पश्चाताप कर लेते और जीवन भर विश्वास में बने रहते हैं।
8. पवित्र आत्मा "दूसरा यीशु" है। वह संसार में क्रियाशील रहता है ताकि भटके हुओं को मसीह के निकट लाए और जिन्होंने उद्धार पा लिया है उनमें मसीह का स्वभाव विकसित करे। उद्धार प्राप्त करते समय पवित्रआत्मा के वरदान दिए जाते हैं। ये वरदान यीशु मसीह का जीवन और उसकी सेवकाई होते हैं जो उसकी देह अर्थात् कलीसिया में बाँटे जाते हैं। इन वरदानों को, जो मूलरूप से यीशु का स्वभाव और यीशु

के उद्देश्य हैं, पवित्र आत्मा के फलों द्वारा प्रेरित किया जाना चाहिए। पवित्र आत्मा जिस प्रकार बाइबल कालिन युग में क्रियाशील था, हमारे समय में भी उसी तरह क्रियाशील है।

9. परमेश्वर पिता ने पुनरुत्थित मसीह को सब बातों का न्यायी बनाया है। वह एक दिन पृथ्वी पर आएगा और सब मनुष्यों का न्याय करेगा। जो यीशु पर विश्वास करते हैं और जिनके नाम मेमने की पुस्तक में लिखे हैं, वे उसके आगमन पर महिमा पूर्ण अनन्त देह पाएंगे। वे अनन्तकाल तक उसके साथ रहेंगे। परन्तु जिन्होंने परमेश्वर के सत्य को स्वीकार नहीं किया और विश्वास नहीं किया वे त्रिएक परमेश्वर की संगति के आनन्द से अनन्तकाल तक के लिए पृथक कर दिए जाएंगे। वे शैतान और उसके दूतों के साथ दोषी ठहराए जाएंगे।

निश्चित रूप से यह वक्तव्य अपूर्ण है, परन्तु मेरी आशा है कि इसके द्वारा आपको मेरे हृदय के धर्म वैज्ञानिक विचारों को जानने में सहायता प्राप्त होगी। मैं निम्नलिखित कथन को बड़ा पसन्द करता हूँ:
‘‘सारांश यह है कि सब में एकता हो, स्वतन्त्रता और प्रेम हो।’’

"अनिवार्य रूप से - एकता में, परिधीयता में - स्वतंत्रता, सभी चीज़ों में - प्रेम।